वंशभास्कर

श्रीबुन्दीशाश्रित महाकवि मिश्रण

सूर्यमल्ल

विरचित

तृतीयभाग

शाहपुरा के पोलपात्र श्रीमान् मरुधराधीशों के आश्रित तथा
राजराजेश्वर मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहजी बहादुर के
पितृव्यक महाराजधिराज कर्नल सर श्रीप्रतापसिंहजी
के कृपापात्र शोदा बारहठ

कृष्णसिंहजी

विरचित उदधिमंथिनी

टीका सहित

जिसको

कविराजाजी श्री मुरारिदानजी की

सहायता से

दाधीच आसोपा पंडित बलदेवात्मज पंडि
रामकर्ण–श्यामकर्ण शर्मा ने

शोधकर

विद्या प्रतापप्रेस में

मुद्रित किया

Data Entered
4 JUL 2005

॥ ओ३म् ॥

मध्यपीठिका का सूचीपत्र

१२३११

पंचम राशि का सूचीपत्र ॥

॥ ओ३म् ॥

॥ छठे राशि का सूचीपत्र ॥

सप्तम राशि का सूचीपत्र

ओ३म्

अब यहां पर हिन्दुस्थान, अफग़ानिस्थान, ईरान, यूनान, अरबस्थान, रूस, चीन आदि जिन जिन देशों और परगनों (सूबों) के नाम इस ग्रन्थ में आये हैं उन सब को एकत्र करके नक्शा बनाया जाता है, हमारा विचार पहिले देशों के नाम की टीका करने का नहीं था इसीकारण से तृतीयराशि की टीका में एक स्थान पर देशों के नाम की टीका का निषेध लिख भी दिया है परन्तु फिर कई मित्रों की प्रेरणा से उपरोक्त विचार पलट कर टीका करदेना ही उचित समझा गया परन्तु इस ग्रन्थ में देशों के नाम अनेक स्थलों पर अनेक बार आये हैं इस कारण विस्तार के भय से प्रत्येक स्थान पर टीका करना छोड कर सब नामों की यहां एक ही स्थान पर टीका करके यह एक नक्शा लगा या जाता है सो देशों के नाम तृतीयराशि से प्रारम्भ होते हैं वहां से लेकर आगे जहां कहीं देश का नाम आवै वहां इस चित्र के अनुकूल अर्थ समझना चाहिये, यह अकारादि क्रम से बनाया हुआ चित्र(नक्शा) संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों से और अंगरेजी के आधुनिक पुस्तकों से अथवा ऐट्लसों (नक्शों की किताबों) से शोधन करके बनायागया है जिसमें हमारे मित्र उदयपुर विक्टोरियाहाल के पण्डित गौरीशंकर की सहायता भी प्रशंसनीय है जिनका मैं धन्यवाद करता हूं.

नं० प्राचीन नाम, आधुनिक देशों के नाम और पते अथवा शहर आदि के नाम.

१ अङ्ग—शक्तिसंगम नामक तन्त्र में लिखा है ॥ श्लोक ॥ वैद्यनाथं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे!॥ तावदङ्गाभिधो देशो यात्रायां न हि दुष्यति ।१। अर्थ॥ वैद्यनाथ से लेकर भुवनेश्वर तक है अन्त जिसका वहां तक हे पार्वती! वह अङ्ग नाम का देश यात्रा में दूषित नहीं है॥ १॥ यह देश पूर्व दिशा में बंगाला के पश्चिमी भाग भागलपुर के पास था जिसकी राजधानी चम्पापुरी थी, अंग वंश के क्षत्रियों के निवास से देश का नाम अंग हुआ ॥

२ अटक—पञ्जाब की पश्चिमी सीमा पर अटक नाम का शहर है जिसके नाम से अथवा अटक नदी के नाम से उसके समीप के प्रदेश का नाम पायाजाता है (जाकी मन में अटक है सो ही अटक रहा).

३ अनूप—श्लोक ॥ बह्वम्बुर्बहुवृक्षश्च वातश्लेष्माऽऽमयान्वितः॥ देशोऽनूप इति ख्यातः शास्त्रेषु च मनीषिभिः॥१॥ अर्थ-बहुत पानी, बहुत वृक्ष, वात पित्त के रोगों से सहित होवै उस देश को शास्त्र में बुद्धिमान् लोग अनूप देश कहते हैं, पुराणों के अनुसार यह देश विन्ध्य पर्वत के निकट और रघुवंश के अनुसार नर्मदा नदी के उत्तरी तट के

एक देश का नाम होना चाहिये जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी.

४ अन्ध्र—श्लोक॥ जगन्नाथादूर्ध्वभागमर्वाक्श्रीभ्रमरात्मिकात्॥तावदन्ध्राभिधो देशः प्रोक्तः श्रीशक्तिसङ्गमे ॥ १ ॥ अर्थ ॥ जगन्नाथ से दक्षिण में और भ्रमरात्मिका से इस ओर अन्ध्र नामक देश शक्तिसङ्गम नामक तन्त्र में कहा है ॥ १ ॥ यह तिलङ्गाने का प्राचीन नाम है जिसको आन्ध्र वंश के क्षत्रियों के राज्य रहने से आन्ध्र भी कहते हैं.

५ अर्बुद—आबू पर्वत के आसपास का देश जिसमें सिरोही का राज्य और कुछ दाँता, पालनपुर और गोडवाड़ का हिस्सा शामिल है.

६ आटव्य— यह जङ्गल से भरेहुए देश का साधारण नाम है जो विन्ध्य पर्वत के अरण्य प्रदेश के लिये होना सम्भव है.

७ आनर्त— काठियावाड़ जिसमें कच्छ और द्वारका शामिल था.

८ आभीर—श्लोक ॥ श्रीकोङ्कणादधोभागे तापीतः पश्चिमे परे॥ आभीरदेशो देवेशि! विन्ध्यशैले व्यवस्थितः॥१॥ इति शक्तिसङ्गमतन्त्रम्॥ अर्थ ॥ कोंकण देश से उत्तर और तापी नदी से पश्चिम विन्ध्य पर्वत में हे देवेशि! (पार्वती) आभीर देश है ॥ १ ॥ यह शक्तिसङ्गम नामक तन्त्र में लिखा है जो बम्बई से सूरत तक था.

९ आरब—यह अरबस्थान का नाम मालूम होता है.

१० आवन्त्य—मालवे का एक भाग जिसकी राजधानी उज्जैन थी.

११ उत्कल— श्लोक ॥ जगन्नाथः प्रान्तदेशश्चोत्कलः परिकीर्तितः॥ अर्थ ॥ जिसमें जगन्नाथपुरी है उसको उत्कल देश कहते हैं जो इस समय उड़ीसा के नाम से प्रसिद्ध है.

१२ ऊर्ण—यह किसी देश का नाम हो ऐसा प्रमाण नहीं मिलसका परंतु 'उरण' नाम का एक नगर बम्बई अहाते के थाणा जिले में था जो शिलारा वंश के राजाओं के राज के प्रतिष्ठित नगरों में से एक गिना जाता था.

१३ ऊषरक्षेत्र—क्षारभूमिवाला देश तथा रेणुका आदि नव तीर्थ ॥ श्लोक ॥ रेणुका सूकरः काशी काली कालवटेश्वरौ ॥ कालिञ्जरो महाकाल ऊषरा नव मुक्तिदाः ॥ १ ॥ इति वराहपुराणम्.॥

१४ कम्बोज—॥ श्लोक ॥ पञ्चनदं समारभ्य म्लेच्छाद्दक्षिणपूर्वतः॥ कम्बोजदेशो देवेशि! वाजिराशिपरायणः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ पञ्जाब से लेकर अफगानिस्थान तक हे पार्वती! कम्बोज देश है सो घोड़ों की गणना में श्रेष्ठ है.

१५ कर्णाट--श्लोक ॥ रामनाथं समारभ्य श्रीरङ्गान्तं शिवेश्वरि!॥ कर्णाटदेशो देवेशि! साम्राज्यभोगदायकः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ रामनाथ से लेकर श्रीरङ्ग तक कर्णाट देश है वह राज्यभोग दायक है. और दश लाख की आमद को साम्राज्य कहते हैं. यथा श्लोक ॥ शानि! महात्म्यं राज्यं स्यात् साम्राज्यं दशलक्षके ॥ शतलक्षे म... में इसी साम्राज्यमुच्यते ॥ १ ॥ इति वरदातन्त्रे ॥ यह देश दाक्षिण नाम से प्रसिद्ध है.

१६ कलिङ्ग--श्लोक ॥ जगन्नाथात्पूर्वभागे कृष्णातीरान्तगं शिवे! ॥ कलिङ्गदेशः संप्रोक्तो वाममार्गपरायणः ॥१॥ अर्थ ॥ जगन्नाथ से पूर्व दिशा में कृष्णा नदी के तीर तक को कलिंग देश कहते हैं, जो वाममार्ग में परायण है ॥ १ ॥ यहां जगन्नाथ से पूर्व भाग में होना सम्भव नहीं; क्योंकि वहां पर समुद्र है इसके लिये 'जॉनडॉसन्' अपनी किताब 'हिन्दू माइथॉलौजी' में कारोमण्डल कोस्ट के समीप का प्रान्त लिखते हैं जो उड़ीसा के दक्षिण का गोदावरी नदी तक का देश होसक्ता है जिसको उत्तरी सरकार भी कहते हैं; इस देश को कलिङ्ग वंश के क्षत्रियों के निवास से कलिङ्ग देश कहते थे.

१७ कश्मीर--अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है; जिसको अब काश्मीर कहते हैं.

१८ कामरूप--इस देश को इस समय काँगरू देश कहते हैं जिसकी राजधानी प्राग्ज्योतिष थी; अब यह देश आसाम में गिना जाता है.

१६ कालवन--

२० कुन्तल--श्लोक ॥ कामगिरिं समारभ्य द्वारकान्तं महेश्वरि! ॥ श्रीकुन्तलाभिधो देशो वर्णितः शक्तिसङ्गमे ॥ १ ॥ अर्थ ॥ कामगिरि से लेकर द्वारका तक हे पार्वती! कुन्तल नाम का देश शक्तिसङ्गमतन्त्र में कहा है ॥१॥ अङ्गरेजी पुस्तक में महाराष्ट्र का दक्षिणी हिस्सा लिखा है जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुरी (पैठण) थी पीछे से कल्याणी (कल्याण) में राज्य करनेवाले चौलुक्य अपने को कुन्तल देश के राजा मानते थे.

२१ कुरु--श्लोक ॥ हस्तिनापुरमारभ्य कुरुक्षेत्राच्च दक्षिणे ॥ पञ्चालपूर्वभागे तु कुरुदेशः प्रकीर्त्तितः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हस्तिनापुर से लेकर कुरुक्षेत्र के दक्षिण और पञ्चालदेश के पूर्वभाग को कुरुक्षेत्र कहते हैं. यह थानेश्वर के आसपास है जिसमें कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध है.

२२ कुलात--यवन देश विशेष, जो किलात नाम से प्रसिद्ध है.

२३ केतुक--

२४ केरल--इसी देश को उग्र भी कहते थे,'उग्राः केरलपर्यायाः' इति हेमचन्द्रः। वर्तमान कनाड़ा (कानड़ा, कन्नड़देश) और उससे मिले हुए कुछ अंश मलाबार का नाम केरल देश था (कावेरी से पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच का देश.)

२५ कोशल--यह उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल नाम के दो देश थे, जिनमें उत्तर कोशल अयोध्या के राज्य को कहते थे और दक्षिण कोशल उड़ीसा से दक्षिणपश्चिम में विन्ध्य के निकट था.

२६ खुरासान--यवन देश विशेष, एक सूबे का नाम है, और अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

२७ ख्वारजम--यवनदेश विशेष, एक सूबे का नाम है और अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

२८ गक्खर--यवनदेश विशेष, जो इसी नाम से प्रसिद्ध है और वहां के रहनेवाले गक्खरी कहलाते हैं.

२९ गान्धार—पञ्जाब का कुछ पश्चिमी हिस्सा और अफगानिस्थान का पूर्वी हिस्सा मिलकर पहिले गान्धार देश कहलाता था जिसकी सीमा पश्चिम में लमगान और जलालाबाद, उत्तर में स्वात और बुनेर की पहाड़ियां, पूर्व में सिन्ध नदी और दक्षिण में काला बाग के पहाड़ होने चाहिये. शब्दार्थचिन्तामणिकोश में कन्दहार को गान्धार लिखा है परन्तु अंगरेज विद्वानों के मत से यह विरुद्ध है.

३० गोनर्द—वराहमिहर के अनुसार गोनर्द दक्षिण के किसी देश का नाम होना चाहिये परन्तु इसका ठीक पता नहीं लगता (गोनर्द एक वंश का भी नाम था जिसने कश्मीर पर राज्य किया था) तथा दक्षिण में गोनर्द नाम का एक पर्वत भी है उसके नाम से देश का नाम होना भी संभव है.

३१ चीन—प्रसिद्ध चीन देश; जो इसी नाम से प्रसिद्ध है.

३२ चोल--श्लोक ॥ द्रविडतैलंगयोर्मध्ये चोलदेशः प्रकीर्त्तितः ॥ अर्थ–द्रविड़ और तिलंगाना के बीच के देश को चोल देश कहते थे जॉनडॉसन् अपनी पुस्तक 'हिन्दूमाइथॉलोजी' में इस देश को हिन्दूस्थान के दक्षिण में तञ्जोर के निकट होना लिखते हैं जहां से कारोमण्डल कोस्ट शुरू होता है.

३३ जंगल--बीकानेर के राज्य में जंगल नामक नगर था जिससे बीकानेर के राजा अब तक 'जंगल धरा के बादशाह' कहलाते हैं अथवा वन प्रदेश में बीकानेर का राज्य जमाया गया जिससे 'जंगलधरा के बादशाह' कहलाते हैं.

३४ जालन्धर--व्यासा और सतलज नदियों के बीच का प्रदेश.

३५ टक--पञ्जाब का एक हिस्सा जो कश्मीर से दक्षिण पश्चिम को है. राजा अलखान ने यह देश कश्मीर के राजा को दिया था.

३६ डाहल--चेदि देश का यह दूसरा नाम है, जब्बलपुर के आसपास के देश को चेदि कहते थे जिसकी राजधानी त्रिपुर (तेवर) थी.

३७ तंगण--वराहमिहर ने हिन्दुस्थान के उत्तरपूर्वी विभाग में रहनेवाली तंगण नाम की जाति लिखी है, यदि यह शब्द तंगण के लिये होवे तो दक्षिण में एक देश का नाम है.

३८ तार्जिक--जिसको तापिक भी लिखा है जिसका आधुनिक नाम ताजिक हैं, प्राचीन काल में आरबों को ताजिक कहते थे इस कारण से अरबस्थान का नाम 'तार्जिक' होना संभव है. आर्यावर्त्त में इसनाम का देश नहीं पाया जाता.

३९ ताम्रलिप्त--वर्तमान 'तमलक' प्रदेश जो सेलाई नदी और हुगली नदी के संगम के पास है.

४० तुपार---तुखार नामक म्लेच्छदेश; वराहमिहर के अनुसार 'तुषार' हिन्दुस्थान के उत्तर पश्चिमी हिस्से के एक देश का नाम था इस देश के राज्यकर्त्ता तुपार जाति के थे इससे यह नाम प्रसिद्ध हुआ.

४१ तूर्ण—

४२ तैलंग—श्लोक ॥ श्रीशैलं तु समारभ्य चोलेशान्मध्यभागतः। तैलंगदेशो देवेशि! ध्यानाऽध्ययनतत्परः ॥ १ ॥ अर्थ-श्रीशैल से लेकर चोल-देश के मध्यभाग तक हे पार्वती! तैलंग देश है जहां के निवासी ध्यान में और पढने में तत्पर रहते हैं ॥ १ ॥ इसका प्राचीन नाम आन्ध्र देश था.

४३ त्रिगर्त—सुशर्मा राजा का देश जिसको इस समय जलन्धर कहते हैं। पञ्जाब का पूर्वी हिस्सा जिसमें अधिकतर सतलज और सरस्वती नादियों के बीच का प्रदेश होना चाहिये इस देश में तीन नदियें और तीन शहर (जालन्धर-धोव-कांगड़ा) होने के कारण इसको त्रिगर्त कहते हैं.

४४ दशेरक—वराहमिहर के अनुसार तो 'दशेरक' या 'दाशेरक' हिन्दुस्थान के उत्तर में रहनेवाली एक जाति का नाम था, यदि देश का नाम हो तो जिस देश में वह जाति निवास करती थी उसी देश का नाम 'दशेरक' होना चाहिये, परन्तु शब्दार्थचिंतामणि कोश में मरुदेश का नाम 'दशरेक' लिखा है.

४५ दार्व—वराहमिहर हिन्दुस्थान के उत्तर पूर्वी विभाग में रहनेवाली एक

जाति का नाम दार्व लिखते हैं जिनके निवास से यदि यह कोई देश का नाम होवे तो वह देश हिन्दुस्थान के ईशानकोण में चीन के पूर्व भाग में होना चाहिये.

४६ द्रविड़—श्लोक ॥ कर्णाटाश्चैव तैलङ्गा गुर्ज्जरा राष्ट्रवासिनः। आन्ध्राश्च द्राविडाः पञ्च विन्ध्यदक्षिणवासिनः ॥ १ ॥ इतिस्कन्दपुराणम् ॥ अर्थ ॥ कर्णाट, तैलङ्ग, गुर्जर, राष्ट्र, (महाराष्ट्र) और आन्ध्र विन्ध्याचल से दक्षिण दिशा में इन पांच देशों में निवास करनेवालोंको पञ्चद्राविड़ कहते हैं. इससे तो उक्त पांचों देशों को द्रविड़ संज्ञा पाईजाती है जो मदरास से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हुआ है.

४७ धाटि—इसका अपभ्रंश 'धाट' मालूम होता है जो भारतवर्ष के पश्चिमी भाग में बाढमेर से आगे पायाजाता है जहांके घोड़ों का उत्तम होना प्रसिद्ध है.

४८ नेपाल—अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

४९ पञ्चनद—पञ्जाब.

५० पञ्चाल—पञ्चाल क्षत्रियों के निवास से देश का नाम पञ्चाल प्रसिद्ध हुआ है, और विष्णुपुराण के चौथे अंश में १९ वें अध्याय के मत से राजा हर्यश्व के मुद्गल, सृञ्जय, बृहदिषु, प्रवीर और काम्पिल नाम के पांच पुत्र हुए सो पिता ने कहा कि मेरे आधीन पांचों देशों की रक्षा करेंगे इसीसे उन पांचों का नाम 'पाञ्चाल' हुआ जिससे यह पाञ्चाल देश प्रसिद्ध है, इसकी सीमा तन्त्रशास्त्र में इस प्रकार लिखी है ॥ श्लोक ॥ कुरुक्षेत्रात् पश्चिमे तु तथा चोत्तरभागतः। इन्द्रप्रस्थान्महेशानि! दशयोजनकद्वये ॥ १ ॥ पञ्चालदेशो देवेशि! सौन्दर्यगर्वभूषितः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ कुरुक्षेत्र से पश्चिम तथा उत्तर के भाग में हे पार्वती! दिल्ली से १२ योजन पर सुन्दरता के गर्व से भूषित ऐसा पाञ्चाल देश है ॥ और राजशेखर के कथनानुसार गङ्गा और यमुना के बीच का देश 'दुआब' का नाम पाञ्चाल होना चाहिये.

५१ पाण्ड्य—श्लोक ॥ कम्बोजाद्दक्षभागे तु इन्द्रप्रस्थाच्च पश्चिमे। पाण्ड्यदेशो महेशानि! महाशूरत्वकारकः ॥ १ ॥ कम्बोज से दक्षिण भाग में और दिल्ली से पश्चिम में हे पार्वती! बहुत शूरवीरोंवाला पाण्ड्य देश है, 'जॉनडॉसन्' का मत इससे विरुद्ध है क्योंकि वह इस देश को हिन्दुस्थान के दक्षिण में लिखता है जिसकी राजधानी मदुरा थी.

५२ पेशोर—यह पिशावर शहर का नाम है जो भारतवर्ष के उत्तरीभाग में विद्यमान है.

५३ प्रस्थल—

५४ प्राग्ज्योतिष—एक शहर का नाम है जो काँगरू देश में नरकासुर की राजधानी थी जिस नरकासुर को श्रीकृष्ण ने मारा था ॥ श्लोक ॥ तत्रैव हि स्थितो ब्रह्मा प्राङ् नक्षत्रं ससर्ज ह। ततः प्राक्ज्योतिषाख्येयं पुरी शक्रपुरीसमा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ वहां स्थित होकर ब्रह्माने पहिले नक्षत्र बनाये थे इसकारण से उस नगर का नाम प्राग्ज्योतिष हुआ जो इन्द्र की पुरी (अमरावती) के समान है.

५५ प्राच्य—शरावती नदी की सीमा से पूर्व और दक्षिण का देश.

५६ फारस—पारस देश जिसको इस समय परशिया कहते हैं वहां घोड़े बहुत अच्छे होते हैं.

५७ बग्गड़—यह प्रान्त इस समय 'डूंगरपुर, बांसवाड़ा' के राज्यों में बटा हुआ है; जिसको इस समय वागड़ कहते हैं.

५८ वङ्ग—श्लोक ॥ रत्नाकरं समारभ्य ब्रह्मपुत्रान्तगं शिवे! । वङ्गदेशो मया प्रोक्तः सर्वसिद्धिप्रदर्शकः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ समुद्र से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी तक हे पार्वती! मैंने वङ्ग देश कहा है; वह सर्व सिद्धियों को दिखानेवाला है, (वङ्गाल का पूर्वी हिस्सा).

५९ बदक्शां—यवन देश विशेष, जो अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

६० बल्क—यह बलख का नाम मालूम होता है; जो अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

६१ बुलगांन—यवन देश विशेष.

६२ ब्रह्मा—ब्रह्मा भारतवर्ष के पूर्व में अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

६३ मगध—श्लोक ॥ व्यासेश्वरं समारभ्य तप्तकुण्डान्तगं शिवे! । मगधाख्यो महादेशो यात्रायां न हि दुष्यति ॥ १ ॥ अर्थ ॥ व्यासेश्वर से लेकर तप्तकुण्ड पर्यन्त हे पार्वती! यात्रा में दूषित नहीं है ऐसा मगध देश है ॥ १ ॥ जिसकी राजधानी पटना थी.

६४ मद्र—श्लोक ॥ वैराटपाण्ड्ययोर्मध्ये पूर्वदक्षक्रमेण तु । मद्रदेशः समाख्यातो माद्री हा तत्र तिष्ठति ॥ १ ॥ वैराट से पूर्व और पाण्ड्य से दक्षिण इनके बीच में मद्र देश है जहां अहो! माद्री स्थित है ॥ १ ॥ अंगरेजी पुस्तकों में व्यासा और झेलम नदियों के बीच के देश को 'मद्र' लिखा है.

६५ मरु—मारवाड़ जहांके ऊंट उत्तम होते हैं.

६६ महाराष्ट्र—नर्मदा और कृष्णा नदी के बीच का प्रदेश जहां मराठीभाषा

बोली जाती है.

६७ मालव—

६८ मिथिला—श्लोक॥ गण्डकीतीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे॥ विदेहभूः समाख्याता तैरभुक्ताभिधः स तु ॥ १ ॥ अर्थ ॥ गण्डकी नदी की तीर से चम्पारण्य तक हे पार्वती (विदेह) जनकभूमि है जिसको तिरहुत भी कहते हैं.

६९ मुर्गाब—रूसीतुर्किस्थान की एक नदी जो अफगानिस्थान के सफेदकोह नामक एक पहाड़ में से निकलती है.

७० मुलतान—श्लोक॥ करतोयां समारभ्य हिंगुलाजान्तकं शिवे॥ मुलतानदेशो देवेशि महाम्लेच्छपरायणः ॥ १ ॥ अर्थ-अटक नदी से लेकर हिंगु लाज तक हे पार्वती! महाम्लेच्छ देश 'मुलतान' है ॥ १ ॥ यह अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

७१ मूलिक—पुराणों के अनुसार दक्षिण का एक देश. आन्ध्रवंश के राजा गौतमी पुत्र सातकर्णी के आधीन के देशों में से एक 'मुलक' देश भी था ऐसा उसीके पुत्र मूलू भाई के लेख से पाया जाता है.

७२ मूशिक—मलाबार किनारे का क्वीलोन और कन्याकुमारी के बीच के देश.

७३ मेवात—यह अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है.

७४ लम्पाक—काबुल नदी के उत्तर का देश जो'लमगान' नाम से प्रसिद्ध है.

७५ लमगान—यवन देश विशेष, जिसका संस्कृत में 'लम्पाक' नाम था.

७६ वनायु—देश विशेष, जहां के घोड़े उत्तम होते हैं.

७७ वाल्हीक—श्लोक ॥ कम्बोजदेशमारभ्य महाम्लेच्छात्तु पूर्वगे । वाल्हीक देशो देवेशि अश्वोत्पत्तिपरायणः ॥ १ ॥ अर्थ-कम्बोज देश से लेकर फारस से पूर्व में हे पार्वती घोड़ों की उत्पत्ति में श्रेष्ट वाल्हीक देश है ॥ १ ॥ इसको इस समय बलख कहते हैं.

७८ वासक—

७९ विदर्भ—श्लोक॥ भद्रकाली महापूर्वे रामदुर्गाच्च पश्चिमे॥ श्रीविदर्भाभिधो देशो वैदर्भी तत्र तिष्ठति ॥१॥ अर्थ—महाभद्रकाली से पूर्व रामदुर्गा से पश्चिम में श्रीविदर्भ नामक देश है, जहां वैदर्भी देवी स्थित है ॥ १ ॥ इसको इस समय 'बरार' कहते हैं जो हैदराबाद के नवाब ने गवर्नमेंट को फौजखर्च में दिया है इसकी प्राचीन राजधानी 'कुण्डिनपुर'(कुण्डापुर) थी.

८० विन्ध्य—विन्ध्याचल का प्रदेश.

८१ विराट्—श्लोक ॥ वैदर्भदेशादूर्ध्वं च इन्द्रप्रस्थाच्च दक्षिणे। मरुदेशात्पूर्वभागे विराटः परिकीर्त्तितः ॥ १ ॥ अर्थ-विदर्भ देश से ऊपर, दिल्ली से

दक्षिण और मरुदेश (मारवाड़) से पूर्व में विराट देश है ॥ १ ॥ इसकी राजधानी विराट नगर होने से विराट देश प्रसिद्ध हुआ था, जिसको मत्स्यदेश भी कहते थे, यह विराटपुर वैराटदेश के नाम से इस समय जैपुर में है.

८२ शतद्रू—सतलज नदी अथवा उसके किनारे का देश.

८३ शाल्व—महाभारत में एक देश का नाम लिखा है परन्तु इसका पता नहीं लगता.

८४ सगर....

८५ संचोर-जो इस समय 'साचोर' के नाम से जोधपुर का एक परगना प्रसिद्ध है.

८६ समस्थली—अन्तर्वेद देश, जिसकी राजधानी मेनपुरी थी.

८७ सावर—यह देश का नाम नहीं पायाजाता किंतु गाम का नाम होसकता है; अथवा सौवीर का 'सावर' लिखा हो तो उत्तरी सिन्ध का नाम होना चाहिये.

८८ सुमील—

८९ सूकर(क्षेत्र)—सोरम नामक गंगाघाट तथा सोरम प्रान्त का नाम सूकर है.

९० सूर्यारक....

९१ सौराष्ट्र—श्लोक॥ कोंकणात्पश्चिमे तीर्थे समुद्रप्रान्तगोचरं॥ हिंगुलाजान्तको देवि! दशयोजनदेशकः ॥ सौराष्ट्रदेशो देवेशि! तस्मात्तु गुर्जराभिधः ॥ १ ॥ अर्थ-कोंकण से पश्चिम का तीर्थ जो समुद्र प्रान्त तक मालूम होता है, और जिसका अन्त हिंगुलाज तक है ऐसा दश योजन में फैलाहुआ हे देवि! सौराष्ट्र नामक देश है, उसके आगे गुर्जर नामक देश है; यह काठियावाड़ के दक्षिणी भाग का नाम है.

९२ स्तवकार—

९३ स्वर्णगिरि....यह मारवाड़ के एक प्रान्त 'जालोर' के पर्वत का नाम है इसी पर्वत के नाम से चहुवाणों की एक शखा 'सोनगिरा' प्रसिद्ध हुई है.

इस ग्रन्थ में देश आदि जितने प्रसिद्ध नाम आये हैं उनको छांट कर यह नक्शा बनादियागया है परन्तु फिर भी संभव है कि दृष्टि दोष से कोई नाम बाकी रहगया होवे तो पाठकों से प्रार्थना है कि ऊपर नक्शे में लिखेहुए ग्रन्थों के आधार से उनका अर्थ समझ लेवें हमको जिन जिन नामों का अर्थ नहीं आया उन को खाली छोडदिया है. बाकी सब के अर्थ लिख दिये गये हैं. परन्तु इन अर्थों में ग्रन्थकर्त्ताओं के मतभेद हैं सो भी जहां तक होसका तहां तक दिखाते आये हैं, परन्तु फिर भी कहीं भ्रम प्रतीत होवे तो उनका ही मत भेद जानना चाहिये. हम इसके दोष भागी नहीं हैं भारतवर्ष की प्रत्येक दिशाओं में जो जो देश वराहमिहर ने लिखे हैं उसीके अनुसार बहुधा

उन्हीं नामों को ग्रन्थकर्त्ता का लिखना पायाजाता है इसकारण से हम प्रक-
रण को वाराही संहिता (बृहत्संहिता) अ. १४ वें अध्याय में देख लेवें जहां ए-
क ही जगह सब देशों के नाम लिखहुए हैं ॥

अब पाठकों से निवेदन कियाजाता है कि संसार भर में किसी कार्य का
कियाजाना कठिन है और उस कियेहुए कार्य में दोष निकालदेना बहुत सु-
लभ है जिसके लिये मारवाड़ में कहावत प्रसिद्ध है कि-

बणा तो नहीं जाणां पण खोट दुरसा मालाकासैं भी काढ देवाँ हाँ ॥

इसका प्रयोजन यह है कि हम तो कुछ कविता नहीं कर जानते परन्तु दु-
रसा और माला चारणों में प्रसिद्ध कवि हुए हैं उनकी कविता में भी दोष
निकालदेते हैं, सो ऐसे दोषदर्शी तो वेदव्यास महाराज के ग्रन्थों में भी दोष
देसक्ते हैं परन्तु छिद्रदर्शी होना विद्वानों का काम नहीं है इससे इस टीका में
जहां कहीं दोष भी मिले तो उसको शुद्ध करलेवें.

यहां पर यह भी जानना अवश्य है कि कोई विद्वान् हमारे पीछे इस ग्र-
न्थ पर टीका बनावेगा वह इस टीका से उत्तम होवेगी, क्योंकि हमारा परि
श्रम तो उनको तैय्यार मिलेगा, और आगे विचारने को सावकाश अधिक
मिलेगा परन्तु जो परिश्रम प्रथम टीकाकार को होता है वह पिछले टीकाका
रों को नहीं होता जिसके अनेक टीकावाले मनुस्मृति, गीता, भागवत और
नैषध आदि संस्कृत के ग्रन्थ और विहारीसत्तसई आदि देशभाषा के ग्रन्थ
साक्षी हैं, इस कारण इस ग्रन्थ की इस प्रथम टीका में कोई दोष भी मिले
तो विद्वान् लोक क्षमा करैं; और संस्कृत के अपठित लोक तो अपनी तृणवत्
बुद्धि के लिये इस ग्रन्थ को अग्निवत् जानकर दूर ही रहैं ॥

अब हम यहां पर आशिया गोत्र के चारण, जोधपुर के कविराजा मुरारि
दान का धन्यवाद करके इस अध्यपीठिका को समाप्त करते हैं कि जिनकी
सहायता से इस ग्रन्थ का पूर्वार्ध छपकर तय्यार होगया है और उत्तरार्ध के
छपजाने की भी पूर्ण आशा होगई है, इतना ही नहीं; किन्तु इन्हीं उक्त क-
विराजा की प्रेरणा से बुन्दी के पण्डित गङ्गासहाय की उत्तम सहायता मि-
ल कर शुद्ध प्राकृत भाषा की टीका निस्सन्देह हुई है. अब आगे यदि शरीर
विद्यमान और स्वस्थ रहा तो बाकी के विषय उत्तर पीठिका में लिखेजावेंगे ॥

ओ३म्

मध्यपीठिका

जिसमें इस ग्रंथ में आयेहुए साहित्यविषयों की समालोचना, चारणों की उत्पत्ति और वरताव, तथा भारतवर्ष के प्राचीन देशों के संस्कृत नामों के अर्थ और उनके वर्तमान पते हैं ॥

पहिले हमारा विचार इस ग्रंथ की टीका में दो पीठिका लिखने का था जिनमें पूर्वपीठिका तो लिख दीगई और उसी पूर्वपीठिका में उत्तरपीठिका लिखने का नियम कियागया है और विचार था कि उसी उत्तरपीठिका में साहित्य और इतिहास संबंधी अनेक विषय लिखकर टीका की इतिश्री करेंगे सो अब भी ऐसा ही विचार है, परंतु इस समय में हमारे शरीर में मूत्र में शर्करा (शक्कर) जाने का असाध्यरोग होजाने के कारण निर्बलता अधिक बढती जाती है, इस कारण से अन्तिम पीठिका लिखने के समय पर्यन्त शरीर रहने का विश्वास नहीं रहा, इसीसे यह विचार हुआ कि थोड़े से अधिक आवश्यकीय विषय लिखकर एक मध्यपीठिका लिखदीजावे जिससे इस ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) के विचार इस ग्रंथ के बनाने में अपूर्ण रहगये इसीप्रकार हमारे भी सभी विचार अपूर्ण न रहैं तो ठीक है.

इस ग्रंथ की चतुर्थराशि की टीका बनाये पीछे हमारा विचार यह पीठिका लिखने का हुआ, अर्थात् विक्रमी संवत् १९५७ श्रावण कृष्ण १ को इस पीठिका के लिखने का कार्य प्रारंभ किया गया.

इस चतुर्थराशि की टीका बनाने में मुझे अनेक विघ्न उपस्थित हुए, इसी कारण से चार महीनों के कार्य में अनुमान दो वर्ष व्यतीत होगये, अर्थात् प्रथम तो इस चतुर्थराशि की थोड़ी सी टीका बनाने पाया था, उसी अवसर में संवत् १९५५ के कार्तिक मास में श्रीमान् उदयपुराधीश महाराणा श्रीफतहसिंह साहब की प्रकृति अधिक अस्वस्थ होजाने के कारण मुझे उदयपुर जानापड़ा, वहांसे शाहपुर होकर पीछे आते ही पौष शुक्ला द्वादशी की रात्रि को मुझे पक्षाघात (फालिज) का रोग होकर दाहिने हाथ पैर निकम्मे होगये थे, उस समय फिर इस ग्रंथ की टीका बनाने की आशा नहीं रही थी परंतु उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की अपरंपार लीला से वह रोग प्रतिदिन घटतागया, तथा हाथ पैर पीछे यथावत् होगये और उस रोग के समय भी स्मरणशक्ति यथावत् बनी रहने के कारण एक वर्ष पीछे फिर इस चतुर्थ राशि की टीका बनाने का कार्य प्रारंभ कियागया, परंतु छप्पन के संवत् का घोर दुर्भिक्ष होजाने के कारण मेरे ग्राम की प्रजा के पालन में तत्पर रहना पड़ा. फिर थोड़े ही दिन पीछे मस्तिष्क (दिमाग) संबन्धी अधिक परिश्रम से स्वा-

स्थ्य बिगड़ना देखकर इस टीका के कार्य को पुनः छोड़ना पड़ा, तत्पश्चात् विक्रमी संवत् १९५७ आषाढ कृष्ण १ गुरुवार को हमारी माता शृङ्गार बाई का ६९ वर्ष की अवस्था में परलोकवास होजाने के कारण टीका के कार्य में फिर भी विक्षेप रहा, परंतु वारंवार टीका बनाने के कार्य को करते रहने के कारण अब वह चतुर्थराशि की टीका का कार्य समाप्त होने के पीछे उपरोक्त कारण से कि टीका की समाप्ति तक शरीर रहै वा न रहै तो ग्रंथकर्ता के विचार अपूर्ण रहगये इसी प्रकार हमारे विचार भी अपूर्ण रहजाने का संभव है इस कारण से आवश्यक विषय तो लिख ही देने चाहिये इस कारण इस मध्यपीठिका के लिखने का विचार हुआ सो लिखीजाती है ॥

॥ साहित्यविषय ॥

साहित्यविषय के अङ्ग उपाङ्गों का विशेष लिखना तो अनावश्यक है क्योंकि प्राचीन अनेक विद्वानों ने अपने अपने अनेक ग्रंथों में उनको स्पष्ट करके काच के समान करदिये हैं जिनका वारंवार लिखना केवल पिष्टपेषण है, परंतु इस ग्रंथ में आयेहुए अङ्गों के दोष मिटाने की सूचनामात्र पाठकों के जानने के लिये लिखदीजाती है, अथवा समालोचना कीजाती है ॥

॥ अलंकार ॥

हमारे मत से अलंकारविद्या अनादि है, क्योंकि वेद अनादि मानाजाता है, और वेदों में उपमा आदि अलंकार मिलते हैं तो अलंकार भी अनादि भी हुए, इनके लक्ष्य लक्षण बनाकर पिछले पंडितों ने स्पष्ट किये इससे अलंकार नवीन नहीं माने जासकते, क्योंकि इनका अस्तित्व वेद में विद्यमान है, यों तो पिछले पंडितों ने भाष्य बनाकर वेद के अर्थ को भी स्पष्ट किया है जिससे वेद नवीन नहीं समझे जासकते, इसीप्रकार अलंकारों को भी समझना चाहिये. इस लिखने से हमारा प्रयोजन शास्त्रार्थ करने का नहीं है केवल मंतव्य बतादिया है। इस ग्रंथ में अलंकार तो सभी प्रकार के हैं, परंतु उपमा, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, रूपक और लोकोक्ति इन पांच अलंकारों का वर्णन सब से अधिक है, और कथाभाग में इन्हीं पांच अलंकारों का अधिक वर्णन कियाजाता हैं, इनमें अन्य अलंकारों के लिये लिखना तो अनावश्यक है केवल अतिशयोक्ति अलंकार के कारण अलंकारविद्या को नहीं जाननेवाले लोग कवियों पर मिथ्यावादी होने का कलङ्क लगाया करते हैं, इतना ही नहीं किंतु वे अपठ लोग कवियों को गप्पी लोग भी कहाकरते हैं, परंतु यथार्थ में देखाजावे तो यह उनका दोष भी नहीं है, क्योंकि जो जिस वस्तु को नहीं जानता है वह उसकी सदैव निन्दा कियाकरता है जिसके लिये पण्डित विष्णुशर्मा ने पंचतंत्र में लिखा है—

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निंदां नितरां करोति ।
यथा किराती करिकुम्भजातां मुक्तां परित्यज्य विभर्ति गुञ्जाम् ॥१॥

भाषार्थ– विशेष करके जो जिसके गुण को नहीं जानता है वह उसकी स दैव निंदा किया करता है, जैसे भद्र जाति के हस्तियों के कुंभस्थल से उत्पन्न हुए मोतियों को छोड़कर भीलनियां (भीलों की स्त्रियां) घूंगची धारण करती हैं ॥१॥ परंतु उन लोगों को जानना चाहिये कि जहां पर लोकसीमा का उल्लंघन होता है वहीं पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है, जैसे इसी ग्रंथ में है कि "डगमग्गि शिलोच्चय शृंग डुले, झगमग्गि कृपानन अग्गि झरी।" यहां पर्वतों के शिखर हिलकर इधर उधर होजाने के वर्णन में अतिशयोक्ति अलंकार है। इसीप्रकार "हुव तिल तिल शीशोद हेति हत" यहां शीशोदिया भीमसिंह का शस्त्रों से तिल तिल के समान कटकर युद्ध में माराजाना लिखा सो तिल तिल के समान कटने में अतिशयोक्ति अलंकार है ॥ यह अलंकार सब अलंकारों का पोषक और श्रोता लोगों को अत्यन्त रुचिकारक तथा काव्य का पोषक होने के कारण संसार भरके लोगों ने इस अलंकार को आदर दिया है, यहां तक कि संसार भर का कोई ग्रंथ अथवा संसार भरकी कोई भाषा इस अलंकार से खाली नहीं है, किंतु न्यूनाधिक सभी में आकाश के समान व्यापक होरहा है. देखो, मन्वादिक धर्मशास्त्र, वाल्मीकीयरामायण और महाभारतादि ऐतिहासिक ग्रंथ, पुराण, उपपुराण, तंत्रशास्त्र, काव्य, नाटक, भाण, चम्पू आदि संस्कृत के ग्रंथ, और आज पर्यंत बनेहुए भाषा के ग्रंथ तथा ईसाइयों का धर्मशास्त्र 'इंजील' और मुसल्मानों का धर्मशास्त्र 'कुरान' आदि सभी ग्रंथों में अतिशयोक्ति अलंकार है, जिसके उपरोक्त ग्रंथ ही साक्षी हैं. देखो, मुसल्मानों के पैगम्बर असाम और अमामहुसेन (जिनके इस समय तक ताजिये निकाले जाते हैं) शत्रुओं से युद्ध करने के लिये खड़े हुए उस समय शत्रुओं ने इनको ललकारा कि खड़ेरहना भाग मत जाना इसके उत्तर में अमामहुसैन ने कहा कि 'अगर जल्जला भी हो तो इतनी जमी नां हिलै' इसका मतलब यह है कि मैं तो क्या भागूं लेकिन भूकम्प होवे तो भी मैं जहां खड़ा हूं इतनी भूमि नहीं हिलगी। यह अमामहुसेन के मरसियों में लिखाहुआ है जिसको पाठक लोक देखलेवें कि कैसा अतिशयोक्ति अलंकार है। और यदि अंगरेजी कविता में अतिशयोक्ति अलंकार देखना होवे तो शेक्सपियर आदि के नाटकों को देखें। यह तो संसार भरके ग्रंथों का प्रकरण हुआ, अब आगे लोकभाषा की कहावतों को भी देखना चाहिये कि 'भूखें मरगया, प्यासे मरगया, धूप में जलगया, सरदी में गलगया' इत्यादि बातें प्रतिदिन की बोलचालमें आबाल वृ-

क्या पण्डित और क्या मूर्ख हिंदू, मुसल्मान और ईसाई सभी कोई बोलते हैं जिनको सोचना चाहिये कि मर जाने और गले पीछे क्या कोई बोल सकता है अर्थात् कदापि नहीं बोलसकता, यह केवल भूख, प्यास, गर्मी और सरदी की अधिकता बतानेके लिये अतिशयोक्ति अलंकार का कथन है। इसीप्रकार

१अमुक पुरुष दौड़ने में हवा होगया.

२अमुक घोड़ा बिजली होगया, अथवा काच का पलका (प्रतिबिम्ब) होगया, तथा रेल होगया.

३अमुक पुरुष नदी पैरने में सीधा तीर के माफिक गया.

४अमुक पुरुष ने तार के माफिक खबर पहुंचाई.

ये कहावतें अपने अपने विषयों की अधिकता बताने के अर्थ अतिशयोक्ति अलंकार की हैं, नहीं तो ऐसा हो नहीं सकता, इतना ही नहीं परंतु

५लड़कों ने अपने एक खेल का नाम 'चीलझपट्टा' रख छोड़ा है, जिसका अर्थ चील के समान झपट मारना है सो बालक चील के समान झपट नहीं मार सकते, परंतु दौड़ने की अधिकता बताने के अर्थ यह कथन अतिशयोक्ति अलंकार का है।

६छोटी बात बढ़कर भयंकर होजाने के विषय में 'सींदरी का सांप होगया' ऐसा कहाजाता है॥

७मेघ को 'पलकदरियाव' कहते हैं। सो कैसी ही मूसलधारा से बरसे तो भी आंख टिमकारने के समय में नादियां (फारसीवाले नदी को दरियाव कहते हैं) नहीं बहासकता; क्योंकि यह समय बहुत ही सूक्ष्म है, परंतु मेघ की अधिकता दिखाने के हेतु इसको पलकदरियाव कहने की कहावत प्रसिद्ध हुई है॥

८लड़ाई के लिये कहाजाता है कि 'लोही की नादियां बहगईं' सो रक्त से नादियां कदापि नहीं बहसकती, परंतु लड़ाई की अधिकता बताने के लिये यह कहावत प्रसिद्ध हुई है.

९रोने की अधिकता बताने के लिये कहाजाता है कि 'आंसुओं की नादियां बहगईं' सो आंसुओं से नदियां कदापि नहीं बहसकतीं.

१०वर्षा की अधिकता दिखाने के लिये कहाजाता है कि 'मूसल धारा से वर्षा हुई अथवा होरही है'।

११ दूर की वस्तु के स्पष्ट दिखाई देने में दूरबीन की प्रशंसा में कहाजाता है कि 'केश केश गिन लेते हैं' सो जिन बालों की गणना साढे तीन करोड़ प्रसिद्ध है उनको समीप में बैठे भी नहीं गिन सकते सो दूरबीन से कैसे गिने जासकते हैं? परंतु यह दूरबीन की अधिकाई में कहावत है.

१२ शीघ्र भरनेवाले तालाब के लिये कहाजाता है कि 'अमुक (फलां) तालाब सूत के रेले से भरता है' सो सूत्र के रेले से कोई भी तालाब कभी नहीं भरसकता, परंतु शीघ्र भरजाने की अधिकता दिखाने में यह कहावत अतिशयोक्ति अलंकार की है। इसीप्रकार

१३ दुर्बल मनुष्य के लिये कहाजाता है कि 'उसके हाथ पैर तूली (तृणविशेष) होगये' सो ऐसा कभी नहीं होसक्ता।

१४ थकेहुए (दुर्बल) मनुष्य के लिये यह भी कहाजाता है कि 'वह थक कर डोरा होगया' सो मनुष्य का शरीर कैसा ही दुर्बल (कृश) होजावे तो भी डोरे के समान कदापि नहीं होसकता।

इत्यादि अनेक लोकोक्तियां संसार भर की सभी भाषाओं में न्यूनाधिक प्रचलित हैं, जिनमें से थोड़ी सी कहावतें यहां पर हमनें दिग्दर्शन न्याय के अनुसार लिख दी हैं, इन कहावतों से कवियों का कोई संबन्ध ही नहीं है तो भी इस प्रकार की कहावतें संपूर्ण लोक में स्वतः स्वभाव प्रचलित हैं सो इस प्रकार के कथन न्यूनाधिक सभी देशभाषाओं में है, परंतु यहां केवल दिग्दर्शन न्याय के समान थोड़ेसे लिखदिये हैं॥ अब विचारना चाहिये कि ऐसे सर्वव्यापि अलंकार को पाठकों की रोचकता के लिये कवियों ने अपने ग्रंथों में अतिशयोक्ति अलंकार को स्थान दिया तो उनका दोष क्या है? इस कारण से हमारा कथन है कि अतिशयोक्ति अलकार के वर्णन से कवियों को मिथ्यावादी होने का दोष लगाकर इससे अपनी अज्ञानता नहीं दिखानी चाहिये. और जो यह दोष लगाना ही है तो संसारभर से इस अलंकार की प्रवृत्ति उठादेनी चाहिये, यह अतिशयोक्ति का समाधान हमने सत्यता पूर्वक किया है जिसको काव्य के रसिक लोग भली भांति समझ सकते हैं, परंतु जो अरसिक हैं वे अलंकारविद्या से अजान होने के कारण फिर भी दोष देते नहीं रुकैं तो जैसे प्रमत्त की गाली खाकर मौन रहना पड़ता है, इसीप्रकार उन अरसिकों के वचनों को सुनकर कवि लोगों को मौन धारण करना चाहिये; क्योंकि अरसिकों से कवियों का कोई सम्बन्ध नहीं है जिसके लिये कालिदास महाकवि का कथन है कि

इतरपापफलानि यथेच्छया विलिखितानि सहे चतुरानन!॥
अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मालिखमालिखमालिख॥१॥

अर्थ— हे ब्रह्मा! अन्य पापों के फल तो अपनी इच्छा के अनुसार लिखे परन्तु अरसिक लोकों के साम्हने मैं अपनी कविता भेट करूं यह दोष मेरे मस्तक में मत लिख, मत लिख, मत लिख॥ १॥ इससे सिद्ध है कि कवियों से और अरसिकों से कोई सम्बन्ध ही नहीं है॥

॥ रस ॥

साहित्य में रस आठ हैं, परन्तु मतान्तर से नव भी माने जाते हैं. जिनके विभाव, अनुभाव, स्थायी, संचारी उद्दीपनादि के स्वरूप रसतरंगिणी नामक ग्रंथ में बहुत स्पष्ट करके लिखे हैं. और भाषाग्रंथों में भी बहुधा पायेजाते हैं, जिनको फिर यहां लिखना पुनरुक्त है ॥इनका वर्णन करना ग्रंथकर्ताओं की रुचि के आधीन है, अर्थात् जिस ग्रन्थकर्ता की रुचि जिस रस के साथ अधिक होती है वह उसी रसका अधिक वर्णन करता है ॥ सो इस ग्रन्थ में भी स्थल स्थल पर नव ही रसों का वर्णन है, परन्तु ग्रंथकर्त्ता (सूर्यमल्ल) की रुचि के अनुसार वीर, अद्भुत, भयानक और बीभत्स इन चार रसों का वर्णन अन्य रसों की अपेक्षा अधिक है ॥

॥ लक्षणा ॥

जहां मुख्यार्थ का बाध होता है वहां लक्षणा वृत्ति होती है. यह दो प्रकार की है, अर्थात् एक जहत्स्वार्था जिसको लक्षणलक्षणा भी कहते हैं । और दूसरी अजहत्स्वार्था जिसको उपादानलक्षणा भी कहते हैं. साहित्यदर्पण के मतानुसार इस लक्षणा के अनेक भेद हैं, जिनके साहित्याचार्योंने ८० भेद लिखे हैं ॥ सो इस ग्रंथ में इसका अधिकतर कथन है ॥

॥ व्यञ्जना ॥

लक्षणा मे जहां अर्थ नहीं लग सके वहां इनसे अतिरिक्त अर्थ जो बनावै उसको व्यञ्जनावृत्ति अर्थात् व्यङ्गय कहते हैं ॥ यह इस ग्रन्थ में लक्षणा की अपेक्षा न्यून आया है ॥ और जहां कहीं आया है वहां टीका में स्पष्ट कर के दिखा दिया गया है, अथवा दिखा दिया जावेगा ॥

॥ गुण ॥

साहित्य में काव्य के दश गुण मानेगये हैं परंतु वे सब ओज, माधुर्य और प्रसाद इन तीन गुणों के अन्तर्गत होजाते हैं । ये तीनों गुण इस ग्रन्थ में विद्यमान हैं, परंतु ग्रन्थकर्ता की रुचि के अनुसार माधुर्य और प्रसाद की अपेक्षा ओजगुण अधिक आया है ॥

॥ अनुप्रास ॥

अनुप्रासों के विषय में प्रथम राशि में ग्रन्थ के नियमों के प्रकरण में ग्रन्थकर्ता स्वयं लिखगये हैं, अतएव हमको यहां लिखने की आवश्यकता नहीं है ॥

॥ दोष ॥

काव्य में दोष दो प्रकार के मानेजाते हैं अर्थात् एक शब्ददोष जो कर्णकटु आदि हैं; और दूसरा अर्थदोष जो अपुष्टार्थ आदि है, इन दोनों प्रकार के दोषों

के अनेक भेद हैं जो चन्द्रालोक नामक ग्रंथ के दूसरे मयूख में अथवा काव्य-प्रकाश के सातवें उल्लास में स्पष्ट दिखायेहुए हैं, इनमें अनित्यदोष को टालना तो असंभव सा है, परंतु जो उत्तम कवि होते हैं वे नित्यदोष से अपने काव्य को बचाते रहते हैं सो इस ग्रंथकर्ता ने भी इसका पूरा विचार रक्खा है, परंतु हमारे विचार से निर्दोष काव्य करना असंभव ही है, क्योंकि वाल्मीकीयरामायण और महाभारतादि ग्रंथों में जहां कहीं दोष आते हैं वहां 'इत्यार्ष' अर्थात् यह ऋषि के वचन हैं यह कह कर समाधान करते हैं; और कालिदास, भारवि, माघ, दण्डि आदि बड़े २ कवियों के श्लोकों को छांट कर काव्यप्रकाशकार (मम्मट) ने दोषों के उदाहरणों में दिया है, इस अवस्था में अन्य कवियों की तो गणना ही क्या है? ॥

॥ नायिका भेद ॥

यह साहित्यविद्या का कोई जुदा अङ्ग नहीं है, परंतु शृंगार रस का आलम्बन होने के कारण प्राचीन कवियों ने बहुत बढावे के साथ इसका वर्णन किया है । संस्कृत में रसमञ्जरी और भाषा में रसिकप्रिया आदि अनेक ग्रंथों में विस्तार पूर्वक वर्णन है, परन्तु इस ग्रंथ में केवल एक जगह नायिका भेद का वर्णन है सो भी अन्यवर्णन के साथ ग्रंथकर्ता ने अपनी युक्ति के साथ वर्णन किया है ॥

॥ छन्द ॥

छन्दों का विषय प्रथमपीठिका में लिख दियागया इस कारण से फिर यहां लिखना पुनरुक्ति है ॥

यहां पर इस ग्रंथ में आयेहुए साहित्य के अङ्गों की बहुत ही संक्षेप से समालोचना की गई है ॥ अब आगे चारणों की उत्पत्ति और व्यवहार आदि का वर्णन किया जाता है ॥

॥ चारणों की उत्पत्ति और आचार ॥
॥ व्यवहार आदि वर्णन ॥

विष्णुपुराण के प्रथम अंश की तेरहवीं अध्याय के पचासवें श्लोक से आगे राजा पृथु के ब्रह्मयज्ञ में सूत का उत्पन्न होना लिखा है और इसीरीति से महाभारत के शान्तिपर्व में सूत की उत्पत्ति का वर्णन है, सो ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने उन्हीं सूत को चारणों के मूलपुरुष मानकर इस ग्रंथ (वंशभास्कर) में चारणों की जाति के साथ, पौराणिक और सूत पदों का प्रयोग किया है सो सूत की इस आदरणीय उत्पत्ति में तो हमको भी कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, परंतु उन्हीं सूत को चारणों के मूलपुरुष मानने में बहुत छानबीन क

रने पर भी, हमको कोई आर्षग्रंथ में कहीं पर प्रमाण नहीं मिला, और इस ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) को भी इसका प्रमाण मिलना नहीं पायाजाता, क्योंकि सूर्यमल्ल ने इसी ग्रंथ के तीसरे राशि के ६७ वें मयूख में भूमित्रक नामक सूत को वंश नष्ट होने का, काश्यपऋषि का शापदेना, और आर्यमित्र का नंदिकेश्वर को चराकर उसके वरदान से अवरी नामक नागकन्या से विवाह करके अपने कुल की वृद्धि करना, और उसी समय से सूतपद को छोडकर चारणपद को धारण करना, और उस अवरी के उदर से एकसौ बीस पुत्र उत्पन्न होने से चारणों के वंशमें १२० शाखाओं का होना, लिखा है, जहां काशी के एक राजा को भूमित्र का कथा सुनाना लिखकर उसी समय काश्यपका शाप देना लिखा है तहां उस राजा के नामकी जगह खाली छोड दी है सो यदि इसका प्रमाण सूर्यमल्ल को किसी ग्रन्थ में मिला होता तो राजा के नाम का स्थान खाली नहीं छोडते, इससे यही सिद्ध होता है कि चारणों के कुलगुरु और भाट आदि याचकों के कथनानुसार यह कथा लिखीगई है अथवा अन्य बडवाभाटों की पोथियों से यह कथा लीगई है जिस पर पूर्ण विश्वास नहीं होसकता यह तो हमने भी चारणों के कुलगुरु, भाट, मोतीसर, रावल, ढोली, आदि याचकों से चारणों को समुद्र के पोते वासुक के दोहिते अवरी के केड़ (वंश) आदि निशपण बिरुदाने में कहते सुने हैं, परन्तु ऐसी कथा किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में देखने में नहीं आई और ग्रंथों के प्रमाणों को छोडकर जनश्रुति के साथ अपने विचारों को दौडाना विद्वानों का मत नहीं है इस कारण इस विषय में हम सूर्यमल्ल से सहमत नहीं हैं, और अवरी के एकसौ बीस पुत्रों के कारण, चारणों के वंश को१२०शाखा होना लिखा सो भी सत्य नहीं है क्योंकि भिन्न भिन्न शाखायें होने के तो तीन कारण हैं अर्थात् प्रसिद्ध कार्य करने से, प्रसिद्ध पिता के नामसे और ग्राम के नाम से शाखाओं के नाम हुए हैं सो आगे स्पष्ट दिखाये जावेंगे. यहां यह प्रश्न उठता है कि जब तुम चारणों की ज्ञाति सम्बन्धी सूर्यमल्ल के लेख को सर्वांचीन नहीं मानते हो तो अन्य प्रामाणिक सत्य लेख कौनसा है? इसके उत्तर में चारणों के ज्ञाति संबंधी लेख जो हमको आर्ष ग्रंथों से मिले हैं वे नीचे लिखते हैं, जिससे चारणों की उत्पत्ति और आचार, व्यवहार आदि की प्राचीनता और पवित्रता स्पष्ट है, इन प्रमाणोंसे तो अनेक ग्रंथ भरेपड़े हैं, परन्तु सभी ग्रन्थों के प्रमाण लेनेसे तो बहुत बडा ग्रंथ बनता है इतना यहां अवकाश नहीं, इसकारण से अन्य सभी ग्रंथोंको छोडकर सर्वमान्य, परमपूज्य और जगत्प्रसिद्ध श्रीमद्भागवत वाल्मीकिरामायण और महाभारत इनतीनों ग्रंथोंके प्रमाणनीचेदियेजाते हैं

॥ चारणोंकी उत्पत्ति ॥

चारणों की उत्पत्ति सृष्टि सर्जन काल से है और इनकी उत्पत्ति देवताओं

में हुई है जिसका प्रमाण श्रीमद्भागवत का दियाजाता है कि, नारद मुनि को ब्रह्मा सृष्टिक्रम बताते हैं तहां के द्वितीय स्कंध की छठी अध्याय के बारह से तेरह तक के दो श्लोक नीचे लिखते हैं ॥

अहं भवान् भवश्चैव त इमे मुनयोऽग्रजाः ॥
सुरासुरनरा नागाः खगा मृगसरीसृपाः ॥१२॥
गंधर्वाप्सरसो यक्षा रक्षोभूतगणोरगाः ॥
पशवः पितरः सिद्धा विद्याध्राश्चारणा द्रुमाः॥१३॥

अर्थ–हे नारद मैं, तू, शिव, वे यह अग्रजमुनि, देवता, असुर, मनुष्य, नाग, खग, मृग, सर्प, ॥ १२ ॥ गंधर्व, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, भूतगण, उरग, पशु, पितर, सिद्ध, विद्याधर, चारण, वृक्ष, (ये सब हरि से हुए हैं) ॥ १३ ॥

यहां चारणों की उत्पत्ति मनुष्यों से भिन्न बताईगई इससे इनकी उत्पत्ति देवताओं में होना सिद्ध है "देवता शब्द स्त्री लिंग है परन्तु लोक रूढि से पुल्लिंग लिखाजाताहै" फिर ब्रह्मा नारद से कहते हैं सो इसी दूसरे स्कंध की छटी अध्याय के इकतालीस और बयालीस के दो श्लोक नीचे लिखे जाते हैं,

अहं भवो यज्ञ इमे प्रजेशा दक्षादयो ये भवदादयश्च ।
स्वर्लोकपालाः खगलोकपाला नृलोकपालास्तललोकपालाः॥४१॥
गंधर्व्वविद्याधरचारणेशा ये यक्षरक्षोरगनागनाथाः॥
ये वा ऋषीणामृषभाः पितॄणां दैत्येन्द्रसिद्धेश्वरदानवेंद्राः ॥४२॥

अर्थ–मैं (ब्रह्मा), रुद्र, विष्णु, ये दक्षआदि प्रजापति और तुझको आदि देकर ऋषि, स्वर्ग के पालक, पक्षिलोक के पालक, मनुष्यलोक के पालक, पाताल लोककेपालक ।४१। गंधर्व, विद्याधर, चारण, यक्ष, रक्ष, उरग, सर्पों के पति ऋषियों में और पितरोंमें श्रेष्ठ, दैत्येन्द्र, दानवेंद्र, (सब) हरि से हुए हैं।४२।

फिर इसी दूसरे स्कंध का दशवीं अध्याय का अड़तालीसवां श्लोक यह है

प्रजापतीन् मनून् देवानृषीन् पितृगणान् पृथक् ।
सिद्धचारणगन्धर्वान् विद्याध्रासुरगुह्यकान् ॥३८॥

अर्थ–वही भगवान् प्रजापति मनु, देवता, ऋषि, पितर, सिद्ध, चारण, गंधर्व, विद्याधर, असुर गुह्यक इनको जुदा जुदा सृजता हुआ ॥ ३८ ॥

इन प्रमाणों से ही चारणों की उत्पत्ति देवताओं में होना सिद्ध है परन्तु आगे मैत्रेयऋषि विदुर को सृष्टिक्रम बताते हैं तहां वैकारकसृष्टि नवप्रकार की कहकर दशवीं सृष्टि देवताओं की कहते हैं सो आठप्रकार की है यहां गुणकर्म, स्वभाव के अनुसार इन देवताओं के गण बांधे हैं सोही क्रम श्रीधरी अ

दि टीकाकारों ने लिखा है जिसके प्रमाण में तीसरे स्कंध की दशवीं अध्याय के सत्ताईस और अट्ठाईस के दो श्लोक नीचे लिखते हैं ॥

देवसर्गश्चाष्टविधो विबुधाः पितरोऽसुराः ।
गंधर्वाऽप्सरसः सिद्धा यक्षरक्षांसि चारणाः ॥२७॥
भूतप्रेतपिशाचाश्च विद्याध्राः किन्नरादयः ॥
दशैते विदुराऽऽख्याताः सर्गास्ते विश्वसृक्कृताः ॥२८॥

अर्थ— देवताओं की सृष्टि आठ प्रकार की है, विबुध १ पितर २ असुर ३ गंधर्व और अप्सरा ४ यक्ष राक्षस ५ भूत प्रेत और पिशाच ६ सिद्ध चारण विद्याधर ७ और किंनर आदि ८ ये देवताओं के आठ भेद हैं जिन सहित हे विदुर ब्रह्मा ने दश प्रकार की सृष्टि रची है ॥ २७॥
यहां हमने विस्तार के भय से ऊपर कही हुई नव प्रकार की सृष्टि का वर्णन छोडदिया है सो जिसकिसी को देखना होवे वे भागवत के तीसरे स्कंध की दशवीं अध्याय को देखलेवें ॥

इन प्रमाणों से यह तो स्पष्ट सिद्ध होगया कि चारणों की उत्पत्ति देवताओं में हुई है, परन्तु पीछे से जैसा इनका आचार व्यवहार रहा जिसके भी प्रमाण देने अवश्य हैं, क्योंकि आचार व्यवहार के बदलने से जाति की उत्तमता अधमता बदलजाती है जैसे देवताओं से और राक्षसों से विरोध होने के कारण राक्षसों की गणना अधम पक्ष में गिनने लगे, और भूत प्रेत पिशाचों का आचार भ्रष्ट होजाने के कारण इनकी गणना देवताओं में नहीं रही इसी प्रकार चारणों के लिये भी जानना अवश्य है कि इनका आचार व्यवहार कैसा रहा सो इनके प्रमाण प्रथम श्रीमद्भागवत के, फिर वाल्मीकि रामायण के और महाभारत के देकर इन ग्रंथों के पीछे के प्रमाणों से इस विषय को वर्त्तमान समय पर्यंत शैलीबद्ध सिद्ध करते हैं, जिनमें प्रथम भागवत के प्रमाण ये हैं ॥

श्रीकपिलदेवभगवान् माता को सांख्यशास्त्र का उपदेश करके तप करने को गये तहां के तीसरे स्कंध की तेतीसवीं अध्याय के चौतीस और पैंतीस के दो श्लोक नीचे लिखते हैं

सिद्धचारणगंधर्वैर्मुनिभिश्चाप्सरोगणैः॥
स्तूयमानः समुद्रेण दत्तार्हणनिकेतनः॥३४॥
आस्ते योगं समास्थाय सांख्याचार्यैरभिष्टुतः।
त्रयाणामपि लोकानामुपशान्त्यै समाहितः॥३५॥

अर्थ-सिद्ध,चारण,गंधर्व,मुनि, और अप्सराओं के गणों से स्तुति कराएहुए औ समुद्र ने दिया है पूजन और स्थान जिनको, सांख्य के आचार्यों ने की है स्तुति जिनका॥३४॥ एसे कपिलदेव तीनों लोकों की शांति के अर्थ योग में स्थित होकर गंगासागर में विराजे॥३५॥

स्वायंभुमनु के उपदेश से ध्रुव ने यक्षों को मारना छोड़ा तब कुबेर ध्रुव के समीप आये इस प्रकरण का चौथे स्कंध की बारहवीं अध्याय का प्रथम श्लोक नीचे लिखते हैं

ध्रुवं निवृत्तं प्रतिबुध्य वैशसादपेतमन्युं भगवान्धनेश्वरः।
तत्रागतश्चारणयक्षकिन्नरैः संस्तूयमानोऽभ्यवदत्कृतांजलिम्॥१॥

अर्थ-यक्षों के वध से निवृत्तहुए क्रोधरहित ध्रुव को जानकर चारण यक्ष, किन्नर स्तुति करते हैं जिसकी ऐसा भगवान् कुबेर आया तब ध्रुव ने दंडवत् करी और कुबेर ने आशीर्वाद दिया॥१॥

राजा पृथु के यज्ञ में देवता आये जिनको राजा ने हाथ जोड़कर पूजन करके बिदा किये इस प्रकरण के चतुर्थ स्कंध की बीसवीं अध्याय के पैंतीसवें और छत्तीसवें श्लोक नीचे लिखेजाते हैं—

देवर्षिपितृगंधर्वसिद्धचारणपन्नगाः।
किन्नराप्सरसो मर्त्याः खगा भूतान्यनेकशः॥३५॥
यज्ञेश्वरधिया राज्ञा वाग्वित्तांजलिभक्तितः॥
सभाजिता ययुः सर्वे वैकुंठानुगतास्ततः॥३६॥

अर्थ-देवता,ऋषि,पितर,गंधर्व,सिद्ध,चारण,नाग,किन्नर,अप्सरा, मनुष्य,खग,और अनेक प्राणी, यज्ञेश्वर, इनका बुद्धि पूर्वक राजा ने वाणी वित्त और हाथ जोड़कर भक्तिपूर्वक पूजन किया ऐसे ये और विष्णु के पार्षद अपने लोकों को गये॥३५॥३६॥

राजा प्रियव्रत को ज्ञान देने को ब्रह्मा आये तहां का पंचम स्कंध की प्रथम अध्याय का आठवां श्लोक यह है

स तत्र तत्र गगनतल उडुपतिरिव बिमानावलिभिरनुपथममरपरिवृढैरभिपूज्यमानः पथि पथि वरूथशः सिद्धगंधर्वसाध्यचारणमुनिगणैरुपगीयमानो गंधमादनद्रोणीमवभासयन्नुपससर्प॥८॥

अर्थ-वह तहां तहां आकाश में चंद्रमा के समान शोभायमान विमानों पर बैठे देवताओं से पूजाकिया हुवा सिद्ध, गंधर्व, साध्य,चारण, मुनिगणों से मार्ग में पूजेगये ऐसे ब्रह्मा गंधमादन पर्वत की गुफा को प्रकाश करते आये॥८॥

खगोल के वर्णन में शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित को चारणों का लोक

बताया है जिसका पंचमस्कंध की चौबीसवीं अध्याय का चौथा श्लोक नीचे लिखाजाता है—

ततोऽधस्तात्सिद्धचारणविद्याधराणां सदनानि तावन्मात्र एव ॥४॥

अर्थ-उस(राहुमंडल) से नीचे, उतना (दशहजार योजन का) ही सिद्ध, चारण विद्याधरों का स्थान है ॥४॥

दक्षप्रजापति के तप करते समय श्रीविष्णुभगवान् प्रकट हुए उस वर्णन के छठे स्कंध की चौथी अध्याय के उनचालीस के और चालीस के दो श्लोक नीचे लिखेजाते हैं

त्रैलोक्यमोहनं रूपं विभ्रत्रिभुवनेश्वरः।
वृतो नारदनंदाद्यैः पार्षदैः सुरयूथपैः ॥३९॥
स्तूयमानोनुगायद्भिः सिद्धगंधर्वचारणैः।
रूपं यन्महदाश्चर्यं विचक्ष्यागतसाध्वसः ॥४०॥

अर्थ-त्रिलोकी को मोहित करनेवाले रूपको धारण करके त्रिलोकी के ईश्वर नारद, नंदादि पार्षदों और देवता से युक्त, लोकपाल और सिद्ध, गंधर्व, चारणों से स्तुति कियागया, बडा है आश्चर्य जिसका ऐसे रूप को देखकर उस दक्ष का भ्रम दूर हुआ ॥३९॥४०॥

वृत्रासुर और इन्द्र के युद्ध में वृत्रासुर का पराक्रम देखकर देवता और असुर उसकी प्रशंसा करनेलगे और इन्द्र को संकट में देखकर हाहाकार करनेलगे जिस प्रकरण का छठे स्कंध की बारहवीं अध्याय का पांचवां श्लोक यह है—

वृत्रस्य कर्मातिमहाऽद्भुतं तत्सुरासुराश्चारणसिद्धसंघाः ॥
अपूजयंस्तत्पुरुहूतसंकटं निरीक्ष्य हाहेति विचुक्रुशुर्भृशम् ॥५॥

वृत्रासुर के बडे अद्भुतकर्म को देखकर देवता, असुर, चारण और सिद्धों के समूह उसकी बडाई करनेलगे और इंद्र का संकट देखकर हाहाकार करनेलगे ।५।

हिरण्याक्ष नें दिग्विजय किया जिस प्रकरण का सातवें स्कंध की चोथी अध्याय का छठा श्लोक यह है—

सिद्धचारणविद्याध्रानृषीन्पितृपतीन्मनून् ।
यक्षरक्षःपिशाचेशान् प्रेतभूतपतीनथ ॥६॥

अर्थ— सिद्ध, चारण, वीद्याधर, ऋषि, पितरों के पति, मनु, यक्ष, राक्षस पिशाच, इनके ईश्वर और प्रेत भूतों के पतियों को जीते ॥ ६ ॥

नृसिंहावतार होकर हिरण्याक्ष को मारा तब सब देवता वहां आये इस प्रकरण के सप्तमस्कंध की आठवीं अध्याय के अड़तीस और उनचालीसवें दो श्लोक नीचे लिखे जाते हैं—

मनवः प्रजानापतयो गंधर्वाप्सरचारणाः ।
यक्षाः किंपुरुषास्तात वैतालाः सिद्धकिन्नराः॥३८॥
ते विष्णुपार्षदाः सर्वे सुनंदकुमुदादयः ।
मूर्ध्नि बद्धांजलिपुटा आसीनं तीव्रतेजसम् ।
ईडिरे नरशार्दूलं नातिदूरचराः पृथक् ॥३९॥

अर्थ— मनु, प्रजापति, गंधर्व, अप्सरा, चारण, यक्ष, किंपुरुष, बेताल, सिद्ध किन्नर ॥ ३८ ॥ सुनंद, कुमुद इनको आदि लेकर विष्णु के सब पार्षद वहां आकर हाथ जोड़कर मस्तक से नमस्कार करके समीप खड़े होकर सिंहासन पर बैठेहुए तीव्रतेजवाले नृसिंह की भिन्न भिन्न स्तुति करने लगे ॥ ३९ ॥

सब देवताओं ने नृसिंह की जुदी जुदी स्तुति की जिनमें चारणों की कीहुई स्तुति का सप्तमस्कंध की आठवीं अध्याय का इकावनवां श्लोक यह है ॥

चारणा ऊचुः॥ हरे तवांघ्रिपंकजं भवापवर्गमाश्रिताः ।
यदेष साधुहृच्छयस्त्वयाऽसुरः समापितः ॥५१॥

अर्थ— चारण स्तुति करते हैं कि हे हरे संसार की निवृत्ति करानेवाले तुम्हारे चरण कमल जिनके हम आश्रित हुए हैं सो साधु पुरुषों के हृदय में भय देनेवाले असुर का तुमने नाश किया है ॥ ५१ ॥

गजेंद्र का मोक्ष करनेवाले हरि अवतार की कथा में चित्रकूट नामक पर्वत के वर्णन का आठवें स्कंध की दूसरी अध्याय का पांचवां श्लोक है–

सिद्धचारणगंधर्वविद्याधरमहोरगैः ॥
किन्नरैरप्सरोभिश्च क्रीडद्भिर्जुष्टकंदरैः॥५॥

अर्थ–क्रीड़ा करनेवाले सिद्ध, चारण, गंधर्व, विद्याधर, बडेबडेसर्प, किन्नर अप्सराओं करिके सेवन की है गुफा जिसकी ॥ ५ ॥

श्रीहरिनें गजेंद्र का मोक्ष किया तहां के वर्णन का आठवें स्कंध की चोथी अध्याय में दूसरे श्लोक में चारणों नें हरि की स्तुति की सो नीचे लिखते हैं–

नेदुर्दुंदुभयो दिव्या गंधर्वा नन्तृतुर्जगुः ।
ऋषयश्चारणाः सिद्धास्तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम् ॥२॥

अर्थ— देवताओं के नगारे बजे, गंधर्व नाचन और गानेलगे, ऋषि चारण और सिद्धों ने उन पुरुषोत्तम भगवान् की स्तुति की ॥ २ ॥

समुद्र मथने के समय देवताओं को अमृत देने के कारण श्रीविष्णुभगवान् नें मोहिनी रूप धारण किया जिसनें देवताओं को नहीं वरे इस प्रकरण का आठवें स्कंध की आठवीं अध्याय का उन्नीसवां श्लोक लिखाजाता है

विलोकयन्ती निरवद्यमात्मनः पदंध्रुवं चाव्यभिचारिसद्गुणम् ।
गंधर्वयक्षासुरसिद्धचारणात्रैविष्टपेयादिषु नान्वविन्दत ॥१९॥

अर्थ—अपने दोष रहित नित्यगुणयुक्त स्थान देखकर गंधर्व, यक्ष, असुर सिद्ध, चारण, देवता इनको नहीं प्राप्त हुई ॥ १९ ॥

मोहिनी रूप की स्तुति में दानव कहते हैं कि सिद्ध चारणों ने भी तुम्हारा स्पर्श नहीं किया सो मनुष्य कहांसे करेंगे इसका आठवें स्कंध की नवमी अध्याय का चौथा श्लोक लिखाजाता है—

न वयं त्वाऽमरैर्दैत्यैः सिद्धगंधर्वचारणैः।
नास्पृष्टपूर्वां जानीमो लोकेशैश्चकुतो नृभिः॥४॥

देवता, दैत्य, सिद्ध, गंधर्व, चारण, इनने तुम्हारा पहिले स्पर्श नहीं किया और लोकपालों ने भी स्पर्श नहीं किया तो मनुष्य कहांसे करेंगे यह हम जानते हैं ॥४॥

वामनभगवान् के जन्म होने पर देवता प्रसन्न होकर तुति करनेलगे इस प्रकरण के अष्टमस्कंध की अठारहवीं अध्याय के आठ से लेकर दश पर्यंत तीन श्लोक नीचे लिखते हैं—

प्रीताश्चाप्सरसोऽनृत्यन् गन्धर्वप्रवराजगुः ।
तुष्टुवुर्मुनयो देवा मनवः पितरोऽग्नयः॥८॥
सिद्धविद्याधरगणाः सकिंपुरुषकिन्नराः ।
चारणा यक्षरक्षांसि सुपर्णा भुजगोत्तमाः ॥९॥
गायंतोऽतिप्रशंसंतो नृत्यन्तो विबुधानुगाः।
अदित्या आश्रमपदं कुसुमैः समवाकिरन् ॥१०॥

अर्थ—प्रसन्न होकर अप्सरा नाचनेलगीं, श्रेष्ठगंधर्व गानेलगे, मुनि स्तुति करनेलगे. देवता-मनु-पितर-अग्नि ॥ ८ ॥ सिद्ध-विद्याधर-किंपुरुष-किन्नर-चारण यक्ष-राक्षस-गरुड-सर्प ॥९॥ गानेलगे और अत्यन्त प्रशंसा करने लगे, देवताओं के अनुग नाचनेलगे और अदिती के आश्रम में फूल वर्षाने लगे ॥ १० ।

राजाबलि नें वामन को तीन पैंड भूमि दी उस समय देवताओं नें बलि पर फूल बरसाये इस प्रकरण का आठवें स्कंध की बीसवीं अध्याय का उन्नीसवां श्लोक लिखाजाता है—

तदा सुरेन्द्रं दिवि देवतागणा गंधर्वविद्याधरसिद्धचारणाः।
तत्कर्म सर्वेऽपि गृणान्त आर्जवं प्रसूनवर्षैर्ववृषुर्मुदाऽन्विताः॥१९॥

अर्थ-उस समय में स्वर्ग में देवताओं के समूह-गंधर्व-विद्याधर-सिद्ध-चारणों-नें असुरों के इंद्र बलि पर फूलों की वर्षा करी और सबनें बलि के कर्म की बडाई की और आनंदयुक्त हुए ॥ १९ ॥

श्रीकृष्ण के जन्मसमय सिद्ध और चारणों नें स्तुति की सो दशमस्कंध की तीसरी अध्याय का छठा श्लोक लिखाजाता है—

जगुःकिन्नरगंधर्वास्तुष्टुवुः सिद्धचारणाः।
विद्याधर्यश्च ननृतुरप्सरोभिः समं तदा ॥६॥

अर्थ-किन्नर गंधर्व गानकरने लगे, सिद्ध चारण प्रसन्न होकर स्तुति करने लगे और अप्सराओं को साथ लेकर विद्याधरोंकी स्त्रियें नृत्य करनेलगीं ॥ ६ ॥

यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होनेवाली देवी ने कंस के हाथ से छटकर कंसके मारनेवाले के जन्म की सूचना की उस प्रकरण का दसवें स्कंध की चौथी अध्याय का ग्यारहवां श्लोक निम्न लिखित है—

सिद्धचारणगंधर्वैरप्सरःकिन्नरोरगैः ॥
उपाहृतोरुबलिभिः स्तूयमानेदमब्रवीत् ॥११॥

अर्थ- सिद्ध, चारण, गंधर्व, अप्सरा, किंन्नर, और नागों ने बडी भेटें देकर स्तुति की तब वह देवी यह बोली ॥ ११ ॥

श्रीकृष्ण कालीनाग के फणों पर नृत्य करने को खडेहुए तब सिद्ध चारण आदि प्रसन्न हुए इस प्रकरण का दशम स्कंध की सोलहवीं अध्याय का सताईसवां श्लोक नीचे लिखते हैं—

तं नर्तुमुद्यतमवेक्ष्य तदा तदीयगंधर्व सिद्धसुरचारणदेववध्वः॥
प्रीत्या मृदङ्गपणवानकवाद्यगीतपुष्पो पहारनुतिभिः सहसोपसेदु२७

अर्थ-श्रीकृष्णचंद्र काली के फणों पर नाचने को खडेहुए उस समय गंधर्व सिद्ध देवता चारण देवताओं की स्त्रियें सब प्रसन्न होकर मृदंग ढोल नगारे लेलेकर गाने बजाने लगीं और पुष्पों की वर्षा करके भेटें लेकर स्तुति करती हुई शीघ्र आईं ॥ २७ ॥

गोवर्धनपर्वत को उठाया तब देवताओं ने फूलों की वर्षा की इस प्रकरण का दशमस्कंध की पचीसवीं अध्याय का इकतीसवां श्लोक निम्न लिखित है—

दिवि देवगणाः साध्याः सिद्धगंधर्वचारणाः ॥
तुष्टुवुर्मुमुचुस्तुष्टाः पुष्पवर्षाणि पार्थिव ॥३१॥

अर्थ-शुकदेवजी कहते हैं कि हे राजा परीक्षित स्वर्ग में देवताओं के गण साध्य गण सिद्ध गन्धर्व चारण संतुष्ट होकर फूलों की वर्षा करनेलगे ॥ ३१ ॥

गोवर्धनपर्वत उठाये पीछे श्रीकृष्ण का गोविंदाभिशेक हुआ तब स्वर्ग से

इंद्रादिक देवता आये इस प्रकरण का दशमस्कंध की सताईसवीं अध्याय का चौबीसवां श्लोक नीचे लिखते हैं—

तत्रागतास्तुंबरुनारदादयो गन्धर्वविद्याधरसिद्धचारणाः॥
जगुर्यशो लोकमलापहं हरेः सुरांगनाः संननृतुर्मुदान्विताः ॥२४॥

अर्थ—उससमय आयेहुए तुंबरु नारद आद गंधर्व विद्याधर सिद्ध चारण लोग लोकों का पाप दूरकरने वाले श्रीकृष्ण के यश को गाने लगे और देवताओं की स्त्रियें प्रसन्न होकर नाचनेलगीं ॥ २४ ॥

बाणासुर की राजधानी शोणितपुर में श्रीकृष्ण और महादेव का युद्ध हुआ तब ब्रह्मा आदि देवता देखने आये, इसप्रकरणका दशमस्कंध की तिरसठवीं अध्याय का नवमा श्लोक नीचे लिखाजाता है—

ब्रह्मादयः सुराधीशा मुनयः सिद्धचारणाः॥
गन्धर्वाप्सरसो यक्षा विमानैर्द्रष्टुमागमन् ॥९॥

अर्थ—देवताओं में मुख्य ब्रह्मा को आदि देकर मुनि-सिद्ध-चारण-गंधर्व-अप्सरा, यक्ष ये सब विमानों में बैठकर युद्ध देखने को आये ॥ ९ ॥

श्रीकृष्ण शाल्व और दन्तवक्र को मारकर पीछे द्वारिका में आये तहां के वर्णन का दशमस्कंध की अठत्तरवीं अध्याय का चौदहवां और पन्द्रहवां दो श्लोक नीचे लिखते हैं—

मुनिभिः सिद्धगन्धर्वैर्विद्याधरमहोरगैः ।
अप्सरोभिः पितृगणैर्यक्षैः किन्नरचारणैः॥१४॥
उपगीयमानविजयः कुसुमैरभिवर्षितः ।
वृतश्च वृष्णिप्रवरैर्विवेशालंकृतां पुरीम् ॥१५॥

अर्थ—मुनीश्वर, सिद्ध, गंधर्व, विद्याधर, बडे सर्प, अप्सरा, पितृगण, यक्ष, किन्नर, चारण, इन सबने विजय होना कहकर पुष्पों की वर्षा करी ऐसे श्रीकृष्ण यादवों को साथ लेकर शोभायमान द्वारिकापुरी में आये ॥ १४ ॥ १५ ॥

द्वारिकामें श्रीकृष्ण के समीप ब्रह्मादिक देवता आये जिस वर्णन के एकादश स्कंध की छठी अध्याय के प्रथम श्लोक से लेकर तीसरे श्लोक तक तीन श्लोक नीचे लिखते हैं—

अथ ब्रह्मात्मजैर्देवैः प्रजेशैरावृतोऽभ्यगात् ।
भवश्च भूतभव्येशो ययौ भूतगणैर्वृतः॥१॥
इंद्रो मरुद्भिर्भगवानादित्या वसवोऽश्विनौ ।
ऋभवोऽङ्गिरसो रुद्रा विश्वेसाध्याश्च देवताः॥२॥

गन्धर्वाप्सरसो नागाः सिद्धचारणगुह्यकाः ।
ऋषयः पितरश्चैव सविद्याधरकिन्नराः ॥३॥

अर्थ—राजा परीक्षित को शुकदेवमुनि कहते हैं कि नारद ने वसुदेव को ज्ञान दिये पीछे द्वारका में ब्रह्मा-सनकादिक-देवता-ऋषियों से मिलकर आये और श्रेष्ट भूतों के पति महादेव भूतगण सहित आये ॥ १ ॥ देवताओं के साथ भगवान् इंद्र-आदित्य- वसु-आश्विनीकुमार ऋभु-अंगिरा- एकादश रुद्र-विश्वेदेवा-साध्य ॥ १२ ॥ गंधर्व-अप्सरा-नाग-सिद्ध-चारण-गुह्यक-ऋषि-पितर-विद्याधर-किन्नर-आये ॥ ३ ॥

श्रीकृष्ण के महाप्रस्थान समय ब्रह्मादिक देवता आये जिस वर्णन के एकादशस्कंध की इकतीसवीं अध्याय के एक से लेकर तीन तक के तीन श्लोक नीचे लिखेजाते हैं—

अथ तत्रागमद्ब्रह्मा भवान्या च समं भवः ।
महेन्द्रप्रमुखा देवा मुनयः सप्रजेश्वराः॥१॥
पितरः सर्वगंधर्वा विद्याधरमहोरगाः ॥
चारणा यक्षरक्षांसि किन्नराप्सरसो द्विजाः॥२॥
द्रष्टुकामा भगवतो निर्याणं परमोत्सुकाः ।
गायन्तश्च गृणन्तश्च सौरेः कर्माणि जन्म च ॥३॥

अर्थ—शुकदेवमुनि राजा परीक्षित को कहते हैं कि दारुक के गयेपीछे वहां ब्रह्मा-पार्वती सहित शिव-इंद्रादिकदेवता-सनकादिकमुनि-मरीचिआदि प्रजापात।१। पितर-सवगंधर्व-विद्याधर-महानाग-चारण-यक्ष-राक्षस-किन्नर-अप्सरा-पक्षी ॥ २ ॥ भगवान के प्रस्थान को देखने की इच्छा से परम उत्कंठित होकर श्रीकृष्ण के जन्म कर्म का गान करते और कहते हुए आये ॥ ३ ॥

जैसे चारणों की उत्पत्ति देवताओं में हुई तैसे ही इनका आचार व्यवहार भी देवताओं के सदृश ही रहा सो श्रीमद्भागवत के उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है ॥ अब आगे कुछ प्रमाण श्रीमद्वाल्मीकिरामायण के दियेजाते हैं—

श्रीमद्वाल्मीकिरामायण के प्रमाण

श्रीरामचंद्र महाराजका अवतार होने पर ब्रह्मा ने ऋषि-सिद्ध चारण आदि देवताओं को आज्ञा दी कि हमारे कल्याण के अर्थ विष्णुभगवान ने राजा दशरथ के यहां अवतार लिया है इस कारण तुम सब उनकी सहायता के अर्थ वानर

शरीर धारण करो, इसी आज्ञानुसार सब देवताओं ने अपने अपने अंश से वा नरयोनि में पुत्र उत्पन्न किये जिसके वृत्तांत का-बालकांड के सत्रहवें सर्ग का नवमां श्लोक यह है—

ऋषयश्च महात्मानः सिद्धविद्याधरोरगाः।
चारणाश्च सुतान्वीरान् ससृजुर्वनचारिणः॥९॥

अर्थ—महात्मा ऋषि, सिद्ध, विद्याधर, उरग और चारणों ने वानरों की योनि में अपने अपने अंश से वीर पुत्रों को पैदा किये ॥९॥

जब समुद्रमथन करने से अमृत निकला तब दैत्यों ने देवताओं से छीनलेना चाहा, तब विष्णु ने मोहिनी अवतार लेकर दैत्यों को पराजय करइन्द्रादिकों को अमृत दिया तब इन्द्र ने अपना राज्य पाकर चारणों के साथ ऋषिसंघों का पालन किया जिसका बालकाण्ड के ४५वें सर्ग का ४५ वां श्लोक यह हैः-

निहत्य दितिपुत्रांस्तु राज्यं प्राप्य पुरन्दरः।
शशास मुदितो लोकान् सर्षिसंघान्सचारणान्॥४५॥

अर्थ—इन्द्र ने दैत्यों को मारकर राज्य को प्राप्त होकर ऋषि समुदाय और चारणों सहित लोकों का हर्ष के साथ पालन किया ॥ ४५ ॥

गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या से इन्द्र ने मुनि का वेषकर व्यभिचार करना चाहा और गौतम ने आकर यह दुराचार इन्द्र का जानकर इन्द्र को अफल होने का और अहल्या को शिलारूप होने का शाप दिया और अपने इस आश्रम को छोड़ जहां पर सिद्ध चारण रहते थे उस हिमालय के सुन्दर शिखर पर तप किया, जिसका वर्णन बालकाण्ड के ४५ वें सर्ग के ३३ वें श्लोक में इस प्रकार है

एवमुक्त्वा महातेजा गौतमो दुष्टचारिणीम्॥
इममाश्रममुत्सृज्य सिद्धचारणसेविते॥३३॥
हिमवच्छिखरे रम्ये तपस्तेपे महातपाः॥

अर्थ—महातेज गौतम अपनी दुष्ट आचरणवाली स्त्री को शाप देकर इस आश्रम को छोड सिद्ध और चारणों से सेवा कियेगये हिमालय के सुंदर शिखर पर तप करने लगे ॥ ३३ ॥

गौतम के शाप से अफल हुए इंद्र ने अग्नि आदि देवता, सिद्ध, गन्धर्व और चारणों को अपना अपराध कहकर उनके उद्योग से सफलता प्राप्त की जिसके बाल्मीकिरामायण के बालकाण्ड के ४९वें सर्ग के प्रारंभ से चार श्लोक ये हैंः-

अफलस्तु ततः शक्रो देवानग्निपुरोगमान्।

अब्रवीत्त्रस्तनयनः सिद्धगन्धर्वचारणान् ॥१॥
कुर्वता तपसो विघ्नं गौतमस्य महात्मनः ।
क्रोधमुत्पाद्य हि मया सुरकार्यमिदं कृतम् ॥२॥
अफलोऽस्मि कृतस्तेन क्रोधात्सा च निराकृता ।
शापमोक्षेण महता तपश्चापहृतं मया॥३॥
तस्मां सुरवराः सर्वे सर्षिसंघाः सचारणाः॥
सुरकार्यकरं यूयं सफलं कर्तुमर्हथ ॥४॥

अर्थ–तब अफल हुआ और डरे हुए नेत्रवाला इंद्र अग्नि आदि, सिद्ध, गन्धर्व और चारणदेवताओं से बोला ॥ १ महात्मा गौतम के तप में विघ्न करनेवाले मैंने क्रोध प्रकट कराके यह सुरकार्य किया ॥ २ ॥ उस महात्मा से मैं तो अफल (पुंस्त्वहीन) कियागया और क्रोध करके वह (अहल्या)छोडी गई भारी शाप के देने से मैंने उस गौतम का तप हरण किया ॥ ३ ॥ तिस कारण से ऋषि समुदाय सहित और चारणों सहित सब श्रेष्ठ देव मुझ सुरकार्य करनेवाले को आप लोक सफल करने को योग्य हैं ॥ ४ ॥

रामचंद्र ने धनुष तोड़ा इस प्रकरण में प्राचीन कथा लिखी है कि शिव और विष्णु से युद्ध हुआ वहां पर विष्णु ने हुंकार मात्र से शिव को स्तम्भित करदिया तब देवता, ऋषिसंघ और चारणों ने उनको समझाया जिसका बालकाण्ड के ७५वें सर्ग का १८ वां यह श्लोक है

हुंकारेण महादेवः स्तंभितोऽथ त्रिलोचनः।
देवैस्तदा समागम्य सर्षिसंघैः सचारणैः॥१८॥

अर्थ–हुंकार से तीन नेत्रवाले महादेव को जड़ कर दिया उस समय ऋषि और चारणों के साथ देवताओं ने आकर शांति की ॥ १८ ॥

वनवास में खर दूषण के साथ रामचन्द्र का युद्ध हुआ तब ऋषि, सिद्ध, गंधर्व, चारण आदि परस्पर रामचन्द्र के जय की इच्छा करनेलगे इस विषय में आरण्यकाण्डके २३ वें सर्गका २७ वां यह श्लोक है:–

ऋषयो देवगंधर्वाः सिद्धाश्च सह चारणैः।
समेत्य चोचुः सहितास्तेन्योन्यं पुण्यकर्मणाः॥२७॥

अर्थ—वह पुण्यकाम करनेवाले ऋषि,देव और गंधर्व सिद्धचारणों के साथ एकत्र होकर परस्पर कहनेलगे ॥ २८ ॥

जब खर दूषण आदि मारेगये तब रावण मारीच नामक राक्षस के पास गया इस विषय में मारीच के वन की शोभा का आरण्यकाण्ड के३५ वें सर्ग

का १५ वां श्लोक नीचे लिखाजाता है:-

जितकामैश्च सिद्धैश्च चारणैश्चोपशोभितम् ॥
आजैर्वैखानसैर्माषैर्बालखिल्यैर्मरीचिपैः॥१५॥

अर्थ—जीतलिया है कामदेव को जिन्होंने ऐसे सिद्ध और चारणों करके आज अर्थात् ब्रह्मा के पुत्र वैखानस जाति के, माप जाति के, वालखिल्य और मरीचिप ऋषियों करके सुशोभित है ॥ १५ ॥

जब रावण सीता को हरण कर लंका को गया तब सीता के ग्रसित होने पर समुद्र स्तम्भित होगया और चारण तथा सिद्ध कहने लगे कि अब रावण की मृत्यु आपहुँची इस प्रकरण का आरण्यकाण्ड के ५४ वें सर्ग का १० वां श्लोक नीचे लिखाजाता है-

वैदेह्यां ह्रियमाणायां बभूव वरुणालयः।
अन्तरिक्षगता वाचः ससृजुश्चारणास्तथा॥१०॥
एतदन्तो दशग्रीव इति सिद्धास्तदाब्रुवन् ॥

अर्थ—सीता के हरेजाने पर समुद्र स्तम्भित हुआ तब आकाशमें सिद्ध और चारण वचन बोले कि सीता का हरण होना ही रावण का अन्त है॥

सुग्रीव ने सीता को शोधने के लिये बानरों को आज्ञा दी कि समुद्र के बीच पुष्पितक पर्वत है वहां पर शोधन करो इस विषय का किष्किन्धाकांड के ४१ वें सर्ग का २८ वां श्लोक नीचे लिखाजाता है:-

तमतिक्रम्य लक्ष्मीवान् समुद्रे शतयोजने ।
गिरिः पुष्पितको नाम सिद्धचारणसेवितः॥२८॥

अर्थ—पूर्वोक्त स्थल उल्लंघन करके शतयोजन समुद्र में सिद्ध और चारणों से सेवित लक्ष्मीवान् पुष्पितक पर्वत है ॥ २८ ॥

लंका दहन हुए पीछे हनुमान को स्वयं पश्चात्ताप उत्पन्न हुआ कि इस अग्नि से सीता का दाह होगया होगा तो उसके शोक से रामलक्ष्मणादि सब नाश को प्राप्त होवेंगे और इनके शोक से सुग्रीव अङ्गद भी मरजावेंगे तो इस दोष का मुख्य कर्ता मैं हुआ सो इनसे पहले मैं आत्मघात करलूं तो ठीक है ऐसे पश्चात्ताप करतेहुए हनुमान् ने चारण ऋषियों के मुख से सुना कि लंका का दाह हुआ परन्तु सीता का नहीं हुआ यह हमको आश्चर्य है इसविषय के सुन्दर काण्डके ५५ वें सर्ग के २९ वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं

स तथा चिन्तयंस्तत्र देव्या धर्मपरिग्रहम् ।
शुश्राव हनुमांस्तत्र चारणानां महात्मनाम् ॥२९॥

अहो खलु कृतं कर्म दुर्विगाहं हनूमता ।
अग्निं विसृजता तीक्ष्णं भीमं राक्षससद्मनि ॥३०॥
प्रपलायितरक्षःस्त्रीबालवृद्धसमाकुला ।
जनकोलाहलाध्माता क्रन्दतीवाद्रिकन्दरैः॥३१॥
दग्धेयं नगरी लङ्का साट्टप्राकारतोरणा ।
जानकी न च दग्धेति विस्मयोऽद्भुत एव नः॥३२॥
इति शुश्राव हनुमान् वाचं ताममृतोपमाम् ।
बभूव चास्य मनसो हर्षस्तत्कालसम्भवः ॥३३॥
स निमित्तैश्च दृष्टार्थैः कारणैश्च महागुणैः।
ऋषिवाक्यैश्च हनुमानभवत्प्रीतमानसः ॥३४॥

अर्थ– चिन्ता करतेहुए उस हनुमान् ने वहां सीता का धर्म संरक्षण महात्मा चारणों की वाणी से सुना ॥ २९ ॥ आश्चर्य है कि राक्षसों के घर में तेज अग्नि लगानेवाले हनुमान् ने निस्सन्देह भयानक और कठिन कार्य किया है ।३०। जनों के कोलाहल शब्द से पर्वत की गुफाओं के समान शब्दित व बालक और वृद्धों से व्याकुल भागती हैं राक्षसों की स्त्रियें जिससे ॥३१॥ ऐसी अटारियें, कोट, दरवाजे सहित यह लङ्का पुरी दग्ध हुई परन्तु सीता नहीं दग्ध हुई यह हमको अद्भुत आश्चर्य है ॥ ३२ ॥ इस प्रकार चारणों की कहीहुई उस अमृत के समान वाणी को हनुमान् ने सुनी और इस हनुमान् के चित्त में तत्काल हर्ष हुआ ॥ ३३ ॥ देखे हुए अर्थ अर्थात् जिनके फल अनेकवार देखगये ऐसे शुकनों से, बड़े गुणवाले कारणों से अर्थात् सीता के पतिव्रतादि धर्म के कारणों से और चारणऋषियों के वचन से हनुमान् का चित्त प्रीतियुक्त हुआ ॥

फिर हनुमान् लंका को उल्लंघन करके पीछा अङ्गदादिक वानरों के पास आया तब उन्होंने पूछा है कि तुम किस प्रकार गये और किस प्रकार आये तो वहां पर हनुमान् ने सब वृत्तांत कहा उसमें यह भी कथा कही कि मैं लंका को जलाकर समुद्र के किनारे पर आया तब मैंने सोचा कि सब लंका जली तब सीता भी जलगई तो मुझ को मरना चाहिये यह विचारके मैं बैठा तब चारणों ने कहा कि जानकी नहीं जली है इस प्रकरण के सुन्दरकांड के ५८ वें सर्ग के १६१—१६२ वें श्लोक नीचे लिखे जाते हैं–

इति शोकसमाविष्टश्चिन्तामहमुपागतः ।
ततोऽहं वाचमश्रौषं चारणानां शुभाक्षराम् ॥१६१॥

जानकी न च दग्धेति विस्मयोदन्तभाषिणाम् ॥

ततो मे बुद्धिरुत्पन्ना श्रुत्वा तामद्भुतां गिरम् ॥ १६२ ॥

अर्थ—जब मैं इसप्रकार के शोक में पड़ा और चिन्ता को प्राप्त हुआ तो आश्चर्य के वृत्तान्त कहनेवाले चारणों से ये सुन्दर वचन सुने कि सीता नहीं जली फिर इस अद्भुत वार्त्ता को सुनकर मुझे बुद्धि पैदा हुई ॥ १६२ ॥

जब रामचन्द्र ने रावण को मारा तब रावण की ज्येष्ठपत्नी मन्दोदरी का रुदन वर्णन किया है वहां के युद्धकाण्डके ११३ वें सर्ग के ४ और ५ वें श्लोक नीचेलिखते हैं

ऋषयश्च महान्तोपि गन्धर्व्वाश्च यशस्विनः ॥

ननु नाम ततोद्वेगाच्चारणाश्च दिशो गताः ॥ ४ ॥

स त्वं मानुषमात्रेण रामेण युधि निर्जितः ।

न व्यपत्रपसे राजन् किमिदं राक्षसेश्वर॥ ५ ॥

अर्थ–बडे बडे ऋषि और यशवाले गन्धर्व और चारण यह सब तुमसे घबराकर निस्सन्देह दिशाओं में चलेगये सो तू ऐसा पराक्रमी है राक्षसों का ईश्वर केवल एक मनुष्यमात्र से रण में जीतागया सो यह क्या बात है कि तू लज्जित नहीं होता ॥ ५ ॥

जब रावण वरदान से मानी होकर चन्द्रलोक में विजय करने को गया तो मार्ग में जो लोक आये हैं उनमें चारणों का भी लोक आया है, जिसके प्रमाण में उत्तरकाण्ड के ४ सर्ग के ४ और ५ वें श्लोक नीचे लिखजाते हैं-

अथ गत्वा तृतीयं तु वायोः पन्थानमुत्तमम्॥४॥

नित्यं यत्र स्थिताः सिद्धाश्चारणाश्च मनस्विनः ॥

दशैव तु सहस्राणि योजनानां तथैव च ॥५॥

अर्थ–इसके आगे वायु के उत्तम तीसरे मार्ग में गया वहां विद्वान्, सिद्ध, चारण सदैव निवास करते हैं और वह मार्ग दश हजार योजन का है ।४।५।

सहस्रार्जुन ने रावण को हजार हाथों से पकड़के बांध दिया उस समय में देवताओं ने पुष्पवृष्टि की है जिसका उत्तरकाण्ड के ३२ वें सर्गका ६५ वां श्लोक यह है

बध्यमाने दशग्रीवे सिद्धचारणदेवताः ॥

साध्वीतिवादिनः पुष्पैः किरन्त्यर्ज्जुनमूर्द्धनि ॥ ६५ ॥

अर्थ—रावण के बांधेजाने पर अच्छा कहनेवाले सिद्ध और चारण देवता

ओं ने अर्जुन के सिर पर पुष्पवृष्टि की ॥ ६६ ॥

उक्त रीति के और भी प्रमाण वाल्मीकिय रामायण में उपस्थित हैं परन्तु विस्तार के भय से यहां थोड़े से आवश्यक प्रमाण देकर आगे महाभारत के प्रमाण भी संक्षेप रूप से देते हैं ॥

श्रीमहाभारतकेप्रमाण

राजा पांडु तपश्चर्या करने को इन्द्रद्युम्न सर और हेमकूट को छोड़कर शतशृङ्ग नामक पर्वत में गया जहांके वर्णन का आदिपर्व के १२० वें अध्यायका पहला श्लोक है

तत्रापि तपसि श्रेष्ठे वर्त्तमानः स वीर्यवान् ।
सिद्धचारणसंघानां बभूव प्रियदर्शनः ॥ १ ॥

अर्थ—श्रेष्ठ तपश्चर्या में प्रवृत्त होता हुआ वह पराक्रमी पांडु राजा सिद्ध चारण लोगों के समूह का प्रीतिपात्र (प्यारा) हुआ ॥ १ ॥

वहां तपस्या करने पर जब राजा पांडु का देहान्त हुआ तब इन्हीं चारण ऋषियों ने संमति करके पांडु के पाँचों ही पुत्रों को और कुन्ती को साथ लेकर हस्तिनापुर में आकर द्वारपालों को कहा कि राजा को सूचना करो कि ऋषिलोक आये हैं और उन्होंने जाकर राजा से निवेदन किया तब द्वारपालों से यह बात सुनके भीष्म, धृतराष्ट्र और दुर्योधनादिक उनके पुत्र और सत्यवती देवी और गान्धारी से आदि लेकर सब स्त्रियें और समस्त नगर के लोक उन ऋषियों के पास गये वहां जाकर भीष्म ने राज्य और देश का वृत्तांत निवेदन किया तब उनमें से एक वृद्धतम ऋषिने खड़ा होकर सब ऋषियों की सम्मति से जो वृत्तांत कहा वे आदिपर्व के १२६ अध्याय के १ से लेकर ३५ तक के ये श्लोक हैं;—वैशम्पायन उवाच

पाण्डारूपरमं दृष्ट्वा देवकल्पा महर्षयः ॥
ततो मन्त्रविदः सर्वे मन्त्रयांचक्रिरे मिथः ॥ १ ॥

अर्थ—वैशम्पायन बोले । राजा पांडु के विनाश को देखकर सलाह के जाननेवाले देवताओं के सदृश महर्षि लोक आपस में सलाह करनेलगे ॥ १ ॥

॥ तापसा ऊचुः ॥

हित्वा राज्यं च राष्ट्रं च स महात्मा महायशाः ।
अस्मिन् स्थाने तपस्तप्त्वा तापसान् शरणं गतः ॥ २ ॥

अर्थ—तपस्वी बोले ॥ वह बडा यशधारी महात्मा अपने देश और राज्य को छोडकर इस स्थान में तपस्या करके तपस्वियों के शरण गया ॥ २ ॥

स जातमात्रान् पुत्रांश्च दारांश्च भवतामिह ॥
प्रदायोपनिधिं राजा पांडुः स्वर्गमितो गतः ॥ ३ ॥

अर्थ—वह पांडु राजा सब अपने पुत्र और स्त्री को यहां पर आपलोगों के भरोसे छोडकर स्वर्ग गया ॥ ३ ॥

तस्येमानात्मजान्देहं भार्यां च सुमहात्मनः ।
स्वराष्ट्रं गृह्य गच्छामो धर्म एष हि नः स्मृतः ॥ ४ ॥

अर्थ—उस महात्मा के अस्थि और इन पुत्र और स्त्री को लेकर स्वदेश को चलें यही हमलोगों का धर्म है ॥ ४ ॥

वैशम्पायन उवाच

ते परस्परमामन्त्र्य देवकल्पा महर्षयः ।
पांडोः पुत्रान्पुरस्कृत्य नगरं नागसाह्वयम् ॥ ५ ॥
उदारमनसः सिद्धा गमने चक्रिरे मनः ।
भीष्माय पांडवान्दातुं धृतराष्ट्राय चैव हि ॥ ६ ॥

अर्थ—वैशम्पायन बोले ॥ वे देवताओं के सदृश महर्षि लोक आपस में सलाह करके पांडु के पुत्रों को आगे करके हस्तिनापुर को चले ।५। उन सिद्धि को प्राप्त हुए उदारमनवालों ने पांडवों को भीष्म और धृतराष्ट्र को देने के हेतु चलने में मन किया ॥ ६ ॥

तस्मिन्नेव क्षणे सर्वे तानादाय प्रतस्थिरे ।
पांडोर्दारांश्च पुत्रांश्च शरीरं ते च तापसाः ॥ ७ ॥

अर्थ—उसीक्षण में वे सब तपस्वी पांडु के पुत्रों और स्त्री और दोनों दग्ध शरीरों की अस्थियों को लेकर चले ॥ ७ ॥

सुखिनी सा पुरा भूत्वा सततं पुत्रवत्सला ।
प्रपन्ना दीर्घमध्वानं संक्षिप्तं तदमन्यत ॥ ८ ॥

अर्थ—वह सदैव पुत्रों में प्रेम रखनेवाली और सुख को प्राप्त होनेवाली कुंती सबके आगे रहकर लम्बे मार्ग में प्राप्त है तो भी उसको छोटा मानती हुई।८।

सा त्वदीर्घेण कालेन संप्राप्ता कुरुजांगलम् ।
वर्द्धमानपुरद्वारमाससाद यशस्विनी ॥ ९ ॥

अर्थ—वह यशवाली कुन्ती थोड़े ही समय में कुरुजांगल देश को प्राप्त होकर मुख्यद्वार को पहुंची ॥ ९ ॥

द्वारिणं तापसा ऊचू राजानं च प्रकाशय ।
ते तु गत्वा क्षणेनैव सभायां विनिवेदिताः ॥ १० ॥

अर्थ—तपस्वीलोगों ने द्वारपाल से कहा कि राजा को जनावो और वे स

च चणभर में सभा में जनायेगये ॥ १० ॥

तं चारणसहस्राणां मुनीनामागमं तदा ।
श्रुत्वा नागपुरे नृणां विस्मयः समपद्यत ॥ ११ ॥

अर्थ—उस हजारों चारणमुनियों के आगम को सुनकर हस्तिनापुर में मनुष्यों को आश्चर्य हुआ ॥ ११ ॥

मुहूर्तोदित आदित्ये सर्वे बालपुरस्कृताः ।
सदारास्तांपसान्द्रष्टुं निर्ययुः पुरवासिनः ॥ १२ ॥

अर्थ—दो घड़ी दिन चढने पर सब पुरवासी बालकों को आगे करके स्त्रियों सहित उन तपस्वियों को देखने के लिये निकले ॥ १२ ॥

स्त्रीसंघाः क्षत्रसंघाश्च यानसंघं समास्थिताः
ब्राह्मणैः सह निर्जग्मुर्ब्राह्मणानां च योषितः ॥ १३॥

अर्थ—स्त्रियों के समूह और क्षत्रियों के समूह सवारियों पर चढेहुए तथा ब्राह्मणों के साथ ब्राह्मणों की स्त्रियें ये सब चले ॥ १३ ॥

तथा विट्शूद्रसंघानां महान् व्यतिकरोऽभवत् ।
न कश्चिदकरोदीर्ष्यामभवन् धर्मबुद्धयः ॥ १४ ॥

अर्थ—इसी प्रकार से वैश्य और शूद्रों के समूहों की बड़ी भारी भीड़ हुई और सब धर्मबुद्धि में हुए किसीने किसीसे ईर्षा नहीं की ॥ १४ ॥

तथा भीष्मः शान्तनवः सोमदत्तोऽथ बाल्हिकः ।
प्रज्ञाचक्षुश्च राजर्षिः क्षत्ता च विदुरः स्वयम् ॥ १५ ॥
सा च सत्यवती देवी कौशल्या च यशस्विनी ।
राजदारैः परिवृता गान्धारी चापि निर्ययौ ॥ १६ ॥

अर्थ—इसीप्रकार शन्तनु का पुत्र भीष्म, सोमदत्त, बाल्हिक और राजर्षि धृतराष्ट्र और दासीपुत्र विदुर और वह सत्यवती देवी, यशवाली काशिराज की पुत्री कौशल्या ये दोनों और राज स्त्रियों से घिरीहुई गान्धारी भी गई।१६।

धृतराष्ट्रस्य दायादा दुर्योधनपुरोगमाः ।
भूषिता भूषणैश्चित्रैः शतसंख्या विनिर्ययुः ॥ १७ ॥

अर्थ—दुर्योधन को आदिलेकर धृतराष्ट्र के सौ पुत्र नानाप्रकारके भूषणों से भूषित हुए निकले ॥ १७ ॥

तान्महर्षिगणान्दृष्ट्वा शिरोभिरभिवाद्य च ।
उपोपविविशुः सर्वे कौरव्याः सपुरोहिताः ॥ १८ ॥

अर्थ—उन महर्षिगणों को देखकर और शिरों से नमस्कार करके पुरोहित के साथ सब कौरव चारों ओर बैठे ॥ १८ ॥

तथैव शिरसा भूमावभिवाद्य प्रणम्य च ।
उपोपविविशुः सर्वे पौरजानपदा अपि ॥ १९ ॥

अर्थ—इसीप्रकार भूमि से शिरलगाकर अभिवादन अर्थात् अपने नामोच्चारणों के साथ नमस्कार और प्रणाम (आठ अंगों सहित कियाजावे उसको प्रणाम कहते हैं) करके पुरवासी और देश के सब लोग भी चारों ओर बैठे ।१९

तमकूजमभिज्ञाय जनौघं सर्वशस्तदा ।
पूजयित्वा यथान्यायं पाद्येनार्घ्येण च प्रभो ॥ २० ॥

अर्थ—हे महाराज चारों ओर उस जन समुदाय को चुपचाप जानकर यथायोग्य पाद्य और अर्घ्य से पूजन करके ॥ २० ॥

भीष्मो राज्यं च राष्ट्रं च महर्षिभ्यो न्यवेदयत् ।
तेषामथो वृद्धतमः प्रत्युत्थाय जटाजिनी ॥
ऋषीणां मतमाज्ञाय महर्षिरिदमब्रवीत् ॥ २१ ॥

अर्थ—भीष्म ने राज्य और देश को महर्षियों के अर्थ निवेदन किया तदनन्तर उन महर्षियों में से बडी भारी जटावाला एक बडा वृद्ध महर्षि खड़ा होकर ऋषियों के अभिप्राय को जानकर यह बोला ॥ २१ ॥

यः स कौरव्यदायादः पांडुर्नाम नराधिपः ।
कामभोगान्परित्यज्य शतशृंगमितो गतः ॥ २२ ॥

अर्थ—जो कौरवों का दायभागी पांडु नामक राजा था वह मनोवाञ्छित भोगों को छोडकर यहां से शतशृंग नामक पर्वत को गया था ॥ २२ ॥

ब्रह्मचर्यव्रतस्थस्य तस्य दिव्येन हेतुना ।
साक्षाद्धर्मादयं पुत्रस्तत्र जातो युधिष्ठिरः ॥ २३ ॥

अर्थ—उस ब्रह्मचर्यव्रत में रहनेवाले पांडु के दिव्यहेतु अर्थात् मन्त्रद्वारा देवताऽऽव्हान कारण से, साक्षात् धर्म से यह युधिष्ठिर पुत्र वहां उत्पन्न हुआ।

तथैनं बलिनां श्रेष्ठं तस्य राज्ञो महात्मनः ॥
मातरिश्वा ददौ पुत्रं भीमं नाम महाबलम् ॥ २४ ॥

अर्थ—इसीतरह उस महात्मा राजा को बलियों में श्रेष्ठ बडे बलवान् इस भीम नामक पुत्र को मातरिश्वा (पवन) ने दिया ॥२४ ॥

पुरुहूतादयं जज्ञे कुंत्यामेव धनंजयः ॥

यस्य कीर्तिर्महेष्वासान् सर्वानभिभविष्यति ॥ २५ ॥

अर्थ—वह धनंजय कुन्ती से पुरुहूत (इंद्र) से पैदा हुआ जिस धनंजय की कीर्ति सम्पूर्ण बडे धनुषवाले वीरों को दबावेगी ॥ २५ ॥

यौ तु माद्री महेष्वासावसूत पुरुषोत्तमौ ।
अश्विभ्यां पुरुषव्याघ्राविमौ तावपि पश्यत ॥ २६ ॥

अर्थ—जिन बडे धनुषवाले उत्तम पुरुषों को माद्री ने जने हैं वे दोनों ये पुरुषव्याघ्र अर्थात् पुरुषों में सिंह समान अश्विनीकुमारों से हैं तिनको भी देखो ॥२६॥

चरता धर्मनित्येन वनवासं यशस्विना ।
नष्टः पैतामहो वंशः पांडुना पुनरुद्धृतः ॥ २७ ॥

अर्थ—सदैव धर्म में रहनेवाले वनवासी यशवान् पांडु ने नष्टहुए पितामह (शंतनु) के वंश का फिर से उद्धार किया ॥ २७ ॥

पुत्राणां जन्मवृद्धिं च वैदिकाध्ययनानि च ।
पश्यन्तः सततं पांडोः परां प्रीतिमवाप्स्यथ ॥ २८ ॥

अर्थ—पुत्रों की जन्मवृद्धि और वेद का पढना निरन्तर देखतेहुए पांडुकी परमप्रीति को प्राप्त होवोगे ॥ २८ ॥

वर्त्तमानः सतां वृत्ते पुत्रलाभमवाप्य च ।
पितृलोकं गतः पांडुरितः सप्तदशेऽहनि ॥ २९ ॥

अर्थ—सत्पुरुषों के आचरण में रहनेवाले पांडु को पुत्रलाभ प्राप्त होकर इस संसार से पितृलोक गये सत्रह दिन हुए ॥ २९ ॥

तं चितागतमाज्ञाय वैश्वानरमुखे हुतम् ।
प्रविष्टा पावकं माद्री हित्वा जीवितमात्मनः ॥ ३० ॥

अर्थ—उस अग्नि के मुख में हवन कियेहुए पांडु को चिता में गया हुआ जानकर माद्री ने अपने जीवन को छोड अग्नि में प्रवेश किया ॥ ३० ॥

सा गता सह तेनैव पतिलोकमनुव्रता ।
तस्यास्तस्य च यत्कार्यं क्रियतां तदनन्तरम् ॥ ३० ॥

अर्थ—वह माद्री सतीधर्म को पालन करतीहुई उस पांडु के साथ ही पतिलोक को गई तिस माद्री का और उस पांडु का इसके आगे का जो कार्य करना हो सो करो ॥ ३१ ॥

इमे तयोः शरीरे द्वे पुत्राश्चेमे तयोर्वराः ।
क्रियाभिरनुगृह्यन्तां सहमात्रा परंतपाः ॥ ३२ ॥

अर्थ—उन दोनों के ये शरीर (अस्थि) और उन दोनों के ये पराक्रमी श्रेष्ठ पुत्र माताके साथ हैं तिनपर उत्तर क्रियाओं से अनुग्रह करो ॥ ३१ ॥

प्रेतकार्ये निवृत्ते तु पितृमेधं महायशाः ।
लभतां सर्वधर्मज्ञः पांडुः कुरुकुलोद्वहः ॥ ३३ ॥

अर्थ—प्रेतकार्य निवृत्त होने पर महायशवाला धर्म को जाननेवाला कुरुकुल को धारण करनेवाला पांडु पितृयज्ञ को प्राप्त होवे ॥ ३३ ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥

एवमुक्त्वा कुरून्सर्वान् कुरूणामेव पश्यताम् ॥
क्षणेनांतर्हिताः सर्वे तापसा गुह्यकैः सह ॥ ३४ ॥

अर्थ—वैशम्पायन बोले, इसप्रकार सब कौरवों को कहकर कौरवों के देखते ही देखते क्षणभर में गुह्यकों के साथ सर्वतपस्वी अन्तर्ध्यान होगये ॥ ३४ ॥

गन्धर्वनगराकारं तथैवांतर्हितं पुनः ।
ऋषिसिद्धगणं दृष्ट्वा विस्मयं ते परं ययुः ॥ ३५ ॥

अर्थ—फिर वैसे ही गन्धर्वनगर के सदृश अन्तर्ध्यान हुए ऋषि और सिद्धों के समुदाय को देखकर वे कौरव बडे आश्चर्य को प्राप्त हुए ॥ ३५ ॥

जब द्रौपदी का स्वयम्बर रचागया तब कईराजा और कईदेवता इकट्ठे हुए उस समय देवर्षि चारण आदि भी इकट्ठे हुए थे इस विषय का आदिपर्व के १८७ वें अध्याय के ७ वें अङ्क का श्लोक नीचे लिखाजाता है

दैत्याः सुपर्णाश्च महोरगाश्च देवर्षयो गुह्यकचारणाश्च ।
विश्वावसुर्नारदपर्वतौ च गन्धर्वमुख्याः सहसाप्सरोभिः ॥ ७ ॥

अर्थ—दैत्य, गरुड, बडेनाग, देवर्षि, गुह्यक, चारण, विश्वावसु, नारद मुनि, पर्वतमुनि और गंधर्व मुख्य अप्सराओं के साथ अकस्मात् (प्राप्त हुए) ॥ ७ ॥

राजा युधिष्टिर ने सूर्य की स्तुति की उस प्रकरण का वनपर्व के ३ अध्याय का ४० वां श्लोक नीचे लिखाजाता है

तव दिव्यं रथं यातमनुयान्ति वरार्थिनः ।
सिद्धचारणगन्धर्वा यक्षगुह्यकपन्नगाः ॥ ४० ॥

अर्थ—हे सूर्य! तुम्हारे चलतेहुए दिव्य रथ के पीछे वरदान की इच्छा से सिद्ध, चारण, गन्धर्व, यक्ष, गुह्यक और सर्प चलते हैं ॥ ४० ॥

युधिष्टिर की आज्ञा से अर्जुन महादेव और इंद्र को देखने के लिये उत्तर दिशा में हिमालय के शिखर की ओर गया वहां पर मार्ग में एक वन आया जो अनेक मृग, पुष्प, फल से युक्त और सिद्ध व चारणों से सेवित था. इस

विषय के वनपर्व के ३८ वें अध्याय के १२वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं

युधिष्ठिरनियोगात्स जगामामिततविक्रमः ।
शक्रं सुरेश्वरं द्रष्टुं देवदेवं च शंकरम् ॥ १२ ॥
दिव्यं तद्धनुरादाय खड्गं च कनकत्सरुम् ।
महाबलो महाबाहुरर्जुनः कार्यसिद्धये ॥ १३ ॥
दिशं ह्युदीचीं कौरव्यो हिमवच्छिखरं प्रति ।
ऐंद्रिः स्थिरमना राजन् सर्वलोकमहारथः ॥ १४ ॥
त्वरया परया युक्तस्तपसे धृतनिश्चयः ।
वनं कंटकितं घोरमेक एवान्वपद्यत ॥ १५ ॥
नानापुष्पफलोपेतं नानापक्षिनिषेवितम् ।
नानामृगगणाकीर्णं सिद्धचारणसेवितम् ॥ १६ ॥

अर्थ- हे राजा! युधिष्टिर की आज्ञा से वह दृढ चित्तवाला सम्पूर्ण लोक में एक महारथी इन्द्र का बेटा महापराक्रमी महाबाहु बडा बलवान् अर्जुन कार्य सिद्धि के लिये उत्तम धनुष और सोने की मूठ की तरवार लेकर उत्तर दिशा को हिमालय पर्वत की चोटी की तरफ देवताओं के अधिपति इंद्र और देवों के देव महादेव के दर्शन के हेतु गया ॥१२॥१३॥ १४॥ तप के लिये निश्चय कर अकेला ही बडी शीघ्रता के साथ भयानक कटीले वन में प्राप्त हुआ ॥ १५ ॥ जो वन भांति भांति के फल और पुष्पों से युक्त अनेक पक्षियों से शोभित, अनेक मृगसमुदाय से भरा और सिद्ध, चारणों से सेवित है ॥ १६ ॥

अर्जुन इन्द्र की पुरी को पहुंचा तो जो पुरी सुंदर सिद्ध, चारणों से सेवित है और सर्वऋतु के वृक्ष, पुष्प आदि से सुशोभित है, उसको देखी इसके प्रमाण में वनपर्व के ४३ वें अध्याय के आदि का श्लोक नीचे लिखाजाता है-

ददर्श स पुरीं रम्यां सिद्धचारणसेवितां ।
सर्वर्तुकुसुमैः पुण्यैः पादपैरुपशोभिताम् ॥ १ ॥

अर्थ-उस अर्जुन ने सुंदर सिद्ध, चारणों से सेवा कीहुई और सर्वऋतु के पुष्पोंवाले पवित्र वृक्षों से शोभित अमरावती पुरी को देखी ॥ १ ॥

उर्वशी ने अर्जुन को कहा कि हे पार्थ इंद्र की सभा में इतने देवता स्थित थे उस समय तूने मेरी ओर अनिमेष होके देखा था उस प्रकरण के वनपर्व के ४६ वें अध्याय के २४ वां और पचीसवां दो श्लोक नीचे लिखते हैं

रुद्राणां चैव सान्निध्यमादित्यानां च सर्वशः ।

समागमेऽश्विनोश्चैव वसूनां च नरोत्तम ॥ २४ ॥

अर्थ–हे मनुष्यों में उत्तम! रुद्रों के समीप और सब आदित्यों, अश्विनीकुमारों और वसुदेवताओं के मेल में ॥ २४ ॥

महर्षीणां च संघेषु राजर्षिप्रवरेषु च ।
सिद्धचारणयक्षेषु महोरगगणेषु च ॥ २५ ॥

अर्थ–महर्षियों के समूहों में तथा श्रेष्ठ राजर्षियों में और सिद्ध, चारण, यक्ष, व बड़े उरग समुदायों में तुमने मेरे सामने देखा है ॥ २५ ॥

जब इंद्र के अर्द्ध आसन पर अर्जुन को बैठा देख लोमश को अचरज हुआ तब इंद्र ने कहा कि यह मनुष्य नहीं, परन्तु मेरा पुत्र और नरनारायण का अवतार है जिसका निवास उस बद्रिकाश्रम में है कि जहां से सिद्ध, चारणों से सेवा की हुई गंगा निकली है इस विषय के वनपर्व के ४७ वें अध्याय के १० वें श्लोक से लेकर १३ तक नीचे लिखते हैं–

ताविमावनुजानीहि हृषीकेशधनंजयौ ।
विख्यातौ त्रिषु लोकेषु नरनारायणावृषी ॥ १० ॥
कार्यार्थमवतीर्णौ तौ पृथ्वीं पुण्यप्रतिश्रयाम् ॥
यन्न शक्यं सुरैर्द्रष्टुमृषिभिर्वा महात्मभिः ॥ ११ ॥
तदाश्रमपदं पुण्यं बदरी नाम विश्रुतम् ॥
स निवासोऽभवद्विप्र विष्णोर्जिष्णोस्तथैव च ॥ १२ ॥
यतः प्रववृते गङ्गा सिद्धचारणसेविता ॥ १३ ॥

अर्थ–तीनों लोकों में प्रसिद्ध जो नरनारायण हैं, तिनको हृषीकेश (कृष्ण) और धनंजय (अर्जुन) जानो ॥ १० ॥ कार्य के लिये ये दोनों पुण्य पवित्र पृथ्वी पर अवतरे हैं, जो आश्रम महात्मा ऋषि और देवताओं के देखने को अशक्य है ॥ ११ ॥ वह पुण्य स्वरूप बद्रिकाश्रम नाम से प्रसिद्ध है, वह आश्रम विष्णु का वैसे ही अर्जुन का निवासस्थान हुआ और जिस आश्रम से सिद्ध, चारणों से सेवन की हुई गंगा निकली है ॥ १३ ॥

अगस्त्यऋषि ने राजा युधिष्ठिर के आगे कुरुक्षेत्र की और सरस्वती की प्रशंसा की है उस प्रकरण का वनपर्व के ८३ वें अध्याय का पांचवां श्लोक नीचे लिखाजाता है....

तत्र मासं वसेद्वीरः सरस्वत्यां युधिष्ठिर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयः सिद्धचारणाः ॥ ५ ॥

अर्थ--हे युधिष्ठिर उस कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी के किनारे एक मास तक धीरजवाला मनुष्य बसै जहां पर ब्रह्मा को आदि लेकर देवता, ऋषि और सिद्ध चारण हैं ॥ ५ ॥

धौम्य ऋषि ने युधिष्ठिर को तीर्थों का माहात्म्य कहा है वहां वनपर्व के ८९ वें अध्याय के २ से लेकर ४ तक के श्लोक नीचे लिखते हैं....

प्रियंग्वाम्रवणोपेता वानीरफलमालिनी ।
प्रत्यक्स्रोता नदी पुण्या नर्मदा तत्र भारत ॥ २ ॥

अर्थ-हे भरतवंशी राजा वहां पर प्रियंगु और आमों के वनों से युक्त वानीर वृक्षों के फलों की मालावाली और पश्चिमदिशा में बहनेवाली पवित्र नर्मदा नदी है ॥ २ ॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च ।
सरिद्वनानि शैलेन्द्रा देवाश्च सपितामहाः ॥ ३ ॥

अर्थ-जो त्रैलोक्य में तीर्थ हैं वा पुण्यस्थान नदी, वन, पर्वत और ब्रह्मादिक देवता हैं ॥ ३ ॥

नर्मदायां कुरुश्रेष्ठ सह सिद्धर्षिचारणैः ।
स्नातुमायान्ति पुण्यौघैः सदा वारिषु भारत ॥ ४ ॥

अर्थ-हे कौरवों में उत्तमराजा, हे भारत! वे सब सिद्ध, ऋषि, चारणों के पवित्र समूहों के साथ सदैव नर्मदा में स्नान करने को आते हैं ॥ ४ ॥

युधिष्ठिर ने तीर्थाटन करतेहुए बदरिकाश्रम के मार्ग से कुबेर के भवन को देखने की इच्छा की तब आकाशवाणी से कहागया कि इस मार्ग से नहीं जासकेगा पीछा बदरीस्थान में जाकर वृषपर्वा के आश्रम में जावेगा तो वहां से कुबेर का भवन देखेगा इस विषय के वनपर्व के १५६ वें अध्याय के १३ वें श्लोक से १६ तक नीचे लिखेजाते हैं-

॥ वैशंपायन उवाच ॥

एवं ब्रुवति राजेन्द्र वागुवाचाशरीरिणी ।
न शक्यो दुर्गमो गन्तुमितो वैश्रवणाश्रमात् ॥ १४ ॥
अनेनैव पथा राजन् प्रतिगच्छ यथागतम् ।
नरनारायणस्थानं बदरीत्यभिविश्रुतम् ॥ १४ ॥
तस्माद्यास्यसि कौन्तेय सिद्धचारणसेवितम् ।
बहुपुष्पफलं रम्यमाश्रमं वृषपर्वणः ॥ १५ ॥

अतिक्रम्य च तं पार्थ त्वार्ष्टिषेणाश्रमे वसेः ।
ततो द्रक्ष्यसि कौन्तेय निवेशं धनदस्य च ॥ १६ ॥

अर्थ-वैशम्पायन बोले, इस प्रकार राजा युधिष्टिर के बोलने पर बिना शरीरवाली (आकाशवाणी) हुई कि यह कठिन मार्ग जाने के योग्य नहीं इसकारण से जिस मार्ग से आया उसी मार्ग से हे राजा कुबेर के आश्रय से पीछा बदरिकाश्रम के नाम से प्रसिद्ध जो नरनारायण का स्थान है वहां जा ॥ १५ ॥ हे कुंतीपुत्र तहां से बहुत हैं पुष्प और फल जिसमें ऐसा प्रसिद्ध चारणों से सेवित मनोहर जो वृषपर्वा का आश्रम है वहां जावेगा ॥ १५ ॥ हे पृथाके पुत्र उसके आगे चलकर आर्ष्टिषेण के आश्रम में निवास करेगा तब हे कुंतीपुत्र कुबेर के स्थान को देखेगा ॥ १६ ॥

राजा ययाति के स्वर्ग से भ्रष्ट होने से अपलज्ज होकर उसके दौहित्रों ने पुत्र कार्य करके पीछा उसको स्वर्ग पहुंचाया और वहां पर देवता ऋषि तथा चारणों ने उत्तम अर्घ्य से अर्चन किया इस विषय के उद्योगपर्व के १२३ वें अध्याय के आदि से ५ श्लोक नीचे लिखेजाते हैं-

॥ नारद उवाच ॥

सद्भिरारोपितः स्वर्गं पार्थिवैर्भूरिदक्षिणैः ।
अभ्यनुज्ञाय दौहित्रान्ययातिर्दिवमास्थितः ॥ १ ॥
अभिवृष्टश्च वर्षेण नानापुष्पसुगन्धिना ।
परिष्वक्तश्च पुण्येन वायुना पुण्यगंधिना ॥ २ ॥
अचलं स्थानमासाद्य दौहित्रफलनिर्जितम् ।
कर्मभिः स्वैरुपचितो जज्वाल परया श्रिया ॥ ३ ॥
उपगीतोपनृत्तश्च गन्धर्वाप्सरसां गणैः ।
प्रीत्या प्रतिगृहीतश्च स्वर्गे दुन्दुभिनिस्वनैः ॥ ४ ॥
अभिष्टुतश्च विविधैर्देवराजर्षिचारणैः ।
अर्चितश्चोत्तमार्घ्येण दैवतैरभिनन्दितः ॥ ५ ॥

अर्थ- नारद बोले, बहुत दक्षिणा देनेवाले उन श्रेष्ठराजाओं से स्वर्गारोहण करनेवाला वह ययाति राजा दौहित्रों की अनुमति से स्वर्ग में स्थित हुआ ॥ १ ॥ अनेक सुगन्धित पुष्पों की वर्षा से आच्छादित और सुंदर सुगन्धिवाले पवित्र वायु से सेवित ॥ २ ॥ वह राजा ययाति दौहित्रों के पुण्यफल से जीतेगये अचल स्वर्गस्थान को प्राप्त होकर अपने कर्मों से बढताहुआ पूर्ण शोभा से शोभित हुआ ॥ ३ ॥ और गन्धर्व व अप्सराओं के गणके नाचने गान से प्रसन्न न-

गारों के शब्दों के साथ प्रीति से ग्रहण किया गया ॥४॥ अनेक देव, राजर्षि, चारणों से स्तुति कियागया और उत्तम अर्घ्य से पूजित होकर देवताओं के समुदाय के साथ आनन्दित हुआ ॥ ५ ॥

श्रीकृष्ण ने दोनों ओर की सेना और अर्जुन को युद्ध करने को तय्यार हुआ देखकर अर्जुन को कहा है कि हे अर्जुन तू देवी की स्तुति कर वह तुझको विजय दिलावेगी तब अर्जुन ने स्तुति की वहां भीष्मपर्वके २३ वें अध्याय का १६ वां श्लोक नीचे लिखाजाता है–

तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चन्द्रादित्यविवर्धिनी ।
भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥ १६ ॥

अर्थ–हे देवी तू तुष्टि, पुष्टि, धृति, दीप्ति, चन्द्र और आदित्य की वृद्धि करनेवाली और ऐश्वर्यवालों का ऐश्वर्य ऐसी संग्राम में सिद्ध और चारणों से देखी जाती है ॥ १६ ॥

संजय ने राजा धृतराष्ट्र से कहा है कि कृष्ण का उपदेश सुने पीछे अर्जुन को धनुष बाण धारण किया हुआ देखकर महारथियों ने सिंहनाद किया वहां देवतादिक देखने को आये यह भीष्मपर्व के ४३ वें अध्याय का ९ मां श्लोक नीचे लिखाजाता है—

तथा देवाः सगन्धर्वाः पितरश्च जनाधिप ।
सिद्धचारणसंघाश्च समीयुस्तद्दिदृक्षया ॥ ९ ॥

अर्थ—हे राजन् उसी प्रकार गन्धर्व सहित देवता, पितर, सिद्ध और चारणों के समूह उसे देखने की इच्छा से आये ॥ ९ ॥

जब भीष्म और अर्जुन का परस्पर युद्ध प्रारम्भ हुआ और उन दोनों के शस्त्र अस्त्र का बल देखकर देव, गन्धर्व, महर्षि व चारण लोक परस्पर कहने लगे कि अर्जुन से भीष्म और भीष्म से अर्जुन का पराजय होवे ऐसा नहीं दीखता यह युद्ध बडा अद्भुत है इत्यादि विषय के भीष्मपर्व के ५२वें अध्याय के ६३ वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं:—

प्रकाशौ च पुनस्तूर्णं बभूवतुरुभौ रणे ।
तत्र देवाः सगन्धर्वाश्चारणाश्चर्षिभिः सह ॥ ६३ ॥
अन्योन्यं प्रत्यभाषन्त तयोर्दृष्ट्वा पराक्रमम् ।
न शक्यौ युधि संरब्धौ जेतुमेतौ कथंचन ॥ ६४ ॥
सदेवासुरगन्धर्वैर्लोकैरपि महारथौ ।
आश्चर्यभूतं लोकेषु युद्धमेतन्महाद्भुतम् ॥ ६५ ॥

नैतादृशानि युद्धानि भविष्यन्ति कथंचन ।
न हि शक्यो रणे जेतुं भीष्मः पार्थेन धीमता ॥ ६६ ॥
सधनुः सरथः साऽश्वः प्रवपन्सायकान् रणे ।
तथैव पांडवं युद्धे देवैरपि दुरासदम् ॥ ६७ ॥
न विजेतुं रणे भीष्म उत्सहेत धनुर्धरम् ॥
आलोकादपि युद्धं हि समत्वं तद्भविष्यति ॥ ६८ ॥

अर्थ—और फिर वे दोनों संग्राम में शीघ्र प्रकाश हुए, वहां गन्धर्वों के साथ देवता और ऋषियों के साथ चारण ॥ ६३ ॥ उन दोनों के पराक्रम को देखकर आपस में कहने लगे कि ये दोनों महारथी संग्राम में किसी प्रकार देव, असुर और गन्धर्वों के साथ तीनों लोकों में भी जीते नहीं जासक्ते. तीनों लोकों में बड़ा अद्भुत आश्चर्य करनेवाला यह युद्ध है ॥६४-६५॥ ऐसे युद्ध किसी प्रकार नहीं होवेंगे. भीष्म को बुद्धिमान् अर्जुन संग्राम में जीतने को समर्थ नहीं है ॥६६॥ वैसे ही धनुष के साथ, रथ के साथ और घोड़ों के साथ भीष्म भी संग्राम में बाणों को चलाकर धनुष धारण करनेवाले, रण में देवताओं से भी नहीं जीते जानेवाले अर्जुन को संग्राम में जीतने को नहीं उत्साह करै, यह युद्ध देखने से भी बराबर ही होवेगा ॥ ६८ ॥

भीष्म को शरशय्या ऊपर स्थित हुआ देखकर ऋषि और चारण लोकों ने जो कुछ कहा उस प्रकरण के भीष्मपर्व के १२० वें अध्याय के १४ वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं:—

अयं पितरमाज्ञाय कामार्तं शन्तनुं पुरा ।
ऊर्ध्वरेतसमात्मानं चकार पुरुषर्षभः ॥ १४ ॥
इति स्म शरतल्पस्थं भरतानां महत्तमम् ।
ऋषयस्त्वभ्यभाषन्त सहिताः सिद्धचारणैः ॥ १५ ॥
हते शान्तनवे भीष्मे भरतानां पितामहे ।
न किञ्चित् प्रत्यपद्यन्त पुत्रास्तव हि मारिष ॥ १६ ॥
विवर्णवदनाश्चासन्हतश्रीकाश्च भारत ।
अतिष्ठन्व्रीडिताश्चैव ह्रिया युक्ता ह्यधोमुखाः ॥ १७ ॥
पाण्डवाश्च जयं लब्ध्वा संग्रामशिरसि स्थिताः ।
सर्वे दध्मुर्महाशंखान्हेमजालपरिष्कृतान् ॥ १८ ॥

अर्थ-पुरुषों में उत्तम पहले हन्त (भीष्म) ने अपने पिता शंतनु को कामार्त जानकर अपने तई ब्रह्मचर्य धारण करनेवाला करलिया ॥ १४ ॥ शरशय्या में सोतेहुए भरतवंश में बहुत बड़े ऐसे भीष्म को लोकपाल सिद्ध और चारणों के साथ इस रीति से कहने लगे ॥१५॥ हे आरिष शन्तनु के पुत्र भरतवंशियों के पितामह भीष्म के मरने पर, तुम्हारे पुत्रों को कुछ नहीं सूझा ॥ १६॥ और हे भारत बिगड़हुए मुख, हतश्री, लज्जित, अधोमुख स्थित रहे ॥१७॥ और रण के बीच स्थित सब पांडवों ने जय पाकर सोने से मढ़ेहुए बड़े शंख बजाये ॥१८॥

जब युयुधान और द्रोण का परस्पर युद्ध हुआ तब विमानों में बैठकर देवता, सिद्ध, चारण और विद्याधर आदि दोनों वीरों की ओर से तीरों का जाना आना देखकर विस्मय में आये इस विषय के द्रोणपर्व के ९८ वें अध्याय के ९३ वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं

> तद्युद्धं युयुधानस्य द्रोणस्य च महात्मनः ।
> विमानाग्रगता देवा ब्रह्मसोमपुरोगमाः ॥ ३३ ॥
> सिद्धचारणसंघाश्च विद्याधरमहोरगाः ।
> गतप्रत्यागताक्षेपैश्चित्रैरस्त्रविघातिभिः ॥ ३४ ॥
> विविधैर्विस्मयं जग्मुस्तयोः पुरुषसिंहयोः ।

अर्थ-महात्मा द्रोण और युयुधान के उस युद्ध का विमानों में बैठेहुए ब्रह्मा और चंद्र को आदि लेकर देवता, सिद्ध, चारणों के समुदाय और विद्याधर और महोरग ये सब देखकर उन दोनों पुरुषसिंहों के चित्र विचित्र अस्त्रों का विनाश करनेवाले नानाप्रकार के जाने आने और फैंकने से आश्चर्य को प्राप्त हुए ॥ ३४ ॥

युयुधान की शीघ्रता की द्रोणाचार्य प्रशंसा करनेलगे और देवता गन्धर्व आदि द्रोण और युयुधान दोनों के शीघ्रता के प्रभाव को नहीं जानसके और सिद्ध, चारणों ने जाना, इस विषय के द्रोणपर्व के ९८ वें अध्याय के ४३ वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं:—

> लाघवं वासवस्येव संप्रेक्ष्य द्विजसत्तमः ।
> ततः अस्त्रविदां श्रेष्ठस्तथा देवाः सवासवाः ॥ ४३ ॥
> न तामालक्षयामासुर्लघुतां शीघ्रचारिणः ।
> देवाश्च युयुधानस्य गन्धर्वाश्च विशांपते ॥ ४४ ॥
> सिद्धचारणसंघाश्च विदुर्द्रोणस्य कर्म तत् ।

अर्थ-हे राजन् अस्त्रवेत्ताओं में श्रेष्ठ द्विजों में उत्तम द्रोणाचार्य युयुधान की

इंद्र की स्त्री लघुना को देखकर प्रसन्न हुआ. वैसे इन्द्र सहित देवता और शीघ्र चलनेवाले देवता और गन्धर्व उस लघुना को नहीं देखसके परन्तु द्रोण के उस काम को सिद्ध और चारणों के समुदाय ने जाना ॥४३॥४४॥

द्रोणाचार्य और धृष्टकेतु का युद्ध बड़ा भयानक, देखने के लायक और सिद्ध चारण सबों को विस्मयाद्भुत दिखानेवाला हुआ इस विषय का द्रोणपर्व के १०७ वें अध्याय का १३वां श्लोक नीचे लिखाजाता है:—

तद्युद्धमासीत्तुमुलं प्रेक्षणीयं विशांपते ।
सिद्धचारणसंघानां विस्मयाद्भुतदर्शनम् ॥ १३

अर्थ–हे राजन् वह देखनेलायक बड़ा भारी युद्ध सिद्ध और चारणों के समुदाय को अद्भुत आश्चर्य दिखाने वाला हुआ॥ १३॥

जयद्रथ के मारने में द्रोणाचार्य ने जो व्यूह रचा उसकी प्रशंसा देवता और चारणों से कीगई उसका वृत्तांत संजय ने धृतराष्ट्र के आगे कहा जिसका द्रोण पर्व के १२४ वें अध्याय का १० अंक का श्लोक नीचे लिखाजाता है

तत्र देवास्त्वभाषन्त चारणाश्च समागताः ।
एतदन्ताः समूहा वै भविष्यन्ति महीतले ॥ १० ॥

अर्थ– उस युद्ध में आयेहुए देवता और चारणों ने कहा कि भूतल में अन्तका व्यूह यही होगा अर्थात् ऐसी व्यूहरचना फिर कभी न होगी ॥ १० ॥

कर्ण और भीमसेन का युद्ध हुआ इस विषय का द्रोणपर्व के १३७ वें अध्याय का १४ वां श्लोक नीचे लिखाजाता है:–

दृष्ट्वा तु भीमसेनस्य विक्रमं युधि भारत ।
अभ्यनन्दंस्त्वदीयाश्च संप्रहृष्टाश्च चारणाः ॥ १४ ॥

अर्थ–हे राजन् युद्ध में भीमसेन के पराक्रम को देख, तुम्हारे पक्षवाले प्रशंसा करनेलगे और चारण प्रसन्न हुए ॥ १४ ॥

भूरिश्रवा का हाथ अर्जुन से काटागया था तब वह युद्ध को छोड़ बैठा परंतु सात्यकि ने उसका मस्तक खड्ग से काटडाला उस कर्म से सेना के लोक सन्तुष्ट न हुए, सिद्ध चारण और मनुष्य भूरिश्रवा को मरा देखकर उसके पराक्रम की स्तुति करनेलगे इस विषय के, द्रोणपर्व के १४३ वें अध्याय के ५४ वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं:–

प्रायोपविष्टाय रणे पार्थेन च्छिन्नबाहवे ।
सात्यकिः कौरवेयाय खड्गेनापहरच्छिरः ॥ ५४ ॥
नाभ्यनंदंत सैन्यानि सात्यकिं तेन कर्मणा ।

अर्जुनेन हतं पूर्वं यज्जघान कुरूद्वहम् ॥ ५५ ॥
सहस्राक्षसमं चैव सिद्धचारणमानवाः ।
भूरिश्रवसमालोक्य युद्धप्रायगतं हतम् ॥ ५६ ॥
अपूजयंत तं देवा विस्मितास्तस्य कर्मभिः ॥ ५७ ॥

अर्थ– अर्जुन से कटा है हाथ जिसका ऐसे संग्राम में अनशनव्रत को धारण कियेहुए भूरिश्रवा का शिर सात्यकि ने तरवार से काटडाला ॥५४॥ इस काम से सेना के लोगों ने सात्यकिकी प्रशंसा नहीं की; क्योंकि पहले अर्जुन से घायल हुए भूरिश्रवा को मारा ॥५५॥ युद्ध से निवृत्त हुए इन्द्र के समान भूरिश्रवा को सिद्ध, चारण और मनुष्य युद्ध में मराहुआ देखकर ॥ ५६ ॥ वे देवता इस भूरिश्रवा के काम से आश्चर्य में आयेहुए उसकी प्रशंसा करने लगे ॥ ५७ ॥

अश्वत्थामा के साथ अर्जुन का युद्ध हुआ तो सहस्र महारथियों के बराबर अकेले अर्जुन ने काम दिया जिससे सिद्ध, देवर्षि व चारण प्रसन्न हुए, देवदुन्दुभि बजे और पुष्पवृष्टि हुई, इस प्रकरण के कर्णपर्व के १६ वें अध्याय के १६ वें श्लोक से नीचे लिखेजाते हैं:–

विस्मापयन्प्रेक्षणीयं द्विषतां भयवर्द्धनं ।
महारथसहस्रस्य समं कर्माकरोज्जयः ॥ १६ ॥
सिद्धदेवर्षिसंघाश्च चारणाश्चापि तुष्टुवुः ।
देवदुन्दुभयो नेदुः पुष्पवर्षाणि चापतन् ॥ १७ ॥

अर्थ–आश्चर्य करातेहुए अर्जुन ने शत्रुओं का भय बढानेवाला देखनेयोग्य हजार महारथियों के बराबर काम किया ॥१६॥ तिससे सिद्ध, देव, ऋषियों के समुदाय और चारण प्रसन्न हुए और देवदुंदुभि बजे और पुष्पों की वर्षा हुई ॥ १७ ॥

अकेले कर्ण ने सब पांडवी सेना को शरों से हटादी इसप्रकार कीशीघ्रता से देवता, सिद्ध व चारण प्रसन्न हुए और धृतराष्ट्र के पुत्रों ने कर्ण की प्रशंसा की, इस प्रकरण के कर्णपर्व के ७८वें अध्याय के ३१ और ३२ वें श्लोक नीचे लिखेजाते हैं:–

पांडवेयान्महाराज शरैर्वारितवान् रणे ।
तत्र भारत कर्णस्य लाघवेन महात्मनः ॥ ३१ ॥
तुतुषुर्देवताः सर्वे सिद्धाश्च सह चारणैः ।

अपूजयन्महेष्वासा धार्तराष्ट्रा नरोत्तमम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-हे महाराज संग्राम में पांडवों का बाणों से वारण किया तहां हे भारत महात्मा भरतवंशी कर्ण की लाघवता से ॥ ३१ ॥ सब देवता और चारणों सहित सिद्ध प्रसन्न हुए और बडे धनुषवाले धृतराष्ट्र के पुत्रों ने नरों में उत्तम कर्ण की पूजा की ॥ ३२ ॥

कर्ण और अर्जुन में परस्पर युद्ध प्रारंभ होने के समय कितनेक लोक कर्ण का जय और कितनेक लोक अर्जुन का जय चाहनेलगे उनमें से मुनि, सिद्ध व चारण आदि अर्जुन के पक्ष में हुए जिसके प्रमाणमें कर्णपर्व के ८७ वें अध्याय के इकतालीस से ३ श्लोक नीचे लिखेजाते हैं-

मुनयश्चारणाः सिद्धा वैनतेया वयांसि च ।
रत्नानि निधयः सर्वे वेदाश्चाख्यानपंचमाः ॥ ४१ ॥
सोपवेदोपनिषदः सरहस्याः ससंग्रहाः ।
वासुकिश्चित्रसेनश्च तक्षको मणिकस्तथा ॥ ४२ ॥
सर्पाश्चैव तथा सर्वे काद्रवेयाश्च सान्वयाः ।
विषवन्तो महाराज नागाश्चार्जुनतोऽभवन् ॥ ४३ ॥

अर्थ-मुनि, चारण, सिद्ध, गरुडपक्षी, पक्षी, रत्न, निधि और इतिहास के साथ सब वेद, रहस्य, संग्रह और उपवेदों सहित उपनिषद्, वासुकि, चित्रसेन, तक्षक, मणिक, सर्प और सब सर्पवंश सहित काद्रवेय और हे महाराज विषवाले नाग ये सब अर्जुन के पक्ष में रहे ॥ ४३ ॥

जब कर्ण और अर्जुन दोनों सारथि, वाहन, आयुध पराक्रम इत्यादि में बराबर हो संग्राम में लडने गये तब उन महारथियों को देख सिद्ध और चारणसमुदाय का विस्मय हुआ । इस विषय के कर्णपर्व के ८७ वें अध्याय के २७ और २८ वें श्लोक नीचे लिखेजाते हैं-

उभौ श्वेतहयौ राजन् रथप्रवरवाहनौ ।
सारथिप्रवरौ चैव तयोरास्तां महारणे ॥ २७ ॥
ततो दृष्ट्वा महाराज राजमानौ महारथौ ।
सिद्धचारणसंघानां विस्मयः समपद्यत ॥ २८ ॥

अर्थ-हे राजन् उस महारण में उन दोनों के श्वेत घोडोंवाले और अच्छे वाहनवाले रथों के अच्छे चलानेवाले दो श्रेष्ठ सारथी हैं ॥२७॥ हे महाराज तदनन्तर शोभायमान उन दोनों महारथियों को देख सिद्ध, चारणों के समुदाय को आश्चर्य उत्पन्न

हुआ ॥ २८ ॥

कर्ण और अर्जुन के युद्ध में अन्तरिक्ष में आकर इन्द्र ने ब्रह्मा से पूछा कि इन दोनों में किसका विजय होगा तब ब्रह्मा और शिव ने अर्जुन का विजय होना निश्चय करके कृष्ण और अर्जुन की स्तुति की इस प्रकरण का कर्णपर्व के ८७ वें अध्याय का ८० के अंक का श्लोक नीचे लिखाजाता है

नैतयोस्तु समः कश्चिद्दिवि वा मानुषेषु वा ।

अनुगम्यास्त्रयो लोकाः सह देवर्षिचारणैः ॥ ८० ॥

अर्थ-इन नरनारायणस्वरूप अर्जुन और कृष्ण के बराबर स्वर्ग में वा मर्त्यलोक में कोई नहीं है और देवर्षि और चारणलोकों के साथ तीनों लोक इनकी सेवा करने के योग्य हैं ॥ ८० ॥

राजा शल्य ने युद्ध करते समय कहा है कि अब हमारा पराक्रम पांडव और सिद्ध चारण देखो उस जगह का शल्यपर्व के सातवें अध्याय का १७ वां श्लोक नीचे लिखाजाता है

लाघवं चास्त्रवीर्यं च भुजयोश्च बलं युधि ।

अद्य पश्यन्तु मे पार्थाः सिद्धाश्च सह चारणैः ॥ १७ ॥

अर्थ-आज युद्ध में मेरे हाथों की फुर्ती और बल तथा अस्त्रविद्या के पराक्रम को पृथा के पुत्र पांडव और चारणों के साथ सिद्धलोक देखो ॥ १७ ॥

इंद्र ने ब्रह्मा से शिव का स्वरूप पूछा तहां ब्रह्मा ने ऋषि, गन्धर्व और चारणों के रूपधारी शिव का वर्णन किया, जहां का आनुशासनिक पर्व के १४वें अध्याय का १५०वां श्लोक नीचे लिखाजाता है

ऋषिगन्धर्वरूपश्च सिद्धचारणरूपधृक् ।

भस्मपांडुरगात्रश्च चन्द्रार्धकृतभूषणः ॥ १५० ॥

अर्थ-ऋषि और गन्धर्व तथा सिद्ध और चारण का रूप धारण करनेवाले भस्म से श्वेत शरीरवाले और अर्धचन्द्रमा को धारण करनेवाले शिव हैं ॥१५०॥

अष्टावक्र ने रुद्रस्थान का मार्ग वदान्य से पूछा जिसके उत्तर में वदान्य ने मार्ग बताया वहां का आनुशासनिक पर्व के १९वें अध्याय का १६ वां श्लोक नीचे लिखाजाता है

धनदं समतिक्रम्य हिमवन्तं च पर्वतम् ।

रुद्रस्यायतनं दृष्ट्वा सिद्धचारणसेवितम् ॥ १६ ॥

अर्थ-कुबेर को और हिमालय पर्वत को भी लांघकर सिद्ध, चारण लोगों से सेवित रुद्र के स्थान को देखसकोगा ॥ १६ ॥

गजेंद्रमोक्ष में जहां परमेश्वर की स्तुति की है वहां का एक श्लोक नीचे लिखा जाता है

> गुह्याय वेदनिलयाय महोदराय
> सिंहाय दैत्यनिधनाय चतुर्भुजाय ।
> ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिचारणसंस्तुताय
> देवोत्तमाय विरजाय नमोऽच्युताय ॥ ६८ ॥

अर्थ—जो जानने में नहीं आता, वेद ही है घर जिनका, बडा पेटवाला, सिंह स्वरूपवाला, दैत्यों का नाश करनेवाला, चार हाथवाला; ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, मुनि और चारणों से स्तुति किया गया ऐसा देवों में उत्तम रजोगुणरहित जो अच्युत विष्णु है उसको नमस्कार करता हूं ॥ ६८ ॥

उक्त प्रमाणों से यह बात स्पष्ट रीति पर सिद्ध होचुकी है कि चारणों की ज्ञाति सृष्टि की उत्पत्ति समय से है और इनका आचार व्यवहार देवताओं के सदृश अत्युत्तम और शुद्ध रहा है और इनकी उत्पत्ति भी देवताओं में है और इनका निवासस्थान स्वर्ग है सो उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध होचुका है; इसकारण अब हम को इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रही; परंतु शास्त्रों से अपरिचित बहुधा मनुष्यों को इस बात का संदेह होवेगा कि चारणों का निवासस्थान स्वर्ग था तो फिर भूमि पर कैसे आये! इस संदेह की निवृत्ति के अर्थ थोडासा वृत्तान्त प्रमाणों सहित और युक्तिसिद्ध नीचे लिखते हैं कि जिससे अपठित लोगों की आशंका भलीभांति मिटजावेगा. वह यह है कि पुराणों के मतानुसार देवताओं का निवासस्थान (स्वर्ग) भूमि से ऊपर आकाश में है तो वहां से भूमि पर आना जाना उन्हीं पुराणों से सिद्ध है. यदि इसके प्रमाण दियेजावें तो भी सैकडों नहीं किंतु हजारों विद्यमान हैं. वे तन्दुलकणन्याय के अनुसार जानलेने चाहियें कि राजा ययाति, मान्धाता, मुचुकुन्द, दशरथ, अर्जुन आदि इसी मनुष्य शरीर से स्वर्ग में गये आये हैं, और इसी प्रकार देवताओं का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना जाना सिद्ध है तहां चारणों के आने जाने में क्यों संदेह होसकता है? और जो अनेक शास्त्रों के और आधुनिक विद्वानों के मतानुसार हिमालय पर्वत के समीपी मध्यप्रदेश तिब्बत को स्वर्ग मान-जावे तो इस.र मत से भी यह प्रामाणिक और युक्तिसिद्ध है; क्योंकि भरद्वाज ने भृगु से पूछा कि स्वर्ग कहां पर है जिसके जानने की मैं इच्छा करता हूं, इसप्रकरण का महाभारत के शांतिपर्व के मोक्ष धर्मपर्व का १९२ वें अध्याय का सातवां श्लोक नीचे लिखते हैं

भरद्वाज उवाच ॥

अस्माल्लोकात्परो लोकः श्रूयते नोपलभ्यते ।
तमहं ज्ञातुमिच्छामि तद्भवान्वक्तुमर्हति ॥ ७ ॥

अर्थ–भरद्वाज बोले कि इस लोक से आगे परलोक सुनाजाता है परंतु देखा नहीं जाता उस परलोक का वृत्तान्त मैं आपसे जानना चाहताहूं सो आप कहने को योग्य हो ॥ ७ ॥

इसके उत्तर में भृगु ने उत्तर दिया । वह इसी शांतिपर्व के मोक्षधर्मपर्व के १९२ वें अध्याय का आठवां श्लोक नीचे लिखते हैं

भृगुरुवाच ॥

उत्तरे हिमवत्पार्श्वे पुण्ये सर्वगुणान्विते ।
पुण्यः क्षेम्यश्च काम्यश्च स परो लोक उच्यते ॥ ८ ॥

अर्थ–उत्तर दिशा में हिमालय की पवित्र सब गुणोंवाली भूमि के समीप अति पवित्र विघ्नों से रहित जो सुंदर लोक है वही पर लोक कहाता है ॥ ८ ॥

इस संसार की प्रथम उत्पत्ति और खगोल आदि रचना तिब्बत में ही हुई थी जिसके प्रमाण में उदयपुर के यंत्रालय में छपेहुए शब्दार्थचिन्तामणि कोष के तृतीयभाग के तीन सौ एक पृष्ठ का एक श्लोक नीचे लिखते हैं

अत्रैव हि स्थितो ब्रह्मा प्राङ् नक्षत्रं ससर्ज ह ।
ततः प्राग्ज्योतिषाख्येयं पुरी शक्रपुरीसमा ॥

अर्थ–प्राग्ज्योतिष नामक नगर के नाम की व्युत्पत्ति करने में कहते हैं कि यहां पर स्थित होकर ब्रह्मा ने प्रथम नक्षत्र बनाये इस कारण से इसका नाम प्राग्ज्योतिष हुआ, सो इंद्र की पुरी अमरावती के समान है ॥

यह प्राग्ज्योतिष नगर भी तिब्बत के समीप ही है जिससे भी संसार की प्रथम रचना तिब्बत में ही होना पायाजाता है. इसके उपरांत तिब्बत का नाम भी त्रिविष्टप (स्वर्ग) है । सो भी तिब्बत के स्वर्ग होने का पूरा प्रमाण है । इसके उपरांत ज्योतिष के सर्वमान्य ग्रंथ सिद्धांतशिरोमणि के गोलाध्याय के भुवनकोश का दूसरा श्लोक नीचे लिखाजाता है, जो स्वर्ग का इसी पृथ्वी पर होने का पुष्ट प्रमाण है.

भूमेः पिण्डं शशाङ्कज्ञकविरविकुजेज्यार्किनक्षत्रकक्षा
वृत्तैर्वृत्तो वृतः सन्मृदनिलसलिलव्योमतेजोमयोयम् ।

१ थोड़े ही समय पहले हार्नली साहब को तिब्बत से पांचवें शतक का भोजपत्र पर लिखाहुआ एक संस्कृत ग्रंथ मिला है, जिसने तिब्बत को त्रिविष्टप लिखा है सो स्वर्ग का नाम है जिससे भी सिद्ध है कि स्वर्ग यही है ॥

नान्याधारः स्वशक्त्यैव वियति नियतं तिष्ठतीहास्य पृष्ठे
निष्ठं विश्वं च शश्वत्सदनुजमनुजादित्यदैत्यं समन्तात् ॥

अर्थ–यह भूमि का पिण्ड मिट्टी, पवन, जल, आकाश और तेजमय है और चंद्रमा, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनि इन नक्षत्रों करके कक्षावृत्त अर्थात् अपनी२मर्यादा की गोलाइ से घिराहुआ है, और गोल है, इसके कोई आधार नहीं है, अपनी ही शक्ति से आकाश में ठहराहुआ है, और इसकी पीठ पर सदैव से दनुज (कश्यप से दनु नामक स्त्री से उत्पन्न अर्थात् राक्षस) मनुष्य, अदिति के पुत्र (देवता) दिति के पुत्रों (दैत्यों) सहित सब चारों ओर रहते हैं, अर्थात् निश्चय ही स्थित हैं ॥ इस प्रमाण से भी स्वर्गादि इसी पृथ्वी पर है ॥ इत्यादि प्रमाणों से और अनेक युक्तियों से देवता आदि सभी संसार की उत्पत्ति तिब्बत में हुई, इस तिब्बत से हिमालय के ऊर्ध्वभाग को ऊर्ध्वलोक और नीचे के भाग को मर्त्यलोक कहते थे उस आदि समय में कोई वर्णभेद नहीं था किंतु एक तो आर्य (देवता) और दूसरे दस्यु (लुटेरे) ये दो ही भेद हुए जिसके प्रमाण में ऋग्वेद का मंत्र लिखते हैं ॥

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् ।
शाकीभव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥

अर्थ–हे मनुष्य! तू (बर्हिष्मते) उत्तमसुखादि गुणों के उत्पन्न करनेवाले व्यवहार की सिद्धि के लिये (आर्यान्) सर्वोपकारक धार्मिक विद्वान् मनुष्यों को (विजानीहि) जान. और (ये) जो (दस्यवः) परपीड़ा करनेवाले अधर्मी दुष्ट मनुष्य हैं उनको जान कर (बर्हिष्मते) धर्म की सिद्धि के अर्थ (रंधय) मार, और उन (अव्रतान्) सत्यभाषणादि धर्म रहित मनुष्यों को (शासत्) शिक्षा करते हुए (यजमानस्य) यज्ञ के कर्ता का (चोदिता) प्रेरणा कर्ता और (शाकी) उत्तम शक्तियुक्त सामर्थ्य को (भव) सिद्ध कर, जिससे (ते) तेरे उपदेश वा संग से (सधमादेषु) सुखों के साथ वर्तमानस्थानों में (ता) उन (विश्वा) सब कर्मों को सिद्ध करने की ही मैं (चाकन) इच्छा करता हूं ॥ ८ ॥

इस वेद के प्रमाण से सिद्ध है कि उस समय आर्य और दस्यु इनके अतिरिक्त कोई जातिभेद नहीं था, इन आर्यों (देवताओं) में आठ भेद हुए जो भागवत के प्रमाण से ऊपर दिखा आये हैं जिनमें फिर अपने अपने कर्मों के अनुसार अनेक नाम विख्यात होगये. जैसे साध्यदेव, विश्वदेव, विश्वावसु, मरुद्गण, सोमपा, अग्नीश्वात्त, विद्याधर, सिद्ध, चारण, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, किंपुरुष, तुम्बरु, आदित्य, ऋभु, गुह्यक, पितर आदि इनमें विस्तार के भय से अन्य के नामों की व्युत्पत्ति छोडकर चारणों के नाम की व्युत्पत्ति करते हैं कि

देवताओं की कीर्ति प्रचार करने से 'चारयन्ति कीर्तिमिति चारणाः' इस व्युत्पत्ति से इनका नाम चारण प्रसिद्ध हुआ. और 'देवानां स्तुतिपाठकाः' यह कार्य इन्होंने अंगीकार किया, इसके पीछे जब मनुष्यों में वर्णव्यवस्था हुई तब 'ब्रह्मजानातीति ब्राह्मणः' इस व्युत्पत्ति से वेद जाननेवालों का नाम ब्राह्मण और 'क्षतात् त्रायते इति क्षत्रियः' इस व्युत्पत्ति से रक्षा करनेवालों का नाम क्षत्रिय, और 'विश प्रवेशने' इस धातु से व्यापार में प्रवेश करनेवालों का नाम वैश्य, और इन तीनों वर्णों की सेवा करनेवालों का नाम शूद्र हुआ. परंतु वर्णव्यवस्था होने से पहिले जिन देवताओं की उत्पत्ति हुई वे अबतक उन्हीं नामों से प्रसिद्ध हैं।

यहां कोई यह प्रश्न करै कि 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः' इत्यादि प्रमाणों से वर्णव्यवस्था सृष्टि की आदि से ही सिद्ध है, तो इसका उत्तर यह है कि यह परमेश्वर के विराट् स्वरूप का रूपकालंकार से वर्णन है। जैसे 'सहस्रशीर्षापुरुषः' इत्यादि है। परंतु वर्णव्यवस्था तो पीछे ही हुई है इसके अनेक प्रमाण भी हैं सो यहां विस्तारभय से नहीं लिख सकते। यह कोई बुरा मानने की बात नहीं है, क्योंकि सृष्टिसर्जन काल से पीछे वर्णव्यवस्था होने से ब्राह्मण, क्षत्रियों की उत्तमता में कोई बाधा नहीं आसकती. क्योंकि ज्यों ज्यों कार्य होताजाता है त्यों त्यों ज्ञान बढ़ताजाता है इससे प्रथम की अपेक्षा पिछला कार्य उत्तम होता है. जैसे प्रथम नव प्रकार की सृष्टि ब्रह्मा ने बनाई जिनमें उत्तरोत्तर उत्तम है. और सब से पीछे देवताओं की सृष्टि रची है. विस्तार के भय से अब इस प्रकरण को न बढ़ाकर अपना असली प्रयोजन लिखते हैं कि उक्त प्रकार से स्वर्ग में आदि उत्पत्ति होकर सृष्टिक्रम के अनुसार वह सृष्टि इतनी बढ़ी कि स्वर्ग में उसका निर्वाह और समाव होना कठिन हुआ तब आर्य और दस्युओं में घोर देवासुर संग्राम हुआ जिस विघ्न की शांति के अर्थ और अपनी उन्नति करने को आर्यों ने अपने उद्योग और परिश्रम से निर्जन और शून्य प्रदेश इस आर्यावर्त को ढूंढकर अपना निवासस्थान बनाया. इसी कारण से उक्त आर्यों के नाम पर इस देश का नाम आर्यावर्त प्रसिद्ध हुआ. और क्षत्रियों ने अपने बाहुबल से इस आर्यावर्त में बड़े २ राज्य स्थापन किये. उन क्षत्रियों ने स्वर्ग में चारणों को अमूल्य वस्तु समझकर अपनी उन्नति और कीर्ति के लिये उनको स्वर्ग से भूमिपर लाकर अपने उपदेशक बनाकर कीर्ति का प्रचार किया. चारणोंने भी जैसे स्वर्ग में दे-

१ यहां जो कोई शंका करै कि देवता होकर देवताओं की स्तुति क्यों करते थे? तो इसका उत्तर यह है कि स्वर्ग में देवताओं की सब सेवा देवता ही करते थे जिसका लौकिक में भी उदाहरण विद्यमान है कि ब्राह्मणों के पुरोहित अब भी ब्राह्मण ही होते हैं॥

वताओं की कीर्ति करते थे वैसे ही यहां क्षत्रियों की कीर्ति करने को अंगी कार करके अपने नाम को सार्थक ही रक्खा. और अपने यजमान क्षत्रियों को समयानुसार सदुपदेश दे देकर उन्नति के शिखर पर चढ़ाकर कीर्ति के भागी और यश के भोक्ता बनाये. आर्यावर्त में क्षत्रिय और चारणों का नि वास हुए पीछे भी स्वर्ग और भूमि पर आर्य और दस्युओं में अनेकवार घोर संग्राम हुए जिनमें भूमिवालों ने स्वर्गवालों की और स्वर्गवालों ने भूमिवालों की परस्पर अनेकवार रक्षा की. जिनमें चारण क्षत्रियों के सार्थीयने रहे. और स्वर्ग और भूमि पर जाते आते रहे. सो उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है. इस प्रकार चारण और क्षत्रियों में दृढ संबंध होने के कारण उक्त दोनों ज्ञातियों में पर-स्पर प्रीति बढती गई, यहां तक कि राजा लोक चारणों से न्याय और राज नैतिक संपूर्ण कार्यों में सहायता लेने लगे, और अपने आपत्तिकाल में अपने स्त्रीपुत्रादिक को चारणों के घरों में शरण रख कर आप उस आपत्ति से नि-कलने के कार्यों में स्वतंत्र होकर उद्योग करने लगे उन राजाओं की स्त्रियों और पुत्रादिकों को चारण भी अपनी माता और पुत्रों के समान उनको निर्भय र खकर उस आपत्ति से निकाल कर अमोघ सुख में पहुंचाते, जिसके अनेक प्रकर ण प्राचीन आर्ष ग्रथों में और आधुनिक इतिहासों में विद्यमान हैं. जैसे राजा पांडु अपनी मृत्यु के समय अपनी स्त्री कुंती और अपने पुत्र युधिष्ठिरादिकों को चारणों के आधीन कर गया. और चारणों ने उनको पूर्ण प्रतिष्ठायुक्त अपने पास रख कर हस्तिनापुर में पहुचाये. जिसमें महाभारत का प्रमाण ऊपर आचुका है. और आधुनिक इतिहासों में मारवाड़ के राजा चूंडा और उस-की माता मांगलियांणी को काळाऊ ग्राम के आल्हा चारण ने अपने शरण में रख कर शत्रुओं से बचाये. और फिर चूडा को मारवाड़ के राज्य पर पहुं-चाया. इत्यादि अनेक उदाहरण विद्यमान हैं, सो संक्षेप से आगे दिखाये जांयगे

अब यहां पर कोई यह कुतर्कना करें कि उपरोक्त प्रमाणोंवाले चारण और थे और ये चारण और हैं तो इसके उत्तर में हम कहते हैं कि उनकी यह कु-तर्कना असत्य और विना आश्रय की है क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर द्वापर के अंत तक के शृंखलाबद्ध प्रमाण इन चारणों के स्वर्ग और भूमि पर रहने के लिख आये हैं जिनमें सत्ययुग से लेकर त्रेता और द्वापर तक इन तीनों युगों में चारणों की देवताओं में उत्पत्ति और देवताओं के सदृश ही इनके आचार व्यवहारों के श्रेणीबद्ध प्रमाण लिखेगये हैं जिनसे अन्य ज्ञाति का संदेह ही नहीं होसकता. आगे केवल कलियुग के प्रमाण देकर वर्तमान समय पर्यंत इस प्रकरण को श्रेणीबद्ध दिखायाजाता है कि जिससे स्पष्ट सि द्ध होजायगा कि उपरोक्त प्रमाणोंवाले चारण और ये चारण एक ही हैं, भिन्न नहीं

इस कलियुग के प्रमाण बहुधा पुराणों, काव्यों और नाटक आदि ग्रंथों में भरेहुए हैं, सो सब प्रमाण लेने से तो यह लेख बहुत बढ़ता है इस विस्तार के भय से सब प्रमाणों को छोडकर थोड़ेसे प्रमाण यहां लिखदेते हैं. जिनसे उक्त लेख शृंखलाबद्ध समझलिया जासकता है.

इस बात को वर्तमान समय के सभी विद्वान् मानते हैं कि इस समय के सभी काव्य नाटक आदि ग्रंथ राजा विक्रमादित्य पँवार से लेकर राजा भोज पँवार के समय में बने हैं. इस कारण इन ग्रंथों में जो वर्णन है वह उसी समय के बर्ताव का है. यदि उन विद्वानों ने महाभारतादि ग्रंथों से प्राचीन कथा लेकर ग्रंथ बनाये हैं तो भी अंत में उस वर्तमान समय की छाया अवश्य आई है. और कितनाक तो वर्णन उसी वर्तमान समय का है.

श्रीहर्षचरित्रके तृतीय उच्छ्वासमें श्रीकंठदेशके स्थंडीश्वरनगरके वर्णनमें लिखाहै

महोत्सवसमाज इति चारणैः, वसुधारेति च विप्रैरगृह्यत ॥

अर्थ–वह नगर महोत्सवसमाज की भी भांति चारणों से और धन धारा की भांति ब्राह्मणों से ग्रहण कियागया ।

प्रसन्नराघवनाटक में सीता के स्वयंवर के वर्णन में राजाओं की पहिचान के अर्थ नूपुरक पूछता है और मंजीरक उत्तर देता है वहां यह संस्कृत है

मञ्जीरकः, सएषनिजयशःपरिमलप्रमोदितचारणचञ्चरीकचयकोलाहलमुखरितदिक्चक्रवालक्ष्मापालकुंतलालंकारो मल्लिकापीडो नाम

अर्थ–मंजीरक कहता है कि जिसको तू पूछता है यह अपने यश रूप सुगंधि से आनन्दित चारणजन रूपी भ्रमरोंके समूहके कोलाहलसे शब्दायमान किया है दिशाओं का मंडल जिसने ऐसा राजाओं का मुकुट कुंतल देशका भूषण मल्लिकापीड़ नामक है ॥

यद्यपि यह वर्णन प्राचीन है तथापि चारणों की ज्ञाति का कुछ भी भेद होता तो ग्रंथकर्ता अवश्य लिखता कि उस समय के चारण अन्य थे इसी प्रकार के अनेक प्रमाण पिछले ग्रंथों में हैं जिनसे इस चारण जाति का शृंखलाबद्ध वृत्तांत राजा भोज के समय तक जान लेना चाहिये. अब भोज के समय से आगे का प्रमाण देखना होवे तो मेवाड़ के महाप्रतापी राजा महाराणा कुम्भा जो विक्रमी संवत्१४९० में चित्तौड़ की गद्दी पर बैठे थे उन्होंने अपने पण्डितों से संस्कृत में एकलिङ्गमाहात्म्य नामक ग्रंथ बनवाकर वायुपुराणान्तर्गत किया है. जिसकेलिये यह भी प्रसिद्ध है कि महाराणा ने स्वयं बनाया था सो ऐसा हुआ होवे तो कोई आश्चर्य नहीं है; क्योंकि उक्त महाराणा संस्कृत के बड़े विद्वान् थे जिनके बनायेहुए संस्कृत में संगीत आदि के ग्रंथ विद्यमान हैं उस एकलिङ्गमाहात्म्य में भी उपरोक्त क्रमानुसार चारणों का वर्णन बड़ी प्र-

तिष्ठा के साथ लिखाहुआ है जिससे सिद्ध है कि सृष्टिसर्जन काल से लेकर महाराणा कुम्भा पर्यन्त के संस्कृत ग्रंथों में चारणों का वर्णन श्रेणी-बद्ध लिखाहुआ है जिससे यह संदेह ही नहीं होसकता कि सतयुग के चारण और थे और ये और हैं.

इन प्रमाणों के अतिरिक्त कलियुग के आदि से लेकर वर्तमान समय पर्यन्त अनेक दान सन्मानों से विभूषित होने के शृङ्खलाबद्ध चारणों के नाम पते सहित वर्णन ग्रंथ वंशभास्कर में विद्यमान हैं जिससे भली भांति सिद्ध है कि जिस चारण ज्ञाति के प्रमाण आर्षग्रंथों से लेकर ऊपर दियेगये हैं वही ज्ञाति वर्तमान समय में भी अपने पूर्वपुरुषाओं के आदर को लिये विद्यमान है ॥

इस चारणज्ञाति में विद्या का प्रचार आदि से ही चला आया है जिनके बनायेहुये लोकोपकारी अनेक ग्रंथ थे परंतु भारतवर्ष में वेदमत का ह्रास होकर बौद्धमत का प्रचार हुआ तब बौद्धों ने वे ग्रंथ नष्ट कर दिये पश्चात् क्षत्रियों के परस्पर के द्वेष और विजातिवाले विदेशियों के आक्रमणों से क्षत्रियों के अनेक राज्य नष्ट होगये उस आपत्तिकाल में अपने यजमान क्षत्रियों के सहचारी रहने के कारण चारणों से अपनी पूर्वविद्या का फिर उद्धार नहीं होसका परंतु क्षत्रियों की आपत्ति में रहने के कारण चारणों पर क्षत्रियों के विश्वास और स्नेह में अधिकता ही हुई और चारणों ने भी क्षत्रियों के अनेक उपकार और अमूल्य सेवायें कीं, जिनके सविस्तर उदाहरण देखने की इच्छा होवे तो राजपूताना के प्रत्येक राज्य के भिन्न २ इतिहासों में देखें वे प्रमाण यहां पर विस्तार के भय से संक्षेप से दिये हैं ॥

पूर्वकाल में चारण सदैव स्वतन्त्र और स्वेच्छाचारी रहे थे परंतु गुजरात देश के स्वामी अनहिलपुरपट्टन के राजा सिद्धराज जयसिंहदेव सोलंखी ने महावदान्य नामक चारण को आनर्त(काठियावाड़)देश का राज्य दान किया तभी से चारणों की स्थिति काठियावाड़ देश में हुई परंतु जब वह राज्य चारणों के हाथ से जाता रहा तब चारणों के दो दल होगये जिनमें एक दलके प्रजारूप होकर वहीं पर रहे सो कच्छदेश के नाम से काछेला प्रसिद्ध हुए और दूसरे दल के मारवाड़ में चले आने के कारण मरुदेश के नाम से मारू चारण कहलाने लगे, इनमें काछेला चारणों का आचार व्यवहार भिन्न प्रकार का होजाने के कारण मारू चारणों से उनका कोई संबंध नहीं रहा, और इन मारूचारणों में कोई तो पूर्वजों (बड़ों) के नाम से, कोई ग्राम के नाम से, और कोई प्रसिद्ध कार्य करने आदि कारणों से भिन्न भिन्न १२० शाखायें प्रसिद्ध हुईं, इन शाखाओं की कई प्रतिशाखा होकर१५४ शाखायें होगईं थीं परंतु कालगति से ५२ शाखा नष्ट होकर अब १०२शाखायें वर्तमान समय में

विद्यमान हैं जिन के नामों का एक नक्शा अकारादि क्रम से आगे दिया है. चारणों के समान क्षत्रियों में भी प्रथम कोई जातिभेद नहीं था परंतु उपरोक्त कारणों से क्षत्रियों में भिन्न भिन्न ३६ वंश होकर अब उनके अनेक भेद होगये हैं; और ब्राह्मण तथा वैश्यों की जातियों में भी उक्त कारणों से अनेक भेद होगये सो विद्यमान हैं इसीप्रकार चारणों के भेद भी जानने चाहियें. इस भांति चारणों ने उपरोक्त प्रमाणों के अनुसार अपने पूर्व पुरुषाओं की रीति भांति वैसी रख कर अपना आचार व्यवहार अपने यजमान क्षत्रियों के समान बना रक्खा सो वर्तमान समय पर्यन्त उसी अनुसार चला आता है और क्षत्रियों का उपदेशकपना करके क्षत्रियों की उन्नति करने का कार्य पूर्वकाल के समान करते रहे अर्थात् क्षत्रियों के अधम कार्य करने पर उनकी निंदा सूचक कविता करके मानहानि करना, और उत्तम कार्य करने पर उत्साहवर्धिनी स्तुति के साथ प्रशंसासूचक कविता करके उत्साह बढ़ने का कार्य करना जिससे क्षत्रियों ने अति उन्नति की, जिनके हजारों प्रमाण देशभाषा की कविताओं में भी विद्यमान हैं. मीसण सूर्यमल्ल ने ग्रंथ वंशभास्कर में भी उक्त शैली के अनुसार अधम क्षत्रियों की निन्दा और उत्तम क्षत्रियों की प्रशंसा करके उत्तम उपदेश में वृद्धि ही की है. जिससे आधुनिक क्षत्रिय लोग भी उत्तम शिक्षा ग्रहण करके अपनी जाति की पूर्ववत् उन्नति कर सकते हैं. इसी उत्तम शैली के कारण प्राचीन राजा महाराजों ने चारणों के अनेकानेक आदर सन्मान किये जिनके उदाहरण बहुधा तो ग्रंथ वंशभास्करमें विद्यमान हैं और उनमें अधिक देखना हो तो कुछ उदाहरण आगे लिखे जाते हैं जिससे ज्ञात होजावेगा कि इस समय से पहले के अथवा वर्तमान समय के राजा महाराजों ने चारणों का आदर सन्मान किस भांति का किया था और अब भी करते हैं. वे उदाहरण संक्षेप से ये हैं.

चारणों के सन्मानादि के उदाहरण

सामान्य रीति से तो चारणों का आदर सन्मान राजा महाराजा आदि भूमिपाल अपने भाई बेटे और बड़े दर्जे के उमराव सरदारों के समान ही करते हैं परंतु किसी २ अवसर पर तो बहुत ही बढ़कर आदर सन्मान किये हैं जिनकेथोड़ेसे उदाहरण नीचेलिखेजाते हैं. इस संसार में विद्वान् लोग धन और यश की अपेक्षा सन्मान को ही अधिक प्रिय समझते हैं यतः 'मानो हि महतां धनम्' अर्थात् मान ही बड़ेलोगों का धन है. इस सिद्धान्तानुसार चारणों की भी इसी बात पर अधिक दृष्टि रही है. जो नीचे के उदाहरणों से सिद्ध है. यवन बादशाहों के दरबार में राजा महाराजा आदि किसीको बैठक नहीं थी, सबको खड़ा रहना पड़ता था जहां महडू गोत्र का चारण जाडा

नामक गया और दरबार में जाकर बैठगया तब बादशाही अधिकारियों ने जाडा को बैठने का निषेध किया जिस पर जाडा ने निम्न लिखित दोहा सुनाया.

पगे न बळ पतशाह, जीभां जसबोलांतणों ।
अब जस अकबरकाह, बैठा बैठा बोलस्यां ॥ १ ॥

इस पर बादशाह अकबर ने जाडा को शाहीदरबार में बैठने की आज्ञा दे दी, जो उस समय किसीको नहीं थी

(२) मिश्रण (मीसण) शाखा के चारण पीठवा के शरीर में कुष्ट होकर पूय (पीप) बहने लगी थी ऐसी अवस्था में पीठवा लिवांणा के राठौड़ जैतमाल के पास गया और जैतमाल पीठवा से मिलने को उठा तब पीठवा ने कहा कि मेरे शरीर में कुष्ट बहते हैं इसलिये आप नहीं मिलें तब जैतमाल ने उत्तर दिया कि कुष्ट बहने से आपकी जाति का पूज्यत्व नहीं मिट सकता, अर्थात् जैतमाल पीठवा को अंक में लेकर मिला जिसकेलिये ऐसा भी प्रसिद्ध है कि, जैतमाल के हरिभक्त होने के कारण उसी दिन से पीठवा के कुष्ट चले गये. इसीकारण से जैतमाल के वंशवालों को अब भी दशवां शालिग्राम कहते हैं.

(३) जोधपुर का पौलपात रोहड़िया गोत्र का बारहठ सूंदियाड़पुर का स्वामी करनीदान किसी राज्य कार्य के लिये उदैपुर गया तब उदैपुर के महाराणा प्रथम जगत्सिंह जगदीश के मंदिर तक करनीदान की अग्रगामिता (पेशवाई) करके उसको महलों में लेगये. जो महलों से अनुमान ५०० कदम के अंतर पर है, इस कार्य की प्रशंसा में करनीदान ने उक्त महाराणा को मरुभाषा का एक निम्न लिखित दोहा सुनाया.

करनारो जगपत कियो, कीरतकाज कुरब्ब ।
मन जिणा धोखा ले मुवा, शाह दिलेश शरब्ब ॥ १ ॥

(४)मारवाड़ के सांघड़ा नामी ग्राम का निवासी संढायच शाखा का चारण हरिदास मेवाड़ के महाराणा प्रथम जगत्सिंह के समीप रहता था उसने शेखावाटी प्रान्त के उदयपुरनामी ठिकाने के स्वामी सेखावत चत्रिय टोडरमल' की उदारतादि सद्गुणों कीप्रशंसा प्रकरणवशात् महाराणा के सन्मुख की, वह महाराणा को असह्य हुई, क्योंकि उस समय के चत्रिय राजा महाराजों में महाराणा जगत्सिंह सब से अधिक उदार थे जिनकी दानशक्ति के आगे दूसरों की प्रशंसा कब स्वीकार होसकती थी; अतएव महाराणा ने हरिदास को आज्ञा

१ कवियों की जीभ में बल है.

दी कि यदि टोडरमल को तुम इतना प्रशंसनीय जानते हो तो उनके पास जाओ, देखें वह तुम्हारा कितना सत्कार करैं, वहांसे पीछे आकर फिर हम से यथार्थ निवेदन करना; इससे महाराणा का यह प्रयोजन था कि हरिदास को जितना हमने दान दिया है और जितना हमने इनका सत्कार किया है उतना टोडरमल से कदापि नहीं होसकेगा, तब हरिदास को अपने मुख से निंदा करनी पड़ेगी, अथवा हरिदास मिथ्यावादी बनेगा, निदान महाराणा जगतसिंह की आज्ञानुसार हरिदास मेवाड़ की राजधानी उदयपुर से विदा होकर सेखावाटी प्रांत के उदयपुर नामी ठिकाने में गया जिसके आने के समाचार सुनकर टोडरमल भेस बदलकर अपने ठिकाने से सात कोस पर आगे जाकर हरिदास की पालकी के भोइयों में शामिल होगया और हरिदास की पालकी का बांस अपने कंधे पर रखकर उदैपुर लेगया जिसका वृत्तान्त हरिदास को उदैपुर पहुंचने पर मालूम हुआ कि टोडरमल भेस बदलकर कहारों में मिलगया और सात कोस पर्यंत पालकी अपने कंधे पर उठाकर लाया है. तदनंतर टोडरमल ने हरिदास को कई दिनों तक अत्यंत आदर पूर्वक रक्खा. और जब हरिदास विदा होने लगा तो टोडरमल ने अपना उदैपुर का ठिकाना ४५ गांवों सहित हरिदास को देदिया, परंतु हरिदास ने कहा कि मैं क्षत्रियों का वैभव बनानेवाला हूं छीननेवाला नहीं, इसकारण से उदैपुर का ठिकाना लेना मुझे स्वीकार नहीं, इसके उत्तर में टोडरमल ने कहा कि मैं अपने बाहुबल से अन्य ठिकाना अधिकार में कर लूंगा. यह आप रखिये परंतु हरिदास ने यह बात स्वीकार नहीं की, तदनन्तर बहुत कुछ वादानुवाद होकर हरिदास ने उदैपुरवाटी के कुछ ग्रामों में कुछ भूमि अपनी ओर से ब्राह्मणों को दान देकर बाकी कुल ठिकाना टोडरमल के अधिकार में करदिया. यहां पर हम टोडरमल की उदारता और हरिदास का संतोष दोनों को प्रशंसनीय समझते हैं. इसके पश्चात हरिदास पीछा मेवाड़ की राजधानी उदैपुर में महाराणा जगत्सिंह के पास गया और निम्न लिखित दोहा सुनाया

> दोय उदैपुर ऊजळा, दुहुँ दातार अवल्ल ।
> इकतो राणो जगतसी, दूजो टोडरमल्ल ॥ १ ॥

यह दोहा और उक्त वृत्तान्त सुनकर महाराणा जगत्सिंह ने टोडरमल और हरिदास दोनों के कृत्य की प्रशंसा की और आज्ञा की कि चारणों का आदर सन्मान करने में और चारणों को दान देने में वर्तमान समय में भी अनेक क्षत्रिय एक से एक बढ़कर हैं. जिसका परिचय इस समय टोडरमल ने उत्तम कर दिखाया.

अब यहां पर पाठकों को इस बात के जानने की उत्कंठा होगी कि टोड-

रमल कौन था? और अब उनके वंश में कौन है? इसकारण थोड़ा सा वृत्तान्त उसका भी लिख देते हैं कि खंडेला के राजा रायसाल जो बादशाह अकबर के समय में रायसल दरबारी के नाम से बड़े मनसबदारों में प्रसिद्ध थे और बड़े प्रसिद्ध व योग्य पुरुष हुए हैं. जिनके लघुपुत्र भोजराज को ४५ ग्रामों के साथ उदैपुरवाटी का परगना मिला. उन भोजराज के पुत्र टोडरमल हुए. जिन्होंने उक्त कार्य किया. और इसी टोडरमल के वंश में इससे कुछ पीढ़ियों के अनन्तर शार्दूलसिंह नामी प्रसिद्ध पुरुष हुए जिनके वंश में इस समय खेतड़ी, बिसाऊ, सूरजगढ, मलसीसर, मंडावा, नवलगढ आदि झुंझणूवाटी के सब ठिकाने हैं. जिनको इस समय भी टोडरमल के उक्त कार्य का अहंकार है. इन्हीं सेखावत क्षत्रियों की लाडखानी शाखा के क्षत्रिय खंगार ने एक चारण के हाथ से कशाघात (चाबुक) खाकर प्रसन्नता प्रकट की थी. जिसकेलिये गीत नामक छंद प्रसिद्ध है.

धरमरूप सेपांतलक नमो चितधारणां, वारणां लेऊँ[1] वंसरा उजाळा।
तो बिनां सहै कुण पीज[2] पटंग्रनतणीं, अणीमाठै कळू रतनवाळा॥१॥
इळामरू रतीवंत कथा रापण अमर, कीत हुय चहूँदिस गढां कोटां।
सुरँदइँदपंगारतो बिण कवण साँसवै[4], चारणां चावकां[5] तणी चोटां॥२॥
वंस पटतीस मरू राव राणां वदै, कृपण देषे सँकै आप कानी।
कवियणां तणां बप फता रा कळोधर, षिमै तूं ताजणां लाडपांनी[6]॥३॥
मागणां[7] भरै डँड जिके मनमांगिया, दान गैंवर विडँग लषां दीधा।
कमळ[8] जगदेव जिम छातपत कूरमां, कोरडा पिर्थी सिर अमग्र कीधा॥४॥

(५) बूंदी के हाडा रावभोज सीसण शाखा के चारण ईसरदास की दो कोस तक पेशवाई करके उसको बूंदी लेगये और वहां उसको पालखी में बिठाकर पालखी का डांडा अपने कंधे पर लेकर चले, और बारह ग्राम दान देकर अपना पोलपात्र बनाया, और मोतियों के अक्षतों से पैर पूजे. तत्पश्चात् इसी ईसरदास के वंश में वदनसिंह हुआ जिसको बूंदी के महारावराजा विष्णुसिंह ने रासोंदा नामी ग्राम देकर अपने कंधे पर वदन कवि का पैर दिलाकर हाथी पर चढाया और आप हाथी के आगे पैदल चले. जिसकी साक्षी ग्रंथ वंशभास्कर की प्रथम राशि के चौथे मयूख में लिखी है

(६) महरवों ग्राम का महियारिया गोत्र का चारण देवा बूंदी गया जिसको प्रसन्न करने के अर्थ बूंदी के राव सत्रुसालने अनेक उपाय किये परंतु देवा प्रसन्न

१ न्योछावर जाऊ. २ब्राह्मण, चारण, संन्यासी, जती, फकीर और रामदेवजी के पूजारे क्षत्रिय. ३नाम ४सहन करै. ५चाबुक ६सेखावत क्षत्रियों की एक शाखा ७ चारण ८ मस्तक

नहीं हुआ, तब राव सत्रुसाल ने देवा के पदत्राण(जूते) अपने हाथ से उठाक र देवा को पहिनाये तब प्रसन्न होकर उक्तकवि ने सत्रुसाल को निम्न लिखि त दोहा सुनाया.

पांखां गह पैजार, सुकव अगा धरतां सतां ।
हिक हिक बार हजार, पहें सूमां माथे पड़ी ॥ १ ॥

(७) सूलवाड़ा ग्राम का कविया गोत्र का चारण करणीदान उदैपुर गया और महाराणा दूसरे संग्रामसिंह को उनके पूर्वपुरुषों के मरुभाषा में पांच गीत नवीन बनाकर सुनाये, जिनके सुनने से महाराणा संग्रामसिंह ने प्रसन्न होकर करणीदान को आज्ञा दी कि ये आपके गीत क्या हैं मंत्र हैं, और मंत्रों को सदैव धूप दियाजाता है जो आप कहैं तो इन गीतों को धूप खेवैं, और आप कहैं तो आपको लाखपसाव देवैं, जिस पर करणीदान ने निवेदन किया कि लाखपसाव तो मुझ को शाहपुरा के राजा उमेदसिंह ने और डूंगरपुर के महारावल शिवसिंह ने अभी दिये हैं और फिर भी देनेवाले बहुत हैं, परन्तु आप आर्यदिवाकर कहलाते हैं जिनके हाथ से धूप दिलाना उत्तम है, इसलिये आप धूप ही खेवैं. इस पर महाराणा संग्रामसिंह ने उन गीतों के पत्रों को धूप दिया, और फिर करणीदान को लाखपसाव भी दिया.

(८) इसी कविया करणीदान को सूर्यप्रकाश नामक ग्रंथ बनाने पर जोधपुर के महाराजा अभयसिंह ने कविराजा का उपटंक(खिताब)और लाखपसाव देकर अपनी प्राचीन राजधानी मंडोवर से करणीदान को हाथी पर सवार कराके दो कोस के अंतर पर जोधपुर पहुंचाया. और महाराजा अभयसिंह करणीदान की सवारी के हाथी के आगे जलेब में चले, जिसका स्मारक करणीदान का कहाहुआ यह निम्न लिखित दोहा प्रसिद्ध है.

अशॅ चढियो राजा अभो, किव चाढे गजराज ।
पोहर हेक जळेबमें, मोहर हले महराज ॥ १ ॥

इस प्रकार के अनेक उत्तमोत्तम आदर सन्मान क्षत्रिय राजा महाराजाओंने चारणों के किये, जिनके उदाहरण राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़ के इतिहासों में विद्यमान हैं, परंतु विस्तार के भय से यहां संक्षेप से लिखेगये हैं, अब यहां यह प्रश्न उठता है कि क्या गतकाल में ही चारणों को आदर सन्मान मिलते थे इस समय में नहीं मिलते? इसके उत्तर में जिन जिन चारणों को राजा महाराजाओं की ओर से मुझ बारहठकृष्णसिंह के जीवन समय में मान मिले उनकी गणना नीचे कर दी जाती है.

(१) वंशभास्कर ग्रंथ के कर्ता मीसण सूर्यमल्ल को बूंदी के महाराजरा

१ हाथ में २सत्रुसाल ३राजा ४घोड़ा ५आगाड़ी

जा रामसिंह ने ठाकुर की पदवी देकर बडा आदर किया. और पैरों में स्वर्णभूषण देना चाहा, जिनमें सूर्यमल्ल ने ठाकुर का पद तो ग्रहण किया, और स्वर्णभूषण लेना इस कारण से अस्वीकार किया कि पैर में स्वर्णभूषण नहीं पहनने से विद्वानों का मान न्यून नहीं समझा जाता, अतएव मेरा तो भूषण मेरी विद्या है सो ही बहुत है, सोने से मान बढ़ाना नहीं चाहता. सो सूर्यमल्ल ने सोना तो नहीं लिया, परंतु विक्रमी संवत् १९२५ पर्यंत जबतक वे जीवित रहे तब तक महारावराजा रामसिंह ने उनका ऐसा बरताव रक्खा कि जैसा स्वामी का सेवक रखता है.

(२) बूंदी के बड़े राजकुमार भीमसिंह विवाह करने को बांसवहाला गये तब सूर्यमल्ल भी बरात में साथ थे वहां किसी कारण से रुष्ट होकर सूर्यमल्ल रतलाम चलेगये तब महाराजा बलवंतसिंह २॥ कोसतक पेशवाई करके सूर्यमल्ल को रतलाम लेगये और वहां उनका ऐसा बरताव किया कि जिसको वे जीवन पर्यंत नहीं भूले.

(३) कोटा के महाराव रामसिंह ने महियारिया शाखा के चारण भवानीदान को कविराजा का उपटङ्क, अभ्युत्थान (ताजीम), बांहपसाव, चांदी की छड़ी, छाँहगीर, अडाणी, पत्र पर लगाने की बड़ी मुद्रा, तामजाम में बैठने की आज्ञा और पैर में स्वर्णभूषण आदि देकर मान बढाया जो इस समय वंशपरंपर के अनुसार भवानीदान के पौत्र देवीदान के विद्यमान है.

(४) उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह ने ढोकलिया ग्राम के दधवाड़िया शाखा के चारण श्यामलदास को विक्रमी संवत् १९३२ में अभ्युत्थान (ताजीम) संवत् १९३३ में बांहपसाव (हाथ बढाकर मिलना), चरण शरण की बडी मुद्रा (छाप), संवत् १९३४ में पैरों में सोने के लंगर संवत् १९३५ के पौष शुक्ल द्वितीया को श्यामलदास के ग्राम ढोकळिये पधार कर कविराज का उपटङ्क, खासरुक्का में जुहार का लेख और पैगडी में मांझा और पैरों में स्वर्ण के तोड़ आदि बडे २ कुरब देकर मान बढाया, और पांच वार कविराज श्यामलदास की हवेली पधार कर महमान हुए, और संवत् १९३५ में ढोकळिये पधारे तब दो दिन तक श्यामलदास के महमान रहे, और संवत १९३८ में पैरों में स्वर्ण के दोवड़े लंगर प्रदान किये, सो उक्त कुरब इस समय श्यामलदास के पुत्र जसकरण के विद्यमान हैं, और संवत् १९१४ में चैत्र शुक्ला १४ को उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह, जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह और कृष्णगढ

१ पैर में स्वर्ण पहनने की वंश परंपरा से इनको आज्ञा चली आती थी, परंतु सूर्यमल्ल के पिता चंडीदान ने पैर में स्वर्णाभरण पहनना छोड दिया था जिसकी कथा ग्रंथ वंशभास्कर के अष्टमराशि में रामसिंहचरित्र में लिखी हुई है, तब से सूर्यमल्ल ने भी नहीं पहना.

२ पगड़ी में तास अर्थात् जरी का टुकड़ा रखते हैं, जिसको उदयपुर में बड़ी इज्जत का निशान समझते हैं

के महाराजा शार्दूलसिंह कविराज श्यामलदास के स्थान पर पधार कर मह मान हुए. इसके उपरांत कविराज की योग्यता के कारण अंगरेजी सरकार से संवत् १९३९ में चांदी का तमगा और संवत् १९४४ में महामहोपाध्याय का उपटंक मिला.

(५) उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह ने कोटा के महियारिया चारण फतह-सिंह को पैरों में स्वर्णभूषण और फतहसिंह के पिता लक्ष्मणदान को अभ्यु-त्थान (ताजीम) प्रदान किया जो अब फतहसिंह के दत्तकपुत्र करणीदान के विद्यमान है.

(६) जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने आसिया शाखा के चारण बांकी दास को कविराज का उपटंक, अभ्युत्थान (ताजीम), पैर में स्वर्णाभरण, बांह पसाव आदि क़ुरब दिये थे सो तो बांकीदास के पौत्र कविराजा मुरारिदान के विद्यमान ही हैं, परंतु राजराजेश्वर महाराजा जसवन्तसिंह राज्यासन पर विराजे तब मुरारिदान को लाखपसाव देकर महलों के दरवाजे सूरजपोल तक महाराजा साहिबने स्वयं साथ जाकर पहुंचाया, और कविराजमुरारिदान लोहापोल से हाथीपर सवार होकर चँवर कराते हुए अपनी हवेली गये. उ-सके उपरांत संवत् १९५१ में 'जसवन्तजसोभूषण' नामक ग्रंथ सुनाने पर लाखपसाव देकर कविराजा का उपटंक और हाथ का क़ुरब प्रदान किया जो बड़े उमरावों के लिये भी जोधपुर में परावधि का क़ुरब समझाजाता है और संवत् १९३६ में महाराणा सज्जनसिंह जब जोधपुर पधारे थे तब महाराणा सज्जनसिंह और महाराजा जसवन्तसिंह कविराजा मुरारिदान की हवेली पर पधारकर महमान हुए थे.

(७) बीकानेर के महाराजा डूंगरसिंह ने बीठू शाखाके चारण भभूतदान को कविराज का खिताब, ताजीम और पैर में सोना दिया सो इस समय वंशपरंपरा के अनुसार उसके पुत्र भैरवदान के विद्यमान है.

(८) इन्हीं महाराजा डूंगरसिंह ने संढायच शाखा के चारण खूमदान को जैंसा नामी ग्राम के साथ ताजीम, पैर में सोना और ठाकुर का खिताब दिया, जो खूमदान के पुत्र गोवर्धनदान के विद्यमान है.

(९) बूंदी के वर्तमान महारावराजा रघुवीरसिंह ने मीसण शाखा के चा रण मुरारिदान को पैर में सोना दिया, सो मुरारिदान स्वयं विद्यमान है.

(१०) जैसलमेर के महारावल वैरिशाल ने रतनू शाखा के चारण शिवजी-दान को कविराज का उपटंक, पैर में स्वर्णभूषण और अभ्युत्थान दिया सो शिवजीदान के पुत्र अमरदान के विद्यमान है.

(११) डूंगरपुर के महारावल उदैसिंह ने महियारिया शाखा के चारण के सरीसिंह को कविराज का खिताब और स्वर्णभूषण दिया सो केसरीसिंह के

पुत्र के विद्यमान है.

(१२) इन्हीं महारावल उदैसिंह ने सोदा शाखा के चारण जगत्सिंह को पैर में स्वर्णभूषण दिया, जो जगतसिंह स्वयं विद्यमान है.

(१३) देवलियाप्रतापगढ के महारावत उदैसिंह ने बारहठ ईसरदान को पैर में सोना दिया सो ईसरदान के पुत्र के विद्यमान है.

(१४) इन्हीं महारावत उदैसिंह ने महडू शाखा के चारण गुलावसिंह को पैर में सोना दिया सो इस समय गुलाबसिंह का प्रपौत्र पहनता है.

(१५) जोधपुर के राजराजेश्वर महाराज जसवन्तसिंह ने पांचेटिया ग्राम के आढा चारण रामनाथ को स्वर्णाभरण दिया सो इस समय रामनाथ का पुत्र केसरीसिंह पहनता है.

(१६) खेतड़ी के राजा अजीतसिंह ने कविया शाखा के चारण बलदेव को कविराज का खिताब और पैरों में सोना दिया, सो बलदेव के पुत्र वाला बक्स के विद्यमान है.

(१७) उक्त महाशयों के साथ मुझ अल्पज्ञ की मेरे मुख से गणना करना मुझे शोभा नहीं देती तथापि जो थोडे से राज्यसन्मान मुझ (सोदा बारहठ शाखा के चारण कृष्णसिंह) को मिले हैं उनकी सूचना करदेना अनुचित न समझकर लिखदियेजाते हैं कि उदयपुर के स्वामी आर्यकुलकमलदिवाकर महाराणा सज्जनसिंह ने मुझको पलाणा घोड़ा, बेडी नाव की बैठक, सवारी में महाराणा से आगे चलने की आज्ञा आदि कई मान प्रदान करके पूर्ण अनुग्रह का बरताव किया, जिसके धन्यवाद में मैंने उक्त महाराणा साहिब को मरुभाषा का छप्पय नामक निम्न लिखित छंद श्रवण कराया.

मादक मजलस मोद खास खेळी खिलवत में,
रंग राग रस रीझ दियण इज्जत धन दत में ।
राजकाज अरु रहस भेद अंतर नँहँ भाखत,
सहल सिकारन साथ रात दिन संगहि राखत ।
कविकुल कृतार्थ कारक कुसळ पाळण मग्ग प्रचारियो,
सुदामा रीत माधव सरस कृष्ण सजन स्वीकारियो ॥ १ ॥

इसके उपरांत महाराणा साहिब ने मेरे गले में गलबांहि डालकर कईवार अपने हाथों से मद्य पिलाया था, जिस विषय का मेरा कहाहुआ उक्त महाराणा साहिब का मरुभाषा का एक मरसिया दोहा यह प्रसिद्ध है.

१ उदयपुर में बडी नाव की बैठक का बडा दर्जा है यहां तक कि कितने ही उमरावों को बडी नाव में बैठने की आज्ञा नहीं है. २मरे पीछे उस पुरुष की प्रशंसा में कविता की जावे उसको मरसिया कहते हैं.

दै गळबांहीं जे दिया, मदप्याला मनुहार
सज्जन बिन ते सेल सम, सालै हिय दुसाल ॥ १ ॥

इसके उपरांत महाराणा सज्जनसिंह के उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह ने भी हाथी और सहस्रों रुपये आदि प्रदान करके बड़े आदर के साथ मुझको अपने पास रक्खा.

और शाहपुरा के समीप मेरे घरू ग्राम खेड़ा में मेरी माता ने विष्णु भगवान् का मंदिर बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा के उत्सव में संवत १९४९ के वैशाख मास में शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह मेरे ग्राम पर महमान हुए.

विक्रमी संवत् १९४१ में श्रीमान् जोधपुरनरेश राजराजेश्वर महाराजा जसवन्तसिंह उदयपुर पधारे तब पीछोलातालाब के भीतर के जगनिवास नाम के महलों में सज्जनविलास महल के भीतर के चहबचे (कुंड) में महाराणा सज्जनसिंह, महाराजा जसवन्तसिंह और कृष्णगढ के महाराजा शार्दूलसिंह स्नान करने पधारे और अपने २ कृपापात्रों को स्नान करने के लिये साथ लिये जब महाराणा साहिब और कृष्णगढ महाराजा साहिब तो तीनों राज्य के मुख्य २ सरदारों सहित चहबचे में स्नान करने लगे और श्रीमान् राजराजेश्वर जसवन्तसिंह पैर नहीं जानने के कारण हौज के पश्चिमी झरोखे में विराज गये जो पानी से लगाहुआ है, तब सब सरदार मद्य पीने लगे उस समय मद्य पीने का मेरा उच्छिष्टपात्र श्रीमान् मरुधराधीशों के समीप ही रक्खाहुआ था उसको राजराजेश्वर जसवन्तसिंह अपने हाथ में लेकर जब अपने हाथ से मुझे मद्य पिलाने लगे तब मैंने निवेदन किया कि यह प्याला मेरा उच्छिष्ट है इसके श्रीमान् हाथ न लगावें, इसके उत्तर में आज्ञा की कि आपलोग हमारे पूजनीय हैं जिनकी जूतियें उठालेते हैं इस हालत में झूठा प्याला क्या चीज है. जब मैंने निवेदन किया कि यह श्रीमानों की गुणग्राहकता है, परंतु इसमें मेरी सभ्यता बिगड़ती है, तब महाराणा साहिब ने आज्ञा की कि तुम्हारी सभ्यता कुछ नहीं बिगड़ती, जब महाराजा साहिब की इच्छा अपने हाथ से पिलाने की है तो पीलो, इस पर मैंने श्रीमानों को अधिक धन्यवाद करके मद्य पीलिया. तथा संवत् १९४८ के भाद्रपद मास में जोधपुर के राजराजेश्वर महाराजा जसवन्तसिंह ने मुझको पैर में स्वर्ण भूषण प्रदान कर मान बढाया.

इसप्रकार वर्तमान समय में भी चारणों का आदर सन्मान क्षत्रिय राजा महाराजा करते हैं, अब यहां पर यह प्रश्न उठता है कि ताजीम और पैर में सोना तो चारणों के अतिरिक्त ब्राह्मण और वैश्य आदि अन्य ज्ञातिवालों को भी मिलते हैं, फिर चारणों को मिलने में क्या विशेषता है? इसके उत्त-

र में लिखाजाता है कि राजपूताना में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय पर्यंत यह रीति चली आती है कि क्षत्रिय और चारणों को जो मान मिलते हैं वे वंश परंपरा के लिये (मौरूशी) होते हैं. जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट सिद्ध है. और ब्राह्मण वैश्य आदि अन्य ज्ञातिवालों को मान मिलते हैं वे उनके जीवन पर्यंत (हीनहयात) ही रहते हैं. इस कारण से क्षत्रिय और चारणों को मान मिलने में यह विशेषता है.

अब आगे चारणों की प्रशंसा में राजा महाराजा आदि क्षत्रियोंने कविता की है सो भी कुछ यहां लिख देते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि क्षत्रिय लोक चारणों को कैसा मानते हैं.

चारणों की प्रशंसा में क्षत्रियों की कीहुई कविता

इस प्रकरण में जोधपुर के महाराजा प्रथम जसवन्तसिंह का बनायाहुआ एक दोहा लिखाजाता है जो मारवाड़ के रूपावास नामी गाम के चारण रोहडियाः बारहठ राजसिंह के लिये उक्त महाराजा ने मरसिया कहा था ॥

इत जोड़ा रहिया हमे, गंढवीकाज गरत्थ ।
ऊ राजेंड छत्रधारियाँ गो जोड़ावण हत्थ ॥ १ ॥

जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने चारण ज्ञाति की प्रशंसा में मरुभाषा में गीत नामक छन्द कहा जो नीचे लिखाजाता है-

आछा गुण कहण वाणाँ[3] पण आछी, मोटम बुधमैं नको मणाँ ॥
राजाँ सुजस चहूँ जुग राखै, ताकँव दीपक सभातणाँ ।१।
भोपालाँ बाताँ हदभावै, सबद सुहावै घणाँ सकाज ।
डोल्ह दराज दीसता डारणाँ, राजाँ बिच सोहै कवराज ।२।
राजी सरब सभानैं राखै, सहज सुभावाँ घणाँ सरैं ।
धजवड़हता मारका धूँताँ, किव रजपूताँ अमर करै । ३ ।
आखै मानं सुणों अधपतियाँ, खत्रियाँ कोय मैं कीजो षीज ।
बिरदायक मदबहता बारण, चारण बडा अनोखी चीज ॥ ४ ॥

इन्हीं महाराजा मानसिंह का कहाहुआ मरुभाषा में गीत नामक छन्द का चतुर्थ चरण प्रसिद्ध है, वह नीचे लिखाजाता है

करण सुकर[11] अहलोक कृतारथ, परमारथ ही दियण पतीज .

१ चारण २ राजसिंह ३ स्वभाव ४ चारण ५ वीर ६ तरवार चलानेवाले ७ धूर्तो को ८ कहै ९ मानसिंह १० मत करना ११ मुख्य

चारण कहण जथारथ चोडे, चारण महा पदारथ चीज ॥ ३ ॥

इन्हीं महाराजा मानसिंह के समय में पोखरण के ठाकुर सवाईसिंह के प्रपञ्च से धूँकलसिंह नाम का मारवाड़ राज्य का एक मिथ्या दावीदार खड़ा होकर जयपुर के महाराजा जगत्सिंह की सहायता से सम्वत् १८६४ में उसने महाराजा मानसिंहको जोधपुर के गढ में घेरलिया और मारवाड देश व शहर जोधपुर में अपना अधिकार जमालिया उस समय में अधिकांश लोक महाराजा मानसिंह को छोडकर धूँकलसिंह में जामिले थे और कितने ही मरने के भय से भागगये, उस समय १७ चारण महाराजा मानसिंह के पास बने रहे और शत्रुओं से लड़ते रहे जिनमें से साँदू शाखा का चारण पीथा, मारा भी गया था इस पर स्वयं महाराजा मानसिंह ने मरुभाषा में गीत नामक छन्द का एक चरण कहा जो नीचे लिखाजाता है

ठोरे[२] पडे त्रंबक[३] ठहठहिया, भड़ थहिया पगरोप भवँ[४] ।

बाल्ही लाज तजे के बहिया, सतरे जद रहिया सकवँ[५]॥४॥

इसके साथ ही राजराजेश्वर महाराजा मानसिंहने एक दोहा कहा वह यह है-

चारण भाई क्षत्रियाँ, जाँघर खाग[६]तियाग ।

खाग तियागाँ बाहिरा, जाँसूं लाग न भाग ॥ ५ ॥

जोधपुर के आशिया शाखा के चारण कविराज बांकीदास का जब देहान्त होगया तब जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने बांकीदास के मरसिये दो दोहे बनाये वे नीचेलिखेजाते हैं

सौराष्ट्री (सोरठा) दोहा

विद्याकुलविख्यात, राजकाज हर रहसरी ।

बाँका तोबिण बात, किण आगल मनरी कहाँ ॥ ६ ॥

सदबिद्या बहुसाज, बाँकी थी बाँका वसू ।

कर सूधो कवराज, आज कठी गो आशिया ॥ ७ ॥

इसी प्रकार रतलाम के महाराजा बलवंतसिंह ने चारण जाति की प्रशंसा में मरुभाषा का छप्पय नामक छन्द बनाया जो नीचे लिखाजाता है-

यो चारण कुल अवस, तवाँ क्षत्रीकुल तारण ।

यो चारण कुल अवस, बिहद मद बहतो बारण ।

---

१ यहां अत्यन्त अलभ्यता दिखाने के लिये पदार्थ और चीज, इन एकार्थ बाची दो शब्दों का प्रयोग किया है । २ निरंतर प्रहार ३ नक्कारा ४ भूमि ५ चारण ६ वीरता और दान ७ बांकीदास. ८ कहां

यो चारण कुल़ अवस, सकल़ गुण कारज सारण।
यों चारण कुल़ अवस, मुंदै अपकीरत मारण ।
देवकुल़ साच चारण दुरस, धुरहरि भगती धारणाँ ।
सुरसती रूप राजै सुकव, डगर चलावण डारणाँ ॥ ८ ॥

इन्हीं महाराजा बलवंतसिंह का कहाहुआ एक दोहा यह प्रसिद्ध है-

सौराष्ट्री (सोरठा) दोहा

जोगो किणी न जोग, सहजोगो कीधो सुकव ।
लूंठा चारण लोग, तारणकुल़ छत्रियाँतणाँ ॥ ९ ॥

रोहड़िया शाखा के चारण बारहठ चण्डीदान का जब देहान्त हुआ तब इन्हीं महाराजा बलवंतसिंह ने चण्डीदान के मरसिये दोहे बनाये जिनमें से दो दोहे निचे लिखेजाते हैं

सौराष्ट्री (सोरठा) दोहा

सहसुख वाल्हा स्वाद, उणबिन व्हैगा ओरसा ।
आवै निसदिन याद, चितसुध वारठ चूँडियो ॥ १० ॥
सुरतर वाल़ो सार, उण नरतर पर वारजे ।
अधक लियां आचार, जिणघर चूँडो जनमियो ॥ ११ ॥

जैथल्या नामक ग्राम के महडू शाखा के चारण साहिबदान की कविता की प्रशंसा में उणियारा के रावराजा फतहसिंह का बनायाहुआ एक दोहा प्रसिद्ध है सो नीचे लिखते हैं

साहिब थारा अंक सह, घड़िया बेहँघड़ाव ।
जाणक कञ्चन में जिके, जड़िया रतन जड़ाव ॥ १२ ॥

यह रावराजा फतहसिंह वंशभास्करकटीकाकार के समय पर्यन्त विद्यमान थे। मेवाड के उमराव बाठरड़ा नामक ग्रामके स्वामी सारङ्गदेवोत सीसोदिया क्षत्रिय रावत दलेलसिंह के लघुभ्राता गुमानसिंह ने चारण ज्ञाति की प्रशंसा में मनोहर जाति का छन्द बनाया जो नीचे लिखाजाता है, इस गुमानसिंह के बनायेहुए ग्रन्थ भी विद्यमान हैं, इसको देवलिया प्रतापगढ के महारावत उदयसिंह ने जागीर में ग्राम दिया इस कारण से गुमानसिंह इस समय देवलिया प्रतापगढ में विद्यमान हैं ॥

१ मुख्य २ वीरों को मार्ग चलानेवाले. ३ क्षत्रिय का नाम ४ अलूणा ५ चंडीदान ६ कल्पवृक्ष का ७ ब्रह्मा की रचना

मनोहरम् ॥

नीति मग्ग चालैं ताहि कुम्भत्थल हत्थल दे,
बप्प बप्प बोलि कहो मनको बढातो को ।
कुमति कुदान धरे आलस जँञ्जीर जर,
थानसु आलीन छोरि जंगनपैं जातो को ॥
रम्यकाव्य तोदन लै घेरि गम्यचत्वर में,
हेरि हेरि मर्म बोल तोमर लगातो को ।
चारण सुहस्तिपैं न होते तो गुमान कहै,
क्षत्रीकुल कुम्भी हमैं रोकि राह लातो को ॥ १३ ॥

इसप्रकार कविता कर जाननेवाले क्षत्रिय लोग क्या प्राचीन समय के और क्या वर्तमान समय के सभी चारणों की प्रशंसा में कविता करते थे और अब भी करते हैं, जिनके उदाहरण दिक् दर्शन न्याय के अनुसार थोड़े से ऊपर लिखदिये हैं इन शैलीवद्ध उदाहरणों से भली भांति सिद्ध है कि, सत्य युग आदि के और इस समय के चारण एक ही हैं ॥
यदि भिन्न भिन्न होते तो ऐसा शृङ्खलावद्ध वृत्तान्त नहीं मिलकर बीच में अवश्य त्रुटि होजाती सो कहीं नहीं है.

इसके अतिरिक्त नवीन ज्ञाति का अथवा किसी छोटी ज्ञाति का, सभी क्षत्रियों में इतना बडा आदर सम्मान कदापि नहीं बढता, इसकारण से पाठकों को जानना चाहिये कि सृष्टिसर्जनकाल से लेकर वर्तमान समय पर्यन्त का चरणों की ज्ञाति का यह वही खाता है जिसका खण्डन किसी के जवानी जमाखर्च से कदापि नहीं होसक्ता ॥

अब यहां पर यह प्रश्न उठता है कि क्षत्रियों में चारणों का इतना आदर सम्मान होने का कारण क्या है? इसके उत्तर में तन्दुलकणन्याय के अनुसार थोड़े से उदाहरण नीचे लिखदिये जाते हैं ॥

१प्राचीन समय से चारणलोग क्षत्रियों के उपदेशक नियत होकर अनेक सदुपदेश करके क्षत्रियों की उन्नति करते रहे, और स्वर्ग से क्षत्रियों के साथ साथ आर्यावर्त में आकर क्षत्रियों की हानि में अपनी हानि और लाभ में लाभ समझकर क्षत्रियों की आत्युन्नति और देशोन्नति करते रहे इस कारण से क्षत्रियों की चारणों पर अधिक प्रीति है, यहां पर यदि कोई यह कहै कि क्षत्रियों के उपदेशक तो ब्राह्मण भी हैं, जिन्होंने अनेक सदुपदेश किये हैं

१ बाप बाप २ खंभ ३ अंकुश ४ जाने योग्य चौक में अर्थात् रणभूमि में ५ महावत ६ हाथी.

उन पर इतनी प्रीति क्यों नहीं है? तो इसके उत्तर में लिखाजाता है कि ब्राह्मणलोक भारतवर्ष की समग्र जातियों के समान धर्मोपदेशक हैं, इस कारण ब्राह्मणों को सभी पूज्य मानते हैं यहांतक कि चारणों ने भी ब्राह्मणों को पूज्य मान कर अपने ग्रामों में सहस्रों बीघे भूमि दान देरक्खी है, परन्तु कुछ काल से ब्राह्मणों ने समयानुसार नीति का उपदेश करना छोड़दिया और क्षत्रियों के आपत्काल के सहचारी नहीं रहे, इसके उपरान्त क्षत्रिय और ब्राह्मणों के खानपानादि में भेद होकर बहुधा व्यवहारों में अन्तर पड़गया और वर्तमान समय का स्पर्शास्पर्श का बखेड़ा अरुचिकारक होकर स्नेहाधिक्यता का बाधक होगया, इसके साथ ही ग्रहशान्त्यादि रीतियें भी विक्षेप कारक बनगईं, अतएव ब्राह्मणों का पूज्यत्व तो यथावस्थित बनाहुआ है, परन्तु उक्तकारणों से अन्तःकरण की प्रीति में न्यूनता पाईजाती है, अब यहां पर यह लिखना भी अयुक्त नहीं होवेगा कि ब्राह्मण लोक सभी ज्ञातियों के उपदेशक हैं और चारणलोक केवल क्षत्रियों के ही उपदेशक हैं इस कारण से भी क्षत्रियलोक चारणों को विशेषदृष्टि से देखते हैं, और इनसे समयोचित नीति का उपदेश ग्रहण करते हैं, इसके उपरांत चारणों का खानपानादि सम्पूर्ण व्यवहार क्षत्रियों के समान बनारहा और वर्तमान समय में भी वैसा का वैसा बना हुआ है, और इन दोनों ज्ञातियों में कभी परस्पर का विरोध नहीं हुआ इस कारण इनकी परस्पर की प्रीति वैसी की वैसी बनीहुई है इसके अतिरिक्त क्षत्रियों के अनेक अमूल्य उपकार भी मारूचारणों के हाथ से हुए हैं सो ग्रन्थ वंशभास्कर में विद्यमान हैं इनके उपरान्त थोड़े से उदाहरण यहीं पर आगे दिखाये जावेंगे ॥

२ चारणों के अनेक प्राण चलेजाने पर भी अपने यजमान क्षत्रियों के अहित की बात कभी अंगीकार नहीं की और कभी स्वामिद्रोही नहीं बने, बहुधा ज्ञातियों के मनुष्यों ने अपने स्वामियों पर विश्वासघात आदि अनेक अनर्थ किये जिनके उदाहरण इतिहासों में विद्यमान हैं परन्तु चारण ज्ञाति को यह कलङ्क नहीं लगा, इसकारण से भी चारणों पर अधिक विश्वास है

३ क्षत्रियों में जब परस्पर के द्वेष और बान्धवविरोध आदि उठे तब तब चारणों ने उन के मिटाने का उद्योग किया और क्षत्रियों में परस्पर सामउपाय को ही सदैव अपना कर्तव्य समझा जिससे क्षत्रियों को अलभ्य लाभ हुआ और सहस्रों क्षत्रियों के प्राण बचे जब जब क्षत्रियों में परस्पर के द्वेष से दो दल होकर कट मरने का समय आया तब तब चारणों ने मध्यस्थ होकर उनको मरते बचाये, इसकारण सामान्य रीति से यह प्रथा राजपूताने में प्रचलित होगई थी कि सहस्रों क्षत्रिय परस्पर कटमरने को तैय्यार होते उस

समय एक भी चारण बीच में आखड़ा होजाता तो लड़ाई बंद होकर सन्धि के सन्देशे होने लगजाते ऐसे समय में चारणों ने छोटे बडे (अमीर गरीब) के संकोच से न्याय को छोडकर कभी अन्याय ग्रहण नहीं किया इसीकारण से छोटे (हल चलानेवाले) चत्रियों से लेकर राजा महाराजाओं तक सब इन पर विश्वास करते हैं, और सब के समान प्रीतिपात्र बनेहुए हैं। इसके उपरान्त चत्रियों में अनेक विश्वासघात, छद्मघात, बालघात आदि अनर्थ होते हुए चारणों ने बचाये हैं, इसकारण से कैसा ही कठोर और दुर्वाच्य कहे जाने पर भी चारण लोक चत्रियों से अवध्य मानेजाते हैं, जिसके अनेक उदाहरण राजपूताना के इतिहासों में विद्यमान हैं ॥

४ जब जब चत्रियों का शत्रुओं से सामना हुआ है तब तब चारणों ने चत्रियों के साथ रहकर उत्साह दिला दिला कर इनको विजयी बनाये हैं, और कायरों को भी वीर बना बना कर लडाये हैं, इतना ही नहीं किन्तु स्वयं चत्रियों के अग्रणी होकर शत्रुओं से लडे और मारे मरे हैं, इसीकारण से यह प्रसिद्ध हुआ है कि

चारण मरण परायो चहरे, चारण मरण न पाड़े चूक ॥

इसप्रकार सुख और दुःख दोनों समय में चारणों ने चत्रियों का साथ नहीं छोड़ा और चत्रियों के लाभ के अर्थ अपने प्राणों को तुच्छ समझा सो इन पर इतनी प्रीति और विश्वास होना उचित ही है।

५ चारण और चत्रियों में याचक यजमानभाव बहुत दृढ है अर्थात् चारणलोक केवल चत्रियों के ही याचक हैं इसकारण से चत्रियलोक समझते हैं कि चारणों का निर्भर केवल हमारी ज्ञातिके ऊपर ही है इसकारण से विशेष प्रीति करके दान और मान में चारणों को सदैव अग्रणी रखते हैं।

६ इस संसार में मनुष्य के लिये यश के समान कोई प्रिय वस्तु नहीं है जिस यश के ग्राहक चत्रिय लोक ही हैं कि, जो सब से प्रिय पदार्थ प्राणों को भी यश के लिये देदेते हैं, वह यश करनेवाले चारण लोग ही हैं, अर्थात् चारणों से ही चत्रियों का यश विख्यात हुआ है और अब भी होता है, इस कारण से चारणों पर चत्रियों की अधिक प्रीति है।

७ आपत्काल में चत्रियों के सहचारी रहने से चारणों की सर्वोत्तम संस्कृत विद्या नष्ट होगई परन्तु अपने यजमान चत्रियों के समझ में आवे जैसी डिङ्गलभाषा में कविता करके समयानुसार उत्तम उपदेश और यश करते रहे जिसकारण से चारणों पर चत्रियों की प्रीति में न्यूनता नहीं आई।

८ चारणों ने चत्रियों के बड़े बड़े उपकार भी किये हैं और बडी बडी अमूल्य सेवायें कर करके चत्रियों के हृदयों पर अपनी ज्ञाति के उत्तम गुणों की

मुद्रा (छाप) लगा दी है, और जिस प्रकार क्षत्रिय लोग यह जानते हैं कि चारणों का निर्भर केवल हमारी ही ज्ञाति पर है, और हमारी ज्ञाति के सुधार का बड़ा भार इन्हीं पर है, इसीप्रकार चारणों का भी यही सिद्धान्त है कि, हमारी ज्ञाति का महत्त्व केवल क्षत्रियों से ही है, और इनके लाभ में हमारा लाभ और इनकी हानि में हमारी हानि है।

इन उपरोक्त कारणों से क्षत्रिय और चारणों की ज्ञाति में परस्पर अत्यन्त प्रीति बनीहुई है। यहां पाठकों को इस बात के जानने की आकांक्षा होवेगी कि चारणों ने क्षत्रियों के कौन कौन से उपकार और कौन कौन सी अमूल्य सेवायें की हैं, इसके बहुधा उदाहरण तो ग्रन्थ वंशभास्कर और राजपूताना के अन्य इतिहासों में स्पष्ट रीति से लिखेहुए हैं जिनकी द्विरावृत्ति करना अनावश्यक है,परन्तु थोड़े से उदाहरण तन्दुलकणन्याय के अनुसार जो ग्रन्थ वंशभास्कर में नहीं हैं नीचे लिख दियेजाते हैं, इन उदाहरणों में मैं (बारहठ कृष्णसिंह) अपने ही घर को अग्रणी करके लिखता हूं कि,

१ विक्रमी चौदह सौ के शतक में दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलकने महाराणा गढ लक्ष्मणसिंह से चीतोड़ का दुर्ग छीनलिया जिस युद्ध में महाराणा गढ लक्ष्मणसिंह अपने युवराज अरिसिंह सहित मारेगये और छोटे पुत्र अजयसिंह घायल होकर बाहिर निकले जो महाराणा बनकर चीतोड़ पीछा लेने के प्रयत्न में परलोक वास करगये, जिनके पीछे महाराणा हम्मीरसिंह राज्यासन पर बैठकर चित्तोड़ पीछा लेने के अर्थ अनेक युद्ध करते रहे, परन्तु चीतोड़ हाथ नहीं लगा और प्रबलशत्रुओं से युद्ध कर करके इतने निर्बल होगये कि चीतोड़ लेने की आशा नहीं रही तब अपना देह त्यागन करने को द्वारका जाने लगे मार्ग में गिरनार के समीप देथा गोत्र के चारण बारू के ग्राम खोडमें जाकर रात रहे, जहां पर बारू ने महाराणा का आतिथ्य करके आगे जाने का कारण पूछा तब महाराणा ने अपना अभिप्राय कह सुनाया, इस पर बारू की माता बरवड़ी ने जो उस समय देवी का अवतार मानीजाती थी, महाराणा को द्वारका जाकर शरीर त्यागने का निषेध करके शिक्षा की कि तुम पीछे मेवाड़ में जाओ तुम्हारा राज्य (चीतोड़) पीछा तुमको मिलजावेगा, इस पर महाराणा हम्मीरसिंह ने उत्तर दिया कि मेरी सवारी का एक घोड़ा बाकी रहा है, और थोडे से सेवक बाकी रहगये हैं जो इस समय मेरे साथहैं,इस सिवाय न तो घोड़े हैं, न क्षत्रिय हैं, न युद्ध की कोई सामग्री है, फिर चित्तोड़ पीछा किस साहित्य से लेसकूंगा, इस पर बरवड़ी ने आज्ञा की कि मेरा पुत्र बारू पांच सौ घोड़े लेकर तुम्हारे पास आवेगा वे घोड़े रखलेना और मेवाड़ में क्षत्रिय बहुत हैं जिनको एकत्रित करके सेना

बनालेना और तुम्हारे वहां जाने पर जो सम्बन्ध (सगाई) आवे वह स्वीकार करलेना वह सम्बन्ध ही चित्तोड़ पीछा दिलाने का साधन होजावेगा, इस पर महाराणा हम्मीरसिंह ने कहा कि मेरे पास इतने रुपये कहां जो पांच सौ घोडे क्रय कियेजावें इस पर वरवड़ी ने उत्तर दिया कि हम घोड़ों के रुपये नहीं लेवेंगे, यदि तुमको चीतोड पीछा मिलजावै तब तो घोडों के रुपये हम को देदना, नहीं तो हमारी तरफ से यह भेट है, इस पर महाराणा हम्मीरसिंह वरवड़ी के वचन का विश्वास करके पीछे कैलवाड़े आये, जिसके थोड़े ही समय पीछे देथा गोत्र का चारण बारू अपनी माता की आज्ञानुसार पांच सौ घोड़े लकर महाराणा की सेवामें उपस्थित हुआ वे घोड़े लेकर महाराणा ने अपने बिखरे हुए क्षत्रियों को एकत्रित किये, और देशमें लूटमार शुरू की उसी समय में जालोर के राव मालदेव मानगरा की पुत्री का संबन्ध करने को मालदेव के भले आदमी कैलवाड़े पहुंचे, जो संबन्ध स्वीकार करके महाराणा हम्मीरसिंह विवाह करने को जालोर गए उस समय चित्तोड़ का दुर्ग बादशाह की ओर से राव मालदेव के अधिकार में था, इस कारण से विवाह करते ही राव मालदेव के अमात्य मोजीराम महता को साथ लेकर सिंह की आखेट का मिश करके जालोर से निकले और उक्त पांच सौ सवारों से अर्धरात्रि को चित्तोड़ पहुंचे, जहां पर मोजीराम महता ने दुर्ग के द्वार खोलने की आज्ञा दी जिसकी वाणी पहचान कर द्वारपालों ने कपाट खोलदिये और महाराणा हम्मीरसिंह ने चितोड पर अपना अधिकार करलिया इसके पीछे मालदेव बड़ी सेना लेकर चित्तोड़ पर गया परन्तु महाराणा से परास्त होकर पीछा चला गया इस सेवाके प्रत्युपकार में महाराणा हम्मीरसिंह ने "बारू"को अपना पोलपात बारहट बनाकर क्रोड़पसाव और बारह ग्रामों के साथ पचीस सहस्र रुपये वार्षिक जीविका का आँतरी नामक ग्राम दिया जिसका वृत्तान्त ऊपर लिखा गया है, इसके उपरान्त महाराणा हम्मीरसिंह ने आज्ञा की कि बारू की घोड़ों की सौदागरी के कारण हमको मेवाड़ का राज्य पीछा मिला है और बारू का शीशोदिया क्षत्रियों पर बड़ा उपकार है इसकारण से इस उपकार का स्मरण रखने के अर्थ बारू के देथा गोत्र के स्थानमें 'सोदा' गोत्र रक्खा जावै, अर्थात् महाराणा की आज्ञानुसार उसी दिन से बारू और बारू के वंशज 'सोदा बारहठ' कहलाने लगे जिस पीछे महाराणा हम्मीरसिंहने खोड नामी ग्राम से वरवड़ी को चित्तोड़ पर बुलाई और उनका देहान्त होने के पीछे उनके नामपर मंदिर बनवाया, जो इस समय अन्नपूर्णा के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि वरवड़ी का दूसरा नाम अन्नपूर्णा था जिसकी लम्बी चौड़ी कथा है वह विस्तार के भय से यहां नहीं लिखसक्ते जब महाराणा हम्मीरसिंह का देहान्त होगया और महाराणा क्षेत्रसिंह (खेता) गैणोली के अधीश हाडा लालसिंह की

पुत्री से विवाह करने को विक्रमी सम्वत् १४३९ में बुन्दी गये वहां हाडा लालसिंह ने, उक्त बारहठ बारू को दान देना चाहा और बारू अयाचक होगया था, अर्थात् महाराणा के सिवाय अन्य किसी क्षत्रिय का दान नहीं लेने का प्रण लेलिया था, इस कारण लालसिंह से दान लेना अस्वीकार किया इस पर लालसिंह ने बारू को किसी मन्त्र (सलाह) करने के मिश से बुन्दी के महलों में बुलाकर कहा कि मेरा दियाहुआ दान नहीं लिया तो मैं तुम्हारा अपमान करूंगा इस पर बारू ने अपने प्रण और मान को प्राण से प्रिय समझ कर अपने हाथ से अपना शिर काट कर प्राण देदिया, यद्यपि इस का परिणाम उत्तम नहीं हुआ क्योंकि महाराणा क्षेत्रसिंह ने बारहठ बारू का वैर लेने के कारण बुन्दी का आक्रमण करके युद्ध प्रारम्भ करदिया जिसमें महाराणा क्षेत्रसिंह और हाडा लालसिंह दोनों रणभूमि में मारेगये परन्तु बारू ने प्राण से भी प्रिय अपने प्रण को नहीं छोड़ा इन बारू बारहठ से सोलह पीढी पर मैं हूं, इस कारण से इस उदाहरण को अपना घरूउदाहरण लिखा है ॥

२ राठोड़ वीरमदेव को जोइया क्षत्रियों ने मारडाला और उसका वंश नष्ट करदेना चाहा तब वीरमदेव की स्त्री मांगलियाणी अपने ज्येष्ठ पुत्र चूण्डा को लेकर कालाऊ ग्राम के चारण रोहडिया बारहठ "आल्हा" के पास गई, तब आल्हा ने मांगलियाणी को अपनी माता के समान रखकर चूंडाका पालन करके उसको मंडोवर का राज्य प्राप्त कराया जो चूंडा मंडोवर विजय करके आनन्द से रहने लगे और उस आनन्द में आल्हा बारहठ को भूलगये तब आल्हा ने चूंडा के नाम निम्न लिखित दोहा लिखभेजा

> चूँडा नावै चीत, काचर कालाऊतणां ।
> भड़ थायो भै भीत, मंडोवररा मालियां ॥ १ ॥

इस दोहा के सुनने से चूंडा को आल्हा का स्मरण हुआ और उसको मंडोवर बुलाकर बड़ा सन्मान किया । इन्हीं चूंडा के वंश के इस समय जोधपुर, बीकानेर, किसनगढ, रतलाम, ईडर, सीतामऊ, शिलाणा, झाबुआ, आदि का राज्य करते हैं ।

३ मंडोवर के राव रणमल्ल को विक्रमी सम्वत् १५०० में महाराणा लाखा के ज्येष्ठ पुत्र राव चूंडा ने चित्तोड़ पर मरवा डाला और रणमल्ल का मृतक शरीर दग्ध नहीं होने दिया इस बात को अनुचित समझकर राव चूंडा की अप्रसन्नता का भार अपने शिर उठाकर खड़िया शाखा के चारण चाँदण ने रणमल्ल के शरीर को दग्ध किया, इस पर चूंडा ने अप्रसन्न होकर चाँदण को

मेवाड़ देश से बाहर निकालदिया, यह समाचार सुनकर रणमल्ल के पुत्र राव जोधा ने चांदण को मारवाड़ में बुलाकर गोदेलाव नामी ग्राम दिया, जो इस समय चाँदण के वंशजों के अधिकार में है। और गांम खराडी कांवलियां में भी इसीके वंशज हैं.

४ सिरोही के राव सुलतानसिंह देवड़े पर सम्वत् १६३६ में बादशाह अकबर ने सेना लेकर बीकानेर के राव रायसिंह को भेजा जो राव सुल्तान को पकड़कर बीकानेर लेगये इससमय सुल्तान का कृपापात्र आशिया गोत्र का चारण "दूदा" राव रायसिंह के पास गया और अपनी योग्यता से रायसिंह को प्रसन्न किया तब एक दिन रायसिंह ने आज्ञा की कि तुम्हारी जो इच्छा हो वे सो मांगो, जो मांगोगे वही पावोगे, इसपर दूदा ने मांगा कि रावसुलतान को कारागृह से छोड़ दो, इस पर राव रायसिंह ने उत्तर दिया कि सुल्तान बादशाही अपराधी है, जिसको मैं नहीं छोड सक्ता, तुम अपने लिये ग्राम, परगना, चाहो सो मांगो, इस पर दूदा ने जवाब दिया कि सूर्यवंशी क्षत्रिय, वचन देकर अद्यावधि नहीं पलटे हैं, परन्तु मालूम नहीं इस कलिकाल में क्या क्या नहीं करेंगे, मुझको मेरे लिये कुछ भी अभीप्सित नहीं है, आपको अपना वचन पालन करना होवे तो राव सुलतान को छोडदेवें, इस पर राव रायसिंह ने राव सुल्तान को बन्दीगृह से छोडदिया।

५ आंबेर के मिरजा राजा जयसिंह को दिल्ली के बादशाह औरङ्गजेब ने विश्वासघात से मरवाना चाहा और इसके लिये रतनू गोत्र के चारण जगन्नाथ को बहुत लोभ दिया गया, परन्तु जगन्नाथ ने उस लोभ को तुच्छ और अयोग्य जानकर, सम्पूर्ण भेद मिरजा राजा जयसिंह से कहदिया और बड़ी युक्ति के साथ जयसिंह को कुशलता पूर्वक दिल्ली से निकाल लाया, इस सेवा के प्रत्युपकार में मिरजा राजा जयसिंह ने, जगन्नाथ को पचीस सहस्र वार्षिक मुद्रा की जीविका देकर बहुत आदर सत्कार किया, जिसके वंशज इस समय नाँगळ और झोडूंदा भोजपुरिया ग्रामों में विद्यमान हैं।

६ बीकानेर के बीदावत राठोड़ और पुंगल के भाटियों में परस्पर विरोध बढ़कर कट मरने का समय आगया, और संभव था कि दोनों राज्य सिंध के यवनों के हस्तगत होजाते, उस समय में चारण ज्ञाति की करनी माता ने, उत्तम शिक्षा करके राठोड़ और भाटियों में परस्पर सन्धि कराकर शान्ति करादी, जिससे सहस्रों क्षत्रियों के प्राण बचे और भूमि सम्बन्धी किसी प्रकार की हानि नहीं हुई॥

७ उदयपुर के महाराणा उदयसिंह ने छोटे पुत्र जगमाल को युवराज मान लिया था, इसकारण से विक्रमी सम्वत् १६२८ में उदयसिंह के देहान्त होने पर जगमाल मेवाड़ के राज्यासन पर बैठगया, परन्तु इस बात को अनुचित

समझ कर मेवाड़ के उमराव सरदारों ने, जगमाल को उठाकर महाराणा प्रतापसिंह को राज्यासन पर बिठादिये, तब जगमाल निराश होकर अजमेर के सूबेदार के पास गया, और महडू शाखा के चारण "जाडा" को दिल्ली भेजा कि तुम वहां जाकर मेरे अर्थ जीविका मिलने का उपाय करो, इस पर जाडा दिल्ली गया और अपनी योग्यता व उत्तम कविता के कारण नव्वाब खानखाना बहराम के पुत्र खानखाना अब्दुल रहीम को प्रसन्न किया तब उक्त नव्वाब ने कहा कि जो तुम्हारे मन में होवे वह मांगो, जो मांगोगे वही पाओगे, इस पर जाडा ने मांगा कि बादशाह से निवेदन करके जगमाल के नाम जहाजपुर का परगना जागीर में लिखवा दो कि जो इस समय बादशाही खालसह में है, इस पर खानखाना अब्दुल रहीम ने जवाब दिया कि जगमाल के लिये तो परगना लिखवादिया जावेगा परन्तु तुम अपने लिये कुछ मांगो, इस पर जाडा महडू ने कहा कि मैं चारण हूं जो क्षत्रियों के सिवाय अन्य किसीसे कुछ नहीं लेता इस कारण से आप कृपा करके जगमाल के नाम जहाजपुर का परगना लिखवा देवें वह मैं मेरे लिये ही समझूंगा, इस पर अब्दुलरहीम ने बादशाह अकबर से निवेदन करके जहाजपुर का परगना जगमाल के नाम लिखवादिया और जाडा महडू की प्रशंसा में निम्नलिखित दोहा कहा—

धर जड्डी अंबर जडा, और न जड्डा कोय ॥
जड्डा नाम अलाह दा, जड्डा महडू जोय ॥ १ ॥

इसप्रकार जगमाल को जहाजपुर का परगना मिले पीछे क्षत्रियों को परस्पर लड़ाकर निर्बल बनाने की राजनीति से बादशाह अकबर ने देवड़ा सुलतान सिंह से सीरोही का आधा राज्य लेकर जगमाल को लिखदिया तब जगमाल ने जहाजपुर का परगना जाडा महडू को देदिया और आप सीरोही चलागया, परन्तु जाडा ने जहाजपुर के परगने का एक ग्राम 'सरस्या' अपने अधिकार में रखकर बाकी का परगना जगमाल को पीछा देदिया और सम्वत् १६४० कार्तिक शुक्ल ११ को सीरोही के राव सुलतान और जगमाल के युद्ध हुआ तब चारण जाडा महडू, जगमाल के साथ वीरता से लड़कर काम आया, इस जाडा के वंश के सरस्या आदि कई ग्रामों में मेवाड़, मारवाड़, मालवा आदि प्रदेशों में विद्यमान हैं.

उदयपुर महाराणा करणसिंह के ज्येष्ट राजकुमार जगत्सिंह ने ढुंढाड़ के एक नरूके राजपुत्र को मरवाडाला था उसका वैर लेने को उसका भाई उदयपुर पर गया और राजकुमार जगत्सिंह किसनपोल दरवाजेके बाहर खरगोशों की शिकार को गये थे जहां पर वह राजपूत जापहुंचा, जिस का ढंग दे-

खबर दधिवाड़िया शाखा के चारण खेमराज ने अनुमान से जाना कि यह राजकुमारजगतसिंह पर घात करने को जाता है इस कारण खेमराज घोड़ेपर सवार होकर उस राजपुत्र के पीछे होलिया और जब उस राजपूत ने खड्ग निकाल करके राजकुमार को ललकारा कि मैं मेरे भाई का वैर लेता हूं, उस समय खेमराज ने अपना घोड़ा बढाकर उस राजपुत्र पर खड्ग का प्रहार किया जिससे उस राजपुत्र का खड्ग सहित हाथ और मस्तक राजकुमार के आगे जापड़ा, खेमराज उसको मारते ही पीछा फिर कर बाठरड़ा के जागीरदार भोपतराम की हवेली अपने डेरे पर चलागया, राजकुमार को यह ज्ञात नहीं हुआ कि मेरे शत्रु को मारकर मेरे प्राण की रक्षा करनेवाला कौन था? इस कारण मे महलों में जाकर अपने पितामह राणा करणसिंह से निवेदन किया कि मेरी रक्षा करनेवाला कोई मेवाड़ी वीर था, इसकारण से सब जागीरदारों की जमीयतों को यहां बुलावें 'जिनको देखकर मेरी रक्षा करनेवाले वीर को मैं पहचान लूंगा, इस पर महाराणा ने सब जागीरदारों को अपनी अपनी जमीयतें लेकर महलों के बडे चौक में आने की आज्ञा दी जिस समय बाठरड़ा के जागीरदार महाराणा प्रतापसिंह के पुत्र सहसमल्ल का बेटा भोपतराम अपनी जमीयतें (परिग्रह) लेकर आया तो, राजकुमार जगत्सिंह ने खेमराज को देखते ही निवेदन किया कि मेरी रक्षा करनेवाला यह है इस पर महाराणा करणसिंह ने आज्ञा की कि अब तक मेरे तीन पुत्र थे आज से मेरा चौथा पुत्र खेमराज हुआ. फिर महाराणा कर्णसिंह का परलोक वास होने पर महाराणा जगत्सिंह राज्यासन पर विराजे तब खेमराज को सत्तर सहस्र ७०००० रुपये वार्षिक की जीविका प्रदान करके ठीकरया नामी ग्राम देकर खेमराज के नाम पर उसका नाम 'खेमपुर' रक्खा, जिसके ताम्रपत्र की आडी ओलों (पंक्तियों) में महाराणा ने अपने हाथ से "भाई खेमराज धधवाड़ा हैं दीधोजी" यह लिखा है सो वह ताम्रपत्र इस समय खेमपुर के ठाकुर चिमनसिंह दधवाड़िया के पास विद्यमान है।

उक्त भोपतराम के वंश में अब धरियावद का ठिकाणा है। और फिर खेमराज ने उक्त जीविका पाकर खेमपुर ग्राम में अपनी पुत्री का विवाह कियातो महाराणा जगत्सिंह अन्तःपुर (जनाना) सहित खेमराज के महमान होकर पन्द्रह दिन तक खेमपुर में रहे ॥

और 'भाई खेमराज' कह कर बडा मान बढाया जिसके प्रमाण में उक्त ताम्रपत्र विद्यमान है अर्थात् ताम्रपत्र की आयुदा (आडीओळ) में महाराणा ने अपने हस्ताक्षरों से भाई खेमराज लिखा है, इन्हीं महाराणा जगत्सिंह ने चारणों को सात सौ हस्ती, छप्पन सहस्र घोड़े और चौरासी ग्राम उदक दिये जिसकी साक्षी का यह दोहा प्रसिद्ध है

सिंधुर दीधा सात सै, हैंवर छपन हजार।
चौरासी सांसण दिया, जगपत जगदातार ॥ १ ॥

और महाराणा जगत्सिंह का देहान्त हुए पीछे महाराणा राजसिंह राज्य-सिंहासन पर बैठे तब खेमराज को "काका" कह कर बोलते थे जिसके लिये निम्न लिखित आधा दोहा प्रसिद्ध है कि

राणो कहियो राजसी, काको खेमकरन्न ॥

इस खेमराज के वंश में इस समय खेमपुर का ठाकुर दधिवाड़िया चिमनसिंह विद्यमान है—

१ दिल्ली का बादशाह औरङ्गजेब विक्रमी सम्वत् १७३६ माघकृष्ण ८ को बडी भारी फौज के साथ उदयपुर पर पहुंचा उस समय महाराणा प्रथम राजसिंह ने उदयपुर में रहके युद्ध करना उचित नहीं समझा इस कारण से उदयपुर को शून्य करके पश्चिमी पर्वतों में चलेगये तब ग्रन्थकर्ता(सोदा बारहठ कृष्णसिंह) का पूर्वपुरुष "बारहठ नरू" उदयपुर के महलों से घोड़े सवार होकर महाराणा के पास पर्वतों में जाते थे, उस समय किसीने कहदिया कि बारहठजी जिस द्वार पर हठ करके नेग लेते थे उसको आज बिना ही हठ छोडते हो यह सुनकर नरू घोड़े से उतर गये और अपने कुटुम्ब के लोगों को महाराणा के पास भेजकर आप महलों के प्रथम द्वार "बडीपोळ" पर बैठ गये और बादशाह की ओर से इक्का ताजखां और रुहिल्लाखां उदयपुर के मंदिर तोड़ने व मूर्तियां खण्डन करने को आये तब बारहठ नरू बडी पोळ से आगे बढ़कर जगदीश के मंदिर पर जाकर अपने चुने हुए बीस सेवकों सहित बडी वीरता से लड़कर काम आये. "नरू" के इस कार्य की प्रशंसा का मरुभाषा का गीत नामक एक छंद प्रसिद्ध है जो नीचे लिखाजाता है–

कहियो नरपाळ[1] आवियां कटकां, धूणा छड़ाळ धरापै धोळ ॥
पोळ बडा गज बाज पामतो, पड़तै भार न छोडूं पोळ ॥ १ ॥
राजेंद[2] कियो राणा छळ[3] रूड़ो, कांनों दै नीसरूं कठै ॥
अर घोड़ो फेरणा किम आवै, तोरण घोड़ो लियो तठै ॥ २ ॥
आंखा[4] पीळा करे ऊजळा, सोदो रोदां कळह सझ ॥
करग मांडिया नेग कारणो, कलम[5] खांडिया नेग कज ॥ ३ ॥

(१) बारहठनरू (२) राणा राजसिंह के (३) लिये यह उत्तमता करी (४) पोलपात बनाते समय पीले अक्षत चढाकर पग पूजन किया था, उन अक्षतों को उज्वल दिखाकर। (५) यवनों को

उदियापुर सोदै अजैरायल, कलमाँ हूँ भाराथ कियो ॥
दत लेतो आवे दरवाजे, देवल जावे मरण दियो ॥ ४ ॥

इस नरू बारहठ के वंश में नरू से आठवीं पीढी पर ग्रन्थ वंशभास्कर की टीका बनानेवाला बारहठ कृष्णसिंह है।

१० मेवाड़ में बन्हेड़ा के पट्टे के ग्राम गीहड़्या के सोदा बारहठ शाखा के चारण 'देवा' जो वंशभास्कर के टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) के वृद्ध प्रपितामह थे, बन्हेड़ा का रहना छोडकर शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह के पास जारहे थे, जिनका वहां बडा आदर सत्कार हुआ तत्पश्चात् सम्वत् १८१३ के पौष मास में राजा उम्मेदसिंह ने बन्हेड़ा पर चढाई की जो आप तो बन्हेड़ा से दो कोस के अन्तर पर नगर नामी ग्राम में रहे और अपने पुत्र युवराज रणसिंह को सेना के साथ बन्हेड़ा भेजा वहां बन्हेड़ा के राजा सरदारसिंह दुर्ग छोडकर भागगये, और शाहपुरा की सेना ने शहर और कोश आदि लूटकर राजा सरदारसिंह के अवरोध (जनाने) को लूटना चाहा उस समय बारहठ देवा शाहपुरा की सेना का साथ छोडकर, जनानी डोढी पर हाथ तलवार लेकर जाखड़ेहुए, और कहा कि यह मेरे स्वामी का अवरोध (जनाना) है जो मेरे मरे पीछे लुटेगा, इस पर सेना के लोग ठहर गये, क्योंकि 'देवा' राजा उम्मेदसिंह का पूर्ण प्रीतिपात्र था, जिस पर शस्त्राघात करने का साहस किसीका न हुआ, और यह समाचार राजा उम्मेदसिंह के पास नगर ग्राम पर भेजा तब राजा उम्मेदसिंह स्वयं बन्हेड़े गये और देवा बारहठ को अपने हृदय से लगाकर कहा कि वीर और स्वामिधर्मी सेवकों का यही काम है मुझको विश्वास होगया है, कि मुझको भी कभी कार्य पड़ा तो जैसा साथ राजा सरदारसिंह को दिया ऐसा ही मुझे भी देओगे, तत्पश्चात् शाहपुरे जाकर इस कार्य के पलटे में राजा उम्मेदसिंह ने देवा का मान उमराओं के बराबर बढाकर शाहपुरा के राज्य में "खेड़ा, देवपुरा" नामी ग्राम उदक (माफी) दिया जो इस समय वंशभास्कर के टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) के अधिकार में है।

११ शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह ने अपने लघुपुत्र जालिमसिंह को युवराज बनाने के अभिप्राय से बडे राजकुमार अदोतसिंह को मरवाकर अदोतसिंह के पुत्र रणसिंह को मारने को "कालामियाँ" नामक एक यवन को आज्ञा दी जिसने रणसिंह पर खड्ग प्रहार करना चाहा परन्तु उसी समय रणसिंह के पुत्र भीमसिंह के हाथ से वह यवन मारागया, तदनन्तर राजा उम्मेदसिंह का विचार पौत्र, प्रपौत्रादि को मारकर, जालमसिंह को युवराज

(१) वीर का विशेषण है

बनाने का था परन्तु सरस्या ग्राम के महडू शाखा के चारण कृपाराम ने राजसभा में जाकर राजा उम्मेदसिंह को निम्न लिखित दोहा सुनाया

(सोरठा दोहा)

मिण चुण मोटोड़ाह, तैं आगे खाधा बहुत ॥
चेलक चीतोड़ाह, अब तो छोड उमेदसी ॥ १ ॥

इस दोहे का राजा उम्मेदसिंह के हृदय में ऐसा असर हुआ कि इस अनर्थ की पुनः चेष्टा नहीं की और शाहपुरा का राजकुटुम्ब मृत्यु के मुख से बचगया

१२ जयपुर के राजा जयसिंह ने छोटे पुत्र ईश्वरीसिंह को राज्य देने के कारण अपने ज्येष्ठपुत्र शिवसिंह को मरवाडाला था और जोधपुर के राजा बखतसिंह ने नागोर का परगना अपने बडे भाई अभयसिंह से पाने के लोभ से अपने पिता अजीतसिंह को मारडाला था, जिस पीछे ये दोनों राजा पुष्कर में मिले तब मारवाड़ के एक चारण को जयसिंह ने आज्ञा की कि आप कवि हैं सो इस समय के लिये कोई ऐसी कविता सुनावें कि जो सदैव के लिये यादगार रहै उस समय करनीदान ने निम्न लिखित दोहा सुनाया-

दोहा ॥

जैपुर औ जोधाणपत, दोनों थाप उथाप ॥
कूरम मारयो डीकरो, कमधज मारयो बाप ॥ १ ॥

इस दोहे का दोनों राजाओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा और अपने अधर्मी कार्यों से लज्जित हुए।

१३ जोधपुर के राजा भीमसिंह ने अपने सब नजीकी हकदारों को मारकर एक मानसिंह बचगये थे जिनको भी मारने के लिये सेना भेजी तब मानसिंह जालोर के गढ में जाछिपे, वहां सेना ने जालोर के गढ को घेरलिया जो कई वर्ष पर्यंत घेरा रहा जिसमें मानसिंह के पास खाने को कुछ नहीं रहा तब बणशूर शाखा के चारण जुगता जो मानसिंह के पास रहता था, बाहर जा जाकर क्षत्रियों से याचना करके द्रव्य लाता और मानसिंह का निर्वाह करता था परन्तु यह वृत्तान्त महाराजा भीमसिंह को विदित होगया तब सेना के लोगों को आज्ञा हुई कि, जुगता गढ से बाहर निकलै तो उसको पकड लो, यह समाचार गढ के भीतर मानसिंह को मिला तब जुगता को बाहर भेजना बन्ध रक्खा परन्तु खाने को कुछ नहीं रहा तब जुगता ने अपनी स्त्री का सम्पूर्ण आभूषण उतारकर मानसिंह को लादिया, जिससे निर्वाह चलाया दैवयोग से इधर वह द्रव्य खूटा और उधर महाराजा भीमसिंह का दे

१ चीतोड़ पर राज्य करने के कारण शीसोदिया क्षत्रियों को चीतोड़ा कहते हैं.

हान्त होगया इस कारण से महाराजा मानसिंह जोधपुर के स्वामी होगये तब उक्त सेवा के प्रत्युपकार में जुगता को एक लक्ष रुपयों का भूषण और दश सहस्र वार्षिक मुद्रा का 'पाडळाऊ' नामक ग्राम लाखपसाव के साथ देकर ताजीम, पग में सोना आदि से जुगता का बडा सन्मान बढाया और जुगता के मरे पीछे उसके पुत्र भैरवदान को भाई कह कर गीत नामक छन्द का यह पद्य कहा—

भाइयां सरीपो भैर भाई ॥

इसका अर्थ यह है कि जुगता तो मेरे पिता के सदृश था, और भैरवदान सहोदर भाई के समान है।

१४ जोधपुर के महाराजा भीमसिंह ने मानसिंह को मारने के लिये जालोर पर सेना भेजी तब मानसिंह ने अपना अन्तेवर (जनाना) सीरोही भेजने का विचार किया, परन्तु महाराजा भीमसिंह के भय से सीरोही के राव वैरीशाल ने अस्वीकार कर दिया इस बात का महाराजा मानसिंह के हृदय में बहुत द्वेष था इस कारण से जोधपुर के स्वामी होते ही महाराजा मानसिंह ने सीरोही पर सेना भेजी और राव वैरीशाल पर एक लक्ष रुपये दण्ड के किये परन्तु रुपये उपस्थित नहीं होने के कारण राव वैरीशाल को कारागार (जेलखाने) में रखने का विचार कियागया उस समय सीरोही राज्य के सम्पूर्ण चारणों ने एकत्रित होकर दण्ड के रुपयों के प्रतिभू (जामिन) होकर जोधपुर की सेना को पीछी भेजी तत्पश्चात् चारणों ने राव वैरीशाल से रुपये मांगे कि हमलोगों का वचन मिथ्या नहीं जासक्ता इस कारण से महाराजा मानसिंह के रुपये देने चाहिये, इस पर रावने रुपये देने से नांहीं की तब सीरोही के राज्य के सम्पूर्ण चारण अपना प्रण रखने के कारण जोधपुर गये और महाराजा मानसिंह से निवेदन किया कि सीरोही के राज्य कोश में तो रुपये हैं नहीं कि राव से मांगे जावें और हम लोगों का तो अपने प्रण का निर्वाह करना अवश्य है क्योंकि अद्यावधि चारणों का प्रण कहीं मिथ्या नहीं हुआ है, इस कारण से हमलोग हमारे सब ग्राम आपके हस्तगत करते हैं जिनकी आमद से आप लक्ष रुपये चुकालेवें और आपके रुपये चुकजाने के पीछे हमारे ग्राम हमको पीछे देदेवें, जब तक हम लोग अन्य क्षत्रियों से याचना करके अपना निर्वाह करेंगे, इस पर महाराजा मानसिंह ने प्रसन्न होकर वे रुपये चारणों को छोडदिये और जितने चारण इस कार्य के लिये आये थे उनको एक एक घोडा सिरोपाव देकर विदा किये, परन्तु सीरोही के राज्य पर महाराजा का पूर्ण कटाक्ष था इस कारण से राव वैरीशाल का देहान्त होकर उनका पुत्र उदयभाण सम्वत् १८६५ में राज्यासन पर बैठकर तीर्थयात्रा

करने को गया जिसके पीछा आते समय महाराजा मानसिंह ने पाली के मुकाम पर सेना भेजकर उदयभाण को जोधपुर पकड़ा मंगवाया और गिरदीकोट में बन्ध रखकर दण्ड के रुपये लेकर छोड़ा।

१५ जैसलमेर के रावल बुधसिंह के मरने के पीछे बुधसिंह के छोटे भ्राता (अखैसिंह) का हक तोड़ कर अखैराज का पितृव्य (काका) तेजसिंह गद्दी बैठ गया और अखैराज को मारडालना चाहा तब अखैराज अपना प्राण बचाने के अर्थ ऊजळां नामी ग्राम में जाकर संढायच शाखा के चारण, कान्हा के घर में ६ (छः) मास तक रहे, और फिर कान्हा की सहायता से जैसलमेर के भाई बेटे उमराव सरदारों को अपने में मिलाकर तेजसिंह को मारकर जैसलमेर का राज्य लिया जिनके वंशज इस समय जैसलमेर का राज्य करते हैं।

१६ लड़ाई झगड़ों के समय क्षत्रिय लोग, चारणों के ग्राम और घरों का शरण पालते थे, अर्थात् कोई क्षत्रिय, भाई बान्धवों के अपराध से अथवा राजा महाराजा आदि के अन्याय और बलात्कार से बचने के कारण किसी चारण के पास चले जाते तो उनको पकड़ते नहीं थे, और अन्त में उनके लिये चारण और न्यायकारी क्षत्रियों की पंचायत होकर उचित न्याय कर दिया जाता था, इस शैली के रहने से क्षत्रियों के अनेक लाभ हुए और अनेक राजकर्मचारी पुरुषों के और राज कुटुम्बों के प्राण बचे हैं, इसीकारण से यह भी प्रथा रही है कि, जिस किसी राजा महाराजा आदि क्षत्रियों में आपत्ति पड़ती थी तब वे लोग अपनी स्त्रियों और बहिन बेटियों सहित बाल बच्चों को चारणों के घरों में रख जाते और आप युद्धादिक कार्यों में प्रवृत्त होते, जिसके अनेक उदाहरण राजपूताना के इतिहासों में मिलते हैं परन्तु विस्तार के भय से यहां उन बातों का लिखना छोडते हैं।

इस विषय में आधुनिक विद्वान् भी चारणों की प्राचीनता, पवित्रता, पूज्यता और क्षत्रियों में आदर सन्मान, पूर्वोक्त रीत्यनुसार ही स्वीकार करते हैं और अंग्रेज विद्वानों ने भी इसीप्रकार अपना मत प्रकट किया है सो यदि देखना चाहें तो निम्न लिखित पुस्तकों में देखलेवें।

१ वील्सन की बनाई हुई "इण्डियन कास्ट" नामक पुस्तक की दूसरी जिल्द के पृष्ठ १८१ से १८५ तक।

२ शेरिंग की निर्माण कीहुई पुस्तक "ट्राइब्स् एण्ड कास्टस् ऑव इण्डिया" की तीसरी जिल्द के पृष्ठ ५३ व ५४।

३ टॉड राजस्थान की दूसरी जिल्द के पृष्ठ ६३१ और ६३२।

इसके उपरान्त चारणों को जो ग्राम अथवा भूमि क्षत्रियों ने दी है और अब भी देते हैं वह ब्राह्मणों की भांति बेलगान अर्थात् किसी प्रकार के राज्य

करके विना उदक दियेहुए हैं। और अब भी उदक आघाट करके ही देते हैं। जिनका दानपत्र (सनद) ताम्रपत्र पर खुदवाकर दियाजाता है।

अब यहां पर थोड़ासा विवेचन दानपत्र का किया जाता है॥ चारणों को जो ग्राम दियेजाते हैं और दियेगये हैं उनके दानपत्र लिखने की यह रीतिहै कि "अमुक राजा के वचन से अमुक ग्राम अमुक चारण को उदक आघाट कर दियागया" इसके नीचे निम्न लिखित श्लोक लिखेजाते हैं, जो गरुड़पुराणके हैं

स्वदत्तां परदत्तां वा ये हरन्ति वसुन्धराम्।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः॥ १॥

अर्थ—अपनी दीहुई अथवा पैलेकी (दूसरे की) दीहुई पृथ्वी को जो हरण करता (पीछी लेता) है वह साठ हजार वर्ष पर्यन्त विष्टा में कीड़ा होकर रहता है॥१॥ इस श्लोक का उत्तरार्ध कहीं कहीं नीचे लिखे अनुसार भी लिखाजाता है—

ते नरा नरके यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ।

अर्थ—वे मनुष्य चन्द्र सूर्य दोनों रहैं जब तक नरक में जाते हैं।

स्वदत्तां परदत्तां वा पालयन्ति वसुंधराम्॥
ते नरा स्वर्गे यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥ २॥

अर्थ॥ जो मनुष्य अपनी दीहुई अथवा पैले की (दूसरे की) दीहुई पृथ्वी को पालन करते हैं वे जब तक चन्द्र सूर्य दोनों हैं तब तक स्वर्ग में रहते हैं।२।

इसप्रकार दियेहुए ग्राम, उदक (शांसण) कहलाते हैं॥

प्रथम यह शब्द यथार्थ में "उदकदत्त" अथवा "उदकदान" ऐसा था अर्थात् यजमान अपने हाथ में कुश के साथ जल लेकर याचक को यह वचन कहकर दान देता है कि "तुभ्यमहं संप्रददे इदं न मम"॥ अर्थ—तुम्हारे अर्थ मैं इसको देता हूं यह अब मेरा नहीं है।

इसका लाघव होकर दत्त व दान शब्द को छोडकर केवल "उदक" शब्द प्रसिद्ध रहगया है, जिसका अर्थ यह है कि उदक (जल) के साथ दिया हुआ। परन्तु इस उदक शब्द के साथ "आघाट" यह शब्द भी लिखाजाता है, जिसका अभिप्राय एक तो यह है कि सीमा के सहित उदक दान दिया गया है, क्योंकि शब्दार्थचिन्तामणि आदि कोशों में लिखा है "आघाटः सीमायाम्॥" अर्थात् आघाट शब्द सीमा के अर्थ में है॥ प्राचीन ताम्रपत्रों में यहां तक लिखाहुआ मिलता है कि अमुक भूमि अथवा अमुक गृह

१ यह "आघाट" शब्द डिंगलभाषा के "आगाहट" इस शब्द का अपभ्रंश हो तो इसका तीसरा अर्थ यह है कि यह उदक आगोतर (परलोक) के लिये है अर्थात् इस लोक में इससे अब हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है किन्तु परलोक में पुण्य प्राप्ति के लिये दान कियागया है।

तुमको वायु आकाश के साथ दियागया है, इसीप्रकार विशेष पुष्ट करने के लिये आघाट (सीमा) शब्द भी लगायागया है जिसका तात्पर्य यह है कि उदक लोपनेवाले को जितना दोष लगता है उतना ही दोष सीमा काटने(कम करने वाले) को लगता है और दूसरा अर्थ यह भी है कि उदक देने से पहले उस ग्राम में किसीको डहोली, जागीर आदि में जमीन मिलीहुई है उस पर भी तुम्हारा अधिकार है अर्थात् उन मनुष्यों से सेवा आदि लेने का अधिकार तुमही को है, इसी अभिप्राय से आघाट अर्थात् पूर्ण सीमा के साथ दिया जाना लिखाजाता है और तृतीय शब्द 'शांसण' है जो 'शासन' से अपभ्रंश हुआ है जिसका अर्थ है आज्ञा, जिसका तात्पर्य यह है कि इसकी सदैव के लिये आज्ञा है और इस पर सबप्रकार की आज्ञा चलाने का तुमको अधिकार है जिसमें दान करनेवाले की ओर से किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं होवेगा, उक्त प्रकार से क्षत्रियों की ओर से चारणों को भूमि और ग्राम उदक (माफी) देने की रीति परम्परा से चलीआती है जो संक्षेपतः लिखीगई है इस के लिये भाषा में मनोहर जाति के छन्द का १ पद किसी क्षत्रिय राजा का कहाहुआ प्रसिद्ध है—

उदक उथापै ताहि उदक लगै नहीं ॥

जिसका अर्थ यह है कि उदक (माफी) उथापनेवाला अगति (नरक)जाता है इससे उसके वंशजों के हाथ का दिया हुआ उदक (पानी) उसको नहीं लगता अर्थात् श्राद्धादिकों में जलांजलि दीजाती है वह उसको नहीं मिलती चारणों को उदक मिलने का यह क्रम लिखागया है इसीके अनुसार राजपूताना, मालवा और काठियावाड़ आदि देशों में क्षत्रियों की दीहुई अनुमान बीस लक्ष रुपये वार्षिक आमदनी की भूमि चारणों के अधिकार में है जिसकी गणना ऊपर कर दी गई है। अब यहां पर एक बात लिखनी और बाकी रहती है; जिसके देखने से पाठकों को इस ज्ञाति के बडप्पन में कोई सन्देह नहीं रह सक्ता वह यह है कि मनुस्मृति और अमरकोश के मत से 'नटों' को भी चारण कहते हैं, जिसका उत्तर यह है कि यह मनुस्मृति ग्रन्थ तो मनुमहाराज का बनायाहुआ ही नहीं है; क्योंकि उस समय श्लोक रचना का प्रचार ही नहीं था, षट्दर्शन शास्त्रों के अनुसार सम्पूर्ण ग्रन्थ सूत्रों में रचेजाते थे, श्लोक रचना तो वाल्मीकि से प्रचलित हुई है और इसीकारण से वाल्मीकि का नाम आदि कवि है, इसका प्रमाण वाल्मीकि रामायण के प्रथम काण्ड के दूसरे सर्ग में क्रौंच पक्षी के वध के वर्णन में स्पष्ट लिखाहुआ है कि ब्रह्मा ने वाल्मीकि को वरदान दिया कि अब से लौकिक में यह श्लोक के नाम से प्रसिद्ध होवेगा, इससे सिद्ध है कि वाल्मीकि से पहले श्लोक रचना ही

नहीं थी सो उस समय की मनुस्मृति भी सूत्रों में ही रचीगई थी, जैसे गौतमस्मृति और वशिष्ठस्मृति है जिसके नष्ट होजाने पर अथवा स्वार्थवश उसको नष्ट करके उसका कुछ आशय लेकर पिछले पण्डितों ने अपने मतानुसार श्लोक बनाकर यह वर्तमान मनुस्मृति नामक ग्रन्थ बनादिया है, जिसका प्रमाण स्वयं मनुस्मृति भी है, क्योंकि इस मनुस्मृति के आदि के श्लोकों से स्पष्ट सिद्ध है कि इस ग्रन्थ की रचना करनेवाले कोई अन्यपुरुष ही थे; वे श्लोक ये हैं

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः ।

प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन् ॥ १ ॥

भावार्थ ॥ मनुजी एकाग्रचित्त बैठे हुए थे उस समय महर्षिगण आकर न्यायपूर्वक पूजन करके यह बचन बोले ॥ १ ॥

स तैः पृष्टस्तथा सम्यगमितौजा महात्मभिः ।

प्रत्युवाचार्च्य तान्सर्वान् महर्षीञ्छ्रूयतामिति ॥

भावार्थ॥ उन महात्मा महर्षियों ने तिसप्रकार नम्रता आदि से पूछा और अपरिमित है सामर्थ्य जिनका ऐसे वे मनु उन महर्षियों को पूजकर 'सुनो' यह वचन बोले ॥ ४ ॥

यहां पर ये वचन किसी अन्यपुरुष के होसक्ते हैं मनुजी के कदापि नहीं होसक्ते क्योंकि उनका रचाहुआ यह ग्रन्थ होता तो लिखते कि मैं जिस समय एकाग्रचित्त बैठा था तब ऋषि आये। और आगे 'अमितौजा' पद से अन्य पुरुष का कथन स्पष्ट सिद्ध है, यदि ये वचन भृगु के मान लिये जावें तो भी उस समय में श्लोक रचना का होना तो असम्भव ही है जिसका कोई समाधना नहीं होसक्ता क्योंकि मनुस्मृति की रचना वाल्मीकि रामायण से पहिले की होनी चाहिये, इसमें भी फिर उनसे पिछले पण्डितों ने अनेक क्षेपक प्रकरण लिखदिये हैं, जिनको हमने मनुस्मृति की समालोचना में युक्ति पूर्वक भिन्न भिन्न दिखादिये हैं सो देखने की इच्छा होवे तो वहां देखें उनके पूर्वापर विरोधों के कारण यह पूर्ण ग्रन्थ तो किसी अवस्था में भी प्रमाण नहीं समझा जा सक्ता, इसी मनुस्मृति के आधार पर अमरकोश के कर्ता (जैनी अमरसिंह)ने अमरकोशमें 'चारणास्तु कुशीलवाः' यह पद्य लिखा है जिसका यह अभिप्राय है कि कत्थक(नटविशेष)का नाम भी चारण है, सो जब मनुस्मृति ही प्रमाण योग्य नहीं है तो उसके आधार पर रचाहुआ अमरकोश का यह प्रमाण कब मान्य होसक्ता है, तथापि मान लियाजावे कि उक्त दोनों ग्रन्थोंके कथन सत्य हैं तोभी इन कथनोंसे उपरोक्त प्रमाणोंवाली चारणों की ज्ञाति में कुछ बाधा नहीं

आसक्ती क्योंकि उक्त दोनों ग्रन्थों का कथन कत्थक (नटविशेष) जाति के लिये है जिससे और इन उपरोक्त प्रमाणोंवाली जाति से कोई संबन्ध नहीं क्योंकि अनेकार्थ में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जिसके प्रमाण मेदिनी आदि कोशों में भरेपड़े हैं जिनके सिवाय भी हम अनेक लौकिक उदाहरणों से सिद्ध करस कते हैं कि एक नाम धारण करनेवाली दो दो तीन तीन अथवा इनसे भी अधिक जातियें विद्यमान हैं वे एक नाम होने के कारण एक नहीं हैं क्योंकि जाति का उत्तम-अधम होना केवल नाम से ही नहीं समझा जाता किंतु उत्तम-अधम होने का मुख्य निर्भर आचार व्यवहार के ऊपर है सो बहुत संक्षेप रूप से नीचे लिखते हैं

एक नामवाली अनेक जातियों के उदाहरण

१ "बहोरा" यह एक नाम है, जिसमें पल्लीवाल बहोरा जाति के ब्राह्मण हैं, और पुष्करणा ब्राह्मणों में भी बहोरा जाति है, तथा यवन जाति में तुरक्या बहोरा प्रसिद्ध हैं, और कर्ज लोगों को उधार देनेवाले महाजन आदि का नाम भी बहोरा है परन्तु बहोरा नाम के एक होने से उपरोक्त जातियें एक नहीं हैं. अपने अपने कुलाचार और व्यवहार सहित भिन्न भिन्न हैं।

२ क्षत्रियों में एक वंश का नाम "गौड़" है और ब्राह्मणों के एक वंश का नाम भी गौड़ है परन्तु एक नाम होने के कारण दोनों ज्ञातियें एक नहीं मानी जातीं किन्तु दोनों जुदी जुदी हैं।

३ क्षत्रियों में "दाहिमा" जाति प्रसिद्ध है और ब्राह्मणों की जाति में भी दाहिमा प्रसिद्ध है ये दोनों ज्ञातियें एक नाम होने के कारण एक नहीं हैं. अपनी अपनी जातियों के बरताव के साथ अलग अलग हैं।

४ गुहिलोत (शीसोदिया) क्षत्रियों को 'नागदा' कहते हैं और ब्राह्मण भी नागदा' नाम से प्रसिद्ध हैं जो उदयपुर आदि शहरों में रहते हैं, परंतु ये दोनों ज्ञातियें कुलाचार के साथ भिन्न भिन्न हैं॥

५ शेखावत क्षत्रियों की एक शाखा का नाम 'लाडखानी' है और कायमखानी यवनों में भी लाडखानी प्रसिद्ध हैं, परंतु उक्त दोनों ज्ञातियें अपने अपने आचार व्यवहार के साथ क्षत्रिय और यवनों में भिन्न भिन्न हैं॥

६ मरुभाषा में क्षत्रियों को 'खत्री' कहते हैं और खत्री नाम की एक भिन्न जाति भी है जो दिल्ली आदि की तरफ अधिक है जिसको वंशभास्कर के कर्ता सूर्यमल्ल ने और अन्य ग्रंथकारों ने भी शूद्र माना है ये दोनों ज्ञातियें भी एक नहीं हैं जुदी जुदी हैं॥

७ राठोड़ क्षत्रियों में एक शाखा का नाम 'पातावत' है और रोहड़िया जाति के चारणों में भी 'पातावत' शाखा प्रसिद्ध हैं, परंतु दोनों ज्ञातियां अ

लग अलग हैं ॥

८ राठोड़ चत्रियों में 'धूहड़' नाम की शाखा प्रसिद्ध है और चारणों में भी एक शाखा का नाम 'धूहड़' है परंतु दोनों एक नहीं हैं ॥

९ राठोड़ चत्रियों में 'मंडोवरा' प्रसिद्ध हैं और वैश्यों में भी मंडोवरा नाम की जाति प्रसिद्ध है, परन्तु 'मंडोवरा' नाम एक होने से दोनों जातियां एक नहीं हैं ॥

१० इसीप्रकार राठोड़ों की एक शाखा का नाम चांदावत है और चारणों में भी 'चांदावत' नाम की एक शाखा है ॥

११ 'देवका' नाम के चहुवाण चत्रिय प्रसिद्ध हैं और चारणों में भी एक शाखा का नाम 'देवका' है परंतु उक्त दोनों जातियां भिन्न भिन्न हैं ॥

१२ वैश्यों में 'सोनी' नाम की एक मुख्य शाखा है और स्वर्णकारों (सुनारों) का नाम भी 'सोनी' है परंतु ये दोनों ज्ञातियें अलग अलग हैं ॥

१३ 'जावल्या' नाम का चत्रियों का वंश प्रसिद्ध है और ब्राह्मणों में भी एक जाति का नाम 'जावल्या' है, परंतु जावल्या नाम एक होने से उक्त दोनों जातियां एक नहीं हैं ॥

१४ चत्रियों के एक वंश का नाम भाटी है और बंबई की तरफ इस नाम की भिन्न ज्ञाति है, परन्तु दोनों जातियें अलग अलग हैं, और सुनारों में भी 'भाटी' नाम की एक शाखा अलग है ॥

१५ चंद्रवंशी चत्रियों का नाम 'जादू' है और जादू नाम की एक जुदी जाति झालरापाटन, कोटा और शाहपुरा आदि नगरों में निवास करती है, ये दोनों ज्ञातियां एक नाम होने के कारण एक नहीं हैं, और इनके गौरव में भी अंतर है ॥

१६ भाटों में एक शाखा का नाम 'ब्राह्मणियां' है जो ब्राह्मण नहीं होसकते, ये केवल नाममात्र से ही ब्राह्मण हैं तथापि आचार व्यवहार से भाट ही माने जाते हैं ॥

१७ मेवाड़ के महाराणाओं का प्राचीन पद और जेसलमेर, डूंगरपुर, बांसवाहाला आदि राजाओं का वर्तमान पद 'रावल' है, और रावल नाम की ब्राह्मणों में एक शाखा है, तथा चारणों के याचकों में एक जाति का नाम ही 'रावल' है, और कनफड़े जोगियों को भी रावल कहते हैं, परन्तु रावल नाम के एक होने से ये सब एक नहीं होसकते किंतु अपने अपने कुलाचार के साथ भिन्न भिन्न हैं ॥

१८ राजपूताना में वस्त्र रंगनेवाली छीपा जाति में 'गोला छीपे' प्रसिद्ध हैं, परन्तु वे गोला (गुलाम) जाति से अलग हैं ॥

१९ नाई, खाती और भोई आदि जातियों में 'जांगड़ा' जाति प्रसिद्ध है और ढोलियों का तो नाम ही जांगड़ा है परंतु जांगड़ा नाम के एक होने से ये सब जातियें एक नहीं हैं किंतु अपने अपने कुलाचार के सदृश ये सब अलग अलग हैं ॥

२० विष्णुपुराण और महाभारत के शान्तिपर्व के मतानुसार राजा पृथु के ब्रह्मयज्ञ में अग्निकुंड से उत्पन्न होनेवाले सूत नामक पुरुष के कुल का नाम 'सूत' है और मनुस्मृति तथा अमरकोश के मत से ब्राह्मणी स्त्री में क्षत्रिय पुरुष से उत्पन्न होनेवाले का नाम 'सूत' है, तथा शास्त्रों में सारथि का नाम भी सूत है और सुथार (खाती) का नाम भी सूत है, परंतु सूत पद के एक होने से ये सब ही एक नहीं हैं, किंतु अपने अपने कुल के आचार व्यवहारों के सदृश सब ही भिन्न भिन्न हैं॥

२१ विष्णुपुराण के मत से राजा पृथु के यज्ञ से उत्पन्न होनेवाले 'मागध' के वंश का नाम 'मागध' है और मनुस्मृति तथा अमरकोश के मत से क्षत्रिय स्त्री में वैश्य पुरुष से उत्पन्न होनेवाले को 'मागध' कहते हैं ॥

२२ राजपूताना में 'ठाकुर' का पद बहुत बडा माना जाता है जिसका अभिप्राय है स्वामी (पति), परंतु पूरब में सामान्य रीति से नाई को 'ठाकुर' कहते हैं. इसी प्रकार 'सरदार' पद भी बहुत बडा है, परंतु हिंदुस्थान के रहने वाले अंगरेज लोग अपने बहरे को 'सरदार' कहते हैं. और राजपूताना में वेश्या को 'भगतिन' कहते हैं. परंतु पूरब में परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्री को 'भगतिन' कहते हैं। इसीप्रकार किसी देशभाषा में कत्थक (नटविशेष) को भी चारण कहते होवें तो उपरोक्त प्रमाणोंवाले देव जाति के चारणों की कोई हानि नहीं है, परंतु राजपूताना, गुजरात, काठयावाड़, मध्यहिंद (सैंट्रल इंडिया) आदि देशों में जहां मारू चारणों का वर्तमान समय में निवास है वहां नटों को कोई चारण नहीं कहते फिर मालूम नहीं कि मनुस्मृति और अमरकोश में कौनसी देश भाषा का ग्रहण करके नटों को चारण लिखा है यहां पर पाठकों को यह भी देखना चाहिये कि राजा महाराजा आदि क्षत्रिय, चारणों के घर का भोजन करते रहे हैं और इस समय भी करते हैं किन्तु चारणों के घर पर अनेक भूमिपति अतिथि (महमान) होकर रहे हैं जिसके अनेक उदाहरण ऊपर आचुके हैं इतना ही नहीं परन्तु राजा महाराजा आदि क्षत्रियों ने अनेक घोर बिखे (दुःख) चारणों के घर में रहकर निकाले हैं और मारू चारणों के अन्न से वृद्धि पाकर अपने शत्रुओं को विजय किये हैं, इसप्रकार किसी नट के घर का भोजन किसी क्षत्रिय को कराकर और नट के शरण में रखकर परीक्षा करलेवें उस समय अमरकोश के लिखे हुए "चारणास्तु कुशीलवाः" इस पद्य का जातिभेद और मत भेद स्पष्ट सि

ष्ट हो जावेगा, और चारणों के साथ क्षत्रियों का वर्तमान समय तक काका बाबा का संबंध है वैसा क्या नटों के साथ होसकता है? ॥

२३ इसमें यह भी देखा गया है कि परस्पर के द्वेष के कारण भी राजपूताना के भीतरी देशों में एक का अत्युत्तम नाम निंदा के अभिप्राय से अन्य के साथ लगादेते हैं, जैसे ढुंढाहड़ (जयपुर) देशवाले मेवाड़ (उदयपुर) के द्वेष से ढोलियों को 'राणा' कहते हैं जो मेवाड़ के भूपति का पद है. इसीप्रकार मेवाड़वाले माकण (खटमल) जो निषिद्ध जंतु है उसको राजावत कहते हैं जो कछवाहों की मुख्य शाखा का नाम है ॥

बुंदी से द्वेष रखने के कारण जयपुरवालों ने अपने उमरावों को 'रावराजा' का पद दे रक्खा है, जो बुंदी के स्वामि का पद है।

इसी प्रकार जोधपुरवाले अपने पासवानियों को 'रावराजा' कहते हैं।

और जयपुर तथा जोधपुर से द्वेष रखने के कारण बुंदीवालों ने अपने उमराव और पासवानियों को 'महाराजा' का पद दे रक्खा है जो जयपुर और जोधपुर के अधीशों का पद है ॥

सामान्य रीति से 'बारहठ' पद चारणों का है परंतु उपरोक्त कारण से हाडोती में ढोलियों को 'बारैठ' कहते हैं, तथा देशभाषा के भेद से गुजरात में भाटों को 'बारोट' कहते हैं, इस प्रकार और भी जान लेना चाहिये ॥

२४ ऊपर दिये उदाहरणों के अतिरिक्त चाकर (गुलाम), गूजर, गाडरी, नाई, दरजी, घांची, कुम्हार, सुनार, लुहार, खारोल मीणे, चमार, बलाई (भांभी), सरगरा, मोची आदि कारु और नीच जातिवालों ने अपनी अपनी जातियों के साथ क्षत्रियों के वंशों के अनेक उत्तमोत्तम नाम लगा रक्खे हैं, जिनको इनके भाट लोग उन्हीं क्षत्रियों के नामों से बिरदाते हैं अर्थात् गहलोत, राठोड़, कछावा, चहुवाण, नरूका, भाटी, तँवर, सोलंखी, पँवार, झाला, पड़िहार, गोड़ आदि नाम धर रक्खे हैं, परंतु जानना चाहिये कि ये नीच जातियें क्षत्रियों के उत्तमोत्तम नाम रख लेने से क्षत्रियों की उत्तम जाति में नहीं मिल सकतीं इसी प्रकार यदि नटों ने भी अपना नाम किसी समय में चारण रख लिया होवे तो उपरोक्त प्रमाणोंवाले मारू चारणों में नहीं मिल सकते ॥

इसमें संदेह नहीं कि इन चारणों में काछेला चारण अवश्य शामिल थे परन्तु उनका आचार व्यवहार बिगड़ जाने के कारण इन मारू चारणों से वे भिन्न होगये और मारू चारणों से काछेला चारणों का बेटी व्यवहार और भोजन व्यवहार आदि किसी प्रकार का कोई संबंध ही नहीं रहा अब वे केवल नाम मात्र के चारण कहलाते हैं और व्यापार से अपना निर्वाह करते हैं, मारू चारणों के सदृश काछेला चारणों की स्त्रियां पड़दा में नहीं रहतीं और

आरु चारणों के सम्पूर्ण आचार व्यवहार क्षत्रियों के समान बनेहुए हैं वैसे काछेलों के नहीं रहे।

त्रिवाड़ी चारण ॥

मारवाड़ के जालोर आदि प्रान्तों में और सीरोही के राज्य में "त्रिवाड़ी नाम के चारण भी रहते हैं जो आढा शाखा के चारणों के पालवानियें हैं, और इनकी माता त्रिवाड़ी जाति की ब्राह्मणी होने के कारण ये त्रिवाड़ी चारण कहलाते हैं जो न तो ब्राह्मणों में हैं और न चारणों में हैं, परन्तु चरणों के अन्य पालवानियों के समान त्याग में कुछ हिस्सा पाते हैं और खेती करके उदरपूरणा करते हैं

चारणों के वंश से पतित हुए चारण ॥

जैसे नीच कार्य करने के कारण ब्राह्मणों में "आचारज" धुरे ब्राह्मण, डाकोत (शुरूड़या), क्षत्रियों के वंश से पतित होकर पड़िहारखीयें आदि, तथा वैश्यों में "पांचड़ा" वैश्य आदि भिन्न भिन्न नीच जातियें बनगई हैं तथापि अभीतक वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों के नामों से ही प्रसिद्ध हैं इसी प्रकार से भ्रष्ट आचार के कारण चारणों के शुद्ध वंश से पतित होकर चारणियां भांभी "चारणियां भाट" आदि नामों से प्रसिद्ध होगये हैं सो उसी पतित दशा में हैं, ये लोग काछेले चारणों से पतित होकर नीच दशा को प्राप्त हुए हैं जैसे एक काछेले चारण ने अपने मरे बछड़े को अपने घरसे घसीट कर बाहर फैंक दिया इस कारण से उसके बांधवों ने उसको जाति बाहर करके कहदिया कि तू "भांभी" चमार होगया तबसे उसके वंशवाले चारणियां भांभी कहलाने लगे और नीच पेशा करके उदर पुरणा करते हैं, इसी प्रकार चारण पुरुष और भाटनी स्त्री से उत्पन्न होनेवाले चारणियां भाट कहलाते हैं जो काछेला चारणों से हुए हैं ॥

जिस प्रकार क्षत्रियों के याचक चारण हैं तिसी प्रकार चारणों के सात याचक हैं जिनका संक्षेप से भिन्न भिन्न वर्णन नीचे किया जाता है ॥

चारणों के याचकों में प्रथम नंबर "कुलगुरु" है जो जाति का ब्राह्मण है और उज्जैन में रहता है जो चारणों का अयाचक (चारणों के बिना अन्य किसी की याचना नहीं करता) है ॥

दूसरे नंबर पर पुरोहित हैं जो चारणों की प्रत्येक शाखाओं में गूजरगौड़ दाहिमा, औदीच, सनाढ्य आदि सभी जाति के ब्राह्मण हैं जो अनेक धर्म कार्यों में और जन्म व विवाह के समय चारणों से दापा आदि दान लेते हैं, और चारणों की दी हुई उदक डहोली भी खाते हैं ॥

तीसरे नंबर पर "मोतीसर" हैं जो जाति के आला, खीची, पड़िहार आदि

क्षत्रिय थे और चारण कुल की "आवड़" नाम की देवी के उपासक थे जो घरबार छोड़कर देवी की सेवा के लिये आवड़माता के पास जा रहे थे, प्रसन्नता के कारण आवड़ माता इनको मोतीसर अर्थात् मोतियों की लड़ी कहा करती थी इसी कारण इनके वंश का नाम मोतीसर हुआ है, ये लोग क्षत्रियों की ज्ञाति को छोडकर आवड़माता की आज्ञा से चारणों के याचक हो गये जिन की जातियें उन्हीं क्षत्रियों के वंशों के नामों से हैं जिसका यह दोहा प्रसिद्ध है

॥ दोहा ॥

वालण खीला बिजमला, रामहिया पड़िहार ॥
मांगलिया अर चांदणा, मकवाणा सरदार ॥१॥

आवड़ माता ने इनको वरदान दिया था कि तुमारे वंशवाले बिना पढे ही कविता कर सकेंगे और हमारा सुकाया हुआ हाकड़ा समुद्र पीछा नहीं भरेगा तब तक तुमारा वंश चलेगा।

४ चारणों के चौथे याचक "राव" (भाट) हैं जो चंडीसा जाति के भाट कहलाते हैं. ये भाट राठोड़ क्षत्रियों के और चारणों के एक ही हैं इस कारण उक्त दोनों ज्ञातियों को मांगते हैं और जोधपुर राज्य से दिया हुआ सांसण भी खाते हैं।

५ पांचवें नंबर के याचक "रावळ" हैं जो जाति के ब्राह्मण थे सो चारणकुल की "नागेई नाम की" शक्ति की आज्ञा से चारणों के याचक हुए हैं और याचक होकर मद्य मांस का सेवन करने लगे तब से ब्राह्मणों से भिन्न होगये हैं।

६ छठे नंबर के याचक "गोइंदपोता" हैं, गोइंद जोधपुर के महाराजा का "नगारची" (नगारा बजानेवाला ढोली) था, परन्तु जोधपुर के मोटाराजा (उदयसिंह) पर आउवा नगर में १६४२ के संवत् में धरणा हुआ उसमें यह गोइंद ढोली अपने हाथ से अपना गला काटकर सब चारणों से पहिले मरा था इस कारण गोइंद के वंश को चारणों ने अपना याचक बनालिया जो गोइंदपोते कहलाते हैं और अन्य ढोलियों की अपेक्षा अधिक मानेजाते हैं।

७ सातवें याचक "वीरमपोता" जो वीरम कहलाते हैं ये भी ढोली ही हैं परन्तु सामान्य ढोलियों से अपने को कुछ अधिक मानते हैं, इनके साथ ही सामान्य ढोली भी याचक हैं जिनको कहीं कहीं "धोला" भी कहते हैं॥

जानना चाहिये कि मारू चारणों की पवित्र देवजाति नहीं होती तो ब्राह्मण आदि उत्तम ज्ञातियें इनकी याचक कैसे होतीं सो भी इनकी ज्ञाति के पवित्र होने का एक वर्तमान प्रमाण है॥

मारू चारणों का इष्ट और उपासना॥

आदि काल से चारणों का इष्ट विष्णुभगवान् का है और सृष्टिसर्जन काल से विष्णुभगवान् की ही उपासना करते आये हैं जिसके अनेक प्रमाण इसी लेख में ऊपर आचुके हैं और इनके वैष्णव होने के कई प्रमाण अन्य ग्रन्थों में भी मिलते हैं, कितनेक लोग इनको शक्ति के उपासक होने के आधार भूत महाभारत के भीष्म पर्व के २३ वें अध्याय के निम्न लिखित सोलहवें श्लोक को मानते हैं।

तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्चंद्रादित्यविवर्धिनी ।
भूतिर्भूतिमतां संख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥ १ ॥

अर्थ—हे देवि तू तुष्टि,पुष्टि, धृति, दीप्ति, चंद्र और सूर्य की वृद्धि करनेवाली,ऐश्वर्यवालों की ऐश्वर्य ऐसी संग्राम में सिद्ध और चारणों को दीखती है ॥

परन्तु हमारे मत से यह सिद्ध और चारणों के दिव्यदृष्टि होने का विषय है किंतु चारणों की उपासना का विषय नहीं है उपासना तो बहुधा प्रमाणों से विष्णुभगवान् की ही सिद्ध होती है, परन्तु वर्तमान समय में चारणों में शक्ति की उपासना अधिक पाईजाती है जिसका कारण यही प्रतीत होता है कि चारणों के वंश की स्त्रियों में शक्ति के अवतार बहुत हुए हैं इस कारण इनको गृहदेवता मानने की अधिक आवश्यकता हुई जिसमें भी मारवाड़ (जोधपुर) के राज्य में सम्वत् १४४४ में 'सुवाप' नामक ग्राम में करनीमाता का अवतार हुए पीछे चारणों में शक्ति की उपासना की अधिकता हुई है सो चारणों में अधिकता होने में तो आश्चर्य ही क्या है परन्तु बीकानेर राज्य के 'देसणोक' नामक ग्राम में जहां करनीमाता का विवाह हुआ था वहां करनीमाता के देहांत होने पर बीकानेर के राव जैतसी ने करनीजी का मंदिर बनवाया तब से बीकानेर और जोधपुर के राज्यों में ही सर्वसाधारण में शक्ति की उपासना बढगई है यहां तक कि मुजरा करने के स्थान में भी सबही लोग परस्पर 'जैमाताजी की' करते हैं और राजा से लेकर प्रजा तक माताजी का इष्ट मानते हैं और बीकानेर में जब नवीन राजा पाट बैठता है तो देसणोक में करनीमाता के मंदिर में जाकर सोने का छत्र चढाता है तो चारणों के तो घर में ही अवतार हुआ है ॥

अब यहां यह लिखना भी अयुक्त नहीं होवेगा कि परमेश्वर और शक्ति के अवतार कभी किसी अधम जाति में नहीं हुये हैं सो चारणों की ज्ञाति में शक्ति के अवतार अधिक होना भी चारण जाति की पवित्रता को सिद्ध करता है

चारणों का पेशा (वृत्ति)

इस विषय में कुछ तो ऊपर भी लिख दिया गया है परंतु फिर यहां स्पष्ट लिखा जाता है कि चारणों का पेशा क्षत्रियों को समयानुसार उपदेश करके

काव्य द्वारा क्षत्रियों की कीर्ति प्रचार करने का है सो तो अनेक ग्रन्थों से स्पष्ट सिद्ध है और इसीके प्रत्युपकार में क्षत्रियों ने इनको लाखों रुपयों की जीविका दे रक्खी है ॥

हमारे विचार से प्राचीन समय के चारणों ने उपदेश करने का सर्वोत्तम समय क्षत्रियों के विवाहों का देखा कि जहां पर एक ही समय में हजारों क्षत्रियों को एकसाथ उपदेश हो सकता था सो इस कार्य के पलटे में क्षत्रिय लोग इनको लाखों रुपयों का दान देकर संतुष्ट करते थे और हजारों क्षत्रियों में अपने समक्ष (सामने) कीर्ति फैलाने के कारण विवाहों में त्याग (दान) देना प्रारंभ किया सो यह रीति अद्यावधि प्रचलित है जिसमें सुयोग्य चारणों को तो क्षत्रिय लोग निमंत्रण देकर बुलाते हैं और सामान्य चारण बिना बुलाये ही क्षत्रियों के विवाहों में जाते हैं परन्तु क्षत्रिय लोग त्याग से सब ही को संतुष्ट करके अपनी कीर्ति को फैलाते हैं; और चारणों की तीसरी वृत्ति पोळपातपने की है अर्थात् सामान्य रीति से तो सब ही क्षत्रियों में चारण पोळपात (द्वार पर नेग लेनेवाले पात्र) हैं परंतु क्षत्रियों की तीन जाति के साथ तीन शाखा के चारणों का विशेष नियम है जिसके लिये निम्न लिखित दोहा प्रसिद्ध है.

दोहा

सोदा नैं सीसोदिया, रोहड़ नैं राठोड़ ॥
दुरसावत नैं देवड़ा, ठावा ठावी ठोड़ ॥१॥

अर्थात् शीसोदिया क्षत्रियों के पोळपात सोदा बारहट और राठोड़ों के पोळपात रोहड़िया बारहठ और चहुवाण जाति की देवड़ा शाखा के क्षत्रियों के पोळपात दुरसावत आढा ही हैं, अन्य नहीं ॥

यह संक्षेप से चारणों के पेशे का हाल लिखागया ॥

उपरोक्त मारू चारण मारवाड़ से निकलकर राजस्थान (राजपूताना), मध्यहिंद (सेंट्रल इंडिया), गुजरात, काठियावाड़ आदि देशों में १ उदयपुर, २ जोधपुर, ३ जयपुर, ४ बीकानेर, ५ बुंदी, ६ कोटा, ७ जैसलमेर, ८ कृष्णगढ, ९ डूंगरपुर, १० सीरोही, ११ बांसवाड़ा, १२ देवलियाप्रतापगढ, १३ अलवर, १४ झालरापाटन, १५ शाहपुरा, १६ अजमेरा (अजमेर का अंगरेजी इलाका), १७ रतलाम, १८ झाबुआ, १९ सीतामऊ, २० सैलाना, २१ राघोगढ, २२ नरसिंहगढ, २३ईडर, २४भुज, २५जामनगर, २६भावनगर, २७ ध्रांगधड़ा आदि राज्यों में फैले हुए हैं जिनके अधिकार में अभी क्षत्रियों की दीहुई अनुमान बीस लाख २०००००० रुपये वार्षिक आय की भूमि है जिसमें सबसे अधिक भूमि जोधपुर के राज्य में है जिसकी सालाना आमद अनुमान चार लाख

४०००० रुपये की होती है जो सम्पूर्ण जीविका उदक (माफी) ताम्रपत्रों द्वारा लिखी हुई है ॥

चारणों के पर्य्याय नाम और उनका अर्थ ॥

डिंगल भाषा की कविता के जो प्रमाण ऊपर दिये गये हैं उनमें चारणों के अनेक पर्य्याय नाम आये हैं जिन का अर्थ जानने की पाठकों को उत्कंठा होवेगी और ये नाम नट आदि नीच जाति के हो ही नहीं सकते सो भी मानु चारणों की देव जाति होने का स्पष्ट प्रमाण है इस कारण इस चारण जाति के जितने पर्य्याय नाम अद्यावधि हमको मिले वे नीचे लिखकर उनका धात्वर्थ और व्युत्पत्ति सहित भाषा में अर्थ लिख दिया जाता है कि जिनके समझने में सर्वसाधारण को सुभीता मिलेगा ॥

ये शब्द प्रथम संस्कृत में थे परन्तु फिर प्राकृत में पड़ कर देशभाषा में रूपान्तर होगये हैं जो उसी रूपांतर के साथ डिंगळ भाषा के काव्यों में इस समय तक आते हैं सो काव्यों से छांट कर सब लिखेगये हैं यदि दृष्टिदोष के कारण कोई शब्द बाकी रह भी गया होवे तो इसी क्रम से व्याकरण के मतानुसार उसका भी अर्थ समझ लेवें ॥

प्रथम अपभ्रंश नाम, फिर ब्रैकेट में शुद्ध नाम, उसके आगे संस्कृत में व्युत्पत्ति और जिसके आगे भाषा में अर्थ लिखा है ॥

१ ईहग (ईहगः); 'ईह वाञ्छायाम्' 'गम्लृ गतौ' इत्यनेन इच्छया गच्छतीति ईहगः, स्वेच्छाचारीत्यर्थः ॥ निरङ्कुशाः कवय इति प्रसिद्धिः ॥ भावार्थ–ईह धातु चेष्टा अर्थ में है 'ईहग' का अर्थ है चेष्टा से अभिप्राय पर जानेवाले अर्थात् चेष्टा से अभिप्राय को समझनेवाले विद्वान् ॥

२ कव, कवि, कविजण (कविः और कविजनः); काव्यस्य कर्तरि, अतीतानागतसर्वज्ञे, सूक्ष्मार्थविवेकिनि, मेधाविनि, पंडितेत्यर्थः॥ भावार्थ-कवि धातु काव्य बनाने में है, और भूत भविष्यत् जाननेवाले का नाम कवि है, अथवा सूक्ष्म अर्थ के जाननेवाले बुद्धिमान् पंडित को कवि कहते हैं ॥

३ गढवी (गढपतिः वा गाढवान्); गढपतिः (राजा) अन्यच्च गाढं दृढे । प्रणवचन-विचारादिव्यवहारे दृढेत्यर्थः ॥ भावार्थ–वदान्य नामक चारण को काठियावाड़ का राज्य मिले पीछे चारणों का नाम गढपति प्रसिद्ध हुआ है जिसका प्राकृत भाषा में गढवी हुआ है ॥ दूसरा अर्थ–गाढ शब्द दृढ अर्थ में है, जिसका भावार्थ है अपने प्रण, वचन, विचारादि व्यवहार में दृढ चारणों के ग्रामों का नाम गढवाड़ा है जिसका भी यही अर्थ है कि अन्यों की अपेक्षा चारणों के ग्रामसमूह अधिक दृढ हैं और इनको पूज्य मान कर इनके ग्रामों को लुटेरे लूटते नहीं थे इस कारण इनके ग्रामों के बाड़े ही गढ हैं ॥

४ गुणियण, गुणिजण(गुणिजनः); गुणमस्यास्तीति गुणी, गुणी चासौ जनश्च गुणिजनः ॥ भावार्थ– गुणवान् (विद्वान्) मनुष्य को गुणीजन कहते हैं ॥

५ चारण (चारणः); चारयति कीर्त्तिमिति चारणः ॥ भावार्थ–देवता और क्षत्रियों की कीर्ति फैलाने के कारण चारण नाम है ॥

६ ताकव (तर्क्कः); तर्ककारके, तर्कमीमांसादिशास्त्रकुशलेत्यर्थः ॥ भावार्थ– तर्क करने वाले और तर्क मीमांसा आदि शास्त्रों में कुशल ॥

७ दूथी (द्विथः,द्विस्थः, वा द्विकथी); याचक, 'थः रक्षणे' अथवा 'तिष्ठत्यस्मि न्निति स्थः' इत्युभयत्रशब्दार्थचिंतामणिः । कथवाक्यप्रबंधे ॥ भावार्थ–क्षत्रियों के याचक । प्राकृत में 'द्वि' का 'दुव' होता है जिसका अपभ्रंश भाषा में 'दू' हुआ । जो 'दो' की गणना का वाचक है और 'थः' का थी हुआ जो रक्षा अर्थ में है ये दोनों मिलाकर 'दूथी' हुआ है जिसका अर्थ है, खाग (युद्ध) और त्याग (दान) इन दोनों स्थानों में क्षत्रियों के यश और कीर्ति रूपी शरीर की रक्षा करनेवाले, 'दानाच्च प्रभवा कीर्तिः शौंडीरप्रभवो यशः' अर्थ–दान से उत्पन्न होवे उसका नाम कीर्ति और पराक्रम से उत्पन्न होवे उसको यश कहते हैं ॥ दूसरा अर्थ– 'स्थ' का 'थी' हुआ है । इसका अर्थ है, खाग और त्याग दोनों समय में स्थित रहनेवाले, अथवा 'द्विकथी' के ककार का लोप होके 'दूथी' बना है क्योंकि प्राकृत में ककारादिअक्षरों का लोप होजाता है, बाकी ऊपर लिखे शब्द के अनुसार 'दूथी' शब्द सिद्ध हुआ जिसका अर्थ है कि यश और अपयश दोनों प्रकार की कथा करनेवाले अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का यश पूर्वक और दुष्ट पुरुषों का निंदा पूर्वक काव्य करनेवाले ॥

८ नीपण (निपुणः); प्रवीणे, विज्ञे, क्रियासु दक्षेत्यर्थः ॥ भावार्थ–शिक्षा पायेहुए, ज्ञानवान्, कार्य करने में चतुर ॥

९ पात [पात्रम्]; दानपात्रे, विद्यातपोयुक्ते, पतनात् त्रायते यस्मात् तत्पा-त्रम् ॥ भावार्थ–दानपात्र, विद्या और तप से युक्त, गिरने से रक्षा करनेवाले अर्थात् क्षत्रियों को हीनदशा से बचानेवाले ॥

१० पोळपात(प्रतोलीपात्रः); प्रतोल्यां पात्रः प्रतोलीपात्रः॥गोपुरं हि प्रतोल्यां तु नगरद्वारयोरपि इति मेदिनीपः ॥ भावार्थ-मेदिनी कोश में द्वार का नाम 'प्रतोली' लिखा है सो प्रतोली (पोळ) पर नेग लेने में पात्र ॥

११ बारठ (द्वारहठः); द्वारे हठं करोतीति द्वारहठः ॥ भावार्थ-द्वार पर हठ करके तोरण का हाथी आदि अपना नेग लेनेवाले ॥

१२ भाणव (भाणवः); भणतीति भाणवः ॥ भावार्थ–भण धातु शब्द करने में है सो उत्तम वक्ता (स्पीकर, लेक्चरर) अर्थात् व्याख्यान देनेवाले का नाम है ॥

१३ मागण(मार्गणम्); अन्वेक्षणे, संवीक्षणे, याचके, कविकृतिपीयूषरहितान्

लुप्तप्रायान् क्षत्रियकुलपूर्वजान् संवीक्षणकारकाः,अर्थात इतिहासकर्तारः, क्षत्रियगुणदोषवीक्षणकर्तारश्च ॥ भावार्थ-हेरना, खोजना, देखना; कवियों की कविता रूपी अमृत से रहित, अस्त को प्राप्त, ऐसे क्षत्रियों के पूर्वजों के इतिहास कर्ता ; और क्षत्रियों के गुण दोषों को ढूंढनेवाले ॥

१४ रेणव(रणवहः);'रण शब्दे''वह प्रापणे'इत्यनेन रणं वहंति प्राप्नुवंति ते रणवहः ॥ भावार्थ-'रण' धातु 'शब्द' अर्थ में है और'वह' धातु'प्राप्ति' अर्थ में है जिसका अर्थ है उत्तम बोलनेवाले, अथवा रण (युद्ध) को प्राप्त करानेवाले अर्थात् कायर को वीर बनाकर लड़ानेवाले ॥

१५ वीदग (विदग्धः); 'विदज्ञाने' चतुरे, दक्षे,पण्डितेत्यर्थः ॥ भावार्थ-'विद' धातु'ज्ञान' अर्थ में है और चतुर व पंडित का नाम विदग्ध है ॥

१६ हेतव(हितवहः);'वह प्रापणे'हितं वहंति प्राप्नुवंति ते हितवहः॥भावार्थ-'वह' धातु प्राप्ति अर्थ में है जिसका अर्थ है हित को प्राप्त करानेवाले ॥

मारू चारणों के १२० गोत्रों का वर्णन ॥

हम ऊपर लिख आये हैं कि चारणों की एक सौ बीस १२० शाखा होने के तीन कारण हैं प्रथम तो प्रसिद्ध पिता के नाम से शाखा प्रगट हुई है, दूसरे गामके नामसे शाखाका नाम प्रसिद्ध हुवा है और तीसरे कोई बडा कार्य करनेसे उस कार्यके अनुसार शाखा का नाम प्रसिद्ध हुआ है इन्हीं तीन कारणों से १२० शाखाओं का भिन्न भिन्न होना पायाजाता है जैसा कि इन्हीं तीन कारणों से क्षत्रियों के ३६ छत्तीस वंश भिन्न भिन्न हुए हैं और इन्हीं कारणों से ब्राह्मण और वैश्यों में भी जुदी जुदी शाखा होना सिद्ध होता है सो चारणों की जो शाखा जिस कारण से प्रसिद्ध हुई है उसका कारण नीचे शाखा के साथ लिखदिया जाता है परंतु जिस शाखा के नाम का कारण संतोषदायक नहीं मिला वहां केवल शाखा का नाम लिख कर कारण की जगह खाली छोड दी है; क्योंकि बिना पुष्ट प्रमाण मिले कल्पना करके लिखं देना विद्वानों का मत नहीं है ॥

बहुत कुछ छान बीन करने पर भी अद्यावधि हमको चारणों की एक सौ बीस १२० मूल शाखा के नाम नहीं मिले और न यह सिद्ध हुआ कि ये शाखा कब कब फटीं, और न यह पता लगा कि इन शाखाओं के फटने से पहिले गोत्र भेद क्या क्या थे, परंतु कुळगुरु की पुस्तक के देखने से और विद्वान चारणों के प्राचीन लेखों से अथवा विद्वान चारणों के कथन से जो कुछ वृत्तांत हमको विदित हुआ उनके अनुसार शाखाओं का वर्णन नीचे किया जाता है जिनमें प्रथम उन शाखाओं का वर्णन है कि जिन शाखाओं के चारण अभी विद्यमान हैं इसके पश्चात् जितनी शाखाओं का कुळगुरु की पुस्तक में

नष्ट होजाना लिखा है उनके नाम मात्र लिखदिये जावेंगे और विद्यमान शाखा ओं में एक शाखा से फँटकर अनेक प्रतिशाखाएं हुई हैं उनके नाम मूल शाखा के नीचे लिख दिये जावेंगे जिससे मालूम हो सकता है कि इतनी शाखाएं इस शाखा से निकली हैं ॥

इस विषय में हमको जोधपुर के चारण जादूदान वणसूर के लेख से भी अच्छी सहायता मिली है जिसका हम उपकार मानते हैं ॥

१ अपसूरा—यह मूल शाखा अवसूर नामक पिता के नाम से प्रसिद्ध हुई है जिसमें से निकली हुई प्रतिशाखाएं नीचे लिखी जाति हैं

२ आसिया—आसा नामक पिता के नाम से.
३ वणसूर—वणवीर नामक पिता के नाम से.
४ मोहड़—पिता के नाम से.
५ लाळस—लाला नामक पिता के नाम से.
६ सानोर—पिता के नाम से.
७ सुधा—
उपरोक्त सातों शाखा परस्पर बांधव हैं.

२ आज्यसुर—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रसिद्ध हुई है.
३ आमोतिया—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रसिद्ध हुई है.
४ कवियल—
५ कायल—
६ कुंवारिया—यह मूल शाखा ग्राम के नाम से प्रगट हुई है.
७ केसरिया— केसर नामक पिता नाम से यह शाखा प्रगट हुई है.

२ महियारिया—मिहारी नामक ग्राम के कारण जुदी शाखा प्रसिद्ध हुई जो दोनों भाई भाई हैं ॥

८ खड़ी—
९ खरळ—यह मूल शाखा ग्राम के नाम से प्रसिद्ध हुई है ॥
१० गांगड़ा—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रसिद्ध हुई है ॥

२ कड़वा—यह गांगड़ों की प्रतिशाखा है परंतु नाम का कारण मालूम नहीं हुआ ॥

११ गांगणियां—गांगण नामक पिता के नाम से प्रगट हुई ॥
१२ गाडण—गडाहुआ बचा शक्ति के वरदान से जीवित होने के कारण गाडण नाम प्रसिद्ध हुआ कहते हैं, परंतु कई लोगों के मतसे 'गाडणा' नामक ग्राम के नाम से 'गाडण' कहलाना पायाजाता है.

२ बाटी—पिता के नाम से.
३ बाडुवा—

ये तीनों शाखा परस्पर बांधव हैं.

१३ गुंठल....
१४ गेलवा....
१५ गोकुळी भेलंडा—
१६ चांदा—पिता के नाम से यह मूलशाखा प्रगट हुई है.
१७ चेहड़—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रगट हुई है.
१८ चौराड़ा—पिता के नाम से यह मूलशाखा प्रसिद्ध हुई है.
२ कबिया....
३ धेहड़....
४ खांड़िया....

ये चारों शाखा परस्पर बांधव हैं ॥

१९ छेड़ा....
२० जसकरा—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रसिद्ध हुई है.
२१ जामग....
२२ जाळगा—जाळग नामक पिता के नाम से यह शाखा प्रगट हुई है.
२३ जूवड़....
२४ जेसळ—पिता के नाम से यह मूल शाखा प्रगट हुई है.
२५ जोगबीर—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रगट हुई है.
२६ झड़लचा—
२७ तुंगल—
२८ तूंबेल—
२९ थींगल—
३० दागड़ा—
३१ देवका—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रगट हुई है.
३२ धांधा....
३३ धूधू....
३४ धूहड़—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रगट हुई है.
३५ नहया—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रगट हुई है.
३६ नरा....
२ नांदू....
३ जगहठ....
४ बोगसा....
५ देवल—देवल नामक ऋषि की संतान होने के कारण.
६ दधवाड़िया—दधवाड़ा नामक गाम के नाम से.
७ झीबा—

ये सातों शाखा परस्पर बांधव हैं.

३७ नायल—

३८ नीलसोरठिया—

३९ नेचड़ा—

४० पर्वतगोरा—

४१ पिंगुल—

४२ वरणसी—

४३ वीजळ—

४४ भाछळिया—यह मूल शाखा पिता के नाम से प्रगट हुई है.

२ भादा—

३ संढायच—नरसिंह नामक भाछळिया को अधिक सिंह मारने के कारण नाहड़ राव पड़िहारने 'सिंहढाहक' की पदवी दी जबसे उस के वंशके संढायच कहाये (डिंगलभाषा में 'क' को 'च' होता है)

इन तीनों शाखावाले परस्पर भाई हैं.

४५ भूरियाण—

४६ महेसमा—

४७ मादा—मृत्तिका के पुतले को देवी ने सजीवित किया इस कारण 'मादा' कहलाये क्योंकि डिंगल भाषा में मिट्टी को 'माद' कहते हैं.

२ ठाकरिया—

३ फनड़ा—

४ वाजड़—

५ वाला—

ये पांचों शाखा परस्पर बांधव हैं.

४८ मारू—यह मूल शाखा 'मारू' नामक पिता के नाम से प्रसिद्ध हैं यों तो मारवाड़ से निकले हुए संपूर्ण चारणों को मारू कहते हैं परंतु उसीके अंतर्गत यह शाखा पिता के नाम से भिन्न प्रगट हुई हैं.'

२ किनियां—कनीराम नामक पिता से प्रसिद्ध हुए.

३ कोचर—पिता के नाम से

४ देथा—पिता के नाम से

५ सींळगा—सीळग नामक पिता से प्रसिद्ध हुए.

६ सुरताणियां—सुरताण नामक पिता से प्रसिद्ध हुए.

७ सोदा (वा) सोदाबारहठ—बारू नामक देथा शाखा के चारण ने घोड़ों के सोदा (व्यापार) से चीतोड़ के महाराणा हमीरसिंह को चीतोड़ पीछा लेने में सहायता की इसकी यादगार के लिये उन महाराणा ने शाखा का नाम 'सोदाबारहठ' रक्खा ॥

ये सातों शाखा एक ही शाखा से निकलने के कारण परस्पर भाई हैं.

४९ मीसण—चंडकोटि नामक कवि ने संस्कृत आदि छहों भाषाओं को मिश्रित करके शास्त्रार्थ जीता इसकारण 'मिश्रण' कहलाये, जिसका अपभ्रंश 'मीसण' हुआ ॥

२ महेगू—

५० मैडू—मैड़वा नामक ग्राम से निकलने के कारण 'मैडू' कहलाते हैं.

२ टापरिया—

ये दोनों शाखा एक ही शाखा से निकलने से परस्पर भाई हैं ॥

५१ रतनू—रतना नामक पिता के नाम से यह शाखा प्रसिद्ध हुई है ॥

२ नाला—

३ चीचा—

ये तीनों शाखावाले परस्पर भाई हैं.

५२ रेड़ (वा) रेड़िया—पिता के नाम से यह शाखा प्रसिद्ध हुई है ॥

२ छांछड़ा—

३ झूला—

४ थांनड़ा—

५ बरसड़ा—

ये पांचों शाखा एक शाखा से निकलने के कारण परस्पर भाई हैं.

५३ रोदा (वा) रादा—

५४ रोहड़िया बारहठ—घेरकर चारण करने के कारण.

२ आला—पिता के नाम से

३ ओळेचा—ग्राम के नाम से

४ कळहठ— पिता के नाम से

५ गूंगा—ग्राम के नाम से

६ धीरण—पिता के नाम से

७ बीठू—पिता के नाम से

८ भादरेचा—ग्राम के नाम से

९ मिकस(वा)मेगस—पिता के नाम से

१० सांवळ—पिता के नाम से

११ हड़वेचा—पिता के नाम से

१२ हाहखिया—पिता के नाम से

ये बारहों शाखावाले एक शाखा से निकलने से परस्पर भाई हैं.

५५ लूणगा....

५६ वाचा—

२ आढा—आडा नामक ग्राम के नाम से प्रकट हुई.

३ बड़ियाळ—

४ महिया—मेहा नामक पिता के नाम से प्रकट हुई.

५ सांदू—सांदू नामक पिता के नाम से प्रकट हुई

५७ साउवा—साऊ नामक पिता के नाम से यह मूल शाखा प्रकट हुई है.

५८ सजग—

५९ साइया—

६० सावादेवा—

६१ सीकड़....

६२ सुगुणी—सुगुण नामक पिता के नाम से यह शाखा प्रकट हुई.

६३ सुरसोरठिया—

६४ सूंया—पिता के नाम से प्रसिद्ध है

६५ सूरू—सूरा नामक पिता के नाम से यह मूल शाखा प्रकट हुई.

६६ सेहड़िया—

चारणों की नष्ट हुई शाखाओं के नाम

इसने अद्यावधि यह नहीं मालूम हुआ कि इन नष्ट हुई शाखाओं में मूल-शाखा कितनी और प्रतिशाखाएं कितनी थीं किंतु कुलगुरु की पुस्तक में नष्ट शाखाओं के केवल नाम मात्र लिखेहुए मिले सो ही यहां अकारादि क्रम से लिखदिये जाते हैं ॥

१आया	१७चहुवा	३३पंडरसिया
२आसग्या	१८चंचाळा	३४बड़गा
३ईरण	१९चीवा	३५बीराणियां
४कांटा	२०चावा	३६बूबड़
५कागड़िया	२१चाटगिया	३७बोराणियां
६किरणाळिया	२२जाखळ	३८बूढाणियां
७कांधळिया	२३जोवा	३९मूंघा
८कालीछ	२४ठोलवा	४०मंकवाणा
९कुचाल	२५डमाल	४१मादळिया
१०कैंदड़िया	२६डूंगरा	४२राजगुर
११काळपिया	२७दंदड़ा	४३लूथिया
१२कोलू	२८धमळ	४४लांया
१३गिरिया	२९धूना	४५साथळा
१४गोरविया	३०नीचड़ा	४६सामेळा
१५गोखड़ा	३१पड़ियाळा	४७हाथळा
१६चाड़िया	३२पातराड़िया	

इस प्रकार ४७शाखा नष्ट हुई लिखीं जो ऊपर की६६ विद्यमान शाखाओं में जोड़ने से कुल ११३ एक सौ तेरह शाखा होती हैं जिनमें यह भी मालूम नहीं कि नष्ट शाखाओं में प्रतिशाखाएं कितनी हैं परंतु इतना अवश्य कहस- कते हैं कि इन नष्ट शाखाओं में प्रतिशाखाएं भी अवश्य होंगी इस अवस्था में किसी प्रकारसे भी चारणों की १२० शाखा पूर्ण नहीं होसकतीं और शा खाओं के नाम भी कलियुग के ही प्रतीत होते हैं इस कारण इस बात का हमको कोई प्रमाण नहीं मिला कि सत्ययुगआदि युगों में इनमें परस्पर के गोत्र भेद क्या थे अनुमान से तो यही पाया जाता है कि ऋषियों के नाम से होवें गे जैसे देवल ऋषि के वंशवाले अब भी देवल कहाते हैं इसी प्रकार अन्य भी जानलेवैं परंतु विना पुष्ट प्रमाण मिले अन्य गोत्रों के नाम लिख नहीं सकते॥ इति॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥

श्रीबादरायणायनमः ॥

॥ अथ पञ्चमराशिः प्रारभ्यते ॥

ॐनमः पुराणपुरुषोत्तमाय १ गिरीश २ गिरिजा ३ गणपति ४ गिरा ५ गुरु ६ भ्यो ॥ वसुधेश्वर१ वंशवारिजवार्धि १ क्षात्रधर्मखनि २ श्रुतशूरश्मश्रुलोमाञ्चक ३ करुणास्पदीकृतकातरकलाप ४ यथातथराजन्याचारचीयमान ५ मृधाश्वमेधदीक्षादक्षीकरणकुशल६ कलिकालोदन्तोद्दीपक ७ शौर्यशुश्रूषुमिलिन्दमालतीमरन्द ८ कविकलरवसहकार ९ रसनवक ९ निधिनरवाहन १० कोविदकाश्यपीकमनकीर्तिनौकैवर्त्तक११ प्रबन्धेशभास्कराभिधे श्रूयतां सुधारससहोदरास्वादसूरिभिः सामाजिकैः सह रणरमणीरसिकरावराजेन्द्रामहरे २०१ पंचमो ५ राशिः ॥ १ ॥

पुराण पुरुषोत्तम (विष्णु भगवान्), महादेव, पार्वती, गणेश, सरस्वती और गुरु को नमस्कार है ॥

चहुवाणवंश रूपी कमल को बढानेवाला (सूर्य), क्षत्रियधर्म की खानि, सुनने से वीरों की मूंछों को रोमांच (खड़ी) करनेवाला, कायरों के समूह पर करुणा करनेवाला, राजाओं के यथार्थ आचार को जतानेवाला, युद्ध रूपी अश्वमेध की दीक्षा देने में कुशल, कलिकाल के वृत्तांत को प्रकाशित करनेवाला, वीरता के सुनने की इच्छावाले भ्रमरों के लिये मालती का पुष्परस, कवि रूपी कोयलों का आम्र, नव रस रूपी नव निधियों का कुबेर, पंडितों की भूमि और मनोहर कीर्ति रूपी नौका का कर्णधार (खेवटिया) ऐसे प्रबंधों के स्वामी वंशभास्कर नामक ग्रंथ में अमृतरस के सहोदर (सदृश) काव्य का स्वाद लेने में पंडित सभासदों के साथ, हे रण (युद्ध) रूपी कामिनी के रसिक रावराजेन्द्र रामसिंह! यह पंचम राशि सुनिये ॥

चूलिकापैशाचीभाषा ॥ पथ्यागाथा ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥ ब्रजदेशीयप्राकृतं १ पैशाचिकबहुलं २ मरुदेशीयप्राकृत १ मपभ्रंशबहुल २ मितिसर्वत्र बोध्यम् ॥

॥ षट्पात् ॥

देवसिंह १८०।१ नृप हुसह हालि हड्डन अन्वय हुव ॥
वंबावद गढ विलासि धरनि चहुँ ४ ओर जिति धुव ॥
अद्ध अवनि निज अप्पि समर १८१।७ कुअरहिं बुंदिय सह ॥
कुमर पट्टधर कज्ज अद्ध रक्खिय नय आग्रह ॥
बहुबेर भंजि शत्रुन बहुन बहु अपुब्ब जस वित्थरिय ॥
बय चरम पाइ व्है भव विरत क्रम निवास सुरपुर करिय ॥ ४ ॥

(दोहा)

पुत्रहिं दै आसिख प्रथित, हड्डन पति पन होन ॥
समरसिंह १८१।७ जननी सती, गौडि १८०।३ कियउ सह गोन ॥५॥
देवसिंह १८०।१ गृह हुव उदित, बारह १२ सुत बरवीर ॥
जे बारह १२ आदित्यजिम, धाम प्रकासक धीर ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

हुव अग्रज हरराज १८१।१ अनुज तस हत्थ १८१।२ प्रबल अति ।
अपर २ नाम याकोहि कहत हप्प १८१।२ हु मागध कति ॥

ब्रजदेशीय प्राकृतभाषा में पैशाचीभाषा अधिक है, और मरुदेशीय प्राकृत भाषा में अपभ्रंश भाषा अधिक है, सो सर्वत्र जानना चाहिये ॥

१सूर्य हाडाओं के २ वंश का. अपनी आधी ३ भूमि बुंदी सहित कुँवर समरसिंह को देकर ४ नीति के आग्रह से आधी भूमि पाटवी कुंवर को दी ५ अंतिम अवस्था पाकर ६ संसार से ७ विरक्त होकर क्रम पूर्वक स्वर्ग में निवास किया ॥ ४ ॥ हाडों के पति होने की पुत्र को ८ प्रसिद्ध आशिष देकर समरसिंह की माता गौडी सती हुई ॥ ५-६ ॥ इसका ९ दूसरा नाम कितने ही मागध लोग हापा कहते हैं ॥७॥

सूर तदनु भटसूर१८१।३तास अभिधा भोज१८१।३हु तिम।
बहुरिबग्घ१८१।४बलिबाल१८१।५यहहिकृष्ण१८१।५हुद्धि२नामइम
तसअनुजनाम चाहड़१८१।६अतुल समरसिंह१८१।७पुनिसुजसप्रिय
मोत्कल१८१।८बहोरियाको अपर२कर्मचंद्र१८१।८नामहुकहिय॥७॥

(दोहा)

जैत्रमल्ल १८१।९ पुनि जाहिकी, अभिधा सौंड१८१।९हु आस ॥
अनुज तास गोबिंद१८१।१०अरु, कुंभपाल१८१।११ तिम तास॥८॥
सालिबाहन१८१।१२हु लघु सबन, क्रमसह देव १८०।१कुमार ॥
जे जिनजिन रानिन जनैं, प्रभु सुहु सुनहु प्रकार ॥ ९ ॥
पहिले पंच५ रु जैत्र९।६ पुनि, सुत रट्ठोरि१८०।१ प्रसूत ॥
जद्दौंनि१८०।२ हु चउ४ सुत जनैं, पहिलो चाहड़६ पूत ॥१०॥
पुनि मोत्कल८।२ गोबिंद१०।३ पट्ठ, अनुज कुंभ११।४अभिधान॥
समरसिंह७।१अंतिम१२।२सहित,दुव२सुव गौडि१८०।३ निदान।११।

॥ षट्पात ॥

हुव अधीस हरराज १८१।१ बिसँद जसधर बंबावद।
सम बुंदिय नृप समर१८१।७ हुव सु लहि अद्ध राज्य हद ॥
हरराजा१८१।१ ऽनुज हत्थ१८१।२ सूर उपयम हुव २ साद्धिय।
क्रमसह प्रथम१ किसोर कुमरि १८१।१ प्रतिहारि पाइ प्रिय॥
रट्ठोरिमानकुमरि१८१।२हुबहुरितहँसुर्जन१८२।१पहिली१८१।१तनय
रट्ठोरि१८१।२प्रसवगजासिंह१८२।२अरु भीम१८२।३उभय२सुत बीतभय

(दोहा)

हत्थ १८१। २ तनय इम तीन ३ हुव, बढि जिन्ह संतति बीर॥
हड्डन तीजो ३ भेद हुव, हत्थाउत्त ।३ गहीर ॥ १३ ॥
नव ९ अग्रज पत्ते निधनँ, भट सूरा१८१।३दिक भ्रात ॥

---

१ नाम सौंड २ हुआ ॥ ८–९ ॥ ३ जना ॥ १०–११ ॥ ४ उज्वल यश को धारण करनेवाला बंबावदा में हुआ ५ निर्भय ॥ १२–१३ ॥ ६ बिना संतान ७ नाश को प्राप्त हुए ॥

क्रम वढि तीन३नकेहि कुल, उदित किति अवदात१ ॥ १४ ॥
बंबावदगढ पति विदित, हरराज १८१।१हु नरनाह ॥
क्रमसह वसु२ वुठत करे, वनि दुल्लह छह विवाह ॥ १५ ॥

॥ सौराष्ट्रीदोहा ॥

अक्खयराज सुता सु, कृष्णाकुमरि १८१।१ सीसोदनिय ॥
कुम्भ द्वारकादासु, सुता अमृतकुमरि १८१।२हु सतिय ॥१६॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पुनिब्रजकुमरि१८१।३नाम प्रामारिय,रामसाहि तनया३निजनारिय ॥
जिम अनंद जद्दव तनुजाइय,पटु४ पट्टिमदेवी१८१।४पुनि पाइय ॥१७॥
चतुर नाम भाउल्लदेवि १८१।५ चहि, लौंनकरन रठोर सुता लहि ॥
धर्मसाहि तोमर धरनीधन५, पुर गुग्गेर अधीस महामन ॥ १८ ॥
रुचिरसुतातसछठीछ्रानिय,अनुपमकुमरि१८१।६ब्याहिनृपआनिय ॥
धरनीधव६हरराज१८१।१पुत्रधुव,हुँतरनअरिनकरनद्वादस१२हुव।१९।

॥ षट्पात् ॥

हल्लुव१८२।१लल्लुव१८२।२लोहराज१८२।३हम्मीर१८२।४जिताहर्व७,
रनपटुअक्षयराज १८२।५ धीर बलराज १८२।६कित्तिधव९ ॥
स्याम१८२।७बहुरि सुरतान१८२।८जोध हरदोल१८२।९नाम जिम,
लवनकरन१८२।१०रोपाल१८२।११अनुजद्योपाल१८२।१२प्रथितइम१० ।
पहिली१ तनूज११ हल्लुव१प्रबल तिम लल्लुव२ हम्मीर४।३त्रय३,
बल६।१रु१२हरदोल९।२रोपाल११।३बलितीन३हिहुवदूजी२तनय।२०।

॥ दोहा ॥

लोहराज ३।१ द्योपाल १२।२ लघु, जुगर प्रामारिय ३ जात१४ ॥
स्याम७।१की रु सुरतान८।२की, महित१५ जद्दविय ४ मात ॥२१॥

---

१ उज्ज्वल कीर्ति प्रकाशित की ॥ १४ ॥ २ धन की वृष्टि करके ॥१५-१६ ॥ ३ पुत्री ४ चतुर ॥ १७ ॥ ५ राजा ॥ १८ ॥ ६ भूपति (राजा). युद्ध में शत्रुओं को ७ होम करनेवाले ॥ १९ ॥ ८ युद्ध जीतनेवाले ९ कीर्ति के पति १० प्रसिद्ध ११ पहिली रानी के पुत्र १२ अरु १३ फिर ॥ २० ॥ १४ हुए १५ पूजनीय

लवनकरन१०।१ रट्ठोरि ५ लहि, ससुता हुव हितसंग ॥
तिम पायउ सुत तोमरिय,६ अत्तयराज ५।१ अभंग ॥ २२ ॥
हल्लुव१८२।१ कुल अबलग रहिय, इनमैं बिधि अनुसार ॥
लोहराज१८२।३ कुल समयलग, बढि नठ्ठो खयबार ॥ २३ ॥
कोई मागध इम कहत, बरनि प्रमा बिनु बात ॥
लोहराज १८२।३ कुल अबलगहु, गिनहु देस गुजरात ॥२४॥
हड्डन चोथो ४ भेदलहि, हल्लू१८२।१ संतति हड्ड ॥
हल्लूपोते १।४ बिदितहुव, बुंदिय रहि सब बड्ड ॥ २५ ॥
सप्तम ७ देव १८०।१ नरेस सुत, समरसिंह १८१।७ इत सूर ॥
राज्य अद्ध निज करि रहिय, पुर बुंदिय बल पूर ॥ २६ ॥
लै चम्मलि पर अद्रिलग, अवनि रही खिल एह ॥
बंबावद सन अधिक बढि, गज्जत हुव निजगेह ॥ २७ ॥
बुधपुरपति चालुक बिदित, नृपति मनोहर नाम ॥
हृदयराम अंगज लहिय, दुहिता गुन उद्दाम ॥ २८ ॥
जन मागध अभिधान जिहिं, कहत सुजानकुमारि१८१।१ ॥
समरसिंह१८१।७किन्नी सु पहु, निज महिषी यह नारि ॥२९॥
पुनि चंद्राउत रामपुर, सूरज भानुनरेस ॥
मंजु कनी तस हरकुमरि १८१।७ अपर२ बिवाह्यो एस ॥३०॥
कछवाही सुंदरकुमरि१८१।३, बलि नरनाह बिबाहि ॥
उपयम किन्नें तीन३ इम, बितरन बिबिध निबाहि ॥ ३१ ॥
समरसिंह१८१।७कै च्यार४सुत, प्रथम१कुमर नरपाल१८२।१॥
अपर२नाम नप्प१८२।१हु यहहि, हुव तदनुज हरपाल१८२।२॥३२॥
अपरनाम हप्प१८२।२हु यह रु, जैत्रसिंह१८२।३ लघु जास ॥

१ पुत्रवाली हुई ॥ २२-२३ ॥ २ यथार्थ अनुभव बिना ॥ २४ ॥ ३ सब से बडे ॥ २५-२६-२७-२८ ॥ ४ पटरानी ॥ २९ ॥ ५ सुंदर ६ कन्या ७ दूसरा विवाह किया ॥ ३० ॥ ८ विवाह ९ दान की विधि निबाह कर ॥ ३१ ॥ १० उसका छोटा भाई ॥ ३२ ॥

तदनुज डुंगरसिंह १८२।४ तिम, इम प्रवीर चउ४ आसै[1] ॥ ३३ ॥
पाहिले१८२।१।१८२।२दुव२पहिली१८२।१प्रसव, जिमचंद्राउति१८२।१जात
तीजो१८२।३अरु चोथो१८२।४तनय, कछवाही१८१।३जें[2] कहांत ॥३४॥
याहि समय रनथंभ अग, दुसह अलाउद्दीन ११ ॥
लग्गो सुनि जितातित मुलक, निपज्यो डम्मर[3] नवीन ॥ ३५ ॥
याहीतैं नृपसीम इत, परतट चम्मलिँ प्रांत ॥
भिल्लन मंडिय लूट भय, सु न परोच्छ हुव सांत ॥ ३६ ॥

॥ षट्पात् ॥

समरसिंह १८१।७ नरनाह तबहि चम्मलि हुतँ उत्तरि ॥
चंड बिरचि चतुरंग[6] सवँर तिसहँस३००० रन संहरि ॥
किय निर्भय केथोनि१ सीसवालिय २ वडोद ३ सह ॥
रहलावनि ४ रामगढ ५ मऊ ६ संगोद ७ दयो मह ॥
रच्छक अजेय तँहँ रक्खिकैं महि अधीस पच्छो सुरत ॥
पुनि सवर रुक्कि चम्मलि पुलिन[9] आनि जुरे खिल अंकुरत[10] ॥३७॥
दोहा-पिक्खि अलप परिकर[11] नृपहिँ, इम खिल भिल्लन आइ ॥
कोटा जँहँ तँहँ जंग किय, नदि चम्भलि निर्यराइ[12] ॥३८॥
बुंदीसन पृतना[13] वहुरि, पहुँचि महीपति पास ॥
किय निर्भय हय बीचकरि, नवसत९०० भिल्लन नास ॥३९॥

---

१ चारों वीर हुए ॥ ३३ ॥ कछवाही से २ उत्पन्न हुआ कहते हैं ॥ ३४ ॥ इसी समय रणथंभोर के पर्वत पर अलाउद्दीन का लड़ाई करना सुन कर सब ओर नवीन ३ उपद्रव उत्पन्न हुआ ॥ ३५ ॥ इसी कारण बुंदी की सीमा में ४ चामल नदी के परले किनारे के प्रांत में भीलों ने लूट खसोट शुरू की सो अ-प्रत्यक्ष रीति पर शांत नहीं हुई ॥ ३६ ॥ चम्मल नदी को ५ शीघ्र पार उतर, भयंकर ६ सेना रच, युद्ध में तीन हजार ७ भीलों को मार कर ८ उत्सव (सु-ख) दिया. चम्मल नदी के ९ किनारों को रोक कर फिर बाकी के भील १० खड़े हुए ॥ ३७ ॥ राजा को थोड़ी ११ परगह सहित देखकर इस प्रकार बाकी के भीलों ने आकर, अब जहां कोटा है तहां चामल नदी के १२ समीप युद्ध किया ॥ ३८ ॥ १३सेना ॥ ३९ ॥

कोटा जहँ पल्ली रव करि, कौटिक नाम किरात ॥
रहतो सो भजिगो दरित, गहन दुरावन गात ॥४०॥
संभरके भट तीनसत३००, खंड खंड हुव खेत ॥
पुरबुंदिय इम समर१८१।७पहु, आयो विजय उपेत ॥४१॥
बुंदिय सप्तम७बरस वय, प्रथित पितासन पाइ ॥
समर१८१।७ समर मारे समर, अतिधृति१९समवय आय॥४२॥
किन्न कुमर हरपाल १८२।२ हित, पुरजजाउर१ पेस ॥
जैत्रसिंह१८२।३ हित जयथलरहिं, लग्गो दैन इलेस ॥४३॥
जैत्र१८२।१ कहिय तुमसों जनक, जहँ भिल्लन किय जंग ॥
तहँ मैं चम्मलि पारतट, दब्बों खल रचि द्रंग ॥४४॥
सुपहु किन्न स्वीकार सुहि, जैत्र १८२।३ तबहि तहँ जाइ ॥
मारि भिल्ल कौटिक प्रमुख, बंलि कोटा२ बसवाइ ॥४५॥
वय निज लहि सोलह१६ बरस, पाइ सु भोग्य प्रदेस ॥
भिल्लन खिलन भजाइ भट, अडर रह्यो तहँ एस ॥४६॥
॥ युग्मम् ॥
सुत लघु डुंगरसिंह १८२।४ हित, अधिप खजूरिय३ अप्पि ॥
सत्रुनसिर प्रतप्यो समर १८१।७,महि इम सुतन समप्पि ॥ ४७ ॥
॥ सचरणागद्यम् ॥
बुंदीके अधीस हड्डाधिराज समरसिंह १८१।७ को दूजो पुत्र

जहां अब कोटा है तहां अपनी १ पाल (कोश में छोटे ग्राम को तथा लौकिक में भीलों की बस्ती को पाल कहते हैं) बसाकर २ कोट्या नामक ३भील रहता था सो डरकर वन में छिपने के लिये भग गया ॥ ४०-४१ ॥ सात वर्ष की अवस्था में ४ प्रसिद्ध पिता से बुंदी पाकर उन्नीस वर्ष की अवस्था में ५ समरसिंह ने ६ युद्ध में ७ भीलों को मारे ॥ ४२ ॥ ८ भूपति देने लगा ॥ ४३ ॥ जैत्रसिंह ने कहा कि ९ हे पिता! जहां पर तुमसे भीलों ने युद्ध किया है तहां चंबल नदी के परले किनारे १० नगर रच कर दुष्टों को दबाऊं ॥ ४४ ॥ कोट्या ११ आदि भीलों को मारकर उस कोट्या भील के नाम पर १२फिर कोटा बसाया ॥४५-४६-४७॥

हरपाल १८२।२ जज्जाउरपुर १ को स्वामीभयो ताके संतानतो स मस्तही हड्डनमें पंचम ५ भेद पाइ हरपालपोते ३।५ कहाये ॥

अरु कोटा२के अधीस जैत्रसिंह १८२।३ के कुलके हड्डनमैं छट्ठो ६ भेदपाइ जैताउत्त २।६ भये तिनमैंहीं पीछैं तीन ३ पीढी के अनंतर खंधिल्ल १८५ हू सूरंता १ उदारता२में बिसेसहू बढ्यो जाने बुंदीके संगरमैं मंडूके पातसाहके सोलह १६ सामंत मारि सूरसज्जापैं सयनकरि आपुनों नाम उवारयो* तासौं एही जैताउत्त २।६खंधिलोत्त २।६ ऐसोहू उपटंक पाइ ठाये ॥

डूंगरसिंह १८२।४ के अन्वयके खजूरी ३ खेटके निवासकरि हड्डनमैं सप्तम७ भेद पाइ खजूरीके३।७ ऐसो उपटंक कहावत भये ॥

अरु सर्वही सूर हितरनमैं सत्रुनको सोक सहावत वितरनमैं बित्तकी बाहिनी वहावत स्वकीय सविता संभर संतान सवितांकौं सम्[11]मेद गहावत भये ॥ ४८ ॥

इतकौं यवनेंद्र अलावुद्दीन रनस्तंभको बिजयकरि चंडासिराज हम्मीर १८२ के पुत्र रत्नसिंह १८३ को रानाँलक्खनके सरनगयोजानि पीछो दिल्लीजाइ दूतनकौं चित्र[12]कूट पठाइ संभरराजके सूनु[13]कौं गहाइदेबेकी कहाई ॥

तामैं रानाँकौं प्रतिकूल जानि बिजयके लोभलगि मेद[14]पाटदेशको लैबो बिचारि सीसोदराज के सम्मुह वर्षाकालकी बाँहिनी की बिडं[16]बक बडे बिस्तारकी बाँ[17]हिनी वहाई ॥

तहाँ कितनौंक कं[18]टकतो पातसाहके प्रस्थानके पहिलैंही पहुँ-

---

*असर किया. १खिताव पाकर२ प्रसिद्ध हुए. डूंगरसिंहके ३वंशके खजूरी नामक ४खेड़ा में रहने के कारण. ५ वीरता में. ६ दान में. ७धन की ८ नदी बहाते हुए अपने ९ पिता को चहुवाण की संतान होने का. युद्ध के रसिक १०सूर्य को ११ हर्ष कराया ॥ ४८ ॥ १२ चीतोड़ को दूत भेज कर चहुवाण राजा हम्मीर के १३ पुत्र रत्नसिंह को पकड़ा देने की कहलाई. १४मेवाड़. १५ नदी की १६अनुकरण (नकल) करनेवाला १७ सेना चलाई. कितनी ही १८ सेना तो बादशाह के

चि मेवारमैं[1] डम्मर मचावत भयो ॥

याही अवसरमैं अचानक जाइ निश्रेनीनकी[2] श्रेनी लगाइ हड्डाधिराज समरसिंह १८१।७ आपुनैं अन्वयके[3] परपुरुष मंडन१६८के रचे मंडनगढ[4]नाम दुर्गमैं पैठि आपुनौं अमल रचावतभयो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं यह गढ करि कपट, नागपाल नरनाह ॥
रान लयो नृप रैन[5] १७५ सौं, रक्खी रंच न राह ॥ ५० ॥
सु अब रान लक्खन समय, संभर नृप समरेस१८१।७॥
गिनि स्वकीय[6] पच्छो गहिय, बलि कछु प्रांत बिसेस ॥ ५१ ॥
धर गत[7] लक्खन पट्टधर, सुनि कुम्मार अरिसीह ॥
पठई कहि अैसे परब[8], लुप्पी तुम हित लीह ॥ ५२ ॥
हड्ड कहिय तुमलौं न हम, लयो कपटरचि लेस ॥
पैठि दुग्ग खग्गन प्रहरि, अपनायउ नय[9] एस ॥ ५३ ॥
सुनि चिंतिय अरिसिंह तब, इत रन करन प्रयान ॥
जानि नियंत[10] आवत जवन, रोक्यो कुमरहिं रान ॥ ५४ ॥
इक१हि अलावुद्दीन११ इत, कहुँ गत[11] बिपिन[12] सिकार ॥
तत्थहि पहुँचि भतीज तस, सुलैमान्न गहि सार[13] ॥ ५५ ॥
दै प्रहार मूर्छितदसा, जिहिं काका मृत[14] जानि ॥

निकलने से पहिले ही मेवाड़ में पहुंच कर १उपद्रव मचाया. निसरनियों की २ पंक्ति लगाई. अपने ३ वंश के. ४ मांडलगढ ॥ ४९ ॥ ५ रत्नसिंह से ॥५०॥ मांडलगढ को ६अपना जान कर कुछ अधिक प्रांत के साथ पीछा लिया ॥५१॥ भूमि ७ को गईहुई जान कर महाराणा गढलक्ष्मणसिंह के पाटवी कुँवर अरिसिंह ने कहला भेजा कि ऐसे ८ समय में तुमने स्नेह की सीमा का उल्लंघन किया है ॥ ५२ ॥ यह ९ नीति है ॥ ५३ ॥ यह सुन कर अरिसिंह ने युद्ध के लिये इधर आना चाहा परंतु महाराणा ने बादशाह का १०निश्चय ही आना जान कर कुमर को रोक दिया ॥ ५४ ॥ इधर अकेला अलाउद्दीन १२वन में कहीं शिकार खेलने को ११गया था तहां उसके भतीज सुलैमान ने १३तरवार लेकर ॥ ५५ ॥ प्रहार करके मूर्छित दशा में काका को १४ मराहुआ जान,

पुर दिल्लिय निर्भय प्रविसि, आधिपत्य लिय आनि ॥ ५६ ॥

प्रायो मरुदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

सचरणागद्यम् ॥

इणाहीसमय राणाँ लक्खणरो पट्टपकुमार अरिसिंह आखेटमैं रमताँ कोई ग्रामरा परिसरमैं एक चंदाणा जातिरा हळखड़ रजपूतरी पुत्रीनूँ बळमैं अतुळ जाणि प्रसभपूर्वक परणियो ॥

अर केहीदिन उठैही रहि चंदाणी कुमराणीनूँ आधानसहित पिउहर ही मेल्हिआयो पछैं जिण प्रसवरै समय हम्मीरनाम कुमार जणियो ॥

सोतो बाळकथको आपरी मातासमेत पिता१पितामह२रा बुलावणरो अवसर न जाणि नाँनाँरै घरही रहै ॥

अर अठी चित्रकूट चंडासिराज हम्मीर १८१।१रा पुत्र रत्नसिंह १८३।३नूँ सरणाँ राखि राणा लक्खणसिंहरो मन आपरै आथाँण आवता अलावुद्दीन११रा अनीकनूँ चंड चंद्रहास चखावणरी चहे।५७।

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

भूप१८१।१ भरोसाके भटन, इत मंडनगढ अप्पि ॥
आयो बुंदिय रन असह, थिर जय जस जग थप्पि ॥ ५८ ॥
पुब्बहि१८१।१ नृप बुंदीपुरी, विस्तरसह बसवाइ ॥
रक्खी अरि आहव उचित, गुरु[11] प्राकार[12] लगाइ ॥ ५९ ॥
कुमर नप्प१८२।१ कै हुव कुमर, बुंदियपुर इहिं बेर ॥
जग जंपत हम्मीर१८३।१ जिहिं, कहि आकर[13] गुनकेर ॥ ६० ॥
साहगमन चित्तोर सुनि, समरसिंह१८१।७ नरनाह ॥

दिल्ली में आकर १ बादशाहत ले ली ॥५६॥ २ शिकार में किसी ग्राम के ३ समीप की भूमि में ४ अतोल ५ हठ पूर्वक ६ गर्भ ७ स्थान ८ सेना को भयंकर ९ खड्ग ॥ ५७-५८ ॥ १० विस्तार सहित बसाकर ११ बड़ा १२ कोट बनाकर ॥ ५९ ॥ गुणोंकी १३ खान कह कर ॥ ६०-६१ ॥

सज्जे बुंदिय दुर्गरुह, सत्तहसहँस१७००० सिपाह ॥ ६१ ॥
मंडनगढ पुनि मुक्कलिय, सहँससत्त७००० दल सज्जि ॥
रुपि अप्पन बुंदियरह्यो, गिरि[1] मइंदगति[1] गज्जि ॥ ६२ ॥
पठयो दिल्लिय पुव्वही, कन्ह सचिव कायत्थ ॥
ताइ सु इत पाटव[2] समय, पहुँच्यो वासव[3]पत्थ ॥ ६३ ॥
जियत छोंडि सतपंच५०० जुत, देखि अलावुद्दीन११ ॥
सब पुरि प्रकृति[5] भतीजसन, हुव याकेहि अधीन ॥ ६४ ॥
कोलि भतीजहिँ कुलकँरन[7], तस संगिन सिरतोरि ॥
पट्ट अलावुद्दीन११ पहु, बैठो अमय बहोरि ॥ ६५ ॥
पुव्वहि कछु दल पिल्लयो, महि लुट्टन मेवार ॥
चितोरहिँ जित्तन चल्यो, अब अप्पहिँ कलिकार[8] ॥ ६६ ॥
लक्खैरिय दर लंघिकैँ, अप्पन सीमा आत ॥
उहाँ सालिवाहन१८।।१२ अनुज, भेज्यो सम्मुह भ्रात ॥ ६७ ॥
गज इक नाम सु घनगरज, तिम चउ४ खास तुरंग ॥
उपदा[9]मैँ पठये इते, सोदर[10]१८।।१२ अप्पन संग ॥ ६८ ॥
अति ढिग आवत अप्प१८।।७ हू, पेय[11]१ खाद्य[12]२ करि पेस ॥
गुनआश्रय६ गहि साहसन, आयो मिलि पटु एस ॥ ६९ ॥

पर्वत में १ सिंह के समान गर्जना करके ॥ ६२ ॥ बादशाह की २ नैरोग्यता के समय में ३ दिल्ली गया ॥ ६३ ॥ अलाउद्दीन को पांच सौ ४ सवारों सहित जीवित देख कर उसके भतीजे सुलैमान को छोड कर ५ वजीर आदि राज्य के सब अंग अलाउद्दीन के आधीन होगये ॥ ६४ ॥ ६ कैद करके अपने कुल में होने के ७कारण उसको मारा नहीं, और उसके साथियों के सिर तुड़वाकर अलाउद्दीन फिर पाट बैठा ॥ ६५ ॥ मेवाड़ की भूमि लूटने को कुछ सेना तो पहिले ही भेजी थी ८ युद्ध करनेवाला ॥ ६६ ॥ लाखेरी के दरे को लांघकर बुंदी की सीमा में आते ही शालिवाहन नामक छोटे भाई को राजा ने बादशाह की पेशवाई को भेजा ॥ ६७ ॥ ९ नजराने में अपने १० सगे भाई के साथ॥६८॥ बादशाह के अत्यंत समीप आने पर बुंदी का राजा स्वयं समरसिंह भी ११ पीने के १२ खाने के पदार्थ नजर करके नीति का छठा गुण (आश्रय) ग्रहण करके वह चतुर, बादशाह से मिलकर आया ॥६९॥

पुर खीनाँ दर लंघि पुनि, जात अग्ग जवनेस ॥
बुंदिय मित[1] वंबावदहु, उपदा किन्न असेस ॥ ७० ॥
याही मित[2] चंद्राउतन, सुन्यौं उपायन[3] सोर ॥
पहुँचि चमूँ जवनेस पुनि, चुनि विंटिय चित्तोर ॥ ७१ ॥
नृप कतिक सहँचर[4] भये, निगँति[5] नम्र मिलि मग्ग ॥
संग कतिन दिय भ्रात १ सुत२, इक१रहि रान उदँग्ग[6] ॥७२॥
वसु दृग गुन भू १३२८ मित वरस, विक्रम नृप सक वेर ॥
जवनराज चित्तोरजँहँ, घोर जोरदिय घेर ॥७३॥
इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेपूर्वायणे पंचम५राशौ वीतिहोत्र
चरणडासि १ वंशवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्य

खीणया नामक पुर के दरे को लांघ कर बादशाह के आगे जाने पर बुंदी के १ मुवाफ़िक बंबावदा के राजा ने भी नजराना पेश किया ॥ ७० ॥ इसी २ मुवाफ़िक रामपुरा के चंद्रावत के ३ नजराना करने का शोर सुना ॥ ७१ ॥ कितने ही राजा, अपने ५ नियमों को नम्र करके मार्ग में मिल कर बादशाह के४साथ होगये; और कितनों ही ने अपने भाई और बेटों को साथ करदिया, उस समय६उच्चता को धारण करनेवाले एक महाराणा ही रहे ॥ ७२-७३* ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवा ण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा-

* ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने अलाउद्दीन और राजा हम्मीर चहुवाण की लड़ाई विक्रमी संवत् १३१२ में होना लिख कर चित्तोड़ के महाराणा गढलक्ष्मणसिंह का सहायक होना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि इस समय में तो अलाउद्दीन और गढलक्ष्मणसिंह का जन्म भी नहीं हुआ था. यह संवत् बड़वाभाटों का कल्पना कियाहुआ है. अन्य इतिहासों के देखने से पायाजाता है कि अलाउद्दीन और राजा हम्मीर की लड़ाई विक्रमी सम्वत् १३५६ में हुई थी, जिसमें एक वर्ष भर वीरता से युद्ध करके हम्मीर मारा गया, जिसके पीछे तीसरे वर्ष विक्रमी सम्वत् १३५९ में अलाउद्दीन ने चीत्तोड़ के रावल रत्नसिंह पर चढाई कर के चित्तोड़में घोर संग्राम किया सो अन्य इतिहासों में और विशेष करके'वीरविनोद'नामक मेवाड़ के इतिहास में यह युद्ध पद्मिनी रानी के कारण होना लिखा है, परन्तु यह भी संभव है कि हम्मीर का पुत्र रत्नसिंह, रावल रत्नसिंह के शरण चित्तोड़ में चला गया होवे तो युद्ध का एक कारण यह भी होसक्ता है; परन्तु विक्रमी सम्वत् १३२८ में गढलक्ष्मणसिंह के साथ अलाउद्दीन की लड़ाई होना असंभव है; क्योंकि इस समय गढलक्ष्मणसिंह चित्तोड़ की गद्दी पर नहीं थे. महाराणा गढलक्ष्मणसिंह का युद्ध दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलक के साथ विक्रमी सम्वत् १३९० के लगभग हुआ था; जिसको बड़वा भाटों की भूल से ग्रन्थकर्ता ने सम्वत् १३२८ में अलाउद्दीन के साथ लिख दिया है ॥

विहितव्याख्यानावसरव्याहार्यहड्डाधिराजदेवसिंह १८०।१ चरमसमयसहितबुंदीशसमरसिंह १८१।१ चरित्रे प्रेष्ठागौड़ी १८०।३ पुत्रसमरसिंहा १८१।७र्थबुंदीयुक्तदत्ताऽर्द्धराज्यहड्डाधिराजदेवसिंह १८०।१ तनुत्यजन १ स्वौरससुतार्थसमर्पितहड्डहेलित्वतृतीय ३ राज्ञीगौड़ी १८०।३ सहगमन २ नामान्तरख्यातिसहितदेवसिंह १८०।१ जनितद्वादश१२पुत्रोद्देशन ३ प्रतिपुत्रतत्तन्मातृनिश्चयन ४ प्राप्तबंबावदाधिपत्यहरराजा १८१।१ऽनुजहत्थ १८१।२ प्रातिहारी १८१।२।१ राष्ट्रकूटी १८१।२।२ पत्नीद्वय२परिणायन ४ तदौरससुर्जना १८२।२ दिपुत्रत्रयं ३ संततिहड्डकुलतृतीय ३ भेदहत्थावुत्तो १।३ पटङ्कप्राप्ता ५ भटशूरा १८१।३ दिभ्रातृनवक ९ निस्सन्ततिसमापन ६ हड्डाधिराजहरराज १८१।१ शैशोदी १८१।१।१ प्रमुखपत्नीषट्क६परिणायन ६ हल्लू १८२।१ प्रमुखसर्वराज्ञीपुत्रद्वादशक १२ प्रकटन ७ तदन्तस्तृतीय३लोहराज १८२।३ वंशभविष्यत्समाप्तिसूचन ८ ज्येष्ठहल्लू १८२।१ जननहल्लूपौत्रो१।४पटङ्कितहड्डकुलचतुर्थ ४ भावभेदप्रवृत्तिद्योतन ९ प्राप्ताऽर्द्धराज्यकृतबुन्दीस्कन्धावारसमाक्रान्त-

---

ओं की कथा के वचनों में हड्डाधिराज देवसिंह के अन्त समय सहित बुन्दी के पति समरसिंह के चरित्र में प्यारी गौड़ी के पुत्र समरसिंह के अर्थ बुंदी सहित आधा राज्य देकर हड्डाधिराज देवसिंह का शरीर छोडना, अपने औरस पुत्र के अर्थ हाडा क्षत्रियों का सुरजपन देकर तीसरी रानी गौड़ी का सती होना, नामान्तर की प्रसिद्धि सहित देवसिंह के बारह पुत्रों का कथन, पुत्र पुत्र प्रति उनकी माताओं का निश्चय करना, बम्बावदा का राजा होकर हरराज के छोटे भाई हत्थ का प्रतिहारी और राठोड़ी दो स्त्रियों से विवाह करना, उसके औरस सुर्जन आदि तीन पुत्रों की संतान का हाडों के कुल में तीसरा भेद 'हत्थावत्त' पदवी पाना, भटसूर आदि नव भाइयों का निस्संतान मरना, हड्डाधिराज हरराज का सीसोदिनी आदि छः स्त्रियों से विवाह करना, सब रानियों के हल्लू आदि बारह पुत्र प्रकट होना, उनमें से तीसरे लोहराज के वंश की भविष्यत् काल में समाप्ति की सूचना करना बडे हल्लू के जन्म से हल्लूपोते की पदवीवाले हाडों के कुल के चौथे भेद की सूचना करना, आधा राज्य पाकर बुन्दी को राजधानी बनाकर चामल

चर्मणवतीपारप्रान्तप्राप्तपितृ १ मातृ २ प्रसादमुख्यीभावहड्डाधिरा-
जसमरसिंह १८।१७ चालुकीसुज्ञानकुमारी १८।१९ प्रमुखराज्ञीत्र-
यो ३ पयमन १०प्रत्येकराज्ञ्यौरसनरपाला१८।१९दितत्पुत्रचतुष्क
४ समुद्भवन ११ रणस्तम्भरणसमयश्रुतपरतटप्रान्तभिल्लोपद्रवह-
ड्डाधिराजसमरसिंह १८।१९ शवरसहस्रत्रय३००० व्यापादन १२कृ
तनिर्भयपरतटप्रान्तकेथोणयादिपुरन्यस्तरक्षकप्रत्यागच्छन्नरेन्द्रपुन
र्युध्यमानभिल्लशतनवक ९०० संहरण १३ नृपसुभटशतत्रय ३००
शूरशय्याशयन१४ हड्डेन्द्रविध्वस्तपल्लीककौटिकनामपुलिन्दपलाय
न १५ प्राप्तजज्जावुर १ कोटा२खर्जूरी३कराजकुमारहरपाल १८२।
२ जैत्रसिंह १८२।३ डुंगरसिंह १८२। ४ भाविवंशहरपालपौत्र २।५
जैत्रावुत्त २।६ खर्जूरीको ३।७ पटक्त्रय३प्राप्तिसूचन १६ यवनरा-
डलावुद्दीन ११ चित्रकूटराजराणलक्ष्मणसिंहपार्श्वहाम्मीरिरत्न-
सिंह१८३ मार्गण १७ शीर्षोद्दराजतदनङ्गीकरण१८प्रतिश्रुतशरणा
गतत्राणराणाराष्ट्रजिगीषुप्रतिष्ठासुम्लेच्छराजप्रेरितसैन्यान्तरभेदपा

नदी के पार के प्रांत को लेकर माता पिता की प्रसन्नता से मुख्यभाव को प्राप्त करके हड्डाधिराज समरसिंह का सोलंखिनी सुज्ञान कुमारी आदि तीन रानियों से विवाह करना, प्रत्येक रानी के उदर से नरपाल आदि उसके चार पुत्रों का जन्म होना, रणस्तम्भ के युद्ध समय में चामल नदी के पार के देश में भीलों का उपद्रव सुन कर हड्डाधिराज समरसिंह का तीन हजार भीलों को मारना, नदी के पार के प्रान्त को निर्भय करके 'केथूणी' आदि पुरों में रक्षक स्थापन करके पीछे आतेहुए राजा से फिर युद्ध करनेवाले नौ सौ भीलों को मारना, राजा के तीन सौ सुभटों का माराजाना, हड्डेन्द्र की विनाश कीहुई पाल से कोट्या नामक भील का भागना, जज्जाउर १ कोटा २ खजूरी ३ पाकर राज कुमार हरपाल-जैत्रसिंह-डूंगरसिंह के आगे होनेवाले वंश को 'हरपालपोता, जैतावत्त, खजूरीका' इन तीन पदवियोंको पाने की सूचना करना, बादशाह अलाउद्दीन का चित्तोड़ के राजा राणा लक्ष्मणसिंह के पास से हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को मांगना, उससे सीसोद राजा का अस्वीकार करना, पीछा सुनकर शरणागत की रक्षा करनेवाले राणा के राज्य को जीतने की इच्छावाले गौरव से म्लेच्छराज की भेजीहुई

टदेशडमरविस्तरण १८ प्राप्तावसरहड्डाधिराजसमरसिंह१८१।७मण्डनगढनामदुर्गसमाक्रमण १९ राणाश्रुतगतदुर्गहड्डेन्द्रयुयुत्सुस्वकीयपट्टपकुमाराऽरिसिंहनिवारण २०मृगयागतप्रहरणप्रहारितैकाकि१स्वपितृव्यकदिल्लीशअलावुद्दीन ११मूढदशानिश्चितपरासुत्वतद्भ्रातृजसुलैमानदिल्लीसमाक्रमण २१ तत्समयमृगव्यरममाणकुमाराऽरिसिंहक्षात्रबन्धुचन्द्राणीपरिणयन १२ तत्पितृगृहन्यस्तसभ्रूणकुमारचित्रकूटागमन २२ तदनन्तरपितृपस्त्यस्थकुमारपत्नीचन्द्राणीहम्मीरनामकुमारप्रसवन २३ मण्डनगढस्थापितविश्वस्तरक्षकहड्डाधिराजप्राक्कालप्रकृतिविस्ताररितवसतिबुन्दीपुरागमन२४श्रुतयवनेंद्रागमपुनर्मण्डनगढप्रस्थापितसप्तसहस्र ७००० सैन्यनरेन्द्र १८१।१ बुन्दीदुर्गसप्तदशसहस्र १७००० सुभटसज्जीकरण २५ तत्प्राक्कालस्वकीयसचिवकृष्णनामकायस्थयवनेन्द्रानुमोदनार्थदिल्लीप्रेषण २६ समयप्राप्तपाटवदिल्लीसमागतरुद्धसलेमानविध्वस्ततत्साङ्गिजनपुनःप्राप्तपट्टयवनराडलावुद्दीन ११ चित्रकूटविजयप्रस्थान २७ हड्डाधिरा-

---

सेना का मेवाड़ में उपद्रव करना, समय पाकर हड्डाधिराज समरसिंह का मांडलगढ नामक गढ लेना. गढ को गयाहुआ सुनकर हड्डेन्द्र से युद्ध करने की इच्छावाले पाटवी कुमर अरिसिंह को राणा का रोकना, शिकार में गये हुए अकेले अपने काका अलाउद्दीन को शस्त्र से प्रहार करके मूर्छित दशा में मराहुआ जान कर उसके भतीजे सुलैमान का दिल्ली लेना, उसी समय में शिकार खेलतेहुए कुमर अरिसिंह का हल्लूके वंश के क्षत्रिय 'चन्दानी' से विवाह करना, गर्भ के बालक सहित उस गर्भिणी को उसके पिता के घर में रखकर कुमर का चित्तौड़ आना, जिस पीछे पिता के घर में रहीहुई कुमरानी 'चन्दानी' का 'हम्मीर' नामक कुमार को जन्म देना, मांडलगढ में भरोसे के रक्षक रख कर हड्डाधिराज का पहले समय में शिल्पविद्या से विस्तार पूर्वक बसाईहुई बुन्दी में आना, बादशाह का आना सुन कर फिर मांडलगढ में सात हजार सेना रख कर नरेन्द्र का बुन्दी के गढ में सत्रह हजार सुभटों को सज्ज करना, उसके पहिले समय में अपने मंत्री 'कृष्ण' नामक कायस्थ को बादशाह की प्रसन्नता के लिये दिल्ली भेजना, नीरोगता का समय पाकर अथवा कुछ समय से नीरोगता पाकर दिल्ली में आकर सुलैमान को कैद कर

जस्वसीमागतम्लेच्छराजसमीपगज १ हयो ४ पायनसहितस्वकीयसोदराऽनुजशालिवाहन १८।१।१२ प्रस्थापन २७ निकटसमागतखाद्य १ पेया २ दिसन्मानितयवनेन्द्रसभास्वयंसम्मिलन २८ पुनः प्रस्थितदिल्लीशबुन्दी १ समानवम्बावद २ रामपुरो ३ पदाप्रापण २९ शरणिसमागतराजतासेवकीभावसभादान ३० विस्तृतवरूथयवनेन्द्रचित्रकूटवेष्टनशकसूचनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥ आदितः सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दुसह अलावुद्दीन११सौं, लक्खनन्नृप जस लाह ॥
इक्क सुररि गढ अंकुर्यो, रक्खी अज्जन राह ॥ १ ॥

गीतिका ॥

वलै थाँहवर्जित साह यों नरनाह लक्खन विंटयो ॥
भुव छाइ जोजन दुग्ग जो गरदाइ फोजन भिंटयो ॥
परिवेसमध्य दिनेसलौं मनुजेसं रान प्रकासभो ॥

उसके साथियों को मारकर अलाउद्दीन का फिर पाट बैठना, चितोड़ को विजय करने के प्रस्थान में हड्डाधिराज का अपनी सीमा में आयेहुए म्लेछराज के समीप एक हाथी और चार घोड़े सहित नजराना अपने सगे छोटे भाई शालिवाहन के साथ भेजना, समीप आयेहुए खानपानादि से सन्मान किये हुए बादशाह की सभा में स्वयं समरसिंह का मिलना, फिर गमन कियेहुए बादशाह को बुन्दी की बराबर वम्बावदा और रामपुरावालों का नजराना देना, मार्ग में आयेहुए राजाओं का सेवकभाव ग्रहण करना, बड़ी सेना से बादशाह का चित्तोड़ को घेरने के संवत की सूचना करने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ आदि से १४७ मयूख हुए ॥

१ महाराणा गढलक्ष्मणसिंह. २ गढ से खड़ाहुआ. ३ आर्यों के मार्ग को रक्खा ॥ १ ॥ इस प्रकार ५ अथाह ४ सेना से बादशाह ने राणा लक्ष्मणसिंह को ६ घेरा. उस गढ को फौजों से घेर कर ६ योजन भूमि को छाकर. ७ भिड़ा उस समय ८ परिवेष (कुंडलाकार उत्पात सूचक सूर्यचन्द्र के रश्मिमंडल को परिवेष कहते हैं) में. ९ सूर्य के समान १० मनुष्यों का पति महाराणा

लवनोद[1]कौं चउ४कोद[2] लै जं[3]बु द्वीप जंबुव भाँसभो ॥ २ ॥
बपु ढंकि कंदर वासुकी कि[5] अगेस[6] मंदर आँवरयो[7] ॥
कि मनौं बराटक[8] बीच बाटक[9] कंज केसरनैं[10] करयो ॥
रिपु वृत्त[11] दुर्ग नरेंद्रको इम केंद्र[12] सन्निभ[13] ठ्है रह्यो ॥
दुहुँ२ ओर घोर सजोर ठ्है दगि सोर भूतलकौं दह्यो ॥ ३ ॥
मिलि दाँव[14] दुस्सह तावदै अररॉव[15] नालिनको मच्यो ॥
तिहिं बार झार फुलिंग[16] फार[17] प्रसारमैं गिरि जो तच्यो[18] ॥
लगि चक्क[19] ढक्कन यौं झलक्कन धूम संकुल[20] ठ्है लस्यो ॥
बहु बिज्जु[21] मिश्रित अभ्र[22] जाति अदभ्र काननपैं[23] बस्यो ॥ ४ ॥
बढि वज्र बैर नसात नैरन फैर फैरनपैं बनैं ॥
चहुँ४ओर यौं सुनि सोर संकिय झारज्यौं तरकैं चनैं ॥
धकि वन्हि वित्थरि[24] पत्थ पत्थर भू थरत्थर ठ्है धुकी ॥

प्रकाशित हुआ ३ मानों १ क्षारसमुद्र को चारों २ दिशाओं में लेकर जम्बूद्वीप ४ शोभायमान हुआ ॥ २ ॥ ५ किधों कंदरावाले शरीर को ढककर वासुकि नाग ने ६ पर्वतों के पति मंदराचल को ७ घेरा. किधों ८ कमल के डब्बे के बीच में ९ कमलगट्टा घिरगया, अथवा मानों उस कमल के डब्बे को कमल की १० केसर (कमल के डब्बे के चारों ओर की शलाकाओं को केसर कहते हैं) ने डब्बे को बीच में करलिया, अथवा शत्रुओं रूपी ११ परिधि (गोलाकार) में राजा का गढ १२ केन्द्र (गोलाकार का मध्यस्थान) के १३ सदृश होरहा है. दोनों ओर भयंकर और बलवान् होकर बारूद ने जलकर भूमितल को जलाया ॥ ३ ॥ दोनों ओर से १४ ज्वाला मिल कर दुःसह ताव देती है, और तोपों का १५ धरराट (अखण्ड शब्द का अनुकरण है) शब्द मचरहा है, उस समय में ज्वाला और १६ अग्निकणों के १७ समूह के फैलाव में वह पर्वत १८ जला, इस प्रकार १९ सेना उछल कर उसको ढकनेलगी और धुआँ २० भर कर ऐसा शोभायमान हुआ, मानों बहुत २१ बिजुलियों से मिला हुआ २२ मेघ बडे २३ वन पर बसा है ॥४॥ वज्र के समान गोले बढ बढ कर वैर और नगरों का नाश करते हैं, यह बनाव तोपों के फैर फैर के साथ बनता है, भाड में चने तड़कें इस प्रकार का शब्द सुन कर चारों दिशाएं शङ्कित हुईं. अग्नि के जलने से, पत्थरों के मार्ग में २४ फैलने से भूमि कम्पायमान होकर धुकती है, झड़ में बरसती हुई मेघमाला नीचे को झुकती है

भार झुकती घनमालसौं फनमाल आलुकेकी[1] झुकी ॥ ५ ॥
जिम साह चाह सिपाह गोलन दुग्ग डोलन[2] जोरिदै ॥
तिम रानकेभट तोपजालन मिच्छ डालन[3] तोरिदै ॥
सह अर्थ भो वह चित्रकूटहु सोंन[4]१ धूम२ कृसानु[5]३ सौं ॥
भुव अंधकार अपार कैं रज वादमंडिय भानुसौं ॥ ६ ॥
गढलग्गि गोलन अट्ट१ गोपुर[6] २ कोट३कंगुर४ के गिरैं ॥
वहँ[7] लग्गि वारन१ वाजि२वीर३न खुत्थि कोलन लौं किरैं[8] ॥
इत सौध१ गोख२ लदाव३ मंडप४[10] थंभ५छत्रिय६उल्लटैं[9] ॥
उत केखिका[11]१ अपटी[12]२ वितान[13]३ रु तल्प[14]४ ज्वालनमैं जरैं ॥ ७ ॥
पवि[15] बाज गाज दराज[16] तोपन गब्भ[17] गब्भिनिके परैं ॥
अहँ[18]१ रत्ति[19]२ तत्ति निवान आवटि नीर सीढिन उत्तरैं ॥
छाहि धूम नैनन गैन[20] ऐनन अंधता चिरलौं लगैं ॥
जरिकैं अनेकन पच्छ१ केकन पुच्छ२ चंगनलौं जगैं ॥ ८ ॥

उसके समान १ शेषनाग की फणमाला झुकती है ॥ ५ ॥ जिस प्रकार, बादशाह की चाह के मुवाफिक सिपाही लोग गोलों से जोर देकर गढ को २ हिंडोला बनादेते हैं, उसी प्रकार महाराणा के वीर तोपों की ज्वाला से अथवा तोपों की जाली से म्लेच्छों के ३ निशानों (झंडों) को तोड़ देते हैं. वह चित्रकूट (चित्तोड़) ४रक्त, धुआँ और ५ अग्नि से सार्थक होगया, अर्थात् आश्चर्य करानेवाला होगया. रज (धूलि) ने पृथ्वी पर अपार अन्धकार करके सूर्य से पाद (हठ) मांड दिया कि मैं तुम्हारा प्रकाश भूमि पर नहीं आने दूंगी ॥ ६ ॥ गोले लगने से गढ की कितनी ही छतें, ६ शहर के दरवाजे, कोट और कांगरे गिरते हैं. ७ सेना लग कर हाथी, घोड़े और वीरों की लूथें (टुकड़े) कोसों तक ८गिरती हैं. इधर ९ महल, झरोखे, सवाव १० गुम्मट, खंभे, छत्रियें उलटती हैं; और उधर ११ छोटे डेरे (रावटी) १२ कनात १३ शामियाने और १४ शयन करने के डेरे ज्वाला में जलते हैं ॥ ७ ॥ १५ वज्र के शब्द के समान तोपों की १६ बडी गर्जना से गर्भिणियों के १७ गर्भ पड़ते हैं. १८ दिन १९ रात. गर्मी से निवाणों का पानी उफन कर सीढियें उतर जाता है; और २० आकाश, घरों और नेत्रों में धुआँ भर कर चिर काल तक अन्धपन लाते हैं; अनेक पक्षियों के पंख और कितनों की पूँछें जल कर पतंगों (गुडियां) के समान जलते हैं ॥ ८ ॥

रन कौतुकीन बिमान जे कछु उच्च घूमित व्है रहैं ॥
चित चित्र *चंडमरीचि त्यौं रजके अभावहिकौं चहैं ॥
कटिजात हत्थिन सुंडि पन्नगपात अध्वरज्यौं करैं ॥
अगतैं मयूर उडान ज्यौं द्विपैं पिट्ठि केतन उत्तरैं ॥ ९ ॥
अंधकार प्रसार लोलक अग्गि गोलक उल्लसैं ॥
रिचक्रकी कि अलोकके तमगाढ रंचक हा हसैं ॥
कैंधु अर्क अंबुद बर्क अंतर अग्गि प्रेतनकी कुहू ॥
सननंकि जावल पिक्खि आवत नाँ समा उपमा सुहू ॥१०॥
डगमग्गि सैलन सुंग फैलन लोक गैलनमैं डरैं ॥
सुधि वीर जाँल त्रिकाल साधक काल आन्हिक बीसरैं ॥
अतिगाज जात दरारि भूतल पक्क दारिम ओपलैं ॥
तँहँ थान नामहि जो लख्यो सहि जो निरंतर तोपलैं ॥११॥
गुरुता परक्खन के परक्खन चक्क चक्खन भू ग्रसैं ॥

युद्ध देखनेवालों के विमान ऊपर ही घूमते होरहे हैं, और इसीप्रकार युद्ध देखने के आश्चर्य से * सूर्य अपने चित्त में रज का अभाव चाहता है हाथियों की सूंडें कटकर जनमेजय के २ यज्ञ में १ सर्प पड़ते थे ऐसे पड़ती हैं. ३ पर्वत से मयूर के उड़ान के समान ४ हाथियों की पीठ से ५ ध्वजाएं उतरती हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार अन्धकार के फैलाव में ६ चपल अग्नि के गोले शोभायमान होते हैं, सो मानों विष्णु के चक्र की कान्ति ७ अतलादिक लोकों के घोर अन्धकार पर ईषत् हास्य करती है, अर्थात् मुसकुराती है. ८ मानों. १० मेघ के बीच में ९ सूर्य होवे इसीप्रकार ११ सेना में अग्नि दिखाई देती है, अथवा जिस प्रकार १२ नष्टचन्द्रा अमावास्या में प्रेतों की अग्नि दीखे ऐसे दीखती है. यह तोपों के गोलों की अग्नि शीघ्रता से आतीहुई दीखती है उसके समान कोई उपमा नहीं उपजती ॥ १० ॥ पर्वतों के शिखर हिल कर फैलने से मनुष्य मार्ग में डरते हैं. तीनों समय की संध्या करनेवाले पढे १३ पंडित भी उस अंधेरे के १४ समूह में १५ संध्यासमय को भूलते हैं. अत्यन्त गर्जना होने से भूमितल दरार देकर (फटकर) पकीहुई दाड़िम की उपमा लेता है. तहां पर नाम मात्र स्थान दीखता है उसको भी तोपें निरन्तर मिटादेती हैं ॥ ११ ॥ १६ भार की परीक्षा करने को कितने ही चरखों के पहियों को चखने के लिये भूमि उनको निगलती है, वे पहिये मनुष्य और बैलों के हु॰

नर१ बैल२ हल्लन जे हमल्लन नाग३टल्लन निक्खसैं ॥
रन मिच्छ वादिक अन्नआदिक दुग्ग मग्गन रोधकैं ॥
बढि रानकेभट मेटि कंटक आत घात प्रबोधकैं ॥ १२ ॥
चहि हल्लके प्रतिमल्ल बाहिरके निसैंनिनदै चढैं ॥
बल बाहु बिस्मय खट्टिकैं तिन्ह काट्टि अंदरके बढैं ॥
कहुँ सोर दट्टन दै सुरंग सु जानि अट्टन के हुलैं ॥
तँहँ तैल१ तोयरन पिल्लिकैं भयमेटि तद्भव तेहु लैं ॥१३॥
कहुँ खग्ग तिच्छन घात मिच्छन आत कंगुर कट्टिदै ॥
इक थाप कीसं कलाप कौं बिटपी कि आवत वट्टिदै ॥
कति कुद्दि कंगुर आत पज्जन गाँत अज्जन द्वै २ करैं ॥
किंमु भ्रात दोउरन लोभमज्जन भाग सज्जन लै करैं ॥१४॥
इत दुर्गअंतर साहके वढिजात के भट दूरलौं ॥
हुत खग्ग पावकमज्झ कैं पहुँचात भट वे हूरलौं ॥
कति दट्टि बत्थन मिच्छ मत्थन कट्टि फैंकत कोटसौं ॥

छोहमल्लों से नहीं निकल कर १ हाथियों के टल्लों से निकलते हैं. युद्ध में हठ करनेवाले म्लेच्छ दुर्ग के मार्गों में अन्न आदि सामग्री को रोक देते हैं. और इधर महाराणा के वीर चढकर, घात लगाकर दुष्टों को मिटा देते हैं. और सामग्री लानेवालों को समझा आते हैं ॥ १२ ॥ कितने ही बाहर के शत्रु हल्ला करना चाह कर, निसेनियें देकर चढते हैं, इधर आश्चर्य करनेवाला बाहुबल उत्पन्न करके उनको काट कर भीतरवाले बाहर चढते हैं. कहीं बारूद दाट कर, सुरङ्ग देकर बारहवाले ऊपर चढते हैं, वहां तेल और पानी डाल कर उनसे उत्पन्न हुए भय को मेट कर ये चढते हैं ॥ १३ ॥ कहीं कंगुरों पर आतेहुए म्लेच्छों को तीक्ष्ण खड्ग की घात से काट देते हैं सो ९ मानों वृक्ष (चपेरा) थप्पड़ की देकर ४ वृक्ष पर आते हुए २ वन्दरों के ३ समूह को बिखेर देता है. कितने ही ६ अंत्यजों के ७ समूह कूद कर कोट के कंगुरों पर आते हैं जिनके ८ आर्यलोग दो दो टुकड़े कर देते हैं ९ मानों दो भाई लोभ में १० निमग्न होकर महात्मा (पिता) अथवा कुलवान के धन के दो भाग करते हैं ॥ १४ ॥ बादशाह के वीर गढ के भीतर शीघ्र दूर तक चढ जाते हैं, उनको गढ के भीतर के लोग खड्ग रूपी अग्नि में ११ होम कर १२ अप्सराओं तक पहुंचाते हैं.

चंल बाल दै किंदु दोटें पिल्लत गोर्टं गैंदन चोटसौं ॥१५॥
कति मोरछे तजि मिच्छ दै अधिरोहिनीं चढते कटैं ॥
अरि लंक के गढजात रक्खस घात कैं कपि उल्लटैं ॥
बहु घट्ट गोलन वट्टव्है तँहँ टट्ट १ अट्ट २ नये बनैं ॥
मिलिकैं दुंरधा भैर भै तनैं मिलिकैं परस्पर जै भनैं॥१६॥
भट साहके बढि खातिका बिच तूलके बुरके भरैं ॥
जिनकी तुपक्कन जेहि मत्थुत रान इच्छक व्है जरैं ॥
अह१रत्ति२ मिच्छ अली अली कहि आनि दुग्गहि आंवरैं॥
सह रत्ति रान सिपाह संचय पानि पुग्गत संहरैं ॥ १७ ॥
सिलगाइ सोर कुतूनं डारत केक मिच्छन सूल्यव्है ॥
गुरु ग्रांव गेरन धाव केकन मृत्यु बिक्रयं मूल्यव्है ॥
कति दोहरी २ तिहरी ३ क्रिया नट निंदि आवत कोटतैं ॥

कितने ही लोग म्लेच्छों को अङ्क में दबा, उनके मस्तक काट कर कोट से नीचे फैंकते हैं. सो २ मानों १ चपल बालक ४ गोल गैंदों को ३ दौड़ाने की प्रबल चोट देकर चलाते हैं ॥ १५ ॥ कितने ही म्लेच्छ मोरचे छोड कर ५ निसरनियों पर चढतेहुए कटते हैं, सो मानों लंका के शत्रु बन्दर गढ में जातेहुए ६ राक्षसों की घात से उलटते हैं. गोलों से बहुत ७ घाटों (दो पर्वतों की संधि का मार्ग) की सीध ८ मार्ग होते हैं और वहां पर नवीन ९ पगडंडिये (छोटे मार्ग) और १० चौड़े मार्ग बनते हैं. ११ दोनों ओर के १२ भड़ (वीर) मिलकर भय फैलाते हैं, और मिल कर परस्पर जय बोलते हैं ॥ १६ ॥ बादशाह के वीर बढकर १३ खाई में (चित्तोड़गढ के खाई नहीं है, परंतु गढ के सामान्य रूप से कहागया है) १४ रूई के १५ बोरे भरते हैं, वे बोरे उन यवनों की बंदूकों से १६ उलटे महाराणा के इच्छुक होकर जलते हैं. दिन रात म्लेच्छ 'अली अली' कहकर गढको आकर १७ घेरते हैं जिनको रात्रि के साथ महाराणा के सिपाहियों के १८ समूह पहुंच कर हाथों से नाश करते हैं ॥ १७ ॥ बारूद के १९ कुप्पे (पीपे अथवा सीदड़े) जलाकर ऊपर से डालते हैं, जिससे कितने ही म्लेच्छों के सूले (कबाब) होते हैं. बडे२०पत्थरों का गिराना और दौड़ाना ही मानों कितनों को मृत्यु२१बेचने का मूल्य होता है. कितने ही नट की दुहरी तिहरी क्रिया की निन्दा करके कोट से नीचे आते हैं. उनको अपने साहस की आड से गढ के बलवान् लोग धन डाल कर

उन्ह रीझि दै गढके बली बसु डारि साहस ओटतैं ॥१८॥
जरि बस्त्र ×श्रावकदेवलहै कति मिच्छ बैठत जीवहैं ॥
गढके प्रबीर तिन्हैं सिराहन ÷चच्छु चाहन ग्रीवहैं ॥
उफनाइ साहस साह यौं गरदाइ दुर्गहिँ अंकुर्यो ॥
जिम मल्लिकैं महिमान रानहु खान१पान२ किलैं जुर्यो॥१९॥

॥ षट्पात् ॥

रानकुमर १ अरिसिंह बीर कोउक वह बल्लन २॥
हिंगुलु ३ नाम सु हट्ठ हुलसि इतिमुख अति हल्लन ॥
कढ़ि कढ़ि जामिनिकाल बिरचि सौप्तिक बहुवारन ॥
सेना मथि सहसाहि हनतहुव जवन हजारन ॥
लग्गे सिपाह जिम जिम लुपन तिमतिम साहस साहतकि॥
नयनव अनीक रक्खत निपत सनैसनै डिगहुव सरकि॥२०॥

॥ दोहा ॥

समयसमय मिच्छन पसरि, हलबल्लन करि देस ॥
पिहित बहत अन्नादि पथ, अटकिय महंत असेस ॥ २१ ॥
श्रीसंघाम १ पुर २ लुट्टि सब, जिन रचि प्रलय प्रजारि ॥
आढ्यजनैंन कारीं अटकि, दिय दुकाल भयकारि ॥ २२ ॥
बिसतलखि अन्नादि बल, प्रजा रुदन दुख पाइ ॥

रीझ देते हैं ॥ १८ ॥ जिनके ही म्लेच्छ वस्त्र जल जाने से × आवकों (ओसवालियों) के देवता (पार्श्वनाथ) की भांति नग्न होकर, मर कर बैठते हैं. जिन को अपने ÷ नेत्रों से देखने की इच्छा से गढ के वीर लोग प्रशंसा करने को अपनी गर्दन निकालते हैं; इसप्रकार हठ ग्रहण करके पादशाह गढ को घेर कर १ खड़ा हुआ, तिस प्रकार इनको महिमान जानकर महाराणा ने भी किले में खान–पान इकट्ठा किया ॥ १९ ॥ रणतभँवर की सहाय पर जानेवाला 'बल्लन' नामक २ कोई वीर जिसकी जाति का पता नहीं ३ इत्यादि ४ रात्रि के समय ५ रतिघाह रचकर ६ सेना ७ निश्चय ॥ २० ॥ ८ फैल कर देश को बरबाद किया ९ गुप्त मार्गों से अन्नादिक सामग्री जाती है १० विशेष छल करके सब रोक दिये ॥ २१ ॥ ११ धनवान् १२ धनवान् लोगों को १३ कैद

भट१ मंत्रि२न रानहिँ भनिय, रतन १८३ देहु पकराइ ॥ २३ ॥
आनन इम छत्रिय अरज, रान न मंत्रिय रंच ॥
स३नग संटै सुव १ रु सिर २, चिंतिय दैन प्रपंच ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

अंगँज तेरह१३ अनुज अट्ठ८ निज तिम दुव२ नत्तिय ॥
वल्लान१ बलिं वह कुल्लि घिरन पहगति जिहिँ घत्तिय ॥
हिंगुलु३ नाम सु इक्क भ्रातजाँमात महाभट ॥
इम स्वकीय भट अखिल बिरचि एकल मंत्रबट ॥
सूचिय न देहिँ हम्मीर१८२सुत घनरस इम दिय सिर१घर२न
बढि यह रु सज्ज रक्खन बिरुद लक्खन हुव बाहिर लरन ॥२५॥

(दोहा)

भनत किते हम्मीर१८२सुव, कियउ कढ्ढि कहुँ दूर ॥
किते रानसकुटुंबके, संग जंग मृत सूर ॥ २६ ॥
अज्जनै लक्खन सहित इम, मिच्छन लक्खन मारि ॥
बीरसयन सुत्तो बिदित, रानौ लक्खन रारि ॥ २७ ॥
अंगज बारह१२ बसु८ अनुज, पौत्र उभय२ लहि पास ॥
साह निकट लक्खन सुपहु, रमत परयो रन रास ॥ २८ ॥
जिहिँरन पोढे बिदित जग, असिय च्यारि८४ नृप अज्ज१२ ॥
अवनि लोभगिनि रान इम, लुप्पी नन कुललज्ज ॥ २९ ॥
लक्खनको इकपुत्र लघु, अजयसिंह१ अतिबीर ॥
बहुन मारि लहि छत१३ बच्यो, धनी हुकम वहि धीर ॥ ३० ॥

करके वश हुरे समय में भय दिया ॥२२-२३॥ १ अन्य लोगों ने इस प्रकार गुप्त अर्ज की. २ धारण आयेहुए के ३ बदले में (एवज) ॥ २४ ॥ ४ पुत्र ५ पोते ६ फिर ७ भाई का जमाई ८ तलवार के मार्ग से, हमने शिर और घर को, ९ पानी दिया ॥ २५ ॥ १० हम्मीर चहुवाण के पुत्र (रत्नसिंह) को दूर निकाल दिया, और कितने ही कहते हैं कि वह वीर युद्ध में राणा के कुटुम्ब के साथ मारागया ॥२६॥ लाखों ११ आर्यों के साथ लाखों म्लेच्छों को मारकर ॥ २७-२८ ॥ १२ आर्यराजा ॥ २९ ॥ १३ घाव पाकर ॥ ३० ॥

कहा पुर चित्तोर कारि, स्वान[1] बिडाल[2] समेत ॥
चढ्यो निरंकुस साह चहि, इम गढ विजय उपेत[2] ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

चवंत[3] किते चित्तोर दुग्ग नृप सयन स्वप्नदिय ॥
अक्खिय सुनहु अधीस सोंन[4] म्लिच्छ[1]न बहु सिंचिय ॥
अज्जें[5]र्न लोहित[6] अलप बह्यो मोसिर कछु बिप्लव[7] ॥
होतो अद्व[8] हु हाइ ततो रहतो निकेत[9] तव ॥
जावतो गेह म्लिच्छन जदपि अति सत्वर[10] घर आवतो ॥
जात न रह्यो वै[11] उत जातहों सेवक जन न सुहावतो ॥ ३२ ॥
रानकाहिय जिम रहहु कहहु मुहि जतन कृपागति ॥
कहिय दुर्ग जगकहत चमूँ[12]सन अधिक चमूँ[13]पति ।
सुत[1] भ्राता[2] तव सकल पाइ क्रमसह नृपतापद ॥
मरत तोहि यह मरहिं मोहि दै रुधिरपान मद ॥
तुम बढहु कुआँ[14]प म्लिच्छन तबहि रान मुदित तवघर रहौं ॥
पोखत बिसेस मुहि होत प्रिय कछु भोजक न प्रिय कहौं॥३३॥

(दोहा)

जवन बली लैहैं जदपि, ऐहैं तदपि इतैंहि ॥
यह दुर्गन गति आदितैं, जे बलि[15]देत जितैंहि ॥ ३४ ॥

षट्पात् ॥

सुनि दुर्गो[16]दित स्वप्न रान प्रातहि परिखद रचि ॥
कहियँ एह सब करहु बहुरि इक[1] तंतु रहहु बचि ॥

१कुत्ते बिल्ली सहित. विजय२सहित ॥३१॥ कितनेक३कहते हैं. म्लेच्छों ने मुझ को४रक्त से बहुत सींचा है और५आर्यों का६रक्त ७युद्ध में कम बहा है; यदि यवनों से आधा लोही भी तुम्हारा बहता तो८तुम्हारे ही घर में रहता ९तो भी १०शीघ्र ११ अब यवनों के जाता हूं ॥३२॥ १२ सेना से १३ सेनापति को अधिक कहता है, तभी यवनों से तुम्हारे १४ मुर्दे बढेंगे ॥३३॥ १५ बलिदान देते हैं वहीं रहते हैं ॥३४॥ १६ गढ का स्वप्न में कहाहुआ सुनकर १७महारा-

हो सूत[1]सुत हम्मीर पिंहित[2] मातुल[3]गृह पोतहि[4] ॥
सो सुमिरन बिनु[5]सुद्धि हुव न मंतन यह होतहि ॥
यातैं तनूज१ नत्तिय२ अनुज३ संबोधियँ[6] इक१ जियन सब ॥
आखिलन वचैन इम उच्चरिय कुलज[7] रहैं तजि तात[8] कब॥३५॥
निखिल[9] निहोरत नृपहिं तनय लघु अजयसिंह तब ॥
किय बिन्नति करजोरि यहहि प्रभु इष्ट ततो अब ॥
मैं कुपुत्र यह मन्नि स्वामिसासन चढाइ सिर ॥
रनासन[10] भारतभरत कढौं खिल[11] आयु रहैं किर[12] ॥
यह मन्नि खुल्लि रानहु अररँ[13] कढ्ढि असह घमसान करि ॥
वंगरिन[14] हीन बीबिन बहुन बिरचि गयो दिवनारि[15] बरि ॥३६॥
इम कुमार अरिसिंह१ आदि बारह१२ नृपअंगज[16] ॥
पाइ पाइ नृपपक्ष गये लरि नाक[17] ढाहि गज ॥
उभय २ पौत्र बसु८ अनुज इमहि रचिरचि अति आहव ॥
गये त्रिदिव[18] अरिगंजि धीर बनि समय धराधव[19] ॥
हठ्ठु सु प्रवीर हिंगुलु१ बहुरि पैंरमानन[20] पीवत परयो ॥
वल्लान२समेत बीरन बहुन कलहँ[21] काय तिलतिल करयो॥३७॥

(दोहा)

लक्खनको वहपुत्र लघु, अजयसिंह अभिधान[22] ॥
वहु हनि निकस्यो आयुबल, वहु छत[23] लहि बलवान॥३८॥
रक्खि धरम जिहिं रन रहे, इम रानाँ तेईस २३ ॥

था के १पुत्र अरिसिंह का पुत्र हम्मीरसिंह ३ मामा के घर में ४ बालकपन में २छिपाहुआ था सो यह सलाह होते समय बिना५ खबर के स्मरण नहीं आया, इनमें से एक के जीवित रहने के लिये सबको ६ समझाया. ७ कुलवान् पुरुष ८पिता को छोड कर कब रहते हैं ॥३५॥ ९ सबको १० युद्ध से ११ बाकी की आयु, किल अर्थात् निश्चय है तो निकल जाऊंगा. १३कपाट खोलकर १४ वलय (चूडियों) बिना १५ अप्सरा को विवाह के स्वर्ग में गया ॥३६॥ राजा के १६पुत्र १७स्वर्ग गये १८स्वर्ग. समय समय पर १९राजा बन बन कर २०शत्रुओं के [illegible] को २१युद्ध में शरीर को ॥३७॥ २२नामवाला. बहुत २३घाव पाकर ॥३८॥

जवनराज लहि डुलभजय, सजवँ[1] चल्यो गढसीस ॥ ३९ ॥
है पौत्र[2] न केते कहत, हो पिहित सु हम्मीर ॥
इम रानाँ इकबीस२१ ही, विदित परे रन बीर ॥ ४० ॥
मही अनल गुन चंद्र १३३१ मित, जँहँ विक्रम सक जात ॥
कतल दुर्ग चित्तोर करि, लिय जवनेस लुभात ॥ ४१ ॥
वरस तीन[3]रन रचि विकृति२३, सिंचि रान निज सोन[3] ॥
गढ[4]सटै दे अँसु[5]गये, तदपि रह्यो तवतो न ॥ ४२ ॥

॥ मनोहरम् ॥

घायन त्रि[6]हायनलौं संतत[7] समर मंडि,
राखि रनथंभराज[8] सौंपन सम्हाह्यो नाँ ।
साह्यो हठ वप्पवंस[9] विरुद बढावनकौं,
रावनकौं रीढ[10]दै सिटावनकौं साह्यो नाँ ॥
जातजान्यौं[11] जननँ पै[12] सन न मुरात जान्यौं,
सतहि निवाह्यो अपकीरति विवाह्यो नाँ ।
देखो रान लक्खन अलावुद्दीन११ अंतक[13]कौं,
औनँ[14] दैन चाह्यो पर[15] रैन[16]१८३ दैन चाह्यो नाँ ॥४३॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे१ पञ्चमपराशौ वीतिहो
त्रवंशडाास १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-

१ शीघ्र ॥३९॥ कितने ही कहते हैं कि राणा के पौत्र नहीं थे, और हम्मीरसिंह २ गुप्त था इस तरह इक्कीस राणा होकर मरे ॥ ४०-४१ ॥ अपने ३ रक्त से ४गढ के बदले में ५प्राण देकर गये तो भी उस समय तो गढ नहीं रहा ॥ ४२ ॥ तीन ६ वर्ष तक ७ निरन्तर ८ रणस्तम्भ के राजा रत्नसिंह को शरण रखकर पीछा देना अङ्गीकार नहीं किया ९ बापा रावळ के वंशवाले ने १० पीठ देकर अर्थात् रावण से भी आगे बढगया ११ वंश को नष्ट होता जाना. १२ परंतु मरने से मन नहीं मोड़ा. १३यमराज को अपना१४ घर देदेना चाहा१५परंतु अपने शरणागत१६रत्नसिंह चहुवाण को देना नहीं चाहा ॥४३॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के पंचमराशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंश में उत्पन्न होनेवालों के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश औ

इयद्विहितव्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसमरसिंह १८१।७ स-
मयचरित्रे वेष्टितचित्रकूटदुर्गम्लेच्छराडलाबुद्दीन१ १वर्षत्रय३ नाली
यन्त्रमहारणरचन १ राणालक्ष्मणसिंहपट्टपकुमारारिसिंह १ हड्ड-
हिंगुलु १ क्षत्रियान्तरवल्लना३ऽऽदिवहिरागतदुर्गवीरवृन्दबहुवारसौ-
प्तिकसमाघातयवनेन्द्रसैन्यसंहरण २ म्लेच्छराजप्रगुणीकृतनव्यन
व्यभटवर्गविरचितमेदपाटविप्लवदुर्भिक्षप्रवर्तन ३श्रुतप्रजाफूत्कार-
ज्ञातरुद्धाऽन्नादिमार्गदरितदुर्गजनहाम्मीरिरत्नसिंह १८२ प्रत्यर्पणा-
र्थराणाविज्ञापन४प्रतिश्रुतशरणागतत्राणसुतद्वादशक १२ सोदरा
ष्टक८पौत्रजकुटक २ हड्डहिंगुलु १ क्षत्रियान्तरवल्लन २ समुपेत
राणालक्ष्मणसिंह १ शूरशय्याशयन ५ हाम्मिरिरत्नसिंह १८३ नि
स्सरण १ मरण २ संशयसूचन ६ तत्सङ्ग्रामयवनेन्द्रानुगतचतुरशी-
ति ८४ प्रमितार्यपृथ्वीपतिप्राणप्रहाण ७ शस्त्रशीर्णशरीरस्वायुर्बल
परीक्षितप्राणानसर्वानुजराणापुत्राऽजयसिंह १ निष्कसन ८ श्व १
बिडाला २ दिसमेतप्रघातितप्राणिवर्गयवनेन्द्रचित्रकूटदुर्गसमाक्रम-

वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र समर-
सिंह के समय के चरित्र में बादशाह अलाउद्दीन का चित्तोड़ को घेर कर ती-
न वर्ष पर्यन्त तोपों से महायुद्ध करना, राणा लक्ष्मणसिंह के पाटवी कुमार
अरिसिंह, हिंगुलु नामक हाडा और बल्लन नामक किसी क्षत्रिय आदि वीरों के स
मूह का बाहर निकल कर बहुत बार रातिवाह देकर यवनेन्द्र की सेना का
संहार करना, बादशाह का गुणवान् नवीन नवीन वीरों को रखकर मेवाड़
में युद्ध और दुर्भिक्ष करना, प्रजा की पुकार सुन कर अन्न आदि सामग्री के
मार्ग रुक जाने से डर कर गढ के लोगों का हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को सौं-
प देने की अर्ज करना, वह सुनकर शरणागत की रक्षा के अर्थ बारह पुत्र,
आठ भाई, दो पोते, हिंगुलु हाडा और बल्लन नामक किसी क्षत्रिय सहित
राणा लक्ष्मणसिंह का काम आना, हम्मीरसिंह के पुत्र रत्नसिंह के निकलने
अथवा मरने के संदेह की सूचना करना, उस संग्राम में यवनेन्द्र के साथ चौ-
रासी राजाओं के प्राणों का जाना, शस्त्रों से कटेहुए शरीर से आयुर्बल और
जीवन की परीक्षा करके राणा के सबसे छोटे पुत्र अजयसिंह का निकलना,
कुत्ते-बिल्ली आदि सहित प्राणियों को मारकर बादशाह का चित्तोड़गढ लेना

ख्या ९ मतान्तरकथितत्रयोविंशत्यै २३ कविंशत्य२१ न्यतरसङ्ख्या सम्मितराणाम्रणप्रकारप्रबोधन १० यवनराडलाउद्दीन११सराष्ट्र-चित्रकूटदुर्गसमादानसमयसंवत्सूचनं१२द्वितीयोऽमयूखः ॥ २ ॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मंडि अमल मेवारमैं, चढि इम गढ चित्तोर ॥
साहरह्यो तँहँ कतिसमय, जगहिं जनावत जोर ॥ १ ॥
रान सचिव जे तँहँ रहे, वे बनि साह अधीन ॥
पानिजोरि बुल्ले पिसुन, हुव जय कछु सुवहीन ॥ २ ॥
तक्कितक्कि हड्डन छिद्रतम, अनुसरि कपट असेस ॥
रैन१७५ बंग१७९ इतर२ रानके, दक्खिक्खये बहुदेस ॥ ३ ॥
बलि इन लुट्टन वाहिनी, पिल्ली ज्यानपनाह ॥
जब मंडनगढ लै सज्यो, समरसिंह१८१।७ हैसाह ॥४॥
हजरत दिल्ली जातही, विक्खत छिद्र बहोरि ॥
देस धनीके दक्खिहैं, छमँ देहैं कबछोरि ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि पिल्लिय खिजि साह दूत बुंदिय१ बंबावद२॥
कहिपठई तुम कुमति हड्ड तजिदेहु रानहद ॥
सु सुनि मंत्र थित समरसिंह१८१।७हररराज१८१।१ उभैरहुव॥
भट१ मंत्रिरन तँहँ भनिय भूप तजिदेहु रानभुव ॥
लखि देसकाल समुचित चलन राजनीति अनुसार रहि ॥

दूसरों के मत से कहेहुए तेईस और दूसरी संख्या से इक्कीस के प्रमाण रा-णाओं के मरने का ज्ञान कराना, बादशाह अलाउद्दीन का राज्य सहित चि-त्तोड़ लेने के संवत् की सूचना करने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से १४८ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ जुगल ॥ २ ॥ २ अत्यंत छिद्र देखकर ॥३॥ ३ पुनि ४ सेना ५ मांड लगढ ॥४॥ छिद्र ६देखकर७समर्थ हैं सो कब छोड देवेंगे ॥५॥ ८ भेजे ९उचित

साध्यहु न पंच५गुन संधि१मुख गुनं आश्रय६ इक लेहु गहि ॥६॥
भूप समर१८१।१ तँहँ भनिय इक२ मंडनगढ अप्पन ॥
पै अग्रज१८१।१ तर पुहवि बहु सु हुव रान बडप्पन ॥
वह दैबो किम उचित लई नृप रैन१७५ बंग१७९ लरि ॥
जो दैबो तब जाहि रहित व्है‍बो नृपता करि ॥
मंडन१६८महीप पहिले समय राज्य कियउ यह दुर्गरचि ॥
करि छल सु रान लिन्नौं कुहक सो हम दक्खिय समय सचि ॥ ७॥

(दोहा)

नागपाल जब गढगहिय, रचि बंबावद रैन१७५ ॥
देस इतर तस तब हुतहि, दब्बे मतिफल देन ॥ ८ ॥
नृप बंग१७९हु पीछै सु नय, दब्बिलये कति देस ॥
सुनत न्याय इम साह तो, आसेरहु दै एस ॥ ९ ॥

॥ षट्पात् ॥

बंबावद बस विदित रान जनपद अनेक रहि ॥
अग्रजको ईसत्व रंच बिगरैं न टेक रहि ॥
तोतो आश्रय तक्कि दुर्ग मंडन तजिदैहैं ॥
नतो जियन फल नाँहिं देस मरनहि भँजि देहैं ॥
चिरतैं रहेहु मंगन चहत हाकिम साह अपुब्ब हुव ॥
सौंपहु हमैंहु मेवारसब चित्तोरहु चहुवानभुव ॥ १० ॥
भट१ सचिवरन तँहँ भनिय नृपति अपनीहि निवेरहु ॥
यह मंडनगढ अप्पि साह सासन हित हेरहु ॥
व्है हरराज१८१।१ सहाय हाय बुंदिय जिन हारहु ॥

---

१ संधि आदि पांच गुण इस समय साध्य नहीं हैं इस कारण से एक छठा गुण (आश्रय) ही लेना चाहिये ॥ ६-७ ॥ २ उलटा फल देने को ॥८॥ ३आसेर गढ चहुवाणों का था सो हमको देवै ॥ ९ ॥४ देश ५ प्रभुता ६ मांडलगढ ७ सेवन करके अर्थात् मर कर ८ बहुत समय से ॥ १० ॥

12311

जिहिँ चित्तोर अजेय पाइ किय विजय प्रसारहु ॥
मन्नहु भलो न रहिबो सुरिरि अग्रज भीर विचारि अब ॥
जवनेस जोर जानहु जबर सहज अज्ज किय जेर सब ॥११॥
मंत्र सु तदपि न मन्नि भूप बिन्नति लिखि भेजिय ॥
इम मंडनगढ हानि किय रु सासन प्रस्थान किय ॥
अमल तत्थ करि अप्प हमहिँ सेवक गिनि तुट्ठहु ॥
अग्रजैं भुव अपनाइ रीति लुप्पि रु जिन रुट्ठहु ॥
रानाँहु पुब्ब नृप रैन१७५सौं लिय मंडनगढ पट्टलहि ॥
ताकीहु अवनि तब दब्बि तिहिँ राज्यकियउ सम न्याय रहि१२
निजजन सबन निबाह करत अप्पहु करुनाकरि ॥
इमहु कहुँक बस हुकम आशु कट्टहिँ भय अनुसरि ॥
बुल्ले इम लिखि बार स्वीय मंडनगढ तैं सब ॥
सो१ रु अरज२ सुनि साह कहिय परभुम्मि रहैं कब ॥
अग्रज नृपत्व जो इष्ट तब तो गत रानप्रदेस तजि ॥
भूपहि रहो वँ निज भुग्गि भुव सेस हमहु मँगैन सजि॥१३॥

(दोहा)

मंडनगढ किन्नौं अमल, जंपि यह रु जवनेस ॥
सेना पुनि हरराज१८१।१सिर, पिल्लिय तास प्रदेस ॥ १४ ॥
मंडनगढ दिन्नौं समुझि, चविय साह मनमाँहिँ ॥
हरराज१८१।१हु देहैं बरित, जुज्झन क्यौं हम जाँहिँ ॥१५॥
यह बिचारि करि दल अधिप, निजभट रुस्तुम१नाम ॥
सेना वह हरराज१८१।१सिर, पिल्ली बिजय प्रकाम ॥ १६॥
दिल्ली जावन अप्प दिग्गँ, बिजई उचित बिचारि ॥
चित्रकूटगढ त्रान चहि, किय प्रबंध हितकारि ॥ १७ ॥

॥ ११ ॥ १ त्याग (छोड़ा) २ प्रसन्न होओ मेरे ३ बड़े भाई की ॥ १२ ॥ ४ अब ॥ १३-१४ ॥ मन में ५कहा ६ डरकर ॥ १५-१६ ॥ ७ दिग्विजय करने वाला ८ रक्षा ॥ १७ ॥

अहमदखान१ पठान अरु, प्रथितं अज्ज प्रामार२॥
स्वर्णगिरि७ चहुवान३ सह, रक्खे गढ रखवार ॥ १८ ॥
करि प्रसाद तिनप्रति कहिय, तुम इत्थन चित्तोर ॥
मेवारहिँ रक्खहु मुदित, जितातित दव्बहु जोर ॥ १९ ॥
इन बसकरि चित्तोर इम, बंबावद बँल पिल्लि ॥
पत्तो दिल्लिय साह पुनि, क्रमत अर्ज्ज अहि किल्लि ॥ २० ॥
साहकटक हरराज१८१।१सिर, लै रुस्तुम१ बह्लीम२ ॥
प्रस्थित सुनि बुंदियपतिहु, सत्वर पत्तो सीम ॥ २१ ॥
हरराज१८१।१हु अनुज१८१।७हिँ कहिय, हँमरी होहि सु होहि ॥
अप्प लाल बुंदियअधिप, सत्थ न खोवहु सोहि ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

सिव१ हरि२ चंडिय३ सौंह अप्प४सह जनक५सौंह अति ॥
रुट्ठि दियउ हरराज१८१।१ तुट्ठि मरनहिँ गिनैन तति ॥
पानि जोरि पयप्रनमि हानि निश्चितकहि हड्डन ॥
कहिय मरहु गहि कलह अप्प१८१।१सानुज१८१।७असि१अड्डन२॥
जीवत दुँ२घाँहिँ प्रभुता१ रु जस२ धोइ स्वसहिँ धमनौं धमत ॥
प्रसभहि गह्यो सु जवनेस प्रभु सो न जतनपुब्बहु समत ॥२३॥
समरसिंह१८१।७ इम अक्खि जिट्ठ१८१।१ नासीर भयउ जब ॥
निश्चित मरन निहारि तुमुल हरराज१८१।१रचिय तब ॥
पुर मंडन ढिग परत खान रुस्तुम१ उद्धत खल ॥

१ प्रसिद्ध २ सोनगिरे ॥ १८-१९ ॥ ३ सेना ४ भेजकर ५ पहुंचा ६ आर्यरूपी ७ सर्प को कील कर ॥ २० ॥ ८ प्रस्थान करना सुन कर ९ शीघ्र सीमा पर पहुंचा ॥ २१ ॥ १० हमारी तो जो गति होनी होगी सो होगी परंतु हे लाल! हमारे साथ तुम बुंदी को मत खोओ ॥ २२ ॥ ११ छोटे भाई सहित १२ दोनों ओर १३ जीवसाक्षिणी नाडी चलती है जब तक, अथवा लुहार की धौंकनी के समान श्वास लेतेहुए सुखेंगे १४ यत्न पूर्वक नहीं मिटेगा ॥ २३ ॥ १५ ज्येष्ठमास का १६ सूर्य १७ घोर संग्राम

इन सौप्तिक[1] दिय असह वहुल[2] धाँडिय[3] मिच्छन दल ॥
कलविंक[4] निकर[5] मिच ठेलि[6] कल्ल प्रवलगाह निधरक परिय ॥
पिक्खहु महीप अग्रज प्रथल काँलि[7] अपुब्ब[8] समर इमि सु करिय ॥२४॥
रुस्तुमखान१सु राति[9] आत दल हुव अचानक ॥
बचि जिमतिम टरि[10] विकल तरजि खिल्लि भट रनतानक[11] ॥
मुरि सम्मुह पयमाहि धप्पि जुट्टिय धारांधर[12] ॥
भ्राता दुहु२न सु भिटि किय निजवल कारांधर[13] ॥
भजि पुनि कितेहि जवनज[14] सुभट सुनि रुस्तुम पकरयो सजव[15] ॥
एकत्थ[16] मिलि रु जुज्झिय असह दहन हड्ड वन धारँदव[17] ॥२५॥
कवच दारि[18] असि[19] कढत ताँति सभ्भन[20] गति तिच्छन[21] ॥
मारत अज्ज[22]१न मिच्छ[23]२ माँडि[24] अज्ज१हु तिम मिच्छन२ ॥
गजन सुंडि१ कटि गिरत खंध२ वाजिन वपु खुल्लत ॥
फुल्लत घातन फाँक हक्कि जातन[25] भट हुल्लत ॥
गातन[26] दुहुओर तृनम्मित गिनत आत न वीर उफान मन ॥
लज्ज१रु सनेह भ्रातन लक्खहु रंच भुलात न कुलहि रन ॥२६॥

॥ दोहा ॥

१रतिवाह२बहुत सेना को३काटा४ चिड़ियों के ५ समूह में ६कलल (हेला)पड़े इसप्रकार ७ युद्ध ८ अपूर्व ॥ २४ ॥ ९ रात्रि में १० भागी के११ युद्ध फैलानेवाले दौड़कर १२ खड्ग की वृष्टि की १३ कैद करलिया १४ यवन १५ शीघ्र १६ एकत्र. हाडों रूपी वन को जलाने के लिये असह १७ अग्नि होकर ॥ २५ ॥ कवच को १८ विदारण करके २१ तीक्ष्ण १९ खड्ग २० साबुन में ताँत निकले इस प्रकार निकलते हैं. २२ आर्यों को २३ म्लेच्छ मारते हैं और इसीप्रकार म्लेच्छों को आर्यलोक २४ मसल कर मारते हैं. हाथियों की सूँडें कट कर घोड़े के कंधों पर गिरती हैं सो उनके शरीरों को शोभा देती हैं; और घावों से फाँकें फूलती हैं तो भी ललकार कर अथवा वीर लोक आगे बढ़ कर वीरों के २५ समूह को पेलते हैं. दोनों ओर के वीर अपने २६शरीरों को तृण के समान गिनते हैं और वीर रस का उफान मन में नहीं समाता है. बुन्दी और बम्बावदा के राजा दोनों भाइयों की लज्जा और उनके स्नेह को देखो कि युद्ध में अपने कुल को जरा भी नहीं भूलते हैं ॥ २६-२७ ॥

भान न इत१ उत२को भयो, समय रत्ति संग्राम ॥
माँहिँ माँहिँ कटि बहु मरत, इत१ उत२ जुरि उद्दाम ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

रुस्तुम१कोँ सुनि रुद्ध भीत आलोचि साहभय ॥
सहँसबीस२०००० दल समिटि जवन मुररे मंडतजय ॥
उदित इतेबिच अंक पार१ निज२ चक्क प्रकासन ॥
कलि पिक्खन बलि कुतुक बिघ्नतम निघ्न बिनासन ॥
गन घूक१ चकित२ डरि दुरिगये भये प्रफुल्लित कोक१भट॥
मुख१कंज२बिकसि जुग्गिनि१मिलिग बीर२करतहुवबीरबट ॥२८॥
जँहँ उद्धत इक१ जवन द्विरद आरूढ आइ द्रुत ॥
हनिय भूप हरराज १८।१।१ अंग सरपरँसर अद्भुत ॥
गज१हु जाइ नृप२ गहिय हड्ड हनि तस आरोहक१ ॥
कुंजरसुंडिय२ कट्टि मेरिदिन्नो परमोहँक ॥
तस दंतघात घुम्मत तुमुल्ल होत उदित छ६घटिय मिहिर॥
इक१मिच्छ कियउ दै असि अलग सय१समेत हरराज१८।१।१सिर।२१
रारि गिरत हरराज १८।१।१ लज्जि यह अनिय१ लरक्किय ॥
जिम मिच्छहु अति जोर सोर घन अग्ग सरक्किय ॥
रुस्तुम१ तिन वह रुद्ध लरत १मरत२हु छुराइलिय ॥
इतरहु खट६ नृप अनुज हत्थ१८।१।२ मुख मारि हाइ लिय ॥
नृपसमरसिंह१८।१।७दूजी२अनिय२ हेति१ अनल२अरि१करतहुत२

१कैद हुआ सुनकर बादशाह का भय२विचार कर३सूर्य. पराई और अपनी४ सेना का प्रकाश करने को. पुनि ५ युद्ध का कौतुक देखने और अंधेरे रूपी बडे विघ्न का ६विनाश करने के लिये. उल्लूक और डरनेवाले लोक डर कर छिप गये, चकवे और वीर प्रफुल्लित हुए. वीरों के मुख और कमल विकसित हुए और जोगिनी व बावन वीर मिल कर वीरों के मार्ग करनेलगे ॥ २८ ॥ ७ तीर पर तीर मार कर ८ सवार को ९ हाथी की सूंड को १० शत्रुओं को मूर्छा देनेवाले को ११ युद्ध में १२ सूर्य. हाथ १३ सहित ॥ २९ ॥ १४भागी १५ कैदी रुस्तम को छुडालिया १६ आदि १७ शस्त्रों रूपी १८ अग्नि में शत्रुओं को१९ होम करता था उसके पास

दल*सेस संग तस हुव ×दरित जपि नृप हत छ६अनुजन जुत॥३०॥
एहु अनिय दुव२ अरिन इक्क१बनि तब जय आसय ॥
+सैन्यप रुस्तुम१ सहित गज्जि गरदाइ पासगय ॥
नृप समर१८१७हु निज नियति आयु पूरन तब अहरि ॥
अर्व्वन वीच उठाइ कतल किय खल अचिज्ज करि ॥
रुस्तुम१ समेत हनि दै रसिक पलचारन लोहित१ पललँ२॥
समरेस १८१७पत्त वीरन सुगति वीर न खुल्लिय बिरुद१बल२॥३१॥

॥ दोहा ॥

सुत्तो जिम रनभुव समर १८१७, रीति वहहु नृपराम २०२ ॥
सुनहु पारि रुस्तुम१ सहित, किय अपुब्ब जिहिं काम ॥ ३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

रारिगिरत हरराज १८११ अनुज खट६सहित अचानक ॥
इतके सेस अनीक नृपहि पिक्ख्यो बल तानक ॥
समरसिंह१८१७ जँहँ सज्ज प्रधन मंडत बुंदियपति ॥
इक्क१ सु लखि अवलंब गये तँहँ कहि अग्रजगति ॥
मिच्छन अनीहु दुव२इक्क१मिलि सख्र बरासि रुस्तुम१सहित ।
हक्कारि नृपहिं ढिगआतहुव जय१ जुज्झन२उद्धत अहित ॥३३॥
सोलंखिय नृप सुभट करन१ संकर२ अभिधाकरि ॥
इन दोउ२न बढि अग्ग लियउ बहलीम१ निकट लरि ॥
इक१के असि१ आघात टोप२कट्टिय अति अद्भुत ॥
अपर२ तोत्र१ लगि असह सत्रु२ कछु भिदिय वक्र३जुत ॥

---

* बाकी की सेना + डरकर उसके संग होकर छः भाइयों सहित हरराज राजा का माराजाना कहा ॥३०॥ + सेनापति१ घेर कर २ भाग्य के अनुसार ३ स्वीकार करके ४ घोड़ों को ५ आश्चर्यवाला कार्य करके ६ रुधिर ७ मांस देकर वह वीर वीरों की गति को गया और अपने विरुद और बल को नहीं भूला ॥ ३१ ॥ ८ हे राजा रामसिंह ॥ ३२ ॥ ९ सेना ने १० विस्तार करनेवाले ११ युद्ध १२ आधार १३ ललकार कर. उद्धत१४ शत्रु से ॥३३ ॥ १५ नामवरी करके १६ दूसरे का १७ भाला ॥ ३४ ॥

रोसन१ रहीम२ जँहँ जवन जुग२ रुस्तुमखान १ सहायरचि ।
दलमथत मारि चालुक्क दुरहुँन बढिय अग्ग बल आयुबचि ॥३४॥
भूपसुभट भगवंतसिंह३ भट्टिय अग्रेसर ॥
ठहँ जवनन जुग२ हनि रु तक्कि रुस्तुम१ ढिग सत्वर ॥
इक्क खानआकबत३ नाम मिच्छहिँ हनि निर्भय ॥
कुंजर४ तास जकाइ गज्जि तोमर अमात गय ॥
बारन बढाइ रुस्तुम१ तबहि कलहरुप्पि अद्भुत करिय ॥
कट्टिय हरोल अरु सर निकर भट्टिय३ कनपट्टिय भरिय ॥३५॥
भट्टिय३ परतहि भूप तरल डपटाइ तुरंगम ॥
तकि रुस्तुम१ उर तोत्र दियउ कढि पार गयउ दम ॥
तिमहनि हैदर२ कुतब३ खुरम४ फीरोज५ बहादुर६ ॥
पीवत जवनन मान धरिय नृप समर१८१।७ समरधुर ॥
इक१ मिच्छ नाममोमिन१ उहाँ दर्पटि खग्ग आघात दिय ॥
सिर सिवहिँ अप्पि बुंदिय सुपहु लग्गत जिहिँ सुरलोकलिय॥३६॥
काका सिंहन१८०।३केर तनय घुग्घुल १८१ मवीर तँहँ ॥
नृपमारक लखि निकट कट्टि द्वैरकिय मोमिन१ कँहँ ॥
मीरन२ सम्मन३ खुरम ४ आदि बानैत वीस२० अरि ॥
संहरि घुग्घुल १८१ सहज बसिय सुरपुर अच्छरि बरि ॥
बारहहजार१२०००डरिमिच्छबलदुव२भ्रातनपरिअयुत१००००दल।
भजि खिलअनीक आवतभये बंबाबँद१ बुंदिय बिकल ॥३७॥

॥ दोहा ॥

ताही रन मुक्कल१८१तनय, काका मोहन १८०।११केर ॥
अट्ठ८ जवन हनि उब्बरयो, बँहि अट्ठ८हि छत बेर ॥३८ ॥

१ आकबतखाँ नामक २ गिराकर भाला फिराता हुआ गया. बाणों का ३ समूह ॥ ३५ ॥ ४ चपल घोड़े को ५ भाला ६ श्वास निकल गया. समरसिंह ने ७ युद्ध का धुर धारण किया ८ दौड़ कर ॥ ३६ ॥ राजा के ९ मारनेवाले को १० बाकी सेना भाग कर ॥ ३७ ॥ ११ शरीर पर आठ १२ घाव ११ पाकर

सम¹ निजराज्यहिँ दै सलिलँ², निरखहु रामँ³२०२।४नरेस ॥
अग्रज भार बटाइ इम, सँमर परयो समरेस१८१।७ ॥ ३९ ॥
नरेस१मरेस२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
ही सबठाम समान यह, राजनघर कुलरीति ॥
सोहि मिटत आये सरकि, जवन अधर्मिन जीति ॥ ४० ॥
तदपि रही चित्तोर१ अरु, बुंदिय२पुर यह बात ॥
औरनतैं बढिकैं अधिक, जग जस अबहु न जात ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

इम बंबावद अत्थ भ्रात नव९ परिग जातभुव ॥
हडनन्नृप हरराज१८१।१हत्थ१८१।२ पुनि अनुज सत्थहुव ॥
बहुरि भोज१८१।३तिम बग्घ१८१।४बाल१८१।५चाहड़१८१।६उद्धतबल
समरसिंह१८१।७बुंदीस सहित गोबिंद१८१।८खंडि खल ॥
नृप देव१८०तनय ए अट्ठ८अरु सिंहन१८०।१सुत घुग्घुल१८१सहित
नव९भ्रात परिगँ करि जस नियँत इम आहव संहरि अहितँ ॥४२॥

(दोहा)

बल खिल मिच्छन लहि बिजय, जितजित अमल जमाइ ॥
रानमुलक जो दबिरह्यो, अखिल लयो अपनाइ ॥ ४३ ॥
अवसरलखि इतरहु अरिन, दब्बे निजनिज देस ॥
पहुहल्लुव१८२।१ बसपरगनाँ उब्बरि खट६ अवसेस ॥ ४४ ॥

षट्पात् ॥

बंबावदगढ१ बिदित बहुरि बेगम२ बिंझोलिय३ ॥
भैंसरोर४ रैंनगढ५ सहित पत्तन सिंघोलिय६ ॥

॥ ३८ ॥ १ बराबर के अपने राज्य को २ पानी देकर ३ हे राजा रामसिंह! देखो बडे भाई का भार बँटाकर समरसिंह ४ युद्ध में गिरा ॥ ३९–४०–४१ ॥ ५ गिरे ६ निश्चय ७ शत्रुओं को ॥ ४२ ॥ ८ बाकी के म्लेच्छों की सेना में ॥ ४३–४४ ॥

इन प्रभुता लहि अधिप बन्यौं हल्लुव१८२।१ बंबावद ॥
बयलहि तेरह१३ बरस हड्ड रक्खन स्वधर्महद ॥
हुव सज्ज तदपि मिच्छन हनन बहु परिकर रक्ख्यो बरजि ॥
नृपराम२०२लखहुकुलरीति निज लरत१मरत२रहतनलरजि॥४५॥

(दोहा.)

समरसिंह१८१।७नृप जनम सक,त्रि नव अर्क१२९३ मित तत्थ॥
बुंदिय हायनसप्त७ बय, पाई संगर पत्थ ॥ ४६ ॥
रवि गुन भू१३१२मित सक रच्यो, निखिल किरातन नास॥
किन्नौं ख नयन त्रि ससि१३२०क्रम,बुंदी बिस्तर बास ॥४७॥
सक रस दृग गुन ससि१३२६समय, पिक्खि उचितबय भूप ॥
पुत्र३न हित बंटिय पुहवि, रचि बिभाग अनुरूप ॥ ४८ ॥
मुनि दृग गुन ससि१३२७ सक प्रमिति, जँहँ मंडनगढ जित्ति ॥
गंजि लयो चिरतैं गयो, करि उदार जगकित्ति ॥ ४९ ॥
जैत्रसिंह१८२।३ समरेस१८१।७सुत, या१३२७हीसमय अधीन ॥
कौटिक[1] भिल्ल बिनासकरि, कोटा नवपुर कीन ॥ ५० ॥
लयो मुहूरत इष्टलखि, तिथि माधव[2]२ सित[3] तीज३ ॥
कोटा बसन प्रवृत्तिकिय, बद्दि किरातन बीज ॥ ५१ ॥
रचि हरराज१८१।१ सहाय रन, संहरि जवन असेस ॥
सक रद गुन ससि१३३२सुक्र[4] सित, स्वर्ग गयउ समरेस१८१।१
समरसिंह१८१।७ रन मृतसुनत, सजि बिचित्र शृंगार ॥
तीन३हि रानिन सत्थ तब, छिप्र[5] कियउ बपु[6] छार[7] ॥ ५३ ॥
पहिली१दूजी२ पंचमी५, इम हरराज१८१।१ उपेत[8] ॥

॥४५-४६-४७-४८-४९ ॥ १ कोट्या नामक भील का नाश करके ॥ ५० ॥ २ वैशाख ३ सुदि ॥ ५१ ॥ ४ जेठ सुदि पक्ष में ॥ ५२ ॥ ५ शीघ्र ६ शरीर को ७ भस्मकिया ॥ ५३ ॥ ८ सहित

कार्य तीन३राँनिन कियउ, हुते पावक पतिहेत ॥ ५४ ॥
हत्था१८१।१दिक घुग्घुल१८१ सहित, सत्त७हि बंधुन संग ॥
जाँया पुनि निजनिज जरी, इक१इक१।७ प्रेम उमंग ॥ ५५ ॥
वरस दोय२जुतबीस२२ वय, इत लहि नियति अधीन ॥
नरपाल१८२सु बुंदियन्टपति, हुव नृपतागुन हीन ॥ ५६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पंचम ५ राशौ वीति होत्रचण्डासि १ वंश्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबम्बावदेश १ बुन्दीश२हरराज१८१।१ समरसिंह १८१।७ भ्रातृयुग २ चरित्रे समाराधितयवनेन्द्रराणासचिववर्गबुन्दी १ बम्बावद २ पैशून्यप्रवर्त्तन १ यवनेन्द्रानुमतत्यक्तमण्डनदुर्गनरेन्द्रसमरसिंह १८१।७ स्वाग्रजहरराज १८१।१ सहायस्वीकरण२मण्डनदुर्गन्यस्तस्वरक्षकयवनेन्द्रहरराजा१८१।१ ऽऽधीनराणादेशप्रत्याक्रमणार्थरुस्तुम १ दण्डनायकपृतनाप्रेषण ३ यवनाहमद १ क्षत्रियप्रमारान्तर २ चाहुवाणसौवर्णगिर ३ वशीकृतचित्रकूटदुर्गयवनेन्द्रदिल्लीगमन ४ श्रुतज्येष्ठभ्रातृदेशोजिहीं-

---

१शरीर२होम३अग्नि में ४ अपनी अपनी स्त्रियें ॥ ५५ ॥ ५ भाग्य के बल से राजापन लिया परंतु राजा के गुणों से हीन था॥५६॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंशजों के वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बम्बावदा के पति हरराज और बुन्दी के पति समरसिंह दोनों भ्राताओं के चरित्र में आराधन किये हुए बादशाह से राणा के सचिवों का बुन्दी और बम्बावदा की चुगली करना, यवनेन्द्र के मतानुसार मांडलगढ छोड कर राजा समरसिंहका अपने बडे भाई हरराज की सहायता स्वीकार करना, मांडलगढ में अपने रक्षक रख कर बादशाह का हरराज के आधीनवाला राणा का देश पीछा लेने के लिये सेनापति रुस्तुम के साथ सेना भेजना, यवन अहमद, कोई प्रमार क्षत्रिय और सोनगिरा चहुवाण इन के वश में चीतोड़ का गढ करके बादशाह का दिल्ली जाना, अपने बडे भाई के देश को जीतने की इच्छावाले बहलीम और रुस्तु

तब तात कुमर अरिसिंहसुत सुतबारह १२ सोदरबपुउर ॥
सुरलोकगयउ पालन सरन उज्झि जवन संगर असुन ॥२३॥

॥ दोहा ॥

तनय बच्यो लघु तेरहम १३ अजयसिंह अभिधान ॥
काका जो तव कैलपुर, गहि रु कहावत रान ॥ २४ ॥
लुट्टत पुरचित्तोर लग, ताहि न जानत तात ॥
कहैं कुमर अरिसिंह के, विदित हुती मम बात ॥ २५ ॥
अजयसिंह मामौं आहि, जियत तोहि पतिजानि ॥
भूपमानतजि सेटमयो, महत भाग्यफल मानि ॥ २६ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम हम्मीरहिं उचित सिक्खवँ आगम तिहिं बासव ॥
अजयसिंहकहँ आनि दय तत्थहि मिलाइ कुवर ॥
मातुलकुल समुझाइ अनुग काका अजिह्मउर ॥
भ्रातबहू १ रु भतीज २ अनत लै गो सु कैलपुर ॥
सब नय सिखाइ महद्व्यय सिसुहिं करि ठेवय पृतना प्रचुरकिय ॥
जिहिं हनि प्रमार१ संभर२ जवन३ लहि अवसर चित्तोर लिय ॥२७॥

॥ दोहा ॥

सूर भतीजहिं प्रभुसमुझि, दै सहा रु उदास ॥
भवतजि भाव विरक्त भजि, अप्प लह्यो अविनास ॥ २८ ॥
नृपतिरामसर२० अपिक्खहु निस्चैन, कलिमज्झहु क्रूर कर्म ॥

---

१ छोड़कर २ प्राणों को ॥ २३ ॥ अरिसिंह के कहने से यह बात मैं ३ जानता था ॥ २४ ॥ २५ ॥ मेरे कहने से अजयसिंह तुमको ४ आस्तिक जानकर ५ राजापन का मान छोड़कर ६ तुम्हारा उमराव होगया है ॥ २६ ॥ ७ हम्मीर ८ मामा के कुल को समझाया कि काका (अजयसिंह) ९ सेवक होगया है और वह १० सरल हृदयवाला है यह कहकर बड़े भाई की बहू और भतीजे को ११ नम्रता पूर्वक कैलवाड़े लेगया १२ नीति १३ खरच करके १४ बहुत १५ सेना इकट्ठी करके ॥ २७ ॥ १६ स्वामि समझकर १७ संसार को छोड़कर १८ विरक्त होकर १९ मोक्ष प्राप्त हुआ ॥ २८ ॥ २० हे राजा रामसिंह! २१ निश्चय है कलियुग में भी २२

निकटहि[1] यह भासंत निलय[2], स्वक[3] मातुलगृह सोहि ॥
इहाँ कहत हुव आगमन, कबहु राजसुनकोहि ॥ १९ ॥
अरिसिंहहि तसनाम अरु, तातहु[4] लक्खन तास ॥
मातुलकुल १ अरु जननि२ मम, जानत मेदहु जास ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

अरिसिंह सु यँहँ आत बिक्खि[5] जननी मम अतिबल ॥
रहि कतिदिन तिहिं परनि हुतहि गो सुनि सत्रुनदल ॥
बीजरूपसौं प्रबिसि जहाँ चाँदनी जाठर[6] ॥
प्रसवकालगतिपाइ तनुज मैं हुव दरिद्रतर[7] ॥
सो अब बिताइ पंच ५ छ ६ सम्मा भो इतो रु सुहि जन्मभुव ॥
रजमूढ अबहु जानत रहत धारक[8] ममकुल यहहि ध्रुव ॥२१॥

॥ दोहा ॥

केवल जानौं मातृकुल[9], इतर[10] न बोध्य उदंत ॥
जानत ह्वै हैं जनकको[11], सदनहु[12] जननि सुमंत[13] ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सोदासु[14] सुनि प्रसन्न धाइ हम्मीर अंक[15] धरि ॥
आक्खिय तुमहि अधीस कुलहि रक्खन अलपनकरि ॥
रक्खि सरन नृपरतन १८३।१ सुरारि भवदीय[16] पितामह[17] ॥
चित्रकूट अधिराज रानलक्खन १ अतिआग्रह ॥

१दीखता है २घर ३ मामा का यही घर है यहां सुनते हैं कि किसी राजपुत्र का आना हुआ था॥१९॥ उनके ४पिता का नाम भी लक्ष्मणसिंह था॥२०॥ मेरी माता को अत्यन्त बलवान् ५ देखकर चन्दानी के ६ उदर में वीर्य रूप से प्रवेश करके ७ अत्यन्त दरिद्री. पांच छः वर्ष बिताकर इतना बडा हुआ हूं और यही मेरी जन्मभूमि है मैं दुःख के कारण और मूर्खता से अब भी यही जानता हूं कि मुझको ८ धारण करनेवाला यही कुल है ॥ २१ ॥ ९ माता के कुल को जानता हूं १० अन्य वृत्तान्त का ज्ञान नहीं है ११ पिता के १२ घर को १३ बुद्धिमान् है सो माता जानती होगी ॥२२॥ १४ वह सोदा बारहठ १५ गोद में लेलिया १६ आपके १७ दादा ने १८स्वामि

दोहा ॥

बारू तिनको बारहठ, दुर्भग मैं सोदाहु ॥
भीरु स्वामि सहचर नभो, जिपतग्धा कहि जाहु ॥ १२ ॥
अगजात कछुकम्म इत, भो आवन मगभुल्लि ॥
मगबोधक सिसु तुम मिलत, पायो प्रमद प्रफुल्लि ॥ १३ ॥
सोदाके इम वचनसुनि, मुदित उट्टि हम्मीर ॥
जानतहो निजजन्म जिम, बत्थन मिंल्यो बीर ॥ १४ ॥
वावाकहि गौरव बिहित, वर आसन बैठारि ॥
बुल्लयो जोकछु बोधबिनु, हुव सु छमहु हित हारि ॥ १५ ॥

षट्पात् ॥

जानतहोइ अजान बचन ऐसे सुनि बारुव ॥
जंपिय तैं सिसु जन्म धरिय खत्रिय बंसहि धुव ॥
तदपि नाम१ कुल२जाति३ कहहु प्रसरन निज कित्तिय ॥
बाल्लवयहु तैं बीर ज्वलित जसकरि जगजित्तिय ॥
वनि मूढ सोहु प्रति बारहठ जो पुच्छी सु अजानजिम ॥
चित्तोरटारि सब हुव चवतै अप्प सुनहु मम मूल इम ॥१६॥

पादाकुलकम् ॥ ॥

देस एह वन१गिरि२करि दुर्गम, मितमित इत भुव वपन मनोरम ॥
हल वाहक इत जे रजपूतहु, वपन मिलैं न तिनहु वसुधा बहु ॥१७॥

दोहा ॥

निजनिजखेतनके निकट, अप्पन अप्पन ऐंन ॥
रचि इतके कर्षुक रहत, च्यागि४ हु वरन अचैन ॥ १८ ॥

१ दुर्भागी शोदा शाखा का चारण ॥ १२ ॥ २ रस्ता बतानेवा...रना बारू ने बांध (गाढ) भरके ३ मिला ॥ १४ ॥ ४ बडप्पन करके ॥ १५ ...के हकदार। को कहा ॥ १६ ॥ यह देश बन और पर्वतों से दुर्गम है इसकारण ...नगये हों ॥ ६ ॥ थोड़ी भूमि ७ बीज बोने को सुन्दर मिलती है यहां जिन...रण को १८ शीघ्र नेवाले हैं उनको बीज बोने के लिये अधिक भूमि नहीं [...पन. देश में राज्य करने घर९खेतीकरनेवाले ॥१८॥

लक्खनगार तनूजलघु, अजयसिंह जयआस ॥
अधिक पाइ छत्ते स्करि असि, गो करि बहुत बिनास ॥ १ ॥
जातें ढिग रु प्रतीच्य जग, गूडवार भुव गात ॥
कैलपुरसु जिहिं आक्रम्यौं, पुरवासिन हित पात ॥ २ ॥
साहअसन्त मेवारसव, स्वामि अहित साह्योहि ॥
तदपि कैलपुर जनन[३] वह, अजयसिंह चाह्योहि ॥ ३ ॥

पादाकुलकम् ॥

जो प्रमार१संभर२जवन३न जुरि, काउक गोप[४] तंत्र[५] किय अंकुरि[६] ॥
गुडवार हाकिम वह गोपहु, वस तस है औरो लघु पुर बहु ॥ ४ ॥
पत्ति पचास ७ तास तँह पाये, अजयसिंह तिन्ह आप उठाये ॥
पुर गिरि१वन२दुर्गम यह पावउ, बसि तँह जनपद[८] डमर[९] बढायउ ॥ ५ ॥
चित्रकूटलग लूट प्रचारिय, मिच्छहु अजयसिंह बहु मारिय ॥
सौदा[१०] तँहँ बारू संबोधिय[११], सुनि भतीज रानपद रोधयँ[१२] ॥ ६ ॥
अग्रजसुत चंद्रानीऔरस, वसत बाल मातुलगृह[१३] परबस ॥
है तस भीर उचित जन जोरहिं, तिहिं नृप करि लैबो चितोरहिं ॥ ७ ॥

षट्पात् ॥

बारू चारन वचन सुधासम अजयसिंह सुनि ॥
जान्यों नियत भतीज बंस तनुज पट्टप पुनि ॥
तस मातुलगृह तबहि बेगपठयो सुहि बारुव[१४] ॥
सज्ज[१५]जाइ सौदासु[१६] उचित १ अनुचित २ इक्खतहुव ॥

१घाव पाकर ॥१॥ २लिया ॥२॥ कैलवाड़ा के ३लोगों ने ॥ ३ ॥ चित्तोड़ के रक्षक प्रमार, सोनगरे चहुवाण और यवनों ने वह कैलवाड़ा नगर एक ४गोपनामक; अथवा ग्वाले के ५वश में ६रूढ़ होकर करादिया ॥४॥ ७पैदल ८देश में ९उपद्रव (लूटमार) मचाया ॥५॥ १०सौदा बारहठ शाखा के चारण बारू ने ११समझाया कि भतीजे (बड़े भाई अरिसिंह के पुत्र राज्य के हकदार) को भूलकर राणा के पद को १२रोका है; अर्थात् तुम राणा बनगये हो ॥ ६ ॥ १३मामा के घर ॥ ७ ॥ १४उसी बारू नामक चारण को १५शीघ्र १६उस सौदा बारहठ ने हम्मीरसिंह चित्तोड़ का राज्य करने

कुमारचैत्रलगेणोलीदङ्गभाविरणमरणख्यापन १९ जनकवैरग्रा-
लकहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ प्रख्यातगैपालिकचालुकसमलार्थ-
स्वविक्रमविजितटोडापुरप्रत्यर्पण २० टोङ्कपुरविजेतृहड्डेशहम्मीर १
हल्लू २ शैशोदिहम्मीर ३ प्रातिहारहम्मीर ४ राष्ट्रकूटमल्लिनाथ ५
कूर्मोद्धरण ६ चालुकसमल ७ प्रामारगङ्गसेन ८ दिल्लीशयवनेन्द्र
तुगलक ३ गयासुद्दीन १४१९ समकालीनत्वसूचन २१ प्रबुद्धजनप्र-
सन्नादिल्लीशगयासुद्दीन १४ सचिवबणिक्पुञ्जराजसुगमशब्दसाध-
कसारस्वतसूत्रटीकानिर्माण २२ प्राक्प्रतिभटीभूतदिकूशासक-
दिल्लीशसचिवयवनगणबहुकृत्वोदिल्लीसैन्यपराजयन २३ बुन्दीनरे-
न्द्रहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ पट्टपराजकुमारवरसिंह १८४।१ शैशो-
दी १८४।१ कौर्मी १८४।२ प्रामारी १८४।३ पत्नीत्रय ३ भाविपा-
णिपीडन २४ सूचनं षष्ठो ६ मयूखः ॥ ६ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५३ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हम्मीरसिंह के पुत्र चेत्रसिंह का गणोली नगर में आगे होनेवाले युद्ध में मारेजाने की सूचना करना, पिता का वैर लेनेवाले हड्डाधिराज हम्मीरसिंह का नम्र होनेवाले सोलंखी गोपाल के पुत्र सातल के अर्थ अपने पराक्रम से विजय कियेहुए टोडापुर को पीछा देना, टोंकपुर के विजय करनेवाले हाडा हम्मीर१ हल्लू२ सीसोदिया हम्मीरसिंह३ पड़िहार हम्मीरसिंह४ राठोड़ मल्लिनाथ५ कछवाहा उद्धरण ६ सोलंखी सातल ७ प्रामार गङ्गसेन ८ दिल्ली के पति बादशाह तुगलक गयासुद्दीन९ इनसबका एक समय में होने की सूचना करना, पण्डितों से प्रसन्न होनेवाले दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन के सचिव बनिया पुञ्जराज का सारस्वत के सूत्रों पर शब्दसाधन में सुगम टीका बनाना, पहिले से शत्रु बने हुए सूबेदारों का बादशाह के सचिव और यवनों की सेना को बहुत बार पराजय करना, बुन्दीनरेन्द्र हड्डाधिराज हम्मीर के पाटवी राजकुमार वरसिंह का सीसोदिनी कछवाही और प्रामारी इन तीन स्त्रियों से आगे होनेवाले विवाहों की सूचना करने का छठा मयूख समाप्त हुआ॥६॥

आदि से एक सौ तिरपन मयूख हुए ॥ १५३ ॥

ष्क ४ हड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ सढौकन १ सारल्य २ तुष्टिप्रति ग्राहितकैथोनिपुरसृष्टमन्तुतोमरस्वकीयसेवकीकरण ११ पराजित प्रामारडोडहरराजतिरस्कृतौचित्यहम्मीर १८३।१ गुणगौरिविनिमया धीकृततद्दूढराज्ञीगौडीसप्रसभबुन्द्यानयन १२ हम्मीर १८३।१ ऽनुजनवरङ्ग १८३।२ चालुक्यीराजकुमार्या १८३।२।१ दिपत्नीत्रय ३ परिणायन १३ तदनुजस्थिरराज १८३।३ चालुक्यीरुक्मिण्या १८३।३।१ दिप्रियापञ्चक ५ पाणिपीडन १४ हड्डाधिराजहम्मीरौ १८३।१ रसकुमारवरसिंह १८४।१ लालसिंह १८४।२ कुमारीचन्द्रकुमरि १८४।१ तोकत्रय ३ समुद्भवन १५ तत्तनयाराष्ट्रकूटमहीपमल्लिनाथराजकुमारजगमालभाविपाणिग्रहणाभणन १६ लालसिंहौ १८४।२ रसजैत्रसिंह १८५।१ नवब्रह्म १८५।२ कृष्णाकुमारी १८५।१ तुक्त्रय ३ प्रादुर्भवन १७ समातृनिश्चयप्राप्तजैत्रावत्त १ नवब्रह्मका २ पदाङ्कितहड्डकुलभाविदशम १० भेदलालावत्त १।६।१० प्रादुर्भावसूचन १८ परिणीतलालसिंह १८४।८ कन्याकृष्णाकुमारी १८५।१ कवारूचारणवैरवालकीभूत २ राणाहम्मीर

रहलावरू आदि पुर और चार प्रान्तों का हड्डाधिराज हम्मीर का नजर के सहित सरलता से प्रसन्नता पूर्वक लेकर कैथोणपुर के तोमर का दोष मिटाकर उसको अपना सेवक बनाना, प्रामार को पराजित करके डोड हरराज का उचित तिरस्कार करके हम्मीर का गुनगौरी के पलटे की कीमत में उसकी विवाहिता रानी गौड़ी को हठ पूर्वक बुन्दी लाना, हम्मीर के छोटे भाई नवरंग का सोलंखिनी आदि तीन स्त्रियों से विवाह करना, उसके छोटे भाई स्थिरराज का सोलंखिनी रुक्मिणी आदि पांच स्त्रियों से विवाह करना, हड्डाधिराज हम्मीरसिंह के औरस कुमार वरसिंह १ लालसिंह २ और कन्या चन्द्रकुमरी तीन बालकों का जन्म होना, उसकी पुत्री का राठोड़ मल्लिनाथ के पुत्र जगमाल के साथ आगे होनेवाले विवाह का कहना, लालसिंह के औरस जैत्रसिंह, नवब्रह्म और कन्या कृष्णकुमारी तीन बालकों का जन्म होना, उनका माताओं सहित निश्चय करके 'जैतावत्त' 'नवब्रह्मका' इस पदवी से हाड़ों के कुल में आगे होनेवाले दशवें भेद 'लालावत्त' के प्रकट होने की सूचना करना, लालसिंह की कन्या कृष्णकुमारी को विवाह करके बारू चारण का वैर लेने में राणा

धुवहल्लीमम्लेच्छरुस्तुमा २ ऽभिषेणनस्वाग्रजवारणप्रतिकूलबुन्दी-न्द्रपुरमण्डलसमीपसौप्तिकरणरचन ५ भ्रातृद्वय२ प्रद्रुतप्रत्यागतप्र-त्यनीकपतिरुस्तुम १ निग्रहण ६ सन्तमससमूढसैन्यद्वय २ परस्पर-स्व १ पर २ पक्षसंहरण ७ सूर्योदयसमयनिर्धारितस्व १ पर २प-ञ्चविंशतिसहस्र२०००० यवनाभिषेणन ८ यवनान्तरगजगृहीतप्र-तिहततदारोहकतद्दन्तविद्धहड्डाधिराजहरराज १८१।१ तद्गजकरक-र्तन ९ कबन्धीकृततदन्ताघातघूर्णितहरराज १८१।१ निपातितह-त्था १८१।२ऽऽदितदनुजषट्क ६ यवनान्तरस्वसैन्यसहायसेनापतिरु-स्तुम १ मोचन १० सैन्यद्वय २ द्वैधी२भावहानानन्तरपुरोगबुन्दी-[illegible]मन्तकर्ण १ शङ्कर २ चालुक्यद्वय २ रुस्तुमा १ऽङ्गखड्ग २ कु-प्रहरण ११ नृपसुभटभट्टिभगवत्सिंह ३ तच्चालुक्यद्वय २-रोशन १ रहीमा २ ऽऽकबत ३ यवनत्रय ३ निपातन १२-[illegible]मरसिंह १८१।७ स्वसुभटभट्टिभगवत्सिंह १ मारकगजारू-

---

[illegible]ों की युद्धयात्रा सुनकर बड़े भाई के मना करने के प्रतिकूल होकर [illegible]राजा का मांडलगढ के समीप रतिवाह युद्ध करना, भागकर पीछे [illegible]नापति रुस्तुम को दोनों भाइयों का कैद करना, अन्धकार से मूढ [illegible]ों का परस्पर अपने और शत्रु के पक्ष को मारना, सूर्य उदय होने-[illegible]पना और पराया पक्ष देखकर बीस हजार यवनों का सन्मुख हो-[illegible]में से हाथी को पकड़, उसके सवार को मार कर उस हाथी की चोट से घायल होकर हड्डाधिराज हरराज का उस [illegible]सूंड को काटना, हाथी के दांत की चोट से घूमतेहुए हरराज [illegible]के (मस्तक काटकर) हत्थ आदि उसके छः छोटे भाइयों [illegible]रे यवनों का सेना की सहायता से रुस्तुम को छुडाना, अप-[illegible]के द्वैधीभाव की हानि के आगे होकर बुन्दी के उमराव कर्ण [illegible] सोलंखियों का रुस्तुम के अंग में खड्ग और भाला मारना [illegible]भाटी भगवंतसिंह का उन दोनों सोलंखियों को मारनेवाले [illegible] व-आकबत इन तीनों यवनों को मारना, राजा समरसिंह का [illegible] भगवंतसिंह को मारनेवाले हाथी पर चढेहुए रुस्तुम

[illegible]

[illegible]

ढरुस्तुम १ सहितहैदर २ कुतब ३ बुरम ४ फीरोज ५ बहादुर ६ नाममुख्ययवनषट्क ६ संहरण १३ मोमिन १ नामम्लेच्छमहावीरम हीपमस्तकपृथक्करण १४ हतनृपमारकमोमिन १ समेतयवनवीर-विंशति २० कबुन्दीन्द्रवन्धुपितृव्यकासिंहण १८०।३ सूनुघुग्घुल १८१ शूरशय्याशयन १५ द्वादशसहस्र १२००० मितम्लेच्छ१ सैन्य १ दशसहस्र १०००० मितार्थ १ सैन्य १ तनुत्यजन१६ निपाति-तप्रवीरयवनाष्टक ८ सोढपरप्रहरणप्रहाराष्टक ८ नृपपितृव्यक-मोहन १८०।११ पुत्रमोत्कल १८१ स्वायुर्बलजीवन १६ घुग्घुल-१८१ समेतहरराज १८१ समरसिंहा१८१।७ऽऽदिवीरतल्पसुप्तभ्रातृन वक ९ निर्धारण १७ प्राप्तविजयावशिष्टम्लेच्छसैन्यसमेतशत्रुवर्ग स्वस्वोद्देश्यबम्बावददुर्गवशवर्तिदेशसमाक्रमण १८ प्राप्तखिबुन्दी-षट्क, ६ प्रभुत्वत्रयोदश १३ वर्षवयस्कस्वपरिकरवारितयुयुत्लपु-धिराजहल्लू १८२।१ बम्बावदाधिपत्यधारण १९ नरेन्द्रसमयुक्रन १८१।७ जन्म १ बुन्दीप्राप्ति २ शवरशातन ३ बुन्दीवसतिविाजत-४ तनयत्रि ३ कार्थवसुधाविभजन ५ मण्डनगढसमाक्रमन्तेचतु

सहित हैदर-कुतुब-बुरम-फीरोज- बहादुर नामक मुख्य छः बादशाह मारना, मोमिन नामक म्लेच्छ का बडे वीर राजा के ना, जिम दूर करना, राजा को मारनेवाले मोमिन सहित वीर चौदहवें मार कर बुन्दी के राजा के काका सिंहण के पुत्र भाई घुग्घुल ए पुस्तक ना, बारह हजार म्लेच्छसेना और दश हजार आर्यसेना का ाह खुश-आठ वीर यवनों को मारकर शत्रुओं के शस्त्रों के आठ बडे प्र लक गया राजा के काका मोहन के पुत्र मोकल का अपनी आयु के बल मर हुए ल सहित हरराज और समरसिंह आदि नव भाइयों के का ह का शत्रु र करना, विजय पाकर बाकी की म्लेच्छसेना सहित शलना, मालव प्रयोजन से बम्बावदा गढ का वशवर्ति देश लेना, बाकी के ननना से जुदा रह वर्ष की अवस्था में अपनी परगह से मना कियेहुए युद्ध अनेक राजाओं डाधिराज हल्लू का बम्बावदा का आधिपत्य लेना, नरेन्क राजा पाड़ि-बुन्दी पाना-भीलों को मारना-बुन्दी की बस्ती को फैला र गं ड़ों का नाश तीन पुत्रों में ाये हुए) मण्ड और

रशत्याशयन ७ शकसूचनं २० जैत्रसिंह १८२।३ कोटापुरनिर्माण शक १ मास २ पक्ष ३ तिथि ४ निश्चयन २१ भ्रातृनवक ९ सह गामिनीनिजनिजपत्नीसङ्ख्या १३ सम्भिधान २२ द्वाविंशति२२ वर्ष-वयस्कनरेन्द्रनरपाल १८२।१ बुन्दीपुराधिपत्यप्रापणं तृतीयो३ मयूखः ॥ ३ ॥ आदित एकोनपञ्चाशदुत्तरशततमः ॥ १४९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

भूपति पुरबुंदिय भयउ, प्रभुतालहि नरपाल १८२।१ ॥
सिंह १ प्रतिम[1] शूरत्व २ सह, बुद्धि[2]सत्व १ जँह[3] बाल[4]२ ॥१॥
नेतनामपुरपति नृपति, कृष्णसाहि कछवाह ॥
सुततस मोहनसाहिनैं, सुनि कहुँ[5] प्रकट सिराह ॥ २ ॥
निज तनया जो नामकरि, कहियत सरसकुमारि १८२।१ ॥
नृप१८२।१हिं सो व्याहिय निपुन, पहिलैं१ सुमह प्रसारि ॥३॥
जैसलमेर नरेसके, बंधुवर्ग बिच बीर ॥
रही कान्हड़देव भो, सिवसरपुर पँ[6] सधीर ॥ ४ ॥
अभिधाकरि तस अँगजा[7], सूरजकुमरि१८२।२ सुजान ॥
वह दूजैं२ बुंदियअधिप, व्याहिय उचित विधान ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

लिये भूमि का बंद करना-जांगलजल लेना और काम आना इनकी सूचना करना, जैत्रसिंह के कोटा नगर बसाने के संवत, मास, पक्ष और तिथि का निश्चय करना, नव भाइयों के साथ अपनी अपनी स्त्रियों के सती होने की संख्या कहना, बाईस वर्ष की अवस्था में राजा नरपाल का बुन्दी पुर के अधिपति होने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ और आदि से १४९ मयूख समाप्त हुए ॥

जो वीरता में सिंह के १ सदृश और बुद्धि के २ बल में ३ त्यागने योग्य ४ बालक था ॥ १ ॥ भीतरी बुराइयें नहीं सुन कर प्रकट में ५ प्रसंसा सुनी जिसने ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ पति ॥ ४ ॥ ७ पुत्री ॥ ५ ॥

इक्क१दिवस नृप नंप्प१८२।१अनुज हप्प१८२।२ सु [2]अच्छोटन ॥
मिलत पितृव्यक जैत्रमल्ल १८१।९ संजुत बढिगो वन ॥
जज्जाउर सन जाइ प्रथित[3] टोडापुर पव्वय ॥
गिरिस पुज्जि गोकरन रह्यो गिरि घेरि वडे[4] रय ॥
टोडानरेस किल्हन तनय रोपालहु मृगयारमत ॥
तँहँ आय सीस निज कोलत्रय५पिक्खे हड्डन हत्थ हत[6] ॥६॥
रुष्ट तबहि रोपाल कहिय हमरे समीप [7]आँमि ॥
करि पालित किटि[8] कदन खूनकिय सु [9]किम रहँ खामि ॥
जो बल तो द्रुत जुरहु न तो सूकरताजि [10]नंठहु ॥
सुनत एह हुव सज्ज लरन काका१ भतीज२ [11]लंहु ॥
बिनुहयन पिक्खि चालुक बलहिं हड्डन सत्थहु बिनु हयन ॥
रिपुघात जैत्रमल्ल१८१।९सु [12]परिग जदपि लह्यो चालुक जय न ॥७॥

॥ दोहा ॥

गुटिका लग्गिय सोंड १८१।६ सिर, चालुक करतैं चंड ॥
तीन३सुभट इक१ हय तदपि, [13]खंडिकरे वहु खंड ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

बहि सिर गोलिय बिद्ध किद्ध इम जैत्रमल्ल १८१।९ [14]कलि ॥
तीन३सुभट इक१तुरग१ छेदि सुत्तो रन रस छलि ॥
काका१८१।९ मरत कुवैंन बुल्लि हरपाल१८२ स्ववीरन ॥
सहसा परि अरिसत्थ दयो करि बिकल १विदारन२ ॥
सत्तरि७०गिराइ चालुक सुभट जो चालुक भट सट्ठि६०जुत ॥
रोपालनाम जीवनरसिक दिय भजाइ हरपाल १८२।२ द्रुत॥

राजा १नरपाल छोटे भाई हरपाल सहित २ शिकार गया ३प्रसिद्ध. बडे ४ वेग से. तीन ५ सूवर हाडों के हाथ से ६ मरेहुए देखे ॥ ६ ॥ ७ आकर. पालेहुए ८ सूवरों को मारे सो ९सहन करके कैसे रहें १० भागो ११ शीघ्र १२ गिरा ॥७॥ १३ मारकर ॥ ८ ॥ १४ युद्ध ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

करि प्रस्तुत रोपालकहँ, जैत्रमल्ल १८१९ धरि ज्वाल ॥
सूकर तीन ३ हि संगलै, पुर आयउ हरपाल १८२१२ ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

इम जज्जाउर आत भूप सुनतहि अमर्षभरि ॥
पहु तरज्यो नरपाल१८२११ अनुज हरपाल१८२१२अनादरि ॥
काका सहज कटाइ कहिय जीवत आयो किम ॥
पुनि टोडापुर पत्र त्वरित पठयो सकोप तिम ॥
इमलिखिय पितृव्यक१८११९बैर अब लैहैं हम रन बिजयलहि ॥
चालुक्क सुनत हुव अति चकित कन्यादैन उपाय कहि ॥११॥

॥ दोहा ॥

रम्य बहिनि रोपालकी, किल्हनकी कन्या सु ॥
अहिजनकुमरि१८२१३समाख्य वह; अप्पी नप्प१८२११हिंआसु॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

नाम अपर२ नारंगदेवि १८२१३ जाकोहि बदत जन ॥
तीजी३ रानिय ताहि परनि किय नप्प १८२११ बीरपन ॥
ढुंढिय आवत बिपिन४ तरुन कट्टत लखि खत्तिय ॥
चपल कुठारन चलत प्रीति भूपति हिय पत्तिय ॥
ततकाल गिरत वह छिन्नतरु जानिय जो ए रनजुरैं ॥
कट्टि तो अरिन सहमूल कुल विजयकरैं जस विप्फुरैं ॥१३॥

॥ दोहा ॥

तरुतच्छक६ सतपंच ५०० तब, रक्खिय नप्प १८२११ नरेस ॥
भट १ मंत्रि २न बरजत भनिय, उचित विचारहि एस ॥ १४ ॥

॥ १०-११ ॥ १ नामवाली ॥ १२ ॥ २ दूजे नाम से ३ वन में ४ खातियों को वृक्ष काटतेहुए देखकर ५ कटेहुए वृक्ष ॥ १३ ॥ पांच सौ ६ खातियों को नरपाल ने नौकर रक्खे ॥ १४ ॥

लखि दुलही सोलंखिनी १८२१३, सु सुनि अक्री सहुल्लाह ॥
लंकननन्नी नप्प १८२१२नृप, मत्तुं मूढत्व पाइ ॥ १५ ॥
सजातीयँ जितलित सकल, लगे हलन सहलोक ॥
तच्छक सतपंचक ५००० तदपि, आपत रक्खि स्वओकँ ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

सुनि यह बुन्दिय सोर समय खिझिप महेसलहि ॥
रहलावनि १ रामगढ २ मऊ ३ इत्यादि दब्बि लहि ॥
लंगशेल ४ रचि अमल वढ्यो चम्मलिलग चेरिय ॥
दहिया १ गौड २ हु दुहु २ न लये करउर १ लक्खेरिय २ ॥
ततकाल कुजस वढिगो तदपि रन खत्तिँन पुच्छतरह्यो ॥
तिन सठन मिलहिँ अवसर तवहि कुल समूल कट्टहिँ कह्यो ॥१७॥

(दोहा)

तोमर दुज्जहराय तिम, जाहि समय लहि जोर ॥
आक्रमि लिय केथोनि १ इम, अरि हुव सब सवओर ॥१८॥

षट्पात् ॥

समय इक्क मधु १ मास तीज ३ उज्जल उच्छव तँहँ ॥
बुन्दियपुर हुव विदित जानि नप्प १८२१२ हु मत्त जँहँ ॥
महिप डोड प्रामार सेरगढको जँनि जोरिय ॥
सठ हरराजसु साज्जि गज्जि लेगो गुनगोरिय ॥
चित्रसो रह्यो नारिन निकर सभा थित सु नरपाल१८२१२सुनि ॥
लगिसंग मुरयो कछुदूरलग पहुँच्यो डोड स्वदुर्ग पुनि ॥१९॥
बुंदिय तंदनु सबेग आय दूतन यह अक्खिय ॥

१बहुत मूर्खता पाकर ॥१५॥२अपनी जातिवाले(क्षत्रिय)अपने ३घर आया॥१६॥ ४खातियों से युद्ध के लिये पूछता रहा ॥१७॥ ५घेरकर ॥१८॥ ६ चैत्र सुदि तीज के दिन गुनगौरि का उत्सव हुआ, वहां डोड प्रमार७माता को जबरी से लेगया. स्त्रियों का ८ समूह चित्राम का सा देखता रहा ॥१९॥ ९ जिस पीछे

यह डोडवंश प्रामारों के वंश की एक शाखा है

पाइ आत रवि*पर्व ÷सुकृत अवसर श्रुति सक्खिय ॥
गंगाद्वारहिं गोन कल्लिह खिझिय महेसकरि ॥
जेहँ अप्पहु जत्थ सत्थआवहु अरिसंहरि ॥
सुहि काहिय रंक खत्तिन सुलभ मूढन्नपहु तिन्ह मंत्र[1] चढि ॥
प्रतिकूल निवारक परिकरहिं वेग उतहि लै गो सु बढि ॥२०॥
हुव हुव मिजल महेस अग्ग पिट्ठिलु तस अप्पन ॥
इहिंक्रम उभय २ अनीक पत्त[2] धन द्विजन सम्प्पन ॥
दिन चउ४ गंगाद्वारं[3] रहे अंतर दुकोस रचि ॥
इतरहु भूप अनेक जुरिग जहँ जहँ स्व इष्ट[4] जचि ॥
रविपर्व[5] समय निज कर्मरत[6] जानि महेसहिं नप्प[7]१८२१जँहँ ॥
लहुँ[8] जाइ वेढि[9] मंडिय कलह तिहिं प्रत्युत[10] किय चित्र तँहँ ॥२१॥
खिझिय नृप तब खिज्जि सज्जि सायुध हुव सत्वर ॥
समयोचित[11] कृतसर्ब गिनिसु सहसा रन गत्वर[12] ॥
निजदलजुत हय नंक्खि[13] मंडि हड्डोदधि[14] मंथन ॥
किय विहस्त[15] अरिकटक पत्त[16] मतिगति[17] जिहिं पंथन ॥
सिरतहि बराक[18] खत्तिय भजत हाहा जिततित हास्यहुव ॥
रहिगो दिदृक्षु[19] नसक्यो निरखि भानुहु ग्रस्त सु रंगभुव ॥२२॥

---

*सूर्य पर्व (ग्रहण) पर जो ÷पुण्य का समय है और जिसका साक्षी वेद है, उन खातियों की १सलाह से चढा ॥२०॥ २पहुंचे ३गंगा के घाट का नाम है. जहां जहां अपनी ४इच्छा थी तहां तहां जमकर रहे ५ सूर्य ग्रहण के समय महेश-दास को अपने ६कामों में तत्पर जानकर ७ नरपाल ने ८ शीघ्र जाकर ९ घेर कर युद्ध रचा तहां उस (महेशदास) ने १०उलटा आश्चर्य किया ॥ २१ ॥ ११ समय के उचित १२गमनशील; अथवा युद्ध में गया. घोडे १३ उठाकर १४ हाडों-रूपी समुद्र का मन्थन करके १५ व्याकुल किया. शत्रु की सेना के १६ पहुंचते ही जिस मार्ग जाने की जिसकी १७बुद्धि हुई वह उसी मार्ग गया अर्थात् अपने अपने मतानुसार भाग गये १८ युद्ध से; अथवा अधम खातियों के भागते ही चारों ओर से अट्टाट्ट हास्य हुआ. युद्ध को १९देखने की इच्छा वाला सूर्य

(दोहा)

भज्जत खत्तिय निजभटहु, मगलग्गिय मनमोरि ॥
पहिलैं जिन वरज्यो नृपहिं, नवभटकरत निहोरि ॥ २३ ॥
भग्गो नप्प१(८२)१हु दलभजत, व्याकुल लपन बिगारि ॥
जानीनहिं मतिमंद जिहिं, रजपूतन बल रारि ॥ २४ ॥

निश्शाणी ॥

मारनकज्ज महेसकी पृतना[२] जब पत्ती ॥
कालीरसनासी कढी कोसनँसन[३] कत्ती ॥
बट१उब्बट२ तक्की तवहि आवन आढँत्ती ॥
कोउ न रक्खहु नप्प१(८२)१क्रम खोवन भुव खँत्ती ॥ २५ ॥
सहसा जातहु सम्मुहे अरि पिक्खि इकट्ठे ॥
रंक पलाये रारितैं मरिवेसन मट्ठे ॥
भट कोबिदपनके भये ठाँठाँ जग ठट्ठे ॥
सज्जे खत्तिय सूर तो नरपाल १(८२)१ हु नट्ठे ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

पछितायो टोडापतिहु, पाँटव सु करि प्रमान ॥
जो नप्प १(८२)१ हिं इम जानतो, करतो कर कन्न्या न ॥२७॥

॥ षट्पात् ॥

इम बिगारि मुख अप्प आइ बुंदिय लज्जित अति ॥

देखने से रुक गया; क्योंकि उपराग होने के कारण युद्धभूमि को नहीं देख सका ॥२२॥२३॥ १ मुख बिगाड़ कर, जिस मूर्ख ने यह नहीं जाना कि युद्ध रजपूतों के बल से होता है खातियों के बल से नहीं ॥ २४ ॥ २ सेना पहुंची ३ म्यानों से तरवार निकली. मार्ग और बिना मार्ग घर आने की ४ आढ़त देखी अर्थात् भगे, ५ खाती ॥ २५ ॥ वे रंक युद्ध से भगे जो मरने में ६ मठ्ठ (कृपण) थे. उन वीरों की पण्डिताई की ७ ठाम ठाम ८ हँसीहुई ९ भगे ॥२६॥ १० चतुराई ॥ २७ ॥

रक्खिय पुनि रजपूत मन्त्रि आदर तिन्ह सम्मति ॥
रत्ति चरत सैरिभिन पिक्खि इक दिन मृगयापथ ॥
पटु तिन्ह चारकँ पकरि अक्खि चोरहि लायो अथ ॥
तुमरीहिप्रजा! हम कहिय तिन्ह रहत पुष्ट पसु चरि रजनि ॥
निस तबहि भटन इच्छित नृपति भयो जिमावत उचित भनि ॥२८॥

॥ दोहा ॥

जिहिँ तीजो३ निजनाम जग, किय फुटँ पँसर सु काल १८२१
सिसुजिम इम जोजो सुनैँ, मन्नैँ सुसु महिपाल ॥ २९ ॥
इहू १८२ लघुवय जदपि हो, बंबावद बसुधेस ॥
तदपि उपालंभन तरजि, दिय नप्प १८२।१हिँ उपदेस ॥३०॥
नप्प१८२।१अनुज हप्प१८२।२सु रमनि, जुगर परन्यो पटजोरि ॥
रामकुमरि१८२।१सीसोदनी, राजकुमरि१८२।२ रट्ठोरि॥३१॥
जैत्र१८२।३हु किय जुगरब्याह जहँ, उमाकुमरि१८२।१अभिधान॥
सो तोमर दुल्लहसुता, ब्याह्यो प्रथम१ बिधान ॥ ३२ ॥

॥ भिधान१ बिधान२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

परतटपुर जानैँ प्रथम १, थिर दब्बिय कैथोनि१ ॥
यातैँ गिनि भू बैर इहिँ, दिय दुहिता रन छोनि ॥ ३३ ॥

१सलाह. शिकार के मार्ग में २रात्रि में ३भैंसियों को चरती हुई देखकर उनके चतुर ४चरानेवालों को पकड़ कर उनको चोर कहकर लाया, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारी ही प्रजा हैं और पशु रात्रि में चरकर ५ताजा रहते हैं, तब रात्रि में अपने भटों को वांछित भोजन जिमाना उचित कहकर जिमाने लगा ॥२८॥ जिसने अपने नाम से भोजन का यह तीजा समय ७ *पसर काल के नाम से ६ प्रसिद्ध किया, इसप्रकार वह राजा बालक के समान जो जो सुने सो सो ही मानने लगा ॥ २९ ॥ ८ राजा ने भी ९ दुर्वचनों से धमकाकर ॥ ३० ॥ १० छोटा भाई ११ स्त्रियें १२ गंठजोड़ा (गठजोड़ा) बांधकर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

*रात्रि की चौथी प्रहर के प्रारम्भ में पशुओं को जंगल में चरावें उसको देशभाषा में पसर कहते हैं सो इस राजा ने भी अपने वीरों को प्रहर रात्रि रहे पसर जिमाना प्रारम्भ किया

अक्खयसिंह सुताहु इम, समकुल पथ लखि सीर ॥
कछवाही आभाकुमरि१८१।२, परन्यौं अपर२ प्रवीर ॥ ३४ ॥
रोक्यो नप्प१८२।१ सु डुंगर१४२।४ हु, आयो तदपि उमाहि ॥
करउरपति दहिया कनी, स्यामा१८२।१ को करंसाहि ॥३५॥
सहिनसक्यो नरपाल १८२।१ इन, अनुजनके अपराध ॥
लग्यो चढन रिपु संधिलखि, बिरचन दोउ३न बाधं ॥ ३६ ॥

॥ पद्धात् ॥

खत्तिन रक्खत खिज्जि भटन वरज्यो जिन भूपहिं ॥
किय तिनको संकोच रक्खि आदर अनुरूपहिं ॥
कनीदेत तिनकहिय अरिहि लाघवं अंकूरिय ॥
सुनिइम नगयो सँभि सु खभि सु कोटा१ खज्जूरिय ॥
परन्यौं चतुष्क४ हल्लू१८२।१नृपहु प्रथम१गोड़ सोपुर नृपति ॥
कन्या दई सु अभिधानकरि अमृतकुमरि१८२।१ सुकुमार अति॥३७॥

॥ दोहा ॥

जिम बोसा जसराजकी, कन्या निधि गुनकेर ॥
कछवाही नरवदकुमरि १८२।२, व्याहिय दूजो२ वेर ॥ ३८ ॥
तीजौं३ चम्मलिपारतट, पहुं जैत्र १८२।३ जिम जाइ ॥
तोमर डुल्लह लँघु सुता, परन्यौं गौरव पाइ ॥ ३९ ॥
नाम जास केसरिकुमरि १८२।३ पुर केथोनि पधारि ॥
जो लहि साली जैत्र १८२।३ की, आयो कुल्ल अनुकारि ॥४०॥
तिनसौं रुठ्ठो नप्प १८२।१ लउ, किय जो तिन हितकाम ॥
संतति कहि कहिहैं सु पे, अग्रकिरन अभिराम ॥ ४१ ॥
तनयतीन३ नरपाल १८२।१ नृप, पाये गुनन गरीयं ॥

॥ ३४ ॥ १ कन्या को २ करग्रहण (विवाह) करके ॥ ३५ ॥ ३ विनाश ॥३६॥ ४ शीघ्र ५ खड़े हुए ६ शान्त (ठंढा) होकर, लउन करके ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ डुल्लह नामक तँवर की ७छोटी पुत्री को ॥३९॥४०॥ अगले मयूख से।४१।९बडे

तँहँ अग्रज हम्मीर१८३।१तस, हम्म१८३।१हु नांम द्वितीय ॥ ४२ ॥
नवरंग१८३।२सु मध्यम अनुज, लघु थिरराज१८३।३लसांत ॥
पहिलो१ कछवाही१८२।१प्रसव, जुग२भटियानी१८२।२जात ॥४३॥
नवरंग१८३।२हिँ दिय लाडपुर१, जाको कुल जसजुत्त ॥
इहन अष्टम८भेद हुव, पट्ट नवरंगपउत्त२।८ ॥ ४४ ॥
थिरराज१८३।३हिँ दिय अनथड़ार, अन्वय३ तास उदार ॥
जो थिरराजपउत्त१।९जग, कहियत नवम९ प्रकार ॥ ४५ ॥
पुत्रन दिन्नी सिसुपनहि, बंटि पुहवि बुन्दीस ॥
सुनहु पंच५हल्लू१८२।१सुतन, अभिधा अब नरईस४ ॥ ४६ ॥

अमृतकुमरि१८२।१ औरस उभय२,
चंच१८३।१कुंभ१८३।२पहुपूत ॥
वाम१८३।३भोज१८३।४अरुनपन१८३।५त्रय३,
नरवदकुमरि१८२।२प्रसूत ॥ ४७ ॥

इहन भेद चतुर्थ४हुव, हल्लू१८२।१पौत्र१।४कहात ॥
इन५नामन जुरि ते अखिल, प्रथित उत्त६पद पात ॥ ४८ ॥
पहिलैं१पीछैं२कथनक्रम, उचित समय अनुसार ॥
जानिलेहु नृपराम२०२जिम, इम पट्ट सभ्य उदार ॥ ४९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५ राशौ वीतिहोत्रचरिडासि १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेशनरपाल १८२।१

गुणवान् ॥ ४२ ॥ १ शोभायमान ॥ ४३ ॥ २ नवरङ्गपोतों के नाम से ॥ ४४ ॥
३ वंश ॥ ४५ ॥ ४ नाम ५ हे नरेन्द्र रामसिंह! ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ नामों के अन्त में
६ प्रसिद्ध उत्त पद पाते हैं अर्थात् चन्द्रावत्त, कुम्भावत्त आदि ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंशजों के वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंशकी

चरित्रे प्राप्तराज्यनरपाल १८२।१कौर्म्मी १८२।१भट्टिनी १८२।२ पत्नीद्वय २ परिणयन १ गोकर्णगिरिमृगयारसिकव्यापादितवराहत्रय ३ समरसिंहा १८१।७ ऽनुजजैत्रमल्ल १८१।९नरपाला १८२।१ ऽनुजहरपाल १८२।२ सहितस्वसीममृगव्यमच्छरिचालुक्यगोपालरणरचन २ गुटिकाविद्धमूर्द्धनिपातितैक १ हयप्रतिभटत्रय ३ जैत्रमल्ल १८१।९ वीरशय्याशयन ३ नाशितशत्रुसप्तति७०कप्रद्रावितप्रतिपक्षसपोत्रित्रिक ३ हरपाल १८२।२प्रत्यागमन ४ तर्जितानुज १ मार्गितपितृव्यकवैर २ नरपाल १८२।१ तृतीय ३ पत्नीचालुक्यी १८२।३ पाणिपीडन ५ प्रत्यागच्छन्नरेन्द्रवारकप्रातिकूल्यपूर्वकसुभटीकृतपञ्चशत ५०० वर्द्धकिवृन्दरक्षण ६ विज्ञाततद्बालिशत्वसगोत्रखिच्चि १३ महेशरहलावणपुरप्रमुखप्रदेशचतुष्क ४ समाक्रमण ७ दाभिक १ गौड़ २ तोमर ३ त्रय ३ यथासंख्यपुरकरवुर १ लक्खैरी २ केथोणि ३ समादान ८ सेरगढदुर्गमहीपडोडप्रामारहरराजसबलात्कारबुन्दीपुरगणगौरीसमाहरण ९ तदनुद्रुताऽप्राप्तपरपक्षप्रच्छन्ननरपाल १८२।१ निन्दाप्रादुर्भवन १० दूतप्र-

---

शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेश नरपाल के चरित्र में राज्य पाकर नरपाल का कछवाही और भटियानी दो स्त्रियों से विवाह करना, गोकर्णेश्वर महादेव के पर्वत में शिकार के रसिक तीन सूवरों को मारकर समरसिंह के अनुज जैत्रमल्ल और नरपाल के अनुज हरपाल सहित शिकार खेलनेवाले चहुवाणों से सोलंखी गोपाल का युद्ध रचना, गोली से मस्तक विद्ध होकर एक घोड़े और तीन शत्रुओं को मारकर जैत्रमल्ल का काम आना, सत्तर शत्रुओं को मारकर शत्रुओं के भागने पर तीनों सूवरों सहित हरपाल का पीछा आना, छोटे भाई को धमकाकर काका का वैर मांगने पर नरपाल का तीसरी स्त्री सोलंखिनी से विवाह करना, पीछे आकर नरेन्द्र का मना करने पर प्रातिकूल होकर पांच सौ खातियों को सुभट बनाकर रखना, उस की मूर्खता जानकर उसी गोत्रवाले (चहुवाण) खीची महेशदास का रहलावणपुर आदि चार प्रदेशों को लेना, दाहिया, गौड़, तोमर इन तीनों का यथासंख्या से करवुर, लाखैरी, केथोण लेना, सेरगढ के महीप डोडशाखा के प्रामार हरराज का बल पूर्वक बुन्दीपुरी की गणगौर का हरना, जिसके पीछे

मुखज्ञातखिच्चि१३ महेशगंगाद्वारगमनतत्पृष्ठप्रस्थितनरपाल १८२।१ प्राप्तशत्रूद्दिष्टतीर्थदिनचतुष्क ४ समयसमवस्थान ११ पञ्चम ५ दिनसोपप्लवसूर्यसमयसूचितसाध्यसाधनपाटवप्रमत्तपरिपन्थिप्रताडण १२ तत्कालसज्जसैन्यप्रत्युत्पन्नमज्ञहड्डोदधिमन्मथमन्दरमहेश त्रस्तवर्द्धकिव्रातविपलायन १३ दृष्टानिष्टकातरीकृतस्वान्तप्रद्रुतस्वपरिकरपश्चात्तापितचर्मश्वशुर्यकान्दिशीकबुन्द्यागतनरपाल- १८२।१ पुनःक्षत्रभटसमर्जन १४ लालिकीपालशिक्षितरात्रिभटभोजनोपहास्यप्रादुर्भावितत्तृतीय ३ निजनामान्तरनप्पा १८२।१ र्थहल्लू १८२।१ पालम्भन १५ नप्पा १८२।१ ऽनुजहप्प १८२।२ शैसोदी राष्ट्रकूटी २ द्वितीयांद्वयो २ पयमन १६ तदनुजजैत्रसिंह १८२।३ तोमरी १ कौर्मीपत्नीद्वय २ परिणयन १७ नप्प १८२।१ निवारि ततदनुजडुङ्गरसिंह १८२।४ समाक्रान्तकर्बुरशत्रुसुतादाभिकी १ पाणिपीडन १८ स्वीयसुभटसङ्गजैत्रसिंह १८२।३ डुङ्गरसिंह १८२।४ जिघांसुनप्प १८२।१ निवारण १९ हड्डाधिराजहल्लू १८२।१ गो-

दौड़ कर प्राप्त नहीं होने से शत्रुओं में नरपाल की युद्ध विषयक निन्दा होना, दूत आदि से खीची महेशदास का गङ्गाद्वार जाना जानकर उसकी पीठ पर गमन करके शत्रु के तीर्थ स्थान पर प्राप्त होकर चार दिन पर्यन्त वहां रहना, पांचवें दिन सूर्यग्रहण के समय कहेहुए साधन योग्य कार्यों के साधन में चतुर ऐसे गाफिल शत्रुओं को ताड़ना करना, तुरन्त सेना सज्कर उस बुद्धिमान् से उत्पन्न हुए हाडों के समुद्र रूपी ज्ञान को मथनेवाले मन्दराचल रूप महेश से डरकर खातियों के समूह का भागना, अपनी परगह का नाश और मन के कायरपन से भागे हुए देख कर खेद पायेहुए बाकी के अपने वीरों सहित भयद्रुत बून्दी में आये हुए नरपाल का फिर क्षत्रिय वीरों को इकट्ठा करना, भैंसियों का पालन करनेवालों(ग्वालों)की शिक्षा से वीरों को अपने नाम से तीसरा भोजन कराने से उपहास्य होकर नरपाल के अर्थ हल्लू का उपालम्भ देना, नरपाल के छोटे भाई हरपाल का सीसोदिनी और दूसरी राठोड़ी दोनों से विवाह करना, उसके छोटे भाई जैत्रसिंह का तोमरी और कछवाही दो स्त्रियों से विवाह करना, नरपाल के मना करने पर छोटे भाई डूं-

ड़ी १ कौर्मी २ तोमरी ३ राष्ट्रकूटी ४ पत्नीचतुष्क ४ पाणिग्रह-
ण २० नरपाल १८।२।१ तनयहम्मा १८।३।१ऽपर २ नामहम्मीर
१८।३।१ नवरङ्ग १८।३।२ स्थिरराज १८।३।३ त्रय ३ प्राकट्यपूर्वक-
तत्तन्मातृनिश्चयन २१ यथासंख्यप्राप्तलाडपुरा १ ऽनथड़ा२ऽऽख्य
स्थाननवरङ्ग १८।३।२ स्थिरराज १८।३।३ भाविसन्ताननवरङ्गपौ
त्र १।८ स्थिरराजपौत्रौ २।९ पदाङ्कितहड्डकुलाष्टम ८ नवम ९ भेदप्र
ख्यापन २२ स्वस्वजनन्यवधारणासहितचञ्च१८।३।१ वामा १८।३।२
ऽऽदिभाविहल्लू १८।२।१ पुत्रपञ्चक ५ सन्ततिहड्डकुलचतुर्थ ४
भेद हल्लूपौत्र४ ४ पञ्च ५ प्रकारप्राप्तिप्रकटनं २३ चतुर्थो४ मयू
खः ॥ ४ ॥ आदितः पञ्चाशदुत्तरशततमः ॥ १५० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ (दोहा)

रक्खन खत्तिय १ भजन रन२,पसरचरावन ३ पिक्खि ॥
बढिग सीस आक्रमि बहुत, सत्तुभाव नव सिक्खि ॥ १ ॥

॥ षट्पात ॥

दहिया १ तोमर २ द्वैर हु भये द्रव्वत दुंदिय खुव ॥

गरसिंह का करकुर लेकर दहिया जाति के शत्रु की पुत्री से विवाह करना, अपने सुभटों के समूह का जैत्रसिंह और डूंगरसिंह को मारने से नरपाल का रोकना, हड्डाधिराज हल्लू का गौड़ी, कछवाही, तोमरी और राष्ट्रकूटी चार स्त्रियों से विवाह करना, नरपाल के पुत्र हम्मा दूसरे नाम से हम्मीर, नवरङ्ग और स्थिरराज तीनों का प्रकट होना और उनकी माताओं का निश्चय करना, यथसंख्या से लाडपुरा और अनथड़ा नामक स्थान पाना और नवरङ्ग और स्थिरराज के आगे होनेवाले सन्तान का नवरङ्गपोता और स्थिरराजपोता पदवी से हाडों के कुल में अष्टम और नवम भेद होने की सूचना करना, अपनी अपनी माता के धारण करने सहित चंच और वाम आदि आगे होनेवाले हल्लू के पांच पुत्रों के वंश का हाडाओं के कुल में चतुर्थ भेद हल्लू पोते का पांच प्रकार की प्राप्ति प्रकट करने का चौथा मयूख समाप्त हुआ॥४॥ और आदि से १५० मयूख हुए ॥

इनके गृह उपयाम[1] हुहु तीन३न अभीष्ट हुव ॥
जैत१८२१३कू डुंग१८२१४जुगल२नहुरि हल्लू१८२१हु बिवाहिय॥
यातें[3] तिनपति अहित नप१८२१ दुहीस निबाहिय ॥
हल्लू १ रू जैत्र २ तव इमकाहिय येतिनकी कन्या बिबहि[2] ॥
आवें[4] सु स्वकुल गौरव गिनन कबहु न लाघव मंतु[5] कहि ॥२॥

पादाकुलकम् ॥

जो तुम अरि जामाता[6] जानत, पै[7]ब्रौ इम सुल्लि प्रमानत ॥
आवहु तो पहिली मति[8] उज्झत, जुरि पिक्खहु भ्राता कितजुज्झत
तरुतच्छकजितनप१८२१भ्रेतिम, अप्पनगिनहुहमहिंस्लीजितइम
भट१रू सचिव२पुच्छे तव भूपति, उन आक्खिय इतही सनेह अति॥४॥
तवनरपाल१८२१सजिदलसत्वर[10], प्रथम१चढ्यौखिञ्चिय१३महेसपर
कोटापुरहि प्रपातें[11] जायकिय, हुत तँहँ बंधु जुगश्हि उपदादिय[12] ५
जैत्रसिंह१८२१३तत्थहिहोजानत, तिहिंस्वागतकियअतिव्यै[13]यतानत
अक्खियप्रान१धन२रूवसुधा३पह, सवहि स्वामिआयत्तें[14]कित्तिसह६
कोटागतहल्लू१८२१हु सुनत काम, नृपहुअग्रजहिंआइमिल्योनामि
लघुवय१राज्य२पिक्खिनृपमदलिय, एँका[16]१सनबैठन ननइच्छिय ७
भटन कहिय प्रभुकोहि लैनभुव, हल्लू१८२१से पट्टप सहाय हुव
अधिक राज्य दर्प[17] न इम आनहु,पुहवी[18] तुमहु गई सु प्रमानहु॥८॥
हल्लू१८२१जनक[19] बिहित उत होई,स्वामि तुम जनक[20] अनंतरखोइ

---

१ विवाह २ प्रिय ३ विवाह करके ४ वडप्पन. तुच्छ ५अपराध करना भी नहीं कहना चाहिये ॥ २ ॥ जो तुम शत्रुओं के ६ जमाई जानते हो इसी से ७ शत्रु मानते हो तो भूल है. पहिली बुद्धि को ८ छोडकर युद्ध करके देखो कि भाई किसकी ओर लड़ते हैं. हे नृपाल! तुमको जैसे ९खातियों ने जीत लिया तैसे हमको भीजित मत समझो ॥४॥ १० शीघ्र सेना सज्कर ११मुकाम (पड़ाव) १२नजराना ॥५॥ अत्यन्त १३खर्च करके १४आधीन ॥ ६ ॥१५चलकर १६एक गादी पर बैठना नहीं चाहा ॥७॥ राज्य अधिक होने का १७ घमण्ड मत लाओ १८भूमि तुम्हारी ही गई है ॥ ८ ॥ हल्लू के १९ पिता तुम्हारे २०पिता ने

दलिहरराज१८११साहू उत दव्विय, चुच्छेइततुमगीग्रवचव्विय॥९॥
अक्खिस्वीयकाकामुकल१८११पह, एकासन बैठन किय आग्रह
नृपहिंपितृव्यकानिक्षिनिंहोरियजार्जुनप्प१८२११हल्लू१८२११जबजोरिय
हल्लू१८२११कहियपुव्वहंमरोहित,समर१८११७समरसोयेहितसंचित॥
भुग्गतहम वपु अल्प अल्पसुव,हितवस लोभ ग्रसेहि सत्थहुव॥११॥
हुत जानत हमरी लेहैहो, प्रधनकर्म हमरी जो पैहो॥
सुनि ऐसीहु न नप्प१८२११सिटायो, यह जानी भैंटबनि इतआयो॥
सबनछिपी न रही मति सोहू, जानतहुव कोविद जो जोहू॥
भोजनसमयहु इमइहिं भूपति, मन्त्री यह किम उचित मंदमति॥
तबहुतराजिमुकल१८११हठतानत, बैठारयो इक१ थाल बखानत॥
गहिकरगाढ जैत्रसिंह१८११३हुजिम,इक१थालजिम्मनलिन्नोइम॥१४
अंक्खिय दोउ२न अंसन अनन्तर, तरुतच्छक जिमकिन्नसुभैटतर
जैसैंअप्प१८२११हमहि जिनजानहु, पानिस्वकीयनजुक्तमानहु १५
किय नृप तब इन जुत प्रयान किर, स्वभुव लैन पहिलैं१महेसासिर
दूतनअक्खियदंगपल्हायथ,परिकर अल्पसु आत निकट पथ॥१६॥

॥ पज्झटिका ॥

इहिं क्रम कोटासन सुनि सु ऐंडु॥
हंकिय सैंयं तनयं सैंय हडु॥
नवसहँस ९००० हुहुर न दल बल विधान॥
पत्ते प्रधान तँहँ विधिप्रमान॥ १७॥

---

१ तुच्छ लोगों ने तुम्हारी भूमि को अब चवाई (चर्वण की) है ॥ ९ ॥ २ घुटना जोड़कर बैठे ॥ १० ॥ ३ पहिले ४ समरसिंह ५ युद्ध में सोये थे ॥ ११ ॥ ६ युद्ध कर्म ७ उमराव बनकर ॥ १२ ॥ ८ पण्डित थे जो सब समझ गये ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ९ भोजन के पीछे १० खातियों को ११ अत्यन्त सुभट १२ हाथ १३ अपने लोगों के ॥ १५ ॥ १६ ॥ १४ आड मार्ग अर्थात् उपट १५ सन्ध्या समय १६ फैलाते हुए १७ हाथों से अर्थात् शत्रुओं के लिये अपने हाथों से अन्धेरा

एउर लुट्टि हल्लकरि अरर[1] पागि,
चउ ४ अट्ट दुर्ग प्रविसे प्रचारि ॥
हो तहँ महेस बंधुव पैहार[2],
सम्मुह हुव गिनि ध्रुव मरन सार[3] ॥ १८ ॥
संहारत इतके भटन सूर,
पँहुच्योहि नप्प १८२११ ढिग दप्पपूर[5] ॥
असिझारिय भूपति अंस[6] आइ,
करि फलकँ[7] दिय मुमुक्कल १८२११ चुकाइ ॥१९॥
दूजी २ सिर[8] दिन्नी सिर कराल,
कटि पग्घ[9] गई अंगुल १ कपाल,
हल्लू १८२११ तब जुज्झत अग्ग होइ,
दे असि पैंहार[10] किय खंड दोइ २ ॥ २० ॥
सतइक्क १०० परे इतके सिपाह,
उतके मृत सत्तरि ७० रंगराह[11] ॥
पुर इम सु पल्हायथ १ प्रथम १ पाइ,
सत अठ ८०० सुभट तहँ धरि सहाइ ॥ २१ ॥
पुनि दल जयरंजित[12] किय पयान,
आयो तहँ खिच्चिय १३ खगउडान[13] ॥
दल इक्कअयुत १०००० सज्जित दुरूह[14],
जिततित पटैत बढि भटन जूह[15] ॥२२॥

फैलाते हुए चले ॥ १७ ॥ १ कपाट तोड़कर २ पहाडसिंह ३ निश्चय. मरना ही ४ सार समझ कर; अथवा खड्ग से मरना निश्चय मानकर ॥ १८ ॥ ५ दर्प ६ कन्धे पर ७ ढाल से ॥ १९ ॥ दूसरा प्रहार सिर और ८ पगड़ी पर भयङ्कर दिया; यहां एक शिर शब्द पगडी का वाचक है ९ पगड़ी १० पहाड़सिंह के दो टुकड़े करदिये ॥ २० ॥ ११ युद्ध के मार्ग में ॥ २१ ॥ १२ विजय से प्रीति करनेवाला; अथवा जय होने से प्रसन्न होकर १३ पक्षि के उडान के वेग से १४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १५ समूह ॥ २२ ॥

छतं[1] अल्प नृपहिँ तउ सिबिरं[2] छंडि,
हट्टे हुव सम्मुह स्रधहिँ[3] मंडि ॥
कुलपंट्ट[4] हल्लू१८२।१ बिजयकास,
नृप नप्प१८२।१ अनुज हरपाल१८२।२ नाम ॥ २३ ॥
जिहिँ अनुज जैत्रसिंह १८२।३ हु सजोर ॥
मुक्कल१८३।१ पुनि काका भटनमोर[5] ॥
हो मुक्कल १८३।१ यह अरियमनहार ॥
देवा १८०।१ऽनुज सोहन १८०।११ सुत उदार ॥ २४ ॥
हनि अट्ठ ८ अट्ठ छतलहि गहार[7] ॥
बच्चिगो जु साहदल समर बीर ॥
जिहिँ कानि जैत्र१८२।३ हल्लू१८२।१ सुसंघ[8] ॥
इक १ थाल निहि लिय नप्प १८२।१ अंघ[9] ॥२५॥
पुनि भूप अंस अगि असि प्रहार,
हड्डनअरि टारिय जिहिँ उदार ॥
सो नृप पितृव्य मुक्कल १८३।१ सधीर,
वलबिच चतुर्थ ४ यह मुख्य वीर ॥ २६ ॥
चउ ४ हड्डन पिल्लिय बल बकारि,
हल्लिय महेस उतसैन[10] हक्कारि ॥
हरराज ११ सेरगढ अधिपं हंकि,
आयउ महेस २ उपकार अंकि[11] ॥ २७ ॥
मिलि दल उत दोरउन अयुत १०००० मान,
नवसहँस९००० इतहु दोरउन निदान॥

अल्प १ घाव लगा था तो भी राजा को २ डेरों में छोड़कर ३ युद्ध रचकर ४ वंश में पाटवी ॥ २३ ॥ वीरों का ५ मुकुट ६ देवसिंह के छोटे भाई सोहनसिंह का पुत्र ॥ २४ ॥ आठ घाव ७ गहरे पाकर. जिसकी ८ शङ्का से ९ श्रेष्ठ प्रातिज्ञावाला ॥ २५ ॥ २६ ॥ १० उधर से. उपकार का ११ चिन्ह करके; वा उपकार

मचि [1]तुमुल चित्र [2]बढि असि[3]नमार,
रुक्किय रवि कौतुक बहुप्रकार ॥ २८ ॥
सुक्कल १८२।१ तँहँ अरिभट त्रिदस १३ मारि,
सोयो समरं[4]गन जसप्रसारि ॥
खिंचिय १३ महेसको सचिव खंडि,
हरपाल १८२।२ छकिय [5]वपु छत [6]बिहंडि ॥२९॥
अति[7]मोह थकत हरपाल १८२।२ अंग,
अरिदल्ल बढ्यो सु धरि जयउमंग ॥
धीर १ रु हरि२ खिंचिय १३ हनि धक्यो सु,
[8]छतअधिक जैत्रसिंह १८२।३ हु छक्यो सु ॥ ३० ॥
दाढितँहँ नृपहल्लू १८२।१ [9]भीमबेस,
मूर्छित मतं[10]गथित कियमहेस ॥
छत[11]विकल झुकत खिंचिय १३ सछोह,
आयो हरराजसु रंचत रो[12]ह ॥ ३१ ॥
सरडुव २ तस हल्लू १८२।१ सहि बिसेस
पहु हनिय खग्ग अरिसिर प्रदेस ॥
कटि टोप द्वि २ तिल[13] पैठत [14]कृपान,
भी[15]रुक सु होड भजिगो बिभान ॥ ३२ ॥
दलभजत होड बनि [16]व्यग्र दंद,
मूर्छित महेस लै भजिग मंद ॥

करके ॥२७॥ १ भयंकर युद्ध मचकर आश्चर्य २ बढा ३ खड्गों की मार से ॥२८॥ ४ युद्धभूमि में ५ शरीर को घावों से ६काटकर ॥२९॥ ७ अत्यंत मूर्छा ले. ८ अधिक८घावों से ॥३० ॥६ भयङ्कर वेश से अथवा भीमसेन के वेष से १० हाथी पर चढेहुए महेसदास को मूर्छित किया ११घाव से विकल होकर १२ शत्रुओं का रोध (रोक) रचताहुआ ॥ ३१ ॥ दो १३तिल के बराबर १४ तरवार बैठते ही १५ भीरु (कायर) ॥ ३२ ॥ युद्ध में १६ व्याकुल होकर

इतकेहु मुख्य छकि छतें अपार,
हल्लू १८२।१ हि रह्यो रनकरनहार ॥ ३३ ॥
रनखेत खरो यह धवल धीर,
बजवाइ बिजयआनक मबीर ॥
हरपाल १८२।२ जैत्र १८२।३ छतमूँढ हेरि,
निजसिंबिर सबन लायो निबेरि ॥ ३४ ॥
कियकाका सुक्कल १८१।१ दाहकर्म,
नप्प १८२।१ हिं जयअप्पिय कछु सुनर्मं ॥
सतअट्ठ ८०० गिरे इतके सिपाह,
उतकेहि इते ८०० लहि वाहवाह ॥ ३५ ॥
बिहुंत बल खिच्चि१३न प्रहतँ बिक्खि,
अपरहु किय हल्लुव १८२।१ समय इक्खि ॥
कोटापठाइ घायल कितेक,
अल्पछंत नप्प १८२।१ लै संग एक १ ॥ ३६ ॥
चढिकैं निस हल्लुव १८२।१ चाहुवान,
लिय जाइ सीसवाली २ सुथान ॥
खिच्चिय १३ भट है तिन्ह कछु खपाइ,
दिय नप्प १८२।१ आँन तत्थहु फिराइ ॥ ३७ ॥
धरि तँहँ सतबारह १२०० सुभट धीर,
पैत्ते पुनि कोटा हुव २ मबीर ॥

अनेक १ घावों से ॥ ३३ ॥ २ घावों से मूर्छित हुओं को हेरकर ३ अपने डेरों में. युद्ध का ४ निपटारा (निमेड़ा) करके ॥ ३४ ॥ ५ इसी के साथ; अर्थात् नरपाल युद्ध में नहीं गया इस कारण उसकी इसी करके विजय की सूचना की. खीचियों की ६ भगीहुई और ७ मरीहुई सेना को देख कर हल्लू नें ८ और भी समय देखकर कार्य किये ९ छोटे घाववाले अकेले नरपाल को संग लेकर ॥ ३७ ॥ १० हिंडोरा ११ पहुंचे

किय *न्हान हप्प१८।२ जैत्र १८।३ हु जितैंक ॥
अवनीस रहे दुव २ तँहँ इतैंक ॥ ३८ ॥
जंपिय पुनि हल्लू १८।१ करनजोरि,
हमसौं थई सु किन्नी निहोरि ॥
सुव इम लैहैहो तुमहु भ्रात,
जानहिं तव प्रत्युपकार जात ॥ ३९ ॥
इमकहि वंदावद पत्त अप्प,
निजपुर इतआयउ भूप नप्प १८।१॥
इकसमय श्रावनिक तीज ३ तत्त,
पुरटोडा पाहुन नप्प १८।१ पत्त ॥ ४० ॥
तब पिउहरँ ही रानी तृतीय ३,
गिनितास प्रेम बंधन गरीय ॥
आसार असित जलपूर जास,
वाजिबल तरि सु तटिनी बनास ॥ ४१ ॥
आगम निसीथ असवार एक १,
टोडापुर पहुँच्यो निबहि टेक ॥
सोलंखिन जातहि मँह प्रसारि,
कतिदिन तँहँ रक्खिय प्रसभकारि ॥ ४२ ॥
लक्षापन १ वादन २ नटन ३ गान ४,
मचि विविध कुतूहल तान मान ॥
इकदिन गिरि निज्झर गय असेस,
नानाविध क्रीड़त दुव २ नरेस ॥ ४३ ॥

जबतक हरपाल और जैत्रसिंह ने नैरोग्यता का *स्नान किया तबतक दोनों राजा वहीं रहे ॥३८॥ १ पीछा उपकार हुआ जानेंगे ॥ ३९ ॥ २ श्रावण की ३ गया ॥४०॥ ४पीहर(पिता के घर)५ घोड़े के बल से ६बनास नदी तिरा ॥४१॥ ७उत्सव ८हठ करके. उत्सव, वाद्य, नाचने गाने से विविध कौतुक मचा ॥४३॥

किल्हन १ तब गोहो तजि स्वकाय,
गोपाल २ हुतो चालुक्कराय ॥
सो स्वीय कुमर नरपाल ३ सत्थ,
जामिपहित वर्द्धन पत्त जत्थ ॥ ४४ ॥
पल १ अन्न २ सिद्ध हुव चउ ४ प्रकार,
अहिफेन १ भंगि २ मादक अपार ॥
वारुनिप्रसंग चालुक्क वहैं न ॥
नृपकरि सु पान किय रत्तनैंन ॥ ४५ ॥
थिरइक्क १ सिला गिरिकूटक थान,
सम १ रुचिर २ दिग्घ ३ आयत ४ समान ॥
बुंदीपहुँचावन तिहिं विचारि,
हडुलिय उड्ड १ संकटरन हकारि ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

बुंदिसहिं बरज्यो बहुन, उपल न दुर्लभ आँहि ॥
सालकँ अनुमतलहि सुपहु, तदपि पठावहु ताहि ॥ ४७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मद्यविबस महिपाल भनिय यहसुनत कोपभरि ॥
कातर चालुक कातिक देत दुहिता जु बैर डरि ॥
गोपाल १ सु सहिरहिय तदपि नरपाल २ पुत्र तस,
सह भट ग्रावसमीप जाइठह्यो बिरोधबस ॥

१अपना शरीर छोड़ गया था २बहिनोई॥४४॥३मांस और चार प्रकार के अन्न पके. ४अमल ५ नशे की वस्तुएँ. सोलंखी ६मद्य नहीं पीते थे ॥ ४५ ॥ पर्वत के शिखर पर एक शिला ७ बराबर ८ सुन्दर ९ लंबी १० चौड़ी बराबर थी जिसको बुन्दी पहुंचाने के लिये ओड (खोदनेवाले जाति विशेष) बेलदार और ११ गाड़ों को मंगवाये ॥४६ ॥ १२ पत्थर दुर्लभ नहीं १३ हैं तो भी हेराजा १४ साले की १५ मंजूरी लेकर भिजवाओ ॥ ४७ ॥ वीरों के सहित १६ पत्थर के

बुल्ल्यो सु लयेजात न बिखम इम रजपूतनके उंपल,
बल जोहु करहु कैसी बनत कंकहु नन चक्खहिं कुपल ॥४८॥

॥ दोहा ॥

करखि खग्ग हड्डु कमत, वहुन गह्यो धरि बत्थ ॥
मेटतहुव रिस मध्य रहि, सांत्वन करन समत्थ ॥ ४९ ॥
रत्ति वहहि बुंदीसरहि, रस१ बिच बिरस २ रचाइ ॥
लै निजरानिय प्रात लघु, आलय प्रविस्यो आइ ॥ ५० ॥
कतिमासन अंतर कढत, मन सुहि अनख प्रमानि ॥
सज्जि कटक१ खनक२रु संकट३,उंपलसु कढ्यो आनि ॥५१॥

॥ षट्पात् ॥

सज्जि गयउ यहसुनत धाव बाजिन बढात धकि,
रह्यो खिजत रोपाल १ तदपि नरपाल २ क्रोध तकि ॥
मचत अचानक तुमुल रुकि पिक्खन लग्गो रवि,
इम भुसुंडि उत्तरत परत अद्रिन मनौंकि पवि ॥
कंकट१ सिरस्क२ बाहुल३ कटत मुंड अटत बिकरालमुख,
सिंहिकासूनु मानहु सतन रवि निश्चललखि ग्रसन रुख ॥
अरि चालुक लखि आत सेनसम्मुह हुव हड्डन,
नप्प१८२।१ग्रबुज डुंगर१८२।४सु अग्ग भो गहि असि१अड्डन२
सांवल१बिजय२ सुमेरु३ हेरि४ चालुक चतुष्क४ हनि ॥

समीप जा खड़ाहुआ १ पत्थर २ चोंच पची भी ऐसे कायरों के ३ खोटे मांस को नहीं खावेंगे ॥ ४८ ॥ ४ चलतेहुए को ५ शान्त (क्रोध रहित) करने को ६ शीघ्र ७ घर ॥ ५० ॥ ८ खोदनेवाले (बेलदार) ९ गाडे १० पत्थर को ॥ ५१ ॥ ११ दौड़ाकर १२ घोड़ों को १३ भयंकर युद्ध १४ हाथियों के दांतों सहित शिर उडनेलगे सो मानों पर्वतों पर १५ वज्र गिरनेलगा १६ कवच १७ टोप १८ दस्ताने कटने लगे और फटेहुए मुख पर से लुंड फिरने लगे सो मानों १९राहु शरीर सहित होकर; अथवा सैकड़ों राहु होकर सूर्य को युद्ध देखने के लिये२० ठहराहुआ देखकर ग्रसने को तैयार हुआ ॥ ५२ ॥

स्ववपु पाइ छत सत्त७ पर्य्यो जीवत प्रवीर मनि ॥
नरपाल१८२।१नक्खि*तरलित तुरग सजव मिल्यो नरपालसन,
पहिलैं चलाइ दोउ२न प्रदर३ सुरपथ३ किय छादित सघन ॥५३॥
मारिय इक्क१ महीप प्रदर चालुक्क कनपट्टिय ॥
नृपभुज१ सत्रु२ निसंक दुसहचालुक दुव२ दट्टिय ॥
तजि कमान तरवारि झारि अरि कर नृप झारिय ॥
अरिहु सद्दि उपकार प्रास नृपबदन प्रहारिय ॥
चालुकी१८२।१जदपि बरज्यो चतुर बालन साहस तदपि वहि ॥
जगकिय अपुव्वनरपाल१८२।१जस सिलसटैं रनखेतरहि॥५४॥

(दोहा)

सालकको अपसव्य सय, वट्टिय रन बुन्दीस ॥
बचिगो सो निजआयुवल, सल्ल जदपि सर सीस ॥ ५५ ॥
लग्गो तोमर नृपलपन प्रखर कढ्यो गलपार ॥
पारि तदपि नव९ अरि पर्यो, दिष्टहि फलत उदार ॥ ५६ ॥
परसुराम वह पानि लै, चालुकको चहुवान ॥
पत्तो बुन्दिय करि पिहित, सूचन विहित समान ॥ ५७ ॥

षट्पात् ॥

भूपदेह१८२।१ अरु भ्रात डारि सिविका वह डुंगर१८२।४ ॥
आये बुन्दिय अनुग कँ१ उर२ जाठर३ कुट्टत कर ॥

---

* चपल १ नरपाल नामक सोलंखी से २ तीर ३ आकाश को ॥ ५३ ॥ ४ भाला राजा के ५मुख में मारा ६ मूर्ख हठकरके ७ शिला के बदले में रणखेत में रहकर ॥ ५४ ॥ दहिना ८ हाथ ९ मस्तक में घाव का साल था तो भी ॥५५॥ १० मुख में भाला लगाके ११ तीक्ष्ण १२ भाग्य ॥ ५६ ॥ उस सोलंखी के १३हाथ को लेकर १४ छिपा कर दोनों को बराबर कहने के लिये बुन्दी पहुंचा ॥ ५७ ॥ १५ पालखी में १६ उस डुंगरसिंह को डालकर सेवक लोग १७ मस्तक, छाती और पेट को हाथों से कूटतेहुए बुन्दी आये

जिम वह चालुक जान डारि उतके टोडागय ॥
किय खिल फौजन कलह रुप्पि दुव२ जाम बडेरय ॥
नरपाल जात रोपालनृप तरंजि ताहि मोर्‌यो मरन ॥
हड्डन कृपान करहीनहै ननजीवहु अक्खिय नरन ॥ ५८ ॥
तजि सिविका चढितुरग जनक तर्जित चालुक जँहँ ॥
विनुश्रद्दाहु वहोरि कढयो गहि रदन कुसा कँहँ ॥
निजदल मिलत निहोरि जदपि रोक्यो निजजोधन ॥
जनक विडारन ज्वलित रंच मन्निय अवरोध न ॥
इम सब्य करहि असिगहि अनखि हड्डन घन वल बीच हुव ॥
अरि जुग२ गिराइ नरपाल वह भिरि इम सुत्तो रंगभुव ॥५९॥
सोलंखी जयसिंह१ पंच५ बुंदियभट पारिय ॥
इतके गौड़ अमान१ त्रि३ हय रिपु च्यारि४ प्रहारिय ॥
इक१ हल्लू चहुवान डोहि अर्णव चालुकदल ॥
अनघोरापति एह बढ्ढि अरि नवक९ महावल ॥
सेसन मुराइ लहि जयसुजस सहघायल आयो सदन॥
उतकेहु दाहि नरपाल इम पहुँचे टोडा बिमनपन ॥ ६० ॥

(दोहा)

बुंदिय नृपबपुं आत इत, बीरी बिरचि सुबास ॥
सहगामिनि सोलंखिनिय, कियकछु नर्म प्रकास ॥ ६१ ॥
असुचि सर्व्य१ अपसव्य२ इक१, प्रिय तुम द्वि२मुख प्रसिद्ध ॥

इसीप्रकार सोलंखी को १ यान में डाल कर उधर के लोग टोडा में गये. उस नरपाल को जाते ही राजा रोपाल ने २ धमकाकर मरने के लिये पीछा फेरा. हाडों के ३खड्ग से ॥ ५८ ॥ ४ दांतों में घोड़े की ५ बाग पकड़कर ६ पिता के निकाल देने की अग्नि से जलतेहुए ने रोकने को नहीं माना ॥ ५९ ॥ सोलंखियों की सेना रूपी ८ समुद्र को ७ डोह (मथ)कर ९ उदासपन से ॥६०॥ १० शरीर ११सुगंधवाली बीड़ी बनाकर १२सती कुछ १३हसी(मस्करी)की ॥६१॥ परशुराम के हाथ में दहिना हाथ कटाहुआ देखकर सोलंखिनी ने कहा कि हे प्यारे तुम्हारे १४बायाँ हाथ बाकी रहा सो तो अशुद्ध

लाऊँ अब कैसे लपन[1], बीरी सौरभ बिद्ध ॥ ६२ ॥
कर सु डारि संभरकहिय, यह भतीज कर आँहिं ॥
यातैं स्वामिनि धरिअपर[2], सन्म्यांगत मुखमाँहिं ॥ ६३ ॥
कर दक्खिन चालुक्यको, इम रानिय मुखअग्ग ॥
परसुराम अवसर पटकि, लहिय त्राह सिसुलग्ग ॥ ६४ ॥
अनघोरापतिके अनुज, परसुरामकेपानि ॥
रीझि हार बितरन[3] लगी, तिहिं न लयो हठतानि ॥ ६५ ॥
रानी पठयो दूत द्रुत, बदि इम बिरुद[4] बिगोइ[5] ॥
जीवहुरे नरपाल जिन, हड्डन अंकित[6] होइ ॥ ६६ ॥
सुनि पुनि आये निजँनसन[7], कलह सु आयो काम ॥
चिता ज्वलित प्रमुदित चढी, रक्खि सुजस अभिराम ॥ ६७ ॥
तातैं[8] कुमति लज्जित तदनु[9], बिद्या१ नय[10]२ रन३ बीर ॥
बुंदिय पंद्रह१५ बरस बय, हुव अधिपति हम्मीर १८३१॥६८॥
सकं ख इन्दु गुन सू१३१० समय, पायो भव[11] नरपाल १८२।१॥
सो लि बेद गुन ससि१३४३ समय, सुत्तो रन रिपुसाल ॥ ६९ ॥

होनेके कारण उस हाथ में बीड़ी नहीं देसकती और तुम प्रसिद्ध ही द्विमुख हो(यहां द्विमुख शब्द में श्लेष है, अर्थात् एकतो भाले से गर्दन में छिद्र होजाने के कारण दो मुखवाले होगये हो और दूसरा, झूठे को द्विमुख कहते हैं) यहां व्यङ्ग्य से यह अर्थ निकलता है कि तुम सदैव कहा करते थे कि मैं शत्रु को मारकर मरूंगा और अब अकेले ही मरे इस से झूठे हुए सो यह सुगन्ध की बीड़ी चबाने के लिये किस १ मुख में दूं ॥ ६२ ॥ वह हाथ डालकर परशुराम चहुवाण ने कहा कि यह तो तेरे भतीजे का हाथ है अर्थात् हाथ कटजाने से वह भी योग्य नहीं रहा है और तुम्हारा पति शत्रु को मारकर मरा है जोझूठा नहीं है इस कारण हे स्वामिनि! तेरे पति के२गर्दन में हुए दूसरे मुख में बीड़ी रख; अर्थात् यह वीरता से हुआ मुख है जिसमें धर ॥६३-६४॥ ३देनेलगी ॥६५॥ ४उत्साहवर्द्धिनी स्तुति को५बिगाड़ कर६हाड़ों के कियेहुए चिन्हवाला होकर॥६६॥ आयेहुए७अपने लोगों से सुना कि सोलंखी नरपाल भी काम आया ॥६७॥ ८पिता की दुर्बुद्धि से लज्जित होकर९जिस पीछे१०नीति ॥६८॥ ११उत्पत्ति ॥६९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणेपञ्चम ५ राशौ-
वीतिहोत्रचण्डासि १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५
वीज्यानुवीज्याविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनरपाल
१८२।१चरित्रे नरपाल१८२।१स्वसीमाक्रामकशत्रुदम्भिक१तोमर२क
न्याविवोढस्वानुजजैत्र१८२।३डुङ्गर१८२।४हल्लू१८२।१त्रिका३सूयन
१ तत्प्रत्युपालम्भभ्रातृव्यप्रतिभटभ्रातृपरीक्षितुकामनरपाल१८२।३
कोटाऽऽगमन२सस्वागतनिवेदितोपायनजैत्रसिंह १८२।१स्वाग्रजार्थ
सर्वस्वनिवेदन३देवानुजमोहन१८०।११सुत१८१।१मोत्कलकोटागत
१८२।१नरपालहल्लू१८२।१युग२समसमैकासनोपवेशन४तथैवसजै
त्र१८२।३हल्लू१८२।१नरपाल१८२।१त्रिक३सहभोजन५खिच्चि१३म
हेशदासोद्देशाऽभिषेणयन्नरपाल१८२।१सरणिसमागतपलाशथपुर
समाक्रमण ६ मोत्कल १८१।१वञ्चितैका १ऽऽघातदुर्गपतिखिच्चिप्र
हाटखड्गप्रहारबुन्दीशशीर्षशिरोभागभागभेदसामर्षहल्लू १८२।१ प्र
हाटनिपातनानन्तरस्व १ पर २ परासुसङ्ख्यासूचन ७ जितस्था

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के अवसर के वचनों में बुन्दी नरेश नरपाल के चरित्र में नरपाल का अपनी सीमा दबानेवाले शत्रु दहिया और तोमरों की कन्याएं विवाहने से अपने छोटे भाई जैत्रसिंह, डुंगरसिंह, हल्लू इन तीनों की असूया करना, भाइयों के प्रति उपालम्भ देने पर भाईपन की शत्रुओं में परीक्षा करने का उनसे उत्तर पाकर नरपाल का कोटे आना, आयेहुए का आदर और नजराना करके जैत्रसिंह का बडे भाई के अर्थ सर्वस्व निवेदन करना, देवसिंह के छोटे भाई मोहन के पुत्र मोकल का कोटा में गयेहुए हल्लू और नरपाल दोनों को एठ पूर्व क एकगद्दी पर बिठाना, इसी प्रकार जैत्रसिंह, हल्लू और नरपाल, तीनों को शामिल भोजन कराना, खीची महेशदास के उद्देश से नरपाल की युद्धयात्रा के मार्ग में आयेहुए पलाथर्था पुर को लेना, एक आघात से मोकल का राजा को बचाना, और दुर्गपति खीची पहाड़सिंह के प्रहार से बुन्दीश की पगड़ी और मस्तक के भाग के कटने से क्रोधयुक्त हल्लू का पहाड़सिंह को मारने के बाद अपने

नरक्षार्थन्यस्तसुभटशताऽष्टक ८०० प्रवर्त्तितशिविरस्थापितबुन्दीश क्षतोपचारसानीकप्रस्थितहल्लू १८२।१ हरपाल १८२।२ जैत्रसिंह१८२। ३ मोत्कल १८१।१ हड्डचतुष्क ४ समभ्यागतसायुत १०००० सैन्यखिच्चि १३ महेश १ डोडहरराज २ समायोधन ८ शातित्रयोदश १३ शत्रुहड्डमोत्कलसिंह १८१।१ शूरलोकसमारोहण ९ निपातितखिच्चिसचिवहड्डहरपाल १८२।२ संहृतखिच्चिधीरसिंह १ हरिसिंह २ हड्डजैत्रसिंह १८२।३ भ्रातृयुगदुस्सहलोहमोहमिलन १० प्रहरणावञ्चन १ प्रहरण २ प्रगल्भहल्लू १८२।१ प्रहारपीलुपातितमूढमहेश १ प्रेक्षणप्रकुपिताऽभियाताऽभियातिडोडहरराज २ पृशत्कजकुट २ पूजितहाररराजिस्वकरवालाङ्कितशिरश्चर्मप्रामारमद्रावण ११ तदीक्षणात्रस्तव्याप्ययानसमाहितस्वामिकखिच्चि १३ चमूपराचीन पलायन १२ संस्कारितमृतपितृव्यकमोत्कल १८१।१ कोटाप्रस्थापितसक्षतसमस्तनृपार्थनिवेदितसनर्मजयरत्ननिर्णीतरव १ परप

और पराये मुरदों के संख्या की सूचना करना, विजय कियेहुए स्थान की रक्षा करने के लिये रक्खेहुए आठसौ वीरों को प्रवर्तन करके डेरों में स्थित बुन्दीश के घाव का इलाज कराकर फौज सहित प्रस्थान करके हल्लू, हरपाल, जैत्रसिंह और मोकल, इन चारों हाडों का सन्मुख आयेहुवे दश हजार सेना के सहित खिचीं महेसदास और डोड हरराज से युद्धकरना, तेरह शत्रुओं को मारकर मोकलसिंह का वीर लोक को जाना, खीची के मन्त्री को मारकर हाडा हरपाल; और खिची धीरसिंह और हरिसिंह को मारकर हाडा जैत्रसिंह; इन दोनों भाइयों का दुस्सह शस्त्रों से मूर्छित होना, शस्त्र से ताड़ना कियेहुए और शस्त्र चलाने में प्रौढ ऐसे हल्लू के प्रहार से हाथी से गिरायेहुए मूर्छित महेशदास को देखकर क्रोधयुक्त आयेहुए शत्रु डोड हरराज के दो बाणों से पूजित होकर हल्लूका खड्ग के अन्तिम प्रहार से हरराज के मस्तक को चिन्हित करके प्रामार हरराज को भगाना, उसको देखकर सेना का व्याकुल होकर मूर्छित स्वामी खीची महेसदास को यान में बैठाकर विमुख होकर भागना, मरेहुए काका मोकल का अग्निसंस्कार करके सब घायलों को कोटा भेजकर राजा को हँसी के साथ जय रूपी

रासुसङ्ख्यबुन्दीशसहितदत्तसोप्तिकहल्लू १८२।१ शीर्षपालिकापुरनरपाल १८२।१ वशीकरण १३ तद्दङ्गस्थापितद्वादशशत १२०० सुभटप्रत्यागतकोटाविड़ापितकियद्दिनप्रतिनिन्दितरणविधुरोल्लाघीभूतहप्प१८२।२ जैत्र १८२।३ जकुट २ हल्लू१८२।१नरपाल १८२।१ स्वस्वकुरागमन १४ तदनन्तरपितृपस्त्यप्रस्थापिततृतीय ३ द्वितीय २ कृच्छ्रोत्तीर्णप्रावृडासारपूर्णवर्णाशिष्टीपात्रश्रावणीतृतीया ३ प्राघुणकनरपाल १८२।१ टोडाख्यपुरप्रविशन १५ प्रापितनानाविनोदप्रमोदसानुमन्निर्भ्ररसमीपस्थालकसम्पादितनानाभोज्यभोक्ष्यमाध्वीकापिशायनविक्षिप्तबुद्धितिरस्कृतश्वाशुर्यवर्गनरपाल १८२।१ स्वपुरप्रेषणार्थतत्रत्यैक १ शिलानिष्कासननिमित्तखनक १ शक-

रण निवेदन करके युद्ध में अपने और पराये मुर्दों का निर्णय करके बुन्दीश सहित रतिवाह देकर हल्लू का शीषवाली नगर को फिर नरपाल के आधीन करना, उस नगर में बारह सौ सुभट रखकर पीछे कोटा में आकर कितनेक दिन बिताकर युद्ध में व्याकुल नरपाल की निन्दा करनेवाले हरपाल और जैत्रसिंह दोनों के आराम होने पर हल्लू और नरपाल का अपने अपने नगरों में आना, जिस पीछे पिता के घर में ठहरीहुई तीसरी रानी के स्नेह से द्वितीय ( ) वर्षाऋतु की जलधारा से बढ़ी हुई *बनास नदी को कष्ट से उतर कर श्रावण की तीज पर नरपाल का पाहुना होकर टोडा पुर में जाना, अपनी इच्छा के अनुसार नाना प्रकार के विनोद और प्रमोद प्राप्त होकर पर्वत के झरने के समीप साला के सम्पादन कियेहुए नाना प्रकार के भोज्य भोजन करने पर मद्य से बिगड़ीहुई बुद्धिवाले ससुरे की परगह को तिरस्कार करके नरपाल का अपने नगर भेजने के लिये वहां पर स्थित एक शिला को निकालने के लिये बेलदार और गाड़ों को बुलाना, पिता के मना करने के विरुद्ध बहिन के पति के दुर्वाक्यों से क्रोध

*इस पूर्ववाहिनी बनास को वर्णिशिष्टीपात्र लिखना भूल है क्योंकि वह बनास नदी आबू पर्वत से निकल कर पश्चिम दिशा में बहती हुई पश्चिम समुद्र में जाती है और यह बनास नदी मेवाड़ के अर्बली पर्वत से निकल कर पूर्व में बहती हुई चंबल में मिलकर पूर्व समुद्र में जाती है यह भूल आबू और अर्बली दोनों नाम एक से होने के कारण हुई प्रतीत होती है जिनको अब भी बहुधा लोग एक ही जानते हैं परन्तु यह उनकी भूल है,

ट २ समाकारण १६ जनकजामिजानिदुर्वाक्यविद्धमन्युवारक-
पितृप्रतीपकोशाकृष्टकरवालस्वपरिकरसमेतचालुककुमारनरपाल-
शिलाखनकसंरोधन १७ मध्यस्थानुनीतप्रत्याकारप्रत्याहितकृपाण
दुर्मनोन्युषितैक १ रात्रचालुकीसमुपेतदुराराध्यनरपाल १८।१ बु-
न्द्यागमन १८ सामान्तरसमयसज्जखनक १ शकट २ सैन्य ३ पुनः
प्रतिगतनरपाल १८।२ शिलानिष्कासनश्रवणसामर्षपितृप्रतिकू-
लपुनरागतचालुक्यकुमारसमायोधन १९ शकलितचालुक्यचतुष्क
४ सोढप्रहारसप्त७काऽसमर्थसायुर्बलनृपाऽनुजडुङ्गरसिंह १८।४
प्रधनाऽजिरपतन २० प्राप्तप्रत्यनीकपलवाहद्युग २ प्रहारबुन्दीशनि-
शितनिस्त्रिंशचालुक्यदाक्षिणकरकर्त्तन २१ शङ्खसोढैक १ कलस्व-
चालुक्यकुमारतोमरविद्धवदन १ कृक २ निपातिताभियातिनवक
९ बुन्दीशमहानिद्रालभन २२ बुन्दीप्रस्थापितस्वामिसञ्चर १ टोडा
गमिताऽसमर्थकुमार २ सैन्यद्वय २ संयोधन २३ पितृप्रतियापित
स्वैकहस्तसंहृतद्विड्द्वय २ कुमारनरपालबुन्दीशगतिग्रहण २४ पर

चढकर म्यान से खड्ग निकाल कर परगह सहित सोलंखी कुमार नरपाल का
शिला खोदनेवालों को रोकना, मध्यस्थ लोगों की प्रार्थना करने से खड्ग को
म्यान में करके उदास मन से एक रात्रि वहीं निवास करके सोलंखिनी सहि
त कठिनाई से आराधना करने योग्य नरपाल का बुन्दी आना, कई महीनों
पीछे बेलदार, गाडे और सेना सजकर पीछा जाकर नरपाल का शिला नि-
कालना सुनकर क्रोध सहित पिता के विरुद्ध फिर आये हुए सोलंखी कुमार
का युद्ध करना, चार सोलंखियों का भेदन करके बडे सात प्रहारों से असमर्थ
आयुर्बल सहित राजा के छोटे भाई डूंगरसिंह का युद्धभूमि में गिरना, शत्रु के दो
घावों के प्रहारों को प्राप्त करके बुन्दीश का तीखे खड्ग के प्रहार से सोलंखी
के दहिने हाथ को काटना, ललाट की हड्डी में एक बाण सहन करके सोलंखी
कुमार का बुन्दी के राजा के मुख और गर्दन को भाले से बेधना और नव शत्रुओं
को मारकर बुन्दीश का काम आना, स्वामी के देह को बुन्दी भेजने और अस
मर्थ कुमार के टोडा गये पीछे दोनों सेनाओं का युद्ध करना, पिता के पीछे भेजने
पर एक हाथ से दो शत्रुओं का संहार करके कुमार नरपाल का बुन्दीश की गति

पल्लीयचालुक्यजयसिंह १ बुन्दीशसुभटपञ्चक ५ संहरण २५ हड्डपल्लीयगौडमानसिंह १ रिपुचतुष्क ४ वाजित्रिक ३ विध्वंसन २६ निपातितारिनवक ९ प्रतिशमितप्रत्यनीकसमर्थासमर्थस्वामिसैन्यसमेतचाहुवाणहल्लूबुन्द्यागमन २७ सहगमनसमयसनर्मस्वस्वामिमन्यावेधसुखवीटकवितितीर्षुसप्रुचितकरस्मृगयमाणराज्ञीचालुकीपुरश्चाहुवाणपरशुरामस्वीमततद्भ्रातृजदक्षिणदोर्दर्शन २८ भ्रातृजसंग्राममरणश्रवणसस्मदसमाश्लिष्टस्वामिसंहननराज्ञीचालुकी १८२।३ पावकप्रविशन २९ पञ्चदश १५ वर्षवयस्कहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ पितृपट्टसमादान ३० नरपाल १८२।१ जन्म १ मरण २ समयसम्वत्समासंख्यानं ३१ पञ्चमो ५ मयूखः ॥ ५ ॥
आदितो द्वापञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

गहि पहिलैं चित्तोड़गढ, तँहँ रहि मास कितेक ॥

को प्राप्त होना अर्थात् काम आना, शत्रु सोलंखी जयसिंह का बुन्दी के पांच सुभटों को मारना, हाडों के पक्षवाले गौड़ अमानसिंह का चार शत्रु और तीन घोड़ों को मारना, नव शत्रुओं को मार कर पीछी फिरी हुई समर्थ और असमर्थ स्वामि की सेना सहित चहुवाण हल्लू का बुन्दी आना, सती होने के समय मस्करी (परिहास) से अपने स्वामि के गर्दन में वेधन कियेहुए सुख में बीड़ी देने की इच्छा से दाहिने हाथ को शोधती हुई रानी सोलंखिनी के आगे चहुवाण परशुराम का अपने विचार से उस रानी के भतीजे का दहिना हाथ दिखाना, भतीजे का युद्ध में मरना सुनकर हर्ष सहित स्वामी के शरीर का आश्लेष (मिलाप) करके सोलंखिनी रानी का अग्नि में प्रवेश करना, पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले हड्डाधिराज हम्मीर का पिता का पाट लेना, नरपाल के जन्म और मरण समय के सम्वत् की संख्या सूचन करने का पांचवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥
और आदि से एक सौ बावन मयूख समाप्त हुए ॥

सोनगिरे ७।१ प्रामार २ स्वक ३, आर्य[1]क रक्खि तितेक ३ ॥१॥
पिल्लि कटक हरराज १८१, पर, अप्पसु दिल्लिय आइ ॥
साह भयो अतिबल असह, अज्जन रज्ज[2] उठाइ ॥ २ ॥

पट्पात् ॥

पंच्छिम १ उत्तर २ पुब्ब ३ दियउ दुद्धर पठाइ दल ॥
सूबा निजनिज सीम बंधि तिन किय प्रबंध बल ॥
दक्खिन आयंत[3] देखि सुभट बिस्वस्त[4] बंधु सजि ॥
सहसतीस३०००० मित सूर प्रबल पठये भावित[5] भजि ॥
चतुरंग लंघि रेवा[6] चलत अरे समुह आपाच्य[7] ईन[8] ॥
हुव प्रधन[9] कल्पसो घोर है अब बंचन[10] न किम बाच्यइन[11] ॥३॥

पाच्यइन १ वाच्यइन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

(दोहा)

अग्गहु लिय तुरकन अवनि, दक्खिन कछुक दबाइ ॥
सुतो सही सब लखिसमय, प्रधन[12] पराजय पाइ ॥ ४ ॥
रनथंभ १ रु चित्तोर २ लै, मिच्छ सु अब जयमत्त ॥
बाढनलग्गो सीम बहु, पिक्खत नृपन प्रमत्त[13] ॥ ५ ॥

यमत्त १ प्रमत्त २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दक्खिन पहुँचत साहदल, नव भुव लेत निहारि ॥
मेकलजा[14] परतट मिले, रचि उतकेनृप रारि ॥ ६ ॥

पादाकुलकम् ॥

बिजयनगर१ बीजापुर २ बीडर ३, भागनैर४ आसेर५भूपबर ॥

१रक्षक।१।आर्य्यों के २राज्य उठाकर।२। ३बडा(लम्बा) ४विश्वासवाले५चिंन्तव-न करके वा शिक्षित६नर्मदा नदी को उल्लंघन करके७दक्षिण के८राजा९युद्ध प्रलय के समान. अब यह११हीन अर्थात् अधम(यवन)स्वामिकैसे होसकता है इसलिये अब१०वचना नहीं है अर्थात् मरजावेंगे परंतु इनके आधीन नहीं होंगे यह ठानकर ॥३॥१२युद्ध में ॥४॥१३आलसी; अथवा असावधान देखकर१४नर्मदा नदी के ॥६॥

कुंड६रुबदर७धामिनी८पहुकति, प्रतिष्ठान९नासिक१०पुरयापति७
इत्यादिक लघु१गुरु नृप इक्कत, सीमा खिलहु जात करि सम्मत॥
संगर रचतभये मिच्छन सन, मारत मरत धरत अग्गहि मन॥८॥
इक्क न जदपि मुख्यो अवनीपति, कहियत तदपि बलिष्ट कालगति॥
बीडर१ भागनगर२ बीजापुर३, धामिनि४कुंड५भूप धारकधुर॥९॥
ए नृप पंच५काम रनआये, स्वस्व देस अवसेसें सिधाये॥
भूप मरे तिनकीहु दब्बि भुव, हठी जवन तिहिंकाल असहहुव२॥१०॥

सचंरणागद्यम्॥

जा सेनाके सरदार पहिले पातसाह जलालुद्दीन १० हूसौं बिसेसबढाइ बैराट १ प्रमुख केहीदुर्ग लेकैं दक्खिन ४ मैं अलावुद्दीन ११ का दुस्सह प्रताप दिखावतभये॥

ऐसैं च्यारि ४ ही दिसामैं पहिले अधिकारिनकौं प्रतारि आपुनैं थानाँजमाइ सबही नरेसनसौं दिल्लीसकी आज्ञाके अधीन रहिबो लिखावतभये॥

दक्खिन ४ मैं गई जा सेनाके सरदारन बीजापुर १ भागनगर २ बैराट ३ इन तीन ३ ही दुर्गनमैं आपुनौं निवास राखि अलावुद्दीन ११ को असोघआदेस प्रवृत्तकीनौं॥

अरु इनहीनैं प्रारब्धके प्राबल्यकरि जिततित आपुनौं जोर जमाइ साहको सीघ्र मरिबो हू सुनि आपही उतके अधीस व्हैरहे तिननैं नवीन अवनीके अर्जनसौं उपराम न लीनौं॥११॥

(दोहा)

साह जाइ चित्तोरसन, दिल्लिय चउ ४ हि दिसान॥
पठये दल तिन किय प्रथम, हाकिमजन गन हान॥१२॥

॥७॥ ८॥ १ बलवान्॥ ९॥ २बाकी के राजा॥ १०॥ ३आदि ४भाग्य के ५प्रबलता से ६भूमि के ७ संग्रह करने से ८निवृत्त नहीं हुए॥ ११॥१२॥

*गोचर कबहुन कालगति, कछु प्रबंध इम कीन ॥
याहिबरस तजि एह गो, देह अलावुद्दीन ११ ॥ १३ ॥
देखहु कुतवुद्दीन १ सौं, इत दस १० साहहि आप ॥
साह अलावुद्दीन ११ सम, पायउ किहिं न प्रताप ॥ १४ ॥
मिच्छनमैंहु न धर्ममति, हनि इकइक प्रभु होइ ॥
हनि गोरि१न खलजी२हुव रु, खलजिन तुगलक३खोइ ॥१५॥

सचरखागद्यम् ॥

जैसैं दिल्लीके दसम १० पातसाह आपनैं काका निजधर्मके निधान महासज्जन खलजी २ जलालुद्दीन १० कौं बिस्वातघातसौं मारि ताहीको भतीज यह अलावुद्दीन ११ उग्रसासनके अनुसार दिल्लीको अधीसभयो ॥

तैसैंही पहिले कारामैं डारे याकेभतीज सुलैमानके काहूदास नैं चित्रकूटकौं तोरि पीछैं आगमके अनंतर वाही अब्दमैं यह अलावुद्दीन ११ हू मारिलयो ॥

तापीछैं बारहौं १२ पातसाह ऊमर १२ भयो सोहू थोरेही मासनमैं गत होइ वाही अलावुद्दीन ११ को मूढ अंगज सुवारिक १३ साह भयो सोहू अल्पही अब्दमैं आपुनैं काहू दासके करसौं हन्यौं गयो ऐसैं अनेक अघनंकरि विक्रमके सककी गज गुन गुन गोत्रा १३३८ सम्मित समामैं खलजी२नके घरानैंसौंहू दिल्लीकी अधीसता छूटगई ॥

सो यथार्थ न्यायकारक १ सुसील २ दयाकेनिधान ३ तीजी३ कौमके तुगलक ३ चतुर्दसमैं १४ पातसाह गयासुद्दीन १४ के अधीन भई ॥ १६ ॥

तारीख फिरिस्ता १दिक यावनीके पुस्तकनमैंतो त्रयोदसम १३

काल की गति *देखने में नहीं आती ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ कैद में २ चित्तोड़ को ३ पुत्र ४पापों से ५ संवत् में ॥ १६ ॥ ६ फारसी भाषा के

पातसाह कुत्बुद्दीना १२[1]पैरनाम मुबारिकसाह १३ खलजी २के अनंतर इनहीके कुटुंबको खुसरोखान १४ नाम चउदहौं १४ पातसाह अधिकलिख्यो परंतु आपुनैं ग्रंथनमैं न जान्यौं ॥

अरु यासमयके सासक[2] सर्वसामग्रीसम्पन्न[3] बडेबुद्धिमान सत्यवादी साहब ३ लोकनहू[4] भारतवर्षीय इतिहास १ भूगोलदर्पण२ भूगोलविचार ३ जुगराफिया ४ प्रमुख[6] केहीपुस्तक बनाये तिनहूमैं खलजी २ मुबारिकसाह १३ तुगलक ३ गयासुद्दीन १४इनदोउ-२नके अंतरमैं खुसरोखान १ पातसाह अधिक न मान्यौं ॥

ऐसैं सूचितं सक समाके समय चउदहौं १४ पातसाह तुगलक ३ गयासुद्दीन १४ दिल्लीके तखतबैठि आपुनैं धर्म १ नीति२के आगमनके अनुसार आर्यावर्तमैं अमोघ आदेस करतरह्यो ॥

अरु राज्यकेकार्य पहिलैंसौं बिगरेदीसे तिनकौं सुधारि उपधौं करि परखे भरोसाके अधिकारी ऐसे प्रवृत्त किये जिनआगैं न्यायकौं आदिलेकैं समस्तव्यवहारनमैं सबकोही पक्षपात टरतरह्यो१७

दोहा

सदय १ गभीर २ रु न्याय ३ सम, साह गयासुद्दीन१४ ॥
कति गढ जीरनैं[11] १ सु दृढकरि, कति नूतन २गढकीन॥१८॥
पथभय देसन मेटि पहु, अभयकरे सब ओकैं[12] ॥
लै बहुधन बिहरनलगे, लैंहु[13] सोदागरलोक ॥ १९ ॥
पुरखुंदिय हम्मीर १८१ पैंहु[14], पाटव[15] सब इत पाइ ॥
जई जनकहेतुकैं[16] कुजस, दिय जसअग्ग दबाइ ॥ २० ॥

१दूसरा नाम२हाकिम३युक्त४अंगरेज लोगोंने भी५भारतवर्ष सम्बन्धी ६आदि ७जनायेहुए विक्रम के शक८संवत् के समय में९शास्त्रों के अर्थात् कुरान वगैरः के अनुसार१०वजीर आदि के आशय को परखकर परीक्षा कियेहुए कई११पुराने गढों को दृढ करके ॥१८॥१२घर१३शीघ्र ॥१९॥१४राजा. सब१५चतुराई पाकर पिता के१६कारण अपजस हुआ था उसको अपने जस के आगे दबा दिया॥२०॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

एगारहैं ११पातसाह खलजी २ अलावुद्दीन११ के पीछैं तो जितितही जोरपाइ इलाके इलाकेमैं आपआपके इलाकेकेअधीस मानि अनेकसूबेनकेसरदारन च्यारि ४ ही दिसामैं दिल्लीसौं मुररि पातसाहीपर डंमरडार्यो ॥

अरु दक्खिनकेहाकिमन मालवको सूबा १ मंडूपुर २ सौं लगाइ कर्णाटकोसूबा १ भिन्नकरि बीजापुर २ को हाकिमीसौं निवार्यो ॥

आपुनैंआपुनैं सूबाके बसवर्त्ती समीपकेनरेसनसौं दिल्लीको भागधेय बलात्कारकरि परोक्षहीं लैनलगे ॥

अरु अनेकभूपनकौं बुलाइ स्वपक्षपाती करिवेकौं बिनाही व्यय जसजानि पूर्तीपनकेदेस दैनलगे २ ॥ २१ ॥

इतकौं बुंदीकोअधीस हड्डाधिराज हम्मीर १८३।१ मंडपपुरके प्रतिहार नरेसरोपालकी भावती १८३।१ नाम पुत्रीको पानिग्रहन करतभयो ॥

अरु दहिया १ रु गौड़ २ द्वै २ ही सत्रुनको सातनकरि करउर १ लक्खैरी २ द्वै २ ही दुंगनमैं आपुनौं अनीक धरतभयो ॥

खिच्चि १३ महेसराजसौं तीन ३ जुद्धजीति मऊ १ रहलावनि२ प्रमुख पिताके गुमाये प्रांत स्वकीय बसवर्त्तीकरि ओरहू ओरओरतैं अछूती अवनी दाबि सीमाकेसमीपी सत्रुनके सदन सूते वैर जगाये ॥

अरु केथोनिके तोमर सासनाकेअनुसार जानि बुंदीकेसेवक करि चरनलगाये ॥ २२ ॥

१ उपद्रव (लूटखसोट) २ हांसिल (कर) ३ बल पूर्वक ४ परभारा (बाला बाला) ५ खरच ६ शत्रुओं के ॥ २१ ॥ ७ मंडोवर के ८ नाश करके ९ आदि १० आज्ञा के आधीन ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नगर सेरगढनाह डोंड हरराज बृद्धवय,
विरचिय *चरमविवाह मरत मतिमंद [1]जरामय ॥
[2]जनन गौड़ जिहिं [3]जनन रहि सु कतिदिन तँहँ रानिय ॥
सुनतभई बुंदीस सुजस पुनि पाप प्रमानिय,
पठयो [4]पलास लिखि इम [5]पिहित धरिधक पूरब बैर धुव ॥
लैजाहु हम्म १८३।१ बैरिन लखत हमहु [6]डोंड गुनगौरिहुव ॥२३॥

॥ दोहा ॥

पहुवंचि सु [7]दल जदपि [8]पटु, तदपि बैर हठतानि ॥
मंजु नगर निजजित मऊ, [9]अह [10]निबस्यो बहु आनि ॥२४॥
माघ १ [11]तपस्य २ दु २ मासरहि, जंपिय मन नय जोरि ॥
दिन जिहिं लैगो ताहिदिन, गहौं जियत गुनगौरि ॥२५॥

॥ षट्पात् ॥

मऊ इम सु हम्मीर १८३।१ रह्यो सुहि समय निहारत ॥
[12]मधुसित तीज ३ मिलाप चल्यो [13]दल अतुल प्रचारत ॥
वाहिर [14]उपवन विरचि गोठि भोजन [15]चसकन गहि ॥
हुव प्रमत्त हरराज चित्त अरिजन अभाव चहि ॥
हम्म१८३।१सुत्रि३जा[16]मदिनरहिगहनसेनअयुत१००००सहलखिसमय
तँहँजाइ मारि रच्छक तिय सु हसि गहिलिन्नी [17]पिट्ठिहय ॥२६॥

दोहा

---

* अन्तिम विवाह १ बुढापे में. गौड़ २ वंश में जिसका ३ जन्म था वह रानी कितने ही दिन वहां रही ४पत्र ५ गुप्त. मैं ६डोड की गुनगौरि हूं ॥२३ ॥ ७ पत्र ८ चतुर था तो भी. बहुत ९ दिन १० निवास किया ॥२४॥ ११ फाल्गुन ॥ २५ ॥ १२ चैत्र सुदि तीज. अतुल १३सेना को फैलाता हुआ १४ बाग में १५ चुसकियें (मद्य पीने के पात्र) १६ तीन प्रहर तक गहन वन में रहकर १७ घोड़ेकी पीठ पर चढाली ॥ २६ ॥

सुभटन अक्खिय भूपसन, द्विगुनित करि दहतेहि ॥
विसंते[1] कछुक बिलंबि[2] तो, गुनगोरिहु गहतेहि ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

हड्डअधिप हम्मीर १८३।१ स्वीयसुभटन[3] सुवैन सुनि,
सहबल गौड़िसमेत पत्त[4] जँहँ डोड तत्थ पुनि ॥
गदिय[5] तुज्झ गुनगोरि जियत[6] अब हम लैजावत,
नहिं खँत्तिय तवनिलय[8] संढ[9] किम तदपि सिटावत ॥
सुनि तेहु छोरि पंतिन[10] चंसक हेतिन[11] अभिमुख[12] मिलतहुव,
कबलौं सु राम२०३भूपति[13] कहूँ भिरत वनी जिम रंगभुव[14] ॥२८॥
नृपउप्पर हयनक्खि जात हरराज मत्त जँहँ ॥
छकि आसव मदछोह तुरग झंपत गिरयोसु तँहँ ॥
तोहिदलके[15] तुरग दारि[16] खुरघात जानुदिय[17] ॥
दासन दिन्नौं हुतहि हयन फटिजाइ नतो हिय ॥
बिनुस्वामि लरे डोडहु बहुत पै बुंदिय विधि जोरपर ॥
हरराज तियसु हम्मीर१८३।१हठि नीतिलंघि आनिय नयर[18] ॥२९॥

दोहा

निपुन[19] निहारहु राम २०१ नृप, ग्राम्य[20] प्रसभ[21] मन मानि ॥
अनुचितकिय हम्मीर १८१।१ यह, ऊढा[22] रानिय आनि ॥३०॥
रनहि बिचारत मरिरह्यो, रुजा[23] जरठ[24] हरराज ॥

१प्रवेश करत २ विलम्ब करके ॥ २७ ॥ १ अपने सुभटों के वचन सुन कर जहां डोड हरराज था तहां ४गया ५कहा ६ जीवती हुई गुनगौरि को तुम्हारे ८घर में ७ सुथार नहीं हैं तौ भी ९ हे नपुंसक! क्यों सिटाता है.? पंक्ति में से १०चुसकियें छोडकर ११ शस्त्रों से १२ सन्मुख मिले १३ हे राजा रामसिंह १४ युद्ध भूमि ॥ २८ ॥१५ उसी हरराज की सेना के घोड़ों ने १६ विदारण करके १७ घुटनों की दी १८ नगर में ॥ २९ ॥ १९प्रवीण था तो भी २०ग्रामीण लोकों के समान मन में २१ हठ करके २२ विवाही हुई ॥ ३० ॥ २३ रोगी २४बुड्ढा.

काहू नन सम्मत कह्यो, करत हम्म १८३।१ यहकाज॥ ३१ ॥
गिनि संटैं गुनगोरिकैं, हम आनी कहि हम्म१८३।१॥
अनपत्रप बिलसे अखिल, कॆमन भोग रुचि कॆम्म ॥ ३२ ॥
हम्म१८३।१ अनुज नवरंग१८३।२ हुव बिरचत तीन३बिबाह ॥
राजकुमरि १८३।२।१ सोलंखिनी, लही प्रथम१बिधिलाह ।३३।
तोमरकुल भव भावती१८३।२।२, नामसु दूजी२नारि ॥
प्रामारी तीजी३ प्रिया, कहत किसोरकुमारि१८३।२।३ ॥३४॥
तासअनुज थिरराज१८३।३ तिम, पाये उपयम पंच५ ॥
चालुक्कजा चउ४रुकमिनी१८३।३।१,पहिली सुगुन प्रपंच ॥३५॥
सपञ्च १ प्रपञ्च २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

अमृतकुमरि१८३।३।२आनंदकुमरि१८३।३।३अक्खयकुमारि१८३।३।४इम
चालुक कुलभव च्यारि४ नारि थिरराज१८३।३ लही जिम ॥
कोकसमाँख्य गुहिल्लपुत्र पुत्री राजकुमरि१८३।३।५ ॥
चतुर प्रिया यह चरम ब्याह पंचम५ आनीबरि ॥
हुव दुव२ तनूज हम्मीर१८३।१के तनयाइक१ इम तोकत्रय३॥
बरसिंह१८४।१कुमर अग्रज बहुरि लालसिंह१८४।२लघु बीतभय३६

॥ दोहा ॥

लघु अनुजा इनकी ललित, कुमरी चंद्रकुमारि१८४।१ ॥
प्रतिहारी१८३।१ औरसप्रजा, यह त्रिक३ कुल अनुकारि ॥३७॥
सुपहु बिवाही यह सुता, चंद्रकुमरि१८४।१ गजचाल ॥
मल्लिनाथके कुमरकों, जासनाम जगमाल ॥ ३८ ॥

किसीने १अच्छा नहीं कहा ॥३१॥ २ गुनगौरि के बदले में ३निर्लज्ज ने ४सुन्दर भोग रुचि के अनुसार ५काम किये ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ६सोलंखी की चारों पुत्रियें थीं ॥ ३५ ॥ कोयला ७नामक ८ अन्तिम विवाह तीन ९बालक ॥३६॥ १० छोटी बहिन ॥ ३७ ॥ महेवा नगर के राठोड़ राजा *११मल्लिनाथ के॥३८॥

*मारवाड़ की तवारीख में मल्लिनाथ के गादी बैठने का सम्वत् विक्रमी १४३१ लिखा है

लालसिंह १८४१२ लघु पुत्रहित, दिय गैनोलिय १द्रंग ॥
तासहु त्रिक३ हुव दुव२ तनुज, इक१तनुजा सुभ अंग ॥३९॥
जैत्रसिंह१८५१नवब्रह्म१८५१२जुग२,लाल१८५१३सुतनकेनाम ॥
इन्ड्न लालाउत्त१६१० हुव, दसम१० भेद उद्दाम ॥ ४० ॥
दसम१० भेदके भेददुव२, जैताउत्त१०१ जथाहि ॥
कहियतपुनि नवब्रह्मके१०१२, निजनिज तोकं तथाहि ॥४१॥
सुखाँ१८४१नाम सीसोदनी, जाठर यह त्रिक३ जात ॥
कृष्णाकुमरि१८५१नवब्रह्म१८२१२की,अनुजा गुनअवदात॥४२॥
पीछैँ यहकन्या प्रथित, लालसिंह१८४१२ हितचाहि ॥
दई रान हम्मीरके, खितल कुमरहिँ व्याहि ॥ ४३ ॥
बारूचारन बैरगिनि, तदनु सु खितल ताँम ॥
लरि गैनोली अव्दलग, क्रम नृप आयो काम ॥ ४४ ॥
पहिलैँ इमहिं प्रसंगपरि, आवत भावि उदंत ॥
महाप्रबंधन रीति मत, समुझहु उचित सुमंत ॥ ४५ ॥

॥ षट्पात् ॥

महीरमन हम्मीर १८३१ बप्प निज बैर बहोरन ॥
गय टोडापुर गज्जि सज्जि सेनहिँ जय जोरन ॥
तँहँ रोपालतनूज नामसत्तल चालुक नृप ॥
जित्यो जुरि बरजोर सबिल जिम आखु सरीसृप ॥
चउ४जाम अमल टोडा बिरचि पुनि सत्तलहित अप्पि पहु ॥
करि टौंक बिजय हरखात कुल बिदितकिन्न जग कित्तिबहु ॥४६॥

॥ ३९ ॥ १ निरंकुश ॥ ४० ॥ २ पुत्र ॥ ४१-४२ ॥ ३ प्रसिद्ध ४ क्षेत्र सिंह (खेता) को ॥४३॥ ५ बारू नामक सोदा बारहठ शाखा के चारण के बैर पर, [जो इस टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) का सोलहवीं पीढी पर परपुरुष था] ६ जिस पीछे ७तहां पर ॥ ४४ ॥ ८ आगे होनेवाले वृत्तान्त आते हैं ९ बडे ग्रन्थों की रीति के मत से ॥ ४५ ॥ १०राजा हम्मीरसिंह. अपने ११ पिता का बैर लेने के लिये १२ रोपाल का पुत्र १३ बिल सहित १४ चूहे को १५ सर्प

हड्डअधिप हम्मीर १ बीर हम्मीर २ रान बलि ॥
हम्मीर ३ हि प्रतिहार हड्ड हलू ४ हु कर्णाकलि ॥
मल्लीनाथ ५ कबंध अधिप कछवाह उद्धरन ६॥
सत्तल ७ चालुक्क गंगसेन ८ प्रामार विदितपन ॥
तुगलक्क ३ इतैंसु दिल्लीतख्त धरत गयासुद्दीन १४।९ ध्रुव ॥
नृपराम २०२ चरित इनके निखिल हियधारहु समकालहुव॥४७॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इतकों दिल्लीकेअधीस यवनेंद्र तुगलक ३ गयासुद्दीन १४ की प्रीति आपुनी ओर देखि सबहीविद्याविसारदजन साहको आश्रयलै सुखसौं रहनलगे तिनहींमैं कोऊ पुंजराज नाम बनिक सचिवहो जानैं व्याकरनविषयके सारस्वतनाम ग्रंथपर टीका पुंजराजी बनाई जाके उद्योतकरि सूत्रनकी संगतिमिलाइबेमैं अल्पावस्थ अर्भकनके अंतरके अंधकार बीतिगये ॥

अरु याहीसमयमैं केही सूबेनकेअधीस अलावुद्दीन ११ के अंतके अनंतर दिल्लीसौं फिरेहे तेहू स्वस्वसीमाकौं बिसेसबढाइ केहीबेर पातसाही फोजनकौं जीतिगये ॥

इतकौं बुंदीकेअधीस हड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ को पट्टप राजकुमार बरसिंह १८४।१ पत्निनको त्रितय ३ बिबाहतभयो ॥

तिनमैं पहिली १ कुमरानी तो चित्तोरकेअधीस सीसोद रानौं लक्खनके लघुपुत्र अजयसिंहकीसुता प्रभावती १८४।१ नाम दूजी २ रानी खुसहालसिंह कछवाहकीकन्या अहिजनकुमरि १८४।२नाम तीजी३अनुपमसिंह प्रमारकीपुत्री छत्रकुमरि १८४।३ नाम इन तीन ३ ही तरुनिनके साथ प्रीतिरीति निवाहतभयो४८

जीत लेवे ऐसे ॥ ४६ ॥ १ कलियुग में कर्ण ॥ ४७ ॥ २ छोटी अवस्था वाले ३ बालकों के ४ पीछे ५ अपनी अपनी सीमा को. तीन ६ स्त्रियों को ७ स्त्रियों के साथ ॥ ४८ ॥

इतिवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पंचम५राशौ वीतिहोत्रचण्डासि १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्य विहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहम्मीर १८३।१ चरिते चित्रकूटन्यस्तरक्षक १ प्रेषितहरराज १८१।१ युयुत्सुसैन्य १ दिल्लीगतविरचितप्रतिदिक्सैन्यसीमाविजयप्रबन्ध ३ यवनराडलावुद्दीन११ दक्षिणदिग्जिगीषुत्रिंशत्सहस्र ३०००० पृतनाप्रस्थापन १ रेवाऽपरतटप्राप्ततत्पृतनापतिसम्मुखागतयोत्स्यमानदाक्षिणात्यमहीपमण्डलमुख्यबीडर १ भागनगर २ बीजापुर ३ धामिनी ४ कुण्ड ५ नृपपञ्चक ५ निपातन २ नष्टौजस्कविजयनगर१ऽऽसेर २ वदर ३ प्रतिष्ठान ४ नासिक ५ पुण्याद्दिपृथ्वीशस्वस्वपस्त्यपलायन ३ समाक्रान्तमृतनृपस्थानपञ्चक ५ परास्तप्राक्तनयवनेन्द्रप्रधानकृतबीजापुर १ भागनगर २ वैराट ३ वसतिकश्रुतस्वस्वामिमरणस्वतंत्रदक्षिणजेतृयवनाऽग्रेसरतत्प्रान्तस्ववशीकरण४कुतवुद्दीनादिजलालुद्दीना१०ऽवधिभूतपूर्वदिल्लीशयवनदशका१०ऽपेक्षाप्रथितप्रतापप्रा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र हम्मीरसिंह के चरित्र में चित्तोड़ पर रक्षक रखकर हरराज पर युद्ध के लिये सेना भेजकर दिल्ली में जाकर प्रत्येक दिशा में सेना भेजकर विजय का प्रबन्ध करके बादशाह अलाउद्दीन का दक्षिण दिशा को जीतने की इच्छा से तीस हजार सेना भेजना, नर्मदा नदी के परले किनारे पहुंचने पर उस सेना के सेनापति से युद्ध करने को सन्मुख आयेहुए दक्षिण दिशा के राजाओं के समूह में मुख्य बीडर १ भागनगर २ बीजापुर ३ धामिनी ४ कुण्ड ५ पांच नगरों के राजाओं का मारा जाना, प्रताप नष्ट होकर विजयनगर १ आसेर २ बदर ३ प्रतिष्ठान ४ नासिक ५ पुण्या ६ आदि नगर के राजाओं का अपने अपने घर भागना, पहिलेहारेहुए पांचों मृतक राजाओं के स्थान लेकर बादशाह के प्रधान का बीजापुर १ भागनगर २ और वैराट में निवास करने पर अपने स्वामि का मरना सुनकर दक्षिण के विजय करनेवाले यवनों के अग्रेसर उस प्रधान का स्वतन्त्रता पूर्वक उस प्रान्त को वश करना, कुतबुद्दीन से लेकर जलालुद्दीन तक पहले हुए दिल्ली

अजयसिंह सीसोदसम, होत अवहु ध्रुवधर्म ॥ २९ ॥
जनमैं ताके तोक[1] जुग २, पहिलो १ सज्जन १ पुत्त ॥
अनुजा[2] तास प्रभावती २ जो कन्यागुन जुत्त ॥ ३० ॥
अजयसिंह तनुजात[3] वह, सज्जन हुव बुध[4] १सूर २॥
देनलगो हम्मीर इहिं, पटा उचित वसुपूर[5] ॥ ३१ ॥
जदपि रानहम्मीर हठ, करि थक्किय विधिकोरि ॥
पटा लक्ख१०००००रुप्पय प्रमित[6], न लयो तदपि निहोरि ॥३२॥
वीर सु तजि मेवार वलि[7], दक्खिन स्वबल[8] दिखाइ ॥
जित्ति सितारानैर जहँ, प्रतप्यो वैभवपाइ ॥ ३३ ॥
याहीके कुलके अवहु, हुते सितारा हंत[9] ॥
पै अब गोरैंन[10] प्रबलपन, स्वत्वहिं[11] छोरि सुसंत ॥ ३४ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

जा सज्जनसिंहकी अनुजा प्रभावती १८४१ नाम रानाँहम्मीरनैं स्वकीय[12] सोदर्य[13] स्वसाकेसमान[14] सत्कारसहित वित्तको विसेस व्ययँ[15] विस्तारि अत्यंत उद्भव[16] करि बुंदीकेअधीस हड्डाधिराज हम्मी

के कर्म देखो ॥ २९ ॥ १ वालक २ छोटी बहिन ॥ ३० ॥ वह अजयसिंह का ३पुत्र सज्जनसिंह ४पण्डित और वीर हुआ ५धन से पूर्ण ॥ ३१ ॥ ६ प्रमाणवाला ॥ ३२ ॥ ७ फिरदक्षिण में ८ अपना बल दिखाकर ॥ ३३॥ ९ खेद की बात है कि १० अङ्गरेजों ने उन श्रेष्ठों से ११ अपने हक्को छुडालिया ॥ ३४ ॥ १२ अपनी १३ सगी १४ बहिन के समान १५ खरच १६ उत्सव करके

यह कथा बड़वाभाटों की लिखाई हुई होने के कारण इसमें भूल हुई है क्योंकि चित्तोड़ के युद्ध से निकले पीछे थोड़े समय बाद कैलवाड़ा में अपने भतीजे हम्मीरसिंह को राज्य देकर अजयसिंह स्वर्ग को सिधारे और हम्मीरसिंह राजा होकर यवनों से अनेक युद्ध करने के कारण निर्बल होगये तब किसी तीर्थ में अपना शरीर छोडने के अर्थ द्वारका जाने लगे सो गुजरात में बारू चारण के ग्राम खोड़में बरवड़ी नामक शक्ति का वरदान पाकर चित्तोड़ लेने के अर्थ पीछे कैलवाड़ा आये और उसी बारू चारण की सहायता से हम्मीरसिंह ने चित्तोड़ का राज्य पीछा लिया जिसका सविस्तर वृत्तांत देखना होवे तो वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में महाराणा हम्मीरसिंह के चरित्र में देखें, यहां अजयसिंह का चित्तोड़ लेना लिखा सो मिथ्या है.

र १८३१ के पट्टप राजकुमार वरसिंह १८४१ को बिवाहिदई ॥

अरु पितामह लक्खनकेसमान स्वकीयसीमामैं सासनकौं सफलकरि दिल्लीके दर्पकौं दाहिबेकी चर्यालई ॥

क्षत्रबंधुनको भानेजहो तथापि नीति पराक्रम २ हैर ही पदार्थ असाधारन अपनाइ आर्यावर्त्तके अधीसनमैं अग्रगण्य आर्यधर्म को आलंबन अद्वितीय भयो ॥

अरु याही रानाँहम्मीरकै खित्तलनाम कुमार जन्मलीनौं सोहू पिताकीशिक्षाकेसमान बाल्यवयमैंही आर्यधर्मकेआधार ऐसे आपुने अन्वयके अनुकूल आगम पढिगयो ॥३५॥

प्रायोमरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणगद्यम् ॥

इणबातरै अनंतरही एकसमय चीतोड़मैं कमठाणारोकाम चालताँ कोईधातूरी एक१ मूर्त्ति च्यारि४ हाथ धारणकीधाँ भूतळमाँहिंथी नीसरी ॥

जिकणरो भाव विचारणरैकाज राणाँहम्मीर आपरीसभामैं मंगाइ परिकररालोकाऩूँ प्रत्येक पूछि परीक्षाकरी ॥

जिकणमूर्त्तिरै एक१ हाथनीचो दूजो२ हाथऊंचो तीजो३ बीच मैं तिरछोरहियो ॥

अर चोथो ४ हाथ कंठरैलागो देखि आपआपरी उपलब्धिरै अनुसार साराँही जुदोजुदोभावकहियो ॥ ३६ ॥

जठै सारीहीसभानूँ सुणाइ सो दे चारण बारू कही या मूर्तिलो राणाँहम्मीररो अद्वितीय उदार१ वीर२ पणौं दिखावणरैकाज पा-

१ लक्ष्मणसिंह के २ दिनचर्या(आचरण) ३ इलके क्षत्रियों का भानजा था तो भी ४ आधार ५ खेत्रसिंह (खेता) ६ वंश के ७ शास्त्र ॥ ३५ ॥ ८ पीछे ही ९ जमीन के भीतर से १० जिसका ११ अभिप्राय १२परगह के लोगों से से १३ प्रत्येक पुरुष से पूछकर १४ ज्ञान ॥ ३६ ॥

ताळलोक१ थी भूलोक८मैं आई ॥

अरु सक्तिरो स्वरूप धारणकरि समग्रही संसाररा स्वांतमें एक १ ही चीतोड़राअधीसरी अधिकता जणाई ॥

नीचो१ हाथ करि सातूँ ७ ही अतलादिक तलालोकाँमैं राणाँ जिसड़ा दूजा२उदार१ वीर२ रो अभाव जतावै ॥

अर ऊँचो हाथकरि भुवरादिक छै६ही ऊर्द्धलोकाँमैं इणारा प्रति-भटरो अनादर बतावै ॥ ३७ ॥

तीजो३ हाथ बीचमैंराखि इणहीमहीमंडलरैमाथैं राणाँजिसो दूजो२ रजपूत राणीजणियो न कहै ॥

अर इणमैं भूठोहोइतो चोथो ४ कर कंठलगाइ आपरो सीस उतारणरूप सँपथरो स्वीकारचहै ॥

सोदारोइसड़ोविदग्धतारोवचनसुणताँहीसारीहीसभावाहवाहकीधो

अर राणाँहम्मीर इण ऊहारी रीभपर आपरापोळिपाल बारू-नूँ सासणाँरा सप्तक ७ समेत बारहलाख १२००००० रौंजतीमुद्रारो विभवदीधो ॥ ३८ ॥

अठी इणसमयरै आगैं हाडाराव हम्मीर १८३।१रा भावी बृद्धवयमैं दिल्लीरा पंद्रहाँ१५ अधीस जवनेस मुहम्मदसाह १५ री पातसाहीमैं इणरा पिता पहिलापातसाह गयासुद्दीन १४ रो बणायो पंजाबरो सूबादार नबाव रहीमअली आपरा बाहुवळथी पातसाहवणि दिल्लीजिसड़ी दुलहीनूँ बरणरैकाज आयो ॥

अरु मुहम्मदसाह १५ केही आर्य १ म्लेच्छ २ सुभटाँरा समूह सज्जीभूतकरि चतुरंगिणी चैमूनूँ प्रचारि साम्हौंचलायो ॥

सस्त्रपातरा प्रारंभमैंही सूबापति रहीमअलीरा वीराँरा बाहुबल

---

१ मन में २ नीचे के लोकों में ३ जैसा ४ ऊपर के लोकों में ५ बराबरी करने वाले; 'स्थानापन्न का' ॥ ३७ ॥ ६ हाथ ७ सौगन ८ पण्डिताई का ९ तर्कना की १० चांदी के रुपयों का ॥ ३८ ॥ ११ आगे होनेवाला १२ सेना को

थी दिल्लीरो कातर कटक पलायमानथियो ॥

जठै मुहुम्मदसाह १५ रा मतंगजनूँ सुंडाइ कर्णाटराजरैकुमार प्रमार नरसिंहदेव १ कालंजरराजरैकुमार पंडिया १० चाहुवाण चाचिकदेव २ घोडाउठाइ दोन्हीं राजकुमाराँ मुहुम्मदसाह १५ रैदेखताँ रहीमअलीरो अनीक समस्तही जाइ त्रस्तकियो ॥ ३९ ॥

प्रमाररा प्रहरणाँरा प्रहारपाइ पीलूरी पीठिहूँ पराङ्मुखहोइ पड़ता रहीमअलीरो मस्तक तो चाहुवाण चाचिकदेव काटिलीधो ॥

अर नरसिंहदेवनूँ छिन्नभिन्नहोइ पड़तोदेखि केही जवनानूँपरेतपतिरी पुरीरा पाहुणाकरि ऊँही उत्तमंग आणि मुहुम्मदसाह १५ रै उपायन कीधो ॥

अर कहियो नरसिंहदेवरा सस्त्राँरा सन्निपातहूँ प्राणहीणहोइ पड़ता रहीमअलीरोमस्तकतो आपरा विजयमैं एक प्रमाण पेखावणरै काज मैं ही काटिआणियो ॥

अर नरसिंहदेवतो घणाँम्लेच्छाँरा मस्तक महीरा मंडण करि लोहछकप्राइ पड़तोदीठो परंतु मैंतो जिकणरो जीणों १ मरणों न जाणियो ॥ ४० ॥

चाचकदेवरी सूचनानूँ प्रमाररा पराक्रमरी समतामैं सिराहि मुहुम्मदसाह १५ जाइ खेतसम्हालियो ॥

अर सैकड़ाँ मृतक म्लेच्छाँरा मंडलरैबीच कर्णाटराजरोकुमार नरसिंहदेव घणाँ घावाँकरि घायलपड़ियो थको भी चेतनासमेतभालियो ॥

सिबिकामैं उठाइ आणताँ नरसिंह १ कहियो सत्रुरो सिरतो चाचक२ उडायो तिणरा सत्काररैसमय म्हाँरोआदर खटावैनहीं॥

१कायर२भगा ३हाथी को ४पीछा फेरकर ५भयभीत(कम्पायमान)किया ॥३९॥६ शस्त्रों के ७हाथी की ८प्राणरहित ९ यमराज की १० वही ११मस्तक १२नजर१३ प्रहार से १४दिखाने के लिये ॥४०॥ १५समूह के बीच में१६देखा१७पालखी में

जठै चाचिक २ कहियो मैं तो विजयमैं केवल प्रमाण पावण रै काज या कीधी जिणथी ओररी ऊँठी कीर्तिरो भोगणो बीतिहोतै वसुधेस्वररावंसनूँ कोईकाळमैं भी आवैनहीं ॥ ४१ ॥

इणरीति परस्परमैं प्रसंसाकरता नरसिंहदेव १ चाचिकदेव २ दोन्हीराजकुमारानूँ दिल्लीआइ मुहम्मदसाह १५ चामर १ छत्रा २ दिक समान सत्काररैसाथ केही लाखरुपिआँरो राज्य दीधो ॥

अर पुरुषपरीक्षामैं विद्यापतिमिश्र भी यौं दोन्हीं सत्यवीराँरा सुजसरो प्रकासकीधो ॥

जिणसमय विक्रमरा सकरी गगन गज गुण गोत्रा१३८०सम्मित समामैं चउदहों१४दिल्लीस गयासुद्दीन१४कोई प्रासादरा पड़ता पटळ रै हेठआइ मरियो तरै इणरोपुत तुगलक३आलिफखान१५पंद्रहों१५ पातसाह हुवो जिकणाहा आपरोमुहम्मदसाह ईसड़ो दूजो२नामपायो

अर इणराही समयमैं एक हुसैन १ नाम जवन आपराही स्वामी कोई गणकराज[11] ब्रिप्ररा बचनरै अनुसार मालवदेसरे पाररा समस्त दक्खिणरी पातसाही पाइ दूजो २ नामकरि अलावुद्दीन कहायो ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

अठी कँवर जगमाल इम, इणहीसमय महीप ॥
साहसुता[12] लै साधिया, दल पैला कुलदीप ॥ ४३ ॥

---

१ जिससे २ उच्छिष्ट ३ आग्निवंशी ४ चहुवाण के वंश को ॥ ४१ ॥ ५ प्रमाणवाले ६ वर्ष में ७ महल की ८ छत के नीचे आकर ९ तब १० ऐसा ११ ज्योतिषी ॥४२॥ १२ बादशाह की * पुत्री को लाकर शत्रुओं की सेना को

---

* इस के लिये राजपूताना में ऐसा प्रसिद्ध है कि जगमाल ने गुजराती बादशाह मुहम्मद बेगड़ा की पुत्री गींदोली को बलात्कार से पकड़कर अपनी पासवान बनाई और कितने ही लोकों का कथन है कि गींदोली गुजराती बादशाह की पुत्री नहीं थी किंतु बादशाह के एक सरदार नव्वाब अब्दुल्लाह की पुत्री थी सो, कैसा ही होवे परंतु गींदोली के कारण आईहुई यवन सेना को परास्त करके जगमाल ने गींदोली को घर में रक्खी जिसके गीत अब भी सम्पूर्ण राजपूताने में गुनगोरी के दिनों में स्त्रियें गाया करती हैं,

सो उदंत अब मूळसह, सप्तम ७ किरण प्रसंग ॥
भाखीजै रचियो भड़ाँ, जिम मेहवपुर जंग ॥ ४४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेपूर्वा१यणेपञ्चम५राशौवीतिहोत्रचण्डासि १ वंशवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वीज्यानुवीज्यविहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेंद्रहम्मीर १८३।१ तत्कुमारवरसिंह १८४।१ समयसामीप्यसङ्गतस्वपितृव्यकाऽजयसिंह १सहितराणाहम्मीर २ चरित्रे पूर्वरणोज्झिताऽसुकाऽजयसिंह १ गूढवाटदेशप्राच्यप्रान्तस्थध्वस्ततत्रत्यपारिपान्थिकसत्कृतस्वपक्षपातिवसतिककदलपुरनाम्नगरसमाक्रमण १ निपातितानेकयवन १ त्रासितलुण्ठितमेदपाटप्रदेश २ समात्तराणापदा ऽजयसिंहार्थचारणबारूतदग्रजाङ्गजहम्मीरमातुलगृहविद्यमानत्वज्ञापन २ तत्प्रेषितबारूसुभटसचिवीकृतसवयस्कबालवृन्दमातामहक्षेत्रनिष्पन्नोपाधान्यपृथुकविभाजकसमात्ततत्समाजस्वामित्वशूरशिशुहम्मीरनिरी

झेली ॥ ४३ ॥ सातवें १ मयूख में ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पंचमराशि में अग्नि वंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हम्मीर और उसके कुमर वरसिंह के समय की समीपता में होनेवाले अपने काका अजयसिंह सहित राणा हम्मीरसिंह के चरित्र में पहले के युद्ध में अपने प्राण को बचाकर अजयसिंह का गोढवाड़ देश के पश्चिम प्रान्त में स्थित वहां वाले शत्रुओं का नाश करके अपने पक्षपात वाले लोगों से पूजि होकर कैलवाड़ा नामक नगर को लेना, अनेक यवनों को मार और मेवाड़ देश को लूटकर राणा पद को ग्रहण कियेहुए अजयसिंह के अर्थ चारण बारू का अजयसिंह के बडे भाई [अरिसिंह] के पुत्र हम्मीरसिंह का मामा के घर में विद्यमान होने की सूचना करना उसके भेजेहुए बारू का अपनी अवस्थावाले बालकों के समूह को उमराव और मंत्री आदि बनाकर अपने नाना के खेत पर पके और भुनेहुए मक्का के फलों को बालकों को बांटते और उस समाज के स्वामिपन को ग्रहण कियेहुए शूर बालक हम्मीरसिंह को देखना, आयेहुए का आदर करके प्रश्नोत्तर से परस्पर के स्वरूप

क्षण ३ सस्वागतभोजितमध्नात्तेरानिश्चितान्योन्यस्वरूपबारूसमा
नीताऽजयसिंह १ हम्मीर २ सम्मेलन ४ कदलपुरानीतसप्रज १
प्रजावती २कप्रच्छन्नवृद्धबलप्रहतप्रद्रावितप्रामारादिप्रतीपाऽजयसिं
हसुशिक्षितनृपत्वोचितभ्रातृजहम्मीरार्थचित्रकूटसमाक्रमण ५ मेद
पाटप्रभूकृतहम्मीरविरक्तपितृव्यकाऽजयसिंहयोगचर्यावपुर्विहान ६
तिरस्कृतराणाहम्मीरार्पितमुद्रालक्ष १००००० प्रमिताऽऽयपट्टत्यक्त
मेदपाटाऽजयसिंहसूनुसज्जनसिंहसितारापुरस्कन्धावारदाक्षिणादिक्कि
यत्प्राच्यप्रान्तराज्यसमासादन ७ राणातद्भगिनीप्रभावती १८४।१
बुन्दीशकुमारवरसिंहा १८४।१र्थवितरण ८ प्रथितनयपराक्रमा
निरुद्धशासनचित्रकूटाधिराजहम्मीरसूनुकुमारक्षेत्रशैशवसमुचित
शिक्षण९ प्रासादपीठभूखननप्रादुर्भूतपाणिचतुष्क ४ वद्धातुपुत्रिका
भावसंभावकसौतेयबार्वर्थसशासनसप्तक ७ द्वादशलक्ष१२०००००
द्रव्यवसुवितरण १०दिल्लीशमुहम्मद १५ सामन्तप्रामारराजकुमार
नरसिंहदेव १ परासुपातितप्रतिभटरहीमाशिरःकर्तकचाहुवाणराज

को निश्चय करके बारूका अजयसिंह को लाकर हम्मीर से मिलाना, कैलवाड़ा
पुर में सन्तान सहित बड़े भाई की स्त्री को प्रच्छन्न रखकर बड़ी सेना से प्रा
मार आदि शत्रुओं को मारकर और भगाकर अजयसिंह का राजापन के उ-
चित अच्छीरीतिसे शिक्षा पायेहुवे भतीजे हम्मीरसिंह के अर्थ चित्तोड़गढ को लेना,
हम्मीरसिंह को मेवाड़ देश का स्वामी बनाकर विरक्त होकर काका अजयसिंह
का योगचर्या से शरीर छोड़ना, राणा हम्मीरसिंह के दियेहुए लाख रुपये की
आमद के पट्टे को और मेवाड़ देश को छोडकर अजयसिंह के पुत्र सज्जनसिंह
का सतारा नगर को राजधानी बनाकर दक्षिण दिशा में कितने ही दक्षिण
के राज्यों को लेना, उसकी बहिन प्रभावती को महाराणा का बुन्दीश के कुमर
वरसिंह के अर्थ देना, नीति और पराक्रम से प्रसिद्ध और जिसकी आज्ञा कभी न
हीं रुकती ऐसे चित्तोड़ के राजा महाराणा हम्मीरसिंह का अपने पुत्र चेत्रसिंह को
बालकपन की उचित शिक्षा देना, महल की नींव खोदने में निकली हुई चार
हाथवाली धातु की पुतली के भाव के कहने से चारण बारू के अर्थ सात शासण
और बारह लाख रुपयों का धन देना, दिल्ली के बादशाह मुहम्मद के उम
राव प्रामार राजकुमार नरसिंहदेव के मारकर गिरायेहुए शत्रु रहीम का म-

कुमारचाचिकदेव २ स्वामिपुरोयथातथ्यकथन ११ तत्तदसाधारण शौर्य १ सत्य २ प्रभावप्रसन्नयवनेन्द्रनरसिंह १ चाचिक २ बहुल क्ष्यरौप्यकराज्यसमसत्करण १२ सूचितसंवत्समयदिल्लीशगयासुद्दीन १४ प्रासादपटलपातप्रमापणानन्तरतत्पुत्राऽलफ्खाना १५ ऽपरनामतुगलकूमुहम्मद १५ पञ्चदशपातसाहीभवन १३ तत्समय स्फुटीकृतस्वनामालाउद्दीन १ यवनान्तरहुसैन १ स्वस्वामिगण कविप्रवचनाऽनुसारदक्षिणदिक्यवनेन्द्रताप्रापण १४ मेहवपुरमहीपकार्मध्वजमल्लिनाथराजकुमारजगमालगौर्जरधरेशयवनेन्द्रमुहम्मदबेगदुहितृगिंदुल्लीहरण १ समाहूततत्सैन्यकरण २ वृत्तान्तविस्तरवच्यमाणत्वविख्यापनं १५ सप्तमो ७ मयूखः ॥ ७ ॥

आदितश्चतुःपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५४॥

प्रायोमरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

दोहा ॥

तीडाउत सळखातणौं, मल्लीनाथ १ महीप ॥
जैतमाल२ बीरम ३ जथा, तीन३ तनुज कुळदीप ॥१॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

स्तक काटकर चहुवाण राजकुमार चाचिकदेव का स्वामी के आगे सत्य२कथन करना, उनकी असाधारण वीरता से और सत्य कथन के प्रभाव से प्रसन्न होकर बादशाह का नरसिंह और चाचिक को बहुल लक्ष रुपयों के राज्य देकर बराबर सत्कार करना, कहेहुए सम्वत् में दिल्लीश गयासुद्दीन का महल की छत पड़ने से मरने के पीछे उसके पुत्र अलफ्खान और दूसरे नाम से तुगलकू मुहम्मद का पन्द्रहवां बादशाह होना, उस समय में अपना नाम अलाउद्दीन प्रसिद्ध करके यवनों में से हुसेन नामक यवन का अपने स्वामि ज्योतिषी ब्राह्मण के कहने के अनुसार दक्षिण दिशा में बादशाह होना, महेवापुर के राजा राठोड़ मल्लिनाथ के राजकुमार जगमाल का गुजरात की धरा के पति बादशाह मुहम्मद बेग की पुत्री गींदोली को हरना, उसकी सेना को बुलाकर रण के वृत्तान्त को विस्तार से कहने की इच्छा प्रकट करने का सातवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से एक सौ चौपन मयूख हुए ॥ १५४ ॥

१तीडा के पुत्र सलखा के कुल को प्रकाश करनेवाले राजा मल्लिनाथ१ जै

पहिली दिल्लीराअधीस एकादसमाँ ११ पातसाह खलजी अला वुद्दीन ११ रा समयरैसमीप मेहवनगर राष्ट्रकूट राजा सळखरै मल्लिनाथ १ जैतमल्ल २ वीरमदेव ३ ए तीन ३ पुत्र हुवा ॥

तिकाँमैं जैत्रमल्ल १ नूँ सुसियाणाँ २ वीरमदेव १ नूं खेड़ २ नामक स्थान बैठणनैं देर दोहीछोटा कुमाराँनूँ कीधा जुंवा ॥

मळखरै अनंतर वडोकुमार मल्लिनाथ मेहवानगररो महीपथियो॥ अर जिकणरै वीराधिवीर उधाराआँटाँरो लेणहार जगमालनामकुमार जन्मलियो ॥ २ ॥

जिकण कुमार पहिलै विवाह कुंदीग अधीस हड्डाधिराज हम्मीर १८३।१ री चंद्रकुमरिनाम पुत्रीरो पाणिग्रहणकीधो ॥

अर कुमरपणाँहीँ अनेक आहव जीति केहीवैरियाँरा जाँत दक्षिणदिसारालोकपाळरी पुरीरै पंथ लगाइ धरारोधन धूँपटतै आँडवाहरू हुवो तिकोही मारिदीधो ॥

एकसमय दिल्लीरा भतीप गुजरातरा जवनेस मुहम्मदबेगड़ साहरै आश्रित पंजावरा सिंधुदेसमैं भाडंगनैररा जोइया मुसलमान हूँताँ जिको हरामखोरहोइ प्रमादरा औसरमैं साहरीघोड़ी १ समाधि१ तरवारि विजयनाल २ समेत केहीसुबर्णारा पात्रादिक संभार लूटि आपरा देसनूँ प्रयाणकियो ॥

अर पाछली वाहररो जोरजाणि दलै नाम. जोइयाँरैमालिक लूटरी साम्ग्रीसमेत दाहिणौं मारगटळि राठोड़ाँनूँ सहायकजाणि आधो वित्त बाँटणौंकरि मल्लीनाथ महीपरै मेहवैनगर आइ विश्रामलियो॥३॥

माल वीरमदेव ये तीन पुत्र हुए ॥ १ ॥ १ जुदे २ हुआ ३ वैर (जिनके पहले कभी वैर नहीं होवे उनसे अकारण वैर कियाजावे तिसको उधारावैर लेना कहते हैं)॥ २ ॥ ४विवाह: कई शत्रुओं के ५ समूहों को ६ यमराज की पुरी के मार्ग लगाकर ७ उड़ातेहुए ने ८ हद से बाहिर; अथवा अपने को रोकने वाला [बाहर (मदत) को रोकनेवाला आडवाहरू कहलाता है] ९. शत्रु १० थे ११ समाधि नामक घोड़ी १२ सामग्री ॥ ३ ॥

जठै घोड़ी १ तरवारि २ दो२ही रत्न दुर्लभजाणि स्वामीराहरा मखोर दंडरैउचित कहि कुमार जगमाल बंटथी बिसेस लैणरी बिचारी ॥

सो जाणि राउळ मल्लीनाथ पुत्ररैछानैं जोइयाँनूं काढिदीधा तिकाँहूं बित्तरो बिभाग लैणरीभी न धारी ॥

बाहरूबणिया जगमालनूं पीठिलागोजाणि जोइये दलै बीरम देवकनैं खेड़ जाइ तिकणरो सहाय पायो ॥

अर पीठिलागे जगमाल खेड़रै घेरोलगाइ आपरा काकाहूं द लानूं पकड़ाइदेणरो हुकम लगायो ॥ ४ ॥

साहसरैसाथ जगमालरो जोरजाणि घोड़ीसमांधि बीरमदेवनूं दे२ तिकणरै सहाय छानैंकढि लूटरीसामग्रीसमेत दलो भाडंगनै रपूगो ॥

इण अपराधरैऊपर काकानूं काढि खेड़मैं आपरो अमल करि दिसादिसारा दोयैणाँरी मही दाबिलीधी जिकणसमय कुमाररो प्रताप अँकरे आभास ऊगो ॥

बीरमदेव आपरी जोड़ायत चावोड़ीसमेत देवराज१ गोगराज२ जयसिंह३ बिजयराज४ च्यारि४ ही बाळकाँनूं सेत्रावाग्रामरा ठाकुर साँगळियारजपूत राणिगदेवरै आश्रित राखि तिकणरी पुत्री-रोपाणिग्रहणकरि नवोढानूं लेर भाडंगनैरगयो ॥

अर जोइयो दलो आपरा उपकारकरै अर्थ आधाग्राम अर्पण करि बडासत्काररैसाथ बिश्रामदेर जिम जिम ताणियो तिमतिम ही नंयो ॥ ५ ॥

दोहा ॥

तठै जनम बूँडातणौं, हुवो घणौं मैंहहोइ ॥

१ घंटसे ॥ ४ ॥ २ देकर ३ शत्रुओं की ४ सूर्य के ५ समान (प्रतिबिम्ब) ६ स्त्री ७ विवाह ८ नवीन स्त्री को ९ उपकार करनेवाले के अर्थ १०झुका ॥५॥११उ.सव

उद्धतपण[1] वीरम उठै, बहियो हेत[2] छुडाइ ॥ ६ ॥
अठी कुमर जगमाल ऊ, वरियो अपरर[3] विबाह ॥
पूरबभँव भड़ प्रेतरी, रुचिर सुता कुळराह ॥ ७ ॥

सचरणगद्यम् ॥ पहली एक धाड़वी[4] रजपूत धारातीर्थमैं[5] पड़ियो तोभी कोईक कारणरै प्रभाव आपरा साथसमेत प्रेत हुवो जिकणरै पाछैं प्रजामैं एक१ पुत्री रही ॥

तिकणनूँ जगमालरैअर्थ देर कन्यादानरो सुकृत आपरै उपँदा[6] करणरी पूर्वजन्मरी पत्नीरा[7] स्वप्नमैं कही ॥

तिकणभी आपरो बारहठ भेजि प्रेतनूँ पुत्रीरो पुण्यमिलणरी जणाइ विवाहणरैकाज जगमालनूँ बुलायो ॥

अर सप्तउपदीरै[8] अनंतर दानरो उदँक[9] जामातौ[10] पाँणिमैं[11] लेर पिसाचराजरैकाज स्वर्गरोद्वार खुलायो ॥ ८ ॥

तिकणरै अनंतर कुमार जगमाल पूर्वानुरागजाणि[12] अहमदाबादराअधीस मरुवाणीमैं[13] बाँच्य[14] इसड़ा बेगड़ा मुहम्मदसाह १५ री अंगजा[15] क्रीड़ारैव्याँज[16] आँराममैं[17] आई तिकणनूँलेर रजपूतांरैउफाण मेहवैआइ आपरो दुर्ग संगररैकाज सज्जकीधो ॥

अर जवनजातीय जाँया[18] आपरै उचित न हूँती तोभी पातसाहरीपुत्रीजाणि स्वैंकीय[19] साहसनूँ सफळहोणरो अवसरदीधो ॥

---

१ निरंकुश होकर. स्नेह को २छुवोकर ।६। प्रेत*होने से ३पहिलेजन्मीहुई किसी वीर की सुंदर पुत्री से ॥७॥ ४धाड़ा डालनेवाला ५तरवार की धारा से मरा तो भी ६ भेट करने की ७स्त्री से ८ सात फेरा फिरे पीछे ९ पानी १० जमाई ने अपने ११हाथ में लेकर ॥ ८ ॥ १२मिलने से पहले रूप अथवा गुण के श्रवण करने से स्नेह उत्पन्नहोवे उसको पूर्वानुराग कहते हैं. १३ मरुभाषा में बोलाजानेवाला १४ ऐसा १५ पुत्री.खेलने के १६ मिस से १७ बाग में आई. १८ स्त्री १९अपने

---

*राजपूताने में ऐसी कथा प्रसिद्ध है कि कोई वीर राजपूत युद्ध में काम आकर अपनी पुत्री में अधिक स्नेह होने के कारण प्रेत होगया था सो जगमाल ने उस कन्या से विवाह करके उसके कन्यादान के पुण्य से उस प्रेत का प्रेतपन छुड़ाया इसके बदले में उसने यवनों के युद्ध में जगमाल को विजय दी.

राजामल्लिनाथतो पहलीही पुत्रनूँ जुवराजभावदेर प्रपंचहूँ[1] उदासीन एकांतमैं रहियो ॥

अर जगमाल मस्तकराभारनूँ[2] महागरिष्ठ मानि अँद्रिरैऊपर[3] दँव[4] लगाइ धारातीर्थरैउछाह इसड़ी अनेकबाताँरो अवलंब गहियो।९।

जिणरीति बंबावदारैअधीस हड्डाधिराज हालू१८२ सूरसज्जा सोवणरो[5] साधन संपादनकरतै[6] बाणवै९२ वर्षरो बय बाँसै[7] बाळियो[8] र[9] अनेक आँटाँरा[10] अर्वमर्द आँसंगिया[11] तोभी प्रधनमैं[12] पुद्गळरै[13] पैलारो प्रहारभी न पायो ॥

अर सामोरबारहठ लोहठरी पाघरै आँटै[14] मंडोउररा नरेस पडिहार हम्मीर१नूँ गंजि[15] राणाँ लाखा२रो पण बिगड़ाइ जठैतठै जिम तिम मरणमंडियो परंतु आपरै आँगारही[16] अवसाण[17] आयो ॥

इणरीति अनेक धूँकळकारि[18] भुजाँरी कंडूयाँ[19] भागी न जाणि जगमालकुमार अहमदाबादराअधीसनूँ पाँहुणाँ नूँतियो ॥

जरै[20] साहभी सैंतीसहजार३७००० सेनाभेजी जिकणरा समुद्रमैं मेहवारो मान बहित्र[21]रै बिधान बूँतियो ॥१०॥

॥ प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

ही धियँ[22] गुज्जरसाहकी, पै[23] रट्ठोर प्रबीर ॥
जाहि आनि बुल्ले[24] जवन, धारा चक्खन धीर ॥११॥

॥ षट्पात् ॥

---

१ संसार से २ भारी ३ पर्वत के ऊपर ४ अग्नि लगाकर "पर्वत के ऊपर की लगीहुई अग्नि बुझाने से बुझती नहीं है इस कारण से मिटाने से नहीं मिटनेवाले द्वेष आदि के अर्थ यह उपमा दीजाती है" ॥ ९ ॥ ५ इकट्ठा ६ पीछे ७ रक्खा; अर्थात् बानवे वर्ष की अवस्था बिताई ८ और ९ वैरों के १० युद्ध ११ अपने अधिकार में किये १२ युद्ध में १३ शरीर के पगड़ी के १४ बदले में "यह कथा आगे आवेगी" १५ जीतकर अपने १६ घर में ही १७ मरा १८ युद्ध करके १९ खाज (खुजली) २० जब २१ नाव ॥ १० ॥ गुजरात के बादशाह की २२ बेटी यवन थी २३ परन्तु वीर राठोड़ ने तरवार की धारा चखने के लिये यवनों को २४ बुलाये ॥ ११ ॥

सेन सहँस सैंतीस३७००० लुब्भि[1] मेहव पुर लग्गिय ॥
सावन आगम समय ज्वाल तोपन घन जग्गिय ॥
कुमरी चन्दकुमारि हुती बुंदिय निज पिउहर ॥
तँहँ आवन दिन तीज३ बचन सेहसौंहँ[2] दयो बर ॥
जिम पक्ख[3] असित बित्तत[4] सजव तकत सोक कुमार तिम ॥
बिछुरयैं प्रिया पावक्क बिसत[5] कँलह गयैं सुधरैसु किम ॥१२॥
भटन नर्मजुत भनिय सोक आरूढ स्वामिसन ॥
अद्रिगिरत[9] सिर ओडि[10] दबे पुब्बैहि[11] किम दुमन ॥
कुमर बिहसि तब कहिय मरन मन्नौं न अमंगल ॥
पै[12] मैं रहत१ प्रिया न२ जात१ जातहि धैर[13]जंगल२॥
बुंदिय पठातभो यह बचन मृतजानहु तीज३ न मिलन ॥
सुमिरि[15] सु चउत्थि४हड्डिय सतिय काय[16] हाय रक्खहिँ किलन[17]॥१३॥
दाधिम१ भट्टिय२ दभिक[18]३ कुम्म४ संभर५ जाँवल[19]६ कुल ॥

१ झुकझर; अथवा मेहवापुर लेने के लोभ से २सौगन सहित. ज्यों ज्यों ३कृष्ण पक्ष ४अवधि वीतता था त्यों त्यों कुमार शोक करता था कि गये विना तो प्रिया ५ अग्नि में ६प्रवेश करती है और मैं जाता हूं तो ७युद्ध विगड़ता ॥१२॥ शोक पर चढ़ेहुए स्वामिसे उमरावों ने ८ हसी (मस्करी) सहित कहा कि गिरते हुए ९ पर्वत को मस्तक पर १० झेलकर दबने से ११ पहले ही कैसे उदास हो १२ परंतु, मैं रहता हूं तो प्रिया नहीं रहती अर्थात् मरती है और मैं जाता हूं तो १३ मारवाड़ हाथ से जाता है, मैं पहिले बुन्दी यह वचन भेजचुका हूं, कि तीज पर नहीं मिलूं तो मुझको १४ मराहुआ जानना १५ वह स्मरण करके श्रावण सुदि चौथ के दिन सती (पतिव्रता) हाडी खेद की बात है कि १७ निश्चय ही १६ शरीर नहीं रक्खेगी ॥ १३ ॥ १८ * दहिया १९ जावल्या

यहां क्षत्रियों की बहुत शाखाओं के नाम एकत्र देखने से प्रकरणवशात् लिखाजाता है कि क्षत्रियों के प्राचीन और आधुनिक सब मिलाकर छत्तीस वंश प्रसिद्ध हैं, जिनके विषय में यह कहाजाता है कि १० सूर्यवंशी, १०चन्द्रवंशी, १२ ऋषिवंशी और ४अग्निवंशी, ये सब मिलाकर छत्तीस वंश हैं, इनके लिये नवीन घड़ंत करके किसीने यह दोहा भी बनादिया है.

(दोहा) दश रवितें दश चन्दतें, द्वादस रिसी प्रमाण ॥ च्यार सु अग्नीहोत्रतें, यह छत्तीस बखान ॥१॥

इन छत्तीस वंशों के जुदे जुदे नाम कहीं नहीं मिलते, पृथ्वीराजरासे में इनके भिन्न भिन्न नाम लिखे हैं परंतु वे मिथ्या हैं; क्योंकि उसमें एक एक वंश की अनेक शाखाओं को जुदे वंश मान लिये हैं सो अनु

डभ्भिय१।७ सोढे २।८ डोड३।९चउ४हि प्रामार स संखुल४।१०॥
संकुवान[2]११ सांगलिक१२ गौड़१३ सैंगर१४ तिम गोहिल१५ ॥
बग्गरि१६ बारर१७ बिंद१८ हल्ल१९ सीसोद२० समोहिल२१ ॥
इंदे१।२२सगोत्रकुक्खर[3]२।२३उभयरचापोत्कट[4]२४ चालुक२५चतुर॥
गज्जिय२६ कबंध२७ बडगुज्जर२८हु धारक इकइकजुद्धधुर॥१४॥
इत्यादिक भट अडर[5] सुनि सु जगमाल उक्त सब ॥
बुल्लिय हम इत बहुत अप्प इष्टहिं सव्हु अब ॥
पटा अप्पि[6] वसु[7] पृथुल[8] लाड जिहिं लोभ लडाये ॥
दैन सु बदला देव निठ्ठि ए दिन निरखाये[9] ॥
पंहु[10] जाहु निकसि बुंदिय पिहितें[11] पीछैं हम रन भीमपन ॥
जगमाल आन पांमर[12] जवन गंजि सुजन ठिल्लैं गजन॥१५॥
इक्क तुरग आरूढ कुमर यहसुनि निसीथें[13] कढि ॥
जल थल लंघत जात वट्टरोकिय[14] बनास[15] बढि ॥
जेरबंध रचि रहित अंसें[16] थप्पलि हय हंकिय ॥
तरत बारतट तरुन[17] साख लग्गत पय संकिय ॥
निजकर सम्हारि रोधक[18] नियत[19] द्रुमसिर[20] बंधि रुमाल दिय ॥
तिहिं टारिनै सु इक१कोस तारि बुंदिय निठ्ठि निसीथ[21] लिय ॥१६॥
दोहा—उपवन[22] विष्णुबिलास अब, रुचिर जत्थ नृपरामं[23] ॥

१डाभी २ झाला ३ झोखर ४ धावड़ा ॥ १४ ॥ ५ निर्भय ६ देकर ७ धन ८ बहुत ९ दिखाये हैं १० हे प्रभु! ११ छिपकर १२ नीच ॥१५॥ १३आधीरात को १४मार्ग रोका १५बनास नदी ने १६ कन्धा थापकर. उरले किनारे के १७वृक्षों की १८ रोकनेवाले को १९ निश्चय २० वृक्ष के मस्तक पर २१ आधी रात को ॥१६॥ जहां अब विष्णुविलास सुन्दर२२बाग है तहां २३ हे राजा रामसिंह!

चित है, इसी पृथ्वीराजरासे के आधार पर कर्नल टॉड ने विदेशी होने के कारण भ्रमकर अपने ग्रन्थ 'टॉड राजस्थान' में लिखदिये हैं सो भी असत्य है, इसके पीछे राजस्थान के इतिहासकर्ताओं में सबसे बडे दो पुरुष हुए; अर्थात् प्रथम तो इसी ग्रंथ के कर्ता मिश्रण शाखा के चारण सूर्यमल्ल और द्वितीय उदयपुर के कविराज दधिवाड़िया शाखा के चारण श्यामलदास; इन दोनों ने इस प्रकरण को ही छोडदिया, किन्तु श्यामलदास ने तो अपने ग्रंथ 'वीरविनोद' में लिख भी दिया है कि क्षत्रियों के छत्तीस वंशों के भिन्न भिन्न सत्य नाम कहीं नहीं मिलते, इसकारण हम भी इस प्रकरण को छोडते हैं नहीं तो यहां इनके नाम लिखने को स्थान था.

आत तत्थ जगमाल इक, किय धनु दुष्क[1]र काम ॥१७॥
षट्पात्—दो[2]लादिक कौतुकन इतसु [3]बुंदिय बिताइ [4]अंह ॥
कुमरी चंद्रकुमारि मंडि शृंगार वडेमहँ ॥
जा[5]मिनि जावत जा[6]म१ वि[7]लँन पतिपंथ बिलोकन ॥
[8]गैंडा[9]गढके गोख रही तक्कत हित रोकन ॥
लहि नि[10]यंतिजोग निद्रा लगत जन दासिन प्रासाद जँहँ ॥
सिर निज लगाइ [10]मंग्रीव सिर तं[11]द्रावसहुव सोहु तँहँ ॥१८॥
कछुकारन गिरि क[12]टँक व[13]रँन सौधन सक्यो न वनि ॥
अट[14]तँ सिंह तँहँ आइ [15]तांहि गहिगो सु झंप तनि ॥
उंघत ज[16]मिक अधम हम्म १८३।१ त[17]नुजा सु लभ्यहुव ॥
लहँगेकरि अवलं[18]भ भिदी दह्ला न छुई भुव ॥
[19]हिरँदारि लंघि मंडू[20]कँदर [21]क्रँमत अग्ग सम्मुह कुमर ॥
जगमाल आत सिंजि[22]तँ सुनि सु आनिय चित्त अचि[23]ज्ज [24]अँर।१९।
तत मेघन संत[25]मँस निविड़ सावन नि[26]सीथ लहि ॥
तँहँ कवंध मगटारि रुक्कि हय वि[27]टँपि ओट रहि ॥
आत निकट हनि [28]खँचि म[28]दँर [29]श्रुति पिठ्ठि प्रहारिय ॥

धनुपका १कठिन काम किया।१७।२हींदा आदि३दिन बिताकरबडे ४उत्सवसे५रात्रि का एक ६प्रहर जानेपर७उदास८गैंडा नामक गढके झरोखेमें९भाग्यके योग से १० झरोखेके ऊपर अपना मस्तक लगाकर वह चन्द्रकुमरी भी११निद्राके वशहुई; अथवा ऊंघनेलगी॥१८॥किसी कारणसे पर्वत के१२शिखर पर महलों के आडा १३कोट नहीं बनसका थावहां१४फिरताहुआ सिंह आया और झम्प लगाकर १५ उस चन्द्रकुमरी को पकड़कर लेगया. नीच १६ पहरायतों के ऊंघने से हम्मीरसिंह की१७पुत्री सिंहके लेने योग्य हुई परन्तु लहँगेके कारण१८देह में दाढें नहीं भिदीं; अथवा लहंगा लगा रहने से दाढें नहीं भिदीं और सिंह के उठा लेने से भूमि का भी स्पर्श नहीं हुआ. वह१९सिंह२०मण्डूकदरा (स्थान विशेष)को लांघकर २१चलतेहुए२२आभूषण का शब्द सुनकर २३आश्चर्य२४शीघ्र ॥ १९ ॥ वहां श्रावण के मेघ से अत्यन्त २५ अन्धकार में २६आधी रात में २७ वृक्ष की ओट में रहकर २८ बाण २९ कान तक खींचकर

कढत पार करि गज्ज डाच[1] कुमरी भुव डारिय ॥
उडि कछुक उड्ढ[2] दिय छोरि असु[3] हड्डी इत ठड्डी[4] सु हुव ॥
पुच्छिय कुमार ढिगजाइ पटु[5] तत्थ्य[6] कहहु इम कौन तुव।२०।
पतिस्वर[7] संसयपरत कहिय पहिलैं[8] स्ववृत्त कहि ॥
जंपिय[9] जब जगमाल लाभ प्रिय तब कुमार लहि ॥
अप्पन कहिय उदंत[10] पंथ प्रभुकों निस पिक्खन ॥
गिरिनितंब[11] गृह गोख आत निद्रा लगि इक्खन[12] ॥
मृगराज झंपि लै मोहि मुख आयो तुम लिय तास अंसु[13]॥
धँव[14] मुदित सुनिसु हय पिट्ठिधरि विकस्यो हिय जिम रंक वसु[15]।२१।
दोहा—कुमरी मग आई कहत, सुनि मेहव दल साह ॥
दये न आवन मैं त्रि ३ दल, नहि किम मन्नैं नाह ॥ २२ ॥
जंपिय कुमरहु नर्म[16]जुत, लौंन[17]मुह मुहलाई[18] ॥
दलपठयैं किम देखते, अद्रिमहल सिर आइ ॥ २३ ॥
उभय २ करत संलाप[19] इम, पतनिय ढंक पधारि ॥
धात्री[20]गृह प्रच्छन्न धरि, कहि यह तुम्ह कुमारि ॥ २४ ॥
बपु कछु केसरि[21] रद[22] बिसे, उनको कहि उपचार[23] ॥
कहि रजनी प्रकट न करन, द्रुत आयउ नृपद्वार॥२५॥युग्मम् ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत हरख बढि सहर जग्गि परिकर[24] नृपजग्गिय ॥

---

१ मुख से. कुछ २ऊपर उडकर ३प्राण छोडदिये ४खड़ीहुई ५चतुर ने ६ सत्य कह ॥ २० ॥ ७ पति की बोली का ८ अपना वृत्तान्त कहो ९ कहा. अपना १० वृत्तान्त कहा. पर्वत के ११ शिखर पर के महल के झरोखे में १२ नेत्र मिच गये १३ प्राण. यह सुनकर १४ पति ने प्रसन्न होकर. रङ्क को १५ धन मिलने के समान ॥ २१ ॥ मेहवा नगर पर बादशाह की सेना सुनकर मार्ग में कुमरी कहती आई कि हे पति! तीज के दिन नहीं आने के लिये मैंने तीन पत्र दिये सो क्यों नहीं माने ॥ २२ ॥ कुमर ने भी १६ हसी पूर्वक १७ सुंदर (कोमल) मुख में मुख १८ लगाकर कहा कि पत्र भेजता तो पर्वत के ऊपर के महल में तुझको कैसे देखता? ॥ २३ ॥ दोनों इस प्रकार १९ वार्तालाप करते हुए स्त्री को ढककर २० धायके घर में छाने धरकर कहा कि यह तुम्हारी कुमरी है २४ ॥ २१ सिंह के २२ दांत घुसे थे २३ इलाज ॥ २५ २४परगह

सहकुमार वरसिंह १८४।१ लाड जनजन मन लग्गिय ॥
सुनि अंतहपुर सखिन जानि गैंडागढ जाकँहँ ॥
नगतट चढि नाजरन जनसु सब सुप्त लखे जँहँ ॥
तिनकों जगाइ अक्खिय तरजि लगि नृजान डोढिय रह्यो ॥
कुमरिहिं जगाइ लैकैं चलहु आयउ कुमरहु उम्मह्यो ॥२६॥

दोहा—जाइ झरोखा दासिजन, बिछोनाँहि खिल बिक्खि ॥
कुक्के सब नहिंनहिं कहि रु, सिर१उर२कुट्टन सिक्खि॥२७॥

॥ षट्पात् ॥

प्रासादन यँहँ पहुँचि वत्त अति सोक वढारिय ॥
हुव घरघर हाकार रुवत झन्नहि नर १ नारिय २ ॥
अप्प जाइ नृप अद्रिसौध परिसर सब सोधिय ॥
अल्लीभुव लखि अंघ्रि सवन हेतु सु संबोधिय ॥
जालिक जितेक हे तत्थ जिन कट्टि नक्क कढ्ढन कहिय ॥
कहि तब उदंत अखिलहि कुमर गूढ कहुँक यह हठ गहिय॥२८॥

॥ दोहा ॥

तिय धावरँपिय सेनकिय, जाइ बिदितकरि जाहि ॥
धात्रीसहित नृजानधरि, आनी महल उमाहि ॥ २९ ॥
कछुदिन उचित प्रयोगकरि, आयें पाटव एह ॥
दूजो २ आवत तीज ३ दिन, मिले उभय २ रगमेह ॥ ३० ॥
मिलन रत्ति प्रातहि गमन, कुमरी सुनि करजोरि ॥
कुल्ली निस सोलह१६ बसे, बसहु इतो १६हि बहोरि ॥ ३१ ॥
कुमर कहिय निस पंच५कहि, आयो स्वभटन अत्थ ॥

१पर्वत के शिखर पर ॥ २६ ॥ बिछोना हीं२ खाली देखकर ॥ २७ ॥३ पहाड़ के ऊपर के महल के आसपास ४ गीली जमीन में सिंह के ५ पैर देखकर ६ नाक काटकर काढ देने की कही ॥ २८ ॥ स्त्री ने अपने पति ७ धाऊ को इशारे से कहा उसने जाकर उस कुमरी को ८ प्रसिद्ध ९ धाय सहित ॥ २९ ॥ १० इलाज ११ नैरोग्यता होने पर ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पेहु आतहि तुम पावतो, तिम रहिजातो तत्थ ॥ ३२ ॥
पै अप्पन नामिले प्रिया, अब तुम हुव उल्लाघ[2] ॥
यातैं मिलि करनौं उतहु, अरिनकोहु अति आघ ॥ ३३ ॥
कुमरि कहिय जे स्वसुरजन, किम ते अरि कुमरेस ॥
रक्खहु तिन महिमानि रचि, बांधव जानि बिसेस ॥ ३४ ॥
कह्यो कुमर तव किंकरी, चरनन लालन चाहि ॥
जोआनी ज़वनेंद्रजा[3] इहिंमिस मरन उमाहि ॥ ३५ ॥
मरनहि जो दृढ स्वामिमत, ज्वलन[4] हमहिं दैजाहु ॥
तनकरि१ सो बिधिबस तदपि, मनकरि२जदपि उमाहु ॥३६॥
इम उत्तर१ पृच्छा[5]२ उचित, कुमरिहिं बोधि[6] कुमार ॥
रक्खि तँहँ रु पुनि त्रि३निस रहि, इक्कल१हुव असवार ॥३७॥
संग दये रच्छक स्वसुर, लगवनास[7] तिन्ह लाइ ॥
बंध्यो तरुसिर जो बसन[8], द[9]कें सीमा सु दिखाइ ॥ ३८ ॥
तिनहिं मोरि पहुँच्यो तिमहिं, मेहवपुर जगमाल ॥
बर्द्धापन तोपन बन्यौं, बिस्मय रिपुन बिसाल ॥ ३९ ॥
कारन पुच्छि बिचारकिय, अं[10]ज्जहु[11] निधनक अंज्ज ॥
अन्नादिक रोके अखिल, करि घनजतन कुकज्ज ॥ ४० ॥
बहुत हुतो सब वस्तुबल, कुमर तदपि किय मंत ॥
तोप तृप्त कढि अब करैं, संगर असिनै[12] स्वतंत्र ॥ ४१ ॥
षट्पात्—इमबिचारि निस इक्क अरर खुलवाइ अचानक ॥
सहँसपंच५००००भट सहित निकासि असि तुंमुल[13] मतानक[14] ॥

यहां आते ही तुमको १नैरोग्य पाता तो ॥३२॥ २ रोग रहित ॥ ३३ ॥ कुमरी ने कहा कि हे कुमर! जो तुम्हारे श्वशुर लोक हैं वे क्या शत्रु हैं, इसलिये उनको लागती के (सम्बन्धी) समझकर मंहिमानी देकर रक्खो ॥ ३४ ॥ ३ बादशाह की पुत्री को ॥ ३५ ॥ ४ अग्नि ॥ ३६ ॥ ५ प्रश्न ६ समझाकर ॥ ३७ ॥ ७बनास नदी तक वृक्ष के शिर पर जो ८ रूमाल बांधा था वहां तक ९पानी बढने की सीमा दिखाकर ॥३८-३९॥१०आर्यलोक भी११आज (अब) धन रहित हैं ॥४०॥१२तरवारोंमे ॥४१॥१३भयंकर युद्ध को१४फैलानेवाले

जुट्टि कुमर जगमाल कुट्टि खल घान खलन किय ॥
बनिजकार[1] व्यापार श्रेनि गोनिनैं[2] जनु संचिय ॥
कटकेसैं[3] उमयर२ हाजी१ कुतवर्जिय बिछोरि किन्नौं बिजय ॥
पंचहिसहँस५००००मिच्छहु परिग भज्जिग खिलैं[4] अज[5] सिंह भय।४२।
परसग्गत गद्दिपिट्ठि चल्यो कुमरहु तिन्ह चट्टत ॥
हड्ड बजत असि मनहु कूरैं[6] खत्तिय तरुकट्टत ॥
साँदिन[7]बिनु हय सतन सैंतन[8] बिनुहय चँय[9] सादिन ॥
लिय गहाइ जसलोभ वीर अप्पन प्रतिवादिन[10] ॥
छिति पैंडपैंड सोनित छछक चलत लुत्थिलुत्थिन चढिग ॥
जगमाल अग्ग आकुल जवन पद्दव[11] अति तद्दिन पढिग ।४३।
तरुनैं[12] परग्घ रहि कतिन कतिन सूथनैं[13] फटि कंटन ॥
चिबुकैं[14] लोम अति उरझि घनैं रुक्कत गिरि घंटन ॥
करजोरत थकि कतिक पयन इन्ह कतिक जात परि ॥
पूरत बसन[15] अपूत[16] कतिक म्रूरत तोबाकरि ॥
तुरकान मरत१घायन परत२सब छवीससहँस२६०००रु त्रिसत३००
साहको कटक अहमद सहर बनि फग्गुनतरु हुव बिसंत[17] ॥४४॥
दोहा—सिबिरैं[18] रहे उपहार[19] सब, मुरि तव लुट्टि कुमार ॥
पुरमेहव मेहँव[20] प्रतिम[21], प्रविस्यो सजय प्रसार ॥ ४५ ॥

१बनजरों ने व्यापार के २बोरों का मानों श्रेणीबद्ध संचय किया है ३सेनापति ४घा की के ५सिंह के भय से जैसे बकरे भागें तैसे भागे॥४२॥ जिसप्रकार ६मूर्ख खाती वृक्ष को काटे तिस प्रकार हड्डियों पर तरवारें बजीं ७सवारों के बिना ८सैकड़ों घोड़े और घोड़ों के बिना सैकड़ों सवारों के ९ समूह होगये, यश के लोभ से उस वीर ने अपने १० मांगलिक बाजे बजवाये; अथवा अपने शत्रुओं को पकड़ा लिये. उस दिन ११ भगना ही सीखे ॥ ४३ ॥ कितनों ही की तो पगड़ियां १२वृक्षों में रहगईं और कितनों के १३ पाजामे कांटों में फट गये और कितनेही लोग पर्वतों की घाटियों में १४ दाढी के बाल उलझजाने से रुकने लगे १५ वस्त्रों को मल मूत्र करके १६ अपवित्र करने लगे. निर्लज्ज होकर १७हुसे ॥४४॥ १८डेरों में १९सामग्री २०मेवप (इन्द्र) के २१ सदृश ॥ ४५ ॥

कनी साहकी कतिकहत, पह पहिलैँ गृहआनि ॥
प्रेत पुव्वभव पुत्तिको, परन्यौं बचन प्रमानि ॥ ४६ ॥
जिनप्रेतन किन्नौं सु जय, इम अनेकमत औन ॥
जिम संभव तिम जानिये, कवि हठ कबहु करेन ॥ ४७ ॥
सोवन जु चहैँ रनसयन, सु न लै इतर सहाय ॥
सूरनकी अद्भुत सरनि, क्रमैँ पथिक अकै काय ॥ ४८ ॥
अंधन अनंतर निजप्रिया, बुंदियपुरसन बुल्लि ॥
बय बिलास बिलसे बिबिध, खेलादित हितखुल्लि ॥४९॥
जुँव २ सुत्र हुव जगमालकै, निजकुल धर्मनिधान ॥
षट्टप तहँ हल्लोप्रसव, भारमल्ल १ अभिधान ॥ ५० ॥
निधान १ भिधान २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अनुजनाम रनमल्ल २ यह, गुन रनरवन गहीर ॥
प्रेत प्रथमभव पुत्रिका, औरसहुव अधिवीर ॥ ५१ ॥
जाति प्रेतनी प्रेतजा, कतिजड़ याहि कहंत ॥
असमय आयो याहिनैं, हन्यौं कंत इम हंत ॥ ५२ ॥
हल्लू १ बंबावद महिप, सेहव नृप जगमाल ॥
रनसोवन चहतहु घरहि, काय तजिय लहि काल ॥ ५३ ॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणपञ्चम ५ राशौ बीतिहोलचरडासि १ वंशवर्णननिमित्तहल्लाधिराडस्थिपाल १५५ बीज्यानुबीज्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीशनरेशहम्मीर १८३ ।१

कितने ही कहते हैं कि बादशाह की १ कन्या को पहिले घर लाकर प्रेत की पहले २ जन्म की पुत्री को पीछे परना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ जो युद्ध में काम आना चाहता है सो दूसरों की सहायता नहीं लेता क्योंकि वीरों का ३मार्ग एक अद्भुत ही है जिसमें ४अकेला ही चलता है॥४८॥ ५युद्ध के पीछे ६ क्रीड़ाकरनेवाले उसमिल हैं ने॥४९॥७जुग(दो)८पुत्र॥५०॥॥५१॥६खो : है।५२-५३।

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हल्लाधिराज अस्थिपालके वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेश हम्मीर के समय के समान है

समयसमानाऽधिकरणकराष्ट्रकूटराजकुमारजगमालचरित्रेदिल्ली
शाऽलाउद्दीन ११ समयसमकालीनमेहवपुरमहीपराष्ट्रकूटराजसल
खौरसमल्लिनाथ १ जैत्रमल्ल २ वीरमदेव ३ तनुजत्रयो ३ द्भवन
१ स्वानुजद्वयार्ऽर्थविभक्तसुमियाणा १ खेड २ विभागप्राप्तपितृपट्ट
मल्लिनाथजातकुमारबुन्दीशहम्मीर १८३।१ पुत्रीपाणिग्रहणसूचन
२ दिल्लीशपरिपन्थिगौर्जरदेशाधिकारियवनाश्रितसिन्धुदेशीयसप-
रिकरलुण्टितवडवा १ऽसि २ रत्नसहितस्वामिवैभवप्रतिभीपलायि
तदलाख्ययवनान्तरमेहवपुरमहीपमालवदेवाऽपरनाममल्लिनाथ-
सहायविश्रमण ३ स्वपुत्रशृगालीशङ्कितमल्लिनाथसहवित्तनिभृत-
निष्कासितस्वसहायीभूतवीरमदेवार्थदत्तसमाधिवडवकतदुत्सारित-
दलाख्ययवनस्वस्थानगमन ४ तन्मन्तुमत्तत्परास्तप्रद्रावितपितृव्यक
कुमारजगमालखेड़नामतत्स्थानसमाक्रमण ५ सेत्रावाख्यसंवसथ-
स्थापितसूनुचतुष्क ४ स्वपत्नीचापोत्कटीकपरिणीतसेत्रावेशमा
ङ्गलिकराणङ्गदेवपुत्रीकसनवोढवीरमदेवदलाख्ययवनस्थानभाडङ्ग

अधिकरण जिसका ऐसे राठोड़ कुमार जगमाल के चरित्र में दिल्ली के बाद
शाह अलाउद्दीन के समय में होनेवाले मेहवापुर के पति राठोड़ों के राजा
सलखा के मल्लीनाथ १ जैत्रमल्ल २ और वीरमदेव ३ इन तीन औरस पुत्रों का
होना, दोनों छोटे भाइयों के अर्थ सुमियाणा १ और खेड़ २ बंट देकर पिता का
पाट लेकर मल्लीनाथ के कुमर का बुन्दी के पति हम्मीर की पुत्री से विवाह
करने की सूचना करना, दिल्ली के बादशाह के शत्रु ऐसे गुजरात देश के
अधिकारी यवन के आश्रित, और सिन्धुदेश में रहनेवाले, परगह युक्त, घोड़ी
और खड्ग रूपी रत्न सहित स्वामी के वैभव को लूटकर भय से भगेहुए ऐसे
दला नामक किसी यवन का मेहवपुर के राजा मालदेव दूसरे नाम से मल्लीनाथ
की सहाय में विश्राम करना, अपने पुत्र की शंका से मल्लीनाथ का उस भय
से भगेहुए दला का धन सहित गुप्त निकालना और अपने सहायक वीरम
देव के अर्थ समाधि नामक घोड़ी देकर निकालेहुए दला नामक यवन का अपने
स्थान जाना, उसका अपराध करने से उससे हारकर भागेहुए काका के खेड़ नाम
के स्थान को कुमर जगमाल का लेना, सेत्रावा नामक ग्राममें चार पुत्र और चा
वड़ी स्त्री को रखकर सेत्रावा के पति मांगलिया राणङ्गदेव की पुत्री नवीन
दुलहिन सहित वीरमदेव का दला नामक यवन के भाडङ्गनगर स्थान को जाना,

नगरगमन ६ यवनसमर्पितसोपायनस्वसीमार्द्धसादरसहवासितप्रत्युपकृतप्रतीपवीरमदेव १ माङ्गलिक्यो २१ससर्वाऽनुजचुण्डाख्यपञ्चम ५ कुमारसमुद्भवन ७ परिणीतप्रेतीभूतक्षत्रियान्तरपूर्वभवपुत्रीककुमारजगमालस्वगुणगणग्लहसम्पादेयपूर्वानुरक्तवेलविहारव्याजबहिरागतयवनेन्द्रतुगलक २ मुहम्मद १५ सुताहरण ८ तत्प्रेषितसप्तविंशतसहस्र २७००० सैन्यवेष्टितमेहवपुरमध्यस्थनिर्भययोत्स्यमानकुमारजगमालप्राक्कालप्रस्थानप्रियाप्रस्थापनकृतश्रावणतृतीया ३ सम्मिलनसमयसन्धाभ्रंशभाविहाङ्गीहेतिस्नानसम्भावनादुर्मनीभवन ९ स्वीकृतस्वसमानसंयोधनभटवर्गनिशीथनिस्सरबुन्दीप्रस्थापिततुरङ्गजीर्णवाशिष्ठीवहवस्त्रबन्धबुभूषिततद्वारिवेलामर्यादनिशीथसमयसप्रसभप्राप्तप्राप्यपुरीपरिसरकुमारजगमालसिंहसंहृतितदग्रस्तस्वसहधर्मिणीसंरक्षण १० मिथःप्रत्यभिज्ञातपुरप्रविष्टकुमारापिहितप्रियाधात्रीधामस्थापन ११ कुमारपरिमार्गणाप्राप्त

अपकार करने पर भी उपकार करनेवाले ऐसे यवन का नजराने सहित अपनी आधी सीमादेकर आदर सहित वास करायेहुए वीरमदेव के मांगलियाणी के पेटसे सब मे छोटे चूंडा नामक पांचवें कुमार का जन्म होना, किसी क्षत्रिय के प्रेत होने से पहले जन्मीहुई पुत्री से विवाह करके कुमर जगमाल का अपने गुणगण से पण रूप से ग्रहण कीहुई पूर्वानुराग से बाग में विहार करने के मिष से बाहर आईहुई बादशाह तुगलक मुहम्मद की सुता को हरना, उसकी भेजीहुई *सत्ताईस हजार सेना से घिरेहुए मेहवापुर में निर्भय युद्ध करतेहुए कुमर जगमाल का पहले समय में गईहुई और बुन्दी में ठहरी हुई प्रिया से श्रावण की तीज के समय मिलने की प्रतिज्ञाभंग होने से हाडी के अग्नि में जलजाने की सम्भावना से उदास होना, अपने समान युद्धकरना उमरावों के स्वीकार करने पर आधी रात को निकलकर बुन्दी को प्रस्थान करके घोड़े के बल से वसिष्ठ सम्बन्धिनी (बनास) नदी के प्रवाह की जल की लहर की सीमा के बोध कराने के लिये वस्त्र बांध

---

* इसी मयूख के दश के छन्द में सैंतीस हजार यवन सेना का आना लिखकर इनमें से ४२ के छन्द में पांच हजार का माराजाना लिखा है और ४४ के छन्द में छवीस हजार तीनसौ सेना का अहमद नगर में पीछा जाना लिखा है और यहां पर सत्ताईस हजार सेना भेजना लिखा है सो पूर्वापर के विरोध से ग्रन्थकर्ता के मद्य के नशे के कारण उपरोक्त गणना की असंगति पाईजाती है.

कुमारीकसंतप्तश्वशुरपरिजनप्राप्यस्ववीर्यत्रातप्रियाशुद्धिप्रकाशन१२ पक्षो१ ल्लाघमिलितपत्नीपतिनानानर्मप्रश्नो१ त्तर २ परस्परप्रबोधन १३ विशेषातिवाहितत्रि ३ रात्रप्रतिगच्छत्कुमारश्वाशुर्यसार्थकौतुकार्थवाशिष्ठीतटविटपिबद्धवस्त्रस्वतीर्णवारिवेलाविबोधन १४ प्रतिप्रस्थापितबुन्दीशवीरवृन्दप्रच्छन्नपुरप्रविष्टसाध्यावसरनिस्सृत कुमारसौप्तिकसमरसेनापतिद्वय २ समेतविध्वस्तवैरिवाहिनीशेषविद्रावण १५ लुण्ठितशत्रुशिबिरोपहारप्रतिप्रविष्टस्वसद्मसमाहूतप्रियपत्नीकजगमालजातभारमल्ल १ रणमल्ल २ पुत्रद्वय २ प्रसूप्रविवेचन १६ शूरशय्याशिशयिषुहड्डहल्लू १ राष्ट्रकूटजगमाल २ स्वस्वसद्मसमयमरणसूचनमष्टमोऽष्टमयूखः ॥८॥ आदितः पञ्चपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५५ ॥

कर आर्धा गान के समय हठपूर्वक प्राप्त होनेवाली (बुन्दी) पुरी के समीप प्राप्त होकर जगमाल का सिंह को मारकर उससे ग्रहण कीहुई अपनी विवाहिता स्त्री की रक्षा करना, परस्पर पहचान करके पुर में प्रवेश कियेहुए कुमर का अपनी प्रिया को धाय के घर पर छिपाके रखना, कुमर के मांगने पर कुमरी के नहीं मिलने से श्वसुर के अनुचरों को तपाने पर अपने पराक्रम से रक्षा की हुई प्रिया की खबर प्रकट करना एक पक्ष में नैरोग्य होने पर स्त्री और पति का अनेक हसी पूर्वक प्रश्नोत्तर करके परस्पर समझाना, तीन रात्रि विशेष रहकर पीछे जातेहुए कुमर का सुसराल(सासरे)के लोकों के साथ को तमाशा दिखाने के लिये बनास के किनारे पर वृक्ष के ऊपर बांधेहुए वस्त्र से अपनी तिरीहुई जल की लहर का बोध कराना, बुन्दीश के वीरों को पीछे भेजकर अपने पुर में छाने प्रवेश करके समय साधकर बाहर निकलकर रतिवाह के युद्ध में दो सेनापतियों सहित शत्रुसेना का नाश करके बाकी की सेना को भगाना, शत्रुओं के डेरों की सामग्री लूटकर अपने घर में पीछा प्रवेश करके अपनी प्यारी स्त्री को बुलाना और जगमाल के भारमल्ल और रणमल्ल दो पुत्रों के जन्म की सूचना करना, शूरशय्या में शयन करने की इच्छावाले हाडा हल्लू और राठोड़ जगमाल दोनों का समय आने पर अपने अपने घर में ही मरने की सूचना करने का आठवां मयूख समाप्त हुवा ॥ ८ ॥ और आदि से १५५ मयूख हुए ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

बरनहिँ अब हल्लू १८२।१ बिहित, इच्छन स्तुति रन एक ॥
सुपहुराम २०३ धारहु श्रवन, टरैं जिम न कुलटेक ॥ १ ॥
सक निधि ससि गुन भू १३१९ समय, भीरुन होवन भीर ॥
हुव हल्लू १८२।१ हरराज १८२।२ के, बानाँ धारक बीर ॥२॥
पिता १ पितृव्यक २ रनपरत, सक रद गुन ससि १३३२ सोहि॥
पावत हुव अधिराजपद, दे द्रोहिन दर द्राहि ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

जनक पट्ट लहि जुगल २ सिंह ऊढ १ रु पंचक५ सिखर२॥
क्रूस्यौं अरिनसिर कुप्पि वैस्यौं आसु किँ बासुकि बिख ॥
जननि तीन ३ जब जग्गि वैरवालन तब बुल्लिय ॥
सत्यकरन तिहिँ सिसुहि त्वरित चल्लिय असि तुल्लिय ॥
जबतो निवारि परिकर जनन हत्थिय गति मोरयो हठन ॥

दोहा॥

इम निलय निठि हायन उभयर रह्यो सु चिंतित वैर१ रन२ ॥४॥
भाखिय हल्लू१८२।१ निजभटन, सु हो समय सुभसेन ॥
जबतो स्वगलन परजई, हे पर प्रविसे हेन ॥५॥
सिसुलखि सो हाहा समय, दिय तुम टारि दुराप ॥
बट अंकुर जिम अहितबलि, अवसुव जटित अमाप ॥६॥

---

१ हे प्रभु रामसिंह ॥ १ ॥ २ ॥ २ काका ३ भय ॥ ३ ॥ सिंहासन और ४ पांच * किलंगी वाला सिरपेच ये दोनों लेकर. क्रोध करके ६ चला ७ क्रिधों वासुकि सर्प ने विष ६ उगला ८ वैर पीछा लेने को ९ घर में दो १० वर्ष रहा ॥४॥५॥ ११ बटवृक्ष का अंकुर छोटे बीज से बड़े विस्तार वाला

* यह आर्यावर्त की प्राचीन रीति है कि राजा होता है वह पांच किलंगी का सिरपेच बांधता है और युवराज तीन किलंगी का और सर्वसाधारण एक किलंगी का सिरपेच बांधते हैं सो यहां पांच शिखा का सिरपेच लेने से राजा होने की सूचना प्रकट करता है ।

॥ षट्पात् ॥

निजवीरन इम नृपति उपालंभत पछितावत ॥
पुर बिंझोलिय१ प्रथम आइ रजगुन उफनावत ॥
सुर्जन१८२।१ तँहँ हत्थ१८१।२ सुत पिक्खि अवहित किल्लापति ॥
तिहिँ तुरंग१ गज२ ग्राम३ अप्पि सादर किय उन्नति ॥
रतनगढआइ मातुल रतन बहु मन्निय पुब्बव बितरि ॥
पुनि आइ नृपति सिंहोलि पुर कछुदिन रहिय सुकात्मकरि ॥७॥

॥ दोहा ॥

किल्लापति सुहु तुष्टकिय, हल्लू१८२।१ नरपुरुहूत ॥
गत निजदुर्गन गंजिबे, देखन पठये दूत ॥८॥
जीरनपति नृप जेत्रको, प्रथम प्रमाद सु पाइ ॥
हिंगुलाजगढ१ लेतहुव, महाप्रघात मचाइ ॥९॥
इमहि सालुपुरईसको, तृनगिनि दब्बत देस ॥
खेडीपुर१ संहरि खलन, निजवस किन्न नरेस ॥१०॥
दसपुर नृपको दब्बयो, जिम पत्तन जिन्नोद३ ॥
दुर्ग त्रितय३ रहि अब्दहुव२, किय संकित चहुँकोद ॥११॥
पहुँच्यो लरि खिल गढन पैं, मिले न विधिवल सूर ॥
बंबावद आयो बहुरि, सत्तह१७ सम बय सूर ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

हल्लू१८२।१ नृपति विवाह प्रथम१ सद्दन गय सोपुर ॥
रक्खिय गृह रखवार भ्रात सुर्जन१८२।१ असंकउर ॥

बढता है इस प्रकार बढकर शत्रुओं ने अब अमाप भूमि जड़ दी(अवकाश रहित करदी) है ॥६॥ १उपालम्भ देताहुआ २ अपने अङ्गों को बचायेहुए (सावधान) ॥ ७ ॥ ३ नरेन्द्र ने ४ गयेहुए ॥ ८ ॥ ५ आलस्य अथवा भूल ॥९ ॥ १० ॥ ६ मन्दसोर के राजा का ७ पुर ८ दिशा ॥ ११ ॥ सत्रह ९ वर्ष की अवस्था में

सो काका हत्थ१८२१२ सुत सला छह बडो हल्लू१८२१२सन ॥
लल्लू१८२१२ पुनि तिम लोहराज१८२१३ जुग२ अनुज महामन ॥
जीरन अधीस प्रामार जो जैत्र२जुरिग लखि छिद्र जव ॥
भानुपुरभूप खिच्चिय परत२ तकि विरोध हुव संग तब ॥१३॥
इन बंबावद आइ ताप तोपन दोउ रन दिय ॥
पहु हल्लुव१८२१२ द्रुत परनि कुंच सुनत हि सम्मुहकिय ॥
सुर्जन१ लल्लुव२ सज्जि उभय२ झेले जोलौं अरि ॥
भ्रात जैत्र १८२१३ के भवन धनसु ऊंढा कोटा धरि ॥
सादिन सहस्रपंचक५००० सहित सजव आइ रजनी समय ॥
पविरूप भूप हल्लुव१८२१२ परयो अरि गिरि भेदन हंकि हय ॥१४॥

॥ दोहा ॥

रहे सहँस दुव२००० खेत रन, मिलि खिच्ची१ रु प्रमार२॥
भरतसेन१ अरु जैत्र२ भजि, गय सहिधाय अगार ॥१५॥

॥ षट्पात् ॥

बलि कोटासन बुल्लि गौडि़१ दुलही अंचलगहि ॥
महिला सह जयमल्ल दुर्ग प्रविस्यो अहितन दहि ॥
कंकन मोचि सक्यो न बहुरि जीरनपति दुर्बल ॥
शन अनुगबनि रंक द्रुतहि लायो तदीय दल ॥
संभरनरेस कंकनसहित अभिमुख झेलि धपाइ असि ॥
हम्मीरकटक जैत्रहिं हनि रु किय प्रद्रुत विरुदन बिकासि ॥१६॥

दोहा

प्रधन अट्ठ२ किय वढिप्रथम१, हुव जदपिन तँहँ हारि ॥
तदपि लह्यो दुर्ग न लिकउहि, यह स्वदिष्ट अनुसारि ॥ १७॥

हल्लू से छः १ वर्ष बड़ा था ॥ १३ ॥ २ विवाही हुई स्त्री को पांच हजार सवारों ३ सहित शत्रुओं रूपी ५ पर्वतों को काटने के लिये ४ वज्र रूप से ॥१४॥ महाराना का ६ सेवक बनकर ७ उनकी सेना को अपनी सहाय पर लाया ८ सामने झेलकर ॥ १६ ॥ १ अपने भाग्य के ॥ १७॥

बरनि ख्यात नवम ९ हु मेवन, जित्यो छि २ नृप मजाइ ॥
अब दसम १० हु यह अंगम्यों, खल जीरनपति खाइ ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

ब्याह द्वितय २ किय बहुरि हड्डहल्लुव १८२।२ जसजोरन ॥
तहँ तृतीय ३ तोमरिय बैर बुंदियमहि मोरन ॥
नृप बुंदिपपति नप्प १८२।१ भार चढि पुनि प्रवीरपथ ॥
छिछि पहारहि खंडि पुरसु लिय जित्ति पल्हायथ १ ॥
जिनिय महेस१हरराज२जुग२हल्लुव१८२।१पहु रन बारं१२हम
देवहु२३ छीसवालिय २सहर किय बुंदियबस जित्तिक्रम ॥१९॥

॥ दोहा ॥

जीरननृप इत जैत्र सुव, सुंदरदास सनाम ॥
पुनिहु रान हम्मीर प्रति, किय बिन्नति जयकाम ॥ २० ॥

॥ षट्पात ॥

सुनि हल्लुव १८२।१ तिन्ह संधि पत्र चित्तोर पठायउ ॥
मंडनगढ नृप नागपाल पहिलैं छलिपायउ ॥
तबहि रैन १७५ इत आइ विरचि बैठन बंबावद ॥
लियउ अठानाँ १ खरत जिमहि तुमरोगढ जावद २ ॥
लिय देगदेव१७९।१सुहि बैरलखि पुरमंडल १ केथोलिपुर २
तुमसों छुटे न तबके गये लये जवन पट्टनाँ प्रचुर ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तिनकों विलसन लोभताकि, सुंदरको किय संग ॥
सुन रक्खहु अप्पहु समुझि, उँरग डंक्क जिम अंग ॥ २२ ॥
दसपुर १ जीरन २ भानुपुर ३, चोथो ४ गढचित्तोर ४ ॥

१युद्ध में ॥ १९ ॥ जैत्रसिंह का २पुत्र ॥२०॥ उनका ३मेल सुनकर ४ लेना ५ बहुत ६ भोगने को जिस प्रकार ७सर्प का ८ डंक अंग पर नहीं रखते हैं तिसप्रकार

मंडनगढ इक १ दै मही, इन ४की लिय हम ओर ॥ २३ ॥
मिच्छन रन हरराज १८।१ मृत, जावद मुख ४ गत जत्थ ॥
तुमरे ए ४ गढ हे न तब, तुट्टिय तुम कुल तत्थ ॥ २४ ॥
मंडनगढ १ तुम मूलसों, लाभ अधिक गिनिलेहु ॥
साहहिं दिय काका समर १८।७, इतकी रक्खन एहु ॥२५॥
गढ चउ ४ पीछे महनकी, हो पुनि रक्खत हौंस ॥
क्यों जीरनपति मेलकरि, दुरित भरहु निस १ द्यौंस ॥२६॥
अजयसिंह चित्तोर यह, तुमहिं दयो वलतानि ॥
तस जामाताकी हि तुम, करहु हमहिंतजि कानि ॥ २७ ॥
मंडनगढ यौतक मिसहि, दाय उचितहो दैन ॥
अरु नदयो तो रहहु वह, रंच मदीय रहैन ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम हल्लुव १८२।१ दल इक्खि रान अतिमान रिसायउ॥
सुंदरनृपके संग पुनिहु बल प्रचुर पठायउ ॥
तात १ पितृव्यकतनुज विंक्रू १ सिंहरन उभै २ रु बलि ॥
तनुज सु खित्तल १ त्रय ३हि करे बलपति जित्तन कलि॥
पुनि भरतसेन खिच्चिय पहु जु सुहु प्रबोधि पठयो सहित ॥
बुंदीस हम्म१८३।१सुनतसु सबल आयउ हल्लुव१८२।१भीरइत२९

दोहा

काका१८२।१ की नृप भीरकरि, हुव नासीर सु हम्म१८३।१।

सुन्दरदास को मत रक्खो॥२२॥२३॥ जावद१आदि ॥२४॥२५॥२चाहना रखते हो तो३पाप इकट्ठे करते हो ॥२६॥ सेना के विस्तार से अजयसिंह ने तुमको यह चित्तोड़ दिया है सो हमको छोड़कर कर४उस अजयसिंह के५जमाई की ही अदब रक्खो ॥२७॥मांडलगढ६दहेज के मिससे ही देना चाहिये था सो न दिया तो वह तुम्हारे ही रहो परन्तु७मेरी भूमि रञ्चमात्र भी न रहेगी ॥२८॥ ८ पुत्र ९ सेना १० बहुत ११ युद्ध जीतने के लिये ॥२९॥ १२अग्रणी(सब से आगे)

जदपि रान बरज्यो बहुत, करन तदपि कुल *कम्म ॥ ३० ॥

पट्पात्

वाहवाह कहि उभय २ ×कटक मिलतहि हय हंकिय ॥
ख वढि मेहजिम खेह किरन +विकिरन रवि ढंकिय ॥
सहसा चलि संकुलित बान १ असि २ ÷कुंत ३ बरच्छिय ४
अंग छिन्न उच्छलत मनहु बिनुदक अंक मच्छिय ॥
गिरिजा[३] गिरीस[४] सगन[५] विहरत सगन गगन मगन अच्छरि ३ गहिय ॥
इभमुखी[६] प्रमुख[७] चउसट्ठि ६४ इम अति अभीष्ट[८] गिनि उम्महिय ३१
वाजि[९] दपटि[१०] बुंदीस गंजि विंभ्भ १ रु सिंहन २ गय ॥
कासू[११] महरि कराल हनिय खित्तल कुमार हय ॥
भरतसेन भूपाल हम्म १८३।१ भुज खग्गप्रहारिय ॥
वाहुल[१२] कटि कछु बिसंत[१३] भपटि हड्डहु असिभ्झारिय ॥
भानुपुर पहु सु खिच्चिय भरत १ पुहवि खंड दुव २ हुव परयो ॥
हयचढि द्वितीय २ आयो हनन कुमर १ सु पै घायलकरयो ॥ ३२ ॥
वडगुज्जर वलराम १ रानभट बान कानरहि ॥
छुट्ट्यो नृपपर छुधित[१४] गयो गलभेदि त्वरा[१५] गहि ॥
इहिं[१६] छत लखि असुसात हनत जीरनबल हल्लुव १८२।१ ॥

---

* कर्म ॥ ३० ॥ दोनों × सेनाओं के मिलते ही घोड़े उठाये, आकाश में मेघ के समान खेह (रज) बढकर सूर्य की किरणों के + फैलाव को ढकलिया ÷ भाला. कटेहुए अङ्ग मानों बिना १ पानी की २ दुखी मछली के समान उछलते हैं ३ पार्वती और ४ महादेव ५ गणों सहित विहार करते हैं और आकाश में अप्सराओं ने आनन्द ग्रहण किया है और इभमुखी को ६ आदि लेकर ७ चौसठ योगिनियें इस युद्ध को अत्यन्त ८ प्रिय मानकर हर्ष युक्त हुईं ॥ ३१ ॥ ९ घोड़ा १० दौड़ाकर ११ बर्छी का प्रहार करके १२ वाहुत्राण (दस्ताना) कटकर कुछ १३ घुसने पर ॥ ३२ ॥ राना के उमराव बलराम का बाण कान तक रहकर प्राण का १४ भूखा राजा पर छूटा सो १५ शीघ्रता से लगा भेदकर निकल गया इस १६ घाव से

आयउ वग्गउठाय सहित सोदर लघु लल्लुव१८२।२ ॥
सुरजन१८२।१पुरोग[1] त्रिक३हत्थ१८२।२सुत जीरनदल अटक्यो जुरत
हल्लुव१८२।१भतीज१८३।३अवलंब[2]हुव इत मेवारन आहुरत[3] ॥३३॥
खित्तल१हम्म१८३।१दुर२खिन्न[4] गये सिबिरन सिबिकागत ॥
बेधक वह बलराम हन्यों लल्लुव१८२।२ खग्गाहत ॥
सिंहन तिहिं सीसोद रानकाका इन्ह२रोकिय ॥
दपट्यो तुरग अदब्भ[6] अब्भ[7] अच्छरि अवलोकिय ॥
हरराज१८२।१तनयहम्मीर१८२।४अरुलोहराज१८२।३करिलोहँ[8]छक
हल्लू१८२।१नरिंद उप्पर हठियआयउ असि चक्खन[9] चसक ॥३४॥
सिंहन१असि नृप१८२।१सीस टोप तिरछीपरि तुट्टिय ॥
नृपके खग्ग[10]निपात छिन्न तससिर बपुछुट्टिय ॥
बेग सुनत यह बिंझ१ अंस[11] नृपकै झारिय असि ॥
टरिकरि बाहुल[12] टूक सोहु तुट्टिय बिधिबस वसि १॥
हल्लुव१८२।१बनात कौतुक बिहसि सहज कट्टिलिय बिंझ२सिर॥
बुंदीस अनुज नवरंग१८३।२बलि हनिय हूल[13] कालिकर्ण१किर ॥३५॥
बिंझ१रु सिंहन२बीर परत खित्तल३ छतपावत[14] ॥
मेवारन दल मुरिग छिप्र[15] इहुनभय छावत ॥
बिनुनृप खिच्चियबलहु भीत अबलग रहि भज्जिग ॥
इम हल्लू१८२।१करवाल[16] ब्याल पीवत असु[17] बज्जिग ॥
सुर्जन१८२।१हुभ्रातगज१८२।२भीम१८२।३सहजीरनदलहनिकिन्नजय
मेवार द्रवत[18] भामारमुरि सबन अग्ग भग्ग सु सभय ॥३६॥

---

१ अग्रणी (आगे चलनेवाला) २ आधार हुआ मेवाड़वालों के रलते समय ॥ ३३ ॥ ४ घायल होकर ५ खड्ग के प्रहार से. घोड़े को ६ अत्यन्त दौड़ाकर ७ आकाश में ८ अत्यन्त घायल करके. तरवार का ९ स्वाद चखने के लिये ॥३४॥ १० खड्ग के प्रहार से. राजा के ११कान्धे पर १२ बाहुत्राण (सुघुन सिलह) के टुकड़े करके १३ हूलवंश के कालिकर्ण नामक क्षत्रिय को गिराकर ॥३५॥ १४ घाव पाकर १५ शीघ्र १६ खड्ग रूपी सर्प १७प्राणों को मेवाड़ के १८ भगते ही "यहां लक्षणा से मेवाड़वालों का भगना समझना चाहिये"

॥ दोहा ॥

हल्लू१८२।१ जिति चउद्दहस१४, रन लगि पिट्ठि रिसात ॥
पुरमंडल१ विच कुद्दि पहु, अमलकिन्न उफनात ॥ ३७ ॥
निजथाँनाँ धरि तँहँ निडर, पंद्रहस१५ सु जयपाइ ॥
कतिदिन रक्खिय हम्म१८३।१कँहँ, इम बवासद आइ ॥ ३८ ॥
करि साधन *वैद्यनकथित, हुव ×नीरुज हम्मीर१८३।१ ॥
पहु भतीज तव +पेसयो, बुंदीपत्तन वीर ॥ ३९ ॥

षट्पात् ॥

सहिय रान हम्मीर स्वबल हहुन जित्यो१सुनि ॥
कृत घायल२ निजकुमर पेर रन दुव२काका३ पुनि ॥
वडगुज्जर बलराम१ हूल कलिकर्षा२ मानहरि३ ॥
पुरमंडल गय पैठि५ कछु न चित्तोर कानकरि ॥
इत्यादि संतु पिक्खि सु असह अँहिमेचक गति ऊससिय ॥
हल्लू१८२।१हि हेतु सबको समुझिचढनचाहि कँटिपट कसिय॥४०॥
दसपुर १ जीरन २ स्वदल दै रु तिनकेहु बुल्लि दल ॥
बाहिर सिबिर बनाइ सिजल किय इक्क १ महाबल ॥
सेना अपनसहँस ५३००० सज्जि इंकत सीसोदहिं ॥
सुनि बुंदियपति सजव विरचि संबंधि बिनोदहिं ॥
पंचम ५ सुकाम हम्म १८३।१ सु पहुंचि कहि मैं खित्तल खिंन्नकिय
औरको नत्थि अपराधयह हनहु मोहि धकि वैरकिय ॥ ४१ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥* वैद्यों के कहने के अनुसार × नैरोग्य + बुन्दी पुर को भेजा ॥ ३९ ॥ १ शंका (भय) नहीं करके २ अपराध ३ काले सर्प के समान ४ कारण ५ कमरबन्धा ॥ ४० ॥ अपने नाम का ६ पत्र देकर उनकी ७सेना बुलाकर. बाहर ८डेरे किये ९ शीघ्र. कुमर क्षेत्रसिंह को मैंने १० घायल किया है ११ नहीं ॥ ४१ ॥

इम जंपत[1] नृप इक्क१ पत्त[2] जब रान पटालय[3] ॥
सोहु सुनत द्रुत दोरि गिनत अद्भुत सम्मुहगय ॥
मिलि बत्थन हितमानि आनि बैठिय इक१आसन ॥
उपालंभन[4] दुहुँ२ ओर भयउ निर्मित[5] संभासन ॥
सीसोद कहिय लिय साहसैन[6] जावदआदि प्रदेस जब ॥
कोनसो बैर हल्लू १८२।१ कहत इनकौं चहत छुटान अब॥४२॥
बुंदियपति तब वदिय मोलि खिच्चिय १ प्रामारन ॥
अप्पहु भेजि अनीकँ[7] कियउ अनुचित बिनुकारन ॥
कारि कटकेस[8] कुमार १ बिंभ २ सिंहन ३ काका वलि[9] ॥
हल्लू १८२।१ सन अरिहोइ कियउ हितमैंहु अहित कलि[10] ॥
जिहिं नप्प१८३।१भीरकरि त्रिश्रन जय किय बुंदियबस दुर्गदुव२॥
इहिं लाज मैंहु सज्जित उतहि हितबस काका भीरहुव ॥४३॥

॥ दोहा ॥

मोहि जदपि बरज्यो तुमहु, आयो तदपि उतैंहिं ॥
कछु छत[11] लग्गिय कुमरकै, सो पै मम सयसौंहि[12] ॥ ४४ ॥
रानकहिय तुम १ खित्तल २ रु, बडगुज्जर १ तुम २ विद्ध ॥
सो दोउन लिन्नी समुझि, समता नय रन सिद्ध ॥ ४५ ॥
हल्लू १८२।१ ममकाका हनैं१, बिंभ १ रु सिंहन २ वीर ॥
पुरमंडल किय अमल २ पुनि, सु किम बनैं समसीर[13] ॥ ४६ ॥
जैत्र १ भरत२ सुत२ एहु जिम, बिन्नति रचत वहोरि ॥
बालन[14] निजनिज बैरकौं, सो पायन[15] सयजोरि[16] ॥ ४७ ॥

इस प्रकार १कहता हुआ राजा अकेला महाराणा के३डेरों में२गया ४उपालंभों से५रचाहुआ संभाषण हुआ इसने जावदआदि प्रदेश बादशाह६से लिये हैं ॥४२॥ ७सेना ८सेनापति९ फिर१०हित में अहित होकर युद्ध किया ॥४३॥ ११घाव मेरे १२हाथ से ही ॥४४॥४५॥१३बराबर का सिझारा (मिलाप) ॥४६॥ अपना अपना वैर१४पीछा लेने को १५ पैरों में१६हाथजोड़कर बिनती की ॥

॥ षट्पात् ॥

पहु अक्खिय रानप्रति सुनहु जिम मिटत बैर सब ॥
सुतमम लाल १८४।२ सुता सु अप्पं[1]कुमरहिं दिन्नौं अब ॥
बैर १ सु इम बीसरहु मन्नि सुलभहि पुरमंडल ॥
हम रोकत हल्लू १८२।१ हिं बेग लेहु सु पठाइ बल ॥
रोचक तुम्हैंहु यहरीति तो करहु मेल बाधंक[2] कवन ॥
मिलि सोहिंमोहिं अप्पन मरत जत्थ[3] तत्थ हसिहैं जवन ॥४८॥
सुनि प्रसन्न सीसोद लाभ नृप[4] कथित मन्निलिय ॥
नव कुंकुमकरि नृपहु कुमर खित्तल[5] तिलकित किय ॥
लग्नय सु व्याहहु कहि[6] रु तुरत आयउ पुरमंडल ॥
हल्लू १८२।१ कहँ कछु[7]कज्ज लोधि लैगो स्वसंग बल ॥
लखि यह बिलंब पुरमंडलहु रान अमल तोलौं रचिय ॥
दसपुरचमू[8] १ रु जीरनदल[9] २ सु दुर्मन[10] निलय[11] पठाइदिय ॥४९॥

॥ दोहा ॥

सुदिय रहि कतिअब्द[12] बलि, इडनृप सु हम्मीर १८३।१ ॥
बिरत[13] भयो व्यवहारसों, बसुमति सुग्गत बीर ॥ ५० ॥
बयबिताइ पैंसठि ६५ बरस, बिधिजुत उदित बिबेक[14] ॥
कासीवास बिचारकरि, किय खिल[15] उचित अनेक ॥ ५१ ॥
निज मह्रासन कुमरनिज, भरसिंह१८४।१हिं बैठारि ॥
नियत बस्यो बारानसी[16], ध्रुवस्वरूप[17] दृढधारि ॥ ५२ ॥
बरसपचासी ८५ भुग्गि वय, पीछैं अवसिति[18] पाइ ॥

मेरे पुत्र लालसिंह की पुत्री अब १ आपके कुमर को दी २ रोकनेवाला कौन है ३ जहां तहां यवन हसैंगे ॥४८॥ ४ राजा के कहने को ५ खेतसिंह को तिलकयुक्त किया ६ कहकर. कुछ ७ कार्य के लिये लखकर ८ मन्दसोर की सेना और जीरन की ९ सेना को १० उदास करके ११ घर भेजदी ॥ ४९ ॥ १२ वर्ष १३ विरक्त ॥ ५० ॥ १४ ज्ञान उत्पन्न होकर १५ बाकी के कार्य ॥५१॥ १६ काशी में १७ निश्चल रूप को ॥ ५२ ॥ १८ अन्तसमय

कासीही तनु त्यागकिय, सत्यस्वरूप समाइ ॥ ५३ ॥
सक वसु द्रग गुन ससि१३२८ समय, भवपायंड इहिं भूप ॥
गुन श्रुति गुन भू१३४३ पर गह्यो, राज्यासन अनुरूप ॥५४॥
बन्हि नंद गुन ससि१३९३ बरस, पुत्रहिं अप्पि नृपत्व ॥
पुरकासी त्रि कु चउ कु१४१३पर, तनुतजि गो मिलि तत्व ॥५५॥
बयपचीस२५ जावत बरस, पट्ट पंचसिख पाइ ॥
हड्डनृपति बरसिंह१८४।१हुव, बुंदिय सुनय बढाइ ॥ ५६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १यणेपञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रचरडासि १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितविवरणवेलाठ्याहार्यबुन्दीशहड्डनरेन्द्रहम्मीर १८३ १ समयसङ्गतबम्बावदेशहड्डनरेन्द्रहल्लू १८२।१चरित्रे तज्जन्म १ राज्य २ शकप्राप्तिसूचन १ भटवर्गत्रयोदश १३ वर्षवयस्कवप्तृवैर विवालयिषुहल्लू १८२।१ सप्रसभप्रतिमोटन २ जितनृपत्रय ३ रणाऽष्टक ८ पंचदश १५ वर्षवयस्कहल्लू १८२।१ हिंगुलाजगढादिगतदुर्गलय ३ समाक्रमण ३ सप्तदश १७ समावस्थपरिणीतगौड़ी १कप्रत्यागतहल्लू १८२।१ बम्बावदवेष्टकखिचि १ प्रमा-

---

पाकर ॥ ५३ ॥ १ जन्म ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीश नरेन्द्र हम्मीरसिंह के समय के साथ बम्बावदा के हाडों के नरेन्द्र हल्लू के चरित्र में उसके जन्म और राज पाने के सम्वत् की सूचना करना,तेरह वर्ष की अवस्थावाले,औरपिता का वैर पीछा लेनेकी इच्छावाले हल्लू को उमरावों के समूह का हठ पूर्वक पीछाफेरना, तीन राजा और आठ युद्धों को जीतकर पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले हल्लू का हिंगलाज आदि गये हुए तीन गढों को लेना, सत्रह वर्ष की अवस्था में गौड़ी को विवाहकर पीछे आयेहुए हल्लू का बम्बावदा को घेरनेवाले खीची और प्रमार शत्रुओं को भगाना, दशमयुद्ध में राणा की सहायक सेना को भगाकर जीरण पुर के राजा प्रामार जैत्रसिंह को मारना, फिर तीन विवाह करके नर

र २ प्रत्यनीकमद्रावण ४ दशम १० रणद्रावितसहायकराणासै-न्यजीरणपुरपृथ्वीशप्रामारजैत्रनिपातन५ पुनःप्रणीतपाणिपीड़नत्रय ३ नरपाल १८२।१ सहायजितरणत्रय ३पल्हायथखिचि १ डोडा २ रिनृपद्वय २ हल्लू १८२।२ पल्हायथ १ सीसवाली २ पुरंद्वय २ बुंदीवशीकरण ६ तद्वर्जनमतीपराणाहम्मीरस्वसहाययुयुत्सुजीरणपतिसार्थस्वपुत्र १ पितृव्यक २ त्रयप्रधानपृतनापृधनार्थप्रेषण ७ स्वपितृव्यकसहायसक्षतीकृतचैत्रकुमारबुंदीनरेन्द्रहम्मीर १८३।१ सपाणिपीडस्वपाणित्रकर्तकभानुपुरभूपभरतसेनभ्रंशन ८ वीक्षितबलरामविद्धबुन्दीशसहायलल्लू१८२।२ बृहद्गुर्जरबलराम १ विध्वंसन ९ हल्लू १८२।२ स्वानुजलोहराज १८२।३हम्मीर-१८२।४ प्रहारकसिंहण १ विन्ध्यराज २ शीर्षोद्दनिषूदन १० नवरंग १८३।१ राणाभटहूलकलिकर्णकर्तन ११ जितैतच्चतुर्दश १४ युद्धप्रद्रावितशत्रुसैन्यत्रय ३ पञ्चदश १५ प्रधनप्रधानपराक्रमप्राप्तपुरमण्डलाख्यराणापत्तनप्रत्यागतहल्लू १८२।१ प्रापितपाटवहम्मीर-

---

पाल की सहाय होकर तीन युद्ध विजय करके पल्हायथा के खीची और डोड दोनों शत्रु राजाओं को जीतकर हल्लू का पल्हायथा और सीसवाली दोनों पुरों को बुन्दी के वश में करना, उसके मना करने के विरुद्ध राणा हम्मीरसिंह का अपनी सहायता से युद्ध करने की इच्छावाले जीरण के पति के साथ अपने एक पुत्र और दो काका इन तीनों को सेनापति करके युद्ध के अर्थ सेना भेजना, अपने काका के सहाय कुमर चैत्रसिंह को घायल करके बुन्दी के राजा हम्मीर का अपने बाहुत्राण को काट कर बाहु को पीड़ा पहुंचानेवाले भानुपुर के राजा भरतसेन को मारना, बलराम से बुन्दी के राजा को घायल किया हुआ देखकर उसके सहायक होकर लल्लू का बडगूजर बलराम को मारना, हल्लू और अपने छोटे भाई लोहराज का हम्मीर पर प्रहार करनेवाले शीशोदिया सिंहण और विन्ध्यराज को मारना, नवरङ्ग का राणा के भट हूल कलिकर्ण को मारना, उस चौदहवें युद्ध में शत्रुओं को जीतकर तीनों सेनाओं को भगाकर पन्द्रहवें युद्ध में अपने पराक्रम की प्रधानता से राणा के मांडल नामक पुर को लेकर पीछे आयेहुए हल्लू का नैरोग्य होने पर हम्मीर (हामा) को बुन्दी भेजना,

१८३।१ बुंदीप्रस्थापन १२ तदनन्तरवैरविस्मारकस्वपौत्रीसिन्धुदा-
नीकृतक्षेत्रसकुमारनिस्सारितहल्लू १८२।१ सैन्यशून्यीकृतपुरमण्डलहल्लाधिराजहम्मीर १८३।१ दशपुर १ जीरण २ सैन्यसमेतहल्लू ७
८२।१ कुलनिर्बीजीकर्तुकामप्रस्थितराणाहम्मीरपृष्ठिस्थापन १३
बुन्द्यागतवीतवयस्कराहिकोपवेशितवरसिंह १८४।१ कृतकाशीनि-
वासभाविसमयप्राप्तावसानहल्लेशहम्मीर १८३।१ जन्म १ राज्य २
प्राप्तिराज्यत्याग ३ तनुत्याग ४ संवत्सूचनं १४ नवमो ९ मयूखः ॥९॥
आदितष्षट्पञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५६ ॥
प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
दोहा ॥
हल्लू१८२।१ समर चउद्दह१४, छतना लय३ जयपाइ ॥
अक्षत लखि वपु अप्पनौं, घन रिपुजन गन घाइ ॥ १ ॥
इनरन इम अक्षत रहत, वार्द्धक आवत विक्खि ॥
मनचिंतिय धारा मरन, समर कुलावन सिक्खि ॥ २ ॥
युग्मम् ॥
वैर पराये लैन वदि, जितंतित जुज्झन जाइ ॥
भूप निँयति निंदतभयो, अक्षत वपु गृहआइ ॥ ३ ॥

जिस पीछे वैर मिटाने के लिये अपनी पोती कुम्भर चेत्रसिंह को देकर हल्लू को सेना सहित निकाल कर मांडल नगर को खाली करके हल्लाधिराज हाला का मन्दसोर और जीरण की सेना सहित हल्लू के कुल को निर्बीज करने की कामना वाले प्रयाण कियेहुए राणा हम्मीरसिंह को पीछा भेजना बुन्दी में आकर अवस्था बीतने पर वरसिंह को गद्दी बैठाकर काशी निवास करके आगे आनेवाले समय में मृत्यु पानेवाले हल्लेश हाला के जन्म, राज्य प्राप्ति, राज्य त्याग और शरीर त्याग करने के सम्वत् की सूचना करने का नवमा ९ मयूख समाप्तहुआ और आदि से १५६ मयूख समाप्त हुए ॥

तीनों १सेनाओं से २ घाव रहित अपना ३शरीर देखकर ॥ १ ॥ ४ बुढापा आताहुआ ५ देखकर ६ युद्ध ॥ २ ॥ ७ भाग्य को ॥ ३ ॥

षट्पात् ॥

गिरिधर नृप गुग्गेर जत्थ हरराज१८२११ बिवाहिय ॥
सो तोमर धनसाहि*सूनु ×जासन अलि साहिय ॥
नरउरके कुम्मनृप हुपत सीमा साहसलगि ॥
आयउ सहबल अतुल ²ज्वलन अंतर प्रकोपजगि ॥
हल्लू१८२११ नरिंद सुनतहि हरखि बिनुहि निमंत्रन पेच्छुबनि ॥
तोमर सहाय कुम्महिं तराजि, हुव विजई प्रतिपच्छ हनि ॥४॥
पछिलैं वंय १७९११ नृपाल गाजि चाचिक कृपान गहि ॥
मैसरोरगढ गाहिय द्रोहपावक रैन ५ हिं दहिं १ ॥
रैनतनय हरिनाम अमर३ चाचिक हरि अंगज ॥
सो प्रसभी इहिंसमय लहि इक निसफल संगजँ ॥
सत१००सुभट मिल्लि भट हुवसत२००न लिय निश्रेनिय गढ दुलभ
रोपाल१८२११तत्थ हल्लू१८२११अनुज लये सलुहसूचन समुह॥५॥

दोहा ॥

कलि कटाइ रजपूत कति, ससमर अमर भज्यो सु ॥
सावधान हुवतहि सलुह, जय रोपाल १८२११ भज्योसु ॥६॥
रभज्योसु १ लभज्योसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
निंदहिपति सालक अमर, तिहिं जुत तस सुधि रक्खि ॥
हल्लू१८२११ इम रन सत्रहम१७, चाचिककुल गय चक्खि ॥७॥
जव झल्लन जीनोद२ लिय, जुज्झिय दसपुर२ जाइ ॥
उहाँभयो न जय१ न अजय२, इमहु मिलत विधिआइ॥८॥
हो दहिया हरि नैनवा, भूप अरिहु तसधीर ॥

तँवर धनसाह का*पुत्र×जिस से²अग्नि विना१बुलाये२मदत चनके ३ शत्रुओं को मारकर ॥ ४ ॥ ४ द्रोह रूपी अग्नि से रणसिंह को दहनकरके ५हरिसिंह का पुत्र ६ हठी ७ साथी ॥५॥ ८ युद्ध में कितनेही रजपूत कटाकर उस युद्ध से अमरसिंह भगा और रोपाल ने विजय सेवनकिया (पाया) ॥६॥७॥८ ॥

जित्ति उदासीन हि लयो, पद्मनगर नृप बीर ॥ ९ ॥
बुंदियपति हम्मीर१८३।१ तब, पठयो इम लिखि पत्र ॥
काका १८२।१ तुम अरिभीरक्रिय, अनुचित दोष अमत्र ।१०।
पद्मसेन दाहिम सुपहु, नगर² नगर³ निर्दोष ॥
तिहिं अरिकरि हरि हिततक्यो, पन्नग[4] भरि पयपोष ॥ ११ ॥

षट्पात् ॥

सुनियह हल्लुव१८२।१ सुपहु पत्र बुंदिय इम पिल्लिय ॥
इतेबरस हम आँजि खेल चाहत जिय खिल्लिय ॥
चउद्दहम १४ रन चंड पिक्खि आवत पलितावलि ॥
[9]असुछंडन आग्रहहि बंधि तिम हय नक्खिय बलि ॥
पिक्खहु भतीज१८३।१नियंतिय प्रबल इक्क१हु[11]छंत अंगन सफल॥
तरवारि धार[12] तुट्टन तिमहि बंधिय हम हठि मंत्रबल ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

दैन भीर यातैं दु २ बल, लज्जत जावत लाल ॥
तुमहिं रुची जु न तो तुमहु, क्रमहु[13] निबल अरिकाल ॥ १३ ॥
हम्म १८३।१ कहिय जो यह गहिय, संधा[14] निबलसहाय ॥
निबलभतीजहु सबलसन, आपकरहु जय आय ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

झंपिय हल्लुव१८२।१जुज्झि समर१८१।१काकाअग्रज१८१।१सह
हम गृहहित हुव हुतहि मिच्छ पावक महंत[15] मह ॥

॥ ९ ॥ वह दोष का १ पात्र है ॥ १० ॥ २ नगर नामक ३ पुर के पति पद्मसिंह को निर्दोष शत्रु बनाकर हरिसिंह का हित किया सो मानों ४ सर्प को ५ दूध पिलाकर पोषण किया है अर्थात् सर्प को दूध पिलाने से भी विषही उत्पन्न होता है ॥११॥६भेजा७युद्ध में८श्वेत केशों की पंक्ति आती हुई देखकर ९ प्राण छोडने का १०भाग्य का११घाव. तरवार की धारा से १२मरने का ॥१२॥ १३ चलो॥१३॥१४प्रतिज्ञा. ॥१४॥ बडे१५उत्सव से

पुनि मम सिसुपन पुहवि गई वंबावदके वस ॥
बुंदीकी विगरी न तदपि हमहुव वर्द्धक[1] तस ॥
रिपुगिनत नप्प१८२स्वसुरहिं तजि रु जुग[2]दिवाइ गढ कारि त्रि[3]जय
आयो रु वहुरि लखिहौं इमहिं ऐहौंतो लखिहौं न अंय ॥१५॥

॥ दोहा ॥

इमहि तुमारो जो अरिहु, लखिहौं निर्बल लाल ॥
तो ऐहौं हुत भीर तस, कटि असिलौं बनि काल ॥ १६ ॥

॥ षटपात् ॥

ऊनबिंस १९ इम बिजित तुमुल[3] सद्दि रु तदनंतर ॥
अप्प[4] १८२।१वारहम१८२।१२अनुज वैर बालिय[5] बसुधांबर[6]
देव १८०।१ कुमर जव दंग लुंचि[7] मोहिल पट्टनि लिय ॥
सल्ह२ मनोहर १ सूनु आइ लक्खन आराधिय ॥
रक्ख्यो सु रान वंग्घोरदै[9] सुत तंदीय[10] अब इहिं समय ॥
हम्मीरराण करि दुर्गपति मंडनगढ[11] रक्ख्यो मलय[12] ३ ॥ १७ ॥
हल्लू१८२।१सन वारहम१२लघु सु घोपाल१८२।१२कालखहि
अच्छोटन[13] रस अटत पत्त मंडन गढ पासहि ॥
मलयसिंह मोहिल सु स्वल्प परिकर हड्डहिंसुनि ॥
अग्ग वैर सुधिआनि च्यारिसत ४०० सँबर[14] मुख्य चुनि ॥
क्रम तजि स्ववेस प्रारिचायक[15] रु भिल्ल निभ[16] सु दुर्गम भिरयो॥
लघुभ्रात यहहु घोपाल१८२।१२लरि खट६घटिका[17] धारन खिरयो॥१८॥

दोहा ॥

उसके १ वढाने वाले २ शुभ भाग्य को नहीं देखूंगा अर्थात् अवश्य आकर मरूंगा ॥ १५ ॥ १६ ॥ ३ युद्ध ४ अपने बारहवें भाई का वैर ५लिया ६ राजा ने. मोहिलों से७ खोसकर. महाराणा ८ गढ लक्ष्मणसिंह की सेवा की ९ वागोर नामक पुर देकर १० उसका पुत्र ११ मांडलगढ में १२ मलयसिंह को ॥१७॥१३शिकार के१४भील. वह मलयसिंह भी अपनेको१५लखाने (पहिचानकराने)वाला ऐसा वेपछोडकरभीलों के१६सदृशछः१७घडीतक॥१८॥

हन्यौं किरातन किरिहनत, परसीमा घोपाल१८२।१२ ॥
बत्त सुधा यह किय बिदित, सुनिहल्लू१८२।२ नटसाल ॥१९॥
कोपत नृप१८२।१ भिल्लन कहिय, जाइ पिहित करजोरि ॥
मारक सठ मोहिल मलय, हम सिर धरत निहोरि ॥ २० ॥
अन्नसंग घुन घरटइम, जिनहम पीसेजाँहिं ॥
भंजहु तिहिं बग्घोरभिरि, मैरं न मंडलमाँहिं ॥ २१ ॥

॥ षट्पात ॥

भिल्लनप्रति नृप१८२।१ भनिय आत मंतु न तुम ओरहु ॥
तो बग्गोरहि ताहि देखि हलढिग हुत दोरहु ॥
स्वमरन भिल्लन समुझि मलय मग्गहि दिखाइदिय ॥
संभर१८२।१ झपटि सिवान कुछापै मोहिल कपोतकिय ॥
अजमेरनृपति साजि गौड़ इत लुट्टन प्रन मारोट लिय ॥
ताकँहँबचाय हरराज१८२।१सुतकँलिइकवीसम२१विजयकिय॥२२॥

॥ दोहा ॥

प्रबल जदपि अजमेरपति, लेनचही लघुं लोहि ॥
सो मारोट न धसिसक्यो, हल्लू१८२।२ विजय यहोहि ॥ २३ ॥
हडुनको कुलवारहठ, हुव पहिलौं हरसूर१ ॥
स्यामदास हुव तासुत, पाटव गुन१ रन२ पूर ॥ २४ ॥
समरसिंह१८१।७ छुंदिय सुपहु, सो आदर कवि स्याम२ ॥
पुजिचरन किय भेट पुनि, गिनि सासँन खट६ग्राम ॥ २५ ॥
पुरी बरोदा परगनाँ, काछेला१ जलकाम ॥

१भीलों ने दूसरों की सीमा मेंरहकर को मारतेहुए घोपाल को मारडाला हल्लू को४नटसाल(नहीं निकले ऐसा साल)समझकर यह बात ३ खूब प्रसिद्ध की ॥१९॥५शुष्ठ ॥२०॥ अन्न के साथ६ चक्की में घुण(जन्तु विशेष)पीसेजावें इस प्रकार७बागोर में युद्ध करके८मांडलगढ में ॥२१॥ तुम्हारी तरफ ९ दोष नहीं आता है भीलों ने१०अपना मरना समझकर११मार्ग रहित १२युद्ध ॥२२॥ १३ छीनलेवेंगे ॥ २३ ॥ २४ ॥ १४ स्यामदास के १५ सासण (उदक) ॥ २५॥२६॥

दोडुंदा२हरिनाँ३ विदित,रोसुंदा४ अभिराम ॥ २६ ॥
चंपखेट[1]५ नामक रुचिर, अरुगिंडोलो६ अप्पि ॥
अप्प चढायउ स्यामर२ इभं[2], थिरि स्वअंस[3] पयथप्पि ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

स्यामर२ तनय सामोर सुकवि लोहठ३ अभिधा[4]सह ॥
हल्लू१८२।१ जय चउदसम१४ विरुद्द वरनिय महंत[5]मह ॥
सु निज काव्य सुनि सत्य अट्ठ८ निवसं[6]थ नृप१८२।१ अप्पिय ॥
अयुत१०००० द्रम्म आभरन२ सगँय[7]३ हय४ सिचर्य[8]५ समप्पिय ॥
पुनि कहिय अप्प लोहठ२ निपुन करहु इक्क१ उपकार कवि॥
चिरतैं[9] चहंत हम रनमरन छतं[10]हु तदपि लगि दै न छवि ॥२८॥

॥ दोहा ॥

यातैं तुम चहि हित अटहु[11], धरनि पग्घ[12] मम धारि ॥
रुट्ठावहु[13] करि नृपन रिपु, अनंत[14] याहि उच्चारि॥२९ ॥
कवि यह सुनि हल्लू१८२।१कथित, लोहठ२ विचरन लग्गि ॥
विरुखतहुव[15] भूपन बहुन, असह लगावन अग्गि[16] ॥ ३० ॥

॥ षट्पात् ॥

मंडोउर जिंहिसमय राज्य धारत अधर्मरत ॥
हम्मीर१ सु प्रतिहार महामहिपँन[17] निलज्जमत ॥
हुव बुंदिय हम्मीर१८३।१ सु पहु ताको यह सालक[18] ॥
विदित कुमर वरसिंह१८४।१को सु मातुल[19] मुखकालक[20] ॥

१चम्पाखेड़ा २हाथी पर ३ अपने कन्धे पर पैर दिलाकर॥ २७॥ लोहठ ४नामक सामोर शाखा के चारण ने ५ बड़े उत्साह से ६ ग्राम ७ हाथी सहित ८ वस्त्र ९ बहुत समय से १० घाव भी ॥ २८ ॥ पृथ्वी में ११ फिरो मेरी १२ पगड़ी धारण करके १३ क्रोध कराओ इस पगड़ी को १४ अनम्र (नहीं झुकने वाली) कहकर ॥ २९ ॥ १५ देखताहुआ १६ अग्नि ॥ ३० ॥ बड़े १७ राजाओं में १८ साला १९ मामा २० काले मुखवाला

इक बिप्र द्विरागमंन करि उहाँ लैजावत तिय अति ललित ॥
लंपट बिनक्कैं प्रतिहार लखि जुहु छिन्निय दर्पकं ज्वलित ॥३१॥
दिनदस१० लंघित द्विजहि नदिय पामैर जब नारिय ॥
आय बिफल अजमेर १ पुनि सु चित्तोर२ पुकारिय ॥
ईडर३ दसपुर४ इम अवंति५ नरउर६ पट्टनि७ अरु ॥
दिल्लिय८लग करि दोर मलिन किन्नैं मरुपं१ रु मरुं२ ॥
भेरि१ न निर्नाद डिंडिम२ भनितं तस पुकार न सुनिय तबहि॥
पुनि आइ कुपित मंडपपुरसु द्विज मृत हुव इम देहदहि ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

कुपित अनेक अकज्जकरि, मद्यपानजुत मूढ ॥
हुव जननी१ गोजुग२ सहित, इमसु अंग्गि आरूढ ॥ ३३ ॥
उनदिवसन लोहठ२ अटत, पुर मंडोउर पैत्त ॥
अल्प अहंनके अंतरहि, तिहिं बुल्ल्यो कवि तत्तं ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कवि करि हल्लुव१८२१ कथितं कहिय दिय पट धावक कँहँ ॥
पटनमँहु इक१पग्ग प्रनंत होवत सुं न मोपँहँ ॥
पग्घैं इतंर परंतु बिदित हल्लु१८२१ सिरकी बहु ॥
सुरं१ द्विजं२ कंवि३ बिनु सबन प्रनंति नकरैं जोपै पहुं ॥

स्त्री का १ गौना करके २सुन्दर स्त्री को ३ नकटे ने ४ कामदेव से जलतेहुए ने ॥ ३१ ॥ उस ५नीचने ६ मारवाड़ के राजा को और ७ मारवाड़ को. नगारों की ८ आवाज में जिस प्रकार डिमडिमी के ९ शब्द को कोई नहीं सुनता जिस प्रकार उसकी पुकार को किसीने नहीं सुनी ॥३२॥ माता और दो गौओं सहित वह ब्राह्मण१० अग्नि में जलगया ॥३३॥११गया. थोड़े १२दिन पीछे १३ तहां॥३४॥ हल्लू का १४कहना करके कहा कि वस्त्र धोबी को देदिये हैं, वस्त्रों में एक पगड़ी है सो मुझसे १५ झुका ही नहीं जाता अर्थात् उस पगड़ी को रखकर मैं किसीको झुक नहीं सकता. पगड़ियां १६ और भी बहुत हैं परन्तु वे सब प्रसिद्ध हल्लू के मस्तक की हैं सो १७ देवता १८ ब्राह्मण और १९चारणों के विना दूसरों से २१ राजा होवें तोभी नहीं २०नमतीं

ध्रुव कल्हि पग्ध ऐहैं सु धरिऐहौं अरु मिलिहैं उभयर ॥
जानतो त्वरा तोमैं जबहु देतो पग्घ न बिदितदय ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

तुमकिन्नी द्रुततहि तो, मंतु छमहु महिपाल ॥
लौ वह पग्घ रु कल्हि लहुँ, ऐहौंधारि उत्ताल ॥ ३६

जाचक मैं भूपति जनन, सो आऊँ न समाज ॥
यामैं हल्लुव१८२।१ पग्घ अरि, अपँटु दिखावत आज ॥ ३७ ॥

हल्लू१८२।१ सबपट देत हम, नदई पग्घ निहारि ॥
अस्त्रिय क्यों न मिली यहै, पँटगन मुख्य पुकारि ॥ ३८ ॥

हल्लू१८२।१ अक्खिय व्रत हमहिं, व्याहव मरन उमाहि ॥
पग्घ न मम होवत प्रनत, यह साहस दृढ आहि ॥ ३९ ॥

झुल्ल्यो मैं पग्घैं बहुत, न बहुत तोहु नरेसं ॥
नमिहौं धारत ओर निज, अनंत पग्घ करि एस ॥ ४० ॥

तबहि रीझि हरराज१८१।१ सुत, बसन सकल बहुबेर ॥
पग्घनजुत दिन्नैं प्रथितं, जे होत न कहु जेर ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

कँर्णाकरि सु कविकथित कुहकं हम्मीर कहाई ॥
हल्लू१८२।१ पग्घहि धरहु आहु रक्खहिं अधिकाई ॥
प्रथम सु कवि तिम पूज्य१पग्घ हल्लुव१८२।१धृतं धरि पुनि२ ॥
न नमहु मिलहु निसंक सुजस हल्लन रक्ख्योसुनि ॥

---

१ शीघ्रता जानता तो २ हे प्रसिद्ध दयावान् ॥३५॥ ३ जल्दी ही की है तो ४ अपराध माफ करना ५ शीघ्र ६ शीघ्रता से ॥ ३६ ॥ मुझको ७ मूर्ख दिखाती है ॥ ३७ ॥ ८ वस्त्रों में मुख्य कहकर ॥ ३८ ॥ हल्लू ने कहा कि युद्ध में मरने के उत्साह से मेरा नियम है कि मेरी पगड़ी किसीसे झुकती नहीं यह दृढ हठ ९ है ॥ ३९ ॥ १० हे राजा इस पगड़ी को ११ अनम्र कहके ॥ ४० ॥ सब १२ वस्त्र १३ प्रसिद्ध ॥ ४१ ॥ १४ सुनकर उस १५ जालसाज. हल्लू की १६ धारण कीहुई

जंपत यहैसु परि[1]कर जनन बरज्यो कहि हितहेरि बलि ॥
ननकरहु पग्घ अपमान नृप कवि तो चुक्कहु टारि कलि[2] ।४२।

दोहा ॥

तुमकरिहो अपमानतो, सो हल्लू१८२।१ दृढसंध[3] ॥
जीरनपतिसे भंजि जिहिं, गंजे गढ बलबंध ॥ ४३ ॥
जानत सत्रुहु निबल जो, भिरनहोत तसभीर ॥
बैरपराये लेत बढि, धरि लै सु न सुनिधीर ॥ ४४ ।
भगिनी जेठी भावती१८३।१, कुंदीनृपति बिवाहि ॥
भार्त्त[4] हम्म१८३।१ तुमरेभये, ते भंजिहैं[5] रिपुताहि ॥ ४५ ॥
तुमसौं हुत[6] सालत्व तजि, हल्लू१८२।१ सहचर[7] ह्वैहि ॥
इक्कलही हल्लू१८२।१ पहै, लरि जित्ति रु भुवलैहि ॥ ४६ ॥
तिनहिं कहिय हम्मीर तब, छिति ममहल्लू१८२।१ छुत्त[8] ॥
जिती ह्वै सु अप्पौं छिजन, ह्वैन[9] तदपि मम हुत्त ॥ ४७ ॥
मोसौं संकिय रानमुखं[10], बिप्रपुकार पचाइ ॥
संबावदपंति बप्पुरो[11], आजि[12] रचहिं किम आइ ॥ ४८ ॥

षट्पात् ॥

सुतको यहहठ सुनत नृपसु जननी हु निवारिय ॥
तदपि महाजड़ तत्थ इक्क चारन हक्कारिय[13] ॥
लिय जताइ पहिलौंहि मिलहु अनतौंहि[14] हम मन्निय ॥
मिलि लोहठसन तिमहि कपट गौरव आदरकिय ॥
बैठि रु तदीयँ[15] जस काव्यबदि बिरदायउ प्रतिहार पहु ॥

१ परगह के लोगों ने २ युद्ध को बचाकर ॥ ४२ ॥ दृढ ३ प्रतिज्ञावाला ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४ बहिनोई. वे शत्रुता को ५ धारण करेंगे ॥ ४५ ॥ तुमसे ६ शीघ्र सालापन छोडकर. हल्लू का ७ साथी होवेगा ॥ ४६ ॥ मेरी जितनी जमीन को हल्लू ८ स्पर्श करेगा; अथवा मेरी जितनी जमीन पर हल्लू की छाया पड़ेगी युद्ध में नहीं ९ माराजाऊं तो ॥ ४७ ॥ १० आदि ११ बिचारा (बापड़ा) १२ युद्ध ॥ ४८ ॥ १३ बुलाया १४ बिना नमस्कार कियेही १५ उसका

सह[1]कपट रीझि हम्मीर सठ ललित[2] दिन्न सिरुपाव लहुं[3] ॥४९॥
हत्थजोरि प्रतिहार कहिय सबकै समान कवि ॥
धरहु समहु परिधान[4] जदपि सुलभ रु भजैंन[5] छवि ॥
सोहठ सु सुनि सलज्ज कुड्य[6]अंतर धारनकिय ॥
पटउतारि पहिले रु दास[7]निजकर असेस[8] दिय ॥
बैठो सु आइ परिखद[9] तवहि सठ पिक्खन[10]मिस दाससन ॥
मंगाइ पग्घ मंडल[11] सिर सु कहिय खिजि बंधन कुजन[12] ॥५०॥

दोहा ॥

कोऊ तहँ सु सक्यो न करि, जससम हड्डन जानि ॥
कवि पिक्खत तव निजकरन, किय सठ सुहि तजिकानि ।५१।
बुल्लि सभा निजबैनकरि, स्वान सु गहि सय[13]संधि ॥
अतिमद हल्लू१८२।१ पग्घवह, बालिसैं[14] तस दिय बंधि ॥५२॥

षट्पात् ॥

सोहठकवि यहलक्खत कढ्ढि कट्टार निसित[15] कर ॥
लग्गिय मरन अलुब्ध[16] लियसु पकराइ खिज्जि खर[17] ॥
कहिय कैद जो करहिं ततो यहवत्त[18] दृष्टतव ॥
कवन हड्डसन कहहिं जाइ रुट्ठाइ बडेजंव[19] ॥
इम तजत तोहि जावहु अरंहि[20] कहि इम दियउ बिडारि[21] कवि ॥
गृह तव पहेहु लंघित[22] गयउ छलि ठग छिन्न[23] बनिक[24] छवि ।५३।

दोहा ॥

१कपट सहित २ सुन्दर ३ शीघ्र ॥४॥ ४ वस्त्र ५ शोभा नहीं देते हैं तो भी ६ दीवार की आड में अपने ७ सेवक के हाथ में ८ सब ९ सभा में देखने के १० मिस से सेवक से मंगवाकर उस १२खोटे मनुष्य ने क्रोध करके कहा कि ११कुत्ते के मस्तक पर बांध दो ॥ ५० ॥ ५१ ॥ अपने १३ हाथ से. उस१४ मूर्ख ने ॥५२॥ १५ तीखा १६ निर्लोभी १७ गधे ने. यह१८ वार्ता तेरी देखीहुई है. बडे १९ वेग से २० शीघ्र ही. कवि को २१ निकाल दिया २२लंघन करता हुआ धन २३ छिपाये हुए २४ बनिये की भांति ॥ ५३ ॥

मंडपपुर बहुरिहु मरत, निंजन दयो सु निवारि ॥
मैं जानत मरत न मुरत, निंयत सती जिम नारि ॥ ५४ ॥
अनसन लोहठ आत इम, सुनि अजमेर अधीस ॥
मिलिसम्मुह लावनलग्यो, सो न मुरयो हठसीस ॥ ५५ ॥
वेंतनबस अनुचर बहुत, हे तिन मग्गविहाइ ॥
वंबावद छन्नँ प्रविसि, अप्प दुरयो गृह आइ ॥ ५६ ॥
आवन पुब्बहि नृप यहै, विदित लई सुनि वत्त ॥
पै आयउ प्रच्छन्न कवि, जानिसक्यो सु न जत्त ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम ५राशौ वीतिहोत्रचरणडासि १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्याऽनुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुंदीशहम्मीर १८३।१ चरित्रसमानसमयकवम्बावदेशहारराजिहल्लू १८२।१चरित्रे जितचतुर्दश १४ महारणसैन्यत्रय ३ वीक्षितविक्षतवपुष्कबुद्धवार्द्धकागमप्रतिज्ञातरणमरणनिजजनकश्यालकगुग्गौराख्यनगरनरेन्द्रस्वल्पबलतोमरगिरिधरसहायीभूतहड्डाधिराजहल्लू १८२।१ षोडश १६ समरनलपुरनरेन्द्रकूर्मपराजयन १सप्तदश१७सङ्गरमाहिषदुर्गरक्षकसानुजरोपाल १८२। ११ पराजिततदुर्गरुरुक्षुनिम्बड़ीनगरनृपश्यालकचाचि

१अपने लोगों ने. ग्रन्थकर्ता(सूर्यमल्ल)कहते हैं कि मेरी समझ में मरनेवाला पुरुष २निश्चय ही सती होनेवाली स्त्री के समान रोकने से नहीं रुकता ॥ ५४ ॥ ३ निराहार ॥ ५५ ॥ ४ तनखाह के कारण ५ मार्ग में छोडकर ॥ ५६ ॥ ५७ ।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पांचवें राशि में अग्निवंशी चहुवाण के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीपति हम्मीर के चरित्र के समान समयवाले बम्बावदा के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में चौदहवें बड़े युद्ध में तीन सेना को जीत कर अपने शरीर को घाव रहित देख और बुढापे का आगम जान कर युद्ध में मरने के लिये अपने पिता के साले, थोड़े बलवाले, गुग्गौर नामक नगर के राजा तोमर गिरधर का सहायक होकर हड्डाधिराज हल्लू का सौलहवें युद्ध में नरउरके कछवाहे राजा का पराजय करना, सत्रहवें युद्ध में भैंसरोड़

काऽमर १ सजामिप २ संहरण २ तदनन्तराऽष्टादश १८ रणप्र त्याक्रान्तजिन्नोदपुरदशपुरनरेन्द्रयोत्स्यमानहल्लू १८२।१ जया १ जया २ प्रापण ३ तथैकोनविंशति १९ तमसमाघातस्वसपत्नलो चनपुरनरेशदभिकहरिसिंहसहायनगरनामनगरनृपदाधिमपद्मसेनप राजयन ४ तत्कारणबुन्दीन्द्रहम्मीरो १८३।१पालब्धहल्लू १८२।१ प्रेपितप्रत्युत्तरस्वप्रतिज्ञाप्रख्यापन ५ विंशतितम २० युद्धस्वानुजघो पाल १८२।१२ संहारकव्याघ्रपुरमण्डनदुर्गरक्षकराणासामन्तमोहि लमलयसिंहनिपातन ६ तथैकविंशतितम २१ संख्याजमेरपुरपा र्थिवगौड़प्रतिप्रस्थापनप्रगल्भहल्लू १८२।१ मारोटपुररक्षण ७ पूर्व कालबुंदीनृपसमरसिंह १८१।७ पौराणिकहरसूर १ सूनुश्यामदा सा र्थसिन्धुर १ गिराडोली २ प्रभृतिग्रामचतुष्क ४ वितरण विख्यापन ८ वर्णितस्वचतुर्दश १४ विजयविरुदश्यामदास २ सूनु लोहठा ३ र्थमुद्रा १ भूषण २ गज ३ हय४वस्त्र ५ सहितसगौरव ६ ग्रामाऽष्टक ८ समर्पण ९ तदनंतरमृधमुमूर्षुहल्लू१८२।१ राजक

गढ के रक्षक अपने छोटे भाई रोपाल से पराजित उस दुर्ग पर चढने की इच्छा वाले लिम्बड़ी नगरके राजाके साला चाचिक अमरसिंह को बहिनोई सहित मारना, जिस पीछे अठारहवें युद्ध में घेरेहुए जिन्नोदपुर और मन्दसोर पुर के राजाओंसे युद्ध करनेमें हल्लू की जय अजयका प्राप्त न होना, तथा उन्नीसवें युद्ध में अपने शत्रु नैणवा पुर के राजा दहिया हरिसिंह की सहाय होकर नगर नामक नगर के राजा दाहिमा पद्मसेन का पराजय करना, इस कारण से बुन्दी के राजा हम्मीर के उपालम्भ देने पर हल्लू का उत्तर भेजने में अप- नी प्रतिज्ञा को प्रसिद्ध करना, बीसवें युद्ध में अपने छोटे भाई घोपाल को मा रनेवाला महाराणाका उमराव बाघोरपुर का मोहिल मलयसिंह जो मांडलग ढ का किलेदार था उसको मारना, तथा इक्कीसवें युद्ध में अजमेर पुर के राजा गौड़ के प्रस्थान में प्रगल्भ हल्लू का मारोठ पुरकी रक्षा करना, पहले समयमें बुन्दी के राजा समरसिंह का चारण हरसूर के पुत्र श्यामदास के अर्थ हाथी सहित गींडोली आदि चार ग्राम देनेकी प्रसिद्धि करना, अपनी चौदहवीं वि जय का यश वर्णन करने पर श्यामदास के पुत्र लोहठ के अर्थ रुपये, भूषण, हाथी,

रिपूकरणनिमित्तशिक्षितस्वोष्णीषानमकविलोहठ ३ प्रतिराजधानीप्रेषण १० मण्डपपुरपृथ्वीशप्रतिहारहम्मीरसमात्तस्वनववधूकप्रतिराज्यपूत्कृतिमोघताविमनस्कपुनरागतपीतापेय १ खादिताखाद्य २ स्वसावित्रि १ सुरभियुग २।३ सहितविप्रविशेषवैश्वानरविशन ११ स्वप्रसू १ परिकर २ प्रतिषेधप्रतीपमण्डपपुरराजस्वपुरसमागतकौ हक्यह्लांतहल्लू १८२।१ष्णीषानमनभावप्रासक्ष्यप्रबोधितकविलोहठ स्वसमज्यासमाकारण १२ श्रुततत्प्रणीतस्वकाव्यकैतवकलित-प्रासन्यपरिधापितस्वदत्तसर्वपटहम्मीरवीक्षणव्याजसमानायितत-दुत्तारितहल्लू १८२।१ दत्तपूर्वोष्णीषश्वानाशिरोवेष्टन १३ बला त्कारवारितमुमूर्षणनगरीनिस्सारितागच्छन्नुपेक्षिताऽजमेरनरेन्द्रनाहरलोहठप्रच्छन्नबम्बावदविशनं १५ दशमो१० मयूखः॥१०॥
आदितस्सप्तपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५७॥

घोड़े और वस्त्र सहित बडप्पन के साथ आठ गाम देना, जिस पीछे युद्ध में मरने की इच्छावाले हल्लू का राजाओं को शत्रुबना ने के निमित्त अपनी पगड़ी को अनमनीय होने की शिक्षा करके कवि लोहठ को राजधानियों में भेजना, मंडोवर पुर के राजा प्रतिहार हम्मीर के अपनी नवीन स्त्री को छीन लेने से प्रत्येकराजाओं के आगे कीहुई अपनी पुकार निष्फल होने से उदास होकर पीछा आकर नहीं पीने की वस्तु को पीकर और नहीं खाने की वस्तु को खाकर अपनी माता और दो गउओं सहित किसी ब्राह्मण का अग्नि में प्रवेश करना, अपनी माता और परगह के लोगों के मना करने से विरुद्ध मंडोवर के राजा का अपने नगर में आयेहुए कपट रहित, हल्लू की पगड़ी को नहीं झुकाने का हठ प्रबोध कराने वाले कवि लोहठ को अपनी सभा में बुलाना, उस के बनायेहुए अपने काव्य को सुनकर छली हम्मीरसिंह का प्रसन्नता से दियेहुए अपने सरोपाव के वस्त्रों को पहनाकर उसकी उतारीहुई हल्लू की पहले दीहुई पगड़ी को देखने के मिस से मंगाकर कुत्ते के मस्तक पर बांधना, मरने की इच्छावाले लोहठ को बलपूर्वक रोककर नगरी से निकाले हुए लोहठ का अजमेर के राजा नाहर को छोडकर छाने बम्बावदा में प्रवेश करने का दसवां मयूख समाप्तहुआ ॥१०॥ और आदि से एक सौ सत्तावन मयूख हुए ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि सु जब आयोसुन्यौं, अनसन* जलआधार ॥
तबहि जाइ हल्लू१८२।१ तँहँ रु, दिय बिस्वास उदार ॥ १ ॥
कहिय तज्यो क्यों अन्न कवि, कथित कियउ सबकाम ॥
तुमपठये दृढमंत्रि तब, यहहि करन अभिराम ॥ २ ॥
अनंत पग्घ सुनि कवि कहिय, लेतो लरन बुलाइ१ ॥
तुम्हहिं निंदतो२ बात बहु, होतो सागस हाइ ॥ ३ ॥
पै नवपट पहिरायकैं, इक्खनमिस करि अग्घ ॥
पामर किय मंडल कें पर, प्रभुसिरकी वह पग्घ ॥ ४ ॥
नतो अनत सुनि पग्घ निज, कहतो हल्लुव१८२।१ कोन ॥
जो बल तो आवहु जुरन, हम रिपु सम्मुह होन ॥ ५ ॥
सो पहिलैं चित्तोरगढ, रानहु तँहँ पनरक्खि ॥
पग्घ नमत जो रजकें पँहँ, आवहु सुहि धरि अक्खि ॥ ६ ॥
इक पंच ५ दिन लखि रहिय, मैं तब कहिय महीस ॥
नमतपग्घ सो अब निकट, सभा उचित रहि सीस ॥ ७ ॥

युग्मम् ॥

है निदेस आऊँ जबहिं, जानि रान हसि जोहु ॥
बुल्लयो अनत जु पग्घ बर, सर्पग दिखावहु सोहु ॥ ८ ॥
नमन पग्घ धरि सीस निज, पग्घ यहहु करि पानि ॥
रानसभा जाइ रु कहिय, इक्खहु यह दिय आनि ॥ ९ ॥
रानकहिय जड़ कविसिरहिं, प्रनतकरैं सहपग्घ ॥

---

*निराहार. मेरे १कहने से ॥२॥ २अनम्र ३दोषी ॥३॥ ४नीच ने कुत्ते के ५मस्तक पर ॥४-५॥ जिस पगड़ी को रखकर ६नमते हो सो ७धोबी के पास है तो वह पगड़ी आवे तब धरकर आना ॥६॥७॥ ८ हाथ में लेकर हमको दिखाना ॥८॥ ९नमने वाली पगड़ी अपने मस्तक पर रख और इस पगड़ी को १० हाथ में लेकर ॥९॥

जाकीपग्घ करैं न जिहिं, यह अचिज्ज हित्तअग्घ ॥ १० ॥
सहठ नमावत कविसिरहिं, मूढ सु मोघ महीस ॥
पग्घहुको तब अनतपन, व्है जब हल्लू१८२।१ सीस ॥ ११ ॥
जोरि त्रुटित नृप हम्म१८३।१ जब, कुँमरकनी कियदैन ॥
अनतभाव गो कित उहाँ, अब जो धारत ऐन ॥ १२ ॥
बदि इम दै समुचित बिदा, मैं किय रान समाज ॥
इम अवंति१ अजमेर२ मुख, इक्खे कति अधिराज ॥१३॥
जावत पट्टनि मैं जबहिं, पुरमंडोउर पत्त ॥
अनुचित तँहँ प्रतिहार यह, रचिय बिप्रवध रत्त ॥१४॥
अक्खिय अब हल्लू१८२।१ अवनि, जो मम छुवहिं जितीक ॥
सेवित रहिं बिप्रन सहज, सीमाँ करहिं समीक ॥१५॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

कविकों असन कराइ, हल्लू १८२।१ अक्खिय सह सपथ ॥
जुद्ध मरहिं१ कै जाइ, कै मंडोउर निजकरहिं२॥१६॥

॥ षट्पात् ॥

जुतलोहठ यह जंपि आइ हल्लुव१८२।१ निजआलय ॥
भाखिय ममबय भटन मरन हुवसमय मनोमय६ ॥
लहिहैं सुत१ दिवलाभ अमृत७२रहिहैं मंडोउर ॥
बंबावदभुव बिलसि धरहु अब पुत्र राज्यधुर ॥
कहि इम रु चंद्र१८३।१जेठोकुमर चंच१८३।१हु जिहिं मागध चवत॥
दै ताहि राज्यगद्दिय बिदित मरन किन्न चहुवानमत ॥१७॥

दोहा ॥

।१०। १ निरथक. पगड़ी का २अनअपन हल्लूके मस्तक पर होवे तब है॥११॥तूटी हुई बात को जोड़कर हामा ने जब अपने ३कुमर की कन्या देनी की तब यह अनअपन कहां गया था जो अब अपने ४घर में धारण करता है॥१२॥१३॥१४॥ ५पृथ्वी को ॥ १५ ॥ १६ ॥ ६ मन माफिक(चाहाहुआ) ७जीवित रहेंगे तो ॥ १७ ॥

बयजुव्वन सुभटन बरजि, समवय वृद्ध सिपाह ॥
करिइक्कत रक्खन कहिय, चिन्ह मरन रनचाह ॥१८॥
अजिरकुंड अक्खिय उनहु, रक्खहु घुल्लन घुराइ ॥
जिहिंमरनों निजवस्त्र जुहि, अकथित बोरहिं आइ ॥१९॥
बरसतीस३० अतिगत बय सु, बोरहुपट यहवैन ॥
नृपकोसुनि लघुबय भटन, उर हुव असह अचैन ॥२०॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणगद्यम् ॥

आपरा अजेय वीरांरो इसड़ो अमीष्टजाणिकुंकुमरो कुंड घुळाइ हाडांरो अधीस हालू १८२।१ बासठि ६२ बर्षराबयमें पहली आप रावत्रांरै बोळ दिवाइ उर्वसीरोबींदबणियो ॥

जिकणरै साथ तीस ३० बर्षराबयथी विसेस हूँता जिकाँ पंच सत ५०० सुभटाँ केसरराकुंडमें बस्त्र बोळिया जठै हालू १८२।१ रा अनुज रोपाल १८२।११रीपत्नी आपराकांतनूँ इणरीति भणियो ॥

अबळारै एकपतिही परमेश्वरकहीजै जिकाँरोदरसणकरिजी वीजै तिकाँ आप मरणही आसंगियो तो मोनूँ आपरैहीआगैं काठाँचढाइ पधारो ॥

अर जीवणरी आसछैतो मरणीकहुवा सैत्यसंध अग्रजरै साथ जावणरी नधारो ॥२१॥

आपरी अंगनारो इसड़ो अभिमत जाणिरोपाळ १८२।११काकरा सोढा दामाँरीदुहिता सुगुणा १८२।१ नाम इसड़ी आपरी पत्नीनूँ

॥ १८ ॥ १ अखाड़े के कुण्ड में २ केसर घुलवाकर ३ बिना कहे डुबोओ ।१९। तीस वर्ष से४ ऊपर की अवस्थावाले ॥ २० ॥ ५ विजय करने में नहीं आवैं ऐसे ६ केसर का ७ डोघ ८ डुबोये ९ पति को१०कहा ११सत्य प्रतिज्ञा वाले ॥ २१ ॥ १२ सम्मत (विचार) १३ पुत्री

आपरै आलयही काठाँचढाइ बम्बावदैआइ अग्रजरोसाथकीधो ॥

सो जाणि हालू१८२।१ नरेंद्रभी पावकमैं पत्नीरो पहिलीमवेस प्रमाणथी बिरुद्ध बिचारि आपराअनुजनूँ उपालम्भ[2] दीधो ॥

कहियो रणरो मरणतो देवरै अनुकूलहुवाँ होइ जिको नवण-सीतो संसारनूँ मुखदिखावणजिसड़ो रहसीनहीं ॥

अर बेदहूँ बहिर्गत[3] बातबणाइ पतिव्रतापत्नीनूँ पहली प्रज्वाळ णरी प्रसंसा कोईभी कहसीनहीं ॥२२॥

दोहा

नींचा तदि कीधा नयण, पाइ त्रपा[4] रोपाळ १८२।११ ॥
इम सजियो हालू१८२।१ अनँड़,[5] कजियोरचण[6] कराळ॥ २३॥
बरसपचासाँ५० हेठ बय, बीसीसात१४० प्रबीर ॥
अठ्ठारहबीसी३६० अधिक, धुररण खंचण धीर ॥ २४ ॥
पट कुंकुम सतपंच५०० ही, इमकरि गरक उदार ॥
हुवाबराती सेहँरो,[7] हालू१८२।१ रक्खणहार ॥२५॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

प्रस्थानरैप्रथम बारहठ लोहठ नरेसनूँ कहियो मंडोउररैअधीस इम्मीरपढिहार आपणा चरण[8] चंपैजतरी जमीं द्विजाँनूँ देणकही जिणकारण इसड़ैतोर चालियोतो पढिहार केईपीढियाँथी धन्व-धरारोप्रांत[9] पाइ प्रगल्भ बणिबैठा जिणथी आहवरोआरंभ उरैंही पावसी ॥

अर मंडोउररा राजमार्गमैं पूगाँ प्राण१ पुँग्गळाँ२[10] रै बियोगवणाँतो द्विजाँरैअर्थ दुर्जनरा ढ्रंगरो[11] दानमैं प्रसभपूर्वक प्रभुरोही पुण्यखटाव-सी ॥ २६ ॥

---

१ जलाकर २ उरहना(ओलम्भा) बेद के ३ बाहिर ॥ २२ ॥ ४ लज्जा ५ अनम्र ६ युद्ध ॥ २३ ॥ २४ ॥ ७ मोड़ ॥ २५ ॥ पैरों ८ नीचे आवे जितनी जमीन ९ मारवाड़ का देश. प्राण और १० शरीरों के ११ नगर के देने में ॥ २६ ॥

हाल्ल१८२।१ कहियो मंडोउर पूगियाँभी ड्ंगरोदेवोतो इंदुरा आदानं अर्थ ऊंचो कर कीधा सावकरा संकल्परैसमान मोघजाणौं॥

अर विप्र वळियो तिणरी लज्जारो लेसभी न पायो जिणथी आणँहीण पालर प्रतिहाररो प्राणमैं प्रियत्वही प्रमाणौं ॥

तोभी मंडोउर पूगि मराँतो रंकरै राजराखणमैं आपरोही आसांनरहै ॥

अर मरुमहीरो महीपपणौं पाइ जीवताकुणपँनूं सारोही संसार हाडाँरो दानलेणहार कहै ॥ २७ ॥

इतडो अमोघउपाइ बिचारि कपटरैप्रपंच वाणियाँरीवरातब णाइ वाजियाँरैबदलै रथ१ छकड़ा२ जुताइ किताक प्रवहणाँमैं ९ इरलाँ छिपाइ कुंकुमरारंगमैं गरक दुकूलकीधा दूजी२ दिसारैमार्ग मंडोउर पूगिया ॥

अर राजद्वारजावताँही सस्त्रसमाहि माँहिंपैठा जठै पढिहारबंसरा वीरभी आपरा अधीसनूं धिक्कारधारणकराइ मरणीक थिया ॥ पहली प्रतोलीमैं पैठताँहीं माँहिंलाचोकमैं हाडाँ१ पढिहाराँरैं अचाणक कोरैड़ो लोहबाजियो ॥

परंतु उणासमय जुद्धजाणियांविनाँ ढीलाथका पढिहार हाजरहूँता तिकाँ दीपकमैं पतंगरैप्रमाण आपरो अंग धारातीर्थमैं पवित्रकियो ॥ २८ ॥

संगररा करणहारतो एकठाहोइ मंत्रपूर्वक लड़ाईकरतातो ठीकहोती जिणथी गढमाँहिंलापढिहार पाया जिकै हाडाँरा सस्त्ररूप अग्निमैं अचाणकही आवटियाँ ॥

---

१ चन्द्रमा को २ पकड़ने के लिये ऊँचा हाथ कियेहुए ३ बालक के समान ४ निरर्थक जानो ५नकटा ६ प्यार. जीवित ७ मृतक ॥२७॥ घोड़ों के ८ एवज ९ डोलियों में १०शस्त्र ११वस्त्र १२ हुए १३ पोल*(द्वार) १४केवल॥२८॥ १५जले

गोपुरं हि प्रतोल्यां च नगरद्वारयोरपि ॥ इतिमहीपः ॥

अर मरणीकहुवा मच्छरी[1]काँरा समूह बाट[2]मैं आया सिपाहाँनैं बाढता[3] प्रच्छन्नप्रकोष्ठरै[4]समीप थटियां[5] ॥

आपरा अंगजमैं आई असाधारण आपदा ईखि[6] मंडोउररास-हीप हम्मीररीमाता बुंदीरानरेस हम्मीर१८३।१री सासू मंडोउरही द्विजाँनूं देणरी जणाइ आपरा अप्रतिम तनुजनूं[7] तरजियो[8] ॥

अर अंगजरैआगैं डोढीपर आइ एककपाटरै अंतर हालू१८२।१ नरेसनूं बुलाइ बैर धोवणरै काज इणरीति बरजियो ॥ २९ ॥

म्हारा कुपुत्ररीकीधीनूं[9] न धारि एक१आपराही वडप्पणनूं बिचारि बैर१रै बदळै बेटीबिबाहि कुपुत्र१नूं प्राण२ मो[10]नूं मंडोउररी मही[11] २ दानकीजै ॥

अरभावती१८३।१सुतारास्वसुरआपबिबाहिणि[12]रीप्रार्थनारैप्रमाण बाहणरीबातबिरुदाँराविसेसनिबाहणरीनिहारिअछूतो[13]जसलीजै ॥

हालू१८२।१ कहियो पूरो बयपाइ संसारहूं बिरक्तहुवा महीप सरै महामंगळमानि मरण१नूं चाहै तिके बिवाहण२नूं नचाहै ॥

जिणथी हाडाँरा समग्रही पाँचसै ५०० सिपाह तिकाँनूं बाढण[14] काज आपरी समस्तही सेना पेलीजै[15] तो बिस्वंभर[16] बिबाँहिणि[17] १ बिबाँही[18]२ बिहूं२ संबंधियाँरो बचन निबाहै ॥ ३० ॥

हे बिबाहिणि अजेंभी[19] आपरो अनीक[20] मंत्रणामेळकरि समग्रही सज्जहोइ आवैतो म्हाँरा मारणमैं समर्थजाणाँ ॥

अर कपटकरि गढहीमैं अचाणक आइपैठणाँतो आपरा अंगजरो[21] कूडापण[22]१ दिखावणरैकाज बेसबदलणमैं म्हारोपण[23] कूडापण२ही प्रमाणाँ ॥

१चहुवाणों का समूह२मार्ग में३काटतेहुए४जनानी ड्योढी के समीप ५इकट्ठे हुए६ देखकर७लज्जित पुत्र को८धमकाया॥२९॥९ को१०मुझको११भूमि१२व्याहिन(समधी की स्त्री)१३अपूर्व१४काटने के लिये १५भेजो १६परमेश्वर १७व्याहिन १८ व्याही(समधी)॥ ३० ॥१९ अब भी २० सेना २१ पुत्र का २२ झूठापन २३ भी

जिंगाथी अब पड़िहारांरो समग्रही सावधान साथ म्हांरो पणां[2] पूरणनूँ पधारैतो मंडोउर राजरैहीरहियो ॥

इसंड़ी कहि पाँचसै ५००ही मरणीकं सिपाहाँ समेत हाडैनरेस हालू १८२।१ आपरा रोकिया दुर्गथी बारैंकढि चोगानमैं सज्जहोइ धारातीर्थमैं मरणांरोही मनोरथ गहियो ॥ ३१ ॥

तिणसमय पढिहाररा समग्रही सुभट मंडपपुरपत्तनमैं हूँताँ तिके गड खालीहुवोजाणि माँहिंपैठा तिकाँहूँ प्रतिहारराजकहियो माता री नीतिकरि दुर्गरैबारैं कढिया हाडाँरो पणां अब म्हारै साथ होइ निवाहीजै ॥

अर राजनीतिमैं सदाही भूमिराभोगणहारांनैं समयरैअनुसार छळवळभी साहीजै ॥

जठै हम्मीररीमाता पुत्रनूँ धिक्कारदेर आपरो भटवर्ग प्रंकोष्टरैसमीप बुलाइ कहियो हाडाँरापणमैं कपट नदीठो जिणथी बैरमैं बिवाहणारोवचन विनैंयरैसाथ करि काढियो ॥

तिकणनूँ मारताँपहली म्हाँरोमरणाँ बिचारि कुपुत्ररै परोक्षही हाडाँनूँ कांजै चमरीचाढियो ॥ ३२ ॥

जठै रजपूताँ राणीनूँ कहियो आपरो आदेस टाळि कुपुत्ररो कहणाँही माँडि गढ छोडिगया हालू१८२।१ जिसड़ा नरेसनूँ वच नहीणहोइ मारणारा आपरारजपूताँनूँ नजाणीजै ॥

अर ब्रह्महत्यारा बिलसणहारै आपरा कुपुत्रनूँ केड़ैकरि म्हारा तो मनमैं स्वामीरी सैवितीरोही सासन समस्तरै सीस प्रमाणीजै॥

इसड़ीकहि मंडोउररै एक १ उमराव सन्नद्धहीणहोइ हाडानरेस

१जिससे २प्रतिज्ञा ३ पूरी करने के लिये ४एसी ५ मरने की इच्छावाले ६ युद्ध में ॥ ३१ ॥ २२ ७ थे ८ प्रतिज्ञा ९ ग्रहण करना चाहिये १० ड्योढी के पास ११ नम्रता के साथ १२परभारा॥३२॥१३भोगनेवाले १४पीछे करके १५माता

हालू१८२१।१कनैंजाइ दो २हीतरफ प्रमाणहुवो बचन बताइ अनेक उपाइकरि निबाहणारी धारि बिबाहणारी चही ॥

जठैहाडैकहियोएकुंकुमरादुकूळ*तोअच्छरीगणाँरैउचितजाणिकीधा जिणथी बिबाहणरोबयव्यतीतहुवोजाणिकेवळ मरणरैही मनोरथ आया तिकाँरै बिबाहकीधाँतोदा२हीलोकमैं जसरी रीति नरही।३३।

जिणथी जिताक बिबाहणरैउचित बयरा बीर म्हाँरैसाथ आया तिकाँरै बिबाह बिलसणरी होइतो म्हाँगवारहठ लोहठ३रै पगाँपड़ि भाई रोपाल१८२।११नूँ सारिखो साथी सूँपि इणाँरै अंगीकृत करावीजै ॥

अर म्हाँरैतो धराँपँ धराँधवाँरै धामधाम धाराँधागाँरी धमचक देखि ओरठैभी पणरी पूर्णता भरावीजै ॥

जठै इसड़ीसुणि बिहत्तर ७२ बर्षरा बयमैं हाडानरेस हालू१८२।१रा बिबाहणरीबात समयरा सासनकरि अत्यंतही असंभवजाणि पड़िहाररै सुभट पाछोजाइ मंडोउररामहीपरीमाता प्रति कही हालू १८२।१ रा बिबाहणमैंतो आप सिंह५रासिरा बृहस्पतरैसंगही लग्न जाणीजै ॥

अर एकसोचालीस१४०सिपाह बिबाहणरैउचित दीठा तिकाँरै स्वीकारकरणरोभी मालिकरा बिबाहबिनाँ असंभवही प्रमाणीजै॥ इसड़ीसुणि हम्मीररीमाता आपरापुत्रनूँ बारहठलोहठ३रै पगाँलगाइ अंतेउररी डोढीबुलाइ अंजळीउपेत अपराध माँगि कहियो म्हाँरी अरजहूँ हाडानरेसरै आपरा उचित भड़ाँरो उपर्यम कराइ पाघरो बैरधोवणरी प्रतिश्रुतहुई परंतु सुहड़ाँरै स्वीकारकरावणमैं एक आ

काही * वस्त्र ॥ ३३ ॥ १ समता (बराबरी) वाला २ स्वीकार ३ राजाओं के ४ घर घर ५ जब सिंह राशि पर बृहस्पति आता है तब विवाह का सर्वथा निषेध माना जाता है इसको लौकिक में सिंहस्थ (सींगसत) कहते हैं ॥ ३४ ॥ ६ जनाने की ड्योढी पर ७ हाथ जोड़कर ८ विवाह ९ प्रतिज्ञा की हुई १० सुभटों के

परोही आश्रय लीधो जिणथी पुत्र १नूं माता २ मो १नूं मंडो-उररोराज २ दीजै ॥

अरु रोपाळ१८२।११नूं न रुचैतो कहयाँ एक*पत्नीरै एवजइ-च्छारै मनाता उपयाम कीजै ॥

बारहठ पाछैआइ याहीअरजकीधी सुणि दयारैदरियाव हालू १८२।१ नरेस सातबीसी १४० सुभटाँनूं पड़िहाररीपौळि पाणिपी-ड़णरी स्वीकारकराई ॥

परंतु कालीराकळस सतीरानाळेरै पतिपहलीमजळी प्रतिव्रता रा निरंतर रोपाळ १८२।११ नूं न भाई ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

बूडो लाजसमुद्रविच, लखि अग्रज लंकाळ ॥
पाणिजोड़ि दे घणा सँपथ,पुणियो तदि रोपाळ१८२।११॥३६॥
नारि सती वळतीनहीं, विणुबय तोभी व्याह ॥
करतो भ्रात न आपक्रम, राखे जस १ कुळ २ राह ॥ ३७ ॥
लखपुख अब लीधो तिकाँ, तो उचिताँ परिणाइ ॥
आप करीजै औरठै, पणपूरण इणपाइ ॥३८॥
मोनूँ अब मरियाँ मिळै, उचित सुजस आभोग ॥
कहो आपही गति कवण, जीवण१ मरण२ दुर जोग ॥३९॥
हेक १ हेक १ दै अब हुकम, पेलीजै पड़िहार ॥

* स्त्री १ विवाह २ विवाह ३ पागल स्त्री के मस्तक का घड़ा (वीर) और सती होनेवाली स्त्री के हाथ का ४ नारियल (वीर) "इन दोनों वस्तुओं के नष्ट होते देर नहीं लगती" ५ जली हुई ६ पति. नहीं ७ रुची ॥३५॥ ८ डूबा ९ रावण (लङ्का का पति) "यहां लक्षणा से रावण के समान हठ करनेवाला समझना चाहिये और डिंगल भाषा में सिंह को(लंकाळ) कहते हैं" १०सोगन ११ कहा ॥ ३६ ॥ १२ विना अवस्था १३ हे भाई १४ आपके क्रमानुसार मैं भी विवाह नहीं करता ॥ ३७ ॥ जितने विवाह के १५ उचित हैं उनको व्याहकर ॥ ३८ ॥ १६ परिपूर्णता ॥ ३९ ॥

काळचहै हरि जेणकर, सोहि *हयौं सिरदार ॥४०॥
×पुणियो नृप मरियाँ पछैं, व्याहै और न वीर ॥
पणपूरण कीजै पछैं, धरे इतादिन धीर ॥ ४१ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणरीतिरो आदेस आपरा अनुजरै अंगीकृतकराइ हालू १८२।१ नरेस आपरा उचितवयरा सातबीसी १४० सुभटाँनूँ संबंधियाँस-हित पड़िहाराँरी एकसोचाळीस १४० कन्या परिणाइ राजाहम्मीरसहित सभाकरि कहियो भाई रोपाळ १८२।११रो पण पूरण करणनूँ एक १ सिरदार पधारो ॥

अर जिकणरै मरियाँही मंगळहोइ तिकणरा बचावणमैं कोईभी जतन नधारो ॥

जैं[1] मरणाँहीमानि अठीरां[2]अठी जोवताँ हम्मीररीसभाहूँ महराज पड़िहार ढाल १ तरवारि २ पकड़ि अखाड़ैआयो ॥

अर अठीहूँ खड्ग १ खेटक[3] २ समाहि अछूतीअणीरोबींद रोपाळ १८२।११ हरराजो १८२।११त चलायो ॥ ४२ ॥

आपआपरो दावदेखि खड्गरा बाईस २२ ही मार्ग साधि हाडै१ पड़िहार २ दो २ ही महावीराँ आपसमैं अनेकवार कीधा ॥

अर आपआपरा पराक्रमरैप्रमाण दो २ ही नरेसांनूँ अचंभो दिखाइ दो २ ही पटैताँ प्रहार टाळिदीधा ॥

उणसमय आपरो वार जाणि पड़िहार महराजरो साँचो हाथ छूटो ॥

जिकणथी अचळँरा उपमान रोपाळ १८२।११ हरराजो १८२।११तरो सीस शृंगरै समान तूटो ॥ ४३ ॥

सीसउडताँही पड़िहार हसिया अर महराज मुरड़ि चालियो ति

* मारे॥४०॥ ×कहा॥४१॥ १जब २इधर उधर ३ढाल ४हरराज का पुत्र॥४२॥ ५आ श्रेय६पर्वत के ७शिखर के समान ॥४३॥ ८पीछा फिरकर; अथवा घमंड से

कयोरै लारलागै रोपाळ १८२।११रै रुंडै खड्गपटकि कटारी काढि सातवैं ७ पैंडजावताँ कटिबंधै पकड़ि पड़िहाररा पिंडमैं सात७ घावजड़िया ॥

सो च्यारि ४ ऊभाँ तीन३ पड़ियाँ देरै इणरीति दो२ही बानैतै एक१हीकाळमैं खेतपड़िया ॥

लोहठ३रापुत्र हरिदास४नूँ बंबावदाहूँबुलाइ पडिहाराँराबारहठ नाँधू नगराजरीपुत्री परिणाइ हालू१८२।१ पड़िहारराजा हम्मीरनूँ मंडोउर देरै पाघराबैरपर आपरा एक १ बारहठ सातबीसी १४० सुँहड़ाँरैकाज एकसोइकताळीस१४१ कन्या लेर बंबावदैआयो ॥

अर आपरा अर्नड़पणाँरै अनुसार मंडोउर आपरी बिबाहिणिनूँ देणरो सुजस चोंरतर्फही चलायो ॥ ४४ ॥

राठोड़ राव चूँडा वीरमदेवोतरै आग जोरकीधो जिकणहूँ हालू १८२।१ मंडोउरमैं आपरी आण फेरी नहीं ॥

अर ओरही लेसी तो आपणैं आ ईळा किणरीति छोडीजै इस ड़ीबात महा उदार विचारसैं हेरीनहीं ॥

आपरा बडापुत्र चंद्रराज१८३।१नूँ राजदीधो जिणथी बंबावदआ इ अवसाणपर्यंत उदासीन रहियो ॥

अर जुद्धजाणियो जठैही जाइजाइ कामआवणरो मसंभ गहियो ॥ ४५ ॥

सोतो पछैं इणवातरै अनंतर वीस २०बर्ष बाँसै बाळियाँ केडै कोईभी कँजियाँमैं मर्मरो प्रहारभी न पायोजाणि बिक्रमरा चउदहसै एगारह१४११रै संवत बाणवैं९२बर्षरो वय बिताइ हालू१८२।१नरेस

१ विना मस्तक का धड़ २ कमरबन्धा ३ देकर ४ बानाबन्ध ५ समय में ६ देकर ७ सुभटों के लिये ८ अनअपन के अनुसार ९ व्याहिन को ॥ ४४ ॥ १० जिस कारण से ११ भूमि १२ अन्त समय तक १३ हठ ॥ ४५ ॥ १४ पीछे १५ दिये १६ पश्चात् १७ युद्धों में

बार्द्धक्यमैं विसेसजिवावणहार आपरा प्रारब्धरी गर्हणाकरि बंवाव दारैबारैंही जोगिणीनाम देवीनूँ मस्तकचढाइ अभीष्टलोक पूगो सोतोउदंत अठै दूरभावी जाणीजै ॥

अर मंडोउरहूँ हालू१८२।१ आवियाँकेड़ै नरेस हम्मीर १८३।१ कासीबासकीधो जिणपछैं बुंदीरो नरेस बरसिंह१८४।१ हुवो जिण शोभी अद्वितीय आतंक प्रमाणीजै ॥

जिणसमय चीतोड़रा अधिराज राणा हम्मीररै खेतलनाम कुमार गैणोलीरा अधीस हाडा लालसिंह१८४।२री पुत्रीनूँ बिवाहण रैकाज प्रयाणकीधो ॥

जिकणरैसाथ राणाँ त्यागरा जसरो प्रकास प्रसारणरैकाज आपरा पोळिपातबारहठ बारू सहित बडावडा सुभटाँनूँ सज्जकरि हाडाँरी आसंगमैं नआवै इसड़ो बरातरो बाणिक बणाइदीधो ॥ ४६ ॥

पहली वैरकुमावणरैकाज हालू१८२।१री पाघ लेर बारहठ लोहठ चित्तोड़गयो जठै राणैहम्मीर कहियो हाडैहम्मीर १८३।१ आपरा पुत्ररीपुत्री देर बचायो आपरेघरे अनड़पणौं जणावै सोतो स्वप्नरा संकल्पाँरैसमान मोघ मानणमैंआवै ॥

अर साँचामरणीक सूरवीराँरा पणतो मातंगाँपर पताकाँखुलाइ घरबैठा वैरियाँनूँ वकाँरै जठैही सफळहुवो खटावै॥

पहली इसड़ा बचनराबाण लगाया जिणथी एकसोपचीस१२५ तोपाँ साथ देर रणरीसामग्रीसूँ सिलहमैं जड़िया वीर बरातमैं विदाकीधा ॥

अर मार्गमैं कूटजुद्ध करणरा स्थान जाणिया जिके टळाइ दीधा ॥ ४७ ॥

---

१ वृद्धावस्था में २ निन्दा ३ आगे आनेवाले समय में होनेवाला ४ स्वामी ५हिम्मत में ॥४६॥६ अनम्रपन ७ विचार ८निरर्थक ९हाथियों पर १०ध्वजा ११ ललकारै १२ कपट युद्ध ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

दोहा

बणि दुल्लह खेतल बणी, अठी राणसुत एह ॥
गैणोली ब्याहरणगयो, लालसुता १८४१२ बिधिलेह ॥४८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पंचम५राशौ वौति होत्रचण्डासि१वीज्यवर्णानवीजहड्डाधिराडास्थिपाल १५५ वंश्यानु वंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेंदहम्मीर १८३१ समाच रितसमानसमयकबम्बावदेशहाररराजिहल्लू १८२१चरित्रे मण्डपपुर जिगीषासमर्थनसहितशपथहल्लू १८२११ समाश्वासितसम्भोजितक विलोहठराणाहम्मीरादिमहीन्द्रमिलनभूतस्वोष्णीषप्रवृत्तिप्रख्यापन १, ज्येष्ठसुतचन्द्रराजा१८३११ र्थदत्तराज्यनिश्चितरणमरणसुभटपंच शती५००समेतकौंकुमीकृतदुकूलविप्रवृन्दमण्डपपुरवितितीर्षुविहि तवणिग्जन्यदेशहल्लू१८२११प्रतिहारपुरप्रविशन२,स्वमरणपूर्वदग्ध पत्नीकस्वाग्रजोपालब्धस्मृधमुमूर्षुहाररराजिहड्डरोपाल१८२११हल्लू १८२१ सहायीभवन३, निपातितराज्यद्वाररक्षकविध्वस्तान्तर्भटव्रा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहु वाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा ओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हम्मीर के समान श्रे ष्ठ आचरणवाले और उसीके समय में होनेवाले बम्बावदे के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में मंडोवरपुर को जीतने का निश्चय किये हुए ऐसे हल्लू से (शपथ पूर्वक) आश्वासन देकर भोजन करायेहुए कवि लोहठ का महारा णा हम्मीरसिंह आदि राजाओं से मिल कर अपनी पगड़ी की प्रवृत्ति प्रसि द्ध करना, बडे पुत्र चन्द्रराज को राज्य देकर युद्ध में मरना निश्चय करके पांच सौ वीरों सहित वस्त्रों को केसर में करके मंडोवरपुर को ब्राह्मणों को देने की इच्छा करके बनियों की बरात के उद्देश से हल्लू का प्रतिहार के पुर में प्रवेश करना, अपने मरने से पहले अपनी स्त्री को जलाने के कारण अपने बडे भाई से उपालम्भ पाये हुए और युद्ध में मरने की इच्छावाले हरराज के पुत्र हाडा रोपाल का हल्लू का सहायक होना, राज्य द्वार के रक्षकों को मारकर भीत र वीरों के समूह को विध्वस्त करने पर हल्लू को समझाइश करके रोकनेके लि

तहल्लू १८२।१ समाश्वासननिवारणोद्युक्तप्रतिहारराजहम्मीरजननी
तदुष्णीषवैरवालनार्थप्रत्येकसुभटकन्यासम्बन्धस्वीकरण ४, त्यक्त
दुर्गबहिरागतहल्लू १८२।१ रणमरणसन्धासाफल्यसमर्थन ५, प्रतिहा
रपूजितप्रार्थितबारहठलोहठ १ हारराजिरोपाल २ प्रतिबोधितहल्लू
१८२।१ बारहठहरिदासाऽधिकसमुचितवयोवीरविंशतिसप्तक १४०
विवाहन ६, खुरलीक्षमखलूरिकाखेलासमात्तखरखड्ग १ खेटक २ द्वं
द्वसमाघातसमुद्युक्तप्रतिहारमहराज १ प्रहारच्छिन्नमूर्द्धकोशकृष्टकट्टा
रसप्तम ७ पदसम्प्राप्तदत्तप्रहारसप्तक ७ हारराजिरोपाल १ प्रतिहार
महराज २ निपातन ७, प्रत्यागतराज्योदासीनहल्लू १८२।१ सूचितभावि
सम्वत्समयस्वमूर्द्धकालिकोपहारीकरण, ८ कृतकाशीवासहड्डाधि
राजहम्मीर १८३।१ ज्येष्ठकुमारवरसिंह १८४।१ बुंदीपुराधिपत्य
प्राप्तिपुनःसूचन ९, गैणोलीदङ्गाधिराजहाम्मीरिलालसिंह १८४।२
पुत्रीपरिणीषुराणाकुमारक्षेत्रनिष्कासिकाऽनुष्टान १० राणाना

ये उद्योग करनेवाली ऐसी प्रतिहारों के राजा हम्मीरसिंह की माता का उसकी
पगड़ी का वैर देने के लिये प्रत्येक सुभट से कन्याओं का सम्बन्ध करने को
स्वीकार करना, गढ छोडकर बाहरआये हुए हल्लू का युद्ध में मरने की प्रति
ज्ञा की सफलता का समर्थन करना, प्रतिहार से पूजा और प्रार्थना कियेगये
ऐसे बारहठ लोहठ का हरराज के पुत्र रोपाल को समझाना और हल्लू का
बारहठ हरिदास को अधिक लेकर उचित अवस्थावाले सातबीसी अर्थात्
एकसौ चालीस वीरों को विवाहना, शस्त्रविद्या और अखाड़े की क्रीड़ा में
समर्थ, तीक्ष्ण खड्ग और ढाल लियेहुए और द्वन्द्वयुद्ध के आघात में उद्युक्त
ऐसे हरराज के पुत्र रोपाल का प्रतिहार महराज के प्रहार से मस्तक कटने
पर म्यान से कटारी निकाल कर प्रतिहार महराज को सात पैंड पर पकड़
कर सात प्रहार देकर मारना, अपने राज्य में पीछे आकर उदासीन हल्लू का
जनायेहुए आगे आनेवाले सम्वत् में अपने मस्तक को काली के भेट करना,
हड्डाधिराज हम्मीर के काशीवास करने पर उसके ज्येष्ठ कुमर बरसिंह के
बुन्दीपुर के अधिपति होने की फिर सूचना करना, गैणोली नगर के पति ह
म्मीर के पुत्र लालसिंह की पुत्री को विवाहने की इच्छावाले राणा के कुमर
क्षेत्रसिंह का यात्रा करना, राणा का अपने उमरावों की सहायता से निर्भय

लीयन्त्रादिसमरसामग्रीसहितसज्जस्वीयसामन्तसहायकनिर्भीकप रिखिनीपुपुत्रप्रस्थापन ११ मेकादशो ११ मयूखः॥११॥
आदितोऽष्टपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५८॥
॥ इति हल्लू १८२११ त्रि३मयूखी ॥
प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

सगपण¹ हामैं १८३१¹ संधियो, वीखे सो वय बात ॥
गेल्लोली खेतल² गयो, बरदणि³ विदित बरात ॥१॥
कीधा इक खेतलकँवर, आगैं चउ४ उपयाम ॥
हो इणरै पहिलीहुवो, नंदन⁵ लाखोनाम ॥ २ ॥
पोत रमैं⁶ तो पोतपण⁷, बरस पंच५ मित वेस ॥
जिण सिसुरो खेतल जनक⁸, आयो व्याहण एस ॥३॥
नीराजन⁹ मुख¹⁰ विधि नियम, साधि लगन पळ साच ॥
कन्हकँवरि १८५१¹ लाल १८४१² सुकन्नी¹¹,आपी खेतल आँच¹²॥४॥
मँहडे¹³ दिन चोथै४ मचे, भूँजाई¹⁴ घणभाँति ॥
जुड़ि संभर¹ सीसोद² जन, प्रसरे चो४सर पाँति ॥५॥

षट्पात् ॥

अति व्यंजन¹ पळ¹⁵² अन्न³ रचे जीमण वंछित रस ॥
आसव¹⁶ छकि आपानैं¹⁷ बणे जदुवंस जेंधा¹⁸ वस ॥

विवाह करने की इच्छावाले अपने पुत्र को तोपें आदि युद्ध की सामग्री सहित सज्ज करके प्रस्थान कराने का ग्यारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ और आदि से १५८ मयूख हुए ॥

१सम्बन्ध २ क्षेत्रसिंह (खेता) ॥ १ ॥ ३ विवाह ४ पुत्र ॥ २ ॥ ५ बालक ६ खेलते हैं ७ बालकपन में ८ पिता ॥ ३ ॥ ९ आरती १० आदि. लालसिंह की ११ पुत्री १२ हाथ में ॥ ४ ॥ १३ मांढ (मंडप) में १४ रसोई (गोठ) ॥ ५ ॥ १५ मांस१६ मद्य में परिपूर्ण होकर १७ पानगोष्ठी (मतवाल) यदुवंश में हुई थी१८ जिसप्रकार कीहुई. वहां महाराणा के उमरावि रत्नसिंह ने

भखी रयण रणभड़ सबळ हाडाँ कुळ सरणो ॥
इण दुलहीरी ओट अनड़ हालू १८२।१ ऊबरणोँ ॥
सुणि इम बरात बिहँसे सकळ जंपि अतुळ चीतोड़ जय ॥
बारहठ तेण बारू बळे पूळो दव दीधो प्रबय ॥६॥
भाखी इम बय भूलि मत्त बारू आसव मद ॥
अबकी चिरथी एह हुई चरडासि१ बंस हद ॥
चितगढहि चहुवाण पृथा पीथल१७६ परणाई ॥
राउळ समर सहाय पुहवि साळै जिम पाइ१ ॥
निधिलीध२ खणे खाटूनगर बधियो सो चीतोड़ बळ ॥
इमलाल१८४।२सुतासाँटैअनड़बाजैबचिहालू१८२।१बिकळ ॥७॥
राणसुहड़ राठोड़ प्रथम१ तिण रयण१ प्रजाळी ॥
बारू२ धरि बारूद बळे२ भोंखरचढि बाळी ॥
कीधो दुल्लह३ कँवर मिरा छकिये अनुमोदन ॥
बहियो भावी बिखम नराँ रहियो सु बिनोद न ॥
जंपियो सुकवि लोहठ जरैं सुता जाइ१ जावैर२ सगाँ ॥
कुनरेस किसो जिणबळ कहो भू भोगे पाछापगाँ ॥८॥
पृथीराज१७६री पुहवि समरराउळ राखी सो ॥
नरनर उर छानी न सुकवि ग्रंथाँ साखी सो ॥
तेज समरनृप तात गहे जदि छळि मंडलगढ ॥

---

१ कहा कि हाडों के कुल का यह बडा शरणा है; क्योंकि इसी दुलहिन की आड से २ अनम्र हालू का बचाव हुआ है ३हँसे ४अतोल. ५ वृद्ध बारू बार हठ ने अग्नि में पूला दिया ॥ ६ ॥६ बहुत समय से ७ पृथ्वीराज ने अपनी बहिन पृथा को ब्याही. खाटू नगर में ८ खोदकर धन लिया ॥ ७ ॥ ९ राणा के सुभट १०जलाई ११पर्वत पर चढकर इस बात की मद्य में छकेहुए दुल्लह कुमर चैत्रसिंह ने पुष्टि की १२कहा १३ जब ॥ ८ ॥

वंबावद२ रैणगढ२ रैण१७५ रचिया रावणरहे[1] ॥
उणठाम तपे हाडो अनड़ पुर१ गढ२ लै जावद१ प्रमुख ॥
संतापपटकि चीतोड़सिर रहियो एकल वाघरुखं[2] ॥९॥
सो कुळवाट[3] सम्हाळि वळ नृप वंग१७६ महावळ ॥
पुरमंडल१ मुख[4] प्रांत खंडिलीधा आहड़[5] खळ ॥
अव हालू १८२।१ रण असह कँवर दुल्लह घायलकरि ॥
जुगकाका हँणि[6] जेण धरादाबी पाणिपँ[7] धरि ॥
छोड़ियो राण हामैं सुमति १८३।१करि सगपण सो हितकियो ॥
सीसोद नतो चीतोड़सिर जाइकवण उणरण जियो ॥ १० ॥
दोहा—आखी सो सुख वात अव, हालू १८२।१बचण सहाय ॥
गडलक्खमणरै हींगळू १८०।, हुवो भीड़[8] तिम हाय ॥११ ॥
सहाय१महाय२अन्त्यानुप्रासः१॥
काका अजयतणी कंनी[9], प्रभावती १८४।१ करि पेस ॥
बूंदीनृप वरसिंह १८४।१ नूँ, अपणायो नय एस ॥१२ ॥
जाणो तो सगपणजुड़ै, समकुळ १ वळ २ अनुसार ॥
सुता जनक जै हीणसब, दो भी अधिक उदार ॥ १३ ॥
पृथीपाळ १५६ नृप परणियो, चाहुवाण चीतोड़ ॥
उत्तम राउळ अंगजा[10], माथैधरि जसमोड़ ॥ १४ ॥
सेनपाल १५७ तिण भूपसुत, किरणादीत कुमार ॥
सरसौंतजियो मूँडि सिर, सीह पछाड़ि[11] सिकार ॥१५॥
कहणाँ जिणकुळरो किसूँ[12], विरुद १ सुजस २ वाखाण ॥

रावण के समान १हठ करनेवाले ने. सिंह की २भांति ॥९॥ ३कुलमार्ग४आदि ५आहड़*(अहाड़ा)६मारकर७पराक्रम ॥१०॥ ८सहाय (मदत) ॥११॥अजयसिंह की९पुत्री ॥१२॥ १३॥उत्तम रावल की१० पुत्री ॥१४॥ ११गिराकर ॥१५॥१२कथा

*आहड़ नामक नगर में राज्य करने के कारण गुहिलोत अर्थात् सीसोदिये क्षत्रियों को आहड़,अहाड़ा और आहड़ा कहते हैं ॥

ब्याह नहोतो तो बळे, पूँचे लखता पाण ॥ १६ ॥
नृपहालू १८२।१ आयो नथी, सहि हायन[1] ज्वरसंग ॥
बुंदीनृप बरसिंह १८४।१ सो, आयो मिलण उमंग ॥ १७ ॥
जिण कुबैण सहियो जिको, रहियो बैठो राव ॥
लाल १८४।२ सु चुप अग्रज लखे, ऊफणियो अणमाव ॥१८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रतभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

लखि चुप अग्रज१८४।१लाल१८४।२जन्य १ मत सुहि दुल्लह[2]जुत ॥
स्वसुता[3] हल्लुव १८२।१ सटि[4] दई सुनि सहि कही न द्रुत ॥
बारू जब बिप्फुरियं[5] कहन संकल्प तबहि किय ॥
पै लोहठ निजपात्र[6] लाल १८४।१ पहिलैं सु ओडिलिय[7] ॥
कुलद्रुव[2] समान ब्याहनकहे तदनंतर खिन कहन तकि ॥
संबोधि[8] कवि सु बारू सहज कहिय लाल१८४।२इम छोह[9] छकि॥१९॥
बारू कुळगति बदहु गर्ब न बदहु बोलिसगति[10] ॥
कविकुल सच्चहि कहत सत्रि तुम रीति सुपै सति ॥
चित्तोरहु तब चविये[11] कढत प्रतिमा[12] सु च्यारि ४ कर ॥
कवन रानसन कहत सूर १ दायक[13] २ अग्रेसर ॥
बरजन त्रि ३ लोक कर त्रि३क विहित कर चोथो ४ गलधरि गहत
जो होइ अपर[14] २ हम्मीरजिम समकर ममसिर छेदमत ॥ २० ॥
जंपि रान गुन जुग २ द्वि सत्रि तुम सवन सिरोमनि ॥

॥१६॥ एक१वर्ष से ज्वर सहन करके ॥१७॥१८॥२बरातवालों का मत था सोही दुलहे का देखकर३अपनी पुत्री हालू के४बदले में ५क्रोधित हुआ तभी कहने का विचार किया था परन्तु अपने६पोलपात्र लोहठ ने लालसिंह से पहले ही उस बात को७झेलली. उस बारू बारहठ को८सम्बोधन करके९क्रोध से परिपूर्ण होकर ॥१९॥ हे बारू! चारण लोग सदैव सत्य बोलते हैं इसीप्रकार तुमको भी अपने कुल की रीति के अनुसार सत्यकहना चाहिये१०सूर्य के समान११ कहा था. चार हाथवाली१२मूर्ति निकलने पर१३दातार१४दूसरा ॥२०॥

सिरकट्टन दिय *सपथ भार प्रतिमा जड़ पैं भनि ॥
छिति रजपूतन छाइ रचैं घरघर +वितरन १ रन २ ॥
जिनमैं बहु रानजिम बढत बहु जिम ÷विटपी वन ॥
अब्बाउपेत बढि रानसन जैहैं बहु हम [1]सक्खि जँहँ ॥
कट्टैंन सीस [2]प्रतिमा [3]स्वकरैं तुमहु निवाहक बचन तँहँ ॥२१॥
बारु[4] प्रत्यय[5] विदित लेहु ताको हमसौं लहु[6] ॥
इतहु सूरपन१ अधिक पै सु सत्रुन सम्मुह पहु ॥
वितरन२मित इतबढत प्रथित[7] प्रत्यय तस पावहु ॥
अबाहि सीस१ छिति[8] २.इतर[9]३ जोहि मंगहु लेजावहु ॥
संगनहिं[10] मस्थं जो हडु हम कट्टि न देहैं तो कुलहिं ॥
लग्गहिंकलंक संवर्त्तलग[11] तृन१ जाचक२ तुलना तुलहिं ।२२।
मस्तक१ अरु भुव२ मैंहु देत मंगहु इक१वा दुव२ ॥
जामाता[12]बिनु जुद्ध३ होहु तउ हम दाताहुव ॥
अब मंगहु इक१हु न होहु तो निजकुल बाहिर ॥
देहैं न जु कहि देन हमहु बाहिर कुलतैं किर[13] ॥
रानके रहहु जो बारहठ प्रधन[14]१ दान२ तो अब परखि ॥
कै कट्टि सिरहिं१रक्खहु कथित कै ओढह तियपट२करखि।२३।

दोहा ॥

कै प्रतिमासौं उचित कहि, स्वकर[15] कटावहु सीस३ ॥
नतो [16]विडारहिं संढनिभ[17] कत्थन रान कवीस ॥ २४ ॥

---

* सोगंद (सौगन) + दान. वन में एक से एक ÷ वृक्ष बढकर होते हैं ऐसे. जिसके हम १ साक्षी हैं. २ मूर्ति ३ अपने हाथ से अपना मस्तक नहीं काटसकती सो उस वचन के निवाहक तुम हो ॥ २१ ॥ ४ हे चारण! इसका प्रसिद्ध ५ सुबूत हमसे ६ शीघ्र लो ७ प्रसिद्ध.मस्तक ८भूमि और ९ अन्य भी १० मस्तक ही मांगना है तो ११ प्रलय के समय तक ॥ २२ ॥ १२ जमाई के विना १३ निश्चय ही हम भी कुल से बाहिर हैं१४युद्ध और दान की अब परीक्षा करो॥२३॥१५अपने हाथ से१६निकालेंगे१७नपुंसक की भांति॥२४॥

बरज्यो नृप वरसिंह१८४१ बहु, ए आसंव जड़ अत्थ ॥
बारू पनबोरन बदिय, तदपि लाल१८४२ धकि तत्थ ॥ २५ ॥
अग्रजसन किन्नीअरज, कहत न तुम तियकानि ॥
कन्या कानि न मैं करत, पन *क्रत१ अमृत२ प्रमानि ॥ २६ ॥
जामाता मैं तजत जँहँ, कन्यादित करिबो न ॥
अक्खहिं बुधजन निंदि इम, लग्नढिगहिं लरिबो न ॥ २७ ॥

षट्पात् ॥

अग्रज१८४१ मति इम अक्खि पुनि सु बुल्लिय बारूप्रति ॥
ससिर१ बिभव२ मम सकल मंगिलेहु व प्रतीत मति ॥
हठ्ठु न जो देहौं न१ सम्मरलैहौं न२ रानसन ॥
तुम चारन तो तकहु परख दातार१ सूरपन२ ॥
लेहु१ कि नलेहु२ हमहिं सु हठ न रान विकत्थन मोघ रचि ॥
रक्खिय अयोग्य प्रतिमा पर सु वहहु सिर रहनौं न वचि ॥२८॥

दोहा ॥

उट्ठि अतृप्तहि असनैसन, रुट्ठि सु बर१ रु बरात२ ॥
सब निंदत आये सिबिर, बदत लाल१८४२ यहबात ॥२९॥
बारुव सोदा मद्यवस, अति लाघवँ आपन्न ॥
रक्खिथाल पठयो स्वसिरं, छेदि पटालँय छिन्न ॥ ३० ॥

॥ २५ ॥ प्रतिज्ञा का सत्य * करना अमृत के समान है ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ १ मस्तक सहित राणा को विशेष कहने के वचन २ निरर्थक ॥२८॥ ३ भूखा ४ भोजन से ५ डेरों में ॥ २९ ॥ बारू नामक ६ सोदा बारहठ शाखा के चारण. अत्यन्त ७ शीघ्र ८ आपद्ग्रस्त बारू ने १० डेरे में छाने काट कर ९ अपना मस्तक* थाल में रखकर भेजदिया ॥ ३० ॥

---

*यह कथा वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में जिस प्रकार लिखीहुई है, तिसकी हम यहां पर नकल करदेते हैं. वह यह है. "महाराणा क्षेत्रसिंह के देहान्त का हाल इसतरह पर है, कि जब हांमां हाड़ा के बेटे लालसिंह की बेटी का विवाह इनके साथ करार पाया, तो यह बड़ी धूमधाम से शादी करने को बुन्दी की ओर सिधारे, यह शादी बुंदी में हुई थी, रीति पूर्वक विवाह होचुकने बाद एक दिन दर्बार होरहा था,

उस समय महाराणा खेता ने बातें करते समय बारहठ बारू की निस्बत फरमाया कि हमारे पिता महाराणा हम्मीरसिंह ने इनको अपना बारहठ बनाया है, और इन्हींकी माता बरबड़ी की बरकत से, जोकि देवीका अवतार थीं, महाराणा के कब्जे में पीछा चीतोड़ आया, परन्तु यह बारू हमारा कि हुआ अजाचक है. इसपर बारू ने कहा कि मैं राजपूतों को मांगनेवाला हूं और महाराणा के सिवाय मुझे कोई राजपूत पृथ्वीपर दिखाई नहीं देता इसलिये इनके सिवाय दूसरों से नहीं लेता, यह बात हाडा लाल को बहुत नागवार गुजरी, परन्तु उस वक्त तो मौका न देखकर कुछ न बोला और जब अपने महलों में. उस समय बारू को कोई सलाह पूछने के बहाने से अपने पास बुलाया और एक मकान में बन्द करके कहा कि हम भी राजपूत हैं तुमको हमारे पास से कुछ लेना चाहिये यदि नहीं लोगे तो हम तुमको समझेंगे. बारू बारहठ ने देखा, कि इस वक्त मैं इनके कबजे में हूं ऐसा न हो कि महाराणा साहिब मेरी मदद करें उससे पहले ही ये बेइज्जती कर बैठें, यह सोचकर उसने दिल में मरना ठानलिया और जबाब दिया, कि आप जो देवें वह मुझे इस शर्त पर लेना मंजूर है कि जो कुछ मैं दूं उस को पहिले आप लेवें यह बात लालसिंह ने मंजूर की, तब बारू ने एक भाट के लड़के को जोकि उसकी खिदमत में रहता था, कहा कि मै अपना सिर काटकर तुझे देता हूं वह हाडा को जाकर देदेना, इस सेवा का एवज तुझको महाराणा देवेंगे (मशहूर है कि उस भाट के लड़के को महाराणा लाखा ने बारू बारहठ के कहने के मुताबिक चीकलवास गांव दिया) उस लड़केने पहिले तो इनकार किया परन्तु आखिर को बारू के समझाने से मंजूर किया, और बारू ने तलवार से अपना सिर काटडाला, उस लड़के (इस लड़के की औलाद के भाट उदयपुर के नजदीक चीकलवास गांव में मौजूद हैं) ने बारू के हुक्म के मुवाफिक उसका मस्तक कपड़े में लपेट कर लालसिंह को जादिया, मस्तक देखकर लालसिंह को बड़ी चिंताहुई यह सारा वृत्तान्त उस लड़के ने महाराणा से जाकहा, इस पर महाराणा ने निहायत नाराज होकर बुन्दी को घेरलिया, और कई दिनों तक लड़ाई होतीरही, निदान जब बुन्दी का किला फतह न हुआ तो महाराणा खुद किले की दीवार पर जाचढे, जहां परवे भीतरी लोगोंके हथियारों से मारेगये, लालसिंह को भी महाराणाकी सेना के शूरवीरों ने मारलिया और हाडा बरसिंह अपना प्राण बचाकर भागा, इस वक्त महाराणी हाडी महाराणा के साथ सती हुई "

इस इतिहास में मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास और बुन्दी के इतिहासकर्ता ठाकुर सूर्यमल्लमें मत भेद है परन्तु हमारी समझ में श्यामलदास का लिखना सत्य है; क्योंकि इतिहास की जो सामग्री कविराज श्यामलदास को मिली वह सूर्यमल्ल को नहीं मिली थी तथापि इन दोनों इतिहासों में चाहे जिसको सत्य समझें हम इसमें विशेष हठ करना नहीं चाहते क्योंकि अन्तिम परिणाम दोनों का एक ही है केवल बडा भेद इतना ही है कि मेवाड़ के इतिहास में लालसिंह का उसी युद्ध में माराजाना लिखा है और बुन्दी के इतिहास में लालसिंह का जीवित रहना लिखा है परन्तु कर्नल टॉड वगैरा बहुधा इतिहासकर्ताओं की सम्मति मेवाड़ के इतिहास से मिलीहुई है ॥

लाल१८४१२निक्किय सोकहु सु लखि, ओक१हु असुर२हु अनेक ॥
बुल्लिय जे चुक्कत बचन, उनकौं हितगति एक ॥३१॥

षट्पात् ॥

सु सुनि भूप बरसिंह१८४१ उपालंभैंहि अनुजहिं दिय ॥
[illegible] सुनतहिं खिज्जि स्वसुर मारन संधा लिय ॥
उज्झि मिलन१ आगमन२ स्वसुरगृह सनय३ असन४ सह ॥
मंडि बिबिध मोरछन दियउ रनहुकम दुराग्रह ॥
नासीरें रक्खि तोपन निकँर गैनोली दिय दल गरद ॥
बरसिंह१८४१नृपहु समुझाइ बहु हुव दुर्मन छोरी न हद ॥३२॥
उदासीन दल अप्प रक्खि तँहँ कहिय धर्मरत ॥
जो न दुलहि लैजाइ मरन१ मारन२ इच्छैं मत ॥
उत दुल्लह २ इत अनुज २ बीर तो जुग२ हिं बचावहु ॥
इमकहि बुंदिय भ्रात चबियं बर तुमुल रचावहु ॥
इह्हहिं समत्थैं २ तोपन हनहिं कुमरहिं इम सुभटन कहिय ॥
तोपन अलातैं लगिलगि तदनु दिसदिस पुर परिसरें दहिय ॥३३॥
रान बारहठ मरन सुनत अंतर अति सोचिय ॥
दलैं सुत प्रति लिखिदियउ कियउ खैल हड्ड कुलोचिय॥

१घर में ही २ उरहना (ओलम्भा) ३ क्षेत्रसिंह ४ प्रतिज्ञा ५ छोडकर ६ आग. तोपों का ७समूह रखकर गैनोली नगर के ८ घेरा लगाया ॥३२॥ ९ कहा १० युद्ध११समर्थ१२ अग्नि. पुर के १३समीप की भूमि॥३३॥पुत्र के नाम १४पत्र* लिखा१५दुष्ट हाडा ने१६बुरा किया

*यहां अपने पुत्र के नाम महाराणा का पत्र लिखना लिखा सो अनुचित है क्योंकि महाराणा हम्मीरसिंह का तो पहिले ही देहांत होचुका था और महाराणा क्षेत्रसिंह चिचोड़ के राज्यासन पर बैठे पीछे यह विवाह करने को बुन्दी गये थे और यहां ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने यह युद्ध गैणोली में होना लिखा सो भी सत्य नहीं है क्योंकि मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास, कर्नल टॉड, बीकानेर का नेणसी महता आदि इतिहसकर्ताओं ने इस युद्ध को बुन्दी में होना लिखा है कई अनुमानों से भी इन्हीं लोगों का लिखना सत्य पायाजाता है क्योंकि प्रथम तो छोटा भाई अपनी बहिन बेटी का विवाह राज्यमहलों में वा राजधानी में करना अपना इज्जत समझता है जिसका बर्त्ताव इस समय पर्यंत चलाआता है इसके उप

तू जो है ममतनय बेर बारूभव बालहु ॥
तव आवहु चित्तोर लहैं चारनगति लाल १८४१२ हु ॥
कुमरहिं कहाइ इम निजकटंक पठयो खिल गैनोलिपुर ॥
लाल १८४१२ हु रचाइ तोपन लरन परैन मरन मंडिय प्रचुर ।३४।

॥ दोहा ॥

हल्लू १८३१९ नृप तिहिंकालहो, खट्टागंत ज्वरखीन ॥
चवि नृपकृत सुतचंद्र १८३११ सौं, पठये स्वभट प्रवीन ॥ ३५॥
बाहिर १ तैं सौप्तिकँ विरचि, कट्टतहुव ते क्रुद्ध ॥
पुर २ तैं लाल १८४१२ बरातपर, ओरयो तोपन जुद्ध ॥ ३६ ॥
इम जुज्झत हुव अब्दइक १, तजिय रान तनु तत्थ ॥
सुनिं खित्तल व्है रान सब, जोधन बुल्लिय जत्थ ॥ ३७ ॥
बिगरयो तोपन पुरवरन, पग पग मग तिम पाइ ॥
कल्हि तुरंगनँ बीचकरि, हह्हहिं लैहिं गहाइ ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमंत्र आलोचि विखम रजनी सु बहाइय ॥
सुनत बरातिनसौंह कलितै यह लाल १८४१२ कहाइय ॥

१ चारण की गति हुई सोही लालसिंह की होनी चाहिये "यह बारू बारहठ चारणों की सोदाबारहठ शाखा के मूल पुरुप और इस टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) के सौलहवीं पीढी के पुरषा थे" २ सेना ३ शत्रुओं का ४ बहुत ॥ ३४ ॥ ज्वर से दुर्बल होकर ५ चारपाई पर पड़ाहुआ था ६ युवराज बनायेहुए राजा अपने पुत्र चन्द्र से कहकर ॥३५॥ ७ रतिबाह देकर ॥ ३६ ॥ ८ शरीर ॥ ३७ ॥ ९ शहर कोट (शहर पनाह) १० घोड़ों को ११ पकड़ा लेवेंगे॥३८॥ १२ विचार कर १३ प्रसिद्ध

रांत महाराणा जैसे महाराजाओं का आतिथ्य भी बुन्दी में सुगमता के साथ गैणोली जैसे छोटे ठिकाने में होना कष्टसाध्य है इसकारण बुंदी में ही हुआ होगा. तीसरा सूर्यमल्ल ने एक वर्ष पर्य्यंत इस युद्ध का होना लिखा सो भी बुंदी के लिये ही संभव है क्योंकि गैणोली जैसे छोटे नगरमें रहकर इतनेबड़े महाराजाधिराज से एकवर्ष पर्यंत युद्ध करना कैसे संभव होसकता है क्योंकि न तो गैणोली में ऐसा गढ था और न लालसिंह का इतना परिकर था कि वह वहां रहकर महाराणा से एक वर्ष पर्यंत लड़सके इत्यादि कारणों से कविराजा श्यामलदासादि का लिखना ही सत्य है.

ममसम्मुह *जामात आनदेहु न ÷पटु तुम अति ॥
क्यों हत्यावस करहु मरहु तुम टरहु +प्रसभ मति ॥
दुल्लहहु होत दिनकर उदय स्वसुरउक्त इम बचनसुनि ॥
सुभटन निवारि दै निजसपथ[1] पनालिय लाल१८४१२हिं हननपुनि ३९
नृपबरसिंह १८४१९ हु नियत[2] मरन तिनको बिचारि मन ॥
बुंदीसन चढि बहुरि उभय २ साधक हुव अप्पन ॥
प्रबदियं[3] रानहिं प्रथम जई तुम १ न हम २ रहैं जिम ॥
हड्डन हारि हकाइ ससुख प्रबिसहु अगार[4] इम ॥
बारू कविंद बदलै बहुरि भर्म[5] लहहु बपु तुल्य भर[6] ॥
आसानकरहु हड्डन उपरि तो तुमसौं हम चकिततर ॥ ४० ॥
सुनि सम्मबिन्नति सदय[7] जाहु निजगृह दुलहीजुत ॥
दुहिता बिच को दोस नारि तुमरी कुलीन नुत[8] ॥
बरसिंह १८४१९ हिं इम बिदित खिजि बुल्लिय सठ खित्तल ॥
महिला[9]जित तुम मंद[10] मैं न तिम नियत[11] महाबल ॥
प्रभावति १८४१९ लत्त[12] सहि तू सभय रहत तिम न कुलनृप रहैं ॥
बरसिंह १८४१९ नयन इतनी बदत दवजग्गिय[13] जनु सब दहैं ॥४१॥
बुंदियपति खिजि बदिय प्रथित[14] तावक[15] नृपत्वपन[16] ॥
जनक[17]माइ जिम जाइ सीर[18] हंकिय १ पटुतासन ॥
सिंचिय २ खेतन सलिल[19] स्वकुल नारिन जीवन सम ॥

---

* जमाई को ÷ चतुर + हठ की बुद्धि से अपनी १ सौगंद (शपथ) देकर ॥ ३९ ॥ २ निश्चय ही मारना जानकर. प्रथम राणा से ३ कहा अपने४ घर(चित्तोड़) में. फिर बारूकवीन्द्र के बदले में उनके ६ भार के बराबर ५ स्वर्ण लेलो ॥ ४० ॥ ७दया पूर्वक ८ स्तुति योग्य ९ स्त्रीजित १०मूर्ख ११ निश्चय ही तुम्हारी स्त्री प्रभावती की १२ लात (ठोकर). नेत्रों में अग्नि १३ जलने लगी "अग्नि शब्द पुल्लिंग है परन्तु लोक भाषा में स्त्रीलिंग से व्यवहार किया जाता है" ॥४१ ॥ १४प्रसिद्ध है १५ तुम्हारा १६ राजापन. तुम्हारे १७ पिता की माता ने चतुराई से १८ हल हांका था. खेतों में १९ पानी सींचा था उसके

तास उदर तवतात हुव सु कुलता न भजेंहम ॥
इतनी सुनाइ रानहिं उचित भूप १ अनुज २ सत्थियें भयो ॥
आदित्य चढत घटिका उभय २ लरन चाव हुवरदिस लयो ॥ ४२ ॥
सह बरास सीसोद सँमि नक्खिय पुरसम्मुह ॥
पानिप बीर१न प्रसरि भयो भीरु२न दुस्सह दुहँ ॥
लखि बरसिंह१८४१ रु लाल१८४२ बीर सत्रुन पुर दब्बन ॥
हल्लू१८२१ भटगन सहित उभय हंकिय निज अब्बन ॥
बिच मिलत बाढ खग्गन बजिग लालहि१८४२खित्तलै आत लखि॥
बलसौंहु अग्ग अभिमन्यु बिधि अंतिकैं तस बढिगो अनखि॥४३॥

दोहा ॥

ऐसैं अरिन बरसिंह किय, रोध जयद्रथ रीति ॥
निरखि तुमुल झेले विचहि, जन्यें प्रवीरनें जीति ॥ ४४ ॥
रतनसिंह रट्ठोर अरु, संभर रूपर२ सबेग ॥
दुलह१ सत्थ पहुँचे दुवरहि, त्रय३ सँय बज्जिय तेग ॥ ४५ ॥
इतरैं बरातहिं रोकि इत, सह बंबावद सेन ॥
रचि बरसिंह१८४१हु सिंह रन, अखिलकरे जिम ऐंन ॥४६॥

पट्पात् ॥

मिलि इम खित्तलकुमर लाल१८४२ स्वसुरहिं समीपलिय ॥
रतनसिंह१ रट्ठोर लाल१८४१ उर भल्ल दुसह दिय ॥
लाल१८४२ तुपक कर लै सु रतन१ विनुप्रान गिरायउ ॥

उदर से तुम्हारा १. पिता हुआ था. छोटे भाई का २ साथी हुआ. दो घड़ी ३ दिन चढने पर ॥ ४२ ॥ ४ घोड़े उठाये ५ पराक्रम ६ फैलाकर ७ दुःख ८ घोड़ों को ९ खेतसिंह को. अभिमन्यु की भांति १० सेना से भी आगे ११क्रोध ॥४३॥ १२बाकी सेना को बरसिंह ने जयद्रथ की भांति रोकी १३ युद्ध १४ बरात के १५ वीरों को विजय करके॥४४॥चहुवाण १६ रूपसिंह. तीनों के १७ हाथ से ॥ ४५ ॥ १८ अन्य १९ हरिण ॥ ४६ ॥

पिसि हय ऊंधोपरत ऊपर२ परलोक निरायउ ॥
लै कान अवधि पुंखन३ दुलह स्वसर३ स्वसुर हिय तकि हन्यों॥
हयभाल लागि सु गलपार५ है बामक५ सय भेदक बन्यों ॥४७॥
दोहा— परतपरत हय लाल१८४१२ पहु, छुट्टी संगि उछारि ॥
दुल्लह छत्तिय बेधि इत, महिप रान लिय मारि ॥ ४८ ॥
सुभट भूप बरसिंह१८४१२को, रन दाहिम बलराम१ ॥
भट्टिय बीरम२ रानभट, कटि दुव२ आये काम ॥ ४९ ॥
पंद्रहसत१५०० इत१उत२ परे, समर हड्ड१ सीसोद२ ॥
लजि बरात चित्तोरलिय, बिगरिय ब्याह बिनोद ॥ ५० ॥
खित्तलसुत वय वरस खट६, नृपहुव लखपति नाम ॥
लिय पनँ बुंदिय लैनको, इहिँ सिलुपन उद्दाम ॥ ५१ ॥
बपु नरेस बरसिंह१८४१२कैं, इत छद्घाय लगि अंग ॥
लिय पाटवं उपचार लहि, भायो नन रन भंग ॥ ५२ ॥

परलोक को १समीप लिया. २पुंखारों को कान पर्यन्त लेकर दुल्लह ने ३अपना तीर श्वशुरके हृदय में तक कर मारा सो घोड़े के ४ललाट में लगकर उसके गले में निकल कर बाएं ५हाथ को भेदनेवाला हुआ ॥४७॥४८*॥४९॥५०॥ ६ लाखा नामक ७ प्रतिज्ञा ८निरंकुश॥५१॥ ९नैरोग्यता १०इलाज करने से॥५२॥

*महाराणा क्षेत्रसिंह और हाडा लालसिंह के युद्धमें बंबावदा के राजा हल्लू के बीमार होने के कारण उस के युवराज चंद्रराज को लालसिंह की सहायता पर भेजना लिखकर ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने इस पंचमराशि के तेरहवें मयूख के ४२ वें छंद में संवत् १४११ में हल्लू का देवी को अपना मस्तक चढ़ादेना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि उदयपुर के कविराज श्यामलदास ने कई प्रमाणों सहित मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में महाराणा क्षेत्रसिंह के इस युद्ध का संवत् १४३८ लिखा है सो बीकानेर के नेणसी महता की ख्याति आदि कई इतिहासों से भी उक्त संवत् ही सिद्ध होता है इसकारण सूर्यमल्ल के लिखे हुए इस समय को हम असत्य मानते हैं इसके अतिरिक्त कुंवर क्षेत्रसिंहकी सगाई महाराणा हम्मीरसिंह के समय में बुंदी के राव हामा का करना लिखकर सम्वत् १३९३में हामा का राज्य छोडकर अपने पुत्र बरसिंह को राज्य देना लिखा सो भी नहीं बन सकता, क्योंकि १३९३ में तो क्षेत्रसिंह का जन्म ही नहीं हुआ था, किंतु संवत् १४०० के पीछे महाराणा हम्मीरसिंह ने चित्तोड़ पीछा लिया जिस पीछे क्षेत्रसिंह का संबंध होना संभव होसकता है सो इस भूल का कारण या तो बड़वाभाटों की लिखाईहुई ख्याति से अथवा बुंदी की पिछले समय की लिखीहुई ख्याति से प्राचीन लेख का कल्पित संवत लिखना पायाजाता है ॥

लाल१८४।२ स्वसुर जो जयलह्यो, सुगिनि पराजय सोहि ॥
मारक मैं जामातको, दुमन रह्यो इम द्रोहि ॥ ५३ ॥
कृष्णाकुमरि जिहिं निजकनी, पावक करत प्रवेस ॥
आचर बर तीरथ अखिल, लाल१८४।२ दहिय अघ लेस ॥५४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वी-तिहोत्रवसुधेश्वरहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यव्याख्यानवे-लाव्याहार्यस्वानुजलालसिंह१८४।२ सहितबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह १८४ १।चरित्रे प्रथमप्रणीतपाणिपीडनचतुष्क ४ हायनपञ्चक ५ पूर्वस-मुद्भावितलक्षाऽभिधानस्वौरसीक १ पुत्रराणाकुमारक्षेत्रलगैणो-लीपुराधीशहड्डलालसिंह१८४।२ पुत्रीपरिणायन १, चतुर्थ ४ दिन-सहजग्धिसमासीनापानमदपरवशराणाभटराष्ट्रकूटरत्नसिंह१हल्लू१८ २।१जीवननिमित्ततदुपयामसमाख्यापन२,प्राक्तनतरडैडुरीपृथापरिणा पनप्रक्षिप्तगर्हणचारणबारू २ तत्समर्थन ३, द्वयश्लाघोद्युक्तरूच्य-कुमारक्षेललजकुट२जल्पितानुमोदन४,ज्ञाततूष्णीकबरसिंह१८४।१ लाल १८४।२ सौदर्यमल २ तत्प्रतोलीपालचारणलोहठपृथ्वीराज १७६।१ सैन्यपाल १७६ रत्नसिंह १७६ बङ्कदेव १७९ हल्लू १८२।१प्र-भृतिस्वीयस्वामिसामर्थ्यसमुत्कर्षपुरस्सरनानादृष्टांतदुर्धर्षकोटिवा-क्यजन्यादिजनप्रसभापातितनिजनिन्दानिराकरण ५, तदनन्तरस्वी

१ जमाई का ॥ ५३ ॥ अपनी २ पुत्री को ३ अग्नि में ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बखाने के समय के बचनों में अपने छोटे भाई लालसिंह सहित बुन्दीनरेन्द्र बरसिंह के चरित्र में प्रथम चार विवाह करने पर और पहले जन्मेहुए पांच वर्ष के लाखा नामक औरस पुत्र होने पर भी राणा के पुत्र क्षेत्रसिंह का गैणोली पुर के अधीश हाडा लालसिंह की पुत्री से विवाह करना, चौथे दिन भोजन पर बैठे हुए, मतवाल (पानगोष्ठी) में मद्य के वशीभूत राणा के उमराव राठोड़ रत्नसिंह का हल्लू के जीवन में इस विवाह को मुख्य कारण जतलाना, प्राचीन

कृततदधिकशौर्यौ १ दार्य २ लालसिंह १८४१२ राणाशौर्यौ१दार्य २ साम्याभावप्रत्ययप्रक्षिप्तप्रतिमोपरिशीर्षशातनशपथबारूस्वककर्त - नौचित्यसमर्थन ६, प्रत्युतप्रत्यवसानप्रतीपप्राप्तपृतनाप्रपातजन्यजन प्रच्छन्नचारणबारूकरकृत्तस्वशीर्षलालसिंह१८४१२ र्थप्रेषण७,श्रुते तदुदन्तराणाहम्मीरबारूवैरवालनवर्जितस्वसूनुसमागमसंरोधन ८, हायनैक १ जीर्णज्वरजर्जरहल्लू १८२१२ प्रबोधितपुत्रचन्द्रराज १८३११ प्रेषितभटसौप्तिकादिवहीरणजन्यजनव्यग्रीकरण९, कृतैका १ ब्द कलहप्रेष्यमुखप्रज्ञातपितृपरासुत्वप्राप्तचित्रकूटाधिपत्यपुनरागत्यबु- न्दीशबरसिंह १८४११ प्रबोधप्रत्यनीकराणाक्षेत्रश्वशुरशातनार्थगै णोलीदङ्गाभिमुखस्वसादिसैन्यसम्पातन१०, बरसिंह १८४१२ संरुद्ध स्वसेनरत्न १ रूप २ सुभटद्वय २ सहितराणाक्षेत्रश्वशुरसहसंयो

इडहुर वंशवाली पृथा के विवाह में चेपक निन्दा को चारण बारू का पुष्ट क रना, दोनों के प्रशंसा करने पर दुल्लह कुमर चेत्रसिंह का दोनों के कथन को अनुमोदन करना, बरसिंह और छोटे भाई लालसिंह को मौन धारण किये देखकर उनके पोलपात चारण कोहठ का पृथ्वीराज, सैन्यपाल, रत्नसिंह, पङ्ग देव और हल्लू आदि अपने स्वामियों की सामर्थ्य की श्रेष्ठता को आगे करके अनेक दृष्टान्तों से दुर्धर्ष कोटि के वाक्यों से बरातके लोगोंसे हठसे कीहुई अपनी निन्दाको दूर करना, जिस पीछे उनकी उदारताको स्वीकार करके लालसिंहका राणाकी वीरता और उदारतासे बराबरी न करनेकी प्रतीति करानेवाली गडी हुई प्रतिमाके ऊपर मस्तक काटनेका शपथ खानेवाले बारूके लिये अपना मस्तक काटने का समर्थन करना, भोजन करते समय भी उठकर सेना के पड़ाव में पहुंच कर बराती लोगों के छाने चारण बारू का अपने हाथ से मस्तक काटकर लालसिंह के पास भेजना, यह वृत्तान्त सुनकर राणा हम्मीर का बारू के वैर को लिये बिना अपने पुत्र को वापिस आने से रोकना, एक वर्ष के जीर्णज्वर से दुर्बल हल्लू के समझाये हुए पुत्र चन्द्रराज के भेजेहुए वीरों का रतिवाह आदि युद्धों में बरात के लोगों को व्याकुल करना, एक वर्ष तक युद्ध करके दूतों द्वारा पिता का देहान्त सुन, चित्तोड़ का स्वामिपन पाकर और फिर आकर बुन्दीश बरसिंह के समझाने के विरुद्ध राणा चेत्रसिंह का अपने श्वशुर के मारने के अर्थ गैणोली नगर के सन्मुख अपनी घुड़सवार सेना

धन ११, सोढरत्नैक १ रोपतुपक १ तुरगन्युब्जापात २ संस्थापितरत्नं १ रूप २ जामातृजिम्हगविद्धमूर्द्धपतत्सप्तिसादिलालसिंह १८४१ २ कासूकृतकालखञ्जजामातृक्षेत्रलसंहरण १२, बुन्दीशसुभटदाधिमतबलराम १ राणाप्रवीरभट्टिवीरमदेव १ परस्परप्रहारनिपातन १३, सार्द्धसहस्र १५००स्व १ पर २ सुभटशूरशय्याशयन १४, ज्ञातलाल १८४११ कासूलीढप्रभुप्राणम्लानमुखजन्यजनविज्ञापितपोतत्वप्रतिश्रुतबुन्दीविध्वंसक्षेत्रलकुमारलक्षपतिचित्रकूटाधिपत्यप्रापण १५, प्राप्तक्षतषट्क ६ बुन्दीशवरसिंह १८४११ पटूपचारपाटवप्रसाधन १६, जामातृमरण १ सुतासहगमन २ संकुचितप्रायश्चित्तपरलालसिंह १८४१तीर्थाचरणं १७ द्वादशो १२ मयूखः ॥१२॥

आदित एकोनषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१५९॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

को डालना, परसिंह से अपनी सेना के रोके जाने पर रत्नसिंह और रूपसिंह दोनों सुभटों सहित राणा खेत्रसिंह का श्वशुर के साथ युद्ध करना, रत्नसिंह के एक घाव को सहकर बन्दूक से उसके मरेहुए घोड़े के अधोमुख गिरने से नीचे दबकर रूपसिंह के मरे पीछे जमाई के बाण से बेधेहुए मस्तकवाले गिरतेहुए घोड़े के सवार लालसिंह का बर्छी से कलेजा बेधकर जमाई को मारना, बुन्दीश के उमराव दाधिमा बलराम और राणा के वीर भाटी वीरमदेव का परस्पर के प्रहारों से माराजाना, अपने और पराये पन्द्रह सौ वीरों का काम आना, मलिन मुखवाले बरात के लोगों से लालसिंह की बर्छी से अपने स्वामी का प्राण जाना और बुन्दी का नाश होना सुनकर बालकपन में खेत्रसिंह के कुमर लाखा का चित्तोड़ का आधिपत्य लेना, छः घाव पायेहुए बुन्दी के पति वरसिंह का उत्तम इलाज, कराने से नैरोग्य होना, जमाई के मरने से और बेटी के सती होने से सिटाकर प्रायश्चित्त करने के लिये लालसिंह का तीर्थ यात्रा करने का बारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १२ ॥ और आदि से १५९ मयूख हुए ॥

पीछैं खित्तल पट्टपति, रहिय लक्ख[1] सिसु रान ॥
तक्क्यो जिहिं मृत तातको, नृप बरसिंह१८४।१ निदान[2] ॥ १ ॥
सबनकहिय बुंदीस जो, बढि रोकैं न बरात ॥
गैनोलीपति संगिकरि[3], तो न मरैं तुमतात ॥ २ ॥
मन्नि हड्डनृप मंतु[4] इम, लक्ख रान हठलग्गि ॥
लिय पन बुंदिय लैनकौं, जिहिं सिसुपन रिसजग्गि ॥ ३ ॥
कहिय दंतधावन[5] करौं, बुंदिय काल्हि बिगारि ॥
तो खित्तल ममतातहै, नहिं असती तस नारि ॥ ४ ॥

षट्पात् ॥

पंचन यह पन जानि कहिय बुंदिय बहुकोसन ॥
हठी लरन पुनि हड्ड रचहु बय बस यह रोसं न ॥
लंघि[6] तदपि नृप लक्ख छुमन कछिय दूजोरदिन ॥
तब किय कपट बितानँ[7] बालबंचन[8] मिलि मंत्रिन ॥
बुंदिय सदुर्ग कृत्रिम[9] बिरचि भट बिच परिचैय[10] रहित भरि ॥
तिन कहिय सज्जि तोप१रु तुपक२बिलुगोलन बाहहु बिथरि[11] ॥ ५ ॥
कैतिन[12] तत्थ यहकहिय बालनृप कुतुक[13] विधायक ॥
कोऊ आश्रितकहहु हड्ड तिहिंदुग्ग सहायक ॥
तनुजहिं दै जबतजिय राज्य हल्लुव१८२।१ मरिबे रन ॥
कुंभकरन१८३।२ तसकुमर मन्नि अग्रज अवनीमन ॥
अप्पबल भिन्न खट्टन[14] इला रान पटा लहि तँहँ रह्यो ॥
भ्रातन समान जिहिं भाग दिय चंद्रराज१८३।१ सोहु न चह्यो ॥ ६ ॥

दोहा ॥

---

१ लाखा २ कारण ॥ १ ॥ ३ बर्छी से ॥ २ ॥ ४ अपराध ॥ ३ ॥ ५ दातुन ॥ ४ ॥ ६ लंघन (उपवास) करके. छल से ७ डेरे खड़े किये. बालक को ८ ठगने के लिये ९ बनावटी. विना १० पहिचान के ११ फैलाकर ॥ ५ ॥ १२ कितने ही लोगों ने १३ खेल के लिये. जुदी भूमि १४ उपार्जन (खाटवां) करने के लिये

हुव जु रान हम्मीरकै, सहआदर *सामंत ॥
वीर लु गो न वरात विच,असहन विरस उदंत ॥७॥
इत१ मृत हुव हम्मीर१ अरु, उत२ खित्तल२ वस आयु॥
जित्तैं निज प्रारब्धवल, जँहँ सुधाहु न न जायु ॥ ८ ॥
रान लक्ख तव भट रहि, लिय पन बुंदिय लैन ॥
कुम्भ१८३१२हिं तँहँ प्रतिभट करन, सीसोदन किय सैन² ॥ ९ ॥

षट्पात् ॥

कुम्भकरन१८३१२तँहँ कहिय स्वीय संमत सीसोदन ॥
नृप सिसुत्व सब निरखि इष्ट सद्दहिं लहि ओदन³ ॥
हेतु नाँहिं यँहँ हठ१ नाँहिं सीसोद निहारहु ॥
कृत्रिम बुंदिय कलह विजय लपि दै सु बिचारहु ॥
इक१ हठ मैंहु लिन्नौं इहां हिंगुलु१८०१९जिम आश्रय हरखि ॥
ध्वंसन⁴ अभीष्ट मम तो धरहु कृत्रिम बुंदिय कर⁵करखि ॥१०॥

दोहा ॥

सिसु लखि जो समुझाइवो, नृपको तो गहि नीति ॥
इतर भटन रक्खहु इहाँ, पालहु जो इत प्रीति ॥११॥

षट्पात्

सीसोदन नर्मसह⁶ प्रसभ⁷ बल कुंभ१८३१२ पठायउ ॥
सो कछु तोपनसहित अनखि कृत्रिम गढ आयउ ॥
गोले न दये गैल पटकि तोपन तव पैसे ॥
किय सम्मुह जयकरन अखिल संग्रह सजि ऐसे ॥
सत्थसौंकह्यो तुपकन सबहि गोली दुव२दुव२ गेरिकैं ॥
इक१ रानटारि मारहु अरिन हित बुंदिय जय हेरिकैं ॥१२॥

॥ ६ ॥ * उमराव ॥ ७ ॥ ८ ॥ १ मुकाविला करनेवाला २ इशारा ॥ ९ ॥ ३ अन्न ४ नाश अर्थात् मुझे ही मारने की इच्छा है तो ५ हाथ खींच कर ॥ १० ॥ ६हँसी (मस्करी) के साथ ७ हठ से ॥ १२॥

दोहा ॥

लरन संग पठवनलगे, इतरहु सुभट अनेक ॥
कुंभ १८३।१ बहुत मैंही कहि रु, आयो न लयो एक ॥१३॥

षट्पात् ॥

मनबिचारि दृढ मरन सत्थ कुंभ१८३।१हु निज सज्जिग ॥
रुट्ठि चढत सिसु रान बंब१ आनक२ उत बज्जिग ॥
गोलन बिनु नालिगन[3] चले सीसोद चलावत ॥
नगये जोलौं निकट इतहु तोलौं तिम आवत ॥
लहि ढिग बचाय सिसु लक्खकौं दहन तोप१तुपकन२ दगिय॥
ताम्रपर्न[4] बिद्ध नर१गज२तुरग३लोटि लुत्थि लुत्थिन लगिय॥१४॥

दोहा ॥

सोई होतहि इक१ सकल, सहँस१००० चमूँ इक१संग ॥
गो भजिहू रहि रानगज, जुत खिल बल तजि जंग ॥ १५ ॥
कढि गढतैं सु१८३।२हु असि करखि, परयो सुभट तसपिट्ठि ॥
सावधान सीसोदन्है, हुतहि सुरे धारदिट्ठि ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

किते कहत यहँ कुंभ१८३।२ कामआयउ तिलतिलकटि ॥
जंपहिं कति यहजानि रान जननी सिराह रटि ॥
स्वभट१ सूनु२ समुझाइ बीर यह कुंभ१८३।२ बचायउ ॥
रक्खत तदनु[6] रह्यो न अनँखि[7] बंबावह आयउ ॥
ज्वरखिन्न जनक[8] हलू१८२।१हु जिहिं अंस[9] थप्पि लिय लाइउर॥
नृपराम[10]२०३।४लखहु कुलरीति निज पहु हनन पानिप[11] प्रचुर[12]॥१७॥

दोहा ॥

---

१३ ॥१नगारे २ढोल ३तोपें और बन्दूकें ४लाल होकर ॥१४॥१५॥१६॥५ काढ़कर ६जिसपीछे ७क्रोध करके ८पिता ९कन्धा १० हे राजा रामसिंह! ११ पराक्रम १२बहुत ॥१७॥

कृत्रिम कुंदिय डाहि किय, रुचि भोजन इत मान ॥
इत रहोरन अब उदय, पिक्खहु *निपति प्रमान ॥ १८ ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणवचम् ॥

पछै अठी खेड़रोठाकुर राठोड़ वीरमदेव सलखावत भतीज जगमालरोकाढियो ज्ञात सेनावारा साँगळिया ठाकुर राणगदेवरे पास आपरी पूर्वपत्नी मांगोळी १ सहित देवराज १ प्रमुख आपरा कुमारि४ही पुत्रांनूं राखि तिकाणरी पुत्रीनूं विवाहि साथलेर सिंधुदेशरै अंतर्गत आडंगलैरा जोइयाँरै जाइ आश्रितरहियो ॥

सो उठै अधीन[2] दलैनामजोइये आपरा वैभवसमेत आधीन बनीकर आगैं कीधो आपराबडावडाँरो उपकार बिचारि बडाआदररैसाथ रोलियो तोभी महामूढ बारूणीरैवसीभूत अनेक उपद्रव मचाइ ऊवटैंही[3] वहियो ॥

उठैही इणरै साँगळियाँणी मैं पुत्र चूँडारोजन्महुवो जिकणरीही बधाईनै जातौं ढोलाँरै आँटैं जवनाँरी निमाजगाहरा[4] फरासबढाइ १ कवराँरैसाथै बाराहविणासि २ दलारा धींवड़नूँमारि ३ एक १ दुर्ग उपेतैं[8] थाघीहूँ अधिक इळा अपणाइ ४ अपराध संग्रहमैं उधारि न राखी ॥

जरै स्वामीरा सम्मत बिहूणाँ[9] भी जोइया जिकणनूँ मारण चलाया जठैजठैही दलै उणरोकीधो उपकार चींताइ रोकियाँ केड़[10] आपरो जामाता[11] मारिलीधो५ तोभी समस्तहूँ सहणीरी[12] भाखी ॥१९॥

केऊनाम दलारीपुत्रीरा पतिरो प्राणलीधो जरैतो जोइयाँ जमाईरो वैरवाळणरैकाज आपरा प्रभूरैप्रच्छन्न प्रहररैप्रभात वीरमदेव

* निश्चय ॥ १८ ॥ १ आदि २ आधीन ३ बिना मार्ग ४ निमाज पढ़ने की जगह (मसजिद) में सूवरों को ५ मारकर. ६ दूध चूँखनेवाले बालक को ७ सहित ८ बाकी ९ बिना १० पीछे ११ जमाई को १२ सहन करने के लिये कहा ॥१९॥

नूँ जाइघेरिलियो ॥

जठै बढणा१*बाढणा २ नूँ बुलावणारो बंब बाजियो सुणि माँ गळियाँणी मालिकरा माथारो उसीसो[2] हुवो आपरो बामेतर बाहू[3] अवेरियो ॥

हाथकढताँही निद्रानिवारि सस्त्रादिक संगररी सामग्रीमैं सज्जहोइ उणहीसमय सळखाँउत बीरमदेव समाधि बड़वारी पीठिआयो ॥

अर आपरी रजपूताँ उपेत पाहुणाँ नूँतो मानणारो दुंदुभी[6] दिवाइ बडेबेग साम्हों चलायो ॥ २० ॥

जिणसमय राठोड़ चंद्रहासँ चलावणमैं कुमीं न कीधी परंतु महापापाँरा करणहारतो श्री परमेस्वररा प्रपंचमैं जीतीहूँ न जावै ॥

जिणथी स्वतंत्र संभवमैं एक आपरा आलयहूँ काढिदेणरो उपकार करि जिकणरा सीलैणाँ[10]मैं सहियो न जाइ इसड़ा अनेक अनर्थ कुमाइ मनमत्ते[11] बहै तिकणारो अंततो इसड़ो खटावै ॥

जिणकारण जुड़ताँही अनेकाँ माथै वारहोइ संगरमैं सबठाम आपरा अनीकरा उत्तमंग[12] उडता जोइ जोइयाँपहली आपरी सिखाई घोड़ी समाधिनूँ गेहररा ढोलरै नाचलगाइ अरिनूँ आयत्त[13]करि समीपलीधो ॥

अर धीरण१हाँसू२अरड़कमल्ल ३ जीवराज ४ बीजावैरियाँनूँ बाढ[14] चखावता समीपजाइ जगमालरैछानैं काढिदेणरा एक१उपकार माथै खंमिया[15] आपरा अनेक प्रत्युपकार चींताइ[16] आवर्त[17] १ प्रमुख

---

*मरने मारने को १ उपधान (तकिया) २दहिना हाथ ३ समेटा ४ सलखा का पुत्र. समाधि नामक ५ घोड़ी की पीठ पर चढा ६ नगारा॥२०॥ ७खड्ग ८संसार में ९ जन्म सफल करके; अथवा यश सहित १० बदले में; वा प्रत्युपकार में ११ स्वतन्त्र चले. अपनी सेना के १२ मस्तक १३ वश (काबू) में १४ तलवारों की धारोंका स्वाद चखातेहुए १५सहन कियेहुए १६ स्मरण कराके १७गोल कुंडा (गोलाकार घूमना) आदि

अनेक *अनुकरणारा नाचकरती × अर्वतीनूँ विश्रामरो बोलदेर जोइये धीरण राठोड़रैकंठ खड्गरो आघातदीधो ॥ २१ ॥

धीरणरा पाणिरा प्रहारणहूँ बीरमदेवरो मुंड अछंट उडिपड़ियो तोभी राठोड़रो रुंड अनेक म्लेच्छाँरा मुंड प्रेताँरा झुंडरै उपहार करि नीठिनीठि चेष्टा बिहूणा थियो ॥

सो सुणताँही तिणही अवसेस तमीरा अंधकारमैं माँगळियाँणी स्वकीयसुत चूँडासमेत आपरी बसीरो एक १ जाट ओठीपै साथ आयो तिकणरै बाँसंत बैठि बडैबेग देसरो मार्गलियो ॥

देसमाँहि आवताँही ओठीनूँ सीखदेर बिपत्तिरा महार्णवमैं मैग्न माँगळियाँणी पुत्रसहित बेसरो बिपर्यासकरि कैराऊ ग्रामरा ठाकुर रोहड़ियाबारहठ आल्हारै बास जाइरही अर थोड़ादिनाँमैं बडाविस्वासरैसाथ महानसरी मालिकहोइ चारणरी चाकरीमैं चित्तलगाइ चातुराईरी रीझ चही ॥ २२ ॥

अठी बीरमदेवनूँ जवनाँरा मारियाजाणि ग्रामसेत्रावाहूँ चलाइ राठोड़ गोगै बीरमदेवोत आपरा बापरा बाढणहारनूँ बिसारि बि

*अनेक प्रकार के नाच करतीहुई×घोड़ीको ठहर ने के बोल देकर ॥२१॥१हाथ के २ दूर जापड़ा (उत्तम प्रहार के होने से दो टुकड़े होकर खड्ग के रक्त की छांट नहीं लगे उसको मरुभाषा में अछंट कहते हैं) ३ भेट. चेष्टा ४ विना ५हु आ. बाकी की ६ रात्रि के अन्धकार में ७ अपने पुत्र ८ वसती का ९ ऊंट पर "ओठी नाम ऊंट के सवार का है परंतु यहां लक्षणा से ऊंट का ग्रहण किया है" १०ऊंट पर बैठकर ११ बड़े समुद्र में १२ डूबीहुई. वेश १३ बदलकर १४ आल्हा नामक रोहड़िया बारहठ शाखा के चारण के *केराऊ नामक ग्राम में जा रही १५ रसोई की ॥२२॥ पिता के १६ मारनेवाले को १७ भूलकर

*इस गांव का नाम काळाऊ भी प्रसिद्ध हैं जिसके प्रमाण में स्वयं आल्हा का कहा एक दोहा है ॥

दोहा ॥ चूंडा नावै चीत, काचर काळाऊतणाँ ॥ भड़ थायो भै भीत, मंडोउररामाल्हियां ॥१॥

मंडोउर लिये पीछे चूंडा आल्हा बारहठ को भूलगया था जिसपर आल्हा ने चूंडा के नाम यह दोहा लिखभेजा था जिसपर आल्हा का बड़ा मान बढ़ाया गया ॥

`ह शब्द स्त्री लिंग है परंतु लौकिक में पुंल्लिग से व्यवहार किया जाता है इसकारणसे पल्लिंग लिखा है.

नाँहीं अपराध *भाजड़मैं शीत संकटरैहेठै सपत्नीकसूता जोइया दलानूँ जाइ हणियो ॥

सोभी आततताइनूँ उबारि बापरो बचावणहार बाढियो तोभी अद्वितीय २ वारैं हुवा सुणि किताक कविलोकाँ तिकणराही महा रो प्रकर्षण भणियो ॥

जूड़ा १ जोड़ा २ पर्यंक ३ पेषणी ४ पात्र ५ पुंजैं कटि करवाँल पुहवीमैं पैठो तोभी मंतु बिहूण जनकरो लिन मारणमैं म्हाँरोतो मन आघातरो उत्कर्ष नमानैं ॥

पछै जिणानूँ जिसड़ी दीसै सो आप आपरा अन्तहकरणमैं इसड़ी ही गहानैं ॥२३॥

जिणकिडै जोइयाँरी वरात आइ दलारो मरणसुणि तिकणनूँ महीदेर वाँसैलागि गोगानूँ मारगमैंही जाइलीधो ॥

अर आपसमैं चन्द्रहास चलाइ दों २ ही तरफरा प्रवीराँ उठैही देहरो त्याग कीधो ॥

अठी वारहठ आलहैं किताककाळमैं माँगळियाँणीनूँ वीरमदेव री जोड़ायत जाणि तिकणरा पुत्र चूँडानूँ द्वादस१२ ग्रामाँरा अधी-स आपरा जजमान ईंदा पड़िहाराँरी पुत्री बिवाही ॥

अर ईंदाँहीं आपरा जलाई रै साथद्रोह पहली हाडानरेस हालू १८२।१राजीतिणा ब्रह्महत्यारा करणहार पड़िहार राजाहम्मीरनूँ दुरै हवाल काढि राव चूँडानूँ मंडोवररो महीप करि एकता निबाही॥२४॥

---

*अगने में भय पायेहुए अपनी स्त्री सहित १ छकड़े (गाड़ी) के नीचे सोयेहुए २मारा ३*वधोद्यत (मारनेवाला) ४प्रहार ५ ऐसा कहीं ६ जूआ (बैल जुतने का काष्ठ) ७ स्त्री पुरुष दोनों ८ चारपाई ९ चक्की और १० थाली के ११ समूह कटकर १२ खड्ग १३ भूमि में घुसगया तो भी विना १४ अपराध प्रहार की १५ अधिकता. जिसको१६ जैसी दीखे वैसी १७ कहै ॥२३॥ १८ पीछा करके १९ विवाहिता स्त्री २० बुरी तरह ॥ २४ ॥

*श्लोक ॥- अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः । क्षेत्रदारापहारी च षडेते ह्याततायिनः ॥१॥

जैरैं हम्मीरतो जैसलमेररा भाटियाँरी सीमामैं बारू १टेकरे २ नाम नगर जाइ निवासकियो ॥

पछैं तिणारोही वंस वघड़ाउताँरो विध्वंसकरि सोही हड्डाधि-राजरो स्वसुरकुळ नागोध१ ऊँचाहेड़ा२ पर्यंत पूर्वरोप्रांत दाबि उ-ठीही प्रवर्त्तथियो ॥

इणरीति हम्मीर कढियाँकेड़े राठोड़ रावचूँडो वीरमदेवोत मंडो उरनगरमैं आपरी राजधानी जमाइ रहियो ॥

गाधिपुर छूटाँपछै इणसन्वयसूँही फेर राठोड़ाँ प्रतिदिन बर्द्धमान राजपाइ चीतोड़१ नरउर२ आमेर३ अजमेर४ पाटण५ दसोर ६ वंबावदा७रे समान भूपभाव गहियो ॥ २५ ॥

दोहा ॥

लीधो मंडोडर लड़े, इम चूँडेनृप एँण, ॥
पुत्र सता१रणमल२प्रमुख, जाणिया चउदह१४जेण ॥ २६ ॥

सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय अठी म्हाँरावंसरा बिरोचन मिश्रण चंडकोटिरा कुळमैं प्रपितामह बिजैसूर मंडोडरथी आथमणीदिसा बाढमेर १ कोटड़ा२ कनैं बोधन्यावी१ भाद्रेच२ नाम नगर निवासकरै जठै खड़रो महादुकाळ पड़ियो जाणि आपरी बसीरा लोकाँसहित छ-कड़ाँमैं भारघलाइसकुटुँब सिरोही१ जाळोर२ गुजरात३रै काँक ड़ऐं तृण नेपै देखि आइरहिया ॥

जठै सरवहियाँरा बारहठ बाँटी समुद्रसिंहरा साँसण हूँता जि-कण सुणताँही मिलणनूँ डेरैआय समतारा गिनायत जाणि प्रीति

१जव२दे गूजर, जिनकी कथा आगे आवेगी३नाग४कन्नोज५घटता हुआ (बडा) 'मंडोवर में चूंडा का राज्य होने का सम्वत् मारवाड़ के इतिहास में १४५१ लिखा है सो इसग्रंथ के लिखेहुए संवत् से नहीं मिलता'६राजापन॥२५॥७इस चूंडे ने८ आदि॥२६॥९तृण का१०सीमा पर११उत्तम पैदाइश१२वाटी शाखा के चारण.

रा पेचे[1]मैं गाढा गाहिया ॥

बाटी समुद्रसिंह आपरी सीमाँमैं बसीरा लोकाँसहित मीसणाँ रो गोळ[2] दिवाइ गिनायताँनूँ आदररैसाथ राखिया ॥

अर जळ१ जीमण२ आखेट[3]३ आदि बिहारक्रीड़ामैं सामिलरहि स्नेहरा उदर्क[4]रा अनेक अमोघफळ चाखिया ॥ २७ ॥

॥ सोराष्ट्री दोहा ॥

हद समुद्ररो हेत, बिजयसूर दीठाँ ब[5]ळे ॥
स्व बहिणि देय समेत, बाटीनूँ दीधी बिदित ॥ २८ ॥
बिजयसूररी बाम[6], आठ ८ मासहूँ दिन अधिक ॥
धारियो गर्भ सुधाम, वणियो ताँ[7]दि भावी बिखम ॥ २९ ॥

षट्पात् ॥

एकसमय आखेट बळे साळा१ बहणोई२ ॥
आवे[8] हणि[9] सस एक१ प्रीति मनुहारि पँजो[10]ई ॥
सो लेजावण सदन पुँणे[11] मीसण१ बाटी२प्रति ॥
उठै सिद्धपळ[12] अम्है[13] मंगि[14] जीमण चहियो मति ॥
बँदियो[15] समुद्र कीजै बिबिध एक महानसैं[16] आपरै ॥
हूँ आइ गोळसामिल हुवाँ कराँ असणाँ[17] इम मनकरै ॥ ३० ॥

दोहा ॥

जदि मीसण लै सस जिंको, आप गोळ द्रुत[18] आइ ॥
बणावायो जिण पळ[19] बिबिध, मेळणाँ[20] उचित मिळाइ ॥ ३१ ॥
बाटी घरपूगाँ बळे, आवण आळस आणि ॥

---

१ दाव में २ पड़ाव (डेरा) ३ शिकार ४ भविष्यत् काल के भाग्यफल ॥ २७ ॥ ५ फिर अपनी वहिन को दहेज सहित बाटी को दी ॥ २८ ॥ ६ स्त्री ७ उस समय ॥ २९ ॥ ८ आये. एक ९ खरगोस मारकर १० प्रास की ११ कहा. पकाहुआ १२ मांस १३ मैंने १४ मांगकर १५ कहा. आपकी १६ रसोई में १७ भोजन ॥ ३० ॥ १८ शीघ्र १९ मांस २० मुसाला ॥ ३१ ॥

गेहकरण सस मंगियो, जीमण दंपति[1] जाणि ॥ ३२ ॥
कहियो मीसण सस सकळ[2], चूल्हाँ दीध चढाइ ॥
अब नवैं भोजन उठै, अठै कृपाकरि आइ ॥ ३३ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणरीति मीसण विजयसूररो वचनसुणि बाटीरै अनुचर पाछो जाइ जथातथ[3] बातकही ॥

सो सुणताँही भावीरैप्रमाण बारुणीरै[4] वसीभूत हुवै समुद्रसिंघ बिपरीत व्यवहार बतावणरी टेक[5] गही ॥

गोळनैं कहाई कैं तो पळरा[6] देगचा[7] उठाइ म्हाँरा आदेसरै[8] आधीन हुवो मीसण बेग अठै आवै ॥

नहींतो बळसमाहि म्हाँनूँ चोड़ैखेत चंद्रहास चखावै ॥ ३४ ॥

इसड़ी कहि धरारोधणी[9] बाटी समुद्रसिंह आपरासाथनूँ सज्जकरि उणहीं साँझरैसमय[10] मीसणाँरा गोळऊपर चलायो ॥

जैं विजैसूरभी भावीनूँ दोसदेर आपरा आउधीक[11] पूँतारि[12] साम्हाँही आयो ॥

बाटियाँ १ रा वीस २० मीसणाँ २ रा पंदह १५ प्रबीर पड़ियाँ पछैं बहणोईरा महारथी साळारो सीस उडियो तोभी विजयसूररो रुंड तीन ३ बैरियाँनूँ बाढि खेतपड़ियो ॥

तिणपछैं गोळरोलोकभी मोरछामाँडि तुपक १ तीराँ २ रो वेझो[13] बणाइ पहरदोइ २ सूधो लड़ियो ॥ ३५ ॥

आसवरो उतारहुवाँ समुद्रसिंहनूँ तो उणरा पुरोहित १ मोतीसरैं[14] २

---

१ स्त्री पुरुष के जोड़े से जीमने के लिये ॥ ३२ ॥ २ सम्पूर्ण खरगोस को ॥ ३३ ॥ ३ जैसी थी वैसी ४ मद्य के ५ हठ पकड़ा ६ मांस का ७ पकाने के पात्र विशेष ८ हुकुम के ॥ ३४ ॥ उस ९ भूमि का स्वामी. १० संध्या के समय ११ आयुध धारण करनेवाले लोगों को १२ पलकार कर (उत्साह बढाने के वचन कहकर) १३ निशाना बनाकर ॥ ३५ ॥ १४ चारणों के याचकों में एक जाति है.

प्रमुख संकोचरा लोकाँ बीचमैं आइ पाछो मोड़ियो ॥

अर प्रभात हुवाँ केड़ै गर्भवती पत्नी आपरा अनुगाँनूँ काठाँचा ढगारो निदेस देर धणीरा अंचळहूँ अंचळजोड़ियो ॥

जिको सुणि पूरा पछितावासमेत समुद्रसिंह आपरी पत्नी इ रूड़ी बिजयसूररी वहिणी वरजणनूँ गोळमैंभेजी सिक्षा कहियो बाभी पहिली मोनूँ मारि पछैं चितारीतरफ चरणदीजे ॥

अर नहींतो बीररो वंस राखि प्रसूतिकाळरै अनंतर वेदरा वच नरै अनुसार विधानपूर्वक सहगमण कीजे ॥ ३६ ॥

इसड़ो वचन सुणि विरोधरो क्रोध बिसारि बिजयसूररी जोड़ा यतकरमैं कटार झालि साहस ठँवणरैकाज रीढकरै समीप आप री पीठ फाड़ि नेत्रमूढ मूर्छितबाळकनूँ काढि नणदरै हाथदीधो ॥

अर अब इणरो पाळणो थारै अधीन इसड़ी कहि बाळकरो नाम पीठहवो रखाइ सहगमणकीधो ॥

जिण बाळकनूँ आपरी भुवा सैंजारोदूध देर नीतिनीति पाळि दस १०वर्षरा वयमैं आणियो ॥

जिण अर्भक लाडमैं मत्त एकणदिन कंदुकरी क्रीड़ाकरताँ आ घातरो अपराधमानि कोई ग्राम्यस्त्रीरा कहणहूँ फूँफा समुद्रसिंहनूँ आपरा बापरो मारणहार जाणियो ॥ ३७ ॥

जदैं उठाहीसूँ पीठहव भुवारो भवनछाँडि कोईक ओघड़ अती ताँरी जमातिरैसाथ वेड़ारै बळ खाडीलाँघि हिंगुलाजदेवी रै धाम पूगियो ॥

---

१ सेवकों को २ जलाने का हुकुम देकर. पति के ३ वस्त्र से वस्त्र (गठजोड़ा) लगाया ॥ ३६ ॥ साहस ४ ठहरने के कारण ५ पीठ की हड्डी के पास से पीठ को फाड़कर ६ मिचेहुए नेत्रवाला ७ बकरी का दूध देकर ८ बालक ९ गेंद खेलते समय ॥ ३७ ॥ १० संन्यासी विशेष जिनको खाखी भी कहते हैं उनकी जमात के साथ ११ नाव के बल से

अर अनन्यभक्तिरा प्रभावकरि जगदंबारो प्रसाद[1] पाइ बारह१२ वर्षरा वयमैं पाछोआइ फूँका समुद्रसिंहनूँ मारि आपरा पिता बिजै सूररो वैर लियो ॥

पीठव बाटीलूँ मारि तिकणरो मस्तक ले हालियो जाणि म हापतिव्रता आपरी भुवा सहगमणरैकाज मांगियो तोभी मस्तक पाछो देर न आयो ॥

जरैं सतीरासापहूँ कलेवरमैं कोढपाइ पुष्कर१ प्रयाग२ प्रमुख तीर्थांमैं न्हाइ औरभी औषधादिक अनेक उपाय करिथाको परं तु पाटव न पायो ॥ ३८ ॥

इणसमय चठी कँवर जगमालरो काको वीरमदेवरो अग्रज परमेश्वर रा परमभक्त राठोड़जैतमाल सळखाँउत सुम्यियाँणौराजकरै जिकण बा ळकपणसूँही चारणलूँ उरथी लगाइ मिलणरो पैण लीधो जिकणथी बारहठ वंसरो बाळकभी दीठाँ गळैलगाइ पिता रै प्रमाण प्रीतिधरै॥

जिणसमय पंद्रह १५.वर्षरा वयमैं पीसण पीठव कूरतैकोढ सुम्यियाँणैं आयो जिकणहूँ राठोड़ जैतमाल नटताँनटताँभी प्रेमरो प्रवाहजणाइ ऊठि मिळियो ॥

---

१ वरदान; वा प्रसन्नता २ चला ३ सती होने के लिये ४ शरीर में ५ आदि ६ नैरोग्यता ॥३८॥ ७ सलखा का पुत्र ८ हृदय से लगाकर ९ नियम. चारणों में १० बारहठ संज्ञा केवल सौदा बारहठों और रोहड़िया * बारहठों को ही है परन्तु यहां सामान्य दृष्टि से सम्पूर्ण चारणों को बारहठ लिखे हैं.

*सीसोदिया क्षत्रियों के नेग सोदाबारहठ शाखा कें चारणों के और राठोड़ क्षत्रियो के नेग रोहड़िया शाखा के चारणों के होने के कारण इन्हीं दो शाखाओं को बारहठ (द्वारपर हठपूर्वक नेग लेने) की पदवी मिलीहुई है जिसके लिये यह दोहा भी प्रसिद्ध है ॥ दोहा ॥ सोदा नैं सीसोदिया, रोहड़ नैं राठोड़ ॥ दुरसावत नैं देवड़ा, ठायां ठावीठोड़ ॥ १ ॥ इसमें देवड़ा शाखा के चहुवाणों के नेग दुरसा के वंशवाले आढा शाखा के चारणों के हैं उपरोक्त दोनों शाखा गौण होने के कारण दुरसावतों को बारहठ पदवी नहीं है और अन्य क्षत्रियों के नेग भी प्राय: चारणों के ही हैं परन्तु किसी क्षत्रिय वंश के साथ ऐसा दृढ नियम नहीं है कि जैसा सीसोदियों के साथ सोदाबारहठों और राठोड़ों के साथ रोहड़िया बारहठों का है इसकारण बारहठ संज्ञा इन्हीं की है.

जिणमहाभक्तरो अंगसंगहोतांहीं आपरोकोढ गमियो जाणि मीसण राठोड़नूँ दसमाँ१०सालिग्राम१ इसड़ो बिरुददियो ॥३९॥

भक्तिरै प्रभाव जैतमाल औरभी इसड़ा अनेक दुष्कर काम करि आपरो नाम ख्यातकीधो सो अजेभी भक्तलोकाँरी नामावलीमेँ प्रधानता जणावै ॥

किताक कालपछैँ अठी बंबावदारे नरेस हालू १८२।१ अनेक उपायकरियाको तोभी स्वास्थ्य न पायो जाणि प्रतिदिन वार्द्धकनूँ वर्द्धमान देखि वर्षतीन३रा निरंतर ज्वरथी पाटवैं पाड़ मासार राज विक्रमरा चउदहसैएगारह१४११रा सकमैं आपरो सीस जोगिणीनाम देवीनूँ चढाइ दीधो ॥

जिणकेडै इणरा पुत्र चन्द्रराज १८३।१ रो राज सीसाड़ाँ चो ४ तरफसूँहीं दावणरो बिचारकीधो ॥ ४० ॥

दोहा ॥

सक तेरह इगुणीस१३१९ सक, हालू१८२।१ संभव होय ॥
भू नव गुण ससि१३१९ भाँजियो, भड़ संकोडर सोय ॥ ४१ ॥
सक मयंक भू रुद्र१४११, देवीनूँ सिर दीध ॥
कीधा जिण पणपण कलह, लेख इसै सुत लीध ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोलचलुक्यासि १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्याविहितव्याख्यावेलाख्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवरसिंह १८४।१ समाप्त

१ परमेश्वर के दसवें अवतार का बिरुद दिया (जैतमाल के वंशवाले राठोड़ों को चारण लोग अब भी दसवां शालिग्राम कहते हैं)॥३९॥ २ बुढापे को बढता हुआ देखकर ३ नैरोग्यता पाकर ॥ ४० ॥ विक्रम के शक के तेरह सौ उन्नीस के ४ सम्वत् में ५ जन्म हुआ ६ मथन ॥ ४१ ॥४२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चलुवा के कुल वर्णन के कारण हड्डाधिराज आस्थिपाल के वंश और अनुवंश की क-

मयकप्राप्तचित्रकूटाधिपत्यराणालक्षपति १ राष्ट्रकूटवीरमदेव २ त त्पुत्रचुण्ड ३ तत्पितृव्यकजैत्रमल्ल ४ बारहठसिंश्रणपूष्ठभव ५ प्रवृ त्तिप्रस्तवनेशैशवमूढराणालक्षपतिबुन्दीविध्वंसानन्तरभत्यवसानस- न्धास्वीकरण१, भट १ मन्त्रि २ वर्गकल्पितबुन्दीदुर्गमध्यस्वाश्रि तपूर्वहल्लू १८२।१ द्वितीय २ पुत्रकुम्भकर्ण १८३।२ सप्रसभस्थाप न २, कृत्रिमबुन्दीपराजयमुमूर्षुकुम्भ १८३।२ राणावर्णितसहस्र १००० वाहिनीविध्वंसन३,पलायितप्राप्तस्वास्थ्यप्रत्यभिमुखराणानी ककल्पितबुन्दीविजयकुम्भकर्ण १८३।२ मरण १ जीवन २ संदि ग्धपक्षद्वय २ प्रख्यापन४, कथितपूर्वमाडंगनगराधीशयवनविशेषा श्रितनीतनिखिलनेम १ राष्ट्रकूटवीरमदेव १ चुण्ड२ नामस्वपुत्रजन नानन्तरतज्जामातृमारणादिमन्तुपञ्चक५प्रमुखानेकानर्थार्जन ५, स्व प्रभुप्रच्छन्नयवनपरिकरविधिविशेषविश्रामितवाजिनीविकलवीरमदे

धा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र बरसिंह के समय में होनेवाला चीतो ड़ के स्वामिपन को प्राप्तहुआ महाराणा लाखा, राठोड़ वीरमदेव, उसका पुत्र चूंडा, उसका काका जैत्रमल्ल, बारहठ सीमाण पीठवा, इन की प्रवृत्ति के प्र- स्ताव में बालकपन के कारण मूढ राणा लाखा का बुन्दी का विनाश किये पी छे भोजन करने की प्रतिज्ञा को लेना, (कृत्रिम बुन्दी को बिगाड़ने और महा राणा लाखा की प्रतिज्ञा लेने की कथा मेवाड़ के इतिहास में नहीं है). उमराव और मन्त्रि वर्ग से कल्पित कियेहुए बुन्दी के गढ में पहिले अपने आश्रित हल्लू के दूसरे पुत्र कुम्भकरण को हठ पूर्वक रखना, कृत्रिम बुन्दी को पराजय करने पर मरने की इच्छावाले कुंभकर्ण का राणा की बनाई सहस्र सेना को भगाना, भागकर और स्वास्थ्य पाकर फिर साम्हने आईहुई राणा की फौज के कल्पित बुन्दी को विजय करने पर कुम्भकर्ण के मरने और जीने इन दोनों पक्षों के सन्देह की सूचना करना; पहिले कहेहुए माडंगनगर के अधीश यव न विशेष के आश्रित सम्पूर्ण में से आधा राज्य प्राप्त करके राठोड़ वीरमदेव का चूंडा नामक अपने पुत्र के जन्म के पीछे उस यवन के जमाई को मारने आदि पांच अपराधों को आदि लेकर अनेक अनर्थों को इकट्ठा करना, अपने मालिक के छाने यवन की परगह का किसी प्रकार से घोड़ों को ठहराकर

धाविध्वंसन ६, स्वौरसपुत्रचुण्डसहितपलायिततत्पत्नीमाङ्गलिकीप्र तिहारप्रतोलीपालधन्वदेशस्थद्वारहठाऽऽल्लहसमाख्यवशबहुवर्षविहा न ७, द्वारहठप्रत्यभिज्ञातचुण्डेन्दोपटाङ्गिप्रतिहारभेदविशेषप्रधानपरि णायनानन्तरहड्डेशहल्लू १८२।१ जितपूर्वप्रतिहारपृथ्वीशहम्मीरनि स्सारणपुरस्सरवीरमदेविमण्डपपुरमहिषीकरण ८, श्रुतजनकध्वंस वीरमदेवद्वितीय २ पुत्रगोगराजदलाख्यनिर्मन्तुम्लेच्छमारणकरवा लप्रहारयाथातथ्यश्लाघा १ गर्हा २ सूचन ९, प्रत्यागतसजन्यजन परिणीतम्लेच्छराजपुत्र १ मार्गमिलितगोगराज २ मिथोमरण १०, वारू १ टेकरा २ रुयनगरन्युषितपलायितप्रतिहारराजहम्मीरवंशी-यविशेषव्याघ्रटपुत्रव्यापादनानन्तरपूर्वदेशान्तरुच्चखेटादिप्रान्तसमा क्रमणसंज्ञापन ११, प्राप्तमण्डपपुरराष्ट्रकूटराजचुण्डसमुद्भवशत्रुश ल्ल्य १ रणमल्ल २ दिपुत्रचतुर्दशक १४ भाविप्रादुर्भावप्राप्तिनिवेद न १२, ज्ञातखटदौर्लभ्यदुष्कालगौर्जरजनपदपूर्वप्रान्तप्राप्तस्वीय

मिकल वीरमदेव को मारना, अपने औरस पुत्र चूँडा सहित भगीहुई उस (वी रमदेव) की स्त्री मांगलियानी का प्रतिहार के पोलपात मारवाड़ देश में रहने वाले आल्हा नामक बारहठ के वश में बहुत वर्ष बिताना, ईंदापदवीवाले पड़िहारों की किसी शाखा के प्रधान का बारहठ से पहिचान करायेहुए चूंडा को अपनी पुत्री ब्याहकर हाडों के पति हल्लू से प्रथम विजय कियेहुए प्रतिहा र राजा हम्मीर को निकाल कर आगे वीरमदेव के पुत्र को मंडोवर का राजा करना, पिता को माराहुआ सुनकर वीरमदेव के द्वितीय पुत्र गोगराज का द ला नामक निरपराधी म्लेच्छ को मारने में खड्ग के प्रहार की यथार्थ स्तुति और निन्दा की सूचना करना, ब्याहकर पीछे आयेहुए बरात के लोगों सहि त म्लेच्छराज के पुत्र और मार्ग में मिलेहुए गोगराज का परस्पर माराजाना, वारू और टेकरा नामक नगर में वास करके भगेहुए प्रतिहार राजा हम्मीर के वंशवालों का वघड़ावतों को मारकर पूर्व देश में 'ऊंचाखेड़ा' आदि प्रान्तों को दबाने की सूचना करना, मंडोवर लेकर राठोड़राज चूंडा के पुत्र शत्रुशल्य, रणमल्ल आदि चौदह पुत्रों के आगे आनेवाले समय में जन्म हो ने की प्राप्ति बताना, दुष्काल में तृण की दुर्लभता जानकर गुजरात देश के

ग्रामजनताकक्कविकुलपरपुरुषविजयशूरतन्नत्यरैवतराजशरवधिको पटङ्किचालुक्यविशेषप्रतोलीपात्रवार्त्तिकसमुद्रसिंहस्वसीमस्थापन-१३, मिश्रणस्वलघुभगिनीवार्तिकपरिणायनानन्तरपरिणायनोत्तर दिनान्तराच्छोटनमारितैक १ स्हुलोमकप्रत्यागतानुचितविरोधजामिप१ शाल २ समरच्छिन्नमूर्द्धविजयशूररुण्डशत्रुत्रि ३ भटीपातनानन्तरपतन१४,निवारणागतनिजननान्द्कररसमर्पितविदारितपृष्ठमार्गनिष्कासितपृष्ठभवनामाङ्कितस्वभ्रूणविजयशूरसुचरित्रासहधर्मिणी सहगमन१५, ज्ञातस्वजनध्वंसकसमुद्रसिंहत्यक्ततत्पस्त्यप्राप्तहिंगुलाजाम्बिकाप्रसादप्रत्यायातहतसमुद्रपितृभगिनीप्रार्थनप्रतीपद्वादश१२ वर्षवयस्कपृष्ठभवतन्मस्तकानर्पण१६, सहगामिनीसतीशापप्राप्तकुष्ठकृताऽनेकोपचारपञ्चदश १५ वर्षवयस्कपृष्ठभवपरमभागवतराष्ट्र-कूटजैत्रमल्लसम्भरस्पर्शतद्रुजोल्लाघीभवन१७, मिश्रणमहाभक्तमहिप विरुदविशेषवसुधेशवर्गविख्यापन १८, द्विनवति ९२ वर्षवयस्कयो-

पूर्वप्रान्त में गयेहुए अपने ग्राम के लोगों सहित ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) के पर पुरुष विजयशूर को वहांवाले रैवत के राजा सरवहिया पदवीवाले किसी सोलंखी के पोळपात वारी समुद्रसिंह का अपनी सीमा में स्थापित करना, मीशण का अपनी छोटी बहिन को बारी को व्याहने के कुछ दिनों पीछे शिकार में एक खरगोस मारकर पीछे आने पर अनुचित विरोध से बहिनोई का साले के मस्तक को युद्ध में काटना और मस्तक कटने पर भी विजयशूर का शत्रुओं के तीन वीरों को मारकर गिराना,रोकने के लिये आई हुई अपनी ननँद के हाथ में पीठ को चीरकर निकालेहुए'पीठवा'नामक अपने बालक को देकर विजयशूर के साथ पतिव्रता स्त्री का सती होना, समुद्रसिंह को अपने पिता का मारनेवाला जानकर, उसका घर छोडकर, हिंगुलाज देवी का वरदान पाकर, पीछे आकर, समुद्रसिंह को मारकर, पिता की बहिन की प्रार्थना के विरुद्ध बारह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का उसके मस्तक को नहीं देना, साथ गमन करनेवाली सती के शाप से कोढ पाकर अनेक इलाज कराकर पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का परम भगवद्भक्त राठोड़ जैत्रमल्ल के पास जाकर उसके स्पर्श से उस रोग से नैरोग्य होना, मिश्रण का महाभक्त राजा को राजाओं के समूह में विशेष विरुद से प्रसिद्ध

गिनीनामोपहारीकृतस्वमूर्द्धहड्डाधिराजहल्लू १८३।१ जन्म १ मरणा२ दिशकसूचन१९, तत्पुत्रपृथ्वीशचन्द्रराज१ ८३।१ पृथ्वीप्रत्यनीकचक्रा क्रमणविचारणं २० त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥

आदितः षष्ठ्युत्तरैकशततमः ॥ १६० ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक बिक्रम सिव सक्करी १४११, हल्लू १८३।१ मरन निहारि ॥
बैरिनको जिततित बहुरि, बढत प्रताप बिचारि ॥ १ ॥
दिल्लीसहिँ दब्बन दुजन, अप्रगल्भ लखि ईहँ ॥
गिरिसिर तारादुर्ग किय, बुंदियनृप बरसीह ॥ १८४।१ ॥ २ ॥
सीमा पुब्बँ १ तड़ागसौँ, चामुंडा २ लग चाहि ॥
तारागढ तिम समय तकि, बंधिय बिरुद निबाहि ॥ ३ ॥
साहमुहम्मद १५ मरिग लक, बाजि ब्योम बउ चंद्र १४०७ ॥
तखतलह्यो, फीरोज १६ तँहँ, तुगलक ३ साह स्वतंत्र ॥ ४ ॥
इयामसुख बहुगुन बिदित, यामैं तदपि अनेक ॥
बंगा १दिक सूबा प्रबल, टरे पकरि रुस्टेक ॥ ५ ॥
अज्जं १ जवन २ जिततित अधिप, लग्गे परं भुवलेन ॥
यातैं नृप बुंदिय अचल, अंकिय दुर्गम ऐन ॥ ६ ॥
प्रथम १ ब्याह बरसिंह १८४।१ पट्ट, अजयसिंहजा आनि ॥

करना, बानवे ९२ वर्ष की अवस्था में अपने मस्तक को योगिनी नामक देवी की भेट करनेवाले हड्डाधिराज हल्लू के जन्म मरण आदि के सम्वत् की सूचना करना, उसके पुत्र राजा चन्द्रराज की भूमि को शत्रुओं के समूह का दाबने का विचारने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ ॥ १३ ॥ और आदि से. १६० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १निर्बुद्धि २ चेष्टा; अथवा उद्योग ॥ २ ॥ ३ पूर्व की सीमा ॥३॥ ४॥ बराबर होने का ४ हठ ग्रहण करके ॥ ५ ॥ ५ आर्य ६ पराई भूमि को लेने लगे. बुन्दी के ७ पर्वत पर ८ घर (गढ) खड़ा किया ॥६॥ अजयसिंह की१पुत्री

प्रभावती १८४।१ गुन सोल पट्टु, किय *दयिता हितकानि ॥७॥
जो +महिषीहुव हम्म १८३।१ जब, कासीनिवसन कीन ॥
कम दूजो २ उपयम कियउ, पुनि इहिं समय प्रवीन ॥ ८ ॥
सो खुसाल कूरमसुता, जंवारेगढ़ जाइ ॥
अजिजनकुमारि १८४।२ सनाम यह, ब्याहिय त्याग बढाइ ॥९॥
पुनि अनुपम प्रामारकी, कन्या छत्रकुमारि १८४।३ ॥
गा व्याहन संचोरगढ, बल खुंदीस बिथारि ॥ १० ॥
कछवाहीके ब्याहके, अंतरही नृप एह ॥
पंत्तो[1] ब्याहन संचपुर, गढ प्रामारन गेह ॥ ११ ॥
करि बिवाह दे वसु[2] कविन, दलंत अरातिन[3] दर्प्प[4] ॥
दुलही जुग २ सेवित दुलह, आयउ बुंदिय अप्प ॥ १२ ॥
पट्टरागिनी[5] १८४।१ के प्रसव, नभयो चिरहु[6] निहारि ॥
सक रवि सक्करि १४१२ इम सुपहु, ब्याह्यो उभय २ बिचारि ॥१३॥
तनय छ[7] ६ हायनलग[8] तदपि, हुव दुव २ तेहु रहेन ॥
नियति[9] नामपुव्वहि[10] मरन, किय इम प्रथम १ कहेन ॥ १४॥
सक अट्ठारह सक्वरी १४१८, अब बिक्कमभव आत ॥
कछवाही १८४।२ के हुव कुमर, बैरिसल्ल १८५।१ बिख्यात॥१५॥
तीजे३ अब्दहि अनुज तस, नृपसुत जावदु १८५।२ नाम ॥
प्रकट्यो कछवाही प्रसव, दूजो२ गुनउद्दाम ॥१६॥
सो तीजो३ प्रामारि १८४।३ भव, निम्मदेव १८५।३ जस जुत्त॥
वौद्धकमें[11] बरसिंह १८४।१ नृप, पाये इम त्रय३ पुत्त ॥१७॥
रावखरान[12] इत सुत लहिय, अनघ[13] चुंड अभिधान[14] ॥

* प्यारी ॥ ७ ॥ + पटरानी ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १ गया ॥ ११ ॥ २ धन ३ शत्रुओं का ४ दर्प (घमंड) ॥ १२ ॥ ५ पटरानी के ६ बहुत समय पर्यन्त ॥ १३॥ ७ छः ८ वर्ष पर्यन्त ८ तोभी ९ भाग्य के वश १० नामकरण होने से पहले ही मरगये ॥ १४-१५-१६ ॥ ११ वृद्धावस्थामें ॥ १७ ॥ राणा १२ लाखाने १३ पापरहित. चूंडा १४ नाम

बरनिय छहे ६ रासि बहु, जगजस बिदित सुजान ॥१८॥
अब्द बीस२०लग अंतर सु, बिनु पूर्वा१पर२ बोध ॥
तिनसों अंतर अधिक तब, वत्तन समय बिरोध ॥१९॥
तिम अनिरुद्ध १९८ चरित तक, ऐसो अंतर आइ ॥
जँहँ न असंगत जानिये, संभव उचित सुहाइ ॥२०॥
कहि इक्क१ रु अपर२हिं कहैं, कहुँक अनंतर काल१ ॥
कहुँ अंतर२ समकाल३ कहुँ, पै संभव महिपाल ॥ २१ ॥
कहुँ पहिली १ पीछैं कहुँक, पीछैं २ हुव पहिलैं २ सु ॥
बढि पै हायन बीस २० सों, होइ जु पुब्ब नहैंसु ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत मंडपपुर ईस चुंडसुत कहिय चउद्दह १४ ॥

क ॥ १८ ॥ पूर्वापर का १ ज्ञान नहीं होने के कारण इन कथाओं में बीस वर्ष का अन्तर है और यदि इससे अधिक समय का अन्तर होवे तो कथा में समय का विरोध होसक्ता है ॥ १९ ॥ जिस प्रकार अनिरुद्धसिंह के चरित्र तक इसी प्रकार का अन्तर आवेगा जिसको असंगत नहीं जानना चाहिये जहां जैसा सम्भव होवै तहां तैसा जानलेवैं ॥ २० ॥ एक को कहकर दूसरे को किसी दूसरे समय में कहते हैं और कहीं एक समयवाले को दूसरे समय में कहते हैं, परन्तु हे राजा रामसिंह! उसके होने में सन्देह नहीं है ॥ २१ ॥ कहीं तो पहली कथा पीछे है और कहीं पिछली कथा पहिले है, परन्तु बीस वर्ष से बढकर आगे अन्तर नहीं है ॥ २२ ॥

---

*यहां ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने पूर्वापर का बोध नहीं होने के कारण बुन्दी के रावराजा अनिरुद्धसिंह के समय पर्यंत कथाओं में बीस वर्ष का अंतर होना लिखा है, परंतु कई स्थानों पर सौ सौ वर्ष के अंतर पायेजाते हैं; इसका कारण ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वीराजरासा के कारण पृथ्वीराज के संवत् में सौ वर्ष का अंतर होगया है और पृथ्वीराजरासा के उस संवत् को सही मानकर पिछले बड्वाभाटों ने अपनी बहियों में पृथ्वीराज के पिछले राजाओं के कल्पित संवत् लिखकर पृथ्वीराजरासा के उस कल्पित संवत् से पिछले संवतों को श्रेणीबद्ध करदिये हैं. यदि पृथ्वीराजरासा की उस भूल को पिछले समय के बड्वाभाट समझ लेते तो यह सौ वर्ष का अंतर नहीं आता परंतु पृथ्वीराजरासा के संवत को सत्य समझने के कारण ही राजपूताने के संपूर्ण राजाओं की वंशावलियों में उक्त सौ वर्ष का अंतर हुआ है और ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल)भी पृथ्वीराजरासा की अनेक कथाओं का मिथ्या होना सिद्ध करने पर भी

सत्रुसल्ल तिम सवन महंत वरनिय बिरोधमइं ॥
ज़ास अनुज रनमल्ल २ सोहु अनई अग्रजसम ॥
तात अनंतर सत्रुसल्ल १ भो भूप कहेक्रम ॥
रनमल्ल २ समर हनि सिंधुलन लरि सोम्भतिपुर दब्बिलिय ॥
सह सट्ठित्रिसत३६०निवसथ सकल करि अधीन तँहँ राज्यकिय२३
सत्रुसल्ल १ नृप सूनु नाम नरबद २ हुव निर्दय ॥
इक अँह तात १ तनुज २ मंत्र मिलि किय अधर्ममय ॥
करि महिमानी कपट बुल्लि रनमल्ल १ जुत्त बल ॥
रत्ति हनहिं जब रहहिं तब सु सोम्भत अप्पन तल ॥
इम मंत्रि तत्थ पठयो यहहि नरबद २ सुत बुल्लन अनुज ॥
नृपराम२०३लखहु कलिकेन्टपन भक्खन वंसखुजातभुज॥२४॥

॥ दोहा ॥

अनई चिंतिय अप्पउर, रनमल्ल १ हु सुहिरीति ॥
हनन उतारयो थानहित, प्रकटि भतीजहिं प्रीति ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

समयरत्ति तस सिविरं भेजि नानाबिध भोजन ॥

१वडा. विरोध में भी२वडा ३न्याय रहित. पिता के ४पीछे५ सिन्धुल क्षत्रियों को मारकर ६ गाव ॥ २३ ॥ एक ७ दिन ८ पिता और ९ पुत्र ने १० सेना सहित ११ रात्रि में १२ हे राजा रामसिंह!. वंश के १३ खाने में भुज खुजला ते हैं ॥ २४ ॥ १४ मारने को ॥ २५ ॥ १५ डेरे में

संवत् वही सत्य मानलिया है; इसीकारण से इस ग्रंथ (वंशभास्कर) में चतुर्थराशि में पृथ्वीराज के चरित्रों से लेकर सप्तमराशि में अनिरुद्धसिंह पर्यंत कई स्थानों में इन्हीं सौ वर्षों की भूल हुई है इसमें कहीं पर सत्य संवत् भी आमिलते हैं परंतु अधिकतर उक्त अंतर ही पायाजाता है. यद्यपि हमारे पास राजपूताना की सब ही रयासतों के इतिहास विद्यमान हैं जिसमें शुद्ध संवत् लिखेहुए हैं; परंतु वे सभी अंतर यहां लिखेजावैं तब तो इस ग्रंथ की अधिक कथाओं को बदल देना पड़े, परंतु ऐसा करना हमारा अभीष्ट नहीं है केवल बड़ी बड़ी भूलों पर नोटकरदिये गये हैं और आगे भी यथाशक्ति करदिये जावेंगे; परंतु यहां पर उक्त भूल का कारण दिखाकर केवल दिशा दर्शन करदिया है सो पाठक लोग स्वयं समझलेवैं ॥

मदिरापाइ प्रमत्त जास किन्न न वह[1] को जन ॥
बलि लै निजभटबर्ग रत्ति काका सौप्तिकरचि[2] ॥
कट्टिय भ्रातृज[3] कटक बीच नरबद रहिगो बचि ॥
प्रहरनं[4] प्रहार दृग[5] तस दुव २ हि गयेफुट्टि कटि गातहू[6] ॥
बहु घाय लग्गि परिगो बिकल जियहित लोचन जातहू॥२६॥

॥ दोहा ॥

कपटफेनँ[7] निजवदनकरि, व्याकुल स्वास बढाइ ॥
सठ लग्गो कर १ पय २ घिसन, द्रुत असु[8] जात दढाइ ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

नरबद मरतनिहारि भटन जामिक[9] धरि निर्भय ॥
लिय बैभव तस लुट्टि दीप प्रद्योत बीतदय[10] ॥
महलआइ रनमल्ल सयन किन्नौं पतनीसह ॥
कछुउपाय इत कढ़ि अंध भग्गो नरबद यह ॥
सो ग्राम सीरवादे प्रबिसि घुसि निवस्यो इक जट्टघर ॥
रविउदय सुन्यौं रनमल्लजगि सो भतीज कढिगो सडर ॥२८॥
दयो भटन तिन्ह दंड जिते रक्खे तिहिं जामिक ॥
सजि निजकटक समत्थ गयो बासर[11] आगामिक[12] ॥
बल मंडपपुर बेढि[13] लूटमंडत प्रबिस्यो लरि ॥
राजद्वार निज रक्खि आनि मारिय अग्रज अरि ॥
दहि सत्रुसल्ल रनमल्ल द्रुत[14] मंडोउर भूपति भयो ॥
नरबद दुरयो सु खोजन निपुन प्रचुर[15] दूत गन प्रेसयो[16] ॥ २९ ॥

---

१ कौन मनुष्य है यह नहीं जानसका; अथवा मदिरा पाकर उसको प्रमत्त किया जहां कोई अन्य मनुष्य नहीं था. २ रातिवाह ३ भतीजे की सेना को ४ शस्त्रों के प्रहार से उसके दोनों ५ नेत्र फूटगये. और ६ शरीर भी कटगया ॥२६॥ अपने मुख में कपट के ७ झाग बनाकर ८ प्राण निकलना ॥२७॥ ९ पहरायत रखकर. उस के वैभव को दीपकों (मशालों) के प्रकाश में उस १० निर्दय ने लूटलिया ॥२८॥ १२ आनेवाले ११ दिन में १३ घेरकर १४ शीघ्र १५ बहुत १६ भेजा ॥ २९॥

॥ दोहा ॥

कुमरीइक १ रनमल्लकै, क्रम चोवीस २४ कुमार ॥
अक्खयराज १ रु करन २ इम, अनुजेनि चंप ३ उदार ॥ ३० ॥
सुत खंधिल ४ रनधीर ५ नर, सब कलिकृत्य सुबोध ॥
इत्यादिक कतिकन अनुज, जोध १ नाम रनजोध ॥ ३१ ॥
इत बंबावद गढ अधिप, चंद्रराज १८३।१ चहुवान ॥
हडु १८२।१ सुत जाकौंकहिय, अपर २ चंच१८३।१ अभिधान॥३२॥
आयुभुग्गि बिधिउचित इहिं, दिय तजि चंद्र १८३।१हु देह ॥
तनय धीर १८४।१ अभिधान तस, अधिपभयो तँहँ एह ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपति बरसिंह १८४।१ सुनत उपयँम इत सज्जिय ॥
पल्लहनगढ प्रमार हेरि अप्पन समता हिय ॥
पट्टिमदेवी १८५।१प्रथम १सुता दलसाह सयानी ॥
वैरिसल्ल १८५।१ वह ब्याहि कर्मनआनी कुमरानी ॥
चालुकी सदाकुमरि१८५।२।१सु प्रथम१जनक बिबाह्योजावदुव॥
भुवभागपाइ पीछैं यहहु त्रय ३ बिबाह पुनि करतहुव ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

परन्यौं दूजी २ पट्टलहि, वैरीसल्ल १८५।१ बहोरि ॥
दहर भारमल्लहसुता, मानकुमरि १८५।२ हितजोरि ॥ ३५ ॥
निम्मदेवं १८५।३ कुमरहिं नृपति, पुरवालेर पठाइ ॥
सीता १८५।३।१ हरिदाहिमसुता, परिनायउ समपाइ ॥ ३६ ॥

॥ सचरत्नागद्यम् ॥

हड्डाधिराज बरसिंह १८५।१ नैं मध्यमकुमार जावदू १८५।२कों वसुधाकेबिभागमैं बंसीपुरदयो ॥

---

१ छोटा २ चांपा (इसके वंश के चांपावत कहाते हैं) ॥३०॥ ३ युद्ध के कामों चतुर ॥३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ४ विवाह ५ सुन्दर ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

सोही अपनौं आवासराखि जाबदू १८५।२ महाघाटीधर गवदू नाम भिल्लकौं भंजि अनेक आहवनमैं प्रसंसापाइ बुंदीसौं छ ६ कोस ईसान आँसानपर नंदननाम निर्वसथ बसावतभयो ॥

ताकेबंसके समस्तही हड्डनमैं एगारम ११ भेद पाइ जावदूके १।७।११ कहाये ॥

जहाँ जाबदू १८५।२ कै सारन १८६।१ अरु सेव १८६।२ दो २ पुत्रभये तिनमैं सारन १८६।१ कै सामंत १८७।१ सेव १८६।२ कै मेव १८७।१ भयो तिनकरि निजनिजकुल सामंतके ११।१ मेवाउत्त११। २ऐसैं जाबदू १८५।२ के जननके द्वै २ ही भेद प्रसिद्ध पाये ॥३७॥

॥ दोहा ॥

जाबदु १८५।२ कुल इम भेद जुग २, द्विरदन तोरन दंत ॥
कहियत नृप सामंतके ११।१, मेवाउत्त ११।२ महंत ॥ ३८ ॥
निम्म १८५।३ हिं दियउ बिभाग नृप, नगरनाम नवगाम ॥
पुरबुंदियसन पच्छिम २ जु, बसहि त्रि ३ कोस विराम ॥ ३९ ॥
निम्मदेव१८५।३संतति निखिल, निम्माउत्त ।५।२।८।१२ कहाइ
हड्डनभेद सु बारहम १२, यहँसंख्या मिति आइ ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपति बरसिंह १८४।१ जरठ गंगा १ सूकर २ जँहँ ॥
पत्तो पहु कछुपर्व त्रय ३ हि रानिन उपेत तँहँ ॥
सुबरन पंचसहस्र ५००० सुरभि सतपंच ५०० सुलच्छन ॥
बिप्रनहित दिय बंटि पारि बिस्मय परपंच्छन ॥
यह खिननिहारि तोमर अमर स्वभट अचानक सज्जि सब ॥
पहिलैंजु हम्म१८३।१जित्यो प्रथित वह दव्विय पुर टुंक अब ॥

---

१ निवासस्थान. गवदू नामक बडे२धाड़ायती (डाकू) भील को मारकर. ईशान३ दिशा पर ४ग्राम५वंश के ॥३॥६हाथियों के दांत तोड़नेवाले ॥३८॥ तीन कोस के७विश्राम पर ॥३९॥४०॥८बुढापे में. गङ्गा के९सोरमघाट पर गया।१०शत्रुओं को

॥ दोहा ॥

भीस नैनवापति *दभिक, सा हरिसुत लै संग ॥
पुरडग्गीपति अमर इम, दब्बिय टुंक सु दंग ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात् ॥

अमर टुंक अंगमि रु आइ बुंदिय घन घेरिय ॥
नैननगरके नाह दभिक ÷तदुचित सहायदिय ॥
मंडिय कुमरन अमित सज्जि तारागढ संगर ॥
घनतोपन निर्घात पटकि व्याकुल किन्नैं पर ॥
इत लालसिंह १८४१२ नृपकेअनुज गैनोलीसिन बीरगति ॥
द्रुत१ आइ असह्ह रतिबाहदिय किय मद्रुत लिय मारि कति॥४३॥
दहिया १ तोमर २ दुवं २ हि मिले भज्जत बिगारिमुख ॥
निहिनिहि नैनपुर जाइ मन्निय जीवनसुख ॥
बुंदिय पुनि बरसिंह १८४१२ आइ कुमरन सिराहि अति ॥
दियउ रीझि सोदरहिं दुर्ग मक्खीद महामति ॥
दल सज्जि निखिल बिजई दुसह लोचनपुर द्रुत बिंटिलिय ॥
सकुटुंब दभिक१ तोमर२ सहित कढि आलंबन टुंककिय ॥४४॥

॥ दोहा ॥

लरि करउर जिम हम्म१८३११ लिय, पहिलैं दहियन पेलि ॥
लोचनपुर बरसिंह १८४११ लिय, खेल असिन तिमखेलि ॥४५॥
निजथाँनाँ धरि नैनवा, रच्छक बीर बिसेस ॥
चिंतिय नृप अग्गैं चलन, दब्बन टुंक पदेस ॥ ४६ ॥
भाखिय तँहँ अप्पन भटन, दुर्लभ जय विधिदिन्न ॥
उयउ हुंक तिहिं सैंटि गढ, लोचनपुर २ तुमलिन्न ॥ ४७ ॥

॥ ४१ ॥ * दहिया ॥ ४२ ॥ ÷ उसके उचित सहाय दी. १ भगाये ॥ ४३ ॥ २ नैणवा नामक नगर ३ आधार ॥ ४४ ॥ ४ तलवारों का खेल खेल कर ॥४५ ॥ ४६ ॥ ५ बदले में ६ नैणवा को ॥ ४७ ॥

बिच दाहिम १ चालुक २ बहुत, नृप हं[1]गदंग निराइ ॥
अग्गैंबजते मित्र अब, रिपुहुव सीम भिराइ ॥ ४८ ॥
दाहिम १ तोमर २ मिलि दुहु रन, सज्जिग टुंक सिपाह ॥
अहैं[2]बहु लग्गहिं अप्पनैं, नैरैं[3]चलहु नरनाह ॥ ४९ ॥
अक्खियनृप बार्द्धक[4] उचित, मरनदेहु रनमाँहिं ॥
प्रसभ मोरि आन्यों तदपि, जोधन लंघिन जाँहिं ॥ ५० ॥
बंबावद धीर १८४।१ जु बदिय, चंद्र १८३।१ तनय चहुवान ॥
जाकोनाम द्वितिय२ जग, कहत जु चंच कथानें[5] ॥ ५१ ॥
पहिलैं अरिन उपायकिय, दब्बन चंच१८३।१ प्रदेस ॥
दीस्यो तब रोधक[6] दुसह, रिपु बरसिंह१८४।१ नरेस ॥ ५२ ॥
अंग तजिय बरसिंह१८४।१ अब, जय संभव इम जानि ॥
धरनी दब्बन धीर१८४।१की, अरिगन लग्गे आनि ॥ ५३ ॥
बसु रस गुन भू१३६८ मित बरस, जँहँ बिक्रम सक जात ॥
भयो नृपति बरसिंह१८४।१ भवँ[7], पुरबुंदिय तँहँ प्रात ॥ ५४ ॥
गुन नव तेरह१३९३ साकगत, धरिय छत्र सिर धीर ॥
तारागढ[8] बंधिय तिमहि, सिव चउदह१४११ सक सीरें[9] ॥५५॥
सुत संभवँ[10] चिरैं[11]लों चहत, गहिय न रानिय गर्[12]ब्भ ॥
रवि चउदह१४१२ सक तव रचे, दुव२ पुनि ब्याह अदँ[13]ब्भ ॥ ५६ ॥
सक बसु ससि चउदह१४१८ समय, बय पचास५०समैं[14] बित्ति ॥
पायउ सुत त्रय३ वृद्धपन, किय बितरन[15]१ रन२ कित्ति ॥५७॥
सकत्रि बेद चउ इक्क१४४३ समैं[16], जनक अस्थि[17]लैजाइ ॥

१ नैणवापुर को नजदीक लेकर ॥४८॥ बहुत २दिन. हे राजा अपने ३नगरचलो ॥४९॥ ४ बुढापे के ॥५०॥ ५ कथाओं में ॥५१॥ ६ रोकनेवाला ॥५२॥५३॥ ७ जन्म ॥ ५४ ॥ ८ बुन्दी के गढ का नाम तारागढ है. चौदह सौ ग्यारह का सम्वत् ९ शामिल होने पर ॥ ५५॥ पुत्र का १०जन्म ११बहुत समय से१२ गर्भ १३ बडे(उत्तम)॥५६॥ पचास १४ वर्ष की अवस्था बीतने पर १५ दान में. ॥ ५७ ॥ १६ वर्ष में. पिता की १७ हड्डियां लेजाकर

सूकर डारे सुरसरितें, बितरन१ न्हान२ विधाइ ॥ ५८ ॥
ता१४४३हि वरस रचि रन तुमुल, भीम १ रु अमर२ भजाइ॥
लोचनपुर चिरंगत लयो, जिततित अरिन लजाइ ॥ ५९ ॥
वरस बयासी८२ भुग्गि वय, नभ सर सकरि१४५० मानं ॥
सक जावत बरसिंह१८४।१नृप, सुरपुर पत्त सुजान ॥ ६० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचण्डासि १ वंश्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह १८४।१ चरित्रे सूचितशकसमयदिल्लीशमुहम्मदा१५नन्तरप्राप्तपट्टफीरोजसाह १६ सामन्तगणप्रातीप्यप्रबुद्धसमालोचितदेश १ काल २ बरसिंह १८४।१ तारादुर्गनिर्माणसमयानन्तरवार्द्धकछुप्तानपत्यनृपकौर्मी १ प्रामारी २ पत्नीद्वय२ परिणयन१, सप्रसूनिश्चयबारसिंहिवैरिशल्य १८५।१ जावदु १८५।२ निम्मदेव १८५।३ कुमारत्रय ३ समुद्भवन२, चित्रकूटाधिराजराणालक्षधीरज्येष्ठकुमारचुण्डप्रादुर्भवन३, समय

१सौरमघाट* पर २ गङ्गा नदी में ३ दान ॥ ५८ ॥ ४ भयङ्कर ५ बहुत समय से ॥ ५९ ॥ ६ प्रमाणवाले सम्वत् के जाने पर. स्वर्ग ७ गया ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुंदीनरेश बरसिंह के चरित्र में जिसके शक समय को सूचित किया है ऐसे दिल्लीश मुहम्मद के पीछे फीरोजशाह के तख्त पर बैठने पर उमराव गणों के विरुद्ध होने से चेतेहुए और देश काल को विचारनेवाले बरसिंह का तारागढ बनाने के समय के पीछे बुढापे के छूने पर अर्थात् वृद्ध होने पर सन्तान न होने के कारण कछवाही और प्रामारी दो स्त्रियों से विवाह करना, माता सहित निश्चय कियेहुए बरसिंह के पुत्र वैरिशल्य, जावदू और निम्मदेव तीन कुमारों का जन्म होना, चीतोड़ के राजा राणा लाखा के ज्येष्ठ कुमर चूंडा का जन्म होना, समय के विरुद्ध वृत्तान्त वर्णन करने के कारण भू

* पुराणों में कथा है कि वराह अवतार ने सोरमघाट पर शरीर छोड़ा था इस कारण इसका नाम सूकर क्षेत्र हुआ है.

विरुद्धवृत्तान्तवर्णनबीजसन्देहसङ्गतिसमाधानावधिसूचन ४ ;मण्डपपुराधिराजराष्ट्रकूटचुण्डतनुत्यागानन्तरप्राप्तपट्टतत्पुत्रशत्रुशल्य १ स्वीयकुमारनरबद २ समाहूतरणमल्लमारणरहस्यालोचन५, प्राप्तसोभ्कतपुराधिपत्यस्वानुजरणमल्लाकारणार्थशत्रुशल्यस्वपुत्रप्रेषण६, प्रत्युतमतीपरणमल्लमदिष्ठामत्तभ्रातृजशिरस्सौप्तिकपातन ७, ज्ञातम्रियमाणावस्थाग्रजात्मजन्यस्तजामिकसमात्तशिबिरसर्वस्वरणमल्लशयनसमयान्धीभूतनरवदप्राप्तच्छिद्रपलायन ८, योत्स्यमानमण्डपपुरप्रविष्टनिपातितस्वाग्रजशत्रुशल्यरणमल्लतदाधिपत्यसमादान ९, रणमल्लौरसाक्षयराज १ कर्ण २ चम्पा ३ दिचतुर्विंशति २४ सूनुसमर्थकियदनुजयोधनामकुमाराधिकयोधनाऽभिरुचित्वज्ञापन-१०,बम्बावददुर्गाधिराजचंचा १८३।१ऽपर २ नामचन्द्रराज१८३।१मरणानन्तरतत्पुत्रधीरदेव १८४।१ पितृपट्टप्रापण ११ ,नरेन्द्रवरसिंह-१८४।१ कुमारत्रय ३ क्रमप्राप्तप्रामारी १ चालुकी २ दाधिमी३पत्नीत्रय ३ परिणायन १२, जनकमरणानन्तरवैरिशल्य१८५।१ जावदु

त सन्देह की सङ्गति के समाधान की अवधि की सूचना करना, मंडोवर के राजा राठोड़ चूँडा के देहान्त के पीछे उसके पुत्र शत्रुशल्य का गद्दीबैठकर अपने पुत्र नरवद को बुलाकर रणमल्ल को मारने का एकान्त में विचार करना, सोभ्कतिपुर के स्वामिपनको प्राप्तहुए अपने छोटे भाई रणमल्ल को बुलाने के लिये शत्रुशल्य का अपने पुत्र को भेजना,उलटा शत्रु बनकर रणमल्ल का मदिरा में मस्त भतीजे के ऊपर रतिवाह देना, बड़ेभाई के पुत्र को मरने की अवस्था में जानकर उस पर पहरायत रखकर डेरों में से सर्वस्व हरनेवाले रणमल्ल के शयन करने के समय अन्धे नरवद का छिद्र पाकर भागना, युद्ध करने वाले रणमल्ल का पुर में प्रवेश करके अपने बड़ेभाई शत्रुशल्य को मारकर उसका आधिपत्य लेना, रणमल्ल के अक्षयराज, कर्ण और चम्पा आदि चौबीस औरस पुत्रों में से समर्थ कितनों ही से छोटे जोधा नामक कुमर की युद्ध करने में अधिक रुचि होने की सूचना करना, बम्बावदा गढ के राजा चंच दूसरे नाम से चंद्रराज के मरने पीछे उसके पुत्र धीरदेव का पिता का पाट पाना, नरेन्द्र वरसिंह के तीन कुमारों का क्रम पूर्वक प्रामारी १ सोलंखिनी २ और दाहिमी३इन तीन स्त्रियों से विवाह करना, पिता के मरे पीछे वैरिशल्य और

१८५।२ क्रमैक १ त्रय ३ भाविविवाहकरणकथन १४, विभागप्रा-
प्तवंशीपुरव्यापादितगबद्दाख्यभिल्लसंवासितनन्दननामनिवसथजाब
द्दु १८५।२ सन्तानजाबदूको १।७।२१ पटङ्क्येकादश ११ हड्डभेदसमा
सादन १५, भाविजाबद्दवसारण १८६।१ सेव १८६।२ द्वय २ सुतसा
मन्त १८७।१ सेव १८७।२ द्वय २ सन्तानस्वभेदान्तर्भूतपृथक्पृथक्
सामन्तक १।१।१ सेवाउत्त १।१।२ भेदयुग्म २ विगमन १६, दायलब्ध
नवग्रामनगरनिम्बदेव १८५।३ सन्ततिनिम्बाउत्तो २।८।१२ पटङ्किद्वा
दश १२ हड्डभेदप्रकटन १७, राज्ञीत्रयो ३पेतशूकरक्षेत्रगङ्गासङ्गतब
रसिंह १८४।२ नरेन्द्रपर्वान्तरपुण्यसमयसुरभिशतपञ्चक ५०० सहि
तस्वर्णसहस्रपञ्चक ५००० समुत्सर्जन १८, नयननगरनाथदधिक
भीमसहायप्राप्तावसरसमाक्रान्तटोङ्कपुरसन्नद्धतोमराऽमरसिंहबुन्दीद्र
ङ्गवेष्टन १९, तारादुर्गाधिष्ठितवैरिशल्या १८५।१ दिक्कुमारत्रय ३ प्रा
रब्धनालीयन्त्रावमर्दविहस्तलालसिंह १८४।२ सौप्तिकसन्त्रस्ततोम
र १ दधिक २ नयनपुरपलायन २०, प्रत्यागतप्रशंसितस्वसूनुकस

जाबद्दू का क्रम से एक और तीन आगे होनेवाले विवाह करने का कथन करना, बंट में वंशीपुर पाकर गबद्दू नामक भील को मारकर नंदन नामक गांव बसाकर जाबद्दू की सन्तान का 'जाबदूका' इस पदवी से हाडों में ग्यारहवें भेद का ग्रहण करना, आगे होनेवाले जाबद्दू के पुत्र सारन और सेव के दो पुत्र सामन्त और सेव, इन दोनों पुत्रों की सन्तान का अपने ग्यारहवें भेद के अन्तर्गत जुदे जुदे 'सामन्तक' और 'सेवाउत्त' इन दो भेदों को प्राप्त होना, बंट में नवगाँवाँ नामक नगर पाकर निम्बदेव के वंश का 'निम्बाउत्त' पदवी से हाडों में बारहवें भेद का प्रकट होना, तीन रानियों सहित गङ्गा में सोरमघाट पर राजा बरसिंह का किसी पर्व के पुण्य समय में पांचसौ गौओं के साथ पांच हजार मुहरों (अशर्फियों) का देना, नैणवानगर के पति दहिया भीमसिंह की सहाय से समय पाकर टोंकपुर को लेकर सज्जीभूत हुए तँवरों के राजा अमरसिंह का बुन्दी नगर को घेरना, तारागढ में स्थित वैरिशल्य आदि तीन कुमारों से तोपों का युद्ध प्रारंभ करके प्रवीण लालसिंह के रतिवाह से भयभीत होकर तँवर और दहिया का नैणवापुर को भागना, पीछे आकर

होदरार्थप्रसाददत्तमक्खीदुर्गनिष्कासिततोमर १ दभिक २ द्वय २ वयोवृद्धबरसिंह १८४।१ नयननगरसमाक्रमण २१, लब्धबुन्दीन्द्रमरणावसरशत्रुमगडलबम्बावदाधिराजधीरदेव १८४।२ देश १ दुर्गाऽऽदानप्रारम्भण २२, हड्डाधिराजबरसिंह १८४।१ जन्म १ राज्य २ प्राप्ति ३ तारादुर्गनिर्माण २ पत्नीद्वय २ पाणिपीडन ३ पुत्राधिगम ४ गङ्गोपरागदान ५ नयननगराक्रमण ६ तनुत्याग ७ शकसूचनं २३ चतुर्दशो १४ मयूखः ॥ १४ ॥

आदित एकषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जवनराज फीरोज १६ जो, किन्न कवल जब काल ॥
तखत गयासुद्दीन ७ तस, साह रह्यो इक १ साल ॥ १ ॥
सर चउ चउ ससि १४४५ सक समय, जो१७हु मरत जवनेस ॥
दिल्लीपति अष्टादशम १८, अबूबकर १८ हुव एस ॥ २ ॥
कातिकमास सो १८ राज्यकरि, हुव विधिवस वपुहीन ॥
ता १४४५ हि बरस बैठो तखत, दुर्मति नासुरुद्दीन १९॥ ३ ॥
सक ख पंच चउ ससि१४५० मृत सु, पंच ५ बरस असुपाइ ॥
तखत हुमायौंसाह २० तब, बैठो स्वमत बनाइ ॥ ४ ॥

प्रशंसा युक्त अपने पुत्र और छोटे भाई के लिये रीझ में मक्खीदगढ देकर तोमर और दहिया दोनों को निकालनेवाले वृद्ध अवस्थावाले बरसिंह का नैणवानगर लेना, बुन्दी के राजा के मरने का समय पाकर शत्रुमंडल का बम्बावदा के राजा धीरदेव से देश और गढ लेने का आरम्भ करना, हड्डाधिराज बरसिंह के जन्म १ राज्यप्राप्ति २ तारागढ को बनाना३ दो स्त्रियों से विवाह करना ४ पुत्रों का होना ५ ग्रहण में गंगा पर दान देना ६ नैणवानगर को लेना ७ और शरीर छोडने ८ के सम्बत् की सूचना करने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१४॥ और आदि से १६१ मयूख हुए ॥

१ प्राण ॥ १ ॥ २ ॥ २ खोटी बुद्धिवाला ॥ ३ ॥ ३ जीवित रहकर ॥ ४ ॥

ता १४५० हि वरस मृत सो२० हु तब, बिगरत समय बिसेस॥
दिल्लीपति महमूद २१ हुव, आगम मुगलह्न एस ॥ ५ ॥
तसहु नासुरुद्दीन २१ तिम, यह दूजो २ अभिधानं ॥
सोहु सम्हारि न घर सक्यो, भंजि प्रमाद मितभान ॥ ६ ॥

॥ प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हुवो मरण बरसिंह १८४।१ रो, जिणही समय सजोर ॥
एक मुगल बधियो अठी, गंजे काबल १ गोर २ ॥ ७ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणहीसमय अठी समरकंददेसरा एक मुगल अमीररोपुत्र तैंमूरबेग २२ प्रारब्धरैजोर बधियो तिकण समरकंद १ बकर २ गोर ३ फारस ४ तातार ५ काबल ६ प्रमुख देसाँरो बिजयकरि एक आपराभरोसारो भड़ मुगल रमजानबेग दिल्लीरो बळ देखणरैकाज अटकरै वार भेजियो ॥

जिकण कसमीर १ मुलतान २ दो २ ही देस लूटिया जाणि पंजावरा ओलाँ देस ऊजड़हुवा सुणि दिल्लीसहित प्रतीची ३ दिसारो आधो आर्यावर्त्त चळबिचळ थियो ॥

एकवीसमाँ महमूदा २१ऽपर २ नाम नासुरुद्दीन २१ रै दिल्ली मैं राजकरताँ इण तैंमूर २२ काबलरैअधीस आपरो विस्वासपात्र मुगल रमजानबेग करतोयारै ओलैतट पेलियो ॥

जिकण पंजावमैं दरोळपाड़ियो तौभी दिल्लीरै अधिराज महमूदा २१ऽपर २ नाम नासुरुद्दीन २१ साम्हैं चलावणरो उच्छाह

मुगलों का१आना इसीसे हुआ ॥५॥ २नाम. आलसी अथवा प्रमादी ३होकर ४अविचारी ॥६-७॥५आदि ६ अटक नदी के इधर ७ इधर के (उरली तरफ के) ८ पश्चिम दिशा का ९ दूसरे नाम से १० अटक नदी के ११ इधर के किनारे १२भेजा १३ उपद्रव

भी नधारियो ॥

जिणथी दिसादिसाराननरेसाँ मुगलरैसाम्हैं अनेक उपहार भेजि आपसरी इळा आपआपरैहेठै लेणरो प्रयत्न बधारियो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

बाळे बरस बतीस ३२ वय, संभर बैरीसाल १८५।२ ॥
जनकछत्र धरियो जठै, चौंतावे कुळचाल ॥ ९ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी रमजानबेग पंजाबरो विजयकरि महमूद २१ नूँ निर्वळनि-इारि पाछोजाइ आर्यावर्त्तनूँ आँगेंलणरैकाज तैंमूर २१ नूँ अटकन दीरैवार आणियो ॥

जिणथी दो २ हीवार लड़ाईमैं पराजयपाइ भागै प्रसादरैअधीन भागहीण जवनाँरै अधिराज नासुरुद्दीना २१ऽपरनाम महमूद २१ तीजी ३ बार साम्हैंचलाइ रणरोरस चाखणरो मनोरथभी नजाणियो ॥

अठी हाडाँरैअधीस बैरीसाल १८५।१ बूंदीहूँचलाइ पातोररा ह हड़ भारमल्लरी कन्या मानकुमरि १८५।२रै साथ दूजो २ बिवाह कीधो ॥

अर अठी सत्रुमंडळरा सीसाड़ाँ बंबावदारा नरेस धीरदेव १८४। १ रा देस दाबणरो निवाह कीधो ॥ १० ॥

पहली बरसिंह १८४।१ जीवताँ जिकाँरो जोर न लागो तिकाँ अब एक १ तो बुंदीसरामरणरोसहाय पायो ॥

अर दूजाँ २ तैंमूर २२ रै आगम दिल्लीस महमूद २१ नूँ दबियोदेखि २ खीचियाँ १ झालाँ २ पामाराँ ३ सहित सीसोदियाँ ४ भी हाडाँरी धरादाबणनूँ मन चलायो ॥

---

१ नजराना २ भूमि ॥ ८ ॥ ३ स्मरण करके ४ दबाने के लिये॥१०॥

अठीतो भाणपुररा खीची भरतसेण १ रै पोतै जयमल्ल ३ तो आपरीतरफरी सीमारा खेड़ी १ रत्नगढ २ प्रमुख बंबावदारा गढ गंजि भैंसरोड़ ३ सूधी आइ अमलजमायो ॥

अर झालाँ १ प्रमाराँ २ नूँ प्रचारि सीसोदियाँ ३ भी केथोली १ सीँघोली २ जावद ३ अठाँणाँ ४ बीँझोली ५ आदिक देस १ दुर्ग २ दाबि बेघम ६ रै माथै तोपाँरो ताव धमायो ॥ ११ ॥

नरेस बैरीसाल१८५।१ दूजो २ बिबाह करणरैकाज पातोरपूगो ॥

जिकणहीसमय बेघमरैऊपर जोरपड़ताँ आपरै एक १ बंबावदो १ ही रहतोजाणि चाँचाउत्त ४।१ धीरदेव १८४।१ दूलहनरेस बैरीसाल १८५।१ नूँ अवनीजावणरो पत्रदीधो ॥

सो आजरा बैरियाँरो ताँत आसंगियोनजाइ जिणथी प्रपिताम ह समरसिंह १८१।७ रो बिरुदबिचारि सहायरो अवलंबदीजै इण रीति अरजीमें प्रणातीरो प्रसादकीधो ॥

मिरजा पातसाह तैंमूरबेग२२रै आगम आर्यावर्त में दिसादिसा दराळैंपड़तो देखि नरेस बैरीसाल१८५।१भी दुलहीनूँ बडैबेग लेर बूँदीपधारियो ॥

अर धीरदेव १८४।१ नूँ सहायदेण बेघमरैमाथै फौजबंधीकरण में बिलंब नधारियो ॥ १२ ॥

जठै आपरा सुभट १ मंत्रियाँ २ एकलहोइ अरजकीधी इणास मय बेघम हालियाँतो बुंदीभी घरे रहणमें द्वापरहीदिखावै ॥

अर दिल्लीस महमूद २२ नूँ निर्बळ निहारि आर्यखंड आँगमण नूँ तैंमूर २२ अटकरैवार आवियो तिको असेसही आर्य अवनीसाँ नूँ अवसरदेर आपसरा देसदाबणाँ सिखावै ॥

आपरा परिकररी इसड़ी अरज मानि नरेस बैरीसाल १८५।१

१समूह २ दयाने(हिम्मत) में नहीं आवे ऐसा ३उपद्रव ॥१२॥४संदेह५दयाने को

धीरदेव १८४।१ रैसहाय तीनहजार ३००० सेना भेजी जिकी पूगियाँपहलीही सीसोदियाँ दुर्गसमेत बेघमपुर छुडाइलीधो ॥

अर उठीरा देसमैं राणालाखारो अमलजमाइ बंबावद जाइ आहवरो प्रारंभकीधो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सक्क चोवन चउदह १४५४ समा, मुगल अठी तैंमूर २२ ॥
समर गंजि दिलीस २१ नूँ, साहहुवो अतिसूर ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

तातारी दळ अतुळ[1] साजि रमजान १ कुतुब २ सह ॥
मुगल साह तैंमूर २२ आइ दिल्ली जयआग्रह ॥
सक्क चोवन चउ सोम १४५४ हाँकि संका विणु हैंबर[2] ॥
पाणिप्रथ लग पूगि धणीवणियो आरिजधर[3] ॥
महमूद २१ मीर निरखे निबळ कचरघाणा[4] घमसोणा[5] करि ॥
मंडियो तखत दिल्ली मुगल कातर बंस पठाणा करि ॥१५॥

साणाकरि १ ठाणाकरि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

नीड़ै[6] दिल्लीनैररै, लाखउभै २००००० मित लोक ॥
कत्तीहेठै[7] करि कतल, अमलकियो सब ओक[8] ॥ १६ ॥
पंद्रह १५ दिन रहियाँपछैं, मुगल मीर तैंमूर २२ ॥
क्रम इण मंडळ जीतकरि, गो गृह पाणिप[9] पूर ॥ १७ ॥
आंरिज[10] राजाँ समय इण, जठीतठी अड़ि जुद्ध ॥
आपसरी दाबे इळा, राखी अवसर रुद्ध ॥ १८ ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ १ अपार २ घोड़े उठाकर ३ आर्यों की भूमि का ४ नाश " कायरों को घाणी (कोल्हू) में पीलहने के समान पीलह डालने को कचरघाणाकहते हैं" ५ युद्ध में ॥ १५ ॥ ६ समीप ७ तलवार की धार नीचे ८ घरों में ॥१६॥ पूर्ण ९ पराक्रमवाला ॥१७॥१०आर्य राजाओं ने ॥ १८ ॥

हूँता भड़ १ जे नृप २ हुवा, हूँता जे नृप १ हारि ॥
हळ खेती ठाकुर २ हुवा, बैलाँ सींचरा वारि ॥ १९ ॥
अधिप किता वधिया अधिक, गंजे परगढ १ गेह २ ॥
वरताओं इसड़ो विखम, आगम मुगल अनेह ॥ २० ॥
वंवावद रचि वैरियाँ, समर अठी बळसीर ॥
धीरदेव १८४१ हणियो धणी, बूँदीदळ सहबीर ॥ २१ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी तैंमूरबेग २२रै पाछोगयाँ केड़ै एक दिल्लीरैअमीर इकबालखान पातसाहीरो प्रबंध आपरैअधीन कीधो ॥

अर पराजयरैप्रसंग माणहीणहुवो महमूदसाह २१ पाछो आयो तिकणनूँ प्रामाररैसाथ प्रतिमामात्र पातसाह रहणनूँ अवसरदीधो ॥

पंद्रह १५ दिन रहियाँ बावीसमाँ २२ पातसाह तैंमूर २२ रै गयाँ केड़ै प्रतिमामात्र सोळह १६ बरस रहियाँ एकबीसमाँ २१ पातसाह महमूद २१ रै मरियाँपाछै बिक्रमरा व्योम बाजी बेद बिधु १४७० सम्मित साहरै समय मुलतानरा सूबादार सय्यद मलिकसुलैमानरै पुत्र खिजरखान २२ नाम तेवीस २३मैं पातसाह दिल्लीरो अधिराज भाव गहियो ॥

सोभी अटकपाररा पातसाह तैंमूर ११ रा पुत्र साहरुखरो सिक्को ही रुपियाँमैंराखि जगतनूँ जणावणनैं तिणराही हुकमरै अधीनहोइ रहियो ॥

अठी चीतोड़रा अधीस राणा लाखारा पट्टपकुमार चूँडाथी पुत्री

जो १ उमराव थे वे राजा होगये और जो राजा थे वे हल चलाकर बैलों से २ पानी सींचकर खेती करनेवाले ठाकुर होगये ॥ १९ ॥ मुगल के आने का ऐसा कठिन ३ समय वर्ता ॥ २० ॥ २१ ॥ ४ मूर्ति के समान ॥ २२ ॥

रो संबंधकरणरैकाज मंडोवररैनरेश राठोड़ रणमाल आपरा पोळि पात्र भेजिया ॥

तिकाँ राणारी सभामैंजाइ समतारासंबंधरा सूचक पत्रदिया ॥

राणाँ समानबयरा बिबाहरो नर्म कीधो सुणि कुमारचूँडे बडा प्रसभैंरैप्रमाण पितारो संबंध करवाइ आप चीतोड़रीगादी छोडणरो लेखकरि मारवाड़ाँरै अधीनकीधो ॥

अर तिकोही माँग पिताँनूँपरणाइ तटस्थभाव धारि अपूर्व जस लीधो ॥ २३ ॥

इणग्रंथमैं छठो ६ रासि पहली निर्माणहुवो जिकणमैंभी प्रसंग पाइ कुमारचूँडारी सपूती बिसेसजणाई ॥

अर राणाँरै दूजो २ पुत्र राठोड़ाँरीभाणेज मोकल हुवो तिकण पितारैअनंतर चूँडानूँ काढि नाँनाँरा पक्षरो बिस्वासकरि बाळकथकैही चीतोड़री गादीपाई ॥

पछैं मोकलरैमाथै बिस्वासघात बिचारियो जाणि चूँडे चीतोड़माथै चढि राव रणमाल १ नूँ मारि कुमार जोधा २ नूँ भगायो ॥

अर जाटराघरथी पाटराधणीं नरबद आँबानूँ बुलाइ मंडोवर लैजाइ उणदेसमाँहै तिकणरो हुकमलगायो ॥ २४ ॥

१जतानेवाला २ * हँसी ३ हठकरके ॥ २३ ॥ ४ पनाया ॥ २४ ॥

---

* मंडोवर से राव चूंडा की पुत्री की सगाई कुमर चूंडा से करने को मंडोवर के भले आदमी चीतोड़ गये थे उनसे महाराणा लाखा ने हँसी में कहा कि जवानों की सगाई करना सभी कोई चाहते हैं हमारे जैसे वृद्धों का विवाह कौन करै? जिसपर चूँडा ने अपनी सगाई का निषेध करके पिता को विवाह देने का हठ किया इस पर मंडोवर के भले आदमियों ने कहा कि रणमल्ल की पुत्री के महाराणा लाखा से जो पुत्र होवेगा वह तुम्हारा सेवक समझाजावेगा इस कारण हम महाराणा को विवाहना नहीं चाहते इस पर चूंडा ने चीतोड़ का राज्य छोडदिया. इस कथा को वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में अन्य प्रकार से लिखी है सो वीरविनोद के ३०७ की पृष्ठि में देखो.

पहली जैतारणरै साँखलै राजा महेराज कुमारपणौं नरवदहूँ आपरी वडीपुत्रीरो संबंधकीधो ॥

पछै सोझतिरा संगरमें नरवदनूँ मरियोजाणि पालीरा पड़िहार खींदारा कुमार वरसिंहदेवहूँ तिकण कन्यारो विवाह करिदीधो ॥

पछै इणकारण मांगरैआँटै थोड़ाहीवरसाँमैं नरवद १ वरसिंह २ दो २ ही साँचैमन ऊजळालोहाँ कामआया ॥

जरै रणमालरै चोवीसाँ २४ मैं केहीसूँ छोटैपुत्र जोधै मंडोउर आइ पाछा आपरा नीसांण घुराया ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

कांमिणि आरत्ती करंण, नरवद १ रै सुणि नाह ॥
रहियो इम वरसिंह २ रण, सह अरि अंध १ सिपाह ॥ २६॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी बाळदीवयमैं राणौं मोकल आपरा अग्रज चूँडानूँ पाछो

१प्रहार करने में खड्ग पर रक्त नहीं ठहरे उसको ऊजळालोह कहते हैं २ नगारे बजवाये ॥ २५॥ *अपनी ३ स्त्री का नरवद की आरती करना सुनकर ॥ २६ ॥ महाराणा४×मोकल ने

---

* नरवद की मांग सुपियारदे की शादी नरसिंह वीदावत के साथ करदीगई थी, फिर मांग का दावा करने पर सुपियारदे की छोटी वहिन नरवद को इस शर्त से व्याहीगई कि, सुपियारदे नरवद की आरती करैगी, नृसिंहदेव ने अपनी स्त्री को आरती करने से मना किया, परन्तु उसने अपने पीहरवालों के प्रार्थना करने पर नरवद की आरती की, यह खबर पाकर नृसिंहदेव ने सुपियारदे को वहुत कष्ट दिया, जिसका वृत्तान्त सुपियारदे ने नरवद को लिख भेजा, जिसपर सुपियारदे को छाने निकालकर नरवद लेभगा, तिस पर परस्पर में युद्ध होकर नरवद का भाई मारागया और स्त्री को नरवद लेगया. यहां इस कथा में कुछ भेद है

× रावरणमल्ल को महाराणा मोकल के समय में रावत चूंडा का मारना लिखा सो ठीक नहीं ; क्योंकि रावरणमल्ल राठोड़ महाराणा कुम्भा के समय में मारागया था, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि रणमल्ल का भानजा महाराणा मोकल चाचा और मेरा नामक पासवानियों के हाथसे मारेगये थे उन दोनों को मारकर रणम ल्ल ने अपने भानजे महाराणा मोकल का वैर लिया, फिर मालवा के वादशाह महमूद को युद्ध में पकड़ कर महाराणा कुम्भा के आधीन किया, इन सेवाओं के कारण महाराणा कुम्भा ने रणमल्ल को प्रधान वना कर मेवाड़ का सम्पूर्ण कार्य उसके हाथ में देदिया जिसपीछे रणमल्ल का विचार महाराणा कुम्भा को मा

राजरो लेंदेणहारि जाणि तिकणरा भुजाँ चीतोड़रो भार झलाइ मेवाड़मैं अकंटक अमलकीधो ॥

अर चाँचाउत्त धीरदेव १८।१ नूँ मारियाँकेड़े तिकणराभाई १ बेटाँ २ नूँ मंडणगढरा सात ७ ग्राम देर वेघम १ वंबावदा २ सूधी चीतोड़रो थाँणो जमाइदीधो ॥

अठी महमूदसाह २१ नूँ जीति दिल्लीपैं पंद्रह १५ दिन पातसाहीकरि आर्यावर्त्तरा केही अधीसाँनूँ दंडि मीर तैंमूरबेग २२ रै पाछोगयाँकेड़े दिल्लीरासूवादार जठीतठी आपआपरै मत्ते रहणढूका।

अर सिंधुदेस १ रा सूबादार जवन करीमखान १ जिसा अनेक अधिकारी सीमारासमीपी नरेसाँहूँ उपहार लेर तिकाँनूँ आपरैअधीन बणाइ सूबादारीरो अनादरकरि पातसाहीपदनूँ वहैणढूका ॥ २७ ॥

माळवारैसूबादार नवाब बाजबहादुर १ तो माँडूसहरनूँ राजधानीबणाइ धारा १ भूपाल २ सागर ३ सीहोर ४ राजगढ ५ राघवगढ ६ गुगैर ७ सोपुर ८ गागरूणि ९ गंगराड़ १० भाणपुर ११ दसोर १२ जीरण १३ रामपुर १४ प्रमुख राजाँहूँ उपदालेर बुंदी१ चितोड़ २ भी उपायन सहित आइ मिलणरो फरमाणदीधो ॥

अर दक्खिणरैपातसाह अहमदसाह २ आपरा अग्रज फीरोजसाहसूँ गादीपाइ गुजरातमैं अहमदाबाद नाम नगरवसाइ अठैही आपरी राजधानी राखि माँडवी १ जामनगर २ हलवद ३ मोरवी

१ माडलगढ जिला के. २रहनेलगे ३धारण करने लगे ॥ २७ ॥ ४ आदि ५नजराना ६नजराने सहित

रकर मेवाड़ का राज्य दवा लेने का हुआ, यह भेद खुल जाने पर महाराणा कुम्भा ने अपने पिता के वडे भाई रावत चूंडा को मांडू से छाने बुलाकर राव रणमल्ल राठोड़ को चीतोड़ पर मरवाडाला और रणमल्ल का पुत्र जाधा भागकर मारवाड़ में चलागया इस वृत्तान्त को सविस्तर देखना होवै तो वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास की ३२१ की पृष्टि से देखें.

४ अणिहलपुर ५ कोकिलपुर ६ बालेस ७ ईडर ८ सिरोही ९ जाळोर १० बाढमेर ११ जूनाँगढ १२ समेत पच्छिमरोप्रातभी आपरैही अधीनकीधो ॥

पहली ग्यारहाँ ११ पातसाह अलावुद्दीन ११ रै अनंतर केही सूबादार दिल्लीहूँ पलटिया तिकाँमैं किताक पाछा दिल्लीरा ताबादार हूँता तिकाँभी तैंमूरबेग २२ रो विजयदेखि फेरि महमूद नासुरुद्दीन २१ री तथा खिजरखान १३ री आसंगमैं नआइ जुदैजुदै ठिकाणैं आपआपरो अमलजमायो ॥

पहली दिल्लीरा पँद्रहाँ १५ पातसाह अलफखाना १५ऽपर२ नाम मुहम्मद १५ तुगलकरै समय दक्खिणमैं कोई गणाकराज बिप्ररो चाकर एक १ हुसन १ नाम जवन हुवो तिकण प्रारब्धरैजोर दक्खिणरी पातसाही पाइ अलावुद्दीन १ नाम कहाइ कुलबर्ग १ दौलताबाद २ दोही सहर आबादकारि दो२ हीठाम आपरी राजधानी बणाई तिकणरा बंसमैं इणसमय फीरोजसाह ८।१ अहमदसाह ८।२ दो २ ही कुलबर्ग १ दौलताबादमैं नामी हुवा तिकाँमैं बडो फीरोजसाह८।१ पहली विजयपुररा बारडनरेस रणधवलहूँ रणमैं हारियो तिकणरी लाजपाइ आपरा अनुज अहमदसाह ८।२ नूं गादीदेर दक्खिण१ पच्छिम२ रो पातसाह कीधो तिकण अहमदसाह ८।२ इणसमय दक्खिण १ मैं गोलकुंडा १ नाम गढबणाइ गुजरात२ मैं अहमदाबाद२ नाम नगर बसाइ सोही आपरी राजधानी राखि दो२ ही दिसारो राजमंडळ नमायो ॥२८॥

अठी बुंदीरा नरेस बैरीसाल १८५।१ रै अखैराज १८६।१ चूंडो १८६।२ उदैसिंह १८६।३ सुभांडदेव १८६।४ सोंडदेव १८६।५ लोहठ १८६।६ कर्मचंद्र १८६।७स्यामदास १८६।८ स्यामाकन्या१८६।१ ए नव ९ ही संतानं आप आपरै समय प्रसूत हुवा ॥

१ पीछे २ काबू में ३ दूसरा नाम ४ ज्योतिषी ५ झुकाया ॥२८॥

तिकामैं सुभांडदेव १८६।४ सोंडदेव १८६।५ दोर ही कुमारां बासठि ६२ बरसरा बयमैं छहुवा इड्डाधिराजहूँ छोटीराणी दाहड़ी २ मैं जोड़ै २ ही जन्मलीधो तिकाँहीं पछैं बुंदीपाइ चीतोड़रा अधीस कूँभारा भाँजिया हुवा ॥

तिकाँरै अनंतर दाहड़ी२ मैं लोहट१कर्णचंद्र २ शासारी१ मैं स्यामदास१ स्यामा२ ए च्यारिरही संतान बुंदीस बैरीसाल १८५।१२रै बयमैं पैंसठि ६५ वाँ वर्षपर्जंत प्रकटिया ॥

अर अखैराज १ चूंडो २ उदैसिंह ३ ए तीन ३ ही कुमार हड्डाधिराजरै चाळीस४० वर्षरा बयथी बडीराणी पाटिमदेवी १८५।१२मैं प्रसूतथिया ॥ २९ ॥

दोहा ॥

दूजो२ नाम सुभांड १८६।४रो, भारमल्ल१८६।४ निबहंत ॥
स्यामदास१८६।८अभिधा अपर२, केसवदास१८६।८कहंत ॥३०॥
तनय भूपरा तीन३ही, पहिला जोवनपाइ ॥
रुचि जिमतिम लग्गो रहण, भाव निरंकुस भाइ ॥ ३१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

हेमसाहि कछवाहकी, कन्या नंदकुमारि१८६।१ ॥ १ ॥
अक्खयराज१८६।१कुमारकौं, नृप ब्याहिय निरधारि ॥ ३२ ॥
रामसाहि प्रतिहारकी, कन्या राजकुंमारि १८६।२।१ ॥
अधिप कुमर चुंड१८६।२ हिं यहै, ब्याही सुमह बढारि ॥ ३३ ॥
कन्या मानकबंधकी, राजकुमरि १८६।३।१ अभिधान ॥
सुता गौड़ सुरतानकी, स्यामाकुमरि १८६।३।२सुजान ॥ ३४ ॥
ए उभय२ हि तीजे३ तनय, उदयसिंह १८६।३ के अत्थ ॥

---

१ समूह ॥ २९ ॥ २ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३ श्रेष्ठ उत्सव करके ॥ ३३ ॥ ४ मानसिंह राठोड़ की पुत्री ॥ ३४ ॥

परिनाई बुंदी सुपहु, *अतिविधान१ मह२ सत्थ ॥ ३५ ॥
कुमरपनहि खटपुर१ कियउ, अक्खयरज १८६।१ अधीन ॥
सुतदूजे२ चुंड १८६।२ हिं सुपहु, ढंग वरुंधनि२ दीन ॥ ३६ ॥
तीजे३ सुत उदय १८६।३हिं बितंरि, नृप पिप्पलदा ३ नैर ॥
मेदूपानेसन मंडयो, वैरीसल्ल १८५।१ हु वैर ॥ ३७ ॥
पायो नहिं इन राजपद, तीन३न कुव्यसन तानि ॥
व्है हैं सिसुहि सुभांड१८६।४ नृप, जब मारिहै भूजानि ॥ ३८ ॥
कुल सब अक्खयराज१८६।१ को, अक्खाउत्त१।९।१३ कहाइ॥
इहुनमैं हुव तेरहम१३, प्रकट भेद क्रमपाइ ॥ ३९ ॥
कुमर चुंड१८६।२ संतति सकल, अरिन करन उच्छेद ॥
चुंडाउत्त २।१०।१४ चउद्दहम१४, भो इहुन कुल भेद ॥ ४० ॥
ऊदाउत्त३।११।१५ कहाइ इम, उदयसिंह१८६।३ कुल एह ॥
इहुन अभिधा पंद्रहम१५, नृप जानहु जुतनेह ॥४१॥
भेद सबहि भावी भनिय, वर्तमान पुनि वत्त ॥
सुपहु राम२०३।४ धारहु श्रवन, अन्वय जस अनुरत्त ॥४२॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचाहुवाण१वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्य-विहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवैरिशल्य १८५।१ चरित्रे पूर्वनृपवरसिंह १८४।१ मरणसमयसमीपमुगलजातीयतैमूर २२ नामम्लेच्छकाबल१प्रभृतिप्रत्यन्तप्रभभवन १, तत्प्रेरणाधीनकरतोया

* वेद के विधान से बड़े उत्सव के साथ ॥३५॥३६॥ १ देकर ॥३७॥ २भूप॥३८॥ ॥३९॥४०॥१नाम(भेद) ॥४१॥ ये सब भेद आगे होनेवाले कहे हैं हे रावराजा रामसिंह! ४वंश के यश में ५प्रीति करके अब वर्तमान की वार्ता सुनो ॥४२॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में वैरिशल्य के चरित्र में पहले राजा बरसिंह के मरने के समय के समीप मुगल जाति के तैमूर नामक म्लेच्छ का

वारातनिर्णीतदिल्लीयाथातथ्यलुगिटतकश्मीर १ मुलतान २गृ-
हीतविविधार्योपहारप्रतिगतयवनरमूजानतैमूरा२२र्यावर्तसीमासमान-
यन २, प्राप्तपितृपट्टहड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ पातोरपतिपुत्रीदा
हड़ीमानकुमरी १८५।२ परिणायन ३, सीमाशत्रुवर्गबम्बावदेशधीर
देव१८४।१सम्पूर्णराज्यसमाक्रमण ४, समरसंस्थापितधीरदेव १८४।
१ सन्तत्यर्थमण्डनदुर्गसम्बन्धिग्रामसप्तक ७ समर्पण ५, पराभूतप्र
द्रावितदिल्लीशमहमूदनासुरुद्दीन २१ मारितनिर्मन्तुतद्देशीयलोकल-
क्षद्वय २०००२० तैमूर २२ पक्षैक १ दिल्लीराज्यकरण ६,
तदवसरप्रबुद्धयत्तदार्यराजकपरस्परपृथ्वीसमाक्रमण ७, तैमूर
२२ प्रतिगमनानन्तरपराजितप्रत्यायातमूर्तिमात्रपातसाहमहमूद
२१ षोडश १६ वर्षजीवितावधितत्सचिवेकवालखानसर्वराज्य
कार्यसाधनानन्तरमुलतानसूबापतिसय्यदसुलैमानपुत्रखिजरखान
२३ सूचितशकसमयदिल्लीपट्टप्रापण ८, चित्रकूटेशशोषोदिलक्ष

काबुल आदि म्लेच्छ देशों का पति होना, उसकी प्रेरणा के अधीन अटक नदी के इधर का दिल्ली का सत्य वृत्तान्त जानकर कश्मीर और मुलतान को लूट कर आर्यों से नाना प्रकार की भेट लेकर पीछे गयेहुए यवन रमूजान का तैमूर को आर्यावर्त की सीमा पर लाना, पिता का पाट पाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का पातोर के पति की पुत्री दाहड़ी मानकुमरी से विवाह करना, सीमा के शत्रुओं के समूह का बम्बावदे के पति धीरदेव के सम्पूर्ण राज्य को दाबना, युद्ध में स्थापित धीरदेव के पुत्रों के लिये मांडलगढ सम्बन्धी सात गांव देना, पराजित होकर भगेहुए दिल्ली के बादशाह महमूद नासुरुद्दीन के देश के निरपराधी दो लक्ष लोगों को मारकर तैमूर का पन्द्रह दिन तक दिल्ली में राज्य करना, उस समय में चेते हुए इधर उधर के आर्य राजाओं का परस्पर की पृथ्वी को दाबना, तैमूर के पीछे [illegible] पीछे आयेहुए नाममात्र के बादशाह महमूद के सोलह [illegible] की अवधि में उस के सचिव इकबालखान के सब राज्यकार्य साधने के अनन्तर मुलतान के सूबापति सय्यद सुलैमान के पुत्र खिजरखान का ऊपर जनायेहुए शक समय में दिल्ली का पाट पाना, चित्तोड़ के पति शीषोदिया लाखा का कुमर

कुमारचुण्डसंबन्धार्थसमागतमण्डपपुरमहीपराष्ट्रकूटरणमल्लविश्व स्तवर्गमध्यमणावयःसाम्यविवाहनर्मविधान ९, श्रुतैतदुदन्तत्यक्तपैतृकराज्यसहिततत्सम्बन्धकुमारचुण्डतत्कन्यापितृपरिणायन १०, लक्षमरणानन्तरनिर्वासितचुण्डबाल्याविवेकराणामोक्कलमातुलपक्षविश्वसन ११, श्रुतमोक्कलजिघांसुमारववर्गप्रच्छन्नप्रत्यागतमारितरणमल्लद्रावितत्पुत्रयोधचुण्डचित्रकूटराज्यस्वानुजमोक्कलाधीनीकरण १२, मण्डपपुरराज्यपितृव्यरणान्धनरबदार्थमत्यर्पण १३, त्याजितपूर्वसम्बन्धाऽपरसम्बन्धपरिणीतशाङ्खलीसुप्रियकारदेवीनिमित्तराष्ट्रकूटनरबद १ प्रतिहारबरसिंह २ परस्पररणमरण १४, श्रुतैतद्वृत्तमण्डपपुरप्रत्यागतकत्यनुजराणमल्लियोधसिंहतद्राज्यसमासादन १५, दिल्लीशसूबाधिकारिवर्गस्वामिद्रोहसमाचरणसमयदक्षिणयवनेन्द्रप्रतापप्रकर्षपुरस्सरमालव १ सिन्धु २ देशा २ धिकारिद्वय २

चूंडा के सम्बन्ध के लिये आयेहुए मंडोवर के राजा राठोड़ रणमल्ल के विश्वासपात्र लोगों में समान अवस्था न होने से विवाह करने की हँसी करना, वह वृत्तान्त सुनकर पिता के राज्य सहित उस सम्बन्ध को छोड़कर कुमार चूंडा का उस कन्या को अपने पिता को व्याहना, लाखा के मरे पीछे चूंडा को निकालकर बाल्यावस्था के अविचार से राणा मोकल का मामा के पक्ष पर विश्वास करना, मोकल को मारने की इच्छावाले मारवाड़ों को सुनकर छाने पीछे आयेहुए चूंडा का रणमल्ल को मारकर उसके पुत्र जोधा को भगाकर चीतोड़ का राज्य अपने छोटे भाई मोकल के आधीन करना, काका का युद्ध में अन्धहुए नरवद को पीछा मंडोवर का राज्य देना, पहले सम्बध को छोड दूसरे सम्बन्ध का विवाह करने पर सांखली सुपियारदे के कारण राठोड़, नरवद और पड़िहार वरसिंह का परस्पर युद्ध में माराजाना यह वृत्तान्त सुनकर मंडोवर में पीछा आकर कितनों ही से छोटे रणमल्ल के पुत्र जोधा का उसके राज्य को लेना, दिल्ली के बादशाह के सूबों के अधिकारी वर्ग के स्वामिद्रोह करने के समय दक्षिण के बादशाह के बड़े प्रतापसे मालवा और सिंधुदेश के दोनों अधिकारियों का हठ पूर्वक बादशाह होना, विजय नगर के पति बारड़ रणधवल का पराजय करके सज्जीभूत होकर दक्षिण के पति फीरोज

प्रासभ्यपातसाहीभवन १६, विजयनगराधिपवारडरणधवलपराजय सज्जितदक्षिणाधिराजफीरोजसाह १ स्वानुजाऽहमदसाहा २ऽर्थस्व राज्यवितरण१७, तदहमदसाह २ दक्षिणाऽन्तरगोलकुण्ड १ दुर्गस हितगौर्ज्जरान्तरनिजनामाङ्कितनव्य २ नगरनिर्माण१८, बुन्दीन्दह ड्डाधिराजबैरिशल्य १८५।१ सन्तानपुत्र्येक १ पुत्राऽष्टक ८ समुद्भव न १९, नृपमध्यवयोजातत्रिक ३ वार्द्धकजातषट्क ६ सन्तानप्रत्येक मातृनिश्चयसहयुग्मै २ क १ सहजनिसूचन२०, नरेन्द्रकुमाराक्षय राज १ कौर्मी १ चुण्ड २ प्रातिहारी २ तृतीयो ३दयसिंह ३ राष्ट्र कूटी १गौड़ी २ युग्म १ परिणायन २१, प्रथम १ कुमाराऽर्थ २ष ट्पुर १ द्वितीया २ र्थवरुंधणि २ तृतीया ३ र्थपिप्पलदा ३ स्थानवि भजन २२, कुमारत्रय ३ व्यसनविमनस्कन्नृपचतुर्थ ४ कुमारसुभा णडदेवा १८६।४ र्थस्वानन्तरभाविनीराज्यप्राप्तिनिर्दिशन२३, कुमार त्रय३भाविसन्तानाऽक्खाउत्त १।९।१३ चुण्डाउत्ता २।१०।१४दाउत्तो ३।११।१५ पटङ्क्तित्रयोदश १३ चतुर्दश१४पञ्चदश १५ भाविहड्डभेदा

शाह का अपने छोटे भाई अहमदशाह के अर्थ अपना राज्य देना, उस अहमद शाह का दक्षिण के भीतर गोलकुण्डा गढ सहित गुजरात के भीतर अपने नाम से नवीन नगर बसाना, बुन्दीन्द्र हड्डाधिराज बैरीशाल के संतान में एक पुत्री और आठ पुत्रों का जन्म होना, राजा के मध्य वय में उत्पन्न हुए तीन और बुढापे में उत्पन्न हुए छः सन्तानों की प्रत्येक माताओं के निश्चय के साथ एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बालकों की सूचना करना, राजा के कुमा र अक्षयराज का कछवाही, चूंडा का प्रतिहारी और तीजे उदयसिंह का रा ठोड़ी और गौड़ी दोनों से विवाह करना, पहले कुमार के अर्थ [illegible] के अर्थ वरूंधणी और तीसरे के अर्थ पीपलदा स्थान बांटना, तीनों कुमारों के व्यसनी होने से उदास राजा का चौथे कुमार सुभांडदेव के अर्थ [illegible] आगामी राज्यप्राप्ति को दिखाना, तीनों कुमारों के आगे होनेवाली [illegible] से अक्खाउत्त, चूंडाउत्त, ऊदाउत्त पदवीवाले तेरहवें चौदहवें और पन्द्रहवें आगे होनेवाले हाडों के भेद की सूचना करने का पन्द्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १५ ॥

विर्भावसूचनं २४ पञ्चदशो १५ मयूखः ॥ १५ ॥
आदितो द्विषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६२ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥
पादाकुलकम् ॥

मंडोउर इत जोधमहीपति, सुत बारह १२ पाये निजसंतति ॥
पहिलो २ सूरजमल्ल १ पट्टधर, भयो जनकपीछैं सुहि भूवर ॥१॥
ऊदा२वलि दूदा ३ जसउत्तम, कर्मसिंह४रतनेस५जथाक्रम ॥
जिम बीका६बीदा७सेखा८सुत, सेलनं सह बारह१२प्रकटे सुत।२।
निजनिजकुल इनके इन नामन, अग्ग उत्पद भजत प्रथितपन ॥
बीका६भिन्नराज्य निजबंधिय, सोहु अग्ग ऐहैं क्रमसंधिय ॥ ३ ॥
गय बीदा७हु सहज तस संगहि, जंगलधर खट्टिय जिन्ह अंगहि ॥
इत आमेर नगर वर अंहति, पृथ्वीराज नाम हुव भूपति॥ ४ ॥
सो यह चंद्रसेन नृपको सुत, जाकै सुत बारह१२हुव जसजुत ॥
अग्रज भारमल्ल१हुव इनमैं, खिलं११हु भये कुलधर बढि खिनमैं।५।
सुकलं इत चित्तोर महीपति, मुलक सम्हारन अटत महामति ॥
कल्ल सुकाम वग्घोर ढंग किय, लहिखिनखलन तत्थतसअसुंलिय ।६।
दासीभव याके काकादुवर, हे नृप चाच१रु मेर२दुष्ट हुव ॥

और आदि से १६२ मयूख हुए ॥

१ राजा हुआ ॥ १ ॥ २ बाकी के सहित ॥ २ ॥ ३ प्रसिद्धपन से ॥ ३ ॥ ४ श्रेष्ठ ४ दासी ॥ ४ ॥ ५ बाकी के भी ॥ ५ ॥ ६ मोकल ७ फिरता था ८ बागोर नामक पुर में ९ समय पाकर १० प्राण लिया ॥ ६ ॥ इसके दो काका चाचा*

*यहां पर चाचा और मेरा को दासी के पेट से उत्पन्न होना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि ये दोनों खातिन के पेट से उत्पन्न हुए थे. इनसे बागोर के मुकाम पर महाराणा मोकल ने एक दरख्त के लिये पूछा कि काकाजी इस दरख्त का नाम क्या है? इस पर चाचा और मेरा ने विचारा कि वृक्षों के भेद खातीलोग जानते हैं और हम भी खातिन के पेट से उत्पन्न हैं इसकारण महाराणा ने सबके सन्मुख हमारी निंदा सूचक हँसी की है इस द्वेष के कारण रात्रि में महाराणा के डेरे पर जाकर उनको दगा से उन दोनों ने मारडाला और वहां से भगगये यह खबर सुनकर मंडोवर के राव राठोड़ रणमल्ल ने अपने भानजे का वैर लेनेको उदयपुर से पश्चिम दिशा में 'पेई' के पर्वतों में जाकर चाचा और मेरा दोनों

बिरचि दगा तिन्ह रान बिनासिय, तेहु बहुरि चुंडासन त्रासिय ॥७॥
मंति१भट२न अंतर कतिमासन, बिरचि चाच१अरु मेर२बिनासन ॥
सुक्कल सूनु सिसुहि कोबिदमति, कुंभ कियउ मेवार महीपति ॥८॥
कुंभलमेरु दुर्ग जिहिं किन्नौं, दान अमित कवि१बिप्र२न दिन्नौं ॥
ताकेदये अबहु दुखत्रासन, सुकवि१बिप्र२भुग्गहिं बहु सासन ॥९॥
रानौं यहहु भयो दुर्जय रन, चुंड पितृव्य सधर्म धराधन ॥
॥ १० ॥

षट्पात् ॥

॥११॥
॥१२॥
॥१३॥
॥१४॥
॥१५॥

रायमल्ल हुव कुंभरानसुत, जो सिसुपनहि कुमर सबगुन जुत ॥१६॥

दोहा॥

कहत चाच१मेर२हिं किते, जाठर खँत्तनि जात॥
तिनकिय पुच्छत जाति तरु, पापिन रान निपात ॥१७ ॥

और मेरा नामक दासी के पुत्र थे जिन्होंने दगा करके महाराणा को मारडाला जिससे फिर वे भी चूंडा १ से डरे ॥ ७ ॥ बुद्धि में २ पण्डित ३ कुम्भा को मेवाड़ का राजा किया ॥ ८ ॥ ४ सांसण (उदक) ॥ ९ ॥ युद्ध में ५ विजय नहीं कियाजावै ऐसा ६ राजा ॥१०॥ १६ ॥ ७ खातिन (बढइन) के पेट से पैदा हुए थे उनसे महाराणा ने पूछा कि इस वृक्ष की जाति क्या है? इस पर उन पापियों ने महाराणा को इस विचार से मारडाला कि हमको खाती जान कर वृक्षों की जाति पूछी है, जिससे सब के सन्मुख हमारा अपमान हुआ ॥ १७ ॥

भाइयों को मारडाला औरवे वहां से चित्तोड़ आकर राज्यकार्य करने लगे. जिसका वृत्तान्त पहल नोट में आचुका है.

बाजबहादुर साहबनि, मंडूपति इत मिच्छ[1] ॥
बुंदी उप्पर वाहिनीं[2], आनी लुंटन इच्छ ॥१८॥
नृप नमाइ सब निकटके, पहिलैं इहिं बलपान ॥
दिय बुंदिय१चित्तोर२हुत, मिलनकेर फरमान ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

मुक्कल[3] नृप मेवार मिच्छफरमान न मन्निय ॥
नमिलन उचित निहारि कुंभरानहु साहस किय ॥
वेरीसल्ल१८५१हु वीर सोहु हठ अडर समाह्यो ॥
ताके दूतन तरजि[4] दुष्ट मिच्छन उरदाह्यो ॥
तातैं सु पुंव्व[5] चित्तोरतजि बाजबहादुर सजि वल[6] ॥
इत आइ देस लुट्टत दुसह बुंदिय किय वेढन[7] बिकल ॥२०॥
धकि तोपन घमचक्क अग्गि लग्गिय धर१अंबर२ ॥
ओर्लनगति[8] दुहुँ२ओर असह गोलन आडंबर ॥
सलिल निवानन सुक्कि तजत पत्रन मुरसे[9] तरु ॥
देस अनूपहुं[10] दहत महत झंखर[11] बनिगो मरु[12] ॥
हड्डु चलाइ रोके अहित[13] तारागढसम तोपतति[14] ॥
किन्नौं बिहाल मंडुव कटक गजबडारि पवि[15] पात गति ॥२१॥

दोहा ॥

दूर लखत दर्पन[16] द्रगन, नृप अरिसेन निहारि ॥
सुरभि[17]१वैल२कट्टत सैतन[18], रैत[19] न रह्यो तिहिंरारि ॥ २२॥

---

१ म्लेच्छ २ सेना ॥ १८ ॥ १९ ॥ मेवाड़ के ३ मोकल ने म्लेच्छ के फरमान नहीं माने थे ४ धमकाकर. इस कारण५पहले चित्तोड़ को छोडकर ६ सेना ७ घेरे से वा युद्ध से ॥२०॥ ८ ओले पड़ने के समान. वृक्ष ९ जलगये १० जलप्राय देश था सो बडा ११ झंखर (पत्र विहीन) बनकर १२ मारवाड़ (निर्जल) होगया १३ शत्रुओं को. तोपों की १४पंक्ति ने १५वज्रपात के समान २१॥ १६दूरबीन से १७गौएं१८सैकड़ों. इस प्रकार का युद्ध करने से १९प्रीति.

कहिय भूप भोजनकरहिँ, अप्पन कुंदिय ऐंन[1] ॥
कट्टे द्वारहिँ गो निकरं[2], सु अनय पिक्खिसकैंन ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मंडूपुरपति मिच्छ घोर संगर पुरघेरिय ॥
याके अमित अनीक[3] हनन हल्लन हितहेरिय ॥
तोपन रन रचि तदपि निकट आवन देते नन[4] ॥
पै गोवध यह पिक्खि मरन१जित्तन२चिंतैं मन ॥
जो परैं खेत हम तो सजव[5] सब अंतहपुर[6] सिसुनसह॥
तुम देहु कहि रहन न उचित,जानि जवन अतिबल असह।२४।
नसह१असह२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

भूप कतिक बिरवस्[7]तभट, रक्खे पुर इम आक्खि ॥
मरनचल्यो सेंसन सहित, सविता[8] कँहँ कारि सक्खि[9] ॥ २५ ॥
अक्खय१८६।१.तिम चुंड१८६।२रु उदय१८६।३,सूरज त्रय३हि कुमार
रहे दुरे[10] निजानिज निलयैं[11], भिरन न वंटिय भार ॥ २६ ॥
नृप अक्खिय आये नहीं, ममसहाय सुत मूढ ॥
तिनहिँ न रक्खहु पट्ट तुम, रहहिँ सुभांड१८६।४प्ररूढ[12] ॥२७॥
अखिलकरावहु याहितैं, प्रेत कर्म बिधिपाइ ॥
मरन महीपति अक्खि इम,अररं[13] खुलाये आइ ॥२८॥
साक गगन निधि बेद ससि१४९०,बिक्रमसक गतबेर ॥
बाजबहादुर सैन्यबिच,किन्नैं हय जयकेर ॥ २९ ॥

नाराचः ॥

नहीं रही ॥ २२ ॥ १ घर में २ समूह ॥ २३ ॥ ३ सेना ने. समीप ४नहीं आने देते ५ शीघ्र बालकों सहित ६ जनाने को ७ भरोसे के वीरों को ८ सूर्य को ९ साक्षी करके ॥ २५ ॥ १० छिपे. अपने अपने ११ घरों में ॥ २६ ॥ १२ अधिक प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ १३ किवाड़ ॥ २८ ॥ २९ ॥

नमात भू हमल्ल हल्ल बैरिसल्ल१८५।१ निक्कस्यो ॥
खुलाइ द्वारके किंवार आजि[1] फार उल्लस्यो ॥
कसे तुतंग झैंड[2] अंग ढंग रंग दंडते ॥
चले तुरंग[3] ज्यों कुरंग यों सलंग संडते ॥ ३० ॥
करीनपैं खुले निसान[4] लंबमान लोलव्है ॥
दिसाद्दिसान खानखान वद्धमान[5] बोलव्है ॥
स[6]मग्ग खग्ग संभरी कर[8]ग्ग नग्ग संग्रह्यो ॥
अनीक अग्गव्है उदग्ग[9] खैंचि वग्ग[10] उम्महयो ॥ ३१ ॥
रहे कुमार रुंद्धि[11] द्वार जे अगार जत्थही ॥
सजे स्वभ्रात जावदू १८५।२ रु निम्मदेव१८५।३ सत्थही ॥
सलज्ज सज्ज रज्ज[12] कज्ज[13] अज्ज[14]१ मिच्छ२ अंकुरे ॥
घटा सकज्ज छज्ज गज्ज बज्ज तज्जने घुरे ॥ ३२ ॥
चलंत चक्कै[15] होत हक्क रीझि अक्क[16] रुक्कयो ॥

हमल्लों से भूमि को झुकाता हुआ हल्ला करके बैरीसाल निकला और द्वार के किवाड़ खुलाकर १युद्ध में अत्यन्त हर्षित हुआ. घोड़ों के तुतङ्ग कसकर शरीर में २ घमण्ड भरकर नगार से युद्ध में दण्ड देता हुआ चला, और हरिणों के समान कूदते हुए३ घोड़े चले ॥३० ॥ हाथियों पर बड़ी बड़ी ४ ध्वजाएं चपल होकर खुलीं और दिशाओं में खाओ खाओ ऐसा ५ बढता हुआ वचन हुआ खड्ग के ६ लट्ठ मार्गों (पट्टापाजी) सहित चहुवाण ने ७ हाथ में ८ नग्न खड्ग लिया और सेना के आगे ९ उदग्र (निरंकुश) होकर घोड़े की १० बाग * खैंचकर उत्साहित हुआ ॥ ३१ ॥ जो कुमर घर में थे वे द्वार ११ बन्द करके वहीं रहे और अपने भाई जावदू और निम्मदेव साथ तैय्यार हुए, लज्जा सहित सज्जीभूत होकर १२ राज्य के १३ लिये १४ आर्य और म्लेच्छ उठे. कार्य के साथ घटा के समान गर्जना से शोभायमान होकर उस युद्ध से उत्पन्न होनेवाले बाद्य बजे ॥३२॥ १५ सेना के चलते समय हाक होते ही प्रसन्न होकर १६सूर्य रुक गया और धक्के लगने की झटक से नासिका पकड़कर शेष नाग

---

*घोड़े को शीघ्र दौड़ाने के समय उसके गिरजाने के भय से बाग को खींचे रहते हैं इससे बाग का खींचना तेज दौड़ाने का चिन्ह हैं

झटक्क धक्क पक्क नक्क सप्प सक्क झुक्कयो ॥
झरी कृपान यौं खनंकि ज्यौं झनंकि झल्लरी ॥
ढरैं प्रबीर प्रोत तीर होत चीर ढल्लरी ॥ ३३ ॥
वृखेसपैं चढे महेस १ पब्बई २ मृगेसपैं ॥
निहारिबे लगे पधारि रीझ ते नरेसपैं ॥
पचासद्वै ५२ रु च्यारिसट्ठि ६४ पत्त रत्त पूरिकैं ॥
मिरां समान मंडि पान मत्त भान भूरिकैं ॥ ३४ ॥
सनंकि पिच्छ अंतरिच्छ गिद्ध १ चिल्लह २ संकुले ॥
खलक्कि अस्र खाल लाल ताल नालसे खुले ॥
इते मुरारि इष्टधारि गंगबारि आंचमैं ॥
निगाह लाह राह दै उतैं इलाहको नमैं ॥ ३५ ॥
कितेक रुंड झेलि झुंड ब्याम दोरते करैं ॥
कबंध जातुधान के समान प्रान संहरैं ॥
कृपान तंति फेन भंति सेन पंतिमैं कढैं ॥

---

१ शङ्कित होकर; अथवा अपने स्थान से सरक (हठ) कर झुक गया; झनकार होकर तलवार इस प्रकार चली जिसप्रकार झालर का झलकार होता है, तीरों से २ विधकर वीर गिरते हैं और ढालों की चीरें होती हैं ॥ ३३ ॥ ३ बैल पर महादेव और सिंह पर ४ पार्वती चढी और युद्ध में आकर बुन्दी के राजा पर प्रसन्न होते हुए युद्ध देखने लगे, बावन भैरव और चौसठ योगिनियां रक्त से ५ पात्र पूर्ण करके ६ मद्य के समान पीकर मस्त होने से चेत भूलने लगे. ("भूरिकैं" इस शब्द में 'ल' के स्थान में 'र' किया है) ॥ ३४ ॥ पंखों का सनंकार शब्द होकर आकाश में गिद्ध और चीलहें ७ भर गईं ८ रक्त के खाल बहकर लाल रङ्ग के तालाव के नाले के समान खुले, इधर परमेश्वर का इष्ट धारण करके गङ्गा का नीर ९ पीते हैं और परलोक के लाभ की ओर दृष्टि देकर उधर १० खुदा को नमते हैं ॥ ३५ ॥ कितने ही रुंड समूहों को झेलकर दौड़ते हुए ११ भुज फैलाते हैं वे कितने ही कवन्ध राक्षस के समान प्राणों का संहार करते हैं, जिसभांति झागों में तांत निकले तिसभांति सेना की पंक्ति में तलवारें निकलती हैं, और कितने ही मार पड़ने पर मार

परंत भार वारपार मारमार के परैं ॥ ३६ ॥
लुभाइ साकिनीन गोद मोद डाकिनी २ लहैं ॥
सप्रीति कज्ज रीतिसों पिसाच ३ रत्त संग्रहैं ॥
सु सार के दुसार केक अद्धपार सेल व्है ॥
महंत भार धार ज्यों तुला प्रकार मेलव्है ॥ ३७ ॥
कहों कितेक फारि कोच अग्ग संगि अग्गव्है ॥
मनों कि लालमीन बाल झीनजाल मग्गव्है ॥
वडे करीन मत्थ हत्थ बैरिसल्ल १८५।१ के बहैं ॥
ढलैं तहुत्तमंग रंग पाय चो ४ रुपेरहैं ॥ ३८ ॥
भिलैं कितीक बेर बेर फेर भुम्मिपैं झुकैं ॥
लगे स्वप्रान त्रानमैं चढ़ाक आनमैं लुकैं ॥
कितेक छिन्न वावदूक जावदूक १८५।२ कित्तिकैं ॥
जई कितेन खेत खेत निम्मदेव १८५।३ जित्तिकैं ॥ ३९ ॥

मार करते हुए इधर से उधर निकल जाते हैं ॥ ३६ ॥ मांस के ऊपर शाकिनियां लोभायमान होती हैं और डाकिनियां मोद पाती हैं (शाकिनी और डाकिनी ये देवी की दासियां हैं) पान करने के (मतवालके) लिये पिशाच रीति से रक्त का संचय करते हैं, कितने ही श्रेष्ठ वेधन करनेवाले भाले पार निकल जाते हैं; और कितने ही शरीरों में आधे घुसते हैं, सो बडे भार को धारण करनेवाली तकड़ी के समान होते हैं ॥ ३७ ॥ कहीं पर कितने ही कवचों को फाड़कर सांग (बर्छी) के अग्रभाग आगे निकलते हैं सो मानों कि लाल मछली का बालक बारीक जाल के मार्ग से निकसता है, बडे हाथियों के मस्तक पर बैरीसाल के हाथ चलते हैं जिससे उनके १ मस्तक लुढकते हैं और युद्ध में शरीर चारों पैरों से खड़े रहते हैं ॥ ३८ ॥ वे कितने ही शरीर कितनेक समय तक ठहर कर फिर भूमि पर झुकते हैं, उन पर चढनेवाले अपने प्राणों की रक्षा में लगेहुए अन्य में छिपते हैं, कितनेक कटे हुए २बहुत बकनेवाले *जावदू की कीर्ति करते हैं और विजयी निम्मदेव रणक्षेत्र में कितनों

*यहां वावदूक शब्द के अनुप्रास के लिये जावदू नाम के साथ स्वार्थ में क प्रत्यय करके जावदूक शब्द किया है.

करंत काज अज्जराज मिच्छराजपैं क्रम्यौं ॥
दु २ पास तास दंति खास चंद्रहासतैं दम्यौं ॥
समत्थ तत्थ हत्थि हत्थ बाजिसत्थ संग्रह्यो ॥
रच्यो दु २ मग्ग खग्गदै करग्ग लग्ग जो रह्यो ॥ ४० ॥
भई सु छिन्नि सुंडि है सिरोधि बेढि यों भली ॥
करी कि याल बाल ग्रान काल ब्यालकुंडली ॥
कटंत सुंडि छंडि रारि चीहपारि गो करी ॥
कियो स्वबाह और साह भो निगाह सो करी ॥ ४१ ॥
बितंड पिट्ठि जातजात खग्ग भूपको दह्यो ॥
रनंकि टोप कट्टिगो रु सीस चट्टिगो रह्यो ॥
गजद्वितीय २ पिट्ठिप्रान इट्ठि साह निट्ठिगो ॥
दुरंत होद कोद जो समोद भूप दिट्ठिगो ॥ ४२ ॥
चल्यो तदीय लैन जीय खग्ग स्वीय चंडलै ॥
दुचाल दुष्टजालपैं मनौं कि काल दंडलै ॥

को जीत लेता है ॥ ३९ ॥ इसप्रकार के कार्य करता हुआ आर्यों का राजा म्लेच्छों के राजा पर चला उसके दोनों ओर के खासा हाथी खड्ग से मारेगये और वहां उसके समर्थ हाथी ने सूंड से घोड़े का माथा पकड़ लिया, वह सूंड घोड़े के लगी हुई थी जिसके खड्ग से दो टुकड़े करदिये ॥ ४० ॥ इस प्रकार घोड़े की गर्दन को घेरनेवाली सूंड भले प्रकार से कट गई, सो किधों घोड़े की अयाल (केसवाली) रूपी सर्पों के बच्चों की रक्षा करने के लिये काले सर्प ने कुण्डली की है, सूंड कटते चीख मारकर हाथी युद्ध से चलागया उस समय बादशाह की निगाह में जो अन्य हाथी आया उसीको उसने अपना वाहन बनालिया ॥ ४१ ॥ उस दूसरे हाथी की पीठ पर जाते जाते राजा का खड्ग बहा सो टोप को काटकर और सीस को चाटकर रह गया; दूसरे हाथी की पीठ पर प्राण की इच्छा रखनेवाला बादशाह कठिनाई से गया और वहां दूर है अन्त जिसका ऐसा बादशाह होदे के कोने में आनन्द के साथ राजा को दीखगया ॥ ४२ ॥ उसका जीव लेने को अपना भयङ्कर खड्ग लेकर गया सो मानों बुरे चालवाले दुष्टों के जाल पर यमराज दण्ड लेकर चला उस बाद

दये सु पत्रवाह साह हड्डनाह वच्छ द्वै २ ॥
मनौं तनुत्र जाल अच्छ पच्छ वेग मच्छ द्वै २ ॥ ४३ ॥
सही प्रवीर तीर पीर गोसु मीर सम्मुहो ॥
प्रसंस हड्डवंस लेन अंसहू परम्मुहो ॥
सम्मुहो १ रम्मुहो २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
हन्यों करीम अब्दुलादि १ मिच्छ जत्थ हड्ड है ॥
बन्यों सु भूप भूप गूढ जानि व्यूह वड्ड है ॥ ४४ ॥
तजैं न जंग जो भजैं न संग जो भजैं तहाँ ॥
जु भुम्मि वाह वाह हड्डनाह आरुह्यो जहाँ ॥
करीम अब्दुलादि१को तुरंग भूप कट्टिकैं ॥
दयो गिराइ खग्गसौं गिराइ सोहु दट्टिकैं ॥ ४५ ॥
चढाइ वान सेनखान१ऽहाँ चुहानपैं चल्यो ॥
दयो न जान जावदू१८५।२सु पै कृपानतैं दल्यो ॥
दुरवाह मिच्छको सु बाह अप्प नाहको दयो ॥

शाह ने हाडों के राजा की छाती में दो बाण दिये वे कवच में ऐसे अच्छे दीं खे मानों जाल में पांखों के वेगवाले दो मच्छ घुसे हैं ॥ ४३ ॥ वह वीर तीरों की पीड़ा सहकर बादशाह के सन्मुख गया, प्रशंसनीय हाडों का वंश लेशमात्र भी पराङ्मुख नहीं होता वहां अब्दुलकरीमनामक म्लेच्छ ने हाड के घोड़े को मारा जिससे वह राजा भूपं अर्थात् पृथ्वी पर पैर रखनेवाला (पैदल) होगया; और उस म्लेच्छ को बड़ी व्यूह रचना में छिपा हुआ जाना ॥ ४४ ॥ वह म्लेच्छ उस युद्ध को नहीं छोडता और नहीं भगता तो वहीं पर उस राजा का साथी होजाता, प्रशंसा की जाती है, कि हाडों के पति ने भूमि रूपी वाहन का आरोहण किया (पैदल हुआ) और उस राजा ने अब्दुलकरीम के घोड़े को मारकर उस अब्दुलकरीम को भी दबाकर खड्ग से चीरडाला ॥ ४५ ॥ वहां पर सेनखां बाण चढाकर चहुवाण के ऊपर चला जिसको जावदू ने नहीं जाने दिया और खड्ग से मारलिया, उस दोनों हाथों से प्रहारकरनेवाले (यह मरुभाषामें वीर का विशेषण है) जावदू ने म्लेच्छ का श्रेष्ठ वाहन अपने

नरेस तास अस्ववार जुद्ध फार निर्मयो ॥ ४६ ॥
गुलाम हैदरादि३कौं सबाजि आजि गंजिकैं ॥
रहीम४भंजिकैं लयो लिराइ साह रंजिकैं ॥
कमाल५नूर६भूपपैं कृपान हत्थ सत्थके ॥
करे सिरक्क दारि फारि भाग च्यारि४मत्थके ॥४७॥
स्वसील बंधि भुम्मिपाल सो कमाल५संहरयो ॥
कृपानघात निम्ब१८५।३भ्रात पात नूर६को करयो ॥
तदग्ग खैंचि वग्ग निम्ब १८५।३खग्ग साहपैं तज्यो ॥
भयो सत्रान खंध हान खान प्रानपैं भज्यो ॥४८॥
महीप अव्वपैं इते भ्रुक्यो घुमाइ मोहसौं ॥
लही मही सु नाँटिक्यो छक्यो अचेत छोहसौं ॥
अचेत भू रह्यो बहोरि व्है सचेत उट्ठयो ॥
प्रलैसमैं भयो प्रमानि रुद्र जानि रुट्ठयो ॥ ४९ ॥
हुसेनखान७मिच्छ तत्थ मत्थ भूपको हरयो ॥
सु जानि जावदूक१८५।२आनि सोहु मिच्छ संहरयो ॥

पति को दिया उस पर सवार होकर राजा ने बहुत युद्ध रचा॥४६॥ हैदरगुलाम को घोड़े सहित युद्ध में मारकर रहीम को भांजकर प्रसन्नता के साथ बादशाह को समीप लिया वहां कमाल और नूर ने एक साथ राजा पर तलवार के हाथ किये सो टोप को काटकर मस्तक के चार भाग कर दिये ॥ ४७ ॥ अपने मस्तक को बांधकर राजा ने उस कमाल को मारलिया और भाई निम्बदेव ने खड्ग के प्रहार से नूर को गिरादिया उसके आगे घोड़े की बाग खींचकर निम्बदेव ने बादशाह पर खड्ग चलाया जिससे कवच सहित कन्धा कटगया और उसका प्राण खा लेता, परन्तु वह भगगया ॥४८॥ इधर घोड़े पर मूर्छा से घूमकर राजा झुका सो भक्कों से छककर अचेत होकर भूमि पर गिरा, ठहर नहीं सका, भूमि पर अचेत होकर रहा, फिर सचेत होकर उठा सो मानों प्रलय के समय क्रोध कियेहुए रुद्र के समान हुआ ॥४९॥ वहां पर हुसेनखां नामक म्लेच्छ ने राजा का मस्तक काटा, सो जानकर जावदू ने आकर उस म्लेच्छ को भी मारा, राजा के मस्तक के चार भाग खड्ग से खुल गये तो

खुले महीस सीसके विभाग च्यारि४ खग्गसौं ॥
मच्यो तथापि रुंडको रच्यो प्रघात मग्गतौं ॥ ५० ॥
हृदास्थ नैन पाइ झैंन सैन जावनी हनैं ॥
जितैं जितैं चलैं तितैं तितैं बजारसे बनैं ॥
अनुत्तमंग भिन्न अंग रंग द्वै घरी रच्यो ॥
बिलम्ब ह्वै न नाथ तो सु साहको कहैं बच्यो ॥ ५१ ॥
गिरैं दुहस्थ अप्पनैं तथापि धाइ झुंडमैं ॥
[illegible] लात मत्त की घनैंन वच्छ१मुंड२मैं ॥
किते पदाति सत्रु घाय रायपाय२हू कटे ॥
अमस्त१साख४पिंडकेहु अंग जंगको अटे ॥ ५२ ॥
गिरंत भूप जावद्१८५२प्रघात स्वामिता गही ॥
[illegible] मुंड पाहिकैं मतीर खेत की मही ॥
[illegible]१निम्भ२जावद्३अमान खान संहरे ॥
पठानके सहस्र१०००चाहुवानके छसै६००परे ॥ ५३ ॥
घरी छ६सेस घस्रपैं नरेस कढ्ढि नैरसौं ॥

और खड्ग से युद्ध के मार्गों को रचकर प्रहार मचाया ॥ ५० ॥ हृदय के स्थान में नेत्र पाकर यवन की सेना को मारने लगा, जिधर जिधर राजा चलता है उधर उधर सेना में अवकाश होकर बजार के समान बनता है, बिना मस्तक और कटेहुए शरीर से दो घड़ी तक युद्ध किया, राजा बिना मस्तक नहीं होता तो बादशाह को बचाहुआ कौन कहता? ॥ ५१ ॥ अपने दोनों हाथ गिरपड़े तो भी शत्रुओं के झुण्ड में दौड़ कर राजा ने बहुतों के हृदय और मस्तक में लात का प्रहार किया, कितने पैदल शत्रुओं के घाव से राजा के चरण भी कटगये तो भी बिना मस्तक और बिना हाथ पैर केवल पिंड से ही शरीर युद्ध में फिरा ॥ ५२ ॥ राजा के गिरने से जावद् ने प्रहारों से स्वामिपन लिया और यवनों के मुंडों से छाकर मतीरों के खेत की भूमि होवे वैसी बना दी, मानसिंह के सहित निम्भदेव और जावद् ने अमानखान को मारा, पठान के एक हजार और चहुवाण के छःसौ वीर खेत पड़े ॥ ५३ ॥ छः घड़ी दिन बाकी रहे राजा नगर से निकला और सूर्य के छिपते समय लेशमात्र वैर को

वन्यो दिनेस गुप्ति एस लेस लेस वैरसों ॥
निहारि म्लिच्छ जैभयँ वरोध को निकासिवो ॥
तथासु दीह अंत लै रच्यो अराति त्रासिवो ॥ ५४ ॥

दोहा—परे नृपाऽनुज दुव२प्रहत, रहत आयुबल रक्खि ॥
मारि छ६खान समान१मृत, चालुक छत नव९चक्खि॥५५॥

षट्पात् ॥

परिग विजय प्रामार सत्रु अष्टक८रन संहरि ॥
परिग कुम्भ गोपाल३कतल सत्रह१७जवनन करि ॥
भट तेरह१३अरि भंजि हड्ड लक्खन४१८५घुग्घल१८१हर॥
परिग भीम५प्रतिहार सद्धि बारह१२खल संगर ॥
जद्दव सुमेरु६हनि दस १० जवन खंडि अमर७सीसोद खट ६॥
पिस्थल बघेलहनि नव ९ परिग भट्टिय संकर च्यारि ४ भट ।५६।

॥ दोहा ॥

जैताउत ६ खंधिल १०।१८१ जई, मृत[1] सोलह १६ खलमारि ॥
छिति[2]प परत दिनकर[3] छिपत, तँहँ धप्पिय तरवारि ॥ ५७ ॥
एकादस११मुख्य रु इतर, पंद्रह तदनु पचीस२५॥
एकावन ५१ हनि परिग इम, सुपहु ससीस १ असीस२ ॥ ५८ ॥
भ्रात जावदुव१८५।१निम्म१८५।२भट, पंद्रह १५ सत्रह१७पारि॥
बिसल्ल लोह छकि परि बचे, ध्रुवहि आयु[4] खिल धारि ॥५९॥
स्वसत पिक्खि पुरके सुजन, इनकों जानि अचेत ॥
लाइ दुराये समय लहि, निज कहुँ गूढनिकेत[5] ॥ ६० ॥

बाकी रखकर आप भी अपने शरीर से लेशमात्र बना (यहां वैर शब्द में श्लेष है अर्थात् वैर और शरीर दोनों का वाचक है जिसका अभिप्राय है कि अपने शरीर को थोड़ा ही बाकी रक्खा) म्लेच्छों की विजय होना देखकर जनाने को निकाला और इसीप्रकार दिन का अन्त लेकर शत्रुओं ने त्रास देना रचा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १ मरा २ राजा ३ सूर्य ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ४ बाकी ॥ ५९ ॥ ५ भूमिगृह (तहखाने) में ॥ ६० ॥

पुर प्रविसे नृपके परत, तव अरि [1]अरर तुराइ ॥
लग्गे लुट्टन लोभलगि, पथ बज़ार [2]पृथु पाइ ॥ ६१ ॥
भूपति जे [3]विश्वस्त भट, आयउ रक्खि अगार ॥
अरि प्रविसत तुट्टत अरर, किय तिन [4]कथित प्रकार ॥ ६२ ॥
सह परिग्रह १ रानिन २ सिसुन ३, वलि कुमर ८न निर्बाहि ॥
तारागढको छन्न तजि, चले [5]नयनपुर चाहि ॥ ६३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवैरिशल्य १८५।१ चरित्रे मण्डपपुराधिराजराष्ट्रकूटयोधराजौरससूर्यमल्ला १ दिद्वादश१२ पुत्रप्रादुर्भवन १, तत्तन्नामोपटङ्कितत्कुलभेदप्रकटन२, तथाऽऽमैरनरेन्द्रचान्द्रसेनिकूर्मपृथ्वीराजौरसभारमल्ल १ प्रभृतिकुलधरकुमारद्वादशक १२ समुद्भवन ३, चित्रकूटाऽधिराजशीषोदभौजिष्येयपितृव्य १ चाचा १ मेरा२ व्याघ्रपुरविश्वस्तराणामोत्कलनिपातन ४, प्राप्ततत्पट्टनिवद्धकुंभिलमेरुदुर्गसमुत्पादितसूनुराजमल्लमौत्कालिरा-

---

१किवाड़ तुड़वाकर २ बड़ा ॥ ६१ ॥ ३भरोसे के वीरों को. पहिले ४कहा था उसीप्रकार किया ॥ ६२ ॥ ५ नैणवापुर जाना चाहकर ॥६३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र वैरिशल्य के चरित्र में मंडोवर के पति राठोड़ों के राजा जोधा के सूर्यमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का जन्म होना, उन उनके नाम की पदवी से उन उनके कुल के भेद प्रकट होना, तथा आमेर के नरेन्द्र चन्द्र सैन के पुत्र कछवाहे पृथ्वीराज के कुल को धारण करनेवाले भारमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का होना, चीतोड़ के पति सीसोदिया राणा मोकल को पासवानिये काका चाचा और मेरा का बागोर पुर में विश्वासघात से मारना, उसका पाट पाकर कुम्भिलमेर गढ बनाकर रायमल्ल पुत्र को उत्पन्न करनेवाले मोकल के पुत्र राणा कुम्भकर्ण की वीरता और उदारता की प्रशंसा करना, राजधानी मांडू पुर से आकर बुन्दी और चीतोड़ की विरुद्धता के क

णाकुम्भकर्णशौर्यौं १ दार्य २ प्रशंसन ५, मयूद्धङ्गस्कन्धावारबु न्दी १ चित्रकूट २ प्रातीप्यप्रतिकूलमालवाधिराजयुयुत्सुयवनेन्द्रबा जबहादुरबुन्दीवेष्टन६, मुकुरोपदग्दृष्टगोवर्गवधतदुपेक्षितनालीयन्त्र- युद्धज्ञातकुमारत्रय ३ सहायानागमपट्टार्हीकृतचतुर्थ ४कुमारनिरर्ग लीकृतगोपुररहड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ सूचितसम्वत्समयक्षु क्षेतरशस्त्रशत्रुसैन्यसंयोधन७, कर्त्तितनिजार्वशिरोधिवेष्टितम्लेच्छरा जगजहस्तनरेन्द्रापरगजारोहन्म्लेच्छपरिशिरस्कखड्गकर्त्तन८, म्ले- च्छान्तरसोढनिपादिम्लेच्छराजबाणद्वय २ हड्डाधिराजहयनिपात न९, पद्गीभूतनरेन्द्रखड्गप्रहारसतुरङ्गतत्प्रतिघातन१०, जावदु १८५। २ निजनिपातितयवनान्तरसप्तिस्वस्वामिसमर्पण११, तत्तुरगारूढ- संहृतससप्तियवनयुग्म २ बुन्दीशमस्तकयवनान्तरद्वय २ खड्गयुग पत्प्रहारचतुर्धा ४ विभजन १२, वस्त्रबद्धस्वशीर्षहड्डेशस्वप्रहारकक मालाख्यप्रोज्जासन१३, प्रमथितद्वितीयप्रहारक निम्नदेव१८५।३

रण प्रतिकूल हुए युद्ध करने की इच्छावाले मालवा के पति बादशाह बाजब हादुर का बुन्दी घेरना, दूरबीन से गौओं के समूह का वध देखने के कारण तोपों के युद्ध को छोडकर तीन कुमरों का सहायतार्थ आना जानकर चौथे पुत्र को पाट के योग्य करके शहर के द्वार के किवाड़ खुलाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का सूचना कियेहुए सम्वत् के समय में अक्षुण्ण अर्थात् तलवार से शत्रुसैन्य के साथ युद्ध करना, अपने घोड़े की गर्दन को घेरनेवाले बादशाह के हाथी की सूंड को काटकर दूसरे हाथी पर चढेहुए म्लेच्छ के टोप को राजा का खड्ग से काटना, हाथी के सवार बादशाह के दो प्रबल बाणों को सहनेवा ले हड्डाधिराज के घोड़े को किसी म्लेच्छ का मारना, पैदल हुए राजा का ख- ड्ग के प्रहार से घोड़े सहित उसको मारना, अपने मारेहुए किसी यवन के घो ड़े को जावदू का अपने स्वामि को देना, उस घोड़े पर चढकर घोड़े सहित दो यवनों को संहार करनेवाले बुन्दीश के मस्तक का किसी दो यवनों के ए क साथ खड्ग के प्रहार से चार भाग होना, वस्त्र से अपने मस्तक को बांधकर हड्डेश का अपने ऊपर प्रहार करनेवाले कमाल नामक म्लेच्छ को मारना, दू सरे प्रहार करनेवाले को मारकर निम्मदेव का कन्धत्राण सहित आयुष्यवाले

स्कन्धशाखासायुष्कम्लेच्छराजांसविदारणा १४, हुसैननाम यवनमूर्छितवाजिपतितोत्थितयुध्यमानमहीपकन्धराकर्तन १५, जावदु १८५।२पराकृततम्लेच्छपूर्वकर्तितसङ्कुलावमर्दमर्दितमहीश मूर्द्धभागचतुष्क ४पृथक्पृथग्विशरणा १६, घटिकाद्वयं २ खण्डिता वसर्पनिपातितैकपञ्चाश ५१ त्पारिपन्थिकराजरुण्डकरचरणा २ दि च्छेदिकृतशकलीभवन १७, संहृतपञ्चदश १५ सप्तदश १७ सपत्नदुस्सह प्रहारजर्जरिताङ्गसायुष्कजावदु १८५।२ निम्मदेव १८५।३ रङ्गपतन १८, सलाना १ अब्दुल्करीमा २दिशतषट्क ६०० सहस्र १०००स म्मिताऽऽर्य १ म्लेच्छ २ शूरशय्याशयन १९, पौरजनगूढगृहानीतजा वदू १८५।२निम्मदेव १८५।३ क्षतपूर्त्तिहितोपचारप्रवर्तनं २०, लोटि तारपुरप्रविष्टयवनानीकबुन्दीविप्लवविस्तरणा २१, दृष्टतदुपद्रवशु द्धान्तद्वारस्थापितविश्वस्तसामन्त १ भट २ स्वशिशुवर्गशुद्धान्तजन नैणवनगरसंस्थापनप्रारम्भणां २२ षोडशो १६ मयूखः ॥ १६ ॥

आदितस्त्रिषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६३ ॥

साहबखान के कन्धे को काटना, हुसेन नामक यवन का मूर्छित होकर घोड़े से पड़कर उठेहुए युद्ध करनेवाले राजा की गर्दन को काटना, जावदू से मारे हुए उन म्लेच्छ के पहिले काटेहुए और अवकाश रहित युद्ध में मर्दित रा जा के मस्तक के चारों भागों का जुदा जुदा बिखरना, दो घड़ी तक युद्ध रच कर इक्यावन ५१ शत्रुओं को मारकर राजा के धड़ के हाथ पैर आदि अंगों का टुकड़े टुकड़े होना, पन्द्रह और सत्रह शत्रुओं को मारकर दुःसह प्रहारों से जर्जर अङ्ग होकर आयुष्यवाले जावदू और निम्मदेव का युद्ध में पड़ना, सलान आदि छःसौ६०० आर्य और अब्दुलकरीम आदि हजार यवनों का काम आना, पुर के लोगों का जावदू और निम्मदेव को तहखाने में लाकर घावों की पूर्ति के इलाज में लगना, किवाड़ तोड़कर पुर में घुसीहुई यवन सेना का बुन्दी में लूट फैलाना. इस उपद्रव को देखकर जनानी ड्योढी पर रक्खेहुए वि श्वासवाले उमराव और वीरों का अपने बालकों के समूह सहित जनाने लो गों को नैणवा नगर में स्थापित करने के प्रारम्भ का सौलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥ और आदि से १६३ मयूख समाप्त हुए ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम् ॥

सारन१८६।१मेव१८६।२उभय२जावदु१८५सुत,
जैत्रसिंह१८५।२गैनोलीपलि जुत ॥
अनुज तास नवब्रह्म१८५।२वीर इम,
तोग१८६।१हु निम्मदेव१८५।३नंदन तिम ॥ १ ॥
भ्रात बिजय १८६।१ नवरंग १८३।२ वंसभव,
बलि हप्प१८२।२ रु डुंगर १८२।४ कुलबंधव ॥
निज [2]ऱ्हीं जात सकै न निहारिहु, रुद्र१[3]कृतांत२मचारैं शारिहु ॥२॥
पहुचैं जे भूपति [4]अंतहपुर, धरे भ्रात ऐसे[5]प्रकोष्ट धुर ॥
निज कुमार एक१हु आयो नन, मोरयो इम लिक३तैंहि भूप मन॥३॥
थिर बिस्वस्त सुभट कति थप्पिय, अंतहपुर [6]रच्छा जिन्ह अप्पिय ॥
गिनियत तेहु सुनहु सह परिग्रह, सुंदरदास१गोर गिरधर२सह ॥४॥
धीर३कबंध कुम्म बंसीधर४, सलह५प्रमार त्रिविक्रम६सैंगर ॥
चापोत्कट देव७रु हरि८चालुक, कलह सबहि [7]पलचरन कृपालुक[5]

षट्पात् ॥

अट्ठ८बंधु भट अट्ठ८जत्थ कति सहँस चमूँजुत ॥
पहु [8]अवरोध प्रकोष्ट रक्खि फुल्लत सिंधुन [9]रुत ॥
कहि इम बाहिर काढिय परैं जो हम तो तुम पट्टु ॥
नारि१न सिसु२न निकासि कुसलजिमि जाहु पिक्खि कट्टु
सुहि हुवनरेस१८५।१तिलतिल समरपारि जवन घन [10]झरिपरयो
जवनेस सेस दल लहि बिजय सजि पुर लुट्टन [11]संचरयो ॥ ६ ॥

---

१ पुत्र ॥ १ ॥ २ लज्जा ३ यमराज को ॥ २ ॥ राजा के ४ जनाने में. प्रथम ५ड्योढी पर ६ रक्षा ॥ ४ ॥ युद्ध में सब ७मांस खानेवालों पर कृपा करनेवाले ॥ ५ ॥ ८ जनानी ड्योढी पर. सिन्धवी रागनी के ९शब्द से फूलता हुआ १० कट पड़ा ११ चला ॥ ६ ॥

पुर खल करतमवेसि बिक्खि सारन १८६।१ सुख बांधव ॥
सुंदर १ आदिक सुभट जानि बहुविध्न बडेजव ॥
दलहिँ पुब्ब दौरोइ जैतगढ सरँनि जमायउ ॥
ताराणउसन तियन निकँर ध्रुवदिस निकसायउ ॥
जँहँ सवनमध्य रानी जुगल हुव प्रामारिय१८५।१दाहरिय १८५।२
अर्भक छ ६ जुत चल्लियर उभयर निखिंल बेढ जिम नाहरिया७।
सिसु सुभांड१८६।४अरु सौंड१८६।५सहज नव९समवय सोदर॥
क्रम लहु लोहठ १८५।६ कर्मचन्द्र १८६।७ सिसु तेहु सहोदर ॥
सोदर १ होदर २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
प्रामारी १८५।१ भवं छुँक स्याम स्यामा१८६।१ इन्ह बय सम॥
५ चउ ४ धात्रिनँअंक चले सहसा भयँचंक्रम ॥
पहचुनत सिच्छ लगि पिट्ठि अँर सोधतहुव रजनीसमय ॥
विधिलिखिँत कोन टारनप्रबल आयति पर अय१वा अनय२।८।
बहुल न्हजान१न वैठि गूढ निकसन बनी न गति ॥
हेषाँकेभय न हय २ संग इक १ हु किम संहँति ॥
ओरहु प्रवँहन अखिल हत्थि ३ आदिक परबँसहुव ॥
यातेँ सब अँवरोध साजिग पायन परसतभुव ॥
दीपनप्रकास नैंकन हुवेँ छपाँ तिमिर निकसे छिपन ॥
निजगँम्य सद्नि अँवकनँगर जानलगे गिरिँमग्ग जन ॥ ९ ॥

---

१ देखकर २ आदि ३ दौड़ाकर. जैतगढ के ४ मार्ग में. स्त्रियों के ५ समूह को उत्तर दिशा में. छः ६ बालकों सहित ७ सम्पूर्ण. सिंहनी ८ घेर कर चले जिस प्रकार चली ॥७॥ प्रमारी रानी से ९ उत्पन्न हुए १० बालक ११ धायों की गोद में १२ भय से इधर उधर भ्रमते हुए १३ शीघ्र १४ ब्रह्मा के लिखेहुए कर्मफल के कल्याण और अकल्याण को कौन टाल सकता है? ॥८॥ १५ हीसने के डर से साथ में एक भी घोड़ा नहीं लिया फिर १६ समुदाय कैसे? और हाथी आदि १७ वाहन १८ शत्रुओं के वश में होगये १९ जनाना २० रात्रि के अन्धेरे में २१ अपने जाने योग्य २२ नैणवा-नगर को जानकर २३ पर्वतों के मार्ग में जाने लगे ॥९॥

॥ दोहा१मदनावतार२योर्द्विभंगिका ॥

कुमरस्याम १८६।१ स्यामा१८६।१ कैनी[1], इनसह धाइ उभै २ हि॥
रयहत[2] डुलि पीछैं रहत, भो तिन्ह आगि सु भैहि ॥
भै सु तिन्हैं आनि गढ अद्रि मध्यहि भयो ॥
लखत इतउत फिरत भेद जवनन लयो ॥
भेदअनुसार पहुँचे रु अतिद्रोहभरि ॥
पोतैं[3] धात्रिइन सहित द्वै २ हि आनैं पकरि ॥ १० ॥
कहनलगी ते करि कपट, वनिकनके ए वाल ॥
तदपि लये पहिचान तिन्ह, भोग्य नियत लिपिभाल[4] ॥
भाग्यलिपि भोग्य न मिटैं सु बेदहु भनैं ॥
बेसँ[5] नृपसिसुन किम ओर कहतहिं बनैं ॥
स्याम १८६।१ स्यामा १८६।१ पकरि लुट्टि पथ सेसकौं ॥
जाइ रोवत दये द्वै २ हि जवनेसकौं ॥ ११ ॥
जँहँ कटकहिं सुद्धांतजन, मिले भटनजुत मग्ग ॥
सोधन तँहँ लग्गे सवन, उत्तारि घंटिय[6] अग्ग ॥
त्वरित गति लंघि निज अद्रिघंटिय[7] तहाँ ॥
*
चर्क्कविच[8] लै सवन वाहनन चढाये ॥
पोक डुव[9] २ तेहि तँहँ रंकनिधि[10] न पाये ॥ १२ ॥
प्रचुर दीपिका[11] जोरि पुनि, हारे जिततित हेरि ॥
पै नलखे ते डुव २ पृथुक[12], टिके छिनक तिन्ह टेरि ॥
टेरि कछुकाल तँहँ बीरपंच ५ हि टरे ॥
कटकसह नैनपुर सेस चलतेकरे ॥

१कन्या२वेगहत हांकर३बालक ॥१०॥४ललाट के लेख से५पहनावा(लिबास) ॥११॥ आगे की६घाटी उतर कर. अपने७पर्वत की घाटी को८सेना के बीच में लेकर९बालक१०रंकके धन के समान ॥१२॥११मशालें(चिरागें)लगाकर१२बालक

* यहां मूल में त्रुटि है सो दो प्रतियों में एक सी ही मिली है ॥

देखि प्रामारि १८५।१ दुख भ्रात सहजात हुव २ ॥
सोधि वे[२] सिसुरन लग्गे सुरन भूपसुव ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

सहज सुभांड१८३।४रु सोंड१८६।५अनखि हेरन सुरिआवत॥
निछिन भटन निहोरि लये गहि संग लजावत ॥
सह अवरोध निसीथ ग्राम हुवलान चमू गय ॥
इत भट पंचक५किंयउ पिक्खि तारागढ पब्बय ॥
कुमरी१कुमार२पाये कहुँन सुनि उदंत पुनि भूत सब ॥
गतनक जानि मिच्छन ग्रसन तिन चिंतियरतिवास तब॥१४॥

कर्पूरकम् ॥ उल्लालइत्येके ॥

जावदु१८५।२तनूज सारन१८६।२जई,
लाल१८५।२तनय नवब्रह्म१८६।२लहुँ ॥
रह्लोरधीर१ चालुक हरि २ रु, सहित त्रिविक्रम३सँगरहु।१५।
पंच५हि विचारि रतिवाह पट्ठ, प्रबल जाइ इततैं परे ॥
उततैंकुमारउद्दल१८६।३अनखि,कनकनरनजबननकरे ।१६।

दोहा ॥

काम जनक आयो कलह, उदयसिंह१८६।३सुनि एह ॥
पिप्पलदा सन सज्जि पुनि, आयो रजनि अनेह ॥ १७ ॥
जानि कढे अवरोध जन, पठयो चर तिन्हपास ॥
पंथ १ मिल्यो भट पंचक५हिँ, सिव केदार निवास ।१८।
जंपियँ तिन अवरोधसन, इत पठये हुवलान ।

१एक साथ जन्मे हुए २ दोनों ३ राजा के पुत्र ॥१३॥ ४आधी रात को ५वृत्तान्त ६आगे गुजरा हुआ ७ नाक कटा हुआ जानकर ८ म्लेच्छों के पकड़ने से ९ रात्रि को छापा देना विचारा ॥ १४॥ १० शीघ्र॥ १५ ॥ ११ उदयसिंह॥१६॥ रात्रि के १२समय ॥१७॥ १३ हलकारा १४ केदारनाथ नामक शिव के स्थान पर ॥ १८ ॥ उन्होंने १५कहा ॥ १९ ॥

पै स्याम१रु स्यामा२पकारि, सिच्छन लिय सहमान ॥१९॥

षट्पात्—कहिय दूत पंचक५हिं उदय१८६१३कुमरहु खिजि आवत॥
तासौं मिलि सब तुमहु परहु निंद्रित खल पावत ॥
सुनि यह दूतहिं संग मोरि लाये सारन१८६१सुख ॥
मिलि उद्दल१८६१३सन मग्ग दुसह तिन चविय भूतदुख ॥
कुप्यो सु सुनत सोदर कुगौंति पावक जनु वारूदपरि ॥
तुरकन अनीक उप्पर अतुल कियउ हल्ल हरि संक्खिकरि ॥२०॥
बलि सारन१नवलक्ख२वीर हरि३धीर४त्रिविक्रम५ ॥
सज़िसजि निजनिज सत्थ सद्धि पंच५नसहं संक्रम ॥
वजत बिनायकबाग जत्थ जवनेस विजैजुत ॥
सोवत निर्भय सिविर दाव तापर लगाइ द्रुत ॥
पटके तुरंग हल्लन प्रथितँ ईयनि अद्ध ३ जात रु रहत ॥
चलविचलकिन्न सिंव्हनचमु मिल्यो पैन इच्छित महत॥२१॥
बाजबहादुर बाल बखसि अभिमंत बहिकाये ॥
हियलगाइ करिहेत सयन निजढिगहि सुवाये ॥
बाह रचिग रतिवाह आय हल्लन इहिं अंतर ॥
जनु कलविंकन जात पातकिय स्येन घालपर ॥
सारन१वजीर२मार्यो सहज उदकुमर१रोसन२अली ॥
नवलक्ख१हन्यौं तूसीन जब२बलि हरि१कम्मन२कावली॥२२॥
छ चउ४गिरत अमीर ग्रहत सत्रुन छुट्टे पग ॥
मिम्म१८५१३घाय नतखंध साहलग्गिय मंडुव मग ॥
तजेन दुव२सिसु तदपि खास गज तिन्ह चढाइ खल ॥

१सोते हुओं पर२कहा ३ बीताहुआ दुःख ४ दुर्गति. विष्णु भगवान् को ५ साची करके ॥ २० ॥ उपरोक्त पांचों वीरों के ६ साथ ७ प्रसिद्ध., आधी ८ रात्रि जाते और आधी बाकी रहते समय ॥ २१ ॥ ९ बालकों को १० इच्छानुसार देकर ११ चिड़ियों पर सिकरा पंची पड़ै जिस प्रकार ॥ २२ ॥

बंटउब्बट भजि बेग निठि मालव लिय निर्बल ॥
हनिन्पहि तासभुव भोग हित दुजनन ऋंडे गाड्डिदिय ॥
भिरितत्थउदय१८६।३सारन१८६।१प्रभृंति[2]लाहि जय बुंदिय रक्खिलिय

दोहा

कुमरउदय१८६।३उनमत्त क्रम, चले निसीथँ[3] सु घत्तँ[4] ॥
जननी जुगरबंदनँ[5] बिनुहि, पिप्पलदा पुनि पत्तँ[6] ॥ २४ ॥
सिसु निग्रहँ[7] जावदु१८५।२ सुन्यौँ, हो पुरमेँ जँहँ[8] हार्य ॥
असु[9] छोरे उद्धत अनखि, घटँ[10] फट्टे सब घाय ॥ २५ ॥
अप्पन कल[11] दुदलान इत, जवन पलोयित जानि ॥
तजि अंदकपुर[12] गमन तब, मही कुसल लिय मानि ॥ २६ ॥
पै गिनि जयसु पराजयहि, निग्रह सिसुन निदानँ[13] ॥
अंतहपुर[14] आन्यौ अखिल, बुंदिय जतन बिधान ॥ २७ ॥

॥ कर्पूरकम् ॥ उल्लालइत्येके ॥

बुंदीस पट्टरानी बिकल, प्रामारी १८५।१ अनसनपकँरि[15] ॥
इम तजिय देह सब लघु उभय२,कीलितँ[16] औरसँ[17] ध्यानकरि।२८।

पकरि १ नकरि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

निंदि मरत प्रामारि १८५।१ निज, जेठे त्रय ३ तनुजात[18] ॥
भूप सोतिसुतहीँ[19] भन्यौँ, बर सुभांड १८६।४ बिख्यात ॥ २९ ॥

१भागे और२विना मार्ग२आदि॥२३॥३आधी रात को४घात. दोनों माताओं को ५नमस्कार किये बिना ही फिर पीपलदे ६गया ॥२४॥ बालकों को ७पकड़ने का वृत्तान्त सुनकर ८ खेद का वचन९प्राण छोड दिये१०शरीर के सब घाव फट गये ॥२५॥ ११ अनाहुआ जानकर १२ नैणवानगर का जाना छोड़कर ॥ २६ ॥ बालकों को पकड़ने के१३कारण. सब१४ ज़नाने को ॥२७॥१५खान पान का त्याग करके१७अपने उदर से उत्पन्न हुए बालकों को १६कैद करने का विचार करके ॥ २८ ॥१८ पुत्रों को१९सौत के पुत्र को ही राजा होना श्रेष्ठ कहा॥२९॥

सधन[1] कह्यो याकेहि सयँ[2], निज मृतिकृत्य[3] निसेस ॥
मनि १ हाटक[4] २ भू ३ गज ४ प्रमुख, विप्रन बितरि[5] बिसेस ।३०।
हुव सारन १८६।१ अरु धीर १ हरि २, जुज्झत घायल जंग ॥
तातैं जाबहु१८५।२ कृत्य तिम, सद्धिय सेव१८६।२ सअंग ॥३१॥
निम्म १८५।३ सहित इत घायल४न, उचित ठानि उपचार[6] ॥
क्रम सँत्वर[7] पाटव[8] कियउ, आगम[9]विधि अनुसार ॥३२॥
प्रजा पलायित[10] बुल्लि पुनि, सचिव१न भट२न समान[11] ॥
दै बिसवास बसाइदिय, थिर अप्पिय सुखथान ॥ ३३ ॥
मरनकढत बुंदिय[12]महिप, भन्यौं सुभांड १८६।४ हिं भूप ॥
पै जनकहि मृत सुनत पुनि, उदय १८६।३ लख्यो अनुरूप[13]।३४।
भारमल्ल१८६।४सिसु राज्यभर[14], निवहै समयसु नाँहिं ॥
मन्न्यौं जो नृप मंतु[15] सो, उदय१८६।३मैं न अब आँहिं[16] ॥३५॥
यहविचारि बुल्ल्यो उदय १८६।३, पै बय १ जाड्य[17] २ प्रमत्त ॥
नीचजनन निरत[18] सु नटयो, बदि जंजाल सु वत्त ॥ ३६ ॥
आकारन[19] सुनि उदय १८६।३ को, अक्खयराज१८६।१ हु एह ॥
गहिय चाहि गुरुत्व[20] गिनि, आयउ कृत्य[21]अनेह ॥ ३७ ॥
ताहि गोरि चुंड१८६।२हिं तरजि, उदय१८६।३नट्यो आलोचि[22]॥
किय प्रमान निजप्रभु.कथित[23], समय१देस२ गति सोचि ॥३८॥

---

१ करने को २ हाथ से ३ प्रेतकर्म ४ स्वर्ण ५ दिया ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ६ इलाज ७ शीघ्र ८ नैरोग्य किया ९ वैद्यक ग्रन्थों की रीति के अनुसार ॥ ३२ ॥ १० भगी हुई प्रजा को ११ बराबर ॥ ३३ ॥ जब १२बुन्दी का राजा मरने को निकला तब सुभांड को राजा करना कहा था. अपने उदयसिंह नाम के स्वरूप के १३ अनुसार ॥ ३४ ॥ १४ राज्यभार १५ अपराध. उदयसिंह में वह दोष अब नहीं १६है ॥ ३५॥ अवस्था और १७मूर्खता से. नीच लोगों से१८प्रीतियुक्त होने के कारण राज्य करने को जंजाल कहकर नटगया ॥३६॥ १९ बुलाना. अपने को २०बड़ा जानकर२१प्रेत कार्य के समय पर आया ॥ ३७ ॥ २२ विचारकर. अपने स्वामि का २३ कहना ॥ ३८ ॥

खेतहिँ हारे खोजि पै, नृपवपु पायउ नाँहिँ ॥
लगेहोन समरुंड लखि, मंत बहु पंचनमाँहिँ ॥ ३९ ॥

॥ षट्पात् ॥

निम्मदेव १८५१३ नृपअनुज परयो घायल प्रासादहि ॥
जिहिँ भंफट यह जानि कुणप खोजिन पठईकहि ॥
नृप १ कमाल २ तँहँ हनिय मैं १ हु नूर २ सु जँहँ मारिय ॥
जँहँ प्रकुप्पि जावदुव १ कँवल कंकन हुसैन २ किय ॥
जवनेस हत्थि कर अग्ग जँहँ पिक्खहु नृप कीर्तित परयो ॥
म्लिच्छपति अंस कट्टि रु इमहु कलँह जत्थ अद्भुत करयो ।४०।

॥ दोहा ॥

जँहँ समान १ मैं २ जावदुव ३, परे लखे तुमपास ॥
इनतें दिस दक्खिन ढिगहि, आँजि तुमुल तँहँ ग्रास ॥ ४१ ॥

॥ षट्पात् ॥

कट्टिय सिर चो ४ फार तेग द्वै २ परि नृपको तँहँ ॥
पुनि हुसेन असि पाइ जोहु खुल्लि खंड परयो जँहँ ॥
मस्तकरहित मुहूर्त भिरत कर १ पय २ पुनि भग्गे ॥
ढरयो विकसि ढढ्ढरहु लोह अगनित तस लग्गे ॥
कर१पय२कटे रु सिर३के सकल चतुर तत्थ पहिचानिकैं ॥
करि निचित दाह तिनको करहु पहु सुभांड१८६१४लेहु प्रानिकैं।४२।

दोहा ॥

पहिलैं कछु हमसैं परैं, रुंडपनहु रचि रारि ॥

१राजा का शरीर२विचार३पञ्चों में ॥३९॥४ महलों में५परस्पर का यह झोड़ जानकर ६ मुर्दों की तलाश करने वालों को. कंक पक्षियों का ७ ग्रास. बादशाह के हाथी की कटीहुई ८सूंड के आगे राजा ९कटाहुआ पड़ा है सो देखो १०बादशाह के ११ कन्धे को १२ युद्ध ॥ ४० ॥ भयङ्कर १३युद्ध हुआ ४१ ॥ १४ दो घड़ी तक १५गिरा १६ कलेवर (धड़)१७ टुकड़े १८ तहां १९ शीघ्र

प्रभुप्रतीक[1] तँहँ पायहो, निश्चय निपुन निहारि ॥ ४३ ॥

षट्पात् ॥

निम्म१८५।३कथित सुनि नरन खेत मति गति पुनि खोजिय ॥
अंग निचित[2] किय अखिल जाहिं भास्यो सम जो जिय ॥
सबनतैंहु पुनि सोधि कतिक नृप अंग निकारे ॥
कतिक नपाये कलह टूक लघुलघु असि टारे ॥
सिर सकल द्वै[3]रु कर१पय२सकल रजनि गूढ ढंढर३दलित ॥
कर निज सुभांड१८६।४चय तासकरि कथितरीतिदग्धसुकलित।४४।
पट्टिमदेवी१८५।१प्रान तजिय बासर वसु८अंतर ॥
यातैं बीस२०हि अहन नि[6]यत हुव कृत्य निरंतर ॥
मनि१हाटक२मातंग३सप्तिँ४सुरभीप्रसूद्धुख सब ॥
दये द्विजन सुभदान तिनहिं अभिमत भोजन तब ॥
सह प्रीतिपाइ भोजन सबन इकवीसम२१आवंत अंह ॥
बैठोसु पट्ट नव९[12]अब्द बय महिप सुभांड१८६।४महंतमहँ ।४५।

॥ दोहा ॥

घायमिटत सब घायलन, लिय बुलाय हियँलाय ॥
हय१गज२ग्राम३अतीवहित, बखसे मानबढाय ॥ ४६ ॥

रुचिरा ॥

जवन इतसु लजि बाजबहादुर भजि मंडुव पुर जातभयो ॥
निम्म१८५।६निसित असिभिन्नविकृतनिजअंसं अहनसिकवातभयो
रहिगय जास सिबिरं उपहारँहु तिन्ह लुंटन पुर जनन तन्यौं ॥

॥४२॥ १ प्रभु के शरीर के अवयव ॥४३॥ सब अङ्गों का २इकट्ठे किये ३ टुकड़े ४ धड़ ॥४४॥ बीस५दिनों तक ६निश्चय ७ घोड़े ८ गौएं ९ आदि १० अभीष्ट (वांछित)११दिन. नौ१२वर्ष की अवस्था में. बडे १३ उत्सव से ॥४५॥१४हृदय से लगाकर १५ अत्यन्त स्नेह से ॥ ४६ ॥ निम्मदेव के तीखे १६ खड्ग से १७ कटेहुए अपने १८कन्धे को १९दिनों तक सिकवाता रहा २०रहगई२१सामग्री

जयविच लहि सहसा सु पराजय बलि बुंदियसिर कुपितबन्यो॥४७॥
गो पहुंपाक जुगल१गहिकैं गृह भनि तिहिं प्रति हित अहित भरयो॥
उरखललाइ असन निजअप्पिरुजिहिंसिसुजकुंट२हिजवनकरयो॥
तिन दोउ२न बिस्वास बढें तिम दये निजन अधिकार दयो ॥
पहुंइतप्रथुकसुभांड१८६।४सुहुव परगुनसहन१सुदोसत्व२गयो ॥४८॥

दोहा ॥

बिदित यहै आधारबस, उचित१रु अनुचित२आहि ॥
जोगि१ न गुन अति सहन२ जो, सुपहु१ न दोस२सदाहि ॥४९॥
कोउन जानैं दैवक्रम, हिय विद्या निधि होहु ॥
व्है हैं नृप साधारनहु, सबन नजानी सोहु ॥ ५० ॥
सक वसु ससि चउदह१४१८समय, बैरिसल्ल१८५।१हुव बीर॥
नभ सर सक्करि१४५०सक नियत, धरिय छत्र जिहिं धीर॥५१॥
ख निधि चउद्दह१४९०साक खिन, इम बुंदिय रन एह ॥
बरस बहत्तरि७२ पाइ बय, देत भयो तजि देह ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर१ वीज्यवर्णानवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४च-रित्रे ताराडुर्गाद्रिपर२पार्श्वप्रस्थापितपूर्वबल १ वाह २ वर्गसहपरिग्रहसारणा १८६।१ दिवान्धवाऽष्टकसुंदरा १ दिसुभटाऽष्टक ८ न-यनपुरनेतव्यसशिशुशुद्धान्तजननिष्कासन १, प्राप्तप्रत्ययपृष्ठलग्न

॥ ४७ ॥ १ राजा के दो बालकों को. बालकों के २ जोड़े को. इधर सुभांड बालक ही ३राजा हुआ जिसमें सहनशीलता का गुण था परन्तु वह अधिक होने के कारण दोष होगया ॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणके पञ्चमराशिमें अग्निवंशी चहुवाणवंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपालके वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में सुभांडदेव के चरित्र में तारागढ के पर्वत की परली ओर स्थापन कीहुई पहले की सेना और वाहन वर्ग सहित परगह सारण आदि आठ

लुण्टाकयवनाऽनीकहतवेगमार्गमूढधात्रीजनधृतस्ववशीकृतश्याम १८६।८ श्यामा १८६।१शिशुद्वय २ म्लेच्छराजोपायनीकरण२, यानारोहणस्थानालब्धशिशुद्वय २ प्रसभप्रतिप्रस्थापितसाऽनुजसुभाण्ड १८६।४ गम्यमार्गगामितसानीकरक्षणीयवर्गप्रत्यागमशोधितशैलालब्धलभ्यसम्भवगतयथाभूतोदन्तसम्मतसौप्तिकचिकीर्षाचंक्रम्यमाणसपरिग्रहसारण १८६।१ नवब्रह्म १८६।२ धीर ३ हरि४ त्रिविक्रम ५ सामन्तपञ्चक ५ केदारेश्वरसद्मसमीपपिप्पलदाधीशकुमारोदयसिंह१८६।३सम्प्रेषितसन्देशहारकसम्मिलन३, प्रत्यानीततद्दूतसम्मेलितसर्वसङ्घातसम्पातन ४, सारणो१दय २ नवब्रह्म ३ हरिसिंह ४ तदमात्यादिसुभटचतुष्क ४ संहरण ५, समाश्वासनविश्रम्भसार्थीकृतशिशुद्वय २ सोढांसक्षतव्यथयवनाधिपबाजबहादुरमण्डूपुरपलायन ६, जननीजकुट २ दर्शन १ वन्दना २ दिवि

बांधव और सुन्दर आदि आठ उमरावों का नैणवापुर को लेजाने योग्य बालकों सहित जनाने लोगों को निकालना, सुबूत पाकर पीठ लगीहुई लुटेरी यवन सेना का थकेहुए, मार्ग भूलेहुए और धायों के उठायेहुए श्याम और श्यामा दो बालकों को अपने वश में करके बादशाह की नजर करना, सवारियों पर चढने के स्थान में दोनों बालकों को न पाकर और छोटे भाई सहित सुभांड को जाने योग्य मार्ग में हठ से पीछा भेजकर, सेना सहित रक्षा करने योग्य समूह को अर्थात् जनाने को रवाना करके पीछे आकर पर्वत को शोधने पर भी लभ्य वस्तु को न पाकर यथार्थ वृत्तान्त को जानकर, सलाह करके रातिवाह देने की इच्छा से चलाईहुई अपनी परगह सहित सारण १ नवब्रह्म २ धीर ३ हरि ४ और त्रिविक्रम५ इन पांचों सामन्तों का केदारेश्वर के मंदिर के समीप पीपलदा के पति कुमर उदयसिंह के भेजेहुए हलकारे से मिलना, उस दूत को पीछा लाकर सब समूह को मिलाकर छापा देना, सारन १ उदयसिंह २ नवब्रह्म ३ और हरिसिंह ४ का उस (बादशाह) के मन्त्री आदि चार सुभटों को मारना, धैर्य देने से विश्वास पायेहुए दोनों बालकों को साथ में लेकर कन्धे के घाव की पीड़ा को सहनेवाले बादशाह बाज बहादुर का मण्डूपुर को भागना, दोनों माताओं के दर्शन और नमस्कार

सुखमहोन्मत्तोपमानकुमारोदयसिंह १८६।३ स्वस्थानपिप्पलदाप्र
तिप्रस्थापन७, शिशुयुग २ निगडनश्रवणासन्नकालसंरम्भसमुत्थान
शीर्णक्षतसन्धानजावद्गु १८५।२तद्गुत्यजन ८, श्रुतशत्रुपलायनसेवा
१८६।२ दिवन्धुवर्गसकुशलशिशु १ शुद्धान्त २ जनबुन्दीपुरप्रत्यान-
यन ९, धीर १ हरि २ सहितसारण १८६।१ क्षतपारवश्यप्राप्ताव
सरसेव १८६।२ जावद्गु१८५।२ प्रेतकर्मप्रणयन १०, निश्चितनृपनि
र्दिष्टापराधनिवारणसुभट १ सचिव २ समाकारितनीचजनानुमत-
रतोदयसिंह १८६।३राज्यानङ्गीकरण ११, राज्यरक्षिवर्गविज्ञाततद्वृ
त्तकृत्यसमयसमागतसन्नद्धसैन्यसानुजज्येष्ठकुमाराऽक्षयराज१८६।१
निराकरण १२, सचिव १ सामन्त २ स्वीकृतस्वामित्वसुभाण्डदेव
१८६।४ सक्षतस्वपितृव्यकनिम्मदेव १८५।३ सूचितसमरस्थानगवे
षणसम्पादितपृथ्वीशप्राप्यप्रतीकस्वकरसमीरसखसंस्करण १३,
दिनाऽष्टका ८ ऽनन्तरपट्टराज्ञीपद्मिनीदेवी १८५।१ तनुत्यागकारण
वासरविंशति २० पितृप्रेतकृत्यानुष्ठान १४, प्राप्तैकविंश २१ वासर

आदि से विमुख और महा उन्मत्त के सदृश कुमर उदयसिंह का अपने स्थान
पीपलदे को वापिस जाना, दोनों बालकों का कैद होना सुनने के साथ ही
जोश आने से घावोंका मिलना फटकर जावदू का शरीर छोडना, शत्रुओं को
भगेहुए सुनकर सेव आदि बान्धव वर्ग का बालकों और जनाने के लोगों
को कुशलता पूर्वक बुन्दीपुर में पीछा लाना, धीर और हरि सहित सारन
घावों से परवश होने के कारण समय पाकर सेव का जावदू के प्रेतकर्म कर
ना, राजा के कहेहुए अपराध के निवारण का निश्चय करके उमराव और
सचिवों के बुलाने पर भी नीच लोगों की सलाह में प्रीति रखनेवाले उदय
सिंह का राज्य से इनकार करना, राज्य की रक्षा करनेवाले समूह का उसका
वृत्तान्त जानकर प्रेतकर्म के समय सेना सजकर आयेहुए छोटे भाई सहित
बडे कुमर अक्षयराज का अनादर करना, मन्त्री और उमरावों से स्वामिपन
को स्वीकार करके सुभांडदेव का घायल काका निम्मदेव को सूचना कियेहुए
युद्धस्थल में ढूंढ कर राजा के पाने योग्य अंगों को इकट्ठा करके अपने हाथ से अग्नि
संस्कार करना, आठ दिन के पीछे पाटवी रानी पद्मिनदेवी के शरीर छोडने

वसरसर्वसम्मतनव ९ वर्षवयस्कभूपभारमल्ल १८६।४ पितृपट्टप्रापण १५, प्रापितप्रघातपाटवसभासमाकारितवीरवर्गपट्टादिपूजन १६, प्रकृतिविप्लुतशिबिरोपहारनिम्म १८५।२ खरखड्गखिन्नांसमण्डूपुरप्रविष्टपुनर्निश्चितबुन्दीविरोधवाजबहादुरसम्पादितसमुचिताधिकारबुन्दीन्द्रबालद्वय २ यवनीकरण १७, पौगण्डवयःप्राप्तपट्टभूमीभुजङ्गभारमल्ल १८६।४ तिसहनगुण १ दोषीभाव २ भावितामापण १८, बुन्दीन्द्रबैरिशल्य १८५।१ जन्म१ पट्टप्राप्ति२ शूरशय्याशयन ३ शक्सूचनं १९ सप्तदशो १७ मयूखः॥१७॥

आदितश्चतुष्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६४ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अक्खय१८६।१तिमचुंड१८६।२रु उदय,१८६।३,नमिल्यो पट्ट निहारि
दब्बन लग्गे देस द्रुत, बालक नृपहिं बिचारि ॥ १ ॥
जानि तज्यो हम पट्ट जब, भोगन दारिदभाव ॥
क्यों पावहिं इम चिंतिकैं, उदय १८६।३ हु किय उफनाव ॥२॥

के कारण बीस दिन तक पिता और माता का प्रेतकर्म करना, इक्कीसवें दिन का समय प्राप्त होने पर सबकी सलाह से नौ वर्ष की अवस्थावाले राजा भारमल्ल (सुभांड का दूसरा नाम है) का पिता का पाट पाना, घाव पायेहुए वीरों के समूह के नैरोग्य होने पर सभा में बुलाकर उनका पट्टा आदि देने से सत्कार करना, डेरों की सामग्री को प्रजा के लूट लेने पर निम्मदेव के तीक्ष्ण खड्ग से कटे कन्धेवाले वाजबहादुर का मण्डूपुर में प्रवेश करके फिर बुन्दी पुर के विरोध का निश्चय करके उचित अधिकार देकर ग्रहण कियेहुए बुन्दीन्द्र के दोनों बालकों को यवन बनाना, दश वर्ष की अवस्था पाकर भूपति भारमल्ल का अत्यन्त सहनशीलता के गुण का दोषभाव को सेवन करना अर्थात् गुण का दोष होना, बुन्दीन्द्र शत्रुशल्य के जन्म १ पाट पाने २ और काम आने के सम्वत् की सूचना करने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥ और आदि से १६४ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ २ ॥

निजनिज ढिगके बर[1]नगर, अंगमि[2] प्रसभ अकूट ॥
लिय छिन्न रु रोधक[3] लक्खल, लगे मचावन लूट ॥ ३ ॥
पट्टनि १ जयथल २ खेट ३ पुनि, लक्खैरी ४ रु लवान ४ ॥
खटपुरपति दब्बे अखय १८६।१, उद्धतपन अभिमान ॥ ४ ॥
पुव्वहु यह लंपट[4] प्रथित[5], भयो सु सुनि खिजि भूप ॥
निजप्रसाद बाहिर नियत, रक्ख्यो अघ अनुरूप ॥ ५ ॥
लुंड १८६।२ हु लखि अग्रज चलन, लग्गो छोरन लज्ज ॥
देसमें सु वर्जन दुसह, कैं तर्जन १ मद २ कज्ज ॥ ६ ॥
बिगरनके दिन बाहुरत, बिक्खैं सुभ १ बिपरीत २ ॥
नीचजनन उदय १८६।३ हु निरंत[6], प्रकट सु मत्त प्रतीत ॥ ७ ॥

॥ मदनावतारः ॥

बुल्लयो याहि जब पट्ट बैठारिबे,
धरनि अधिराँज[7]पन छत्र सिरधारिबे ॥
हेर्य[8] कुल सचिव चम्मार[9] याकै हुतो ॥
स्वामि संबोधि[10] लग्गोहि अटकंन सुतो ॥ ८ ॥
बदिय इम स्वामि तुम भूप जब बज्जिहो ॥
गरुव[11] भरें[12] नम्रसिर इमन तब गज्जिहो ॥
लैन लखि जाचकन हैन कहि लज्जिहो ॥
सैन[13]सर पै न इम मैन[14]सुख सज्जिहो ॥ ९ ॥

दोहा॥

चर्मकार[15] जो इम चविय, उदय १८६।३ सु मन्त्रि असेस ॥

---

१ श्रेष्ठ नगर. सत्य हठ से २ दवाकर ३ रोकनेवालों के ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४ व्यभिचारी ५ प्रसिद्ध ॥ ५ ॥६ ॥ ६ प्रीतियुक्त ७ स्वामिपन का ८ त्यागने योग्य कुलवाला ९ चमार (चर्मकार). स्वामि को १० समझाकर ॥ ८ ॥ ११ बडे १२ भार से सिर झुकाओगे और इस प्रकार गर्जना नहीं करोगे. लेनेवाले याचकों को मेरे पास नहीं है ऐसा कहकर लज्जित होओगे १३ शय्या के ऊपर इस प्रकार १४ कामदेव का सुख नहीं साधोगे ॥ ९ ॥ १५ चमार ने जो यह कहा

पायो अबुध न भूप पद, दब्बहिं अब प्रभुदेस ॥ १० ॥

॥ मदनावतारः ॥

दब्बिपुर द्वै २ रु कृति २० गाम निज देसके,
कतिक लिय नानता १ प्रमुख कोटेसके ॥
होजु मक्खीद १ गैनोलिपतिको हरयो,
और भ्रातन सनहु जोर अति अद्दरयो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

निम्मान१ रु लोहित २ नगर, लीनाँ३ डब्भिय ४ खंड ॥
चुंड १८६१२ हु लग्गिय चट्टिबे, कोन घटै अघ कंडे ॥ १२ ॥
रोहितपुर दिनसत १०० रह्यो, नियत अमल निम्मान ॥
नृप दैनकि हल्लू १८२।१ कुलहिं, लिय पच्छे खिलस्थान ॥१३॥
बुंदिय बल प्रबयो बच्यो, निम्मदेव १८५।३ बिनु नाँहिं ॥
नृपके सिसुपन इम निजहु, खुरनलगे मनमाँहिं ॥ १४ ॥
चले क्यौं न परचित्त जब, घरही में यहघाट ॥
तकत छिद्र अभिमंत तन्यौं, बन्यौं मुलक दहबाट ॥ १५ ॥
नृप १ हिं मराइ गहाइ निज, अनुज २ रह्यो भजि एक ॥
भाग्यहीन यह भूप है, अक्खैं इमहु अनेक ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

पौगंडहुँ बय पाइ इम न सहिबो व्है औरन ॥
सरल निसर्ग्ग सुभांड१८६।४जनन बचनहु दै जोरन ॥
इतरहु तब अंगमि रु भ्रात लग्गे दब्बन भुव॥

---

१ मूर्ख ने राज्य नहीं पाया और अब स्वामी के देश को दवाने लगा॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ पाप करनेवाला २ नीच ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ३ वृद्ध ॥ १४ ॥ ४ शत्रुओं के चित्त क्यों नहीं चलें ५ अभीष्ट (वांछित) ६ बरबाद ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ दश वर्ष की अवस्था पाकर इस प्रकार सहनशीलता अन्य लोगों में नहीं होती ८ स्वभाव

असगोत्रहु भट अवर हड्ड सहना प्रतीप[1]हुव ॥
सीमा अराति[2] लखि यह समय रहे दब्बि जिततित धरनि ॥
जँहँ वढत द्रोह इक१गृह जनन[3] सत्रु मनन सुहि तँहँ सरनि[4] ॥१७॥
नृपति पितृव्यक[5] निम्म१८५।३तजिय द्वि२समा[6] अंतर तनु[7] ॥
जिहिं सब लुब्ध[8]हु जानि मन न मोर्‍यो भीषम मनु ॥
बुंदिय रन छत[9]विकल पटुहु[10] खिन्नहि[11] रह्योसु पुनि ॥
बोधितकिय जिहिं बिमुख सोहु उपदेस तज्यो सुनि ॥
अब निम्म१८५।३मरत प्रबयो[12] न इक१परे स्वामिढिग सब प्रबय[13] ॥
असगोल भटन कति उव्वरे जिनतैं नवन्यों बिमुख जय।१८।
अम्मरदुर्ग१इत दब्बि पाइ रूज्झोल२प्रमोदन ॥
संकरगढ३लग सहज सीम प्रसरिय सीसोदन ॥
इत खिच्चिन आटोनि १ लियउ बारां२वड़ोद३लग ॥
वप्पाउर ४ बररोद ५ प्रमुख पुहवी दब्बी पग ॥
इत हम्म१८३।१विजित[14] डोडन अनखि लग रहंलावनि१दब्बिलिय॥
इक१होइ दभिक१तोमर२आरिन इत उत्तर भुव अंगमिय॥१९॥
उन्नयपुर१लहि इनहु गंजि आमा२हनुमतगढ३ ॥
लोचनपुर१हुत लग्गि रारि मंडिय प्रलोभ रढ[15] ॥
जँहँ नृपमातुल जैत दहर गढपति हो दुस्सह ॥
दिय भजाइ जिहिं दुजन मारि गोलन प्रसारि मह ॥
नैनपुर टिकत उतके निखिल रद[16]तुट्टत अहि[17]जिम रहे ॥
इत निजनसँहु वड़पुर अखय१८६।१दब्बि निजहि कुलजन दहे।२०।

हाडे की सहनशीलतासे१ विरुद्ध होगये२शत्रु३वंशमें. शत्रु के मन भी उसी४मार्गमें जाते हैं ॥१७॥५काका. दो ६ वर्ष पीछे७शरीर. सबको८लोभी जानकर भी आपने अपने स्वामि से मन नहीं मोड़ा. बुन्दी के युद्ध में९घावों से विकल होकर१०नैरोग्य होने पर भी११दुखी रहा. एक भी१२वृद्ध नहीं रहा. सब१३वृद्ध लोक अपने स्वामी शत्रुशल्य के पास काम आगये ॥१८॥ हामा के१४विजय कियेहुए डोडिया क्षत्रियों ने क्रोध करके ॥१९॥ लोभ के१५हठ से१६दांत टूटेहुए१७सर्प के समान।२०।

दोहा ॥

पट्टनि१से पुर लिय प्रथम, गिनि प्रभुता निजगेह ॥
मरत निम्म१८५।३रोध न मिल्यो, अधिक बढयो तब एह ॥२१॥
जास तोग१८६।१अभिधान जग, बिदित पराक्रम बोध ॥
निम्मदेव१८५।३सुत जिहिं निपुन, जनक पट्ट लिय जोध॥२२॥
हल्लू१८२।१बिनु जिम तुच्छहुव, बंबावद सु बढंत ॥
वैरिसल्ल१८५।१पीछैं सु बिधि, हुव बुंदियप्रभुव हंत२ ॥ २३ ॥

षट्पात ॥

खित्तल वनिक३ खटोर हुतो नृप सचिव स्वामि हित ॥
प्रतिभा४मंत्र५ प्रगल्भ६ दूरदरसी सकुनोदित७ ॥
बिख८ सु राज्यबिच बढत हेरि सवसुख रोकत हुव ॥
जिनजिन लिय जोजोहि भयो तिनतिन अप्पतभुव ॥
सारन१८३।१रु जैत१८५।१समुचित सबुज्झि अनुमत१० निज लेएउभय
नृपपैलगाइदिन्नैंनिखिलउज्झि११अखय१८६।१चुंड१८६।२रुउदय१८६।३

दोहा ॥

निजनिज दब्बी दै निखिल, लाये नृपपय लुद्द१२ ॥
लाल१८४।२निम्म१८५।३जावद्दु१८५।२कुलाहि,सुमतिरहेतैंहँसुद्द॥२५॥
गहत उदय१८६।२मक्खीद१गढ, जैत१८५।१विचारिय जंग॥
सचिव निवारयो सोहु समि१३, रच्यो स्वामिहित रंग ॥ २६ ॥
अरिन जिते सब अंगमैं, गये तिते पुर१ग्राम२ ॥
निज प्रतीप१४ रक्खे निजहिं, सचिव दुधाँ१५ रचि साम१६ ॥

---

१ रोकनेवाला ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हानि; अथवा खेद का वचन ॥ २३ ॥ खेता नामक खटोर जाति का ३ बनिया ४ बुद्धि ५ सलाह में ६ कुशल ७ शकुनी. राज्य में ८ जहर बढता देखकर ९ उचित. अपनी १० सलाह में लेकर ११ छोडकर ॥ २४ ॥ १२ लोभियों को ॥ २५ ॥ १३ शान्त करके ॥ २६ ॥ अपने १४ विरुद्ध लोगों को भी अपने बनाकररक्खे १५ दोनोंओर १६ मिलाप

॥ षट्पात् ॥

वय नृप सोलह१६वर्ष हुवहु न *छमा छोरत हुव ॥
सरलपनहु सचिवोक्त धारि निजहित मन्न्यौं धुव ॥
राव सूर खदिराट[1] जनन[2] चालुक्य जाजपुर ॥
तनया कमला १८४।१तास धरन मकटी साध्विन धुर[3] ॥
उपयाम[4] प्रथम रानी यहै पहु सुभांड १८६।४ आनी परनि ॥
संबंधि नृपन न दई सुता धम्मिं[5] घटत अविरत धरनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

कनीनाम अनुपमकुमरि १८६।२, अमरकबंध अगार ॥
उपयम दूजे २ सो अधिप, परन्यौं कथित प्रकार ॥ २९ ॥
राजकोट चालुक रतन, कन्या स्यामकुमारि १८६।१ ॥
सोंड १८६।५ बिवाह्यो सो सती, नियति लेख निरधारि ॥३०॥

॥ षट्पात् ॥

जुग २ सोदर सहजात बिबिध महसह बिबाहि बर ॥
सचिव सु खित्तलसाह घनैं जस जुत लायो घर ॥
लघु इनतैं लोहठ १८६।६ रु कर्मचंद्रक १८६।७ बय बालहु ॥
हुव अनूढ मृत हात कहुँक असहन छम कालहु ॥
सुत दुव२उपेत मृत दुव२सुतन दुख अनंत किय दाहरिय१८५।२
तिन्ह मेतकर्म विधिमत बितत करि द्विजजन घनघन करिय॥३१॥

॥ दोहा ॥

सक मुनि नंव चउदह १४९७ इमसु, बिरचि भ्रात जुग२व्याह ॥
वन्यौं थंभ खित्तलबनिक, राज्यथंभि नयराह ॥ ३२ ॥

* छमा = सचिव का कहाहुआ. १ खैराड़ प्रदेश म. सोलंखियों के २वंश में ३ पतिव्रताओं की धुर खींचनेवाली ४ विवाह ५ धर्मी लोग ६ निरन्तर ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ७ जोड़ला (एक साथ उत्पन्न होनेवाले) ८उत्सव सहित ९ विना विवाहे किसीके हाथ से मरा. काल १०समर्थ है ११ विस्तृत (फैला) करके बहुत ब्राह्मणों को दृढ कर दिया ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

पीछैं निजनिज समयपर, तनया इक १ सुत तीन ३ ॥
भारमल्ल १८६१४ नृपकैभये, पथ निज चलन प्रबीन ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ जो जेठोतनय सूर नारायनदास १८७१ सु ॥
*तानक स्वकुल द्वितीय २बिदित नरबद१८७१२ +बितरन ÷वसु॥
ससु १ बसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥
प्रभुंके जिहिं परपुरुख वंस यह वहुल वढायउ ॥
॥
नरसिंह१८७१३नामतीजो३निपुनकुमरजन्यौंअनुपमकुमरि१८६१२॥
जिन्ह पिछ्छिमदनकुमरी१८७१जनीकमला१८६१वैार्द्धकभावकरि॥

॥ दोहा ॥

संतति न भई सोंड १८६१५ कै, निर्यति उदर्क निदान ॥
क्रम संभव ए चउ ४ कहिय, सुपहु हड्ड संतान ॥ ३५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मंडोउर इत जोधमहीपति, औरस कुल विस्तरि प्रबया अति॥
बिक्रमसक पंद्रह तिथि१५१५बित्तत, सुक्र बिसद एकादसि११सम्मत
भुव निजनाम रहन कछु भायउ, ॥
सोदर बीका१वीदा२तससुव,भाग्य लखँन गय दुव२जंगलभुव।३७॥
देवीदास तनय इक १ दुद्धर, पाइ जनक कटुबैन अनखपर ॥
आयउ हड्डवती जनपद वह,स्वभटकियउ खिच्चिन पुनिहितसह।३८॥
भो पित्थल जाको नाती भट, मातुल मारि वह्यो जो उब्बट ॥
जिहिंकुल अब गागरनौं जानहु, प्रभुंभ्राता ब्याह्योसु प्रमानहु।३९।

॥३३॥ अपने कुल को*फैलानेवाला+देनेवाला÷धन१हेरावराजा रामसिंह आपके परपुरुषों का वंश जिसने २ बहुत बढाया ३ वृद्ध अवस्था में ॥३४॥४ भाग्य के ५ फल से ॥ ३५ ॥ ६ वृद्ध अवस्था में ॥ ३६ ॥ भाग्य ७देखने के लिये ॥ ३७ ॥ हाडोती ८देश में ॥ ३८ ॥ ९ पोता १० हे रावराजा रामसिंह आपका भाई

लखि *खिन रान अमरगढ जव लिय, कोउक बंधु दुर्गपति तँहँ किय॥
बुंदियधर जिहिँ लूट वढाई, +प्रचुर प्रजा पँहँ त्राहि पढाई ॥ ४० ॥
सोलह १६ ÷सम नृपवय जवहीसौं, त्रासन अरिन चिंति तवहीसौं॥
×वर्मितवलखिजिचढनाविचारिय, निजअमात्यतवतबसु निवारिय४१
जिनजिन भुव दब्बी निज जोधन, पठये ते इम नीतिप्रबोधन ॥
आग[1]स मिटन वेर यह आगत, जो वह जोर अरिनसिर जागत।४२।
मनविन्नु तेहु गये रिपुमारन, वाहिर १ अंतर २ भेद बिथारन ॥
क्रम१लघु[2]तंस२हेलं[3]१गुरु२कारन, कहुँक लरैंहु मिटीसु पुकार न।४३।

रुकारन १ पुकारन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

हनैंइनहिंजिन छद्म[4]प्रहारन, संग नदियइम[5]जैत१८५।१रुसारन१८६।२॥
जे सागस पहुँचे निज जार[6]न, पायउ तँहँ तिन परन प्र[7]तारन ।४४।
वसुधा निज प्रभुकीहि बिगारन, धी[8] कुटिलसु लग्गैं किम धार[9]न॥
विफल मुरे लखि बिमुख न वार[10]न, हुव नृप बिमे[11]न पुकार हजारन॥४५॥
रुकिय अग्ग गणकन[12] उच्चारन, प्रानतजाहिँ नृप हेतिप्र[13]हारन ॥
सु वचन चिंति खित्तल१रुसारन२, नृपकोकरहिँ सँसौं[14]ह निवारन।४६।
रहत सदाहि छमा १ प्रभुता २ रन, वढैँ छमाँ १तउ कित्तिबिगारन॥
जुज्झैँ इमहुव नृप साधारन, वेलो[15]चित कृति जानि विचारन ॥४७॥

वहां व्याहा है ॥ ३९ ॥ * समय देखकर महाराणा + बहुत ॥ ४० ॥ राजा सोलह ÷वर्ष की अवस्था में हुआ जब से ही × कवच धारण कीहुई सेना के ॥ ४१ ॥ १ अपराध ॥ ४२ ॥ २ छोटे कदमों से चलकर ३ लम्बी आवाजें देनेवाले कहीं पर लड़े उस कारण से वह पुकार नहीं मिटी ॥ ४३ ॥ ४ छल की घात से ५ इस कारण से ६ बुन्दी की भूमि को गुप्त रीति से भोगने वाले ७ धोखा देने को ॥ ४४ ॥ कुटिल ८ बुद्धिवाले ९ तलवारों की धारों से भागने में १० समय नहीं लगा; अथवा प्रवृत्ति के विघातक पीछे फिर गये ११ उदास ॥ ४५ ॥ राजा जाने लगा जिसको भविष्यत् वाणी से १२ ज्योतिषियों ने रोकदिया १३ शस्त्रों के प्रहार से १४ शपथ दिलाकर ॥ ४६ ॥ प्रभुता सदैव क्षमा और युद्ध से रहती है इनमें क्षमा बढजाती है तो भी कीर्ति को बिगाड़ती है १५ समय के उचित ॥ ४७ ॥

जो गुन१बच्यो बाल्य अंतर जब,औगुन१छमा२दया३सह सो अब॥
प्रभुता १ जँहँ ऐसे छबि पावैं, दुष्टन तो इन्ह परखि दबावैं ॥४८॥
धुत्त १ धिठ २ बंचन तँहँ धारैं, पचांऽगन जँहँ मंत्र २ प्रचारैं ॥
जँहँ लेसहु उच्छाह३न जग्गैं, भिदि तँहँ कृत्य उपक्रम भग्गैं ॥४९॥
लिक ३ जो इक व्हैहै प्रभुता १ ही, दव्वै सबन तोहु सठ दाही ॥
नृपमैं सक्ति त्रय३हि भास्यो नन,जातैंन दबिरहे निज१पर२जन॥५०॥
सारन१सोंड२जैत ३ खित्तल्ल ४ सह, ए चउ ४व्हैन रहै न पट्ट यह ॥
निम्म१८५।३तनयतोगहुभटनामी,सिरहिसदामन्नैंनिजस्वामी॥५१॥

॥ दोहा ॥

तिमनवब्रह्म१८५।२रूसेव१८६।२तँहँ,अमर१८६।१विजय१८६।१चउ४एहु
निज मनकरि इच्छै नृपहि, जुरे इतर निँज जेहु ॥ ५२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चमे ५ राशौ वीति होत्रवसुधेश्वरवीज्यवर्णानवीजहड्डाधिराडास्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्य विहितव्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४ चरित्रेऽप्राप्तराज्याऽन्वयराजा १८६।१ व्यग्रजत्रय ३ बुन्दीदृङ्गदुर्गादि २

बाल्यावस्था के पीछे क्षमा गुण रहा सो अब वही गुण दया के १ साथ होकर अवगुण होगया ॥ ४८॥ २ धूर्त और ढीठ लोग वहां ३ ठगाई करते हैं कि जहां * पांच अङ्गों सहित मन्त्र का प्रचार नहीं होता. जहां पर राजा की उत्साह नामक तीसरी शक्ति नहीं जगती तहां आरम्भ में ही कार्य का नाश होजाता है ॥ ४९ ॥ यदि प्रभुशक्ति १ मन्त्र शक्ति २ और उत्साहशक्ति ३ ये तीनों एक होती हैं तो वहां पर ही प्रभुता होती है और वही राजा सबको दबाकर दुष्टों को जलानेवाला होता है. ये तीनों शक्तियां इस राजा में नहीं दीखतीं इसकारण से अपने और पराये लोग दबे नहीं रहें ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ४ अपने लोग थे सो भी ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरि

---

*सहायाः साधनोपाया विभागो देशकालयोः ॥ विनिपातप्रतीकारः सिद्धिः पञ्चाङ्ग इष्यते ॥१॥

सप्रसभसमाक्रमण १, चर्मकारपारवश्यानङ्गीकृताऽऽधिपत्योदयसिंह १८६।३ बुन्दी १ कोटा २ गैणोली ३ पुर १ ग्राम २ प्रकरसमासादन २, ज्ञातयुवावस्थबुन्दीशातितितिक्षातिशयपृथ्वीपरिलुब्धस्व १ पर २ सामन्तस्वस्वसीमावृद्धिविस्तारण ३, दृष्टेतराऽपूर्वलाभप्रत्युततत्प्राप्तिप्रतीपपृथ्वीशपितृव्यकगाङ्गेयगृहीतधुरधारकमहामनोनिम्मदेव १८५।३ प्रधनप्रहरणप्रघातप्राप्तिपश्चाद्वितीया २ऽब्दावसानसमयतनुत्यजन ४, राणाकुम्भकर्णाऽमरदुर्गा २ दिबुन्दीसीमाप्रदेशसमाक्रमण ५, खिचि१ डोड२द्विषद्वय२ बुन्दीवशाऽऽटोणि१रहलावणि २ प्रभृतिप्रान्तप्रभूभवन ६, मनोविभक्तलब्धिनैकी १ भूतप्रान्तोन्नयनपुर १ प्रमुखपत्तनप्रदेशदभिक १ तोमर २ द्वेषिद्वन्द्व २ दृग्दङ्गवाहिनीवेष्टन ७, तद्दुर्गपतिबुन्दीशमातुलदहडजैत्रमल्लतत्प्रत्यनीकपृतनाप्रद्रावण ८, रोधकनिम्मदेव १८५।३ मरणाऽनन्तराऽक्षयराज १८६।१ पुनःपुनःप्रभुपृथ्वीपरिच्छेदन ९, निम्मदेव १८५।३ नन्दनतोगनाथ १८।१ विभागप्राप्तपितृपदनवग्रामपुरस्वामितासमा-

त्र में राज्य नहीं मिलने से अक्षयराज आदि तीन बडे भाइयों का बुन्दीनगर और गढ आदि को हठ सहित दबाना, चमार के वशीभूत होकर राजापन को अस्वीकार करके उदयसिंह का बुन्दी, कोटा और गैणाली के पुर और ग्रामों के समूह को लेना, युवावस्था में बुन्दीश की अत्यन्त क्षमा को जानकर पृथ्वी के लोभी अपने और पराये उमरावों का अपनी अपनी सीमा को बढाना, दूसरों का अपूर्व लाभ देखकर उलटा उस प्राप्ति के विरुद्ध भीष्म की ग्रहण कीहुई धुर को धारण करनेवाले राजा के काका बडे उदार मनवाले निम्मदेव का युद्ध में शस्त्रों के घांव पाये पीछे दूसरे वर्ष के अन्त समय में शरीर छोडना, राणा कुम्भकर्ण का अमरगढ आदि बुन्दी की सीमा के प्रदेश को लेना, खीची और डोड दोनों शत्रुओं का बुन्दी के वशवर्ती आटोण और रहलावण आदि प्रान्तों का मालिक होना, इकट्ठे मिलेहुए प्रांत को और उणिआरा आदि नगर के प्रदेशों को मन से आधा आधा बांट कर दहिया और तोमर दोनों शत्रुओं का नैणवा नगर को सेना से घेरना, उसके किलादार बुन्दीश के मामा दहड़ जैत्रमल्ल का उन शत्रुओं की सेना को भगाना, रोकनेवाले निम्मदेव के मरे पीछे अक्षयराज का वारम्वार मालिक की भूमि को काट

साद्न १०, विभ्रष्टबुन्दीराज्याऽवशिष्टरक्षकसमालोचितदेश१ का-
ल २ ज्ञातगतदौर्लभ्यतत्तदर्थप्रत्यर्पितमनोमात्राऽवमतस्वस्वसाम-
न्तसमाक्रान्तप्रान्तस्वामिधर्मसेवनसमर्थसारण १८६।१ जैत्र १८५।१
सम्मतिसङ्गतप्रतिभा १ प्रगल्भमन्त्र २ महोदधिशाकुन ३ सुज्ञान-
वर्तिष्यमाण४दूरदर्शिमहामात्यमन्त्रिमणिवणिक्क्षेत्रल१बन्धुत्रय३
वर्जितविमुखीभूतसमस्तस्वभटवर्गस्वामिसभासमानयन ११, तिर
स्कृताग्राह्यलब्धिलोभलाल १८४।२ निम्म १८५।३ जावदु१८५।२
सन्तानस्वामिसेवासमुत्कर्षसूचन १२, वैश्यसचिवोदय १८६।३ परि
च्छिन्नपूर्वस्वपितृप्राप्तमक्षिपदर्ग१प्रतिनिनीषुजैत्रसिंह १८६।३ नि
वारण १३, मन्त्रिराजक्षेत्रल १ समनृपानङ्गीकारसमयसीमासा
मीप्यवर्तिसामन्तापत्यचालुकी १८६।१ राष्ट्रकूटी १८६।२द्वितीयाद्व
य२नरेन्द्रभारमल्ल १८६।४ परिणायन१४, नृपाऽनुजसोराड १८६।
५ राजकोटनामग्रामैकग्रामणीचालुकरत्नसिंहकन्याश्यामकुमारी

ना, निम्मदेव के पुत्र तोगनाथ का विभाग में आयेहुए पिता के स्थान नवगां
वां नगर का स्वामिपन प्राप्त करना, बुन्दी के राज्य को भ्रष्ट हुआ देखकर
बाकी के राज्य की रक्षा करने के लिये देश काल को समझ, गयेहुए का मि-
लना दुर्लभ जान, जो जो प्रांत जिन जिनने दबाये थे उन उनको वे वे प्रांत केव
ल मन से अपमान कियेहुए अपने उमरावों को पीछे देकर स्वामि धर्म का से
वन करने में समर्थ सारण और जैत्र की सम्मति के साथ बुद्धि में प्रबल, सलाह
के महा समुद्र, शकुन के श्रेष्ठ ज्ञान में वर्तनेवाले, दूरदर्शी, प्रधान मन्त्रिशिरो-
मणि वैश्य क्षेत्रल का तीन भाइयों को छोडकर बाकी के विरुद्ध हुए सब उमरा
वों के समूह को स्वामि की सभा में लाना, अग्राह्य लाभ के लोभ का तिर-
स्कार करके लाल, निम्मदेव और जावदू की सन्तान का स्वामि सेवा में
बडप्पन दिखाना, वैश्य सचिव का पहले अपने पिता को मिलेहुए उदयसिंह
के छीनेहुए मक्षीदगढ को पीछा लेने की इच्छावाले जैत्रसिंह को मना कर
ना, बराबर के राजाओं के अस्वीकार करने के समय में मन्त्रिराज खेता का
अपनी सीम के समीपवर्ती सामन्त की पुत्री चालुकी और दूसरी राठोड़ी
दोनों से नरेन्द्र भारमल्ल का विवाह करना, राजा के छोटे भाई शौरड का
राजकोट नाम एक ग्रामकेपति सोलंखी रत्नसिंह की कन्या श्यामकुमारी से

१८६।२पाणिग्रहण१५, विवाहशकज्ञापनाऽनन्तरानूढलोहठ १८६।
६कर्मचन्द्र १८६।७कैशोर्यसंस्थासूचन १६, भूभुजङ्गभारमल्ला१८६।
४ ऽपत्यचतुष्क ४ सम्भवाऽवसरकुमारनारायणदास १८७।१ नर
वद १८७।२ कन्यामदनकुमारी १८७।१ तोकत्रय ३ चालुकी १ प्र-
सवन १ कुमारैकनरसिंह १८७।३ राष्ट्रकूटी २ जनन २ विख्यापन
१७, परिणीतचालुकी१कशोण्ड १८६।५ सन्तानाभावसमर्थन१८,
मण्डपपुरराजराष्ट्रकूटयोधराजनिजनामाङ्कनवीनयोधपुरनामनगर
निर्म्माणसम्वत्सरसङ्ख्यान १९, योधराजपुत्रबीक १ बीद २सोदर
द्वय २ जाङ्गलप्रदेशप्रस्थान २०, तत्तृतीय ३ पुत्र देवीदास ३
हड्डवतीजनपदसमीपखिच्चिवाटदेशाधिपतिखिच्चिराजाश्रितीभव
न २१, तद्भाविपौत्रपृथ्वीराजवंश्याद्यावधिगागरणीपुरप्रवर्तमा-
नदेवीदासपौत्रराष्ट्रकूटकुलप्रभुकनिष्ठभ्रातृश्वाशुर्यसम्बन्धितास्फु-
टीकरण २२, चित्रकूटायत्तामरदुर्गाध्यक्षबुन्दीसीमान्तरविप्लव-

विवाह करना, विवाह के सम्वत् की सूचना किये पीछे विना विवाहे लोह
ठ और कर्मचन्द्र के किशोर अवस्था में मरने की सूचना करना, भूपति भार
मल्ल के चार सन्तानों के जन्म के समय कुमार नारायणदास, नरवद और
कन्या मदनकुमारी तीनों बालकों का चालुकी से प्रकट होने और एक कुमर
नरसिंह का राठोड़ी से जन्म होने की प्रसिद्धि करना, चालुकी को व्याहने
वाले शौण्ड की सन्तान के अभाव को पुष्ट करना, मण्डोवर के राजा राठोड़
जोधा का अपने नाम से नवीन नगर योधपुर बसाने के सम्वत् की गणना
करना, जोधा के पुत्र बीका और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जाङ्गल देश
में जाना, उसके तीसरे पुत्र देवीदास का हाडोती देश के समीप खीचीवाड़ा
देश के पति खीची राजा के आश्रित होना, उसके आगे होनेवाले पौत्र पृथ्वी
राज का वंश इस समय तक गागरणी पुर में वर्तमान है उस देवीदास के
पौत्र के राठोड़ कुल में प्रभु (रावराजा रामसिंह) के छोटे भाई के ससुराल के
सम्बन्ध को स्पष्ट करना, चित्तोड़ के वशवर्ती अमरगढ के अध्यक्ष का बुन्दी
की सीमा के भीतर लूट खसोट फैलाना, उसको मारने की इच्छावाले राजा
के प्रस्थान को रोककर मन्त्रिराज के भेजेहुए उमरावों का कार्य के विना वि

विस्तरण २३, रुद्धतज्जिघांसुनृपप्रस्थानमन्त्रिराजप्रस्थापिताकृतकार्यविमुखभटवर्गप्रत्यागमन २४, शक्तित्रय ३ विहीननृपक्षमा १ दया २ गुणदोषीभावप्रकटन २५ मन्त्रिराजक्षेत्रल १ समुपेतसारणा १ दिदायाऽष्टक ८ साधारणस्वामिनृपतानिर्वाहण २६ मष्टादशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥

आदितः पञ्चषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

विधिबिलासित जानैंन जग, रक्खैं हित अनुराग ॥
कति सुभांड १८६१४ लखि अब कहैं, भू रहिहै जो भाग ॥१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अधिपहु मरनजातयह अक्खी, स्वामि सुभांड १८६१४ करहु सबसक्खी
सिसुकी ठ्है न परख सब सच्ची, कति इम बत्त गई रहि कच्ची ॥ २ ॥
समर अग्रज १ हु अचल अनुज २ सम, तदपि यहै दोउ २न अंतरतम ॥
नृप १८६१४ रन आनिबनैंतहँनिबहैं, सोंड १८६१४ निजनदुखदूरहु नसहैं ३
यातैं जबजब सचिव अटक्किय, तबतब तासकथित हित तक्किय ॥
नृप १ को कथितहु अनुज २ निबाह्यो, सचिव मानि संकोचहु साह्यो ॥४॥
जो नृप १ होतो अनुज २ सुद्ध जम, करतो तो मरि १ मारि २ कुलक्रम
नृप १ रु सचिव २ अब पाइ नियंत्रिक, धूनैं सिर मनमारि सदा धक्क ॥५॥
मेवारन यह डँमर मचावत, अतिपुकार जनपैंजन आवत ॥
बनिक हुतो जब कछुक ब्याधिवस, रन खिन तव नृपकै रचाइ रस ॥

मुख होकर पीछा आना, तीन शक्तियों के बिना राजा के क्षमा और दया गुण का दोष होना प्रकट करना, मन्त्रिराज चेत्रल सहित सारण आदि आठ भाइयों का साधारण स्वामि के राजापन को निबाहने का १८ अठारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १८ ॥ और आदि से १६५ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ साची ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ शासन करनेवाले ३ क्रोध ॥५॥ ४ उपद्रव

सेना साजि हंकिय दुव २ सोदर, पर्‌यो कलह थाँनाँपुर परिसर[1] ॥
हिंडोली लुट्टन श्रमहारे, मिले तत्थ जावत मेवारे ॥ ७ ॥
सुनि सारन १८६।१ पहुँच्यो बंसीसन, जैत १८५।१ न पुगि सक्यो खट ६ जोजन
जो मगमाँहिं सु संग तोग १८६।१ भट, सत्रु मिलत बेढे[2] अतिसंकट ।८।
दिन अवसेस रहत घटिकादस १०, रच्यो प्रबीरन रन समुचित रस ॥
मिलि मैंनन[3] इक सहँस १००० चमू उत, सहँसच्यारि ४०००० सुभटन इत संजुत
दिट्ठि सुरत्त[4] बज्जिग असि दारुन, रन हुव अचल हट्ठ कोंपारुन ॥
फेर इक १ तुरकन कछु फुट्टे, खापन तदनु कालअहि[5] खुट्टे ॥१०॥
मिलतहिं बिकल भजे खल मैंनें[6], प्रचुर सहे न गये असि पैंनें[7] ॥
सजत गर्नार लगे अरि भज्जन, लुट्टन १ पट्ठु जुट्टन २ जिन्ह लज्जन ।११।
उच्चतहीं[8] पुडिन[9] इन्ह दोरत, एहु सुरे कति लज्ज अहोरंत[10] ॥
बज्ज्यो प्रखर[11] तहाँ बालि असिवर, परिगाविभिन्न लुत्थि लुत्थिन पर ।१२।
आपउ काम थोरि गिरधर १ इत, जु लखि सोंड पहुँच्यो घाटिंप[12] जित ॥
बाहुलैं[13] तस तरवारि बिदारिय, याके असि तस सीस उतारिय ।१३।
हुंकर १ थोर मोरि अरि सत्तल २, मोरयो गिरधर बैर महाबल ॥
बंसीधर १ कूरम सुत हय बढ़ि, चपल घाटिपति बाह लयो चढ़ि ।१४।
माधव २ भ्रात हुल्ल हरि ३ मार्‌यो, बलिय तोग १ तस बाजि बिदार्‌यो ॥
लुंटाक[14] १ सत्तल २ हरि ३ लोटत, घोटक जुग २ मोटक पग घोटत ॥१५॥
पुनि मेवारसटन छुट्टे पग, मारे इन्ह बहु पहुँचि पहुँचि मग ॥
धीर १ सल्ह २ सारन ३ अग्गैं धंपि[15], अड्डे मग ठट्ठे जय आलंपि[16] ।१६।
रिपु बिच परे मरे बहु मारत १, मरे कतिक २ कातर मातर मत ॥

॥ ६ ॥ थाणापुर के [1]समीप की भूमि में ॥ ७ ॥ [2] घेरे ॥ ८ ॥ [3] मीणों की ॥ ९ ॥ [4] क्रोध से लाल. म्यानों से [5] काले सर्प के समान खड्ग निकले ॥ १० ॥ [6] मीणे [7] तीक्ष्ण [8] ऊर्ध्व [9] एडियों को दबाते हुए अर्थात् साथ के साथ दौड़े. लज्जा से [10] फेरे हुए [11] तीक्ष्ण ॥ १२ ॥ [12] घाटायतियों का पति जिधर था. [13] बाहुत्राण ॥ १३ ॥ १४ ॥ [14] लूटनेवाले ॥ १५ ॥ [15] दौड़कर. अपनी विजय [16] कहकर ॥ १६ ॥

गाढचकित अरि अष्ठ८ लयेगहि, झुल्ल्यो नृप अवचलहु विजयवहि ॥१७॥
जंपिय सोंड१८६।५नेर प्रभु जावहु, सेना वलि निजसंग सिधावहु ॥
हम सतपंच५०० अमरगढ हंकहिँ, इक जो जतन वनैं तो अंकहिँ[२] ॥१८॥
जतन कोन सारन१८६।१ खिजि जंपिय, पहुअनुजात[३] सुसुनत पयंपिय[४] ॥
तुम१ हम२ चलि गढद्वार निसातम, केदिन अरिन खुलाइ अररं[५] कम ॥१९॥
पैठैं सहज दुर्ग निज पावैं, नृप आगम इम सफल वनावैं ॥
अंस[६] थप्पि सारन१८६।१ सन्नी यह, आनि इतैं जैत१८६।१ हु पहुँच्यो वह ॥२०॥
मंत सु मन्नि चलन किन्नौं मन, नृप तव कहिय हमहु जैहैं नन ॥
जैत१८५।१ कह्यो इतनौं दल जावैं, नृपको हठ तव हमहिं नसावैं ॥२१॥
तदपिन नैंक महिप मन्नी तव, जैत सवन पहुसंग दयो जव ॥
संग न जानलगो हठि सोहू, तिन दिय सपथ[७] संगकिय तोहू ॥२२॥
काका१ जाइ भतीज३ मरे कलि, विजय भये लैं जस अछुत्त वलि ॥
यह न उचित हमरे मन ऐहैं, जदपि सवन टारे टरि जैहैं ॥ २३ ॥
भनि इम जैत १८५।१ मुरयो लैं सूंधन, आये सव निज नाह आयतन[११]
भट सतपंच५०० सज्जि उत सू पर, सारन १८६।१ सोंड१८६।५ तोग–
१८६।१ अग्रेसर ॥ २४ ॥
अरि जे अष्ठ८ गहे कातर[१२] अति, पटांदेन इततैं काहि तिन प्रति ॥
पहुँचत अमरदुर्ग[१३] पुर परिसर[१४], वढे अग्ग तजि हयन वीर वर ॥२५॥
अरि अष्ठ८न कटिपट[१५] गहि सह असि, हिय जमदंष्ठ[१६] छुवात चले हसि ॥२६॥
जंपिय ढिग अप्पन पहुँचे जव, तुम इम अलितैं[१७] देहु हेला तव ॥
हनन आत हछुन हम हारे, अररं[१८] खुल्लि लेहुव रखवारे ॥ २७ ॥

---

१ प्राप्त करके ॥१७॥ २ हमारे नाम से जानाजावे ऐसा करेंगे ॥१८॥ राजा के ३ छोटे भाई ने ४ कहा ५ किवाड़ खुलाकर ॥१९॥ ६ कन्धा आपकर ॥२०-२१॥ ७ सौगन देकर साथ किया ॥२२॥ ८ युद्ध में ९ अछूता (अपूर्व) यश ॥२३॥ १० राजा को ११ स्थान पर ॥२४॥ १२ कायर १३ अमरगढ के १४ समीप भूमि ॥२५॥ १५ कमरबन्ध (पटुके) को पकड़ कर १६ कटार ॥ २६ ॥ १७ थकेहुए १८ किवाड़ खोलकर ॥ २७ ॥

चविहो इम न तो सु मन छुरिहैं, मोरि वसु[1]८न लुट्टत बसु मुरिहैं ॥
पटा कथित[2] नहिंतो तुम पैहो, बनि हमरे सुख आयु बितैहो ॥२८॥
इमकहि धरि मेवार पन्थ[3] इन, डिंगरहि[4] बंधि सिसिर ऋतु डहिन ॥
तमीरहत इक१जाम निबिड़तम, दुर्गद्वार पहुँचे दायक दम ॥ २९॥
कथितरीति अट्ठ८न हेलाकिय, बदलि गिरा[8] एकाति तिम बुल्लिय ॥
जासिके[9] सुनि प्रतिहार[10] जगायो, आक्खिय तिहिंगढपतिनन आयो ॥३०॥
किम ताविहु अब खुल्लैं किंवारहु, प्रातहि सब तससंग पधारहु ॥
गढपति हुक्मि कह्यो तिन्ह गाढैं, सच कातिक हम तिन्ह अवबाढैं ॥३१॥
ताइ निलैंनिन गढ अरि लैहैं, अंदर जो न लरन हम ऐहैं ॥
विक्खि[11] निजन[12] तिन अररै[13] बिछोरे, द्वारखुलत प्रविसे भट दोरे ॥३२॥
कछुक हुते रच्छक ते काढिय, द्वार किंवार पैठिगढ ढड्डिय[14] ॥
भटनघुराइअभयजैय[15]भेरिय, फवतसुभांड१८६।४आनपुनिफेरिय ॥३३॥
अट्ठ८न तिन इततैं कछु आदर, पायउ इक१इक१ग्राम वचनपर ॥
बुंदिय कहि लिय दूत वधाई, पुहवि उचित जित्ते तिन्ह पाई ॥३४॥
किल्लादार तत्थ तोग१८६।१हि किय, सारन १८६।१ सोंड १८६।१
बुलाये बुंदिय ॥
तोग१८६।१सुभटसतपंच५००सहिततिम, कियविप्लुत[16]मेवारमुलकजिम
भिल्लहड़ा१लग लुट्टि रानभुव, धनिकैं[17] बनिक गहि बहु आनैं ध्रुव ॥
मंडनदुर्ग१सहित पुरमंडल२, विंझोली ४ बेगम ५ लुट्टिय बल ॥३६॥
सत्रु धरनि इम धुसिम निम्म१८५।३सुव[18], हाहाकारकार[19] दुजननहुव ॥
गढचित्तोर पुकारं असह गत, कुंभरान सज्जियं जन कुक्कत ॥३७॥

१धन लूटकर. पहिले २कहे अनुसार ॥२८॥ ३मार्ग में ही ४दाढियें बाँधीं ५एक प्रहर ५ रात्रि बाकी रहते ६ अत्यन्त अन्धेरे में ७ दण्ड देनेवाले ॥ २९ ॥ ८ आवाज बदल कर ९ सिपाही ने १० द्वारपाल को ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १२अपने लोगों को ११ देखकर १३ किवाड़ खोलदिये ॥ ३२ ॥ पीछे किवाड़ १४ लगादिये १५ विजय के नगारे बजाये ॥ ३३ ॥३४॥ १६ उपद्रव युक्त ॥३५॥ १७ धनवान् बनियों को ॥३६॥ निम्मदेव का १८पुत्र हाहाकार १९करानेवाला ॥३७॥

॥ षट्पात् ॥

रायमल्ल रानसुत कहिय इमछत प्रयान किम ॥
देहु हमहिं आदेस[1] जिति हड्डन अग्गैं[2] जिम ॥
अमरँदुर्ग[3] अपनाइ हड्ड तोग १८६।१ हिं संगरहनि ॥
अहैं लहि जस अतुल तात मानस[4] सम्मद[5] तनि ॥
तस अरज एह मुकलतनय[6] सुनि सिराहि गृह रक्खि सुव[7] ॥
करि छल अनीक इक१ठाम करि हड्डन इनन प्ररुष्टहुव ॥३८॥

॥ दोहा ॥

थोरोथोरो थप्पिकैं, मंडनगढ दल मेलि ॥
कुंभ छन्न प्रस्थानकिय, हनिवे हड्डनहेलि[8] ॥ ३९ ॥
कम्मत[9] रान पतनी कह्यो, ऐहो कब प्रभु अत्थ ॥
अक्खिय ऐहौं हड्डहनि, तीज ३ श्रावनिकं[10] तत्थ ॥ ४० ॥
दंपति २ कैं हो प्रेमदढ, परिवृढ[11] इम अतिप्रीत ॥
कलित[12] सपथ[13] पुनिपुनि कह्यो, तीज ३ न होहिं अतीत[14] ॥४१॥
रानी अक्खिय रानसौं, किन्न सपथ मम कानि ॥
तो मृतगिनि[15] जरिहौं तुमहिं, जत्थ अनागत[16] जानि ॥ ४२ ॥
पतनीप्रति करि इम सपथ, प्रस्थित[17] निस प्रच्छन्न[18] ॥
हयनडाक द्रुत आइ हुव, सूचित[19] गढ संपन्न[20] ॥ ४३ ॥
कुहकभाव करि कुंभको, प्रकट न भो प्रस्थान ॥
तोग १८६।१ भीर करतो नतो, चतुरंगहिं चहुवान ॥ ४४ ॥

---

१ आज्ञा २ आगे जीते थे इसी मुवाफिक जीतकर ३ अमरगढ. पिता के ४ मन में ५ हर्ष फैलाकर ६ मोकल के पुत्र (महाराणा कुम्भा) ने ७ पुत्र को ॥ ३८ ॥ हाडों के ८सूर्य को मारने के लिये ॥३९॥ राणा के ९चलते समय १० सावन की तीज पर ॥ ४० ॥ इस कारण से ११ अधिप ने १३ सौगन १२ करके १४ व्यतीत नहीं होवेगी ॥४१॥ १५ मरेहुए जानकर १६नहीं आया जानकर ॥ ४२॥ १७गमन किया १८चुपके १९ऊपर जतायेहुए मांडलगढ में २०शामिल ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

कछुकहुँकछुकहुँ इम कियउ, इतउत थित दल अद्ध[1] ॥
मंडलगढ तिम मेल[1] निज, बलजोरयो हठबद्ध ॥ ४५ ॥
कालिनिअग्गैं सौंहकरि, अब मंडनगढ आइ ॥
चाहत जप[2] व्हाँतैं चल्यो, स्वीयन गम्य[3] सुनाइ ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

अमरदुर्ग उद्देस समय ग्रीखम सायंतन[4] ॥
करि दल सब एकत्र रान हंकिय इक्कत रन ॥
अखिलरत्ति[5] बहि अध्व[6] पाइ उद्दिष्ट प्रभातहि ॥
रुक्यो तोपन व्रात जोरि जंजीरन जातहि ॥
पढइ छह तोप सूपहु प्रथम तोग १८६।१ अमरगढ सज्जि तिन ॥
रजपुत उफान अंदर रुप्यो, कंदरजिम केहरि कठिन ॥ ४७ ॥
चउदह १४ दिन घमचक्क तोग १८६।१ मंडिय दारुनतम[6] ॥
नडपे आवन निकट कुंभ जोधन रोधनक्रम ॥
सारन १८६।१ कै जिहिं समय जग्यो बिधिबस संतत[7] ज्वर ॥
मारि असिन मक्खीददुर्ग जैत १८५।१ सु लिय दुद्धर ॥
लाल१८४।२ सुत गत्त[8] जिहिं रन लगिय दुसह हेति[9] आघात दुव २॥
भंजिकैं तदपि उद्दल १८६।३ भटन हइ बिजय जसहेतहुव ।४८।

॥ दोहा ॥

लग्गो जावन सोंड १८६।१ लघु, दै तँहँ सपथ निदान ॥
बरज्यो निहि सु नृपर वनिकर, अक्खि तोंग १८६।१ आव्हानं[10]।४९।

॥ षट्पात् ॥

दल तोग १८६।१ हु इम दियउ लरहिं द्वापर[11] जिन लावहु ॥
पै उपहार[12] प्रनष्ट प्रचुर अन्नादि पठावहु ॥

१आधी सेना मांडलगढ में रक्खी ॥४५॥२अपने लोगों को३जाने की जगह सुना कर ॥४६॥४सायंकाल के समय. सब रात्रि५मार्ग में चलकर ॥४७॥६अत्यन्त भयंकर७निरंतर८शरीर में९शस्त्र के प्रहार ।४८।१०बुलाना ।४९। ११संदेह १२सामग्री

पत्रलिखित पठयेहु पैरन लुहे लखि पैद्धति ॥
बारबार सुहिबनत गिनैं सव पंथ रुद्धगति ॥
पठई लिखाइ तब तोग१८६।१प्रति निरखि वसँर आवहु निकसि ॥
सुनिसोक१त्रपा२बहिनिम्म१८५।३सुँवहुवधुवरनजुज्झारहसि ।५०।

॥ दोहा ॥

प्रथम अठ ८ जे लिय पकरि, गिनि निज अप्पिय ग्राम ॥
कहि छिन्न ते मुक्कले, बुंदिय सुख विस्राम ॥ ५१ ॥
हल्लू १८२।१ कुल संतान है, मंडनगढ हदमाँहिं ॥
क्रमत कुंभ हड्डन हनन, निखिल रहे तँहँ नाँहिं ॥ ५२ ॥
आइ तोग१८६।१ प्रति कहिय इन, आवन रानउँदंत ॥
पुब्बहि किय अवधान पटु, अब्बरजानि खिन अंत ॥ ५३ ॥
कहनलग्गो तिनहुकोँ, स्वीकृत वसु ८ अरिसंग ॥
हड्ड हमहु उन उच्चरिय, रचिहैं प्रभुमत रंग ॥ ५४ ॥
सपथ करिहु न कढ समुझि, वीच भटन वैठाइ ॥
सप्तअग्ग पंचहि सत ५०७ न, पूजे भुज महपाइ ॥ ५५ ॥
पट १ भूखन २ आयुध ३ प्रमुख, अप्पिय सवनहि आनि ॥
केसर रंग दुकूल करि, मरन सज्यो सुभमानि ॥ ५६ ॥
रमत असिन मारत १ मरत २, जैहाँ कहि तो जोग्य ॥
रहौं नतो ढिग रानके, भव्य त्रिदिवँ चहि भोग्य ॥ ५७ ॥
हड्डनकुलहिँ कलंक है, जब छन्नैं भजिजाइ ॥
तथा बनैं किम तोग १८६।१ सौं, लज्ज प्रिया हियलाइ।५८।
इम दृढकरि खट ६ तोप वे, गड्डि धरनि कहुँ गूढ ॥

---

१ शत्रुओं ने २ मार्ग में ३ समय देखकर ४ लज्जा ५ पुत्र ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ६ माण्डलगढ़ की ॥ ५२ ॥ राणा के आने का ७ वृत्तान्त ८ सावधान होने में ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ९ वस्त्र ॥ ५६ ॥ १० स्वर्ग ॥५७ ॥ ५८ ॥

करि गंगोदक न्हान क्रम, रंजिय प्रमद प्ररूढ ॥ ५९ ॥
अहै पहिलैं किन्नौ असन, अनसन सबविधि अर्ज्ज ॥
लग्गे दिनकी संझलग, सभट भयो रनसज्ज ॥ ६० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीजपवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेंद्रसुभाण्डदेव १८६।४चरित्रे संदिह्यमानस्वप्रजाऽवनसामर्थ्यमहीप १ तदनुज २शौर्यमहदन्तरद्योतन१, स्वामि१सचिव२ संरोधन्हीणशौराडदेव१८६।५वैमनस्यविख्यापन २, श्रुतस्वदेशराणापक्षीयवर्द्धितविप्लुतपूत्कारनिश्चितकुलांचवणिक्प्रधानपारवश्यविप्लववर्द्धिष्णुयुयुत्सुसन्नद्धसैन्यशौराड१८६।५स्वाग्रजप्रस्थापन ३, बुन्दीवरूथिनी १ हिंडोलीशृगालीभ्रान्तप्रतिगम्यमानलुण्टाकगण २ स्थानाख्यपुरपरिसरप्रधनप्रारम्भण ४, प्रेक्षितपलायमानस्वसहायीभूतान्त्यजाविद्रुतवैरिवलभूयोविनिवर्तन ५, परपक्षयोधान्तर १ बुन्दीवीरगौडगिरिध

१गङ्गाजल से ॥५९॥ पहिले२दिन३निराहार४आज५संध्या पर्यन्त६वीरोंसहित

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरित्र में अपनी प्रजा की रक्षा करने में संदेहयुक्त सामर्थ्यवाले राजा और राजा के छोटे भाई की वीरता में बड़ा अन्तर होने की सूचना करना, स्वामी और सचिव के रोकने से लज्जित शौरडदेव के उदास होने की प्रसिद्धि करना, महाराणा के पक्षवालों का अपने देश में उपद्रव मचाने की पुकार सुन, वनिया जाति के प्रधान को रोग के वश जान, उपद्रव बढानेवालों से युद्ध करने की इच्छावाली सेना को सज्जीभूत करके शौरड का अपने बडे भाई राजा को रवाना करना, बुन्दी की सेना का हिंडोली को लूटकर पीछे जानेवाले थकेहुए लुटेरों के समूह से 'थाणा' नामक पुर के पास की भूमि में युद्ध प्रारम्भ करना, देखते ही भगनेवाले अपने सहायक अन्त्यजों के भगते ही वैरियों की सेना का पीछा लौट जाना, शत्रुओं के वीरों में से किसी सुभट का बुन्दी के वीर गौड़ गिरधर को मारना, शौरड का उस धाड़ायतियों (डाकुओं) के पति

र २ संहरण ६, शोणड १ तद्घाटिधरमुख्यवैरि २ व्यापादन ७, गौ
डसुन्दरदास १ पारिपन्थिकसत्तल २ समापन ८, प्राप्तसंस्थार्व
कूर्मवंशीधर१ डमरकरस्वामिसप्त्या २ रोहण ९, नवरंग १८३।२
वंशीयमाधव १ प्रतियोधिहुल्लहरि २ हनन१०, निम्मदेव १८५।३
नन्दनतोगनाथ १ तद्वाजि २ विध्वंसन११, पलायितपरबलनासी-
रप्राप्तकार्मध्वजधीर १ प्रमारसल्ह २ हड्डसारण ३ प्रत्यनीकप्र-
तिरोधन १२, शातितानेकशात्रवबुन्दीवीरवर्गलुण्टाकभटाऽष्टक ८
निग्रहण १३, सार्थीकृतजैत १८५।० शिक्षा१शपथ २ स्वीकारितस
द्मसरणिप्रतिमोटितवाहिनीकबुन्दीशसहायसङ्गीभूतशूरशतपञ्च५००
कसन्दानिताऽभियात्यऽष्टक ८ संगतिच्छलामरदुर्गनिनीषुविन्यस्त
मेदपाटदेश्यवेशोष्णीषपद्गीभूतदत्तलोभ १ भय २ व्याजवाग्विव
क्षितसंरुद्धसपत्नशोणड १ सारण २ तोग ३ त्रय ३ याम १ यामि
न्यवशिष्टसन्तमससमयसमाक्रमिष्यमाणदुर्गसमीपसंक्रमण१४,स
न्दानितासहनकपटसंलापितदुर्गद्वाःस्थ १ यामिका २ ऽपावृतवल

मुख्य वैरी को मारना, गौड़ सुंदरदास का शत्रु सत्तल को मारना, घोड़े का
नाश होने पर कछवाहे वंशीधर का धाड़ायतियों(डाकुओं) के पति के घोड़े प
र चढना, नवरङ्ग के वंशवाले माधवसिंह का शत्रु हुल्लजाति के क्षत्रिय हरि
को मारना, निम्मदेव के पुत्र तोगनाथ का उसके घोड़े को मारना, भगेहुए
शत्रुओं के आगे जाकर राठोड़ धीर, प्रमार सल्ह और हाडा सारण का शत्रु-
ओं को रोकना, अनेक शत्रुओं को मारकर बुन्दी के वीरों के समूह का लुटेरों
के आठ भटों (वीरों) को पकड़ना, शिक्षा और शपथ से जैतसिंह को साथ
दे, सेना को पीछी लौटाय, घर के मार्ग को पीछा जाना स्वीकार करनेवाले
बुन्दीश की सहायता के लिये इकठे हुए पांच सौ वीरों से कैद कियेहुए आठ
शत्रुओं को साथ लेकर छल से अमरगढ को लेजाने की इच्छा से मेवाड़ देश
का वेष और पगड़ी पहनायेहुए, पैदल कियेहुए, लोभ और भय दियेहुए कै
द कियेहुए शत्रुओं से कपट की वाणी बोलना स्वीकार कराकर शौंड, सारण
और तोग इन तीनों का एक प्रहर रात्रि बाकी रहते अन्धकार के समय में
गढ लेने की इच्छा से उस(गढ)के समीप जाना, कैदियों की असह्य कपट की
वाणी से द्वारपाल और चोकीदार के किवाड़ खोलने पर बुन्दी की फौज

जंबुन्दीवलविशन १५, श्रुतशातिततत्यशत्रुवर्गसंरुद्धाऽष्टक ८ सप
त्नार्थसमर्पितैक१क १ ग्रामदुर्गाक्रामकस्वकीयसामन्तसंघविहि
तोचितप्रसादतत्कोट्टाध्यक्षीकृततोग १८६।१ सूर्मीभुजंगभारमल्ल
१८६।४ शौराड १ सारण२ बुन्दीप्रत्याकारण १६, पुनःपुनर्लुण्टि
तमेदपाटजनपदपु१र्ग्राम २ प्रकरस्वदुर्गसमानीतानिगडितानेक
धनिकवणिग्जनतोग १८६।१ त्रस्तप्रजाप्रभुपार्श्वपूत्करण १७, वा
रितसन्निनत्सुस्वसूनुराजमल्लस्वयमभिषिषेणयिषुराणाकुम्भकर्ण १
स्वकीयसहधर्मिणी २ समक्षश्रावणीकतृतीया ३ समयप्रत्यागमन
सन्धास्वीकरण १८, प्राणप्रियप्रश्नागमप्रेष्टापावकप्रवेशप्रतिश्रव
ण १९, मंडलनदुर्गसम्मेलितनानापद्धतिप्रस्थापितसमस्तसैन्यसंगत
सन्नद्धप्रच्छन्नप्रस्थितकुम्भकर्णाऽमरदुर्गवेष्टन २०, प्रारब्धप्रगुणीकृ
तप्रभुप्रेषितषड्नालीयन्त्रयुद्धतोग १८६।१ चतुर्दश १४ दिनावऽ
धिसपत्नसैन्यसमीपसंक्रमसंरोधन २१, तत्समयसारण १८६।१ वि

का बुलना, वहांवाले शत्रुओं को मारकर पकड़े हुए आठ शत्रुओं को एक एक ग्राम देकर गढ लेनेवाले अपने वीरों के समूह को उचित पारितोषिक देकर उस कोट (गढ) का अध्यक्ष तोग को बनाकर राजा भारमल्ल का शौराड और सारण को बुन्दी बुलाना, बारम्बार मेवाड़ देश के पुर और ग्रामों को लूट करके अपने गढ में लाकर अनेक धनवान् बनिये लोगों को कैद करने से तोग से डरी हुई प्रजा का अपने स्वामी के पास पुकार करना, गर्जना करतेहुए अपने पुत्र रायमल्ल को रोककर, स्वयं युद्धयात्रा की इच्छावा ले राणा कुम्भकर्ण का अपनी स्त्री के आगे श्रावण की तीज के समय पीछा आने की प्रतिज्ञा स्वीकार करना, प्राणप्यारे पति के नहीं आनेपर प्यारी का अग्निप्रवेश की प्रतिज्ञा करना, मांडलगढ में शामिल कीहुई अनेक मार्गों से भेजी हुई समस्त सेना सहित सन्नद्ध होकर चुपके से प्रस्थान करनेवाले कुम्भकर्ण का अमरगढ को घेरना, अपने स्वामी की भेजीहुई भाग्य से सफलहुई छः तोपों से युद्ध करके चौदह दिन पर्यन्त शत्रु सेना के समीप आने को रोकना, उस समय सारण के विषम ज्वर से रोगी होने की सूचना करने के साथ शत्रु के दो प्रहार पायेहुए जैत्रसिंह का अपने पहिले के मक्खीदगढ को लेकर उदयसिंह की सेना को विजय करना, शौराड की युद्धयात्रा को रोक,

षमज्वरापाटवप्रख्यानपूर्वकमाप्तप्रहरणप्रहारयुग्म २ प्रतिनीतस्वकीयपूर्वमह्लिपदुर्गजैत्रसिंहो २८५।१ दयसिंह१९६।३ बलविजयन२२, रुद्धशौण्डा १८६।५ ऽभिषेणबुद्धप्रेष्यपदार्थविघ्नमहीप १ मन्त्रि २ प्रनष्टोपहारतोग १८६।१ प्रत्याकारण २३, वाचिततत्पत्रप्रच्छन्नबुन्दीप्रेषितपरपूर्वस्वीकृतभटाऽष्टक ८ तोग १८६।१ संग्रामसन्धाससमादान २४, तिरस्कृतमेदपाटनिवासविज्ञापितराणागमाऽवमतपिहितनिष्कसनहल्लू १८२।१ वंशीयवीरपञ्चक ५ तोग १८६।१ सहायीभवन २५, ह्यःकृताऽशनभूषणाऽऽदिसमर्चितवीरवर्गबाहुकौङ्कुमीकृतदुकूलगूढनिखातगोपितनालीयन्त्रविहिताऽऽहवमुमूर्षुविधेयतोग १८६।१ शर्वरीसमयसङ्ग्रामसज्जीभवन२६मेकोनविंशो १९ मयूखः ॥१९॥ आदितष्षट्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥६६॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मुक्कलसुतपँहँ मुक्कल्यो, अप्पन चरं इस अक्खि ॥
आवत हड्डे रंगं अब, रुपहु प्रमादं नरक्खि ॥ १ ॥
काल निसागत जोकहहु, कालनिसा तुमकाँहि ॥
सहँसन तुम हम पंचसत ५००, यह अंतर कछु याँहि ॥ २ ॥

भेजने योग्य पदार्थों में विघ्न जानकर राजा और मन्त्री का नष्टहुई सामग्री वाले तोग को पीछा बुलाना, उस पत्र को पढकर पहले अपनाये हुए शत्रु के आठ भटों को छाने बुन्दी भेजकर तोग का युद्ध की प्रतिज्ञा लेना, मेवाड़ के निवास को छोडकर राणा के छाने आने की सूचना करनेवाले हल्लू के वंश के पांच वीरों का छाने निकलना नामंजूर करके तोग के सहायक होना, पहले दिन भोजन और आभूषण आदि छोड, वीरों के समूह के भुजों को पूज, केसर में वस्त्र रङ्गकर, तोपों को भूमि में दबाकर, युद्ध में मरने की इच्छावाले, कर्तव्य कर्म करनेवाले तोग का रात्रि के समय युद्ध में सज्ज होने का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १९ ॥ और आदि से १६६ मयूख हुए ॥

१हलकारा २ युद्ध में ३ आलस्य वा असावधानी नहीं रखकर ॥१॥ ४ रात्रि का समय कहोगे तो वह ५ कालरात्रि तुमको ही है ॥ २ ॥

सावधान रानहु सुनत, चढि चढाइ चतुरंग ॥
सज्ज लखैं हड्डन सरनि, जयभनि धरनि-भुजंग ॥ ३ ॥

चटकप्लुतिः ॥ हरिरित्येके ॥ पर्यस्तकुमारललितेत्यपरे ॥

सुनि कुंभ रान सज्ज्यो, गहिरे अनीक गज्ज्यो ॥
सहँसैं अलात लक्खी, रन माहताव रक्खी ॥ ४॥
छद्द मुहूर्त चंद छायो, उततैंसु तोग १८६१ आयो ।
माल द्व २ हरोल मज्झी, दव खग्ग भुम्मि दज्झी ॥ ५ ॥
भिरतैं किवान भारी, कढि चंद्रकी कलासी ॥
हय १ सूर २ लेत हल्ली, चपला कि अद्रि चल्ली ॥ ६ ॥
वहु ओक सोक वग्गी, सिवकी समाधि जग्गी ॥ ॥ ७ ॥
चलि आइ चौंकि चंडी, रमि सट्ठि च्यारि ६४ रंडी ॥
गन डाकिनीन गोलैं, डिगरी विहीन डोलैं ॥८॥
झमि रत्त मत्त केई, थरकैं पिसाच थेई ॥
दुवपंच ५२ बीर दोरैं, सुरकी अनीन मोरैं ॥९॥
ञहके टमंकि त्रंबी, बिथुराइ नाद बंबी ॥
रदं वज्जि भीरु रोरी[11], हिममैं कि नीर होरी ॥ १० ॥
खिरिजात सूर सौहैं, भिरिजात मुच्छ भौंहैं ॥
हसिकैं चुरैल हुंकैं, भजि दूत भूत भुंकैं ॥ ११ ॥

---

१ मार्ग ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ खड्ग ॥ ६ ॥ ७ ॥ चौसठ ३ योगिनी ॥ ८ ॥ ४ रक्त से ५ नाच का अनुकरण है. बावन वीर दौड़कर भगी हुई ६सेना को पीछी फेरते हैं ॥ ९ ॥ ७नगारे और ८ तासे बजते हैं ९ नगारों का शब्द फैलने के ११भय से कायरों के १०दांत बोलते हैं सो मानों हेमंत ऋतु में पानी की होली (फाग) खेलने से बोलते हैं ॥ १० ॥ कटकर गिरते हुए वीर शोभा पाते हैं और मूछें भौंहों से भिड़ती हैं, चुड़ैलिनें (देवी की दासियें) हँसकर हुंकार करती हैं और दूत रूपी भूत भगकर कूकते हैं ॥ ११ ॥

बढिजात भार बत्ती, कढिजात पार कत्ती ॥
घट फुट्टि केक घुम्मैं, झट जुट्टि कंठ झुम्मैं ॥ १२ ॥
धरि व्याम रुंड धावैं, गन सम्महे गिरावैं ॥
खिजि केक लग्गि खेधैं, बरछीन बीर बेधैं ॥ १३ ॥
तरवारि तोग (८६) वारी, दल संहरैं दुधारी ॥
महि रुंड १ मुंड २ पट्टैं, घन नास स्वास घट्टैं ॥ १४ ॥
पल जात तेग पंती, तिरछी कि सब्बु तंती ॥
मिलि अच्छरीन माला, झुकि खेत देत झाला ॥ १५ ॥
गज १ बाजि २ भार गेली, फनमाल व्याल फैली ॥
ढहि कोल दंत ढीले, लजि कुम्म अंग लीले ॥ १६ ॥
फटि फीलमत्थ फाँकैं, ढरि कुंभ छोनि ढाँकैं ॥
किलकैं बिरूप काली, लहि गत्त रत्त लाली ॥ १७ ॥
असिधार झार इक्खे, तरकैं फुलिंग तिक्खे ॥

प्रहारों की वार्ता बढती है और १ तलवारें पार निकलती हैं. शरीर फूटकर कितने ही घूमते हैं और शीघ्र जुट करके कंठों में झूमते हैं ॥ १२ ॥ रुंड २ हाथ फैलाकर दौड़ते हैं और साम्हने के समूह को गिराते हैं. कितने ही क्रोध करके ३ पीछे वा युद्ध में लगकर वीरों को बरछियों से वेधते हैं। १३॥ तोग की दुधारी तलवार शत्रुओं का नाश करती है और रुंड और मुंडों से भूमि को छा देती है और बहुतों की नासिका से श्वास घटते हैं ॥ १४ ॥ ४ मांस में तलवार की ५ पंक्ति जाती है सो मानों ६ साबुन में तांत के समान तिरछी जाती है. अप्सराओं की पंक्ति मिलकर झुककर युद्ध के खेत में ७ झाले (बुलाने के लिये हाथ के इशारे) देती है ॥ १५ ॥ मार्ग में हाथी और घोड़ों के भार से ८ शेषनाग की फणमाला फैलती है (केवल व्याल शब्द से सर्प का ही बोध होता है, परंतु फणमाला के योग से शेषनाग का ग्रहण है) वाराह के दंत ढीले होकर ९ गिरते हैं और लज्जा युक्त होकर १०, कूर्म अपने अंगों को ११ गिटता (समेटता) है ॥ १६ ॥ १२ हाथियों के मस्तक की चीरें होती हैं और उनके कुंभस्थल गिरकर पृथ्वी को ढांकते हैं १३ शरीर में १४ रक्त की लाली लगने से विरूप होकर काली किलकारें करती है ॥ १७ ॥ तलवार की

जिंत रान हत्थि जान्यौं, तित तोग जंग तान्यौं ॥ १८ ॥
ढिग गो बढाइ बाजी, उलटात व्रात आजी ॥
इक सत्रु मिच्छ १ आयो, रन चो४गुनौं रचायो ॥ १९ ॥
जुव २ दाव जोरयो, तस सीस तोग १८६।१ तोरयो ॥
जिहि लैन ३ ...ावैं, प्रहसैं सिखा नपावैं ॥ २० ॥
वलभद्र २ रानवंधू, गिरि अंध अध्व अंधू ॥
रन तोग १८६।१ कौं निरायो, गलकट्टि सो गिरायो ॥ २१ ॥
चहुवान इक्क १ चीनौं, तस तंग दौरिदीनौं ॥
झुकि आइ कोउ झल्ला४, रचि इडसीस हल्ला ॥ २२ ॥
वढिकैं किंवानं वाही, सुन तोग १८६।१ व्हाँ सिराही ॥
छमं खग्गवार छुट्टयो, लगि झल्ल ४ धूरिलुट्टयो ॥ २३ ॥
गज रान ५ केर गढ्ढो, ठनकात घंट ठढ्ढो ॥
लखि तोग १८६।१ बागलिन्नी, असि रान५अंसं दिन्नी ॥२४॥
छुवि खंधत्रान छेद्यो, तिल अंसभाग भेद्यो ॥
॥ २५ ॥

धार की ज्वाला दीखती है और तीक्ष्ण अग्निकण तड़कते हैं. १ जिधर महाराणा के हस्ती को जाना उधर ही तोग ने युद्ध फैलाया ॥ १८ ॥ घोड़ा बढाकर २ युद्ध में समूह को उलटाता हुआ तोग महाराणा के समीप गया ॥ १९ ॥ ३ शिव उस यवन का मस्तक लेने को गये परन्तु ५ चोटी नहीं पाने से ४ हँसने लगे अर्थात् प्रसन्न तो हुए परंतु यवन का सिर जानकर उसको नहीं उठाया ॥ २० ॥ ६ मार्ग के ७ कुए में गिराया. ८ समीप लिया ॥२१॥ चहुवाण ने एक वीर को देखा जिसके ९शरीर को १० काट डाला. फिर कोई झाला राजपूत आया जिसने तोग पर हल्ला किया ॥२२॥ और बढकर ११तलवार चलाई जिसकी तोग ने प्रशंसा की उस झाले पर तोग के खड्ग का १२ समर्थ (बल का) प्रहार छूटा जिससे वह झाला धूल में लौट गया ॥२३॥ महाराणा का दृढ हाथी वीरघंट बजाता हुआ खड़ा था जिसको देखकर तोग ने अपने घोड़े की वाग उठाई अर्थात् घोड़े को उडाया और राणा के १३ कन्धे पर तलवार मारी ॥ २४ ॥ उसने कंधे का त्राण (झालर, कवच) काटकर तिल

छिति जात टापैं ह्वैगो, यह बध्य डोडि६ ह्वैगो ॥
सतच्यारि ४०० बीर सत्थी, इम तोग१८६।१ जुद्ध अत्थी ॥२६॥
असिझारि रारि अच्छी, कढिजान किन्न कच्छी ॥
इक बीर रानवारे, मिलि तत्थ बैनमारे ॥ २७ ॥
सतइक्क १०० संटि सूरे, करि प्रान लोभ कूरे ॥
किम अस्थिपाल १५५ केरे, अब भज्जिजात एरे ॥ २८ ॥
सुनतैं सु छोहछायो, हय मोरि सम्मुहायो॥
इगकन्न पिट्ठि दोरयो, सु पुच्छको मरोरयो ॥ २९ ॥
सतद्वै२०० निकास सिक्खे, पलटे तितेहि पिक्खे ॥
मनजे अराति जीके, वर अच्छरी वनीके ॥ ३० ॥
जिनमैं सु तोग १८५।१ जैसैं, उडुवृंद चंद्र ऐसैं ॥
बकतैं असह्यबानी, पलटे उदर्श्रपानी ॥ ३१ ॥
मरिवेहि बाजि मोरे, जिम अग्ग खग्गजोरे ॥
लखि रान भीतिलायो, द्विप दिट्ठितैं दुरायो ॥ ३२ ॥
झुकि तोग १८६।१ तेगझारी, बहुवेर फौजफारी ॥
अतिमान रानवारे, पखरैत केकपारे ॥ ३३ ॥

मात्र कंधे को काटा ॥२५॥ वह घोड़ा भूमि पर उतरा तब उसके १ पैर के स्पर्श से २ डोडिया जाति का क्षत्रिय मारागया. युद्ध का ३ अर्थी (वीर) ॥ २६ ॥ तोग ने ४ घोड़ा निकालना चाहा अर्थात् भगना चाहा, उस समय राणा के एक वीर ने वहां पर वचन मारा (ओखाबोला) कि ॥ २७ ॥ सौ वीरों को बदले में देकर (मरवाकर) प्राण का लोभ करके ५ अस्थिपाल के वंश वाले हे नीच तोग! अब भगकर जाता है ॥ २८ ॥ यह सुनते ही वह तोग क्रोध में छकाहुआ घोड़े को मोड़ कर सन्मुख आया. मानों पूंछ मरोड़ा हुआ ६ सर्प पीछे दौड़ता है ॥ २९ ॥ दो सौ मनुष्य जो भगनेवाले थे वे सब तोग को (मुड़ाहुआ) देखकर पीछे फिरे जिनके मन अपने जीव के शत्रु (मरने में उद्यत) और अप्सरा रूपी दुलहिनों के वर थे ॥ ३० ॥ जिसमें तोग ७ ताराओं के वृंद में चंद्रमा के समान था. राणा के वीरों के असह वचन बोलते ही (वे वीर) हाथों में ८ अस्त्र उठाये हुए पीछे फिरे ॥३१॥ ९ हाथी की पीठ पर छिप

हिय रान *भ्रांतिहेरयो, गज इक्क भुम्मिगेरयो ॥
अरि तीस ३० छेदि छक्कयो, जव तोग १८६।४ निट्ठि जक्कयो ॥३४॥

दोहा ॥

हयतैं इक१तिथि१५ हत्थतैं, पहिले रन रिपुपारि ॥
बलि पच्छोजुरि बोलपैं, तीस३०न सीसउतारि ॥ ३५ ॥
करि सक्खी करवालकौं, रानअंसं कछु रेखि ॥
गजइक१ पीछैं गेरियो, द्रोहिपके भ्रम देखि ॥ ३६ ॥
सूरपरे उतके लिसत ३००, सतदुव २०० इतके सर्व ॥
परयो तोग१८६।१ सुरि बैनपर, इम कारि कित्ति अखर्व ॥ ३७ ॥
घायल सत १०० छकि घुम्मते, बुंदिय पत्ते बीर ॥
क्रम सलुचितँ उपचारकिय, सब उल्लाघं सरीर ॥ ३८ ॥
हल्लू १८२।१ के कुलके हुते, सबघायल तिनसंग ॥
पटानहिँ उनकौं सुपहु, दिय डब्भिय सुख्ख ढंग ॥ ३९ ॥
वंछे १ अरु घायल बचे २, और जिते तिन्हअत्थ ॥
उचित अप्प किन्नैं अधिप, सब मन लरन समत्थ ॥ ४० ॥
तनय तोग १८६।१ के हो न तस, अनुजहि गंग१८६।२उदार ॥
पहु किय पुर नवगाम पहु, सुवधरि बुन्दियभार ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

अमरदुर्ग अपनाइ थप्पि अंदर पुनि थानाँ ॥
किय बुंदियसिर कुख रोसफुल्लत अहि रानाँ ॥
सुक्र चउद्दसि १४ सुभ्र रक्खि नवगामप तिहिँ रन ॥

गया ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ महाराणा के हाथी के *भ्रम से ॥३४॥ १ फिर ॥३५॥ २ खड्ग को. राणा के ३ कन्धे को ४ शत्रुओं के पति के भ्रम से ॥३६॥ ५ बहुत ॥३७॥ ६पहुँचे ७उचित ८इलाज ९ नैरोग्य ॥३८॥३९॥ १०मरे. उनके ११ लिये. लड़ने में १२ समर्थ किये ॥४०॥१३राजा ने. नवगांवां का१४पति किया ॥ ४१ ॥ १५ अमरगढ को १६सर्प के समान१७ज्येष्ठ सुदी १४ के दिन नवगांवां के पति को

करि दस १० तत्थ मुकाम पूर सज्ज्यो गढ तोपन ॥
प्रतिमल्लै हड्ड हत्थन परखि लार खिलैहु बल बुल्लिलिय ॥
आसाढ असित कंदर्प अह १३ क्रमि बुंदियपुर बेढ्ढ किय ॥४२॥
समुचित जँहँजँहँ सिबिरं रान वेढिय विधानरचि ॥
पृतना पतन प्रतीप बिसम अचलादि रहेबचि ॥
तेरसि १३ अह प्रत्यूष लोल गोलन झरलग्गिय ।
उडत सार दुहुँओर ज्वलन कीलाकुल जग्गिय ॥
तारंकादुर्ग दगि तोप तति दुजन निकट रहन न दये ॥
गज्ज१रु अलात२अयपिंड३गन छिति१अंबर२संकुल छये ॥४३

॥ मनोहरम् ॥

होत फैर फैरनपैं तापके अमाप जब,
डिगि डिगि शृंग आपआपके अंगरसैं ॥
गोलनचलात १ परगोलनके पात २ भाँति,
तारागढ जान्यौंजात जगरमगरसैं ॥
जा रन प्रजारन हजारन अलात फैले,
बाखरि१मैं बीथी २ मैं बजार ३ मैं दंगर ४ मैं ॥

युद्ध में मारकर १ तहां २ शत्रुओं ने हाडों के हाथों की परीक्षा करके ३ बाकी की सेना को भी साथ बुला ली. आषाढ वदि ४ तेरस * के दिन चल कर बुन्दी के ५ घेरा लगाया ॥ ४२ ॥ ६ डेरे खड़े करके ७ शत्रुओं की सेना के पड़ाव से. तेरस के ८प्रभात चपल गोलों की झड़ी लगी ९अग्नि की ज्वाला उठी१०तारागढ से. तोपों की११पङ्क्ति. गर्जना, अग्नि और लोह के गोलों के समूह पृथ्वी और आकाश में १२ अवकाश रहित छागये ॥ ४३ ॥ अपने अपने १३घर में१४प्रकाश अथवा शोभा १५अग्नि की ज्वाला की चकाचौंध (झगामग) में उस युद्ध में जलाने के लिये हजारों १६ अङ्गारे (निर्धूम अग्नि) १७ ÷ मकानों में १८ गली में बजार में १९ पजड़ (चौक) में फैले

---

* ज्योतिष में तेरस तिथि का पति कामदेव को मानते हैं.

÷ ब्रजभाषा में घर को बाखरि कहते हैं और मरुभाषा में घर की सामग्री को बाखर कहते हैं.

कालिकाकी बालिकालौं ज्वालिकावमंत बनी,
नालिका दगत दीपमालिका नगरमैं ॥ ४४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

फोजनतैं ओजन[1] तैं जोजन कढत दूर,
अर्चिनके[3] ओजनतैं जो पे रहैं रुकिरुकि ॥
पाउसके अभ्रसे[4] अखंड धूममंडलमैं,
तापनतैं तापन[5] तपायो लज लुकिलुकि[6] ॥
बिस्मय प्रलैबिनु त्रि ३ लोक ओकओक[7] आनैं,
चौंकि चंद्रचूडहु[8] समाधि जात चुकिचुकि[9] ॥
कालके से टोला[10] भुजंगोला[11] गिरिवेतैं सही,
व्यालफन[11] डोलौं[12] चढी भोलाभेत झुकिझुकि ॥ ४५ ॥

॥ मनोहरम् ॥

स्याम सुचि तेरसि[13] १३ तैं सावनअमा ३० अवधि ३३,
बासर व्यतीतभये घोर घमसानकौं[14] ॥
कारनउलंघि[15] जैत १८५१ सारन १८६१ हु आये परैं[16],
देदैरतिवाह सोंड १८६१५ सोस्यो परैप्रानकौं[17] ॥
सोही दावदीनौं दुव २ बेर चुंड १८६१२ औ उदय १८६१३,
कीनौं कितो तोपन अनीक अवसानकौं ॥

---

१ उमलतीहुई ॥ ४४ ॥ २ प्रताप से ३ अग्नि की ज्वाला के ताप से. वर्षा ऋतु के ४ मेघ के समान. अग्नि की ताप से तपाया हुआ ५ सूर्य ६ छिप,छिप कर लज्जित हुआ. विना ही प्रलय तीनों लोकों के जीव ७ घर घर में आश्चर्य करने लगे और ८ शिव भी समाधि भूल भूल कर ९ चिमकगये १०.बडे गोले ११ शेषनाग के फण के १२ हिंडोले पर चढीहुई भूमि ॥ ४५ ॥ १३ आषाढ वदि तेरस से श्रावण वदि अमावास्या तक के तेतीस दिन भयङ्कर १४ युद्ध के बीते. नहीं आने का १५ कारण था तो भी उसका उल्लंघन करके १६ शत्रुओं पर १७ शत्रुओं के प्राणों को सुखाये.

बुंदीपुर पावनकी पद्धति न पाई इतैं,
आई तीज ३ सावनकी जावनकी रानकौं ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

बनि दुर्मन सुभटन बंदिय, रान रसिक स्मररंग ॥
तीज ३ परब पहुँचैं न तो, पतनी जरन प्रसंग ॥ ४७ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुल्ले भट हमबहुत पग्घ निज रक्खि पधारहु ॥
जिहिंअग्गैं सब जुरहिं १ नमहिं २ संदेह न धारहु ॥
मन्नि सुनत सुहि मूढ गूढ हयडाक गयो गृह ॥
पटगृंह रक्खिय पग्घ सुपहु ऐसो रत सस्पृंह ॥
तोपनचलाइ जिम पुव्वतिम कतिक रहे डमरहु करत ॥
बुंदिय बिनाह लग्गे बढन सेंवारे मारत १ मरत २ ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

हढ निश्चयहुव दोजि २ दिन, रक्खि पग्घ गय रान ॥
कढि जुज्झन मत सुनत किय, चहि अवसर चहुवान ॥ ४९ ॥

॥ षट्पात् ॥

सारन १ जैत २ रु सचिव ३ अरज नृपप्रति किन्नी यह ॥
जिम छुद्रहि रनजात स्वामि बरजे हम साग्रह ॥
तिम यहै न अब तुमुल रान सहिमान पधारत ॥
जाकी पग्घहु जोहि बनत तस भावँ विचारत ॥
कै पग्घ गहहिं १ दलजित्तिकैं मरनठाम उग्गहिं मरन २ ॥

बुन्दीपुरी प्राप्त होने का १मार्ग नहीं मिला ॥ ४६ ॥ २ उदास होकर ३ कहा ४ कामदेव के रङ्ग का रसिक ५समय पर ६ स्त्री जल जावेगी ॥४७॥७डेरे में ८पगड़ी रखकर. रत करने का ९लोभी १० उपद्रव (लूट खसोट) ११ बिना मालिक के ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ १२ छोटे युद्ध में जातेहुए १३ हठ करके हमने आपको रोके थे. उसप्रकार अब यह १४ घोर युद्ध नहीं है. जिनकी पगड़ी है वह स्वयं उनका १५होना ही है. मरना १६प्रसिद्ध होवेगा

सन्नद्ध विरचि*ध्वजिनी सकल करहु हल्ल जग जसकरन।५०।
सोंड १८६।५ सिराहिय सुनत त्रय ३ हि कहि वाहवाह तब ॥
बुल्लि सेव१८६।२नवब्रह्म१८५।२अमर१८६।१गंग१८६।२रूमाधव अब
भार खंध जिनभटन पानि[1] मुत्तिन तिन पुज्जहु ॥
जिम पिक्खहिँ प्रतिजाम समर कौतुक रुकि सुज्जहु ॥
अनुजात[2] कथित[3] करि बत्त यह साधुसाधु[4]कहि भटनसह ॥
बुंदिय त्रपा[5] सु गरबंधिकैं अधिप हड्ड सज्जिय असह ॥ ५१ ॥

नसह १ असह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

जंपिय[6] सारन१ जैत२ प्रति, गँदक्कस[7] रहिये गेह ॥
तिन अक्खिय हो गद तब सु, अगंद[8] बन्यों अब एह ॥ ५२ ॥
राजादिन[9] निजँरोधकन[10], इम सहसँपथ[11] निवारि ॥
हुव संगहि दायादँ[12] दुव२, ध्रुँव[13] व्याधि न कछु धारि ॥ ५३ ॥

षट्पात् ॥

परँपृतनाके[14] पिठि पिहितँ[15] दल अद्ध पठायउ ॥
अद्धकटकसह अप्प अरिन सम्मुह उफनायउ[16] ॥
रजनि घटीदुव२ रहत स्वस्थ निर्भय सीसोदन ॥
पहुँचि परे पँविपात[17] मंडि मंडिय अनुमोदन ॥
राजा१ रु जैत२ सारन ३ रुँजित[18] हंकिय लय३ आरूढ हय ॥

सब *सेना को सज्ज करके ॥५०॥ उनके १हाथ मोतियों से पूजो २छोटे भाई का ३कहना ४श्रेष्ट है श्रेष्ठ है. बुन्दी की ५लज्जा को गले से बांधकर ॥५१॥ ६कहा ७रोग से दुर्बल हो इस कारण घर पर ही रहो ८नैरोग्य ॥५२॥ ९राजा आदि को लेकर १०अपने रोकनेवालों को ११सौगनों से निवारण करके. दोनों १२भाई १३निश्चय ही रोग को कुछ नहीं विचारकर साथ हुए ॥५३॥ १४शत्रु सेना की पीठ पर १५छाने आधी सेना भेजी. आधी सेना के साथ शत्रुओं के साम्हने आप १६चढा १७वज्र पड़ने के समान १८रोग युक्त थे इस कारण घोड़ों पर चढकर चले

दलं[1] खिल पद्दाति[2] उभय रहि अनिनैं[3] प्रारंभिय मंडन प्रलय।४५।
गोटे दलविच गेरि प्रथम बारूद प्रजारित ॥
बंधन हयन विछोरि दये तरवारि बिदारित ॥
होत अचानक हर्क[4] जूहँ[5] निद्रित कति जग्गत ॥
कति गुल्मन[6] नित्यकरि लुब्धि[7] इष्टन परलग्गत ॥
गीतादि पढत कति वीरवन कतिक कोन१ क्यौं२ किम३ करत ॥
गजे[9] रिपुन पैठि हरि[10] हक्क गय अरि१ घातैं२ इम३ उच्चरत ।५५।
लुट्ठि मिलत तरवारि करकट[11] जितितित रचि मारिय ॥
करजोहुव[12] सुहि कतिन मदउँ[13] उततैं तु प्रहारिय ॥
पै यह अतुलप्रमोद[14] वनत जान्यौं विरलैं बल ॥
खुल्लिहय जुट्टतखिनहु[15] प्रचुर[16] पाये मैंचित पल ॥
उठि उठि प्रमत्त ते भट अखिल लगलग्गिय लै जिय बिमद[17] ॥
सन्मुह पलाइ कट्टिय सकल हडुन रक्खिय बिरदं[18] हद ॥ ५६ ॥
सेव१ छड्ड अरि संहरिय लच्छ साधव२ चड४ खंडिय ॥
अमर३ च्यारि४ अंगनियैं[19] कुणपैं[20] नवलख४ सत७ किय ॥
नवक९ गंग५ हठि हनिय ग्लानैं[21] मारन६ चड४ गेरिय ॥
लुंचि[22] त्रि३सिर जैत७ लिय नवक९ अंसुं[23] सौंड८ निवेरिय ॥
कोणिकां[24] खास सोधन करत गोहिल हरि९ पग्ग सु गाहिय ॥

भाकी की १सेना २पैदल. दोनों ३आखियों ने)सेना के अग्रभाग को; अथवा सेना के टुकड़े को सडभाषा में अणीं कहते हैं)॥५४॥ ४ हाक ५ समूह ६रक्षार्थ(रिजर्व) सेना, वा रक्षार्थ सेना रहने के स्थानों में नित्य नियम करके. परलोक का ७ लोभ करके. कितने ही कौन है? क्यों? ८ कैसा हुआ? शत्रु रूपी ९ हाथियों में १० सिंह रूपी हाडे घुसगये॥ ५५॥ ११ युद्ध में १२ जो हाथ में आया उसीको लेकर १३ तीक्ष्ण. अत्यन्त १४ गफ़लत से. घोड़े के१५लड़ते समय१६ बहुत से मनुष्य नेत्र मिचे हुए आये १७ मद रहित होकर १८यश वा स्तुति की हद हाडों ने रक्खी ॥ ४६ ॥१९मारे२०मुर्दे२१रोगग्रस्त मारण ने. जैत्र ने तीन मस्तक २२ काटे २३ माथा. खास २४डेरे में (छोटे डेरे का नाम कोणिका है)

इम आतआत सिखरी[1] उदय लुट्टि सिविर[2] जस थिर लहिय।५७।

दोहा ॥

मिली पग्ग सुनतहि मुररि, अनखि[3] सिविर पुनि आइ ॥
मेवारे द्वैसत२०० मरे, दारुन हत्थ दिखाइ ॥ ५८ ॥
मारे नृप तिनमाँहिसौं, बानन[4] पंच५ प्रवीर ॥
कढि उभय२ असितैं करे, सत्त७न कुम्राप सरीर ॥ ५९ ॥
पहु[5]आश्रित खटसत६०० परे, अरि तेरहसत१३०० अत्थ ॥
आहव बँब[7] घुराइ इम, हडुन किय जय हत्थ ॥ ६० ॥

मनोहरम् ॥

ग्रीस्मतैं पाउसलौं वाहिनी वलय[8] बंधि,
रोपी रारि रानाँ कुंभकरन प्रतीप[9]नैं ॥
तारावल[10] नालिन[11] निघातकरि कंप्यो सोहु,
चेदि[12]पै ज्यों चंप्यो[13] चतुरंग सह श्रीप[14]नैं ॥
परिकर राखि ज़पि हित सु निकेत[15] पूगो,
काहि सो पै कीनों जै कृसानु[16]कुलदीपनैं ॥
संगपो[17]गै सहल सअग्घ[18] सुधराइ उतैं,
पग्ग पधराई इतैं महल महीपनैं ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

इत जयबंब घुराइ इम, पुर करि भूप प्रवेस ॥
लघु[19] पाटव[20]किय घायलन, वीरन अप्पि विसेस ॥ ६२ ॥

सूर्य के उदय १गिरि पर आते आते (यहां उदय गिरि के सम्बन्ध से सूर्य का ग्रहण है) २ डेरे ॥ ५७ ॥ ३ क्रोध करके ॥ ५८ ॥ ४ बाणों से ॥ ५९ ॥ ५ राजा के आश्रित लोग ६ यहां ७ नगारे बजबाकर ॥ ६० ॥ ८ घेरा ९ शत्रु ने १० तारागड का पर्वत ११ तोपों के १२ शिशुपाल के समान सेना सहित १३ दबाया १४ श्रीकृष्ण के समान बुन्दी के राजा के १५ घर को गया १६ अग्निकुल के प्रकाशक १७ रत को १८ आदर पूर्वक ॥ ६१ ॥ १९ शीघ्र २० नैरोग्य ॥ ६२ ॥

मेवारेहु बिगारि मुख, पैत्ते जब पहुँपास ॥
लज्जित रान सक्यो न लखि, अंतर निबसि उदास ॥ ६३ ॥
कुंभ तज्यो सुहि सोककरि, बपुं दुव २ मास बिताइ ॥
रायमल्ल तब रानहुव, पट्ट जनकं धृत पाइ ॥ ६४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीजपवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाराडदेव १८६।४चरित्रे पूर्वप्रेषितस्वदूतप्रख्यापितनिजाऽभिसम्पातसावधानसज्जीकारितसपत्नसैन्यतोग १८६।१ शुक्रशुभ्रचतुर्दशी १४ निशीथनिकटवैरिबलसम्मुखसमभिषेणन १, संहनपञ्चदश १५ सपत्नसाम

१ गये. अपने २ प्रभु के पास ३ जनाने में उदास रहकर ॥ ६३ ॥ ४ कुम्भकर्ण ने इसी शोक से दो *महीने पीछे ५ शरीर छोडा ६ पिता के धारण कियेहुए पाट को पाकर ॥ ४६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सुभाराडदेव के चरित्र में पहिले अपना दूत भेजकर अपने युद्ध की सूचना करके शत्रु की सेना को सचेत और सज्जीभूत कराकर तोग का जेठ सुद१४ को आधी रात के समीप शत्रु सेना के सन्मुख युद्धयात्रा करना, शत्रुओं के पंद्रह वीर और उमरावों का

*बुंदीवालों का महाराणा की पगड़ी लेजाना और इसी लज्जा से दो महीने पीछे महाराणा कुम्भा का मरना लिखा सो असत्य है. यह इतिहास बुन्दी की ख्याति से अथवा बुन्दी के वड़वाभाटों की पुस्तकों के लेख से लिखना पाया जाता है; जिन्होंने बढावे से कल्पित कहानी लिख दी है; क्योंकि कुम्भलगढ पर सम्वत् १५१७ मार्गशीर्ष कृष्णा पञ्चमी की खुदी हुई मामादेव के कुण्ड ऊपर की प्रशस्ति में महाराणा कुम्भा के लिये लिखा है कि " हाडोती को विजय करके वहां के स्वामि से दण्ड लिया " इस प्रशस्ति के खुदने से ८ वर्ष पीछे तक महाराणा जीवित रहे थे, इससे पगड़ी लेजाने आदि इतिहास असत्य प्रतीत होता है, इसके अतिरिक्त जिन महाराणा ने मांडू और मालवा के बादशाहों को दण्ड दिया उनका बूंदी विजय नहीं होने के कारण लज्जा से मरना नहीं सम्भवता. ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) की सत्यता पर हम कलंक लगाना नहीं चाहते परन्तु बुंदी की ख्याति अथवा वड़वाभाटों के लेख पर विश्वास कर लेने के कारण ऐसा लिख देना पाया जाता है.

न्त १ शूर २ करवालकृत्तसस्कन्धत्राणराणांसस्तोकभागविशीर्ण विपक्षवाहिनीकप्राप्तप्रत्यनीकान्तरवाक्प्रतोदनिर्यियासुतोग १८६। १ पुनरवमर्दप्रत्यारम्भण २, मेदपाटमहीपमारीचभ्रान्तिपातितमत ङ्गजान्तरपुनःपरासूकृतत्रिंश ३०प्रतीपसाध्वसप्रतापितप्रत्यनीक परिवृढतोग १८६।१ शूरशय्याशयन ३, पक्षद्वय २ प्रवीरशतपञ्चक ५०० परलोकप्रापण ४, नरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४ बुन्द्यागतस्वकी यक्षतखिन्नपटूकृतशूरशतक १०० यथातथसत्करण ५, प्राप्तप्रचुरप्र हारस्वबन्धुहल्लू १८२।१ वंशीयप्रवीरपञ्चक ५ दार्भी १ प्रभृतिपत्त- न १ प्रतिवलथ २ प्रकरपट्टप्रसादन ६, निष्प्रजतोगा १८६।१ऽनुज गङ्ग १८६।२ऽ पर २ नामयशःकर्ण १८६।२ स्वाग्रजपदनवग्राम- पुरप्रभूभवन ६, न्यस्ताऽमरदुर्गसनालीयन्त्र १ रक्षिवर्ग २ तत्सीम- न्युषितदिनदशक १० समाकारितखिलसैन्यप्रस्थितराणाशुचिश्या मलत्रयोदशी १३ प्रत्यूषबुन्दीवाहिनीवेष्टन ७, श्रुतैतदुदन्ताऽवमत क्षत १ ज्वर २ खेदजल १८५।१ सारण १८६।१ स्वामिसहायबुन्दी

संहार कर, खड्ग से राणा के कन्धत्राण को काट,कंधे के थोड़े से भाग को वि दीर्ण कर, शत्रु की सेना को विखेर कर निकलने की इच्छावाले तोग का प्रा प्त हुई शत्रु सेना में से किसी शत्रु के वचन रूपी चाबुक लगाने से फिर युद्ध प्रारम्भ करना, मेवाड़ के महीपति की सवारी के हाथी की भ्रान्ति से किसी हाथी को मार, फिर तीस शत्रुओं को मारने से शत्रुओं की सेना को भय से तपाकर बलवान् तोग का माराजाना, दोनों पक्ष के पांच सौ वीरों का परलो क को प्राप्त होना, नरेन्द्र सुभाणडदेव का बुन्दी में आयेहुए घायल सौ वीरों को नैरोग्य करके उनका यथार्थ सत्कार करना, बहुत प्रहार पायेहुए अपने बन्धु हल्लू के वंश के पांच वीरों को डाभी आदि पुर और गामों का समूह पटा में देना, विना सन्तानवाले तोग के छोटे भाई गङ्ग दूसरे नाम से यशक र्ण का अपने बड़े भाई के स्थान नवग्राम पुर का पति होना, तोपों सहित रक्षा करनेवाले समुदाय को अमरगढ में रख, उसकी सीमा में दश दिन निवास करके बाकी की सेना को बुलाकर प्रस्थान कियेहुए राणा का आषाढ वदि १३ के प्रभात बुन्दी को फौज से घेरना, यह वृत्तान्त सुन, प्रहार और ज्वर के

पुरीप्रविशन ८, पुनःपुनःश्रुतशौराड १८६।५ समनुष्ठितसौप्तिकखुण्डो
१८६।२ दय १८६।३ युग्म २ द्विःकृत्वोरात्रिप्रघातपातन ९, श्रावणो
कदर्श ३० पर्यन्तसम्प्रहाराऽप्राप्तबुन्दीविजयनिजसामन्तसङ्घसम्मत
स्वस्थानस्थापितोष्णीषराणाकुम्भकर्णप्रच्छन्नचित्रकूटप्रविशन १०,
ज्ञाततद्वृत्तान्तसारण१सचिवा२दिस्वसत्त्ववर्द्धितोत्साहशौराड१८६।५
सम्बोधितशौर्यसमाहूतयशःकर्ण१ऽपरनामगङ्ग१माधवा२दिदायादसं
दोहबुन्दीन्द्रसुभाराडदेवो१८६।४ष्णीषस्वामिचित्रकूटचमूसंग्रामसंक्र
मण११,स्वसुहृद्वर्जनविपरीतप्रसभविस्मृतस्वस्वव्याधिवेगसहप्रस्थित
हयारूढसारण १८६।१ जैत्र १८६।५ स्वामिसहायीभवन १२, परद्दत
नापरप्रान्तप्रस्थापितपङ्क्तीकृतसैन्यार्द्ध सार्धीकृतपत्तिसेना ३ नीकस
मारूढसमिहड्डाधिराज १ प्रक्षेपितपूर्वकारूढवर्त्तकविक्षोभविश्रोटित
बन्धनवैरिबलवाजिविद्रावण १३, मुहूर्तैक १ रात्रिशेषसमयबुन्दीन्द्र
वाहिनीसौप्तिकसम्पातकोलाहलावबुद्धस्वस्तप्रसुप्तप्रत्यनीकप्रकरप्र-
तिभुटितक्रियस्सपत्नसामन्तसम्मुखसंबोधन १४, सेव १८६।२ माध

खेद को न गिनकर जैत्र और सारण का स्वामि की सहायता के लिये
बुन्दी में प्रवेश करना, बारम्बार शौराड का रतिवाह देना सुनकर कुराड और
उदय दोनों का दो बार रतिवाह देना, श्रावण की अमावास्या पर्यन्त के युद्ध
से बुन्दी की विजय नहीं मिलने से अपने उमरावों के समूह की सलाह से
अपने स्थान में पगड़ी रखकर राणा कुम्भकर्ण का छाने चित्तौड़ जाना, यह
वृत्तान्त जानकर सारण और सचिव आदि के निजउत्साह को बढ़ाने से औ
र शौंड की भलीभांति बढ़ाई हुई वीरता से यशकर्ण दूसरे नाम से गङ्ग, मा
धव आदि भाइयों के समूह को बुलाकर बुन्दीन्द्र सुभाराडदेव का, पगड़ी ही
है स्वामि जिसका ऐसी चीतोड़ की सेना से युद्ध करने को चलना, अपने सु
हृदों के मना करने के विरुद्ध हठ से अपने अपने रोग के वेग को न गिनकर
घोड़ों पर चढ़, प्रस्थान करनेवाले सारण और जैत्र का अपने स्वामि की स-
हाय होना, शत्रुसेना के पीछे आधी पैदल सेना को भेजकर आधी पैदल सेना
को अपने साथ करके घोड़े पर सवार होकर हड्डाधिराज का प्रथम पाखद के
पीपों से क्षोभ होने के कारण बंधन तुड़ाकर शत्रुओं की सेना के घोड़ों को

वा १८६।१ ऽमर १८९।१नवब्रह्म १८५।२ गङ्ग १८६।२ सारण१८६।१ जैत्र १८५।१ शोगड १८६।५ प्रभृतिबुन्दीवीरविपोथितवैरिवर्गसंख्यासूचन१५, दिवाकरोदयाऽधिसमस्तशिबिरसामग्रीसंग्रहणावसर भूपभटगोभिलहरिसिंह १ हस्तमेदपाटमहीपमूर्द्धमण्डनमिलन १६, श्रुतैतदुदन्तप्रत्यागतपरप्रवीरद्विशती २०० पुनःप्रत्याघातप्रवर्तन १७, खड्गखण्डितद्वेषिद्वय २ पृषत्कपरासूकृतप्रतीपपञ्चक ५ पृथ्वीशप्रोत्साहितप्रवीरतच्छेष १९३ निषूदन १८, संस्थापितपरपक्षत्रयोदशशतक १३००सुभाण्डदेव १८६।४सुभटषट्शतक ६०० शूरशय्याशयन १९, निर्घोषितविजयवाद्यप्रद्रावितपारिपन्थिकसक्षतस्वभटकारितोचितोपचारयथातथप्रसारितप्रवीरहड्डाधिराजशत्रुशीर्षोष्णीषशिरोवेष्टनस्वसद्मसमानयन २०, पलायनप्रत्यागतनिजानीकिनीप्रेक्षणपराङ्मुखतत्त्रपानिगूढन्युषितमासयुग्म २ राणाकुम्भकर्णतनुत्यागानन्तरतत्पुत्रराजमल्लपितृपट्टप्रापणं २१ विंशतितमो २०मयूखः ॥२०॥

भगाना, दो घड़ी रात्रि बाकी रहते समय बुन्दीन्द्र की सेना के रतिवाह के कोलाहल से जगकर गाफिल भगेहुए शत्रुओं के समूह में से पीछे मुड़ेहुए शत्रु के कितने ही उमरावों का सन्मुख युद्ध करना; सेव, माधव, अमर, नवब्रह्म, गङ्ग, सारण, जैत्र और शौण्ड इन बुन्दी के वीरों से मारेहुए वैरिवर्ग की संख्या की सूचना करना, सूर्योदय के समय समस्त डेरों की सामग्री हरण करने के समय राजा के उमराव गोभिल हरिसिंह के हाथ मेवाड़ के महीप की पगड़ी मिलना, यह वृत्तान्त सुनकर शत्रु के दो सौ वीरों का पीछे आकर फिर युद्ध करना, दो शत्रुओं को खड्ग से और पांच शत्रुओं को बाणों से मारकर राजा के उत्साहित वीरों का बाकीके शत्रुओं को मारना, तेरह सौ शत्रुओं को मारकर सुभाण्डदेव के छः सौ सुभटों का माराजाना, विजय के बाजे बजवाय, शत्रुओं को भगाय, घायल हुए अपने वीरों का उचित इलाज कराकर यथातथ उनकी फैलाईहुई वीरता से हड्डाधिराज का शीपोदिया शत्रु की पगड़ी को अपने घर में लाना, भगकर पीछी आई हुई अपनी सेना के देखने में पराङ्मुख, उस लज्जा से गुप्त निवास करने वाले राणा कुम्भकर्ण के शरीर छोडे पीछे उसके पुत्र रायमल्ल का अपने पिता के पाट पाने का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २० ॥

आदितः सप्तषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१६७॥
प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥

अनुज सोंड१८६।५हित दिय उचित, नरपति करउर१नैर ॥
तँहँ रहि चिंत्यो हनि तुरक, बालन स्वजनक बैर ॥ १ ॥
पच्छेलिय पट्टनि१ प्रमुख, अक्खय १८६।१ दब्बे अग्ग ॥
अग्रज को तँहँ किय अमल, लोभ न रंचक लग्ग ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

सारन १ जैत२ सहाय सोंड३ लै अग्रज दल सन ॥
चुंड १८६।२उदय१८६।३चंपीहु अवनि पच्छीलिय अप्पन ॥
जैताउत ६ खंधिल १८५।१जु मारि सोलह १६ सुत्तो महि॥
तस भूणांग१८६।१तनूजलई उदय१८६।३सु सक्यो न लहि ॥
वाकोहु अमल करवाइ उत नानता१दि ग्रामन निपुन ॥
चहि जनकबैर लग्गो चढन मंडुवपुर पृतना प्रगुन ॥३॥
इहिं निहोरि नृप अग्ग जैत १ सारन २ लाये जव ॥
अग्रज १ सचिव २ उपेत ताहि च्यारि ४ हु बुल्ले तव ॥
मंडुवपति वह मिच्छ प्रचुरदल साँह बजत पहु ॥
अज्जनृपन गंजि अरु लेत आब्दिके सबतैं लहु ॥
संगर न ताहि अंगंसि सकैं उज्झहु लाल कुमंत्रै यह ॥
छिन्नी स्वकीय बिमुखन छिति जु सुहि दब्बहु उद्यम असह॥४॥

॥ दोहा ॥

और आदि से १६७ मयूख हुए ॥

१ लेने को २ अपने पिता का ॥ १ ॥ ३ आदि ॥ २ ॥ ४दबाईहुई ५ भूमि को ६पुत्र ७विशेष गुणवाली ॥३॥ मन्त्री ८सहित ९बड़ी सेना १०बादशाह ११आर्य राजाओं को १२सालाना खिराज सब से शीघ्र लेता है १३दबासकेंगे. हे लाल! यह १५खोटी सलाह १४छोडो १६अपनी भूमि को शत्रु लोगोंने छीन ली है उसीको दबाओ ॥ ४ ॥

सो मन्त्री जिम सोंड १८६।५ सुनि, दिनकछु ठहरि उदार ॥
छिन्नी १ अरु रक्खी २ जु छिति, लिन्नी बिमुखन लार ॥५॥
परतभार न सह्यो कै पर, परैं काम जिन पोचि ॥
उनतैं सव छिन्नी अवनि, उचित दंमन आलोचि ॥ ६ ॥
सुपहु १ जैत २ सारन ३ सचिव, सोंड१८६।५हि निट्ठि निहोरि॥
पच्छी दिय ही जु कु प्रथम, तिन्ह मन कानि न तोरि ॥ ७ ॥
तिनमैं हो सु लिउविक्रम १ हु, सँगर बिमुख कुसंग ॥
सो अपमान न जिहिँ सह्यो, जो तिलतिलहुव जंग ॥ ८ ॥
भारपरत जिनजिन भटन, निर्बह्यो टारि नरेस ॥
दव्वे स्ववस प्रदेस जे, अप्पे तिनहिँ असेस ॥ ९ ॥

॥ मदनावतारः ॥

तोग १८६।१ अनुजात जो गंग १८६।२ नवगामपति,
जास अभिधानं जसकर्ण १८६।२ दूजो २ जगति ॥
सुरथपुर १ दै रु उडुँदुर्गपति सो करयो,
अप्पसिर तोग १८६।१ कृत ऋन सु इम उद्धरयो ॥ १० ॥
भिरत घुग्घुल १८१ हर जु टूक लक्खन १८५ भयो,
अमर १८६ तसपुत्र जिहिँ खेट १ पुर अप्पयो,
हड्ड नवरंग १८३।२ कुल भ्रात माधव १८६।१ हितैं ॥
अस्त्र १ निज जुत्त अरनिट्ठ २ अप्पिय इतैं ॥११॥

॥ दोहा ॥

मोरत बल मेवारको, सबन गिन्यौं कछु सत्वं ॥
विमुखन दव्वी लेत वेलि, पिक्ख्यो उचित नृपत्व ॥ १२ ॥

॥५॥ भार पड़ते समय जिन्होंने १ मस्तक पर भार सहन नहीं किया और काम पड़ने पर पोचे होगये उन्हींको २ दण्ड देना उचित विचार कर सब भूमि छीन ली ॥ ६ ॥ ३ पृथ्वी ॥ ७ ॥ ८ ॥ ४ निर्वाह किया ॥ ९ ॥ तोग का ५ छोटा भाई ६ नाम ७ तारागढ का किलादार बनाया ॥ १०॥ घुग्घुल ८का पोता ९अरणेठा नामक ग्राम दिया ॥११॥१०पराक्रम ११फिर १२राजापन ॥१२॥

इक्खैं कोउन परत अब, संब अचानक सीस ॥
मन ओरैं कछु चिंत मन, जोरैं कछु जगदीस ॥१३॥
सोंड १९८१५ गिंनी नृप १ वा सुभट्ट २, मंडू जाइ न मूर ॥
मैं दावा करि मिच्छसौं, करूँ सु व्याकुल कूर ॥ १४ ॥
करउरही यहमंत्रकरि, सादी चउसत ४०० सज्जि ॥
मालव जो मंडूमुलक, गो लुट्टन तिहिं गज्जि ॥ १५ ॥

॥ मदनावतारः ॥

हड्डनृप छन्न इम सोंड १८६१५ सजि हंकियो,
ढार खुरसार रजसार रवि ढंकयो ॥
पुब्ब १ लक्खैरि १ पुनि जाइ पट्टनि २ परयो ॥
आपगा थाग कोटा ३ सु कँमि उत्तरयो ॥ १६ ॥
भ्रात भूशांग १८६१९ महिमानि मंह मंडयो,
द्वै २ दिवस रक्खि उपहार इच्छित दयो ॥
मन्नि इम कोउ आजाइ जिन मोरिब,
द्रुतहि चढिगो सु जनकोरि भुव दोरिबे ॥ १७ ॥
भूध्र१२ दर१३ लंघि मग लुट्टि खिन्नीन भू,
खुंदि किय पट्टनि १ रु मानपुर २ खीन भू ॥
रक्खि अपसंव्य१४ चंद्राउतन रामपुर,
पैठिगो देस आवंत्य१५ भय दै प्रचुर१६ ॥ १८ ॥
कन्न्हड़ १ हिं खुंदि सारंगपुर २ कुट्टिकैं,
खिन्न करि खिन्न्न उज्जैन ३ लग लुट्टिकैं ॥

यह किसीने नहीं जाना कि अब मस्तक पर अचानक १ वज्र गिरेगा ॥१३॥ २ समझी ॥ १४ ॥ ३ सवार ॥ १९ ॥ ४प्रथम ५ नदी ६ जिस नदी में पैदल चलकर मनुष्य पार होसके उसको थाग (थाह) कहते हैं ७ चलकर ॥ १६ ॥ ८ उत्सव ९ नजराना १० पीछा फेरने को ११ पिता के शत्रु की भूमि को लूटने के लिये ॥ १७ ॥ १२ पर्वत के १३मार्ग को लांघकर (कोटा से बारह कोस पर दरा नामक स्थान है)१४दाहिनी ओर १५उज्जैन के देश में १६बहुत ॥१८॥

इंद्रपुर ४ घुम्मि इत जागपुर ५ अंगम्यौं ॥
दब्बि खनीज ६ इतकौं मऊ ७ लौं दम्यौं ॥ १९ ॥
दे बसी ८ लाल सीतामऊ ९ दंडयो ॥
खुंदि सुरनैर १० हरिदुर्ग ११ इत खंडयो ॥
पिप्पलोदा १२ रु समखेट १३ जय पट्टिकैं,
दंडि अरुनोद १४ निंबोद १५ लिय दट्टिकैं ॥ २० ॥
वाहिनी[1] साहकी पिट्ठिलग्गी वही,
संग जिम छाँह तिम रंग[2] इच्छित सही ॥
सौंड १८६१५ जयलैंन दिन[3] ऐंनं कछु[4] सैंनकैं,
नैंक निसमैं न मिल्लि चैंन दुव २ नैंनकैं ॥ २१ ॥
धर्म आपत्तिके तुल्य चैर्या[6] धरैं,
अर्व आरूढ कहुँ भोज्य सब अद्दरैं ॥
जानि इम बात भजिजात अरि जानिहैं,
तुल्लि असि सोंधि खल सुच्छ कर तानिहैं ॥ २२ ॥
सोधि यह अप्प निंबोद १५ सन संक्रम्यौं,
जंगहर द्रंग रुचिरंग दोउ २ न जम्यौं ॥
भैंत दल[11] व्रात दुव २ प्रातपहिलैं भले,
चीरते दंस[12] १ पॅल[13] २ हड्ड ३ असि ह्वाँचले ॥ २३ ॥
सत्रु वहु निंदगत[14] भानं[15] लहि नाँ सके,
छिप्र[16] निसअंत तम लोह हड्डन छके ॥

॥१९॥ २० ॥ १ सेना. जिस प्रकार शरीर के साथ छाया रहती है तिस प्रकार २ युद्ध की इच्छा करतीहुई सेना साथ रही. शौण्ड ने जय लेने के लिये दिन के ३ स्थान में कुछ ४ शयन किया परन्तु रात्रि में दोनों ५ नेत्रों को जराभी आराम नहीं मिला॥२१॥ आपद्धर्म के समान ६आचरण किया. घोड़े पर ७सवार. दुष्ट लोग ८ निरर्थक खड्ग उठाकर मूछ खींचेंगे ॥ २२ ॥ ९ चला १० शोभायमान सेना के ११ समूह १२ कवचों को और १३ मांस को चीरतेहुए ॥ २३ ॥ १४ निद्रा में होने से १५ चेत नहीं सके १६ शीघ्र

खान परेरेज अरि मुख्य भिरतहि खप्पो ॥
धीर चहुवान परप्रान पीवत धप्पो ॥ २४ ॥
मरत सेनाधिपति पाय मिच्छन मुरे,
आहनैं केक नासीर[1] बढि अंकुरे ॥
पार दलकेर दुव २ बेर हय प्रेरये,
गाहि भुजपीन[2] सततीन ३०० खल गेरये ॥ २५ ॥
जुग्गिनी १ बीर २ पलचार[3] ३ जयकारलै ॥
फोज सुरमाँइ[4] घनघाइ जस फेरलै[5],
बंब घुरवाई[6] छकछाँइ[7] ठहो वली ॥
वाह जग पाइ जुरवाइ उत अंजली[8] ॥ २६ ॥
जत्थ तरफत लखे मिच्छ घायल जिते,
तानि बहुजान कहुँ थानपठये तिते ॥
झारि असि रारि सतइक्क १०० निजहू झरे,
अट्ठ अरु बीस २८ तिनमाँहिं परि उब्बरे ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

तिन्ह डोलिन बैठारि तब, सुररि सोंड १८६।५ अतिमान ॥
कियउ साह हय लैनकौं, पुर दसपुर[9] प्रस्थान ॥ २८ ॥
मंडूपतिकी मंदुरा[10], ताजिन[11]की इक १ तत्थ ॥
द्रंग नदीतट जिनदिनन, सुखित रहैं रुचिसत्थ ॥ २९ ॥
सत्तुन[12] मोदक १ दधि २ सिता[13] ३, असन[14] लहैं जे अर्व ॥
सुगम न्हान ग्रीखम समय, सरितातट ईम[15] सर्व ॥ ३० ॥
दिनमैं खसखानन दुरैं, छिति १ टट्टि २ न छिरकाइ ॥

॥ २४ ॥ १ आगे बढकर २ पुष्ट भुजों से ॥ २५ ॥ ३ मांस खानेवालों से ४ पीछे फेरकर ५ बहुत. नगारे ६ बजवाकर ७ उत्साह में छाकर ८ हाथ जुड़वाकर ॥ २६ ॥ २७ ॥ ९ मन्दसोर पुर को ॥२८॥ १० हयशाला ११ घोड़ों की ॥२९॥ १२ सत्तू के लड्डू १३ शक्कर. जो घोड़े १४ खाते हैं १५ इस कारण मे नदी के तट पर थे ॥ ३० ॥

निसवाहिर वंधैं[1] निखिलं, प्रतिठानन रुचि पाइ ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाजवहादुर बाजि खास ताजिक नतं[2] खंधन ॥
इम दसपुर सतइक्क १०० विहितं[3] तटिनीतट[4] बंधन ॥
तिनहिलैन हठतक्कि सोंड १८६।५ सतत्रय ३०० भट सादिन[5] ॥
अद्दरजनि खिन आइ मारि तिन्ह त्रानं[6] प्रमादिन ॥
सञ्चन[7] दुव[8] बंध करि छिन्न सब लोल[9] हयन धारि अग्ग लिय ॥
संजेत[1] लुट्टि[10] हंकत सततं[11] दरगिरि पैठि मिल्लानदिय[12] ।३२।
भ्रात सु सुनि भूर्णांग १८६।१ हुलसि पहुँच्यो सहायहित ॥
बल खिच्चिन तिहिं वेर सुनत वाहिरहुव संचितं[13] ॥
दसपुरतैं मिच्छ[14] १० दल सहँसइक १००० पिट्ठिलग्यो सरि[15] ॥
पहुँचि मिल्यो अगपार[16] कलह खिच्चि[17]न सीरी करि ॥
दर रुक्कि झारि तुपकन दुहुँ[2]न इन संगर मंडिय असह ॥
भूर्णांग[1] भिरिगं[18] सतदुव२००भटन सोंड[2] जुरिग सततीन३०० सह ॥

असह[1] नसह[2] अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भ्रात दरेढिग अरिनमारि मोलिन[18] पगमोरे ॥
सहँस१००० मिच्छ दुवसहँस२००० असह खिच्ची[2] हु अँहोरे[19] ।३३।
तिन्हमुकाम तँहँ जानि सवर हक्कारि उँभैसत[20] २०० ॥
रक्खि दरेपर लरन रिक्थं[21] वहु अप्पि करे रतं[22] ॥
तिन रुपि निसंक मिल्लन तवहि जुरि रोके खिच्चिय[1] जवन[2] ॥
सहभ्रात[1] सोंड[2] कोटा क्रमियं[23] हेतिनं[24] करि अहितन हवनं[25] ।३४।

१सब ॥ ३१ ॥ २झुकेहुए कन्धोंवाले३कियेहुए४नदी के किनारे५सवार. उन घोड़ों की६रक्षा करनेवाले७अगाड़ी पिछाड़ी के दोनों वन्धन८चपल ९सामान लूटकर१०निरन्तर११पर्वत के दरे में१२मुकाम किया ॥३२॥ १३इकट्ठे १४म्लेच्छ सेना १५चलकर १६पर्वत के पार १७भिड़ा ॥ ३३ ॥ १८मोला (खुदा) को मानने वालों के१९रोके. दो२०सौ भीलों को बुलाकर२१धन देकर२२प्रीतियुक्त किये २३चला२४शस्त्रों से शत्रुओं का २५होम करके ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

दोहा ॥

कानि रक्खि भूयांग१८६की, हित कोटा चउ४रत्ति ॥
हय किय भेट सुभांड१८६।४रहि, घरघर पुर जसघत्ति ॥३५॥
उपालंभ जैत१ रु अधिप२, सारन३ सचिव४ समेत ॥
दिन्नौं कहि आन्यौं दुखहि, छुंदिय भय समवेत² ॥ ३६ ॥

पादाकुलकम् ॥

जोधतनय बीका इत जंगल, वह्नि संखुल१न अधंन³ महाबल ॥
भट्टि२न जित्ति तत्थ निर्जलभुव, हद निजनाम द्रंग बिरचतहुव॥३७॥
बिक्रमसकमुनिदगतिथि१५२७बित्ततसनि७वैसाख२तीज३सित⁴संगत
पहुं⁵ बिक्रम१जंगल जयपायो, वर⁶ पुर बीकानैर१ बसायो ॥ ३८ ॥
तँहँ तदनुजँ⁷ बीदा२हु बीरतर, स्वाभिध⁸ खेट⁹ रच्यो बीदासर२॥
जबतैं बीकानैर सु जंगल, बन्यो राज्य बढिबढि इतनैंबल ॥ ३९ ॥
बदत किते सर चउतिथि१५४५संवत,सो बहुहेतुन¹⁰ परत असंगत ॥
वृद्ध जोध जोधपुर बसायउ, पहिलैं तस बीका जनु पायउ ॥४० ॥
बीस२०बरसबयकेनिकटहिबलि,कियजंगलधरअमलजित्ति¹¹कलि ॥
अरु पुंगलपति पुत्री उद्वहि¹², बिरच्यो द्रंग वहहु तँहँ बेगहि ॥ ४१ ॥

१ उलहना (ओलम्भा) २साथ ॥३६॥ ३ युद्ध में ॥ ३७ ॥ ४शुक्ल पक्ष ५ राजा बीका ने ६ श्रेष्ठ पुर ॥ ३८ ॥ ७ उसका छोटा भाई ८ अपने नाम से ९ खेड़ा (छोटा ग्राम) ॥३९॥ १०बहुत कारणों से असङ्गत मालूम होता है क्योंकि जोधसिंह ने वृद्धाऽवस्थामें जोधपुर बसाया था जिससे पहिले ही बीका ने जन्म पालिया ॥ ४० ॥ ११ युद्ध १२ विवाह करके ॥ ४१ ॥

❋ यहां पर ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने बीकानेर के बसने के संवत् १५४५ का खंडन करके संवत् १५२७ में बीकानेर का बसना लिखा है सो ठीक नहीं है, क्योंकि बीकानेर का बसना संवत् १५४५ के वैशाख शुक्ल २ शनिवार के दिन प्रसिद्ध है सो ही बीकानेर के नैणसी महता, कर्नल टॉड और उदयपुर के महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास ने माना है. जैसलमेर के इतिहास में संवत् १५४१ में बीकानेर का बसना लिखा है सो भी असत्य है. यह संवत् १५२७ से बहुत दूर और ४५ के संवत् से अधिक समीप है. परंतु अधिक मत के कारण हम संवत् ४५ को ही सत्य मानते हैं. बीका का पहिले पूंगल के पति की पुत्री से विवाह करना और फिर करनी माता की आज्ञा से सेखा नामक भाटी को

दोहा ॥

करिनिज संक्ति निदेसकरि, धरिबीका लहि धीर ॥
सेख भूप भट्टिय सुता, ब्याह्यो पुंगल बीर ॥ ४२ ॥
करत सक्तिके कथित करि, अबलौं विहित उछाह ॥
पहिलैं बीकानैर पहु, इम पुंगल उद्वाहैं ॥ ४३ ॥
पहु सूजा२ हुव जोधपुर, परत जोध१ तस पुत्त॥
तस कुमरहिं मृत बग्घ३ तँहँ, जनि गंग४हिं जसजुत्त ॥ ४४ ॥
अधिप परत सूजा२हु अब, सब नत्ती यह तास ॥
कुमर बग्घ३को जो कुमर, अधिप गंग४ तँहँ आस ॥ ४५ ॥
राज्यकरत आमेर इत, भारमल्ल भूमान ॥
प्रतपे गढ चित्तोर पहु, रायमल्ल इत रान ॥ ४६ ॥
मंडूपतिके जिहिं समय, अस्व खास सत१०० आनि ॥
नृपहित सोंड१८६।५ निवेदये, जे दुखहेतु न जानि ॥ ४७ ॥

षट्पात् ॥

सु सुनि कुप्पि हुव असह मिच्छ वह बाजबहादुर ॥
वन्हिं मनहु बारूद अनखि उद्धत प्रजरयो उर ॥
बुन्दिय लेन बिचारि कटक निज अखिल सज्जकिय ॥
गन तोपन बहु प्रगुन कलह जय उदय कज्ज किय ॥

१करनी माता की २आज्ञा से ॥४२॥ शक्ति के उस ३कथन को करने से अब तक उत्साह पूर्वक बीकानेर के राजा पूङ्गल में प्रथम ४विवाह करते हैं ॥४३॥ जोधा की ५मृत्यु होने पर ॥४४॥ ६पोते(पौत्र) ७हुआ ॥४५॥ ८भूपति ॥४६॥४७॥ ९अग्नि में

पुत्री से दूसरा विवाह करना लिखा सो तो सब सत्य है परंतु यह विवाह बीस वर्ष की अवस्था में ही लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि बीकानेर की ख्याति में बीका का जन्म विक्रमी सम्वत् १४९५ में, एवं जोधपुर की ख्याति में १४९७में होना लिखा है इन दोनों में से कोई भी सत्य होवे, परंतु बीका ने पुंगल के राव शेखा की पुत्री से संवत् १५३५ के पीछे विवाह किया है सो बीका की अवस्था उस समय ४० वर्ष से न्यून नहीं थी और जोधपुर का राव जोधा भी उस समय विद्यमान था क्योंकि रावजोधा का देहांत संवत्१५४५ में ६१वर्ष की अवस्था में होना लिखा है. बीकानेरवाले जोधा का देहांत १५३७ में लिखते हैं परंतु वह मत से ऊपर का संवत् ही सत्य पायाजाता है ॥

बीरन पटाहु बढते बखसि थप्प्यो मंडुवभारभुज ॥
किय मंत्र नियत पकरन कुटिल अधिपसुभांड१हि सहअनुज२॥४८॥
जवनकरे गृहजाइ हुष्ट पहिलैं बालकदुव२ ॥
तिनमैं स्याम१ सु तास पास बिस्वासपात्र हुव ॥
प्रपा१ महानस२ प्रमुख३ दुलभ लिह्ला तिहिं दिन्नौं ॥
सोवत इकनिस सवन पिहित६ जागि साह कैं पिन्नौं ॥
पात्री सु उदंचन बिनुहि पुनि रक्खि आइ पल्यंकँ रहि ॥
स्याम१हिं जगाइ रिस तासिर करिय पिलावहु आबँ कहि।४९।

दोहा ॥

स्याम१ रु केसवदास२ तस, हुव२ कुलनाम हुराइ ॥
समरकंद१ अभिधान तिहिं, मिच्छ दियउ मुदलाइ ॥ ५० ॥
जवन सु ताहि बिबाह जिंहिं, बंध्यो स्वहित बिसास ॥
तनय खानदाऊद१२ तस, इक१ किसोरबय आसँ१३ ॥ ५१ ॥
समरकंद१ सन तिहिंसमय, जलमंगिय जवनेस ॥
पात्री उठि न लखी पिहित१४, उहाँ चकितहुव एस ॥ ५२ ॥
मिच्छकह्यो रे मैं मरत, अतुल पिपासा आइ ॥
समरकंद१ कंपत तब सु, कुल्ल्यो ताहि बताइ ॥ ५३ ॥
याकै नाँहिं उदंचनहु, इम पाऊँ किम आव ॥
आनूँ नूतन डारि इहिं, स्वामिन जतन हिसाब ॥ ५४ ॥
भनि इम पात्री मंजि भरि, लाइ कह्यो अब लेहु ॥
संगिसंगि जंपिय जवन, उचित भृत्य गिनि एहु ॥ ५५ ॥

पादाकुलकम् ॥

---

१ निश्चय ॥ ४८ ॥ २ पाणेरा (आबखाना) ३ रसोईघर ४ आदि ५ अधिकार ६ छाने ७ पानी पिया ८ पानी की मटकी (पात्र) को ९ ढक्कन दिये विना ही १० सेज पर आकर सो रहा ११ पानी पिलाओ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १२ दाऊदखाँ सौलह वर्ष की अवस्था में ही १३ हुआ ॥ ५१ ॥ १४ ढकी हुई नहीं देख कर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

जान्यों स्याम१ कटके ध्रुवजैहैं, लरि सत्वर बुंदियधर लैहैं ॥
यातैं जनकसुवंहि संगों वह,सोधि इम सु बुल्ल्यो अंजलिसह।५६।
किंकरपर जो साह महरकिय, बखसहु ततो व प्रभु वह बुंदिय ॥
जान्यों साह यह न बदलैं जन, मम्महु लैन बुंदिय निश्चय मन।५७।
तो सुहि दै इहिं मुदितकरों तिम, इक्क१पंथ दुव२कज्ज बनैं इम ॥
यहविचारिबुंदियतिहिंअप्पिय, थिरदलमैंहुमुख्यमुहिथप्पिय ॥५८॥
इक्कल १ साह रह्यो गढअंदर, पिल्ल्यो कटक सर्ब बुंदीपर ॥
इंकिय समरकंद१रन जयहित, आत मानपुर जानिपरी इत ॥५९॥

दोहा ॥

सट्ठिसहँस ६०००० दल संक्रमत, जितजित जग भजिजात ॥
अंध्वजनन अग्गैं १ उंदक २, पीछैं १ इविर्क्किल २ पात ॥६०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१ऽयणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीभूपालभारमल्ल १८६।४ चरित्रे स्वाग्रजप्रसादवसुधाविभागप्राप्तकरपुर १ पत्तनसारण १ जैत्र सहायसम्बिद्धसैन्यसङ्गतसन्नद्धशोण्ड१८६।५ पूर्वत्रय ३ परिच्छिन्नपूर्व

सेना १ निश्चय ही जावेगी २ शीघ्र. पिता की३ भूमि को ही ४ हाथ जोड़कर बोला ॥ ५६ ॥५७॥ ५८॥ ९ चलते समय ६ मार्ग के लोगों को. आगेवालों को ७ पानी और पीछेवालों को ८*कीच मिलता है ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के राजा भारमल्ल के चरित्र में बडे भाई की प्रसन्नता से भूमि के विभाग में करवर नगर पाकर सारण और जैत्र की सहायता से युद्ध में वडी सेना को साथ ले, सज्जीभूत शौंड आदि तीनों का छिनीहुई पहली पृथ्वी को पीछी लेना, जैत्र और सारण का भूषंग के अर्थ गयेहुए कोटा आदि गामों को पीछा दिलाकर मण्डू के पति म्लेच्छराज को मार, वैर लेने को प्रस्थान करने की इच्छावाले शौण्ड को हठपूर्वक बुंदी

*"जंबालचिकिलौ पंकः कर्दमश्च निषद्वरः" इति हैमः॥

बिद २ सोदरद्वय २ जङ्गलजनपदसमाक्रमण१५, रणाशातितशङ्खु
ल १ प्रामारशासनवशीकृतभट्टि २ यादवशक्तिशासनाऽनुसारसमनु-
ष्ठितपुङ्गलपतिभट्टिभूपसेखसुतापाणिपीडनविक्रम १ सूचितसंवत्सम
यस्वसञ्ज्ञासम्बद्धविक्रमनगर १ नाम्नव्यनगरनिर्माणपण१६, प्रमाण
शून्यमतान्तरसंवन्निरास १ बिद २ रचितबिदासर२स्थानीयसूचना२
समेतदेवीनिदेशवशजाङ्गलाधिराजविक्रम १ वंशपट्टधरप्रथम १ पुङ्ग
लपतिकुलपतिपुत्रीपाणिग्रहणनियमविख्यापन १७, योधराजा
१ नन्तरकृतकियत्कालराज्यतत्पट्टपपुत्रसूर्यमल्ल २ संस्थावसरतत्त
नूजमुख्यव्याघ्रराज ३ योधपुराधिपत्यप्रापण १८, चित्रकूटाधिराज
राजमल्ल १ ऽऽमैरनगरनरेशभारमल्ल २ समयशोरड १८६१५मण्डू
पतिवाजिविप्लवसूचन १९, श्रुतैतदुदन्तकालकुपितपुनर्बुन्दीसमा
चिक्रमयिषुम्लेच्छराजवाजबहादुर१ सुप्रसादितसैन्यसज्जीकरण२०,
निग्रहीतपूर्वशिशुश्यामाऽऽयत्तीकृतप्रपा १ महानसा २ द्यधिकाररा
त्र्यन्तरपिपासाऽवबुद्धप्रच्छन्नपीतजलाऽपिहिततत्पात्रप्रत्यागतकप-

---

पति भाटियों के राजा सेख की पुत्री से विवाह करके बीका का ऊपर सूच
ना कियेहुए सम्वत् के समय में अपने नाम से बीकानेर नामक नवीन नगर
बसाना, प्रमाण से शून्य ऐसे मतान्तर के सम्वत् का खंडन और बीदा के र
चेहुए बीदासर स्थान की सूचना समेत देवी की आज्ञा के वशवर्ति जांगल
देश के पति बीका के वंश के पाट धारण करनेवालों का पुंगल पति के कुलपति की
पुत्री से विवाह करने का नियम प्रसिद्ध करना, जोधा के पीछे कितनेक समय
राज्य करके उसके पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल (सूजा) के देहान्त समय पर उस(सू
र्यमल्ल)के पाटवी पुत्र व्याघ्रराज(बाघा)का जोधपुर का स्वामी होना, चित्तो
ड़ के राजा रायमल्ल, आम्बेर नगर के राजा भारमल्ल के समय शौरड का
मण्डूपति के घोड़े लूटने की सूचना करना, यह वृत्तान्त सुनकर समय के
फेर से कुपित हुए बाजबहादुर का फिर बुन्दी लेने की इच्छा से कृपापात्र
सेना को सज्ज करना, पहिले पकड़ेहुए बालक श्यामें के पाणेरा(जलघर) और
रसोईघर आदि अधिकारों को वश में करके रात्रि में प्यास से जगकर छाने
जल पीकर पानी के पात्र को बिना ढकाहुआ रखकर पीछे आयेहुए यवनेन्द्र

टक्कुद्वयवनेन्द्रस्वप्रतिबोधितश्याम१सकाशवामार्गणा२१, गोपितश्याम१केशवपूर्वनामद्वय२प्राक्कालपरिणीतयवनपुत्रीकसमुत्पादितदाऊदा१ऽऽदिदायादप्रभुप्राप्तसमरकन्द१स्वनामद्वङ्कपूर्वतद्यवनपुनरानीतनिवेदन२२,स्वसेवासावधानताप्रसन्नम्लेच्छपतिमिमार्गयिषितसमरकन्द१बुन्दीराज्ययाचन२३,दत्तप्रार्थितसेनाऽध्यक्षीकृतसमरकन्द१स्वयमात्तदुर्गाश्रयम्लेच्छमहीपषष्टिसहस्र६०००० सर्वसैन्यबुन्दीविजयप्रस्थापन२४,मार्गपुर१ ग्राम२ दिप्रजाप्रद्रावकभानुपुरसमीपसमागतपरिपंथकपृतनाशुद्धिबुंदीवास्तव्यवर्गसमाकर्णन २५ मेकविंशो २१मयूखः ॥ २१ ॥ आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सुनि बुंदिय खित्तल सचिव, इम मंडुवदल आत ॥
किय रहस्य एकत्रकरि, बिदित बंधु १ भट २ ब्रात ॥ १ ॥
सोंड १८६।५कहिय लघु सिंह १ व्है, दंती २ व्है गुरुदेह ॥
तदपि विदारै कुंभ तस, आलोचहु दृढ एह ॥ २ ॥

का कपट से क्रोध करके अपने जगायेहुए श्याम से जल मांगना, पहिले के श्याम और केशव इन दोनों नामों को छिपाकर पहिले समय में विवाह की हुई यवनःपुत्री से दाऊदखां आदि पुत्र उत्पन्न करके स्वामि से पायेहुए अपने समरकंद नामवाले पहिले के हाडे उस यवन का फिर लायेहुए(जल)का निवेदन करना, अपनी सेवा की सावधानता से प्रसन्न म्लेच्छपति से मांगने की इच्छावाले समरकन्द का बुन्दी के राज्य की याचना करना, उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके उसीको सेनापति बनाकर स्वयं किले का आश्रय लेकर म्लेच्छ महीप का साठ हजार सेना बुन्दी को विजय करने को रवाना करना, मार्ग के पुर, ग्राम आदि की प्रजा को भगानेवाली शत्रु की सेना का भाणपुर के समीप आने की बुन्दी के वीरों का खबर सुनने का इक्कीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २१ ॥ और आदि से १६८ मयूख हुए ॥

१सलाह २ समूह ॥ १ ॥ ३ हाथी ४बडे शरीरवाला होता है तो भी ५विचारो

द्वीपी२ लघु गुरु देहके, गवय १ गवल २ बल गंजि ॥
दुसह गज्जि पारत दहल, भिरतहि डारत भंजि ॥ ३ ॥
यातैं लखहु न बहु१अलप२, सजहु इक्क १ मन सर्व ॥
अनीभवँर हम अग्ग व्है, खंडहिं दुजन अखर्ब ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

गहत इक्क१आमंगुन तानि कीट२हु तिहिं तोरत ॥
बहुगुनजुरि बंधैं सु १ इभ२हु मदमत्त अहोरत ॥
यातैं सब मनइक्क१होहु कबहुन तो हारहिं ॥
समरकंद१सह सेन बंदन हरि आन बिगानहिं ॥
बढि अग्ग जित्ति मालव बलन रोधकको सूर न रहत ॥
जो मिच्छ भजहिं दूथनि जनित बिनु सूथनि गूथनि बहत ॥ ५॥
इम न ततो हम अलस जोति सीरहु नन जानैं ॥
असन१ बसन२ की आस मनन मनन तव प्रमानैं॥
मिलि यातैं इक्क१ मन तुरग नक्खहु तिन्ह नासहिं ॥
मथि हम बिसिखं समुद्र नियंत जयरत्न निकासहिं ॥
यहसुनत अमर माधव २ मुखन कियसराह तस वाह कहि ॥
जँहँ नृप१रु जैत२सारगा३सचिव ४ चेवी चउ४न नय एसनहि॥

१ वघेरा (दोगला सिंह) छोटा होता है तोभी वडे देहवाले २ रोझ और ३ आरणे(वन के) भैंसे के बल को दबाकर ॥ ३ ॥ ४ सेना के दुल्लह होकर ॥ ४ ॥५ कच्चे तन्तु को ६ कीड़ा भी खैंचकर तोड़ डालता है. मस्त ७ हाथी को ८रोक लेते हैं ९ मुख १० वन्दर ११ दो स्तनवाली के जनेहुए (मरुभाषा में चत्रिया स्त्री को दूथणी कहते हैं जिसके जनेहुए) अर्थात् चत्रियों से. विना १२सूथनों (पाजामों) के होकर अर्थात् उनके पाजामे फट जावेंगे और १३ विष्टा १४ करदेंगे ॥ ५ ॥ यह नहीं होवे तो हम आलसी १५ हल भी नहीं हांक जानते तब मन में वस्त्र और भोजन की आशा भी प्रमाण नहीं करैं १६ विना शिखावालों (यवनों) के समुद्र को मथ कर १७ निश्चय ही १८ आदिक ने १९ कहा यह नीति नहीं है ॥ ६ ॥

कहाँ अयुतखट६००००कटक कहाँ अप्पन छसहँस६०००किंर॥
तकि सुवलैन तदहु आतस्याम १ हिं बनि आसिंर ॥
लाय हयन तुम लाल वीज बिपदामय बाँविय ॥
यहफल तास अमोघ अवहि पक्किवेपर आविय ॥
पूगे न लरन अप्पन परन मन्नहु इम सबको मरन ॥
को तव उपाय छितिहित करन रहहिं बंस बीजहु धर न ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

हे हड्डे अग्गे इहाँ, बीजहु गो व विलाइ ॥
करनी यहहि कथानिका, जुरहु समुख तो जाइ ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह मंडुवपति अज्ज अखिल दक्खिन बलि ऐंचत ॥
इहिं मंडुवपति अग्ग खग्ग कोउन रुपि खैंचत ॥
मङ्गुव्वहि साहिप अँज्ज आब्दिक इहिं अप्पहिं ॥
यह खिळियवल उदधि थाहि नैंकन मन थप्पहिं ॥
आश्रय१० द्वैध२ यातैं उभय २ अब कुल रक्खन अनुसरहिं ॥
रहिजाइ जवहि दल अल्प रिपु कदनं तबहि छलबल करहिं ॥९॥

॥ दोहा ॥

भायो तुहि मत१ भूपको, सारन२ जैत३ सहाय ॥
भटन चव्वि ओठन भनिय, हरख दव्वि तब हाय ॥ १० ॥

सहाय १ बहाय २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रचत मंत्र यह रुट्ठि तरजि गय उट्ठि चउ ४ हि तव ॥

---

१ किल (निश्चय ही) २ असुर (यवन) ३ हे लाल ! तुमने घोड़े लाकर ४ बोए ५ खाली नहीं जानेवाली ॥ ७ ॥ ६ कथा ॥ ८ ॥ मांगने से पहिले ही ७ आर्य राजा ८ सालाना खिराज देते हैं ९ नीति के छः गुणों में से आश्रय और द्वैधीभाव से अपने कुल को रक्खो १० नाश ॥ ९ ॥ १० ॥

माधव१८६।१गंग१८६।२रुअमर१८६।१सोंड१८६।५कातरगिनि ए सव
सारन १ जैत २ रु सचिव ३ बिहित लैकैं इततैं बलि ॥
बनि सु सांधि बिग्रहिंक मिले सम्मुह जहँ चम्मलि ॥
उपदा निवेदि तीन ३ न अरज करिय स्वाम१प्रति जोरिकर ॥
इम अनुगं सिरहिं धारत हुकम मन्नि उचित मंडहु महर ॥ ११॥
इमछन्नैं लिय हयहु सोंड १८६।५ सिसुपन हठसंग्रहि ॥
वे हाजरि सब अत्थ नैंक सेतुहु नृपमें नहिं ॥
समरकंद १ इम सुनत कह्यो छोरहु बुंदीकहँ ॥
लहि सुभांड १८६।४ दुवलान १ तथा समुचित बिलसहु तहँ ॥
संबसंथ इतर बारह १२ सहित करि सु स्वीय सब्बहु हुकम ॥
बलि ग्राम पंच ५ सोंड१८६।५हिं बखसि व्हे हैं सवन अधीस हम१२

॥ दोहा ॥

तबहि पटा लिखवाइ तिन्ह, सचिव १ देसु २ लहि संग ॥
दै उँपदा पच्छेसुरहि, आये रहित उमंग ॥ १३ ॥
दिय दुराइ पुव्बहिं पिहित, बसु १ भूखन २ सुर्व जात ॥
तजि बुंदिय दुवलान तब, पत्तो नृप कहि मात ॥ १४ ॥
निज गज १ तुरग २ रु नालिका ३, सबदिय बुंदिय संग ॥
मन यातैं कातर समुझि, रच्यो जवन हितरंग ॥ १५ ॥
तोग १८६।१ अनुज जसकर्ण १८६।२ तहँ, तारा दुर्ग तजैंन ॥
सुपहु ताहि दै निजसपथ, आन्यौं उँज्झि सु ऐंन ॥ १६ ॥
सोंड १८६।५ हिं गूढ बिचारि सुहि, मिलि इन कठिन मनाइ ॥
पंच ५ ग्राम तकुला १ प्रमुखं, स्वीकारित समुझाइ ॥ १७ ॥

१सन्धि करनेवाले बन कर २विग्रह करनेवालों से मिले ३सेवक ॥११॥ ४अपराध ५ग्राम ६पति ॥१२॥ ७नजराना ॥१३॥ ८गुप्त ९धन १०आदि ११ समूह ॥१४॥१२तोपें १३कायर जानकर ॥१५॥ १४अपनी सौगन दिलाकर. वह स्थान १५छुडाकर ॥१६॥ १६ताकला नामक ग्राम१७आदि १८ स्वीकार कराया॥१७॥

इम सु स्याम १ हुव आइकैं, पुरबुंदिय छितिपाल ॥
सूनु खानदाऊद १ सह, बुल्ले बेगम २ वाल ३ ॥ १८ ॥
बुन्दी जनपद वाहिनी, मिच्छन विचरि महंत ॥
समरकंद१वस करि करे, सब हाजरि सामंत ॥ १९ ॥
सीमाहर सब्बहु सकल, लघु तस पयन लगाइ ॥
छिन्नी नव लिन्नी सु छिति, सासनवस समुझाइ ॥२०॥
बुंदी त्रि३ सहँस२०००रक्खि बल, मान अतुल जयमत्त ॥
करि प्रबंध खिल जो७५०००कटक, पच्छो मंडुव पत्त ॥२१॥
बुल्लैं जब ग्रहतैं सबन, समरकंद१स्वसमाज ॥
माधव१सौंड२रु गंग४सुरि, आत खिल१रु अधिराज२॥२२॥
पुनि स्वनामं लेखित पटा, अखिलन नूंतन अप्पि ॥
जे बुंदियभट पुव्व जिम, थिर रक्खे निज थप्पि ॥२३॥
सनैं सनैं तिन्ह संहरन, अबहि धीरधर एह ॥
स्वांतें१अहित२बाहिर१सहित२, नरन दिखावत नेह ॥२४॥

॥ षट्पात् ॥

समरकंद१लिय समुझि आत सौंड१न उनमत्त सु ॥
क्यों माधव२ जसकर्ण२पटा मम लहि न आत पसु ॥
इहिं आगसें बलबंधि अनखि तिन२ पैं उफनायउ ॥
जेत१८५१२रुजितें तिन्ह जंपि छलन तब चलन छमायउ ॥
मिस खेनें१अरसें२कोऊसमय दोऊ२ समय दिखाइदिय ॥
तुम जो असक्त भेजहु तनय कहि इम मिच्छहु माफकिय ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ १८ ॥ १ देश में २ सेना ३ उमरावों को ॥१९॥ ४सीमा को हरनेवाले ५शीघ्र ६ नवीन ॥ २० ॥ ७ बाकी की सेना को ८भेजी ॥ २१ ॥२२॥ ९अपने नाम के लिखे हुए पट्टे. सबको १०नवीन देकर ॥ २३ ॥ ११ मारना १२मन में शत्रु और बाहिर से मित्र ॥ २४ ॥ इस १३अपराध से १४ रोगी होना कहकर १५ क्षयरोग १६ मस्सा (बवासीर) ॥ २५ ॥ २६ ॥

अक्खिय तिन सुत सिसु अबहि, ऐहैं लहि बय अत्थ ॥
काय१बचन२मन३ करि करहिं, सेवन प्रभु हितसत्थ॥२६॥
*जरासिथिल इत अति ×जरठ, दिय जैत१८६हु तजि देह॥
स्वामी हुव तस मुख्यसुत, गैनोली निजगेह ॥२७॥
सारन१८६।१माधव१८६।२हे सबल, पै नृप दिन प्रतिकूल॥
एहु मरे बिधिवस उभय२, सोहुव सब हिय सूल ॥२८॥
बंसीपति हुव छ६समं बय, सारन१८६।१सुत सामंत१८७।१॥
बाल जदपि मतिबृद्ध बुध, इच्छें बढन उदंत ॥ २९ ॥
भो माधव१८७।१सुत इत भरत१८७।२,निडर लाडपुर नाह॥
सोंड१८६अमर२गंग३रु सचिव४,रहे चउ४हि नृपराह॥३०॥

॥ षट्पात् ॥

खित्तल बनिक खटोर सचिव कोविद सकुनागम ॥
परि है नृपहि बिपत्ति कहिय जब भोन अतिक्रम ॥
द्रंग सु अब दुबलान रहैं सेवन पति हित रत ॥
जिहि पुव्बहिं लिय जानि बिलम परिहै दुकाल बत ॥
संबत कु बेद तिथि१५४१गत समय अक्खिय नृपहिं प्रतीप अह ॥
आगामि अब्द सब संहरन अब दुकाल परि है असह ॥३१॥

॥ दोहा ॥

बित्त१रु जे भूखन२बसन३, ए सब दै लै अन्न ॥
निखिल मरहु कुट्ठार नृप, समय घोर संपन्न ॥ ३२ ॥
प्रत्ययहो अग्गहिं नृपहिं, सचिव न बवहिं असत्य ॥
हिय सोच्यो अब जानि हम,है किम छमहु असत्य ॥३३॥

*बुढापे से शिथिल. अत्यन्त×वृद्ध ॥२७॥२८॥छः १वर्ष की अवस्था में२वृत्तान्त ॥२९॥३०॥ ३ शकुनशास्त्र में पण्डित. इस ४उपात्यय (उलटापलटी)के होने से पहिले ही उसने कहदिया था ५ नगर ६ दुर्भिक्ष पड़ने की वार्ता ७ उलटे ८ दिन ९ आनेवाला १०वर्ष सब का ११संहार करनेवाला ॥ ३१ ॥ १२कोठार. घोर समय के १३साथ ॥ ३२ ॥ १४ भरोसा. झूठ नहीं १५बोलेगा ॥ ३३ ॥

पट्पात्

छमा१दया२निधि छितिप अखिल संसृति उपकारक ॥
इम उदार३ आलोचि सवन बिपदा संहारक ॥
इतउततैं आकारि प्रचुर बानिज बिक्रयपर ॥
मंत्रीकथित प्रमान कियउ निजपुर अन्नाकर ॥
व्यय बिरचि दम्म लक्खन बहुन क्रम लक्खनमन धान्यकरि
खातिकाँ १ खात२गाहिरे खनित भवन ३कुसूल४हु दिन्न भरि।३४।

दोहा—अधिपति पुब्बहि चेति इम, मतिसँख मंत्र प्रमानैं ॥
जगहिं जिवावन जो भयो, धन १ दै धान्य २ निधान ॥३५॥
संबंधी निज तेहु सब, चतुर दये चेताइ ॥
न दयो हुंदिय भेद नृप, जानि अवहु भजिजाइ ॥ ३६ ॥
जितनैं सचिव कही जु ही, बनी अचानक बत्त॥
दुवचालीसम ४२ अब्द इक, पुहवि दुकाल सु पत्त ॥ ३७ ॥

॥ पट्पात् ॥

जिन गृह बल जान्यौं न प्रचुर तिनकैं हु पठायउ ॥
हुंदियभट करि बिभैय अखिल जनपैद अपनायउ ॥
लघु भूपहु कति चलित सहज लिय झोलि प्रजा सह ॥
जन लक्खन यहजानि आनि नृपढिग कट्टे अँह ॥
इम जग जिवाइ करुनाउदधि धवल बह्यो अम्मीढधुर ॥
धनपति निधान निज जनु धरिय पूरि नव९हि दुवलानपुर ।३८।

॥ दोहा ॥

---

१ संसार का २ विचार कर ३ बुलाये ४ बेचने को ५ अन्न की खान ६ खाइयें (धन के खजाने) ७ खात (अन्न का खजाना) गहरे ८ खुदेहुए ९ कोठे ॥ ३४ ॥ १० मन्त्री की सलाह ११प्रमाण करके १२धन ॥ ३५ ॥३६ ॥ ३७ ॥ १३भय रहित१४देश को१५दिन१६अजमीढ राजा की धुर को धारण की; अथवा जिसकी बराबरी में दूसरे नहीं लगसकैं ऐसी धुर को धारण की. दुबलानपुर में मानों नव निधि सहित १७ कुबेर ने अपना धन धरा ॥ ३८ ॥

समरकंद १ तँहँ धान्यसुनि, अक्खिय बेचहु एस ॥
कछुकदयो आसानकरि, नलयो अर्घ नरेस ॥ ३९ ॥
कति सजुहु आसानकरि, जिनको कुकृत जताइ ॥
बखसि अन्न थंभे बिकल, प्रनतिपत्र तिन्ह पाइ ॥ ४० ॥

॥ मनोहरम् ॥

भो जैंडैल भूपैं परे तिन्हैं थंभि भिस्सा याग,
व्याज लैंन बुँब दीसे राह बहु रोहे जे ॥
याके आदिपदन चतुर्दस १४ बरन आदि,
दल दोहा पहिलीके होत सब सोहे जे ॥
पंथपंथ पृच्छक पठाइ बुलवाये व्रातें,
जातें १ तातें २ जार्या ३ जननी ४ जन ५ बिछोहे जे ॥
भारमल्ल १८६१४ भूप दुबलानाँ यौं खजानाँ खोलि,
मानव मतंगज मलीदनतैं मोहे जे ॥ ४१ ॥

१मूल्य (कीमत) ॥३९॥ २बुरा कार्य ३नम्रता के पत्र (अरजियें) लेकर ॥४०॥ ढ-फलों (ढेलों) के समान भूमि पर पड़े हुओं को भिक्षा के यज्ञ से भोजन करा कर थांभा और बुन्दी को पीछी लेने के मिस से बहुत मार्गों को जिसने रोके अर्थात् भूखों को नहीं जाने दिये. इस चरण के आदि पदों के आदि के चौद ह अक्षरों का आधा *दोहा अर्थात् पूर्वार्द्ध होता है. मार्ग मार्ग पर४पूछनेवा लों को भेजकर ५ समूहों को बुलाये ६ पुत्र ७ पिता ८स्त्री, माता और अपने मनुष्यों से वियोग पायेहुओं को. इसप्रकार राजा भारमल्ल ने दुबलाना ग्राम में खजाना खोलकर मनुष्य रूपी ९ हाथियों को १०मलीदों से मोहित किये "यहां मलीदा शब्द में श्लेष है, अर्थात् मनुष्यों के लिये सीरा (हलवा) और हाथियों के सामान्य भोजन का नाम मलीदा है" ॥ ४१ ॥

*दोहा शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लौकिक में पुल्लिंग से व्यवहार कियाजाता है जिस कारण हम भी पुल्लिंग हो लिखते हैं इस मनहर छन्द के आदि के चरण के चौदह पदों के आदि के चौदह अक्षरों से मरु भाषा के दोहे का पूर्वार्द्ध निकलता है।जसके निकालने का यह क्रम है कि ॥ सुप्तिङन्तम्पदम् ॥ अर्थात् सुप् तिङ् आदि विभक्ति जिसके अन्त में होवे उसको पद कहते हैं सो ये इसप्रकार हैं॥ भो, जैंडैल, भूपैं परे, तिन्हैं, थम्भि, भिस्सा, याग, व्याज़, लैंनें, बुम्ब, दीसे, राह, बहु ॥ इन उपरोक्त १४ पदों से आदि के अक्षरों से दोहे का यह पूर्वार्द्ध निकलता है "भोजै भूपति थम्भिया वालैं बुन्दी राव॥"अर्थ-बुन्दीके प्यारे राजा राव ने भोजन कराकर ठहराये; अथवा ठहराकर भोजन कराता है ॥

दोहा—सो दोहा नृपसमयकी, मारव बानी माँहिं ॥
जँहँ लकार१८अधबिंदुजुत, अंत्य व२३दंत्य हु आँहिं ॥४२॥।
सोलह १६ मासन इम सुपहु, दै लक्खन जियदान ॥
किय तटस्थ १अरि३मित्र४कुल, अविरत जस१आसान२॥४३॥
आधे १ दूजे २ अब्दलौं, रक्खे कतिक नरेस ॥
पाथेयँहु तिन्ह अर्थ पुनि, दै पठये निजदेस ॥ ४४ ॥

॥ मनोहरम् ॥

बेची स्वीयं संतति सवित्री १ सविता २ हू जहाँ,
पति १ पतनी २ की प्रियतापैं हरि हीनकी ॥
घाँघाँ घर घुम्मत घरट्टनको घोर मिट्यो,
चुल्लिनमैं छाई तंतुमाला मर्कटीनंकी ॥
खाल खिल सूके पंक मैंडुक मिलानैं बाग१,
बिपिन २ बिलानैं द्रुम छाँह छबि छीनकी,
देसकी गिनैं को ऐसे समय सुभांड १८६।४ देखो,
पोखि परदेसकी प्रजाकों परिपीनंकी ॥ ४५ ॥

॥ षट्पात् ॥

संगिय बहुरिहु मिच्छ कहिय तबतब नृप कारन ॥
अब खँद्यो बहुअन्न बढत लक्खन जन वारन ॥

सो दोहा १ मरुभाषा में राजा भारल्ल के समय का बनाहुआ है जिसमें 'ल' तो आधे अनुस्वार सहित है और अन्तिम 'व' दन्त्य अर्थात् 'व' है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ २ मार्ग का व्यय (रस्ताखर्च) ॥ ४४ ॥ ३ अपनी सन्तान को ४ माता और ५ पिता ने भी बेच दी. जहां पर पति और स्त्री के ६ प्यार को हरण करके हीन कर दिया, और घरों में ७ ठाम ठाम घूमतीहुई घरटियों का शब्द मिटकर ८ चूल्हों में १० मकड़ियों के ९ जाले छागये और बाकी के नाले सूखकर १२मैंडक ११कीचड़ में मिलगये, बाग और १३वन मिटकर वृक्षों की छाया की शोभा चीण होगई, ऐसे समय में देश की तो क्या कहैं? देखो राजा सुभाण्ड ने परदेश की प्रजा को पालन करके १४पुष्ट की ॥४५॥ १५खाया

तदपि हजारन ताहि जानि *प्रतिघस्र जिमावत ॥
स्वीय कतिन कछु सैंन **पिहित गेहहु पहुँचावत ॥
हमकोँ न देत इम सोधि हिय मारन पुव्वहिँ जास मत ॥
तिहिँ समरकंद१उर वेर१तकि बाहिर हित२मंडिय ***वितत॥४६॥

॥ दोहा ॥

आनि असूया१ ईरखा२, जानि मिले सब जत्थ ॥
बसुधा हडुनबंसतैं, इच्छत लैंन अनत्थ ॥ ४७ ॥
अधिप१ सोंड२ गंग३ रु अमर४, मारे चाहत म्लिच्छ ॥
ते चउ४ चाहत हनन तिहिँ, अंतर प्रीति अनिच्छ ॥४८॥युग्मम्॥

॥ षट्पात् ॥

भूपहिँ खित्तल भनिय अप्प अंकिय दुकाल इम ॥
मम नामहु छितिमाँहिँ करहु कछुरीति रहैं किम ॥
सुनिनृप पंद्रहसहँस१५००० काढ्ढि रुप्पय निजकोसन ॥
बिक्खि समय सुभ बुद्धि निपुन सिल्पिन निर्द्दोसन ॥
दुबलानतैं जु पवमानदिस पाइ उचितथल कोस१पर ॥
कासार३ रचिय तसनामकरि विदित सु खित्तोलाव२वर ॥४९॥

॥ दोहा ॥

नाम भवानीपुर नियत, अब निबसथ जँहँ आस ॥
देवी खित्तोला६ सदन, ताल गिनहु वह तास ॥ ५० ॥
निबसथ रचिय सुभांड१नृप, भंडाहेर१सु भव्य ॥
सुंडाहेर१ सु सोंड२ किय, निज१निज२ नामन नव्य ॥ ५१ ॥
नृपकुमार नारायन१८७१ सु, पंद्रह१५ सर्म बयपाइ ॥
बिदया प्रहरनं१ बाहन२न, लिन्नी सब मनलाइ ॥ ५२॥

---

* प्रतिदिन ** छाने *** विस्तार से ॥ ४६ ॥ १ अनर्थ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ २ वायुकोण में ३ तालाब ॥ ४९ ॥ ४ ग्राम ५ है ६ खेतोला देवी का मन्दिर है ॥ ५० ॥ ७ सुन्दर ८ नवीन ॥५१॥ ९ वर्ष की अवस्था १०शास्त्रविद्या

त्रय३पीढिन नृप हम्म१८३।१ तैं, *आयति विधिवस एक ॥
पुत्र लहे जिन वृद्धपन, जीवनहार जितेक ॥ ५३ ॥
पाये तिमहि सुभांड१८६ पहु, जुव्वन जव ढरिजात ॥
कुमर तीन३ इक१ सु कनी, ÷प्रथित आयुबल पात ॥ ५४ ॥
नारायन१८७।१ तिनमैं निपुन, अग्रज सूर१ उदार२ ॥
जनक पुव्व चिंतैंसु जुरि, बुंदियलैंन बिचारि ॥ ५५ ॥
मिच्छचहैं इन्ह मारिबो, एहु चहैं तिन्ह अंत ॥
दाव नलग्गैं द्वै२हि दिस, मनकरि जदपि मिलंत ॥ ५६ ॥
आयति नृप१की अनुज२की, हुव ध्रुव बिगरनहार ॥
इच्छत बुंदिय आक्रमन, जेहि मरत जुझार ॥ ५७ ॥
जैत१८५।१ अनुज नवब्रह्म१८५।२जिम, अंमर१८६।१ अलोद अधीस
पुनि गंग१८६।२हु नवग्रामपति, सुपहु मार जिन्हसीस ॥ ५८ ॥
अरु सेव१८६।२जु सारन१८६।१ अनुज,इन४हु लह्यो क्रम अंत ॥
तिन समाप्त अग्रज लि३कहु, इम यह होन उदंत ॥ ५९ ॥

षट्पात् ॥

समरकंद१ छलसज्जि हनन हड्डन हिंडोलिय ॥
परिगहसह खल पहुँचि पिहिंत बिस्वासघात प्रिय ॥
अंगजं निज दाऊद२ कलिंत कछु मंह निमित्त करि ॥
रचिय गोठि अभिराम विविध व्यंजन गन विस्तरि ॥
सुत तीन३ इक१ सोदरसहित दै निमंत्र हुवलानतैं ॥
अनुंगनसमेत बुल्ल्यो अधिप मिल्यो कुहकं बहुमानतैं ॥६०॥

दोहा ॥

जदपि निवारयो जात जँहँ, पैंहु वहु बनिकप्रधान ॥

॥५२॥*भाग्य ॥ ५३ ॥ ÷प्रसिद्ध ॥५४॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १भाग्य २ निश्चय ही. जो बुन्दी ३लेना चाहते हैं वे ही वीर मरतेजाते हैं ॥५७॥५८॥५८॥४ छाने ५पुत्र६ विदित७उत्सव८न्यौता देकर ९ सेवकों सहित१०कपटी ॥ ६० ॥ ११राजा को.

गयो तदपि *अंतकग्रसित, भोरो अरि हितभान ॥ ६१ ॥
सिसु नरबद१८७।१ नरसिंह१८७।२सह, जावनलग्गो जत्थ ॥
जेठसुत१८७।१ जुत सचिव जिन्ह, हठिरोके गहिहत्थ ॥ ६२ ॥
आयो सोंड१८६।५हु मिलन इत, जोहु नट्यो तँहँजान ॥
सोहु लयो नृप दे सपथ, देखत हितहि निदान ॥ ६३ ॥

षट्पात् ॥

मिल्यो दुरहुन अतिमान समरकंद १ सु रचि संसद ॥
अबजु आहि सरसेतु पंतिहुव तास सीमपद ॥
अक्खिय भूप १ हिं अनुज २ जवन मारौं यँहँ जिम्मत ॥
बदिय भूप खल बहुत बनत भावी नटरैं बत ॥
आपान बिरचि करि तब असन करधावन सानुज २ करत ॥
बहराम१ कुतब २ पति सैंनबस बाहिय असि हसि बिप्फुरत॥६४॥

॥ दोहा ॥

पैठो नृपके अंसपरि, आँसि उपवीत उतार ॥
तदपि हन्यौं बहराम २ तिहिं, कर निज स्फारि कटार ॥ ६५ ॥

॥ षट्पात् ॥

कुतबखान १ खग्गकरि सोंड २ उडिजात स्वीयसिर ॥
कंटिसन कढ्ढि कृपान चंड रन रुंड रच्यो चिर ॥
परि समाज प्रद्रवन जवन चढि तरुन बचे जँहँ ॥

---

* काल का ग्रसाहुआ भोला शत्रु को हित जानकर ॥६१॥ ॥ ६२॥ ६३ ॥ १ सभा. जहां अब तलाव की पाल २ है उसके नीचे की सीमा में पंक्तिहुई ३ पानगोष्ठी (मतवाल). छोटे भाई सहित ४हाथ धोनेलगे स्वामि के ५इशारे से ॥ ६४ ॥ ६ कन्धे पर गिरकर ७ खड्ग ८एक कन्धे पर लगकर दूसरी ओर की पसलियों लें जनेऊ के आकार घाव उतार देवे उसको जनेऊ उतार अथवा उपवीत उतार कहते हैं ॥६५॥ ९ अपना मस्तक १० कमर से तलवार निकाल कर ११ बहुत समय तक १२ पलायन (भगना) १३वृक्षों

हिय अंखिन मनु हड्ड तक्कि छ ६ अराति हनैं तहँ ॥
पैंतीस ३५ भजे सहसा प्रधन पंदह १५ भट नृपके परे ॥
नृप१सोंड२सहितसतरह१७नरनकतलमिच्छछ६छ६गुन३६करे॥६६॥

॥ दोहा ॥

सचिव छन्न आवत सु सब, मुख्यकुमर १८७1१ सुनि मग्ग ॥
पच्छोमुरि डुवलानपुर, आलय पत्त उदग्ग ॥ ६७ ॥
दहल बढी सबदेसमैं, सुनि नृप पक्खिन सोंहि ॥
कढि निवास परसीमकिय, बन्यौं रहनबल कोंहि ॥ ६८ ॥
सारन १ सोदर सेव२सुत, तजि वसुदारी तत्थ ॥
गो मेव १८७1१ हु खटपुर गहन, जानि रहन थिर जत्थ ॥ ६९ ॥
गिरिसकोंनँ ८ खट द्रंगतैं, मेर्ध्यासरित समीप ॥
ग्राम विरचि अभिनव गुढा, निवस्यो पैंरन प्रतीप ॥ ७० ॥
नृप १ सानुज २ पायो जनँन, महि वसु सकरि १४८१ मान ॥
नवति चतुर्दस १४९० पट्ट निज, बैठो उचित बिधान ॥ ७१ ॥
वेद वेद तिथि १५४४ मित बरस, विक्रम संवत बेर ॥
हिंडोली वपुहान किय, ढाहि छतीस ३६ न ढेर ॥ ७२ ॥
वदिय अग्ग गर्सांकन बिदित, नृपको सस्त्र निपात ॥
सोहिभई सारकँसठन, भेजि परे दुव २ भ्रात ॥ ७३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहो त्रवसुधेश्वर १ वीज्यवंशानवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-

---

पर १ शत्रुओं को २ अचानक ३ युद्ध से ॥ ६६ ॥ ४ घर में ५ गया ।६७। ६ भय ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ खटकड़ नामक पुर से ७ ईशान कोण में ८ मेझ नदी के पास ९ नवीन १० शत्रुओं के विरुद्ध ॥ ७० ॥ ११ जन्म ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ १२ज्योतिषियों ने १३ मूर्खों की प्रवृत्ति ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं

स्यविहितव्याख्यावेलाव्याहार्यबुंदीवसुधापतिसुभाण्डदेव १८६।४ चरित्रे श्रुतसीमासमीपसमरकन्दा १ भिषेणानसामन्त २ सचिव २ नृप ३ निःशलाकमन्त्रावमाननोद्युक्तशोण्ड १८६।५ नानालघु १ गुरु २ कृश १ स्थूल २ दृष्टान्तदर्शनसङ्ग्रामसमर्थन१, निरस्तमाधवा २ऽमरकृततदनुमोदनरणानिश्चितवंशनाशनृप१जैत्र२सारण३सचिव ४शत्रुशासनस्वीकारसूचन२, समवज्ञातनृपा१दि४सन्धिसम्मतताजितकथितकातरीभूतसन्धिमन्त्रिकसमाजदर्शितपार्थक्या ऽमर१माधव २गङ्ग३शोण्ड४स्वस्वस्थानगमन३, निश्चिता ऽनुकूला ऽवसरम्लेच्छमारणानृपा१नुमोदितमगुणीकृतोपायनस्वीकृतशत्रुशासनचर्मण्वत्यवधिसमभिसृतनिवेदितोपदमानितम्लेच्छमतसारण १जैत्र२सचिव ३बुन्दीविहानस्वीकरण४, लेखितनृपा१र्थद्वादशो१२पवसथोपेतदुर्वलान१वङ्कशोण्डा २ऽर्थतर्कुला१दिग्रामपञ्चक५पट्टप्रत्यागततत्त्रय ३वसुधेश१बुन्दीबहिर्निःसरणोपदेशन ५, परागोचरगोपितवसु१भूष

की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुभाण्डदेव के चरित्र में सीमा के समीप समरकन्द की चढ़ाई सुनकर उमराव, सचिव और राजा के एकांत में कियेहुए मन्त्र की अवज्ञा करके उद्युक्तहुए शौण्ड का अनेक छोटे बड़े दुर्बल और मोटे दृष्टान्तों को दिखाकर युद्ध को पुष्ट करना, माधव और अमर के कियेहुए उसके अनुमोदन का तिरस्कार करके युद्ध में निश्चय ही वंश का नाश जानकर राजा, जैत्र, सारण और सचिव का शत्रु की आज्ञा को स्वीकार करने की सूचना करना, राजा आदि चारों की सन्धि की सम्मति को न मानकर कायर कहकर सन्धि करनेवाले मंत्रिसमाज को धमकाकर पृथक् पन दिखाकर अमर, माधव, गंग और शौंड का अपने अपने स्थानों को जाना, अनुकूल समय में म्लेच्छ को मारने का निश्चय करके राजा के अनुमोदन से सरलता पूर्वक नजराना ले शत्रु की आज्ञा स्वीकार करके चामल नदी तक सन्मुख जाकर नजराना भेट करके म्लेच्छ के मत को मानकर सारण, जैत्र और सचिव का बुन्दी छोड़ने को स्वीकार करना, राजा के अर्थ द्वादश ग्रामों सहित दुवलानपुर और शौण्ड के नाम ताकला आदि पांच ग्रामों का पट्टा लिखाकर पीछे आकर जैत्र आदि तीनों का राजा को बुन्दी से बाहर निकलने की सम्मति देना, शत्रुओं से नहीं जानेहुए धन और आभूषण के समूह को छिपाकर हाथी घोड़े और

ण २ आतत्यक्तसगज १ तुरग २ नालिका ३ निकरबुन्दीनगरब-
लात्कारनिष्कासिततारादुर्गाऽध्यक्षनरेन्द्रदुर्बलानप्रविशन ६, सार
ण १ सचिवा २ दिप्रसंभप्रबोधितशोरड १८६।५ ग्रामपञ्चकप्स्वी
कारण ७, समाहूतपत्नी १ पुत्रा २ दिपरिकरसमरकन्द १ सीमा
न्तबुन्दीराज्यस्वीकरण८, जितवशीकारितसीमासपत्नबुन्दीस्थापि
तत्रिसहस्र ३००० बलखिलसैन्यमण्डूप्रतिगमन ९, समाहूतसमाग
तमाधवा १ऽऽदित्रय ३ वर्जितनृपा १ दिसामन्तसंघार्थस्वावसरसं-
जिहीर्षुयवनपृथक्पृथङ्निजनामलेखितपट्टाऽर्पण १०, निश्चितनृ
पाऽनुजोन्मत्तभावबुन्दीशमाधव १ गंगा २ऽनागमकारणपृच्छावस
रजैत्र १८५।१ यक्ष्मा १ऽर्शो२ मिषात्कोपनिवारण ११, क्षान्तमन्तुस्व
सेवनपुत्रप्रेषणदत्तनियोगकदाचिद्दृष्टकपटाऽऽमयावियुग २ स्वस्व
सूनुशैशवनिवेदन १२, जैत्र १ सारण २ माधव ३ त्रय ३ स्वस्वस
मयसंस्थासमादानाऽवसरतत्पुत्रगैणाल्या१ दिस्वस्वस्थानीयस्वामी
भवन १३, स्वस्वामिसेवासावधानदुर्बलान १ वास्तव्यनीति १ नि
मित्त २ निपुणमन्त्रिराजवणिक्क्षेत्रलस्वप्रभुसमक्षाऽऽगमिष्यमाण

.तोपों के समूह सहित बुन्दी नगर को छोडकर तारागढ के किल्लेदार को कठिनता
से निकालकर राजा का दुबलान पुर में जाना, सारण और सचिव आदि का
हठ पूर्वक समझाकर शौंड को पांच गांव स्वीकार कराना, स्त्री पुत्रादि परगह
को बुलाकर समरकन्द का सीमा पर्यन्त बुन्दी के राज्य को अपने अधिकार
में करना, सीमा के शत्रुओं को विजय और वश में करके बुन्दी में तीन हजार
सेना रखकर बाकी की सेना का पीछा मण्डूपुर जाना, बुलाने से आयेहुए मा
धव आदि तीनों को छोडकर राजा और उमरावों के समूह के अर्थ अपने
अवसर पर मारने की इच्छावाले यवन का अपने नाम से लिखकर जुदे जुदे पट्ट
देना, राजा के अनुज माधव और गङ्ग के उन्मत्त भाव का निश्चय कराकर बुन्दी
नहीं आने का कारण पूछने के समय जैत्रसिंह का क्षयरोग और बवासीर
के मिस से कोप मिटाना, अपराध को सहन करके अपने सेवन में पुत्रों को भे
जने की आज्ञा देने पर कदाचित् कपट देखकर दोनों रोगियों का अपने अपने
पुत्रों का बालकपन निवेदन करना; जैत्र, सारण और माधव तीनों के अपने

वर्षदुर्भिक्षविज्ञपन१४, परीक्षाप्रतीतसचिवसावधानीकृतविहितभर्म-
१ भूषण २ दिविनिमयदयालुनरेन्द्र १ सर्वजनजीवनसमानधान्य
सम्भारसञ्चयन १५, प्राप्तसूचितशकसंगतद्विचत्वारिंशा४२ऽब्दमहा-
दुर्भिक्षाऽऽगमयवनयाच्यमानदत्तसम्मितधान्यमूल्यानिनीषुसुभाण्ड
देव १८६।४ सपत्नावधिशुष्यमाणासंख्यजनतासंजीवन १६, तत्र
त्यमनोहरवृत्तप्रथम १ पादादिचतुर्दश १४ शब्दपूर्वपूर्वैके १ का १
क्षरयोगतत्कालीनप्राक्तनीदोहापूर्वा १ र्द्ध संघटन१७, पुनर्मार्गणा
ऽप्राप्तधान्यसमरकन्द १ सार्द्धैक१समावधिनिर्वोढसर्वजनजीवनसपरि
ग्रहसुभाण्ड २ परस्परछद्मघातविचारणा १८, मन्त्रिक्षेत्रलप्रार्थितन
रेन्द्र १ सूचितस्थानविहितपंचदशसहस्र १५००० रौप्यव्ययवणिङ्
नामसूचकनव्यकासारनिर्मापण १९, सुभाण्ड १ शौण्ड२ स्वस्वाऽ
भिधानाऽङ्कितभाण्डखेट १ शौण्डखेट २ नामनवीननिवसथयुग्म२
निवासन २०, नृपहम्मा १८३।१ऽवाग्वैरिशल्या १८५।१ऽवधिनृपत्र

अपने समय में देहान्त होने के अवसर पर उनके पुत्रों का नैणोली आदि
अपने अपने स्थानों का पति होना, अपने स्वामि की सेवा में सावधान दुच-
लानपुर निवासी नीति और शकुन में निपुण मन्त्रिराज बनिया खेता का
अपने स्वामि के सन्मुख आनेवाले सम्वत् में दुर्भिक्ष होने की जानकारी क
रना, परीक्षा से प्रतीति कियेहुए सचिव के सावधान करने से उचित स्वर्ण
और भूषण आदि देकर दयालु राजा का सब जीवों के जीवन के समान धान्य
का समूह संचय करना, सूचना कियेहुए४२के सम्वत् के साथ प्राप्त हुए महादु
र्भिक्ष आने के समय यवन के याचना करने पर मूल्य नहीं लेकर कुछ धान्य
देकर सुभाण्डदेव का शत्रुओं तक शुष्क हुए असंख्य मनुष्यों को जिलाना,
वहांके मनोहर छन्द के प्रथम चरण के चौदह शब्दों के प्रत्येक पद के प्रथम के एक
एक अक्षर के मिलाने से उस समय के प्राचीन दोहे के पूर्वार्द्ध को रचना, फिर
मांगने पर धान्य के नहीं मिलने से डेढ वर्ष की अवधि तक सब जनों का निर्वाह
करनेवाले परिग्रह सहित सुभांड को परस्पर छल घात करके मारने का विचारना,
मन्त्री खेतसा के प्रार्थना करने पर राजा का जनाये हुए स्थान पर पन्द्रह हजा
र रुपये खरच करके बनिये के नाम को जनानेवाले नवीन तालाव को बना
ना, सुभाण्ड और शौण्ड का अपने अपने नामों से जाने जावैं ऐसे भांडखेड़ा

य ३ वार्द्धकवयोराज्यधरप्रसूतिप्राप्तिसूचनापुरस्सरसुभाण्डदेव१८६।
४ यौवनाऽवतरणसमयसन्ततिचतुष्टया ४ऽधिगमसूचन २१, हेति१
हया २ द्विविद्याविदग्धज्येष्ठकुमारनारायणदास १८७।१ पितृपरोक्ष
म्लेच्छमारणविचारण२२, नृपनियतिप्रातिकूल्यपरतन्त्रम्लेच्छमार
णतन्त्रोद्यतनवब्रह्मा१ऽऽदिनृपबन्धुनवक९रवस्वसमयसमापन २३,
हिण्डोलीपुरप्राप्तसपुत्रसमरकन्द१ कल्पितमहान्तरगोष्ठीभोजनव्या
जसमाहूतमन्त्रिवारणगृहन्यस्तकुमारसाहससार्थीकृताऽनुजसुभांड
देव १८६।४ सूचितस्थानगमन २४, भोजनाऽवसानसमरकन्द १
सूचनासञ्जिहीर्षुयवनयुगसुभाण्ड १८६।४ शौण्ड १८६।४ भ्रातृद्वय
२ दलन२५, तिर्यक्कृत्तवामकरकृष्टकट्टारनरेन्द्र१स्वमारकबहराम
२ संहरण २६, छिन्नमूर्धकरकृतकृपाणशौण्ड १ द्वेषिषट्क ६निषू
दन २७, नृपपक्षीयपञ्चदश १५ परपक्षीयषट्त्रिंश ३६ तुशूरसम्मि
तसमापन२८, मार्गश्रुतैतदुदन्तस्वस्थानप्रत्यागतकुमारनारायणदास

और शौण्डखेड़ा नामक नवीन दो गाम बसाना, राजा हम्मीर से पीछे वैरि
शल्य तक तीनों राजाओं के वृद्ध अवस्था में राज्य को धारण करनेवाली
सन्तान की प्राप्ति होने की सूचना पूर्वक सुभाण्डदेव के यौवन उतरने के
समय चार सन्तान होने की सूचना करना, शस्त्र और हय विद्या में पण्डित
बडे कुमार नारायणदास का पिता के परोक्ष म्लेच्छ को मारने का विचार
करना, राजा के उलटे भाग्य की परतन्त्रता से म्लेच्छ को मारने के तन्त्र
में उद्युक्त होनेवाले नवब्रह्म आदि राजा के नव भाइयों का अपने अपने सम
य पर मरना, हिण्डोली पुर में पहुंच कर समरकन्द के कल्पित उत्सव की
गोठ के मिस से बुलायेहुए मन्त्री के रोकने से कुमार को घर में छोडकर हठ
पूर्वक छोटे भाई को साथ लेकर सुभाण्डदेव का सूचना कियेहुए स्थान को जा
ना, भोजन के अन्त में समरकन्द की सूचना से मारने की इच्छावाले दो य
वनों का सुभाण्ड और शौण्ड दोनों भाइयों को मारना, खड्ग से तिरछा कट
ने पर हाथ से कटार निकाल कर राजा का अपने मारनेवाले बहराम को मार
ना, मस्तक कटे पीछे हाथ में खड्ग लेकर शौण्ड का छः शत्रुओं को मारना, रा
जा के पक्ष के पन्द्रह और शत्रु के पक्ष के छत्तीस शत्रुओं का युद्ध में मार

१८७।१बन्धुवर्गपरजनपदपलायन२९, पट्टपुरगहनसम्प्राप्तसेव१८६।
२ सूनुमेव १८७।१ नव्यनिर्मितगुढा १ रूपग्रामनिवसन ३०, सानु
ज १ जन्म १ पट्टप्राप्ति २ तनुत्याग ३ शकसमासङ्ख्यासूचनं ३१
द्वाविंशो २२ मयूखः ॥ २२ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १६९ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

बरज्यो जावत बनिक तास करि कानि रह्यो तब ॥
पुनि नारायन १८७।१ पिहित² जोग्य अवसर हंकिय जब ॥
इक्कल १ हय आरूढ³ जानि न सकैं अमात्यँजिम ॥
नगर बरोदानिकट अध्व कुलनास सुन्यौं इम ॥
पच्छो सु आइ दुवलानपुर हेय⁶१तजि२रुविधि१करतहुव २ ॥
बैरिन सराँह बाहिय१वदत२र्वांत१निगूढ२सुभाउ१८६।४ सुव ॥

॥ दोहा ॥

संतति न हुती सोंड १८६।५ कैं, यातैं कुमर उदार ॥
जनक १ पितृव्यक २ कृत्य जुग २, सब्बिय विधि अनुसार ॥२॥
कानिकरन आवैं अखिल, इम भावैं तिन्हअग्ग ॥
करी उचित मारे कुटिल, मतिबिनु चलत कुमग्ग¹⁰ ॥ ३ ॥

जाना, मार्ग में यह वृत्तान्त सुनकर कुमर नारायणदास का अपने घर पर आना और बन्धुवर्ग का पराये देश में भागना, खट्टपुर के गहन वन को पाकर सेव के पुत्र मेव का नवीन बसायेहुए गुढा नामक ग्राम में निवास करना, छोटे भाई सहित राजा के जन्म, पट्टप्राप्ति और शरीर छोडने के विक्रम के सम्वत् की गणना सूचन करने का २२वां मयूख समाप्त हुआ।२२। और आदि से १६९ मयूख हुए। १ नारायणदास २ छाने. अकेला घोड़े पर ३चढकर४ मन्त्री नहीं जानसकै इस प्रकार ५ मार्ग में ६ त्यागने योग्य को त्यागकर. ऊपर के मन से शत्रुओं की ७प्रशंसा करता रहा ८मन में वैर को छिपारक्खा ॥ १ ॥ २ ॥ ९ मातमपुरसी १० कुमार्ग ॥३॥

स्वामीको हनिवो *सतत, चाहतहे दुव २ चित्त ॥
सहत सहत अति **आगसन,भरि***आमुख किय खित्त॥४॥
सम्मरकंद काका सु पहु, अब है जनक २ उदार ॥
बेगम १ काकी माइ २ बलि, हमरे पालनहार ॥ ५ ॥
सुनि कुंदिय यहबत्त सब, जवन तिन्हैं निजजानि ॥
बेगम १ सिसु २ पठये बिहसि, करन अग्रजन २ कानि ॥ ६ ॥
नारायन १ सु नरायन २ हु, दीसत सब्द द्वि २ रूप ॥
इन दोउ २ न करि बिदित इम, भाख्योजात सु भूप ॥७॥

॥ षट्पात् ॥

दुमनं नरायनदास अरज बेगमप्रति अक्खिय ॥
तुम १ माता१वे१तात२प्रथितं पालक निज पक्खिय ॥
उरलगाइ सुनि वहहु अभय अप्पि रु गृहआई ॥
अप्पन पतिके अग्ग बहुत किय तास बडाई ॥
कुमरहु इतैं सु सब कृत्यकरि नीतिनिपुन मिच्छन नयो ॥
बिगनित जिम्हाइ दिन बारहम १२ भूपपट्ट पावत भयो ॥८॥
कुंदिय आइ बहोरि नीतिकोबिदं अपुब्ब नमि ॥
समरकंद १ संसद सु स्वांतैं गोपित बैठो समि ॥
अंतहपुर आदेस जानि हित चहत दयो जब ॥
बेगमपास बहोरि तास नुतिकरि आयो तब ॥

* निरन्तर ** अपराधों से *** मुख पर्यन्त ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ १ बडे भाइयों की आतमपुरसी करने के लिये ॥ ६ ॥ २ नारायण और नरायण ये शब्द दो रूप से दीखते हैं परंतु इन दोनों नामों से वह राजा प्रसिद्ध था इस कारण इस ग्रंथ में ऐसे लिखा है ॥७॥ ३ उदास होकर; अथवा बाहिर से मित्र और भीतर से शत्रु इसभांति दो तरह के मनवाले नारायणदास ने ४ पिता ५प्रसिद्ध ६पक्ष करनेवाले ७नमस्कार किया; वा उन म्लेच्छों से नम्रता की ८ गणना रहित ॥८॥ नीति में ९पण्डित १०सभा में ११ मन को छिपाकर १२ सहन करके १३ जनाने में जाने की आज्ञा १४ स्तुति करके

उपवसथ ताहि बारह १२ अधिक द्रोहमिटन मिच्छप दये ॥
जैनकारि अनुग इम जानि जग भूपहिं वहु निंदतभये ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

इम बारह १२ निवसथ अधिक, पुव्व पटासन पाइ ॥
पहु आयो दुबलानपुर, मिच्छन हितहि मनाइ ॥ १० ॥
समरकंद १ कँहँ सुत २ सहित, चाहत मारन चित्त ॥
जिम सल्लैं काका १ जनक २, घर घल्लैं वलवित्त ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ नृप मातुलतनय बग्घ चालुक्क वीरनवर ॥
लहि अवसर दुबलान मिलनआयो हित संथर ॥
मनैं संकल्प सु महिप कह्यो तासन सहकारन ॥
बग्घ निपुन तब बंदिय मित्त न बनैं तस मारन ॥
पुच्छत निदान अक्खिय पुनिहु अंधुछाँहँजिम मंत्र उर ॥
रक्खैं सु हनैं अैसे रिपुन धारि न सक्कैं ओर धुर ॥ १२ ॥
बदिय भूप तुव बंधु १ सुहृद २ मार्मक मामकसुत ॥
हम १ तुम २ अंतर हैन इम नजानैं इत २ ओ उत ॥
बग्घ कहिय व्है बंधु तदपि नकहहु अब तासों ॥
अवसर सद्दहु इष्ट रक्खि व्यवहित रचनासों ॥
व्हैजब अनेह बुल्लहु हमहिं देहैं मेटि कलंक दुव ॥
हड्डन अधीस मारक हनि रु सुग्गहु बुंदिय राज्य भुव ॥ १३ ॥

दोहा ॥

जंपि इम सु गय जाजपुर, वीर निजालय बग्घ ॥

ग्राम २म्लेच्छों के पति ने वैर मिटाने के लिये दिये ३ पिता के शत्रु का सेवक जानकर ॥ ९ ॥ ४ ग्राम ॥ १० ॥ ५सालते हैं (दुख देते हैं) ६ सेना रूपी धन ७ मामा का बेटा ८बाघसिंह सोलंखी ९ हित जनानेवाला १० मन का विचार ११तिससे १२कहा १३हे मित्र १४कारण पूछने पर १५कुए की छाया के समान मन में विचार रखनेवाला ॥ १६ मेरे १७मामा के पुत्र १८ गुप्त १९ समय होवै तब २० हाडों के पति को मारनेवाले को मारकर ॥ १३ ॥ २१ अपने घर

दुस्सह बित्ते मासदस १० अधिपहिँ निट्ठि अनग्घं[1] ॥ १४ ॥
पुनि नृप लग्गत ऋतुप्रसंल[2], मृगसिरमास समत्थ ॥
बग्घादिक निज बुल्लिकैं, संत्त ७ लये तँहँसत्थ ॥ १५ ॥
जोध इतरं[3] सतच्यारि ४०० जिन्ह, राजा गोंपुर[4] रक्खि ॥
स्वसंह[5] अष्ठ ८ प्रविसन प्रथम, उचित गिनैं फल अक्खि ॥१६॥

षट्पात् ॥

चढि प्रातहि चहुवान बेग आयउ पुरबुंदिय ॥
बिरचत रन बुलबुल्लन[6] हसत पिक्ख्यो निर्भय हिय ॥
गोल्हावापिय[7] गाह महल पच्छिमदिस मंडित ॥
तोरनबाहिर[8] तत्थ प्रथित[9] बैठो छलंपंडित[10] ॥
सिसु १ पुल १ पौत्र२काजी३सहित परिजन[11] अल्प प्रमोदपगि
वटछाँहँ सभा बेदियं[12] बिरचि लखत समाव्हेय[13] खेल लगि ।१७।
अक्खय१८६१सुत अभिधान जास संग्राम१८७१ सोहु जँहँ ॥
खटपुरपति मिलि खलन हुतो हाजरि पापी पँहँ[14] ॥
पहु तजि हय गय पास कलित[15] अंजलि[16] मुजराकरि ॥
कहि१ रु पुच्छि२ हित कुसल धीर बैठो अग्गैं धरि ॥
जुज्झत सकुंत[17] बुलबुल जकुट[18]२ पिक्खत जवन प्रसक्तंपन[19] ॥
दिय सैनं[20] सत्त७बग्घा१दिकन मारन तिन्ह चल्ल्यो न मन ।१८।
तबहि कढ्ढि तरवारि निडर झारिय नारायन१८७१ ॥
चकित अंखि[21] चकचुंधि घरन नंठ्ठे[22] बिनु घायन ॥

१आघ रहित ॥१४॥ २हेमन्त ऋतु ॥१५॥ ३अन्य वीर ४ शहर के द्वार पर रख कर ५ अपने सहित ॥ १६ ॥ ६ बुलबुल पक्षियों को लड़ाता हुआ ७गोल्हा बावड़ी के स्थान पर पश्चिम दिशा में महल बनता था उसके ८ बाहिर के दरवाजे से बाहिर ९ प्रसिद्ध १०छल करने में चतुर ११अपने थोड़े लोगों सहित. वट वृक्ष की छाया में१२चबूतरी बनाकर१३पक्षियों के युद्ध के खेल में लगा ॥ १७ ॥ उस पापी के १४पास १६ हाथ १५ जोड़कर १७पक्षियों का१८जोड़ा १९आसक्त होकर २० इशारा ॥ १८ ॥ २१ नेत्रों में २२ भागे.

समरकंद१ अरि अंस चक्खि तिरछी कढिचल्ली ॥
सघन मेघ असि असित२ बाढ चमकत घनवल्ली३ ॥
उडिपरिय तास कर्तित अवनि मुंड विसिख४ असि चक्र मग ॥
कुट६ जँनु कुलाल खरतंति करि उडत चक्रसैन किय अलग॥१९॥
इतर सत्रु आयुधिक अष्ट८ जुज्झे गहि आउधें॥
भंजे खट६ नृप भटन उभय२अप्पहि वड्ढे बुध ॥
अंदर गिनि दाऊद२चल्यो महलन सीढी चढि ॥
सु लगि पिट्ठि संग्राम१८७।१९ वेग नृप हनन गयो बढि ॥
पहु राजमहल सीढीन पर पहुँचत जानि कुवंधुपर ॥
झुकिपलटिझारि उलटो हि असि धँकिडारिय सिर तासधर॥२०॥
उदासीन गिनि याहि जवन कट्टत न हन्यों जब ॥
पै बनि सत्रुनपुत्त भ्रात मारन पिक्ख्यो अब॥
पलटि खग्ग इमैं प्रबल कंठ झारिय उलटकर ॥
कट्टि सु दक्खिन कुंडय भेंखर पैठो लगि पत्थर ॥
सिर१ रुंड२ उभय२संग्राम१८७।१९के गये अँररलगि वेग युँरि ॥
पहुँच्यो महीप अंगनअवधि जँहँ बीबिन किय मरनजुरि॥२१॥
जबलग तिन जानी न सौधें हक्कहि केवल सुनि ॥
इम नृपसम्मुह आइ कूककारन पुच्छिय पुनि ॥
बदिय अप्प हनि बंधु मियाँ मोकँहँ अब मारत ॥
दुँरिहौं जँहँ दाऊद२ रहैं बिनु मंतु बिदारत ॥
उनकहिय गयो फजरहि वहै बहरी१ बाज२ सिकार बन ॥

१कन्धे को चखकर २श्याम ३बिजुली ४कटाहुआ ५बिना शिखावाला ७मानों ८कुम्हार ने ९तीखी तांत से ६घट को फिरतेहुए १०चाक से उतारा ॥१९॥११ शस्त्र १२ खोटे भाई संग्रामसिंह पर १३ क्रोध करके ॥ २० ॥ १४ इसकारण से. दाहिनी ओर की१५दीवार में१६तीक्ष्ण १७किवाड़ तक१८गुड़क (लुढ़क)कर ॥२१॥ १९महल में केवल हाका होना ही सुना२०छिपूंगा. बिना२१अपराध

रहि तू अरोहि[1] अधिरोहि[2]नी बनत हर्म्य[3] तँहँ भय अब न ।२२।
रवन१ अवन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

सुत१ नत्तीर[4] लखि इतर सिसु, अधिप दया तिन्ह आनि ॥
हर्म्य नव्य[5] जँहँ होतहो, पत्तो तँहँ असिपानि[6] ॥ २३ ॥
जन्मदिवस मह[7] होत जँहँ, राजमहल नृपराम[8] २०३ ॥
सौध[9] वनितहो तास सिर, लघु तिनदिनन ललाम[10] ॥ २४ ॥
तँहँचढि निश्रेनीहु तस, अँची उप्पर अप्प ॥
रुचिर गोख ठहोरह्यो, दलि कुलघातक[11] दप्प[12] ॥ २५ ॥
निजभट मुख्यमकोष्ठ[13] नृप, वेग लये सब बुल्लि ॥
कह्यो विडारहु[14] खलनकँहँ, खीजहि जिततित खुल्लि ॥ २६ ॥
अज्ज[15] मिले नृपमैं अखिल, मिच्छ२ रहे खिल मानि ॥
निखिल निकासे नैरतें[16], तर्जन१ ताड़न२ तानि ॥ २७ ॥
पुरढिग भट चउसत४०० पिहितँ[17], आयो रक्खि अधीस ॥
आये ते मंडत अमलैं[18], सेसैंन[19] खंडत सीस ॥ २८ ॥
सिसु १ महिला[20] २दिक सत्रुके, जन कह्ने बिनु जान ॥
भिल्ल१ जवन२ तँहँ दुव २ भये, सज्ज रचन घमसान ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

महा धनुर्द्धर मिच्छ दास १ अरु डेल्ल[21] २ भिल्ल दुव २ ॥
कर चउ४टंकैं[22] कमान पिट्ठि द्वि २ कलाँप[23] धरैं ध्रुव ॥

१ चढकर २ नीसरनी पर ३ महल बनता है तहां ॥ २२ ॥ ४ पोता ५ नवीन ६ हाथ में खड्ग लिये गया ॥ २३ ॥ जहां पर अब जन्म दिन का ७ उत्सव होता है ८ हे राजा रामसिंह ९ शीघ्र १० सुन्दर ॥२४॥ ११ अपने कुल को मारनेवाले का १२ दर्प ॥२५॥ १३ सिरे ओटी पर १४ निकालो ॥२६॥ १५ आर्यलोग सब राजा में मिलगये १६ नगर से ॥२७॥ १७ छिपाकर १८ अधिकार १९ बाकी के लोगों के ॥२८॥ २० स्त्री आदि ॥२९॥ एक तो म्लेच्छ का चाकर और दूसरा २१ डालिया नामक भील २२ चार टंक की कमान हाथ में लिये (कमान की ताकत का एक तोल है. पूर्ण ताकतवाली कमान १८ टंक की होती है) २३ भाथा

बोध्ये[1] सु द्रुम चलं[2] १ बेधि अचल २ गुंजाहु[3] उतारत ॥
सद्द[4] ३ श्रवनअनुसार मंदर[5] तनु सार प्रहारत ॥
अंज[6] १ अद्ध १/२ दलित १/२ आढक[7] २ असन चित्त प्रसन मल्लन चहैं॥
रहि इत्थ डमर परदेस रचि रित्थ[9] अमर लावत रहैं ॥ ३० ॥
मंडुवपति करि मिच्छ अग्घ १ आदर २ जिन्ह अप्पिय ॥
अरिगन पाहुन ईंठ धिट्ठ काहु न रन धप्पिय ॥
पहिलैं इनहिं कुपाइ बैर अनुसरि कछु बोली ॥
मन असोक प्रामार वहैं साध्वंस[11] बिंझोली ॥
मंडुवमहीस जिन्हकरि जवन वहुदिन रक्खि स्वपासैं[12] वलि ॥
दिय समरकंद १ संगहि दुसह बुंदिय दव्वन करन केलि[13] ॥३१॥

दोहा ॥

हसन १ चंदखाँ २ नामहुव, जिनके विदित जिहान ॥
गो त्रिसहँस ३००० दल सोहु गृह, परखि जिन्हैं अतिप्रान[14] ।३२।
इहाँ समर १ रक्खे इतर, कति १ ते हनि २ कति १ कढ्ढि २ ॥
इम बुंदिय लिन्नी अधिप, द्विपैं[15] अरि केहरि[16] दढ्ढि ॥ ३३ ॥
भिल्ल १ जवन २ तँहँ द्वै २ हि भट, हुव नन निमकहराम ॥
निजगृहतैं बुल्ल्यो[17] नृपहिं, निडर चंदखाँ १ नाम ॥ ३४ ॥

---

१ पीपल (यहां लक्षणा से पीपल का पत्ता जानना चाहिये) २ हिलते हुए निसाने में पीपल के पत्ते को और ठहरे हुए निसाने में ३ चिरमी को भी उतार देते हैं ४ शब्द सुनने के अनुसार ५ तीर से शरीर को बेधने का प्रहार करते हैं. आधा ६ बकरा और आधा ७ आढक (बत्तीस सेर का नाम द्रोण है और द्रोण के चतुर्थांश अर्थात् ८ सेर को आढक कहते हैं अर्थात् ४ सेर भोजन करते हैं) ८ यहां रह कर पर देश में लूट करके. कभी नहीं खूटे ऐसा ९धन लाते रहते हैं ॥३०॥ १० यहां उन धीठों को युद्ध में किसीने तृप्त नहीं किये. बीझोलियां का पति अशोक नामक प्रमार मन में ११ भय मानता है १२ अपने पास १३ युद्ध करने को ॥ ३१ ॥ १४ अत्यन्त बलवान् ॥३२॥ १५ हाथी रूपी शत्रुओं को उस १६ सिंह ने खाकर ॥३३॥ १७ बोला ।३४।

बुंदिय जो लिय भाग्यबल, तो झेलहु इक तीर ॥
निहचै हम मरिहैं नतो, वद्धन पिल्लहु बीर ॥ ३५ ॥
वचिजैहो इक १ बानतैं, तो हम आयुध तोरि ॥
व्है फकीर तुमरे रहहिं, जुग २ आश्रित करजोरि ॥ ३६ ॥
गोलीअंतर[२] ताहि गिनि, भूप कुतूहल भाइ ॥
वदिय खान इक १ बान तू, चंद १ हु लेहु चलाइ ॥३७॥

षट्पात्

चाप विसिख धरि चंद १ करखि कुंडलकिय आक्रमि ॥
लायो एडिय लपन नटी मानहु उलटी नमि ॥
कठिन तानि आकर्रन तज्यो गोलिय इक १ अंतर ॥
कढि सु सब्य भुज १ कंख २ संधि पर थंभ लग्यो सर ॥
कछु ग्राव सकल[६] जिहिं भिन्न किय सकलँ भये बिस्मित स्वजन
बचिगो सु पिक्खि चंद१ हु बदिय पिक्खहु अब कमनैतपन ।३८।
जोरि करन इम जंपि संधि धनुगुन द्वितीय २ सर ॥
गन छागिन वामगिरि तक्कि चउ ४ बुरज दुर्गतर ॥
मत्त छगल[९] तिन्हमध्य इक्क १ सतिलंक[१०] दगआवत ॥
प्रकर लंबि पैल्लवन[११] खरो दु २ पयन रहि खावत ॥
तस गोधि[१२] तिलक कहि वेध्य[१३] तव विसिख[१४] विसिख दूजो२दयो
[१६]अंजलेत कुलट महलनअवधि भुँवपदेस आवतभयो ॥

मारने को वीर १ भेजो ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ बन्दूक की गोली के एक टप्पे पर (यहां तोड़ादार बन्दूक की गोली का टप्पा समझना चाहिये ॥३७॥ ३ विना चोटीवाले चांदखां नामक यवन ने धनुष को खींचकर कुण्डलाकार किया और एडी के समीप मुख लाया ४ कान तक ५ पत्थर का ६ टुकड़ा ७ सब ॥ ३८ ॥ बुन्दी के बाईं ओर के पर्वत पर चौबुरजे के नीचे ८ बकरियों का समूह चरताहुआ देखा. मस्त ९बकरा १० तिलकवाला. हाथों (अगले पैरों को लंबे करके ११ पत्तों को. उसके १२ललाट के तिलक को १३ निसाना कह कर. उस १४ यवन ने दूसरा १५बाण मारा. वह १६बकरा कुलांचें खाताहुआ१७भूमि पर

॥ दोहा ॥

इम सु मिच्छ वह मारि अज, अरज करतहुव एह ॥
बचि सोतैं प्रभु भाग्यबल, अब भुग्गहु भुव एह ॥ ४० ॥

॥ सौराष्ट्रीदोहा ॥

मकाहि दोउ २ न आइ, *हेतिनतोरि फकीरह्वै ॥
प्रभुता नृपकी पाइ, आश्रय लिय जीवित अवधि ॥४१॥
नृप तिन दोउ२न नाम, चोकी धरिरक्खे अचल ॥
इक१ सिवदिस अभिराम, दूजी२ इत मंडूकदर॥ ४२ ॥
इम बुंदिय अपनाइ, समरकंद१ मारयोसुनत ॥
सुत दाऊद२ रिसाइ, मृगया[2]तजि आयो मरन ॥ ४३ ॥

षट्पात् ॥

इषुधि[3] पिट्ठि१ कटि२ उभय२ प्रगुन[4] दुव२ बाजि[5] दु[6]२पासन ॥
इम दु२ओर दुव२आस[7] सज्ज कर इक्क१ सरासन[8] ॥
कटि जहरी असि१ कदर२ बाज१ बहरी२ बिहाइ बन ॥
पयचंपत जिम पुच्छ पलटि पन्नग फुलाइ फन ॥
आयो सु रहत त्रि३मुहूर्त[9] अह बेरचढ़त अतिमद[10] वहंत ॥
दृग कोप महत मानहु दहत कोन जनक[11]मारक कहत ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

गोपुर जितितित रुद्ध[12] गिनि, सहहय[13] ह्वै गिरि[14]सानु ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ * शस्त्रों को तोड़कर फकीर होकर १ जीवन पर्यंत॥ ४१ ॥ ४२ ॥ २ शिकार छोड़कर ॥४३॥ पीठ और कमर पर दो ३ भाथे और५घोड़े के ६दोनों ओर ४ प्रकृष्ट गुण (विशिष्ट प्रत्यंचा) वाले दो ७ धनुष और हाथ में एक सजा हुआ (चढाहुआ) ८धनुष और कमर में विष के पानवाली जहरी तरर और छुरोंवाला बाज और बहरी (शिकारी पक्षि विशेष) को बन में छोडकर पैर से दबेहुए सर्प के समान फण को फुलाताहुआ छः घड़ी९दिन बाकी रहते बडे कोप से जलताहुआ अत्यन्त मद को १० धारण करताहुआ मेरे ११ पिता को मारनेवाला कौन है ? यह कहताहुआ वह (दाऊद) पलटकर आया ॥४४॥ शहर के दरवाजों को सब ओर से१२बंद जान कर१३घोड़े सहित१४पर्वतके शिखर

उत्तरि पुर ढिगगो सु इम, भिंटन हड्डनभानु ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

निकट चतुर्भुजनाथ सदन जँहँ अब *शृंगाटक ॥
आवत तँहँ अटक्यो सु छोहउक्त मदके छक ॥
भट **रोधक चउ४ भंजि लंघि गोल्हावापी लग ॥
आत कहाई अधिप मरहु अबही न लेहु मग ॥
संडुव पुकारि ले दल सहत पुहवि लेहु पुनि हमहिँ हनि ॥
दाऊद२वदिपजत्थसु***जनक१तत्थहिसुत२करत०यतनि ।४६।
काहू भट इमकहत तुपक झारिय छन्नैं तकि ॥
सिर गोलिय लगि दुसह छोनि हयतैं सु परयो छकि ॥
जँहँ मारे चउ४ जोध घाय खट६ तँहँ लग्गे घट ॥
वलि सिर गोलिय बिद्ध भुव सु परि तदपि उठि भट ॥
असिकढि आत तोरंन[1]अवधि उज्झि[2] परयो दाऊदअ२सु[3] ॥
किय तुपकघात ताकँहँ तरजि पहु निंद्यो बहु अक्खि पसु ।४७।
अच्युत[4] चउभुज[5] अग्ग कबर तिन ढुहु२न कहावत ॥
समरकंद१ दक्खिन१ सु उदग्ग[6]२ दाऊद२ गोरगत[7] ॥
समरकंद१ सुंदरिय२ नाम निज करन धाम[8] जुत ॥
विरच्यो बीबनबाइ१ जारि निर्वसथ वापी[9]२जुत ॥
इत लहि गई सु पच्छी अवनि राजमहल संसद[10] विरचि ।
पहिलैं सु पट्टवैठो सुपहु मँह[11]१तूर[12]२न अभिसेक मचि ॥ ४८ ॥
सत्रह१७ सम[13] नृपसीस सौध[14] जिहिँ हुव अभिसेचन[15] ॥

पर होकर ॥ ४५ ॥ जहां अब *चौहट्टा बजार (चौराहा) है, **रोकनेवाले चार वीरों को मारकर जहां***पिता मारागया है तहां पर ही ॥ ४६ ॥ महलों के बाहिर के १ दरवाजे तक २ छोडकर ३ प्राण ॥ ४७ ॥५चतुर्भुज४विष्णु भगवान् के आगे ६ उत्तर दिशा में ७ कबर में गया ८ ग्राम ९ बावडी सहित १० सभा ११ उत्सव १२ नगारे बजवाकर ॥ ४८ ॥ सत्रह १३ वर्ष की अवस्था में. जिस १४महल में १५ अभिषेक हुआ

तबतैं नृप तँहँ करत पर्व[1] हायन दल पूजन ॥
उम्मेद१९८१५हु अभिसिक्त[2] तत्थ प्रभुके[3] प्रपितामह ॥
भद्रासन तँहँ भजत[4] अप्प इम अब्देगंठि[5] अह ॥
जुरवाइ़जन्मर१ तँहँ छत्र२धरि पुर फेरिय निजथान पहु ॥
संग्राम१८७१।१कट्टि पैठो जु सिल[6] चासि तस व्है अर्चनँ[7] अवहु ।४९।

दोहा ॥

जननीजुग२ अनुजातजुत[8], परिजन१ सचिवउपेत ॥
बुंदीपुर हुवलानतैं, बुल्ले सब समवेत[9] ॥ ५० ॥
नारायन१८७१।१तैं नरबद१८७१२ सु, जुग२हायँन लघुजात ॥
नरबद१८७१२तैं नरसिंह१८७१३लघु, अंतर बरस छह्आत[10] ॥५१॥
नृप१ नरबद२ सोदर स्वसाँ[11], कन्या मदनकुमारि१८७११ ॥
सो लघुबय नरसिंह१८७१३तैं, पंच५ समा[12] विच पारि ॥ ५२ ॥
बलि अवसर नृप ब्याहिहे, याकौं गढ सुमियान ॥
निरखि भासंता उचित नृप, कमध्वँज[13] कल्यान[14] ॥ ५३ ॥
निज इम राज्य जमाइ नृप, स्वजन गये परसीम ॥
जे सब बुल्ले प्रीतिजुत, भासि अरातिन[15] भीम ॥ ५४ ॥
रायमल्ल १ इत रान मृत, सुत नृप हुव संग्राम ॥
पट्ट बग्घ१को जोधपुर, लिय सुत गंग[16] २ ललाम ॥५५॥

वर्ष भर में १दो बार पूजन होता है. २उम्मेदसिंह का ३अभिषेक वहीं कियागया ३ रावराजा रामसिंह के प्रपितामह. आप सिंहासन पर४बैठते ही५वर्षगांठ के दिन. संग्रामसिंह को काटकर जो खड्ग ६ पत्थर में घुसा उसका अब भी७पूजन होता है ॥४९॥ दोनों८छोटे भाई९शामिल ॥५०॥ १०वर्ष ॥५१॥ ११ बहिन १२ वर्ष ॥ ५२ ॥ १३ बहिनोईपन के उचित १४ राठोड़ ॥ ५३ ॥ १५ शत्रुओं को भयंकर दीखकर ॥ ५४ ॥ १६ गांगा* ॥ ५५ ॥

*सं१५४४में नारायणदास का बूंदी की गद्दी पर बैठना लिखकर चित्तोड़ पर महाराणा सांगा, जोधपुर पर राव गांगा और आमेर पर राजा भगवंतदास का उसी समय में गद्दी बैठना लिखा सो ठीक नहीं है क्यों कि इन राजाओं के गद्दी बैठने के सम्वतों में जो कुछ अंतर है वह निम्न लिखित लेख से स्पष्ट सिद्ध है और ये संवत् अपने अपने राज्यों के इतिहासों से स्पष्ट कियेहुए हैं जिनमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है

भारमल्ल १ भूपालके, अंगज इत भगवंत २ ॥
पट्ट लहिय आमेरपुर, अवसर स्वजनक अंत ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहड्डाधिराजनारायणदास१८७।१ चरिते मार्गश्रुतपितृद्वय २ निपातसत्वरप्रतिनिवृत्तदुर्बलानप्रत्यागतविख्यापितस्वयङ्गर्हितस्वपक्षसापराधत्वसाधितपितृ१ पितृव्यौ२ र्ध्वदैहिकमनोनिगूढमन्तव्यबहिर्दर्शितयवनानुकूल्यकृतकप्रेममातृभावमतसद्मागतयवनयोषित्कनारायणदास १८७।१ पितृपट्टप्रापणं १, स्वस्त्रीकृतश्लाघास्निग्धसमरकन्द१ समाहूतबुन्द्यागतसूचितस्वाऽसहनस्वामित्वप्रव्हताप्रगुणसंसत्सम्मिलितोपविष्ट - नारायण १८७।१ सपत्नीकसपत्नप्रसादग्रामद्वादशक १२ पुनःप्रापणं २, स्वसद्मायातनिजमातुलपुत्राऽग्रम्लेच्छमारणमनोमतप्रका

॥९३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हड्डाधिराज नारायणदास के चरित्र में मार्ग में काका और पिता दोनों का माराजाना सुनकर शीघ्र पीछा फिरकर दुबलान पुर में आकर उनकी स्वयं निन्दा करके अपने पक्ष को अपराधवाला विख्यात करके पिता और काका की और्ध्वदैहिक क्रिया करके अपराध को अपने मन में छिपाकर बाहिर यवन से अनुकूलपन दिखाकर घर पर आईहुई यवन स्त्री के साथ बनावटी प्रेम से माता भाव दिखाकर नारायणदास का पिता के पाट को प्राप्त करना; अपनी स्त्री की कीहुई प्रशंसा से स्निग्ध समरकन्द के बुलाने पर बुन्दी में आकर जनाई हुई अपनी असह स्वामिभक्ति और नम्रता के विशेष गुण से सभा में शामिल बैठकर नारायणदास का स्त्री सहित शत्रु की प्रसन्नता से बारह गामों को फिर प्राप्त कर

महाराणा सांगा विक्रमी संवत् १५६५ में चित्तोड़ की गद्दी पर बैठे हैं; रावगांगा सं१५७२में जोधपुर की गद्दी पर बैठे हैं; आमेर के राजा भगवंतदास संवत्१६३०में जयपुर के राज्यासन पर बैठे हैं इसकारण उपरोक्त तीनों राजाओं की और बुन्दीके राव नारायणदास की गद्दीनशीनी एक ही समय में नहीं बनसकती

शनप्रतीपचालुक्यव्याघ्रदेव १ कार्याऽवधितन्त्रमूकीभावोपदेशन ३, मासदशका १० नन्तरसहायसार्थीकृतसमाहूतव्याघ्रदेवा१ दिविश्व स्तबन्धुसप्तक७गोपुरसमीपगूढस्थापितस्वभटचतुःशतक४००बुन्दया ऽऽगतनरेन्द्रनारायणदास १८७१स्वल्पसार्थसंसत्स्वास्थ्यसमुपविष्ट पक्षिप्रधनप्रेक्षमाणयवनसमरकन्द १ संहरण ४, दाऊद २ गवे षमाणराजसौधश्रेढीसमारूढगतपृष्ठागतमिमारयिषुबान्धवाधमस- ङ्ग्रामकन्धरनृपखड्गदक्षिणाकुडयप्रस्तरप्रभेदन ५, परिपन्थिपत्नी पृच्छाप्रतीतमृगव्यगतदाऊद२ दयोज्झितशत्रुशिशुवर्गसमारूढनव्य निर्मीयमाणहर्म्यमूर्द्धभूमसमाकृष्टनिःश्रेणीकबुन्दीशसमाहूतस्वसु भटसङ्घसन्त्रस्तपरपक्षिजननिष्कासन ६, पुरप्रविष्टगोपुरबाहिर्वर्ति शूरशतचतुष्क ४०० नृपाज्ञाप्रवर्तनपुरस्सरम्लेच्छमतमात्रनिःसा रणासमयशबरपूर्वयवनबन्धुद्वय २ मुमूर्षण७, मराडूपतियवनीकृतद त्तसादरसामन्तभावविरोधविक्षोभितविन्ध्यावलीप्रमारमहाधनुर्द्धरव हुधाविप्लुतपरप्रान्तसमरकन्द १ सहायबुन्दीवास्तव्यमृधमुमूर्षुहस-

ना, अपने घर पर आयेहुए अपने मामा के पुत्र के आगे म्लेच्छ को मारने का विचार प्रकाश करने के विरुद्ध सोलंखी व्याघ्रदेव का कार्य करने की अवधि पर्यन्त सलाह को गुप्त रखने का उपदेश देना, दश मास के पीछे सहाय के लिये बुलायेहुए व्याघ्रदेव आदि विश्वासवाले सात बान्धवों को साथ लेकर शहर के दरवाजे पर अपने चार सौ वीरों को गुप्त रखकर बुन्दी में आयेहुए राजा नारायणदास का अपने अल्प साथ के साथ सभा में स्वस्थता पूर्वक बैठकर पक्षियों के युद्ध को देखनेवाले यवन समरकन्द को मारना, दाऊद को हेरने के लिये राजमहल की सीढी पर चढेहुए पीठ लगेहुए को मारने की इच्छावाले अधम बान्धव संग्रामसिंह के गले को और दक्षिण दीवार के पत्थर को राजा के खड्ग का काटना, शत्रु की स्त्री से पूछने पर दाऊद के शिकार जाने की प्रतीति होने पर दया से शत्रु के बालकों को छोड़कर नवीन बनतेहुए महल पर चढकर निसरनी को ऊपर की छत पर खींचकर बुन्दीश का अपने सुभटों के समूह को बुलाकर डरेहुए शत्रु के पक्ष के लोगों को निकालना, पुर में प्रवेश करके शहर के दरवाजे से बाहिरवाले चार सौ वीरों का राजा की आज्ञा प्रवृत्त करने से पहिले म्लेच्छ मत के सम्पूर्ण लोगों को निकालने के समय पहिले के भील

न १ चन्द २ यवनयुग २ स्वैकाऽऽशुगशरव्यताशौभाण्डि
१८७।१ स्वीकारण ८, ज्ञातनृपकक्षासन्धिनिःसृतच्युतस्वसहा
यक १ द्वितीय२प्रदरविद्धरव्यसानुमच्छिखरचरन्मञ्जागणमध्य
स्थवर्करगोधितिलकचन्दस्वांनुष्कताविख्यापन ९, नरेन्द्रत्रोटि
तशस्त्रकाषायवस्त्रस्वशरणागतयवनयुग २ तन्नामनिर्मितसूचित
स्थानस्थापन १०, श्रुतजनकमारणोत्पथागतानिपातितभटचतुष्क
महामनोदाबूद २ राजस्थानतोरणातनुत्यजन ११, यवनयुग
२ निखातपातनसूचनासहितयवनीनिवासितवापीविशिष्टग्रामविशे
षविख्यापन १२, राजसौधविहितसमाजसमभिषिक्तसमाहूतस्व
जननारायणदास १८७।१ यथापूर्वबुंदीराज्यसमाचरण १३, प्र
तिवर्षसमाप्तितद्वंश्यततौऽधाभिषेचनसूचना१सहितनृपखड्गप्रभिन्नप्र
स्तरपूजनरूढिप्रज्ञापन२पुरःसरनृपा१द्भ्रात३भगिनी१चतुष्क ४ व

यवन के दो बंधुओं का मर की इच्छा करना, मण्डूपतिके यवन कियेहुए और आ
दर सहित उमरावपन दिहुए विरोध से बीजोलियां के प्रसार को चोभ देनेवाले
महाधनुर्द्धर पहुत करके शत्रुओं के देश को लूटनेवाले समरकन्दकी सहायता पर
बुन्दी में रहनेवाले और कुं में मरने की इच्छावाले सहन और चांदखां नाम दो
यवनों का अपने एक बारसे निशाना मारने का सुभाण्डदेव के पुत्र नारायणदा
स को स्वीकार कराना, रजा की कांख की संधि में से बाण का निकलजाना जा-
नकर अपने सहायक सरे बाण से बाएं हाथ के पर्वत के शिखर पर बकरि
यों के मध्य में चरतेहुए बकरे के ललाट के तिलक में चांदखां का अपनी धनु
र्विद्या को प्रसिद्ध करना, शस्त्रों को तोड़कर भगवां वस्त्र पहनकर अपने शर
ण आयेहुए दोनों यवनों को राजा का उनके नाम से सूचना कियाहुआ स्था
न बनाकर उस स्थानमें स्थापन करना, पिता का मारना सुन उलटे मार्ग(क
परवाड़े)से आ चार वीरों को मारकर बडे मनवाले दाऊद का महलों के बाहिर
के द्वार पर शरीर छोड़ना, दोनों यवनों को कबर में गाडने की सूचना सहित
यवन की स्त्री के बनायेहुए बावड़ी सहित ग्राम विशेष के बसाने की प्रसि-
द्धि करना, राजमहल में कीहुई सभा के लोगों से अभिषेक कियेहुए नारायण
दास का अपने लोगों को बुलाकर पहिले के समान बुन्दी का राज्य करना, प्र
ति वर्ष की समाप्ति (वर्षगांठ) पर उसके वंशवालों की उस महल में अभिषेक

र्षान्तरविवेचन १४, शीर्षोद्दसंग्राम १ कवन्धगङ्ग २कूर्मभगवत्सिंह ३ नृपतय ३ स्वस्वपितृपट्टप्रापणं १५त्रयोविंशो२३ मयूखः ॥२३॥
आदितः सप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नृप बरसिंह१८४१२ अनेहे[1] लौं, अक्खे दिल्लिय ईस ॥
भये वहुरि अव भाखियत, साह अजभुव[2] सीस ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

मुगल अग्ग तैमूर २२ प्रतपि दिल्लियदिन पन्द्रह १५ ॥
श्रुति सर चउ ससि१४५४साक सदन[3]पुनि गो सु बिजयसह॥
प्रतिमा[4]जिम आइ पुर साह महमूद २१रह्यो सिटि ॥
बिभव खानइकवाल[5] गंजि जिम कवल[6] लयो गिटि[7] ॥
तनुतजिय साह महमूद२०लव बिनु रोधक सठ अभय बहि ॥
इकबालखान स्वच्छंद इम लग्गो रहन अभीष्ट लहि ॥ २ ॥

दोहा ॥

किते सिकंदरनाम करि, कहत साह ताकौंहु ॥
बदत किते गद्दी बिनाँ, अधिप होत को यौंहु ॥ ३ ॥
हाकिम जिम अप्पन हुकम, इम दिल्लि सुनि याहि ॥
खिजरखान२३ तस सीस खिजि, आपोहनन उमाहि ॥ ४ ॥

षट्पात् ॥

होने की सूचना सहित राजा के खड्ग से कटेहुए पत्थ्र के पूजन की रूढि की सूचना के आगे राजा आदि तीन भाई और एक यान चारों के वर्षों के अन्तर का विवेचन करना, शीशोदिया संग्रामसिंह, राठोड़ गांगा, कछवाहा भगवन्तसिंह इन तीनों राजाओं का अपने अपने पिता के पाट पाने का २३ वां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और आदि से १७० मूख हुए ॥

१ समय से २ आर्यावर्त पर ॥ १ ॥ ३ घर (ईरान) ४ मूर्ति के समान ५ इकबालखां ६ ग्रास के समान ७ निगल गया ॥ २ ॥ ३ ४ ॥

सूबापति सय्यद जु हुतो मुलतान१ रट्ट हद ॥
सुलेमानसुत सज्जि सजव आयो सु दुरासद ॥
बदत हनन१ इकबाल कतिक कोलन२ भज्जन३ कति ॥
पै दिल्लिय जयपाइ प्रबलहुव खिजर२३ पट्ट पति ॥
वीरत्त१ दया२ सहनो३दि बहु पावत गुन जाके प्रचुर ॥
वह खिजरखान२३हुव साह इम धरि दिल्लिय भुवभार धुर ॥ ५ ॥

गिर्वाणभाषा ॥ पथ्यावक्त्रमनुष्टुप् ॥

तवारीखफिरस्ता१दिम्लेच्छितेभ्यो विनिश्चितम् ॥
तथाऽकबरनामा२दियवनानीभ्य उद्धृतम् ॥ ६ ॥
दिल्लीशानां प्रतिग्रन्थमायाति महदन्तरम् ॥
अद्भुतं यन्मतैक्येऽपि गीरैक्ये२ऽप्युरुधा लिपिः ॥ ७ ॥
प्रभूतमतमासाद्य दिल्लीराड्यवनावली ॥
उद्देशेनोदिताप्याहो ह्यपरालम्बनं क्वचित् ॥ ८ ॥
इंग्रेजैर्निश्चितापीयं संशेते ह्यन्तरान्तरा ॥
सर्वेषां स्वस्ववृत्तान्ते वास्तवी स्याद्विवेचना ॥ ९ ॥
इंग्रेजैर्वृत्तमार्याणामार्यावर्तनिवासिनाम् ॥

मुलतान१देश की सीमा में. कितने ही २ कैद करना कहते हैं और कितने ही भगना कहते हैं ३सहनशीलता आदि ४अत्यन्त ॥५॥ मैंने "तवारीख फिरस्ता" आदि म्लेच्छों के ग्रंथों से निश्चय किया है; तैसे ही 'अकबरनामा' आदि जो यवनों की भाषा में ग्रंथ हैं उनसे भी लिया है ॥ ६ ॥ दिल्ली के बादशाहों के हरएक ग्रन्थ में बडा अन्तर (फर्क) आता है, यह आश्चर्य है कि एक मत और एक भाषा होने पर भी नाना प्रकार का लेख है ॥ ७ ॥ बहुतों की सम्मति लेकर मैंने निर्णय के साथ दिल्ली के यवन बादशाहों की पीढियों का निर्णय किया है, तो भी आश्चर्य है कि कहीं सन्देह ही है ॥ ८ ॥ अङ्गरेजों ने यवन वंशावली का निश्चय किया है तो भी बीच बीच में सन्देह ही है. अपने अपने वृत्तान्तों में सब की खोज सत्य होती है ॥ ९ ॥ जैसे-अङ्गरेजों ने आर्यावर्त (भारत वर्ष) के रहनेवाले आर्य लोगों का वृत्तान्त राजाओं की पीढियों के साथ निर्णय करके लिखा है परन्तु उसमें भी बहुत से वृत्तान्त

सराजावलि निर्णीतं याथातथ्यच्युतं बहु ॥ १० ॥
तथैव यवनोद्देशे सन्दिग्धि स्वीकृतौ मनः ॥
आर्यवृत्ताद्दतत्वं स्यात्तत्र सामीप्यतोऽधिकम् ॥ ११ ॥
तथापीङ्गजलोकैर्या निर्णीता यवनाऽऽवली ॥
तेषां धीमत्त्वमान्यत्वादृग्राह्यावहुमता हि सा ॥१२॥
यावनीगी१र्लिवि२ग्रन्थेपूक्तेषु यवनैरपि ॥
दिल्लीभुङ्म्लेच्छवृत्ता१ऽऽख्या२सङ्ख्या३सु न सदृक्क्रमः ।१३।
केचिन्निगडितं १ केचिद्धतं २ केचित्पलायितम् ३ ॥
दिल्लीशं ४ मन्वते केचित्त्रयोविंशं २३ सिकन्दरम् ॥१४॥
नैवात्र ब्रुवतेऽन्ये तु समूलं हि सिकन्दरम् ॥
नापीङ्ग्रेजैर्मतोऽत्रासौ महमूदा२१त्सिकन्दरः ॥ १५ ॥
वृत्तान्त १ नाम २ सङ्ख्या३दि यद्यथाभूत्तथास्तु तत् ॥
ख्यापितं मतबाहुल्यं पक्षोऽस्माकं न कुत्रचित् ॥ १६ ॥
बहुभिः खिजरः२३प्रोक्तो महमूदा२१दनन्तरम् ॥

यथार्थ नहीं हैं ॥१०॥ तैसे ही यवनों का क्रम मानने में भी मन को सन्देह होता है, तहां पर आर्यों के वृत्तान्तों से अधिक सत्यता होती है; क्योंकि आर्यों का वृत्तान्त यवनों के वृत्तान्त से अधिक समीप है ॥ ११ ॥ तो भी अङ्गरेजों ने जिस यवन वंशावली का निर्णय किया है, अङ्गरेजों की बुद्धिमानी केकारण वह बहुमान्य है इससे, उसीको मानना चाहिये ॥ १२ ॥ यवनों की भाषा में और यवनों की लिपि में यवनों के बनायेहुए ग्रन्थ हैं तो भी उनमें दिल्ली को भोगनेवाले म्लेच्छों के वृत्तान्त, नाम और संख्या में एक सा क्रम नहीं है ॥ १३॥ सिकन्दर को कितने ही तो कैद हुआ मानते हैं कितने ही मरा मानते हैं, कितने ही भगाहुआ मानते हैं और कितने ही दिल्ली का २३ वां बादशाह मानते हैं ॥ १४ ॥ और अन्य लोग तो सिकन्दर का होना समूल ही नहीं कहते; अङ्गरेजों ने भी महमूद के पीछे सिकन्दर को नहीं माना है ॥ १५ ॥ इनके वृत्तांत, नाम और गिनती आदि जो जैसा हुआ है वह वैसा रहै हमने केवल मतभेद कह दिया है. हमारा पक्ष किसीमें नहीं है ॥ १६ ॥ बहुत लोगों ने महमूद के पीछे खिजर को कहा है, तिस कारण से २३ वीं संख्या खिजर

तत्त्रयोविंश२३ता नीता खिजरं२३ न सिकन्दरम्॥१७॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ वैतनामयावनीवृत्तम् ॥
येनाँ सिकंदर१किते यों भनैं,इन्यौं२के भज्यो३केगह्यो४के*मनैं।
नी जो रह्यो बात क्यौंहू भई,खिजरखान२३÷पैं पातसाही लई॥१८॥
है नीति १ईमान २ नेकी३ भरयो, बिनाँ कंत दिल्ली सुनेता बरयो॥
.है दूरदर्सी सबर आनिकैं,रह्यो साहरुख १कौं जबर जानिकैं॥१९॥
तनै साहरुख१नाम तैमूर२२को, दंसैं मत्त जाकौं गिनैं दूर कौ ॥
करैं पातसाही अटक ‌ ‌ जो, हरैं सत्रुहू जंग हुसियार जो॥२०॥
ाजर२३संक ताकी गिनी धाँमसौं,न सिक्का चलायो स्वयं नामसौं॥
दा साहरुख१दास हम यों कहैं,मिलैं नोकरीं सोहि करते रहैं॥२१॥
॥ दोहा ॥
नियत साहरुख १ नामको, रुप्पय सिक्का रक्खि ॥
उर१ स्वतन्त्र२ बाहिर१ अनुग२, अप्पहिं तस बस अक्खि॥२२॥
वनत साह दिल्लिय बिभव, पुरजन १ सुभट २ प्रधान ३ ॥
आनैं नन मन ईरखा, जिम किय खिजर२३ सुजान ॥ २३ ॥
॥ युग्मम् ॥
उपदा पुनिपुनि भेजि इहिं, पाई साहरुख १ प्रीति ॥
मोहितकरि निजजनन मन, रचिय राज्य नयरीति ॥ २४ ॥
कर न प्रजासन लिय कठिन, उत सब करि आबाद ॥
रीति विमुख सासक रह्यो, मेटत नरन प्रमाद ॥२५॥
दैरिसल १८५।१ बुंदीसके, समय हुतो यह साह ॥
ताहीछत गय छोरि तनु, लहि उदर्क अर्थ लाह ॥ २६ ॥

की है सिकन्दर की नहीं ॥१७॥*मानते हैं ÷परन्तु॥१८॥१पति २ श्रेष्ठ हुकूमत करनेवाला ३ सन्तोष ॥ १९ ॥ मस्तों को ४ दण्ड देता है ५ कौन ६ सावधान ॥ २० ॥ ७ कचाई से ॥ २१ ॥ ८ सेवक ॥२२॥ २३ ॥ ९नजराना ॥ २४॥ १०हाँसिल ॥ २५ ॥ ११ शरीर १२ आनेवाले समय के १३ शुभ कर्म फल का लाभ लेने को, अर्थात् यह बादशाह नेक था इस कारण स्वर्ग भोगने का लाभ ले

सक इय मुनि चउ ससि१४७७समय, खिजरखान२३बपु खोइ॥
पावत गति *अर्जित प्रजा, रहिय हारि सब रोइ ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मुबारिक २४ खिजर२३सूनु हुव स्वभुव दुक्खहरि ॥
जग जिहिँ मोजुद्दीन २४ कहत दूजी २ अभिधा करि ॥
सुघर यहहु सुलतान भयउ रन परन भयंकर ॥
जनकसौँहु बढि जास विदित फैलिय जस बिस्तर ॥
ससि अंक बेद भू१४९१मान सक स्व सचिव निमकहराम सठ ॥
मारयो जु साह चाहत मुलक होतहि पापिन पाप हठ ॥२८॥

दोहा ॥

पहिलेबरस सुभांड १८६।५पहु, छितियभयो धरि छत्र ॥
बरस द्वितीय२ मुबारिक२४ सु, पत्तो अनसु परत्र ॥ २९ ॥
दया१ छमा२ रु वदान्यता३, रनपाटव४ वीरत्व५ ॥
नयपटुता६ इतिसुख गुनन, तक्यो मुबारिक२४ तत्व ॥ ३० ॥
बल१ सूबा२पति जे बिमुख, तिनहु लह्यो तस त्रास ॥
बहु बिमुखहु नृप पहु स्ववस, किन्नें स्वजय प्रकास ॥ ३१ ॥
पगधारि अग्ग पिताहुसौँ, सवन दयो सुख साह ॥
रोइ प्रजा ताके मरत, इम किय सोक अथाह ॥ ३२ ॥

षट्पात् ॥

साह मुबारिक२४ सूनु मीरहुव खानमुहुम्मद२५ ॥
सो इहिँ हनिय समर्थ बप्पमारक मंत्री बद ॥

ने के लिये शरीर छोड़ा ॥ २६ ॥ * जैसा संचय किया था तैसी गति पाने के लिये ॥ २७ ॥ दूसरे १ नाम से २ विस्तार ॥२८॥ ३ विना प्राण होकर ४ परलोक गया ॥ २९ ॥ ५ अधिक उदारता ६ युद्ध की चतुरता ७ नीति की चतुराई ८ इत्यादि ॥३०॥ ३१ ॥ ३२॥ ९ पिता के मारनेवाले बुरे मन्त्री को

इक लोदी अफगान इमहि बहलोल१नाम इत ॥
हुवसु साह लाहोर देस पंजाब *बलोदित ॥
सरहिंदमुलक याको वतन सो पठान यह इहिंसमय ॥
बलपाइ साह लग्गो बजन अटक१लत्तहू२विच अभय ॥३३॥

दोहा ॥

तजिय मुहम्मदसाह२५तनु, मही ख तिथि१५०१ सक मान ॥
तनय अलावुद्दीन२६ तस, स्वपुर भयो सुलतान ॥ ३४ ॥
रचिय अलावुद्दीन२६ इहिं, नगर बदाऊँ१ नाम ॥
बरस पंच५ दिल्ली सु बसि, धर्षित गय तिहिं धाम ॥ ३५ ॥

षट्पात् ॥

सक रस नभ तिथि१५०६ समय वीर लोदी बहलोल सु ॥
हंकिय तजि लाहोर बंटि बीरन अभीष्ट बसु ॥
अतिजव दिल्लिय आइ गंजि सय्यद लिय गद्दिय ॥
दुमन अलावुद्दीन२६ कढ्ढि खिल सब अधीन किय ॥
निज रचित बदाऊँ१ नवनगर रह्यो सु सय्यद२६ आमरन ॥
बहलोल२८साह दिल्लीसबनि कज्ज दुंकर लग्गो करन ।३६।
जोनपुर१हु जिहिं जित्ति कियउ निजतंल फतेकरि ॥
सरित अटक१ सनें सीम बंग२ जनपदलग विस्तरि ॥
अर्ज्ज१ जवन२ नृप ओर निखिल पयलाइ नमाये ॥
मालव१ गुज्जर२ मीर द्वै२ हि प्रतिभट दरसाये ॥
जे वढिग अग्गहीसों जबर पातसाह बज्जत प्रबल ॥
उनतैं उदीचिदिस जो अवनि तिंहिं लोदी लिय अप्पतल ।३७।

---

*पल से उदय पाया हुआ; अथवा सेना से प्रकाशित ॥३३॥३४॥
१धमकाया हुआ(डरकर) ॥३५॥ वांछित२धन देकर३मरण पर्यंत ४दुष्कर(कठिनतासे बनै ऐसा)कार्य करने लगा॥३६॥ अटक नदी५से६बंगाला७देश तक८आर्य ९मुकाबिला करनेवाले(शत्रु)१०उत्तर दिशा की भूमि को११अपने नीचे ली॥३७॥

दोहा ॥

तनु सुभांड१८६१४ नृप जब तजिय, वाहि बरस अफ़गान ॥
तजिय साह बहलोल२७ तनु, नियति उदर्क[1] निदान ॥ ३८ ॥
बेद बेद तिथि१५४४ सक बरस, दिल्लिय इम उद्दाम[2] ॥
साहभयो बहलोल२७ सुत, निपुन सिकंदर२८ नाम ॥ ३९ ॥
अभिधा[3]करि महमूद२८ इत, जो अहमदकुल जात[4] ॥
पुर अहमद आबाद१ पहु, गज्जै धर गुजरात ॥ ४० ॥
बाजबहादुर सुत बिदित, दृढ इत मंडुव[5] दुर्ग ॥
नाम मुदाफर जो निडर प्रतपै स्वबल प्रसंग ॥ ४१ ॥

पादाकुलकम् ॥

धीरसाह बहलोल २७ पट्टधर, सासन दिल्लिय करत सिकंदर२८॥
याहिअने[6]हंन्नृपतिनारायन१८८।१,हन्योंसमरकंद१सुजिहिंहायन[7] ४२
अनकिय तबहि विचार नीतिमत, करहिं पुकार सत्रुजन कुक्कत॥
पृतना[8] जो पिल्लहिं[9] मंडूपति, समर दुरघां नवनैं तव संगति ॥४३॥
यातैं जाइ करहिं आराधन[10],सुरहिं कदापि मुदाफरको मन ॥
सुरहिंजोन तो तँहँ तिहिं मारौं,निखिल[11] सलय[12] मैं मरिहु निकारौं॥४४॥
द्वै२हीओर मरन जब दीसैं, जो को रिपुहिं तजैं तब जीसैं ॥
करत सहाय न साह सिकंदर२८, दोउ२न इन्हैं प्रत्युत[13] मन्नैं दर[14]॥४५॥
इमबिचारि परिकर[15]१अनुजात[16]२न,गदियँ[17] अभीष्ट कवहु थिर गात[18] न
सब तुमबुध[19]अवसरपरहितसह,मदनकुमारि१८७।१विबाहहुअतिमह[20]
आयुसेस जो तो ध्रुव ऐहौं, जोधन[21] पै न संग लैजैहौं ॥

---

१ आनेवाले समय के भाग्य फल भोगने के कारण ॥ ३८ ॥ २ निरंकुश ॥ ३९ ॥ ३ नाम से ४ उत्पन्न ॥ ४० ॥ मण्डू ५ पुर में ॥ ४१ ॥ इसी ६ समय में ७ वर्ष ॥ ४२ ॥ ८ सेना ९ भेजेगा ॥ ४३ ॥ १० सेवन ११ सब का १२ साल ॥ ४४ ॥ १३ उलटा १४ भय ॥ ४५ ॥ १५ परगह १६ छोटे भाइयोंको १७ कहा १८ शरीर स्थिर नहीं है १९ पण्डित. अत्यन्त २० उत्सव से ।४६। परंतु २१ वीरों को

इकला१जावन भटन ग्रटक्किय,सादी सत१००तव हठन सत्थलिय।४७।
मंडूपुर इम पत्त महीपति, पठई नम्र साहपति विन्नति ॥
जवनराज संवाहक इकजन, धीसख किय ताकों कछु दै धन ।४८।
ताके कर पहुँची सु अरज तँहँ, कहिय मुदाफर बंचि अनुगकँहँ ॥
वदहुतासआसय१वल२विक्रम३, समुचितअनुगकहेतबमनसम।४९।
जवहो करत मुदाफर भोजन, बुल्ल्यो तवहि असस्त्र धराधन ॥
पिहित इक१छुरिका धरि भूपति, मंडूपति ढिग पत्त महामति ॥५०॥
दै उपहार पुरटमुद्रा दस१०, तिम सद्दिय करतव्य उचित तस ॥
भनिय साहक्यों हमहिं भुल्लि मनि,हमरो समरकंद१डारयो हनि।५१।
वदिय नृपहु पहु हमहु बिपन्नहु, मन१वच२काय३रावरे मन्नहु ॥
परैं काम तँहँ मरन पठावहु, लहि जय दुलभ महर इत लावहु ।५२।
समरकंद१मम जनक हन्यों सठ,हन्यों कुहक काका२हु छद्म हठ॥
वाहुजकुल यहरीति रही बनि,हनैं जनक तिहिं लघुहु रहैं हनि॥५३॥
कुल कुपुत्र नहनैं सु कहावत, गतपुरुखन अघ१गारि२गहावत ॥
जाति अंगुलिन ताहि जतावैं,पुनि समकुल न सुता परिनावैं ॥५४॥
ताहि न देत अंग संगहु तिय, जंपि बंझ जननीहु जरैं जिय ॥
यातैं समरकंद१मारयो अरि, पुत्र२तदीय मरयो चहि हठ परि॥५५॥
इच्छित व्है सु करहु हजरत अब, सासनबस हाजरि हुव्वै सब ॥
वदिय साह मम जनक हनैं विनु,बदि तू सुत किम तस परनैं विनु।५६।

साथ नहीं लेजाऊंगा १ सवार ॥ ४७ ॥ २ अंग मर्दन करनेवाले को ३ मन्त्री किया ॥ ४८ ॥ ४सेवक को ॥ ४९ ॥ ५राजा को६छिपी हुई ७ छुरी ८ गया ॥ ५० ॥ ९ नजराना १० सोने की मुहरें ॥ ५१ ॥ ११ विपद्ग्रस्त ॥ ५२ ॥ १२ जालसाज ने १३ छल के हठ से १४ क्षत्रियों के कुल में १५ शीघ्र ही मारकर रहते हैं ॥ ५३ ॥ १६ समान कुलवाले १७ पुत्री को नहीं व्याहते हैं ॥ ५४ ॥ १८ स्त्री भी अंग का स्पर्श नहीं करने देती १९ बांझ कहकर २०उसका पुत्र ॥ ५५ ॥ २१आज्ञा के अधीन. बादशाह ने कहा कि मेरे पिता ने तुम्हारे दादा को मारा था सो मेरे पिता को मारे बिना. २२ उसका विवाह कैसे हुआ

हनैंबिनु १ रनैंबिनु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुपहु कहिय हजरत*असुस्वामी, इतर सकल प्रभुके+अनुगामी
तुम प्रभु रीझ१खीज२छम तातैं, खल को चिंतहिं वैर खुदातैं॥५७॥
कोउन दै प्रभु दंड कलंकहु, परनैं इम जुग२व्याह पितापहु ॥
मनप्रसन्न हसि सु सुनि सुदाफर,कहिय तुमहु हमरे जो हितकर५८
आवहु समरकंद१जिम तो अब, सहभोजनकारि हरहु भ्रांति सब ॥
॥ ५९ ॥
जान्यौं नृप गाहक यह जीको, नुत पुनि मरन धर्मपर नीको ॥
हैतो सहमरिवो जसहीको, छिप्र खलहिं कारि इक१ छुरीको ॥६०॥
जातजात ढिग अरि वरजैं तो, भली तवहु असु पहहु भजैंतो ॥

रजैंतो१भजैंतो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इमगिनि विरंचि बाँहपट ऊँचे, पानिन गोरि परस्पर पूँचे ॥ ६१ ॥
जावत निकट जवन वरज्यो जो, तव गोपित नृप हठहु तज्यो जो ॥

रज्योजो१ तज्योजो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

साहमुदाफर स्वकहि सराह्यो, चित्त समरकंद१हिंसम चाह्यो।६२।

दोहा ॥

पुनि लिखाइ बुंदिय पटा, नृपहिं अप्प जवनेस ॥
सिक्ख मरावत१ द्विरद२ सह, दिय आवन निजदेस ॥ ६३ ॥
विगरीवत्त सुधारि सब, नृप नारायनदास१८७।१ ॥
इम विलसे पुनि आइकैं, बुंदिय विभव विलास ॥ ६४ ॥
सुपहु रचिय निजनामसह, नारायणपुर१ नाम ॥
पुरतैं पच्छिम३ दुव२ रु दल३, गव्यूतिनं नवग्राम ॥ ६५ ॥

और उसके विवाह हुए विना तू पुत्र कैसे हुआ?॥ ५६ ॥ *प्राणनाथ+सेवक ॥५७॥ ॥५८॥५९॥ १ लेनेवाला २स्तुति योग्य ३साथ मरना ४शीघ्र ही इस दुष्ट को भी एक ही छुरी से मारलूंगा ॥६०॥५ प्राण ६धारण करैं ॥६१॥७छिपाहुआ८अपना कह कर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ९ भोगे।६४। ढाई १० गव्यूति (पांच कोस) पर॥ ६५ ॥

अध रवास अनुचित यह१८७।२हि, रन दुक्खद तजि राज ॥
गिरिनितंब निबस्यो दुगम, सजि नव सौध समाज ॥ ६६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्यविहितवर्णनाऽवसरव्याहार्यबुन्दीभूभुजंगनारायणदास१८७।१चरित्रे मुगलतैमूर २२ प्रतिगमनानन्तरमर्जितम्लेच्छराजमहमूद २१ मरणाऽर्वाक्खिजरखाना २३ दिसिकन्दरा २८ न्तषड् ६ यवनराड्दिल्लीशासनसूचन १, परमतवृत्ताऽल्पज्ञसर्वजनस्वस्वमतवस्तुविवेचनायाथातथ्यविख्यापन २, प्रत्यन्तराजतैमूरिशाहरुख १ सेवकायमानसय्यदखिजरखान २३ तन्नामाङ्कमुद्राप्रवर्तन३, मन्त्रिमारितयवनेन्द्रमुबारिक २४ पुत्रदिल्लीशमुहुम्मद २५ स्वसवितृसंहारकधीसखाऽधमध्वंसन ४, निष्कासिततत्तनूजदिलीशाऽलाउद्दीन २६ प्राप्ततत्पट्टजितजोनपुरादिजनपदलोदिपठानबहलोल २७ करतोया १ वङ्गा २ऽन्तरदिल्लीसीमाशासन५, तत्पुत्रसिकं

१नीचे के महलों में रहना २ पर्वत के शिखर पर. नवीन ३ महलों का समूह रचकर रहा ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी की भूमि के पति नारायणदास के चरित्र में मुगल तैमूर के पीछा जाने के अनन्तर बादशाह महमूद के मरने से इधर खिजरखां को आदि लेकर सिकन्दर तक इकट्ठे ही छः बादशाहों का दिल्ली की हुकूमत करने की सूचना करना, दूसरों के मत के वृत्तान्त में थोड़ा ज्ञान होने के कारण सब लोगों की अपने अपने मत से वस्तु के विवेचन में सत्यता न होने की सूचना करना, म्लेच्छराज तैमूर के पुत्र शाहरुख का सेवक होकर सय्यद खिजरखां का उसके नाम का सिक्का जारी रखना, मन्त्री के मारे हुए यवनेन्द्र मुबारिक के पुत्र दिल्लीश मुहम्मद का अपने पिता के मारनेवाले अधम मन्त्री को मारना, उसके पुत्र को निकाल कर दिल्लीश अलाउद्दीन का उसका पाट पाने पर जौनपुर आदि देशों को जीतकर लोदी पठान बहलोल का अटक नदी से बङ्गाल तक दिल्ली की सीमा का शासन करना, उसके पुत्र

दर २८ नरेन्द्रनारायणदास १८७।१ युग्म २ सूचितैक १ स
मास्वस्वस्वामितासमासादन ६, तत्समयदिल्लीपतिप्रत्यनीकपृथ
ग्यवनेन्द्रीभूतपूर्वपरपुरुषमालवमराडू १ पुरराजधानीकम्लेच्छरा
जमुदाफर १ गौर्जराहमदाबादस्थानीयस्कन्धावारकद्वितीय २
यवनराणमहमूद २ यवनेशयुग्म २ भिन्नभिन्नशासकता
सामर्थ्यसङ्कथन ७, निपातितसपुत्रसमरकन्दसमाक्रान्तस्वरा
ज्यनिश्चितनिखिलार्यशल्यनिष्कासनमराडूप्राप्तपरिकरपिहितैक १
छुरिकबहिरशस्त्रदृश्यमाणमुमूर्षुनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ भोजनस
मयम्लेच्छराणमुदाफरसविधसङ्गमन ८, दत्तप्रश्नापराधव्यावर्त्तको
त्तरसहभोजनाकारकम्लेच्छमारकीभूतान्तिकटायान्तनृपनिवारणा-
ऽनुकूलसमर्पितप्रतिलेखितपृथ्वीपट्ट १ पीलु २ प्रभृतिमहन्मान्यत्व
पार्थिवप्रागल्भ्यप्रसन्नमराडूपरिवृढम्लेच्छराजमुदाफरबुन्दीन्द्रप्रतिप्र
स्थापन ९, सद्मसमायातबुन्दीशनिजनामैक १ नवीननिवसथनिर्मा

सिकन्दर और बुन्दी के राजा नारायणदास इन दोनों का जनमेहुए एक स
म्वत् में अपने अपने स्वामिभाव को ग्रहण करना; उस समय, पहले समय में
जिनके पुरुषा बादशाह थे और जिनकी मालवे में मराडूपुर राजधानी थी ऐसे
दिल्ली पति के शत्रु बादशाह मुदाफर और गुजरात की अहमदाबाद नामक
राजधानी में दूसरे बादशाह महमूद दोनों यवनेशों की जुदी जुदी हुकूमत और
ताकत का कथन, पुत्र सहित समरकन्द को मार, अपने राज्य को ले, सम्पूर्ण
आर्य लोगों के शल्य को निकालने का निश्चय करके मराडूपुर में पहुंच, परग
ह के छाने एक छुरी ले, बाहर से बिना शस्त्र दीखते हुए मरने की इच्छावा
ले नरेन्द्र नारायणदास का भोजन के समय बादशाह मुदाफर के समीप जा
ना, प्रश्न के अपराध को मिटानेवाला उत्तर देकर, साथ भोजन करने को कु
लानेवाले म्लेच्छ को मारने को तय्यार हुए समीप आतेहुए राजा के समीप
आने से अनुकूल होकर भूमि का पट्टा पीछा लिखाकर हाथी आदि देकर ब
डे आदर के साथ राजा की बुद्धिमानी से प्रसन्न मराडूपुर के पति म्लेच्छराज
मुदाफर का बुन्दीन्द्र को पीछा भेजना, घर पर आकर बुन्दीश का अपने ना
म का एक नवीन ग्राम बसाने के साथ तारागढ के पर्वत के शिखर पर महल

णा १ सहिततारादुर्गाद्रिनितम्बप्रणीतप्रासादावस्थान २ सूचनं १० चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७१ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल इत रान मृत, अक्खिय पुव्व उदंत[1] ॥
कहियत तत्थ बिसेस कछु, जीवन तस परजंत[2] ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रायमल्लकै कुमर प्रथित[3] हुव त्रय ३ हि बलीपन ॥
जेठो पृथ्वीराज १ अपर २ नामक सुहि उड्डन[4] १ ॥
जिहिं अनेह[5] इकजवन लल्ल[6] अभिधाकरि लंपट[7] ॥
दिल्लीपति दयिता सु भेदि पातुरि[8] लायो भट ॥
तिहिं आइ नगर टोडा तबहिं बेढि[9] बिरचि तोपन बिकल[10] ॥
दे त्रास कढ्ढि चालुक दरित बिजित किन्न गढ अप्पबल ॥२॥
तिहिं उड्डन १ रानसुत बंस चालुक सहायबनि ॥
पहुँचि बेग प्रतिमल्ल[11] हल्ल लल्लसु पठान हनि ॥
करि टोडा जय कलह सु पुनि अप्पिय सोलंखिन ॥
उड्डन बज्जिग[12] अप्प पाइ अतिजव[13] मतिपंखिन ॥
इम जित्ति सिरोहीपुर अधिप स्वीयस्वसा[14] दुख संहरिय ॥
नृप[15] सुनहु वैरकारन निखिल कुम्मर कुप्पि जिम यह करिय॥३॥

नाकर निवास करने की सूचना करने का २४ वां मयूख समाप्त हुआ ॥२४॥ और आदि से १७१ मयूख हुए ॥

१ वृत्तान्त पहिले कहा. जीवन २ पर्यन्त ॥ १ ॥ ३ प्रसिद्ध. जिसका दूसरा नाम ४उडना था ५समय ६लल्ला नामक ७व्यभिचारी ८प्यारी ९घेर कर १० डरेहुए सोलंखियों को निकालकर ॥ २ ॥ ११शत्रु. यहां से आप उडना १२प्रसिद्ध हुआ. पाचियों के समान अत्यन्त १३वेग पाकर १४ अपनी बहिन का दुःख मिटाया १५ हे राजा रामसिंह ॥ ३ ॥

रायमल्ल करि रान सुतासंबंध सिरोहिय ॥
बरन देवरा बुल्लि कथित बिधि सह बिबाहकिय ॥
जत्थ देत्त गुरुजनन मिलित दंपति करमोचत ॥
इमसु सिरोही दत्त कहिय उड्डन अति उद्धत ॥
बरकहिय मम सु उड्डन १ बदिय लेतो मैं वह छिन्नि लहु ॥
अब मैं दई सु लैहौं न इम बिलसि सिरोही नृपबजहु ॥ ४ ॥
यह सुनत धर्कि असह तोरि अंचल बंधन तब ॥
दुलही लैगय दुलह स्वपुर प्रतिकूल सादि सब ॥
उरधरि मंचकअंघ्रि देनलग्गो सु तियहिं दुख ॥
पिहितं बंचि तस पत्र रुट्ठि उड्डन अंतकरुख ॥
निसजाइ छन्न भगिनी निलय सोवत आमैं जगाइ स्वक ॥
बुल्ल्यो कटार उरधरि बदहु तव भगिनी१प्रभुर मैं१भृतक२॥५॥
तुंगमहल लै ताहि द्रंग हेलाहु दिवायउ ॥
अज्जअवधिलग अम्हि प्रान ईस्वरबल पायउ ॥
राणकुमर करि करुणा अप्पि मोकहँ अवतैं असु१ ॥
सहर२ सिरोही सहित बिदित बखसे नृपता३ वसु४ ॥
इम बहु पराइ हेला रु इहिं छोर्यो जियत कुमार छम ॥
बहिनिहिं न दुक्ख अब देहु वदि करिजय आयो विजयक्रम ॥६॥

---

१ पुत्री का सम्बन्ध २ देवड़ा शाखा के चहुवाण को. जहाँ बड़े लोग. ३ देते हैं ४ हथलेवा छूटते समय ५ पृथ्वीराज ने कहा कि हमने सिरोही दी. तब दुल्लह ने ६कहा कि वह तो मेरी ही है तिस पर पृथ्वीराज ने कहा कि मैं ७ शीघ्र छीन लेता ॥ ४ ॥ ८ क्रोध कर के ९ गठजोड़ा तोड़ कर १० माँचे का पाया छाती पर रखकर ११ छाने १२ यमराज की भाँति. बहिन के १३ घर. अपने १४ बहिनोई को जगाकर. तब बहिन के पति ने कहा कि मैं आपका १५ चाकर हूं ॥ ५ ॥ उसको १६ ऊंचे महल पर ले जाकर, १७ नगर में आवाज दिलायी १८ आज पर्यन्त १९ मैंने २० करुणा करके. २१ प्राण २२धन. आवाज २३दिलाकर २४समर्थ कुमार ने ॥६॥

दोहा ॥

पृथ्वीराज१ कुमार पहु, उड्डन१ पर२ अभिधान ॥
कुमरपनहिँ बपु हान किय, जिहिँ जिम नियति निदान ॥७॥
उड्डन१ सौं हे दुव२ अनुज, मध्यम तँहँ जयमल्ल२ ॥
अरु संग्राम३ कनिष्ठ इम, सोदर रिपुकुल सल्ल ॥ ८ ॥
मरयो प्रथम१ उड्डन१ कुमर, रायमल्ल पुनि२ रान ॥
जयमल्ल१ रु संग्राम२ जँहँ, घुमँडि भिरे घमसान ॥९॥
हनि अग्रज जयमल्ल१ व्है, सुपहु अनुज संग्राम२ ॥
प्रतप्यो गढ चित्तोरपर, अँय१ नय२ जय३ उद्दाम ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

इत नारायन १८७१ अधिप दंगलुंदिय दुर्जनदमँ ॥
वेदकथित विधि निबहि कियउ उपयँम[11] चतुष्क४ क्रम ॥
तँहँ संग्राम पितृव्य[12] जेष्ट उड्डनतनुजाई[13] ॥
चंपा१८७१ गढ चित्तोर प्रथम१ इड्डहिँ परिनाई ॥
तिम राजकुमरि १८७१२चंद्राउतिसु मलयसुता दूजी२सुमति ॥
परनैँ वहोरि[14] दुँव२ जोधपुर पहु बुंदिय१ चित्तोर२पति ॥ ११ ॥

दूसरे १नाम से २ भाग्य के ३ कारण ॥ ७ ॥ ४ थे ॥ ८ ॥ ५ कुमर पृथ्वीराज पहिले मरा ६ * युद्ध ॥ ९ ॥ ७ प्रारब्ध ८ नीति और जय में ९ निरंकुश ॥ १० ॥ १० शत्रुओं को दण्ड देनेवाला ११ विवाह १२काका संग्रामसिंह (सांगा) ने. बडे भाई पृथ्वीराज की १३ पुत्री को. बुन्दी और चित्तोड़ के पति १४ दोनों राजा जोधपुर व्याहे ॥ ११ ॥

---

*यहां कुमर पृथ्वीराज का पहिले मरना और संग्रामसिंह का वडे भाई जयमल्ल को मारकर राजा होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि इन तीनों भाइयों की लड़ाई कुमर पृथ्वीराज की विद्यमानता में पहले ही होचुकी थी जिसमें घायल तो हुए परन्तु कोई भाई मारा नहीं गया और कुमर जयमल्ल राव सुल्तान सोलंखी के साले सांखला रत्नसिंह के हाथ से मारागया इस पीछे कुमर पृथ्वीराज ने लल्ला पठान को मारकर टोडा विजय किया जिसका सविस्तर वृत्तान्त देखना होवे तो 'वीरविनोद' नामक मेवाड़ के इतिहास और 'टॉड राजस्थान' में देख लेवैं. और लल्ला पठान को मारने के कारण वडी शघ्रता के साथ टोडे पहुँचे इसीकारण उसी दिन से कुमर पृथ्वीराज का नाम उडना पृथ्वीराज प्रसिद्ध हुआ था ॥

दोहा ॥

कन्या बग्घ कबंधकी, भ्रात गंग भूपाल ॥
नाम धना१ खेतू२ निपुन, व्याही दै स्वबिसाल ॥ १२ ॥
धना१ रान *संग्रामधन, आयो परनि उमाहि ॥
नारायन१८७१ खेतू१८७१ ३ सु निज, बलि किय तीजी३ व्याहि ॥१३॥
क्रम लक्खाउत १ चुंड२ कै, सुत३ सुत४ केर सुताहु ॥
सरहकुमरि १८७१४ चुंडाउति सु, व्याहिय चोथे४ व्याहु ॥१४॥
जाई गुज्जर जास जुग२, नत्थी १ लालाँ२ नाम ॥
भूप भुजिष्या करि भवन, रक्खी यह अभिराम ॥ १५ ॥
कन्या गुज्जर चंदकी, अतिवल जानी एह ॥
तस जनकहिँ करि तुष्ट तिल, गिनि अनूढ लिय गेह ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

जोध१ नृपति जोधपुर रचिय तससुत हुव बारह १२ ॥
तिनमैं पंचम ५ रतन२ तास सुत रायसिंह३ तह ॥
तनुज रायमल्ल ४ तस तास कल्यान ५ बीरँतम ॥
गिनि गृहको लघुग्रास बढ्यो मन तास दुष्टदम ॥
तृनसम न साह दिल्लीस तकि गंजि समर सुमियानगढ ॥
धुम्मैं सु लुट्टि दिसदिसन धन रावनवारी इक्क१ रढ ॥ १७ ॥
दिल्लियदल बहुबेर भंजि कल्यान भजाये ॥
मिच्छनमन प्रतिमल्ल सल्ल तसगुन न समाये ॥
शरिरसिक रठ्ठोर दोरि दिल्लिय दाबायत ॥
सुनि बुंदिय जससोर ओर तस चुनि हित आयँत ॥

॥१२॥*युद्ध ही जिसके धन है ॥१३॥महाराणा १ लाखा के पुत्र चूंडा के पोते की बेटी ॥१४॥ २गूजर(शूद्र जाति विशेष)३पासवान ॥१५॥ उसके ४पिता को ५ प्रसन्न करके ६कुमारी जानकर ॥ १६ ॥ ७ अत्यन्त वीर ८ घर की जीविका छोटी समझ कर ९ दुष्टों को दण्ड देने को १० हठ ॥१७॥ ११ शत्रु १२ बड़ा.

निज जामि मदनकुमरी१८७।१निपुन तास विरचि संबंध तँहँ ॥
लरतहु सु कुल्लि बुंदिय दई व्याहि वहिनि कल्ल्यानकँहँ ।१८।
जवहु कल्लि जवनेस कटक वेष्टितैं गढतैं कढि ॥
परन्यौं बुंदिय पहुँचि वीर साहस दुरूहैं वढि ॥
नव६दिन सालकनिलय दै सु धन कविन लक्खदुव२०००००
सहदुलही हठसंग हंकि निजगढ प्रविष्टहुव ॥
दिन्नैं भजाइ पुनि गंजि दल पुनिपुनि लग्गे आइ पँर ॥
बिलुरन गयो न कल्ल्यान वय धकि घुम्मत दिल्लीस घर ।१९।
जिम आयउ जगमाल हम्म १८३।१ भूपति दुहिताहित ॥
कल्लहु तिम इककाल अप्प स्नोनिय पठाइ इत ॥
घेरापर रचि घात पटकि रतिवाह पाइपथ ॥
सावनतीज ३ निसीथैं अप्प आयउ बुंदी अथ ॥
लै तियहिँ जाइ सुमियान लँहु किंकर नापित छ्लसकरि ॥
खग्गन सु कल्ल तिलतिल खिरयो जिम हड्डी गय संग जरि।२०।

दोहा ॥

सूनु सिकंदर २८ साहको, जेठे १ अनुज जलाल १ ॥
अवके रनहो मुख्य यह, सेनाविच रिपुसाल ॥ २१ ॥
सजल १ भुम्मि सुमियानढिग, ऊसर निर्जल २ ओर ॥
दिल्लीदल जलविनु दहैं, घेरारचि दुखघोर ॥२२॥
नापितहो जु नरेसको, संवाहक सविसास ॥
किल्लापति वह कल्ल किय, जानि धर्ममति जास ॥ २३ ॥

अपनी १ वहिन ॥१८॥ उस समय२कल्याणसिंह. यवनों की३सेना से४घिरेहुए गढ से निकल कर५कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे साहस को वढाकर. सालेके६घर में७शत्रु ॥१९॥ राजा हामा की ८ पुत्री के लिये. अपनी९पत्नी को१०आधीरात को११शीघ्र१२नाई के छ्लेप से ॥२०॥२१॥२२॥ १३ अङ्ग मर्दन करनेवाला १४ कल्याणसिंह ने ॥ २३ ॥

किल्ला सुहि तिहिँ दैनकहि, महुर छप्पि फरमान ॥
खल नापित भेद्यो खलन, प्रबलन छलन प्रधान ॥ २४ ॥
नापित अधम निसीथ निस, सत्रुन गढ पविसाइ ॥
स्वामि कटाइ कृतघ्न सठ, पीछैँ फल लियपाइ ॥२५॥
बंधि कुतुपे बारूदके, जवनन भुंज्यो जोहु ॥
कल्ल महिप हनि मिच्छकुल, सतिय बस्यो दिव सोहु ॥२६॥
जीवनलग निजजामिकोँ, नगर बरोदा नाम ॥
नृप नारायनदास १८७१२दिय, आय वृद्धि अभिराम ॥ २७ ॥
सिखरबंध श्रीहरिसदन, मदनकुमरि १८७१३जा माँहिँ ॥
बिरचि बरोदा किय बिदित, अवहु नाम तस आँहिँ ॥ २८ ॥
कल्लमरन भावीकथा, वर्तमान अब वत्त ॥
परिनाये बुंदीस पुनि, अनुज उभय २ अनुरत्त ॥ २९ ॥
अखैराज कछवाहकी, कनी समर्थकुमारि १८७१ ॥
परिनायो भूपति प्रथम, नरवद १८७१२ सदय निहारि ॥ ३० ॥
हरि जद्दव तनया बहुरि, सुगुलकुमारि १८७१२ सनाम ॥
परिनायउ नरवद १८७१२ सु पहु, इम द्वै २ ही उपयाम ॥ ३१ ॥
कनी स्याम सीसोदकी, वल्लभकुमरि १८७११ बिबाहि ॥
किय इक१व्याह नृसिंह१८७१२को,नृप हित सहित निबाहि।३२।
अधिक नसा अहिफेनको, नृप नारायनदास १८७१ ॥
क्रम बढिबढि लग्गो करन, त्वरितै भयो बस तास ॥ ३३ ॥
अतिअफीम करि अंगतैं, बिनस्यो दर्पक बोध ॥
परिगो चिरहिँ प्रसूतिको, रानिनकै इम रोधं ॥ ३४ ॥

उस नाई को १ फोड़ कर अपने में मिला लिया ॥ २४ ॥ २५ ॥ बारूद के २ पीपे से बांध कर ३ स्त्री सहित ४ स्वर्ग में ॥२६॥ अपनी ५ बहिन को ॥ २७ ॥ ६ विष्णु भगवान् का मन्दिर ७ है ॥२८॥२९॥ ८ कन्या ॥३०॥ ९ विवाह ॥३१॥ ॥ ३२ ॥ १०मद ११अमल का १२शीघ्र उस नशे के आधीन होगया ॥ ३३ ॥ १३कामदेव का ज्ञान १४बहुत समय तक १५बालक जनने का १६रोक ॥३४ ॥

संतति न हुव नृसिंह १८७१३ कैं, निज प्रारब्ध निदान ॥
नलयो[1] जिहिं भूभाग निज, मन संतुष्ट प्रमान ॥ ३५ ॥
निवसथ[2] इक नृसिंह १८७१३ नैं, नव्य[3] रचिय निजनाम ॥
पट्टनि प्रांत नृसिंहपुर, अवहु विदित अभिराम ॥ ३६ ॥
नरबद १८७१२ कौं भूभाग नृप, दिय माटुंदा ढंग ॥
ताके संतति पंच ५ तिम, प्रकटिय वैसर[4] प्रसंग ॥ ३७ ॥

षट्पात् ॥

भये अर्जुन१८८१ रु भीम१८८१२ उभय२ कछवाही औरस ॥
कन्या कर्मवती१८८१ रु पूर१८८१३ सुक्कल१८८१४जाहिरजस ॥
भगिनी इक१ दुव२भ्रात त्रिक३हि जह्वोनि जन्यौं तिम ॥
नृप पहिलैं नारबद[5] प्रजा[6] पंचक ५ उपज्यो इम ॥
हड्डेस रान संग्राम हित कर्मवति१८८१२ सु ब्याही कुमरि ॥
याकेहि प्रसव[7] विक्रम१ उदय२कुमर भये लघुकाल[8] करि ।३८।

दोहा ॥

कुमर धना१ रट्ठोरिकैं, भोज१ रतन२ दुव२ भ्रात ॥
इनपीछैं विक्रम३ उदय४, जुगल२ कर्मवति२ जात ॥ ३९ ॥
व्याह्यो भोज१कुमार बलि, मीरौं[9] मेरतनी सु ॥
कुमरपनहि पति मृत्युकरि, विभुं[10]हरिभक्त बनी सु ॥ ४० ॥
तकि इक्क१ संबंध तिक३, चहि बुंदिय१ चित्तोर२ ॥
नारायन१ संग्राम२ नृप, इक१ मन दुरतन दुरओर ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

अग्रजंजा[11] पति१ एंह[12] प्रथित वह२ अनुजसुतापति२ ॥

१ भूमि का बंट नहीं लिया ॥ ३५ ॥ २ ग्राम ३ नवीन ॥३६॥ ४ समय पर ॥३७॥ ५ नरबद की ६ सन्तान ७ विक्रमादित्य और उदयसिंह इसके ही हुए ८थोड़े समय में ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ९ मीरां बाई नामक मेड़तनी को १० व्यापक विष्णु भगवान् की ॥ ४० ॥ ४१॥ ११बडे भाई की पुत्री का पति १२नारायणदास

जुग२हि स्वसुर२ जामात[1]२ मन्नि इतरेतर[2] सम्मति ॥
हालीबर[3]१इत१ हड्ड१बहुरि उत२ रान२ कुलीबर[4]२ ॥
सगपन त्रय३ सम्मेल१ तिमहि मनमेल२ अधिकतर[5] ॥
सीसोद१ गिनत बुंदिय२ सदन[6] हड्ड१ तिमहि चित्तोर२ चहि ॥
आह्वान[7]बिनुहु[8] आवत उभय२ गदितरीति[9] ऐकत्व१ गहि ॥४२॥
सुरभि[10]समय संग्राम कबहु बुंदिय आगमकिय ॥
तत्थ विसद[11] मधुतीज[12]३ महिप दोउ२न महमंडिय[13] ॥
दियउ पातुरिन द्रविन[14] अयुतं इक१००००इक१००००इतरेतर[15]॥
आयउ ढक्कुव[16] अत्थ[17] सभा सकलहि उट्ठिय अर[18] ॥
उठ्यो न भूप[19] पललागि इहाँ तकि ढक्कुव अपमान तँहँ ॥
भनि मृतक[20] नर्म[21] किय रानभट तिहिँ दव्विय खिजि रान तँहँ ॥४३॥
मानतँहँ१ रानतँहँ२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

चेतत पुनि निजकवि चविय[22], नृप[23] ढक्कुव कटु नर्म॥
भ्रात[24]समहु अरितम[25] भनिय, बनिय अप्प जयवर्म[26] ॥ ४४ ॥
नारायन१८७१ अक्खिय निजहु, भ्रात नजानत भाव ॥
विनाससमय बल बाहुजन[27], दुरयोरहत खय दाव[28] ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

और नारायणदास के छोटे भाई की पुत्री का पति प्रसिद्ध संग्रामसिंह,इस प्रकार दोनों ससुरा और १ जमाई २ परस्पर ३ साली का पति तो हाडा नारायणदास और उधर ४ बडसालू (स्त्री की बडीबहिन) का पति महाराणा सांगा ५अत्यन्त. बुन्दी को अपना ६घर जानते हैं. विना ७बुलाये ही ८कही हुई रीति से ९ एकता ग्रहण करके ॥४२॥ १० वसन्त ऋतु में ११ शुक्लपक्ष १२ चैत्र मास १३ उत्सव १४ धन१५परस्पर१६मेवाड़ के उमराव कोठारिया के पति पूरबिया चहुवाण का नाम है१७यहां१८शीघ्र१९राजा नारायणदास क्या२०मरगया? यह कह कर२१हँसी की॥४३॥२२कहा २३राजा को २४ भाई के समान है तो भी २५ अत्यन्त शत्रु के समान कहा. आप २६ विजय का कवच पहननेवाला बना ॥ ४४ ॥ २७क्षत्रियों का २८अग्नि ॥ ४५ ॥

सठ ढक्कुव सोहुसुनि वदिय जो तुम वैसंदर[1] ॥
सहितसभा पैंट[2] सवन अंग किनकरहु भस्म अर[3] ॥
रान जानि इम विरस सुंदि उट्ठि रु ढक्कूसुख ॥
सिविर दई तिहिं सिक्ख रक्खि भट संग प्रवलरुख ॥
सोदा[4] रच्यो जु सिल्लहनसुकवि काव्य विरुद पुनि श्रवनकिय॥
ताकँहँ प्रसन्न कुंदीस तव हुव[5]सासनैइकलक्ख१०००००दियो॥४६॥
सत्तलसुत सामोर धीर कुंदीस वृत्तिधर[6] ॥
रानविलक्खन रचिय हड्ड अनुमँत[7] लोहठहर ॥
दिय सुनाइ चोत्थि[8] दिन सोहु कविता सीसोदहिं ॥
जुगा२ सासन लक्खजुग२००००० रानदिय मन्नि प्रमोदहिं ॥
लग्गो न लेन जिन्ह धीर जव पिक्खि विमर्न चित्तोरपति ॥
संकुचि निहोरि भाखत सुपहु मन्निय निट्ठि उदारमति ॥४७॥
तदनंतर चित्तोर नृपहु गय यह नारायन १८७११ ॥
मिले उभय २ महिपाल करन मिच्छन कारायन[9] ॥
सढ्ढु[10] पुन संबंध मिथँहि[11] स्वसुर २ रु जामाई ३ ॥
रानी इन[12] रहोरि प्रचुर[13] महिमानि पठाई ॥
दिनइक्क रान संसँद[14] सदन भद्रासँन[15] थित भूप दुव २ ॥
कुंदीस तत्थ अहिफेंनवस[16] मैंचि[17] पलन हिंडोलुहुव[18] ॥४८॥

दोहा ॥

पूरविया[19] कुट्ठारपति, वह ढक्कू चहुवान ॥

---

१ अग्नि हो तो २ वस्त्र ३ शीघ्र ४ सोदा शाखा के चारण सिल्हण ने ५ उदक ग्राम ॥ ४६ ॥ धीर नामक सामोर शाखा के चारण बुन्दी के ६ पोलपात्र ने. हाड़ा की ७ सलाह से ८ उदास ॥ ४७ ॥ म्लेच्छों को ९ कैद करने के लिये १० साढू (स्त्री की बहिन का पति) पन के सम्बन्ध से ११ परस्पर १२ इस कारण १३ बहुत. महाराणा की १४ सभा में १५ सिंहासन (गादी) पर १६ अमल के वश होकर १७ नेत्र बन्द करके १८ झोका खाने लगा ॥४८॥ १९ पूरबिया शाखा का चहुवाण कोठारिया नामक

चिंततभो नृपकोबचन, करि रस बिरस कथान ॥ ४९ ॥
तबसु बहुकरी[2] केर तृन, मंगि फरासन मूढ ॥
पिहित गयो नृपपिट्ठिपैं, गदि अग्गिन[3] कहुँ गूढ ॥ ५० ॥
प्रभुँ[4] मामक कुल परपुरुख, उहाँ भानुअभिधान ॥
बरज्यो सठ ढक्कू बहुत, सो न रुक्यो अवसान ॥ ५१ ॥
तब रानहु ताकौं तरजि, उठ्यो अटकन[6] अप्प ॥
जोलौं तिहिँ ढिगजातही, दिय सिर तृन अँतिदप्प ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

बरजनके सुनि बचन हुहु मन सावधानहुव ॥
पैं करि कपट प्रमाद अधिक उंधिय सुभांड १८६।१ सुव ॥
बैठि पिट्ठि इहिँबीच सत्रु तृनकुंच धरयो सिर ॥
बुल्ल्यो को यह बन्हि कांडँ इक्क १ हु जरैं न किरैं ॥
मैंचेहिहगन ढिग तुल्लिमन उलटेकरदिय भ्मारि असि ॥
वसु ८ खंड कट्टि चहुवानबपु धारा कछु गय थंभ धसि ।५३।

दोहा ॥

अँचे दुवं २ पक्खिन असिनैं[12], रान पिधांन[13] कराइ ॥
कहिय अँनय[14] ढक्कहिकिय, पाप फलहु लिय पाइ ॥ ५४ ॥
बन्यौं सभा रस १ मैं बिरस२, परि हित१माँहिं प्रतीपैं[15] २ ॥
पिसुँन[16] नैर कुट्ठाँरपति[17], मारयो इम सु महीपँ[18] ॥ ५५ ॥

ठिकाने का पति १ कथा ॥ ४९ ॥ २ बुहारी (मार्जनी) के तृण. इस राजा में छिपाहुआ ३अग्नि कहते हैं सो अग्नि होवेगा तो ये तृण जल जावेंगे यह कहकर छिपकर पीठ पर गया ॥ ५० ॥ ४ हे प्रभु रामसिंह! मेरे कुल का ५ अन्त में ॥ ५१ ॥ ६ रोकने के लिये ७ अत्यन्त घमण्ड से ॥ ५२ ॥८ तृणों का कूंचा (समूह). यह कैसा ९ अग्नि है कि जिससे निश्चय ही १० एक तृण भी नहीं जलता.११किल (निश्चय ही) ॥५३॥ दोनों पक्षवालों ने १२तलवारें खैंचीं. महाराणा ने १३ म्यान करा दीं १४ अनीति ॥ ५४ ॥ १५उलटा (विरोध) १६ चुगल १७कोठारिया नगर का पति. बुन्दी के१८राजा नारायणदास ने ॥५५॥

परि उकुरू[1]की पिंडुरिन, खग्ग अठ् ८ अरिखंड ॥
किय धरके जुग २ द्वै २ करन, चउ ४ चरनन इम चंड ॥ ५६ ॥
आवनलग्गो रुठि यह, नारायन १८७१ अवनीस ॥
हत्थजोरि रक्ख्यो हठन, रान समावतरीस[2] ॥ ५७ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृपहिं रक्खि बहुदिनन करत मृगया[3]दिक क्रीड़न ॥
विविध गोठि व्यंजनन असनसह होत सई[4]ड़न ॥
विजन[5] भूप दुव २ बैठि मंत्र इकदिन इम मंडिय ॥
पच्छिम १ दक्खिन २ पहुन[6] खलन अज्जन[7] मदखंडिय ॥
बदि तृनसमान दिल्लीसबल जुग २ हि साह लग्गे बजन ॥
प्रतिअब्द[8] लेत लक्खनप्र[9]मित धरहिं भेट कंवलौं सु धन ॥ ५८ ॥
इक्के वीर अनेक रहत जिनके जयरक्खन ॥
प्रतिहायन[10] प्रतिपा[11]नि लेत वेतन[12] बहु लक्खन ॥
सत१००सर[13] चउ४चउ४सरधि[14] धनुख त्रय३त्रय३जे धारत ॥
त्रय ३ गोलिन अंतरहु वेधि परबलहिं[15] बिडारत ॥
कैसो उपाय रोकन करहिं जाइ जवन परिभूत[16] जिम ॥
अज्जन[17] प्रजाहु लुट्टत अटत[18] पत्रिनरन[19] पारथ[20] प्रतिम[21] ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

हडकाहिय बुल्लहु हमहिं, सासन अलस सहाय ॥

१ऊकडू(दोनों पगों के बल बैठने को मरुभाषा में ऊकडू बैठना कहते हैं)बैठे हुए की पींडियों पर पड़ कर ॥ ५६ ॥ २ क्रोध को शांत करता हुआ ॥ ५७ ॥ ३ शिकार आदि ४ स्तुति सहित ५ एकान्त में ६ राजाओं के ७ आर्यों के ८ सालाना ९ लाखों के प्रमाण से ॥ ५८ ॥ १० सालाना ११ एक एक भुज प्रति अर्थात् दोनों भुजों के दो लाख रुपये १२ तनख्वाह लेते हैं. सौ सौ १३ तीरों के चार चार १४ भाथे और तीन तीन धनुष धारण करते हैं १५ शत्रुओं की सेना को. बिखेर देते हैं १६ अनादर के साथ १७ आर्य प्रजा को लूटते १८ फिरते हैं १९ बाणों के युद्ध में २० अर्जुन के २१ सदृश हैं ॥ ५९ ॥

किर करिहैं कछुरीति करि, इक्के जय्येन उपाय ॥ ६० ॥
दोउरन किय यह मंत हठ, रहि कछुदिन अनुरत्त ॥
करि सगोत्र डक्कू कदैंन, पहुँ बुंदिय इम पत्त ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहु १ मद्धीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराजास्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरविख्यापनीयहड्डकुलकोटीरबुन्दीवसुधेश्वरनारायणदास१८७१ चरित्रे संहृतलल्लनामयवनप्रवीररणाराजमल्लज्येष्ठकुमारोड्डपनपृथ्वीराजटोडापुरपुनश्चालुक्यकुलायत्तीकरण १, विजितशिवपुरीनरेशनिजजामिजानिमोचिततद्दत्तभगिनीकष्टविद्यमानवप्तृकप्राप्तयौवनकुमारपृथ्वीराजतनुत्यजन २, निपातितनिजाग्रजराणासंग्रामसिंहपितृपट्टप्रापण ३, परिणीतशैपोदी १ प्रभृतिपत्नीचतुष्क ४ स्वीकृतैक १ भुजिष्यनरेन्द्रनारायणदास १८७१ स्वभगिनीमदनकुमारी १८७१ तिरस्कृतदिल्लीशसमाक्रान्तसुमियाणदुर्गराष्ट्रकूटराजकल्याणकरग्रहण ४, श्वाशुर्यनिवे

१ निश्चय ही २ विजय करने का ॥ ६० ॥ ३ प्रीति सहित. अपने गोत्रवाले डक्कू का ४ नाश करके ५ राजा ६ पहुँचा ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चार हाथवाले (चहुवाण) के वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य हाडा कुल के मुकुट बुन्दीन्द्र भूपति नारायणदास के चरित्र में लल्ल नामक यवन का नाश करके बडे वीर राणा रायमल्ल के ज्येष्ठ कुमर उडणा पृथ्वीराज का टोडापुर को फिर सोलंखियों के कुल के आधीन करना, सिरोही के राजा को जीतकर अपनी बहिन के पति के दियेहुए दुःख से बहिन को छुडाकर पिता की विद्यमानता में यौवन प्राप्त होकर कुमर पृथ्वीराज का शरीर छोडना, बडे भाई को मारकर राणा संग्रामसिंह का पिता का पाट प्राप्त करना, सीसोदिनी आदि चार स्त्रियों से विवाह करके एक पासवान करके नरेन्द्र नारायणदास का अपनी बहिन मदनकुमारी का दिल्ली के बादशाह का अनादर करनेवाले सुमियाणा गढ को दबानेवाले राठोड़राज कल्याण से विवाह करना, ससुराल में दो लाख रुपये त्याग में देकर हठ के साथ स्त्री सहित घर में आ

शनवितीर्णद्रम्मलक्षद्वय २००००० समग्रसभसपत्नीकसमागतपुनः पुनःपराजितयवनानीकविप्लावितदिल्लीशकमध्वजनरेशकल्याणप्रतीपीभूतस्वसंवाहकनापितदुर्गप्रवेशितपरपृतनाप्रधनसहगामिनीसहितप्रकृतमहाप्रयाण ५, बुन्दीशनिजानुजनरबद १८७।१ कौर्मी १ यादवी २ दयिताद्वय २ नृसिंह १८७।३ शैषोदी १ पत्न्येक १ परिणायन ६, वर्द्धितातिमात्रसमभ्यस्ताऽहिफेनवशीभूततन्मदमत्तमनरकनरेन्द्रसन्ततिसंरोधचिरसम्भवन ७, विधिवशालब्धसन्तानानङ्गीकृतवसुधाविभागनृपाऽनुजनृसिंह १८७।३ निजनाम्नव्यनिवसथनिर्माण ८, सुधागप्राप्तमाटुन्दाख्यनगरनरबद १८७।२ दयिताद्वय २ सञ्जातसुतैक १ सहिताऽर्जुना १८८।१ दिसुतचतुष्क ४ समुद्भवन ९, नरेन्द्रनारायणदास १८७।१ स्वानुजनरबद १८७।२ सुताकर्मवती १८८।१ चित्रकूटेशराणासंग्रामसिंहपरिणायन १०, राणौरसधानेय भोज १ रत्न २ कार्मवतेयविक्रमो १ दय २ कुमारचतुष्क ४ समुद्भवन ११, जीवज्जनकज्येष्ठकुमार भोज १ मरणानन्तरतत्पत्नी

कर यवन सेना का वारम्वार जीतकर दिल्ली के बादशाह के उपद्रव करनेवाले राठोड़ नरेश कल्याण का शत्रु बने हुए अपने शरीर के मालिस करनेवाले नाई से गढ में प्रवेश कराई हुई शत्रु सेना के साथ युद्ध करके अपने साथ गमन करनेवाली स्त्री सहित शरीर छोडना, बुन्दीश का अपने छोटे भाई नरबद का कछवाही और यादवी दो स्त्रियों से और नृसिंह का एक स्त्री शीषोदिनी से विवाह करना, अत्यन्त मात्रा बढजाने के अभ्यास से अमल के वशीभूत उसके नशे में मत्त मनवाले राजा के सन्तान का बहुत समय तक रुकना, दैव वश से सन्तान न पाकर, पृथ्वी के विभाग को न लेकर राजा के छोटे भाई नृसिंह का अपने नाम से नवीन ग्राम बसाना, पृथ्वी के पंट में माटूंदा नामक नगर पानेवाले नरबद के दो स्त्रियों से एक पुत्री के साथ अर्जुन आदि चार पुत्रों का होना, नरेन्द्र नारायणदास का अपने छोटे भाई नरबद की पुत्री कर्मवती को चित्तोड़ के पति राणा संग्रामसिंह को व्याहना, राणा के धना के उदर से भोज और रत्नसिंह तथा कर्मवती के उदर से विक्रमादित्य और उदयसिंह इन चार औरस कुमरों का जन्म होना, पिता के जीवित समय में ही बड़े कुमार भोज के मरे पीछे उसकी स्त्री राठोड़ी मीरां का जीवन पर्यन्त

राष्ट्रकूटीमीराँयावज्जीवहरिभक्तिसमासादन १२, नरेन्द्रनारायणदास १ राणासंग्रामसिंह २ सम्बन्धत्रय ३ स्निग्धस्वान्तैक्य १ परस्परप्रीतिप्रकटन १३, सुरभिसमयबुन्दीसमागतसभासमुपविष्टदत्त द्वि १ पक्षपणस्त्रीगणार्थद्रव्यायुत१००'०० राणास्वकीयभटढक्कूकृतबुन्दीशाहिफेनप्रमादद्दुर्वचनवारण १४, श्रुतस्वगर्हणासावधान सूचिताकाण्डक्षात्रसत्वकालाग्निगोपनौचित्यबुंदीशविल्हणार्थमुद्रालक्ष १००००० शासनोपवसथद्वय २ विश्राणन १५, प्रसभप्रतारणाप्टतनाप्रपातप्रेषितस्तब्धताप्रागल्भ्यकुत्सकतावमतबुन्दीशबलवैश्वानरत्वस्वशठभटढक्कूकराणाद्वितीय २ दिनावसरबुन्दीश-कविधीरार्थसमुद्रालक्षयुग २००००० शासनयुग२ सप्रसभसमर्पण १६, स्नेहोत्कर्षसोत्कण्ठचित्रकूटप्रयातप्राप्तज्येष्ठश्वश्रूप्रेष्यसमज्यासङ्गतविभक्तार्द्धभद्रविष्टरोपविष्टसौभाण्डिकृपाणप्रत्यक्प्रहारस्वमूर्द्धखटक्षेपकढक्कूचाहुवाणवपुरष्ट ८ धाकर्तन १७, प्रव्हताप्रतिनिवर्तितकियत्कालकृतनिवाससमर्थितराणारहस्यस्वीकृतसमयसहाय

ईश्वर भक्ति ग्रहण करना, राजा नारायणदास और राणा संग्रामसिंह का तीन सम्बन्धों के कारण स्निग्ध मन से एकता करके परस्पर प्रीति प्रकट करना, वसन्त समय में बुन्दी में आ, सभा में बैठकर दोनों पक्ष की ओर से वेश्याओं को दश दश हजार रुपये देने पर राणा का अपने उमराव ढक्कू के किये हुए बुन्दीश की अमल के नशे की असावधानी के दुर्वचनों को मिटाना, अपनी निन्दा सुनकर सावधान हुए विना समय क्षत्रियों के पराक्रम रूपी कालाग्नि को छिपाना उचित सूचित करके बुन्दीश का विल्हण नामक चारण के अर्थ एक लाख रुपये और दो गाम उदक देना, घमंड की प्रबलता से बुन्दीश के बलरूपी अग्नि की निन्दा करके अवज्ञा करनेवाले अपने उमराव मूर्ख ढक्कू को बलत्कार से ताड़ना करके डेरे भेजकर राणा का दूसरे दिन बुन्दीश के कवि धीर नामक चारण के अर्थ दो लाख रुपयों के साथ दो उदक ग्राम हठ पूर्वक देना, बडे स्नेह से उत्कण्ठा सहित चित्तोड़ में जाकर बडसासू की भेजी हुई सहिमानी पाकर सभा में आयेहुए आधे आसन पर बैठेहुए सुभाण्ड के पुत्र का तलवार के उलटे प्रहार से अपने मस्तक पर तृण रखने वाले ढक्कू चहुवाण के शरीर के आठ टुकड़े करना, नम्रता से निवर्तन हुए

नरनाथनारायणदास १८७।१ बुन्द्यागमनं १८ पञ्चविंशो २५ मयूखः ॥ १२५ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पैसे नव ९ मित लेत पहु, फैलरोधक अहिफेन ॥
जाकेजय निकस्यो विजित, स्मैर पुरतैं सहसेन ॥ १ ॥
बाढ जदपि नृप कायबल, अतिवल तदपि अफीम ॥
रक्ख्यो श्रम आहारपैं, स्मर नट्ठो तजि सीम ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

अच्छोर्टन दिनइक्क १ हड्डनृप रमि इक्कल १ हय ॥
आवत पुर अति अमल मिचेनैंनन प्रमादमय ॥
इक धूँसरितिय अँध्व कछुक गिनिसुप्त नर्मकिय ॥
कर तल आयस कुस सु लोलहय फैंकि छिन्निलिय ॥
गहि हुत नमाइ ताकेहि गल करि डारी नृप कुंडली ॥
गुरु निगॅड़ तुल्य भैर वस सु गृह चिर विश्रमिविश्रमि चली ॥

दोहा ॥

कंठीरव गहि बसकरन १, सिंधुर रोकन २ सीम ॥

कुछ समय निवास करके राणा की सलाह का समर्थन करके समय पर सहाय करने का स्वीकार करके राजा नारायणदास के बुन्दी आने का २५ वां मयूख समाप्त हुआ ॥ २५ ॥ और आदि से १७२ मयूख हुए ॥

१ नौ पैसे भर २ संतान रूपी फल को रोकनेवाला ३अमल ४कामदेव, शरीर रूपी पुर से सेना सहित निकलगया ॥ १ ॥ ५ शरीर का बल ६ तो भी ७ अ गा ॥ २ ॥ ८ शिकार ९ धूसर जाति की स्त्री ने १० मार्ग में ११ हँसी की १२ लोहे की १३ कुस(भूमि आदि खोदने का शस्त्र)१४चपल घोड़े को १५पड़े बंधन (तोख) के बराबर के१६भार से१७बहुत ठहर ठहर कर; अथवा बहुत श्रम से विश्राम करके ॥ ३ ॥ १८ सिंह को १९हाथी को

इहिं अमलहु नृपबल अतुल, भूतल मल्लन भीम[1] ॥ ४ ॥
इत धूसर निजनारि वह, कछु निगड़ित[2] करिती न ॥
लखि सालस[3] गृहकर्म लहु[4], आनी न्यायअधीन ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

चाक्रिक[5] बिन्नति चविय कहत मसतिय नृप यहकिय ॥
सदन कृत्य तासोंहि दार[6] कीलित बनि तजिदिय ॥
द्वै २ हि मनुज हम सदन सिद्धि किम होवें इक १ सन ॥
उचित अनुग्रह इक्खि पुब्बजिम करहु करुनपन ॥
सुनि नृप सु कहि तस कंठ सन कुस हो जिम तिम सरल[9] करि
तिन्ह सौंपि कहिय तव मूढतिय पापसहिय मम हास्यपरि ॥६॥

॥ दोहा ॥

बुंदीपति प्रति[10] द्यस बढि, इम अहिफेन अधीन ॥
सतत[11] मुंदि दृग सन्निसुख, लग्गो उंघन लीन ॥ ७ ॥

षट्पात्

पौसमास ऋतु मसल[12] अधिप रजनी इक अंतर ॥
सोवत जगि लघुसोच[13] करनबैठो वसुधावर[14] ॥
उंघत लगि पल अप्प तत्थ[15] रहिगो प्रभाततक ॥
रही खरी रखोरि गहैं तवलों भृंगारक[16] ॥
याकोहि हुतो बासक[17] उहाँ सीत १ बात २ परिभव[18] सहत ॥
कंपत लखी सु नृप उट्ठिकैं वपु झीनी[19] सारी बहत ॥ ८ ॥

दोहा ॥

कर १ पयर२ दुजीर२ बेरकरि, सलिल१ मृत्तिका२ सुद्ध ॥

---

१ भयङ्कर ॥४॥ २ गले में बंधन होने के कारण ३ आलस्य सहित ४ शीघ्र लाया ॥५॥ ५ उस तेली ने ६ स्त्री ने कैदी बनकर ७ घर में दखल, उस कंठ में डालीहुई कुस को ९ सीधी करदी ॥ ६ ॥ १० प्रतिदिन ११ निरन्तर ॥ ७ ॥ १२ हेमंत ऋतु में १३ लघुशंका करने को बैठा १४ राजा १५ तहाँ १६ स्वर्ण रचित जलपात्र (सोने की झारी) १७ बारी १८ दुःख १९ बारीक साड़ी ओढे ॥ ८ ॥

रानीप्रति नृप उच्चरिय, यह संकोच *अबुद्ध ॥ ९ ॥
किन चेतायों मौंहि कहि१, सेई किन हसनीं२ हु ॥
किन वुल्ली परिचारिका३, भुग्गि हिमानी भींहु ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

भाव परम पति भजन१ लानि तनु निजहु न तक्कत२ ॥
लंगि कहिय महिपाल मननबिनु रीझ धरैं मत ॥
जोरि तबहि कर जकुट२ प्रनत रझोरि पयंपिय ॥
ममकर लेहु अफीम देयं जो यह सबहीदिय ॥
आरंभि सु दिन नृपहित अमल रानी खेत् १८७१३ कररहैं ॥
तिलतिल घटाइ बपु तत्त्वपर आनिय इहिं गौरव गहैं ॥ ११ ॥
नृपन रीति यह नियत अटन प्रायिकं अच्छोटनं ॥
इकदिन कोलन ओघ बाजिदिय पिट्ठि महावन ॥
अप्पहु सूकर इक्क छेकि कोसन मार्यो छमैं ॥
इतनें मो अहिफेनकाल काढि मालें अतिक्रमें ॥
खैंचत तुरंग तंगहिं उतरि पच्छिम गत रवि दृग परयो ॥
आसन उतारि तरु कूकरें तर सयन विकल नृप अनुसरयो॥१२॥
कूकरछाँह तनु कढि रु परत आतपं नृपमुखपर ॥
काढि इक अँहि तँहँ करिय छत्र फनछाँहँ छत्रधर ॥
सहसां छाँहँप्रसंग नैंन नृप खुल्लि निहारयो ॥
भुजगकाल तब भजत धीर करगहि दृढ धारयो ॥
चढिकोप उरग करें चंपतहि दृढदहन भूपहिं डस्यो ॥
ततकाल जोस अहिफेन तिम वहु डक्कनं वपुमें वस्यो ॥ १३ ॥

*मूर्खता है १अँगीठी का सेवन क्यों नहीं किया (अँगीठी स क्यों नहीं तपा) २दासी को ३ अत्यन्त शीत का ४भय ॥ १० ॥ ५ सेवन करने में ६ रचा ७शरीर की ८ दोनों हाथ जोड़कर ९कहा १० जो आपको देना है तो ॥११॥ ११ विशेष करके १२शिकार १३सूअरों के समूह में१४समर्थ१५अमल का समय१६वन (पहाड़ी भूमि) के १७ उल्लंघन करने से १८ करील के वृक्ष नीचे ॥ १२ ॥ १९ धूप २० सर्प २१ अचानक २२ हाथ से दपाते ही २३ सर्प के डंकों से ॥ १३ ॥

पैसे इक१के प्रमित[1] अमल रानी पति आन्यौं ॥
दर्वीकरै[2] गरँ[3] द्वि२ गुन जोस बढतो मदँ[4] जान्यौं ॥
सरंधि[5] इक्क१ करि सून्य तीर अन्यत्र बंधि[6] तस ॥
कीलि[7] सु उरगँ[8] कलाप लग्यो हय चढन गतालस[9] ॥
आयुधिक१अनुगँ[10]२जोलौं आखिल जिमतिम पहुँचि चमूह जुरि ॥
सूकर लिवाइ मुरि इम सुपहु घरआयउ गैर[11] अमल घुरि ॥ १४॥
सिक्ख अप्पि निज सवन अप्प गो जव अवरोधन[12] ॥
हो वासकँ[13] रछोरिकोहि मन्नि सु अनर्थमन ॥
अमलसमय अतिवाँर[14] त्रसितँ[15] सव सुरनँ[16]मनावत ॥
तब पिक्खयो वह तोर अजिरँ[17] घुम्मत नृप आवत ॥
इहिँकहिय कोन मोबिलु अभय अज्ज प्रभुहिँ जिहिँ दिय अमल
नृपकहिय मिल इक मिलि निपुन द्वि२गुन दयो तुमदेत दँल[18] ।१५।
रुठि कहिय रछोरि मोहि भुल्लि रु को मित्र सु ॥
सरंधि[19] खुल्लि तब सर्प कस्यो कुट्टिमँ[20] चल चित्रसु ॥
लगिभय रानी लखत अमलतजिवे ढिगआन्यौं ॥
हसि ससौँहँ[21] नृपकहत पुनिसु गर अभय प्रमान्यौं ॥
तिहिँ अमलँ[22] रत्ति[23]आधानँ[24] तिहिँ धरिय भाँवि[25] रविमल्ल१८८१ धनँ[26] ॥
पुनिहुव सु जोग अवसर प्रसवँ[27] जगि प्रमोद जनपँद[28] जनन।१६।

दोहा ॥

बिप्रन धन लक्खन वितँरि[29], महँ[30] किय अतुल महीप ॥

---

१ प्रमाण २ सर्प का ३ विष ४ नशा. एक ५भाथा खाली करके ६ कैद करके ७ सर्प को ८ भाथे में ९ आलस रहित होकर १० सेवक ११ विष के अमल से घुट कर ॥ १४ ॥ १२ जनाने में १३ वारी १४ उल्लंघन १५ डरतीहुई. सब १६देवताओं को मना रही थी १७ चौक में. तुम १८आधा देती थीं ॥१५॥ १९ भाथे से खोलकर २० भीत पर २१ सौगन सहित. उस २२नशे से २३रात्रि में २४ गर्भ २५ आगे होनेवाले सूर्यमल्ल का २६ स्त्री ने २७जन्म २८ देश के मनुष्यों को ॥ १६ ॥ २९ देकर ३० उत्सव किया

बसु८ गुन घटत *अफीम विधि, दये कुमर कुलदीप ॥ १७ ॥

षट्पात् ॥

मुख्यकुमररविमल्ल १८८।१ अनुजहुव रायमल्ल १८८।२ इम ॥
लघु तास[1]न कल्लयानं १८८।३ त्रिक३हि रट्ठोरि प्रभव[2] तिम ॥
भुजिष्या[3] जु इक १ भनिय सहँस १ सत्तल २ द्वै २ तससुव ॥
पुत्र द्वि२विध इम पंच ५ हड्ड नृपकै प्रवीर हुव ॥
पट्टप कुमार तिनमैं प्रवल सिसुहि वेध्य सद्दैं सरन ॥
पहिलो१कि[4] पत्थ[5]२अवको१कि पुनि पित्थ[6]२कुमर यह धन्वि[7]पन।१८।
अति सिसुहो जव एह कुमर तव कबहु रुदित[8] किय ॥
रानी मंजन[9]करत दासिजन [10]स्तन काहूदिय ॥
अटकत रोदन आइ पुच्छि दासी सु प्रतारिय ॥
प्रसू[11] भ्रामि[12] सिसु पयन सु पय रुधिरांत[13] निसारिय ॥
अहिस्याम[14] गरल[15]मद जात[16] यह रुचिहु स्याम इम हास्यरहि ॥
माता लडाइ उरलाइ मम कारो[17] अतिगर[18] नाग[19] कहि ॥ १९ ॥
इत लोदी अफगान साह दिल्लीस सिकंदर १८ ॥
सक गुन हय तिथि १५७३ समय कियउ तिहिं हान कलेवर[20] ॥
अंगज इब्राहीम २९।१ वडो पट्टप हुव बय बल ॥
दुख निजभ्रातन दैन छिप्र[21] लग्गो सु भरयो छल ॥
जानैं जलाल २ अप्पन अनुज कीलित[22]करि मारयो कुगति ॥

---

*अमल के आठ गुना घटने पर अर्थात् नौ पैसे भर लेता था सो एक पैसे भर रहने पर ॥ १७ ॥ १ उससे छोटा २ उत्पन्न ३ पासवान ४ मानों पहिले समय का ५ अर्जुन ६ पृथ्वीराज ७ धनुषविद्या में ॥ १८ ॥ ८ रोया ९ स्नान करती थी १० स्तन से दूध पिला दिया ११माता ने. वालक के पैर पकड़कर १२ भ्रमाया सो वह दूध १३रुधिर है अन्त में जिसके वहां तक निकाल दिया१४काले सर्प के १५जहर के मद से१६जन्मा था इस कारण यह बालक भी श्यामरंगवाला हुआ यह हास्य की बात है. मेरा १७काला १८ अत्यन्त जहरीला १९सर्प कहकर ॥१९॥२०शरीर का २१शीघ्र २२कैद करके ॥२०॥

अरु भ्रात अलाउद्दीन३इक गो कावल भजि लखि दुगति॥२०॥

॥ दोहा ॥

कुल संतति तैमूर २२को, इत बावर अभिधान ॥
कावल जय तिहिँकाल करि, स्वबल भयो सुलतान ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

अंदजान १ पति अग्ग यहहि हुव जनक अनंतर ॥
दब्बि समरकंद १ पुनि बढ्यो स्वसिर जव बावर ३० ॥
भ्रातनविच परि भेद छोनि चातैं सब छुट्टिय ॥
पै बहुरिहु बलपाइ किन्न भुवबस रिपु कुट्टिय ॥
इम पुनि तातारी उजबकन समरकंद १ जब जित्तिलिय ॥
तब अंदजान१दल सज्जि तिहिँ कावल२दब्बि अधीनकिय॥२२॥

॥ दोहा ॥

अंदजान १ कावल २ उभय २, सासँत बावर ३० साह ॥
इब्राहीम २९।१ सु दुष्ट इत, हुव तब दिल्लियनाह ॥ २३ ॥
अधिकारी दुर्मन[३] अखिल, भये तास लहि भीति ॥
तिम टरिटरि बिस्वासतजि, पावत कहुँन प्रतीति ॥ २४ ॥
सारयो अनुज जलाल २ जब, द्रवित अलाउद्दीन ३ ॥
कावल बावर ३० साहको, लयो सरन भयलीन ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तहँ सूबा सुलतान खानदौलत अप्पन स्वतँ ॥
पठयो बावर ३० पास स्वीय पक्खिन लिखि सम्मत ॥
खानाँ भयउ खराब इहाँ लोदी अफगानन ॥
इब्राहीम २९।१ हिँ अखिल हमहु चाहत अब हानँन ॥
तुम प्रबल आइ इत सुख बितरि हितधरि सब संकटहरहु ॥
यह स्यार कनकगिरितैँ अलग करि दिल्लिय अप्पन करहु॥२६॥

॥२१॥पिता के१पीछे यह अंदजान नामक शहर का पति हुआ ॥२२॥२हुकूमत करता था ॥ २३ ॥ ३ उदास ॥ २४ ॥ ४ भगाहुआ ॥ २५ ॥ ५ पत्र६ घर ७ मारना, सुख ८देकर, इस गीदड़ को ९स्वर्ण के पर्वत से दूर करके

बाबर ३० तब इम बंचि खानदौलत*प्रेसित**खत ॥
आयउ जब तरि अटक हुलसि दिल्लियसिर हंकत ॥
सबदल पंद्रहसहँस १५००० ***तंत्र ताके कहियत तब ॥
जिंत्ति तदपि पंजाब सजब आयो नसात सब ॥
स्वकं[1] वयं[2] दुअग्गचालीस४२ समं[3] जुव्वन वय निजपुत्रजुत ॥
पहुँच्यो सु आनि पानीपथहि दव्वत दिल्लियदेस द्रुतं[4] ॥ २७ ॥
इब्राहीम२९१ अमीर बदलि तामाँहिँ मिले बहु ॥
दल खिलं[5] सहदिल्लीस लरन इततैं पहुँच्यो लहुं[6] ॥
पानीपथ भुव प्रधनं[7] भयउ चलि सस्त्र भयंकर ॥
हनि सुहि इब्राहीम २९१ विजय सासकहुव बाबर ३० ॥
लोदी रह्यो सु वसु[8]अब्दलग संवत ससि बसु तिथि१५८१समय ॥
तमूर३२ बंस प्रभुता बितत[9] अब दिल्लिय मुगलन उदय ॥ २८॥
पहिलैं गोरिन५ पाइ सुम्मि दिल्लिय बहु भुग्गिय॥
तिम खलजी२ कुल तुरक तुरक तुगलक३ इम उग्गिय ॥
सय्यद४ लोदि५न सहित साह बजिबजि नट्ठे सब ॥
दुलही दिल्लिय दुलह मन्नि मुगलद्दन आई अब ॥
जोलौं सु साह बैठो न जमि सूबा कछु पलटे सबल ॥
मालव अधीस१ गुज्जरंमहिप२[10] पाये दुव२ प्रतिभट[11] प्रबल ॥२९॥
बदल्यो दिल्लिय बेस पिक्खि गुज्जर१ मालव२ पति ॥
गंजत जिततित गढन बढे दिसदिस अति उन्नति ॥
वसु आब्दिक[12] कछुवरस चढयो चित्तौर भरन भनि ॥
अतिबल इक्के उभय२ बिदित पठये स्वामीवनि ॥
पहुँचे प्रवीर दुव२ रानपुर[13] विविध फैल१ बानाँ२ बहत ॥

*भेजाहुआ **पत्र ***आधीन १ अपनी २अवस्था ३वर्ष की ४ शीघ्र ॥२७॥ ५ बाकी की सेना के सहित ६ शीघ्र ७ युद्ध ८आठ वर्ष तक ९ बीतने पर ॥२८॥ १० गुजरात की राजा ११ शत्रु॥२९॥ १२ सालाना खिराज १३ चित्तोड़ में

करसंगि* अनय **इच्छित करत रान उर न मावत रहत ॥ ३० ॥

दोहा ॥

कहिरुप्पय इक्कतकरत, रक्खि स्वपाहुन रीति ॥
छन्न लिख्यो बुंदिय छदनें, आवहु लखहु अनीति ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

बलसह दलैं[3] वह बंचि सुपहु चितोर सिधारिय ॥
गंजन इक१इक१ गढन सूर इच्छित अनुसारिय ॥
मोहिल्ला[3]मगरी सु छेकि रानहु हितमैं छकि ॥
आयो सम्मुह अप्प तुरक इक्के२हु रह्यो तकि ॥
मिलि मग्गतैंहि आचेरि उचित प्रासादन गय रान१ पहु ॥
नृप२हुव प्रविष्टं[6] निज पटँनिलय वितरत रंकन बित्त बहु ॥३२॥
पठई कहि रानप्रति मत्त उद्धत दुव[9]मिच्छन ॥
हहुन बुल्लि सहाय अब कि देनन[10] करँ इच्छन ॥
[11]बलि चढाइ बहुबरस [12]बलिहु [13]चयकरन [14]विलंबहु ॥
[15]प्रधन सहेपरिहैं न बजत साहन जय [16]बंबहुं ॥
[17]अह अठ ८ अवधि कै सोचि अब कर [18]चल्योसु हंमकरकरहु१॥
यह जो न द्वार समुचित अटकि धन लुट्टहिं२ [19]कोसनें धरहु ॥३३॥
बुंदिय १ इत २ संबंध चउ ४ सु साहहु पहिचानत ॥
तुम सहाय कहि तदपि आन १ जानहु २ भ्रम आनत ॥

*अनीति**इच्छानुसार॥३०॥बुन्दी को छाने १पत्र लिखा॥३१॥ २पत्र३दसरावा पर सेना की हाजरी की जावे उसको मोहोला कहते हैं (इस नाम की मगरी हमने चित्तोड़ में नहीं देखी परन्तु सम्भव है कि उन दिनों में किसी टेकरी का नाम होवेगा. उचित ४ व्यवहार करके ५ महलों में ६ प्रवेश. अपने ७डेरों में. रङ्कों को बहुत धन ८देताहुआ ॥ ३२ ॥ ९ दोनों म्लेच्छों ने कहलाया क्या१०खिराज देने की इच्छा नहीं है?११खिराज१२फिर भी १३ इकट्ठा करने को१४ देरी करते हो सो १५युद्ध में १६विजय के नगारे बजते हुए तुमसे सहन नहीं होवेंगे ॥३३॥आठ१७दिनकी अवधि में १८ हमारे हाथ में दो१९खजाने नहीं धर सकोगे

पाहुन आतहु परत सतन सहँसन *व्यय संगत ॥
वसु ८ दिन जँहँ तुम बदत मास इक१ तँहँ हम मंगत ॥
इमरान कथन मिच्छन उफनि अक्खिय अठ्ठ८हि अवधि **अह॥
इक१मास अवधि तुम तो अबहि अटिअटिपुर लुट्टहिं असह।३४।
लुट्टत रंक लुकाइ हमहिं जो लेहु दगा हनि ॥
तोहु सुगति हम तकहिं तुमहिं कालहि ग्रसिहै तनि ॥
तँहँ पहुँच्यो नृप तद्दिन इत १ रु उत २ बाद रह्यो इम ॥
जुग २ घटिका निसजात तक्कि सगपन वरोध तिम ॥
रट्ठोरि धना कहियत कुली करि बहुधन जिहिं नाम क्रम ॥
लघुबहिनि पतिहिं पठयो ललित सब आतिथ्य सनेह सम।३५।
सर्पडसन भय संकि तज्यो रानिय अफीम तँहँ ॥
अमल त्रिगुन बढि अधिक जात मन बढि अटक्यो जँहँ ॥
पैसे त्रय ३ मित जदपि अमल रहिगो अधिपतिकै ॥
तंद्रित दृग मिलि तदपि मोहँ आवतहुव मतिकै ॥
चित्तोरराज रानिय निचिंत स्वागत आयउ पटसदन ॥
दीस्यो सु तबहु नृप मैंचिदृग १ बहुउंघत २ व्यादित बदनं ।३६।
नृपको यहहि निदेस आइ कोऊ खिंन उंघ न ॥
तो मुहिं तिमहिं बताइ जबहि चेताइदेहु जन ॥
सबनिदेस बस स्वजन मरन न करन भयमानत ॥
जिन अंतहपुरजनन जबहु जावन दिय जानत ॥
कोउन हरैंहिं तिनमैं कहिय किम इनबल इक्कन १ कंदन ॥
इन्ह राहलखत पहु रान इन्ह दृग१ खुलैन२ नमिलैं बदन ॥३७॥
यहहु लई सुनि अप्प होइ अवहितं तदनंतर ॥

---

* खरच ** दिन की ॥ ३४ ॥ १ सम्बन्ध जानकर जनाने से २ बडसासू ॥३५॥ ३ ऊंघ से ४अचेताई ५युक्त६ डेरों में ७फटाहुआ ८मुख ॥३६॥ ९आज्ञा. किसी१०समय११धीरी आवाज से१२नाश ॥३७॥१३सचेत होकर१४जिसपीछे

हसि बंडसरसू *पहितें सहित सब रक्खि मीतिपर ॥
पहु रूप्पय सतपंच ५०० उचित सोदर तिन्ह अप्पिय ॥
मिलि इक्कन २ पुनि गमन +थानसंसद मन थप्पिय ॥
निसरहत जाम१ अप्पहिं ÷नियत अक्खि जगावन अनुचरन ॥
करिचैन असन१ सुखसैन २ किय सूरधर्म रक्खत सरन ॥३८॥
रहतजाम१खिलरत्ति जग्गि१ सुचि २ करि संध्या ३ जप ४ ॥
बिबिध सद्धि ब्यायाम तुलन मल्लन असह्य तप ॥
मनछै ६ लोह मुद्गर१न उछटि हनि अंस उडावत ॥
बिबिध झंप दंड २ बहु ऐंचि अतिबल उफनावत ॥
सत्वरं कसाइ हय सजि सलह बिजय पट्ट बाहुन बिलसि ॥
मनअद्ध संगि अयमय महिप करझल्लिय सब हेति कसि३९
भटनरोकि प्रभुभाव नलिय इक १हु सहाय नय ॥
इक्कन २ उप्पर इक्क १ हड्ड हंकिय आरुहि हय ॥
उत निमाज १ सुखं उचित सद्धि ब्यायाम २ बनावत ॥
दूतन अक्खिय दोरि इक्क १ इक्कल१हय आवत ॥
सत्थके जवन लग्गे सजन तिन्ह निवारि अतिमद धरत ॥
इक१भयउ सज्ज तउ इक१अभय करत हो सु रहिगो करत॥४०॥
कछुक बिंब रवि कढत इक्क १ पिक्खिय नृपआवत ॥
कबहु कुब्जबपु १ कबहु लहरि हानैं सिर २लावत ॥
कहिय मिच्छ सिसु कोन इतसु मरिबे किमआवैं ॥
बदिय चरन बुंदीस उंघि इम अमल उगावैं ॥
तब जानि दम्म दैन१ न तकिय रान कुहक छल तकिय रन२॥

* भेजेहुए + सभा में ÷ निश्चय ॥ ३८ ॥ १ कसरत २ छः मन के तोल का ३ कन्धे की टक्कर देकर ४ शीघ्र. आधे मन की ५ लाङ (बरछी) ६लोहे की. सब ७ शस्त्र कसकर ॥ ३९ ॥ निमाज ८ आदि ॥ ४० ॥९ कुबड़ा शरीर. कभी झोला खाकर घोड़े के १० हाने पर मस्तक लगाकर ११ हलकारों ने कहा. १२रुपये देना नहीं चाहकर १३छली ने

पै इक१सवार आगम*प्रथन किम इम चिंतिय मिच्छमन।४१।
पहिचानिय दृगपरत निकट आवत नारायन १८७१ ॥
इक्का१ चढि +खिल अटकि ÷हुत्त हंक्किय मत्ते मन ॥
सोर१ नकीवन सुनत हेसर२ तानत सम्मुह हय ॥
पहुमन१ क्रुद्धरहु मकट१ भान३२ मंडिय तँहँ निर्भय ॥
क्यों आत मरन१ ताके कहत भनिय रान रुप्पय भरन२ ॥
विसिख१न कियौं कि सँगि२न वदहु रुचत विसिख तव कोनरन।४२।

भरन१नरन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गहिय मिच्छ तव सुगम कलह सुहि लेहु वारकरि ॥
प्रथमवार पाहुनन भूप अक्खिय साहसभरि ॥
तुरगफेंकि तव तुरक हहुउर कुंत प्रहारिय ॥
भिदि तनुत्र कछुभाग बाहु१ उर२ संधि बिदारिय ॥
मानहु अमाप अहिफेनमद होन चेत यह वारहुव ॥
सैंआत सम्हरि इमकहि सुदित सज्जिय संगि सुभांड१८८।४सुवं।४३।
सरसँव१ कर संग्रहिय हनन जनु क्रौंचं२ केकिंहय ॥
कै अमोघ कर करिय करन१ जनु आत घटुक्कयं२ ॥
जातु मनहु इंद्रजित१ पानि पकरिय लक्खन२पर ॥
पिथ्थ भट किं पुंडीर१ खंभ२ वेधन लिन्नी स्वर ॥

*युद्ध में +वार्कों के लोगों को रोककर ÷ होम होने को चला ॥ ४१ ॥ १ हींसना फैलाते हैं २ चेत हुआ ३ बाणों से वा ४ बर्छियों से ५ हे बिना शिखावाले (यवन) ॥ ४२ ॥ ६ कहा ७ भालों ८ कवच फूटकर ९ अमल के नशे में १० बर्छी उठाई॰ सुभाण्ड के ११ पुत्र ने ॥ ४३ ॥ १३ मानों १४ क्रौंच पर्वत का नाश करने को १५ मयूर के वाहनवाले १२ स्वामिकार्तिक ने बर्छी ग्रहण की. अथवा १६ घटोत्कच के आने पर कर्ण ने अमोघ शक्ति हाथ में ली॰ मानों राक्षस इन्द्रजित ने लक्ष्मण पर शक्ति हाथ में ली १८ किंवा १७ पृथ्वीराज के सामन्त पुण्डीर ने खम्भे को बेधने के लिये तीक्ष्ण शक्ति ली. इस प्रकार बुंदी के राजा नारायणदास ने गरुड़ के वेग से घोड़े को दौड़ाकर घोड़े के मलंग लेते

गहि संगि दपटि हयरय गरुड़ उडत फाल बाहिय उससि ॥
तस१उर२तुरंग१त्रिक२बेधि तिम निकसि बर्त्ति३गय धरनि धसि४४
असनि१ अटकि मिच्छउर अग्र२ इक१कर धर अंदर ॥
पैठत हय चउ४ पयन खरोरहिगो सह पक्खर ॥
अतिबल बाहत अस्व भयउ नृपकोहु भिन्नकटि ॥
अपर२ इक्क१ सवउज्झि लखत सहसत्थ गयो लटि ॥
तसतुरग सज्ज थित ठान तकि चढितिहिं नृप पुरसंचरिय ॥
बललखन रान परिगह बलिन अरिसन संगि न उद्धरिय॥ ४५ ॥
अरिहय नृप आरूढ आइ प्रतिरान कहाइय॥
इक्क१ अनसुकिय अपर२ जवन सवतंजि लैगोजिय ॥
अनसुंहु पिक्खन उचित सु चलि पिक्खहु परिगहसह ॥
सुनत चढिग सीसोद मचिग चित्तोर महामह ॥
तुरगहु तज्यो न सुनि आत तिहिं अब वल निजनिज जुत उभय२ ॥
मिलिचलिय चढत छ६घटिय मिहिर मिच्छलखन जय मोदमय।४६।
दूरहिंसन तिहिं देखि सहय ठह्यो रविकीरुख ॥
कहिय पिसुन ढकूज मरन आनैं अरिसम्मुख ॥
नृप सहसपंथ निराइ जथा प्रत्ययं लैगो जब
बंदिय वाह बुंदीस अभय तवभुजन करे अब ॥

समय उठाकर वर्छी चलाई जो इक्के के हृदय को और घोड़े की १ कमर की हड्डी को बेधकर २काछें (अएडप्रदेश) में निकल कर वह वर्छी भूमि में घुसगई ॥ ४४ ॥ ३ बर्छी. राजा के घोड़े की भी४कमर टूट गई ५ दूसरा इक्का पहिले इक्के को ६मुरदा छोडकर देखते ही साथ के लोगों सहित ७ भगगया ८ पुर में गया. वर्छी को नहीं ९ निकाली ॥ ४५ ॥ १० शत्रु के घोड़े पर ११ चढकर राजा ने एक इक्के को विना प्राण करादिया और १२ दूसरा यवन १३ मुरदे को छोडकर जीव लेकर भगगया. वह १४ मुरदा देखने योग्य है १५ सूर्य॥४६॥ १६ सूर्य के साम्हने १७ चुगल १८ ढक्कू के पुत्र ने १९सौगन सहित. समीप जाकर जिस प्रकार २० विश्वास आवै तिसप्रकार

संभर स्वसंगि कहन कहत रहे करखि[1] थकि रानके[2] ॥
संग्रामचविय कहहु सुपहु प्रतिबल[3] न तुम प्रमानके ॥४७॥
सु सुनि कहिय संभरिय वाजि मम स्रत इहिँ बाहत ॥
मिच्छतुरग तउ मिलत हानि नगिनी सु जथा हत ॥
बाहत१थाहत२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इतर[4] हय न ऐसोहु अन्य यातैं हय आनहु ॥
सुनि रानहु दिय सप्ति[5] चढिय निजतजि चहुवानहु ॥
तिरछो सु फैंकि ठेकन तुरग कढ्ढिय झटकि संगि कर ॥
कटिभग्ग[6] वहहु स्रत[7]१कतिकहत[8] परि घुटनन गो थकि१अपर[9]॥४८॥

दोहा ॥

इक्कनके द्वै२ हय अपर[10], बल निज उचित बचाइ ॥
कही संगि सु रानके, चढि हय झंप रचाइ ॥ ४९ ॥
अक्खिय तिन्ह उपहार[11] यह, थप्पहु अब निजथान ॥
अर्व[12] उभय लिय हम उचित, रीझ सु मन्नहु रान ॥ ५० ॥
रान कहिय ए अरु इतर; गज१ हय२ हेति[13]३ स्वगेह ॥
वत्त कतिक चित्तोर४ बलि, इहिँ आसान अनेह[14] ॥ ५१ ॥

षट्पात् ॥

न आसान नृप कहिय आदिधर्महि अप्पन यह ॥
अक्खोहिनि[15] स्रत अग्ग ओर दुव२कारि अट्ठारह १८ ॥
मिहिकावति वहु महिप गोग[16] १हित आत अबूफर२ ॥
कंगुरपति१के कज्ज समय केदार२ सिकंदर३ ॥

१खींचकर २राणा के सुभट ३ दूसरा बलवान् तुम्हारे समान बलवाला नहीं है ॥४७॥ ४अन्य ५ घोड़ा ६ कमर टूट कर. वह भी ७ मरगया ८ कितने ही कहते हैं कि घुटनों के बल गिरकर थकगया. यह ९अन्य लोगों का मत है ॥४८॥ १०दूसरा ॥४९॥ यह घोड़ा ११निजर है १२घोड़ा ॥५०॥ १३शस्त्र १४समय ॥५१॥ आगे दोनों ओर की अठारह १५अक्षौहिणी मरी थीं और अबूफर आया तब १६ गोगा चहुवाण के लिये मिहिकावती में बहुत राजा मारेगये थे और कांगड़ा के

जिम बहु परेहि आवत जवन प्रपितामह गोपाल१५३हित ॥
महमूद१आत गजनीमुकुट बहु भूपन निपतन बिदित ॥ ५२ ॥

दोहा ॥

जवन सहाबुद्दीन२जब, गोरी जिततित गंजि ॥
आवत इत रन बहु रहे, भूप जवन बहु भंजि ॥ ५३ ॥
अज्जर्न मंडल अग्गमि रु, बनिबैठँहु बहोरि ॥
पुनिपुनि दक्खिन१ उदग्ग२पहु, मरत१ देत कै मोरि२ ॥ ५४ ॥
अबहि रावरे गढ अधिप, चउरासिय८४ चित्तोर ॥
रहिय अलाउद्दीन११ रन, इत१ उत२तिम बहु ओर ॥ ५५ ॥

षट्पात् ॥

कर नृपके इम कहत जोरि संग्राम चविय जँहँ ॥
आसानहिं किय एह तकहिं कोउ न सहाय तँहँ ॥
पहु दुव२ इम संलपत मिलेबाँजिन आये मुरि ॥
सहहि रान प्रासाद जाइ विष्टर बैठे जुरि ॥
बुंदीस सुजन अर्चन बिहित संभृत सब उपहार सह ॥
मुत्तिय चढाइ अक्खिय महिप अप्प सुजन चित्तोर यह ॥५६॥
रुव१पर२ भटन तँहँ सबन रचिय नृप नजरि१ निछावरि ॥
पूरनं ढक्कुवपुत्र दुम्मन सद्धिय निदेस डरि ॥
सुता११ कुलिय२सस्सू३ हु इम हिं उपदा१ उत्तारन२ ॥

पति केदार का कार्य करने को स्कंदर आया था तब हरे प्रपितामह गोपाल का हित करने के अर्थ भी बहुत राजा मारेगये थे ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १आर्य मण्डल को २ दवाकर ३ उत्तर दिशा के राजा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ इस प्रकार ४वार्तालाप करतेहुए ५ घोड़ों को मिलायेहुए ६साथ ही राणा के महल में जाकर ७ गद्दी पर बैठे ८ पूजन करके ९पूर्ण सामग्री सहित मोती चढाकर ॥ ५६ ॥ १० पूरणमल्ल. नारायणदास के छोटे भाई की ११पुत्री जो महाराणा सांगा को विवाही थी १२वडसासू ने १३निजराना १४न्योछावर (यहां यथा क्रम समझना चाहिये अर्थात् वेटी ने नजराना और वडसासू ने न्योछावर)

सह पठये संसदंहि नृपहु किय आंदि १ निवारन ॥
वलि तत्थ असन उभयरहि विरचि संभर नृप आयउ सिबिर ॥
अहिफेन समय पुनि लिय अमल चितवत पातुरि नटन चिर।५७।
पननारिनसह सिक्ख रीभ्कि सतसत१०००० दिय रुप्पय ॥
संध्या१ दिक सब सद्धि समय किय असन महासय ॥
द्विरद इक्क१ बाजि दुव२ मुट्ठि मनिजटित इक्क१ असि ॥
सरधि१ चाप१ सिरुपाव१ पट्ट१ इक१ इक१सु अंत्यससि ॥
अतिप्रीति रान उपहार इम हड्ड सिबिर पठयो हुलसि ॥
पठई कहाइ यह अब्दप्रति बुंदियपुर भेजहिं बिकसि ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

अक्खिय भूपति वाँरि यह, पट्टिस१ खड्ग२ पिधान ॥
पठवहु जुगर इहिं नर्मपर, रुचिर तेहु दिय रान ॥ ५९ ॥

षट्पात् ॥

दिय चउसत ४०० तिन्ह दम्म रान अनुगनि अतिहित रत ॥
आइ रान दिन अपर२ मंत्रकिय सिबिर नीतिमत ॥
मालव१ गुज्जर२ मंतु सुनत ऐहैं दुव२ सत्थहि ॥
भनिय रान तब भूप उचित आगम निज अत्थहि ॥

---

१ सभा में साथ ही भेजी जिनमें २ प्रथम (निजराना) को राजा ने माफ करदिया ॥ ५७ ॥ ३ भाथा. एक शिरपेच और ४ अन्त में एक चन्द्रमा. राजा के ५ डेरे भेजा. और यह कहला भेजा कि इसी मा फिक६प्रसन्न होकर सालियाना बुन्दी भेजाकरैंगे ॥ ५८ ॥ राजा नारायणदास ने इस सामग्री को ७ निवारण करके कहा कि ८ कटार और खड्ग का ९ म्यान दोनों भेजो. यह १०हसी(मस्करी)करने पर महाराणा ने वे भी दिये ॥५९॥ राणा के ११सेवकों को १२ दूसरे दिन डेरे में सलाह की कि १३ * अपराध सुनते ही मालवा और गुजरात के दोनों बादशाह साथ ही आवेंगे

---

* यहां पर खिराज के रुपये लेने को दो इक्कों का चित्तोड़ आना और उनमें से एक इक्के का बुन्दी के राव नारायणदास के हाथ से माराजाना लिखा सो सत्य नहीं है क्योंकि प्रथम तो यह इतिहास कि

बुंदिय जु काम पहिलैं बनैं तो मम आगम होहि तँहँ ॥
इम थप्पि नियत सबदिन उभय२ करत रहे दृढप्रीति कँहँ ॥६०॥
पुनिपुनि नृप १ प्रासाद २ नगर३ खुरली ४ हु निहारिय ॥
इम मृगव्य १ आराम२नगर ३ खुरली ४ हु निहारिय ॥
मास १ अवधि महिपाल रहिय चित्तोर निरंतर ॥
सदन पधारन समय सुता पठवन कहि संभर ॥
कर्मवति१८८१२नाम नरवद१८७१२कुमरि आयउ लै बुंदिय अडर ॥
इक्का हन्यौं सु नृप जस अतुल वढि हुव दिसन प्रकास वर ॥६१॥
दोहा—गहत पट्ट दिल्लिय मुगल, सुनि यह वावर ३० साह ॥
जान्यौं ढिग अैसे जुरैं, लैंभैं तव जयलाह ॥ ६२ ॥
सुपहु गंग इत बग्घसुव, किय गोचर जव काल ॥

१जो२निश्चय ॥६०॥ राव नारायणदास ने एक मास पर्यंत चित्तोड़ में रहकर वारंवार ३ राजा (चित्तोड़ के महाराणा संग्रामसिंह) को ४ महल, पुर और ५ खुरली "खुरः लीयते यस्यां सा खुरली" खुर जिसमें लय हो उसे खुरली कहते हैं, अर्थात् हयशाला को देखा और इसीप्रकार ६ शिकार के स्थान ७बाग ८नगर "नगाः वृक्षाः पर्वता वा सन्ति यस्मिंस्तन्नगरम्" अर्थात् वन और९शस्त्रविद्या को भी वारंवार देखा १० चहुवाण ने पुत्री को भेजने के लिये कहा और कर्मवती नामक नर्वद की कन्या को लेकर निर्भय बुन्दी आया ११ श्रेष्ठ १२ मिलें ॥ ६१ ॥ काल ने १३दृष्टि दी (मरा)

सी अन्य पुस्तक में देखने में नहीं आया इसके अतिरिक्त महाराणा साँगा ने कभी किसी वादशाह को खिराज नहीं दिया किन्तु कर्नल टॉड के मतानुसार तो दिल्ली के वादशाह वावर ने उक्त महाराणा को स्वयं खिराज देना चाहा था सो स्वयं वावर ने अपनी किताब 'तुजकवावरी' में भी लिखा है जिसको महाराणा ने स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे यवनों को आर्यावर्त्त से निकाल देना ही उचित समझते थे और मांडू के वादशाह को तो उक्त महाराणा ने अपनी कैद में रक्खा था फिर खिराज किसको देते, इससे मालूम होता है कि यह कल्पित इतिहास बुन्दी के बड़वा भाटों का लिखाया हुआ है, और महाराणा साँगा के समय में ही जोधपुर के राव गांगा की मृत्यु लिखी सो भी ठीक नहीं है क्योंकि राव गांगा की विद्यमानता में महाराणा सांगा का देहान्त होचुका था; क्योंकि उनका देहांत वादशाह वावर के साथ 'वनाना' की लड़ाई हुए पीछे संवत् १५८४ में हुआ था और राव गांगा को राज्य के लोभी उसके बड़े पुत्र मालदेव ने झरोखे से गिराकर संवत् १५८८ में मारा था ॥

जनक पट्टलिय जोधपुर, मालदेव महिपाल ॥६३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुम १ द्वीज्यवर्णानवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याख्यायनीयबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७।१चरिते हयद्वितीय२क्रीडिताच्छोटनप्रत्यागम्यमानतावदहिफेन मदमीलितनेत्रबुन्दीशनर्मोपहसिततैलितरुणीकण्ठातिभरलोहकुशकुण्डलीकरण १, तावन्मादकमत्तमहीपमल्ल१मातङ्ग २ मृगेन्द्र ३ संरोधशासनसमर्थबलविख्यापन२, बुन्दीपुरप्राप्तचाक्रिकप्रार्थ्यमान पृथ्वीशतैलिनीकण्ठकुशबन्धनविमोचन३, हेमन्तक्षणलघुशौचाऽऽचरणाऽऽसीनमादकपारवश्यमीलितदृक्प्रातःप्रबुद्धपृथ्वीपरिवृढतदवधिसमात्तसलिलस्वर्णपात्रसपर्यासावधानस्थितप्रार्थनाप्रेरितराज्ञी राष्ट्रकूटीयाचिततद्धस्ताऽहिफेनाऽऽदानाऽभ्युपगमन ४, स्वसहधर्मिणीनिजयुक्तिह्रासरक्षिताऽष्टादश१८मासकमितमात्रामादकमत्तमृ

तब पिता का पाट जोधपुर में मालदेव ने लिया ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में विख्यात करने योग्य बुन्दी नरेन्द्र नारायणदास के चरित्र में घोड़ा ही है दूसरा जिसके अर्थात् इकले शिकार खेलकर पीछे आतेहुए अमल के नशे से मिचेहुए नेत्रोंवाले बुन्दी नरेश की मस्करी(हँसी) करने के कारण तेली की स्त्री के कण्ठ में अति भारवाली लोहे की कुस का कुण्डली करना, उस नशे में मस्त राजा का मल्ल, हाथी और सिंहों को रोकने और शासन करने में समर्थ बल की प्रसिद्धि करना, बुन्दी पुर में गयेपीछे तेली की प्रार्थना से राजा का तेली की स्त्री के कण्ठ से कुस का बन्धन छुड़ाना, हेमन्त ऋतु के समय लघुशंका करने को बैठेहुए नशे के परवश नेत्र मिचजाने से प्रभात समय में जगनेवाले राजा का उस समय तक स्वर्णपात्र में जल लिये सेवा में सावधान खड़ी और प्रार्थना से प्रेरणा कीहुई रांणी राठोड़ी के मांगने से उसके हाथ से अमल लेना स्वीकार करना, अपनी विवाहिता स्त्री की युक्ति से घटाकर अठारह मासा रक्खीहुई अमल की मात्रा के नशे से शिकार खेलने में

गयारममारणदंष्ट्रिदलनदूरदोद्रूयमाणकृतकार्यसमागतमादककाला
तिक्रमतमसमास्तीर्णसप्त्यासनसौभाण्डिकरीरकारस्कराधःशयन
५,क्रकरकाण्डच्छायासमपसरणसमयनिःसृतैककालकाकोदरच्छ
त्रोचितोपरिच्छत्रीकृतफणच्छायाप्रबुद्धपृथ्वीशनिगृहीतनागपुनःपुन
र्दशन ६, तद्विषवर्द्धितद्वि २ गुणमदमोदमानसम्मिलितसर्वसैन्यस्कं
न्धावारसमागतप्रभुपृच्छायाथातथ्याऽवबुद्धराज्ञीस्वहस्तमादकदाप
नसमुत्सर्ज्जन ७, महीशशपथदूरीकृततद्गरदरस्वास्थ्यसङ्गतराज्ञीराष्ट्र
कूटीतद्रात्रिरविमल्ल १८८१ गर्भधारण ८, वसु ८ वण्टाहिफेनन्हास
कुम्भिनीकान्तकुमारराष्ट्रकूट्यौरससूर्यमल्ल १८८१ राजमल्ल १८८।
२ कल्याणमल्ल१८८।३त्रय३ भौजिष्येयसहस्रमल्ल १ सप्तल २ द्वय
२ सङ्कलितपञ्चक ५ समुद्भवन ९, प्राक्कालोत्तानशयत्वशालिशैशवस
मयसमवगतकृतरोदनकुमारार्कमल्ल१८८।१दासीस्तनपानोदन्तकृत
तत्किङ्करीताडनगृहीतपोतपादभ्रामयन्तीराज्ञीरुधिरान्ततत्पोतसर्व

सूवर को मारने के लिये दूर जाकर सूवर को मारने पर अमल खाने का सम
य निकल जाने से घोड़े का गदेला बिछाकर सुभाण्ड के पुत्र का करीर
वृक्ष के नीचे शयन करना, उस करीर वृक्ष की शाखाओं की छाया
निकल जाने के समय बाहिर निकले हुए एक काले सर्प का छत्र के योग्य
ऊपर छत्र किये हुए फण की छाया करने पर उस छाया से जगेहुए रा
जा के पकड़े हुए सर्प का वारम्वार डसना, उसके विष से दुगुने बढ़ेहुए नशे से
प्रसन्न राजा को सब सेना मिलने पर राजधानी में आयेहुए राजा से रानी के पूछने
पर यथार्थ वृत्तांत जानने के पीछे राणी का अमल देना छोड़ना, राजा के सौगन खा
ने से उस सर्प के विषका भय दूर होने पर स्वस्थता सहित रानी राठोड़ी का
उसी रात्रि में सूर्यमल्ल को गर्भ में धारण करना, आठ हिस्सा अमल घटाने पर
भूपति नारायणदास के राठोड़ी के उदर से सूर्यमल्ल, राजमल्ल और कल्याणमल्ल
तीनों और पासवान के पुत्र सहस्रमल्ल, सातल दोनों मिलाकर पांच कुमरों
का जन्म होना, पहले समय में सीधे शयन करनेवाले अत्यन्त बालकपन के स
मय में रोने से कुमर सूर्यमल्ल को दासी का स्तन पान कराने का वृत्तान्त जान
कर उस दासी को धमकाकर बालक के पैर पकड़ कर भ्रमानेवाली रानी का
अन्त में रुधिर आया वहां तक उस दासी के दूध को निकालना, सदैव अन्तः

दुग्धनिष्कासन ६, सदैवस्नेहसातिरेकसवित्रीतत्कुमरलालनकालि सर्पसाम्यसम्बोधन १०, सूचितसंवत्समयकृतकायहानदिल्लीपतिलो दिपठानसिकंदर १८ सूनुज्येष्ठेब्राहीम २९।१ पितृपट्टप्रापणानन्तरं स्वानुजजलाल २९।२ मारणासन्त्रस्तकनिष्ठालावुद्दीन २९।३ काब लपलायन ११, जनकानन्तरप्राप्तान्दजान १ राज्यस्वदोर्जितसमर कंद १ परस्परभ्रातृजनद्रोहभावपरिभ्रष्टपुनःप्राप्तराज्यद्वय २ पुनस्ता तारिउजबकसमाक्रान्तसमरकन्द २ मुगलतैमूर २२ वंशीयतदन्दजाना धीशबाबर ३० काबलराज्यसमासादन १२, दिल्लीशसर्वाधिकारि दौर्मनस्यसमयमुल्तानसूबाध्यक्षदौलतखानप्रेषितपत्रपूर्वशरणप्राप्ता लावु द्दीन २९।३ समाक्रान्तकाबलमत्यन्तपतियवनेन्द्रबाबरा ३० र्थ दिल्लीसमाक्रमणावसरसूचन १३, सज्जपञ्चदशसहस्र १५००० सैन्य द्विचत्वारिंशद् ४२ वर्षवयस्कयुवावस्थस्वसूनुसहितदिल्लीनिनीषुसमु त्तीर्णकरतोयसमायातसम्मिलिताऽनेकपरपक्षीयपानीयपथप्रधन व्यापादितेब्राहीम २९ म्लेच्छमहेन्द्रबाबर ३० दिल्लीपट्टप्राप्तिशक

कारण के अत्यंत स्नेह से माता का उस कुमर का लाड करने में कालेसर्प का संबोध न करना, जनायेहुए सम्वत् में दिल्ली के बादशाह लोदी पठान सिकन्दर का देहान्त होने पर उसके बडे पुत्र इब्राहीम का पिता का पाट पाये पीछे अपने छोटे भाई जलाल को मारने से डरकर छोटे अलाउद्दीन का काबुल भागना पिता के पीछे अन्दजान का राज्य पाकर अपने भुजों से समरकन्द को जीतने पर परस्पर भाइयों के द्वेष से राज्य भ्रष्ट होकर दोनों राज्य प्राप्त होने पर फिर तातारी और उजबक दोनों के समरकन्द दवा लेने पर मुगल तैमूर वंशवाले उस अन्दजान के स्वामी बाबर का काबुल राज्य को लेना, दिल्ली के बाद शाह के मुसाहिबों के उदास होने के समय मुलतान के सूबों के पति दौलतखान के भेजे हुए पत्र से पहिले अलाउद्दीन का शरण आना और काबुल को दबा नेवाले म्लेच्छेश के पति बादशाह बाबर के अर्थ दिल्ली लेने के समय की सूचना करना, पन्द्रह हजार सेना सजकर ४२ वर्ष की अवस्था में युवावस्था वाले अपने पुत्र सहित दिल्ली लेने की इच्छा से अटक नदी को उतरकर आये हुए अनेक शत्रुओं के पक्ष के लोगों के मिलने पर पानीपत के युद्ध में इब्राहीम को मारकर बादशाह बाबर के दिल्ली के पाट पाने के संवत् की सूचना

सूचन१४,दिल्लीभोक्तृयवनभेदसूचनापुरस्सरनानासूबापतिसंभेदक मालव १ गौर्जर २ म्लेच्छराजद्वय २ दिल्लीशप्रतिभटभावसाम्यसूचनासंकथन १५, चित्रकूटाधिराजराणासंग्रामसिंहसम्बन्धिप्रत्यब्द सर्वावशिष्टधनर्णीभूतवार्षिककरसमादानार्थमुदाफर १ महमूद २ युग्म २ प्रतिवर्ष १ प्रतिभुज १ लक्षशोलायकसाहस्रिक दुर्द्धर्षस्वयमिक्कोपनाममालैकाकित्वप्रसिद्धयवनवीरैकै १ क १ चित्रकूटप्रेषण १६, कथितरूप्यसञ्चयविलम्बप्राघुणकप्रीति सत्कृतम्लेच्छशीर्षोद्दप्रच्छन्नाकारितसैन्यहड्डेन्द्रचित्रकूटगमन १७, समुल्लङ्घितसदैवसम्मुखागमनसीमशीर्षोद्दसत्कारबुंदीशसमानयन १८, ज्ञापितस्वसहायहड्डाह्वानकरद्रम्मानर्पणकृतदिनाऽष्टका ८ वधिमत्तम्लेच्छद्वय २ मर्यादातिक्रमचित्रकूटपुरलुण्ठनप्रतिश्रवण १९, तिरोहितसूचितसम्बन्धित्वहेतुबुंदीशागमनराणामार्गितमासै का १ऽवधियवनयुग्मप्रातःपत्तनविप्लावयिषाप्रादुष्करण २०, नृपगमनदिनभूतैतन्म्लेच्छ १ शीर्षोद्द २ पृच्छो १ त्तर २ प्र

करना, दिल्ली के भोगनेवाले यवनों के भेद की सूचना करने के साथ अनेक सूबापतियों के भेदनेवाले मालवा और गुजरात के दोनों यवन बादशाहों का दिल्लीश के शत्रुभाव की बराबरी की सूचना का कहना, चित्तोड़ के पति राणा संग्रामसिंह के हर वर्ष के चढेहुए सब खिराज से ऋणी होने के कारण सालाना खिराज लेने को मुदाफर और महमूद दोनों का सालाना अपने प्रत्येक भुज के एक एक लाख रुपये लेनेवाले हजार मनुष्यों से लड़नेवाले दुर्धर्ष स्वयं इक्का पदवीवाले अद्वितीयता से प्रसिद्ध एक एक यवन वीर को चीतोड़ भेजना, कहेहुए रुपयों को इकट्ठे करने में विलम्ब होने से प्रीति पूर्वक उन यवन पाहुनों का सत्कार करके सीसोदिया के छाने बुलायेहुए सेना सहित हड्डेन्द्र का चीतोड़ जाना, सदैव की सम्मुख जाने की सीमा को लांघकर सीसोदिये का सत्कार सहित बुन्दीश को लाना, अपनी सहाय के लिये हाड़े को बुलाने से राणा का खिराज के रुपये नहीं देना जतलाकर आठदिन की अवधि देकर मर्याद निकल जाने पर दोनों मस्त म्लेच्छों का चित्तोड़ पुर को लूटने की प्रतिज्ञा करना, सम्बन्धी होने के कारण बुन्दीश के छाने आने को सूचित करके राणा के एक मास की अवधि मांगने पर दोनों यवनों का प्रभात ही नगर लूटने की इच्छा प्रकट करना, राजा

श्चात्लखादात्लखाबुन्दीशज्येष्ठश्वश्रूराखाराज्ञीराष्ट्रकूटीधनाप्रहित-स्वागतसहचारिजनान्तरशनैररतिमादकतन्द्रानवहितव्यादितवक्त्रघूर्णमानसौभाखिडकुत्साकरण २१, सहास्यस्वीकृततत्स्वागतप्रापकपरिजनार्थदत्तद्रम्मपञ्चशती ५०० कसमयसमनुष्ठिताशनसूचितयामिनीयाम १ शेषावसरजागरणहड्डेन्द्रशयनसेवन २२, सनयप्रबुद्धविहितसन्ध्या १ व्यायाम २ साहससंरुद्धस्वसर्वसुभटसन्नद्धसादीभूतसमात्तशक्तिकैकाकिहड्डाधिराजयवनयुग्मो २ परिप्रस्थान २३, दूतविज्ञापितैका १ऽश्ववारागमविधीयमानव्यायामनिवारितसपरिग्रहद्वितीयस्वसहधर्मसन्नद्धसप्तिसमारूढयवनैक १ सम्मुखागमसमयस्वान्तसावधानजनादिकोलाहलप्रकटप्रबुद्धमत्सरिराजप्रत्यनीकप्रेष्ठप्रधनप्रियत्वपृच्छन २४, यवनातिवीरकुन्तकृत्तसकङ्कटकक्षान्तरवेधिसवाहवैरिवपुष्कबुन्दीशकालायसकासूकोणाकर १ मात्रपृथ्वीप्रविशन २५, यथातथस्थितीकृतससप्तिकपरासुप्रत्यन्तिप्रवीरत्यक्तातिबलव्याघातभग्नकटिनिजाश्वनरेन्द्रससार्थपलायितापर २ यवनोचि

के जाने के दिन म्लेच्छ और महाराणा के प्रश्नोत्तर हुए पीछे रात्रि के समय बुन्दीश की बडसासू और महाराणा की राणी राठोड़ी धना के महमानी के लिये भेजेहुए मनुष्यों में से किसीका धीरे बोलकर नशे की ऊँघ से फटे मुख वाले और घूमते हुए सुभाण्ड के पुत्र (नारायणदास)की निन्दा करना, हास्य पूर्वक उस सत्कार को स्वीकार करके उसके साथ के लोगों को पांच सौ रुपये देकर समय पर भोजन करके एक प्रहर रात्रि बाकी रहते समय जगाने की सूचना करके हाडे का शयन करना, समय पर जगकर सन्ध्या और कसरत करके हठ से सब सुभटों को रोक कर सज्ज होकर घोड़े पर सवार होके बर्छी लेकर इकले हड्डाधिराज का दोनों यवनों के ऊपर जाना, दूत से एक असवार का आना जानकर कसरत करते हुएं और अपनी परगह सहित अपने समान धर्मवाले(इक्के) को रोककर सन्नद्ध, घोड़े पर सवार हुए इक्के के सन्मुख आते समय मन में सावधान मनुष्यों के कोलाहल से जाहिरा सचेत होकर चहुवाणराज का शत्रु के प्रिय युद्ध को पूछना, उस अतिवीर यवन के भाले से कवच सहित कांख कटने पर वेधनेवाले वाहन सहित शत्रु के शरीर को

ताऽश्वसमारोहण २६, नोद्धृतस्वशक्तिप्रत्यागतसमाहूतस्वसैन्यसङ्ग्रामसम्मिलितसौभाण्डिशक्तिसंस्थितस्थितद्वेषिदर्शनार्थपुनारङ्गस्थलागमन २७, दूरदृष्टसजीवसन्देहकससप्तिस्थितसंस्थितसपत्नढक्कूपुत्रपूर्णमल्लमेदपाटमहीपमारणच्छलख्यापनावसरहड्डेन्द्रयथाप्रत्ययसमीपसमानीतसर्वस्वान्तसन्देहसमपाकरण २८, दृष्टशक्त्युद्धरणाऽसमर्थस्वसामन्तशीर्षोद्दसश्लाघाविज्ञप्तमार्गितराणासप्तिसमारूढशाकम्भरस्वशक्तिसमुद्धरणाऽवसरतत्तुरगव्यसुत्व १ वैकल्य २ विचिकित्साविख्यापन २९, समात्तस्वबलोचितयवनयुगाऽश्वयुग्माऽरनङ्गीकृतराणाढौकितसर्वस्वसौभाण्डिशेषशत्रुसर्वोपहारशीर्षोद्दपस्त्यप्रस्थापन ३०, मेदपाटपतिमहोपकारसूचनाऽवसरदर्शितनानापूर्वनृपतिदर्शनसमुपकारलेशशून्यपुष्टीकृतसहायधर्महड्ड १ शीर्षोद्द २ जगतीजानिजकुट २ प्रत्यागमन ३१, सौधसभामहससमागतसिंहासनाऽऽ

फोड़कर कुन्दीश की लोहे की बर्छी की नोक का हाथ भर पृथ्वी में प्रवेश करना, पहले था उसी स्थिति में घोड़े सहित यवन वीर को मृतक करके अतिबल के आघात से टूटीहुई कमरवाले अपने घोड़े को छोड़कर साथ सहित भगेहुए दूसरे हड्डे के घोड़े पर चढ़ना, अपनी शक्ति नहीं निकालकर पीछे आकर अपनी सेना को बुलाकर सङ्ग्रामसिंह से मिलकर सुभाण्ड के पुत्र का शक्ति से मरेहुए और ठहरे हुए शत्रु को दिखाने को फिर युद्ध स्थल में आना, घोड़े सहित खड़े मरेहुए शत्रु को दूर से देखकर जीवित होने के सन्देह से अपने शत्रु ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल का मेवाड़ के महीप को मारने का छल जनाने के समय हड्डेन्द्र का जिसप्रकार विश्वास आवै तिसप्रकार समीप लाकर सब के मन का सन्देह मिटाना, अपने उमरावों को बर्छी पीछी निकालने में असमर्थ देखकर शीशोदिये के प्रशंसा सहित विज्ञप्ति करने पर राणा से घोड़ा मांगकर उस पर चढ़ेहुए चहुवाण के शक्ति निकालने के समय उस घोड़े के मरने अथवा विकल होने के सन्देह की सूचना करना, अपने बल के उचित दोनों यवनों के दो घोड़े लेकर राणा के भेट कियेहुए सर्वस्व का अस्वीकार करके सुभाण्ड के पुत्र का शत्रु की बाकी की सब सामग्री शीशोदिये के घर में भेजना, मेवाड़ के पति के इस बड़े उपकार की सूचना करने के समय पहिले के अनेक राजाओं के दृष्टान्त दिखाकर उपकार के लेश रहित सहायता करने में धर्म की पुष्टि दिखाकर हाडा और शीशोदिया दोनों राजाओं

सनाऽवसरराणामुक्ता १ दिमहोपहारंमत्तसरिमहीपदोर्दण्डसपर्या
साधन ३२, वप्तृवैरविज्वलितस्वान्तासंश्रुतस्वामिसाध्वसचहि
र्वरिवस्याविधित्सुपौर्विक १ पूर्णमल्लोपेतपक्षद्वय २ परिषत्प्रवी
रप्रगुणप्राभृतप्रढौकनपुरस्सरपारियालप्रान्तपार्थिवोपरिसमुचितस्वा
पतेयसमुत्तारण ३३, स्वानुजसुता १ ज्येष्ठश्वश्रू २ श्वश्रू ३ समुचि
तोपदो २ त्तारण २ पर्षत्प्रेपणान्वणसुतास्वापतेयवर्जितस्वीकृतस-
र्वसमुचितसम्भारसहभुक्तशिविरागतबुंदीशवारवारविशिष्टाविद्यावि
लासवेलाद्रम्मायुत १०००० वितरण ३४, समनुष्ठितसायंसन्ध्या
दिकबुन्दीस्वामिसमीपराणाप्रत्यव्दप्रतिज्ञातप्रोक्तप्रमाणपीलु १ प्र
थि२ कृपाणो ३ पासङ्ग ४ प्रदरासन ५ पट ६ पट्ट ७ प्राभृतप्रेषणा
ऽवसरनिर्मितनर्मावनीशकृपाण १ कट्टार २ रिक्तप्रत्यागारयुग २
याचन ३५, स्वीकृतश्रुतैतदुदन्तसंग्रामप्रेषितप्रोक्तप्रहरणापिधानयु
गम २ प्रापकपरिजनार्थदत्तद्रम्मशतचतुष्क ४०० सौभाण्डिश्वःशि
विरागतराणासहनिःशलाकमन्त्रणमतमन्तुम्लेच्छराजयुग्मा २ ग

का पीछा आना, महलों की सभा में साथ आकर दोनों के सिंहासन पर बैठ
ने के समय राणा का मोती आदि बडी सामग्री से चहुवाण के भुजों की पूजा
करना, पिता के वैर से भीतर से जलते हुए और बाहर से स्वामी के भय से
शुश्रूषा करते हुए पूरबिया पूर्णमल्ल सहित सभा के दोनों पक्ष की सभा के वी
रों के विशेष गुणवाला नजराना अर्पण करने पर बुन्दी के प्रान्त के राजा के
ऊपर उचित न्योछावर करना, अपने छोटे भाई की बेटी और बडसासू तथा
सासू के सभा में उचित नजराना और न्योछावर भेजने के समय बेटी के
धन को निवारण करके अन्य सब उचित सामग्री स्वीकार करके साथ भोजन
करके डेरे में आकर बुन्दीश का विद्या विलास के समय विशिष्ट वेश्या
को दश हजार रुपये देना, सायंकाल की सन्ध्या किये पीछे बुन्दी
के स्वामि के पास राणा का सालियाना भेजने की प्रतिज्ञा सहित हाथी,
घोड़ा, खड्ग, भाथा, धनुष, वस्त्र और शिरपेच आदि भेट भेजने के समय
राणा का हँसी करके खड्ग और कटार से खाली दो म्यान मांगना, इस
वृत्तान्त को सुनकर संग्रामसिंह के भेजेहुए ऊपर कहेहुए शस्त्रों के दो म्यान
लानेवाले लोकों के अर्थ चार सौ रुपये देनेवाले सुभांण्ड के पुत्र का अपने
डेरे पर आयेहुए राणा के साथ एकान्त में सलाह करके इस अप

अपरस्परसहायस्वीकरण ३६, विहितविविधबर्करविलासचित्रकूटव्यतीतैक १ माससौभाग्डिसोदर्यसुतासंग्रामसहधर्मिणीसहितस्वस्थानीयसमागमन ३७, विज्ञातविरोधिवीरविध्वंसवृत्तान्तप्राप्तेन्द्रप्रस्थपुरपट्टप्रत्यन्तपरिवृढयवनेन्द्रबाबर ३० सौभाग्डिसदृशस्वसैन्यसहायसाधनसोत्कण्ठीभवन ३८, योधपुरपार्थिवराष्ट्रकूटराजगङ्गतनुत्यागानन्तरतत्तनूजमालवमरुस्वामित्वसमासादनं ३९ षड्विंशो२६ मयूखः ॥ २६ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नृप पहिलैं नरबद १८७।१ अनुज, पाई संतति पंच५ ॥
तिनमैं चउ४ सूचित तनुज, रन देर न जिन्ह रंच ॥ १ ॥
निज कुमरन सिसुपन नृपति, जुब्बन बय तिन्ह जानि ॥
ब्याहे च्यारि४हु नारबैद, पहिलैं उचित प्रमानि ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

क्रम गुहिल्लपुत्र कुल दास१ अर्जुन२ अभिधा दुव२ ॥
तनयातस जयवतिय१८८।१ हड्ड अर्जुन१८८।१ ब्याहतहुव ॥
सूर कबंध सुताहु ऊढ मीराँ१८८।२ दूजी२ यह ॥

राध से दोनों बादशाहों के आने पर परस्पर सहाय स्वीकार करना, नाना प्रकार के परिहास के विलास से चित्तोड़ में एक मास बिताकर सुभाण्ड के पुत्र का अपनी पुत्री और महाराणा सांगा की राणी हाड़ी सहित अपने स्थान पर आना, अपने शत्रुओं के वीरों का नाश होने की सूचना मिलने पर दिल्ली के बादशाह म्लेच्छराज बाबर का नारायणदास के सदृश राजा का अपनी सेना के सहायक होने की उत्कण्ठा करना, जोधपुर के राजा राठोड़राज गांगा के देहान्त हुए पीछे उसके पुत्र मालदेव का मारवाड़ के स्वामिपन को लेने का २६वां मयूख समाप्त हुआ॥२६॥ और आदि से १७३ मयूख हुए ॥

१कहेहुए ॥१॥२उन नरबद के पुत्रों का ३नरबद के पुत्र॥२॥ दो४नामवाला५ब्याहा।

*सीसउद्द संग्राम सुता केसरकुमरिय१८८।३ सह ॥
भगवंतसिंह **कूरम कनी नाम आयोध्या१८८।४जुत निपुन॥
कियचउ४विवाहअर्जुन१८८।१कुमरनरवद१८८।२सुत÷पाटवअगुन३

दोहा ॥

भीम१८८।२ कुमर दूजी२ भन्यौं, ×चवहिं ब्याह तसच्यारि ४॥
दुजनसिंह तोमर सुता, पहलीकुसलकुमारि१८८।१ ॥ ४ ॥
भोजाउत चालुक सुभट, अखयसिंह तनया सु ॥
क्रम ब्याह्यो अनुपमकुमरि १८८।२, उपयम दूजे २ आसु ॥५॥
कन्या कूरम भीमकी, या १८८।२ हीके अभिधान ॥
ब्याह्यो अनुपनकुमरि१८८।३ वलि, ब्याह तृतीय३ बिधान॥६॥
लालसिंह तनया ललित, ब्याहि चतुर्थ ४ बिबाह ॥
अखयकुमरि १८८।४ प्रामारि इम, लिन्नौं नृप जसलाह ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

तीजो ३ नरवद१८७।२ तनय जुग२ हि अभिधान विदित जस॥
पूरनमल्ल १८८।३ रु पूर १८८।३ अय २ हि उपयम किन्नैं तस ॥
अखयराज सीसउँद कनी पहिलैं १ राजकुमरि १८८।१ ॥
सदाकुमरि १८८।२ सोलंखि मान तनया वलि लिय बरि ॥
सुंदर कवंध तनया सुघर तीजी ३ फुल्लकुमारि १८८।३ तिम॥
मुकल१८८।४चतुर्थ४ब्याह्यो महिप उपयम चउ४सुनियेवं इम॥८॥

॥ दोहा ॥

कर्मध्वज[12] सेढू कनी, उदयकुमरि १८८।१ वरि आसु ॥
वरि सृंगारकुमारि १८८।२ वलि, चालुक ढोल्ल सुता सु ॥ ९ ॥

---

* शीपोदिया **कछवाहे की पुत्री ÷ चतुराई ॥ ३ ॥ × कहेंगे ॥ ४ ॥
१ विवाह २ शीघ्र ॥ ५ ॥ उसी ३ नामवाली (अनोपकँवर) ४ फिर ॥ ६ ॥ ७ ॥
दो ५नाम ६ विवाह ७ शीपोदिया ८ पुत्री ९ मानसिंह की पुत्री १०चतुर ११
अब ॥ ८ ॥ १२ कमधज (राठोड़) ॥ ९ ॥

जद्दव[1] मदन सुताहु जिम, रूपकुमरि १८८।३ अभिरूप[2] ॥
बर सुक्कल१८८।४ तीजी३ बरिय, भ्रातिज[3] सह किय भूप ॥१०॥
उग्रसेन सुत कूरम[4] इम, अक्खयराज जु आहि[5] ॥
कन्या तस सुंदरकुमरि १८८।४, वर चोथी४लिय व्याहि ॥११॥
सब व्याहे पहिलेसमय, नरबद १८७।२ सुत नरनाह[6] ॥
सुरजकुमर रविवल्ल१८८।१के[7], वलि[8] किय च्यारि४बिवाहि ॥१२॥
नृप भल्ला[9] पुरनिंवड़ी, किरि[10] कल्ल्यान कनी सु ॥
प्रथम१ समर्थकुमारि१८८।१ पट्ट, पट्टकुमर१८८।१परनी सु ॥१३॥
सुपहु उदय कूरम सुता, केसरकुमरि १८८।२ कुमार ॥
दूजे २ उपयम यह दुलह, परन्यौं सुनंद[11] पसार ॥ १४ ॥
सुता रामपुर ईसकी, नाम समानकुमारि १८८।३ ॥
चंद्रावति तीजी ३ चतुर, व्याह्यो सुजस विथारि ॥ १५ ॥
उदयसिंह १ सारंग २ इम, जुग[12] २ अभिधा[13] स्फुट[13] जास ॥
नृप प्रमारकुल श्रीनगर, तनया दुव २ हुव तास ॥ १६ ॥
रानकुमर[14] पट्टपै[15] मरत, भोज २ जु प्रथम भन्यौं सु ॥
रतनसिंह २ पट्टप रह्यो, श्रीनगरहु परन्यौं सु ॥ १७ ॥

॥ पट्पात् ॥

सुता बडी सारंग रानकुमरहिं परिनाई ॥
राजकुमरि रविमल्ल १८८।२ परनि अनुजा[16] तस पाई ॥
पंच ५ हि कुमरन सुपहु महेन[17] एकोनबीस १९ मित ॥
बिरचे रुचिर बिबाह अनुज[18] सिरको भर[19] लै इत ॥
बाबर ३० अधीस दिल्लिय बन्यौं उपयंम[20] तासौं पुब्ब[21] इम ॥

१यादव२सदृश३भतीजे का ॥१०॥४कछवाहा५है ॥ ११ ॥६पाटवी कुमर७सूर्यमल्ल के८फिर ॥ १२ ॥९झाला१०किल (निश्चय) ॥ १३ ॥११श्रेष्ठ उत्सव फैलाकर ॥१४॥ १५ ॥दो१२नाम१३स्पष्ट॥ १६ ॥१४महाराणा का१५पाटवी कुमर ॥१७॥ १६छोटी बाहन१७उत्सव१८छोटे भाई के मस्तक का१९भार लेकर२०विवाह-बाबर बादशाह दिल्ली का स्वामि बना जिससे२१ पहले

आये न स्मरन व्हाँ तब इहाँ जंपिय भूत१प्रवृत्त२जिम ॥१८॥

॥ दोहा ॥

संक[2] हायन पैंसठि ६५ तैं, कुठत लग्नहित केर ॥
अर्जुन१८८।१ अरु त्रय३ तस अनुज, व्याहे निजनिज वेर[3] ।१९।
सक इकऊँन[4] असीति ७९ लग, सोलह १६ सम[5] अरिसल्ल ॥
क्रम इम च्यारि४विवाह किय, मुख्य कुमर रविमल्ल[6] १८८।१।२०।
किते कुमर रविमल्ल१८८।१के, वरनत पंच५ विवाह ॥
चालुकजा५ तँहँ पंचमी५, ते मल्लत नरनाँह[7] ॥ २१ ॥
इम सहस्रमल्ल१रु अनुज, सप्तल२ समय विसेस ॥
सुता नृपन तिन्ह वर्णसम, व्याही हुव२ वसुधेस[8] ॥ २२ ॥
संतति अब कहियत सबन, कति हुव१ पूरबकाल ॥
कतिक होत२ व्है हैं३ कतिक, पै सब सुनहु नृपाल ॥२३॥
कुमर खट६ रु इक१ कन्यका, सप्त७हि कुल संतान ॥
क्रम पाये जेठेकुमर, अर्जुन१८८।१ मधन[9] अमान ॥२४॥

षट्पात् ॥

सुर्जन१८९।१अक्खयराज१८९।२राम१८९।३जेठी१८९।१कुमरानिय
जिम मीराँ१८८।२ रठोरि जनत खंधिल१८९।४ इक१ जानिय ॥
जुग२हि जनें सीसोदनी१८८।३कुसरन१८९।५रु लवनकरन १८९।६
कछवाही१८९।४भव कुमरि इक१ गौरी१८९।१लघु सब सनं[10]॥
पहिलेकुमार कुलधर ग्रंथित[11] तीन३ भये प्रभु[12] राम २०३।४तँहँ ॥
खिल[13] चउ४अपत्य[14] लघुवय खँपिय[15] करहु श्रवन खिल वंसकँहँ।२५।

वहां याद नहीं आये इस कारण से १ गयाहुआ वृत्तान्त कहा ॥ १८ ॥
२ विक्रम के शक के ३ समय ॥ १९ ॥ ४ उनासी का सम्वत्. सोलह ५वर्ष की अवस्था में शत्रुओं के साल ६ सूर्यमल्ल ने ॥२०॥ ७ हे राजा ॥२१॥
८ राजा ने ॥ २२ ॥ २३ ॥ ९ युद्ध में ॥ २४ ॥ १०से ११प्रसिद्ध १२हे प्रभु रामसिंह १३ बाकी के १४ सन्तान १५ मरगये ॥ २५ ॥

दोहा ॥

जे गद्दीपतिके अनुज, बदे सबन तिन्ह ब्याह ॥
भेदमात्र कुलके भनैं, तिन्ह पुत्रन *नरनाह ॥ २६ ॥
अब नारायन१८७।१ कुल इहाँ, व्हैहैं गद्दिय हीन ॥
सुर्जन१८९।१ यह सुरतान१८९।१ **सन, पैहैं राज्य प्रवीन ।२७।
यातैं नरवद१८७।१ ***अंगजन, वरनैं सबन विवाह ॥
प्रभुको यह कुलपरपुरुख, रचि स्वधर्म निर्वाहि ॥ २८ ॥

पादाकुलकम् ॥

अर्जुन१८८।१अनुजभीम१८८।२जोजानहुप्र१भुतसपुत्रहिपंच५प्रमानहु
सिंह१८९।१अमान१८९।२नामतँहँद्वै२सुतजनैंपूवीरतोमरी १गुनजुत
इक१सुतकन्ह१८६।३चालु२कीर और३सतीजी३सुत्तिय१८९।४जगन्नाथ१८९।५तस
भरे४अनूढ४अनुजचउ४मानियतिनमैंज्येष्टसिंह१८९।१कुलता५निय।३०।
अँ६भिधाअँपर२अर्जुन१८९।१हुयाकी,तिमजगअवहुकिँ७त्तिध्रुवताकी
अर्जुन१८८।१कुलव्है८हैंप्रभुयातैं,मुख्यसिंह१८६।१नरवद१८८।२कुलतातैं
नाम जैतगढ ताहि निवे१०सन, दायभाग दिन्नौं धर११नीधन ॥
सिंहोलाव१स्वना१२मैंसरोवर,विरच्योतत्थसिंह१८९।१जगहितवर।३२।
अरु प्रासाद२ जैतगढ अंतर, विरच्यो अँ१३द्रिकटक सह वि१४स्तर ॥
इहुनतसकुलभेदसोलहम१६सिंह१भीम२पोते१६कहियत सम।३३।
है यहकुल चर्म्म१५लि परतट हद, अब हतोर१ बिल्लहैंडि२उकावद३
भीम१८८।२अनु१६जपूरन१८८।३जोभाखियकहियजथाउपयसँ१७त्रय३जिमिकिय
जाकैमान१८९।१कुमरहुवगुनजुतसीसोदनि१ औरसइक१हिसुत ॥

---

*हे राजा ।२६। सुलतान **से ।२७। नरवदके***पुत्रोंके ॥२८॥१हे प्रभु ॥२९॥
२सोलंखिनी के उदर से ३विना विवाहे४फैलाया ॥३०॥५नाम ६दूसरा ७कीर्ति
८निश्चय ९ बुन्दी का स्वामि होवेगा इस कारण से ॥ ३१ ॥ १० रहने के लिये
११राजा ने१२अपने नाम का तालाव ॥३२॥ १३ पर्वत के शिखर पर१४विस्ता
र से ॥ ३३ ॥ १५ चामल नदी के उस पार १६ छोटा भाई १७ विवाह ॥३४॥

जय छुंदिय पाईन्द्रपल्हुर्जन१८९।१, पुरकोटालियभंजिपठानन ॥३५॥
तँहँ यह वीरमान १८९।१ पूरन १८८।३ सुत,
व्है जय *हेतु भयो **हेतिन *** हुत ॥
यातैं मान१८९।१कुल सु बिरुदावत, कोटा१रन जयकार२ कहावत॥३६॥
हम्मीर१९०।१हि इक१मान१८९।१तनय३हुव, दान१कृपान२वहीं४जिहिँधुरदुव ॥ ३७ ॥
जय सुपुत्र कुलसैं निपजैं जो, वंसहि सब तस नाम बजैं जो ॥
पूरा५उत१७उपँपद५ धारक धुव, इहिन भेद सत्रहम १७ जो हुव ।३८।
ता कुलके तबतैं छक६ छज्जत, बलि हम्मीरके१७हि सब बज्जत ॥
पाय७उपुरहिंडोलियपूरन१८८।३विरचेहम्म१९०।१महल१सर२उपबनँ३
तत्थहिप्रभु८अवराम२०३।४बंसतस, रन९बितरन१०अनुपमचक्खनरस
पूर१८८।३ अनुज११चोथो४मुकल१८८।४पटुकियबिवाहचउ४जिहिँसपत्नकटु
दाय१२ दंग१३ जिहिँ जक्खमूल दिय, पुत्र बिदित ताकै खट६प्रकटिय ॥
रायमल्ल ८९। पित्थल१८९।२बिजयीरन, सुतदुव२हुवरठोरि प्रसवसन
इक१गोपाल१८९।३बालुकी२औरस, तीजी३चउभुज१४१८९।४राजसिंह१८९।५तस
इक१हम्मीर१८९।६ जन्यौं कछवाही४, हुव इम खट६दोहिनँ रनदाही ॥

॥ दोहा ॥

कुल पित्थल१८९।२ गोपाल१८९।३ के, उभय२चले अवनीस॥
च्यारि४नके वंस न चले, ऐसे स्थल विधि१७ ईस ॥ ४३ ॥
प्रभिधा मुकलपौत्र १८ पद, कुल सब तास कहात ॥

॥ ३५ ॥ विजय का *कारण ** शस्त्रों से *** होम हुआ १कोटा के युद्ध का २ विजय करने वाला ॥ ३६ ॥ ३ पुत्र. धुर ४ धारण करी ॥ ३७ ॥ ५ पदवी ॥ ३८ ॥ ६ कहलाते हैं ७ बाग ॥ ३९ ॥ ८हे प्रभु रामसिंह ९दान में १० छोटा भाई ११शत्रुओं को कडुआ लगनेवाला ॥ ४० ॥ १२ दाय भाग में १३ नगर ॥४१॥ १४ चतुर्भुज १५ शत्रुओं को युद्ध में जलानेवाला ॥ ४२ ॥ १६हे राजा १७ ब्रह्मा ही मालिक है ॥ ४३ ॥ १८ नाम

हड्डनमैं अट्ठारहम १८, यह साखा स्फुट[1] आत ॥ ४४ ॥
सुक्कल १८८।४ को नेत्ती[2] सुमन[3], वैरिसल्ल १९०।१ हुव वीर॥
बैराउत्त १८ हु इम बजत, साखा यह समसीर[4] ॥ ४५ ॥
बहु देवालय बापिका[5] २, सौध[6] ३ बेलँ[7] ४ व्यय[8] सत्थ ॥
किय सुक्कल१८८।४अरु तास कुल१८, जक्खमूल पुर जत्थ।४६।
संतति इम नरवद १८७।१ सुतन, बरनी प्रभु[9] सविवेक[10] ॥
सुनिये अब रविमल्ल[11]१८८।१सुत, अधम[12] वंसअरि[13] एक१ ॥४७॥
कुमरानी तीजी ३ कहिय, चन्द्रावति ३ क्रम चाहि ॥
कुमर इक्क१ रविमल्ल १८८।१ कै, हुव तामैं तँहँ दाहि[14] ॥४८॥
जानैं[15] को को लग्न १ जँहँ, को खिन २ कोन कुजोग ३ ॥
किन्ह[16]बल हाँ[17] प्रविसैं जठर[18], रानिन ऐसे रोग ॥ ४९ ॥
कुमर कुमर रविमल्ल१८८।१ कै, तस अभिधा[19] सुरतान१८९।१॥
जैहैं बुंदिय जाहिसौं, ह्वैहैं प्रभुता हान ॥ ५० ॥
सर हय तिथि१५७५सक हुव सुमति, सुर्जन१८३।१ अर्जुन१८८।२सून
नभ गज तिथि१५८०नृपसूनु[20]के, इत सुरतान१८९।१सुऊँन[21]।५१।
सक मिति एकासीति ८१ सौं, इत्यादिक बहु आदि ॥
उपजे १ अरु कछु होइहैं अब, सूचित क्रम संपादि ॥ ५२ ॥
तिहिं अवसर दिल्लिय तखत, बाबर ३० मुगल बइठ ॥
ताही अवसर हड्ड १ तँहँ, इक्क २ हनिय रन इठ[22] ॥ ५३ ॥

बइठ १ नइठ २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सो ससि बसु तिथि १५८१ सकसमय, इत लग्गत अवनीस[23] ॥

---

१ प्रसिद्ध ॥४४॥ २ पोता ३ श्रेष्ट मनवाला ४ बराबर. हिस्सेदार ॥४५॥ ५ बावड़ी ६ महल ७ बाग ८ खरच ले ॥ ४६ ॥ ९ हे प्रभु १० विचार पूर्वक ११ सूर्यमल्ल का १२ नीच १३ वंश का शत्रु ॥ ४७ ॥ उसको १४ जलानेवाला ॥ ४८ ॥ १५ कौन जाने उस समय कौन लग्न था और किस समय में किस खोटे योग से १६ किनके बल से १७ खेद है कि १८ पेट में प्रवेश होते हैं ॥ ४९ ॥ जिसका १९ नाम सुरतानसिंह था ॥ ५० ॥ २० राजा के पुत्र सूर्यमल्ल के २१ क्रम ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २२ इष्ट (अनुकूल) ॥५३॥ २३ हे राजा रामसिंह ॥५४॥

हड्डन जंयमय विदित हुव, सुजसछत्त भुवसीस ॥ ५४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुमद् १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरविख्यापनीयबुन्दीवसुधावरहड्डाधिराजनारायणदास १८७१ चरित्रे सूचितसम्वत्समयपूर्वबुन्दीशस्वसन्ततिपाणिपीडनपूर्वस्वानुजनरबद १८७२ प्रौढपुत्रचतुष्क ४ परिणायन १, ज्येष्ठकुमाराऽर्जुन १८८१ गुहिलपुत्रीजयवत्या १८८१ दिपत्नीचतुष्टय४ द्वितीय२ भीम १८८२ तोमरी १८८१प्रभृतिजायाचतुष्क ४ तृतीय ३ पूर्णमल्ल१८८३ शैषोदी १८८१ प्रमुखजायात्रिक ३ चतुर्थ ४ मोकल१८८४ राष्ट्रकूटी १८८१ पुरोगभार्याचतुष्टयी ४ सानुक्रमपरिणायन२, तदनन्तरहड्डाधिराजसमयप्राप्तयुववयस्कस्वकीयपट्टपतिकुमारसूर्यमल्ल१८८१संकुवाणी १८९१ प्रभृतिसहधर्मिणीचतुष्क ४ पाणिग्रहण ३, तत्पञ्चम५ विवाहसन्देहसूचनापुरस्सरभोजिष्येयसहस्रमल्ल १ सप्तल २सोदरद्वय

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य बुन्दी के भूपति नारायणदास के चरित्र में जनायेहुए सम्वत् के पूर्व बुन्दीश का अपनी सन्तान के विवाह करने से पहले अपने छोटे भाई नरबद के बलिष्ठ चार पुत्रों का विवाह करना, बडे कुमर अर्जुन को गुहिल पुत्री जयवती आदि चार स्त्रियें, तीसरे पूर्णमल्ल को शीशोदिनी आदि तीन स्त्रियें और चौथे मोकल को राठोड़ी आदि चार स्त्रियें अनुक्रम से व्याहना, जिस पीछे हड्डाधिराज का समय पर युवावस्था प्राप्त होने पर अपने पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल को झाली आदि चार स्त्रियें व्याहना, पांचवें विवाह में सन्देह की सूचना करने के साथ पासवान के पुत्र सहस्रमल्ल और सातल को अपने अपने वर्ण की कन्या विवाहना, नरबद के जेष्ठ कुमर अर्जुन के औरस पुत्रों की प्रत्येक माताओं की प्रतीति के साथ उनमें प्रथम हुए और आगे होनेवाले सुर्जन करण आदि बडे तीन कुमरों

स्वसवर्णाकन्यायुग२करग्राहणा४, नारवदज्येष्ठकुमाराऽर्जुनौ१८८।१
रसप्रत्येक १ प्रसूप्रतीतिप्रथमोपेतभूत १ भावि २ सुर्जन १८९।
१ कर्णा १८९।१ दिज्येष्ठकुमारत्रय ३ वंशप्रवर्तिष्यमाणत्व १ शि
ष्टचतुष्टय ४ निस्सन्ततिसंस्थास्यमानत्व २ शंसनसहितप्राप्स्यमा
नपुत्रपार्थिवत्वनिदानककुमारार्जुना १८८।१ऽनुजत्रय ३ प्रत्येक१
पाणिपीडनसंख्यासमर्थन५, दायप्राप्तजैत्रदुर्गाद्वितीय २ नारवदभी
म १८८।२ सुतसिंह१८९।१ सन्तानसिंहभीमपुत्रो १६ पटंकिहड्डकु
लषोडश१६ भेदभाविताभाषणा६, वण्टविभक्तहीरडोलीनिवेशतृ
तीय ३ नारवदपूर्णमल्ल १८८।३ वंशतत्पुत्रहम्मीर १९०।१ हेतुकह
म्मीरको१७ पटंकिहड्डकुलसप्तदश१७ भेदप्रवर्तिष्यमाणत्वप्रकट
न७,वसुधाविभागाप्तयाक्षमूलचतुर्थ४नारवदमोक्कला१८८।१ऽन्वय
स्वान्तर्भूतभविष्यद्भेदान्तसहितमोकलपौत्रो१८ पपदकहड्ड१ वंशा
ष्टादश१८भेदभविष्यमाणताख्यापन८,हड्डाधिराजमुख्यकुमारसूर्य
मल्लौ १८८।१ रसैक १ कुमाराऽधमसुरत्राणा१८९।१ हड्डवतीराज्य

के वंश की प्रवृत्ति और बाकी के चारों के निस्सन्तान जाने के कथन के साथ
इसका पुत्र राज पावेगा इस कारण कुंवर अर्जुन के तीनों भाइयों के प्रत्येक
विवाह की गणना का समर्थन करना, जैत्रगढ पानेवाले नरवद के दूसरे पुत्र
भीम के पुत्र सिंह के सन्तान का 'सिंहभीमपोता' इस पदवी से आनेवाले
समय में हाडों के कुल में सौलहवें भेद का कथन, बंट में हिंडोली पानेवाले
नरवद के तीसरे पुत्र पूर्णमल्ल के वंश में उसके पुत्र हम्मीर के कारण 'हम्मीर
का' इस पदवी से हाडों के कुल में सत्रहवें भेद की प्रवृत्ति प्रकटना, भूमि के
विभाग में अक्षमूल पानेवाले नरवद के चौथे पुत्र मोकल के वंश में अपने भीतर
आगे होनेवाले भेद सहित 'मोकलपोता' इस पदवी से हाडों के वंश में अठा
रहवें भेद की सूचना करना, हड्डाधिराज के पाटवी कुमर सूर्यमल्ल के एक औरस
अधम पुत्र सुरताण से आगे आनेवाले समयमें हाडोती के राज्य की हानि दिखा
ना, कथा के सम्वत् से पहले समय में जनायेहुए अपने अपने सम्वत् में उत्पन्न
भिन्न अवस्था के अन्तर से सुर्जन का सुरतान से पहले होना और बाकी सन्तान
का सुरताण के जन्म सम्वत् से पीछे जन्म होने का समर्थन करना, बुन्दीश के कु

हानोदर्कदर्शन ९, कथाऽवधिशकप्राक्समयसूचितस्वस्वशकसमु द्भूतविविक्तवयोन्तरसुजर्न१८९१ सुरत्राण १८६१ दिग्राथस्यपूर्व कखिलसन्ततितच्छकार्वाचीनकालसमुद्भवनसमर्थन१०, बुन्दीश कुमारकुमारसुरत्राण १८९१सम्भवशकानन्तरवर्षयवनेन्द्रमुगलबा बर ३० दिल्लीपट्टप्रापणसमकालहड्डराडिक्कोपटंकियवनप्रवीरप्रति घातनं ११ सप्तविंशो २७ मयूखः ॥ २७ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सूचित सक १५८१ लग्गत समय, बैरिन कारि दहबट्ट ॥
माधव२ऋतु बावर ३० मुगल, पायो दिल्लिय पट्ट ॥ १ ॥
तदनंतर ग्रीखम तपत, सुनि मिच्छन बल सोर ॥
हड्ड१ नृपति इक्का१ हन्यौं, चढि इक्कल३१ चित्तोर ॥ २ ॥

घनाक्षरी ॥

अनुजसुता जो रान रानी नाम कर्मवति १८८१,
व्हाँही ताहि बुंदिय लिवाइआयो चहुवान ॥
ताके आनिबेकौं बीच पाउस४ बिताइ सबैं,
सारद५ सहस्रपंच ५००० पृतना६ पठाई रान ॥
अब्दप्रति अंगीकृत८ कीनौं उपहार७ सोहू,
संगहि पठायो गज १ तुरग २ असि ३ प्रधांन ॥

सर सूर्यमल्ल के कुमार सुरताण के जन्म के सम्वत् से पीछे यवनों के बादशा ह मुगल बाबर का दिल्ली के पाट पाने के समय में हड्डराज का इक्का प दवी वाले यवन वीर को मारने का २७ वां मयूख समाप्त हुआ ॥२७॥ और आदि से १७४ मयूख हुए ॥

१ बरबाद २ वसन्त ऋतु में ॥ १ ॥ ३इकले ने चढकर इक्के को मारा ॥ २ ॥ ४वर्षा ऋतु बिताकर ५शरद ऋतु में ६ सेना ७साजाना ८स्वीकार क्रिया ९नि जराना तलवार का १०म्यान

सामंत[1] १ रु सचिव २ सु लैकैं इहाँ आये विजे-
दसमी१० के दिवस निवेद्यो सबै सनमान ॥ ३ ॥
आयो संग रानको सनाभि[2] बंधु सूर सोहू,
रीझत रमायो मृगया १ दिक घनैं प्रकार ॥
पच्छैं[3] इक १ राखि प्रिय पाहुनैं प्रचुरैं[4] प्रेम,
दीनी सखि अनुजसुताकों दे विभव वीर[5] ॥
ओरओर जोर जवननको निरखि घोर,
दीनौं संग सोदरकोअर्जुन१८८।१ वडो कुमार ॥
बिक्रम १ उदय २ दो २ हू दोहिते लगाइ उर,
चित्रकूट पठये चमूं[6] प्रसरें[7] मंद[8]चार ॥ ४ ॥
राखिकछु बुंदीकी चमूँकों सीखदेत सारो,
अर्जुन १८८।१ कुमार राख्यो नीठिन निहोरि रान ॥
रायपुर पत्तन[9]सौं पैंसठिसहँस ६५००० पटा,
हठन झिलायो स्वीयँ[10] सौंहँ[11] प्रतिभू[12] प्रमान ॥
विज्ञतिलौं बुंदिय कहाइ नृप[13]सम्मतिसौं,
ताको अवरोध[14]हु बुलायो चित्रकूटथान ॥
सुर्जन १८९।१ प्रमुख[15] च्यारि ४ पहिले निवारि प्रजों[16],
अर्जुन१८८।१कै इतरँ[17] तहाँही भई हढदान ॥ ५ ॥
इक्का एक १ मार्यो दूजो २ प्रान दै प्रतार्यो[18] सुनि,
उरतैं उभै[19]रही जवनेस लायँ लाय लाईं[20] ॥
साजिदलबद्दलबिताइबरखाकौंनीठि,चालेमहमूद१रुमुदाफर२धरें[21]धुजाइ

१उमराव॥३॥२सपिंडभाई३पन्द्रह दिनतक४बहुत स्नेह से५समूह६सेना७फैला कर८धीरे चलनेवाली अर्थात् युद्धमें नहीं भगनेवाली॥४॥रायपुर नामक९नगर देकर१० अपनी११ सौगनों का १२ जमानत देकर १३ राजा की सलाह से. उसके१४जनाने को भी चित्तोड़ बुलाया. सुर्जन १५आदि पहिले की चार १६ सन्तानको छोडकर १७अन्य॥५॥दूसरे इक्के का प्राण देकर १८निकाला सुनकर हृदय में १९ अग्नि अग्नि २० लाकर २१ भूमि को धुजातेहुए

तोपनतैं गैल[1] गढ लोपन करत दोहू २,
आवत मिले यों पंच५ जोजनपैं प्रीतिपाइ ॥
मोतिके खजानाँ खोलिवेकों महिमान होइ,
चित्रकूट १ बुंदीरके चलाये छमें[3] छौनीछाइ ॥ ६ ॥
मानों आयो चित्रकूट१ लखि पाहुनैं प्रथम१पंथ,
लैन महिमानी पहिले १ की पहिलैं१ कैं रुपात ॥
बुंदीरकों बहोरि देखिवेकहि अहोरि[4] ओघ,
जोरि जिह्मगार्वत्त[4] प्रसार्‍यो पृतनाको[5] पात ॥
अहमदनेर१[6] मंडू२ अर्णव[7] उभय२ फूटि,
आये मेदपाट भर भीकर[9] भ्रमन भातें[10] ॥
ज्वाला जैरदायो[11] दुर्ग रानको विहानें[12] वेढ्यो,
मानों गरदायौं मेरु दैत्य १ दनुजात २ जात ॥ ७ ॥
आतेजानि अरिन बुलायो चहुवान १ रान २,
पाइ कछु कारन विलंवि सोपें नरनाह[13] ॥
अढ १/२ वलैं[14] बुंदीराखि अनुज बडे १८७१२ सहित,
नीठि निजपुत्र रविमल्ल १८८।१ हि अति उछाह ॥
दैल[15] १/२ दल सज्जि गो इतेमैं नृप नारायन १८७१२,
थप्पि वीर बाहिर कितेक दैन रतिवाह ॥
झारि तरवारि वाँरि[16] वैरिनकी फारि पूगो,
जैसैं जुग २ सिंहनमैं विक्रम वली वराँह[17] ॥ ८ ॥

१मार्ग के गढ़ों को मिटाते हुए २ समर्थ ३ पृथ्वी को छाकर ॥ ६ ॥ ४ सर्प के समान पलेटा लगाकर५सेना का पड़ाव फैलाया६ अहमदाबाद और मांडू रूपी दोनों ७ समुद्र फूट कर ८मेवाड़ में ९ भयङ्कर भ्रमियों से १० शोभा पाते हुए. ज्वाला से११जड़े हुए अर्थात् अग्नि रूपी कवच को धारण करनेवाले राणा के गढ को १२ प्रभात में ऐसा घेरा मानों दैत्य और दानव सुमेरु पर्वत को घेरें ॥७॥ १३राजा नारायणदास ने. आधी १४सेना सहित१५आधी सेना सझकर १६ वाड़ को तोड़कर १७ सूवर ॥ ८ ॥

दिल्लीदल दैबो कह्यो संभर १ सहाय हित,
भाख्यो रान २ उचित नहीं जय जवन जोर ॥
स्वीकरि सबन सोही जंत्रन[1] जमायो जुद्ध,
ज्वाल बिकराल छायो संतत[2] सिलगि सोर ॥
राति १ मैं हवाई माहताव ज्यौं दिखात दिन २,
नैंन चकचौंधैं उल्का[3] अर्चिनतैं[4] ओरओर ॥
प्रानबाद रान १ तुरकांन २ कैं मँडानौं तापैं,
एक १ मास ऐसैं घुमडानौं घमसान[5] घोर ॥ ९ ॥
दिल्ली पातसाह सुनि बावर ३० समर एह,
उरमैं अमाये प्रतिमल्लनपैं[6] रचि रीस ॥
अज्जँ[7] अपनावन चल्यो चढि सु सुनि तासौं,
पुव्व[8] लरिबेको मत मंत्रि[9] उभै २ अवनीस ॥
सेनासह पिहितैं[10] पदाति[11] रजनीमैं कढि,
सोवत प्रमत्त परे सत्रुन सिबिरैं[12] सीस ॥
द्वै २ दलैं[13] अचानक अचाह्यो अवमर्द[14] होत,
चौंकपरे काय कपिकच्छू[15] ज्यौं कसत कीसैं[16] ॥ १० ॥
पैठत अचानक कपोतकुल[17] स्येनंनसे[18],
हेतिनं[19] मच्यो झर झुकावत झकंट[20] झुंड ॥
प्रचुर प्रहार मंडि मृत्युके बजार वार,
पार अति धार लसैं लोहितैं[21] कैलित[22] कुंड ॥
चीरव्है हयन धीर वीरव्है वयन टूक,

१ तोपों से २निरन्तर ३अग्नि की४ज्वाला से ५ युद्ध ॥ ९ ॥ ६ शत्रुओं पर ७ आर्यों को ८ प्रथम ९ सलाह करके १० छाने ११ पैदलों को. शत्रुओं के १२ डेरे पर. दोनों१३सेनाओं से. बिना चाहा १४घोर युद्ध होते ही१६बन्दर अपने शरीर पर१५कैंवच की फली की रगड़ लगते ही चिमके इस प्रकार चौंक पड़े ॥१०॥१७ कपोतों के समूह में १८शिकरे(बाज)पक्षी घुसैं तिस प्रकार घुसते ही १९शस्त्रों का झड़ मचगया२०युद्ध में२१रक्त के२२प्रसिद्ध कुण्ड शोभा पाते हैं

चीरन्है चलैं कर मतीरन्है उडत मुंड ॥
स्वासन समेटैं चंद्रहासनके भेटैं भिन्न,
लंबे गज लेटैं पोगैरनमैं पलेटैं रुंड ॥ ११ ॥
बाहिर अनीकि अर्द्ध राख्यो रतिबाहकाजैं,
सहायकन्है सोहू इतेबिच उलटि आइ ॥
बुंदी सीम भूलौं बढि आयो इतैं बाबर ३० हू,
साम्हैं गज १ तुरग २ निवेदे नरवद १८७१२ जाइ ॥
आधी राति यों इत अचानकही कट्टा होत,
सत्यसंध बानांबंध सस्त्रन सजे सम्हाइ ॥
वीर उतहूके काचचूरीलौं भरे पै इहाँ,
अर्ज्जनको पुराय यौं रहे ए खरे खेतपाइ ॥१२॥
दस १० दस १० द्वार सज्ज तुरग तितेकन लै,
वैठि महमूद १ रु मुदाफर कढे लै प्रान ॥
तदपि घरीद्वै २ नग्गी वग्गी तरवारि भत—
नकी भंग्गी लग्गी कालिका किलकिलान ॥

घोड़ों की चीरें होती हैं और यवनों पर धीर वीरों के टुकड़े होते हैं और चीरें हो कर हाथ चलते हैं जिनके मतीरों(तरबूजों)के समान मुंड उडते हैं और श्वासों को समेटकर१खड्गों से मिलकर२कटेहुए३लम्बे लटेहुए रुण्डों को हाथी अपनी४सु एडों के अग्रभागों में पलेटते हैं ॥११॥ आधी फौज को रतिवाह देने के लिये बाहिर रक्खी थी वह भी आमिली, इधर बुन्दी की सीमा की भूमि तक बाद शाह बाबर भी आया बुन्दी से जिसके सन्मुख जाकर नरवद ने हाथी और घोड़े नजर किये और इधर आधी रात्रि को कतल होते ही ५ सत्य प्रतिज्ञा वाले ६ वीरों के वेष को धारण करनेवाले; अथवा युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा के चिन्ह को रखनेवाले ७ सम्हलकर शस्त्रों से सजे उधर के वीर भी काच की चूड़ी के समान टुकड़े होगये परन्तु यहां ८ आपों का पुण्य था ९ इस कारण युद्ध का खेत पाकर ये ही खड़े रहे ॥ १२ ॥दश ही दिशाओं का मार्ग लेकर इतने ही(दश दश)घोड़े लेकर महमूद और मुदाफर प्राण लेकर निकले तो भी दो घड़ी तक नंगी तलवार रुजी जिसमे भटों की१०भग्न भगी

अर्जुन १८८।१ कुमार घाय अष्टादस १८ पाय मारि,
मंडूकेवज़ीरहिं पर्‌यो जो आयु बलवान ॥
ढक्कूसुत*पूरन बिचार्‌यो चूक व्हाँ सो जानि,
पूरन८८।३ कुमार लीनों कीनों नृप सावधान ॥ १३ ॥
मालिक कढेहू मीर प्रथित प्रवीर केही,
बानैंकी त्रपासों खग्ग खेरत खिरत खेत ॥
साकिनिन सूर्द महमूदके चमूपति व्हाँ,
कुंदीभट मारे सोढा संकर दहर नेत२ ॥
अनुज नरेसके नृसिंह८७।३सौं भिर्‌यो सो पुनि,
सोये सूर दोहू२ टूकटूकव्है रननिकेत ॥
आली गन जोगिनि कपालीं उपहार आनैं,
लोहितकी लाली लीन काली नचैं ताली देत ॥१४॥
शत्रु पंच५ मारे तँहँ गुज्जरैं अमीर उभे२,
मालवके वीर असुहीनें दये तीन३ डारि ॥
सीसउद अमर२ गिराये खट६ बानैंबंध,

और कालिका कोलाहल करनेलगी * कोठारिया के राव ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल ने नारायणदास पर वहां चूक करना विचारा था सो कुमर१पूर्णमल्ल ने जानकर राजा को सावधान करदिया ॥ १३ ॥ मालिक बादशाहों के निकल जाने पर भी २ प्रसिद्ध कितने ही वीर ३ वीरों के विलास धारण करने की लज्जा से खड्गों को खेरतेहुए खेत में खिरपड़े शाकिनियों के ४ रसोईदार रूपी महमूद के सेनापति ने वहां पर बुन्दी के भट सोढा वंश के क्षत्रिय शङ्कर और ५ दहड़ वंश के क्षत्रिय नेत को मारा, फिर राजा के छोटे भाई नरसिंह से आकर भिड़ा सो दोनों वीर युद्ध के स्थान में कटकर गिरपड़े. जोगिनियों के गण की ६ पङ्क्ति; अथवा योगिनियों की सखियों का समूह वीरों के मस्तक ७शिव की८भेट लाती है और९रक्त की ललाई में लीन होकर कालिका ताली देकर नाचती है ॥ १४ ॥ महाराणा ने पांच शत्रुओं को मारे जिनमें दो मीर १० गुजरात के और तीन मालवा के ११ प्राण रहित किये. छः १२ बानाबंध वीरों को

चुंडहर भीम३ सुनैं तैसे पंच५ लिय मारि ॥
दासीभव रानके पितृव्य बनवीर४ वीर,
मिच्छ नव९ बानैंके बिदारे सुनैं फौजफोरि ॥
बुंदीपति१ तैसैं तीन३ गाजि रु गिराये हढ,
द्वैरही दल दलत मुहूर्त्त१ चली तरवारि ॥ १५ ॥
सारन१८६।१तनैं१के घाय च्यारि४जिहिं रारि लागे,
जानैं जसकर्ण१८६।२के तनैं२के छिपे हुव२ देह ॥
सेव१८६।२ सुत२ वारे ऐसैं एक१ असि लागो नव-
रंग१८३।२हर माधव १८६।१तनैं४सो भो नव९न नेह ॥
लागे हरपाल१८२।२हरदेव१८६।१के तनैं५के तीन३,
सेवारेहु भटन लहे इम छत अछेह ॥
द्वैरही जवनेस भजिजात बिलु मालिक यौं,
म्लिच्छन मचायो मंडलाग्रैंन महत मेह ॥ १६ ॥
लज्जित उभै२ही पुनि आवनको मंत्रकरि,
सेनाके स्वकीयन बुलात भये जातघर ॥
जान्यौं अब घेरा सब बिगारि बनैं न रुपि,
रहन मनैं न मन बावर३०को आनि डर ॥
ऐसैं कहिपठई मुदाफर१ महीपति२ सौं,
मंडू करि कपट गयो बचि तू पापपर ॥
बुंदीधर राखि छत्र१चामर चलायैं फेरि,
वदिहौं बहादुर धरेसनमैं धूर्ततर ॥ १७ ॥
खोजि रनखेत पर घायल पठाये उत,
लाये निज घायल चेढाड़ सबै नरजान ॥

१दासी के उदर से उत्पन्न हुए बणवीर नामक राणा के काका ने बाना धारण करनेवाले नौ म्लेच्छों को उस फौजफाड़ (डिङ्गल भाषा में फौजफाड़ वीर का विशेषण है)ने मारे सुने ॥१५॥ सारण के२पुत्र के३कन्धे पर४तलवारों का॥१६॥ ५ अपने लोगों को ६ तुरन्त ७ राजाओं में ८अत्यन्त धूर्त ।१७।९पालखियों में

आतहि ठहरि साह बाबर३० पठाये रीझि,
दोउ२नकौं खिलत१ उपेत खास फरमान२ ॥
संभरनरेस१ सह आदर लये जे जिम ॥
लाये तिन देखतही अनादर दियो रान२ ॥
विदित कहे ए एक१जातिके समान सब,
अवसर देखैं दुष्ट अज्जनके लैन थान ॥ १८ ॥
सोही सुनि अंतर सकोप मग्गहीसौं मुरि,
होइ अजमेर कीनौं पच्छोही प्रयान साह ॥
अर्जुन१८८।१ कुमार न्हान उच्छव अवधि रह्यो,
चित्रकूट अतुल उदार हड्ड नरनाह ॥
स्वानुज नृसिंह १८७।३ मर्यो अप्रज तदीर्य अर्थ,
द्वै२अयुत२०००० द्रम्म वंटे विप्रन विहित राह ॥
बुंदी वलि आइ बीर निखिल निवाजे वंबै,
विजयके वाजे लाजे ओदकि अरि सिपाह ॥ १९ ॥
दिल्ली जबै जाइ कछुकालहि विताइ साह,
चित्रकूट अहदी पठाइ मंगे करदाम ॥
सीसउद भाख्यो हम दैचुके तुमहु तीजे३,

१ सहित २ चहुवाण राजा ने आदर सहित लिया और महाराणा ने लानेवालों का देखते ही अनादर किया ३ आर्य लोगों के स्थान लेने को ॥ १८ ॥ नैरोग्यता का ४ स्नान करने के उत्सव की अवधि तक. हाडों का ५राजा चित्तोड़ में रहा ६ अपना छोटा भाई ७ विना सन्तान मरा ८ उसके अर्थ ९ रुपये १० फिर ११ सब को १२ नगारे १३ भय खाकर ॥ १९ ॥१४ शीघ्र १५ * खिराज के रुपये

* यहां खिराज के लिये बाबर बादशाह का अहदी भेजना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि महाराणा सांगा ने कभी किसीको खिराज नहीं दिया किन्तु कर्नल टॉड के लिखने अनुसार स्वयं बाबर ने महाराणा को खिराज देना चाहा जिसको महाराणा ने स्वीकार नहीं किया यदि इस युद्ध के होने का कारण देखना होवे तो 'टॉडराजस्थान' और 'तुजकबाबरी' आदि इतिहासों में देखैं ॥

बंटिलेहु राखि मंडू[1] अहमदनैर[2] सामैं ॥
चौंकि[2] चढ्यो सो सुनि बडेदल मुगलराज,
साम्हैं देन स्वागतैं[3] सज्यो यों समादिकैंग्राम[1] ॥
नारादिकअयन[2] नरेसहु स्वैंरित[6] ओडि,
दिल्लीपति कोप रानसीरी भो कलहकाम ॥ २० ॥
बुंदीसहिं वरज्यो जुरीकौं जिन तोरो काहि,
तोहु मरिवेके मत नेहहि भयो निदान ॥
भाये बिनु सीस बाहिवेमैं बिरुदाये छाये,
ठाये[10] रसबीरमैं चलाये रान[1] चहुवान[2] ॥
पीरेखार अंकितैं[11] प्रदेस सबिसेस साम्हैं,
सेससिर दै पय असेसैंनकै[12] अवसान ॥
स्वागतैं[13] समैंही खग्ग खूब खुलि खेल्यो प्रलै,
पावकैंसो[14] पेल्यो झेल्यो सीमापर सुलतान ॥ २१ ॥
मिलत अनीनैं[15] धूजि दूरनके[16] बोल सहि,
भाजे दूर दूरन के[17] कूरनकै[18] ओघैंइम[19] ॥
रारिरथ जूरनके[20] धवल धुरीन जुरे[21],
हूरनके[22] लोभ संघ सूरनके अप्रतिम[23] ॥

१ मिलाप करके २ क्रोध करके ३ आये का आदर करने के लिये ४ सम् है आदि में जिसके ऐसा ग्राम अर्थात् महाराणा संग्रामसिंह ५ नार है आदि में जिसके ऐसा अयन अर्थात् नारायणदास राजा भी ६ शब्द से निष्ठा करनेवाले धर्म को अर्थात् क्षत्रिय धर्म को शिर पर रखकर दिल्लीपति के कोप में राणा का सीरी हुआ ॥ २० ॥ ७ कारण. विना ८ मस्तक प्रहार करना ही अच्छा लगा ९ शोभायमान हुए. वीर रस में १० ठहरे हुए. पीले खाल से ११ पहिचाना जावै ऐसे प्रदेश में विशेषता पूर्वक सन्मुख जाकर शेषनाग के मस्तक पर पग देकर १२ सम्पूर्ण का अन्त करने को १३ आये हुए का आदर करने के समय खड्गों से खूब खुलकर खेला; और प्रलय की १४ अग्नि के समान ॥२१॥ १५ सेना मिलते ही १६ दूर के वचन सहने से ही १७ कितने ही १८ कायरों के १९ समूह दूर दूर भगे और युद्ध रूपी रथ के २० जूड़ों में धुर के धारण करनेवाले धवल (बैल) २१ जुपे. इसी प्रकार २२ अप्सराओं के लोभ से वीरों के २३ असदृश (अपने

शान १ चहुवान २ पहु पानि पान पूरनके,
चाले चमू चूरनके कौरक ४है कुंठकिम ॥
मुंड मुगलनके महँर्घ मुगलानिनके,
चूरनके साथी त्यौं सूरनके पिंड जिम ॥ २२
चाले चंद्रहास चहुँ ४ ओर चपलासे चल,
कादंबिनी कटक दुहूँ २ दिस दिखावैं द्योतें ॥
को के.दूत कज्जनके सज्जन भिराय भूत,
तंज्जनके त्रास मंडैं मंज्जन सोनित स्रोत ॥
अर्जन असि१नें छिन्न प्रोथित गदारन गज,
लोटे लखि कुंतँ ३ कार्सू ४ पट्टिसँ ५ प्रदर ६ प्रोतें ॥
के तजि कवादे वृथा वाहु भर लादे सुरि,
मादे मन मोतिसौं खुसादे खानजादे होत ॥ २३ ॥
चामीकर वंगर विचित्र गजदंत त्यौं,
मानहु मुसल लंब सदन सह सुहात ॥

सदृश कोई अन्य नहीं ऐसे) वीरों के समूह जुडे; अथवा आर्यों के सदृश यवन नहीं हैं ऐसे वे वीरों के समूह जुडे. राणा और चहुवाण दोनों राजाओं के १ हाथ २ पूर्ण पराक्रम से चले सो सेना के चूर्ण के ३ करनेवाले होकर कैसे ४ रुकैं. मुगलों के मस्तक ५ महँगे मुगलानियों के ६ चूड़ों के साथी होकर गिरते हैं जैसे वीरों के पिण्ड भी, अर्थात् इधर तो मुगलों के मस्तक और वीरों के शरीर गिरते हैं और उधर मुगलानियों के महँगे चूड़े गिरते हैं ॥ २२ ॥ चारों ओर ७ तलवारें बिजुली के समान ८ चपल होकर चलीं सो ९ मेघमाला रूपी सेना में दोनों ओर १० प्रकाश दिखाती हैं. कोई कोई और कितने ही दूतों का कार्य करके भूत परस्पर सज्जनों को भिड़ाकर ११ ताड़ना के भय से १३ रक्त के प्रवाह में १२डूबजाते हैं अर्थात् डुबकी मारजाते हैं. १४ आर्यों की १५ तलवारों से कटेहुए १६घोड़ों को और गदा से लोटे हुए हाथियों को देखकर और १७ भाला, १८ बर्छी, १९ कटार और २० तीरों के २१ प्रवेश होने से कितने ही खानजादे कबाओं को छोडकर भुजों को वृथा भार से लादेहुए मरेहुए (मुर्दा) मन से मुड़कर मृत्यु से खुशादा होते हैं, अर्थात् मृत्यु के कारण उपरोक्त भार से छूटजाते हैं ॥ २३ ॥२२स्वर्ण के

ऊँधे झुकि झंडे खैर खंडे के प्रहारपरैं,
सैलके सिखरसौं ज्यौं तुंग तालतरु पात ॥
सीसोदन हड्डन सम्हारे सत्रु सीमापर,
हेतिनके मारे मतवारेलौं तँवारे खात ॥
बाबर ३० के बिदित बहादुर सिपाह चीतें,
काबल जे जीते इहाँ रीते बल बीतेजात ॥ २४ ॥
चोरैं चाहि चिंतत झकोरैं असि रानभट,
औरैंगे अहोरैं दोरैं बाबर ३० के भोरैंभीर ॥
जोर जब जोरैं बढि आतन बिछोरैं केक,
लाघव के छोरैं वार तोरैं सिर मोरैं मीर ॥
मोदन बलापतिको ओदन उजेरि इत,
तोदन तुरक्कन बिनोदन धरतधीर ॥
होदनमैं कदि के निसादिनके गोदनमैं,
मोदनमैं मलपि कटार हनैं हाडे बीर ॥ २५ ॥
जोरको जमत घमसान घोर दोहूँओर,
जातजात टिकत जिहाज जैसैं चक्रबात ॥

धगड़ लाहत आश्चर्यकारी हाथियों के दन्त गिरते हैं सो मानों श्यामों स हित लम्बे सूरज शोभा देते हैं १ तीक्ष्ण शस्त्रों के प्रहार से कितने ही झंडे ऊंधे होकर हाथियों से गिरते हैं सो मानों २ पर्वत के शिखर से ३ लम्बे ४ ताड़ के वृक्ष गिरते हैं ५ शस्त्रों के मारे ॥ २४ ॥ राणा के वीर चौड़े खेत चाहकर तलवारें झकोलते हैं और बाबर के भय से अन्य ऊमीरों के हाथियों को दौड़कर रोकते हैं बहुत शीघ्रता करते हैं और जो बढ़कर आते हैं उनको बिखेरते हैं, कितने ही शीघ्रता से वार करते हैं सो मीरों के मस्तक तोड़ते हैं और उनको पीछा मोड़ते हैं ६ प्रसन्नता से आडावळा नामक पर्वत के पति का ७ अन्न उजालते हैं और ८ क्रुद्ध हुए तुरकों को धीर लोक प्रसन्नता से धारण करते हैं, कितने ही होदों में कूदकर हाथियों के सवारों की गोदों में हर्ष पूर्वक मलफ लगाकर हाडे वीर कटारें मारते हैं ॥ २५ ॥ इस प्रकार जोर का भयङ्कर युद्ध जमने में दोनों ओरवाले जाते जाते खड़े रहजाते हैं जैसे १ बगूले

द्वै २ ही मार मचत गता१गत रचत मानूँ,
ओघके उफान न्हैंदिनीपति हिलो रैंखात ॥
मैंचिमैंचि दृगन पलावत पकरि केक,
ऐंचि ऐंचि आनैं अवैमर्दके असह्घात ॥
थहरिथहरि थू छी प्रहरि प्रहरि फौजैं,
लहरि लहरि पुनि ठहरि ठहरिजात ॥२६॥
उग्रंतम अंस आइ रुकत इते मैं अर्क,
जोर जवननको बढ्यो अति प्रथित प्रान ॥
रानकह्यो चित्रकूट लैकैं लरिये वरहैं,
सबके मरत मिटैं मनतैं बिजय मान ॥
हड्डनृप भाख्यो आपसेको भजिबो न नीक,
जैहैं ठहै अनृत पद वजिबो स्वयं दिवान ॥

(चक्राकार) पवन से डूबता हुआ जहाज बच जाता है और दोनों सेनाओं के मार मचने में जाना आना रचते हैं सो मानों उफान के समूह से; अथवा समूह के उफान से १ समुद्र हिलोरें खाता है नेत्र मीच मीच कर कितने ही भगेहुओं को खींच खींच कर २ युद्ध के असह घात में लाते हैं सो धूज धूज कर थुः थुः छिः छिः आदि अवज्ञा के वचन कहते हैं और प्रहार कर करके फौजें झुक झुक कर फिर ठहरती जाती हैं ॥२६॥ जिस समय ३अत्यन्त ऊंचे ४भाग पर आकर अर्थात मध्यान्ह समय में सूर्य रुका तिस समय अत्यन्त५प्रसिद्ध बलवाले यवनों का जोर बढा. राणा ने कहा कि चित्तोड़ में जाकर लड़ना ठीक है यहां सब के मरजाने से आगे विजय करने का मान मिटजावेगा तब हाडा राजा ने कहा कि आप जैसों का भगना उचित नहीं है क्योंकि फिर आपका*दीवान

---

*मेवाड़ देश के राजा एकलिंगेश्वर महादेव और महाराणा दीवान(प्रधान) माने जाते हैं वह दीवानपन बुन्दी के राव नारायणदास को देकर महाराणा सांगा का भागने का विचार लिखा सो असत्य है; क्यों कि प्रथम तो इस युद्ध में मेवाड़ के इतिहास 'वीरविनोद, टॉड राजस्थान और तुजकबाबरी' आदि इतिहासों से नारायणदास का होना ही नहीं पायाजाता परन्तु उस समय बुन्दी का राज्य चितोड़ के मातहत था जिसकी पुष्टि 'तुजकबाबरी' से भलीभांति होती है इस कारण यदि नारायणदास इस युद्ध में गया होवे तो आश्चर्य नहीं परन्तु महाराणा का भागने का विचार लिखा सो सर्वथा असत्य है; क्योंकि लड़ाई के प्रारम्भ में ही महाराणा के ललाट पर एक तीर ऐसा लगा कि जिससे महाराणा मूर्छित होगये जि

रानकह्यो कहू यह राखहु सुनत चहु—
वान बढ्यो अग्र पीठिदीनौं दै अभय रान ॥ २७ ॥
रानके प्रधान भट भाखी संकुआँन सोही,
चामर लजैंगे ए भजैंगे जब भूमिधनैं ॥
सोहु सुनि रान ताहि चामर दुव २ हि दैकैं,
भाख्यो आपही अब निवाहहुगे चामरन ॥
सीसोदन ईस ऐसैं कढन बिचारयो तहाँ,

पद झूठा है. राणा ने कहा कि यह दीवानपन आप रक्खो यह सुनते ही चहुवाण आगे बढा और राणा को पीठ पीछे लेकर अभय दिया ॥ २७ ॥ महाराणा के मुख्य १ उमराव २ झाला ने कहा कि ये चमर ३ बुन्दी के राजा पर होवेंगे तब लज्जा पावेंगे, यह सुनकर महाराणा ने दोनों चमर उस झाला को देकर कहा कि इन चमरों का निर्वाह आप करो, इस प्रकार सीसोदियों के पति ने निकलना चाहा तहां बुन्दी के भूपति और

नको मूर्छित दशा में ही जोधपुर का राव गांगा और आमेर का राजा पृथ्वीराज युद्धभूमि से लेनिकले जिस पीछे स्वामी के बिना सेना का लड़ना असम्भव समझकर मेवाड़ के उमराव सिरदारों की सम्मति से हलवद के झाला अज्जा ने छत्र चमर आदि महाराणा के राज चिन्ह लेकर हाथी पर चढकर युद्ध किया जिससे मेवाड़ की सेना अपने स्वामी को युद्ध में स्थित जानकर बाबर की सेना से लड़ती रही. इस युद्ध में बाबर का पराजय होना और महाराणा का विजयी होना लिखा सो भी सत्य नहीं है क्योंकि युद्ध के प्रारम्भ में ही रायसेण का राजा सिलहदी तवँर ३५००० सवारों से महाराणा की फौज से निकल कर बाबर से जा मिला और जिस पीछे महाराणा के मूर्छित होकर निकल जाने से बहुधा राजा और मेवाड़ के सिरदार महाराणा के साथ निकल गये इस कारण अन्तिम फतह बाबर की हुई और यह युद्ध चित्तोड़ के समीप होना लिखा सो भी ठीक नहीं क्योंकि यह युद्ध विक्रमी सम्वत् १५८४ में चैत्र शुक्ला पूनम के दिन आगरा से २५ कोस के अन्तर पर बयाना के मुकाम पर हुआ था और इस भगेहुए बाबर से बुन्दी के समीप पाटण ग्राम में नारायणदास के भाई नरबद का युद्ध करके माराजाना लिखा सो भी सम्भव नहीं होसक्ता, क्योंकि यह युद्ध ही आगरा के समीप हुआ था तो भागी हुई सेना के मार्ग में बुन्दी का देश आना कैसे सम्भव होसक्ता है? इसके अतिरिक्त बाबर का विजय और महाराणा का पराजय होना बहुत इतिहासों से सिद्ध है तो इस ग्रन्थ में लिखाहुआ यह इतिहास सत्य नहीं माना जासक्ता और इस युद्ध के थोड़े ही दिन पीछे अर्थात् सम्वत् १५८४ के वैशाख में बसवा नामक ग्राम में इन महाराणा का देहान्त होगया इस पीछे इन महाराणा का मांडू और अहमदाबाद के बादशाहों से युद्ध होना लिखा सो भी ठीक नहीं है क्योंकि वे युद्ध इस युद्ध से पहले हो चुके थे जिसका वृत्तान्त आगे लिखा जावेगा ॥

बुंदी बसुधेस सेस मेवारेहु वीर गन ॥
झारि तरवारि मारि रोके निगमारि सों,
निहारि भय टारि ठहरानी रारि रान मन ॥ २८ ॥
पूरो पछितावो लै दिवानपद १ चामर २ दै,
देखि रिपु रोके रुकि रानाँ रह्यो पीठिपर ॥
लीनौं मारि तेगन दिवान पद तादिनतैं,
ओटभो अधीस बाँधि अंघ्रिनसौं आडधर ॥
सुनियत त्यौंही बोल वेलापैं उचारिवेमैं,
सादरीके झल्लनपैं तवतैं चलैं चमर ॥
केतेकहैं कढन विचारि रहिगो यौं रान,
केते कहैं याही इक १ बेरभज्यो चित्रकर ॥२९॥
रान बहुबिक्रम विचारत सुकवि स्वाँत,
भाजिबो न भावत दृढावत रुपान रारि ॥
बावर ३० के बारनलौं बढत बलापतिकी,
खंडखंड खेरत चलानी चंड तरवारि ॥
गंजि पखरालेन करालन गिराये रत्ति,
तालन तिराये सह ढालनैं गजन ढारि ॥
मारत मुगल भूत १ भावी २ सब या रनमैं,

मेवाड़ के बाकी के वीरों के समूह ने तलवार चलाकर १ वेद के विरोधियों (यवनों) को मारकर रोके सो देखकर भय छोडकर राणा का मन युद्ध में ठहरा ॥ २८ ॥ २ चरणों से ३ आडावला नामक पर्वत को बान्धकर ४ समय पर वचन ५ बोलने से सादड़ी के झालों पर तब से चमर चलते हैं ॥ ६ आश्चर्य करके ॥ २९ ॥ महाराणा का अत्यन्त पराक्रम विचार कर ग्रन्थकर्ता श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के ७ मन में उनका भगना नहीं जचता, किन्तु युद्ध में खड़ा होना ही दृढ होता है. बाबर के ८ हाथी तक. बुन्दी के ९ आडावला पर्वत के पति की १० पाखरवाले हाथी घोड़ों को मारकर ११ बडे निसानों सहित हाथियों को गिराकर मुगलों के मारने में दीवान पद पाने से पहिले और पीछे

संभरधनीके लागे *लोह चालीस रु च्यारि ४४ ॥ ३० ॥
बीररस घल्ले छल्ले **अंब्बुद अनीक उभै २,
वग्गन अचल्ले अैंचि खग्गन मचल्ले खेत ॥
कल्लेस्वर कातरें दहल्ले दूरहोत ठल्ले,
ठामठाम गिनत गिरे भटन लग्गे प्रेत ॥
पल्लेछेह भल्ले नाकनारिन नवल्ले नेह,
पैठे तोपलल्ले गति राग रस झल्ले चेत,
छाती धरि हल्लेमैं मुसल्ले १ मचकात इन्हैं२,
भल्ले हथचल्ले ए १ डिगात तिन्हैं २ टल्ले देत ॥ ३१ ॥
काली हास करिकरि मृडहिँ मनावैं मोज,
आली तास गावैं त्यौं उताली रास करिकरि ॥
डाकिनि विरूप त्रास करिकरि ताकैं भीरु,
बीरन रिझावैं बीर बीरनास करिकरि॥
जास बिसवास लै हुलासैं धरि आसपास,
कंकादिक क्रीडत पलासैं ग्रास करिकरि ॥

सब मिलाकर इस युद्ध में चहुवाण राजा नारायणदास के चवालीस * शस्त्र लगे ॥ ३० ॥ वीर रस से भरी हुई **मेघ के समान दोनों सेना यहीं तहां चलायमान नहीं होनेवाले वीर वागें खैंचकर तलवारों से युद्ध खेत में मचले (यहां वागें खैंचने के संबंध से वीरों का ग्रहण है) १ कलराये हुए स्वर से २ कायर डरकर दूर होते ही ठाम ठाम गिरेहुए वीरों के समूह को प्रेत गिनते हैं. वीर परले छेह (अपार) अप्सराओं के नवीन स्नेह में मिले और पड़े राग के रस में भिलेहुए चित्त से तोप के गोले की भांति घुसे, आगे लेकर मुसलमान इनको हटाते हैं और अच्छे हाथ चलानेवाले ये (आर्य) टल्ले लगाकर उनको डिगाते हैं ॥ ३१ ॥ काली हास्य कर करके ३ शिव को आनन्द मनाती (देती) है और इस काली की दासियें शीघ्रता से घूमर लगा लगाकर गाती हैं और डाकिनियें भयङ्कर रूप से भय देकर कायरों को देखती हैं और ४ बावन वीर वीरों का नाश कर करके वीरों को रिझाते हैं जिस का विश्वास करके ५ उत्साह धरकर आसपास ६ मांस की आशा कर करके मां

छोदनमैं पूरि चहुँ ४ कोदनमैं भूखे भूत,
ओदनमैं गोदन गिनावैं ग्रास करिकरि ॥ ३२ ॥
टारे पंचसहस्र ५००० प्रबीरन सहित सूधे,
डारे बाजि बूंदीपति व्यूह बिधिके बनाव ॥
पानिपंकी पोत लै पधारे आजि अर्णवमैं,
जवन जे जारे कोप बाडव दुसह दाव ॥
झारत प्रतलँ तेग वेग यौं बढत आगैं,
भागैं गज१ गंडक२ वराह३ न सहत घाव ॥
जोरि खासबारा सिंह संभरके पूगतही,
पूगो डरपैं डर जो बाबर ३० पैं बघबाव ॥ ३३ ॥
रान १।१ रु दिवान २।१ ए कुटुंबी१ आधईसीरी उभैर२,
सीसोदे१।१ रु हाडे२।१ हठी हालिकैं२ बडे बिधान ॥
हेति ११ १ हल २ राजी बाजी १ बैल२न गरिष्ठ गदा १,
कोटिसैं२न कीनैं सिर १ डैलं२न कचरघान ॥
लागैं लेत खेत नर १ खेत २ प्रेत १ टीडी टार २,
बोइ रजपूती १ बीज २ सोनित १ सलिल २ थान ॥

स भक्षी गिद्ध आदि पक्षी क्रीड़ा करते हैं छोदों में भरकर चारों१दिशाओं में क्षुभुक्षित भूत २ अन्न में ३ मस्तिष्कों (भेजों) को गिनाकर ग्रास करते हैं, अर्थात् उन भेजों को ही अन्न गिनकर खाते हैं ॥ ३२ ॥ ४ पराक्रम रूपी नाव लेकर ५ युद्ध रूपी ६ समुद्र में गये. खड्ग रूपी ७ हाथल का प्रहार करते इसप्रकार शीघ्रता से आगे बढने पर हाथी, गैंडे और सूवर घाव नहीं सहकर भागते हैं ८ चहुवाण रूपी केसरिसिंह के पहुँचते ही ९ सिंह के शरीर की गन्ध को मरुभाषा में बघबाव कहते हैं ॥ ३३ ॥ अब आगे रूपक अलंकार से कहते हैं कि राना और बुन्दी का राजा तो आधे आधे पांतीदार हैं और शिषोदिये और हाड़े १० हाली हैं ११ शस्त्र हैं सो ही हल हैं १२घोड़ों की पंक्ति है सो बैल हैं १३ बडी गदा है सो १४ चाँवर हैं. कटेहुए मस्तक रूपी १५ डकलों (ढेलों) का १६नाश किया अर्थात् पीस डाले और युद्धक्षेत्र ही क्षेत्र है जिस में मनुष्य रूपी लागत लेते हैं और उस खेत में प्रेत रूपी टीड़ियों को

पीतखार १ कुल्यां २ सन सींचि निपजाये नीकैं,
कत्त१नके दत्त२न चकत्त१नके खलहान २ ॥ ३४ ॥
ऐसे घोर समय कठोर आसि बाढ झारि,
ओरओर रोर यौं मचात अति जोरदार ॥
तोरि खासवारा द्रुम दुर्जन बिछोरि वेग,
जोरि तेगधारा ज्यौं बघूल प्रतिकूल पार ॥
दैकैं पीठि रान मान दैकैं अवसानहीकौं,
पहुँच्यौं दिवान भुज पौन पवमान चार ॥
देखत व्है दीन बहराम १ सेख कादर २ से,
बांदरसे विद्रुत बिलानैं द्रुत दिल्लीवार ॥ ३५ ॥
कादर १ कमाल २ बहराम ३ से भजत भज्यो,
वावर ३० करी तजि बिडौजा १ सन जैसैं जंभ २ ॥
मंदर १ व्है अर्णाव २ अनीकमथिडारयो रत्न १,
बिजय निकारयो मुख मिच्छन उतारयो अंभ ॥
आगैं लै अनीक यौं अनीक करयो अर्जुनलौं,
बितरयो सहस्रपंच ५००० बीबिनको बिप्रलंभ ॥
रान बिरुदायो आनि दुस्सह दिवान छक्यो,

टाल कर रजपूती का बीज बोया गया है जिसमें जल के स्थान में रक्त है सो पीले खाल रूपी १ नहर से सींचकर उत्तमता से निपजाये हैं वहां खड्ग रूपी दांतलियों से काटकर चकत्ता के वंश के यवनों को खले (कटेहुए धान के समूह) किये हैं ॥ ३४ ॥ ऐसे घोर समय में कठिन खड्ग का बाढ झाड़कर चारों ओर इस प्रकार भय मचाया खास वाड़ा रूपी वृक्षों को तोड़कर दुष्टों को बिखेर कर वेग को जोड़कर खड्ग धारा रूपी बगूले से प्रतिकूलता करके राणा को पीठ और मान देकर २ अन्त करने को पहुँचा ३ भुजबल रूपी ४ पवन की चाल से ५ बादल के समान ६ भगकर ७ शीघ्र दिल्लीवाले पिलागये ॥३५॥ बावर ८ हाथी को छोडकर भगा. ९ इंद्र से जैसे १० जम्भासुर ११ मंदराचल होकर. सेना रूपी १२ समुद्र को मथकर १३ पानी (तेज). अपनी सेना को आगे लेकर अर्जुन के समान युद्ध किया और पांच हजार यवनों की स्त्रियों

घुम्मत जो पायो * रनअंगनको जयखंभ ॥ ३६ ॥
निम्म १८५।३ हर तारागढनाह जो नृसिंह १८७।१ सूर ॥
सोयो सूरसज्जा सूर सत्रह १७ के प्रानहरि ॥
रंग हरपाल १८२।२ हर भीम १८७।२ दस १० पारि नव—
रंग१८३।२ हर गो भरत१८७।१ सोलह १६ कौं संगकरि ॥
डुंगर १८२।४ के वंस अवतंस यौं खजूरीपति,
अमर १८९।१ अमीर आठ ८ खंडे खेल खेत परि ॥
गंग १८८।१ थिरराज १८३।३ वंसी बारह १२ बिदारि नाक,
पहुँच्यो निसंक नाकं नाकवाम बाम धरि ॥ ३७ ॥
गोर गिरधरको तनूज १ तैसे तीन ३ हनि,
देवसुत चोवोरा नृसिंह २ पर्‍यो बीस २० पारि ॥
कूरम प्रताप ३ पर्‍यो एकादस ११ भंजि सुत,
सल्हको प्रमार बलराज ४ मर्‍यो नव ९ मारि ॥
संकर अनुज सोढा भक्खर ५ छ ६ सांधि सूतो,
नेतसुत दहर मुकुंद ६ झर्‍यो दस १० झारि ॥
रठउर धीरसुव बीरम ७ चउ४न चूरि,
चालुक विहारी ८ पर्‍यो दुर्जन दसक १० दारि ॥ ३८ ॥
भीमनाती स्याम ९ प्रतिहारहु बहुन वाढि,
जद्दव सुमेरुनाती अर्जुन १० अनेक हानि ॥
चालुक समाननाती सूर सिवराज ११ गिर्‍यो,
बारह १२ बिनासि बिनुसीसहु कृतांत बनि ॥
संहरि कितेक सूर सूरनेंसयन सूतो,

को पतियों का वियोग दिया * युद्धक्षेत्र का विजयस्तम्भ ॥ ३६ ॥ डूंगरसिंह के वंश का १ मुकुट २ स्वर्ग गया ३ दुःख में निःशंक रहनेवाला ४ अप्सरा को बाएं अंग में धारण करके ॥३७॥ ५ चावड़ा ६ विदारणकरके ॥३८॥ भीमसिंह का ७ पोता ८ यमराज बनकर ९ शूरशय्या पर सोया

विक्रम १२ भदोरे ६ चहुवानंनको मूर्द्धमनि ॥
दहिया प्रताप १३ सरबहिया करन १४ एते १९,
बुंदीके प्रवीर रहे खेत रसबीर खंनि ॥ ३९ ॥
बंसीपति सारन १८६।१ तनै १ के छंत छक्क ६ लगि,
सेव १८६।२ सुत मेव २ के संरीर लगे छत च्यारि ४॥
नौर द अर्जुन ३ नैं घाय चउ ४ पाये ताके,
भ्रात लघु भीम ४ नैं पचीस २५ गज इक्क १ पारि ॥
तासौं लघु पूरन ५ प्रघात पंच ५ पाये तिम,
दासीसुत सम्पल बंच्यो बपु छ६छत धारि ॥
चुंड१८६।२वारे नाती नगराज७रु उदय१८६।३ वारे,
नाती कुंभकर्ण८पाये छ६छ६हि बिजयं बिथारि ॥ ४० ॥
सीसउद अम्मर पिनाती हरि१ के छ६ छंत,
पित्थल बघेल नाती संभु २ के घट छ ६ घात ॥
संकरके नाती भट्टी भीम ३ कै प्रहार पंच५,
लागे नव ९ बंसीधर नाती कूर्म नंद ४ गात ॥
सैंगर त्रिविक्रमके नाती दीप५ देह दुव२,
पाये गोर गोवर्धन६ सुंदरके सूनु सात७ ॥
दहिया प्रतापसुत स्याम७ हुके सात७सर—
बहिया करन भ्रात दीप८के दस१० दिपात ॥ ४१ ॥
ऐसैंही सपिंड१ असपिंड२ असगोत्र३ बीर,
रानके मरे१ त्यौं परे२ घायन घनैं घुमाइ ॥
अज्जैं[10] दल द्वैरहू[11] आसि झारि थकिहारे पै[11],
दयो जय दुलभ धर्म इतहि संहाइ आइ ॥
कादर१ कमाल२ बहराम३ से भजंत भज्यो,

१ मुकुट. वीररस का २ खान ॥ ३९ ॥ ३ घाव ४ नरचंद के पुत्र ५ घाव ६ घाव ७ पोता ॥४०॥ ८ पुत्र ९ शोभायमान ॥४१॥ दोनों १०आर्यों का सेना११परंतु

बाबर३० बलापंतिसों लै हय१ गयं बिहाइ ॥
सिबिरकी सामग्री गईरहि अनेक यातैं,
बाबर३०के बाजे बजे रान द्रवाजे जाइ ॥ ४२ ॥
इतके सहस्रच्यारि४००० सोये सूरतल्प तँहँ ॥
पंद्रहसै१५०० रान१के दिवान२के सतपचीस२५०० ॥
पातसाह वारे पंचसहस्र५००० प्रबीर स्फरे,
बुंदीपति बिजय निदान कीनौं जगदीस ॥
बंधव सपिंड१ पंच५ सुभट चउद्दह१४,
रहे रन बलापतिके बीर इक१ ऊनबीस१९ ॥
याहीक्रम आठ८ आठ८ घायन घुमाये आप१,
साँप्ति२सह पाये त्यों प्रहार च्यारि औ चालीस४४ ॥४३॥

दोहा ॥

क्रमसोहन१८०११कुलजैत१८२१३कुल,देव१८८११रुराघवदास१८७१
आये भजि हद्दे उभय२, या रनतें जियआस ॥ ४४ ॥

पद्धपात् ॥

घुम्मत छकि घमसान नृपहिं नरजान रान धरि ॥
सब घायल तिम सोधि स्वगृहँ लैगो हित अनुसरि ॥
हायन१ प्रति उपहार किय जु दैनौं सु द्वि२गुन किय ॥

---

१ बुंदी के आडावला पर्वत के पति से. बाबर बादशाह हाथी छोडकर घोड़े पर चढकर २ भगा ॥४२॥ ३ शूरशय्या ४ बुंदी के राजा के. परमेश्वर ने इस विजय का ५ कारण बुंदी के पति को किया ६ चौंसठ घावों से घोड़े सहित आप घूमे [नारायणदास के पहले चवालीस घाव लगना लिखा इस कारण यहां जानना चाहिये कि बीस घाव७घोड़े के लगे उनको मिलाकर चौंसठ गिने हैं] ॥४३ ॥४४॥८ युद्ध में ९ राजा नारायणदास को पालखी में भर कर १० अपने घर

पाटव आयँ प्रभुहिं द्रंग सहसत्थ सिक्खादिय ॥
पठयो न कुमर अर्जुन१८८।१ तदपि बाबर३०सन हुव इम विजय॥
निजभटन आइ बुंदिय नृपहु हुलसि दिन्न गज१गाम२हय३ ।४५।

दोहा ॥

कति नव९ दिन यह रन कहहिं, जंपहिं कति नव९ जाम ॥
च्यारि४ जाम कति जन९ चवहिं, कोहु होहु रनकाम ॥ ४६ ॥
गो लुट्टत भजतहु मुगल, बुंदिय देस बिगारि ॥
तट चम्मलि नरवद११७।२ तहाँ, रहिय खेत रचि रारि ॥४७॥
अहमदपुर१ मंडू२ अधिप, अतिप्रसन्न सुनि एस ॥
दिय बावर३० प्रति संधिदल दब्बन अज्जं प्रदेस ॥ ४८ ॥
पठयो उत्तर मुगलपति, दै दोउ रन दलदूत ॥
आवहु तुम चित्तोर१ अब, पावहु कटक प्रभूत ॥ ४९ ॥
बुंदियगढ पुनि करहु बस, हैं अब हमहु सहाय ॥
उभय२ वंटि तुम लेहु इक१, इक१ हम जो धँन आय ॥५०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चमराशौ वीतिहोत्र वसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधेश्वरहड्डाधिराणनारायणदास १८७।१ चरितेबावर३० दिल्लीग्रहणदानहड्डाधिराडिक्काभिधयवननिपातरसमयशकसूचन१,पुनःस्वपत्नीसमाचिकारयिषुराणास्वीकृताब्दि

[चित्तोड़] १ प्रसन्न होकर ॥४५॥ नौ २ पहर ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ३ मिलाप करने के पत्र ४आर्यों के देश दबाने के लिये ॥४८॥ ५ पत्र ॥४९॥ ६ बहुत सेना लेकर ७ अधिक आमदनी का देश होवेगा सो एक हम लेवेंगे ॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति नारायणदास के चरित्र में बाबर का दिल्ली नगर लेना और हड्डाधिराज का इक्का नामक यवन को

कोपायनसामग्रीसहितपञ्चसहस्र ५००० पृतनाप्रधानस्वसनाभिशूर बुन्दीप्रस्थापन २, प्रतिश्रुतोपायनाकियद्दिनदर्शितानेककौतुकदत्तोचितदेयनरेन्द्रसहायीकृतकुमारार्जुन १८८।१ सार्थसदौहित्रद्वय२ सुताप्रतिप्रस्थापन ३, सशपथसाहसदत्तराजपुरपत्तनप्रधानपञ्चषष्टिसहस्र ६५००० मुद्रायपट्टसगौरवसाधितबुन्दीशानुमतसमाकारिततदीयसर्वजनराणातदर्जुन१८८।१ कुमारस्वाश्रितीकरण ४, समभिषेणितमालव १ गौर्जरमहीशम्लेच्छद्वय २ चित्रकूटवेष्टन५,शीर्षोद्दसमाहूतसमसभसार्धसैन्यबुन्दीस्थापितमध्याऽनुजनरबदो १८७।२ पेतस्वीयकुमारसूर्यमल्ल १८८।१ सौप्तिकसनिदानबहिर्न्यस्तबलदलः युद्ध्यमानसौभाण्डिचित्रकूटप्रविशन ६, सस्मवमतदिल्लीशसहायनृपद्वयै २ क १ मासाऽवधिनालीयन्त्रप्रघातप्रणायन ७, श्रुतस्वसहायदिल्लीशाभिषेणनृपद्वीकृतपत्तद्वय २ प्रवीरशीर्षोद्द १ शाककुमर २ ज्याज्ञानिजकुट २ सपत्नयुग २ सैन्योपरिसौप्तिकसंस्पात

मारने के समय के संवत् की सूचना करना, फिर अपनी स्त्री को बुलाने की इच्छावाले राणा का अपने स्वीकार कियेहुए वार्षिक नजराना की सामग्री सहित पांच हजार सेना के प्रधान अपने सपिण्ड भाई सूर को बुन्दी भेजना, नजराने को स्वीकार करके कितने ही दिन अनेक उचित्त कौतुक दिखाकर राजा का सहाय के लिये कुमर अर्जुन को देकर दोनों दोहितों सहित पुत्री को भेजना, अपनी सौगन के साथ हठ पूर्वक रायपुर नगर के साथ पैंसठ हजार रुपयों का पट्टा देकर बुन्दी के राजा की सलाह से उसके सब लोगों को बुलाकर उस अर्जुन कुमर को राणा का अपना आश्रित बनाना, युद्धयात्रा करके मालवा और गुजरात के बादशाह दोनों यवनों का चित्तोड़ को घेरना, शीषोदिये के बुलाने पर हठ पूर्वक आधी सेना सहित अपने बिचेट भाई नर्बद सहित अपने कुमर सूर्यमल्ल को बुन्दी में रखकर रतिवाह के लिये आधी सेना बाहिर रखकर युद्ध करते हुए सुभाण्ड के पुत्र का चित्तोड़ में जाना, दिल्ली के बादशाह की सहायता की अवज्ञा करके दोनों राजाओं का एक महीने तक तोपों की घात से युद्ध करना, अपनी सहाय के लिये दिल्लीश की युद्धयात्रा सुन कर अपने दोनों पक्षवाले वीरों को पैदल लेकर शीषोदिया और चहुवाण दोनों भूपतियों का दोनों शत्रुओं की सेना पर रतिवाह पटकना,

न ८, सम्मवगतस्वसीमावधिसमागतदिल्लीशाभिमुखप्रस्थितनिवेदि-
तोचितोपहारनृपाऽनुजनरवद १८७।२ तद्गौरवसाधन ९, सहसासौ
प्तिकसमरपरास्तस्तोकसार्थसादीभूतयवनयुग २ पलायन १०, नि
पातितमालवपतिसचिवप्राप्ताऽष्टादश १८ प्रघातसायुर्बलकुमाराऽर्जु-
न १८८।१ रणपतन ११, नारवदपूर्णमल्ल १८८।३ ढक्कूसुतपूर्णमल्लप्रा
रब्धप्रच्छन्नच्छलबुन्दीशमारणोपायनिष्फलीकरण १२, प्रतिघाति
तबुन्दीभटद्वय २ गौर्जरसेनानी १ सहसंहृतानेकसपत्नबुन्दीशा
नुजनृसिंह २ द्रोहिद्वय २ परस्परप्रहारपरासुमहानिद्राविधान १३,
परलोकप्रहितपरसङ्ख्यासहितकियत्प्रवीरप्राणप्रहाण १ कियद्भट
प्राप्तप्रहार २ प्रख्यापन १४, दत्तनृपोपालम्भसमाहूतस्वसैन्यसहम
हमूद १ मुदाफर २ गमनानन्तरप्रेषितसजीवितपरप्रभिन्नसमानीत-
सप्रहारस्वीयनृपद्वय २ निमित्तसरणिश्रुतजयप्रसन्नबाबर ३० पट १
पत्र २ प्रेषण १५, शाकम्भर १ तत्समादानसहशीर्षोद्दारनादरणश्र

दिल्लीश को अपनी सीमा तक आया हुआ जान, सन्मुख जाकर उचित नजराना करके राजा के छोटे भाई नरवद का उसका वडप्पन रखना, अचानक रतिवाह युद्ध से हार कर थोड़े साथ से घोड़ों पर चढ कर दोनों यवनों का भागना, मालवपति के सचिव को मार कर अठारह घाव पाकर आयुष्य के वल से कुमार अर्जुन का युद्ध में पड़ना, नर्वद के पुत्र पूर्णमल्ल का ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल के प्रारम्भ किये हुए गुप्त छल से वुन्दीश के मारने के उपाय को निष्फल करना, वुन्दी के दो वीरों को मारनेवाले गुजरात के सेनापति और अनेक शत्रुओं को मारनेवाले वुन्दी के राजा के छोटे भाई नृसिंह इन दोनों शत्रुओं का परस्पर के प्रहार से माराजाना, परलोक भेजे हुए शत्रुओं की संख्या सहित कितने ही वीरों के मारेजाने और कितने ही वीरों के घायल होने की सूचना करना, वुन्दी के राजा को उपालम्भ देकर अपनी सेना को वुलाकर महमूद सहित मुदाफर के गये पीछे शत्रुओं के घायलों को भेजकर अपने घायलों को लानेवाले दोनों राजाओं के लिये मार्ग में विजय सुनकर प्रसन्न हुए वावर का खिल्लत और फरमान भेजना, उनको चहुवाण का ग्रहण करना और शीषोदिये का अनादर करना सुनकर भीतर क्रोधित हुए वावर

वणान्तःप्ररुष्टबाबर ३० दिल्लीप्रतिगमन १६, कुमाराऽर्जुन १८८१२
पाटवावधिचित्रकूटस्थितानिष्प्रजमृधमृतस्वानुजनृसिंह १८७१३ नि
मित्तद्विजदत्ताऽयुतद्वय २०००० द्रम्मसगौरवस्वपुरसमागतसौभाण्डि
जयसाधकसुभटसत्करण १७, विज्ञातराणाकृतनर्मसूचितवार्षिक
वसुमार्गणातिरस्कारससैन्यसन्नद्धसीमावधिसमागतबाबरा ३०ऽभि
मुखवर्जनविपरीतबुन्दीन्द्रसहायसङ्ग्रामसोत्कण्ठराणासङ्ग्रामस
मभिषेणन १८, पीतकुल्याप्रदेशसम्मिलितार्य १ म्लेच्छ २ वरूथि
नीजकुट २ समाघातसमारम्भण १९, बाबर ३० बलवारिधिविक्र
मवेलावृद्धिवेलादुर्गाश्रयचिकीर्षुप्रदुद्रूषुराणादीवानोपपदप्रधनप्रष्ठी
भूतहड्डपार्थिवप्रतिश्रवण २०, शीर्षोदस्वसूचकचामरझल्लजातीयस्व
वीरवर्यविशेषार्थवितरण २१, प्रक्षितबुन्दीपुरपृथ्वीपुरन्दरप्रणीतपर
पृतनाप्ररोधराणापलायना १ पलायन २ द्वापरपुरस्सरपरीक्षितप
ञ्चसहस्र ५००० प्रवीरोपेतयुद्ध्यमानबुन्दीपति १ दिल्लीपति २ सिन्धु

का पीछा दिल्ली जाना, कुमर अर्जुन के नैरोग्य होने तक चित्तोड़ मे रहकर विना सन्तान युद्ध में मरेहुए अपने छोटे भाई नृसिंह के अर्थ ब्राह्मणों को वीस हजार रुपये देकर बडप्पन सहित अपने नगर में आकर सुभाण्ड के पुत्र का विजय करनेवाले वीरों का सत्कार करना, सालाना खिराज मांगने पर महाराणा के किये हुए हँसी पूर्वक अनादर को जान कर अपनी सेना को सज्ज कर सीमा तक आये हुए बाबर के सन्मुख बुन्दीश को मना करने पर भी उसके विरुद्ध बुन्दीश का सहाय होना और उसकी सहाय से युद्ध की इच्छावाले राणा संग्रामसिंह का युद्धयात्रा करना, पील्याखाल (नाले) के प्रदेश में आर्य और म्लेच्छों की दोनों सेनाओं में युद्ध का आरम्भ होना, बाबर की सेना रूपी समुद्र की पराक्रम रूपी लहरों के बढने के समय गढ का आश्रय लेने के लिये भागने की इच्छावाले दीवान पदवी को धारण करनेवाले महाराणा का युद्ध में हाडा राजा के पीठ पीछे होने के लिये हाडा राजा का प्रतिज्ञा करना, शीषोद का अपनी सूचना करनेवाले अर्थात् राजा के चिन्ह रूप चमरों को झाला जातिवाले अपने श्रेष्ठ विशेष वीर के अर्थ देना, बुन्दी के राजा से शत्रु की सेना को रुकी हुई देख कर राणा का भागने और नहीं भागने के सन्देह करते समय परीक्षा कियेहुए पांचहजार वीरों सहित युद्ध करते हुए बुन्दीपति का दिल्लीश की सवारी के हाथी के समीप व्यूह रचे

रसमीपरूढवाटमुख्यम्लेच्छमण्डलमर्दन २२, हष्टकादर १ कमाल २ बहराम ३ प्रमुखपृष्टप्रवीरप्रद्रवत्यक्तसर्वशिबिरसम्भारसप्तिसमारूढबाबर ३० विद्रवण २३, समीपसमागतराणासघोटकचतुश्चत्वारिंश ४४ द्घातघूर्णमानमोहपूर्वरूपमत्तबुन्दीवासवविरुदविबोधन २४, सौभाण्डिसनाभिबान्धवपञ्चक ५ सामन्तचतुर्दशक १४ वीरस्वापविधान २५, बान्धवाऽष्टक ८ सामन्ताष्टक ८ पुद्गलप्रघातसङ्गतिसङ्ख्यान २६, मेदपाटाधिराजबन्धु १ भट २ वर्गमरण १ क्षतप्रापण २ नाम १ सङ्ख्या २ ज्ञाननिदानसामान्यकल्पनासूचन २७, समरसंस्थितबुन्दी १ चित्रकूट २ दिल्ली ३ भटसङ्ख्यानिगदनमोहन १८०।१२ वंशीयदेवराज १८८।१ जैत्र १८२।३ वंशीयराघवदासहड्डद्वय २ प्रधनचाकित्यपलायनप्रकटन २८, नृपसहायोपकारनम्रशीर्षोद्धसभ्रसभस्वस्थानीयसमानीतसर्वप्राप्तप्रहारप्रवीरपाटवसाधनानन्तरनियतपूर्ववार्षिकवस्तुजातद्विगुणोपहारप्रेषणप्रतिज्ञान २९, अर्जुन १८८।१ वर्जितस्वस्थानीयसमागतबुन्दीवसुधेन्द्रमृधमृतशूरसन्त

हुए मुख्य म्लेच्छों के समूह का मर्दन करना, कादर, कमाल और बहराम आदि पीठ के वीरों का भागना देखकर डेरों की सब सामग्री को छोडकर घोड़े पर चढ़कर बाबर का भागना, घोड़े सहित चवालीस घावों से घूमते हुए मूर्च्छा के पूर्वरूप वाले मत्त बुन्दी के राजा के समीप आकर स्तुति करके राणा का राजा को बोध कराना, सुभाण्ड के पुत्र के पांच सपिण्ड भाई और चौदह उमरावों का माराजाना, आठ भाई और आठ उमरावों के शरीर पर घाव लगने की गणना करना, मेवाड़ के स्वामी के भाई और उमरावों के समूह के मरने और घायल होनेवालों के नाम और संख्या नहीं जानने के कारण सामान्य कल्पना की सूचना करना, युद्ध में बुन्दी, चित्तोड़ और दिल्ली के वीरों की संख्या कहकर मोहन के वंशवाले देवराज और जैत्रसिंह के वंशवाले राघवदास दोनों हाडाओं के युद्ध से चकित होकर भागने को प्रकट करना, सहाय करने के उपकार से शीसोद का नम्र होकर हठ पूर्वक राजा को अपने स्थान पर लाकर सब घायल वीरों का इलाज कराने से नैरोग्य हुए पीछे प्रथम नियत कियेहुए सालाना वस्तुओं को दुगुना करके भेजने की प्रतिज्ञा करना, अर्जुन को छोड़कर अपने स्थान पर आयेहुए बुन्दी के भूपति का युद्ध में

तिसहसर्वसामन्तसत्करण ३०, त्रिधालेखज्ञाननिदानसङ्ग्रामसमयसीमासन्देहसमर्थन ३१, पलायनपथप्राप्तबुन्दीवशवर्त्तिवसुधाविभागविप्लवविदधानबाबर ३० वरूथिनीविग्रहनृपाऽनुजनरवद १८७१२ निपातसङ्क्षेपसूचन ३२, श्रुतैतदभीष्टप्रसन्नगौर्जर१ मालव २ म्लेच्छराजजकुट २ सन्धिदलदिल्लीपुरप्रेषण ३३, स्वीकृतसन्धि १ साहाय्य २ प्राप्तप्रतिपत्रबाबर ३० यवनयुग २ राज्यद्वय २ विप्लवविधित्सनमष्टाविंशो २८ मयूखः ॥ २८ ॥

आदितः पञ्चसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रन तजि पीरखारतें[1], मुरि बाबर ३० प्रतिमग्ग ॥
लुट्टे नृपके आढ्य[2]लखि, आये जे पुर अग्ग ॥ १ ॥
प्रथम १ मुकामहि पथ प्रजा, होत लूट लखि हानि ॥
नरवद १८७१२ प्रति बुंदियनगर, आक्रंदन[3] किय आनि ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रचुर[4] प्रजा पुक्कार सरन[5] रविमल्ल[6] १८८१ कुमर सुनि ॥
कांकाप्रति इम कहिय प्रथम नृप संग न लिय पुनि ॥

मरेहुए वीरों की सन्तान और सब उमराओं का सत्कार करना, तीनप्रकार के लेख जानने के कारण युद्धके समय की मर्यादा में सन्देह का समर्थन करना, भागते समय मार्ग में आईहुई बुन्दी की भूमि में उपद्रव करनेवाली बाबर की सेना के युद्ध में राजा के छोटे भाई नरवद के मारेजाने की संक्षेप से सूचना करना, यह अनुकूल वृत्तान्त सुनकर प्रसन्नता से गुजरात और मालवे के दोनों यवनों का मिलाप का पत्र दिल्ली भेजना, उस मेल को स्वीकार करके सहाय के लिये बाबर का उत्तर का पत्र पाकर दोनों यवनों का चित्तोड़ और बुन्दी दोनों राज्यों में उपद्रव करने की इच्छा करने का अट्ठाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २८ ॥ और आदि से एक सौ पचहत्तर १७५ मयूख हुए ॥ १७५ ॥

१ पीरखाखाल से २ धनवान् नगर को ॥ १ ॥ ३ पुकार (रोदन) ॥ २ ॥ ४ बहुत ५ मार्ग में ६ सूर्यमल्ल

सल्लै[1] पहहु सहि रहहिं प्रथित[2] तोतो कातरपन[3]॥
अप्पन दोउ २ न अधिप गिनहिं जिन्ह टारि लयो गन[4]॥
है वीर जदपि काका कहिय गढरच्छक नृप रक्खिगय[5]॥
तुम लाल रहहु पट्टपें तरुन हम रन हेरत वृद्धवय॥ ३॥
तुम सुपुत्र कुलतिलक पाइ तरुनत्त्व[6] पूर्वसहि॥
बिनुनृप सासन वीर उचित चढन न नँय[7] एसहि॥
कारोभुजंग कुमार तदपि सज्ज्यो नरवद १८७१२ तव॥
प्रजावती ढिग पहुँचि सोहु बुल्ल्यो निवेदि सव॥
ओवरे मध्य कछु मिस अटकि करि प्रतिभू[8] रक्खोरि कँहँ॥
दै धर्म सपथ[9] कुमरहिं विदित तिम नरवद१८७१२ हुव सज्ज तँहँ॥४॥
रोकि जननि रक्खोरि गदित[12] निज सौंहँ बार गत॥
कारो अतिगैर[13] कुमर रहिय फनपटक्कि कोप रत॥
सज्जि सवय[14] भट सत्थ कलह नरवद१८७१२ प्रयान किय॥
सहँसम्मल१ जिहिं सजत दासिकुमरहु निवारिदिय॥
जहुँ[15] लियउ जानि निहचै निधन[16] इम नरेस[17] मध्यमेंर[18] अनुज
गढलज्ज अप्पि तरुनन[19] गयउ भिरि रन परन दिखान भुज।
पट्टनि सन दिस पुव्व वार चम्मलितट आवत॥
कुसक घट्ट उपकंठ[20] परयो बावर३०दल[21] पावत॥
समय रत्ति तंस सीस कुसह नरवद१८७१२ सौप्तिक दिय॥
गरद हाबीनाँ गंजि परयो उप्पर संगरप्रिय[22]॥

---

१ गाल २ प्रसिद्ध ३ कायरपन ४ तो भी ५ पाटवी कुमर और युवावस्था होने के कारण॥ ३॥ ६ युवापन. यह ७ नीति नहीं है. सूर्यमल्ल काले सर्प के अंश से हुआ इसकारण उसको काला ८सर्प कहते थे ९ माता के पास १० जामिन ११ सौगन॥ ४॥ अपनी सौगन १२ कहकर १३ अत्यन्त जहरीला १४समान अवस्थावाले १५ मानों १६ नाश १७ राजा का १८ विचेट भाई १९ जवान अवस्थावालों को गढ की शर्म देकर॥ ५॥ २० समीप २१सेना २२ युद्ध का प्यारा; अथवा युद्ध ही है प्रिय जिसको

बज्जिग कृपान सहसा बिखम अद्धी रजनि अनेहं इम ॥
मंडिय बजार खुल्लि मृत्युके जगरी इत अतिकोप जिम ॥ ६ ॥
भिरत छबीनाँ सुभट प्रथम छकि लोह गये पर ॥
मरत१हनत धसिमाँहिँ परे जुज्झत बढि पद्धर ॥
जानि परिधिदल जुरत सत्रु पुब्बहि सचेतहुव ॥
त्रिसहस्र३०००न चढि तुरग समुह झेल्यो सुभांड१८६।४सुव ॥
भटपंचसत५००ननरबद१८७।२अभयपुब्ब१हिछकितहँ२झरिपर्‌यो ॥
बिल्लुसीस बरस बावन वयहु कलहं अद्ध३ घटिका कर्‌यो ॥ ७ ॥
किय़उ पुब्ब संकेत पुरी पट्टनि हाकिमप्रति ॥
सैरिभ६ बहु रनसमय आनि ढिग तुम सचेत अति ॥
बँलि तिन्ह शृंगर्न बंधि देहु मजराइ पलित्ते ॥
जोहि करत जवनेस विमन जानिय अब बित्ते१० ॥
परदल असेस नरबद१८७।२परत चिंति वहुरि भय चढि चलिय
मुगलान नतो इतकों मुररि बुंदिय ध्रुवं११ वेढैं वलिय ॥ ८ ॥
इहिं रन नरबद१अडर पर्‌यो हनि जवन पचीस२५न ॥
बिलुसिर पुनि खट६बह्लि पत्तं१२ सुरपुरं१३ निवाहि पन ॥
हत्थाउत३।१ हम्मीर२ पर्‌यो संहरि अरि पंद्रह१५ ॥
तिम घुग्घल१=१।१ हर तेज३ मिच्छनव९ मारि महामह ॥
लक्ख४रु कुबेर५हल्लू१८२।१कुलजतिम्म अनुपम६क्रम बंधु त्रय३
करि छक्क६त्रिक३रु दसक१०न कदन भये तुरन मिलि बीतभय९
खज्जूरीपति७ खेम पर्‌यो खट६ गेरि कदन मैंहिं१४ ॥

आधी रात्रि के १ समय. इस प्रकार उस रात्रि के २ जागरण करनेवाले ने; अथवा जगर (कवच) धारण करनेवाले ने ॥ ६ ॥ ३ सीधा ४ छबीना (चौकीदार) सेना को युद्ध करते जानकर. सुभाण्ड के ५ पुत्र को ॥ ७ ॥ ६ भैंसों को युद्ध के समय लाकर ७फिर उनके ८ सींगों से पलीते जलाकर बांध देना ९ उदास होकर १०मारेगये (मरे). बुन्दी को ११ निश्चय घेरते ॥ ८ ॥ १२गया १३स्वर्ग में ॥ ९ ॥ युद्ध रूपी १४कूप में गिराकर

रन लालाउत१०६।१राम१८१।१बच्यो वपु घाय अठ्ठ८बहि ॥
मुक्कल२नरवद१८७।२कुमर समर उवरयो इक१छत सहि ॥
पीछैंतैं यँहँ पहुँचि वन्यौं वंटक[1] दस१० अरि दहि ॥
तोमर प्रताप१ झल्ला रतन२ उभय२ मुख्य अरि प्रान[2] अहि ॥
सतपंच५००परे बुंदिय सुभट रन सह छतसत१००जियत रहि।१०।

दोहा ॥

अक्खय१८६।१कुल खटपुर अधिप, नरवद१८७।२बैर निहारि॥
[3]स्वांत मुदित संग्राम१८७।१सुत, भो किर्खिं[4]१मरत इभारि॥११॥
रक्खत हौंसहि[6] राज्यकी, प्रथम जिठ्ठ[7]१ पन पाइ ॥
पर्हु[8] मारयो२संग्राम१८७।१ पुनि, यह वैरहु अधिकाइ ॥ १२ ॥
जनकवैर[9]१ गुरुतां[10]२ जुग२हि, उर सल्लहिं जिम एस ॥
हनन नृपहिं चिंतत रहत, इक्खत छिद्र असेस ॥ १३ ॥
सो इम नरवद१८७।२ निधन[11]१ सुनि, बलि घायल२ बुंदीस ॥
होत अभीट प्रहृष्ट[12] हुव, संचत अघ भर[13] सीस ॥ १४ ॥
निरखहु हाहा राम[14]२०३।४ नृप, ऐसी वत्तन अज्ज[15] ॥
वरतैं मिच्छन हुकमवस, अचिरज वदत अकज्ज ॥ १५ ॥

पट्पात् ॥

नरवद१८७।२को इत निधन[16] सुनत बुंदियपुर सोचहिं ॥

१दंड करानेवाला. शत्रुओं रूपी पवन के लिये २सर्प(सर्प का नाम ही पवनाशन है इस कारण यह उपमा दी है) ॥ १० ॥ ३मन में ५ सिंह के मरने से ४ बन्दर प्रसन्न होवे इस प्रकार प्रसन्न हुआ ॥११॥ पहिले ही ७ पाटवी होने के कारण राज्य की ६ चाहना रखता था फिर ८ राजा नारायणदास ने संग्रामसिंह को मारडाला इससे वैर अधिक होगया ॥ १२ ॥ ९ पिता का वैर और १०बडा होने से दोनों कारण ॥ १३ ॥ नरवद का ११ मरना सुनकर १२प्रसन्न हुआ. मस्तक पर पाप का १३ भार संचय करके ॥१४॥ १४ हे राजा रामसिंह १५ आर्य्यलोग इन्हीं बातों से यवनों की आज्ञा में रहते हैं इसमें आश्चर्य करै सो निकम्मा है ॥ १५ ॥ १६ नाश

कारे[1]कुमरहिँ कछु न रम्य[2] भोगहु मन रोचहिँ ॥
माता चउ४ सह कुमर५ मंत्रि६ सुभट७न यह मंत्रिय[3] ॥
स्रवते घायन सुपहु१ तिमहि बत भट२ छत तंत्रिय[6] ॥
परिहैं जु सुनि चित्तोरपुर असुभ ततो भावी अटल ॥
यातैं बिगुप्त रक्खहु यहे नृप आवनलगं बुद्धिबल ॥ १६ ॥
दोहा—यह प्रबंध जनपद[9] अखिल, भयो प्रजा[10]प्रति भाखि ॥
सुहि कहाइ उत रान सन, रन सु गूढ लिय राखि ॥ १७ ॥
अर्जुन१८८।१लग घायल इम सु, रक्खी गोपित रान ॥
किय सुक्कल१८८।४इक१ छतैं[11] बिकल, बुंदिय प्रेतबिधान ॥१८॥
स्वँपति[12] अंत बुंदिय सुनत, नरवद१८७।१की जुगनारि ॥
कछवाही१ जद्दोनि२ किल[13], ज्वलनं[14] दये वपु जारि ॥ १९ ॥
अखिल होत पटुकल्प[15] उत, भूप त्वरा[16] करि भौन ॥
आवनलग्गो याहितैं, जबहु असुभ जान्यौं न ॥ २० ॥
यहहि हेतु गिनि अर्जुन१८८।१हिं सिक्ख न दिय सीसोद ॥
इक१ छत चिर[17] रहि याहुकै, मिट्यो निठिकरि मोद ॥ २१ ॥
नगर आइ जान्यौं सु नृप, वल्लभ[18] अनुज विनास ॥
जुग२ भ्रातनके सोक जुत, भो बिसिनी[19] हिमभास[20] ॥२२॥
द्विज अयुत१००००हिँ भोजन दयो, अयुत१००००हिँ रुप्पय अप्पि

१ कुमर सूर्यमल्ल का २ सुन्दर ३ सलाह की ४टपकते हुए घावों से ५ राजा है और इसी प्रकार उमराव भी घावों के ६ आधीन हैं सो यह ७खबर ८विशेष गुप्त रक्खो ॥१६॥ सब ९देश में १०प्रजा से कहकर. एक ११ घाव से विकल ॥ १८ ॥ १२ अपने पति का अन्त सुनकर १३निश्चय १४अग्नि में शरीर जला दिये ॥ १९ ॥ सब के १५नैरोग्य होने पर १६शीघ्रता ॥ २० ॥ एक घाव १७ बहुत समय तक रहा ॥ २१ ॥१८ प्यारे भाई का *नाश हुआ जाना. हेमन्त ऋतु की १९ कमलनी की २० शोभावाला हुआ अर्थात् कुम्हलागया ॥ २२ ॥

*यहां महाराणा सांगा से भगीहुई बावर की सेना से युद्ध करके नरवद का मारा जाना लिखा सो ठीक नहीं है इसका कारण ऊपर के नोट में लिख दिया गया है अतएव यह युद्ध किसी अन्य कारण से किसी अन्य के साथ हुआ होवेगा

प्रजावतिन हित तिन्ह तियन, मंडन[1] सिचय[2] समप्पि ॥ २३॥
बढ़िय कुलर अवरोध[3] बिच, लिसकरि अटक्यो सोहि ॥
काका लै सवयन[4] कियउ, जुज्झि मरन रन जोहि ॥ २४ ॥
मुगल[5]राज रन मोरिकैं, भानुराज १५५ कुलभान[6] ॥
आयो इम जय उल्लसत, हठ जस बज्जि दिवान ॥२५ ॥
जोगी इक १ कोउक जवन, यह उपपद दिय अग्ग ॥
जिमहि रान आये बजत, सिद्धन बचन निसग्ग[7] ॥ २६ ॥
सत्थ नृपतिके इक्क सब, सज्जि गये रनसूर ॥
बुंदिय कतिक निदेसबस, प्रथित रहे बलपूर ॥ २७ ॥
चुंड१८६।२उदय१८६।३कुल अवधि चढ़ि,सबहि मरन गय संग॥
पै खटपुर[8] पलटे प्रतिम[9], रह्यो पृथक रुचि रंग ॥ २८ ॥
नरबद १८७।२ को यातैं नृपति, अधिक पटा सु उतारि ॥
कछु ग्रामन खटपुर गयउ, वाके बस अनुसारि ॥ २९ ॥
छिद्र तकत पुव्वहि छली, अब अनिष्ट हुव एह ॥
सो परवस जात न सह्यो, इक्खत अहित अनेह[10] ॥ ३० ॥
छतनजुत[11] १ अरु हीनछत[12] २, मृतन[13] तनय ३ सनमानि ॥
ग्राम१बिभूखन२बाजि३गज ४, अधिप दये हित आनि ॥३१॥
क्रम सोहन१८०।११कुल जैत्र१८२।३कुल, देव१८८।१६ राघवदास।
बच्छोला १ कोटा २ बसति[14], आये भजि जिय त्रास ॥ ३२ ॥
बच्छोला १ कोटा २ सु बिभु[15], बुंदी भ्रातहि बेर ॥

भाई की स्त्रियों ने उन(ब्राह्मणों)की स्त्रियां को१भूषण२वस्त्र॥२३॥३जनाने में४ अपने समान अवस्थावालों को लेकर॥२४॥५बादशाह बाबर को युद्ध से भगाकर. भानुराज नामक चहुवाण के कुल का६सूर्य ॥२५॥ आगे किसी यवन फकीर ने यह खिताब दिया था इस कारण सिद्ध के वचन के७स्वभाव से(राणा दीवान बजते आये हैं. राणा के दीवान बजने का सत्य कारण ऊपर के नोट में लिखदिया है, यहां लिखा सो सत्य नहीं है)॥२६॥२७॥८खटकड़ पुर का पति ९ सदृश ॥२८॥२९॥१०समय ॥३०॥११घायलों का १२विना घायलों का और१३मरेहुओं के पुत्रों का सन्मान करके ॥३१॥ अपने१४निवास स्थान में ॥३२॥१५वैभववाले

छिन्नैं हुव २ हि महीप *छम, दंडयन नीति न देर ॥ ३३ ॥
अर्जुन १८८।१ आतहि करि अरज, पीछैं अवसर पाइ ॥
नृपतैं दोउ२न धाम निज, दिन्ने वहुरि दिवाइ ॥ ३४ ॥
अर्जुन १८८।१ के सोदर अनुज, पाये घाय पचीस २५ ॥
जो चिर१करि हुव स्वस्थ२ जब, सुपहु किन्न वखसीस ॥ ३५ ॥
करउर १ पुर गज जय३कलस २, निज तुरंग मृग४डान ॥
खास पट्ट ४ इक १ मनि५खचित, अप्पिय मिलि चहुवान॥३६॥
पुनि मुत्तिन भुज पुज्जिकैं, वहुत सिराह्यो बीर ॥
कहिय भीम १८८।२ मो लखत किय, चंद्र६हास गज चीर ।३७।
अर्जुन १८८।१ सुनि उल्लाँघ उत, करि जनको७चित कर्म ॥
बुंदिय आयउ रीतिवस, धारत लौकिक धर्म ॥ ३८ ॥
महिप ताहि हिय लाइ मिलि, मैं नरवद १८७।२ इम अक्खि॥
पूजे भुज गौरव प्रथि९त, रीति१०कथित हित रक्खि ॥ ३९ ॥
दिय पट्टनि १ पुर अरु द्विरद११, निज दलथंभन २ नाम ॥
खासबाजि३ पट४ भूखन५ रु, इक १चामर६ अभिराम॥४०॥
कर मुत्तिन पुज्जि रु कहिय, अब रहिये सुत अत्थ ॥
लहिये राज्य बिलास बहु, वहिये सुख भरि वत्थ ॥ ४१ ॥
दल१२ रानाँ पठयो तद१३नु, जँहँ सपथ१४न लिखि जाल ॥
इक १ वेर पुनि अर्जुन १८८।१ हिं, भेजहु मिलन भुवाल ॥४२॥
जो परबस चित्तोर जब, अर्जुन १८८।१ पठयो ईस ॥
न दयो रान सु आन पुनि, सपथ १भार २ धर सीस ॥४३॥

---

*समर्थ राजा ने ॥३३॥३४॥ १बहुत समय से २नैरोग्य ॥३५॥ ३जयकलश नामक हाथी४मृगडाण नामक खासा घोड़ा५मणियों का जड़ाहुआ शिरपेच और करउर नगर दिया॥३६॥ ६ खड्ग से हाथी की चीरें कर दीं ॥३७॥७ नैरोग्य ८पिता के उचित कार्य करके ॥ ३८ ॥ ९प्रसिद्ध१०ऊपर कहीहुई रीति से स्नेह रखकर ॥ ३९ ॥ ११ हाथी ॥ ४० ॥ ४१ ॥ १२पत्र १३जिसपीछे १४सौगनों के समुदाय

जवनागम *ध्रुव जानिकैं, उचित भीर हिय आनि ॥
नृप सम्मति लै अर्जुन१८८१सु, तत्थ रहिय जस तानि ॥४४॥
प्रवल वध्यो इत जोधपुर, मालदेव महिपाल ॥
लिन्नैं जिहिं अजमेर१लग, वहु गढ कटक१ बिसाल ॥ ४५ ॥
इत चालुक रैवतं२ अचल, सरवहिया रन१ सूर ॥
करन नाम वितरन२ करन, कविन करन दुखदूर ॥ ४६ ॥

षट्पात् ॥

याके कुल हुव अग्ग जई जसराज१ अतुल जस ॥
दुर्जनसल्ल२ उदार तिमहिं बिक्रांत भयउ तस ॥
विजय३ तास हुव बीर धीर रन१ दान२ धुरंधर ॥
याके हुव नृप एह करन४ जग किति बिसद कर ॥
केवर्त्त५ विदित याके कुमर ताकै नवघन६ होहि तिम ॥
ए भूप खट६ हि रैवत अचल जुरन१ दैन२हुव कर्ण जिम ॥४७॥

दोहा ॥

इनमैं अनुपम कर्ण४ यह, हुव इहिं समयं महीस ॥
जगदेवं पीछैं जसहिं, सहभटं जिहिं दिय सीस ॥ ४८ ॥
सत्तसई७०० मिलि कविनकी, कहुँ जावत इक१काल ॥
वालेसा४ संभर विजय, भिंट्यो सरनि भुवाल ॥ ४९ ॥

षट्पात् ॥

वासर कछु नृप विजय सुकवि रक्खेअति हितसह ॥

लिखकर ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ यवनों का आना * निश्चय जानकर ॥ ४४ ॥ बडी १ सेना से ॥ ४५ ॥ २ रैवत नामक पर्वत ३ दान में कर्ण के समान ॥ ४६ ॥ ४ वीर ५ उज्ज्वल कीर्ति करनेवाला ॥ ४७ ॥ ६ जगदेव ने कंकाली नामक भाटनी को मस्तक दे दिया था जिसपीछे यश के लिये जिसने ७ वीरों सहित; अथवा अपने उमरावों सहित मस्तक दिये ॥ ४८ ॥ किसी समय में सात सौ ८ चारण मिलकर कहीं जाते थे जिनको विजय नामक वालेसा ९ चहुवाण ११ मार्ग में १० मिला ॥ ४९ ॥

ब्याह१सँनहु अति बढत मन्नि अभिमत२ किन्नौं मह३ ॥
दुव२ दुव२ निज पट्टु दास पास रक्खिय इक१ इक१ प्रति ॥
थुक्कहिँ५ ओडत हत्थ किन्न स्वागत अनेह६ कति ॥
जिनमाँहि रत्ति कति सूढ जगि झुल्ले कत्थँनवीर ठहे ॥
मच्छरी माँहिँ भासत मनहुँ सरवहियनको सीर९ ठहे ॥५०॥
बिजय अग्ग यह बत्त दई प्रातहि कहि दासन ॥
संभर कुप्पि रहस्य१० जवहि बिस्वस्त११ बुल्लि जन ॥
अक्खिय ताहि उदंत१२ सुनत सुत्तन१३ इम अक्खहु ॥
देवी कँहँ बलिदैन पुष्ट इन्ह करत अहो१४ पहु ॥
अैसो न कोहु भासत१५ अधिप सिर इन्ह १६सटैँ सत्तसत७०० ॥
अप्पि रु उवारि चारन इते रक्खहिँ नाम दया१७नुरत ॥ ५१ ॥
इमहिँ बत्त तिहिँ अनुग कपट तंद्रित१८ निस किन्नी ॥
जगत हुते तिन्ह जोहि लीन मंचन सुहिलिन्नी ॥
इम अभीष्ट१९ आदरहु बननलग्गे सब दुर्बल ॥
राजद्वार तब रुद्द२० छितिप तिन्ह किय कृत्रिम छल ॥
हुव बत्त प्रकट तब इम कहिय २१सटि देहु जन सत्तसय७०० ॥
तजिदैहिँ जियत तोतो तुमहिँ भनित२२ बिनाँ सु टरैन भय ॥५२॥

विवाह१से२वाँछित३उत्सव. एक एक के पास अपने४चतुर दो दो सेवक रक्खे जिन्होंने उन चारणों के५थूक को हाथों में झेल कर कितने ही६समय पर्यन्त स्वागत किया७कथा कहने में वीर होकर कहा कि इस८चहुवाण में मानों सर वहियों का९मेल दीखता है॥५०॥१०एकान्त में११विश्वास के लोगों को बुला कर कहा कि१२वृत्तान्त. वे १३सोये होवें तब १४आश्चर्य है कि देवी को बलि दान देने के अर्थ राजा इनको पुष्ट करता है ऐसा कोई राजा नहीं१५दीखता कि इनके १६ बदले में सात सौ मस्तक देकर इन चारणों को १७दया से प्रीति करके बचावै ॥५१ ॥ कपट की१८ऊंघ लेते हुए. इस १९अनुकूल(इच्छानुसार) आदर के होने पर भी राजद्वार २० बन्ध करके २१ बदले में२२ऊपर कही हुई वार्ता के विना

सुनत वज्र वच सवन पाइ भय मंत्रि[1] परस्पर॥
कहिय निकासहु कतिक नियत[2] जे भ्रमि आनैं नर ॥
है वहु पुत्रन सहित रक्खि तिनके लत संकट[3] ॥
बाहिर कढ्ढे विजय खुल्लि खिरकी चारन खट६ ॥
भुव वलय तेहु हारे भटकि मिले तदपि न इत७०० मरन ॥
दस१०वीस२०मिलैं जिनतैं सु दुख न टरै बिनु तितनैं७००नरन॥५३॥
हेरत नर बारहठ इक्क१ जूँनागढ आयो ॥
रैवतपति नृप करन४ पुच्छि कारन सब पायो ॥
भाखिय चालुक भटन लखहु वार्लिस वालेसन ॥
हनत चारनन होइ उचित भूपन अघ एस न ॥
जो रुचत भनत अहँप[4] सुजस सब अप्पन चलिदैहिं सिर ॥
आश्रय करैं जु अधिपति उहाँ को न करैं वसँवर्त्ति किर॥५४॥
सरवहिया सतसत्त ७०० टारि भट तब पैत्तो तँहँ ॥
वसुधागृह वालेस पिहित[11] थप्पिय कालीकँहँ ॥
इक्क १ इक्क १ तँहँ आनि वह्नि अजं[12] सकल बचाये ॥
नामिले जोलौं निखिल[13] अँधर मृत्युहि गिनि आये ॥
चालुक बचाइ इम सत्तसत ७००व्याहि स्वैसा करन४हिं विजय
दिय सिक्ख सदन सह चारनन नृप संभर निष्णात[16] नय ॥५५॥

॥ दोहा ॥

---

१ सलाह करके २ निश्चय ३ कैद में ॥ ५२ ॥ ४ सूर्य पालेसों को ५ अतिथि यश रुचै तो. जहां मालिक ६ अवलम्ब लेवें तहां ७ सेवक ८ निश्चय ही कौन नांहीं कर सक्ता है ॥ ५४ ॥ ९ गया १० भूगृह (तहखाने) में ११ गुप्त काली देवी को स्थापन करके. एक एक सरवहिया क्षत्रियों के पलटे में एक एक १२ बकरे को मारकर सब को बचाये जब तक १३ सब शामिल नहीं हो लिये तबतक अपनी मृत्यु जानके ही १४ नीचे आये. विजय नामक वालेसा ने कर्ण सरवहिया को अपनी १५ बहिन व्याह कर इस नीति १६ कुशल चहुवाण ने चारणों सहित सीख देकर घर भेजा ॥ ५५ ॥ ८६ ॥

सरबहिया ऐसी असह, करन ४ करी इहिँकाल ।¹
द्वार पताका दानकी जास तन्यौं जस जाल ॥ ५६ ॥
काय तज्यो जब इहिँ करन ४, ईस्वर¹ कवि तँहँ आइ ॥
महाभक्त इष्टहिँ सुमिरि, जो लिय बहुरि जिवाइ ॥ ५७ ॥
कैवर्त्त² ४ हु याको कुमर, हुव जब सुपहु समत्थ ॥
सठ कोकिलपुरपति सचिव, तिहिँ लैगो छलि तत्थ ॥ ५८ ॥
कुल प्रमार संखुल कुमति, नाम अनंत नरेस ॥
करि मच्छर कारा³ दयो, इम बुल्लि रु तिहिँ एस ॥ ५९ ॥
उर्कनाम⁴ केवट्ट ५ के, बहिनीसुत⁶ कुलबाल ॥
निज मातुलँ आन्यौं निलय, कलि संखुल कुल काल ॥ ६० ॥

इस कर्ण ने शरीर छोडा तब १ * ईसरदास बारहठ ने ॥ ५७ ॥ २ केवाट वा मक ॥ ५८ ॥ ३ कैद में ॥ ५९ ॥ ४ ऊका नामक ५ केवाट के ६ भानजे ने. अपने ७ मामा को ८ युद्ध में ॥ ६० ॥

---

* इस कर्ण को ईसरदास ने जिलाया जिस समय का ईसरदास का कहाहुआ मरुभाषा का गीत नाम क एक छंद राजपूताना में प्रसिद्ध है सो नीचे लिखाजाता है ॥ गीत—

धानंतर मयंक हणूं सुक्र धावो, नरपाळगर रिख निवड़ ॥ एकवारगी कारन उठाड़ो, अन खटतणों प्रयागवड़ा १।
ओ जो आज नहीं जीवाडो, सरवहियो दीनाचो साम ॥ तूझतणा ओखध धानंतर, केहै पछै आवसी काम।२।
करन जीवसै मनसै कव गुण, किता जगतरा सरसै काज॥ इमरत केहै काम आवसे, आवो नह जो रासहर आज।३।
आणों मूळी करन उठाड़ो, जगसह मानै साच जिम॥ हणवंत लखणतणी प्रभुता हव, कुण जाणैस हुई किम।४।
[illegible] गवे अंस धारे सुक्र, नीपण जंपे अंक लिलाड़।अपकज जाभा असुर उटाया, अगकाल एको करन उठाड़।५।
[illegible]र थे सह जीवाडण समरथ, सगळां भेळा काज सरै॥ धावो रे कोय काज धरनैं, करन हुवां कव दाद करै ॥६॥
सुत सायर सुत पवन भ्रगू सुत, आपण पणों धरे अधकार॥आया चारों करन उठिवो, सुतदि जमल खटंब्रन साधार
धानंतर मयंक हणूं सुक्र धाया, गुण सांभळ सारण गरज॥ आया खेड़ कियां आवाहण, ईसरची सांभळ अरज।८।

---

(१) मारवाड में ब्राह्मण १ चारण २ संन्यासी ३ जैनमत का साधु ४ फकीर (मुसलमान साधु) ५ देवताओं के क्षत्रिय जाति के पुजारी (जैसे रामदेवजी के पुजारे तवँर वंश के क्षत्रिय हैं) ६ इन छहों को खटब्रन अथवा खटदर्शण(छहों दर्शन करने योग्य)कहते हैं. ये बारहठ ईसरदास कब हुए थे जिसका प्रमाण आगे दिया जवेगा ॥

हन्यौं अनंतहु जिहिं पिहित, जिम हल्लू तिम जाइ ॥
सो विस्तर छांड्यो सु पहु, प्रथित कथा सब पाइ ॥ ६१ ॥
केवह ५ हु हनि जवन कलि, वपुतजि किय दिवै वास ॥
नवघर ६ हुव तस पुत्र नृपति, यहहु ख्यात इतिहास ॥ ६२ ॥
सरवहियनके सो सुजस, को करिहै छितिकंत ॥
जो पिक्खहु प्रभु रान २०३।७ जग, अर्क प्रथम उँग्गंत ॥६३॥
इत नरवद सुव अधिप, याहि समय ढिग आंस ॥
सो नरवद नृप धार९सुव, जसा १ नाम जग जास ॥ ६४ ॥
तासु वीर उदारता १, अखिल दाखि हुव अग्ग ॥
जगप्रसिद्ध नृप राम २०३।४ जस, अवलग सुजस उदग्ग ॥६५॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहो
पतुर्वाहुवू १ बीजयवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्याख्य
प्रशाखाकथनाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७।
चरित्रे प्रक्रममानबाबर ३० विलुण्ठितप्रजापूत्कारप्रकुपितमिषा
शोषावरुद्धकुमारसिंहिरमल्ल १८८।१ सज्जितसवयस्कसुभटबाबर३०
वाहिनीविदितसौप्तिककृतघटिकाऽर्द्ध रणडरणमहीपमध्यमा २ नु
नरवद १८७।२ वीरतल्पस्वपन १, नृपस्त्रियमाणबुन्दीशसोदर्य १

---

१ हे राजा रामसिंह यह कथा प्रसिद्ध होने के कारण यहां इसका विस्तार छोड़ दिया है. ॥ ६१ ॥ २ स्वर्ग में ॥ ६२ ॥ ३ हे प्रभु रामसिंह सूर्य से पहिले ४उदय होता है ॥ ६३ ॥ ५जाड़ेचा ६हुआ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण शवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंशकी शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र नारायणदास के चरित्र में आ हुए बाबर से लूटीहुई प्रजा की पुकार से कोपेहुए कुमार सूर्यमल्ल को मिस से नाने में बन्द करके अपनी समान अवस्था के वीरों को सजकर बाबर की सेना र रात्रियुद्ध करके आधी घड़ी तक धड़ से युद्ध करके राजाके बिचले भाई नरव का माराजाना, युद्ध में मरनेवाले बुन्दीश के सगे और सपिण्ड भाई नरवद

सनाभिश्बान्धवनरवद१हम्मीर२तेजसिंह३लखधीर४कुबेरा५ऽनुपम६खेमराज७प्रभृतिप्रहतपतिपक्षप्रवीरसङ्ख्यान २, निपातितानेकबाबर३०वीरतोमरप्रताप१मङ्कुवाग्गुरत्नसिंह २विशिष्टबुन्दीवीरपञ्चशती ५०० महानिद्रासमादान ३, सनाभिभ्रातृरामसाहि १पश्चात्प्रधनप्राप्तकुमारमोकल२मुख्यशूरशतक१००पुद्गलप्रहारप्रापण ४, पूर्वप्रेरणाप्रबुद्धपट्टनिपुरप्रधानप्रमुखप्रकृतिजनसंगरसमीपसमानीतसैरिभवृन्दविषाणावद्धप्रदीप्तप्रकाशमिथ्यामनीषानिश्चितनिकटागतप्रत्यनीकानीकिनीनिर्भरसम्पातसाध्वससंत्रस्तसैन्यबाबर ३० विद्रवण ५, प्रभुपुद्गलप्रभूतप्रहरणप्रहारप्राप्तिपुरस्सरनिर्द्धारितनरवद १८७१२ निधननृपसनाभिपट्टपुरनाथनरवद १८७१२ महत्त्वमात्सर्य्यानुमोदन ६, सबुन्दीवास्तव्यविशिष्टविदितैतदुदन्तसमनुष्ठिततच्छोकमातृचतुष्टय ४ सम्मतिसङ्गतसचिव १सुभट २समुपेतपट्टपतिकुमारसूर्यमल्ल १८८१२ परिकरोपेतप्रभुप्राप्तपिरडप्रघातप्रचुरपीडाप्रसारप्रबोधप्रयोजनकहड्डवती १ मेदपाटजनपदजकुट २ प्र

हम्मीर, तेजसिंह, लखधीर, कुबेर, अनुपम और खेमराज आदि से मारे हुए शत्रु के वीरों की गणना, बाबर के अनेक वीरों को मारकर तँवर प्रताप, झाला रत्नसिंह आदि बुन्दी के पांचसौ वीरों का माराजाना, सपिंड भाई रामसाह और पीछे से युद्ध में प्राप्त हुए कुमर मोकल आदि सौ वीरों का घायल होना, पहिले की प्रेरणा से चेतेहुए पाटण के हाकिम आदि राज्य के लोगों के युद्ध के समीप भैंसों के समूह को लाकर उनके सींगों से मशालें बांधकर जलाने से प्रकाश होने के कारण बुद्धि के भ्रम से शत्रु की सेना को समीप आईहुई जानकर पूर्ण प्रहार के भय से डरीहुई सेना और बाबर का भागना, स्वामि नारायणदास के शरीर में पहिले ही बहुत शस्त्रों के घाव लगनें से और फिर नरबद के मारेजाने से राजा के सपिण्ड भाई खटकड़ के पति नरबद का अपने बड़े होने की मत्सरता के कारण प्रसन्न होना, बुन्दी के निवासी लोगों के साथ यह शोक का वृत्तान्त जानकर सचिव और उमरावों के साथ चारों माताओं की सलाह से पाटवी कुमर सूर्यमल्ल का परगह सहित स्वामि के बहुत घाओं से पीड़ित होने के कारण काका के मारेजाने का वृत्तान्त हाड़ोती और मेवा

यस्य पितृव्यकपरलोकप्राप्तिप्रधानबुन्दीस्थक्षतैक १ विकलचतुर्थ ४ कुमारमोकल १८८।४स्वपितृपरासुताप्रशोयसपर्याप्रणयन७,कौर्मी १ यादवी २ नरबद १८७।२ दयिताद्वन्द्वदेहदहन८, प्रहारपीडापटुकल्पज्येष्ठनरबद १८८।१ वर्जितपरिवारोपेतनिजनगरागतनिशामितनरबद १८७।२ निपातनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ निजानुजनिधननिमित्तप्रत्येक १ कन्यैक १ दक्षिणादानसहितसम्भोजितामुत १०००० सतीसुरमिथुन २ पट १ परिस्कार २ प्रसादन ९, कुमारमिहिरमल्ल १८८।२ पितृव्यकपटप्रापिताऽवरोधस्वावरोधसमर्थन१०, राणाकुलपूर्वपुरुषात्युत्तमदीवानोपपदप्राप्तिनिदानयाथाभूत्यसूचन११, हड्डाधिराजस्वसपर्याप्रतीपपट्टपतित्वमुधाभिमानशाठ्यपृथग्भूतपट्टपुरेशसांग्रामिनरबद १८७।१ वशवर्तिसगौरवग्रामादिप्रत्यब्दप्रवर्द्धमानस्वापतेयाऽऽयप्रचुरप्रान्तपरिच्छेदन१२, सौभाग्डिस्स्परापरदजयसाधकसक्षता १ऽक्षत २ संस्थितसन्तान ३ संवस

इन दोनों देशों में नहीं फैलने देकर उस वृत्तान्त को बाहर के द्वार पर ही रोकना और बुन्दी में एक घाव से विकल चौथे कुमर मोकल का अपने मरेहुए पिता की कर्तव्य सेवा करना अर्थात् उत्तरक्रिया करना, कछवाही और यादवी नरबद की दोनों प्यारी स्त्रियों का सती होना, घावों की पीड़ा से नैरोग्य होकर नरबद के बडे पुत्र को छोडकर परिवार सहित अपने नगर में आयेहुए राजा नारायणदास का नरबद को मरा सुनकर अपने भाई के मरने के निमित्त प्रत्येक स्त्री सहित ब्राह्मण को एक एक रुपया दक्षिणा और वस्त्र भूषण देना, कुमार सूर्यमल्ल का काका के कपट से जनाने में कैद होने का समर्थन करना, राणा के पुरुषाओं में से किसी पुरुषा को अति उत्तम महात्मा (फकीर) से दीवान पद प्राप्त होने का कारण जैसा सुना तैसी सूचना करना, हड्डाधिराज का अपनी सेवा के विरुद्ध पट्टपति होने के मिथ्या अभिमान की मूर्खता से जुदेहुए खटकड़ पुर के पति संग्रामसिंह के पुत्र नरबद के आधीन के बडप्पन के साथ ग्राम आदि में सालाना बढतेहुए धन की पैदाइशवाले बहुत प्रान्तों को छीनना, सुभाण्ड के पुत्र का युद्ध में विजय करनेवाले घायल और विना घायल तथा मरेहुओं की सन्तान का ग्राम, हाथी आदि सामग्री

थ १ सिन्धुरा २ऽऽदिसामग्रीसत्करण १ पुनरर्ज्जुन१८८।१ दासाभ
सानपलायितदेवसिंह १८८।१ राघवदास १८७।१ वन्धुयुग्मग्रधा
मवत्सोला १ कोटा २ समाहरण २ समयपुर १ पीलु २ प्रमुखो
पहारप्रसादितपाण्नाटवनारबद १८८।२ भुजाऽर्चन १३, तथैवप्राप्त
पाटवबुन्द्यागतचामरा १ धिकमाकूसूचितसामग्रीप्रसादितनारबद
ज्येष्ठकुमारार्जुन १८८।२ भुजपूजन १४, मिलनमिषदत्तदलराणा
स्वसहायार्थपुनरर्जुन १८८।१ चित्रकूटसमाह्वान १५, जोधपुरराज
राष्ट्रकूटमालदेवस्वविक्रमअजमेर १ [illegible] परिच्छेद
न १६, कथितस्तोककुलपुरुषपरम्परा [illegible] वीर १ [illegible] २ [illegible]
चालुक्यरैवतराजकरणवालेसा १४ [illegible]
ठसन्दोहसंस्थानस्थान [illegible] ७०० शिरःप्रदा
न १७, संरक्षितसर्वजीवितवितरणवीरता [illegible] १४

से सत्कार करने और फिर अर्जुन को सेना [illegible] देवसिंह और राघवदास दोनों भाइयों के भाग वत्सोला और कोटा [illegible] के समय ग्राम हाथी आदि सामग्री देकर घाव मिटने पर नरबद के पुत्र के भुजों को पूजना, इसी प्रकार घाव मिटने पर बुन्दी में आयेहुए नरबद के पुत्र अर्जुन को चमर अधिक देकर ऊपर सूचना कीहुई सामग्री देकर उसके भुज पूजना, मिलने के मिष से पत्र देकर अपनी सहाय के अर्थ फिर अर्जुन को चित्तोड़ बुलाना, जोधपुर के राजा राठोड़ * मालदेव का अपने पराक्रम और सेना से अजमेर नगर आदि अनेक प्रान्तों को अपने आधीन करना, थोड़ीसी पीढ़ियें कहकर वीरता और दातार पन से रैवत गिरि के राजा सरवहिया सोलंखी करण का वालेसा जाति के विजय नामक [illegible] की राजधानी में जाकर चारयों के समूह के नाश के स्थान में अपने सहित अपने सात सौ वीरों के मस्तक देना, उन सबको जीवित रखकर दान और वीरता की विशेषता से प्रसन्न होकर वालेसा विजय का धैर्य की परीक्षा करके करण को अपनी [illegible] लि-

* मारवाड़ के इतिहास में राव मालदेव का विक्रमी सम्वत् १५९९ के ज्येष्ठ मास में जोधपुर की गद्दी बैठना लिखा है सो यह समय चित्तोड़ के महाराणा सांगा का नहीं होसक्ता क्योंकि महाराणा सांगा का देहांत १५९५ में होचुका था जिसके चार वर्ष पीछे मालदेव गद्दी बैठे थे ॥

विजयपरीक्षितान्यश्वरवधिककर्णार्थभगिनीविवाहन १८, तन्मरण
समयसमागतकलिकालभागवतमूर्द्धन्यद्वारहठसुकवीश्वरकर्णाम
त्युज्जीवनकथन १९, कोकिलपुरपतिशङ्खकुलप्रभासारानन्तराजस्वस
चिवकपटानायितनिगडित१ बालवंश्यतद्भागिनेयोक्कसमुद्धृतसमानी
त २ कर्णकैवर्तभाविम्लेच्छयुद्धमरणसहिततन्नन्दननवघनभावि
तासूचन २०, तत्समयसमीपसम्भूभुजनगरभूपजाडेचयादवभारम
ल्लनन्दनयशोराजासाधारणदान १ वितरण २ वीरताविख्यापन २१
मेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितः षट्सप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इक रन हुव आनर्त इत, याही समय समीप ॥
औलिज १ मातुल २ जुज्झि जुग २, परे सुनहु अवनीप ॥१॥

॥ षट्पात् ॥

उलटि आगम अधिप इक १ हल्ला जसवंतह १ ॥
जिहिं व्याहिय निज जामि महिप कर्णहि अतीव मह ॥

[illegible] सुन कर के आये हुए कलिकाल के हरिभक्तों में शिरोमणि बारहठ चारण ईसरदास का करण को पीछा जिलाने का विस्तार कहना, कोकिलपुर के पति शंखधारी झाला के प्रभासराज अनंत के सचिव का करण के पुत्र केवाट को कपट से लेजाकर कैद करने पर बाल वंशवाले उसके भानजे ऊगा का उसको छुडाकर पीछा लाना और करण के पुत्र केवाट का आगे आनेवाले यवनों के युद्ध में मरने के सहित उसके पुत्र नवघन के आगे आनेवाले समय में होने की सूचना करना, उसी समय के समीप होनेवाले भुज नगर के राजा जाडेचा यादव भारमल्ल के पुत्र यशराज का जन्म और उसके समान अन्य की वीरता और दान नहीं होने की सूचना करने का उन्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२९॥ और आदि से एक सौ छहत्तर मयूख हुए ।१७६।

इधर एक युद्ध १काठियावाड में हुआ. २ भानजे और मामा परस्पर लडकर मरे सो ३ हे राजा रामसिंह सुनो ॥१॥ ४बहिन

ताकै हुव इक १ तनय भयउ सोंपै जब भूपति ॥
मातुलगृह तव मिलन गयउ संबंध रक्खि रति ॥
बनिजार कढत निज सीम बिच दुंदुभि सुनि पित्थल२वदिय॥
चर जाहु सुद्धि आनहु चपल किहिँ सठ वंब बिरौव किय॥२॥
सुनि मातुल जसवंत १ अनुज पित्थल २ निदेस यह ॥
जुव्बनवस जामेय अनखि पुच्छिय सह आग्रह ॥
अक्खिय पित्थल २ अत्थ बंब अप्पन इक १ बज्जत ॥
कै बज्जत करदायि सत्थ ब्यापारि१न सज्जत ॥
हसि झल्ल१कहिय बज्ज्यो ममहु कहिय हल्ल२तुम१हम२इक१हिँ
भानेज भनिय बर्जहु बलि न निबहैं क्यों तव पैंज नहिँ ॥३॥
प्रसभ बाद वढिपरिय बदत इम बत्त दुव २ हि दिस ॥
अक्खिय जामिज भ्रात मैंहु जुज्झन १ न अन्य २ मिस॥
बज्जत ऐहैं वंब रुद्ध तुम करहु जित्ति रन ॥
जंपि इम रु गृह जाइ सज्जि आयउ साहस सन ॥
बरज्यो सु भ्रात हल्लन बहुत बाँलिस न रुक्यो मत्तबय ॥
केलि करन नास मातुलकुलहिँ गर्जसिर दुंदुभि देत गय ॥४॥
कति दिन पुव्वहि स्वकुल निपुन नारिनके निरखन ॥
उच्चतुंग इक १ अट्ट रचिय हल्लन आगम रन ॥

सम्बन्ध में १ प्रीति रखकर. हे दूत! जाकर २खबर लाओ कि किस मूर्ख ने नगारे का ३ शब्द किया है अर्थात् हमारी सीमा में नगारा किसने बजाया ॥ २ ॥ ४ भानजे ने ५ यहां पर एक अपना ही नगारा बजता है; अथवा ६ हासिल देनेवाले बनजारों का बजता है इस पर झाला ने कहा कि मेरा नगारा भी बजा था इसके उत्तर में हाला पृथ्वीराज ने कहा कि तुम और हम एक ही हैं, फिर भानजे ने कहा कि बलवानों को मना नहीं करते तब तुम्हारी ७ प्रतिज्ञा क्यों नहीं निभै ॥ ३ ॥ इस ८ हठ से युद्ध जीतकर ९ रोकना १० मूर्ख ११ युद्ध में १२ हाथी के ऊपर रखकर नगारा बजाता गया ॥ ४ ॥ १३ अत्यन्त ऊंची बुर्ज बनाई (यहां अधिक ऊंचाई दिखाने के कारण उच्च और तुंग दोनों एकार्थवाची शब्द कहे हैं) कि जिस पर बैठ कर अपनें

एकादसि ११ उपवास १ लघुहि पारन २ प्रभात लहि ॥
॥

जसवंत १ अनुज पित्थल २ जहाँ हल्ल अँपारन संग हुव ॥
तिहिँ जानि सग्ग अग्रज १ तरजि पठये पच्छो भोज्य भुव ॥ ५ ॥
४अट्ट तियन इम चविय इक्खि ताकहँ सुरिआवत ॥
कोन सुहागिनि कहहु ५पोत १ चूरी २ बल पावत ॥
पुनि जब गोचर परत देखि भाउज १ निज देवर २ ॥
अक्खिय भलाभल इक्क १ राम रच्छक रक्खिय घर ॥
सो अक्ख सुनत पित्थलमिया अवधि गम्य आई उतरि ॥
हुल्लिय कठोर अब कति वयस कहुन मन कुल नासकरि ॥ ६ ॥
पारन कारन पित्थ हुल्लि आवन १ जावन २ बलि ॥
९भाभिनि कर कछु भोज्य जिम्मि जावत संहअंजलि ॥
आजै ११ निय प्रति अरज किन्न जग जस हमरो करि ॥
जारहिं पीहै जग्गु अप्प हल्लनकुल उद्धरि ॥
दे इष्टसपथ तिहिँ देवर सु कथित सु अग्रजको हु कहि ॥
पहुँच्यो प्रवीर निज सत्थ पहँ लोन असिन कर वेर[15] लहि ॥ ७ ॥
दुंदुभि झल्लहु द्विरद रक्खि दलँ ३दलँ तिहिँ रक्खन ॥

[illegible] देखें. प्रभातमें १शीघ्रही पारणा करके २बिना पारणा किये ३भोजन करने के स्थान पर धमकाकर पीछा भेजा॥ ५ ॥४बुर्जपर बैठीहुई स्त्रियों ने परिहास करके कहा कि किस सुहागिनके ५चीड अर्थात् तिमणियां (तिमणियां और चूड़ा स्त्रियों के सुहाग के चिन्ह हैं) और चूड़ा ने बल किया कि जिससे एक पुरुष पीछा युद्ध से आता है ६ निजर आने पर अर्थात् पहिचानने पर भोजाई ने कहा ७ जहां तक जाने की अवधि थी वहां तक सन्मुख जाकर ॥ ६ ॥ ८ फिर ९ स्त्री के हाथ से कुछ भोजन करके पीछा जाते समय १० हाथ जोड़कर ११ भोजाई से अरज की कि संसार में हमारा यश किये पीछे १२ अग्नि में जलना और १३ आप हालों के कुल का उद्धार करना १४ इष्ट के सौगन दिलाकर तलवारें हाथों में लेने के १५ समय ॥ ७ ॥ झाला ने भी नक्कारे को १६ हाथी पर रखकर १७ आधी १८सेना उसकी रक्षा के लिये रक्खी और आधी सेना

अप्पन रच्छक अग्ग¹ पिल्लि² चाहिय परपक्खन ॥
जंपिय तँहँ जसवंत १ बंब मैं जाइ बिदारत ॥
पित्थल २ अक्खिय प्रभुहिं निजन छत क्यों सु निहारत ॥
जसवंत १ चविय जामेयको बंब मिलत फुट्टो बजैं १ ॥
तो होइ सफल मिलिबो²न१तो लिय सु लाल संधा लजैं२ ।८।
स्वीकरि पित्थल सोहि अप्प दुंदुभिपर आयउ ॥
अग्ग² भटन जसवंत चहत भानेज चलायउ ॥
तकत अट्ट कुलतियन विखम धाराहँर बज्जिय ॥
पहुँचत मातुल पहिल गहिल दुंदुभि ध्वनि गज्जिय ॥
क्रम करत हल्ल१ झल्लन२कतल गंजि कटक जव गम्यगय ॥
भानेज१भनिय मातुल२ मिलत बंब सुनहु सूचत विजय ॥ ९ ॥
इती कहत अंतरहि बंब पित्थल उत बेधिय ॥
समनंतर कहि सुनहु सु जय जसवंत निसेधिय ॥
इम द्वै २ ही दिस असिन भये बटके बटके भट ॥
बंब सु भिन्न बताइ हल्ल झल्लहु लिय संकट ॥
बचिगो सु झल्ल कतिजन वदहिं कहहिं द्वै२हि कुल नास कति
अट्टतैं उतरि जे पुनि जरे प्रमदाजन पहिचान पति ॥ १० ॥

अपनी रचा के लिये रखकर उसको आगे१बढाकर२शत्रुओं को हटाना चाहा उस समय जसवंत ने कहा कि मैं जाकर नगारे को ३ फोड़ता हूं. अपने सेवकों के ४होते हुए आप ऐसा क्यों करते हैं ५भानजे का ६हे लाल ७प्रतिज्ञा लाजती है ॥ ८ ॥ ८ स्वीकार करके ९ बुर्ज के ऊपर कुल की स्त्रियों के देखते हुए १० खड्ग चले ११ मामा के पहुंचने से पहिले १२ गहरा नक्कारे का शब्द हुआ. १३ जिस के पास जाना था वहां गये जब भानजे ने कहा कि नगारा विजय की १४ सूचना करता है सो सुनो. इतनी कहते ही पृथ्वीसिंह ने उस नगारे को फोड़डाला ॥९॥ उस नगारे को फोड़े १५ पीछे जसवंत ने कहा कि यह विजय का निषेध करता है सो सुनो अर्थात् वह नगारा फूटा हुआ बजता है १६घेरे में. कितने ही१७कहते हैं कि झाला बच गया और कितने ही कहते हैं कि दोनों कुलों का नाश होगया १८ स्त्रियं बुर्ज से उतर

जरी तब न जसवंतनारि १ वह बैन निवाहन ॥
बिपति ब्राहुजा बेस गूढ अभिमत अवगाहन ॥
रोहड़िया बारहठ धन्व हरिभक्ति धुरंधर ॥
ईस्वर कवि तस ऐन आइ सेये जिम अनुचर ॥
तस परखि सत्व चिरकरि चतुर कुल१थल२मन३गुन४आनि कवि।
कविता सुवृत्त सततसत्त७००करि छिति रक्खिय कुलहल्ल छवि११
मालदेव इत महिप माढ धर जानि कनीमानि ॥
सहँ सह जैसलमेर बरन तिहिँ पत्त मत्त बनि ॥
उमानाम छवि अतुल सुपहु भट्टिय तनुजा सो ॥
ब्याहिय निरत कबंध सुनत तस सुजस कथा सो ॥
जासो१ थासो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
भट्टी नरेस बुल्ल्यो भवन दूजी२ निस आगम दुलह ॥
अति पान करि सु गो तँहँ अबुध स्मर बढाइ कछुविधि असह।१२।
गो कबंध रतिगेह जात अल्पहि कछु जाँमिनि ॥
एक रमन मधुअंध कमन चाहत ढिग कामिनि ॥
स्वसुरसद्म सुंदरिन लाल बहुकाल लडायउ ॥
काँनि तिन्हहु तजि कूर गान ऊढागम गायउ ॥

कर ॥ १० ॥ जसवंत की स्त्री उस देवर के वचन को निबाहने के लिये उस समय नहीं जली और १क्षत्रियों की स्त्रियें विपत्काल में रखती हैं उस वेस को धारण करके अपने २छिपेहुए वांछित को ३थाहने के लिये ४ मारवाड़ में ५ धुर को धारण करनेवाला ६ ईसरदास चारण के ७घर में ८ चाकर के समान ९ श्रेष्ठ * छन्दों में १० पृथ्वी पर झालों की ११ शोभा रक्खी ॥ ११ ॥ इधर राजा मालदेव ने जैसलमेर (जैसलमेर के राज्य को माढ कहते हैं) में १२ कन्यारत्न को जानकर १३ उत्सव सहित उसको विवाहने गया १४ प्रीति युक्त १५ कामदेव को १६ किसी प्रकार से असह्य बढाकर ॥१२॥ थोड़ी १७ रात्री जाने पर ही १८ मद्य से अन्ध १९ सुन्दर. ससुर के घर की स्त्रियों ने दुलह को बहुत समय तक ल्याया परन्तु उनकी२०शंका छोडकर२१दुलहन

*बारहठ ईसरदास के कहेहुए "झालों झालों के कुंडलिये" राजपूताना में इस समयभी बहुत प्रसिद्ध हैं

उलटी सलज्ज वे तिय उठिय मालई[1] मन घेरयो मयनें[2] ॥
ऊढा[3] समीप बहुजन उचित[4] सजव[5] भेजि बुल्लिय सघन ॥१३॥
वर[1]हिं कहाइय वैरनि[2] अधिक न बिलंब नाथ अब ॥
सजि आवत सृंगार सोहु कछु खिल पनिगो सब ॥
तिहिं न परत कल तदपि जानि भेजत जनपैं जन ॥
अंतरंगैं[7] अनुचरिय[8] धरन धीरज पठई[9] धेन ॥
जिहिं नाम आरस्लिय जुवति[10] सो दासिय गुन[1] रूप[2] सह ॥
न बिलंब आत दुलही नृपहिं इम बुल्लिय करजोरि यह ॥१४॥
बो[11] बो करि जिम बस्त[12] जोहि एकरिय कपंध जँहँ ॥
संबेसन[13] बिधि समय तास दुलहीहु गई तँहँ ॥
निज दासी[1] सह निरत[14] वरहिं[2] लखि गहि कछु जानिय ॥
याहि उचित अब अप्प[15] भनिय सिंहनि अहियानिय ॥
चहिबो जु ज्ञातसज्जा उचित तो चढ़िजौ[16] तायकैं तलपैं[17] ॥
किंकरीरमन[18] बिनु मोहि कहि क्यों जाहु अगनित कलप॥१५॥
इम भटियानिय अक्खि लुरी सिंहनि पीतिमंदिर[19] ॥
बिक्ख सु दुल्लह बिरस चकित कामुक[20] रहिगो चिर ॥
सिक्ख समय कुमरी जु लगी नैंन[21] जान धवालय[22] ॥
बहु बासर[23] रहि बाद मौल[24] मन किय बिखाद मय ॥

के आने की ही वार्ता करता रहा १मालदेव के मन को २कामदेव ने घेरा ३ दुलहन के पास ४ नाजर आदि जनाने में जाने योग्य ५ शीघ्र ॥ १३ ॥ ६ दुलहन ने कहलाया ७ खानगी ८ दासी को ९ स्त्री ने १०तरुण स्त्री ॥ १४ ॥ ११ यह वाणी बकरा की बोली का अनुकरण है १२ बकरे १३ मैथुन (प्रवेश) करने के समय में. अपनी दासी के साथ पर को १४नियुक्त देखकर. अब१५ आप इसीके योग्य हो१६तेरी१७शय्या पर १८ दासी के पति के बिना ॥१५॥ १९पीछी अपने महल में चली आई. वह २०कामी बहुत समय तक चकित रह गया २१ नहीं जाने लगी २२पति के घर. बहुत २ दिनों तक २४ मालदेवने

बलि आसकरन निज बारहठ ईस्वर सुकवि पितृव्य यह ॥
अवरोध[3] बॅलज[4] पठयो अधिप समुझावन नय१धर्म२ सह॥१६॥
बदिय उमा बारहठ अप्प आये समुझावन ॥
अब स्वीकृत[6] तो अवस जोध[7]इंगहु[8] सहजावन ॥
पै मैं किय जो सपथ[9] सो न लोपैं[10] नृप संतत ॥
चलिबो तब ध्रुव[11] उचित बदहु तुम इहसपथ बत ॥
सुनि आइ सुकवि१नृप२लिय सपथ अप्प१सपथ दिय जाइ उत।
छुटिहै धर्म तो तिहिं चविय[12] देहौं तुअसिर मान द्रुत[13] ॥ १७ ॥

दोहा ॥

बदिय उमा प्रति जनक बॅलि[14], गमन करहु पतिगेह ॥
पै छुली नहिं तो हमहिं, अब हनिहै नृप एह ॥ १८ ॥
उमा कहिय मरिबे[15] उचित, भट्टीकुल[16] मम भ्रात ॥
संग देहु जो पंचसत५००, तो जैहौं उत तात ॥ १९ ॥

षट्पात् ॥

स्वकुल तिमहि लहि सत्थ पत्त[17] दुलहीहु जोधपुर ॥
दुलह काढ़ि कति दिवस धर्म लुप्पन धारी धुर ॥
जिनहि अचानक जाइ नारि छलबल नियराई[18] ॥
गोखद्वार बपु गेरि उमा लखतहि भुव[19] आई ॥
बहु घेर गिरत अंकुस[20] बिथारि बचि बैठी तल आयुबल ॥
चढि गोख लखि सु रहिगो चकित छॅली[21] प्रकट दिखात छल॥२०॥

१ ईसरदास बारहठ का २ काका था ३ जनानी ४ ड्योढी ५४ राजा ने भेजा ५ नीति ॥ १६ ॥६ स्वीकार है ७ जोधपुर ८ साथ जाना परन्तु मैंने ९ सौगन्द किये हैं सो १० निरन्तर ११ निश्चय १२ कहा १३ शीघ्र ॥ १७ ॥ १४ फिर ॥ १८ ॥ १५ मरने योग्य १६ भाटी वंश के ॥ १९ ॥ १७ न ई १८ समीप ली. झरोखे में होकर१९भूमि पर गिरगई. गिरते समय पडे घेर वाला २०गाघरा फैलकर २१ छली ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

उर्द्ध[1] निरखि बुल्लिय उमा, स्वामी[2] गिरते संग ॥
तो कहुँ हठ छुटतोहु तकि, अपर[3] २ जन्म दुहुँ २ अंग ।२१।

॥ षट्पात् ॥

प्रतिसारादिक[4] प्रसरि उमा महलन पुनि आइय ॥
अवहित[5] तबसन अधिक लगी रहिबे भय लाइय ॥
बलि पठाइ बारहठ सपथ अघलैन सिखायउ ॥
अघ झेलत छल इक्खि नृप १ रु चामँर २ निकसायउ ॥
पति जानि इम सु केरैं[6] परयो तकि पिउहर जैबोहि तब ॥
किंकरी सोहि बुल्लि रु कहिय इक करि चलनैं[10] उपाय अब॥२२॥
अप्पन कथन अधीन सूर भट्टिय पंचहिसत ५०० ॥
यातैं कोउक अत्थ लखहु रट्ठोर मरन मत ॥
जिहिं संगे सु जितोहि अत्थैं[11] अप्पहिं सखि अप्पन ॥
जु इक संग व्है जाइ सरैनि[12] निवहैं अविघ्नसन ॥
मिलि पिहितैं[13] स्वामि सामंत मन क्रम लखिहारिय किंकरिय॥
कुल जैत्रं[15]१ कुंपं[16]२ चंपाँ[17]३ दिकन रोकि लोभ नृपतैं डरिय॥ २३ ॥
नगर कोटरानाह तुरग पंचास ५० अधिप तँहँ ॥

१ऊपर को देखकर उमा बोली कि २ हे स्वामी! मेरे साथ ही गिरते तो मेरा हठ छूट जाता अब तो दोनों शरीर ३ दूसरे जन्म में मिलेंगे॥ २१॥ ४ कनातें आदि ५ फैलाकर ६ सावधान. राजा को और पाप झेलने में ७ चोरि करनेवाले उस आशा बारहठ को निकाल दिया.(इसकी कथा यह है कि राणी ने पाप झेलने का संकल्प राजा के हाथ में डालना चाहा तब छल करके राजा के हाथ के स्थान में उक्त बारहठ ने अपना हाथ जाने दिया जिसको देखकर राणी ने कहा कि यह हाथ तो राजा का नहीं है राजा का हाथ आवेगा तब संकल्प डालूंगी इससे बारहठ की वह चोरी पकड़ी गई जिससे चोर का विशेषण दिया है)पति को८पीछे पड़ाहुआ जानकर९उसी (भारमली) दासी को बुलाकर जैसलमेर१०चलने का ॥ २२ ॥११धन१२मार्ग में निर्विघ्नता से निर्वाह होजावे१३ छानें. स्वामि के१४उमरावों को १५जैतावत१६कूंपावत१७चांपावत आदि॥२३॥

*बग्घ कबंधज बीर कहिय **अभिमत दासीकहँ ॥
मंगौं सुहि दे मोहि जोहि ***रानीबस जानत ॥
तो अविघ्न मग तुम्हहिं सुरौं पहुँचाइ प्रमानत ॥
स्वीकार किय सु रानी हु सुनि कछु मिस बाहिर बेग कढि ॥
संक्रमिय सज्ज परिकर[2] सहित चलिय बग्घ तस भीर[3] चढि॥२४॥

॥ दोहा ॥

रोध कियैं निहचैं मरन, मन्न्यौं नृप तसमात[4] ॥
सबन प्रबोधित सहिरह्यो, जो न निवारिय जात॥ २५ ॥
इत जेसलमेर सु उमा, बिसन[6] लगी तँहँ बग्घ ॥
नृप हुव जिहिं दासी निरत, वह मंगिय अति अग्घ ॥ २६ ॥
अक्खि अदेयहु सुहि उमा, अप्पिय संधा इक्खि ॥
गृहलैं तँहँ सुरि बग्घगयं, सबलन सन रन सिक्खि ॥ २७॥
करि इम जातहि कोटरा, आयु बग्घ निज अल्प ॥
मन्नि लग्यो धन उड्डमनं[10], करि धौंटिन निधि[12] कल्प ॥ २८ ॥
स्व१जस भारमल्लिय २ सहित, गायकं[13] जनन गवाइ ॥
जो नृपसन चाहत जुरन, जोधपुर न मन जाइ ॥२९॥
करन १ बन्यौं बितरन कबिरन, सरन १ मरन सब२ कोहि॥

---

* बाघा राठोड़ ** अपना विचार *** रानी के वश में है सो १ चले २ परगह सहित ३ सहाय ॥ २४ ॥ राजा ने जाना कि रोकने से निश्चय मर जावेगी ४ इस कारण से. सबके ५समझाने से सहन करके रहगया और उमा को जाने से नहीं रोकी ॥ २५ ॥ ६घुसने लगी तहां बाघा ने जिस दासी से राजा मालदेव७प्रीतियुक्त हुआ था उसीको अत्यन्त आग्रह के साथ मांगी ॥ २६ ॥.८ नहीं देने योग्य कहकर. अपनी ९प्रतिज्ञा देखकर दी ॥ २७ ॥ धन १० उडाने लगा ११ घाड़ा पटकने से १२ धन इकट्ठा करके ॥ २८ ॥ भारमली के साथ अपना यश १३ ढोलियों से गवाकर ॥ २९ ॥ कवियों को दान देने में कर्ण बनकर और मरनेवाले सभी का शरण होकर अर्थात् राजा के सब खूनियों को शरण में रखकर राजा के दल को बहुत प्यारा पाहुना जान

पहु दल बहु प्रिय पाहुनैं, जानि लखत मग जोहि ॥ ३० ॥

॥ षट्पात् ॥

पतनी उत पहुँचाइ सोहि दासिय लैगो लुनि ॥
मालदेव महिपाल धक्यो अति रिस सील धुनि ॥
चिंतत चढन बिचारि किल मिलति आसकरन ॥
जो बुल्लत आजाइ रचहु करौ तस नास करन ॥
महिलागई सु कविकेहि मत कविहि सहायक बग्घ किय ॥
याकेहि भेद हुव सर्व छल लंपट नृप हठ जानिलिय ॥३१॥
बितथ३हिँ ऋत४गिनि बदिय पारि दूखन चामर पर ॥
बग्घ जु आत बुलात ६जहु लुहन अप्पहि ७र ॥
वह१ दासी२ सह आनि करहु मम हुकम तंत्र किर ॥
नतो रहहु मरु नाहिँ पढहु अन्यत्र वास चिर ॥
विपरीत समुझि इम नृप वदत वारहठ सु गो तहँ विमन ॥
सुनि बग्घ आइ ताके समुख आकरि लैगो आयतँन ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

बग्घहिँ अक्खिय बारहठ, मरुधर रक्खिय सोहि ॥
तो दासीजुत चलहु तँहँ, कथित सहि नृपकोहि ॥ ३३ ॥
परि पायन दंपति २ प्रनमि, अक्खिय आपे अप्प ॥
तो चलिहैं हम सरन तँहँ, देहैं तजि रन दंप्प ॥ ३४ ॥
सुघर भारमल्ली सहित, क्रीडा सुख कछुकाल ॥

कर मार्ग देखता रहा ॥ ३० ॥ १क्रोध में जला २स्त्री (उमादे) उसके पीहर गई सो चारण आशकरण की सलाह से दी गई और बाघा ने भी इसी चारण को सहायक बनाया है ॥ ३१ ॥ ३ झूठ को ४ सत्य समझकर ५ पाप के लने में चोरी करनेवाले आशा बारहठ पर दोष लगाकर. बाघा बुलाने से आजावे तो बुलाने को आप ही ६जाओ ७ शीघ्र. निश्चय ही मेरे हुक्म के ८ आधीन करो ९ मारवाड़ में. अपने १०आश्रम ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ स्त्री पुरुष ने नमस्कार करके १२ दर्प अर्थात् युद्ध का घमंड छोड़ देवेंगे ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

करनदेहु अघहिं सुकवि, सन्नि काल महिपाल ॥ ३५ ॥
इहिं आनैं लुव मास इक[१], पुनि दुव[२] घाटि निपात ॥
अब आवत गुनगोरि[१] इम, तीज[२] दसेरा[३] तात ॥ ३६ ॥

गीति ॥

इह इम वितवत दिट्ठेंहिं, कर्मध्वज[४] भूप दुहु[५] न सुनि कुप्यो ॥
उत रक्ख्यो कवि इट्टहिं, पानिहु थुक्कत पसारि दंपति[६] रही ॥३७॥
कतिक कहत मासहि कति, अक्खहिं कतिसार्द्धअब्द[१] कछु अग्गैं ॥
गन होत काल निज गति, तँहु छोरिय वग्घ म्रंधमुमूर्षु[८] तहाँ ॥३८॥
मरतहि सु भारमल्ली, वल्लन तमसत्थ गोखचढि चल्ली ॥
विटपाँतें[९] किख[१०] वल्ली, मारि बिरहमांरु[११] महिलिन[१२] मतल्ली ॥ ३९ ॥
सज्जत सज्जत सेना, भो बहुहेतुन विलंब भूपतिको ॥
वह बारहठ अनेनाँ[१३], मरतहि सो वग्घ गो न पुनि मेरुमँ[१४] ॥ ४० ॥
जब मालदेव मरिहै, जैसलमेरहि उमा सु सुनि जरिहै ॥
कुल दोहु[१५] अँनघ करिहै, तस अंसुकं[१६] गहि तथा धवहुँ[१७] तरिहै ॥४१॥

दोहा ॥

अगैं कवि कुल परपुरुख, निपुन पिठ्ठव[१८] ७१[१] नाम ॥
कुंमगनकी कोटि१००००००० तजि, धीर चलिय जब धाम ॥४२॥

१इस भारमली को लाये. दो[२]धाड़े पटके हैं ॥३६॥ इस प्रकार [३]समय वितते हुए सुनकर ४ राठोड़ों का राजा मालदेव. आशा बारहठ थूकता था जिसको दावा और भारमली दोनों पति पत्नी ने [६]हाथों में झेलकर ॥३७॥ कितनेक तो कितने ही महीने कहते हैं और कितने ही १ डेढ वर्ष बीतना कहते हैं तहां काल की अपनी गति से ८ युद्ध की इच्छावाले बाघा ने ७ शरीर छोड़ा ॥ ३८ ॥ उसके मरते ही भारमली उसके साथ जाने के लिये झरोखे से गिरी, जैसे वृक्ष से ९ सूखी हुई बेल गिरै तैसे वह १० वियोग से उत्पन्न हुई पीड़ावाली ११ स्त्रियों में १२ स्तुति योग्य मरी ॥३९॥ १३ निर्दोषी १४मारवाड़ में नहीं गया ॥४०॥ १५पापरहित. उसका १६वस्त्र पकड़कर १७पति भी ॥ ४१ ॥ ग्रंथकर्ता कवि (सूर्यमल्ल) के १८ पुरुषा ॥ ४२ ॥

अधिप गोरे[1] अजमेरके, वच्छराज सुनि वत्त ॥
बाधनवारे सह बिदित, तिनहि अब्ज१०००००००००दिय तत्त[2]॥४३॥

षट्पात् ॥

पाइ अब्ज१०००००००००पिठ्ठहव१५७१बरस छनवति९६जारठ[3]बय
रहि बाधनवारेहि दियउ तजि देह महार्द्रय[4] ॥
सुत तस हुव गृहसूर१५८१सुकवि महसूर१५९१ तासुत ॥
जुगरहि पिठ्ठहव१५७१जियत हुव सु तिन्ह काल अनल हुत[5] ॥
आनंद१६०१जबहि महसूर१५९१सुव किय प्रपितामह[6] मृत्यु कृत ॥
सुत हुव तदीय मिश्रन[7] सुकवि कर्मानंद१६११ बिसिष्ट[8] बृत[9] ॥४४॥

दोहा ॥

उभय २ महा हरिभक्त ये, भये जनक[10] १ सुत २ भूप[11] ॥
बिहित भक्ति जिनकी बिदित, अज्जहु जग अनुरूप ॥ ४५ ॥
कोटि १०००००० तजी सुनि जनककी, रायमल्ल जब रान ॥
बुल्लिय कविआनंद १६०१ वलि, दै दल[12] प्रीति निदान ॥४६॥
तबहु न गय आनंद १६०१ तहँ, पुत्र निजहु पठयो न ॥
तिमतिम आग्रह अधिक तकि, भूपहु बिरत[13] भयो न ॥ ४७ ॥

षट्पात् ॥

इष्ट संपथ लखि उचित दियउ जब रायमल्ल दल[14] ॥
इक्खि सु तब आनंद १६०१ बिक्खि सीसोद मसर[15] बल ॥
निज सुत कर्मानंद१६११तनय अभिधान[16] लुंब१६२१ तस ॥
सो पठयो बय सिसुहि जानि रानहिँ आग्रह जस ॥
अति अग्घ सिसुहु रक्ख्यो अधिप जिहिँ पुरउंटोलाव १ जुत ॥

[1] गौड़राजा [2] अड़बपसाव दिया ॥४३॥ [3] वृद्ध अवस्था में [4] बड़ा दयावाला. काल रूपी अग्नि में [5] होम होगये [6] परदादा की उत्तरक्रिया की [7] उसके [8] मिश्रण शाखा के [9] विशेष चरित्रवाला ॥४४॥ [10] पिता [11] हे राजा ॥४५॥ [12] पत्र ॥४६॥ राजा [13] विरक्त नहीं हुआ अर्थात् प्रीति नहीं छोडी ॥ ४७ ॥ [14] पत्र [15] हठ [16] नाम

छव्वीस सहँस२६,०००कर दम्म[1] छमं पहु सासन अप्पिय प्रनुतैं[2]।४८।

सोरठ्ठी दोहा ॥

गहत पट्ट संग्राम, लुंब १६।२।१ सुकवि जुव्वन लहत ॥
आस सहत उपयाम[3], महँत[4] पाप आये पितर[5] ॥ ४९ ॥

गीतिः ॥

सुत कर्मानंद१६।१।१सहित, नत्ती[6] लुंब१६।२।१हि बिबाहिबे नँव[7] वै ॥
सग महिपन करत महित[8], आनंद१६।१।१हु भक्ति सावं[9] हित आये ।५०।
जयमल्ल भ्रात हनि जब, लघुसुत संग्राम जनक पट्ट लयो ॥
तेहु पिता१ सुत२ दुव२तब, कहि पापी रानतैं मिले न कृती[10] ॥ ५१ ॥
लुंब१६।२।१हिं बिबाहिकैं लहुँ[11], उभयरहि सर्वस्व दै द्विजन अपनौं ॥
पुनि साप[12]१अनुग्रह२पहु, बिचरन लग्गे सतीर्थ सुभ वसुधा[13] ॥५२॥
अवधूत वेस ऐसैं, तनुतनु[14] करत हुव कष्टतैंर[15] तप कैं ॥
जुग२ कर धारत जैसैं, तात१रु तनुजात१सावँ[16] हित तुलसी ।५३।
मग्ग मति सततैं[17] प्रनमत, प्रथम१ उदीची[18]१ दिसाहि दुव२ पत्ते[19] ॥
देह१करनैं[20]२स्वांतैं[21]३दमत, बदरीप्रभु१ बिक्खि पुब्ब[22]२ओर बले[23] ।५४।
देखि जुग२हि जगदीस१हिं, पत्ते दक्खिन३परिक्रमैंत[24] पुहवी ॥

१समर्थ २ स्तुतियोग्य ॥ ४८ ॥ ३ विवाह. पाप का ४ नाश करनेवाले ५ पिता ॥ ४९ ॥ ६ पोता ७नवीन अवस्था में ८ पूजित ९ पुत्र की भक्ति के कारण ॥ ५० ॥ १० पण्डित ॥ ५१ ॥ ११ शीघ्र. फिर राजा संग्रामसिंह को भाई मारके गद्दी बैठने के कारण१२श्राप देकर और अपने पुत्र लुंब को ऊंटोलापुर उदक मिलने के कारण अनुग्रह करके१३पृथ्वी के शुभ तीर्थ करने को फिरने लगे ।५२। १४शरीर को कृश किया१५बहुत कष्टवाला तप करके पिता और पुत्र दोनों, हाथों में तुलसी के१६पोधे लगाकर॥५३॥ मार्गमें१७निरंतर प्रणाम करते हुए.१८उत्तर दिशा में१९गये. शरीर और २० इंद्रियां, अथवा हाथ (हाथों में तुलसी के पोधे लगाने के कारण यहां हाथ का दमन करना लिखा है) २१मन को दमन करतेहुए२२पूर्वदिशा को२३फिरे ॥५४॥ पृथ्वी की२४परिक्रमा

इम रामेस्वर३ईसहिँ, अर्चि प्रतीचीँ४दिसाहु सुरिआये ॥ ५५ ॥
प्रभु द्वारकेस४ पिक्खन, जनपदेँ आर्नत गोन किय जबही ॥
ईस्वर१कवि समेँइक्खन, तिन्हपथ१परिगहसहितमिले तीजे३ ॥५६॥
प्रभु मम पूर्व पितामह, दुस्सह तप कष्टमेँ बढेँ द्वे३ही ॥
इक्खन सब सम आमह१, आसोकर२बढेँ अनिच्छ ईस्वर१ही ॥५७॥
सुंडा१ पॅलार२दि संगति, ईस्वर१कै इक्खि करि तस अवज्ञा ॥
मेटि मग सहगमॅन मति, अग्गैँ१पीछैँ२ चले रहत बेरहू ॥ ५८ ॥
द्वारावॅति घटिकाद्वुवर२, पहिलैँ मिश्रन पिता१ रु सुत२पहुँचे ॥
हित बाहनकरि गन हुव, तदनंतर ईस्वर१हु सभोगेँ तहाँ ॥ ५९ ॥
सुनि प्रभु अवसर मिश्रन२, द्रुत प्रनमत प्रथम दरसहित दोरे ॥
निजमंदिर पहुँचत नन, अब अवसर नाथको सुनी औसैँ ॥ ६० ॥
जो सुनि दुवर सुरिजावत, आवत ईस्वर१ मिले समुह इनकोँ ॥
खुल्ले न अब बतावत, अवसर यातैँ चलहु बहुरि ऐहैँ ॥ ६१ ॥
ईस्वर१ अक्खिय आवहु, दोउ२न दरसन कराइ हम दैहैँ ॥

देते हुए १ पूजकर २ पश्चिम दिशा को ॥ ५५ ॥ ३ देश ४ काठियावाड़ में ५ समान दृष्टि (छोटे बड़े सब को बराबर जाननेवाले, अथवा कर्त्तानंद के समान दर्शन करनेवाले चारण ईसरदास बारहठ अपनी परगह सहित मार्ग में तीसरे मिले ॥ ५६ ॥ ६ हे प्रभु रामसिंह ७ उत्सव प्राप्त होने और ८ शोक प्राप्त होने में समदृष्टि थे, अर्थात् सुख दुःख को समान माननेवाले थे परन्तु अनिच्छा अर्थात् किसी वस्तु की इच्छा नहीं रखने में ईसरदास बढता था ॥५७॥ ईसरदास के ९ मद्य १० मांस की संगति देखकर उसकी अवज्ञा करके मार्ग में ११ साथ चलना छोडकर मीशण शाखा के चारण दोनों पिता पुत्र आगे पीछे चलते रहे ॥ ५८ ॥ १२ द्वारका में दो १३ घड़ी पहिले मीशण शाखा के दोनों पिता पुत्र पहुंचे और स्नेह से वाहन छोडके पैदल होगये जिस पीछे ईसरदास भी १४ भोगते हुए गये ॥ ५९ ॥ वहां प्रभु के दर्शनों का समय सुनकर प्रथम दर्शन करने के लिये प्रणाम करतेहुए शीघ्र दौड़े सो निजमन्दिर में पहुंचकर सुना कि अब द्वारकानाथ के दर्शनों का समय नहीं है ॥६०॥६१॥

चल्ले त्रय३ तब*चावहु, हुहुँ२भक्तन बिनुसमै लखन हढभो॥६२॥
पहुँचत खास वलंज पर, दरसन प्रभु देहु ईस्वर १ कहतयौं ॥
उग्घरि अहो अरं अरर, हुव दरसन सबन तबहि श्रीहरिको ॥६३॥
इम इक्खि सु आनंद १६०।१रु, कर्मानंद१६१।१दुव२ईरखा करिकैं ॥
तनु अपनी छुट्टैं तिम, गाध दुलभ सिंधु झंपि झंपि गिरे ॥६४॥
जलनिधि अंतर जावत, दोउन्न इक द्वारका तहाँ दीसी ॥
मधु १ दै सूल्यंरजिमावत, ईस्वर१कौं मूर्ति सुहि तँहँहु इक्खी॥६५॥
पवन दुरावत पंखा, ताहि व्यजन कर लियैं निहारि तहाँ ॥
श्री दुग्धोदधिसद्मा, आसव १ उपदंस २ देत अवधारे ॥ ६६ ॥
मच्छरता१रु भजनमद २, तप कष्टसहत्व३ छोरि दुव तबही ॥
प्रभु दंपति २ पंकजपद, परे सजातीय १ को हुलसि मनमैं ॥६७॥
जंपिय प्रभु दंपति २ जँहँ, मिश्रन तुम द्वै २ हि भक्त प्रिय मेरे ॥
किन जानहु ईस्वर कँहँ, नरत्व मति उज्झि मोसन न न्यारो॥६८॥
याहीको कुल अबतैं, दहनतपी छाप इह जनन देहैं ॥
ते जात्रा फल तबतैं, लहि जैहैं भक्तलोक मम तुमलौं ॥ ६९ ॥

तीनों *उत्साह पूर्वक चले ॥ ६२ ॥ १ खास द्वार पर पहुंचने पर ईसरदास ने कहा कि हे प्रभु * दर्शन दो २ आश्चर्य है कि ३ शीघ्र ४ कचाड़ खुलकर ॥ ६३ ॥ ५ शरीर ६ जिसका थाह मिलना दुर्लभ है ऐसे समुद्र में ॥ ६४ ॥ ७ समुद्र के भीतर ८ मद्य देकर ९ शूला जिमाता हुआ ॥ ६५ ॥ १० लक्ष्मी को पंखा हाथ में लिये पवन करती देखी ११ क्षीरसमुद्र है १२ घर जिसका १३ खारभँजना १४ देखे ॥ ६६ ॥ १५ कष्ट सहना १६ चरण कमलों में १७ अपनी ज्ञातिवाले ईसरदास को १८ प्रसन्न होकर नमस्कार किया ॥ ६७ ॥ १९ मनुष्यपन की बुद्धि २० छोडकर ॥ ६८ ॥ २१ अग्नि में तपीहुई छाप इस (ईसरदास) का ही वंश देवेगा ॥ ६९ ॥

---

*इस समय का ईसरदास का कहा हुआ एक दोहा राजपूताने में प्रसिद्ध है सो यहां पर लिखाजाता है. दोहा ॥ ईसर ईसर सों कहै, खोलपड़दा यार । दिलकी दुरमत दूरकर, दिखलादै दीदार ॥ १ ॥

त्वंता[१] १ हंता[२] २ हित सन, तवतां[३] ३ ममता[४] ४ कहाँ कहि इतीसी ॥
इन २ कौंहु कराइ असनं[५], दंपति[६] २ सुतलौं विलासि सिक्खदई ।७०।
तँहँ ईस्वर १ हु कतिकहत, तुल्ले वास्तविक[७] १ मायिक[८] २ न विरचे ॥
मुद्रा निजनाम महत, दै कर तिनकौंहु सिक्ख प्रभु दिन्नी ॥७१॥
चहुवान पिप्प[९] १ खिच्चिय १३, आनी तिम छाप ईस्वर १ हु आनी ॥
मध्य जलधि[१०] इग मिच्चिय, उग्घारत त्रय ३ हि वाहिर अविक्खे[११] ।७२।
पहुराम २०३१४ तत्थ पैंर्या[१२], ईस्वर १ कुल छाप दैनकी अवहू ॥
चिंतहु भक्तन चैंर्या[१३], इष्ट सपर्या[१४] कहाकरैं न अहो ॥ ७३ ॥
दै पातसाह दरैंही[१५], संगहि जब लक्ख १००००० चारनन मुद्रा ॥
सहिहै यह ईस्वर १ ही, वैंहि[१६] तवसो दंड जातिके वदलौं ॥ ७४ ॥
अवधि नवचंद्र[१७] वारी, टारीहु जिहिं रोकि चंद्रहिं नटारी ॥
जो दम भरैंहिं जारी, होनदयो चंद्र तास बलिहारी ॥ ७५ ॥

१ तू और २ मैं ३ तेरा और ४ मेरा, यह ईसरदास के कहाँ है सो हित के साथ इतनी सी कहकर ५ भोजन ६ परमेश्वर और लक्ष्मी दोनों ने जोड़े सहित ॥७०॥ परमेश्वर ने ईसरदास को ७ सद्रूप तुला लिया था ८ माया से रचा हुआ नहीं था ।७१। खीची शाखा के ९ पीपा चहुवाण ने १० समुद्र के मध्य में ११ विना दीखे ।७२। हे प्रभु रामसिंह ! तहां १२ पीढियों से ईसरदास के कुलवाले अब भी छाप लगाते हैं भक्तों के १३ आचरण को स्मरण करो कि इष्ट की १४ सेवा क्या नहीं कर सक्ती है? अर्थात् सब कुछ कर सक्ती है ॥७३॥ १५ भय देकर. वह दंड आप १६ धारण करके सहन करेगा ॥ ७४ ॥ १७ * नवीन चन्द्रमा उदय होने की

* राजपूताने में यह कथा प्रसिद्ध है कि सिन्ध में व्यापार करनेवाले चारणों पर गुजराती वादशाह ने हासिल के एक लाख रुपये लेने चाहे जिनकी जमानत ईसरदास वाहरठ ने देकर नया चांद (मुसलमान लोग द्वितीया के चन्द्रमा को नया चांद कहते हैं) की अवधि की थी, परन्तु रुपये पास नहीं होने के कारण उक्त अवधि में रुपये जमा नहीं होसके तव ईसरदास ने चन्द्रमा का उदय होना रोक दिया सो रुपये भरे पीछे चन्द्रमा का उदय होना जारी हुआ यह ईसरदास कव हुए थे और द्वारका कव गये इस समय का निर्णय करने के लिये ईसरदास के कहेहुए मरुभाषा के गीत नामक दो छंद नीचे लिखे जाते हैं. गीत॥ कहिसां तूझ भलो करुणाकर, वप एकण सोह धरे विचार।रावळजाम सरीखो राजा, वळे घड़िस जोदूजीवार पूरणप्रभत प्रकट प्रजपाळग, दळपत दियण होषियांदाव॥भुवण घड़िस तो भलो भाकसां, रावळ जाम सरीखोराव,

जयमल्ल १ हिं हनि मदजुत, प्रभुहुव संग्राम २ रान तब पीछैं ॥
संभव खिन अटत ससुत, पत्त द्वारवति मिश्रन २ तपस्वी ॥ ७६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ पञ्चमप्राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरवंश्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वीज्यानुवीज्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७१ समयसामीप्यचरित्रेवयोबलविपरीतसमात्तसपत्नभावभागिनेयझल्लस्वमातुलहल्लयशोवन्तसिंह१पृथ्वीसिंह२ सीमाबलात्कारदुन्दुभिवादनप्रतिश्रवणा१, स्वसद्मसमागतसज्जीकृतसर्वसैन्यवारणपृष्ठविद्यमानदुन्दुभिविशिष्टमातुलकुलजिघांसुजामेयमंकुवाणामहीपतस्सीम-

अवधि का ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र नारायणदास के समय के समीप के चरित्र में अवस्था के बल से विपरीत शत्रुभाव ग्रहण करके भानजे झाला का हाला वंश के क्षत्रिय मामा यशवन्तसिंह और पृथ्वीसिंह की सीमा में बल पूर्वक नगारा बजाने की प्रतिज्ञा करना, अपने घर आकर सब सेना को सज्जकर हाथी की पीठ पर नगारा रखकर मामा के कुल को

लील खिलाल जिसो लाखावत, जुगत किसी हुव जाणिस जोड़। भागो एकण निमपभांजनां, करतां कलप जावसो कोड़
जो पिण वडिस जुगे जावंनां, भांजणवड़ण समथ भगवान। सकंस नहीं कोई वाहिळो सरजे, राजां सुवर रीतरा जान

यह गीत जामनगर के रावल जाम के विषय में ईसरदास का कहा हुआ मरसिया है और जामनगर के इतिहास में रावल जाम का देहान्त ईसवी सन १५६२ मुताबिक विक्रमी सम्वत् १६१८ में होना लिखा है सो जानना चाहिये कि इस समय में ईसरदास विद्यमान थे ॥

मुरधर दिसा चाल मन मेरा, विपत पाप ज्यों जाय विलै। परम जोत कलियाण परसियो, मूरतवंत कलियाणमिलै।
आळस मकर अमीणां आतम, हेकटपंथ हेकदिस होय। जगत नरेस्वरकमळ जोवियो, जंगळ सुपहतणों मुखजोय। २।
वीकां दिसा हाल मन विहळो, आठ महासिव मिलै इम। एक किसनदी ठोड चितापत, जो बांदू जो किसनजिम ॥ ३ ॥
वीवरे जेज मकर तिल जवड़ी, गाढा अखरदळिद्र चा मेट। मुगतंदियण जळवट राया मिळियो, भुगतदियणथळवट राय भेट

द्वारका से आकर बीकानेर के राजा कल्याणसिंह से मिलने के समय ईसरदास ने यह गीत कहा था और बीकानेर के इतिहास में विक्रमी सम्वत् १५९८ से १६२८ तक कल्याणसिंह का राज्य करना लिखा है सो इन तीस वर्षों के भीतर ईसरदास का द्वारका जाना समझना चाहिये और यहीं समय कर्ण के जिलाने का, चारणों के बदले में सरवहियों के मस्तक देने का और हालों के युद्ध आदि का जानना चाहिये.

सङ्क्रमण २, स्वकुलस्त्रीजनसङ्गरसंप्रेक्षणार्थप्राक्क्लृप्तापितैक १ तु-
ङ्गाऽट्टालकविहितपूर्वदिनैकादश्यु ११ पवासप्रातःकृतपारणाश्रुतस्व-
सीमस्वकीयद्विरदस्थदुन्दुभिदहुरसज्जितस्वसुभटसमुपेतहल्लकुलहे
लिसोदरद्वय २ समभिप्रयाण ३, यशोवन्तसिंह १ प्रस्थानज्ञातानशन
तर्जितस्वानुजपृथ्वीसिंह २ पारणानिमित्तपुनःप्रत्यप्रेषण ४, दूरदृ
ष्टप्रत्यागच्छदेका १ श्ववारप्रधनप्रेक्षणाट्टसमारूढस्त्रीजनपरस्पर
पृच्छापूर्वकप्रहसन ५, सामीप्यसङ्गतिप्रत्यभिज्ञानदेवरतदग्रज १ जा
यास्वाभीष्टानुमोदनमतापमानतदट्टावतीर्णपृथ्वीसिंह २ पत्नीपति
प्रताडण ६, प्रकटितप्रत्यागमननिमित्तसन्निस्थितप्रियापाणिप्राप्तप्रत्य
वसेयप्रणीतपारणाप्रतिगच्छत्पृथ्वीसिंह २ स्वाग्रज १ प्रेरणाप्रमाण
निजकुलयशःप्रसारणार्थसेष्टशपथप्रजावतीपावकप्रवेशप्रतिषेधन ७,
प्रसभवारिताग्रज १ सार्द्ध सैन्यहल्लानुज २ दुन्दुभिदारणार्थतदने
कपोपरिपतन ८, शिष्टशृगविशिष्टभिन्नभेरीस्वानसूचनासोत्कसहल्ल
हल्लहेलियशोवन्तसिंह १ स्वकीयसमाक्रमण ९, सम्मिलनसमयजांसे

मारने की इच्छावाले आनन्द झाला राजा का उसकी सीमा में जाना, अपने कुल की स्त्रियों के युद्ध देखने के लिये पहिले बनाई हुई एक ऊंची बुर्ज पर पहिले दिन एकादशी का उपवास करके द्वादशी के दिन अपनी स्त्रियों के सहित पारणा करके हाथी पर रक्खेहुए नगारे के शब्द से अपने सुभटों सहित सज्कर हालाओं के कुल के सूर्य दोनों भाइयों का युद्धयात्रा करना, यशवन्तसिंह का चलने के समय अपने छोटे भाई पृथ्वीसिंह को बिना पारणा कियेहुए जानकर धमकाकर पीछा घर को भेजना, पीछे आतेहुए इकल्ले सवार को दूर से देखकर युद्ध देखने की बुर्ज पर चढीहुई स्त्रियों का परस्पर पूछने के साथ हसी करना, समीप आने पर देवर को जानकर बडे भाई की स्त्री का अपने अनुकूल अनुमोदन करने के विचार से अपमान पाकर उस बुर्ज से उतरकर पृथ्वीसिंह की स्त्री का पति को ताडना करना, पीछा आने का कारण जानकर घोड़े पर चढेहुए स्त्री के हाथ से पकडेहुए भोजन से पारणा करके पृथ्वीसिंह का अपने बडे भाई की प्रेरणा के मुताबिक अपने कुल का यश फैलाने के लिये इष्ट की सौगन दिलाकर भोजाई को अग्नि में प्रवेश करने

यनिजविजयदुन्दुभिविरावश्रावणापैशून्यप्रकटनानन्तरज्येष्ठमातुल स्वकनिष्ठ २ भिन्नभेरीभांकाराकर्णनार्थस्वस्रीयसम्बोधन १०, सैन्यद्वय २ समापनसमयसंकुचाणमहीपमरणविचिकित्साविख्यापन ११, दृष्टकलहकौतुकतत्सौधावतीर्णहल्लराजवल्लभा १ वर्जित तत्कुलसमस्तस्त्रीजनहव्याशनविशन १२, विहितविपन्नबाहुजावेशहल्लेशसहधर्मिणी १ धन्वधराधामधरमहाभागवतवारहठसुकवीश्वरदासदास्यसमनुष्ठान १३, प्रचुरप्रकारपरीक्षितसत्वज्ञातकुल १ नाम २ स्थान ३ परिबुद्धतदार्दवारहठतत्पतिप्रवीरत्वकीर्तिकाव्यवसुधाविस्तरण १४, योधपुरेशराष्ट्रकूटराजमालदेवभट्टीयादवभूजानिकन्योमापाणिपीडनप्रमोदपुरस्सरजैशलमेरगमन १५, द्वितीय २ निशागमश्वशुरसदनप्राप्तविविधभैषज्यवर्द्धितविश्वकेतुकातिरस्कृततत्तत्यकुलललनालालनपुनःपुनःप्रहितान्तःपुरपरिजनमदनमूढमोहनमन

का निषेध करना, हठ से बडे भाई को रोककर आधी सेना लेकर हाला के छोटे भाई का नगारा फोड़ने के लिये हाथी पर गिरना, बाकी वीरों के साथ फूटेहुए नगारे के शब्द की सूचना से उत्कंठावाले हालों के सूर्य यशवंतसिंह का अपने भानजे पर चलाना, मिलने के समय भानजे के अपना विजय सुनाने वाले नगारे के शब्द की सूचना प्रकट करने के पीछे बडे मामा का अपने भानजे को सम्बोधन करना, दोनों सेनाओं के नाश होने के समय झाला राजा के मरने में सन्देह की सूचना करना, युद्ध के कौतुक को देखकर बुर्ज से उतर कर हाला राजा की स्त्री को छोडकर उस कुल की सब स्त्रियों का सती होना, क्षत्रियों की स्त्रियों के विधवावेश को धारण करके हाला राजा की विवाहिता स्त्री का मारवाड़ में रहनेवाले भगवद्भक्त बारहठ सुकवि ईसरदास की सेवा करना, बहुत प्रकार से उसके सत्व की परीक्षा करके जाति,कुल, नाम और स्थान जानकर उसके आशय को जानकर बारहठ ईसरदास का उसके पति की वीरता की कीर्ति का काव्य पृथ्वी पर फैलाना, जोधपुर के पति राठोड़ राजा मालदेव का भाटी शाखा के यादव राजा की कन्या उमा को व्याहने के लिये आनंद पूर्वक जेसलमेर जाना, दूजी रात्रि के आगम में ससुर के घर जाकर अनेक औषधियों से कामदेव को बढाकर वहां के कुल की स्त्रियों के लालन का अनादर करके वारम्वार जनाने लोगों को भेजकर कामदेव से मूढ, मैथुन करने की इच्छा से मालदेव का अपनी दुलहन को

स्कमालदेवस्वोढासमाकारण१६,क्षणधैर्यधारणार्थदुर्लभाप्रेषितस्वान्त
रङ्गभृत्याभारमल्ली१सहराष्ट्रकूटराज२सप्रसभरहोरमणसमयसहसा
समागतकृतभर्तृभर्त्सनयादवीतल्पशयनशपथकरण१७,सदनागमना
वसरपतिप्रेषितद्वारहठप्रतिश्रुतपितृनिलयनिवासग्रासभ्यप्राणप्रहाण
प्रयुक्तपरिणेत्रीप्रबोधन१८,तद्गौरवाङ्गीकृतगृहगमनप्राणनपर्यन्तबाढ
विख्यापितब्रह्मचर्यसज्जीकृतस्वकुलसुभटपञ्चशती५००सार्थकविशप
थवचनविश्रब्धवशयित्रीवरवसतिव्रजन १९, विज्ञातविधेयवेलाबाला
ब्रह्मचर्यविप्लवविधित्सुवराव्रजनगवाक्षद्वारझंपापातितपुद्गलभूतला
गतनिजायुर्बलविस्तृतचण्डातकचक्रपुष्टप्राणनस्वास्थ्यसावधानसो
पालम्भनिभालितोर्ध्वभीतभर्तृसस्मितस्वसाहसिद्धिसंतुष्टिपरियत्नप
रुद्धपतिप्रसभोपाययादवीपुनःप्रासादप्रविशन २०, शपथपापसमादा
नसमयविनिश्चितद्वारहठव्याजवरवञ्चनविधूतविश्वासवरयित्रीवरव
सतिव्रजनविनिर्णिनीषुस्वीकृतसाधकसङ्कल्पितसमर्पणसहायसमा

बुलाना, क्षण मात्र धीरज धरने के लिये दुलहन की भेजीहुई खानगी दासी भा-
रमली के साथ राठोड़ राजा के हठ पूर्वक रत करने के समय अचानक आई
हुई भटियानी का पति को धमकाकर उसकी शय्या पर शयन करने का सौ-
गन करना, घर आने के समय पिता के घर में रहने और बलात्कार करने प-
र प्राणहानि करने की प्रतिज्ञा सुनकर दुलहन को पति के भेजेहुए बारहठ
का समझाना, उस चारण का बड़प्पन रखने के लिये घर जाना स्वीकार कर-
के जीवन पर्यंत अधिक विख्यात करने योग्य ब्रह्मचर्य से अपने कुल के पांच
सौ वीर भाटियों को साथ लेकर कवि की सौगनों के वचनों पर विश्वास क-
रनेवाली दुलहन का दुल्हह के साथ जाना, उचित समय जानकर उस स्त्री का
ब्रह्मचर्य बिगाड़ने की इच्छावाले वर के आने पर झरोखे में झंप लेकर शरी-
र से भूमि पर आईहुई अपने आयु बल से फैलेहुए गाघरे (लहँग) के घेर से प्रा-
ण और नैरोग्यता पुष्ट रहने से सावधान रहकर ऊपर देखकर डरेहुए पति को उ
लहना (ओलम्भा) देकर पति के अपने साथ पड़ने में प्रसन्नता प्रकट कर यत्न
से पति के बलात्कार के उपाय को रोककर भटियानी का फिर महलों में आ-
ना, सौगन का पाप ग्रहण करने के समय बारहठ का मिश जानकर पति के
ठगने से विश्वास को छोडकर उस स्त्री का पिता के घर पर जाने का निश्चय
करने की इच्छा से कार्य साधनेवाले को मनवांछित देना स्वीकार करके सहाय

नीतराष्ट्रकूटव्याघ्रराजपितृप्रहितप्रवीरोपेतयादव्युमासप्रसभपितृप-स्त्यप्रविशन २१, प्राप्तप्रार्थितभारमल्लीभृत्यसमूलसमुत्सारितस्वामिसेवनगृहगतबद्धबलव्याघ्रराजस्वस्तवस्थैर्यसाधकधाटिप्रमुखप्रयत्नपुञ्जीकृतस्वापतेयसमुत्सर्जन २२, तन्मारणप्रस्थानवारणप्रतीपकामध्वजनदानिर्नाप्यासकरणप्रेषण २३, वन्दिततच्चरणसभुजिष्यव्याघ्रराजकियत्कालावधिभोगभुक्तिप्रार्थन २४, समुचितसज्जकुट २ वियोजनभीरुद्वारहठकथितावधितन्निलयनिवसन २५, कालक्षेपकुपितमालदेवावमतचारणव्याघ्राभीष्टसाधन २६, कथितान्यतमावधिभुक्तस्तोकभोगमृधमुमूर्षुव्याघ्रराज १ निकायकायहानावसरभारमल्ली २ झम्पापातमरणानन्तरद्वारहठयोधपुरसीमात्यजन २७, मालदेव १ भाविमरणश्रवणसमययादव्युमा २ पितृगृहदेहदहनद्योतन २८, प्राक्कालत्यक्तराणाकुम्भकर्णादत्तद्रम्मकोटि१००००००० पस्त्यप्रस्थीयमानसविनयसमाहूतषराणावति ९६ वर्षवयस्ककविकुलपरपुरुषपृ

के लिये बाघा राठोड़ को लेकर पिता के भेजेहुए वीरों के साथ यादवी उमा का हठ सहित पिता के घर में जाना, प्रार्थना कीहुई भारमली को पाकर सेवकपन को और स्वामिसेवा को सर्वथा त्याग कर घर पर आयेहुए बाघा का बल बांधकर अपने यश को स्थिर करने वालों को धाड़ा डालने आदि उपायों से इकट्ठा किया हुआ धन देना, उसको मारने के लिये राजा के गमन को रोकनेवाले और उसको लाने की इच्छावाले आशकरण को शत्रु मालदेव का भेजना, उसके चरणों को नमस्कार करके पासवान सहित बाघा का कुछ समय तक भोग भोगने की प्रार्थना करना, उचित उत्तम जोड़े का वियोग करने में कायर उस बारहठ का कहीहुई अवधि तक उसके घर में रहना, समय बिताने से क्रोधित मालदेव के अपमान से उस चारण का बाघा के अनुकूल साधन करना, कहीहुई किसी एक अवधि तक थोड़े भोग भोग कर युद्ध में मरने की इच्छावाले बाघा के घर में शरीर छोडने के समय भारमली के मकान के ऊपर से गिरकर मरे पीछे बारहठ का जोधपुर की सीमा को छोडना, आगे आनेवाले समय में मालदेव का मरना सुनकर भटियानी उमा का पिता के घर में सती होने को प्रकट करना, पूर्व समय में राणा कुम्भकर्ण के क्रोड़ रुपयों के दान को छोड़कर घर को गमन करनेवाले ९६ वर्ष की अवस्थावाले ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के पूर्व पुरुष पीठवा को विनयपूर्वक बुलाकर उसके लिये

ष्ठभवा १५७१ र्थगौडाजमेरराजवत्सराजवर्द्धनवाटपुर १ शासनस
मुपेतदशप्रयुत १०००००००० द्रम्मद्रव्यदानभूयोभरण २९, पुत्र१
पौत्र २ प्राणप्रहाणपश्चात्संस्थितप्रपितामहपृष्ठभवौ १५७१ र्द्दैहि
कतत्प्रपौत्राऽऽनन्द १६०१ प्रणयन ३०, स्वपुत्रकर्मानन्द १६११
सहिताऽऽनन्द १६०१ महाभागवतभावविख्यापन ३१, स्मृतसवि
तृसमयोदन्तपुनःपुनर्लिखितश्रेष्ठशपथप्रीतिपत्रसविनयराणाराजम
ल्लपुरामहाभक्तमिश्रणाऽऽनन्द १६०१ समाकारण ३२, तत्साह
ससंकुचितमिश्रणाऽऽनन्द १६०१ स्वपुत्रबाल्यवयस्ककार्मानन्दिलु
म्ब१६२१ प्रेषण ३३,सविनयसत्कृतलुम्बा१६२१र्थराणासोट्टोल्लाप १
पुरषड्विंशतिसहस्र२६००० वार्षिकबलिशासनवितरण ३४, राजम
ल्लानन्तरहताग्रजप्राप्तपट्टसंग्रामसमयलुम्ब १६२१ पाणिपीडनप्रयो
जनप्राप्तमहाभक्तमिश्रणासवितृ१सुत२ युग्म २भ्रातृघातराणामिल
नानङ्गीकरण ३५, कृतपौत्रोपयामपस्त्यप्रत्यागतद्विजदत्तसर्वस्वस्व
शयसमात्तसाधारतुलसीकमहाभक्तमिश्रणसवितृसुतद्वय२सप्रणा-

अजमेर के राजा गौड़ बछराज का बाघनवाड़ा पुर के शांसण (उदक) सहि-
त अड़बपशाव देकर फिर भरण पोषण करना, बेटा पोता के मरे पीछे दादा
पीठवा के मरने पर परपौता आनन्द का उत्तरक्रिया करना, अपने पुत्र कर्मा-
नन्द सहित आनंद के बडे भगवद्भक्त होने की सूचना करना, पिता के समय
के वृत्तान्त का स्मरण करके फिर श्रेष्ठ सौगन से विनय पूर्वक वारंवार प्रीति
पत्र लिखकर राणा रायमल्ल का पहले महाभक्त मीशण आनन्द को बुला
ना, उस हठ से संकोच न करके मीशण आनन्द का अपने पुत्र बालक अवस्था
वाले कर्मानन्द के पुत्र लुम्बा को भेजना, विनय पूर्वक सत्कार करके लुम्बा के
अर्थ राणा का ऊंटाला पुर सहित छब्बीस हजार सालाना आमदनी का शां-
सण देना, रायमल्ल के पीछे वडे भाई को मारकर पाट लेनेवाले संग्रामसिंह
के समय लुम्बा के विवाह का प्रयोजन पाकर वडे भक्त मीशण पिता और
पुत्र दोनों का भाई को मारनेवाले राणा से मिलने का इनकार करना, पोते
का विवाह करके पीछे घर में आकर ब्राह्मणों को सर्वस्व देकर अपने हाथ में
तुलसी के साधारण पोधे को ग्रहण करके महाभक्त मीशण पिता पुत्र दोनों
का मार्ग में प्रणाम सहित तीर्थ को प्रस्थान करना, तीनों दिशाओं के तीर्थ

मसरणिसंक्रमतीर्थप्रस्थापन३६, कृतदिक्त्रय ३तीर्थप्रत्यक्प्राप्तद्वारकेशदिदर्शयिषुमिश्रणानन्द १ कर्मानन्द २ महाभक्तरोहिडकवीश्वरदास ३ मार्गमिलन ३७, मद्य १ मांसा २ दिसर्वभोगसङ्गत्यावमतत्यक्तेश्वरसार्थपूर्वपुरीप्राप्तप्रासादप्रतीहारप्रतिज्ञातप्रभुप्रेक्षणानवसरप्रतिवलितपितृ १ पुत्र २ सम्मुखागच्छदीश्वर १ प्रत्यानीतद्वय २ द्वारकेशदर्शन ३८, तन्मात्सर्यमुमूर्षुकृतझम्पमितद्रुमग्नमिश्रणयुग्म२द्वारकेशदम्पतिशुण्डा१शूल्या२दिभोज्यमानमहाभक्तेश्वरदास१दर्शन३९, प्रभुदम्पति २ पादपद्मपतितमारितमनोमदभृत्यभावभोजितभक्तयुग२ समाश्वासन४०, खिचि१३पिप्पराज १प्रतिमद्वारहठेश्वरदास२प्रभुमतमुद्राबहिरानयनमतभेदभणन४१, तदवधिसूचितस्वभक्तेश्वरदास १ वीज्यजननकरतप्तमुद्राङ्कनश्रीद्वारकेश्वरसमर्पणप्रसादितस्वभक्तलय३वार्धिबहिर्विसर्ज्जन ४२, तदर्वागद्यावधिमहाभक्तेश्वरान्ववायजनयात्रासमागतजनतातप्तमुद्रांकनप्रभृ-

करके पश्चिम में जाकर द्वारकाधीश के दर्शन की इच्छावाले मीशण आनन्द और कर्मानन्द का महाभक्त रोहड़िया बारहठ ईसरदास से मार्ग में मिलना, मद्य, मांस आदि सब भोगों की संगति से अवज्ञा करके ईसरदास का साथ छोडकर पुरी में पहिले पहुँच कर अब दर्शन का समय नहीं है, ऐसे द्वारपाल के कहने से पिता पुत्र दोनों के पीछे मुडने पर सन्मुख आयेहुए ईसरदास के पीछे लाने पर दोनों को द्वारकेश का दर्शन होना, उस मत्सरता से मरने की इच्छावाले समुद्र में कूदकर डूबेहुए दोनों मीशणों का जोड़ा सहित द्वारकेश के हाथ से मद्य पीते और सूला भोजन करतेहुए महाभक्त ईसरदास के दर्शन करना, जोड़े सहित प्रभु के चरण कमलों में पड़कर मन के मद को मारनेवाले दोनों भक्तों को सेवक भाव से तृप्त करके सांत्वना देना, पीपा खींची के सदृश बारहठ ईसरदास का प्रभु की इच्छा से छाप बाहर लाने के मतभेद को कहना, उस सूचना कीहुई अवधि से अपने भक्त ईसरदास के वंशज मनुष्यों के हाथ से तपीहुई छाप से चिन्हित करने को श्रीद्वारकेश्वर की प्रसन्नता से वह छाप समर्पण करके अपने तीन भक्तों को समुद्र से बाहिर निकालना, उस समय से लेकर अब तक महाभक्त ईसरदास के वंश के लोगों का यात्रा

तिपृथन४३,स्वीकृतयवनेन्द्रमार्गितस्वजातिसम्बन्धिदमद्रम्मलक्ष
१००००० रुद्धनवचन्द्रोदयसम्प्रापितसमयसत्यत्वबारहठेश्वरदासस
जातायसाहसस्वापतेयस्वयंसमर्पणभावितामणन४४,कविकुलपर-
पुरुषमहाभक्तमिश्रणानन्द १ कर्माणन्द २ सवितृ १ सुत २द्वय २ द्वारकागमनसम्भवसमयसूचनं त्रिंशत्तमो ३० मयूखः ॥३०॥

आदितः सप्तसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

मन्नि मीर बाबर ३० मुगल, मालव १ गुज्जर २ मीर ॥
चित्रकूट १ बुंदिय २ चढन, सजे बहुरि जयसीर ॥ १ ॥
नारायन १८७।१ बुंदिय नृपनि, सिंहन रमन सिकार ॥
गो ग्रीखम खटपुर गिरिन, अल्पहि भटन उदार ॥ २ ॥
आवर्ता १ मेध्या २ उभय२, तटिनिनि अंतर तत्थ ॥
कतिदिन रहि बन केसरिन, सातन किय बलसत्थ ॥ ३ ॥
मेटि गवादिन दुख महत, करि निर्भय कांतार ॥
बुंदिय किय प्रस्थान बलि, परिकर अल्प प्रकार ॥ ४ ॥
अक्खय १८६।१ सुत संग्राम १८७।१ वह, समरकंद१के संग॥
मारयो जब बुंदिय महिप, रक्खि बिरुद कुल रंग ॥ ५ ॥
सुत नरवद १८८।१ संग्राम१८७।१को. अग्पिन तवसन आनि॥

के लिये आयेहुए मनुष्यों को तपीहुई छाप से चिन्हित करने आदि का प्रसिद्ध करना, बादशाह के मांगेहुए अपनी जाति सम्बन्धि दण्ड के लाख रुपयों के लिये नवीन चंद्रमा का उदय होना रोककर रुपये प्राप्त होने के समय सत्यता पूर्वक बारहठ इसरदास का अपनी जाति के दण्ड के धन को स्वयं देने का कथन करना, ग्रंथकर्ता(सूर्यमल्ल)के पुरुषा महाभक्त मिशण आनंद और कर्मानंद पिता पुत्र दोनों के द्वारका जाने के समय की सूचना करने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३०॥ और आदि से एक सौ सतत्तर १७७ मयूख हुए

१नदी का नाम है. दोनों२नदियों के बीच में. सिंहों का३नाश किया।३।४बन

छिद्र लखत मारन छितिप, मुख्य भाव निज मानि ॥ ६ ॥

पट्पात् ॥

स्वल्पहि परिकर सहित जानि बुंदिय नृप जावत ॥
अप्पन इह आखेटे स्वामि क्रीडन न सुहावत ॥
गुढानाम जँहँ ग्राम भिल्ल सह रन निवासभुव ॥
खल तँहँ दुरि इक खाल हड्ड नरवद १८८।१ व्यवहित हुव ॥
नरनाथ ग्रात सहसा निकट विकट घात तुपकन बिरचि ॥
चढि तदनु अद्रिजीवन चहिय वालिस रहिय पलाइ बचि ।७।

दोहा ॥

इक१ गोलिय महिपाल उर, प्रखर गई कढि पार ॥
तवहि दुरग पिल्ल्यो तुरग, कुप्पि उरग अनुकार ॥ ८ ॥

पट्पात् ॥

सुपहु घाय छकि सुभट पिक्खि निज अह ८ गये परि ॥
सहसा तुपकन सलक इक्क१ करि भजत भीत अरि ॥
सयँ धरि आयस संगि प्रहत हंकिय नरवद१८८।१ पर ॥
वह विहस्त प्रिय असुन उच्च जिमतिम लैगो अरं ॥
न निहारिय थल सु हयगम्य नृप दूरहि सक्कि प्रहार दिय ॥
लखि अहित निंब इक ओडि लिय कासूँ दलँ तरुबेधक्किय ।९।
तुपक चली इततैंहु भीत नरवद१८८।१ खल भज्जत ॥
ताके संगिय तीन३ लुट्टि गोलिन गय लज्जत ॥

॥ ४ ॥ ५ ॥ अपने को पाट्यो मानकर १राजा को ॥६॥ २ शिकार. एक ३ नाले में घुसकर ४ आड में होगया (छिपगया) ५ नारायणदास के समीप आते ही ६ अचानक ७ जिस पीछे ८ मूर्ख ९ भागकर बचरहा ॥ ७ ॥ १० तीक्ष्णता पूर्वक. दुर्गम स्थल में ११घोड़े को बढाया. कोप कियेहुए १२ सर्प के १३ सदृश ॥८॥ १४हाथ में १५लोहे की सांग लेकर १६ मारने को १७व्याकुल. प्यारे १८ प्राणों को ऊपर की ओर१९शीघ्र. राजा ने उस स्थल को२०घोड़े के जाने यो ग्य नहीं देखकर दूर से ही बर्छी का प्रहार किए २१ शत्रु ने जिसको देखकर निम्ब के वृक्ष का आश्रय लिया२२बर्छी ने उस२३आधे वृक्ष को बेध डाला॥९॥

बरछी अवहित[1] बाहि मूढ[2] हुव तदनु महीपति ॥
सिबिका धरि हयतैं सु सुभट लाये जव[3] संगति ॥
पंथहि परासु[4] हुव हड्डपड्ड तक्कहु नियति[5] प्रतीप[6] तिम ॥
गज जत्थ गिरहिं तत्थ न गिरहिं अत्थ गिरहिं छलघात इम ।१०।
केदारेस्वर निकट बिमन तिम रहि अपबाँदन[7] ॥
होत नगर हाकार सुद्धि पठई प्रासादन ॥
रानी त्रिक३ रट्ठोरि३ रहित सज्जिय उर्ज्जल[8] रस ॥
इक्क१ भुजिष्या[9]१ इतर दयित[10] दासी एकादस११ ॥
व्है सज्ज संग इम पंद्रह१५ हि जाइ सुदित नृप१सह१६जरिय॥
कौंरे[11] कुमार द्वादस१२ दिनन कथित सर्ब समुचित करिय ।११।

दोहा ॥

पट्ट पिताको समयपर, कोंरो[12] पाइ कुमार ॥
हड्डन नृप रविमल्ल[13]१८८।१हुव, हड्डवती दुखहार[14] ॥ १२ ॥
सक बसु द्दग पंद्रह१५२८समय, भो नारायण१८८।१ भूप ॥
ससि बसु तिथि१५८१इक्का१हानि सु, रक्खिय जस अनुरूप[15] ॥१३॥
वा१५८१हि बरस जित्ते उभय२, मालव१ गुज्जर२ मीर ॥
बाबर३०सौं दूजे२ बरस१५८१, बिजय लह्यो प्रतिबीर ॥ १४ ॥
सक चउ बसु तिथि१५८४मित[16] समय, आगम[17] बिधि अनुसार ॥
असित जेठ तजि देह इम, गो नृप त्रिदस[18] अगार ॥ १५ ॥

षट्पात् ॥

---

१ छिपेहुए पर २ मूर्छित ३ शीघ्रता पूर्वक. हाडा राजा मार्ग में ४ गत प्राण होगया सो ५ भाग्य का ६ उलटापन देखो कि जहां युद्ध में हाथी गिरते हैं वहां तो नहीं गिरा और यहां छलघात से गिरा ॥ १० ॥ राजा को मारनेवाले नरबद की ७ निन्दा करते हुए ८ शृंगार रस ९ पाशवान १० प्यारी ११ कुमर सूर्यमल्ल ने ॥ ११ ॥ १२ कुमर सूर्यमल्ल १३सूर्यमल्ल हुआ. हाडोती का१४दुःख हरनेवाला ॥१२॥ १५ अपने सदृश ॥१३॥१४॥ १६गणनावाले सम्बत् के१७आने पर१८स्वर्ग गया ॥ १५ ॥

सु सुनि राम संग्राम कलित जय त्रय३ उपकृते१ कहि ॥
सोधि समय हुव सुद्ध रुद्ध मंगल वादन२ रहि ॥
सदन रक्खि मह सून्य अदने३ गुरु बदन अनुष्ठित ॥
पुनि पुनि प्रकट पयंपि हड्डभूपति अपुव्व हित ॥
जब लहिय गंजि दिल्लीस जय हायन प्राभृत१ हिर२ गुन हुव ॥
सो सब पठाइ टीका३ सहित दिय बुंदिय भट भेजि दुव२ ॥१६॥
वारन४ दुव२ चउ४ वाजि उभय२ असि जटित सुहि इम ॥
सिरुपेच१ रु सिरुपाव२ तून२ कोसुक२ दुव२ दुव२ तिम ॥
कोसे५ रहित करवाल दुव२ रु कट्टार रहित दुव२ ॥
द्विरगुन उपायन विदित हड्डनृप पहँ पठातहुव ॥
इम संग बहुरि टीका३ उचित इक१ इक१ गज१ सिरुपाव१ अरु ॥
इक१ सनिन भूखन रु हय उभय२ पठये कहि हितमें न पैरु॥१७॥

दोहा ॥

त्रय३ वारन१३ सिरुपाव त्रय३, त्रय३ भूखन छ६ तुरंग ॥
जुग२ जुग२ प्रत्यंकार२ जिम, खग्ग२ रु चाप२ निखंग ॥१८॥
सामग्री हितपत्र४ सह, यह सब नृपहिं निवेदि ॥
गये रान सामंत१५ गृह, खल१ अहित२ न मन खेदि ॥ १९ ॥

॥ षटपात् ॥

महीसैन रविमल्ल१८८१२ छत्र धरतहि सासन छंम ॥

---

१ विदित२उपकार. मङ्गलीक ३बाजा बन्ध करबाकर. घर का४उत्सव मेंं शून्य रखकर और श्रेष्ठ५भोजन से मुख को शून्य ६ किया अर्थात् उत्तम पदार्थ भोजन नहीं किये७कहा. ●सालाना८नजराना ॥१६॥९हाथी १०घड़ा. तलवार और कटारी के ११खाली म्यान. हिन में १२गांठ नहीं होती है यह कहकर भेजे॥१७॥१३हाथी १४म्यान ।१८। राना के १५उमराव ।१९। १६भूपति १७जुमर्द

यहां १५८२ के सम्वत् में महाराणा सांगा और बाबर का युद्ध लिखा सो ठीक नहीं है, क्योंकि यह युद्ध १५८४के सम्वत् में हुआ था सो ऊपर के नोट में लिखदिया है. अब यहां १५८४के ज्येष्ठ वदि में नारायणदास का नाराजाना लिखकर महाराणा सांगा का सालियाना भेजना लिखा सो भी नहीं बन सक्ता क्योंकि इससे एक महीने पहिले महाराणा सांगा का देहांत होचुका था ॥

खटपुरपति सिर खुल्लि कटक केतन[1] किय संक्रम[2] ॥
भजि नरबद१८८।१ गय भीरु भूप लुट्टिय तस बैभव ॥
इक१ गज सत्तरि७०अस्व हेति[3]१ धन सहित जिताहव[4] ॥
अवसेस लेत निवसथ अखिल काकासुत अर्जुन१८८।१कथन ॥
रक्खिय सु इक्क१खटपुर रिपुहिं पुहवि[5] छिन्निलिय खिल[6] प्रथन।२०।

दोहा ॥

जंपिय अर्जुन१८८।१खलहिं जव, नरबद१८८।१मारहिं न्याय ॥
तस मनुजन भोजन तदपि, रक्खन समुचित राय ॥ २१ ॥
यातैं खटपुर रक्खि इक१, निलय आइ नरनाह ॥
परिपंथक[7] सारंगपुर, सुनि किय सज्ज सिपाह ॥ २२ ॥
पाइ जवन सारंगपुर, मखन नाम निजमित्र ॥
जाइ दुरिय नरबद१८८।१ जहाँ, चरन[8] ढुंढि किय चित्र[9] ॥ २३ ॥

षट्पात्–मिहिरमल्ल[10]१८८।१ महिपाल सुद्धि सुनतहि हंकिय सजि ॥
बढिय हक्क दिस१विदिस२ बंब१ मद्दल[11]२निसान३बजि[12] ॥
पहुँचत दूत पठाइ बिहित[13] नय मखन प्रबोधिय[14] ॥
हम पहिलैं तकि हितहि सिद्ध आगम फल सोधिय ॥
यातैं गहाइ तुम देहु१ अरि कै अब पग मंडहु२कलह ॥
यहसुनि कहाइ पठई जवन सरनागत मम प्रान सह ॥ २४ ॥
मखन१ रक्खि निजमित्र२ लरन आयउ इम संलपि[15] ॥
[16]केलि कराल करवाल धार चल्लिय दुर ओर धपि[17] ॥
मिलतहि पूरनमल्ल१८८।३हड्ड१बेधिय नवाब२हय ॥
गिरत बाह भजि गयउ खान छप्पन५६ पहुँचे खय ॥

१ ध्वजा २ गमन ३ शस्त्र ४ युद्ध जीतनेवाला ५ ग्राम ६ विस्तारवाली बाकी की भूमि छीन ली ॥ २० ॥ २१ ॥ ७ शत्रु को ॥ २२ ॥ ८ हलकारों ने तलाश करके ९ आश्चर्य किया ॥ २३ ॥ १० सूर्यमल्ल ११ वाद्यविशेष १२ वाद्यविशेष १३ उचित नीति से १४ समझाया।२४। १५ कहकर १६ युद्ध १७ दौड़कर अथवा तृप्त होकर

दुव२लगिय भूप१८८।१छत्तिय प्रदर नय३छत्त पूरनमल्ल१८८।३तनु ॥
सामंत१८७।१सेव१८७।१छ६रु चउ४सहियनव६छतलहियदलेल१८८।१ ननु

दोहा ॥

हयतैं गिरि नृपकै असह, मर्म भिदत हुव मोह ॥
आनि सम्हारत बंधु इक१, दल्यो अरिन भ्रम द्रोह ॥ २६ ॥
पंद्रह१५ भट इतकै परत, वपु छत धरत दुवीस२२ ॥
मिल१सहित भजिगो मखन२, तजिगो लखन छतीस३६ ।२७।
पुनि लुट्टि सु सारंगपुर, चढे हयन चहुवान ॥
जवन विभव लै सब जई, आये पुर अतिमान ॥ २८ ॥
आयो हुंदिय अर्जुन१८८।१हु, सोक असह खिन सोधि ॥
पच्छो रान सु दै सपथ, बुल्ल्यो नृप१८८।१ सु प्रबोधि ॥ २९ ॥
जवन मखन सन पाइ जय, रानाँ गौरव रक्खि ॥
पठयो अर्जुन१८८।१भ्रात पहु, उचित सहायहि अक्खि ॥३०॥
अर्जुन१८८।१जातहि देर उत, हुव मिच्छन रन होन ॥
मालव१ गुज्जर साह मिलि, गंजन पुनि किय गोन ॥ ३१ ॥

पट्पात् ॥

सजि लहि बावर३० सैन मीर महमूद१ मुदाफर२ ॥
आये सह दल असह प्रथम चित्तोर१ लेन पर ॥
दै कुंडल लवनोद १ द्वीप जंबुव २ गरदायउ ॥
मंदर९ अग किंमु मथित प्रथित वासुकि२ पलटायउ ॥
इम वेढि दुरग अंतपज उभय२ रचि छ६ मास तोपन रचन ॥
कछु हानि न गिनि कुहकन कियउ धुस्मन गढ बारूद धक।३२।

१ तीर २घाव ३ निश्चय ॥ २५ ॥ ४ मूर्छा ॥ २६ ॥ पुरुष के ५ छत्तीस शुभ लक्षण होते हैं उनको छोड गया ॥ २७ ॥ २८ ॥ शोक का असह्य ६समय देखकर. राजा को ७स मझाकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ८घेरा देकर ९क्षारसमुद्र ने जम्बुद्वीप को घेरा १०मानों मथने के लिये ११ प्रसिद्ध मन्दराचल के वासुकि नाग ने पलेटा लगाया ॥ ३२ ॥

पिहित संधिला पृथुल खलन गढ अधरे खनाइय ॥
इक्क१बुरज तर अवधि अवनि अंदर वह आइय ॥
कुतू निकर सोरसन सघन ता बिच द्रुत दह्यिय ॥
अवसर दिय अंगार फार फैलत गिरि फट्टिय ॥
वीथी सु गूढ गत जिहिँ बुरज, सहसा वह उड्डत समय ॥
रविमल्ल१८८।१भ्रात संध्या रचत गहि असि नग्गिय गगन गय।३३।
ताहि बुरज सिर तवहि इक्क१ आयत सिल उप्पर ॥
कृत्य नियत निज करत हड्ड६१ मातहि कुल्लहन१७६।१ हर ॥
उडत अट्ट पर उडत सिला उप्पर नरवद१८७।१सुत ॥
तजि जप कढ्ढिय तेग वेग वैरिन करि विद्रुत ॥
घन धूम सवन भासत घटा१ बिज्जु२दृगन मुंदत वढिय ॥
कैं रक्तवीज चट्टन कलह कालिय मुख१ रसना२कढिय ।३४।
नरवद१८७।२अंगज निधन उडत बारूद लहत इम ॥
पद्दर होतहि पंथ तँहँ न अट्टाल चिन्ह तिम ॥
सुनत रान संग्राम अधिक बुंदिय आसानहिँ ॥
वहुल सोक सह वदिय धारि हिंगुलु१८०।९ लग ध्यानहिँ ॥
अग्गैं नृसिंह१८७।३अर्जुन१८८।१अबहि हड्ड१सिर चित्तोर हुव ॥
बुंदीस आदि घायन वहुन धीर परिग बहु बंधु ध्रुव ॥ ३५ ॥
सोचि इम रु संग्राम मंडि मरनहिँ स्व सत्थ सह ॥
ताही मग करि तवहि वज्र सम परिग भयावह ॥
कछुक बिंब रवि कढत मारि खग्गन वल मिच्छन ॥
गहिय मुदाफर१ गज्जि रहिय महमूद२ अज्जि रन ॥

गुप्त पडा १ सुरंग. गढ के २ नीचे खुदाया ३ पीपों (सींदड़ों) के समूह में सोर भर कर. अग्नि का ४ समूह फैलते ही ॥ ३३ ॥ ५ चौड़ी शिला पर ६ भगाकर ७ बहुत धुँए रूपी घटा में ८शोभायमान विद्युत् रूपी नेत्रों को मूंदती हुई; अथवा रक्तबीज को चाटने के समय कालिका के मुख से जिव्हा कढी ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ९ भयानक

दिल्लिय सहाय न वन्यों दुहुरन कछु आवश्यक बीज कारि ॥
रुपि खेत रान लहि जय दुलभ पति मंडुव लायउ पकरि ।३६।
जकारि१ पकारि२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
मुदाफर१ रु महमूद२ जुगर हि पकरे कति जंपत ॥
किते कहत बहुबेर तजिय गहि गहि सु१ हि कंपत ॥
वदत किते त्रय३ बेर जुगरहि गहिगहि छोरे जिम ॥
पै संग्राम नृपाल अरिन सिर असह तप्पो इम ॥
दिल्लीस रनहि कछु भय उदय बेर इक्क१ जान्यों बिदित ॥
बाहुरयो बलि न गत बावर३०हु सन्नि घाय आहि अरं दमित।३७।
दोहा ॥
अनुजय बंब घुराइ इम, चढिय रान चित्तोर ॥
बरंन१ बुरज२ गडके गिरे, दिय बनाइ पृथुदोरं ॥ ३८ ॥
तजिय मुदाफर१ दंडि तिम, रीझत सुकविन रान ॥
गज१ भूखन२ धन३ ग्राम४ गन, दये बिविध बहु दान ॥ ३९ ॥
केसरिंया हरिदास कवि, मंडनसुत महियार ॥

१ कारण से ॥ ३६ ॥ २ शीघ्र दंडित होकर ॥ ३७ ॥ ३ विजय के साथ नगारे बजवाकर ४ कोट ५ बड़े फैलाववाले ।३८।३९। महियारिया शाखा के चारण ६ केसरिया (महियारियों की शाखा का दूसरा नाम केसरिया है)*हरिदास को

* यहां पर बादशाह मुदाफर को कैद करने की प्रसन्नता पर महियारिया शाखा के चारण हरिदास को चित्तोड़ का राज्य देना लिखा सो यह युद्ध चितोड़ में नहीं हुआ था किंतु विक्रमी संवत् १५७५ में गागरोन के पास माण्डू के बादशाह महमूद से हुआ था, जिसमें बादशाह महमूद को कैद करके महाराणा सांगा ने महियारिया हरिदास को चित्तोड़ का राज्य दिया था उस समय का हरिदास का कहा हुआ मरुभाषा का गीत नामक एक छन्द राजपूताना में प्रसिद्ध है उसका आधा चरण यहां पर लिखा जाता है कि "सांगा चामर छत्र सहे तो, दूजे किणी न दीधो दान" यहां पर मुदाफर को पकड़ना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि मुदाफर अहमदाबाद के बादशाह महमूद का मददगार अवश्य था, परन्तु वह महाराणा की कैद में नहीं आया था और यह युद्ध बावर के युद्ध से पीछे लिखा सो भी ठीक नहीं है; क्योंकि महमूद के पकड़े जाने वाला युद्ध सम्वत् १५७१ में हुआ और बावर का युद्ध इसके १३ वर्ष पीछे हुआ था ॥

पहुं किन्नौं[1] चित्तोरपहु[2], दै नृपता[3]दि उदार ॥ ४० ॥
कविहुं[4] राज्य दिन तीन३करि, चामर१ छत्र२ चलाइ ॥
कथित अर्घ[5] लहि प्रसंभ[6] करि, पच्छो दिय भय पाइ ॥ ४१ ॥
लज्जित रान सु निहि लहि, बैठो बिमँन[7] बहोरि ॥
किते कहत सुहि सोक करि, छहहि सासन गय छोरि ॥४२॥
पकरि मुदाफर१ तब सुपहु, भ्रातहि अर्जुन१८८।१ उत्त ॥
पटा द्विगुन१३०००० दै सिसुपनहि[8], किय सुर्जन१८९।१जस जुत्त४३
डुंगरपुर राउल उदय१२, साहप१कुल सिरमोर ॥
रान बंधु गुरु[9] याहि रन, गिर्यो स्वजय जस गोर[10] ॥ ४४ ॥
दुवर हुव राउल उदय१२ सुव[11], जेठो पृथ्वीराज१३।१ ॥
तास अनुज जगमाल१३।२ तिम, जस पट तनन बिजाज ॥४५॥
पित्थल१३।१हुव गिरिपुर[12]१सुपहु, जिहिं कनिष्ठ[13] जगमाल१३।२ ॥
इक१ बग्गड़[14] लहि सम भयउ, बनि प्रभु बंसबहाल[15] २ ॥ ४६ ॥
अज्जै[16] भ्रात अर्जुन१८८।१उज्जल, सुनि रविमल्ल१८८।१ नरेस ॥
सुर्जन१८९।१सुखँ[17] अग्रज सिसु७न, कुल्लन बिमन बिसेस ॥४७॥
इम पठयो हड्डुन अधिप, प्रजावति[18]४न प्रति पत्र ॥
मम अपजस अब मेटिये, आइ ससिसु[19]७तुम४ अत्र ॥ ४८ ॥

युग्मम् ॥

---

१ राजा ने २ चित्तोड़ का राजा बनादिया अर्थात् चित्तोड़ का राज्य हरिदास को देकर ३ राजा पद को आदि लेकर राजा पन की सामग्री देदी । ४० । ४ हरिदास भी ५ मूल्य ६ हठ करके । ४१ । ७ उदास ॥ ४२ ॥ अर्जुन के ८ पुत्र को । ४३ । डुंगरपुर वाले बडे भाई साहप के वंश के और चित्तोड़ के महाराणा छोटे भाई राहप के वंश के होने के कारण राउल उदयसिंह को ९ गुरु लिखा है १० उज्ज्वल यशवाला ॥ ४४ ॥ उदयसिंह के ११ पुत्र ॥४५॥ बडा पृथ्वीसिंह १२ डुंगरपुर का राजा हुआ जिसका १३ छोटा भाई जगमाल समय पाकर १४ बागड़ देश लेकर १५ बांसवहाले का राजा हुआ ॥ ४६ ॥ १६ उत्तम भाई सुर्जन १७ आदि ॥ ४७ ॥ १८ भोजाइयों को १९ बालकों सहित ॥ ४८ ॥

चहि अर्जुन१८८।१पत्निन चउ४न, आवन किय आरंभ ॥
हठि रक्खे कहि रान ठहैं, दृढ जातहि मम दंभ ॥ ४९ ॥
इक्क१तदपि तव जयवतिय१८८।१, इष्ट सपथ अनुसार ॥
सिक्ख सहित लै सुर्जन१८९।१हि, आई स्वसुर अगार । ५० ।
महिप जाइ तिनके समुह, अति मह सह गृह आनि ॥
जंपिय ज्येष्ट प्रजावतिहिं, प्रसू प्रतिमं सुत जानि ॥ ५१ ॥
सुर्जन१८९।१ सह आये सदन, अनुकंपा अति एह ॥
जगमुख करि कुलपति कुजस, गहतं बंधु परगेह ॥ ५२ ॥
पटा सहँस पंचास५००००को, हो नरवद१८७।२वस हंतं ॥
पायउ भ्रात तितो५००००हिं पुनि, सह पट्टनि१बिलसंत ।५३।
भ्रातृज खट६इक१भ्रातृजा, चउ४ तुम सानुग चाह ॥
सदन प्रजावति रहत सव, विनु इते१०००००न निर्बाह ॥५४॥
या१०००००हूतैं अब कछु अधिक, गहहु पटा रहि गेह ॥
किंकर सिर सासन करहु, आसन करहु विगेहं ॥ ५५ ॥
हिगेह १विगेह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अग्रजको दिवं वास यह, मेरी हानि महंत ॥
पै पोतँन अग्रज प्रतिम अब दालहि वय अंत ॥ ५६ ॥
तब अक्खिय गहलोतनी, अबके सौंहँ न आन ॥
बहुरि लाल ऐहैं स्ववस, थिर कुलजन जस थान ॥ ५७ ॥
उभय२ मासं रहि कहि इम सु, पुनि चित्तोर प्रविष्ट ॥

अर्जुन की१स्त्रियों ने. मेरा२कपट दृढ होजायगा।४९। ३तो भी ससुर के४घर में ॥ ५० ॥ वडी ५ भोजाई से कहा कि ६ माता के ७ सदृश मुझको पुत्र जानो ॥ ५१ ॥ ८ दया ९ हाडों के पति को१०कहते हैं, कि भाई पराये घर में है ॥ ५२ ॥ ११ खेद है कि ॥ ५३ ॥ छः १२ भतीजे एक १३ भतीजी १४ सेवकों सहित ॥ ५४ ॥ १५ पराये घर में भोजन मत करो ॥ ५५ ॥ बडे भाई का १६ स्वर्गवास हुआ सो यह मेरी बडी हानि है, परंतु१७बालकों के लिये तो बडे भाई अर्जुन के सदृश जीवन पर्यंत मैं ही हूं ॥५६॥५७॥ दो१८मास तक रहकर

कारे अग्गैं सौंह करि, अक्खि सक्खि हरि इष्ट ॥ ५८ ॥
तदपि रह्यो पहुँचात तँहँ, मुद्रा अयुत१०००० महीप ॥
सौंह नियत चिंतन समय, देखत पथ कुलदीप ॥ ५९ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुमद्र १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यसमाचरितसूचनावसरसङ्कल्प्यापनीयबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ चरमचरिते दिल्लीशबाबर ३० साहाय्यसमरसमुत्कमालवगौर्जर २ यवनेन्द्रयुग्म२ चित्रकूट १ बुन्दी २ विप्लवविचारणा १, सांग्रामिनरबद १९८।१ छद्मघातप्रयोगनिदाघकालकृतषट्पुरपर्वतपुटप्रान्तकियत्कालनिवासहतसिंहादिहिंस्रसन्दोहबुंदीप्रतिप्रस्थितस्वल्पसैन्यहड्डा १६ धिराजगुटिकावधव्यापादन २, दृष्टतद्घातप्रतितस्वभटाऽष्टक ८ गुटिकाविद्धसमात्तकालायसकासूकपरिपन्थिपृष्ठसमुत्फालितसप्तकबुंदीशतुरगागम्यगतसपत्नोपरिशक्तिप्रक्षेपनिंबार्द्ध१ वेधन ३, पातितपरपक्षित्रय ३ बुंदीशवीरवर्गतरुवेधानन्तरशिबिकासमानीतमूर्छितमहीपमार्गमरणा ४, केदारेश्वरसमीपचण्डा

सूर्यमल्ल के आगे सौगन करके अपने इष्ट परमेश्वर को साक्षी किया।५८।५९।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के चरित्र की सूचना के समय प्रसिद्ध करने योग्य बुन्दी नरेश नारायणदास के अन्तिम चरित्र में दिल्ली के बादशाह बाबर की युद्ध में सहायता की उत्कंठा वाले मालवा और गुजरात के दोनों बादशाहों का चित्तोड़ और बुन्दी में उपद्रव विचारना, संग्रामसिंह के पुत्र नरबद का छलघात के प्रयोग से ग्रीष्म समय में खटकड़पुर के पर्वतों में कुछ समय निवास करके सिंहों के समूह को मारकर अल्प साथ सहित बुन्दी पीछे आतेहुए हड्डाधिराज को गोली से मारना, उस घात को और अपने आठ वीरों को पड़ेहुए देखकर गोली से घायल नारायणदास का लोह की बर्छी लेकर शत्रु के पीठ पर घोड़े को उठाकर आगे घोड़े के जाने योग्य स्थल नहीं देखकर शत्रु के ऊपर बर्छी चलाकर निम्ब के आधे वृक्ष को बेधना, तीन शत्रुओं को पटककर बुन्दीश के वीरवर्ग से वृक्ष को बेधे पीछे पालखी में लायेहुए मूर्छित राजा का मा-

कृपापात्रदासीजनैकादश ११ सहगमन ५, प्राप्तपट्टकुमारसूर्यमल्ल १८८।१ कर्तौर्ध्वदैहिकहड्डे ६।१ न्द्रजन्म १ तद्विकूवेधन २ यवनराजत्रय ३ क्रमजय ३ संहननसंहान ४ संवत्सूचन ६, श्रुतमत्सरिमहेन्द्रमरणानिर्महनिकायशोकाशिथिलराणासंग्रामसिंहदिल्लीशजयसंश्रुतद्वि २ गुणान्द्विकोपदोपेतनवनृपपट्टोपविशनसम्बन्धिसिंधुरा १ दिसत्कृतिसम्भारसम्प्रेषण ७, सद्योवप्तृवैरवालनवर्मितवरूथमहीमहेन्द्रमिहिरमल्ल १८८।१ स्वसाध्वससारङ्गपुरपलायितसांग्रामिनरबद १८८।१ सर्वस्वसमादान ८, नारबदार्जुन १८८।१ विज्ञप्तिबीजसनाभिसपत्नस्त्रीजनादिनिघसनिर्वाहनिमित्तपत्तैक १ षट्पुरपत्तनप्रयागतश्रुनशरणीकृतप्राक्तनम्लेच्छामित्रवर्मितवरूथिनीविशिष्टप्रस्थोयपरिसरप्राप्तपृथ्वीमिहिरमल्ल १८८।१ म्लेच्छमित्रामित्रमार्गण९, सूचितस्वप्राणसार्थशरणागतमुहृत्कसमराभिषाणितशारङ्गपुरेशम्ले

र्ग में मरना, केदारेश्वर के समीप चिता पर चढ़हुए चहुवाण राजा के साथ राठोड़ी को छोड़कर तीन राणियें, एक पासवान और ग्यारह कृपापात्र दासियों का सती होना, पाट पाकर कुमर सूर्यमल्ल के उत्तरक्रिया कियेहुए इन्द्र का जन्म, इक्के को मारना, तीनों बादशाहों को जीतना और शरीर छोड़ने के सम्वत् की सूचना करना, चहुवाण राजा के मरने को सुनकर अपने घर को उत्सव से शून्य करके शोक में शिथिल राणा संग्रामसिंह का दिल्लीश के विजय आदि गुणों को सुनाकर शालियाना. दुगुने नजराने के साथ नवीन राजा के पाट बैठने सम्बन्धि हाथी आदि सत्कार की सामग्री भेजना, तुरन्त पिता का वैर लेने के लिये सेना को सजकर भूपति सूर्यमल्ल का अपने भय से सारङ्गपुर भागेहुए संग्रामसिंह के पुत्र नरबद का सर्वस्व लेना, नरबद के पुत्र अर्जुन की अरज के कारण अपने सपिण्ड शत्रु के स्त्री जन आदि के भोजन के निर्वाह के कारण एक खटकड़ पुर रखकर पीछे आतेहुए मार्ग में शत्रु का म्लेच्छ के पुर में जाना सुनकर सजीहुई सेना से प्रस्थान करके पुर के समीप पहुंचकर सूर्यमल्ल का म्लेच्छ के मित्र और अपने शत्रु को मांगना, अपने मित्र और शरणागत को प्राण के साथ देने की सूचना करके युद्ध यात्रा करनेवाले सारङ्गपुर के पति म्लेच्छ मल्लखान का युद्ध में प्रवृत्त होना,

छलस्ननप्रपनप्रवर्तन१०, नारबदपूर्णमल्ल १८८।३ हतहयपवनस्व सखिपलहकान्दिशीभवन११,स्वप्रवीरपञ्चदश १५पतनप्रकुपितपातितपरिपन्थिषट्पञ्चाश ५६ त्कबाणविद्धमर्ममूढत्वपरभ्रमपातितैक १ स्वबन्धुकनृपा १ दिबुन्दीवीरप्राप्तप्रहारसङ्ख्यासूचन१२, विप्लुतवैरिविभववसुधेशसदनागमसमयपौनःपुन्यप्रेषितपत्रराणासंग्रामसिंहपुनरर्जुना १८८।१ ह्वान १३, दिल्लीशसम्मतिसज्जमत्सरिराजमरणमुदितसंकेतितसमयसमागतवेष्टितचित्रकूटदुर्गश्चामषट्कानिश्चिरनालीयंत्रकलहाकिञ्चित्करत्वमालव १ गौर्जर २ यवनेशयुग्म २ दुर्गपीठाधोभूमिभागप्रच्छन्ननिखातसाधितसंधिलापूरितबारूद्कुतूपप्रज्वालनतद्वेगवपमानत्तौमोपरिशिलास्थितस्रंसितसन्ध्याजपस्रक्निष्कासितकृपाणनारबदाऽर्जुन१८८।१ कीलालिढसंहननहान १४,हड्डहानिमहामर्षोत्कृष्टकौक्षेयकपतितप्राकारपथप्रस्थितमण्डलाग्र १ मंदर २ मथितम्लेच्छ १ महोदधि २ प्रद्रावितगौर्जराभिमानिमहमूद १ निगडितमालवराजम्लेच्छमुदाफरनिर्घोषितनव

नरबद के पुत्र पूर्णमल्ल से मरेहुए घोड़ेवाले यवन का अपने मित्र सहित भागना, अपने पन्द्रह वीरों के पड़ने से कोप करके छप्पन शत्रुओं को गिराकर बाण के मर्म में लगने से मूढ़ होने के कारण शत्रु के भ्रम से अपने एक भाई को गिराकर राजा आदि बुन्दी के वीरों के घायलों की संख्या की सूचना करना, शत्रु के वैभव को लूट कर राजा के घर आने के समय वारंवार पत्र भेजकर राणा संग्रामसिंह का फिर अर्जुन को बुलाना, दिल्ली के बादशाह की सलाह से सजकर चहु घाण राजा के मरने से प्रसन्न होकर संकेत किये हुए समय पर आकर चित्तोड़ गढ को घेरकर छः मास तक तोपों के युद्ध से कुछ भी नहीं कर सकने पर मालव और गुजरात के बादशाहों का गढ की नीम में छाने खड्डा खोदकर सुरंग में बारूद के पीपे जलाने के वेग से उडतीहुई बुरज के ऊपर शिला पर बैठेहुए सन्ध्या करते जपकी माला गिरजाने पर तलवार की नोक निकालकर नरबद के पुत्र अर्जुन के शरीर का अग्नि की ज्वाला में नाश होना, हाडा के हानि के क्रोध से श्रेष्ठ तलवारें निकाल कर पड़ेहुए कोट के मार्ग से निकलकर खड्ग रूपी मन्दराचल से म्लेच्छ रूपी समुद्र को मथकर गुजरात का अभिमान छोडेहुए महमूद को भगाकर, मालवा के बादशाह मुदाफर को कैद करके नवीन विजय के

जयनिश्शाणराणासंग्रामसिंहयवनयुग २ कीलनकिंवदंतीबाहुल्य
विचिकित्साविख्यापन१५, समात्तसाहसस्वापतेयमुक्तमण्डुराजमुदा
फरराणास्वविजययशोविस्तारकसुकविसंघातविविधोत्सर्जनसमय
महिकारद्वारहठहरिदासार्थमप्रमभचित्रकूटराज्यदान १६, सपक्षी
णका १८८तपत्र २ दिनत्रय ३ कृतराज्यस्वप्रासभ्यसमात्ततदर्घस्वा
पतेयद्वारहठहरिदासपुनस्तद्राज्यप्रत्यर्पण १७, राणानारवदाऽर्जुन
१८८।१ ज्येष्ठतनूजबाल्यवयस्कसुर्जना १८९।१ ऽर्थपूर्वद्धि २ गुणा
१३०००० विंदकवलिवसुकपट्टप्रदान १८, मुदाफर १ ग्रहणोतदण
राणाकुलज्येष्ठपरपुरुषमाहात्म्यराज १ बीज्यमुख्यगान्धारजनपद
जनेशगिरिपुराधिराजराजकुलोदयसिंह १२ चारभटतल्पस्वपनसूच
न १९, तत्पट्टपपुत्रपृथ्वीराजा १३।१ नुजसमाक्रान्तस्वाग्रजसीमसंहि
तसमानदेशकृतवंशकुल्यापुरस्कन्धावारप्राप्तराजकुलोत्टंकजगमा
ल १३।२ भ्रातृभिन्नभूपत्वभास्यमानभावताभगान २०, श्रुतार्जुनसं
स्थानशुक्रमसाकुलपजावतीचतुष्क ४ पार्श्वपोषितपत्र [illegible] धिराजम्

नगार पजवानेवाले राणा संग्रामसिंह का दोनों यवनों का कैद करने का दन्त
कथा की अधिकता में सन्देह की सूचना करना, बादशाह को पकड़कर धन ले
कर मालवे के राजा मुदाफर को छोड़नेवाले राणा के विजय का यश फैलाने
वाले कवियों के समूह को नाना प्रकार के दान देने के समय महि
यारिया चारण हरिदास को हठ पूर्वक चित्तोड़ का राज्य देना, चमर और
छत्र के साथ तीन दिन राज्य करके उसकी कीमत का धन लेकर चारण ह
रिदास का हठ पूर्वक उस राज्य को पीछा देना, राणा का नरबद के पुत्र [illegible]
न के बड़े पुत्र सुर्जन को बालक अवस्था में पहिले से मालाना [illegible]
नीवाले धन का पट्टा देना, मुदाफर के पकड़जानेवाले इस युद्ध में पुरुषार्थ के
माहात्म्य के कारण वंश में बड़े वागड़ देश के नरेश डूंगरपूर के रावल उदय
सिंह का वीरशय्या में सोने की सूचना करना, उसके पाटवी पुत्र पृथ्वीराज
के छोटे भाई जगमाल का अपने बड़े भाई की सीमा को घेरकर बराबर का
देश लेकर बांसवाले में राजधानी करके रावल पदवी लेकर भाई से जुदा
राजापन से शोभायमान होने की आनेवाले समय में सूचना करना, अर्जुन
के उड़कर नाश होने को सुनकर शोक में व्याकुल होकर चारों भोजा[illegible]

र्यमल्ल१८८।१समाहूतसुर्जना१८९।१दिसर्वस्वबन्धुराणारोधनं२१, सश पथप्रतिजातप्रत्यागमराणासम्मतिसानुकूलस्वमुख्यसूनुसुर्जन१८९।१ समुपेततज्ज्येष्ठप्रसूगुहिल्लपुत्रीजयवती १८६।१ श्वशुरगेहागमन २२, समभिगमनतत्कृतिसहसदनसमानीतप्रसूप्रतिमप्रजावर्ताप्रतिप्रतिश्रु तपूर्वा१०००००धिकपट्टार्पणनरेन्द्रनिलयनिवासानुष्ठानप्रार्थन २३, प्रोक्तसनिदानपुनरागममासयुग२कृतश्वाशुर्यनिवासमुख्यसूनुसमुपेत गुहिल्लपुत्रीपुनश्चित्रकूटागमन२४, नरेन्द्रतन्निर्वाहार्थप्रत्यब्दमुद्रायुत १००००तत्पार्श्वप्रेषणप्ररूपान२५, मेकत्रिंशत्तमो३१मयूखः ॥३१॥

आदितोऽष्टसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सर वसु तिथि१५८५मित तदनु सक, जेठ१असित२दल[2] जात ॥
तजिय रान संग्राम तनु, भिच्छन अभय भनात ॥ १ ॥
मीराँपति[3] पुव्वहि मर्‌यो, कह्यो भोज १ कुमरेस ॥
रह्यो जनक गद्दिय रतन२, यातैं तदनुज[4] एस ॥ २ ॥
लहि गद्दिय किय रान लहुँ[5], पुद्गल[6] दुव२ इक१ प्रान ॥

के पास पत्र भेजकर ढूंढाधिराज सूर्यमल्ल के बुलाये हुए सुर्जन आदि सब भाइयों को राणा का रोकना, सौगनों से पीछे आने की प्रतिज्ञा करके राणा की सलाह से प्रसन्न होकर अपने पांचवां पुत्र सुर्जन सहित उसकी बड़ी माता गुहिलपुत्री जयवती का ससुर के घर आना, सन्मुख जाकर उसको घर में लाकर माता के समान भोजाई को पहिले से अधिक पट्टा देना सुनाकर राजा का घर में निवास करने की प्रार्थना करना, कारण सहित कथन करके फिर आना कहकर दो मास ससुर के घर निवास करके बड़े पुत्र सहित गुहिलपुत्री का फिर चित्तोड़ जाना, राजा का उसके निर्वाह के लिये उसके पास दश हजार रुपये भेजने की सूचना करने का इगतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३१॥
और आदि से एक सौ अठहत्तर १७८ मयूख हुए ॥

१ जिस पीछे २आधा पक्ष ॥ १ ॥ ३ मीराँ बाई का पति कुमर भोजराज ४ उस (भोज) का छोटा भाई ॥ २ ॥ ५ शीघ्र, ६ दो शरीर और एक प्राण

पूरबिया१ *कुट्ठारपति, पूरनमल्ल प्रधान ॥३॥
जनक तास ढक्कू सु जस, वह्नि सभा बुंदीस ॥
अट्ठ८ भाग किय अंगके, सठ हुवात तृन सीस ॥ ४ ॥
पट्ट रहिय संग्राम पहु, जोलौं दाव न जानि ॥
वैर वहोरन बप्पको, पूरन अब सु प्रमानि ॥ ५ ॥
छिद्र लखन कछु सह्हि छल, मागन नृप रविमल्ल १८८।१ ॥
हन्यौं जनक न सक्यो सु हनि, हग्गत अब खिन हल्ल ॥ ६ ॥
आत दसेग बिसद इम७, आह्निक जो उपहार ॥
सबहि मेटि दुरहय१६ बसन२, प्रहित किन्न नव प्यार ॥७॥
नृप रक्खन लग्गो सु नन, प्रसूं कहिय तब पुत्त ॥
भानेज न ऐसी भनैं, यह किय ढक्कू उत्तै ॥ ८ ॥
जेठी बहिनी जानतहि, सुत दैहैं समुझाइ ॥
यातैं सुत रक्खहु यहहु, पुनि सु रहहिं पछिताइ ॥ ९ ॥
कथित प्रसू रट्ठारिको, अधिप कारि सु उपहार ॥
रक्खिय तउ रान सु रतन, कृतघ्न हुव अघकार ॥ १० ॥
प्रसू धना बोधिय तदपि, भनि तासन हुव भुल्लि ॥
रिपु भावहिं तिहिं रक्खयो, खलपन प्रकटन खुल्लि ॥ ११ ।
मालव १ गुज्जर२ प्रथम १ मृधँ, हनन छन्न हद्द ६१ स ॥
किय ढक्कूसुत जो कपट, सो लखि त्वरित असंस ॥ १२ ॥
नरबद१८७।२सुत पूरन१८८।३निपुन· पूरनको वह पाप ॥
सब निवेदि नारायन१८७।१सु, अवहित किय जब आप ।१३।
युग्मम् ॥

*कोठारिया नामक पुर का पति ॥३॥ नारायणदास के मस्तक पर तृण रख के कारण नारायणदास ने ढक्कू को मारडाला था सो कथा ऊपर आचुकी है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ नवीन स्नेह से १ भेजा ॥७॥ सूर्यमल्ल की २ माता ने. य ह ढक्कू के ३पुत्र ने किया है ॥८॥९॥ ४ कियेहुए उपकार को भूलनेवाला ५पापी ॥१०॥ माता धन्ना ने ६समझाया तो भी ।११। ७युद्ध में ।१२। ८सावधान ॥१३॥

सोहि गिनत तबतैं असह, पूरनै मन घन पीर ॥
पठये मारन पूरन१८८।३ हिं, बुंदिय अब दुव२ वीर ॥ १४ ॥
मग हिंडोलिय जात मिलि, घल्लि तुपक१ धनु२घात ॥
दुरे भजत निस थकि दुव२हि, प्रविसि सक्रगढ प्रात ॥ १५ ॥
नृपके चर३ अद्भुत निपुन, वाही अहँके अंत ॥
गादिय सुद्धि दुरि सक्रगढ, हैं कृतघ्न दुव२ हंत ॥ १६ ॥
इती सुनत नृप टारि अर, इक्क सहँस१००० असवार ॥
ताही निसके अंत तँहँ, पहुँच्यो बरँन ८सार ॥ १७ ॥
पठई कहि अध्यक्ष प्रति, पहिलैं घरविधि पूरि ॥
हित बुंदिय१ चित्तोर२ हैं, सो पिक्खहु जो सूरि ॥ १८ ॥
इहाँ उभय२ दुरिबे अधम, पूरन१८८।३ हनन प्रयोग ॥
करि भज्जत आये कुहक, भोगन निजकृत भोग ॥ १९ ॥
ते दुव२ देहु गहाइ तुम, इक१ पन लखि दुहुँ२ओर ॥
नतो रक्खि पविसँय निलय, जय सँय मंडहु जोर ॥ २० ॥
हाकिम तँहँ पहिलो हुतो, नवमंत्री बस नाँहिं ॥
जिहिं भेजे निगडितैं जुग२हि, महिप हड्ड१ दल माँहिं ॥२१॥
इक्क१ कढ्यो पडिहार१ अरु, सोढा२ अपर२ सु गूढ ॥
पठये दुव२ चित्तोर पहु, महा निगड गृह मूढ ॥ २२ ॥
जानैं रान१ न तस जननि२, तिम ढक्कुसुत तक्कि ॥
दिय छुगाइ घातक दुव२ हि, छमपनँ मन घन छक्कि ॥ २३ ॥
इनहिं सक्रगढ सचिव इत, जुत दल गोठि जिमाइ ॥

---

१ कोठारिया क पति पूरणमल्ल के मन में २ पूरणमल्ल हाडा को मारने के लिये ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ हलकारे. उसी ४ दिन के अन्त में ५ खबर दी ॥ १६ ॥ ६ शीघ्र ७ घेरा फैलाकर ८ पण्डित ॥ १८ ॥ ९ अपने किये हुए का फल भोगने के लिये ॥ १९ ॥ १० वज्र ११ घर १२ हाथ ॥ २० ॥ १३ नवीन मन्त्री पूर्णमल्ल के बश में नहीं था १४ मन्धेहुए ॥ २१ ॥ २२ ॥ १५ समर्थपन से ॥ २३ ॥

सोपायन पठये सदन, पूरन भय कछु पाइ ॥ २४ ॥
सुहि उदंत पूरन सुनत, वह पटु सचिव१ उतारि ॥
स्व इतर२पठयो सक्रगढ, धक बुंदिय सिर धारि ॥ २५ ॥
गर्दिय रानप्रति सो गुनी, हित तजि हड्डह१न हाय ॥
अब किय टींकादोर इत, विप्लव पुरन विधाय ॥ २६ ॥
रानहु बालिस मानि ऋत, उपालंभ पठयोहि ॥
कछु अंतर लिपि पत्र करि, लघुं अरिभाव लयोहि ॥ २७ ॥
निज मातहिं रविमल्ल१८८।१ नृप, दिन्नों छंद सु दिखाइ ॥
खेत१८७।३ पूरन और खिजि, हत पन करि हाइ ॥ २८ ॥
भगिनी१ अरु भानेज२कै, पठयो सुहि छंद पास ॥
दयो न पहुँचन जो दलहु, पूरन बैर प्रकास ॥ २९ ॥
युग्मम् ॥
दुव२ सोदर विक्रम१ उदय२, बदि बुंदियपति बंधु ॥
आतनाविच पटकी भिदा, अधिपहिं बोरन अंधुं ॥ ३० ॥
अनुजनकौं धीजैं न इम, जामिजै हड्डह१न जानि ॥
पूरन बस हुव रान पहु, अधमभाव निज आनि ॥ ३१ ॥
इत बुंदिय कारेउरग, मिहिरमल्ल१८८।१ महिपाल ॥
गिनि अंतर चित्तौरगढ, जानिलयो रिपु जाल ॥ ३२ ॥
जास जहूरुद्दीन३० जग, अपर१ विदित अभिधान ॥
इत दिल्लिय बढिगो अतुल, सो बाबर सुलतान ॥ ३३ ॥

१नजराना करके२पूर्णमल्लका।२४।वृत्तान्त।२५।४जानी५पहिले समयमें राजा गद्दी पर बैठते ही शत्रुओं के देश पर धावा मारते थे उसको टीकादौड़ कहते थे. नगरों को६लूट करके॥२६॥७मूर्ख ने८सत्य मानकर९ओलंभा भेजकर लिखावट में कुछ फरक कर दिया१०शीघ्र॥२७॥वह११पत्र दिखाया॥२८॥वह१२पत्र पूर्णमल्लने नहीं पहुंचने दिया१३भेद(फूट)१४कूए में डुबोने के लिये॥३०॥ हाडों का१५भानजा जानकर ॥३१॥ १६काले सर्प के अंशवाले१७सूर्यमल्ल ने ॥३२॥ १८नुसरा१९नाम

कहुँ अज्ज१ रु अफगान २ कहुँ पाये हुकम प्रतीप ॥
बस किन्नौं सुहि नियति बल, दिल्लीमंडल दीप ॥ ३४ ॥
इत बिहार१ सूबा अधिप, सेरखान बल सज्जि ॥
देस बंग१ रुक्कितान२ हुव२, गहि रु बढ्यो जय गज्जि ॥ ३५ ॥
पेसावर धर जिहिं प्रभव, कहत सूर जिहिं कोम ॥
सेरखान सो इहिं समय, जवर पर्‌यो जय जोम३ ॥ ३६ ॥
जित्तन तिहिं बाबर३० जबहिं, बल सजि कियउ बिचार ॥
जाकै तबहिं असाध्यज्वर, प्रकट्यो जीवन पार ॥ ३७ ॥
संबत खट बसु तिथिसमय१५८६, कलिपह्नु बिक्रमकेर ॥
रिपु जित्तन मन हौंस रहि, बाबर ३० दिय तजि बेर ॥ ३८ ॥
निधि गुन तिथि १५३९ संवत जनम, अंदजान१ लहि एह ॥
बरस सत्त चालीस ४७ बय, दिल्लिय हुव विलुदेह ॥ ३९ ॥
निज अवसर लहि तस तनय, निपुन हुमाँयौं ३१ नाम ॥
तब बैठा दिल्लिय तखत, धरत छल १ बल २ धाम ३ ॥४०॥
मुलक प्रदिष्ट बिहार१सुखँ, सूबा जित्तन सोधि ॥
सज्जतहुव सोपि स्वबल, रिपुपन जुतन बिरोधि ॥ ४१ ॥
अनुजन जुत याको अनुज, निडर कामराँ ३१ नाम ॥
जिहिं काबल१ पंजाब २ जुग२, दब्बिय बल उद्दाम ॥ ४२ ॥
सुरि अग्रज १ मन कामराँ ३१।१ , भयो साह यह भिन्न ॥
तातैं प्रथम १ बिहार तजि, हुतप्रयान उत दिन्न ॥ ४३ ॥
पाइ बिजय बाबर ३० प्रथम, इन्यौं जु इब्राहीम २९ ॥
सुतको सुत तस इहिं समय, सुन्यौं सु दब्बत सीम ॥ ४४ ॥
पंजाबरहु इम तजि प्रथम, करि लोदी५ सिर कुच्च ॥

१ आज्ञा के २ विरुद्ध २ भाग्य के बल से ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ जय के ३ घमंड से ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १२ ॥ ४ कलियुग के राजा विक्रम के सम्वत् जाते समय ५ शरीर ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ६ कहे हुए बिहार ७आदि ॥ ४१ ॥ ८ निरंकुश होकर ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥४५॥

जित्यो समर पठान५ जो अप्प मुगल६ बल उच्च ॥ ४५ ॥
गिरि रैवत जूनाँगढ जु, कह्यो नृपति *केवट्ट ॥
सो लोदी७ तस गय सरन, विखम दसा भजि †बट्ट ॥ ४६ ॥
गढ़त किते रैवत गये, याके संगिय और ॥
सरवहिया रक्खे सरन, जुद्ध करन अति जोर ॥ ४७ ॥
बाबर३० सुत सन रन बहुन, जित्ति करन ‡तनुजात ॥
अंत समर सोयो अधिप, सूरन तलपै सुहात ॥ ४८ ॥
कति मत जनपद सिंधुके, साह आइ अवसान ॥
प्रधन२ हन्यो केवट्ट पहु, जुरि पहिल्लैं हत जानि ॥ ४९ ॥
सोलह१६ रानिन जन्त महँ, निहिन इक्क१ निहोरि ॥
प्रसव अवधि रक्खिय पिहित, कुल रक्खन विधि कोरि ॥ ५०
बाहुजे४ इक कुलपति विदित, हलैं बसु भुग्गन हार ॥
देवातू१ कुल धर्म दृढ, चावोरा६ हित चार ॥ ५१ ॥
तिहिं रक्खी रानी पिहित, गर्भवती सु स्वगेह ॥
ताकैं हुव नवघन तनय, आयैं प्रसव अनेहँ ॥ ५२ ॥
सुद्ध प्रसूता हुव समय, जिहिं मृतं जन मिस जारि ॥
तिम सिसुवारी निज तियहिं, नृप सिसु दिय निरधारि ॥ ५३ ॥
पाले तिहिं द्वरही पृथुकैं, इक१इक१ पाइ उरोजैं ॥
समय जित्ति पुनि हुव सुपहु, यह नवघन अति ओजैं ॥ ५४ ॥
जिततितते नृप वंसि जन, व्यवहितैं वेस बुलाइ ॥
देवातुव भुव लै दई, खग्गन जवन खुल्लाइ ॥ ५५ ॥

*केवाट को †मार्ग में ॥४६॥४७॥ करण का ‡पुत्र १शूरशय्या ॥४८॥ कितने ही लोगों का मत है कि सिन्धुदेशके बादशाहनें अन्त में आकर २युद्ध करके केवाट को मारा ॥४९॥ ३साथ ॥५०॥ ४क्षत्रिया ५हल चलाकर धन भोगनेवाला ६चावड़ा वंश का क्षत्रिय ॥५१॥ ७समय ॥५२॥ ८बालक जनने से शुद्ध होने के समय ९मरजाने के मिष से जलाकर १०पुत्रवाली अपनी स्त्री को वह राजा का बालक दिया ॥५३॥ ११बालक १२स्तन १३बड़ा प्रतापी ॥५४॥ १४छिपे हुए वेस से बुलाकर ॥५५॥

कति खोजेहु लग्गो कहत, नवघन जनम निदान ॥
देवात तँहँ स्वसुत दिय, मारॅन तस प्रतिमान ॥ ५६ ॥
देवात् पाछैंहु दुख, सुनि तस तनया सील ॥
केहरि१ नवघन२दोर करि, फाग्यो सिंधुपॅ७फील२ ॥ ५७ ॥
जवन सोहु साहहि बजत, जनपद सिंधु जनेस ॥
देवात् दुहितेस कुल, सो तँहँ पत्त असेस ॥ ५८ ॥
लून दुकाल हुव दिनन तिन, यातैं जुत परिवार ॥
सिंधुदेस गय बसति सह, सह गोधन संभार ॥ ५९ ॥
देवात् तनया बिदित, सुनि रूप१ रु बय२ सोर ॥
ताहि लैन दल बेढि[11] तिन्ह, जवनराज दिय जोर ॥ ६० ॥
भगिनी नवघन भ्रातकौं, द्रुत रैवत छंद[12] दिन्न ॥
चढि इक्क१हि बंचि सु चल्यो, कटक मल्ल मग किन्न ॥ ६१ ॥
सिंधु मुलकपति साहकौं, सृधै[13] करि जातहि मारि ॥
सह कुटुंब आनी स्वसाँ[14], इम तस सील उबारि ॥ ६२ ॥
सुनहु राम[15]... ३।४पहु तिहिँ समय, बनि ऐसी वहु वत्त ॥
...भूपन सुजस, छादित हुव भुव छत्त ॥ ६३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल ५५ वंश्याजुवं(?)यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यकुन्दीवसुधावमार्तण्डम

कितने हा कहते हैं कि नवघन के जन्म के कारण उसका १पता लग गया था वहां देवातू ने अपने पुत्र२सारण को नवघन के३ सदृश (एवज में) दिया ।५६। पीछे उनकी४पुत्री के पतिव्रत में दुःख सुनकर सिंह रूपी नवघन ने ५सिन्धु देश के पति रूपी६हस्ती को चीरा ॥५७॥ सिन्धु ७देश का ८नरेश. देवातू की९पुत्री के पति का कुल वहां गया ॥ ५८ ॥ १० समूह सहित ॥ ५९ ॥ ११ घेरकर ॥ ६० ॥ १२पत्र दिया ॥ ६१ ॥ १३युद्ध करके १४बहिन को ॥ ६२ ॥ १५हे राजा रामसिंह ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की कथा

ल्ल १८८।१ चरित्रे राणासंग्रामसिंहतनुत्यागशकसूचनपुरस्सरप्राप्तत त्पट्टराणारत्नसिंहपौर्विकचाहुवाणढक्कूपुत्रपूर्णमल्लप्रधानप्रष्ठीकरण १, तत्कपटप्रपंचप्राप्तप्रातीप्यप्रणष्टपितृपालितप्रत्यब्दोपदाप्रेषणप्र तिज्ञराणातत्प्रस्थापनावसरपरिधानतुरगयुग २ मात्रबुंदीप्रेषण २, तदुपहारानङ्गीकरणसमयज्ञापितपौर्विक १ पूर्णमल्लकुकृत्यकार्म ध्वजीप्रसवित्रीप्रबोधितमहीमहेन्द्रमिहिरमल्ल १८८।१ स्वल्पप्राभृत स्वीकरण ३, प्राप्तप्रसूप्रोक्तप्रमादोपालम्भबहिर्दर्शितबुंदीशबन्धुत्व राणारत्नसिंहद्वैधावस्थान ४, स्मृतपूर्वप्रधननारबदपूर्णमल्ल१८८।३ प्रतिहतपितृव्यपृथ्वीशप्रमथनप्रच्छन्नप्रयत्नपारिपन्थिपौर्विक १ स्वा भिधानसपत्नसंजिहीर्षासावधानच्छद्मघातकबाहुजद्वय २ बुन्दीप्रेष ण ५, रात्रिसमयबुन्दीनगरनिःसृतहिंडोलीपुरपथप्रस्थितपूर्णमल्लो १८८।३ परिपातितच्छद्मप्रहारप्रयोगासिद्धमनोरथपलायिततद्घातकयु ग २ निगूढमार्गमेदपाटसीमासङ्गतशक्रदुर्गपुरप्रविशन ६, दूतोक्ताव

नाने के समय के वचनों में बुन्दी भूपति सूर्यमल्ल के चरित्र में राणा संग्रामसिंह के शरीर छोडने के सम्वत् की सूचना के साथ उनका पाट पाकर राणा रत्नसिंह का पूर्विया चहुवाण ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल को प्रधान करने की पुष्टि करना, उसके कपट की रचना से विरुद्धता पाकर अपने मरेहुए पिता की पालना कीहुई सालाना नजराना भेजने की प्रतिज्ञा में उसके भेजने के समय राणा का केवल वस्त्रों सहित दो घोड़ों को बूंदी भेजना, उस नजराने के अस्वीकार करने के समय पूर्विया पूर्णमल्ल के कुकृत्य को जनानेवाली राठोड़ी माता के समझायेहुए महीपति सूर्यमल्ल का उस अल्प नजराने का स्वीकार करना, भूल का ओलंभा माता के कथन से पाकर बुंदीश के साथ ऊपरी मन से सम्बन्ध दिखाकर राणा रत्नसिंह का द्वैधीभाव में स्थित होना, पहिले युद्ध में नरबद के पुत्र (हाडा) पूर्णमल्ल का अपने काका राजा नारायणदास का (पूरबिया) पूर्णमल्ल का छाने मारने का प्रयत्न प्रकट करने से अपने ही नामवाले हाडा) पूर्णमल्ल को मारने की इच्छा में सावधान पूरबिया चहुवाण (पूर्णमल्ल) का दो क्षत्रियों को बुन्दी भेजना, रात्रि के समय बुंदी नगर से निकल कर हिंडोली पुर के मार्ग में प्रस्थान करते हुए हाडा पूर्णमल्ल पर छलघात की प्रेरणा करके अपने प्रयोग से मनोरथ को सिद्ध न जानकर उन घात करनेवाले

ज्ञाततद्वृत्तान्ततत्कालविविक्तपरीक्षितसुभटसहस्र १००० समुपेतप्रस्थितप्रातःसमयगम्यसीमसङ्गतवाहिनीवेष्टितशक्रदुर्गपुरप्रतिबोधिततदध्यक्षहड्डाधिराजाततायियुग्म २ मार्गण ७, तत्पुराध्यक्षस्वशिबिरप्रेषितपरिचितप्रातिहार १ प्रामार २ बाहुजबन्धुद्विषद्द्वय २ बुन्दीशनिगडयन्त्रणानुकूल्यचित्रकूटप्रेषण ८, ढक्कूजसप्रसू १ राणा २ परोक्षप्रच्छन्नप्रयत्नतद्द्वय २ मोचनपुरस्सरशक्रदुर्गपुराध्यक्षदूरीकरण ९, राणाग्रनिवेदितस्वागतसालम्बमुधाकल्पिततत्प्रधानप्रातीप्यसहितरविमल्ल १८८।१ कृतशक्रदुर्गपुरलुण्टनपूर्णमल्लस्वस्वामिबुन्दीविरोधीभावन १०, सम्मतसत्यसचिवोक्तराणागौरवह्रासप्राकट्यपूर्वकप्रेषितोपालम्भपत्रबुंदीशनिजमातृनिवेदन ११, प्रतिलिखितभागिनी १ भागिनेयो २ पालम्भजननीराष्ट्रकूटीसम्मतानुसारहड्डेशचित्रकूटपतिप्रेषिततद्राणापत्रपूर्णमल्लगोपन १२, विरोधनीयबुन्दीसम्ब

दोनों का गुप्त मार्ग से मेवाड़ की सीमा में शक्रगढ पुर में प्रवेश करना, यह वृत्तांत दूतों के कहने से जानकर उसी समय परीक्षा कियेहुए हजार वीरों के सहित छाने प्रस्थान करके प्रभात समय जहां जाना था उसकी सीमा के साथ सेना से घिरेहुए शक्रगढ के हाकिम को समझाकर हड्डाधिराज का दोनों आततायियों का मांगना, उस पुर के हाकिम का अपने डेरे में भेजेहुओं को पहिचानकर प्रतिहार और प्रामार दोनों शत्रु और भाई क्षत्रियों का (दोनों अग्निवंशी होने के कारण यहां बन्धु लिखे हैं) बुन्दीश का कैद करने की ताड़ना सहित चित्तौड़ भेजना, ढक्कू के पुत्र का माता सहित राणा के परोक्ष छाने के यत्न से उन दोनों को छोडने से पूर्व शक्रगढ के हाकिम को दूर करना, राणा के आगे निवेदन कियेहुए अपने आने के आधार सहित झूठी कल्पना से उस प्रधान की विरुद्धता के सहित सूर्यमल्ल की कीहुई शक्रगढ की लूट से पूर्णमल्ल का अपने स्वामि को बुन्दी से विरोध करना, सचिव का कहना सत्य मानकर राणा का अपने बडप्पन के नाश होने के साथ ओलम्भा भेजने के पत्र को बुन्दीश का अपनी माता को दिखाना, पीछे लिखेहुए अपनी बहिन और भानजे को माता राठोड़ी की सलाह से ओलम्भे को हड्डेश का चित्तौड़ के पति के प्रति भेजेहुए उस राणा के नाम के पत्र को पूर्णमल्ल का छिपाना, बुन्दी के सम्बन्ध से विरोध करनेवाले और वैमनस्यता से बन्धुबुद्धि का वियोग करनेवाले

न्धवर्धितवैमनस्यवियोजितबन्धुबुद्धिराणाविक्रमो १ दय २ स्वानुजयुग २ सापत्न्यसम्भावन १३, पृथ्वीराजपूर्णमल्ल १८८।१ प्रकारप्राचुर्यपरीक्षितपूर्णमल्लपारवश्यपरिवृतपूर्वप्रीतिपद चित्रकूटपातिपारिपन्थक्यप्रमाण १४, जहूरुद्दीना ३० ऽपर २ नाममुगलयवनेन्द्रदिल्लीशबाबरशाह ३० प्राप्तरातीव्यपरिभूतपरप्रान्तप्रभूतप्रतापप्रसारण १५, पेशावरराष्ट्रकुलवसतिकसमाक्रान्तबङ्ग १ रुहितास २ देशद्वय २ बिहार १ जनपदसबाधिकारिसूरजातीययवनशेरखान १ प्राबल्यप्रभुतापार्थिक्यप्रतिज्ञान १६, प्रोक्तशकसमासमुद्भूतजिगीषाप्रतिष्ठासुप्राप्तासाध्यज्वरदिल्लीशबाबर ३० सूचितसंवत्समयसंस्थान १७, प्राप्तपितृपट्टहुमायौं ३१।१ नामतत्पुत्रकाबल १ पञ्जाब २ प्रभूतस्वानुजकामरान ३१।२जयसाधनप्रस्थान १८, तत्समयसाधितमहोपद्रवप्रजाभयस्वाभिमुख्याभिषेणितससज्जसैन्यहुमायौं ३१।१ साहपराजितप्रद्रुतलोदिपठान १ तत्पक्षिकश २ न्यतमरैवतराजशरवधिकचालुक्यनरेन्द्रकैवर्तशरणसमालम्बन १९, जितबहुधाजन्यपराजि

राणा का विक्रमादित्य और उदयसिंह दोनों अपने भाइयों से शत्रुभाव रखना, राजा का हाडा पूर्णमल्ल पर छलघात कराने आदि बहुत भेदों से परीक्षा करके पूर्विया पूर्णमल्ल की परवशता में घिरेहुए चित्तोड़ के पति की पहिली प्रीति में शत्रुता का प्रमाण करना, यवनेंद्र दिल्ली का पति जहूरुद्दीन जिसका दूसरा नाम बाबर था उसका शत्रुओं के बहुत से प्रान्त लेकर अपने स्वामिपन के प्रताप को फैलाना, पेशावर के राज्य में बंगाला और रोहितास दोनों देशों को लेकर विहार देश के सूबा के अधिकारी सूर जाति के यवन शेरखां का प्रबलता से जुदा मालिक होने का ज्ञान कराना, कहेहुए शक के सम्वत् में श्रेष्ठ प्रतिष्टा से उठी है जीतने की इच्छा जिसको ऐसे दिल्लीश बाबर का असाध्य ज्वर से कहेहुए सम्वत् में देहान्त होना, पिता का पाट पाकर हुमायौं नामक उसके पुत्र का पञ्जाब के स्वामि बनेहुए अपने छोटे भाई कामरां को विजय करने के लिये गमन करना, उस समय में पड़े उपद्रव और प्रजाभय करके अपने सन्मुख युद्धयात्रा करके सेना के साथ बादशाह हुमायौं से पराजित होकर भागेहुए लोदी पठान का और दूसरों के मत से उसकी परगह का रैवत के राजा सरपहिया सोलंखी नरेन्द्र केवाट का शरण लेना, बहुत

तदिल्लीदराडधर्मधुरन्धररैवतराजकैवर्तपश्चिमप्रधनशूरशय्याशयन २०. पञ्चदश १५ राज्ञीसहागिन्हस्नानसमयषोडश्ये १६ का१सगर्भाकैवर्तकान्ताचापोत्कटबाहुजदेवातूपरस्त्यप्रच्छन्नप्रसवावधिकालातिवाहन २१, देवात्वापत्तीकृतसमयप्रसूनपुत्रनवघननद्राज्ञीतर्जनमृत्युमिषभस्मसादूभवन २२. समुचितसमयसङ्गीकृतशरवधिकसन्तानदेवातूस्वपत्नीपालितकैवर्तकुलधरनवघनार्थरैवतराज्यसमाक्रमण २३, प्राप्तनवघनशुद्धिनिश्चयम्लेच्छमारणार्थतन्मार्गणसमयदेवातूस्वसुतसमर्पणमतभेदभणन २४. तृणादिदुर्भिक्षसमयस्वकुटुम्ब१ वसतिजन २ गोधन ३ सहसुखनिर्वाहार्थसिन्धुराष्ट्रसीमासङ्गतबाहुजविशेषपत्नीदेवातूपुत्रीस्वशीलभ्रंशसमुद्युक्तसिन्धुराजयवनेन्द्रवाहिनीवेष्टनवृत्तान्तपत्रप्रच्छन्नरैवतप्रेषण २५, प्रबुद्धपत्रप्रवृत्तिकतत्कालैकाकिप्रस्थितमार्गसम्मिलितचमूकसिन्धुसंगतमृधमारितम्लेच्छराजनवघनस्वभगिनीचापोत्कटीशीलरक्षण २६. तत्समयचालुक्यबाहुज

युद्ध जीतकर दिल्ली की सेना को पराजित करके धर्मधुरन्धुर रैवत गिरि के राजा केवाट का पिछले वा पश्चिम के युद्ध में माराजाना, पन्द्रह राणियों के सती होने के समय सौलहवीं एक गर्भवती केवाट की स्त्री का चावड़ा क्षत्री देवातू के घर में छाने बालक होने की अवधि तक रहना, समय पर पुत्र का जन्म होने पीछे नवघन को देवातू के आधीन करके उस राणी का भय मे मृत्यु के मिष से जलना, उचित समय पर सरवहिया क्षत्रियों को एकत्रित करके उस सन्तान को देवातू का अपनी स्त्री से पालेहुए केवाट के कुल को धारण करनेवाले नवघन के अर्थ रैवत के राज्य को लेना, नवघन की निश्चय खबर पाकर मारने को म्लेच्छ के मांगने के समय देवातू का अपने पुत्र को देने के मतभेद का कथन, तृण आदि के दुर्भिक्ष के समय अपना कुटुम्ब, प्रजा, गोधन सहित सुख के लिये सिन्धु राज्य की सीमा में गयेहुए किसी क्षत्री की स्त्री और देवातू की पुत्री का अपने शीलनाश करने को उद्युक्त सिन्धुदेश के यवन बादशाह की सेना के घेरने का वृत्तान्त का पत्र छाने रैवत को भेजना, पत्र का वृत्तान्त जानकर उसी समय अकेला गमन करनेवाले मार्ग में शामिल हुई है सेना जिससे ऐसे नवघन का सिन्ध देश में आकर युद्ध में बादशाह को मारकर अपनी बहिन चावड़ी के शील की रक्षा करना, उस समय सोलंखी क्षत्रिय सरवहियों के बध

शरवधिकवंशसर्वाधिश्लाघासूचनं २७ द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥
आदित एकोनाशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १७९ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इत बुंदिय हड्डुन अधिप, महीरमन रविमल्ल १।८।१ ॥
वढ्ढ्यो सजातीयन वली, सव खुरली आरि सल्ल ॥ १ ॥
सुजन भीम कट्टार करि, मारत मत्त मइंद ॥
रोहत गहि धावत विरचि, गति हतबेग गइंद ॥ २ ॥
पटु सब हेतिन तदपि पहु, इषुविद्या अधिकाइ ॥
दुवर दुवर गोलिन दूरतैं, कोउ न वेध्य टिकाइ ॥ ३ ॥
धिकाइ१टिकाइ२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

भवन किते इक१ भल्ल स्वप्नकरि याहि दयो सिव ॥
प्रातहि सूचित प्रांत अप्प सोधिय अभीष्ट इव ॥
बिनु सर भल्ल सु पिक्खि पुज्जि लिय मुदित महीपति ॥
इमहि रमत आखेट कहत भल्ल सु पायो कति ॥
भुग्गो तदीय अभिधान भनि सर संधि सु रक्ख्यो मधि ॥
वहु दूर वेध विज्झन वनत सुगम भये सब ५ थान सधि ॥४॥

दोहा ॥

की सब से अधिक प्रशंसा सूचन करने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ।३२।
और आदि से एक सौ उन्यासी १७९ मयूख हुए ॥
२नृपति सूर्यमल्ल २ शस्त्रविद्या में ॥ १ ॥ मस्त ३सिंहों को मारता है ४रोकता
है ५ हाथियों को ॥ २ ॥ सब ६ शस्त्रविद्या में चतुर था तो भी ७ बाणविद्या
में अधिक था. कोई लक्ष्य (निशाना) नहीं रहने पाता था ॥ ३ ॥ स्वप्न में
९जनाये हुए स्थल को सोधा. कितने ही कहते हैं कि१०शिकार खेलते समय
वह भाला मिला था११उसका नाम भुग्गा रखकर उसके तीर लगाकर उस भा
ला को१२माथे में रक्खा १३वेधन ॥ ४ ॥

सो नर रक्खैं प्रानसम, अर्यमर्मल्ल १।८।।१ अधीस ॥
नहैं अर्चन नित्य सह, सव्वन सग्गुन सीस ॥ ५ ॥
मृगया१ सह भोजन२ प्रमुख, रचैं कुतूहल रम्य ॥
मन मईत रीझ न रुकैं, गिनैं प्रबल सुहि गम्य३ ॥ ६ ॥
पहिलैं ब्याहे कुमरपन, संभर१ अरु सीसोद२ ॥
निर्लय प्रमारन श्रीनगर, बहिनी जुग२ सविनोद ॥ ७ ॥
गढबुंदिय१ चित्तोर गढ,२ यातैं सालक आइ ॥
उभय२ स्वसा लैगा अमर, पिउहर अवसर पाइ ॥ ८ ॥
पुनि आगम गुनगारि पर, बुंदीसहिं तँहँ बुल्लि ॥
प्रकअ [illegible]ित सा[illegible]ग पहु, खिन खिन नव महँ खुल्लि ॥ ९ ॥
मुदित [illegible]सुर१ जामातर२ मिलि, सालक१ जामिप१ सत्थ ॥
मृगया सुख बिलसे बिबिध, तेरह१३ अँह मह तत्थ ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

अंतहपुरे[11] निस इक१ सपहु लालन बडसस्सुव ॥
राम रतन मनी सु नहु[illegible] गर्जि भाखतहुव ॥
तीरनकरि लाल तुम [illegible]नैं मारत गुरु[12] सिंहन ॥
हमकों पिक्खन हौंस[13] अन्नि असमान कृत्य मन ॥
सुहांनैं[15] लक्ख जँहँ संभव तँह सु हलायो तत्थ हरि[16] ॥
सुनि भूप कहिय दूजी निसा अप्प लखहु हत द्विरदअरि[17] ॥ ११ ॥
दूजो२ आवत दिवस भूप लख उचित कज्ज सुव ॥
बज्जत तिन्हैं बुंदीस हठी खानहि दिवातहुव ॥

१सूर्यमल्ल। २स्वअद्भिमत्तकह ॥६॥ प्रमारा के घर ॥७॥ ५साला. दोनों६बहिनों को अमरसिंह पीहर लेगया ॥ ८ ॥ ७नवीन७उत्सव करके ॥ ९ ॥ ८बहिनोई. शिकार९आदि. तेरह१०दिन तक उत्सव किया ॥ १० ॥ ११ जनाने में १२बडे सिंहों को तीरों से मारते सुने हैं सो हमको देखने की१३चाह है १४जिस के समान दूसरा कोई कार्य नहीं मान कर१५जहां जनाने लोगों का देखना हो सके तहां१६सिंह को१७सिंह का वैरी ॥ १२ ॥ १८ससुराल के लोगों के मनाक

सो इक१हि निस समय बंधि जमबाहर२ बइठो ॥
इक१ कटार चाप इक१ द्वि२गुन चउ४ सर जुत दिठो ॥
पठइ निहोरि रानीहु पुनि जँहँ पति तँहँ प्रमदा३ जनन ॥
रचि संप्रयोग४ दंपति२ मिलत मकरकेतु५ छह्रिय मनन ॥ १२ ॥
कंठीरव६ तिहिंकाल हनन सैरिभ७ आवतहुव ॥
सह गति आसन सुपहु पर्दर८ गोधि९ सुं पावतहुव ॥
उछटि नटीवँट११ उडत पर्‍यो नाहर बिनु प्रानन ॥
तिम अंतहपुर१२ तियन किन्न संगति दृग१३१ कान२न ॥
सीसोदराज रानिय सहित समय निछावरि किय सबन ॥
आयउ बहोरि बुंदिय अधिप प्रासारिय जुत निडरपन ॥ १३ ॥

दोहा ॥

जो नृप बडलस्सूहु जब, गय अवसर निज गेह ॥
कबहु रान हनि सिंह किय, उच्छव१ दर्प२ अछेह ॥ १४ ॥
सुहि अवरोधहु रति समय, बदत विकत्थन१४ बत्त ॥
प्रासारिहु हसि रीति पटु, अक्खिय पिय अनुरत्त ॥ १५ ॥
तरु सिर रहि लै कर तुपक, सिंह हनत जन सर्व ॥
कीरति लहत बिसेस करि, गहत तेहु नन गर्व ॥ १६ ॥
स्वमुख कित्ति१ अपकित्ति२सम, इस जताइ हित आस ॥
सुरतासन सर सिंह बध, कह्यो सकल पतिपास ॥ १७ ॥

॥ षट्पात ॥

करने पर बुन्दी के हठी राजा ने अपने बैठने को खड्डा खुदवाया १ भैंसे को बांधकर. दो २प्रत्यंचावाला ३ स्त्रियों ने वारंवार समझाकर राणी को राजा के पास भेजी ४ मैथुन ५ कामदेव ॥ १२ ॥ ६ सिंह ७ भैंसे को मारने के लिये आया सो उस मैथुन के आसन पर स्थित हुए राजा ने १० उस सिंह के ९ ललाट में ८ तीर लगाया ११ नटनी के बच्चे के समान; अथवा नटनी के मार्ग से उलटकर १२ जनाने की स्त्रियें सुनती थीं सो ही १३दृष्टि से देखा ॥१३॥ ॥ १४ ॥ १४ झूठी प्रशंसा ॥ १५ ॥ १६ ॥१७ ॥

पिंड दुव २ रु इक १ मान रान १ ढकुसुत २ रक्खिय ॥
यातैं मात उदंत एह सचिवहि नृप अक्खिय ॥
महिपहिं पूरनमल्ल कहिय स्मृत जनकबैर करि ॥
बन्यौं ध्रुवहि व्यभिचार प्रकृति नागिन निल्लज्ज परि ॥
स्वामिनीसौं हु नटरयो सु सठ पिक्खहु खल अपराध पहु ॥
मैं सुनी अन्य द्वारहु कुमति बृजिन हड्ड६१यह किन्न बहु ।१८।

॥ दोहा ॥

जिम दै बसु नाजर जनन, प्रकटि बिजन सुदि पाप ॥
अनृत किन्नौं मन रानकैं, यह मिथ्या अभिसाप ॥ १९ ॥
बत्त जु निस रानिय बदिय, सोहि बनिय हिय सूल ॥
हित १ सिक्खहु भावी अहित २, करैं नियति प्रतिकूल।२०।

॥ षट्पात् ॥

मारन नृप रविमल्ल १८८।१ रान तब पिहितैं बिचारिय ॥
भानु१६४।२ सुकवि सुहि भेद नियंत सुनि स्वामि निवारिय ॥
कहिय रान जिन करहु भानु १६४।२ कवि तुम बिरोध भ्रम ॥
जुत तिय बुंदिय जात हितहि बर्द्धन हड्ड १ रु हम २ ॥
जो होइ द्रोह तो स्त्रीजनन कैमन बनैं अरिगेह किम ॥
संकहु न अप्प उलटी समुझि अग्गहु आवन१जान२इम ॥२१॥

॥ दोहा ॥

पिताका वैर१याद करके अपने२स्वामी की स्त्री से भी वह मूर्ख नहीं टला३पाप ॥१८॥*नाजर लोकों को४धन देकर५एकान्त में. राणा के मन में६सत्य करदिया इस७झूठ दोष को ॥१९॥ ८हित की शिक्षा को भी उलटा ९भाग्य आगे आनेव ले समय में अहित कर देना है॥२०॥१०छाने. भानु नामक११चारण ने१२ निश्चय सुनकर अपने स्वामि को१३मना किया. विरोध होवे तो शत्रु के घर में स्त्रियों सहित कैसे१४जाना होसक्ता है ॥ २१ ॥

* मेवाड़ के महाराणाओं के यहां रावल बापा से लेकर इस समय पर्यन्त कभी नाजर नहीं रक्खेगये, यह इतिहास बुन्दीवालों का कपोलकल्पित है सो आगे लिखाजावेगा ॥

ढक्कूसुत अक्खिय ढर्‌यो, कवि वय जँहँ मतिकज्ज ॥
*वार्द्धक वस तातैं बदत, इम†अलीक भ्रम अज्ज ॥ २२ ॥
प्रभु निजकवि कुल परपुरुष, इम भुलाइ अतिमान ॥
सद्धिय रान १ प्रमारि २ सह, पुरबुंदिय प्रस्थान ॥ २३ ॥
प्रामारिहु अक्खिय पतिहिं, विधि कछु सुनि सु विरोध ॥
हित जो तो लीजै हमहिं, बढन हु २ दिस हित बोध ॥ २४ ॥
सोहु वचन सुनतहि सचिव, मंतु सु हढहि मनाइ ॥
चूरन रानहिं लै चल्यो, पूरन छिद्रहिं पाइ ॥ २५ ॥
कहिय रान प्रामारिकँहँ, करहु न भ्रम जिम कूर ॥
समुख मिलहिं तुम१सन स्वंसा२, सहू हम१सन सूर ३ ॥२६॥
इम भुलाइ प्रामारि यह, सब ध्वजिनी सजि संग ॥
आयो निज सीमा अवधि, रचि पूरन छल रंग ॥ २७ ॥
संभर आयो रान सुनि, बल समेत धनबाट ॥
लंघिं समुख गो इक्क १ लहि, घन हित नृप गिरि घाट ॥२८॥
भ्रात सहँस १ सत्तल २ उभय २, वलि पंचायन १ वेन २ ॥
भट १ रु सचिव २ ए चउ ४ भये, संगि इतर रुकि सेन ॥ २९ ॥
कोउ न आवहु नृप कहिय, ए चउ ४ तदपि अभीत ॥
पहुँचे वढि बुंदीसपँहँ, फैलावत जस फीत ॥ ३० ॥
इन च्यारि४न जुत हड्ड ६१ इंन, सो पंचम ५ निज सीम ॥
मुदित जाइ रानहिं मिल्यो, भूधव सत्रुन भीम ॥ ३१ ॥
चोरी जाजम १ चद्दरि२न, प्रसरि बिछोनन पंति ॥

*बूढा होगया जिससे †मिथ्या भ्रम करता है ॥२२॥ १हे प्रभु रामसिंह ॥२३॥ ॥२४॥ उस२अपराध को. राणा का३नाश कराने के लिये पूर्णमल्ल छिद्र पाकर ले चला॥२५॥ तुम्हारी ४बहिन तुम से सुख पूर्वक मिलेगी और हमसे वीर ५ साहू मिलेगा।२६। ६सेना ।२७।७चहुवाण८सेन। सहित९धनबाड़ा नामक ग्राम में. पर्वत और घाटे १०लांघता हुआ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ११ समूह १२ ॥ ३० ॥ हाड़ों का १२राजा १३ भूपति ॥ ३१ ॥ १४ चद्दर से ढकीहुई

हुलसि मिले उत्तरि हयन, भूप दुव २ हि*हित भंति ॥ ३२ ॥
रानी अक्खिय रानप्रति, मिलि अवसर निसमाँहिं ॥
आत सम्मुख बुंदीस इक१, निज१पर२भावकि नाँहिं ॥ ३३ ॥
क्रम जिमजिम रानीकरैं, वहिनीपति नुति वत्त ॥
तिमतिम रान विलोम तकि, मन्नैं मंतु प्रमत्त ॥ ३४ ॥

षट्पात् ॥

सो आगम मत सोहि प्रकटि रानहु पूरन प्रति ॥
अरिपन तास न अधिक मन्नि पुनिपुनि बोधन मति ॥
सीमा पिक्खन स्वीय दिवस दुव२ देर दिखावत ॥
आयउ बुंदिय अधिप अतुल राजस३ उफनावत ॥
नृप रान सीम उत्तर४ निरखि बुंदिय मग पूरव१ वर्णित ॥
मंगली ग्राम आवत महिप हड्ड६१धरिय पुनि मिलन हित॥३५॥

दोहा ॥

अक्खिय तँहँ सामंत१८७।२ इम, सम्मुह जाइ जिम सीम ॥
पुनि चिंतहु तो हम्महिं पथ, भंजि६ पधारहु भीम ॥ ३६ ॥
भूपहिं इम न दयो भटन, जिमतिम सम्मुह जान ॥
आयो बुंदिय अपर२ अहँ, रचि दलं विस्तर रान ॥ ३७ ॥

षट्पात् ॥

लगि मिलान मंगलिय रत्तिं प्रातहि प्रयान रचि ॥
बुंदिय आवत वेर महत मँह तब इतैंहु मचि ॥
सब अनीकं निज सज्जि पहुँचि गोपुंर बुंदीपति ॥
पुरमैं करत प्रवेस मिल्यो रानहिं उदार अति ॥

*स्नेह की रीति से॥३३॥ अपनी बहिन के पति की१स्तुति की वार्ता २अपराध ॥३४॥ आने की सलाह पूर्वमल्ल को कहकर ३रजोगुण बढाना हुआ पूर्व दिशा को ४फिरे तब ५मांगली नामक ग्राम में ॥३५॥ हमको ६मारकर जाओ ॥३६॥ दूसरे ७दिन विस्तार की ८सेना रचकर ॥३७॥ ९मांगली में रात्री को मुकाम रहकर, बडा १०उत्सव हुआ, अपनी सब ११ सेना सजकर १२शहर के द्वार

सम हय लगाइ*उभयरहि सुपहु लखत नगर सोभा लखित॥
†हेरंबवेल जँहँ तँहँ हुलसि किय मुकाम डेरन‡कलित ॥३८॥

दोहा ॥

आइ§निलय पठयो अधिप, सब स्वागत समुपेत ॥
अह दूजे२ रानिन उचित, हुव मिलाप अति हेत ॥ ३९ ॥
रानी महलन रानकी, आवत डोढी अंत ॥
आइ समुख लिय माँहिं वह, सस्सू१ बहुरन सुमंत ॥ ४० ॥

गीतिः ॥

क्रम राठौरि१८८१ कछवाही१८८१२, तिम चंद्राउति१८८ पुत्रप्रसू तीजी३
सह झालारि१८८१४ मराही, ससू१८७१३ अनुगत मिलित उ४सवत्तो४१
जोरि करन नृप जननी, रह्योरि१८७१ प्रसन्न रान रानीसों ॥
तँहँ डुल्ली हितैतननी, पावन हुव गेह गवैरे प्रविसैं ॥ ४२ ॥
निज रुक आवत नतिहीं, करन सदाचार निगम१ लोक२ कहैं ॥
यातैं स्वागत अतिहीं, विनञ सहित समाज सब बैठो ॥ ४३ ॥
सगिनी मंदिर भगिनी, जाइ बहुरि काल द्वै विजन जुगरही ॥
निजता१ परता२ न गिनी, कृत्य परस्पर रहस्य कहनलगी ॥४४॥
रतनेस रान रानी, जिहिं तिहिं विधि कहुक१ हनन मति जानी ॥
पै इम नहिं पहिचानी, मम सिर अभिसाप आनि यह मानी॥४५॥
अनुजा१ स्वसा सन अहिल्वम जेठी१ सगिनी विरोध वत्त जथा ॥

पर *दोनों राजा बराबर दोनों घोड़े लगाकर. जहां पर †गणेश बाग है वहां पर ‡निदिन ॥ ३८ ॥ §महलों में आकर राजा ने स्वागत सहित सत्कार भेजा और दूसरे दिन रानियों का [illegible] मिलाप हुआ ॥३९॥४०॥ राणा के १पीछे चलनेवाली चारों २ शोकें मिलीं ॥ [illegible] फैलानेवाली ४ आप के प्रवेश करने से ॥४२॥ अपने घर [illegible] प्रतिदिन श्रेष्ठ ही आचार करना १वेद और २लौकिक दोनों कहते हैं [illegible] आदर करके विशेष [illegible] स्त्रियों की सभा में बैठा ॥४३॥ [illegible] के महल में [illegible] एकांत में [illegible] कहने लगी ॥ ४४ ॥ मेरे ऊपर ही ७झूठा दोष ॥ ४५ ॥ ८ छोटी बहिन से

पूरनमल्ल*बिपक्खिय, सिखये स्वामीहु वैर बुद्धि बढ़ैं ॥ ४६ ॥
यातैं लालहिं अक्खहु, ढक्कसुत मंत्र रान बुद्धि ढब्यो ॥
रहि बुद्धि जतन रक्खहु, अग्ग जिम न मिलहु मुल्लि†एकाकी१॥४७॥
पुनि नृप जननी पासहु,‡प्रांजलि लहि सिक्ख सिबिर यहपत्ती ॥
तिम रत्ति भेद तासहु, प्रामारी१८८।४हड्ड६१भूप१८८।१प्रति प्रकटयो
महिप सु द्रोह न मान्यौं, सूचित किय प्रात मात छल सोही ॥
जब कछु संसय जान्यौं, लखि कारन कछु न सोहु मेटि लयो ।४९।
सुर्जन१८९।१मातहु सोही, कोउक बिधि चित्रकूट जानि कथा ॥
दल३ पठयो छल द्रोही, भासैं सीसोद करहु न भरोसो ॥ ५० ॥
महिपति तब कछु मन्नी, पैं हेतु४ बिहीन चित्त न प्रमानी ॥
छलघातिन मति छन्नी, नहिं जानैं सुर१हु तत्थ को नर२तो ।५१।
तब तीजे३ दिन सेना, महिपति प्रासाद बुल्लि रु जिमाई ॥
अप्प१हु तदनु अनेना, भोजन सह रान२ मुख्य पंति भज्यो ।५२।
पोली नृप१८८।१ प्रसरावैं, भरि ताबिच पलल११ आदि जो भावैं ॥
पुट्टलि तस करि पावैं, रदकर्त्तित१३ घेर सेस रहिजावैं ॥ ५३ ॥
असन करैं संभर१ इम, साधारन रीति रान२ सुहिं सद्दैं ॥
जिम्म उठे रुचि दुव२ जिम, लै१दै२ तंबोल इक१ पीठि१४ लसे।५४।
सीसोद१ रु साकंभर२, जिम्मैं इक१ थाल द्वैरहि नृप जबही ॥
अंवरोध१५ जनहु तब अर, भिरि जालिन रंध्र१६ गूढ लखत भये ।५५।

पूर्णमल्ल*शत्रु के सिखानेसे।४६।†अकेला ।४७।‡हाथ जोड़े हुए सीख लेकर डेरों में १गई २ रात्री में ॥ ४९ ॥ ४८ ॥ ३ पत्र भेजा ॥५०॥ परन्तु विना ४ कारण ५ छलघात करनेवालों की छल बुद्धि को देवता भी नहीं जानैं ६ तहां मनुष्य तो क्या जानैं ॥ ५१ ॥ ७जिस पीछे ८ निर्दोषी मुख्य पंक्ति में राणा के साथ भोजन९किया ॥ ५२ ॥ राजा सूर्यमल्ल १० फुलका परुसाकर उस में ११ मांस आदि जो रुचि होवे वह भर कर उसकी १२ पोटली करके खाता है जिसका घेरा १३दांतों से काटा हुआ बाकी रहजाता है ॥५३॥ पानबीड़ी ले दे कर एक१४आसन पर बैठे ॥ ५४ ॥ १५ जनाने लोक भी १६ जालियों के

लखि जिम्मत कहन लगी, रह्योरि१८७।३सुनाइ सब रीति*उभैर२॥
जुगर२ असनहु भिन्नजगी, इतैं नृपति रीति१ सिंहरीति२ इतैं ॥५६॥
†संगति बिनु पसु जैसैं, मोसुत भोजन ‡असाधु मैं मन्न्यों ॥
अपटु१ तजैं यहँ ऐसैं, बहुदिन जो संगति रान बनैं तो ॥ ५७ ॥
कछु बिधि सोहु कहानी, सिबिरैं२आगत रान रैंन३ सुनिलीनीं ॥
वा महलन पुनि आनी, रानी प्रामारिके जनन जानी ॥ ५८ ॥
यामैंहु भेद ऐसैं, महीप रतनेस व्यंजना४ मन्नी ॥
कुहकन५के हिय कैसैं, पैसैं अनुकूल बत्त जँहँ परधी६ ॥ ५९ ॥
तिहिं निस भ्रम सु बढातहि, सह पूरनमल्ल सोहि पुनि संधाँ७ ॥
पक्कीठानि प्रभातहि, चढि मिंह मृगव्य८ हड्ड हननचह्यो ॥ ६० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसूर्यमल्ल १८८।१ चरितेसर्वशस्त्रसाधनसातिरेकहड्डेशबाणविद्याव्यतिकरविशेषप्रशंसाप्राप्त्या १.सूचितशितिकराठस्वप्नपातिकहेतुपुरस्सरबुंदीन्द्रवनविहा

छिद्रों में झांकने देखने लगे ॥ ५५ ॥ *दोनों ओर की भोजन करने की रीति स खी कहने लगी कि महाराणा राजाओं की रीति से जीमते हैं और रावराजा सूर्यमल्ल सिंह की भांति जीमते हैं ॥ ५६ ॥ बिना †साथ पशु के समान मेरे पुत्र का भोजन मैंने ‡बुरा समझा है. यह १ मूर्ख ॥ ५७ ॥ २ डेरों में आकर महाराणा ३रत्नसिंह ने सुन ली ॥ ५८ ॥ इसमें भी४व्यङ्ग्य ही समझा ५ जालसाजियों के मन में ६ पराई बुद्धि की अनुकूल बात कैसे घुसै ॥ ५९ ॥ उस रात्री में भ्रम बढाकर पूर्णमल्ल के साथ उसी ७प्रतिज्ञा को पक्की करके प्रभात ही सिंह की ८ शिकार चढकर हाडा को मारना चाहा ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सूर्यमल्ल के चरित्र में सब शस्त्रों के साधन के अतिरिक्त हड्डेश का बाण विद्या के व्यसन में विशेष प्रशंसा पाना, सूचना किये हुए महादेव के स्वप्न में पक्षपात वा शिकार के कार

रणबधकृतलुखुनामशरसंहितशराधिसंरक्षितभल्लविशेषनित्यावसर सदासमर्चन २, श्रीनगरराजप्रमारसारङ्गदेवकुमाराऽमरसिंह१ चित्र कूट१बुन्दीप्राक्कालपरिणायितस्वभगिनीयुग्म२ पितृपरस्त्यप्रत्यानयन ३,राजगौरीतृतीया ३गमोत्सवनिमित्तजामातृमिहिरमल्ल १८८१२ श्री नगरसमाकारण४,विविधविहारादिविनोदविलासिकुलीकथितकौ तुकचिकीर्षुस्वश्वादेशयामार्गणमृगेन्द्रमारणसमुद्युक्तसहधर्मिणीस हितगुप्तनिखातमनुपविष्टस्वनुष्ठितस्मरसम्प्रयोगासनसुरतसानुकू लस्थितिसमाकृष्टमौर्वीमार्गणबुन्दीशसमागतसिंहसमाहरण५,दृष्टै तदद्भुतकर्मसमस्तशुद्धान्तसम्बंधिनीजनसम्भूतावसरजामात्रा १ दि सम्बन्धसम्बद्धपृथ्वीशोपरिमहर्घसमुचितसमुत्तारण ६, तदनन्तरस- पत्नीकहड्डाधिराजमिहिरमल्ल १८८१२ स्वस्थानीयसमागमन७, परि ग्रहप्राप्तशीर्पोद्दपत्नीरहोरमणावसरमृगेन्द्रमारणशौर्यस्वयंप्रशंसक स्वामिप्रतिषेधोपदेशपुरस्सररहोरससहधर्मिणीसमभियुक्तयथास्थि तबुन्दीशबाणवेधवनराजव्यापादनविक्रमविशेषवर्णन८,तदीर्ष्याता

ण बुन्दी के राजा का वन में फिरते हुए को भूखा नामक भाल मिला जिसके तीर लगाकर भाथे में रखकर नित्य पूजन करना, श्रीनगर के राजा पँवार सा रङ्गदेव के कुमर अमरसिंह का पहिले समय में चित्तोड़ और बुन्दी में व्याही हुई अपनी दो बहिनों को पिता के घर में पीछी लाना, प्रमारराज का गुन गौरी का उत्सव आने के कारण जमाई सूर्यमल्ल को श्रीनगर बुलाना, नाना प्रकार के विहार आदि आनन्द भोगने में कौतुक देखने की इच्छावाली बड सासू के कहने से रात्री के समय बाण से सिंह को मारने में उद्युक्त विवा हिता स्त्री के सहित गुप्त खड्डे में बैठेहुए कामदेव का अनुष्ठान करके मैथुन क रने के आसन पर सुरत में अनुकूल स्थित प्रत्यंचा खींचकर बाण से बुन्दीश का आयेहुए सिंह को मारना, यह अद्भुत कार्य देखकर समस्त जनाना सम्बंधि लोगों का समय होने पर जमाई आदि सम्बन्धों की समृद्धि से राजा पर बहुमूल्य उचित नजराना करना, जिस पीछे स्त्री सहित हड्डाधिराज सूर्यमल्ल का अपने घर आना, शिषोद की स्त्री का घर आकर पति के साथ रमण करने के समय सिंह को मारने की वीरता को स्वयं प्रकाश करनेवाले स्वामि के प्र तिषेध से उपदेश पूर्वक विवाहिता स्त्री के साथ रत समय यथास्थित बुन्दीश

पताम्यमानप्रातरुत्थितराणातदुदन्तस्वद्वितीय २ देहसाचिव्यसीमस
स्मतपौर्विक१पूर्णमल्लप्रबोधन ९, सङ्गताभीष्टच्छिद्रसन्तोषितसौविद
ल्लादिसहायसमारोपितस्वकीयस्वामिनीस्वैरत्वढक्कूसुतराणामन
एतदभिशापसत्यत्वसमर्थन १०, महीपामिहिरमल्ल १८८।१ मारणम
नस्कबहिर्दर्शितभानु १६४।२ सुकविवारणानुकूल्यसूचितसपत्नीक
ससागमसौहार्दसारल्यशीर्षोद्राज्यबुन्दीद्रङ्गागमन ११, श्रुतधनवाट
ग्रामतदागमप्रसभस्वपुरस्थापितसमस्तसैन्यैकाकि १ नरेन्द्रसाहस
सामिद्धपश्चादनुगतसुभट १ सचिव २ चतुष्क४सङ्गतराणासहस्वसी
मसम्मिलन १२, निवेदितैकाकि १बुन्दीशसीमागमसौहार्दसातिरेक
समार्जवराज्ञीप्रामारीक्षणादाक्षणप्रबोधनप्रतीपपौर्विकपूर्णमल्लपापा
कृतोपोद्दलितराणातद्वचनवेणीविचलितवैशारिणस्वभावसमासादन
१३, बुन्दीपुरपुरःप्रस्थापितपृथ्वीशप्रभाकर १८८।१ दृष्टोद ४ग्दिश्यदे
शदिनद्वया २ नन्तरराणामङ्गलीग्रामागमसमयहड्डेशपितृव्यसामन्त

का बाण से बेधकर सिंह को मारने के पराक्रम का विशेष वर्णन करना, उस क्रेप के ताप से तपायेहुए राणा का प्रभात में उठकर उस वृत्तान्त को अपनी द्वितीय देह हुए सचिव पूर्बिया पूर्णमल्ल को कहना, इच्छा पूर्वक छिद्र मिलजाने के साथ नाजर आदि को भन देकर सहाय में खड़े करके अपने स्वामि की स्त्री के स्वतन्त्रपन में ढक्कू के पुत्र का राणा के मन में इस झूठे दोष की सत्यता का समर्थन करना, मन में राजा सूर्यमल्ल को मारने और बाहर से भानु नामक चारण के रोकने से अनुकूल स्त्री सहित सुख पूर्वक मित्रता से सरलता की सूचना करनेवाले शीषोद राज का बुन्दी नगर में आना, उस का धनवाड़े नामक ग्राम में आना सुनकर हठ पूर्वक अपने पुर में सब सेना को रखकर अकेले राजा का साहस बढाकर पीछे से साथ जानेवाले सुभट और सचिव चारों के साथ राणा से अपनी सीमा पर मिलना, बुन्दीश के अकेले आने की मित्रता और सीधापन की अधिकता के निवेदन से रात्री के समय राणी प्रामारी के समझाने के विरुद्ध पूर्बिया पूर्णमल्ल की पाप की चेष्टा से जलतेहुए राणा का उस के वचनों के प्रवाह से चलायमान होकर चलना है धर्म जिस का ऐसे स्वभाव का साधना अर्थात् मन को चंचल करना, बुन्दी को प्रस्थान करनेवाले राजा सूर्यमल्ल का उत्तर दिशा को देखने के दो

१८८।२ससाहसपुनरभिजिगमिषुनिजनृपनिवारण१४, द्वितीयदिन गोपुरमिलितपुरप्रविष्टधरणीधवजकुटशिविरावधिसमागमससनन्तरप्रासादप्रत्यागतधराधवमिहिरमल्ल १८८।२तत्स्वागतसमुचितसम्भारसम्प्रेषण१५,द्वितीयदिनराज्ञीजनसम्मेलसमुत्सुकप्रामारीप्रासादप्रवेशसमयसम्मुखागतस्नुषाचतुष्क४सेव्यमानपृथ्वीशप्रसूराष्ट्रकूटीसनति१सत्कृतिशुद्धान्तसमज्यातत्समानयन१६,स्वोपरिकल्पिताभिशापबोधवर्जितसमवगतसहसहजास्वामिसञ्जिहीर्षुस्वामिस्वान्तसम्भूतावसरकनिष्ठाभगिनीभवनप्राप्तप्रामारीरहस्तदाकूतप्रकाशन१७ नृपजननीसम्मतप्रासादातिवाहितदिवादिष्टप्रामारीप्रतिगमनानन्तर-तदनुजाराजकुमारी १८८।४ तदाकूतकेलीनिलयनिशानिःशलाक नृपनिवेदन १८, रहोराज्ञीकथन १ प्रातर्जननीतत्सूचन २ चित्रकूटस्थसुर्जन १८९।१ प्रसूगुहिलपुत्रीजयवती १८८।१ प्रेषितपत्रवाचन३

दिन पीछे राणा का माङ्गली ग्राम में आने के समय हड्डुश के काका सामंतसिंह का हठ पूर्वक फिर जाने की इच्छावाले अपने राजा को रोकना, दूसरे दिन शहर के द्वार पर मिलकर पुर में प्रवेश करके दोनों राजाओं का डेरों तक बराबर के अंतर से समागम करके राजा सूर्यमल्ल का महलों में पीछा आकर उसके स्वागत के उचित सामग्री भेजना, दूसरे दिन राणियों से मिलने की इच्छावाली प्रामारी के महलों में प्रवेश करते समय सन्मुख आईहुई पुत्र की चार स्त्रियों से सेवन की हुई राजा की माता राठोड़ी का नम्रता पूर्वक सत्कार करके जनाने की सभा में उसको लाना, अपने ऊपर कल्पना किये हुए दोष को नहीं जानकर अवज्ञा के साथ छोटी वहिन के पति को मारने की इच्छावाले पति के मन में वह इच्छा उत्पन्न हुई जानकर अपनी छोटी वहिन के महल में जाकर प्रामारी का उस चेष्टा को प्रकाश करना, राजा की माता की सलाह से महलों में दिन विताकर आज्ञा दीहुई प्रामारी के पीछे जाने के अनन्तर उसकी छोटी बहिन राजकुमारी का उसके इशारे को क्रीड़ा करने के घर में रात्रि के समय एकांत में राजा से निवेदन करना, रत समय में राणी का कहना और प्रभात में उस बात को माता का सूचित करना और चित्तोड़ से सुर्जन की माता गुहिल पुत्री जयवती के भेजेहुए पत्र को बांचकर

विचिकित्सितबुद्धिमर्ममृगयमाणमहीपतत्कारणाऽप्रापण १९, तृतीय ३ दिनसहसैन्यसमाहूतशीर्षोह १ प्रासादपङ्क्तिपरिवेशासिद्धिसमयसहभोजनासीनशाकम्भर १ कथितक्रमप्रत्यवसान २०, शुद्धान्तदृष्टहड्डाहृतान्ततेमनाम्पोपपोट्टलराष्ट्रकूटीसान्तर्व्यङ्ग्यभूपद्वय २ भुक्तिसङ्गता १ सङ्गत २ भावसूचन २१, शिबिरसमागतश्रुतैतदवरोधोदन्तप्रतीपसचिव १ सहितराणा २ श्वोमृगेन्द्रमृगयामिषहड्डेन्द्रहननवाढविचारणं २२ त्रयस्त्रिंशो ३३ मयूखः ॥ ३३ ॥

आदितोऽशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १८० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

वैतालीयम् ॥

पठयो कहि रान प्रातही, सुढि मत संभरयैं सिकारको॥
खेला इहिं अद्रि रूँपातही, सिंहन मारनकी सदा सुनैं ॥ १ ॥
अप्पन मिलि अज्ज याहितैं, चढि कहुँ संभव होइ तो चलैं ॥
अतिबल बहु केसरी इतैं, कुंजरदारक यों सबै कहैं ॥ २ ॥
सुनि नृप पठये सिकारके, भेदी जन चहुँ ४ ओर भाखियौं॥
बिक्खहु ढिग जो अवाँरके, अवसर सिंह बलिष्ठ व्है इहाँ ॥ ३ ॥
विचरत करिग्राम बागसैं, बिकँख्यो तिन इक केसरी बली ॥

सन्देहवाली बुद्धि से मर्मको हेरनेवाले राजाको उसका कारण नहीं मिलना, तीसरे दिन सेना सहित बुलायेहुए महलों में पंक्ति में पड़सगारी की सिद्धि के समय साथ भोजन करने के आसन पर चहुवाण का कहेहुए क्रम से भोजन करना, जनाने से देखेहुए हाडा से मंगाईहुई बानगियों में फुलकों की पोटली और राठोड़ी का व्यंग्य के साथ दोनों राजाओं के भोजन में सङ्गत और असङ्गत भाव की सूचना करना, डेरों में आकर उस जनाने के वृत्तान्त को सुनकर उलटा सचिव सहित राणा का अपनी सिंह की शिकार के मिष से हड्डेन्द्र को मारने के दृढ विचारने का तेतीसवां ३३ मयूख समाप्त हुआ ॥३३॥ और आदि से अेक सौ अस्सी मयूख हुए ॥

१ चहुवाण को. इस पर्वत में २ क्रीड़ा (शिकार खेलना) ३ प्रसिद्ध है ॥१॥ ४ सिंह ५ हाथियों को मारनेवाला ॥ २ ॥ ६ देरी नहीं करके ॥ ३ ॥ देखा

रानहिं मृगया[1]नुरागमैं, तकि दोरे [2]प्रमदी [3]कैरोल ते ॥ ४ ॥
कछु दिवसनतैं सु केहरी, मनुजन चक्खि लग्योहि मारिबे ॥
तिहिंदिन लखि ताहियौं [4]त्वरी, उप[5]वनमैं रु भजे उमंगसौं ॥ ५ ॥
पठई अरजी नृपालपैं, जन[6]मारक झरिबेल अज्ज जो ॥
क्रमनौं दिन[7]मध्य कालपैं, तँहँ जो होइ बनैं सिकार तो ॥ ६ ॥
बुंदीसहु अप्प वा[8]हिनी, सुनि रिपुभाव समस्तही सजी ॥
गढगढ बिजया[9]वगाहिनी, दुर्जन कोप कृसा[10]नु दाहिनी ॥ ७ ॥
जबही चित्तोरतैं जथा, दल[11] लिखि सुर्जन १८९।१ की [12]प्रसूदयो ॥
तबतैं नृप बिस्[13]मई तथा, रानाँढिग अव[14]धानतैं रहैं ॥ ८ ॥
यातैं सजिकैं अनी[15]किनी, पठई केहरि [16]सुद्धि रानपैं ॥
गरमी नहिं जाइ जो गिनी, [17]हरि हनिबे दिनमध्य हंकिये ॥ ९ ॥
सुनि रानहु स्वीय सूर जे, सब पृतना संह सीघ्रही सजे ॥
पन१ रन२ मन३ गाढ४पूर जे, सोलंखी भट सल्ह१सूर२से ।१०।
प्रामारन बंस पट्टवे, बिंझोली[18]स असोक३ से बली ॥
थित मन [19]कुबिरोध थट्टवै, मच्छरि पौर्बिक१ पूर्णमल्ल४से ।११।
तिम सज्जित वा[20]हिनी तहाँ, कसि दुव२बुन्दिय१चित्रकूट२की ॥
जुग२ धावर[21]बापिका जहाँ, पूरब१ पंथ मिले धराधनी ॥ १२ ॥
रविमल्ल१८८।१९ रैन२भीतिसौं, मिलि पुच्छी कुसल माँहिंमाँहिं त्यौं

राणा को १ शिकार की प्रीति में देखकर २ हर्षयुक्त ३ शिकारी [शिकार की खबर लानेवाले] ॥ ४ ॥ ४ शीघ्रता करनेवाले झड़बेली नामक ५ बाग में देखकर ॥ ५ ॥ ६ मनुष्यों को मारनेवाला ७ दिन के मध्यान्ह समय में चलना होसके तो ॥ ६ ॥ अपनी ८ सेना. गढ गढ पर ९ विजय का थाह लेनेवाली. कोप रूपी १० अग्नि में शत्रुओं को जलानेवाली ११ पत्र लिखकर सुर्जन की १२ माता ने दिया १३ सन्देह रखनेवाला १४ सावधानी से रहता था ॥८॥ १५ सेना सिंह की १६ खबर राणा के पास भेजी १७ सिंह को मारने के लिये ।९।१०। १८ बीजोलियां का पति १९ खोटा विरोध करनेवाला पूर्बिया चहुवाण ।११। २० सेना २१ धावड़याव; अथवा धाऊ की बावड़ी के पास ॥१२॥

पगि बाहिर१ सोधे प्रीति२ सौं, अंतर१ गान धरैं अरातितां२ । १३ ।
सम वाजिन जोगि संक्रमैं, अंकित[3] चामर१ छत्र२ आदितैं ॥
दल घन फन सेसके दसैं, न सहत भार हजारही नमैं ॥ १४ ॥
रानां१ तँहँ संभरीकैं२ सौं, पुच्छिय सिंह कितीक दूरपैं ॥
अक्खिय नृप या अनीकसौं[5], थह झरिबेल त्रि३कोस थानहै ।१५।
रीकसौं१ नीकसौं२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
बनैं इस होत बेगहीं, पत्ते द्वै२ झरिबाग पास ते ॥
घरदावन[6] रीति जे गही, निजनिज सासन वाहिनी उभैं२ ॥१६॥
षट्पात् ॥
पहुँचत तँहँ दुव२ पहुनँ दुवरहि घेरन पठये दल ॥
अप्प रहिय इक१ ओर थप्पि निष्क्रम संभव थल ॥
भूप विदित छल भुल्लि स्वीयँ[10] घेरन पठये सब ॥
निजन जनाई नाँहिं तकी जुहि रान सु पैं तब ॥
इन दिक्खि अलप रच्छक अधिप रान१चढ्यो स[11]चिव२द्विरद ॥
स्वामि१कों सैंन दिय तँहँ सचिव२हनन हड्ड१ यहवर हद ।१७।
पीलु१चढत[13] पैंरपीलु२ कह्यो नृपरांहु चढन क्रम ॥
अक्खिय नृप हय१ उचित तिम न इहिं खिन तंवरेस[14]र२ ॥
इच्छत रानहु यहहि बहुरि न कहिय गज बैठन ॥
सैंन[15] दक्खिय तँहँ सचिव तुपक कर गहत रान तन ॥
अरु कहिय छत्र यहबेर अब तव नृपदिस फेरिय तुपक ॥
तव छाँहँ परत झर्झक्यो तुरग तकन पुव्वहि काल तक ।१८।

१ झूठी. प्रीति से२शत्रुता ।१३। चामर छत्र आदि से ३ चिन्हित होकर ।१४। ४ चहुवाण से. इस ५सेना से ॥ १५ ॥ ६ घेरने की रीति ॥ १६ ॥ दोनों ७ राजाओं ने ८ घेरने के लिये दोनों सेनाओं को भेजी. अपने ९ नहीं जाने यो ग्य और सिंह के होने का संभव जानकर आप एक ओर रहे. बुन्दी के राजा ने१० अपने सब लोगों को ११ सचिव(पूर्णमल्ल)सहित हाथी पर चढा ।१७। १२ हाथी पर चढते समय१३दूसरे हाथी पर चढने के लिये राजा सूर्यमल्ल से कहा. इस समय१४हाथी नहीं है.सचिव ने १५हाथ दबाकर इशारा किया ॥ १८ ॥

हय झझकत नृप हड्ड[1] दिठ्ठि सीसोद[2] ओर दिय ॥
तुपक फेरि निज तरफ हनन तक्कहिं साधी हिय ॥
सामंता१८७।१[?]दिक स्वीय हुते कछु ढिग तिन हेरिय ॥
प्रभुदिस क्यों लिय तुपक न ह्वै रिपुता कहुँ नेरिय ॥
तुरगहिं उडाइ तक्कहिं तना झटहि टारि लैहैं झटक्कि ॥
इत सावधान होतहि अधिप खलन रह्यो अंतर खटक्कि ॥१९॥
कछु हय झपट कराइ बाम टारि रु दक्खिन रवानि ॥
नृप अक्खिय अब निकट मृगप[3] आगम महिपनि[4] मानि ॥
इहिं अंतर आरामं[5] पिट्ठि तासे[6] बजि पद्धर[7] ॥
बिरचि हक्क रन बढत कढ्यो करिआरि[8] धुनि[9] केसर ॥
प्राकार कुद्दि परतहि पुहवि दुवर दिसलक्ख हुव दल दुगम ॥
लवं[10] चरमं[11] अंग बैठक लहि रु समुह३ अल्प जाने सुगम ।२०।
बत्तहिं[12] बदत बिलंब रान तँहँ तुपक प्रहारिय ॥
उडि टप्पा मुख अग्ग उपल[13] गुटिका[14] उच्छारिय ॥
कंकर लग्गत काय धैप्यो[15] अभिमुख[16] केसरधर[17] ॥
भग्गो सामज[18] भीत खाइ बलिबलि[19] अंपष्ट[20] खरं[21] ॥
ह्वै अग्ग कुंतं[22] बीरन हनें तंबेरमं[23] न रुक्यो तदपि ॥
धसिगो समीप गिरि घन धवनें[24] जवनें[25] स्रवन सह चीह जपि ।२१।

---

१ समीप २ खींचकर ॥ १६ ॥ ३ सिंह का आना ४ हे राजाओं के मुकुट ५ बाग के पीछे ६ तासे (वाद्य विशेष) बजकर. ७ सीधा ८ सिंह. गर्दन के केश९धूनकर बाग का कोट कूदकर भूमि पर गिरते ही दोनों ओर दोनों दुर्गम सेना देखी तब१०लगा मात्र११पिछले अङ्ग से बैठा रहकर सन्मुखवालों को अल्प और सुगम जान ॥२०॥ यह १२बात कहते वार लगती है तहां पर राणा ने बन्दूक चलाई १३पत्थर का १४टुकड़ा उडा, अथवा उस गोली ने एक पत्थर उडाया१५दौड़ा१६सन्मुख १७ सटा को धारण करनेवाला. उस भय से१८हाथी भगा १९ बारम्बार २१ तीक्ष्ण २० अंकुश खाकर २२ भाले. तो भी२३हाथी नहीं रुका २४ धोकड़ा (धावड़ा) नामक गहन वृक्षों में २५ वेग पूर्वक चीख मारके ॥२१॥

पैठत खर[1] तरु प्रखर[2] तुट्टि कोनन होदे तक ॥
पूंगनमल्लक पग्घ साख माखन बंधी स्वक ॥
कुंद फटि छुटि करन गई तुपकहु नाउरन गिरि ॥
बचे निट्ठि आयुबल्ल चिपे तस पिट्ठि पिट्ठि चिरि ॥
अध्वहिं[3] मिलैं न तहँ जाइ इभ चकित रुक्यो पव्वय चढत ॥
इत भूप ठहरि दिय पुब्ब इक[4] बिसिख सिंह सम्मुह बढत ॥२२॥
दंती भज्जत दरितें पँत्ति[7] सब विकल पलाये ॥
अरु पाघुन अगवाग[8] आखिल निज प्रभु पथ आये ॥
पाइन गहन प्रबेस तरुन पैठे उत्तरि तब ॥
निठ्ठिन तिन रतनेस जियत खोज्यो संपीलु जब ॥
संभरी इत सु दै इक्क[1] सर सजि पर[2] संहितैं तुरग तजि ॥
दिय सम्मुह पैंड इक इक्क दुल्लभ भीम[1] मनहु जटै[2] भेट भजि ॥२३॥
नरपलरसिक[13] निसंक नरन मारक यह नाहर ॥
तस उर लगि नृप तीर कढ्यो बिलतैं दर्वीकर[14] ॥
अधिक क्रुद्ध इत आत अग्ग पाघुन[15] नापित इक ॥
पग फुलाइ व्यग्रपनैं[16] अफल उचकंत तकि त्रासिक ॥
हरि[17] हनत ताहि तिम पिक्खि पहु स्रवन पिट्ठि दै अपर सर ॥
गनि नट मलंगि कट्टार गहि अंतक[18] जिम पहुँच्यो अंडर ॥२४॥
पहुँचत पुब्बहि प्रान विकल नापितैं[19] हुव विधिवस ॥
न मरन तस चहि नृपति तमकि उर दिय कटार तस ॥
तकि ढिग प्रभु तजि ताहि मृगप मारयो प्रकोष्ठैं[20] मुख ॥

१कांटोंवाले वृक्षों में घुसते ही उन२अत्यंत तीक्ष्ण वृक्षों ने होदे का कोना टूट गया३मार्ग में ४तीर ॥२२॥ ५हाथी के भागते ही ६डरकर७पैदल८भागे ६पाहुणों के१०हाथी सहित. दूसरा बाण११मांधकर. मानों१२जटासुर के मिलने को भीमसेन ने पांवडे दिये॥२३॥मनुष्यों के१३मांस का रसिक. बिल से१४सर्प कढे जिस प्रकार१५पाहुणों का नाई१६व्याकुल होकर त्रास देनेवाले सिंह को देखकर कूदने में निष्फल होगया १७सिंह१८यमराज के समान ॥२४॥ १९नाई मरगया सिंह के मुख में २० कटार मारा.

दहैं बाहुल[1] दारि रुपी पलक[2] छुर[3] सोनरुख[4] ॥
दूजो२ कटार बलि बच्छ[5] दिय जो१ कढिय तस प्रान२जुत ॥
सिंहहिं गिराइ नापित स्वसत नृप लिय भुजन उठाइ नुंत[6]।२५।
स्वसत छुरीधरि सयन जयन आयो हे थित जँहँ ॥
मृत वह चंडिल[7] मृगहि तदपि निज ढिग रक्ख्यो तँहँ ॥
मेवारे कति मुदित१ ससय कति बीर रिसाये२ ॥
सहगज १ सस्त्र२न सोधि इन १ हिं ससचिव २ लै आये ॥
कित हड्ड १ रान२आतहि कहिय अक्खिय नृप निजमित्र इत ॥
जन चय[8] बिछोरि घन१स्वसन२जिम[9] व्है ढिग कहिय समस्तहित२६
सेना दुव २ भट सबन रचिय उपदा[11] १ उत्तारन[12] २ ॥
कुसल परस्पर कहि १ रु पुच्छि २ हित प्रकट प्रसारन ॥
जे नृप हरि[13] लखि जाइ मृतहु दारुन लिवाइ मुरि ॥
पहुँचत बुंदिय पास उभय २ बिछुरे नय अंकुरि ॥
निज सिबिर गत यह बत्त निस बाँसगी[14] प्रति सब वदिय ॥
भ्रामारि कहिय यह होत प्रभु कहा बलि[15]१रु उपदान[16]२किय ॥२७॥
कहिय रान किय कछु न अधिक करिबे पुनि अवसर ॥
तुमहिं अबहिं जो रुचत कहहु तो करहिं प्रीतिकर ॥
अक्खिय रानिय उचित नृपन हय १ सस्त्र २ निवेदन ॥
सुपै टारि अब स्वामि धरत किय कौन महाधन ॥
महि प्रभुख[17] दैन जो होइ मन तो छितिपति नन लैन नय[18] ॥

के मुख में कटार मारा १ बहुत डाढों को तोड़कर २ मांस से ३ तीक्ष्ण ४ रक्तमुख; वा मुख को लाल करके ५ हृदय में लगाया ६ स्तुति यो- ग्य राजा ने उस मिसकते हुए नाई को हाथों में उठालिया ॥ २५ ॥ उस सिसकते हुए ७नाई को हाथों में उठाकर वह विजयी राजा पहिले खड़ा था वहां आया सो वह ८नाई मार्ग में ही मरगया तो भी मनुष्यों के ९समूह को हटाकर मेघ की १०गर्जना के समान शब्द से ११नजर १२न्यौछा- वर १३ सिंह को १४ स्त्री ने कहा. क्या आपने १५ नजराना और न्यौ- छावर नहीं की ।२७। भूमि१७आदि राजाओं की लेने की १८ नीति नहीं है.

खिल रक्खि कहा देहो सु खलुं जु अब दिखावहिं अप्प जय२८

बलि रानिय इम बदत पुव्व जिम मन्नि प्रतीपहि ॥
स्वामि कुपित किय सयन कथिन तदनिष्ट प्रकट कहि ॥
इम निस बहहु अतीत होन प्राची १ लोहित हुव ॥
आयउ तजि अवरोध भूप गनहु बाहिर भुव ॥
पति प्रीति हानि रानिय परखि स्वामि सगंधि सन पंच ५ सर ॥
करि अंतरंग दासिय कर रु पठई पिहितं उदार अर ॥ २९ ॥
पति सर अनि खरे पंच ५ अप्पि दासिय कर अक्खिय ॥
भल्ल दुलभ ए ५ भट गान सेजन कहि रक्खिय ॥
जे तू अब लेजाइ स्वामि पठये कहि सादर ॥
राजकुमरि १८८।४ ढिग रक्खि सुमति आवहु मुरि सत्वर ॥
स्वामिनी कथित सह हेतु सुनि सारिय अंतर ढंकि सर ॥
जवनिका बाट बाहिर जवहि भृत्या कढिय सलज्ज भर ॥३०॥
रदधावन तहँ रचत रानसंत्रिय विष्टर रहि ॥
जवनी बाहिर जात चकित दासिय चितयो चहि ॥
इनउग्गत रवि ओज बंधि पट भल्ल बताये ॥
संपा जिम घन सघन प्रबिसि गोपित प्रकटाये ॥
दिस पुव्व १ पंह रु वह चरम३ दिस यातैं लखि चमकत इखुन॥

इनको १ बाकी रखकर २ निश्चय ॥ २८ ॥ ३ उलटी मानकर ४मन में क्रोध करके. प्रसिद्ध में ५ उसके अनुकूल कहकर ६ व्यतीत ७ पूर्वदिशा ८लाल हुई अर्थात् प्रभात समय हुआ ८ जनाना ९ आये से १० खानगी दासी को ११छान १२शीघ्र ॥२९॥ १३तीक्ष्ण दासी के हाथ में देकर १४कहा १५राजकुमारी नामक १६शीघ्र १७कारण सहित सुनकर १८साड़ी(ओढनेका वस्त्र)के भीतर १९कनात के मार्ग से २०दासी लज्जा के भार से निकली।३०।२१दातन (दतून) करता था २२बाजोट पर बैठकर २३कनात के बाहर. सूर्य के २४तेजने वस्त्र का वेधन करके उन भालों को बताई. जिस प्रकार सघन मेघ में २५बिजुली घुसती है तिस प्रकार २६छिपे हुए बाणों को प्रकट कर दिये २७पूर्णमल्ल पूर्वदिशा में और वह दासी २८पश्चिम दिशा में थी इसकारण चमकते हुए २९बाणों को देखकर

तिम करत*गुप्त२ढक्कसुतहु गिन्यौं ध्रुवहि कछु गूढ गुन ॥३१॥

॥ दोहा ॥

भृत्या गोपित भानुके, भानुनैं दमकत भल्ल ॥
बुल्लि सहठ लखि सब वदिय, महिपहिं पूरनमल्ल ॥ ३२ ॥
नृप अति मन्नैं सोहि नर, न गिनैं गुरु १ लघु २ नैंक ॥
तक्कैं हुकम बिलंब तिन्ह, चीरैं गहि प्रभु चैंक ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

भल्लन चमकत भानु १ द्विगुन ढंकत लखि दासिय ॥
बुल्लत होत बिलंब हठी उलटी करि हासिय ॥
तिहिं गहि लावन तमकि पत्ति निज निडर पठाये ॥
लज्जा बिगरत लखि रु दासि सर काढ्ढि दिखाये ॥
नर तिन समेत पूरन निकट हठि ताकँहँ लैजातहुव ॥
सहचरी तरजि पुच्छत सचिव हेतु बिजन सब ख्यातहुव ॥३४॥

जातहुव १ ख्यातहुव २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

मनहु रंक हठमुट्ठि भुम्मि खोदत निधि भासिय ॥
सुनि कारन इम सकल दै रु लै सर तजि दासिय ॥
ढिग प्रभुके ढक्कूज उदर पक्कैं द्रुत आयो ॥
बिजन अप्पि ते बान हठहि व्यभिचार दिखायो ॥
समुझि कि नाँहि अक्खिय सचिव मन्नि सतनु हडु हिं मदन ॥
स्वामिनी मिलन संकेत सह सरहि पंच ५ पठये सदन ॥ ३५ ॥

*छिपाने से॥३१॥१दासी ने२सूर्य की३किरणों से चमकते हुए भलकों को छिपाती हुई दासी को बुलाकर॥३२॥४क्रोध करके॥३३॥५पैदल६दासी का धमकाकर. छिपा हुआ७कारण प्रसिद्ध होगया. मानों८कृपण रंक को९धन मिला१०ढक्कू का पुत्र ११पेट पकड़े शीघ्र आया१२एकान्त में व बाण देकर१३शरीरधारी१४कामदेव (कामदेव अनंग अर्थात् अंग रहित होने के कारण यहां हाडा को सतनु लिखा है और कामदेव पञ्चबाण होने से व्यंग्य से मिलने का संकेत लिखा है)॥३५॥

अंतरंग अनुचरिय अमुक लैंजात गुप्त इम ॥
चीन[2] वसन चमकात तरजि लिय छन्नि प्रसभ[3] तिय ॥
दर्पन[4] अंबक[5] १ श्रवन श्रवन १ अंबक २ अवनीसन ॥
हो कछु संसय हृदय सुपै मिटिगो ध्रुव धीसन[6] ॥
मिलिगो दमंग[7] बारूद मनु असह रान रिस उप्फन्यौं ॥
गिनि सत्य कुहक[8] सूचकगदित भूप हनन निश्चय भन्यौं ।३६।
रान कहिय संभरहिं अबहि रानिय हनि आऊँ ॥
पूरन आक्खिय पुब्ब बचन मम सत्य बताऊँ ॥
तरजि मोहि क्रुद्ध तुम बुल्लि दासिय विस्वासहु ॥
जिम स्वामिनि ढिग जाइ प्रीति अति रीति प्रकासहु ॥
महलन पधारि दंपति २ मुदित दै तँहँ सखि घटीहि दुव२ ॥
निज तिय१हि लखहु अनुजा२निलय हड्ड९१महित च्युत सील हुव३७
मन्त्रि मनन सुहु मंत्र महिप उट्ठिय तिय मारन ॥
पूरन तब गहि पानि कहिय बैठारि सु कारन ॥
आगम जिहिं हित अत्थ किम सु बिगरावहु यह करि ॥
रंचहु पिहित[10] रहै न मोघ[11] स्वामिनि जैहैं मरि ॥
सो करहु इष्ट बाहुरि निसहि पै पहिलैं छल मारि पर[12] ॥
इक१ राज्य अधिक किन लेहु अब ध्रुवहि होहु यँहँ नीति धर३८
कहिय रान हड्ड९१कँहँ अबहि मारन तो उट्ठहु ॥
चवियै[13] सचिव फल चहहु रहहु सब सहहु न रुट्ठहु[14] ॥
मृगयाँ[15] छल कछु मांड अबहि सत्रुहि हान आवाहि ॥

---

१ फलानी खानगी दासी २ बारीक वस्त्र में ३ हठ पूर्वक. राजाओं को ४दिखा नेवाले ५ नेत्र कान हैं अर्थात् राजाओं के कान ही नेत्र हैं ६ बुद्धि से. मानों बारूद में७अग्नि मिल गया. ८उसदजालसाज के कहने की अरज को सत्य मान कर ॥३६॥ ९छोटी बहिन के घर में ॥३७॥ कुछ भी१०छिपा नहीं रहेगा ११नि-र्थक१२शत्रु को मारकर ॥३८॥ सचिव ने१३कहा१४क्रोध मत करो१५शिकार

जोजो निज जन जोग्य पुनि सु सोसो फल पावहिं ॥
जोपै निदाघ[1] तोहू जतन हुव सु मांघै[2] मृगपति हनन ॥
तजि सोहु बिरल[3] भट कज्ज तकि मंडहु मृगनें[4] मृगव्य[5] मन ॥ ३९ ॥
अप्पनें[6] साधक इष्ट बहुरि निज सुभट बुलावहु ॥
कारन पुच्छत न कोइ खाज्ज इक हुकम खुलावहु ॥
स्वभट करे संग्राम जोह त्रय३ पुव्व जनाये ॥
चहि प्रमार१ चालुक्य२।३ मंत्र सुहि बुल्लि मनाये ॥
अज्जलौं हुती तिन्ह छन्न यह तिहिं कुमंत्र चरमंग तब ॥
खिल गूढ रक्खि अक्खिय खलन इष्ट हनन बुंदीस अब ॥ ४० ॥
कारन पुच्छत कुप्पि कहिय सासन प्रभुं कारन ॥
तिन परदेसिन तबहि नाकिय हठ हेरि निवारन ॥
सल्ह१ रु सूर२ अमोक३ कथित सबहिं बिन्नति किय ॥
पुनि पूरन४ तँहँ पाप दलनें[11] आरि सुलभ मंत्र दिय ॥
प्रभुं[12]१मैं२रु हड्ड३र्तान३हि प्रथम चहि मृगव्यैं[13] एननें[14] चलहिं ॥
त्रय३तुमहु आइ मिलि पंच५तब खल सहज मारहिं खलहिं ॥ ४१ ॥
थिर पूरन मत थप्पि सु कहि पठई सीसोदहु ॥
अधिप हड्ड६१हम अज्ज मृगन मृगया बंछत बहु ॥
शेषैं[15] सुजस तुमरोहु सुदित श्रुति[16]१ नयन२ मिलावहिं ॥
पैं परिक्कर[17] अति अल्प रक्खि बिजनन[18] रस पावहिं ॥
सीसोद भृत्य सासन सुनि सु जाइ कहिय नृप हड्ड६१जँहँ ॥

का छल करके १ ग्रीष्म ऋतु है तोभी २ क्षुधा ३ अल्प भटों से कार्य देखकर ४ हरिणों की ५ शिकार में मन करो ॥ ३९ ॥ ६अपना इष्ट साधनेवाले ७ महाराणा संग्रामसिंह ने उमराव बनाये हैं उन्हीं तीनों को, इस खोटी सलाह का ८अन्तिम भाग अर्थात् राव सूर्यमल्ल को मारने का विचार कहकर ९ बाकी का वृत्तान्त छान रक्खा ॥४०॥ १० मालिक का हुकम ही कारण है. शत्रु को ११मारने का १२ महाराणा १३ शिकार १४ हरिणों की ॥४१॥ १५बाणविद्या की प्रशंसा १६सुनते हैं सो नेत्रों से देखेंगे १७परगह १८एकांत में

रानीहु स्व*अघ पूरन रचित तिम गूढहु लिय जानि तँहँ ॥४२॥
कोउक नाजर कहिय पाप तिहिँदिन रानिय प्रति ॥
हेति१ न दिय ढिग रहन मरन संसय दासिन मति ॥
इम पतना[2]दिक अटकि गाढ बेढ[3]न बैठी गहि ॥
अनस[4]न धरि तब यहहु रुकी संसार विरं[5]त रहि ॥
तस अं[6]तरंग दासिय तिमहि पठई कहि अनुजाँ[7] प्रतिहु ॥
अवरो[8]ध जनन जिहिँ दिन इतहु गिनी मनन भावी गतिहु ॥४३॥
अघ तोलों नृप एह निजन[9] बुल्लहु प्रकट्यो नन ॥
अव सुनि चउ४ आखेट मिलहिँ दुव२ दुव२ मन्नी मन ॥
सारन१८६।१सुत सामंत१८७।२ अप्पि अप्पन द्वितीय२ थिर ॥
प्रनमन[10] जननिय पयन क्रम्यौं अवरोध मुदित किर[11] ॥
रट्ठोरि कहिय वंदन रचत सुत हठ तजि मंत[12]लेहु सुनि ॥
मम सपथ तोहु इक१दुव२मिलि रु पावहु जिन बध१कुजस२पुनि॥४४॥
करि अश्रुत[13] हित कथित पुत्र दुर्गति मति पावहु ॥
गहि वय हठ१ बल गर्व२ जिन सु मम दुग्ध लजावहु ॥
एकाकी[14]१ मारि अजस२ जस१सु मारक[15] हनि२ जानहु ॥
करन जोरि नृप कहिय मरन संसय ध्रुव मानहु ॥
जो होहिँ सत्य तो सुत जसहिँ रक्खि मरहिँ सत्थिन सहित ॥
तजि पच्छ[16] सोक१मुद२हिय तनहु इम न गिनहु जीवहिँ अहित[17]॥४५

आनन्द पावेंगे. पूर्णमल्ल का छाने रचाहुआ अपना*पाप ॥ ४२ ॥ १ शस्त्र पास नहीं रहने दिये. इसीप्रकार २ गिरने आदि को रोककर ३ घेर कर ४ उपवास धारण करके ५ विरक्त रहकर ६ खानगी दासी को भेजकर ७ छोटी बहिन से ८ जनाने लोगों ने ॥ ४३ ॥ ९ अपने लोगों को नहीं कहा. माता के पैरों में१०नमस्कार करने को गया११किल (निश्चय). हमारी १२सलाह ॥ ४४ ॥ हित के कहने को १३नहीं सुनकर १४ अकेला १५मारनेवाले को मार लेने में जस होता है. शोक का १६पच्छ छोडकर. यह मत जानो कि १७ शत्रु

यह सुनि थप्पलि*अंस सिक्ख१ अप्पिय आसिख२सह ॥
†ध्वजिनी जुत‡भूधनहु सज्जि हंकियऽतासिख सह ॥
आसिख सह१ तासिख सह२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रानहु परिखद रचिय सैंबल हड्ड६१।हिँ आवत सुनि ॥
स्वीय सुभट१ सामंत२ चाहि समुचित बुल्ले चुनि ॥
संकेत दियउ ढक्कू सुताहिँ स्व१ पर२चलन पंच५ कि छ६ सब ॥
तजि हय प्रकोष्ठ४ बुंदिय पतिहु तँहँ गय भटन उपेत तब ॥ ४६॥

दोहा ॥

सनति६ रान आयउ समुख, अवधि लंघि कछु अग्ग ॥
नमन१ अनंतर चाप २ निभ, मारक१ मग्गन २ मग्ग ॥ ४७ ॥
इम हड्ड१ हिँ सीसोद२ अरि, पटतोरन१० प्रविसाइ ॥
सह निज निज सुभटन सभा, जुग नृप बैठे जाइ ॥४८॥
पान१अतर२ मादक ३ प्रमुख, हुव बाँहिर११ मनुहारि ॥
अंतर सद्दन इष्टकोँ, रान चहत बिनु रारि ॥ ४९ ॥
सो संभरके सब सुभट, नृप अकथित१२ जानैंन ॥
भेद सु लहि चउ४ रानभट, सोधैं निजप्रभु सैंन१३ ॥ ५० ॥
इम तादिन१४ कछु अग्गसोँ स्वागत१ नति२ सबिसेस ॥
प्रेम नेम न रह्यो प्रकटि, सद्धिय रान निसेस१६ ॥ ५१ ॥

जीवित रहेगा ॥४५॥*कंधा थापकर †सेना सहित ‡राजा ऽमाता की उस शिक्षा सहित. राणा ने भी१सभा रची२सेना सहित३उमराओं को उचित समझकर चुन कर बुलाए ४ डोढी पर घोड़ा छोडकर. उमराओं ५सहित गया ॥ ४६॥ ६नम्रता सहित राणा सन्मुख आने की अवधि को छोडकर कुछ आगे आया. नमने के पीछे धनुष मारता है जिसके ७ सदृश ८ मारनेवाले और ९ याचक के मार्ग से अर्थात् मारनेवाला और याचक दोनों अधिक नमते हैं ॥ ४७ ॥ १०कमान की डोढी में प्रवेश कराकर ॥ ४८ ॥ ११ ऊपर के मन से ॥ ४९ ॥ राजा के १२ नहीं कहने के कारण नहीं जानते थे १३अपने स्वामि का इशारा देखते थे ॥ ५० ॥ १४ उस दिन १५ नम्रता १६ सब ॥ ५१ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरवक्तव्यबुन्दीवसुधावरमिहिरमल्ल १८८।१ चरित्रेप्रातरवबुद्धतद्राणानुमतबुन्दीपृथ्वीशप्रस्थापितमृगयमाणप्रमितभरिग्रामाराममहामृगेन्द्रप्रत्ययायातमृगयुप्रकरपृथिवीपालयुग २प्रोत्सारण १, सज्जस्वस्वसेनसमुपेतप्रस्थितप्राप्यप्राप्तप्रदेशनखधरनिस्सारणानुकूलनियोजितानीकिनीद्वय २ भूमिभुजद्वोभय २स्वाभिमतसाधकसमुचितस्थानसमवस्थान २, गजारूढसम्बुद्धसचिवसञ्ज्ञपनराणा १ बुन्दीश २व्यापादनानुकूलानीताग्नियन्त्रछायोद्भ्रान्तोत्प्लवनप्रारिप्सुसप्तिसावधानशाकम्भरेशशत्रुदक्षिणपार्श्वपरिवर्तन ३, वाद्यादिकलकलवेलबहिर्निष्कासितलवकालचरमाङ्गोपविष्टसम्मुखदृष्टस्वल्पजनच्युतराणाग्नियन्त्रगुटिकाभूपातोच्छालितकर्करकुपितमृगेन्द्रमारकवर्गोपरिधावन ४, तद्भीतिपलायितावमतनियन्तृ

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज आस्थपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी भूपति सूर्यमल्ल के चरित्र में प्रभात में राणा की सलाह जानकर बुन्दी के राजा के भेजेहुए शिकारियों के जनायेहुए भरिग्राम के बाग में सिंह के होने का विश्वास करके शिकार खेलनेवालों के समूह के साथ दोनों राजाओं का उद्योगी होना, अपनी अपनी सजीहुई सेना के साथ प्रस्थान करके प्राप्त होनेवाले प्रदेश में पहुँचकर सिंह के निकालने के अनुकूल दोनों सेनाओं को हुकम देकर दोनों भूपतियों का शिकार के योग्य स्थान पर ठहरना, हाथी पर चढकर सचिव के इशारे से चेताये हुए राणा की बुन्दीश के मारने के अनुकूल लाई हुई बन्दूक की छाया की भ्रान्ति से कूदने की इच्छावाले घोड़े से सावधान चहुवाण का शत्रु के दक्षिण ओर जाना, बाद्य बजने आदि कोलाहल से बाग के बाहिर निकाले हुए थोड़े समय तक पिछले शरीर से बैठकर सन्मुख थोड़े मनुष्यों को देखकर राणा की बन्दूक चूकने से गोली के भूमि पर टप्पा लगने में उछले हुए कंकर से कुपित सिंह का मारनेवालों के समूह पर दौड़ना, उसके भय

प्रहृताङ्कुशाग्रधवाद्यधित्यकातरुनिबिडनिवहप्रविष्टशाखावलीस माचृत्तसचिवशिरोवेष्टनकण्टकादिविद्धितपृष्टस्वपृष्टन्युब्जितस्रस्त शस्त्रस्वारोहकमारीचमातङ्गमार्गाभावमहीध्रप्रस्थप्रदेशावस्थान५, तुरगाद्यवरूढपश्चादनुप्रविष्टशीर्षोद्दसामन्तगणानिस्सरणिसानुस्थित सिन्धुरस्थससचिव१स्वास्य २ न्वेषण ६, वेध्यवक्षःप्रहृतैक१पृषत्क संहितापर २ प्रोथ्यवप्लुतमहीशमिहिरमल्ल १८८१ सिंहसम्मुखाभि सरण७, हष्टहतवेगप्राघुणनापितमारयमाणमृगराजश्रवणपृष्टप्रहारितापर २ प्रदरकरकृतनिष्कोशकट्टारहड्डा ६१ धिराजक्षुरिरक्षणा र्थपारिन्द्रोदरपाङ्क्तिशप्रहारण ८, तद्दंष्ट्राघातविदीर्णबाहुलदरविहित मणिबन्धद्वितीय २प्रहारविपाटितवक्षोऽथापादितवारणवैरिस्वपाणि युग २ समाहितम्रियमाणमुण्डकप्रत्यागतहड्डाधिराजसरणिसंस्थि तनापितनिजनिकटन्यसन ९, स्वीयसामन्तसमन्वेपितगजारू ढससचिव १ शीर्षोद्दराज २ मिश्रितमिहिरमल्ल १८८१ मारितमृगे न्द्रश्लाघावसरसैन्ययुग २ सामन्तगणनारायण १८७१ नन्दनानन्द

से भागनेवाले उस महावत के अङ्कुश के मारने को नहीं मान कर धव आदि वृक्षों से सघन पर्वत के नीचे की भूमि में प्रवेश करनेवाले वृक्षों की पंक्ति में सचिव की पगड़ी लिपटकर कांटों से अपनी पीठ बिन्धने से कुबड़े होकर शस्त्र गिरकर अपनी सवारी के हाथी का मार्ग के अभाव से पर्वत के ऊपर की सम भूमि में ठहरना, घोड़ों आदि पर सवार होकर पीछे से प्रवेश करके शीषोद के वीरों का मृत्यु के शिखर पर चढेहुए हाथी पर स्थित सचिव सहित अपने स्वामि को हेरना, एक बाण से छाती बेध कर दूसरा बाण सन्धान करके घोड़े से कूदकर राजा सूर्यमल्ल का सिंह के सन्मुख जाना, पाहुने नाई का वेग हत होना देखकर मारनेवाले सिंह के कान के पीछे दूसरा बाण मारकर हाथ में नग्न कटार लेकर हड्डाधिराज का नाई की रक्षा के अर्थ सिंह के उदर में कटार का प्रहार करना, उसकी आघात से बहुत डाढें टूटकर पूंचे सहित भय दिखाकर छाती में दूसरा प्रहार करके सिंह को मारकर मरने योग्य नाई को दोनों हाथों से उठाकर पीछे आयेहुए हड्डाधिराज का मार्ग में मरेहुए नाई को अपने पास रखना, अपने उमरावों से हेरेहुए हाथी पर सवार शीषोद राज का

ननिमित्तनिजनिजनिवेद्योपदा१निवेदनानन्तरसमुचितसमुत्तारणा २ विधान १०, पृष्टमिथःकुशलसमानायितप्रशंसितपरासुपञ्चाननप्रति प्रस्थितपृतनोपेतपृथ्वीशयुग्म २ स्वस्वसदनसंविशन११, निशावसर प्रज्ञातप्रशंसापूर्वकपतिप्रोक्तपृथ्वीशसूर्यमल्ल १८८।१ पट्टिशप्रहारपञ्च मुखपरासुत्वप्रामारीप्रियोपदा १ दिपृच्छाप्रतीपराणाऽननुष्ठाननिवे न १२, प्रातःप्राबल्यप्राप्तप्रामारीप्रेष्यापाणिप्रच्छन्नप्रेषितप्रियोपास ङ्गप्रशस्तपृशत्कपञ्चक ५ पूर्णमल्लनिश्शलाकनिजनृपनिवेदन १३, पञ्च ५ वाणप्रेषणप्रत्ययनिर्णीतनिजमहिलामतमनोहरमूर्तिमद्म दनमहाराजमिहिरमल्ल १८८।१ मिथ्याभिशप्तप्रामारीप्रमापणप्रारिप्सु राणापूर्णमल्लप्रोक्तपृथमृषाकल्पितवामाङ्गीशीलभ्रंशवीक्षणविलम्बा वमनन १४, निवारिततत्कालवनिता १ बुंदीश ३ व्यापादनारम्भदृ ढीकृतस्वल्पसार्थमृगमृगव्यमिहिरमल्ल १८८।१ मारणमन्त्रपूर्णम ल्लप्रयुक्तराणासमाहूतप्रामार १ चालुक्य २ सामन्त ३ त्रय ३ संहि तनिश्शलाकस्वाभीष्टसिद्धिनिश्चयन १५, कारणपृच्छाप्रतीपनिज

सूर्यमल्ल से मिलकर मारेहुए सिंह की प्रशंसा के समय दोनों सेना के उमरा ओं का नारायणदास के पुत्र (सूर्यमल्ल) की प्रसन्नता के निमित्त अपनी अपनी जानकारी के साथ नजर किये पीछे उचित न्योछावर करना,परस्पर कुशलता पूछकर मरेहुए सिंह की प्रशंसा करके सेना सहित पीछा प्रस्थान करके दोनों राजाओं का अपने अपने सदन में प्रवेश करना, रात्री के समय पति के कहने से राजा सूर्यमल्ल की कटारी के प्रहार से सिंह को मारने की प्रशंसा जानकर प्रामारी के पति से नजराना आदि के पूछने के विरुद्ध राणा का नजराना क रने का निवेदन करना, प्रभात समय प्रबलता प्राप्त करके प्रामारी की दासी के हाथ से छाने भेजे हुए पति के भाथे से प्रशंसा योग्य पांच बाणों को पूर्णमल्ल का एकान्त में अपने राजा की नजर करना, पांच बाण भेजने के सबूत से अपनी स्त्री का मत निर्णय करके सुन्दर मूर्तिमान कामदेव रूप महाराज सूर्यमल्ल के मि थ्या दोष से प्रामारी को मारने की इच्छावाले राणा का पूर्णमल्ल के कथन को सत्य मानकर मिथ्या कल्पना से स्त्री का शील नाश होने को देखने के लिये विल म्ब करना, उस समय स्त्री को छोडकर बुन्दीश को मारने का आरम्भ दृढ करके थो- डे साथ से हरिणों की शिकार में सूर्यमल्ल को मारने की सलाह से पूर्णमल्ल के कहने से राणा का प्रामार, सोलंखी तीन उमरावों को बुलाकर एकान्त में अपने अनुकू

नियोगनियोजिततत्रय ३ मतमन्त्रिमतमेदपाटमहीपस्वल्पतमसा
र्थसहितकुरङ्गाच्छोटनक्रीडाकपटस्वाभिमतसाधनार्थहड्डाधिराजस
माह्वान १६, दूरीकृतशस्त्रादिसंस्थासाधनशुद्धान्तपरिचारिकाजनत
द्दिनविज्ञातसचिवहेतुकमिथ्यास्वशीलभ्रंशाभिशापविफालितवपुर्विहा
नोपायधृतानशनप्रामारीराज्ञीरक्षणा १७, राणासम्मतसिसाधयिषु
स्वल्पसार्थमृगमृगव्यरिरंसाप्रतिष्ठासुशुद्धान्तसङ्गतनमस्कृतराष्ट्रकूटो
पुनःपुनःप्रबोधितस्वीकृतससपत्नसंस्थानसामन्त १८७१२ द्वितीय २
तदाच्छोटनचिक्रीडयिषुसन्नद्धसकलसैन्यसमुपेतबुन्दीशशीर्षोद्दशिबि
रसमागमन १८, सीमातिक्रमसम्मुखागतबहिस्सूचितसातिरेकस्नेह
धनुर्नतिधरचित्रकूटराजप्रतिसीराप्राकारप्रतोलीप्रवेशितबुंदीशसस
त्कृतिस्वस्वसामन्तसंघसहितसभासमुपवेशनं १९ चतुस्त्रिंशो ३४म-
यूखः ॥ ३४ ॥ आदित एकाशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १८१ ॥

ल साधन निश्चय करना, कारण पूछने के विरुद्ध अपनी आज्ञा से योजित उन ती
नों के मन्त्री के मत से मेवाड़ के राजा का बहुत थोड़े साथ सहित हरिणों
की शिकार खेलने के मिष से स्वामि की सलाह साधने के लिये हड्डाधिराज
को बुलाना, शस्त्र आदि मृत्यु के साधनों को दूर करके जनाने की दासियों का
उस दिन सचिव के कारण अपने शील नाश होने के मिथ्या दोष को जान
कर शरीर छोडने के लिये उपवास करनेवाली प्रामारी की रक्षा करना, राणा
की संमति को साधने की इच्छावाले और अल्प साथ से शिकार रमनेवाले
प्रतिष्ठा से जनाने में श्रेष्ट नमस्कार करनेवाले और राठोड़ों से वारम्वार
समझायेहुए शत्रु को अपने साथ मारने को स्वीकार करनेवाले सामन्त हैं दूस
रा जिसके उस शिकार खेलने की इच्छावाले सजीहुई सब सेना के साथ
बुन्दीश का शीषोद के डेरे पर आना, सीमा लांघकर सन्मुख आयेहुए बाहर
से स्नेह को अत्यन्त दिखानेवाले और धनुष के समान नम्रता धारण करनेवा
ले चित्तोड़ के राजा का कनात के कोट के द्वार में प्रवेश करनेवाले बुंदीश के
सत्कार सहित और अपने अपने उमरावों के समुदाय सहित सभा में बैठने
का चौतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३४॥ और आदि से एक सौ इक्यासी
१८१मयूख हुए ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

आदर हड्ड१हिं रान२ इम, मिलि बैठत कृत मोद ॥
सचिव सैंन दिय सल्ह तँहँ, प्रहसन[1] बचन प्रतोद ॥ १ ॥
हो समुचित मृगपति हनन, कल्हि२ कटक सब कज्ज ॥
इक्खहु मन हड्ड६१न अहो, एनन सन भय अज्ज२ ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

मृगगन रमन मृगठ्यं क्रमन पुव्वहि सूचन किय ॥
चउ४ कि पंच५ धनु चतुर लैन सब रैन भै न लिय ॥
तृनभोजिन भय तदपि अज्ज हठ हुव हड्ड६१न उर ॥
दुव२ जँहँ राघव१८७१देव१८८१धार अवसर[9] थंभन धुर ॥
सिखयँ सु नर्म[11] चालुक१ चवंत[12] हसि प्रामार२ हु कहत हुव ॥
इहिं वंस संटि[13] पुत्रिन असुन[14] हल्लू१८२१सम बहु लहत हुव॥३॥

कहतहुव१ लहतहुव२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

देव१८८१रु राघव१८७१हड्ड६१दुव२, आये ए२ भजि अग्ग ॥
तकि नृप संग मिलाइ तिन्ह, इम किय हास्य उदग्ग[15] ॥ ४ ॥
सल्ह१ असोक२ कुनर्म सुनि, सचिव[17] सैन अनुसार ॥
स्मित[18]१प्रहसित[19]२ अट्टाट्ट[20]३ सन, परपक्खिन[21] किय प्यार ॥ ५ ॥

---

१ हसी (मसकरी) रूपी चाबुक लगाया ॥ १ ॥ सिंह की शिकार में कल सब सेना का होना २ उचित था ३देखो ४हरिणों से आज हाडाओं को भय है ॥२॥ हरिणों की ५ शिकार ६ जाना पहिले ही कहला दिया था ७ बाणविद्या में चतुर ८ तृण भोजन करनेवालों (हरिणों) से ९ तो भी १० समय पर ११ हसी १२कहते ही. इस वंश में १३बदले में पुत्रियें देकर हल्लू के समान बहुतों ने १४ प्राण लिये हैं अर्थात् प्राण पाये हैं १५उच्चस्वर से हास्य किया १६खोटी मसकरी सुनकर १७सचिव पूर्णमल्ल के सैन करने के अनुसार १८विना दांत दिखाये मदहास्य १९हर्ष दिखाकर अधिकहसना २०उच्चस्वर से अत्यन्त हसना २१शत्रुओं ने ॥५॥

द्विजे कहत ढकूज १ दिय, रान २ हु बदन रुमाल ॥
तँहँ न हसे पैर अल्पतम, सूरा १ दिक परसाल ॥ ६ ॥
बच्छोला १ कोटा २ बसति, देव१८८।१रु राघवदास १८७।१॥
एह सुनत बुल्ले अनखि, वीर भुजन बल वास ॥ ७ ॥

॥ षट्पात ॥

कबहु किमहु तजि कलह न व्है कातर १ प्रबीर २ नर ॥
अतिबलता उत अप्प घत्तिरक्खिय काके घर ॥
सीसोद१न कुल सबल तेज २ राउल तो तक्कहु ॥
भिरि मंडन १६८।१ सन भजिग प्रचित बिश्वासघात पहु ॥
पुनि सेनपाल१८७।१।१मुंडिय पुँरा सर करि किरनादित्य सिर॥
संठिय सुता जु तस वर सरन हुव हल्लुव१८२।१सुहु बिदित हिर।८।

॥ दोहा ॥

कुंभ१८३।१हु तिम हल्लू १८२।१ कुमर, लक्ख रान भय लाइ॥
आयउ भजि बुंदिय अरपि, प्रधंन चंकितपन पाइ ॥ ९ ॥

॥ षट्पात ॥

जो चौलुक २ कुल अजित कहहु सूकर भुव कैसैं ॥
पृथु तुमरे परपुरुख जाइ प्रसुता १ जस २ जैसैं ॥
सद्योधारन सचिव निकट अति प्रनति निबाहिय ॥

---

१ दांत निकालने से हक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल और महाराणा ने २ मुख में रूमाल दिये ३ शत्रु कुछ भी नहीं हंसे ४ शत्रुओं के शाल ॥ ६ ॥ ७ ॥ आपके वहां किसके घर में ५घाल रक्खी है. विश्वासघात से६गर्ज॰।॰करनेवाला राजा, वा तुम विश्वासघात में ही गर्जना करनेवाले प्रभु हो ७पहिले (यहां के सब उदाहरणों की सविस्तर कथा ऊपर आचुकी है इसका॰ण यहां विस्तार से टीका करना अनावश्यक है) ८ स्वर्ण के समान प्र[illegible] ॥ ८ ॥ ९ लाखाराणा से १० युद्ध में ११ भय पाकर (यहां लाखा र[illegible] युद्ध में भय पाकर कुम्भकर्ण का बुन्दी दे आना काकुभाषा से कहा[illegible]) ॥९॥ १२सोलंखी, के कुल को अजित कहते हो तो. तुम्हारे१३बड़े

अधिप सुधन्वा ६ अर्थ बिभा ६।१॥स्वसुता सु बिवाहिय ॥
भजि पुनि गुमाइ गुजरात भुव बिनु¹नृपता पीढिन बहुन ॥
अजमेर प्रांत निवसे अखिल प्रकटिय तँहँ इक्क१हु पेंहु न।१०।

॥ दोहा ॥

प्रामार२न कुल जो प्रबल, पिक्खहु तो जसपंति ॥
अवधि असोक२००अमान१७०तैं, अब किन तपहु अवंति।११।
बंधु मोहनोत २ रु बिदित, जैताउत ६।२ इम जंपि ॥
उट्ठे दुव २ ऐंचत असिन, चित्त हसिन गन चंपि ॥ १२ ॥
इक्क १ इक्क १ प्रति गहिय अब, इच्छामित तुम आहु ॥
भय हड्ड६१न संगर भजन, परखि स्वमत फल पाहु ॥ १३ ॥
उठि इम करत बिकोस असि, दुव २ हड्ड६१न रिस दिट्ठि ॥
जिन्ह सामंत१८७।१दलेल १८८।१ जुत,नृप१८८।१बैठारिय निट्ठि१४

॥ षट्पात् ॥

पति ताँरागढ प्रथम१ भनिय जसकर्ण १८६।२ निम्म १८५।३भव
अपर २ गंग १८६।२ अभिधान जु हुव जगबिदित जिंताहव ॥
सुत नृसिंह १८७।१ तस सुमति रहिय हनि बहु बाँबर३०रन ॥
तास दलेल १८८।१ तनूंज कहिय सलह १ रु असोक २ सैन ॥
जय लहिय रान संग्राम जँहँ हड्ड६१न भयहि निमित्त हुव ॥
पहिलैंहु असरगढके प्रधैंन भजि कुंभहिं दिय तोग १८६।१ भुव१५

॥ दोहा ॥

---

¹बिभा नामक॥अपनी पुत्री को. बिना¹राजापन के. वहां एक भी १राजा नहीं हुआ ॥ १० ॥ २उज्जीन पर अब राज्य क्यों नहीं करते हो ।११। ३ कह कर ४ तलवार खींच कर उठे ५ हंसनेवाले समूह के चित्तको दबाकर ॥ १२ ॥ १३ ॥ तलवार ६म्यान बाहर लेने ही ॥१४॥ ७तारागढ का किल्लादार. निम्मदेव का८पुत्र ९ युद्ध जीतनेवाले १० बाबर बादशाह के युद्ध में. दलेलसिंह के११पुत्र ने. सलह और अशोक१२से कहा. हाडों का भय ही उस युद्ध जीतने का१३कारण हुआ था १४ युद्ध में ॥ १५ ॥

कहिय हरी १८८।१ हरपाल १८२।२ कुल, जज्जाउरपुर जत्थ ॥
मुगलराज रन भीम१८७।२मम, तात भ्फरिग भय तत्थ ॥१६॥
*कित्तिसीह१८८।१नवरंग१८३।२कुल, बदिय लाडपुर बास ॥
पिता भरत १८७।१ मम भ्फरिपरत, अतिभय हुडन आंस ॥१७॥
क्रम पित्थल१८९।१ थिरराज१८३।३ कुल, बदिय गंग१८८।१मम बप्प
भंजि मुगल तिलतिल भयो, यह पिक्खहु भय अप्प ॥ १८ ॥
खेम१९०।१अनुज सिवसिंह१९०।२ खिजि, कहिय खजूरीके७।३हु
अमर१८६।१खेम१९०।१दिय भजत असु,जनक१भ्रात२फुंट जेहु १९

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपति बारहठ कहिय सामोर धीर कवि ॥
भुल्लहु जिन रानभट पिहित रहत न काच १ रु पवि २ ॥
हमरे भटन कहेहि रहे बीरन बाबर ३० रन ॥
भट इतरहुं हम भनत सुनहु मृत तुम सहाय सन ॥
नगराज १ गोर गिरिधर तनय तँहँ प्रताप २ कछवाह तिम ॥
बलराज ३ सल्ह प्रामार सुव अरु दहियाह प्रताप४इम ॥२०॥
चावोरा रन चतुर सूर नरसिंह ५ देव सुंव ॥
भक्खर ६ संकर भ्रात हेति तिलतिल सोढा हुव ॥
दहर नेत दायाद भयउ बटके मुकुंद ७ भर ॥
अर्जुन ८ जदुकुल अडर स्याम ९ प्रतिहार पुरस्सर ॥
सिवराज १० बीर चालुक असह जोध बिहारीदास ११ जुत ॥
बीरम १२ कबंध विक्रम १३ बहुरि संभर भरत भदोर सुत ।२१।

॥ दोहा ॥

करन १४ नाम तिलतिल कटिय, सरबहिया अतिसूर ॥

---

* कीर्तिसिंह १ हुआ२पिता३आप 'ये सब वक्रोक्ति के कथन हैं' ॥१८॥ ४प्राण ५प्रसिद्ध है॥१९॥ हे राजा के उमराओ भूलो६मत. काच और७हीरा छिपे नहीं रहते. ८ अन्य वीरों को ॥ २० ॥ ९ चावड़ा. देवसिंह का१०पुत्र ११शस्त्रों से१२ भड़ (वीर) १३ अग्रणी वा आदि १४ चहुवाण ॥२१॥

भज्जत रान सहाय भजि, पारि मुगल बल पूर ॥ २२ ॥
बाबर ३० रन इत्यादि*वर, सब बुंदीस सिपाह ॥
सतपचीस २५०० सोवत समर, लहिय रान जय लाह ॥ २३ ॥
रहे जियत अब ताहि रन, घनैं सुनहु सहि घाय ॥
पाये तँहँ सह वाजि पहु, कैलि चउचउ ४४ छत काय ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिम नरवद१८७।२सुत त्रय३हि लहिय चउ४छत अर्जुन१८८।१लरि॥
प्रतिभट भीम १८८।२ पचीस २५ सहे तदनुज गँज संहरि ॥
पूरन १८८।३ तदनुज पंच ५ छ ६ छत सत्तल २ कुमार छँम ॥
चउ ४ छत वँहि रन रचिय जोध मेव १८७।१ हु जवनन जम ॥
नगराज१८८।१चुंड१८६।२बंसियनिडरकुंभकरन१८८।१जिमउंदयकुल
वंसिय अर्धीस सामंत११८७।१वपु इन तीन३न खट६खट६अतुल २५

॥ वस्तुबदनकम् ॥

सुभटँवर्ग अब सुनहु हरिय १ सीसोद अँमरहर ॥
पित्थल नत्तिय प्रथित संभु २ चालुक बघेल बर ॥
संकर नत्तिय सूर भीम ३ भट्टिय खंडित खल ॥
गोवर्द्धन ४ तिम गोर बीर सुंदर सुव अतिबल ॥ २६ ॥
कथित नंद ५ कुम्मकुल निडर बंसीधर नत्तिय ॥
सैंगर तिक्कम सुतंज हठिय दीप ६ हु असंक हिय ॥
सरवहिया दीप ७ सह स्याम ८ दहिया प्रताप सुत ॥
रहे निर्यंत[11] तिहिँ रारि जोध[12] इत्यादि छतँन[13] जुत ॥ २७ ॥

---

*श्रेष्ठ ॥२३॥ घोड़े सहित राजा नारायणदास ने १ युद्ध में शरीर में चवालीस २घाव पाये थे ॥ २४ ॥ ३ उसके छोटे भाई ने ४ हाथी को मारकर ५ समर्थ ६ पाकर ॥२५॥ ७सुभटों के समूह को अब सुनो. पृथ्वीसिंह का ८पोता ९प्रसिद्ध ॥ २६ ॥ टीकम का १०पोता ११ निडर १२ वीर १३ घावों सहित ॥ २७ ॥

मालव १ गुज्जर २ *मीर रुपे यातैं पहिले रन ॥
दिव सहाय बुंदीस नियत हित तवहु नरायन १८७।१ ॥
जँहँ नृसिंह १८७।३ नृप अनुज पारि महमूद चमूपति ॥
संकर १ नेत २ समेत भयउ तिलतिल जु काच भंति ॥ २८ ॥
बहे घाय नारबद अंग अर्जुन १८८।१ अट्ठारह १८ ॥
मंडू सचिव १ समेत बीर संहे अरि बारह १२ ॥
सारन १८६।१ सुत सामंत १८७।२ सेव १८६।२ तनुजात मेव १८७।२ सह
निम्माउत्त १८८।२ नृसिंह १८७।१ गंग १८६।२ अंगज जय संग्रह ।२९।
नगर लाडपुर नाह भरत १८७।२ नवरंग पौत्र ८।४ भर ॥
भीम १८७।२ देव १८६।१ सुत भांमि विदित हरपाल पौत्र ५।१।१ पर
इत्यादिन तिहिं आंजि छमँन जय सद्धि लहे छत ॥
बाबर ३० रन रतिवाह मृत १ रु घायल २ सुनों व मत ।३०।
सुत्तो रन बिनुसिग्हु सद्धि नरबद १८७।२ इकतीस ३१ न ॥
हत्थाउत ३ हम्मीर १८९।१ घल्लि पंद्रह १५ कलंग घन ॥
तिम घुग्घुल १८९।१ कुल तेज १८८।२ सुगल नव ९ हरि सुत्तो महि
खज्जूरीपति खेम १९०।१ दहन पानिप छ ६ सुगल दहि ॥३१॥
हल्लू १८२।१ हर लय ३ हड्ड ६ १ लक्ख १९०।१ अनुपम १९०।१ कुबेर १ लरि
सुत्ते सूरनसयन कदन खट ६ दस १० त्रय ३ क्रम करि ॥
तिम प्रताप १ तोमर रु रतन २ झल्ला आदिक रन ॥
परे सुभट सतपंच ५०० सतक १०० घायल साहस सन ।३२।
गढ मालव १ गुजरात २ हुव २ हि लग्गे पुनि दुर्जन ॥

मालवा और गुजरात के *बादशाह. काच की १ भांति २ नरबद के पुत्र ने ३ मारे ४ पुत्र ५ पत्र. उस ६ युद्ध में ७ समर्थों ने विजय करके घाव लिये थे ८ अब ।३०। ९ कचरघाण करके १० मारकर. पराक्रम रूपी ११ अग्नि से छः यवनों को जला कर ॥ ३१ ॥ १२ शरसय्या में सोया ॥ ३२ ॥ १३ चित्तोड़गढ पर

तिहिँ रन नरवद्द १८७।२ तनय पर्यो अर्जुन १८८।१सहाय पन॥
अग्गहु हिंगुलु १८०।९ आदि रहिय चित्तोर भीर रन ॥
तुम भय भाखत तदपि नैंक उपकृत[1] लज्जहु नन ॥ ३३ ॥
नारायन १८७।१ जिहिँ नेह असह मारिय इक्का वह ॥
तुम हड्ड६१न भय तदपि गदत हा धर्त कदाग्रह[2] ॥
बारू चारन बैर लियउ तैसो साहस लहि ॥
तुम हड्ड ६१ न भय तदपि वदत कृतघन कुनर्म[3] वहि ॥३४॥
अत्थहि जो आखेट तुमहु क्यौँ सब सँगत[4] तब ॥
हनन गृहहु निज रीति कहहु एकाकि[5] १ नृपन कब ॥
तदपि हास्य अति तनिय[6] प्रहँत[8] चालुक १ प्रामार२न ॥
गिनि अश्रुत[8] कवि गदित स्वामि१सचिव२न सूचन सन ॥३५॥
षट्पात्-अति कुनर्म[9] नृप अनँखि[10] कहिय सल्ह१रु असोक२कँहँ॥
तँहँ हो कोन द्वितीय २ जनक १ मारिय ढक्क २ जँहँ ॥
चहि हड्ड १ न चाकित्य[11] प्रबल सीसोद २ परक्खहु ॥
पीढिन हित प्रातीप्य[12] रुचित तो उचित न रक्खहु ॥
मन क्रुद्ध अधिक इम कहि मिहिर[13]१८८।१ भिन्न बिरचि निज मुख्य भट
स्व सपथ उपेत अक्खिय सबन वहुत लैँहि इक्क१हु बिकँट[14] ॥३६॥

परक्खहु२नरक्खहु२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

१उपकार से लज्जित नहीं होते॥३३॥ इस समय धूर्तता ग्रहण करके२कुत्सित [खोटा]आग्रह करके कहते हो३खोटी हंसी करके॥३४॥ ४साथ अर्थात् यहां भी जो शिकार है तो तुम सब साथ क्यों हो. तुम्हारे घर में ही कहो कि राजा ओं के५अकेले शिकार खेलने की रीति कहां है ६ फैलाया, सोलंखी और प्रामारों ने अधिक हास्य फैलाया. वा उपरोक्त उदाहरणों का ७नाश (मिटा) करके सोलंखी और प्रामारों ने हास्य फैलाया. स्वामि और सचिव पूर्णमल्ल की सूचना से कवि का कहना ८ अनसुना करके ॥ ३५ ॥ राजा ने ९ खोटी मस्क री से१०क्रोध करके. हाडाओं का११भय(डरपोकपन)चाहते हो तो पीढियों के १२हित में विरुद्धता रुचती है तो१३सूर्यमल्ल ने अपने मुख्य वीरों को जुदे करके अपने सोगन सहित कहा कि सब के लिये मैं अकेला ही१४भयंकर बहुत हूं।३६।

दोहा–मो मारन हत्या मिलहिं, इक्क १ हु मो ढिग आत ॥
न रुकत लैहौं छिन्नि निज, बाम्र १ देस २*बसु बात ३ ॥३७॥
ठहै द्रोहहि जो रान हिय, मग्गा सुनहु जो मोहिं ॥
सफल करहु तब सरता, रिपुन मग्ग सब रोहिं ॥ ३८ ॥
पिहित बत्त जाना जु पहु, अबहु भटन अक्खी न ॥
नृप सपथहुँ न गिने नता, धँपि संगहि अनधीन ॥ ३६ ॥
पुब्ब कथित सुभटन तदपि, महिप सु निट्ठि मनाइ ॥
सूचिय मैं १ रान २ रु सचिव ३, को भय अँटत कहाइ ॥४०॥

॥ षट्पात् ॥

निट्ठि सु निजर्न मनाइ आइ चल्लहु नृप अक्खिय ॥
सिंबिरहु ब्यवहितं सूचि रान सज्जहि सब रक्खिय ॥
सह परिकर हुव[11]सुपहु चलिय इम मृग मृगव्य चढि ॥
तापी सरिता तीर पहुँचि उतरे निवास पढि ॥
ब्यवहार १ सध्य आन्हिक २ बिरचि आतप कछु टारिय असह
तँहँ रान लय३हि पठये पिहित सल्ह१रु सूर२असोक३सह ।४१।

असह १ कसह २ अन्त्यानुप्रासः ॥

॥ दोहा ॥

तिन प्रति अक्खिय रान तुम, मिलहु हमहिं प्रतिमग्गँ ॥
जानैं भ्रमहु न कोहु जन, इम जावहु त्रय ३ अग्ग ॥ ४२ ॥
औसैं पिहित पठाइ इन्ह, लै पूरन १ कँहँ लार ॥

---

*धन का समूह ॥ ३७ ॥ शत्रुओं का मार्ग १ रोक कर ॥ ३८ ॥ राजा ने जो २ छिपीहुई बात जानी सो अब तक उमरावों को नहीं कही नहीं तो राजा के ३ सोगन भी नहीं मानत और ४ दौड़कर ५ आधीनता रहित (स्वतन्त्र) होकर साथ ही रहते ॥३९॥ ६क्या भय है७फिरते हुओं को॥४०॥ ८ अपने लोगों को स्वीकार कराकर ९ डेरे में १० छिपीहुई सूचना करके११ परगह सहित. हरिणों की १२शिकार. तापी १३नदी के तीर पर. मध्यान्ह की १४संध्या करके. कुछ असह १५धूप टाली १६ छाने ॥४१॥ १७ पीछे फिरते

अधिप चले बरजत उभय १,सद्दन अय ३ हि सिकार ॥४३॥
निज निज परिकर रोधि नृप, जुग २ हि अतिक्रमि जात ॥
जलधर १ चर २ हयभृत्य ३ जन, संगहि क्रमिय छ सात॥४४॥

॥ षट्पात् ॥

इक १ बाहुज कछु अवम हुल्ल जातिक कुंपाऽहय ॥
निज दायज नृप जननि संग लाई जुहि तासय ॥
जलधारक यह जाहि वदै मातुल बुंदीसहु ॥
भेदी सहचर भो जु तदिन सायुध तुंदीसहु ॥
भट गिनि सु रान बिहसि रु भनिय जुग२हि बहुत इक १पास जल
वहुजनन बिघ्न मृगया बनहिं सुनत मुर्यो संभर सबल ॥४५॥
मुरि तस सम्मुह महिप मिलत अक्खिय मामा मुरि ॥
जँहँ निजभट तँहँ जाहु वहहु बुल्लिय तब अंकुरि ॥
कछु अंतहपुर कलह अज्ज जाहु न प्रभु इक्कल १ ॥
तदपि दूर नृप ताहि मोरि आयउ मन निर्मल ॥
गिनिये न नियत अंतर गहन जक्खमूल१ तुलसी२ जहाँ॥
पुव्बहि दिवाइ गर्ता प्रचुरतर निम्मल१८८१शक्खिय तहाँ॥४६॥

हम से मिलना ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अपनी अपनी परगह को १रोककर जहां दोनों राजा. दोनों राजा निडर२यात्रा करके चले तहां ३ पीने का जल रखनेवाले अपने ४चाकर ५घोड़ों के चाकर सब छः सात जने साथ चले एक ६ क्षत्रिय कुछ ७ हलकी हूल जाति का ८ कूंपा नामक जिसको राजा की माता अपने डायजे में साथ लाई थी इस जल रखनेवाले को बुन्दी का राजा९माना कहता था वह भेद जाननेवाला १०साथ था ११ आयुध सहित१२बडे पेटवाले को. एक के पास का जल१३दोनों को बहुत है. बलवान् १४ चहुवाण पीछा फिरा ॥४४॥ १५हे मामा मुड़कर जहां अपने वीर हैं तहां चला जा१६खड़ा होकर बोला. आज१७जनाने में कलह है सो हे प्रभु अकेले मत जाओ. वहां१८निश्चय ही हरिणों का रहना जानकर १९स्थान का नाम है. वहां पहिले ही बहुत२०खड्डे २१ सूर्यमल ने खुदवा रक्खे थे ॥ ४५ ॥

बिसंतहि अंतर बिपिन भूप १ पूरन २ हय भेजि तबुन्दीशबन्धुदेव
रहि मृग घेरन रान १ तुरग थित रेय उत्तेजिय ॥ नसङ्घसप्रता
तत्थ मिले वे त्रय ३ हि वदत मृगयाहि बिहारन ॥ गाश्वासना
भनिय रैन १ संभर २ हि ए ३ हु अद्भुत धनु धारन ॥
तुम कहहु तो वे रक्खैं त्रिक३हिं कै दुव२कै इक१वा कतिक॥
रावरे भटहु बुल्लहु रमन मृगया धनु कोविद मतिक ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

तब निश्चित छल जानि तिन्ह, आनि द्विगुन उच्छाह ॥
निजन बुलावन व्हीत नृप, वे ३ रक्खिय कहि वाह ॥ ४८ ॥
अरु चिंतिय तुपक न इहाँ, करैं जु पुव्वहि काम ॥
सरन बिद्ध हनिहौं सहज, गर्तन घातक ग्राम ॥ ४९ ॥
नियतिहि जो उट्ठन न दै, सत्थी इक १ तउ साध्य ॥
इम असोक १ निजगर्त नृप २, बैठन लिय बल बाध्य ॥ ५० ॥
सोहु रान प्रत्युत समुझि, कज्ज स्वमत अनुकूल ॥
बैठारे पंच ५ हि बिहसि, मंडि त्रि ३ गर्तन मूल ॥ ५१ ॥

महाराणा और पूर्णमल्ल इन १ दोनों ने सलाह करके वन में २ वेग से दौड़ातेहुए शिकार के लिये ३ विहार करना कह कर ४ राणा रत्नसिंह ने चहुवाण से कहा ५ अब तीनों को रखलेवें, अथवा दो को वा एक को रक्खें. और इतने ही तुमारे वीरों को भी बुला लो जो ६ शिकार खेलने में और धनुष विद्या में ७ चतुर होवें ॥ ४६ ॥ अपने लोगों को बुलाने में ८ लज्जित होकर उनकी प्रशंसा करके तीनों को रखलिये ॥ ४७ ॥ और विचारा कि बन्दूक तो यहां इन के पास है नहीं जो पहिले ही काम कर डालै और बाणों से वेधेंगे तो सहज में मार लूंगा ९ खड्डों में मारनेवालों के १०समूह को ॥ ४८ भाग्य ही जो उठने नहीं देवै तो भी एक को ११ साथी करने के साध्य (मारलेने योग्य) समझ कर राणा के उमराव बीझोलियां के राव १२ अशोक को राजा ने अपनी १३ओदी में बैठने के लिये अपने बल से १४मार लेने योग्य समझ कर लिया ॥ ४९ ॥ १५उलटा समझ कर अपने विचार के अनुकूल १६कार्य करने के लिये. तीन १७खड्डों में मूल लगाकर पांचों को बैठाया ॥५०॥

याथातथ्यसमर्थप्पे उभय २, सोदर मल्ह १ र सूर २ ॥
भर्त्तन ५, तृ २ ढकूतनैय, पूरन १ इक १ अवटू ॥ ५२ ॥
१ शोक्य २ रहे तजि ३ अवट, संमरनृप १२ असोक ॥
रान निजन अभिमत रचन, सूचिय छल सालोक ॥ ५३ ॥
जिन कारो १८८१ यह जानिलै, बध पहिलैं छल वत्त ॥
तिम इंगित मांकूत तकि, रान चलिय छल रत्त ॥ ५४ ॥
रान चलन खिन सेनरचि, जु किय असोक जनाइ ॥
कहियत वह अग्रिम ३५ किरन, जिम नृपतैं सर जाइ ॥ ५५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ पञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवर्णनवेलाव्याहार्यबुन्दीवसुधावासववृन्दनमल्ल १८८१ चरित्रेराणाकृतकप्रीतिसादरसभासमुपवेशितबुन्दीशसमक्षपूर्णमल्लप्रेरितचालुक्यसलह १ प्रामारा ऽशोक २ हड्ड ६१ कुलनृपाचाकित्पकुनर्मकरणं १, प्रत्यक्षश्रुतस्वपलायनव्याख्यातशीशोद १ चालुक्य २ प्रामार ३ वंशत्रया ३ ऽनेकपूर्वपुरुषकातर्यशुश्रुत्सानिष्कोषितनिस्त्रिंशस

एक १ तरफ में तो सलह और सूर दोनों सगे भाइयों को बिठाये और दूजी ओर्की मेरठक्कू के पुत्र २ पाप से पूर्ण पूर्णमल्ल को बिठाया ॥ ५१ ॥ तीसरे ४ तरफ संभरनृ चहुवाण राजा सूर्यमल्ल और अशोक दोनों रहे. राणा ने अपने लोकों को ६ वांछित कार्य करने के लिये छल की ७ दृष्टि से सूचना की ॥ ५२ ॥ इस छल के वध की वार्ता को काला (सूर्यमल्ल) नहीं जानलेवे जिसप्रकार ८ चेष्टा से ९ अपने अभिप्राय को समझा कर. छल में १० प्रीति करनेवाला ॥ ५३ ॥ ११ राजा से जिसप्रकार पाण जावेंगे वह अगले मयूख में कहेंगे ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी की भूमि के इन्द्र सूर्यमल्ल के चरित्र में राणा के कियेहुए प्रीति के आदर से सभा में बैठे हुए बुन्दीश के सन्मुख पूर्णमल्ल की प्रेरणा से सोलंखी सलह और प्रमार अशोक का हाडों के कुल के झूंठ कायरपन की खोटी हंसी करना, प्रत्यक्ष अपना भागना सुनकर शीशोद, सोलंखी और प्रमार तीनों वंश के पुरुषाओं का कायरपन विख्यात करके युद्ध के लिये खड्ग निकाल कर भुज ठोंक कर उठेहुए वत्सोला और

स्फोटनसमुत्थितवत्सोला १ कोटा २ वस्तेबुन्दीशबन्धुदेव
सिंह १ राघवदास २ स्वस्वयोधनसमर्थशीर्षोद्दसाम्नसङ्घसप्रता
रणसमाह्वान २, नृप १ सामन्त २ सहायससाहससाश्वासना
संरुद्धप्रत्युपवेशिततद्बन्धुयुग्मरताराडुर्गाध्यक्षनिम्माउत १२।८ दे
लसिंह १८८।१ बाबर ३० रणराणासहायस्वजनकनृसिंह १८७।१
मरणसूचनापुरस्सरप्रपितामहतोगा १८६।१ ऽमरदुर्गसङ्गरवीरनिद्रा
निदानकस्वकुलकल्पितभीतिपरिहासकप्रतारण ३, तत्कथनानुकृ
तिप्रख्यापितपरकुलकार्तघ्न्यहरपालपौत्र ५।१ हरिसिंह १८८।१ नव
रङ्गपौत्र ८।४ कीर्तिसिंह १८८।२ थिरराजपौत्र ९।२ पृथ्वीसिंह १८८
।१ खजूरिक ७।३ शिवसिंह १९०।१ हड्ड ६।२ चतुष्टय ४ सङ्ग्रामस
हायसूचितसङ्ग्रामस्वस्वसवितृसंस्थानसमर्थनासहेतुकव्यञ्जितवं
शविजयपरिहासकपरपक्षप्रागल्भ्यप्रोत्सारण ४, तदनन्तरप्रतिरण २
राणासहायव्याख्यातबुन्दीशबन्धु १ वीर २ वर्गमरण १ क्षतप्रापण
हड्डा ६।२ धिराजबारहठकविधीरसजातीयबारूवैरविबालयिषुद्वेनल
कुमारसमरसंस्थानसूचनासहितस्वस्वामिकुलोत्कर्ष १ परपक्षापकर्ष २

कोटा के रहनेवाले बुन्दीश के भाई देवसिंह और राघवदास का अपने अपने
युद्ध के समर्थ शीशोद के उमरावों के समूह को ताड़ना सहित बुलाना. राजा
को सामन्तसिंह की सहायता से हठ पूर्वक आश्वासन के साथ रोककर उन
दोनों भाइयों का पीछा बिठाना और तारागढ के अध्यक्ष निम्माउत दलेल
सिंह का बाबर के युद्ध में राणा के सहाय अपने पिता नृसिंह के मरने की
सूचना के साथ दादा तोगा का अमरगढ के युद्ध में मारेजाने के कारण अपने
कुल के झूठ डरने के इतिहास की ताड़ना करना, उस कथा का अनुकरण कर
के शत्रु के कुल की कृतघ्नता प्रसिद्ध करके हरपाल के पोते हरिसिंह, नवरंग
के पोते कीर्तिसिंह, थिरराज के पोते पृथ्वीसिंह, खजूरी के शिवसिंह चारों
हाडों का संग्रामसिंह की सहायता जनाकर युद्ध में अपने अपने पिताओं के
मारेजाने के समर्थन के कारण वंश की विजयता जानकर परिहास करनेवाले
शत्रुओं की प्रगल्भता को उडाना, जिस पीछे प्रत्येक रण में राणा की सहायता
विख्यात करके बुन्दीश के सम्बन्धी वीरवर्ग के मरने और घायल होने की
हड्डाधिराज के बारहठ कवि धीर का अपनी ज्ञातिवाले (चारण) बारू के वैर
लेने की इच्छावाले कुमार चत्रसिंह की युद्ध में मारेजाने की सूचना सहित अपने

याथातथ्यस्समर्थनासम्भावितचालुक्य १प्रामार २प्रभृतिमहोपहासक
भर्त्सन ५, तथापि स्वामि १ सचिव २ प्रेरणाप्रवृद्धप्रागल्भ्यसल्लहा
१ शोका २ हंपूर्विकोपहासैधमानमन्युमहीपमिहिरमल्ल १८८।१ ढक्कू
मारणादिदृष्टान्तदृढीकृतशौर्यपरीक्षणाप्रोत्साहनानन्तरनिश्शलाक-
नीतनिजवीरवर्गस्वान्तशपथ १ शासना २ सहस्वैकाकि १ गमन
स्वीकारणा ६, शीर्पोद्दस्वशिविरजनसावधानसञ्ज्ञासूचनानन्तरसप
रिकरान्वितातपातपत्रायकतापीतटिनीतटावतरणा ७. गम्यप्रदेशप्र
च्छन्नप्रेषित सल्लह १ शूर २ अशोक ३ भटत्रय ३ विहितविधेया
तिनादिनातपासह्यसमयपुनःपुनस्स्वज्ञातिकान्तस्ववीरविजनव्रजनव
र्जनवाक्यरत्न १ रविमल्ल २ पूर्णमल्ल ३ त्रिक ३ मृगमृगयाप्र-
स्थानावसरराणावारणानुकूलबुन्दीशससाहससङ्गीभूतसन्नद्धस्वज
लधारकहुल्लक्षत्रियकुम्प १ प्रतिमोटन ८, याचमूल १ तुलसी २
सीमस्स्वन्दमृगयासालसंक्रमसमयप्रतिप्रेषितविसर्जितवाजिपृथ्वीश

स्वामि के कुल की बडाई और शत्रु के पक्ष की हलकाई की सच्ची समर्थ
ना जनाकर सोलंखी और प्रमार आदि बडी हसी करनेवालों को डराना, तो
भी अपने स्वामि और सचिव (पूर्णमल्ल) की प्रेरणा से बढीहुई प्रगल्भता से
सल्लह और अशोक के गर्व सहित हसने से बढा है क्रोध जिसका ऐसे राजा सूर्य-
मल्ल को ढक्कू के मारने आदि दृष्टान्त को दृढ करके वीरता की परीक्षा के उत्सा
ह करने के पीछे अपने वीरों के समूह को एकांत में रखने के लिये अन्त में
अपने सोगन सहित आज्ञा देकर आप अकेले जाने को स्वीकार करना, शीपो
द का अपने डेरे के मनुष्यों को इशारे से सावधान रहने की सूचना करने के
पीछे परिगह सहित गमन करके धूप की रक्षा के लिये तापी नदी के किनारे
उतरना, जानेवाले प्रदेश में छाने भेजेहुए सल्लह, शूर और अशोक से सलाह कर
के असह्य धूप को जांचकर बारम्बार अनादर करके अपने प्रिय वीरों को मना
करके अकेले चलने के वचन कहनेवाले रत्नसिंह, सूर्यमल्ल और पूर्णमल्ल तीनों
के हरिणों की शिकार गमन करने के समय राणा के मना करने के अनुकूल
बुन्दीश का हठ पूर्वक साथ हुए अपने जल रखनेवाले हल वंश के क्षत्रिय कुम्पा
को पीछा फेरना, याचमूल और तुलसी की सीमा में शिकार खेलने के क्षेत्र में
चलते समय में पूर्णमल्ल के भेजेहुए घोड़ों को भूलकर हरिणों को लाने की

१ पूर्णमल्ल २ मृगानिनीषुतुरगारूढराणा १ सहसञ्चरणसङ्केतित स्थानमृगव्यामिषपूर्वप्रेरितचालुक्य १ प्रामार २ सामन्त ३ त्रय ३ सम्मिलन ९, स्वकृततत्सङ्गीकरणराणाप्रार्थननिश्चिततच्छलघात समिद्धोत्साहसावधानबुन्दीशप्राक्प्रणायितगूढगर्तप्रदेशप्रापण— १०, प्रथमगर्तोपवेशितचालुक्ययुग्म २ द्वितीय २ गर्तासंस्थापितपूर्ण मल्ल १ स्वान्तसंस्थानसङ्गीकृतप्रामारो १ पेतपृथ्वीशभाकर २ तृतीय ३ गर्तोपविशन ११,सम्मताऽशोकसाहित्यस्वाभिमतसाधना नुकूल्य गानयनप्रतिष्ठमानराणास्वकीयसामन्तचतुष्क ४ स्वाभी ष्टसाधनसंज्ञासूचनं १२ पञ्चत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ ३५ ॥

आदितो द्व्यशीत्युत्तरैकशततमः ॥१८२॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

निजभट चउ४ हड्ड१ हहिँ हनन, रक्खि सु कथित त्रि३रोक॥
चलिय रान तँहँ छल चतुर, सूचिय सैंन असोक ॥ १ ॥

पद्धात ॥

इच्छा से राणा का घोड़े पर सवार होकर साथ चलने के संकेत से उस स्थान में शिकार खेलने के मिस से पहिले भेजेहुए सोलंखी और प्रामार तीनों उस राणा से मिलना, उनको साथ रखने की राणा की प्रार्थना को स्वीकार करके उनकी छलघात को निश्चय जानकर युद्ध के उत्साह से सावधान बुन्दीश के पहिले खुदाए हुए छिपे खड्डों के प्रदेश में प्राप्त होना, पहिले खड्डे (ओदी) में दोनों सोलंखियों को और दूसरे खड्डे में पूर्णमल्ल को रखकर अपने प्राण का साथी करके प्रामार सहित राजा सूर्यमल्ल का तीसरे खड्डे में बैठना, अशोक की संमति मिलाकर स्वामि के वाञ्छित साधन के अनुकूल हरिणों को लाने में रुकेहुए राणा का अपने चारों उमरावों से अपने अभीष्ट साधन की इशारे से सूचना करने का पैंतीसवां ३५ मयूख समाप्त हुआ॥३५॥ और आदि से एकसौ बयाली १८२ मयूख हुए ॥

ऊपर १ कहीहुई २ तीनों ओदियों में अपने चारों उमरावों को हाडा के मार ने के अर्थ रखकर छल में चतुर वह राणा वहां से चला उस समय अशोक नामक उमराव ने इशारे से सूचना की ॥ १ ॥

भूखे संजुत भल्ल पिक्खि संभर ढिग पंचक ५ ॥
सूचियं रानहिं सैन नैनै पामार अलंचर्क ॥
चलतबेर चित्तोरस्वामि ७ अक्खिय बुन्दीस २ हिं ॥
देखन निज सर देहु अप्प जे लिय भजि ईसहिं ॥
बुंदीस उट्ठि पंच५हि बिसिख हयथित रिपुहिं दिखात हुव ॥
अरु कढ़िय लंध्य इक१ भल्लयह भूखो भखनैं प्रसिद्ध भुव ॥२॥

दोहा—पंच५हि सर जब पानितैं, बढ़ि खैंचिय लववंसैं ॥
पहु भूखा करपल्लवन, दब्बिय रचि संदंसैं ॥ ३ ॥

मनोहरछंद—देखनके व्याज बुंदीपतिसों कथनकरि,
देखनहीं बेधक सराहि सर तूठेलों ॥
संभरके भयतैं सकल लैंन लागो खैंचि,
भूखो दाबिराख्यो तव भूपहु अलूठेलों ॥
पूरव पितामह गभीरता गहन दखो,
राम २०३।४ छितिपाल न जनाई रीति रूठेलों ॥
मागन जतन रावमल्ल१८८।१तैं रतन रान,
लीनें बान च्यारि४ ए कलव्यक अँगूठेलों ॥ ४ ॥

१भूखा नामक भाला सहित चहुवाण के पास पांच बाण देखकर ४राणा रत्नसिंह को फिर आकर इस पामार ने इशारे से जनाया. अपना बाण देखने को दो. आपने महादेव की सेवा करके लिया है. पांचों बाण घोड़े पर चढ़ेहुए शत्रु को दिखाये. यह एक भाला मिला है जो 'भूखा' इस नाम से खाने में पृथ्वी पर प्रसिद्ध है। हाथ से रामचन्द्र के बड़े पुत्र लव के वंशवाले महाराणा ने खैंचे. राजा ने भूखा नामक बाण को १३हाथ की अंगुलियों की १४संडासी रचकर दबालिया ॥ ३ ॥ १५मिष से १६ठगने १७प्रसन्न होवें जिसप्रकार. चहुवाण के १८हाथ से हे भूपति रामसिंह तुम्हारे पूर्व पितामह की १९गम्भीरता देखो कि अप्रसन्न होवें जिस प्रकार रीति नहीं जनाई २० द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगूठा ले

महाभारत में एक कथा है कि एकलव्य नामक भील ने मृत्तिका के द्रोणाचार्य रचकर उसको गुरु मानकर बाणविद्या सीखी थी सो अर्जुन से बढ़गया इस ईर्षा से अर्जुन ने द्रोणाचार्य को सिखाकर गुरु दक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा कटवा लिया था। इसके लिये ऐसा भी प्रसिद्ध है कि तभी से एकलव्य के वंशके भील बाणविद्या में अंगूठे को काम में नहीं लाते, और दो अंगुलियों से ही तीर चलाते हैं।

किरीटः ॥

लै चउ४बान सराहत रान कह्यो नृप[1] राखहु जो मन ए[2] बैर ॥
त्योंहि लये लखि तून[3] तदीयहुतैं कँर[4]खे गहि पुंख उभै५सर ॥
लेत सु जानि दब्यो पय रान[6] तऊ चहुवान निकासिलये कर॥
रोध[6] फलैं न बली बलअग्ग इँचें[7] हयको चर्र[8]मंग उब्यो पर॥५॥

बदिये जँहँ रान[9]बिनु[10]दानैं लियबानतँहँ चविये[11]चहुवान[12]दुव[12]च्यारि दैकैं
मारि मन रैन यह बैन करि मैन मृगलैन गय औनैं[13] हिय हारि दैकैं
ए[14]रहिय चूक खिनैं[13] हेरि तँहँ टेरि सिस गान फिरि फोरि मृग घेरि लायो
स्यामद्युँ[14]ति देहु हनि एहु चलि गेहु अब नेहु फल लेहु बैंच[15] यों लगायो६

सदनावतारः ॥

सोहि सुनि सूर १८८१[7] मृग पूर दृग दूर दिय,
हेरि तसमाँहिं सुहि आँहि कहु नाँहिं हिय ॥
मान्नि तिहिं रंग निज अंग छल भंग मन,

लिया था इसप्रकार चारों बाण लेलिये ॥ ४ ॥ १ राजा सूर्यमल्ल ने कहा. आप के मन में २ श्रेष्ठ दीखते हैं तो ये बाण रक्खो. उसके ३ भाथे से ४ खींचे ५ राणा ने पैर दबाया अर्थात् घोड़े के रान लगाई तो भी चहुवाण ने हाथ से वे बाण निकाल लिये. बलवान के बल के आगे ६ रोकना फलीभूत नहीं होता ७ खींचने से. घोड़े का ८पीछला अंग ॥ ५ ॥ राणा ने जहां ९कहा कि १० विना दिये ही बाण लेलिये. तहां चहुवाण ने ११ कहा कि चार बाण देकर दो लिये हैं. हृदय रूपी १२घर में पराजय देकर राणा के ये चार उमराव चूक करने के१३समय रहे थे१४काले को मारना और घर चलकर स्नेह का फल लेना. इसप्रकार १५वचन कहे ॥ ६ ॥ वीर सूर्यमल्ल ने यह सुनकर हरिणों के समूह में दूर तक दृष्टि दी परंतु उनमें इस रंग का हरिण नहीं होने के कारण हृदय में अपना काला रंग मानकर छल से मारना समझ कर उस (सूखे नाक) बाण को सन्धान करके उस स्थान में

संधि सुहि बान हुव थान अवधान लन ॥ ७ ॥

प्लवङ्गमः—ईम न तज्यो सर अप्प अजन मृग आतपैं,
रहिय रिपुहु तिम रुक्कि ढुक्किय घन घातपैं ॥
न तजन बान निदान रान इत आइकैं ॥
पुच्छिय छलन प्रकार नृपहिं नियराइकैं ॥ ८ ॥

रुचिरा ॥

भूप भनिय तुम ऐंन असित कहि तीर तजन किम चित्त चहो ॥
रान कहिय मृग होहि असित इक क्यों न हनिय तुम स्वमत कहो॥
बंचिं कुहक नृप नैन अधम इम रैन सचिव कँहँ सैन दई ॥
पूरनमल्ल तवहि सर संहितें ज्यों गु करखि करि कानलई ॥ ९ ॥

महाचर्चरी ॥

रैनें पूरन सैनकैं नृपको स्ववैन भुलात भो इम ॥
अप्पहू उत कानदें तस बान तान रैं सुन्यों तिम ॥
आँख रानहि टारि सो सुनि मोरि पूरन ओर आनत ॥
छुट्टि पूरनें बान गो चहुवानके हिय प्रान छानत ॥ १० ॥

चञ्चला-भेदि हीं चुहान १ को चुहान२ को लगंत मल्ल ॥

१सावधान होगया।७।२इस कारण ३चलते हुए मृगों के ४समूह पर. विशेष घात कर ने पर ५लगे. बाण नहीं छोडने के ६कारण राणा ने इधर आकर. राजा के ७समीप लेकर॥८॥राजा ने कहा कि तुम काले ८हरिण पर तीर छोडना कहकर मन से क्या चाहते हो ९अपना विचार कहो उस जालसाज रत्नसिंहने राजा के नेत्र १०बचाकर सचिव पूर्णमल्ल को इशारा दिया. बाण को ११संधित (सन्धान)करके उस १२ प्रत्यंचा को खींचकर कान तक ली ।९। १३रत्नसिंह ने पूर्णमल्ल को सैन करके अपने वचनों से राजा सूर्यमल्ल को इसप्रकार भुलाया. आप (सूर्यमल्ल) ने उधर कान देकर उस बाण खैंचने के शब्द को १४ धीरे से सुना, उसको सुनकर राणा को छोडकर नेत्रों को मोड़कर १५ पूर्णमल्ल की ओर लाते ही चहुवाण के हृदय और प्राण को जुदा करता हुआ १६ पूर्णमल्ल का बाण छूटा ॥१०॥ कोठारिया के राव पूर्णमल्ल चहुवाण का तीर लगते ही बूंदी के रावराजा सूर्यमल्ल चहुवाण का १७ हृदय भेदन होकर

मर्म छिन्न होत ठहे *अगुढ †मूढ ‡मित्रमल्ल१८८।१,
चोटके समान पिठ्ठि ओटकी दई चपेट ॥
धीर वीर छिन्न सो अशोक किन्न कालभेट ॥ ११ ॥

दोहा चञ्चरीक२ द्विर अर्णा १ लघुत्वे ॥
अमृतध्वनिकुण्डलिका २ संयुक्तपूर्वगुरुत्वे ॥

टिकिय छिंकय हिय तोहु §टुक मोहहिँ रोकि महीस ॥
प्रामार न बाहैं प्रथम इम हुव¶डसन अहीस[1] ॥
हीसे[2] स्तवन[3] गिरीस स्मृति[4] रु सरीस प्रभुहुव ॥
तीर प्रहत सरीर स्वक[6] बल वीर प्रतिभुव[7] ॥
टेक स्थित उरफेट स्फुरित चपेट द्रुत दिय ॥
रोक स्थल[9] पेल ओकैं[10] स्फुटन[11] असोक स्फुटिकिय[12] ॥ १२ ॥

॥ रोला ॥

भूप १ रान २ इम भनत दिठ्ठि टरतहि पूरन द्रुत ॥
सांधिय सर जो सोहि नृपति हिय वेधि तजिय नुत[13] ॥
पैंकर[14] कडत हनि पिठ्ठि ग्रैवट[15] तट सम असोकैं[16] किय ॥
कढि पुनि सिर धनुँकोटि[17] छिकत हिय महिप मोहँ[18] लिय ।१३।

अर्थ कटते ही *प्रगट ही †सूर्यमल्ल ‡मूर्च्छित होगया सो चोट लगाने के समान पीठ को चपेट देकर उस वीर ने अशोक को दबालिया और काल के भेट कर दिया अर्थात् मारडाला ॥११॥ हृदय छिकगया तो भी वह राजा §क्षणमात्र टिककर मूर्च्छा को रोककर प्रामार पहिले प्रहार न करै इसप्रकार ¶डसने (खाने) को १ सर्पराज के समान हुआ २ हृदय के साथ महादेव की ३ स्तुति और ४ स्मरण करके वह प्रभु ५ आवेश युक्त हुआ. वह वीर तीर से हतहुए शरीर को और ६ अपने बल को ७ जामिन (जमानत देनेवाला) करके हठ में स्थित होकर छाती को फेट देकर ८ स्फुरणा के साथ, वा शीघ्र उद्धत चपेट देकर ओदी के स्थल में ९ जलभर में उस ११ खोदेहुए १० घर में उस अशोक नामक प्रामार को १२ फूटीहुई ककड़ी के समान कर दिया ॥ १२॥ १३ स्तुतियोग्य १४ तीर १५ गले के किनारे पर १६ राव अशोक को अपने समान कर दिया १७ धनुष की कोटि से मस्तक लगाकर राजा (सूर्यमल्ल) १८ मूर्च्छित होगया।१३।

॥ हरिगीतम् ॥

लखि झुकत भूपहिं सिंहफल गिनि रान१पूरन २ सौं कह्यो ॥
दिय तोहु बुंदिय सोहु सुनि चल भीरु ह्हाँ बचिबो चह्यो ॥
न उठ्यो तहाँ गहि बाहु चालुक द्वै २ उठे क्रम नीरज्यौं ॥
मुरि बैन बुंदिय दैन सुनि त्रिक ३ हड्ड बेधिय तीर ज्यौं ॥ १४ ॥

अमृतध्वनिकुण्डलिका१संयुक्तपूर्वगुरुत्वे ॥
कलोनदोहा १ चञ्चरीक २ द्वि २ भृंगी२तदभावे ॥

प्रतिभट लखि भान प्रगुर्न, हान ध्रुव असु हल्ल ॥
व्यान प्रेम पुनि बाहुरयो, मान क्रम रविमल्ल १८८॥१ ॥
मान क्रम रविमल्ल प्रतिमं रु कान श्रमथित ॥
प्रानव्यय सुवदान श्रवन निदान प्रकुपित ॥
कान प्रमिति समान क्रमन बितान ज्यं बिकट ॥
बान अखर कमान च्युत किय रान प्रतिभट ॥ १५ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

सल्ह १ सूर २ दोउ २ न उठाइ गहि बाहु दुव २ ,

उन्हें १चलायमान कायर ने. पानी के २समान लगये [नीची भूमि में पानी को जिधर लेजावे उधर ही जाता है इस क्रम से दोनों सोलंखी उसको उठाकर महाराणा की ओर ले चले, यहां व्यंग्य से महाराणा को नीची भूमि बतानें के कारण जल के क्रम की उपमा दी है] बुन्दी देने का वचन सुनकर पीछा मुड़कर हाडा ने उन तीनों को तीर से वेधे ॥ १४ ॥ ३ शत्रु को देखकर ४ प्रकर्ष गुणवाले ज्ञान सहित निश्चय ही ६ प्राण की ५ हानि होते समय ८ परम [उत्कृष्ट] रीति से ७ सब शरीर में रहनेवाले वायु के पीछे फिरेहु ९ क्रम को मानकर (प्राणजाते समय व्यान वायु के पीछे पलटने से मनुष्य मात्र को चेत होजाता है जिसको लौकिक में 'मृतसमांला' कहते हैं. सूर्यमल्ल ने १० सूर्य के १० प्रमाण और उसी क्रम के सदृश श्रम के साथ कमान की प्रत्यंचा को. श्वास की ११ काण [कमी] के श्रम में भी स्थित होकरके १२ प्राण के जाते समय १३ अपनी भूमि का देना सुनने के १४ कारण कोपित होकर कान १५ पर्यंत विकट १७ प्रत्यंचा को. मान सहित १६ विशेष खेंचने के क्रम से कमान करके १८ तीक्ष्ण बाण से राणा के २० वीरों को १९ गिराये ॥ १५ ॥

ढक्कूसुत ३ रोकतैं निकास्यों मुजरेकेकाज ॥
तीन ३ हिं बरब्बर मिलान महिपाल देखि,
भूखोभल्ल टार्यो सो प्रहार्यो चहुवानराज ॥
फूटि परे तीन ३ अघलीन वे उलटि ऐसैं,
जलहीन दीन तलफत मीन पांज ॥
देखत इन्हैं ३ यों रविमल्ल १६८।१ हिं जियत जानि,
रान भजिजान व्हाँ बिचार्यो मन लाईलाज ॥ १६ ॥

॥　　॥

पूरन अंतके आवत स्वास यों रानकौं बैनके बान प्रहार्यो ॥
कारो कैं बंड हनाइ हमैं भजिकैं तुम जीवन वार्ढ विचार्यो ॥
हड्ड६१वलों तजिहैं न तुम्हैं जिहिं इक्क१हिं अत्र चतुष्टय४पार्यो।
भान न प्रानन लोभ भजो तऊ रान न याहि तजो बिनुमार्यो१७

॥ चूडालादोहा ॥

सुनि मुरि हंकिय हड्ड ६१ सिर, रान रतन कर कढ्ढि कृंपानहिं ॥
भूप बिहसि लखि तिहिं भनिय, जाहु अबहि तजि नास निदानहिं१८

॥ हीरकम् ॥

रानहु तदपि सु रुक्यो न प्रोथिकैं पुनि प्रेर्यो ॥
जब लिय नृप बान जुग २ सु इतउत हसि हेर्यो ॥
पिठ्ठि परत दिठ्ठि सरंत निठ्ठि डरत संगभो ॥

१ओदी से. राजा सूर्यमल्ल ने. तीनों बराबर२मिलेहुए देखकर. पानी के बाहर ३पाल पर ४ उपाय रहित ॥ १६ ॥ ५ पूर्णमल्ल को ६ वचन के बाण से ७यह लोकोक्ति है कि काले सर्प को बांडा [पूंछकाट] कर छोडने से वह अवश्य डसता है इसप्रकार इस काले को बांडा करके हम को मरवाकर तुमने ८ अधिक जीना विचारा है. विना ९ ज्ञान से प्राणों का लोभ करते हो तो भी हे राणा इसको मारे विना मत छोडो ॥ १७ ॥ १० खड्ग निकाल कर ११राजा सूर्यमल्ल ने. नाश का १२कारण छोडकर जाओ ॥ १८ ॥ १३ तोभी १४ घोड़ों को बढाया. दृष्टि १५चलकर पीछे को पड़ते ही अर्थात् पीछे देखैते ही डरताहुआ कठिनाई के साथ हुआ था

*सहसर १ तह वह असोक २ भासिय जिय भंगमो ॥ १९ ॥

निश्शाणिका—पुनि हनि इक३हु वान पहुं निज पास न जान्यों ॥
निपरावत गनहिं निरखि वंध छद्म वखान्यों ॥
वलि अक्खी अवहू वचे करतव्य हु किन्नों ॥
जाहु जाहु कपटी जियत हठ मैं असु दिन्नों ॥ २० ॥

महापद्धतिः ॥

सुनि यह हु रान गिनि जियत सूर१८८।९, प्रेरि सु हय उप्पर कुपित पूर
भूपतिके मस्तक अग्रभाग, मारिय कृपान कछु झुकि कुमार्ग ॥
अलिकास्थि उलटि कटि दृगनं आत, पच्छो जमाइ तिहिं पेच पात॥
आवत गर्तातटं अहित अंध, बुंदीस गहिय हय जेरबंध ॥ २१ ॥

चामरः—आत पाँनि जेरबंध रानअश्व ओझक्यो ॥
तास जोर उठि ताहि सत्थ लैंन त्यों तक्यो ॥
वस्त्र जो कटीतटी सु खैंचि बाहुकैं बढ्यो ॥
चाहुवान१ गर्तमैं उतारि रान१ पैं चढ्यो ॥ २२ ॥

नाराचः पञ्चचामर इत्येके॥

कटार टेकि वीर कंठ१ चीर नाभि२ लों करी ॥
इतेक बीच नीरपान वानि रान उच्चरी ॥
कटार कोर्नं तास सोर्नं तृप्त होन लै कही ॥
यहैंहि वारि और क्यों चहै डस्यो वें मैं अहीं ॥ २३ ॥

वह राव अशोक * बाण सहित भंग हुआ दीखा अर्थात् सूर्यमल्ल के पास दूसरा बाण था वह पीठ के वल लगने से अशोक के साथ टूटगया ॥ १९ ॥ १ राजा ने २ समीप आनेहुए ३ छल से मारेहुए ने कहा. मैंने ४ प्राण दान दिया ॥ २० ॥ ५ कुरीति से ६ ललाट की हड्डी फटकर ७ नेत्रों पर आते ही ८पगड़ी के पेच लगाकर ९ओंदी के किनारे ॥ २१ ॥ १० हाथ में जेरबंद आते ही राणा का घोड़ा ११ चमका १२ कमरबंधा खींच कर १३ खड्डे में गिराकर ॥ २२ ॥ राणा ने १४ पानी पीने का वचन कहा. कटारी की १५ नोक से उसीका १६ रक्त लेकर. यहां १७पानी है१८अब मुझ १९ सर्प के डसेहुए को दूसरा पानी क्यों ॥ २३ ॥

चर्चरी ॥

नीर पीवन१ दूर *अंगन२में हु †चित्र निहारिये ॥
बाल्य जो दिय दासि पै तस गंध हेतु विचारिये ॥
तास ‡असहि आकिख यों रु कटार३तैं सुख तासदै ॥
०है रह्यो चढि छत्तिपैं जम भैरवादिन हासदै ॥ २४ ॥

हरिपदम् ॥

कछु चेतन जुत भूप१ रान२को, लोहितै मुच्छन लाइ ॥
तस धरपरहि रह्यो झुकि जो तब, रिपुसिर१ सिर२हिं लगाइ।२५।

मोहिनीबरवंतीत्येके ॥

शुद्ध कनकमय संृखल, प्रभु जुग पाय ॥
नायक पैंवि विच निर्मल, सरुचि सहाय ॥ २६ ॥

राजसवतिका ॥

पूरन बान छिकत हिय जब पहु मारि चपेट असोकहिं मारि ॥
अवयव फुटित मोहँ भजि अप्पहु टिकिय अवटतट बोध बिसारि ॥
देखत कछु अनुचर हुगि दूरहि भजि तिन भनिय हनिय निज भूप ॥
पुनि त्रिक३मारि रान४तल पारत अनुचर तसहुं भजे अनुरूप ।२७।

सौराष्ट्री दोहा ॥

अनुचर तिनमें एक१, रान कृपापात्र जु रहैं ॥
बलि जिहिं हीनविवेक, च्युतअसु गिनि भूखन चहैं ॥२८ ॥

आर्या गाथा वा ॥

तिहिं आइ अवट अंतर शृंखल कहुनें छुयो चरन प्रसरयो ।

पानी पीना तो दूर है परन्तु इस *आंगनमें भी †आश्चर्य देखा. मुझको बालपन में दासी ने दूध पिलाया था सो वह उसके दूधका कारण विचारना चाहिये. उसका ‡रक्त।२४।१ मूर्छा ॥२५॥ सुवर्णके २ सांकल ३ हीरा ४ कान्ति।२६।५ पूर्णमल्लके बाण से ६ मूर्छित होकर ७ आंटी के किनारे ८ अचेत होकर ९ उस राणा का सेवक भी।२७। १० भूखें ११ मरा हुआ जानकर ।२८।१२ खड्डे के भीतर आकर १३ सांकल निकालने को

स्वांत भनिय तब संभर[2], तिक[3]में इक[1] वचि छुवत तनुकों।२९।

गीतिः ॥

ऊँधेहि रान उप्पर, मरनदसा ज्यों चरन निज समेट्यो ॥
तँहँ वढि छुवत कृपनतँर[4], वच्छहि[5] लत्तां[6] प्रहार करि वेध्यो । ३० ।

आर्यागीतिः

पादाग्रँ[7] उर पइठो, अंगुठ[2]कढ्यो सु तोरि[8] बँस उतैं यों ॥
दुर्जन पर जिम दिठो, रन टुहुर[9] पाय घत्ति संभर नामी ॥ ३१ ॥

उद्गीतिः ॥

अद्ध घरी वितयैं इम, रानपरहिं प्रान छोरि रह्यो ॥
जावत इक १ घटिका जिम, सह नृप[1]सत्त[7]हि डरेरहे सूँनैं[10] ।३२।

२ चहुवाण ने [1]मन में कहा. मरेहुए तीनों उमरावों में से ३ शरीर को स्पर्श करता है ॥ २९ ॥ ४ अत्यन्त कृपण ५ हृदय को ६लात के प्रहार से ॥ ३० ॥ ७ पैर का अंगूठा छाती में घुसगया ८ पीठ की हड्डी को तोड़ कर ९ युद्ध के विजय का लंगर पहन कर १० *मरे

*सूर्यमल्ल के मारेजाने में जो कारण बुन्दीवाले बताते हैं वही कारण उदयपुरवाले महाराणा अरिसिंह के मारेजाने में बताते हैं जिसका वृत्तान्त तो इस ग्रन्थ के अष्टमराशि के अजितसिंह चरित्र की टीकामें लिख जावेगा, परन्तु व्यभिचार के दोष से राव सूर्यमल्ल और महाराणा अरिसिंह के छलघात से मारेजाने में हम उक्त दोनों राज्यवालों के कथन मिथ्या और अनुचित समझते हैं क्योंकि बडे राजाओं पर बराबर वालों की स्त्रियों से व्यभिचार करने [महाराणियों पर व्यभिचारणी होने] का दोष लगाना ग्रामीणलोकों का कार्य है बीकानेर का नैणसी महता इस समय से दो सौ वर्ष पहले अपनी किताब में लिखता है कि महाराणा सांगा ने रणतभँवर का गढ अपने पुत्र विक्रमादीत को दे दिया था जो रत्नसिंह रखना नहिं चाहते थे और राव सूर्यमल्ल अपने भानजे विक्रमादीत की पक्ष पर थे इसकारण से सूर्यमल्ल को छलघात से मारा जिसमें राणा रत्नसिंह भी मारे गये यही बात मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में कविराज श्यामलदास ने लिखी है जिसीको हम सत्य मानते हैं ॥

इस कथा में जहां तहां जनाने के भीतर स्त्री पुरुष में हुई गुप्त वार्ता और ओदी में सूर्यमल्ल के मारेजाने में जो प्रश्नोत्तर लिखे हैं वहां परमेश्वर के अतिरिक्त कोई देखने और सुननेवाला नहीं था फिर ऐसी गुप्त वार्ता को जानने में देवता भी समर्थ नहीं हैं सो मनुष्य की तो क्या चलाई इसमें हम सूर्यमल्ल के सत्यवक्तापन में दोष नहीं लगाते परंतु बुन्दी की ख्यात जो ग्रन्थकर्ता को मिली वह कपोल कल्पित जान पड़ती है, जिसका प्रमाण स्वयं ग्रन्थकर्ता के इस लेख से स्पष्ट होता है कि सूर्यमल्ल आदि एक घड़ी तक मरेहुए सूने पड़े रहे, तो फिर वहां की बातें कैसे जानीजासकती हैं ॥

॥ उपगीतिः ॥

एका कि[1] १८८।१ मरनवारी, पहुँची इत सुद्धि[2] जब पहली १ ॥
सन्नि जरन मामारी १८४।४, उठी सु सस्सू[3] खिजि[4] अहोरी ॥ ३३ ॥

॥ वैतालीयम् ॥

रछोरि कह्यो वहू रहो, न कुरंजपूत[5] सु संगहोनको ॥
इहिँ पय[6]मैं सिंहनी अहो, पालिय ताहि लजाइ जो परयो ॥३४॥

॥ औपच्छन्दसिकम् ॥

दीसत रहिगो जु दुद्ध दासी, पायो तासहि अंस पोततामैं ॥
कहि इम निज दुग्धकी निकासी, धारा कुड्डिम[9] ग्रांव[10]मैं गडीजो ३५

॥ आपातलिका ॥

पँहु[11] मातुल[12] कुंप कह्यो जो, पहिलैं उत पहुँच्यो नृपपैं सो ॥
रिसवस गिनि दूर रह्यो जो, लखि अरिपैं बिरुदावन लग्गो ३६

॥ सामत्राकम् ॥

जब बुंदीस अँनसु[13] हठ जान्यौं, तब डिगजाइ रुदन घन तान्यौं ॥
स्वप्रभु अरिउरपरहि सुहायो, इम[14] धुरमाँ तिहिं छबिहिं उढायो ३७

॥ विश्लोकः ॥

इहिँ अंतर परजन[15] कति आये, रानहि गहि भजिबे बतराये ॥
हुल्ल[16] कहिय यह छनि खिन हैही, इतके सबैहु इहाँ लखि लैही ३८

॥ वानवासिका ॥

रुकत न तदपि सु गहि अँसि[17] रुठ्ठो, वँपु[18] तिलातिल करि प्रहरन[19] बुठ्ठो॥

हुए पड़ेरहे; अथवा बिना संभाले हुए पड़े रहे ॥ ३२ ॥ सूर्यमल्ल के १ अकेला मरने की २ खबर ३ सासू ने क्रोध करके ४ रोकी ॥ ३३ ॥ ५ कुरजपूत नहीं है इस ६ दूध से ॥ ३४ ॥ ८ बालपन में दासी ने ७ दूध पिलाया था उसका अंश रहगया दीखता है, यह कहकर दूध की धार निकाली सो ९ दीवार के १० पत्थर में घुसगई ॥ ३५ ॥ ११ राजा सूर्यमल्ल का १२ मामा ॥ ३६ ॥ निश्चय ही १३ मराहुआ जाना १४ इसकारण दुशाला ओढादिया ॥ ३७ ॥ १५ शत्रु लोग कूंपा नामक १६ हूल जाति के क्षत्री ने कहा ॥ ३८ ॥ १७ तलवार लेकर क्रोधित हुआ १८ शरीर १९ शस्त्रों की वर्षा करी

रन कुंप परत उठाइ रानी, खलजन बहु भजिगये खिसानी ।३९।

॥ चित्रा ॥

सिबिर१जनहुइतभजतबिदुनिकैं,लुटि२गेयकतिकतिखललियलुनिकैं
रान तियहु जँहँ जरन बिचार्‌यो, नगर जनन तस बिघन निचार्‌यो॥

॥ सामान्योपचित्रा ॥

अकिलय निज सस्सू १ हिं कहूर्यों, जेठी भगिनी इष्ट बनैं ज्यों ॥
जिम पुरजन ढिग तास न जावैं, रक्खि इम रु उच्छाह रचावैं ॥

॥ विशेषोपचित्रा ॥

जतन किमउ रक्खोहिहु जैसैं, निजमत नास कुन्यों तँहँ तैसैं ॥
लव सुति सुकि चढे जव आई, बंटिय बहु रक्खोरि बधाई ॥४२॥

॥ सामान्यकुलकम् ॥

लह खट ६ रिपु सुत १ मरत सुनतही,
अन्य निजहिँ गिनि सीस धुनतही ॥
तनरंबधून चविय खेतू १८७।३ तब ॥
इन्हहु संग जु होहु भली अब ॥ ४३ ॥

॥ विशेषपादाकुलकम् ॥

पै हन लखहिँ जरहु हाँ पुत्री, तुम पिय१छ६चारि हनैं अतँनुत्री॥
कम इन पुनि शृंगारहु कीजै, दइतँ१८ निजथहित यह सव दीजे४४

॥ त्रिभङ्गी ॥

सस्सू वच यों सुनि प्रासादहि पुनि दारुँ चिता चुनि कूटँ करी ॥
चंद्रावति१८८।३टारिय यह सुतवारिय जँहँ पहुँ प्यारिय त्रयऊहि जरी॥
जँहँ जग जस तारन प्रचुरँ प्रकारन वहुद्विज वारन दान दयो ॥

१ डेरा के लोक. कितने ही २भागगये कितनों ही को ३ काट डाले ।४०।४१। जब लव के मरने की ४ खबर आईलव ।४२। ५ पुत्र की स्त्रियों से कहा ।४३। ६ चिना कचवाले ने७पति के और अपने लिये यह सब है सो दान करो ॥४४॥ ८महलों में ही९काठ की चिता का१०समूह करके११राजा की प्यारी तीनों स्त्रियें सती हुई१२बहुत प्रकार से १३हाथी

तिनहीं*तदनंतर।अम्ब१८८१ ↑प्रसू§वर पुत्र बिरह परलोक लयो

॥ तोमरः ॥

कलि तापिका नदि कूलं, सुनि सो इतैं हिय सूल ॥
रन रानके बहु बीर, भिरि ह्वाँ रहे पति भीर ॥ ४६ ॥

॥ हनुमत्फालः ॥

सामंत१८७१कीरतिसीह१८८१।२,इमहरि१८८१।३दलेल१८८।१।४अबीह
इन चउ४न लहि घन घाय, किय मृतक बहु अरि काय ॥४७॥

॥ उक्कुरः ॥

हुव२तँहँदेव१८८।१।१राघवदास१८७।१।२, निजबलरानभटकरिनास
तिल तिल अंग धारन तुट्टि, लिय दिव जाइ सुरं सुख लुट्टि ।४८।

॥ वेतालः ॥

इन्ह२ आदि बारह १२ बीर बुंदियके रहे रनरंग ॥
इक १ देव १८८।१ बीर जयंतिका किय ह्वाँ असस्तक अंग ॥
दिल्लीस ३० के रन दग्ग लग्गिय सो असेस उडाइ ॥
रन देव १ राघव २ यौं रहे खल केक खग्गन खाइ ॥ ४९ ॥

॥ कलहंसः ॥

भट रानके इकबीस २१ प्रान बिनाँ भये ॥
पहु १८८।१ रान १ संजुत पंच ह्वाँ पहिलैं हँये ॥
जुग २ सेनके नृप नास जानतरी जुरे ॥
मृत तत्थ सत्रह १७ रानके भजतैं मुरे ॥ ५० ॥

॥ कलापिनी ॥

सामंत १८७।२ आदि चतुष्क संजुत बीस २०जे ॥

---

*जिस पीछे।सूर्यमल्ल की।माता ने§ज्येष्ठ पुत्र के विरह से परलोक लिया ॥४५॥१शुद्ध. तापी नदी के२पार ॥४६॥४७॥३स्वर्ग में४देवताओं का सुख लूटा 'देवता शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लोक रूढी से पुल्लिंग लिखा है, ॥४८॥ ५विजय. दिल्ली के बादशाह बाबर के युद्ध में भागजाने का ६दाग लगा था सो सब उड़ाया ॥ ४९ ॥ ७ मारो ॥ ५० ॥ ५१ ॥

वपु घाय पाइ वचे वली विजई वजे ॥
गत प्रान नृप जँहँ सुभट छुंडियके गये ॥
भल रीति दाहन अपको करते भये ॥ ५१ ॥
सजे १ वजे २ अन्त्यानुप्रासः ॥

झम्पातालः ॥

इक १ दास चउ ४ भट जे अरी, तिनकोहु दहनाक्रिया करी ॥
सह कुंप१तेरह१३सत्थ के, अरिदहिय सलह१७अत्थके ॥ ५२ ॥

सम्प्लुता ॥

रनभू छुराइ रु रान१ कौं, कति लै भजे गतप्रानकौं ॥
जिन्ह चम्मलौ तट जातही, चुनि कट्ठ दाहनकी चही ॥ ५३ ॥

किरीटिनी ॥

परँ२ तीर राघव १८७११ की प्रजा तिनकी तुपक्कन ॥
जँहँ दाहतेहु दये भजाइ धुजाइ धक्कन ॥
जिन भज्जि चम्मलि १ नानते २ बिच रान जारिय ॥
हठि चित्रकूट गये सबै इम धर्म हारिय ॥ ५४ ॥

कर्पूरः ॥

इत हुव गनेस आराम अव, जँहँ सु रान रानिय जरिय ॥
समर प्रसूँहि उपहार सब, क्रमसह तँहँ प्रेपित करिय ॥ ५५ ॥

कुंकुमः ॥

पहिलैं कहीहु नृपकी प्रिया त्रय३ हि जरी महलन तिम ॥
जिन्ह लखि मरी सु नृपकी जननि, गोखतँहि गिरि वह इम। ५६ ।

चतुष्पदी ॥

चिति पँर तिन्ह चौरौं१प्रासादहि, प्रभु राम२०३१४वन्यौं इम राजैं॥

---

१ साथ के २ यहां मरेहुओं को जलाए ॥ ५२ ॥ ३ चामल नदी के किनारे पर ४ काठ चुनकर ॥ ५३ ॥ ५ परले किनारे ॥ ५४ ॥ जहां अब गणेश ६ बाग हुआ है तहां राणा की राणी जली. चहुवाण की ७ माता ने ८ सामग्री ९ भेजी ॥५५॥ ॥ ५६ ॥ उनकी १० चिता पर महलों में ही ११ मंदिर बना

जिहिँ पत्थर२पय पटक्यो नृपजननी छबि तँहँ तासहु छाजैं ॥
अवसर३पर अर्चन अबहु प्रथित पन हड्ड६१न इन तिन व्हैंही ॥
जब ऊढजनी१जन२निवासतँ निलयन दुहुँ२न नमत तवहै२ही५७

उपदोहा ॥

सवन नृप सु रविमल्ल१८८।१सुत, किय सुरतान१८९।१जु कुमति॥
जान्यों सिसुपन जाँहिं जब, सल्लहिं कुल क्रम सुमति ॥ ५८ ॥

वसन्ततिलकम् ॥

सो चित्रकूट सुनि अर्जुन१८८।१अंगनाहू ॥
श्रीसुर्जना१८९।१दि सुत सप्तक७ लै रु साहू ॥
छन्नैंहि निष्कासि सबै तिहिं सोक छाई ॥
बुंदीहि आवत भई वह भू बिहाई ॥ ५९ ॥

इन्द्रवज्रा ॥

पाई नहीपट्टनि१ही लही जो, मार्तुंद२तें पुब्ब पटा५००००मही जो ॥
सोही मिली तोहु इहाँ सुहायो, पृथ्वीसतैसो सुरतान१८९।१पायो ६०

उपेन्द्रवज्रा ॥

बिमात बंधू उत रानवारो, नरेस भो बिक्रम नीतिन्यारो ॥
बनैं न जासों महिपत्व बत्तैं, घनों नसों देह प्रमाद घत्तैं ॥ ६१ ॥

उपजातिः ॥

भानेज जो अर्जुन१८८।१को अभागी, रहै सदामत्त अफीमैं रागी॥
सु रान व्है ऊँघनकों सराहैं, चित्तोरको राज्य न जाहि चाहैं ॥६२॥

जिस पत्थर पर राजा की माता ने १ दूध डाला था उसकी शोभा भी वहीं पर है, जिसका अब भी२समय पर३पूजन होता है४प्रसिद्धपन से हाडाओं का ५राजा होता(गद्दी बैठता) है तब पूजन करता है६विवाहिता बींदणी और बींद ७निवास करने को८घर में आते हैं तब दोनों नमस्कार करते हैं॥५७-५८॥अर्जुन ९की १०साधु [श्रेष्ठ]. छानें ११ निकल कर ॥ ५९॥६०॥ १२ दूसरी माता से उ-त्पन्न हुआ भाई विक्रमादित्य१३अनीतिवाला हुआ १४ राजापन की बातें जि-ससे नहीं होतीं और शरीर में१५अमल आदि का नशा और १६ आलस्य; अ-थवा उन्मत्तपन बहुत रखता था ॥ ६१॥१७ अमल में प्रीति करनेवाला ॥ ६२ ॥

मञ्जुभाषिणी ॥

जिहिँकाल नृप रविमल्ल१८८।१ जन्मभो,
गुन तर्क पंद्रह१५६३ प्रमान साक भो ॥
श्रुति नाग भूत ससि १५८४ भूपता भई ॥
गज अष्ट बान महि १५८८ पैं तनूं गई ॥ ६३ ॥

कोकिरवम् ॥

वय अब्द चोवीस२४भयो जवैही, सुरतान१८९।१ वैअष्ट८समौंसवैही ॥
गद रान क्ऱों सो अरि पंच५सत्थी, हनि यौं पऱ्यो हड्डमइंदै हत्थी ॥६४॥

सुदन्तम् ॥

इत नेर आमेर कुलोभ अग्रनी, भगवंतसिंहाभिध आँहि भूधनी ॥
सुरेशसेवीसुत भारमल्लको, भगिनी१सुता२आदिनईप्सुभल्लको ६५

द्वितीय २ रुचिरा ॥

धरैं यहैं कथितपुरी अधीसता, कुलोभमैं मनहिं लगाइ कीसता ॥
अजोग्यहू वडन उपाय आदरैं, कहैंहिगे अवसर जो यहैं करैं ॥६६॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवर्णनवेलाव्याहार्यबुन्दीवसुधावासवव्रध्नमल्ल१८८।१ चरित्रे राणाकर्तृकसूर्यमल्ल १८८।१ प्रमापणप्रयोजनकराणाय-

१ देहान्त हुआ ॥ ६३ ॥ सुरताणसिंह की अवस्था आठ २ वर्ष की थी शत्रु रूपी पांच हाथियों को मारकर ३ सिंह रूपी हाडा गिरा ॥ ६४ ॥ भगवन्तसिंह नामक ४ भूपति ४ हुआ ६ बादशाह की सेवा करनेवाला. बहिन और पुत्रियों आदि की भलाई नहीं ७ चाहनेवाला अर्थात् यवनों को बहिन बेटियें व्याहने वाला ॥ ६५ ॥ ८ कही हुई [आमेर] पुरी का अधीशपन. खोटे लोभ में मन करके ९ बन्दरपन लगाकर अथवा मन से नागाई (निर्लज्जता) करके जो यह करता है सो समय पर कहेंगे ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में बुन्दी के भूपति

वीरचतुष्टयगतस्थापनपूर्वकहरिणाकालनार्थगमनारंभः सूर्यमल्लीय १८८।१ पञ्चबाणेभ्यो राणस्य छलेन बाणद्वय २ लाभः, राणाकर्तृकवारद्वयहरिणानयनेपि कृष्णहरिणाभावात्सूर्यमल्लस्य १८८।१ बाणामोचनम्, राणेंगितप्रेरितपूर्णमल्लबाणेन सूर्यमल्ल १८८।१ वक्षोभेदनम्, सूर्यमल्ल १८८।१ कर्तृकक्टारीमजिहीर्षुपृष्ठस्थराणीय भटाऽशोकप्रमारप्रमापणम्, मूर्च्छितोत्थितसूर्यमल्ल १८८।१ कर्तृकएकबाणेनसल्हसूरेत्याख्यचालुक्यद्वय २ मारणपूर्वकपूर्णमल्ल मूर्छनम्, पूर्णमल्लप्रेरणाद्राणेनमूर्छितसूर्यमल्लखड्गप्रहारः, मूर्च्छितोत्थितसूर्यमल्लकर्तृनिपातनपूर्वकंसानुचरराणाप्रमापणम्, सूर्यमल्ल १८८।१ राणामरणश्रवणात्तद्राज्ञीनां सूर्यमल्ल १८८।१ मातुश्च मरणम्, सूर्यमल्लराणादाहश्चेत्याख्यानयुक्तःषट्त्रिंशो ३६ मयूखः ॥ ३६ ॥

आदितः त्र्यशीत्युत्तरैकशततमः ॥ १८३ ॥

सूर्यमल्ल के चरित्र में राणा को मारनेवाले सूर्यमल्ल को मारने के प्रयोजन से राणा के चार वीरों को ओदियों में बिठाने आदि हरिणों को निकालने के लिये राणा के जाने का आरंभ करना १ सूर्यमल्ल के पांच बाणों में से राणा को छलकर दो बाण लेना २ राणा को मारनेवाले सूर्यमल्ल का दो बार हरिणों के लाने पर भी काले हरिण के नहीं होने के कारण बाण नहीं छोडना ३ राणा के इशारे से पूर्णमल्ल के बाण से सूर्यमल्ल का हृदय भेदन होना ४ सूर्यमल्ल को कटारी से मारने की इच्छावाले पीछे बैठेहुए राणा के उमराव अशोक प्रमार को मारना ५ मूर्छा से उठकर कंटेहुए सूर्यमल्ल का एक बाण से सल्ह और सूर नामक दो सोलंखियों को मारना ६ पूर्णमल्ल की प्रेरणा से राणा का मूर्छित सूर्यमल्ल पर खड्ग का प्रहार करना ७ मूर्छा से उठकर मारनेवाले को पटकने आदि अनुचर सहित राणा को मारना ८ सूर्यमल्ल और राणा का मरना सुनकर अपनी अपनी राणियों और सूर्यमल्ल की माता का मरना ९ सूर्यमल्ल और राणा के दहन करने की कथा का छत्तीसवां ३६ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥ और; आदि से एक सौ तिरासी १८३ मयूख समाप्त हुए ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलि-
न्दमुखरितचरणचिन्हिताऽरातिचूडबुन्दीपुरीविलासिनीविलासिचाहु-
वाणचूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाधिराजरावराजेन्द्र
श्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगिरादिषड्भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्या
ऽकूपारकर्णधारवीरमूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचे
तनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्लविहित
वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे रावसूर्यमल्ल १८८।१ चरित्रसम
यसमानाऽधिकरणकोदन्तवर्णनं पञ्चमो ५ राशिस्समाप्तः ॥ ५ ॥
अनुष्टुप्छन्दांसि ॥ ६२५० ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरन्द (पुष्परस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण करके चिह्न युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासि, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है भाग्य में जिनके; अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्, जीवन्मुक्ति मार्ग में चलनेवाले, हाडा पदवीवाले चहुवाण महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्रीरामसिंहदेव की आज्ञा से संस्कृत भाषा आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये) शरीरवाले, चारण वंश के सूर्य, विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के भ्रमर, सुन्दर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचेहुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण में राव सूर्यमल्ल के चरित्र के समान समयवाले वृत्तांत वर्णन का पंचम राशि समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिप रायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाबारहठ-चारणकुलाऽवतंस-शाह पुराप्रतोलीपाल-सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याःशृ-ङ्गारनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारिभिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह-किसोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगत भाव्याऽऽधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासादाऽऽ प्रकाव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरोमणिपर मवैष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरो राऽऽसादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुरा धिप-राजाधिराजोपटङ्किनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरो रत्न-रघुवंशीय-गुहिलोत्त-मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीशसज्जनतादि सद्गुणसम्पन्न-महाराणा सज्जनसिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरु

भाषानुवाद

श्रीयुत नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्ति परायण धर्ममूर्ति वीर-उदार-सोदाबारहठ शाखा के चारणकुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात सुयोग्य पिता ओनाड़सिंह के पुत्र, पंडिता सिणगार बाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किसोरसिंह, जोरावरसिंह से मिटगई है आगे के समय में होनेवाली मन की चिन्ता जिसकी, पंडित और कवि अपने मामा श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, संतोष आदि गुणों से युक्त-विद्वनों के शिरोमणि-परमवैष्णव-रामानुज संप्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदा हुए रघुवंशीय राणाउत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिलराजा के वंशवाले मेवाड़देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट, मारवाड़

धराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालक-मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां पञ्चमो ५ राशिः समाप्तः ॥

भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा जशवंतसिंह वर्मा से पाया है दान बड़प्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा के आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में पंचम राशि समाप्त हुआ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ षष्ठ६राशिप्रारम्भः ॥ ६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इम बुंदियपुर आइकैं, रतनसिंह सठ राम ॥
नवसिंधु१८८१इहिं मारत रिपुन, पंचप५न तिन दिय प्रान ॥ १ ॥
इत अर्द्धहिं[2] वसु८ अब्द वय, सठ नृप हुव सुरतान १८९१ ॥
अधिप लठहि चित्तोर उत, भो विक्रम बिनु भान[3] ॥ २ ॥
पै विक्रम[4] वय मध्यपर, यातैं नहिं उतैं आस[5] ॥
अनुक्रम इत बुंदीस सुत२, पैहैं स्व वय प्रकास ॥ ३ ॥

षट्पात् ॥

बालपनहु यह अबुध तियन छलि विजन[6] प्रतारहिं ॥
मोचत खिन बस्ति[7] मल पिट्ठि लत्ता[8] हनि पारहिं ॥
कतिकन सोवत कुमति पयन बिच सल्य[9] प्रवेसहिं ॥
अंसुक[10] नारिन अटतें[11] दूर करि लखत कुदेसहिं[12] ॥
सामंत१८७१आदि गुरु बंधु सब बाहिर१लखि बरजैं बहुत ॥
निजजननि आदि अवरोधन[13]हु सूचहिं सब जाकौं कुसुत ॥४॥
गुरुजन बरजन गंजि[14] सिसुहु बिचरैं स्वतंत्रसम ॥
जननिहु बरजत जानि तकैं जलघात[15] दुष्टतम ॥

---

१ दुर्जनसल को मारने में ॥ १ ॥ २ साढे आठ वर्ष की अवस्था के स्थान में. विक्रमादित्य बिना ३ ज्ञानवाला हुआ ॥ २ ॥ ४ विक्रमादित्य मध्य अवस्था में था इस कारण ५ चित्तोड़ में सुधार की आशा नहीं थी ॥ ३ ॥ ६ एकान्तमें स्त्रियों को छलकर ताड़ना करता था उन स्त्रियों को छोड़ते समय ७ योनि में मूत्र रहने के स्थान में मल डालकर, पीठ पर ८ लात (पद प्रहार) करके गिराता था और कितनी ही शयन करती हुई स्त्रियों की योनि में ९ शलाका घुसेड़ता था और ११ फिरती हुई स्त्रियों के १० घाघरे (लहंगे) दूर करके १२ गुह्य स्थान देखता १३ जनाने में ॥ ४ ॥ बडे लोगों के मना करने को १४ दबाकर १५ पानी में डूब मरना विचारता

इम बारह१२ बय अब्द भयो तदपिहु खल भास्यो ॥
जननीलग सब जनन प्रहतमति कुसुत प्रकास्यो ॥
भट१सचिव२आदि अखिलन भनिय अप्पन निर्यत विलोमैं यह
इहिं सिसुहिं आदि दैवो उचित रहहिं नंतो कुलातिग विरह ॥५॥

दोहा—पुव्व समय मंचोरपुर, व्याहिय जँहँ बरसीह १८४।१ ॥
तँहँ सगपन सुरतान१८९।१को, अग्गैं हुव सम ईहँ ॥ ६ ॥
नृप नारायन१८७।१ किय नियत, सुतसुतको संबंध ॥
जिमतिम तिन लिय जानिकैं, यह हडु६।१५ सिसु अंध ॥७॥
सब बुंदीके भट१सचिव२, बदि थाके कहि व्याह ॥
अवरठाँहु भली न यह, राँच्यो सुनत कुराह ॥ ८ ॥
अहर्निति हड्ड६।२नईसको, विथरयो अपजस वाँर ॥
क्रम यह सुनि मंचोरके, करतभये इनकार ॥ ९ ॥

षट्पात्—र्वांत तबहि भट१ सचिव२ विजन लगि बीजै विचारन ॥
सोधिय सनन सुपुत्र कित्ति जग हुव सहकारन ॥
तजि समतैं अब त्वरितैं याहि जित तित उरझावहिं ॥
नृप अनूढपन निखिल लज्ज अप्पन सिर लावहिं ॥
यातैंन लखहु अब सम१ असम२ महिपसिसुहु व्याहहु कुमति ॥
कछुदूर बहुरि बंद्धूर किय नृप संबंध दिखाइ नंति ॥ १० ॥

दोहा—वह चालुक बब्बूरइन, महा कृपन सिरमोर ॥
भूपति दम्म दुलक्ख २०००००भुव, जस परबस जस१जोर२ ॥११॥

षट्पात्—जिहिं नामहु बनि जीव कहत कोउ न अभद्र. कहि ॥
नृप लव कवि तिहिं नाम लिखत एकांत भद्र लहि ॥

बारह.१ वर्ष की अवस्था में हुआ तो भी दुष्ट ही दीखा २ हत बुद्धि ३ सबने कहा कि अपना ४ भाग्य ५ उलटा है ॥५॥ बराबर की ६ इच्छा से ॥ ६ ॥ ७ ॥ बुरे मार्ग में ७ रङ्गा हुआ सुनकर ॥८॥ ८ प्रतिदिन ९ फैला १० समूह ॥९॥ ११ मन में १२ कारण विचारने लगे १३ कारण सहित १४ समता(बराबरी) को छोड़कर १५ शीघ्र राजा के १६ कुमार रहने से १७ बबलोत सोलंकी राजा के १८ नम्रता दिखाकर

पुनि जिनहु नारि आश्रय पतिहिं बहू तदपि ऐसी वदत ॥
तुम१हम२कहँ न इम यह तनय निज कुसंग खलपन नदत१६
इम बिचारि नय उचित सिसुहि सिखयो सु संमस्तन ॥
पै प्रतिदिन प्रतिकूल बन्यों मयमंय वय वस्तन ॥
हायन वपु सोलहम६१ बिसँत भास्यो दूनों२बुध ॥
हितकी बोधनहार करे प्रतिहत कलि जुग क्रुध ॥
वपुमेद वढन१पुनि मूढपन२वयसंगहि गय दुव२वढत ॥
संभरनरेस सोलह१६समहु चल्लहिं रथ ससुंचित चढत ॥१७॥
ध्यायोंन१न जिम बिहित उचित खुरली२ आराधन ॥
हित हेरहिं तिन तरजि सहि गुरु कार्य कुसाधन ॥
दसमी१०मुख मह दिनहु बैठि रथ कज्ज बनावहिं ॥
अनुगं सबल पय अटत पानि अंसन भर पावहिं ॥
सामंत१८७१आदि तक्कत स्व हित बिनुहि बीज किय सब बिमन
चालुक्की१८९१सहित चंद्राउति१८८१३हु कूर बजिय करि हितकथन

दोहा ॥

गुन नव तिथि१५९३ सक्क पुव्वगत, बढि इत वह बनवीर ॥
हुव अधीस हनि बिक्रमहिं, स्वयं रान अघसीर ॥ १९ ॥

दुष्टता से १ गर्जना करता है २ सबने शिक्षा दी ३ उलटा ४ मंदमस्त; वा ऊंट के क्रम से अर्थात् बिना मोहरी का ऊँट जावे जैसे जिसको फारसी में (शुतर बेमुहार) कहते हैं अवस्थावाले ५ बकरों के समान अर्थात् युवा अवस्था वाला बकरा कामी बहुत होता है. सोलहवें ६ वर्ष में ७ प्रवेश किया तब दुगुना मूर्ख दीखा ८ शरीर का मांस और मूर्खपन दोनों अवस्था के साथ बढते गये. सोलह वर्ष की अवस्था में ही ९ उचित रथ पर चढकर चलने लगा ॥ १७ ॥ १० कसरत नहीं ११ करता था इसीप्रकार १२ बाण विद्या भी उचित नहीं समझी. हित चाहनेवालों को १३ धमका कर खोटा साधन करके बडा १४ शरीर करलिया. विजय दशमी आदि १५ उत्सव के दिनों में भी रथ में बैठकर १६ कार्य करता था. बलवान् १७ सेवकों के १८ कन्धे पर भार देकर पैदल फिरता. बिना कारण ही सब को १९ उदास करदिये २० मूर्ख बनी ॥१८॥ * बणवीर विक्रमादित्य को मारकर २१ स्वयं चित्तोड का राणा बनगया २२ पाप में बैठ करानेवाला ॥१९॥

* यह बणवीर महाराणा सांगा के बडे पुत्र पृथ्वीराज का पासवानिया पुत्र था जिसने १५९२ के सम्वत्

कुंभराननत्तिय कुमति, जो दासीभव जात ॥
सु बनवीर इम अप्प सिर, चामर छत्र चलात ॥ २० ॥

षट्पात्

भोज१सु अग्रज भनिय असिय कुमरहि सु कालगति ॥
हन्यौं रतन२हड्डे६१स भयउ विक्रम३तव भूपति ॥
उदयसिंह४तस अनुज हुतो कुंभिलगढ लै हद ॥
तिहिं अंतर वढि अतुल सु हुव बनबीर दुरासद ॥
नहिंय ज़ु प्रमत्त अहिफेनमद इम नरबद१८७।२दौहित्र वह ॥
विक्रम हन्यौं रु वनबीर वढि वह ह्वै नृप मतप्पो असह ।२१।

दोहा ॥

कुंभिलगढ हो तव कथित, उदयसिंह४ अनुजात ॥
सोहु रह्यो यह दुक्ख सहि, परयो समुझि पविपात ॥ २२ ॥

षट्पात् ॥

बरस तीन३ कछु बिकल अप्प बनबीर अकंटक ॥
तप्यो अलह चित्तोर छलत प्रभु सक्कि छकाछक ॥
कुल सीसोदनकोहु गंजि न सक्यो जिहिं गौरव ॥
दुज्जोहन बल दरिंत रहे नमिनमि जिम कौरव ॥
बनवीर असन इक१दिन बिरचि करत सुद्धकर सलिल करि ॥
दाधीच वैद्य आचार्य द्विज परस्यो खेमहु विंदु परि ॥ २३ ॥

महाराणा कुम्भा का पोता जो दासी के उदर से पैदा हुआ था उस वणवीर ने अपने ऊपर चामर छत्र चलाए ॥ २० ॥ १ बुरा (दुष्ट) ॥ २१ ॥ विक्रमादित्य का २ छोटा भाई ३ वज्रपात ॥ २२ ॥ ४ विशेष आराम से ५ नहीं दबासके. जिसका ६ बड़प्पन ७ दुर्योधन के बल से ८ डरेहुए ९ भोजन करके जल से हाथ धोता था उस[illegible] ११ जलकण उड़कर .ब्राह्मण के १० लगा ॥ २३ ॥

में महाराणा विक्रमादित्य को मारकर चित्तोड़ की गद्दी ली फिर एक दिन भोजन करते समय अपना उच्छिष्ट व्यंजन·पूरविया चहुवाण रावत "खान" को दिया जिसने वणवीर को पासवानिया समझकर भोजन नहीं किया इस पर वादानुवाद बढ़कर रावतखान उदयसिंह के पास कुम्भलगढ चलागया. बहुतसी सेना एकत्रित करके सम्वत् १५९७ में वणवीर को निकालकर चित्तोड़ पर अधिकार करके महाराणा उदयसिंह चित्तोड़ के स्वामि हुए।

सूचिय द्विज जल्ल असुचि न किम्‌ डरि द्विजन निवारहु ॥
रान कहिय सब रान बिहित कर सुद्धि बिचारहु ॥
बहुरि खेम खिजि वदिय सुद्धकुल रान डरे सब ॥
दासीभव तुम द्विजन असुचिमुख जल छुआत अब ॥
यह सुनि प्रकुप्पि बनबीर अति सु द्विज कढ्ढिदिय देस सन ॥
तब उदय४सिंह अभिलाख तक्कि गो कुंभिलगढ गिरि गहन ।२४।

दोहा ॥

पठयें दल तँहँ लिखि पिहित, रान भटन डहिंरीति ॥
उदयसिंह४आनहु इहाँ, तुम द्विज विरचि प्रतीति ॥ २५ ॥

पट्पात् ॥

खुल्ल्यो तब द्विज खेम उदय४अग्गैं सम्मत सब ॥
बदिय उदय४ बिनु बित्त कंहहु विस्वास बनैं कब ॥
छद्द सुभटन प्रति छन्न पुनिहु पठये इहिं आसय ॥
सूचित धन तब सबन जोरि पठयो अभीष्ट जय ॥
चित्तोर द्वारपालन चतुर क्रम बसु अप्पि स्वकीय करि ॥
बाहिनी बढत आयउ उदय४ ध्रुव सब मिलन प्रतीति धरि ।२६।
अद्ध रजनि गढ आत द्वार भेदिन उघारिदिय ।
परिकर निज समुपेत कढ्ढि पर नर प्रवेस किय ।
प्रधन पैरँ१ बनबीर पिंड तो तो तस पावैं२ ।
भजिहुजाइ१ जो भीत तोहु जन जियत बतावैं २ ।

राणा के हाथ १ करके जल का शुद्ध जाना २ अपवित्र. उदयसिंह की ३ अभिलाषा करके ॥ २४ ॥ ४ छाने पत्र लिखकर भेजा ५ विश्वास कराके ॥ २५ ॥ उदयसिंह के आगे अपना ६ मत प्रकाश किया, उदयसिंह ने कहा कि विना ७ धन भेजे विश्वास कैसे होसक्ता है: उमरावों के नाम ८ पत्र ९ छाने. जय करने की १० इच्छा से चित्तोड़ के ११ द्वारपालों को १२ धन देकर अपने किये १३ सेना १४ निश्चय १५ विश्वास करके ॥ २६ ॥ १६ परगह १७ सहित १८ युद्ध में मारा जाता तो बणवीर का शरीर मिलजाता और भगजाता तो उसको लोक जीवित बताते सो क्या हुआ वह हमने नहीं जाना ॥ २७ ॥

केसैंहु होहु जानी न कछु पै सर नव तिथि१५९५साकपर ॥
चित्तोर आइ सो वह अचल धनी उदय ४मेवार धर ॥२७॥

॥ दोहा ॥

उदयथान चित्तोर इम, लखि गहिय नय लाइ ॥
मेवारे निज गिनि सुमति, लिय सब स्व हियं लगाइ ॥२८॥
स्व हित खेम आचार्यसन, बन्यौं बहु सु ध्रुव धारि ।
सत७ ग्राम पिप्पलि१सहित, दे दारिद्र दिय दारि ॥ २९ ॥
कथन खेम१के कुलहुको, रान उदय२कुल रक्खि ॥
धन्वंतरि१जगतेस२क्षुव, सब१ रक्खिय सब२संक्खि ॥ ३० ॥
पुर बुंदिय सुरतान१८९।१पहु, इत यह पसुआचार ॥
हिंत भाखत ताकहँ हनत, सठ कुनिंपति अनुसार ॥३१ ॥
बुंदियपहिन दोसे निवल, भरतहि नृप रविमल्ल१८८।१ ॥
जितंतितर्तें जुरि अरिजनन, होतहि खिन किय हल्ल ॥३२॥
केसर१डागर२नाम करि, जुग१जवनंन इत आत ॥
कोटापति सिसु लखि कियउ, पुर कोटा निज पातँ ॥३३॥
जिन बुंदिय लिय जानिकैं, तव यह सिसु सुरतान१८९।१॥
इन कोटा करि निज अमल, पैठे जवन समान ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

बावर३०२न भजि बहुरि सुपहु रविमल्ल१८८।१सरन सुनि ।
भंजि बहुत रान भट पच्यो रायव१८७।१तदीय पुनि ॥
सुत वीरम१८८।१कन्ह१८८।२सुहि बाल वय आंहि दिष्ट बस ।
जिहिं निकासि पति जवन बने कोटा अरिष्ट बस ॥
सु अरिष्ट फलहिं सुर्जन११०।१ समय पै अवनो खल सबल परि ।
ए जवन कढ्ढि जेताउत६।२न कोटापति हुव विजय करि ॥३५॥

दरिद्र को १ काट दिया । २९ ॥ सब २ साक्षी हैं ॥ ३० ॥ ३ दुर भाग्य के अनु-
सार ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ कोटा पर ४ पड़े ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ५ दैं ६ भाग्य वश से
७ अशुभता के वश से, यह अशुभता राव सुर्जन के समय में पावेंगे ॥ ३५ ॥

जैत्र१८२।३कुलहु जबतैंहि निफ्फल पारंगो रहि निर्भुव[1] ।
केसर१डागर२कहत हुलासि कोटाअधीस हुव ।
इम दिसदिस अंधेर दुज्जन[2] बुंदिय भुव दब्बहिं ।
सठ कुपुत्र सुरतान१८९।१गिनत जितातित अरि गब्बहिं[3] ।
निजजन भजैं जु हितकी निपुन ताहि हनैं प्रतिकूल तकि ।
जिन भुजन भार भट१बंधु२जे सब गेहन[4] बेठे सरकि ॥ ३६ ॥
इक्कदिन काका उभय२सहँस१सत्तल२दासीसुव ।
अनाकारनहु[5] आइ हड्डराज१८९।१हिं तर्जत[6] हुव ॥
मंदन कुल तजि मग्गभुवन न रहै इम भोरे ।
जिनँ हसाहु रिपुजनन, न गिनि हमरेहु निहोरे ।
कुलधर्म अवहु वहि तजि कुमति सहनय[8] बिलसहु राज्यसुक्ख ।
अबतैंहि नतो सहिहै अंटक दुर्जन जिम लहि कैदसुक्ख[9] ॥ ३७ ॥
सुनत एह सुरतान१८९।१कोप अंतर सदर्प करि ।
जब वस परत न जानि टारि कछु समय अप्प टरि ।
निज सम्मति जन निकट१दूर२रोधंक[10] करिकैं तुंत[11] ।
काका दुव२छलि किमहु निलज पकराइलये जुंत[12] ।
निज ढिग कढाइ दोउ२न नयन कहि अबाच्य तिनकौं कुटिल ।
पठये निकेत मंचन पटकि कहत भली हुव अंध किल ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

इक्खत घोर अनर्थ यह, ताजि जम्म जिम सुरतान१८९।१ ॥
सेसहु कति[13] ह्री१सोक२सह, थू थू करि गय थान ॥ ३९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इमहि जैतगढ अधिप सिंह१८९।१लघुवयहि भीम१८८।२सुत ।

१ विना भूमि २ शत्रुओं ने ३ गर्व करते हैं ४ अपने अपने घरों में जा बैठे ।३६। ५ विना बुलाए आकर ६ धमकाया ७ शत्रुओं को मत हंसा ८ नीति के सहित राज्य को भोग ९ शोक ॥ ३७ ॥ १० रोकनेवालों को दूर करके ११ शीघ्र १२ स्तुति योग्य ॥ ३८ ॥ १३ लज्जा और शोक के साथ ॥ ३९ ॥

कहिय नृपहिं छल काल जोहु सहि रहिय द्रोहजुत ।
रक्खि विरह संज्ञान पह१८१।२हु वाहि कहुँ *एकाकिय१ ।
जिहिं गिराइ तालजल हुव विग्लन † गोता दिय ।
मरतहि जु जानि ‡ चोरन महुश छोरत हुव तिहिं रक्खि छल ।
झटकत निसाल जलकंद्रन उदर बच्यो हु निठिन आयुबल ॥४०॥
दरुन घोरपन विद्दिव सु नृप सुर्जन१८६।१सामंत१८८।१ हु ॥
करि अर्पन धिक्कार बारबारहि तरज्यो बहु ॥
रायमल्ल१८८।२तिम दुह सहज कल्यानमल्ल१८८।३सह ॥
उभय पितृपक्ख एहु झटकि हारे खल आग्रह ॥
जननी१८८।३रु तास रानी१८८।२हु जुग रवरजि रही नस सत्रु वनि
उपदेस समुक्ति निप लल अधम रहत निरंकुस दिन रजनि ॥४१॥

दोहा ॥

उज्झि अधिप विस्वास इम, सावधान अव सर्व ॥
रचि जिम पवि लग्गे रहन, गिनि कुपुत्रपन गर्व ॥ ४२ ॥
रन सलज्ज अप्पन मरन, वंछत रन बहु बंधु ॥
निज छतं न लख्योजाइ नृप, अवनी गेरत अंधु ॥ ४३ ॥
जंपै हित उपदेस जुहि, वरतै सुहि विपरीत ॥
श्रुतिघन कुलन कुपुत्र हुव, ऐसो निगम अतीत ॥ ४४ ॥
अर्जुन१८८।१की रद्दी अखिल, प्रभुता सुरजन१८९।१ पास ॥
जोइ निजन गिनि लखि जगै, वंछै तसह विनास ॥ ४५ ॥

* इकल्ला देकर. तालाव के जल में † डुबाया ‡ डूबा जानकर. पेट में १ जल भरकर ॥४०॥ २ देखकर ३ धिक्कार देकर ४ धमकाया ५ दोनों काका ६ हठ करके ७ अंकुश रहित ॥ ४१ ॥ राजा का विश्वास ८ छोड़कर ॥ ४२ ॥ लज्जा सहित युद्ध में अपना मरना ९ चाहने लगे १० आपने होते हुए ११ पृथ्वि को १२ कूप में डालता है ॥ ४३ ॥ जो हित का उपदेश १३ कहैं जो १४ उलटा वर्तता है १५ वेद का १६ नाश करनेवाला; अथवा कुल की प्रतिज्ञा को मिटानेवाला ॥ ४४ ॥ १७ सम्पादन की हुई १८ सम्पूर्ण १९ चाहते हैं ॥ ४५ ॥

कर्मध्वंज जसकर्णके, जावल पत्तन जाइ ॥
सुत तस भैरवकी सुता, पट्टु सुर्जन१८९।१ लिय पाइ ॥ ४६ ॥

पद्धतिका ॥

सुर्जन१८९।१सु लग्न पहिलैं सुजान, जय उचित वीर सह मह१विधान
जसकर्ण तनय भैरव जनीसु, कर मृदुल सोहि ब्याहिय कनीसु ।४७।
सौभाग्यदेवि१८९अभिधान२सोहि,जगविदितजसोदा१८९। नामजोहि
आनी सुव्याहिसुर्ज्जन१८९।१उदार,वसु३वृष्टि४विरचि अति सह विथार५
सुरतान१८९।१सु सोभा लखिसक्यो न,तैसे सु बंधुपर हित तक्यो न॥
इक रक्खिय माहुंदा१अधीन, लुभि६ इतर पटाके ग्राम लीन ॥४९॥
घर ऋद्धँ७ तदपि सोभा घटी न,हुवसुर्जन१८९।१ गैंक न विभवहीन ॥
बुंदीस ताहि मारन बिचारि, सठ निर्जन८ बुल्लि स्वमतानुसारि ।५०।
माहुंदा सन्नतै कहिय मूढ, गम्दावंहु तिहिं दल जाइ गूढ ॥
अर्ज्जुन१८८।१केउद्धत२त्रिक३हितोरि१, वसुआखिल३बुल्लि४आनहुवढ्ढोरि
यह मंत्रधर्‍यौं इक१दिवस अग्ग,सुनिलिय उन पुव्वहिं छल समग्ग१४ ॥
मूढन रचेहु कहु दुरंत मंत्र, ताकि धर्म चलत रहत सु स्वतंत्र ॥५२॥
अर्जुन१८८।१कै खट६मित हुव अपत्य, सुत तीन३रहे तँहँ आयु सत्य॥
सुर्ज्जन१८९।१तिमअक्खयराज१८९।२सूर,पुनिराम१८९।३ अनुजगुन
ग्रामपूर१६ ॥ ५३ ॥
सुरतान१८९।१ मंत्र यह सुनि ससंक,पुच्छिय निज जोधन फलिप पंक१७
बंधुनपर बिक्खहु१८ स्वामि वैर, नासन सठ चाहत निजहि नैर१९ ॥५४॥
कोटा न लेत हनि जवन क्रूर२०, सिर बंधुन कट्टन बनत सूर ॥

कोमल १ हाथ पकड़कर ॥ ४७ ॥ २ नाम ३ धनकी ४ वृष्टि करके. पद्धत उत्सव ५ फैलाकर ॥ ४८ ॥ ६ लोभ करके ॥ ४९ ॥ तो भी घर की अष्ट७ समृद्धि नहीं घटी ८ एकान्त में बुलाकर ॥ ५० ॥ माहूंदा ९ लालता है. सेना से १० घेरा लगाओ ११ छोने अर्जुन के तीनों१२ निरंकुश पुत्रों को मारकर १३ लप ॥ ५१ ॥ १४ समग्र (सब). मूर्खों की रचीहुई सलाह भी कहीं १५ छिपी रहती है ॥ ५२ ॥ १६ गुणों के समूह से पूर्ण ॥ ५३ ॥ १७ पाप १८ देखो. आपके १९ नगर का ही नाश करना चाहता है ॥ ५४ ॥ २० क्रूर अथवा मूर्ख

अथ जिदन१नलन२दद दिविदैधीन, पेक्खहु स्वामि स्वागतं प्रवीन ५५
सुतसुज्जैंना१८९।१दिन [illegible] रज्ज, [illegible] कुलगौरिलज्ज
अर्ज्जुन१८८।१इहूँ जेठौ सुथाहि, उनकछत जयवती१८८।१नामगाहि
गहिक्रोतनी सु सुतदिन गिनाइ, हुंन सुतन दुल्लि वह हठ छिनाइ ॥
दुल्लौ न स्वामित्तन रन विधेय, ह्व भीर भजहु यह थान हेय।५७।

दोहा ॥

स्यादिक्कहु जननिन इन वयत, मन्नि सु पुत्र सुमंत्रं ॥
सह परिकर वैभव सहित, तक्किय धर्म स्वतंत्र ॥ ५८ ॥
माडुंदा तजि सुज्जन, कढि पहिलौ निसकाल ॥
गो बहुरिहु चित्तोरगढ, सुर्ज्जन१८९।१सत्रुन साल ॥ ५९ ॥
निज मातुलसुत गिनि निपुन, उदयरान करि अग्घं ॥
सुर्ज्जन१८९।१रक्खिय प्रीतिसह, बैरी बस्त१न बग्घं२ ।६०।
हैन न दिय पहिलो पटा, सीसोदन हठसंधि ॥
कहिय रतन१मारकहु लहि, वैरी बैरहिं बंधि ॥ ६१ ॥

षट्पात् ॥

उदय१रान उच्चरिय रतन१रविमल्लौ२ रहे रन ॥
वैर तदपि जो वदहु सोहु सुरतान१८९।१ भूप सन ॥
वलि अर्जुन१८८।१ इन्ह बप्प परिय चित्तोर कामपर ॥
पुनि मम मातुलपुत्र किम न रक्खहिं निज हितकर ॥
इम उदय१समप्पिय सुर्जन१८९।१हिं पटा सहँसपैंतीस३५०००सौं ॥
सुहु रहिय धारि फूफीसुतहि वंटहु तजि बुंदीससौं ॥ ६२ ॥

---

१ प्रजा के हाथ है. स्वामि के २ आने का आदर करो ॥ ५६ ॥ ३ सुरजन आदि ४ कुल को कलंक लगने की लज्जा से. अर्जुन की ५ विवाहिता पट्टी स्त्री ने ॥ ५६ ॥ इस वार्ता को ६ अनुचित जानकर ७ समर्थ पुत्रों को बुलाकर. इस स्थान को ८ छोड़कर ॥ ५७ ॥ ९ कहते ही १० श्रेष्ठ सलाह को मानकर ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ११ बाघ (आदर) बैरियों रूपी १२ बकरों के लिये १३ सिंह ॥ ६० ॥ १४ हठ की प्रतिज्ञा से शीसोदिया ने ॥ ६१ ॥ रतसिंह और १५ सूर्यमल्ल दोनों ही युद्ध में रहे. अर्जुन का १६ पिता. मेरे १७ मामा का पुत्र है १८ भुवा के पुत्र को ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

अनुज तत्थ सुर्जन१८९।१उभय२, व्याहे समसंबंध ॥
अक्खयराज१८९।२रु राम१८९।३ए२, सह सह दुलह सुसंध ।६३।
स्वर्णकुमरि१८९।१ मंडनसुता, रचि उच्छव रछोरि ॥
अनुज सहोदर अक्खय१८६।१हिं, जो व्याहिय कर जोरि ।६४।
सुता कबंध समर्थकी, अमरकुमरि१८९।२ अभिधान ॥
सुर्जन१८९।१व्याही सोदरहिं, सो राम१८९।३हिं सह मान ।६५।
बंध त्रय३हिं करिहँ बहुरि, बुंदिय पाइ विवाह ॥
बंसहु तीन३नके बढहिं, रक्खन निज कुल राह ॥ ६६ ॥

पादाकुलकम् ॥

रायमल्ल१८८।२ कल्ल्यानमल्ल१८८।३ रचि, बिन्नति अति बुंदिय अपजस बंचि ॥
निज भतीज नृप बहुत निवार्‌यो, पै अनयहि सुरतान१८९।१ प्रसार्‌यो ॥ ६७॥
सगपन इन्ह दोहु२न समकुलसन, रचिय अग्ग रविमल्ल१८८।१ धराधन ॥
बुंदीपति जिन्ह अबहु न व्याहत१, दायँ हु दैन२दहे हिय दाहत।६८।
जर्‌यो समह व्याहत लखि सुर्जन १८९।१, व्याहैं किम सु स्व-वित्त पितृव्यन ॥
रोध प्रतीपहिँ ते१न सराहैं, चित्त उदास मरन रन चाहैं ॥ ६९ ॥
बुंदिय इम तिन्ह आग्य बुलायो, अतिबल चढि मंडूपति आयो ॥
घेरा लगत भयो भय घरघर, अब सुरतान१९८।१ भटन किय आदर ॥ ७० ॥

---

१ सची प्रतिज्ञावाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥६६॥ २ अनीति ३ फैलाई ॥ ६७ ॥ ४ राजा सूर्यमल्ल ने १ दंड देने में, जलेहुए हृदय को जलाता है ॥ ६८॥ १ अपने धन से ७ रोकने के ८ विरुद्ध ॥ ६९ ॥ ७० ॥

षट्पात् ॥

सामंता१८७।४विक सुभट तदपि नृपतैं न मिले तँहँ ॥
बाहिरतैं रतिबाह१ पठाके पीरे२ जवनन ऊँहँ ॥
रायमल्ल१८८।२कल्यानमल्ल१८८।३ इनतैं कढि पद्धर३ ॥
मन बढि आप मरन भये खग्गन तिलतिलभर ॥
इनसंग सहँस१सत्तल२उभयप४ अंधहि खूब प्रहार असि ॥
चउ४ज्ञात हड्ड१धारन बढि रु गिरतभये बहु मिच्छ ग्रसि ।७१।

दोहा ॥

रिपुसंख्या जानी न रन, पैं बहु मिच्छन पारि ॥
पहुँके चउ४काका परे, अप्पन लौंन उजारि ॥ ७२ ॥
मिलि पिथ्थल१८९१जगमाल१८९१मुख्य५,नह हरि१८८।१कीरतिसीह
बलि दूजे२रतिबाहपैं, आये सजिजयईह६ ॥ ७३ ॥
जिन बरजत सुरतान१८९१जड७, प्रतिदिन हुव प्रातिकूल ॥
भारपरत बुंदिय सुभट, मिले तेहि जयमूल ॥ ७४ ॥
सब निजनिज गृहतैं समिटि८, बुंदीबाहिर बीर ॥
नृप कुपुत्र ओर न निरखि, सजे कुल पथ सीर९ ॥ ७५ ॥
दूजो२ इन रतिबाह१० दिय, इमहि अचानक आइ ॥
पुनि भज्जिगो मंडूपति सु, पैहिले११जिम भय पाइ ॥ ७६ ॥
इम बचाइ बुंदिय अखिल, गये सुभट निज गेह ॥
न मिले मूढ नृपालतैं, अखिल कुठक्कुर१२ एह ॥ ७७ ॥
रायमल्ल१८८।२कल्यान१८८।३रन, सहँस१८ सत्तल२सत्थ ॥
दुसह लज्ज सुरतान१८९१ दुख, पै लरे जिम पत्थ१३ ॥ ७८ ॥

१ रात्रि का युद्ध करके २ यवनों को पीड़ित किये ३ सीधे ॥ ७१ ॥ ४ राजा के ॥ ७२ ॥ ५ आदि ६ जय की इच्छावाले ॥ ७३ ॥ ७ मूर्ख ॥ ७४ ॥ ८ एकत्रित होकर. कुल के मार्ग में ९ बंट करके ॥ ७५ ॥ १० रात्रियुद्ध ११ पहिले भागा था उसी प्रकार भय पाकर भागा ॥ ७६ ॥ १२ बुरा ठाकुर (स्वामि) करकर ॥ ७७ ॥ १३ अर्जुन के समान लड़े ॥ ७८ ॥

पूरब गोपुर बाहिर प्रभु, श्रव वापीजुग २ आहि ॥
कंछु सहँस१सातल२बिहित, जगत जनावत जाहि ॥ ७९ ॥

स्वामिविमुख होइ न सके, पिक्खहु रान२०३१४नृपाल ॥
चउ४काका धारन चहे, रुठ भतीजके साल ॥ ८० ॥

पहिले दुव अग्रजें परे, धुव चौरी तिन्ह धाम ॥
सहँस१रु सातल२केर सुत, कँलि ऐं हैं वंति काम ॥ ८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे २ षष्ठ६राशौ वीतिहोत्र वसुधेश्वर१ बीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं श्यविहितवर्णनवेलाव्याहारपर्वबुंदीवसुधावरसुरताण १८९११ सिंहच रित्रे सुरताण १८९११ राज्याभिषेकः १, चित्तोडे रत्नसिंहसूनुदुश्चरित्र विक्रमाभिषेकः२,मंत्र्यादिभिः सुरताणबोधनेपि तत्प्रबोधाभावः३,बहू रेश्वरचालुक्यकान्हपुत्र्या सह सुरताणकरग्रहः४, चित्तोडे त्रिनवत्युत्तर- पंचशताधिकसहस्रतमसंवत्सरे विक्रममारणपूर्वकं भोजिप्यवणवीर- कर्तृकराज्यग्रहणं५,वणवीरानीतिदुःखितप्रजाभिर्वर्षद्वयोत्तरं कुंभि- लमेरादाहूयोदयसिंहस्य राज्ये स्थापनं६,सुरताणकर्तृकं सहसा सात

पूर्वदिशा के शहर के १ द्वार २ बाहिर हे प्रभु रामसिंह ३ दो बावड़ियें हैं ४ बनाईहुई ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ५ बिना सन्तान ६ मन्दिर ७ युद्ध में ८ फिर ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के कथा बनाने के समय के बचनों में बुन्दी के भूपति सुरताणसिंह के चरित्र में सुरताण का-राज्याभिषेक और चित्तोड़ के रत्नसिंह के पुत्र खोटे चरित्रवाले विक्रमादित्य का अभिषेक, मन्त्री आदि के सुरताण को समझाने पर भी उनके समझाने के अभाव से बालणोतों के पति सोलंखी कन्ह की पुत्री के साथ सुरताण का विवाह करना, चित्तोड़ में १५९३ के सम्वत् में विक्रमादित्य को मारने पूर्वक पासवानिये वणवीर का राज्य लेना, वणवीर की राजनीति से दुःखी होकर प्रजा का दो वर्ष पीछे कुम्भलमेरसे उदयसिंह को बुलाकर राज्य स्थापन करना, सुरताण का मारने के लिये सातल को बुलाकर दो

चोल्याहूयपितृव्यद्वयाक्षिनिष्कासनं७, सुरताणकर्तृकस्वप्रमापणवार्त्ताश्रवणात्सुर्जनस्य चित्तोडगमनम्८, सुरताणकर्तृकाणि जैतगढाधीशसिंहस्य तडागे निमज्जनोन्मज्जनानि९, स्वहितेच्छुदुःखदसुरताणं विहाय बंधुवर्गेण स्वस्वग्रामगमनडागरखाँकेसरखाँनामकयवनयोः कोटग्रहणम्१०, माँडूपतेर्बुन्द्याक्रमणारम्भे स्वस्वग्रामेभ्य आगत्य बंधुवर्गेण सौहित्यं दत्वा माँडूपतेः सैन्यविद्रावणम् ११, तत्र रायमल्लकल्याणमल्लसहितानीतसुरताणपितृव्यचतुष्टयमरणम्१२, मृतावशिष्टबंधुवर्गस्य स्वस्वगृहं प्रति गमनं चेत्यादिकथानयुक्तः प्रथमो१ मयूखः ॥ १ ॥ आदितश्चतुरशीत्यधिकशततमः ॥ ८४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सोरठा ॥

इत चित्तोर अभंग, सुर्जन १८०।१ जन्न स्वहितैं असम ॥
जिति रावरपति जंग, पुर तानां१ लिन्नों प्रथम१ ॥ १ ॥
धाटिनपति अभिधान, जिहिं साक्षि१ सो भिल्ल जँहँ ॥
बसु लुट्टहिं बलवान, पल्ली करि तानाँ१ पुरहिं ॥ २ ॥
बल आनहु बहु बेर, पठयो जहँ जयलाभपर ॥

यों काकाओं के नेत्र निकालना, सुरताण की अपने मारने की वार्त्ता सुनने से सुरजन का चित्तोड़ जाना, मारने के लिये सुरताण का जैतगढ के पति सिंह को तालाब में डुबाने और निकालने अर्थात् गोता लगाने से अपने हित को चाहनेवाले दुखदायक सुरताण को छोडकर बन्धुवर्ग का अपने अपने ग्रामों को जाना, डागरखां, केसरखां नामक दो यवनों का कोट को लेना, मांडू के पति का बुन्दी को घेरने के आरम्भ में अपने अपने ग्रामों से आकर बन्धुवर्ग का रतिवाह देकर मांडू के पति और सेना को भगाना, वहां रायमल्ल कल्याणमल्ल का साथ सहित सुरताण के चार काकाओं का मरना, मरने से बाकी रहेहुए बन्धुवर्ग का अपने अपने घर जाने आदि की कथा सहित प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥१॥ और आदि से एकसौ चौरासी १८४ मयूख हुए ॥

१ किसीसे मारा नहीं जावे ऐसा २ सम्पादन (पैदा) किया ३ भीलों के पति को ॥ १ ॥ ४ धाडायतियों के पति का नाम ५ मालया था ६ धन ७ तानापुर को पाल (भीलों की बसती को पाल कहते हैं) बनाकर ॥ २ ॥

जो जो रन करि जेरं, मल्लिक१ प्रतिभंग मुकल्यो ॥ ३ ॥
प्रजाविहितं पुक्कार, संसद विच जाकी सुनत ॥
विरच्यो रान विचार, कहहु पंच कैसी करहिं ॥ ४ ॥
इक्खत सुर्जन१८९।१ ओरं, अर्जुन१८८।१सुत हसि उच्चरिय ॥
दब्बन दिल्लिय दोरं, रांजै पुच्छन रावरो ॥ ५ ॥
को खल रंक किरात, त्रासकं दीनन तस्कर सु ॥
परैं जंत्थ पविपात १, कहा तत्थ तृनगन २ करैं ॥ ६ ॥
महानिठुर हरिसंथे १, पै न समर्थ घरट्ट२ पर ॥
पापी चोर१न पंथ, जोलौं लखहिं धनी१नं जगि ॥ ७ ॥

पद्धतिका ॥

चित्तोरनाथ तव रन विचार, साहनसिर मंडहिं जसप्रसार ॥
कांतर किरात बत्त सु कितीक, इक्कल१सिपाह सब्बहिं इतीक ॥८॥
जो कहहु अप्प मैं अबहि जाइ, छिति खलन गंजि लौहों छुगाइ ॥
तव रान दियउ भुज पुंजि तास, हत्थी१ हय२भूखन३दंद्रहास ॥९॥
सेना निज दै चउसहँस४०००सत्थ, पठयो तहँ सुर्जन१८९।१समरपत्थ॥
असवार त्रिसत३००अप्पन अधीन, क्रमइम अर्जुन१८८।१सु-
त गमन कीन ॥ १० ॥
आयो जब यह बुंदी विहाइ, पुहवीस हुद६१भय तबहि पाइ ॥
हम्मीर१९०।१कुमरजुत संग होइ, पूराउत१७।१३मान१८९।१हु
हित पुर्लोइ ॥ ११ ॥

१दबाकर२ पीछा भेजा ॥३॥ ३प्रजा की की हुई पुकार४ सभा में ॥४॥ ५ तरफ६ दिल्ली का फैलाव दबाने के लिये आपका पूछना ७ शोभा देता है ॥ ५ ॥ दीन लोगों को ८त्रास देनेवाला ९ जहां १० वज्र पड़ता है ॥ ६ ॥ १२ घने ११ कठोर हैं तोभी १३ घरट पर बलवान् नहीं होसके ॥ ७ ॥ १४ यश फैलाता है १५ कायर ॥ १८ ॥ १६ खड्ग ॥९॥ १७ युद्ध में अर्जुन ॥ १०॥ १८ बढाकर यह छिं-

आयो तव सुर्जन१८९।१ संग अत्थ, न मिल्यो पटाहु बुंदी अनत्थ।
हम्मीर१९०।१तनय सह तहँ गंहीर, सोंपँ हुव सुर्जन१८९।१भीर सीर१२
अर्जुन१८८।१सुत हंकिय इम असंक, तानाँ१पुर वेढिय द्रुत तदंक
दिन इक३समर तोपन दगाइ, दूजे४हि दिवस किय हल्लदाइ ।१३।
निकस्यो खल आवत इन्ह निहारि, भिल्ली जन्याँहु न भज्यौं इभाँरि
सुर्जन१८९।१को मातुल सुत सधीर, भर दीपचंद गहिलोत भीर ।१४।
वह गो सदरँनविच हय उडाइ, खल गये वढत नाकोंहु खाइ ।
वहि जय गिरंत इम दीपचंद; मज्जहि हय इक६१न दिय अमंद ।१५।
करवाल पूर१८८।३सुत मान१८६।१केर, फेरयो खल मस्तक चक्क फेर
कवहीं न गिरत मल्लिक१किरात, जँहँ गिरे सट्ठि६०सव भिल्लजात ॥
मल्लिक१के हुव२सर होत मेल, सुर्जन१८९।१वपु लग्गे मनहु सेल ॥
अर्जुन१८८।१सुत तोहू हय उडाइ, खल पंच५न दिन्नैं सिर खिराइ
गिरतहि पल्लीपति विकलगात, क्रम भजिग मेर१सैनँ२ किरात३ ।
सुर्जन१८९।१को जय१हुव सुजस२सत्थ, तानाँ१पुर जित्यो सँधन तत्थ
सो तानाँ१ वावर१ ग्राम संग, इहिं दियउ रान धरि जय उमंग ॥
दससहँस १०००० पटा मान १८९।९ हिं दिवाइ, प्रविस्यो पुर सुर्जन
१८९।१ विजय पाइ ॥ १९ ॥

थप्पिय पुनि रीझि रु रान याहि, सिंधुर१हय२भूखन३धन४सराहि ॥
जित्यो इम पातोरा२हु जाइ, निस्सेस धाटिजन हनि१नसाइ ॥२०॥
दूजो२हु व्याह सुर्जन१८६।१उदार, चित्तोर तैंहि किय विधि विचार ॥
पुर वंसवहाला नाम पत्तँ, राउल जसवंतहु मिलिय रत्तँ ॥ २१ ॥

गल का शब्द है ॥११॥ १अमर्थ की वार्ता है २ गम्भीर ॥ १२ ॥ ३ उस भीलके कारण ४ हल्ला किया ॥ १३॥ ५ सिंह ६ भट (वीर) ॥१४॥ ७ भीलों में ॥१५॥ ८ चाक (चक्र) फिरै जिसप्रकार ९ भीललोग ॥ १६ ॥ १० तीर ११ शरीर में ॥ १७ ॥ १२ पाल का पति १३ भील १४ धन सहित ॥ १८ ॥ १० ॥ १५ हाथी १६ भगाकर ॥ २० ॥ १७ जाकर १८ प्रीति से

तँहँ कनकवती१८९।२कन्या[1] तदीय, सु बिबाह्यो सुर्जन१८९।१गुन गरीय[2]
अवसर बरात चित्तोर आइ, पातोश२सुर्जन१८९।१ वहुरि पाइ ॥२२॥
भो तत्थ रान बिस्वासभाजं[3], सुनिये[4] ब बत्त मिच्छन समाज ॥
जिम सेरखान परसाज्जि जात, बावर३०मरयो सु हुव पुब्ब[5] वात ॥२३॥
पहिलैं बिहार१सूबा प्रधान, खल स्वामि बिमुख हुव सेरखान ॥
बलि जिहिं दबाइ रुहितास२बंग२, भो प्रबल बावर३०हिं करन भंग[6]२४
बावर३०सजि जिहिं सिर चलत बेर, ज्वर करि वपु छोरयो दिष्ट[7] जेर[8]॥
तब सक रस बसु तिथि १५८६ तनय[9] तास, हुव साह बिदित
करि चंद्रहास[10] ॥ २५ ॥

जिहिं नाम हुमायौँ३१।१ किन्न जेर, कलि[11] नत्ती इब्राहीम२९केर ॥
रैवत अधीस कैवर्त्तराजं[12], कछु हारि सु मारयो बिजयकाज ॥ २६ ॥
गुजरात२गंजि इम सजि सयान[13], पुनि सेरखानसिर किय पयान ॥
विक्रम सक खट नव तिथि१५९६बिहाइ, पूरब१दिस हं किय समय पाइ
इत सेरखान सुनि बंगदेस, इत भेदे[14] दिल्ली भट असेस ॥

लहि धन गनिकासम[15] जे निलज्ज, अरि तंत्र[16] भये अरि कारि कुकज्ज[17]
जिनके बिसास दिल्लीस जाइ, रन बंग[18] सीम कछु दिन रचाइ ॥
मुगलेद्दस पराभव[19] लहि महंत, आयो सुरि सह भय समुझि अंत २९
खल सेरखान नय१कपट२खेल, मरहट्ठन रक्खत पिहित[20] मेल ॥
दिल्लीस सीस जिहिं छल उदग्ग[21], मरहट्ठे पटके भजतमग्ग ॥ ३० ॥
नदि नाम कर्मनासा निकास, तिन्ह दिय दिल्लीसहिं पहुँचि त्रास ॥

---

१ उस रावल जसवन्तसिंह की कन्या गुणों में २भारी ॥२२॥ ३ विश्वासपात्र ४अब म्लेच्छों के समाज की बात सुनो ५पहिले ॥२३॥ ६नाश करने के लिये॥२४॥ ७भाग्य के ८काबूमें होकर ९उसका पुत्र १०खड्ग से प्रसिद्ध हुआ ॥२५॥ ११ युद्ध में इब्राहीम के पोते को १२कैवाट ॥२६॥ १३चतुर ॥२७॥ १४ अपने में मिलाए १५वेश्या के समान धन देकर १६शत्रु के अधीन होगये १७ खोटा कार्य करके ॥ २८ ॥ १८बंगाल की सीमा में १९ पराजय ॥ २९ ॥ २० छाने २१ उदग्र ॥३०॥

परिभव[1] लहि तत्थहु सहत पीर[2], आयो सु हुमायोँ ॥३१॥ भाजि अधीर
जिहिं आइ आगरा कटक जोरि, बैरिन सिर हल्ला किय बहोरि ॥
पुर कान्यकुब्ज अंकित[3] प्रदेस, बनि हुव समीके[4] दुव[5] दिस विसेस ३२
जय मुगल[6] नाज तत्थहु न जानि, पुनि सकुटुंब भजिवो प्रमानि ॥
दिल्ली तजि परिजनजुत[7] उदास, आयो भजि पच्छिम[8] जियन आस
तँहँ गर्भसहित बेगम तदीय[9], ही सोहु भज्यो लै त्रस्त हीय[10] ॥
सुनि पिट्ठि लग्ये अरि आत सीस, इहिँ सरन लयो अजमेरईस ।३४।
पहु मालदेव तँहँ छलप्रवीन, अजमेर[1] आदि जिहिं किय अधीन ॥
इहिं राठ्ठ[11]कूटनृप पाप ऐन[12], दिल्लीस चहिय पकराइ देन ॥ ३५ ॥
जब सोहु भेद मुगलेस जानि, नैठो[13] निसीथ[14] मन गहन मानि ॥
कोसन सत[100] संतत[15] वायु कोन[6], भजत लख्यो न जल[1] अ-
न्न[2] भोन ॥ ३६ ॥
धर जंगल लंघत इम अधीर, नर[1] वाजि मरे बहु चहत नीर ।
तस पिट्ठि तदपि सत्रुन तजी न, लिय जाइ पलावर्त[14] थलिन[15] लीन ३७
बाबर[30] सुत तिन्ह लखि भजि बहोरि, हुव अस्तव्यस्त जन मन अहोरि
अरु बाल्हीस[20] बेगम[1] उपेत, रहिगो सु मुगल थकि थलिन रेत ३८
पहुँचे तँहँ कछु अरि होत प्रात, दिल्लीस लरयो तब बल दिखात ।
अरिनायक[16] उर दिय तीर एक[1], अँसुहीन[17] गिरयो वह वीर एक ॥३९॥
बिनु नायक अरि हुव अस्तव्यस्त[18], तिहिं छिद्र भज्यो पुनि मुगल[6] त्रस्त[19]
जल कहुँ न मिल्यो दिन तीन[3] जाहि, इम सिंधुसीम पहुँच्यो सु आहि ॥
नृप सोढा ऊमरकोट नेर, तक्क्यो सु सरन तिहिं बिगतबैर[20] ॥

यहां भी १ पराजय लेकर २ पीड़ा सहता हुआ ॥ ३१ ॥ कान्यकुब्ज से ३ जाना जावे ऐसे प्रदेश में ४ युद्ध ॥ ३२ ॥ ५ अपने लोगों सहित ॥ ३३ ॥ ६ उसकी बेगम गर्भवती थी ७ डरेहुए ८ हृदय से ॥ ३४ ॥ इस ९ राठोड़ों के राजा ने १० पाप का घर ॥ ३५ ॥ ११ भागा १२ आधी रात्रि में १३ निरन्तर ॥३६॥ १४ भागता हुआ १५ रेगिस्थान में ॥३७॥३८॥ १६ शत्रुओं के पति के हृदय में १७ प्राणहीन होकर ॥३९॥ १८ तितर बितर १९ डरकर ॥४०॥ २० बैर रहित

सोढा तिहिं स्वागतकरि बिसेस, रक्ख्यों सुहुमायोँ३१।१पटु नरेस।४१।
अकबर३७।१हुव बाहुल२८मास अत्थ, सक अठ अंक तिथि१५९८मि
ति समत्थ॥
यह जन्म जवन४ग्रंथन अधीन, अर्ज५नमत अै हैं पुनि प्रवीन॥४२॥
सोढा इम मुगल६हिं रक्खि सूर, दल तास अरिन लरि कियउ दूर।
सुनि यह तहँ सासपनाम साह, निजबल प्रगल्भ ईराननाह॥ ४३ ॥
दै दल जिहिं ऊमरकोट एस, दिल्लीस बुलायो स्वीय देस।
नीरधि जिम बुड्डत मिलहि नाव, भो इम बाबर३०सुत स्वस्थभाव ४४
स्व कलत्र१पुत्र२परिजन३समेत, ईरान गयो यह नतिउपेत।
इक१अब्द रह्यो पुर इस्फहान, मन्न्यों तहँ सासप सरन मान।४५।
नृप राम२०३।१सुनहु अब इत उदंत, लहि सेरखान जय नय लसंत।
अट्ठानव तिथि१५९८सक लगत अब्द, सुनि जग निज जस१जय२
अभय३सब्द॥ ४६ ॥
वह सेरखान३२प्रभुता उपेत, दिल्लीस भयो सुख सबन देत।
सत्तानव९७उतरत अरि नसाइ, अट्ठानव९८लग्गत पट्ट आइ॥४७॥
मुहि सेरखान हुव सेरसाह३२, अति निपुन मंत्र१प्रभुता२उछाह३।
इम बंग१उदय१दिस अटक२अस्त२, सतपंद्रह१५००कोसन भुव स-
मस्त॥ ४८ ॥
करि सड़क पंथ१प्रतिकोस२कूप२मस्जिद३पथिकालय४रस्यरूप॥
॥ ४९ ॥

१ चतुर॥ ४१॥ यहीं पर २ कार्तिक मास में अकबर का जन्म हुआ ३ समर्थ ४ यह जन्म फारसी ग्रन्थों के मत के अनुसार है॥ ४२॥ ५ आर्यों के मत से आगे कहा जावेगा, ६ अपने बल से चतुर,॥ ४३॥ ७ पक्ष ... कर ८ अपने देश में ९ समुद्र में डूबते हुए को नाव मिले इसप्रकार॥ ४४॥ ... रानी १०स्त्री ११ अपने लोकों सहित १२ नम्रता १३ सहित॥ ४५॥ इधर का १४वृत्तान्त १५नीति में शोभायमान हुआ॥ ४६॥ ४७॥ १६ राजा की मन्त्र आदि तीनों शक्तियों में चतुर १७ बंगाले तक १८ पूर्व दिशा में और अटक नदी तक १९ पश्चिम दिशा में॥ २० कुए २१ सराय २२ सुन्दर॥ ४९॥

मत निज उपदेसक बंगिनार[१], पथिकोदन[२]सज्जा[३]इहिंप्रकार ।
पादप[४]फलदाई पथ दुपास[५], किय सेरसाह३२प्रभुपन प्रकास ५०
इम त्रिसत३००कोस इत आगरा१रु, मंडू२लग किय मंग चतुरचारु[६] ।
थल थल पुर घोरँन डाक[७]थप्पि, व्यापारिन बिहरन[८] अभय२थप्पि ५१
संवच्छर[९] तीन३हि रहिय साह, पै प्रभु बन्यों सु सब ज्यांपनाह[१०] ।
प्राकार[११]१दुर्ग२सर३महल४पूर, सुखदैन रचे सवठाम सूर ॥५२॥
प्रमदा[१२]१सिसु२फेंकत कनक[१३] पानि, जिहिं राज्य मग्ग[१४]बिच अभय जानि ।
वानिज्य करन हित नरन ब्रात[१५], जिततित निसंक दिसदिसन जात ॥
यहु सेरसाह३२ऐसे प्रताप, दिल्लीस होइ लिय जस दुराप[१६] ।
अजमेर१सिंधु२मालव३अधीस, गुजरात४गंजि तपि सबन सीस ।५४।
सत्रुन निहारि रनथंभ सेस[१७], आयउ तिहिं जित्तन सबल[१८] एस ॥
वेढिय गिरिदाहिर कटक बंटि, सुभ१असुभ२दैव[१९] दिय तबहि संटि[२०] ।५५।
लिय जित्ति दुर्ग रनथंभ१लाह, स्व बिसास तास बिच धरि सिपाह ।
हो बिजई दिल्ली चलन हार, बिपरीत बन्यों भावी बयार[२१] ॥ ५६ ॥
ससि व्योम अष्टि१६०१सक लगत साल[२२], किय दैव अचानक अंतकाल[२३]
बारूद निलय[२४] पावक प्रवेस, दगि उडिय निकट दल ऊर्द्धदेस[२५] ।५७।
जाहीबिच दिल्लीनारि जार, छम[२६] सेरसाह३२किय नियति[२७] छार[२८] ॥
सुत ताको तदनु[२९] सलेमसाह३३।१, नृप सो हुव दिल्ली नारि नाह ॥
प्रभु रहिय अब्द वसु८यह परंतु, मक्खिग तव जिततित अरिन मंतु[३०] ॥

१ पांग (अजां) देनेवाले २ मार्ग चलनेवालों को भोजन ३ शय्या ४ फल देनेवाले वृक्ष ५ मार्ग के दोनों ओर ॥ ५० ॥ ६ सुन्दर ७ घोड़ों की डाक रखकर ८ फिरने में ॥ ५१ ॥ यह बादशाह तीन ९ वर्ष तक ही रहा १० प्राणों के रक्षक ११ कोट ॥ ५२ ॥ १२ स्त्रियें १३ सोना उछालते थे १४ मार्ग में १५ मनुष्यों के समूह ॥ ५३ ॥ १६ दुर्लभ ॥ ५४ ॥ शत्रुओं में रणथम्भोर को १७ बाकी देखकर १८ सेना सहित १९ भाग्य ने २० बदलादिया ॥ ५५ ॥ २१ भावी का पवन उलटा चला ॥ ५६ ॥ २२ सम्वत् में २३ मृत्यु हुई. बारूद के २४ घर में अग्नि पड़कर २५ ऊपर का देश ॥ ५७ ॥ २६ समर्थ २७ भाग्य ने २८ भस्म करदिया २९ जिसपीछे ॥ ५८ ॥ ३० अपराध ॥ ५९ ॥

याकेहिसमय सुरतान१८९।१अंध, बंधुन दिय नास१निकास २बंध३
गज उचित स्व वपु गुरुता१गिनी न, पटके धमकेहित इतर२पीन ॥
कति सचिव१दास२ताडित कराइ, श्रुति१नक२रहित कति नीसराइ
द्विज१आदि जनंगमें२अंतदेस, बिनु मंतु प्रजा लुट्टिय बिसेस ॥
चुंडाउत १४।१० राघव १८९।१ पग्घ चोरि, जिहिं लिन्न वरूँथनि
कुजस जोरि ॥ ६१ ॥

पग्घ हि रहै न यातें पँपंपि, चुंडाउत १४।१० कह्यो हठनचंपि ॥
आसापूरनि अर्चन अनेह, सामंत १८७।१ हनन धारिय सनेह ।६२।
सठ जो निज बलि अज देन सज्ज, किय ताहि सैन तस घात कज्ज
कह्हु अज मारन जब कृपान, पहिलैं सूचितके लेहु प्रान ॥ ६३ ॥
जो छंद्म तबहि सामंत१८७।१जानि, सुर्जनसमान१८९।१अवधान आनि
अरु सज्जि कह्यो कुलदेवि अज्ज, अज१थान इड२मंगत अकज्ज ६४
मैंजरठ१ततो मृदु२यह कुमार, है बाल बलिन परमोपहार ॥
नृपनंदन अक्खयराज१९०।१नाम, हो तत्थ अष्ठ८सम बय इगाम ।६५।
सो लिय उठाइ सामंत१८७।१सूर, दिन्नों उतारि काढि बाह्य दूर ॥
इम बचि तजि बंसी स्व भुज आस, पहुँच्यो सामंत१८७।१ सलेम
३३।१ पास ॥ ६६ ॥

रनथंभमाँहिं तिंहिं साह रक्खि, किल्लापति किन्नों उचित अक्खि ॥

हाथी के शरीर का १ बडप्पन नहीं देखा और केवल धमका सुनने के कारण २ अन्य ३ पुष्टों को गिराये "यह लोकोक्ति है" ४ ताड़ना शुरू करके कितनों के ही कान और नाक कटाकर निकला दिये ॥ ६० ॥ ५ चण्डालों को ६ अपने देश की सीमा में बिना अपराध प्रजाको लूटी ७ ग्राम का नाम है ॥ ६१ ॥ ८ कहकर ९ पूजन के समय ॥ ६२ ॥ अपनी ओर से बकरे को बलिदान करने को सज्जित हुआ उसी सामन्तसिंह को मारने का इशारा किया कि जब १० बकरा मारने को खड्ग निकाले तब ॥ ६३ ॥ उस ११ छल को १२ सावधान होकर ॥ ६४ ॥ मैं १३ बुड्ढा हूं. बालक की १४ बडी भेट है. अवस्था के १५ आगम में अथवा उत्सव में ॥ ६५ ॥ १६ बाहर निकाल दिया ॥ ६६ ॥

सह भट सतसप्रक७०० * पानपूर, रनथंभ रह्यो सामंत १८७।१ सूर
सक नव नभ सोलह १६०९ लगत साल, कछु †गद सलेम ३३किय
ग्रास काल ॥
नंदन तदीय फीरोज३४।१नाम, ग्वालेर गयो कछु सीघ्रकाम ॥६८॥
सुनि जनकमरन फीरोज३४।१साह, ग्वालेरहि बैठो पट्टगाहै ॥
आयो पितृव्य१ मातुल२ हु आहि, जग भनत मुबारकखान ३३।१
जाहि ॥ ६९ ॥
साहहिं कछु मासनमैं नसाइ, सो साह वन्यों वैरहिं वसाइ ॥
निज रक्खि मुहम्मद३२।२ अपर४ नाम, पायो अदलो३५।२पदं अघ
प्रकामैं ॥ ७० ॥
भानेज भंजि तस पाइ पट्ट, वच्छर१वह्यो सु कछु घटि कुवट्ट ॥
पहुँचत दह सोलह१६१० सक प्रमान, मिलि अरिन हन्यौं रन यह
अमानैं ॥ ७१ ॥
तब सेरसाह३२काका तनूजें, हुव साह सिकंदर३६।१प्राप्तपूजें ॥
इत आकुल बुंदियजन असेस, सुरतान१८९।१ सठहिं न चहैं नरेस
उपदोहा ॥
बुंदिय भट१ मंलिरन विविध, छन्नै दिय इम छदनें ॥
सुर्जन१८९।१इम सुरतान१८९।१सठ, करहु दूर१कै कदंन२ ॥७३॥
इष्ट सपथैं जुत लिपि उचित, सुर्जन१८९१ ते दल सकल ॥
कहि इम दिन्नैं रान कर, निरखहु सत्य १ कि नकल२ ॥ ७४ ॥
कह्यो रान सत्य १ कि नकल २, जानैं हम १ तुम२ जवहि ॥

* पूर्ण पराक्रमवाला ॥ ६७ ॥ कुछ † रोग से सलेम को काल ने अपना ग्रास किया ॥ ६८ ॥ १ सिंहासन के स्थान में २ काका का मामा ॥ ६९ ॥ ३ मारकर ४ दूसरा नाम ५ अदली (इन्साफ करनेवाला) पद पाकर ६ पाप की ७ विशेष कामना से ॥ ७० ॥ ८ एक वर्ष ९ कुमार्ग चलकर १० मान रहित वा अतोल ॥ ७१ ॥ काका का ११ पुत्र १२ पूजायोग्य ॥ ७२ ॥ १३ गुप्त १४ पत्र दिया कि हे सुरजन इस मूर्ख सुरताण को दूर करो; अथवा १५ मारो ॥ ७३ ॥ इष्ट के १६ सौगन सहित वे सब १७ पत्र ॥ ७४ ॥ यह सत्य है

कटके खरच मंगहु कथित, सो भेजैं मिलि सबहि ॥ ७५ ॥
कुंभिलमेरुहि लेख करि, पठयो धन मोप्रति[2]हुं ॥
तब मन्नी वह रीति तुम, रक्खि परक्खहु रतिहु ॥ ७६ ॥
सोहि लिखी तब सुर्जन १८९।१ हु, पृतना[4]के व्यय प्रमित ॥
वसु भेजहु जिम विस्वसाहिं[7], असु रच्छक गिनि अमित ॥ ७७ ॥
बुंदी जो दल वंचितहि, प्रचुर सचिव १ भट २ पिहित ॥
द्वैअयुत२००००न हुंडी दई, सुर्जन १८३।१ के संन्निहित[11] ॥ ७८ ॥
सुर्जन १८९।१ लहि व्यय वसु सब सु, मन्नि रान अनुमति[12]हुं ॥
इक्कसहस १००० दलैं[13] किय असह, तँहँ बुंदिय भटकति[14]हुं । ७९ ।
आरंभिय गृह आगमन, त्वरित साजि भट१तुरग२ ।
बुंदीके हरखे बिबिध, देस१[15]प्रकृति२पुर३दुरग४ ॥ ८० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ६राशौ वीतिहोलव-सुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडऽस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानान्तरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरिते चित्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहाज्ञया हड्डसुरताणस्य ताणाख्यभिल्लपल्लीं विजित्य मल्लिकाभिधभिल्लनिपातनम् १ दिल्लीन्द्रसम्राड्हुमायोः शे

कि नकल है सो तुम और हम जब जानें कि उन लोगों से १ फौज खरच मांगो ॥ ७५ ॥ २ मेरे पास भी धन भेजा था ३ प्रीति की परीक्षा करो ॥ ७६ ॥ ४ सेना के खरच के ५ प्रमाण ६ धन भेजो ७ विश्वास करेंगे ८ प्राणरक्षक जानकर ॥ ७७ ॥ ९ बहुत १० गुप्त. सुरजन के ११ समीप ॥ ७८ ॥ राणा की १२ सलाह मानकर १३ सेना. बुन्दी के १४ कितने ही उमराव ॥ ७९ ॥ १५ अमात्य आदि राज्य के प्रधान पुरुष ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के षष्ठ राशि में अग्निवंशी राजाओं की व्याख्या के बीज हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृत्तांत की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के राजा सुरताणसिंह के चरित्र में चित्तोड़ के स्वामी महाराणा उदयसिंह की आज्ञा से हाडा सुरताण का ताणा नामक भिल्लों के गांव को जीतकर मल्लिक नाम भील को मारना, बादशाह हुमायू का शेरखां यवन से बङ्गाल में पराजय पाकर आगरा शहर में सेना इ-

रखांयवनाद्वङ्गदेशे पराजयमवाप्यार्गलापुरे कटकमाहृत्य कान्यकुब्ज जनपदसमरे स्वविजयानिश्चया दन्तर्वत्न्या निजपत्न्या सहावाचीका ष्ठाया वायुकोणपलायन २ वस्वङ्कबाणविधु (१५९८) वर्षस्योर्जेपा रसीकेतिहासमताद्रूमरकोटप्रदेशेऽकबरप्रादुर्भावकथन ३ ईरानेशमा सपाभिधसम्राजो दलदानेन हुमायोर्निजजनपदाकारण-शेरखांयवन स्यास्मिन्नेव शरदि शेरशाहाभिख्यया दिल्लीन्द्रङ्गपालन ४ शेरशाहराज्य प्रशंसापूर्वकरणतभँवरदुर्गविजयानन्तरं शशिखरसविधु (१६०१) व र्षे वन्हिचूर्णसद्मदहनाच्छेरशाहमरण ५ शेरशाहसूनुफीरोजसम्राजः कतिपयमासान्तरेण तन्मातुलमुबारकशाहसाम्राज्यासादन ६ भा- गिनेयहन्तृमुबारकशाहस्य शत्रुकरकर्तन ७ शेरशाहपितृव्यपुत्रसिक न्दरस्यसाम्राज्यासादन ८ बुन्दीन्द्रसुरताणापाकरणार्थं सैन्यसंप्रेष णेन चित्रकूटाद्बड्डसुरजनाह्वाने द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥ आदितः पञ्चा शीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८५ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहीं करके कन्नोज की लड़ाई में अपना विजय न दीखने से गर्भवती अपनी स्त्री के साथ पश्चिम दिशा की ओर वायुकोण में भागना, संवत् १५९८ के कार्तिक मास में पारसी तवारीखों के मत से ऊमरकोट में अकबर का पैदा होना, ईरान के बादशाह तामसपादशाह का फौज देकर हुमायू को अपने देश में बुलाना और शेरखां यवन का उसी वर्ष में शेरशाह नाम से दिल्ली का राज्य करना, शेरशाह के राज्य की प्रशंसा के साथ रणतभँवर किले को फतह करने के बाद संवत् १६०१ में बारूद से मकान जल कर शेरशाह का मरना, शेरशाह के पुत्र फीरोजशाह के कितनेक महीनों के बाद उसके मामा मुबारकशाह का बादशाहत लेना, भानजे को मारनेवाले मुबारकशाह का शत्रु के हाथ से मरना, शेरशाह के चचेरे पुत्र सिकंदर का बादशाह होना, बुन्दी के राजा सुरताण को दूर करने के लिये सेना भेज कर चित्तोड़ से हाडा सुर्जन को बुलाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से एक सौ पच्चासी मयूख हुए ॥ १८५ ॥

इक१हायन[1] ईरान इत, सु रहि हुमायौं३१।१ साह ।
स्वस्थ[2] भयो अवलंब सुभ, लहि तँहँ मासप१लाह ॥ १ ॥
तह मासप पुच्छिय तहाँ, कौन[3]प्रजा१ मत[4]२ कोन ।
उत्तर दिय हिंदू उहाँ, दीन[5] जुदे हम दो२ न ॥ २ ॥
साह कहिय तिनकी सुता[6], निज पुत्रन परिनाइ ।
अप्पनकरि दैभूँ अधिक भूमि रूँपहु तरु भाइ ॥ ३ ॥
तँहँ मासप इम अक्खि तस, सैन्य अयुत१००००दिय संग ।
ताबिच चउ४भट मुख्य तिस, जयकारक हुव जंग ॥ ४ ॥
कंदहार१काबल२करहु, अक्खिय प्रथम अधीन ।
इम धरि दिल्लिय३पट्ट इहिं, प्रकटावहु जस पीन[9] ॥ ५ ॥
भाखि इम सु चउ४निज भटन, सह अनीं[10]कि दै सत्थ ।
बाबर३०सुत सिर कर[11] बिरचि, अक्खिय अद्धहु अत्थ ॥६॥
सो तस माहपसाहके, प्रभुपन पाइ प्रसाद[12] ।
मुख्यो हुमायौं३१।१पुब्ब१मग, बिजित करत प्रतिबाद[13] ॥ ७ ॥
सब भ्रातन बहिकाइ सठ, अनुज कामराँ३१।२अग्ग ।
पंजाब१रु काबल२प्रमुख, दब्बे मुलक उदग्ग[14] ॥ ८ ॥
कामराँ३१।२रु गदरू३१।२कलह[15], तिमफलान३१।४ए तीन३ ॥
इद निजनिज जय सद्धि हुव, न्यारे तखतनसीन ॥ ९ ॥

एक १ वर्ष, मासपशाह का शुभ आधार लेकर २ स्थिर चित्तवाला हुआ॥ १ ॥ उस मासपशाह ने पूछा कि ३ हिन्दुस्थान में प्रजा कौनसी है और उसका ४ धर्म क्या है इसके उत्तर में हुमायों ने कहा कि वहां प्रजा हिन्दू है. जिसका ५ धर्म जुदा है, परन्तु हम और वे जुदे नहीं हैं ॥ २ ॥ मासपशाह ने कहा कि उनकी ६ पुत्रियें अपने पुत्रों को व्याह कर अपने कर लो और अधिक ७ भूमि देकर जिसप्रकार भूमि में ८ जड़ जमाकर वृक्ष रुपते हैं तिस प्रकार रुपो ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ यश को ९ पुष्ट करके प्रकट करो; वा पुष्ट यश प्रकट करो ॥ ५ ॥ १० सेना साथ देकर ११ खिराज नियत करके कहा कि आधा यहां भेजाकरो ॥ ६ ॥ १२। प्रसन्नता पाकर १३ विरोधियों को विजय करता हुआ ॥७॥ १४ उदग्र (निरंकुश) होकर ॥ ८ ॥ १५ युद्ध ॥ ९ ॥

कंदहार१कावल२कथित, पहिलै लैन प्रमानि ।
चल्यो हुमायौं३।१।१जय चहत, अनुजन सिर रिस आनि ॥१०॥
तह मासप दिय संग तिन्ह, नामहु राम२०३।४नरेस ।
सुभट चउ४न जानहु सुमति, इहाँ जनश्रुति एस ॥ ११ ॥

अविषमपयोधरा ऽष्ट८डगणालीलावती ।

जखमी अवदुल्लाखान१प्रथम१निज बलि दूजो२बहराम२बली ।
तीजो३सु अलाउद्दीन३चउम४तिम खांनजिहाँ४किय भीर भली।
तह मासपके असवार अयुत१००००तिम पंचसहँस५०००निज
कटकं करे ।
इम कंदहार१कावल२धर अंगमि धुर धर प्रति रनविजय धरे।१२।
गदरू३।१।३अभिधानक तास अनुज इक१भ्रातहि अग्रज१पयन परयो
मन१वचन२काय३करि सासन सिर धरि लुनत अरिन रन अ-
ग्ग लरयो ।
जयसाधक जानत हुलसि हुमायौं३।१।१लघु गदरू३।१।३हिय लाइ लयो
दुहिता ताकी सन अतिमँह अप्पन अंगज अकबर१व्याहिदयो ।१३।
अग्रज१जय सह्त ताहिसमय कहुँ आयो कामहु अनुज२यहै ।
करि हिय तस चिंता साह हुमायौं३।१।१हत वत हाहा हानि कहै।
अतिवल लखि अग्रज१आइ सरन अब कामराँ३।१।२हु इम प्रनतिकरै
प्रभु माफ खता करि देहु अभयपद अब हम अनुचर पयन परैं ।१४।
रीझत सुनि अग्रज गो तस डेरन कामरान३।१।२ सिर नाइ रह्यो ॥
इक१ बीजैं जनम इम अश्रुन आकुल गाढ हित सु दुहुँ२ओर गह्यो

१ छोटे भाइयों पर क्रोध करके ॥ १० ॥ यह २ दन्तकथा है ॥ ११ ॥ ३ सेना ॥ १२ ॥ गदरू ४ नामक. शत्रुओं को ५ काटता हुआ. उस गदरूकी ६ पुत्री से ७ बहुत उत्सव के साथ अपने ८ पुत्र अकबर का विवाह ॥ १३ ॥ ९ अपराध क्षमा करके ॥ १ ॥ कामराँ मस्तक १० झुकाकर रहा. एक ११ वीर्य से जन्म हुआ था

वलि हठलह बिन्नति कामराँन३१।२करि मक्का निवसि १ एह मर्यो
अनुजात न लग्गो चोथो४चरनन करि रन सो गहि अंध कर्यो ।१५।
सुव काबल१आदिक लरि छ६समाँ लग जित्ति हुमायाँ३१।२अधिप भयो
इतकोँ पुनि आयउ दिल्ली२ऊव्वन लरि मग जिततित विजय लयो
सज्जित सादी१गन पंद्रह सहँस१५०००३ पत्ति२प्रवल बहु सहँस बढे ॥
इततैंहु सिकंदर३६।१तजि घरचंदर चल्लिय पुनि दुव२लरन चढे ।१६।
सरहिंद सीम डिगघोर समर हुव सुर७सिकंदर३६।१ भीत भज्यो ॥
सुव जित्ति अरिन हनि आइ हुमायाँ३१।१दिल्लीपट्ट सु प्रीत भज्यो ॥
सिव सोलह१६११लग्गत विक्रम संगत जित्ति सिकंदर३१।२जुद्ध जई
लरि इम बाबर३०सुत दूजी२वेरहु अतिबल दिल्लिय जीतिलई ।१७।
पच्छो ईरान कटक सब पठयो कहत रह्यो बहराम १ किते ॥
अकबर१छत हुव बहराम२सु ओरहु जंपत इम दुव२गिनत जिते ॥
सो बहुरि खानखानाँ नवाव ताको पहु तातहि बहुत भनैं ॥
विधि सत्य किमहु कछु होहु हमहिँ हठ नैंक न वर्णनमात्र बनैं ।१८।
वलि इम अज्जनसुव अकबर१ जन्महु वंधू विदित बघेलनके ॥
भजि सेरसाह ३२।१भय गर्भवती गय हुरम तहाँ विनु हेलनके ॥
हुव तत्थहि अकबर१जन्म सुहात बघेलहिँ मातुल कहतहुतो ॥

इस कारण मक्का में १ निवास करके मरा. चौथा २ छोटा भाई चरणों में नहीं लगा इस कारण उसको युद्ध में पकड़कर अन्धा करदिया ॥ १५ ॥ छः ३ वर्ष लड़कर ४ सज्जकर ५ सवार ६ पैदल ॥ १६ ॥ ७ युद्ध ॥ १७ ॥ ८ पिता ॥ १८ ॥ ९ आर्यावर्त में १० विना अपराध. अकबर * बघेलों को ११ मामा कहता था

* अकबर का जन्म हिजरी सन् ९४९ तारीख १४ शावान मुताबिक विक्रमी सम्वत् १५९९ मार्गशिर शुक्ल पूर्णमासी को ऊमरकोट में हुआ था सो अकबर जौहर की किताब "तज्किरतुल्वाकिआत" से सिद्ध है इसमें कई फारसी तवारीखों में भी मत भेद है, परन्तु आधुनिक विद्वानों के मत से उपरोक्त लेख ही सत्य मानागया है जिसका अधिक वृत्तान्त विस्तार के भय से लिखना छोडदिया है, परन्तु अधिक प्रमाण देखने होवें तो "अकबर के जन्म दिन में सन्देह" इस नाम की उदयपुर के कविराजा श्यामलदास की बनाई हुई किताब में देखें, यहां मामा कहने का प्रमाण लिखा सो तो रक्षाबन्धन से भी होसक्ता है अर्थात् खुरम की माता भीमसिंह शापीदेयी के राखी बांधती थी इसकारण टोंडा के राजा भीमसिंह को खुरम मामा कहता था, ऐसा ही कारण यहां भी होवेगा ॥

सतकार अधिक करि भूप बघेलहि मन्यों किम*बिनुहेतु सुतो॥१९॥
†गदि इम मतभेदहु काति गति नावहिं समुझहु संभव है सु सबै॥
है बिजई हूजीअंदर हुआयौं३।१ तिम लिय दिल्लियतख्त तबै॥
हुंदिय भट१लखिबत्न भेजि२इत सधंन बुल्लिय सुर्जन१८९।१बेग बली।
सो रान उदयं अनुमत लहि सत्वरं हुव नय हंकिय तेग बली॥२०॥
तव नृप सुरतान१८९।१हिं ओग बिमानहिं पहुँचत थानहिं सुद्धि परी
पुच्छिय तव पंचन पिहितं प्रपंच न कारनं रंचं न आत अरी॥
दिय उत्तर पंचन आत सुरपपुर रक्षादंताके दरसन॥
जन संदित्पुरपहुर आत कहिय जउ क्यौंआवत अब जंपहु जन
भट१लखिबत्न भाखिय तातं१ पितामह२चौरन अर्चत आत यहै॥
दारि पूजन ऐहै बहुरि न ऐहै हित निज व्हैहै सकल कहै॥
जितनैं प्रभु पट्टनि चलहु नतो जन नाहक दोउरन कोप करैं॥
जर्ड जड लिलि जुज्झैं बिहितं न बुज्झैं प्रभु तव इत१दोउ२द्रोहपरैं
गदि इम सुरतान१९८।१हिं लै सव पट्टनि नृप जडपन जसकरन गए॥
भट तहँ सव पासन लहि लहि सिक्ख रु भोनन कंछुमिस आतभए॥
अवसेसंन अक्खियं तटिनी चम्मलि परतट बिबिध सिकार बनैं॥
चढि नाव तुनत नृप परतट चल्लिय संग न हुव तव स्वजन सनैं॥२३॥
अर्द्धी तटिनी पहुँचत नृप अक्खिय भटवर आवहु क्यौं न भलैं॥
ऐसे प्रभुवेनुहि भले तिन अक्खिय चलहु तुमहिं हम नाहिं चलैं॥
गिनि तव छल सव वदंन बिगारत सिटि परतट सुरतान१८९।१गयो
भूपतिके अनुमंतमैं जोजो खलजन हो सोसो संग भयो॥२४॥

* बिना कारण उनका मान क्यों बढाया॥१९॥ इसप्रकार मतभेद † कहकर १ धन भेजकर महाराणा उदयसिंह की २ सम्मति लेकर ३ शीघ्र॥२०॥ थांवला नामक ग्राम पर आये ४ खबर हुई ५ गुप्त ६ तुच्छ शत्रु के आने का कुछ भी कारण नहीं है॥२१॥ ७ पिता और दादा के दग्ध स्थान पर बनेहुए स्थानों को पूजने आता है ८ मूर्ख मूर्ख मिलकर लड़ेंगे ९ वञ्चित॥२२॥ १० बाकी रहे जिन्होंने कहा ११ चामल नदी के परले किनारे॥२३॥ १२ मुख बिगाड़कर १३ सलाह में॥२४॥

इत बुंदी आतहि*राजनिलय रहि कछुदिन सुर्जन१८९।१कछु न कही
पंचम५दिन अक्खिय चंद्राउति१८६।३प्रति†सुतगति सबन न जात सही
जंपिय पुनि पंचम सुत ढिग जावहु भूपति हम सुर्जन१८६।१हि‡भज्यो
कहि इम वह कढ्ढिय पुनि तस परिजन लोक सकल हुव संग लज्यो
सहँस१रु सत्तल२सुत जँहँ विक्रमजुत पहिलैं अरि हनि उभय२परे ॥
कढ्ढी सुरतान१८९।१प्रसू तदनंतर क्रम परिजन सब संग करे ।
सिसु अक्खयराज१९०।१कुमार सहित लजि पुत्रबंधू निज संग लई ।
इम धावँर१धाई२आदि स अनुगँ३न भूपप्रसू कढिजातभई ।२६।
बुंदी नारायन१८७।१के कुलतैं वचि कुल नरवद१८७।२भव स्वामि
करयो ॥
धरनींपति सुर्जन१६०।१सक सिव सोलह१६११वैठि तखत छँम
छत्र धरयो ।
लखि सब अनुकूल सुभट१सचिवा२दिक अनुग३अवधि हिय
लाइ लये ।
निजनाम पटा करि सबन निवेदि रु हढाहित कछु कछु अधिक दये२७
भ्राता भटसिंह१८९।१रु मान१८९।१रु भैरव१८९।१भीम१८८।२रूपु
र१८८।३रुमोकल१८८।४भवँ ।
इन्ह जैतगढ१रु हिंडोली२अप्पिय जक्खमूल३जुत दान सजँवं ।
चुंडाउत१४।१०राघव१८९।१सादर चाहत बुल्लि बरुंधनि४द्रंग दयो
कुंभकरन१८८।१सुत जगमाल१८९।१उदय१८६।३कुल पिप्पलदा
४पति नृपहिं नैंयो ॥ २८ ॥
बंसीं६पुरपति सामंत२८७।१बुलायउ जिहिं रनथंभ तज्यो न जई ।

---

* राजगृह में रहकर तुम्हारे † पुत्र की गति सब से सही नहीं जाती. हमने सुर्जन को राजा‡किया हैं १७ अपने लोक ॥ २५ ॥ जिस पीछे सुरताण की १माता को निकाली २ बेटे की बहू को ३ धाऊ४ सेवकों सहित ५ राजा की माता ॥२६॥ ६ भूपति ७ समर्थ ८ सेवकों तक ९ अपने नाम के पट्टे करके सबको दिये ॥ २७ ॥ १० पुत्र ११ शीघ्र १२ झुका ॥ २८ ॥

वं सदारी७दै वह मेव१८७।१बुलाइ रु माहिप मिल्यो बनि मोदमैई।
नवगाम९अधीस दलेल१८८।१तनय जगमाल१८९।१बुलाइ मि-
ल्यो हि तज्यौं ॥
आयउ गैनोली९पति लालाउत१०६रामसाहि१८८।१ प्रनम्यौं
हितज्यौं ॥ २९ ॥
नवन्नह्म१८५।२जननैं संग्राम१८९।१अपर४लालाउत१०६ठिकर१०
पति हु नम्यौं।
पट्टु कीरातिसिंह१८८।१लाडपुरा ११धिप नंमत भरत१८७।१सुतसो
क सम्यौं।
इत पित्थल१८९।१गंग१८८।१तनै थिरराजपउत्त६१५अनथड़ा१२
पतिअैसैं।
कोटा१३बिनु सुनि राघव१८७।१सुत कन्ह१८८।१हु जैताउत ६।२बु-
ल्लिय जैसैं ॥ ३० ॥
हरपालपउत्त५।१जु जज्जाउर१४पति आयो भीम१८७।१तनै सु
हरी१८८।१।
क्रम सब इत्यादि सनाभिनैं कर जोरि निछावरि१नजरि२करी।
हल्लपउत्त४पंच५हि कुल हाजरि हत्थ१८१।२रु मोहन१८०।११घुग्घु-
ल१८१।१हर३।
इम सब सगोत१असगोत्र२आइ धरनीधरके हुव सासनधर॥३१॥
सह तिय दुव२सोदरजननी चउ४पतनीजुग२जुत्त चित्तोर सनहु।
बुल्लिरु दुव२बंधुन दाय उचित दिय ध्रुव दुव अयुत२००००पटा१
रु धन२हु।
अक्खयराज१८९।२हिं तँहँ पट्टनि१अप्पिय राम१८९।३हिं माटुंदा२
सुरीति॥
सचिवादिइतर९ सब अप्पि उचित अरुपहु विस्वासे सहित प्रीति।३२।

१ अय २ प्रसन्न होकर ॥ २९ ॥ ३ वंश ४ अन्य (दूसरा) ५ शोक मिटाया ६ स्थिरराजपोते ॥३०॥ ७ सपिण्डी ॥ ३१ ॥ ८ वंट (दायभाग) ९ अन्य ॥ ३२ ॥

विनुभुव राघव१८७।१सुत कन्ह१८८।१हिं विक्खि रु कोटा गंजेन मंत्र किyउ।
लखि दृढ भट१सचिवरन किय तब बिन्नति रहहु अवहि नवराज्य लियउ।
कन्ह१८८।१हिं तब सुर्जन१९०।१अप्पि जयस्थल१लै दैहैं कोटा २ हु कह्यो।
पै तिहिं बालिसपन जंपन निजजन लेहु लरहु सुनि चपल चह्यो ३३
जुब्बन मदकरि प्रभुसासनबिनु जँहँ सत हुव२००मेद१रु सवर१सजे:
ग्राम चिपँथ चम्मलि उत्तर निस गय सृध करि कोटा लैन भजे ॥
जवनन यह जानी पहुँचत पुब्बहि भट अतिमानी समुद भये।
राघव१८७।१सुत कन्ह१८८।१समेत मिलत रन मिल्ल१रु मेद२भजाइदये ॥ ३४ ॥
माहिप सु सुनि अक्खी जैसे हैं जन१तैसे सुहृद२सहाय मिलैं।
जयथल इम जंपि रु छिन्निलयो उभैं दहुरि न झुल्यो खीजैं खिलैं[१२]।
जब नृप चित्तोरहिं जात जाजपुर दूजे२दिवस मुकाम दयो।
निज गुरु सिखयो तँहँ एक बनिक नमि भूप सरन लहि अनुगैं भयो३५
नृपके कर१चरन२नरेखा निरखि रु गुरु यह भावी भूप भन्यौं॥
बनिक सु नारायन१नाम२रु जाति३खटोर२सु सुनि नृप अनुग बन्यौं।
बुंदी अब आइ रु गद्दी बैठत कोविदँ बनिक सु सचिव करयो।
तँहँ दुलहनि तीजी३चिमनकुमारि१९०।३चालुक सूरसुता दहुरि वरयो ॥ ३६

१ देखकर २ कोटा को विजय करने की सलाह की. आपने बुन्दी का राज्य ३ नवीन लिया है इस कारण अभी ठहरो ४ मूर्खपन से ॥३३॥ ५ मीणा ६ भील ७ ग्राम का नाम है ८ युद्ध करके ॥ ३४ ॥ ९ मित्र १० समर्थ ने ११ क्रोध करके १२ बाकी. अपने गुरु का १३ सिखाया हुआ १४ बनिया (वैश्य) १५ सेवक हुआ ॥३५॥ १६राजा के चरण और हाथों की रेखा देखकर गुरु ने कहा था कि आनेवाले समय में यह राजा होवेगा १७ उस चतुर बनिये को १८ प्रधान किया ॥३६॥

दूजीकै सुत हुव२*भूत हठी जुतासिंह१६०।२रु दौलतसिंह१९०।३भन्यौं
गंगा१८९।३कछवाही तीजी३के सुत अक्खयसिंह१९०।४चउत्थ४ंगयो
बीसम२०इम च्यारि४नतैं हि वढ्यो कुल राम२०।१६जिहिं नाम बयो
सुरतान१८६।१कुमार जु अक्खय१६०।१ सूचिय कुल तस अवसर
भावि कढ्यो ॥

सुरतानपउत्त२१।१७तथा इकबीसम२१विदित सु छह६१न भेद बढ्यो
बैठो सुरतान१८९।१तखत सुर्जन१९०।१सुधधीधन तासहि छत्र धरयो
पीढिन संख्या१८९।१सन नृपति नाम पर एक१ अंक इम अधिक
१९०।१ परयो ॥ ४२ ॥

तनया हु भई सुर्जन१९०।१कै तीन३हु जेठी पूरकुमारि१९१।३जहाँ
सो भोज१९१।२ स्वसा दूजी२लालकुमरि१९१।२तीजी३मदनकुमा-
रि१९१।३ तहाँ॥

अनुजाँ हुव२जामि अनूढ मरी तिनकी जननी न कहीं तासौं ॥
सुभ गुन इन सुर्जन१९०बुंदी बैठि तप्यो सबके सिर सुखमासौं ॥४३ ॥

दोहा ॥

इत सिटाइ सुरतान१८९।१ अरु, छमपर्न बिनु मन छिज्जि ॥
पलटी समुझी सब प्रजा, खल दुर्बल जिम खिज्जि ॥ ४४ ॥
जननी सुत१ पतनी२ जुत सु, सब निज बस लै सत्थ ॥
पहुँची पुरतट पुत्रपँहँ, जठरँहिं निंदत जत्थ ॥ ४५ ॥
मनकरि१भुव इच्छत कुमति, विक्रम करि२ सु बिगोइ ॥
गज१हु बैठि न सकै गरुवै, हयारूढ कब होइ ॥ ४६ ॥

* हुए † कहा ॥ ४१ ॥ १ समय पर २ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसा सुरजन सुरताणसिंह के पाटपर बैठा ॥ ४२ ॥ ३ भोज की बहिन ४ दोनों छोटी ५ बहिन ६ बिना विवाही मरीं ७ परम शोभा से ॥ ४३ ॥ ८ बिना समर्थपन के ॥ ४४ ॥ ९ अपने पेट की निन्दा करती हुई ॥ ४५ ॥ १० पराक्रम से खोई हुई भूमि को वह मूर्ख मन से चाहता रहा ११ शरीर से मोटा होने के कारण हाथी पर भी नहीं बैठ सका था सो घोड़े पर सवार कैसे होवे ॥ ४६ ॥

चंद्रावति दुर्जन चविय, रे कुबुद्ध अन रोह ॥
हमरी सिरक्ख गिनी न हित, है फल बीजहिं वोइ ॥ ४७ ॥
खिजि तिमहि सोलंखिनी, रानी कहिय कुराज ॥
अप्प गजानन हुंद पह, कित सरिहो अप्पु काज ॥ ४८ ॥
अब तुनकों रहनों उचित, हुंबीहारहि पेग ॥
अतिबल मैं न सहैं इभहु, तव कहते मल तेग ॥ ४९ ॥
सुरिंधिं जिमजिम स्वजन, इलइल कहि जस याहि ॥
पट्ठ तिमतिम छिज्जपेपरैं, किमकिम सहँ काहि ॥ ५० ॥
सुत्त दिगारि कुंदीमहिप, परतट्ट इन पछिताइ ॥
सु तकि बंधु खिचि१३न सरन, प्रत्तो तँहँ दुख पाइ ॥ ५१ ॥
बिजल कोप ऐसो कुबुध, करत सुन्यौं नन कोहु ॥
गहत सिक्ख जिहिं अरि गिनी, जननी१अरु तिय२जोहु ॥ ५२ ॥
जाइ लऊ पुर हड्ड६१ जिहिं, रायमल्ल नरराय ॥
मनु किन्नौं खिचि१३ प्रथित, कुंजर भर गुरुकाय ॥ ५३ ॥
पुर बरोदको परगनौं, सुरतान१८९हिं दै सूर ॥
रायमल्ल तँहँ रक्खयो, दोषंटरयो लखि दूर ॥ ५४ ॥
जवनन कोटा लिन्न जब, परतट्ट सेसैं प्रदेस ॥
इक्कैं खिचि१३न तिन दिनन, विनु रविमल्ल१८८१बलेसं ॥५५॥
पहिलैं छिन्नि बरोदपुर, अब पच्छो तिहिं अप्पि ॥
खिची३१ रक्खिय हड्ड६१ खल, थल निवाहँमित थप्पि ॥५६॥

१ उदास मनसे कहा ॥ ४७ ॥ २ हे खोटा राजा आप हल ३ गणेश के समान दंत वो ४ आप के लिये कहाँ सरोगे ॥४८॥ तुम कहते थे कि मैं ५ बड़ा पकवान् हूं, सो मेरा खड्ग ६ हाथी भी सहन नहीं करसकता ॥ ४९ ॥ ७ अपने लोक ज्यों ज्यों तोड़ते थे ॥५०॥ ८ चाम्बल नदी के पार. खीचियों को भाई जानकर उनके शरण ९ गया ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० प्रसिद्धस्वामि किया ११ हाथी के बराबर १२ बड़े शरीर वाले उस सुरताण ने ॥ ५३ ॥ १३ अपना दायभाग छूटा हुआ देखकर ॥५४॥ चाम्बल के पैले किनारे का १४ पार्श्व का प्रदेश १५ .... नामक पर्वत के पति सूर्यमल्ल बिना ॥५५॥ १६ निर्वाह के लायक छोटा स्थल देकर ॥५६॥

तत्थहु लघु नृप कतिक हुते गनिकागति हाजरि ॥
मिरजानृप हमपाँहिँ कहिय इम तिनहु लोभ करि ॥
भगवंतभूप आमेरइन हीरकुमारि तनया तबहि ॥
अधिराज मुगलसुत अकबर३७।१हि व्याही निगम बिरोध वहि ॥७॥
तबहि १ धवहि२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

कुमर हुतो भगवंतकै, धरत मान १ अभिधान ॥
अकबर३७।१ सालक होयहै, बालक व्याह बिधान ॥ ८ ॥
अज्ज १ नृपन जवनन२न यहै, पुत्रिन व्याहन पंथ ॥
पारयो नृप कूरम प्रथम१, लोभ दुलभ गिलिँ ग्रंथ ॥ ९ ॥
किते कहत पुब्बहु पहुन, दुहिता कहुँ कहुँ दीन ॥
पै बिसेस लिखित१ न प्रकट२, है प्रमानकरि हीन ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

अज्ज अधिप१ अकबर ३७।१हि गंजि सब पथन लगाये ॥
अज्जन नियम अनेक जत्थ अकबर ३७।१ हि जगाये ॥
किते नियत ते कष्ट जिहाँगीर १८।१ हि कृत जंपत ॥
पै नन अग्गैं प्रसंग सबन सासक मिच्छन मत ॥
नवरोजँ गमन नारिन १ नियत ढिग असज्ज राजन रहन२ ॥
तबतैं प्रवृत्त अज्जन तुलत विधि इति सुख आजू वहन ॥ ११ ॥

---

१ वहां छोटे राजा थे उन कितनों ने ही वेश्या की भांति २ आमेर के राजा ने ३ वेद का विरोध करके ॥ ७ ॥ ४ भगवन्तसिंह का पुत्र मानसिंह नामक था ५ इस व्याह के विधान से ॥ ८ ॥ ६ आर्य्य राजाओं से यवनों को पुत्रियें विवाह ने का मार्ग कछवाहे राजाने यह प्रथम ही किया, दुर्लभ लोभ के कारण ८ धर्मशास्त्र आदि ग्रन्थों को ७ निगलकर ॥ ९ ॥ कितने ही कहते हैं कि पहिले भी ६ राजाओं ने कहीं कहीं १० पुत्रियें दी थीं परन्तु उनका यह कहना ११ प्रमाण रहित है क्योंकि ऐसा लेख प्रसिद्ध नहीं हैं ॥ १० ॥ १२ आर्य्य राजाओं को १३ निश्चय ही १४ जहांगीर के किये हुए कहते हैं १५ आगे इसका प्रसंग नहीं है १६ नौरोजों में स्त्रियों का जाना १७ लज्जाहीन होकर राजाओं का बादशाहों

खज्जूरि१सासक खेम१८८।१सुत भरतेस१८९।१दास१८९।२दु-
भ्रात यों ।
जज्जाउरा१२धिप भीम१८७।१सुत हरिसिंह१८८।१गव्वतं जात यों ।
हल्लू१८२।१कुलाधिपं लक्ख१८९।१सुत डभ्भी३स भीम १९०।१
बली हुतो
हम्मीर१८९।१नंदन हत्थ१८९।२कुल संग्राम१९०।१खिन्नं४पती
सुतो ॥ २६ ॥
पुनि नोहनोत्तप्रताप१८६।१देव१८८।१तनूज वच्छोला५पती ।
तेजल१८९।१सुत हरि१९०।१नेमडा१६धिप घुग्घुलोत्त१तनीं तती ।
इत्यादि भ्रात गनें सनां[6]इसगोत्र२अलपहु उप्फनें ।
अलगोत्र३जे भट अग्ग आक्खिय जोध त्यौं तिनके जनें ॥२७॥
कुंडीस रक्खि स्व पिट्ठि यौं इतके प्रवीर बडे बली ।
महिपाल पुँव्वहि नीति मिच्छनपं इती कहि मुक्कली ।
रविमल्ल१८८।१मरतहि सून्य भू सुरतान१८९।१बाल विचारिकैं ॥
ताके प्रमाद दई तुम्हैं सु छवीस२६हायनं हारिकैं ॥ २८ ॥
अब सांई[11] जग्गिय प्रान लै तुम चोर२भग्गहु अज्जही ।
करनौं[12]ससकि ततो विलंब न होउ सम्मुह कज्जही ।
सुनि एह केसरखान१डागरखान२हंकिय सम्मुहे ।
छमं[13] ज्यौं भुजंगम होत सम्मुह मंत्रवादिन पैं छुहे[14] ॥ २६ ॥
रन भू भदानां ग्रामतैं दिस पुव्व कोस[15]१मिता रही ।
बल द्वै२मिले तँहँ तेग उत्कट वैग द्वै२ दिसतैं वही ।
इक१जाम आक्खिअनूरु[16]सौं रथ रोकि इक्खहु अक्कमो ।

१ गर्व करता हुआ २ कुल का स्वामि ३ खीरया नामक ग्राम का पति ॥२६॥
४ विस्तारी ५पंक्ति ६ सपिण्डी ॥२७॥ ७ पहिले ही ८ सूर्यमल्ल के मरते ही ९
आलस्य अथवा उन्मत्तता के कारण १० छव्वीस वर्ष पर्यन्त ॥२८॥ ११ अब सा-
हूकार जगा है सो तुम चोर भागो १२ युद्ध करना है तो १३ समर्थ सर्प के
समान १४ स्पर्श किया ॥२९॥ १५ एक कोस १६ अनूरु नामक सारथि से एक

धरनी मचक्कत धक्क लगि नागेस को नत नक्कभो[1] ॥ ३० ॥
पलचार[2]१भैरव२जुग्गिनी३सिव४सक्ति५नारद६पाहुँने ।
लघु[3] आइ इच्छित पाइ वाह कहैं नहैं सिर लै लुंने[4] ।
बचिबो नवंछत जवन-जे झटकेनमैं झटके[5] झुके ।
कटकेसलौं[6] बटके[7] बनावत रंगमैं भट के रुके[8] ॥ ३१ ॥
नृपके चमूपति मान१८९१भ्रात तुरंग सम्मुह नक्खयो ॥
किय रुंड केसरखान१सिर तस चिल्ह१गिद्धरन चक्खयो ॥
असि झारि डागर२मानके[9] सिर मान१८९१के सिर एकही ॥
करि रुंड तिहिँ निजभ्रातलौं बलकी कथा खल के कही ॥३२॥
गिरि सीसहीन हु मान१८९१ कछुखिन भानै ज्यौं[10] हनतोभयो ॥
गैनोलिसासक रामसाहि१८८१सराहि डागर२पैँ गयो ॥
दुवख्वीर जुत रहि दाव कै झटके[11] परस्पर दै झरे ॥
बर अच्छरी दुलहीन डागर१रामसाहि२उभै३वरे ॥ ३३ ॥
मिहराव मिच्छ भतीज ह्वाँ बढि घोर संगर मंडयो ॥
भट स्वीय१भग्गत थंभि गन परकीय[12]२खग्गन खंडयो ॥
जज्जाउराधिप[13] भीम१८७१सुत हरिसिंह१८८१कौं हनि मिच्छजो ॥
अधिराज सोदर राम१८९३पैं गय अप्प प्रान अनिच्छ[14] जो ॥३४॥
जिहिँ कुंत[15] मारिय सत्रुपैं सहि सो खिजे बढि संभरी ॥
करवालदै[16] अरिकंधरा[17] धरतैं जुदी लरतैं[18] करी ॥

पहर पर्यंत रथ रोकने को सूर्य ने कहा. शेषनाग की १ नासिका झुकगई ॥३०॥ २ मांस खानेवाले ३ शीघ्र आकर ४ कटेहुए मस्तकों को लेकर ५ शीघ्रताकरके खड्गों के प्रहार में लगे ६ सेनापति तक ७ टुकड़े करतेहुए युद्ध में ८ कितने ही वीर रुके ॥ ३१ ॥ ९ मानसिंह के मस्तक पर घमण्ड के साथ एक खड्ग मारा ॥३२॥ १० जिसप्रकार चेत सहित मारे तिस प्रकार मारता रहा ११ खड्ग ॥ ३३ ॥ १२ शत्रुओं के वीरों को १३ जज्जाउर के पति १४ अपने प्राण की इच्छा नहीं करनेवाला ॥ ३४ ॥ १५ भाला १६ खड्ग के प्रहार से १७ कन्धे (गरदन) १८ लड़ते

सिहराव३खंड हि मारि असि सामंत१८७।१सुत सिव१८८।६संहरयो ॥
बलकर्ण१८८।१तँहँ तस वंधु काय कवंधकोसु*द्विधा करयो ।३५॥
दुवरा†सर गुलामनबी४इतें बढि भूप सुर्जन१९०।१कै दये ॥
तिहिंबेर तुरकन प्रानलोभ तक्यो न गंजतही गये ॥
नृपभ्रात अक्खय१८९।१मारि‡तोमर ह्वाँ गुलामनबी४हन्यों ॥
बढि अग्ग मारि रहीम५कों जयथंभ बुंदियको बन्यों ॥ ३६ ॥
प्रभु राम२०३।४मिच्छन यों प्रबंध हुतो न जीवत हारिहैं ॥
पर भूप सुर्जन१९०।१भाग्य मुख्य१हनैं रु खिलं२अब पारिहैं ।
भट सेस जवनन देस छोरि रहीम२तुहंतही भजे ॥
कोटापुरी पहुँचे रु जित्तन सूर सुर्जन१९०।१के सजे ॥ ३७ ॥
ततकाल पत्तन पैठि हड्ड६१न जुज्झि सत्रु हने तहाँ ।
जवनेस डागर२भ्रात रोग असाध्यतैंहु जुरयो तहाँ ॥
सालारगाजी३नाम जो तजिमंच सम्मुह संक्रम्यों ॥
दल फार हड्ड६१न द्वार पुगत खग्ग१हड्ड२लै दम्यों ॥ ३८ ॥
तस भ्रात१भट२गन रोगविनु तजि जुद्ध बाहिर ज्यों जुरयो ॥
सहँरोग तिनसन सो१००गुनों यह३वीरता रन अंकुरयो ॥
असि झारि कीरतिसिंह१८८।३टोप रु मारि खट६भट सो मरयो ।
तस नाम अज्जहु द्वार बज्जत जत्थ जो भवनें तरयो ॥ ३९ ॥
सालारगाजिय३पारि संभर सत्रुगन खिल संहरयो ॥
कोटा सु अब्द छवीस२६तैं गतें गंजि अप्पन यों मुरयो ॥

हुए ने *दो टुकडे करदिये ॥ ३५ ॥ † बाण ‡भाला मारकर ॥ ३६ ॥ १ हे रामसिंह २ परन्तु ३ बाकी रहे जिनको अब मारेगा ४ बाकी के यवन ॥ ३७ ॥ ५ सन्मुख चला. हाडों की सेना का समूह द्वार पर पुगते ही खड्ग और ६ रोग के कारण अपने शरीर के ६हाडमात्र बाकी रहे थे जिनको लेकर मारे ॥ ३८ ॥ ७ रोग सहित था तो भी उन नैराज्यवालों से सौगुना ८ युद्ध में लड़ाहुआ ९ आज भी जिसके नाम द्वार प्रसिद्ध है १० संसार को तिरा ॥ ३९ ॥ ११ चहुवाण १२ गयाहुआ

तँहँ मान१८९।१सिव१८८।६,८हरि१८८।१रामसाहि१८८।१स्वभ्रात ए चउ४तुट्टये[1] ॥
असगोत्र वंर भट अट्ठ८के असु[3] छोह लोहन छुट्टये ॥ ४० ॥
पहिलैं तिविक्रम१स्वामिलौं रन ठानि सैंगर जो पस्यो ॥
इहिं मंतु[4] तस सुत लोहु बंधन गाम धाम सु उत्तस्यो ॥
सैंगर प्रतापरतथापि ताकिय सरन भूप सुभांड१८६।४ही ॥
महिपाल लखि इन सुद्ध पुनि ताकोंहि ताहि दई मही[5] ॥ ४१ ॥
डही१मही२अन्त्यानुप्रासः १॥
जुग२घाय बावर३०जुद्धमैं लरि दीप३तास तनैं लहे ॥
सुत तास इहिं रन स्याम४।२वपु तजि स्वर्गके सुख संग्रहे ॥
प्रतिहार मल्हनर स्यामजुत सोलंखि सिव सुत प्रेम३त्यौं ॥
हरि४कर्ण्णसरबाहिया तनै दहिया प्रतापज[6] हेम५त्यौं ॥ ४२ ॥
तोमर सुमेरु६प्रतापनंदन भल्लरत्न तनै नरू[7] ॥
बलराजपुत्त प्रमार त्यौं वसुदेव ८ बुंदिय बाहरू[8] ॥
नरू १ हरू २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
असगोत्र अट्ठ ८हि संर्टि ए लव मिच्छ सुर्जन१९०।१ संहरे ॥
जिम भ्रात चउ४ असगोत्र पंचक५ पिंड धारनमैं जरे ॥ ४३ ॥
नृपआदि त्रिक३ सहजात[9] दुव दुव२ इक१ छतं[10] क्रम निव्वह्यो ॥
लरि घाय इक१ सामंत१८७केर कुमार१वलकर्ण्ण१८८।१।४हु लह्यो
असगोत्र वीरनमैं समान १ कुवेर२केसरि ३अमनी ॥
अमरेस ४ संकर ५ घाय पाइ हनी सु मिच्छनकी अनी[11] ॥४४॥
मृधं[12] ज्यौं मरे नृप जात बुंदिय मिच्छ यौं सबही मरे ॥

१ मारेगये २ अष्ट वीरों के ३ प्राण शस्त्रों से गये ॥ ४० ॥ ४ इस अपराध से ५उसकी भूमि पीछी उसी को दी ॥ ४१ ॥ ६ प्रतापसिंह का पुत्र ॥ २४॥ ७ सहायक ८ बदले में देकर ॥ ४३ ॥ ९ सगेभाई १० घावों का एक सा क्रम निबाहा ११ यवनों की सेना को मारी ॥ ४४ ॥ १२ युद्ध में बुन्दी जाने के समय ज्यों बुन्दी के राजा मरे त्यों कोटा जाने के समय सब म्लेच्छमरे

कोटा १ हि परवस प्रांत सांतै निसान निज बजतेकरे ॥
इसं दव्वि खिंचि १३ न जो लाई धर ल्हो सबे घर आनिकैं ॥
सूधसैं सऊपति रायमल्ल१ अस्ताध्यतम तव मानिकैं ॥ ४५ ॥
खिल किय अधीन परंतु सेव १८७।१।३लकित्तिसिंह१८८।१।२इहाँ खिरे
चउ वीर वलि असगोत्र नाम अतुच्छ धारनमैं चिरे ॥
लहि पै सऊ १ सन प्रांत पच्छिन हद्द ६१ हेलिं बिजै लह्यो ॥
रनमल्ल घायल नत्त हुंडिय आय उच्छवतैं रह्यो ॥ ४६ ॥
इम१मान थप्पि रनान१८९।१सुतहम्मीर१९०।१अतिहित आदरयो॥
क्रम रामनाहि१८८।१तनूज अतिथिन लाडखान१८९।१वली कह्यो ॥
हरिसिंह१८८।१सोदर रायमल्ल१८८।१प्रमोद दै हिय लाइकैं ॥
वलि कित्तिसिंह१८८।१तनूज करन१८९।१हि आगिँ मान वढाइकैं ४७
व सबनिके वघ सेव१८७।१के सुत माल१८९।१तैं हित विस्तरयो ॥
वलि करन१८८।१।१अवखय१८४।२।२आदि घायल वृंदत्यौंहितमैंबरयो
तिन्ह पाल९ मान वढारि सुर्जन१९०।१भूप यौं सवपैं तप्यो ॥
अति अस नरेसन देसदेसन रक्खि सेरन ओंलप्यो ॥ ४८ ॥
कछुकाल अकवर३७।१पट्ट बैठतहीं व्यतीत इतैं करयो ॥
तहँ हेम३८ उरजे११ अग्रवाल अभीष्ट१२ छिद्र नदी तरयो ॥
वहैराम१३ गुरजुत काढ़ि अकवर३७।१।२ अप्प ओसरमैं१४ वली ॥
गहि पट्ट दिल्लियको लह्यो अव कौन चिन्हनकौं गली ॥ ४९ ॥
हम जाति वनिक३ हु साह व्है नरनाह२ अँग्जनकौं हसैं१५ ॥

---

१ कोटा के प्रान्तों के अन्त तक अपने नगारे बजाये २ अत्यन्त असाध्य ॥ ४५ ॥ ३ बाकी के ४ मारेगये ५ जिनके नाम हमको मालूम नहीं हैं वे तरवारों की धाराओं में मारेगये ६ हाडा क्षत्रियों का सूर्य ॥ ४६ ॥ ७ आदर करके ॥ ४७ ॥ ८ घायलों के समूह को स्नेह में अपना किया ९ इसके चचा को १० कहा ॥ ४८ ॥ ११ हेमू नामक अगरवाले वैश्य ने १२ अपने अनुकूल १३बहराम नामक गुरु सहित पादशाह अकवर को निकालकर१४अपने समय में बलवान् हुआ ॥ ४९ ॥ हेमू वनिया है तो भी पादशाह होकर १५आर्यों

विधिजोग¹ अब जय छोग² यह तजि भीरु बीरनमैं बसैं ॥
धरि दर्प्प यौं वह हेम३८ ऊरुज३भोग बिलसनमैं धस्यो ॥
दुव२जुद्ध जित्ति सतद्रुपार³ उतारि मुगल६न उल्लस्यो⁴ ॥ ५० ॥
जिहिं लखि प्रमत्त रु मुगल६ इत लाहोर पुनि जयकौं जुरे ॥
घन थट्ट संचय बंबे⁵ बहुबिध जंगपैं जिनके धुरे ॥
जउ⁶ हेम३८ बानिज३ अग्रवाल सु भोगमैं प्रविसै न जो ॥
तैमूर२२को कुलतंतु इक्क१हु अत्थ दे रहिबै नतो ॥ ५१ ॥
पै बनिक३ दुर्लभ राज्य पाइ प्रमत्त भोगनमैं परयो ॥
बिधि एह पिक्खि रु बनिक झखपैं⁷ जाल मुगल६न विस्तरयो
सब स्वीयजुत बहराम१ मत इत साह अकबर३७१सजयो ॥
दल दाव बानिज हेम३८ पैं बढि बेग मुगल६न व्हाँ दयो॥५२॥
सुनि साह१आवत साहजूर⁸ जयलाह सम्मुह संक्रमैं ॥
जुग२आत अभिमुख⁹ जंगयौं इम रंग पानीपथ जमैं ॥
रचि जुद्ध तोपन अग्ग होतहि खग्गमैं¹⁰ न रुकेरहे ॥
बल¹¹१हेति¹²२मूल¹³१कला¹³२रु तोल¹⁴१तुला¹⁴२वृथा इतके बहे ॥५३॥
उतके प्रबीर कजाक¹⁵ मुगल६न बनिक३बल बढि अंगस्यौं¹⁶ ॥
बपुरो सु बिक्रयकार¹⁷ बेढत सोर बिक्रयको सैंस्यौं¹⁸ ॥
बाजार गब्बनहार¹⁹ कूटछैल्ल²⁰ संचय बिक्खस्यो ॥
करि हेम३८बानिक३हि कैद मुगल६न भेट अकबर३७१की करयो

राजाओं को हसता है १ ब्रह्मा के योग से अर्थात् भाग्य से २ उत्साह ३ शतद्रुनदी के पार मुगलों को उतार कर ४ बढा ॥ ५० ॥ ५ नगारे ६ यह सूर्ख हेमू बनिया भोग भोगने में नहीं लगता तो तैमूर के वंश का एकतन्तु भी यहां नहीं रहनेदेता ॥ ५१ ॥ ७ बनियां रूपी मच्छी पर ॥ ५२ ॥ ८ वह हेमू नामक बनियां बादशाह को आया सुनकर जय लेने के लिये सन्मुख चला ९ सन्मुख पानीपथ में युद्ध जमा १० तरवारों में ११ सेना १२ शस्त्र १३ मूल और ब्याज (सूद) १४ तराजू ॥ ५३ ॥ १५ युद्ध करनेवाले १६ पकड़ा अथवा काबू में किया १७ विचारा बेचनेवाला घेरने का शोर सुनकर १८ बेचने को भूलगया १९ बाजार में गर्व करनेवाला २० झूठे छैले का सञ्चय बिखरगया ॥ ५४ ॥

हनतो न अकबर३७।१ ताहि पैं बहराम१ गुरु* असु दै हन्यौं ॥
बलि आइ दिल्लिय† गाह नाह सु साह अकबर ३७ही बन्यौं ॥
रनथंभमैं पहिलैं रहे भट सेरसाह ३२।१ सलेम ३३।१ के ॥
अब राज्य अकबर३७।१के सम्हारत भीति धारत अकबंके। ५५।

मके१बके२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गढईस वह सामंत १८७।१हड्डहि एक१तिन्ह सरनौंगह्यो ॥
चलचित्तकैं सरनौं१न भाइपलाइ उव्वरनौं२चह्यो ॥
किय विग्रती तुम दुर्गरक्खहु हमहिं जीवत काढ्ढिकैं ॥
बंसको धनी सु नतो व अकबर३७।१दै इमैं पहु वाह्ढिकैं ॥ ५६ ॥
मन्नी सु सुनि सामंत१८७।१संत न मोहि दुर्ग यहै मिलैं ॥
गुरु थाम सुर्जन१९०।१भूपविलु बनि साह सुर्जनको गिलैं ॥
दल भूपप्रति यह चिंतिकै सामंत१८७।१अतिहितसौं दयो ॥
गढ अप्प रक्खहु आइ होत नतोब मिच्छनकैं गयो ॥ ५७ ॥

दोहा ॥

हतपुव्वहि सुर्जन१९०।१अधिप, ब्याहे दुव२सुत बीर ॥
बल्लनोत वनवीरकी, सुता उभय बिधि सीर ॥ ५८ ॥
पुव्व निहारहु राम२०३।४प्रभु, रुचित हुती यह रीति ॥
सुव्कुलहि इक सोधते, न धन१धरा२ दृग नीति ॥ ५९ ॥
थानमपति ब्याही गिनि रु, भूमिपतिन छतैं भूप ॥
किय सुत दूदा१९१।१भोज१९१।२के, उपयम जगअभिरूप। ६० ।

अकबर उस हेमू को नहीं मारता परन्तु अकबर के उस्ताद बहराम ने *चित्त देकर अथवा ताप देकर " यहां असु के स्थान में 'असि' होना संभव है जिसका अर्थ 'गुरु बहराम ने तरवार की देकर मारा यह है" मारा फिर दिल्ली के † स्थान (फारसी भाषा में स्थान जगह को 'गाह' कहते हैं) में आकर अकबर ही बादशाह हुआ १ घबराए ॥ ५५ ॥ २ किलापति ३ भागकर ॥ ५६ ॥ ४पत्र ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५ यह रीति अच्छी लगती थी ६ भूमि और धन पर दृष्टि नहीं देते थे ॥ ५९ ॥ ७ राजाओं के होतेहुए भी ८ विवाह ९ सुन्दर ॥ ६० ॥

जेठो१लच्छो१९।१नामजुत, दूदा१९।१लहिय उदार ॥
राजकुमरि१९१। छोटी बरिय, भोजकुमर१९१।२जस भार ।६१।
दुज्जनसल्ल१९।१।१प्रवीरदृढ, व्याहन संन्निधि बेर ॥
सीमा पुर सीलोरको, धाये गोधन घेर ॥ ६२ ॥
तीर प्रगंडे२रु हत्थतल२, सहि दुवरदुर्जनसल्ल१९।१।१ ॥
कुमर छुराये गो निकर[3], हनि भिल्लन करि हल्ल ॥ ६३ ॥
धीर हनैं वहु धाटिर्धर[4], बिनुसिर इहिं रनबीच ॥
तुलाराम[5]किय जस अतुल, द्विजन व्यास दाधीच ॥ ६४ ॥
पाछैं धरि उपनाहपट[6], कर जोरयो कुमरेस ॥
प्रथित[7] चालुक्किन इम परनि आयो सानुज एस ॥ ६५ ॥
कंर्कनमोचन[8] पुव्व१किय, पीछैं यह करपट्ट[9] ॥
दूदा१९१।१इकदस११वरस बय, विजय लये कुलवट्ट ॥ ६६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ वीतिहो त्रवसुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरित्रे दिल्लीन्द्रहुमायुसम्राजो मासपापदेशेनाम्बरराजकूर्मभगवंतसिंहपुत्र्या सह स्वसुताकबरपाणिग्रहणसंपादन१ आर्यपुत्राभिः स-

॥ ६१ ॥ १ विवाह के समीप के समय में ॥ ६२ ॥ २ कलाई (कुहनी के ऊपर का भाग) और हथेली पर दो बाण सहकर ३ गौओं के समूह को छुड़ाया ॥ ६३ ॥ ४ धाड़ायतियों का. इस युद्ध में धीर ने बिना मस्तक होकर शत्रुओं को मारे जिसका अत्यन्त यश दाधीच वंश के ५ ब्राह्मण तुलाराम ने किया अर्थात् उसने इस युद्ध का काव्य रचा ॥ ६४ ॥ ६ पाटा (घाव मिटाने का उपचार) बांधकर कुमर ने हथलेवा जोड़ा ७ प्रसिद्ध ॥ ६५ ॥ ८ कंकणडोरड़ा पहिले खोला और ९ घाव के पाटे को पीछे खोला ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी राजाओं की व्याख्या के बीज हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृत्तांत की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में दिल्ली के बादशाह हुमायों का ईरान के बादशाह मासप के उपदेश से आमेर के राजा भगवन्तसिंह कछवाहे की पुत्री से अपने पुत्र अकबर का विवाह करना,

हास्य यवनप्रथमपाणिग्रहणावसरस्य समर्थन २ पुस्तकालयाट्टप-
तितहुमायुमरणोऽकबरसाम्राज्यासादन ३ बुन्दीन्द्रसुरजनस्य केश
रखानडागरखानविजयनेन कोटाराज्यस्य पुनर्बुन्दीराज्यसंमिश्रण ४
अग्रवालवंश्यहेमूवैश्यस्य मुगलयवनान् शतद्रूपरतीरमुत्तार्य दिल्ली-
सिंहासनारोहण ५ पानीपथसमरवद्धहेमूवैश्यस्य वहरामविहितवधेऽ-
कबरस्य दिल्लीपतित्वासादन ६ बुन्दीन्द्रसुरजनज्येष्ठसुतदुर्जनसाल
स्य गोग्रहणयुद्धक्षतावस्थायां पाणिग्रहणकथनं चतुर्थो मयूखः ॥४॥
आदितः सप्ताशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इन ग्रामनपति अंगजा[1], पुत्तजुग[2] हि परिनाइ ॥
सुता नृपन सुर्जन१९०।१ समय, अब व्याहहिं अधिकाइ ॥ १ ॥
इकवहु पै प्रभु राम२०३।४यह, सिसु वय दुर्जन१९३।१सल्ल[3] ॥
सत्रह सोलह१६१७ सकसमय, वञ्यो विजय मृध मल्ल ॥२॥
रायमल्ल१९१।३ सिसुतर रहत, इम यह अबहि अनूढ[4] ॥
वय ग्यारह११ नव९क्रम वरस, सुध भ्राता जुग२ब्यूढ[5] ॥ ३ ॥

आर्यों की पुत्रियों का यवनों से विवाह होने के इस प्रथम अवसर का समर्थन करना, पुस्तकालय की छत के ऊपर से गिरकर हुमायूं की मृत्यु और अकबर के बादशाह होने का कथन, बुन्दी के राजा सुरजन का केशरखान और डागरखान को जीतकर कोटा को फिर बुन्दी के राज्य में मिलाना, हेमू नामक अगरवाला वंश के वैश्य का मुगलों को शतद्रु नदी के पार उतार कर दिल्ली का बादशाह होना, पानीपथ के युद्ध में पकड़े हुए हेमू को बहराम के मारने पीछे अकबर का दिल्लीश होना, बुन्दी के पति सुरजन के बड़े पुत्र दुर्जनसाल का गौओं को छुड़ाने के युद्ध में घायल अवस्था में विवाह करने की कथा का चौथा मयूख समाप्त हुआ ॥४॥ और आदि से एकसौ सत्तासी मयूख हुए ॥ १८७ ॥

१ ग्रामों के ठाकुरों की पुत्रियां २ दोनों पुत्रों को व्याहकर ॥ १ ॥ ३ युद्ध करनेवाला मल्ल ॥ २ ॥ ४ बिना विवाह ५ विवाहे ॥ ३ ॥

किय अक्खय१८९१२सोदर कुमति, आगस[1] तव अवनीस ॥
इम दिय इक१नवताड़[2] इहिं, तजि पट्टनि१ सुख[3] तीस ३० ॥४॥
बुंदीपति बनिबे बिमति[4], यह रनथंभ उदंत[5] ॥
दिय दिल्लिय किय जोहिहठ, मत सुर्जन१९०१२सामंत १८७१२ ॥५॥
सांधिविग्रहिक[6] सचिवसुत, हो दिल्लिय तव हेम्म ॥
लहि पिहितं[7] सु अक्खय१८९१२ लिखित, पठयो तिहिं पति प्रेम्म ॥६॥
लै पट्टनिमुख छर्द[8] सु लिखि, अक्खय१८९१२ सोदर अत्थ[9] ॥
अप्पिय नृप नवताड़ इक१, तजि बिलासपन तत्थ ॥ ७ ॥
ढुंर्‍यो[10] निलयकोनें[11] सु दुम्मन[12], लै अक्खय१८९१२यह लज्ज ॥
मर्‍यो अंरहि[13] न दिखाइ मुख, खावन न लहि अखज्ज[14] ॥ ८ ॥
तस पल्लिन जेठो तनय, पटु दयालु१९०१२ छिन पाइ ॥
पटक्यो बुंदिय नृप पयन, प्रमुदित[15] निर्यंत[16] पढाइ ॥ ९ ॥
पट्टनि तदपि दई न पहु, इत१ चउ४ ग्रामहि अप्पि ॥
सालहरा१ तारज्ज२ सह, थिर पर[17]तट दिय थप्पि ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

चिंतिय नृप नयचतुर[18] पुनिहु जिन राम१८९१३ पलट्टिय ॥
इतर[19] बंधुकुल अयनं[20] छोड़ नृपपन कै खट्टिय ॥
इम अकबर३७१२आतंक[21]गंजि नभ दृग सोलह१६२०सम ॥
अस्व खर्ब[22] आरूढ[23]पत्ति चउसत४००बिसास प्रेम्म[24] ॥
लै भूप अद्रिसिर छत्र लहु[25] पहुँचन द्रुत[26] करवाइ पथ ॥
रनथंभ प्रविसि अहो२ रजनि वे लिय जवन बिसासि अथ ॥ ११ ॥

---

१ अपराध २ ग्राम का नाम है ३ पाटण आदि तीस ग्राम छोडकर ॥ ४ ॥ ४ मूर्ख ५ वृत्तान्त ॥ ५ ॥ ६ सन्धि और विग्रह करनेवाला ७ छाने ॥ ६ ॥ ८ पत्र ९ यहां ॥७॥ १० छिपा ११ घरके कोने में १२ उदास १३ शीघ्र ही १४ अभक्ष्य नहीं खाया ॥ ८ ॥ १५ प्रसन्न मन से १६ निश्चय ॥ ९ ॥ १७ चांमल नदी के परले किनारे ॥ १० ॥ १८ नीति चतुर १९ अन्य २० बन्धु कुल का घर २१ अकबर के भय का दबाकर २२ छोटे घोड़े पर चढकर २३ चार सौ पैदल २४ परम विश्वासवाले के साथ २५ शीघ्र २६ शीघ्र ॥ ११ ॥

कनकादि धातु३अघटित सकल इतिमुख चिरतन१न०य२अब ॥
गुड़१आर्ज्य२लवन३पशु४खाद्यगॅन सुमन१जवा२दिक धान्य सब १७

दोहा ॥

सोरा१गंधक२शाल३सह, इम नाना उपहार ॥
निजगढ कोस खुलाइन्टप, देखे अखिल उदार ॥ १८ ॥
अतसी संभृत कोस इक१, देख्यो ताबिच दोइ२ ॥
कमन विष्णुप्रतिमा कढी, इहु९१लई नत होइ ॥ १९ ॥
प्रतिमा जे बुंदीपुरहि, पुनिभेजहिँ महिपाल ॥
मन्निय मोद गिनाइ गढ, त्रिसत३००नौलिचउ४ताल ॥२०॥

बेताल ॥

चहुवानराज दुराइ, चामर थान लिय रनथंभ ॥
सुनि ओदके चहुँ४ओर सात्रव आनि सत्व अचंभ ॥
सामंत१८७१कौं करि दुर्गसासक स्वीय सो गढ सज्जि ॥
दिल्लीस चित्त खटक्कि दब्बिय ग्राम चउसत४००गज्जि ॥२१॥
बुंदी१रु पट्टनि२तब दये सुत दुजनसल्ल१९१।१हिँ सूर ॥
पुनि दै२हि दिय लक्खैरि१ खटपुर२भोज१९१।२हित बसुपूर ॥
सिसु रायमल्ल१९१।३हिँ त्यौंहि अप्पि पल्हायथ१रु संगोद२॥
रनथंभअप्प बली रह्यो करि स्वीय भुव चहुँ४कोद ॥ २२ ॥

१ स्वर्ण आदि २ बिना घड़ीहुई ३ इत्यादि बहुत समय की थी और अब नवीन ४ घृत ५ पशुओं के खाने के पदार्थ ६ गेहूं ॥ १७ ॥ ७ नाना प्रकार की सामग्री ॥ १८ ॥ ८ अलसी धान्य से भराहुआ भण्डार देखा जिसमें विष्णु भगवान् की ९ सुन्दर दो मूर्तियां निकली १० झुककर ॥ १९ ॥ ११ तोपें ॥ २० ॥ १२ डर १३ शत्रु १४ पराक्रम में * आश्चर्य करके ॥ २१ ॥ १५ धनसे पूर्ण १६ चारों दिशा

* मेवाड़ के इतिहास में रणतभँवर का गढ चित्तोड़ के आश्रित होना लिखकर राव सुरजन को उसका किल्लेदार करना लिखा है यही वार्ता कर्नल टॉडने "टॉडराजस्थान" में भी लिखी है और महाराणा रत्नसिंह के समय रणतभँवर चित्तोड़ के आधीन था जिसकी साक्षी तुजकबाबरी से भी होती है राव सुर्जनने अप ने लाभ करके महाराणा का यह गढ अकबर को देदिया जिसकी निन्दा टॉडराजस्थान में बहुत लिखी है।

सुत भोज१९१।१खटपुर वास करि तव किय स्वदेस सम्हारि।
पगि प्रीति अग्रजसौं मिले बुंदीहु कवहु पधारि ॥
ही पल्लनोति सु भोज१९१।२की कुमरानि रूपबिहीन ॥
निज भ्रू हुइक१न ही सु कज्जलकी रचैं सु नवीन ॥ २३ ॥
कहिनी वडी छिय जो रहैं तिहिं लेन खटपुर बुल्लि ॥
बुंदीहु आइ रु जाइ वलि तिय सैंन हिय हित तुल्लि ।
मानि इक रत्ति मजावती बुंदीहि रक्खहिं भोज१९१।२ ॥
आधीन रत्न१९४।१कुमारको रहिहै तबहि अति ओज।२४।
नृपकर्न सूचित सूचना सुनि साह सुर्जन१९०।१सीस ॥
छडि दुर्ग जित्तन चिंतयो इहिं, आक्खि बुंदियईस ॥॥
इहिंबीच बत्त सुनी अचानक दुसह कट्ठिय दोरि ॥
गुजरात हाकिम गर्वगंजत वित्त देस बिलोरि ॥ २५ ॥
भगवंत तब आमेरभूपति पुत्त्र तत्थ पठाइ ॥
बहुर्यो सुन्यौं वढतोहि बिग्रह नेर अहमद नाइ ॥
पठयो सु मानकुमार तस पुनि सहँसदस१००००दल सत्थ।
सुत घात सुनि अरिसीसही तसँ तात रुक्किगय तत्थ ॥ २६ ॥
मिलिकैंपिता१सुत२ह्वै२तहँ मद मंद कट्ठिनें मारि ॥
गुजरातहाकिमपैं लगाइ सुरे परस्मयँ गारि ॥
करजोरि हाकिम मानकुमर सु रक्खयो कछुकाज ॥
चित्तोर चिंतिय रानतैं मिलिवोहि कूरमराज ॥ २७ ॥
इहिंघात सुनतहि रान उदयहु प्रांत बंधु पठाइ ॥

की भूमि को अपनी करके ॥ २२ ॥ १ बिना रूपवाली २ एक भौंह नहीं था सो काजल का बनाती थी ॥ २३ ॥ ३ भोजाई कथन करके भोज को अकरात्रि बुंदी में रक्खेगी ४ गर्व ५ बड़ा प्रतापी ॥ २४ ॥ ६ सूचना करनेवालों की कीहुई सूचना ७ काठी लोग दौड़कर गुजरात के हाकिम का घमण्ड मिटाते हैं ८ भयकर ॥ २५ ॥ ९ आमेर के राजा भगवन्तसिंह के पुत्र मानसिंह की १० उस मानसिंह का पिता ॥ २६ ॥ ११ सूर्ख काठियां का घमंड मारकर १२ शत्रुओं का गर्व मिटाकर ॥ २७ ॥ १३ महाराणा उदयसिंह ने सीमा तक अपने भाईको

पहुगम्य सीमहु आइ प्रविसत अप्प गो अलसाइ[२] ॥
निज रीतिपथ मिलि द्वैरहि नृपचित्तोर आये चाहि ॥
प्रविसाइ डेरन कुम्भ[३]पहु गय रानरहित अवगाहि[४] ॥ २८ ॥
तिहिंजाइ दुर्ग बिसेस स्वागत[५] दै कही गुरु ताहि ॥
जे लै गये तिन्ह तत्थ जंपिय अप्प गौरव आहि ॥
हमरे नरेस कह्यो बडोदिन आंत[६] कूरम्म अज्जँ ॥
तुमहूबिचारि सु प्रीति तकहु यौं रहैं सम अर्ज्ज ॥ २९ ॥

रमअज्ज१समअज्ज२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

महिपाल उदय कहाइ दिय तुमकों वडे नृप मानि ॥
बल ईस अकबर३७।२तैं बचावहु अप्प इत हित आनि ॥
सुनि एह हुव भगवंतके कटि प्रोथ फुल्ल समान ॥
रतिकों दिखाइ कह्यो बडे निजधर्म रच्छक रान ॥ ३० ॥
तनया दई अपनी सु बिधि तकि चाह सन्निय चित्त ।
सीसोदहू अब दैन संतति मोहि मन्नत मित्त ॥
इम जानि रान निकेत[११] जाइ रु कुल बडे कछवाह ।
एकांत अक्खिय हमहु हेरत चित्तसौं हितचाह ॥ ३१ ॥
सुनि रान उत्तर ना दयो कछु जोध बोधक[१२] सोधि ।
बढती कही भगवंत त्यौंहि गिनी महत्व[१३] प्रबोधि ।

भेजा और वह राजा भी १ जब जाने याग्य सीमा में पहुँचा तब आप २ आलस्य करके गया अर्थात् बादशाहों के संबंधी होने से अग्रगामिता उत्साह पूर्वक नहीं की ३ कछवाहे राजा को डेरों में पहुंचाकर ४ हित का थाह लेकर ॥ २८ ॥ ५ आये का आदर करने की सामग्री देकर अपने मनुष्यों को भेजे जिनने जाकर कहा कि आप बडे हैं और हमारे राजा (महाराणा) ने कहा है कि ६ कछवाहे के आने से ७ आज बडा दिन हुआ ८ बराबर आर्यपन ॥ २९ ॥ ९ नितंब फूल गये "घमण्ड पूर्वक प्रसन्न होने में यह लोकोक्ति है" १० प्रीति दिखाकर ॥ ३० ॥ भगवंतदास ने जाना कि मैंने मेरी पुत्री बादशाह को विवाही जिसकी चित्त में चाहना करके राणा भी अपना संतान बादशाह को देना चाहता है ११ राणा के घर में जाकर ॥ ३१ ॥ १२ कुछ उमराव समझा देवेंगे यह जानकर राणा ने उत्तर नहीं दिया १३ बडप्पन जना

सह असनं[2] खिन पुनि कुम्भ चाखिय रान बैठहु सत्थ ॥
तब उदय जंपियँ[3] अज्ज मम व्रत इक्कभोजन तत्थ ॥ ३२ ॥
भगवंत भाखिय भोजभो व्रत इक्क छोरहु अप्प ॥
सुत रानके भट सु सुनि सुखिय रक्खि निज कुल दप्प[5] ।
तुम संग भोजन हमहु न करहिँ दूर रान उदंत[6] ॥
दिल्लीसकों दुहिताँ[7] विवाहतहो खेद[8] कुल हंत ॥ ३३ ॥
देखो इहाँ असगोत्र[9] सुभटनें रान पुत्रिय देत ।
हमहू नहैं[10] अप्पघरैं अब जानि मुगलन हेत ॥
यह सुनत कूरम छिज्जि मन खिजि छोरि भोजन उट्ठि ।
चलतैं[11] पैंदी इत मान आवहिँ तिहिँ न सूचहु तुट्ठि[12] ॥ ३४ ॥
चवि एह कूरम रहिवो प्रतिकूल[13] गिनि चित्तोर ।
जिहिँसक अज्जनखंड[14] सो लखि हो ब अकबर३७१जोर ॥
कछवाह नृप इम ठानि गो इन्ह दर्प नासन कज्ज ।
सुत तास मानहु सोहि सुनि मिलिवेहि आयउ सज्ज ॥३५॥
भगवंततैं जुहि वत्त हुव सुहि मान सुनि सब भार ।

कर १ साथ भोजन करने के समय कछवाहे ने राणा से कहा कि शामिल बैठो २ उदयसिंह ने कहा कि आज मुझको एकासना है ॥ ३२ ॥ ४ भगवन्तसिंहने कहा कि एकव्रत हुआ न हुआ इससे एकव्रत को छोडदो ५ अपने कुल का दर्प (घमंड) रखकर ६ राणा के भोजन करने का वृत्तान्त तो दूर रहा हम भी आपके शामिल भोजन नहीं करते ७ पुत्री ८ खेद है ॥ ३३ ॥ ९ असगोत्र उमरावों को १० आपके घर में हम भी पुत्री नहीं देवेंगे ११ चलते समय कछी १२ इस बात से प्रसन्न होकर ॥ ३४ ॥ १३ चित्तोड़ को विरुद्ध जानकर १४ आर्य्यावर्त पर जिसका भय है तिस अकबर का जोर अब देखोगे ॥ ३५ ॥ जो वार्ता भगवन्तसिंह से हुई वही भगवन्तसिंह के पुत्र * मानसिंह से हुई सो

---

* यह कथा महाराणा प्रतापसिंह के समय की है उदयसिंह के साथ इस कथा का होना भ्रम से लिखाजाना प्रतीत होता है, उदयपुर से तीन कोश के अन्तर पर पूर्व दिशा में उदयसागर नामक तालाव की पाल पर यह वार्ता हुई थी अर्थात् सम्वत् १६३० के प्रथम आषाढ में महाराणा प्रतापसिंह और आमेर के कुंवर मानसिंह से भोजन के कारण विरस हुआ जिसकी कथा जयसिंहचरित्र नामक जयपुर के इतिहास में भी लिखा है और अकबरनामे में भी इसकी साक्षी है, और टाडराजस्थान, व मेवाड के इतिहास में तो विस्तार पूर्वक है ।

तुमरी कनी जवनी करौं इम उट्ठिगो कहि तौर ॥
सुनि रान बीर गये मनावन मानकुमरहिं सुद्ध ।
तोहू न मन्नि कुमार गो तिम करन अकबर३७।१क्रुद्ध ॥ ३६ ॥
मिलि वप्प१सुत२जुग२वंधि अक्खिय साह प्रति अतिमान ।
रनथंभकौं तजि पुव्व कंटक लेन दव्वहु रान ॥
सुनि स्वसुर१सालक२वत्त अकबर३७।१है बली तिन्हसंग ।
चित्तोर गंजन रुट्ठि चल्लिय चक्कलै चतु३रंग ॥ ३७ ॥
सुरतान१८९।१तोपनसंग दै लक्खसिंगम गय साह ।
तिहिं मूढ चिंतिय साह तोपन लैन बुंदिय लाह ॥
जिहिं बाम सुरि भगवंतगढ सन दूर सुर्जन१९०।१जानि ।
दल४ देसको कपतानकौं दिय लोभ परधन दानि ॥ ३८
सब तोप बाम सुराइ इम कपतान१सुत सुरतान२ ।
अतिलोभ बुंदिय लैन आयउ सज्जि नृपपनै५मान ।
हो राम१८६।३सुर्जन१९०।२ भ्रात बुंदिय सोहु तच्छल६ हेरि ।
सब हड्ड६१ लै रु भिर्‌यो समैं७ धिय रत्ति खग्गन खेरि ॥ ३९ ॥
तँहँ सो सक्यो न सम्हारि तुंदहु८ रत्तिरनै९ सुरतान१८९।१ ।
सठ निट्ठिनिट्ठि घसीटि तोपन भज्जिगो बिनु भान१० ॥
पहिलैं१८७।१ जु मेव गुहा नसायउ तत्थ जाइ परंत ।
वह राम१८९।३ तत्थहु गो अचानक कंकि हड्ड६१न हंत ॥ ४० ॥
दूजो२ दयो रतिवाह पुनि तँहँ जाइ राम१८९।३ उदार ।
सुरतान १ सह कपतान २ भज्जिगय छोरि सब संभार११ ॥

सुनकर १ तुम्हारी पुत्री को मुसलमानी करूंगा इसप्रकार २ उच्चस्वर से कहकर उठगया ॥ ३६ ॥ ३ चतुरङ्गिणी सेना लेकर ॥ ३७ ॥ ४ कप्तान को आधा देश देने का लोभ देकर सुरताणसिंह ने पीछी बुन्दी लेना चाहा ॥ ३८ ॥ ५ राजापन का मान करके ६ उस वा उसके छल को देखकर ७ युद्ध में रात्रि के समय ॥ ३९ ॥ ८ वह सुरताणसिंह बडे पेट को नहीं सम्हाल सका ९ रात्रि के युद्ध में १० विना ज्ञान ॥ ४० ॥ ११ सब सामान छोडकर

कपतान बुल्लि रु ठानि स्वागत भेजिये हितकाज ॥ ४६ ॥
इत साह अकबर ३७।१ क्रुद्ध हुव सुरतान१८९।१ कृत सुनि एह ।
नृपभ्रात राम१८९।३ हु बुल्लि इत कपतानसन किय नेह ॥
सब तोप१ बैलरन जुत समप्पि रु भुजनधरि जय भार ।
कपतानकौं कछु द्रव्य दैकिय स्वीय परबंधकार ॥ ४७ ॥
किय अरज नालिनें लै रु जानहि साहसन कपतान ।
सुरतान१८९।१ मूढ नहै यहै बुंदीस भ्रात समान ॥
तिहिं राम याहि भजाइ लै पुनि मोहि अप्पिय तोप ॥
याको बिसास अहोन अब इम करत कालहु कोप ॥ ४८ ॥
दिन्नौं बिडारि इतीहि गिनि हठ साहनैं सुरतान१८९।१ ।
सु गयो मऊ बलि रायमल्लहिं मन्नि रक्खन मान ।
जवनेस इत चित्तोर जाइ रु बिंटयो बहु बीर ॥
धुर रान कढ्ढि रु अंकुरे गढकेहु प्रतिभट धीर ॥ ४९ ॥
जयमल्ल१ मेरतिया पता२ सीसोद ए दुव२ जोध ।
गरं बंधि निज चित्तोरगढ बिफ्फुरे चखाइ बिरोध ॥
कतिदुर्गबाहिर गुल्मँ हे तिनकौं सन्हारनकज्ज ॥
करि अन्य बेस निसा कढे सह हैरहि गढपति गज्जँ ॥ ५० ॥

दोहा ॥

निकसि पता१ जयमल्ल२ निस, बाहिर बिक्खि प्रबंध ॥
सत्थ अलप आवत समय, सबरनं मिलिय सुसंधँ ॥ ५१ ॥
भिल्लन मन्नैं साह भट, जे छन्नैं गढ जात ॥
बेढिलये लुंटाकँ बनि, चापन प्रदर चलात ॥ ५२ ॥

॥ ४६ ॥ अपने १ शत्रुओं को मारनेवाला किया ॥ ४७ ॥ २ तोपें ॥ ४८ ॥ ३ मुख्य ॥ ४९ ॥ ४ चित्तोड़गढ को अपने गले से बांधकर ५ कुपित हुए ६ सेना के टुकड़े थे ७ गर्जना करके ॥ ५० ॥ ८ भीलों से मिले ९ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाले ॥ ५१ ॥ भीलों ने इनको बादशाह के वीर जाने १० गुप्त ११ लूटनेवाले होकर घेर लिये १२ धनुष से बाण चलाते ॥ ५२ ॥

अक्खिय तँहँ जयमल्ल१ इल, हित लखिवो कित होइ ॥
पता२ कहिय उत१ जन प्रचुर[1], धन इत२ देहु धकोइ ॥ ५३ ॥
को हो तुम सवर्न[2] कहिय, सुनतहि यह संलाप[3] ॥
किम उत१ इत२ संकेत किय, अंगुलि सरनहु आप ॥ ५४ ॥
होहु निडर ढिग आत हम, पहिलैं[4] स्वमत प्रकासि ॥
बहुरि देहु आयुध१ वसन२, तुम यह संसय[5] त्रासि ॥ ५५ ॥
जाइ निकट इम अक्खि जिन्ह, परिचित[6] कछु पहिचानि ॥
निजरच्छक सन्नैं निडर, जुगरहि दुर्गपति जानि ॥ ५६ ॥
पानि जोरि प्रत्युत[7] प्रनमि, सौंतु[8] सु छम्मन छमाइ ॥
जंपिय हम जानैं जवन, जिन गढ भेदन जाइ ॥ ५७ ॥
तिन्ह किंकर[9] पछिताइ ते, अरज भिल्ल इम अक्खि ॥
गढलौं पहुँचावन गये, रंच न मन भय रक्खि ॥ ८५ ॥
दुर्गपतिन तब दुर्गके, दक्खिन२ दिस लघुँ[10] द्वारं ॥
बाहिर चोकी तेहि सुधैं[11], हसिकिय रक्खनहार ॥ ५९ ॥
बारह१२ हायन[12] कति बदत, गौदित[13] त्रि३ चउ४ कति ग्रंथ ॥
भो चिरैं[14] घेरा हम भनत, पै न मिल्यो गढपंथ ॥ ६० ॥
अनुचर[15] इक जयमल्ल जँहँ, आगस[16] कछु अनखाइ[17] ॥
करन१ सिंघिनी[18]२ हीन करि, नापित दिय निकसाइ ॥ ६१ ॥

---

१ बहुत ॥ ५३ ॥ २ भीलों ने कहा ३ यह बोलना सुनकर ॥ ५४ ॥ ४ पहिले अपना विचार कहो ५ सन्देह मिटाकर ॥ ५५ ॥ ६ कुछ जानेहुओं को पहिचान कर ॥ ५६ ॥ ७ उलटा नमस्कार करके ८ वह अपराध उन समर्थों से क्षमा कराके ॥ ५७ ॥ ९ उनके सेवक ॥ ५८ ॥ १० दक्षिण दिशा के छोटे द्वार पर "चित्तोड़गढ के दक्षिण में कोई द्वार नहीं है यह छोटा द्वार उत्तर दिशा में है जिस को लाखोटा की बारी कहते हैं" ११ चतुरों ने ॥ ५९ ॥ १२ कितने ही लोक बारह वर्ष तक युद्ध होना कहते हैं और कितने ही ग्रन्थ तीन चार वर्ष १३ कहते हैं परन्तु हम (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ बहुत समय पर्यन्त घेरा रहा ॥ ६० ॥ १५ एक सेवक पर १६ कुछ अपराध से १७ क्रोध करके कान और १८ नासिका काटकर उस नाई को निकाल दिया था ॥ ६१ ॥

पारि मेल जिहिँ साहपति, अति बसु दिय सु अंवेरि[1] ॥
बिगरायउ रचि भेद बिधि, गढजल गोपेल[2] गेरि ॥ ६२ ॥
दुर्गाधिप[3] जानि सु दुरित[4], अरोहि[5] प्रात उघारि ॥
बेसँ[6] मरन समुचित गनैं, फोज परन रन फारि ॥ ६३ ॥
गढ सम्हारि गढपति प्रगुन[7], अर्ध[8] रजनि अनेह ॥
इक[9] गवक्ख बैठे उभय[2], हुँड़ा[10] पिवन सनेह ॥ ६४ ॥
जिहिँ दिन गिनिय अपेयजल[11], तास निसीथ हु तत्थ ॥
दिय दिखाइ बैठे दुवहि, नापित[12] बिरचि अनत्थ ॥ ६५ ॥
जरीवसन[13] रचि जगमगत, लुब्ध सु गिनि जयमल्ल[1] ॥
पल्लेकी[14] नालिय तुपक[15], साह निगमपथ[16] सल्ल[17] ॥ ६६ ॥
पर्टु[18] निजतोप चलाक प्रति, दिय कतिकहत[19] निदेस ॥
होहु किमहु जिमतिम हन्यौं, जयमल्ल सु जवनेस ॥ ६७ ॥
मेरतिया[1] अधिलसबन्ध्रत, बिदित प्रतापं[20][2] बकारि ॥
कढहु प्रात तबलौं कढहु, वेंपु[21] लग गज बैठारि ॥ ६८ ॥
बिरचि निर्जीले[22] द्वारलुय, बिधि लुहि[23] साहि बिहान ॥
जयमल्लहिँ बज धप्पि जिन्ह, परदलँ[24] किय प्रस्थान ॥ ६९ ॥
दुजन सुँधि[25] न परन दियउ, मरन निखहि जयमल्ल ॥

१ बहुत धन दिया जिसको इकट्ठा करके. गढ के जल में २ गौओं का मांस डलाकर बिगड़ा डाला ॥ ६२ ॥ ३ किल्लादार ने ४ वह पाप जानकर ५ प्रभात ही किवाड़ खोलकर ६ मरने को उचित पीलाक (केसरिया) करके ॥ ६३ ॥ ७ विशेष गुणवान् ८ आधी रात्रि के समय ९ एक झरोखे में दोनों बैठे १० मद्य पीने को ॥ ६४ ॥ ११ पानी को नहीं पीने योग्य समझकर उसी आधी रात्रि को १२ नाई ने अनर्थ करके दोनों को बैठे दिखाये ॥ ६५ ॥ १३ जरदोजी के वस्त्रों की कान्ति १४ दूर पर लगनेवाली १५ बन्दूक चलाई १६ वेद मार्ग के १७ साल बादशाह अकबर ने ॥ ६६ ॥ १९ कितने ही कहते हैं कि १८ चतुर अपने तोप चलानेवाले को आज्ञा दी ॥ ६७ ॥ २० आमेट के रावत पत्ता से मेड़तिया जयमल्ल ने प्रातें समय कहा २१ मेरे शरीर को हाथी पर बैठाकर ॥ ६८ ॥ उस पण्डित ने २२ द्वार खोलकर २३ प्रभात समय में २४ शत्रुओं की सेना पर प्रस्थान किया ॥ ६९ ॥ शत्रुओं को २५ खबर नहीं होने दी ॥ ७० ॥

जान्यौं तब बचि अब जुगर हि, आवत बिरचि उम्हल्ल ॥७०॥
जिहिं निस सुत जयमल्ल जहँ, सो जुगर *जामहि सेस ॥
नटन१ पान२ आदन३ निचित, बिलसिय४ सुमह बिसेस ॥ ७१ ॥
हिलेस१ बिसेसक् अन्त्यानुप्रासः १ ॥
देखि तबहि बहु दीपिका, निजगढ उच्छव जानि ।
साह दुरंधहिं संकरन, सोधि जतन लिय मानि ॥ ७२ ॥
राठहुं उपर३हिं बैठारि इम, प्रातहि निकासि प्रताप२ ॥
नासि अनीक सुलेसको, हुन तिलतिल हुव आप ॥ ७३ ॥
तैसैं पन्मार असोकसुत, बिजोलीपति वीर ।
हहा१ धनी सिरसिखु अरयो, मारि परयो बहु मीरं ॥ ७४ ॥
अकबर पहुँ किन्नों अमल, चढि तब गढ चित्तोर ॥
पहु पुनि कुंभिलमेरु गय, उदय प्रतीची ओर ॥ ७५ ॥

---

* दो प्रहर रात्रि बाकी रहते † रचकर ‡ श्रेष्ठ उत्सव भोगा ॥ ७१ ॥ बादशाह ने १ राठोड़ जयमल्ल को मारने का यत्न २ झूठा माना ॥ ७२ ॥ ३ दुर्दं जयमल्ल को ४ पालकी पर बिठाके ५ बादशाह की सेना को नष्टकर ॥ ७३ ॥ ६ बादशाह के अमीरों को मारकर ॥ ७४ ॥ ७ * प्रभु ८ उदयसिंह पश्चिम दिशा में कुम्भलमेर गया ॥ ७५ ॥

---

* दिल्ली के बादशाह अकबर का चित्तोड़ पर चढ़ाई का पूर्ण विचार देखकर महाराणा उदयसिंह के छोटे पुत्र शक्तिसिंह ने जो महाराणा की अप्रसन्नता के कारण पहिले से बादशाही सेवा में चलागया था अकबर को छोड़कर चित्तोड़ में आकर महाराणा उदयसिंह से बादशाह के आने की खबर दी, तब सबकी सलाह से महाराणा अपने कुटुम्ब सहित पश्चिमी पर्वतों में चलेगये और चित्तोड़ का गढ आठ हजार क्षत्रियों के साथ, मेड़ता के राव वीरमदेव के पुत्र जयमल्ल राठोड़ और आमेट के रावत चूण्डावत पत्ता के आधीन किया, विक्रमी सम्वत् १६२४ मार्गशिर कृष्ण ६ को अकबर ने चित्तोड़ के किल्ले को घेरा और दोनों ओर से भयंकर युद्ध होतारहा एक दिन रात्रि के समय किल्लेकी दीवार पर फिरता हुआ हजारमेखी चमत्कार सिलह पहने, जयमल्ल मोरचे सम्हाल रहा था उस समय बादशाह अकबरने बन्दूककी गोली चलाई जिससे जयमल्ल का पैर घुटना में से टूटगया, और इस समय गढ में खानपानादि सामग्री भी खूट चुकी थी इसकारण प्रभात होतेही राजपूतोंने किल्ले के किंवाड़ खोलकर बादशाही सेनापर हल्ला किया, इस समय जयमल्ल का पैर टूटजाने के कारण, उसके भाई कल्ला राठोड़ने जयमल्ल को अपने कन्धे पर चढालिया और दोनों वीर खड्ग चलातेहुए हनूमानपोल और भैरवपोल के बीचमें मारेगये और रावत पत्ता भी वीरता के

कति जयमल्ल१प्रतापकौं, समय निमावी सीस ॥
छितिपति रान प्रताप छत, अक्खहिँ दुर्ग अधीस ॥ ७६ ॥
इम भगवंत१६ मान२न, जनक१सुत२न उत जाइ ॥
सँह भोजन टारयो समुझि, खल मच्छर अनखाइ ॥ ७७ ॥
रान कुलहु निज सम करन, पिसुनभाँव मन पूरि ॥
अकबर२७कौं चित्तोर इम, आनि आन्यौं फल भूरि ॥ ७८ ॥
रान तदपि कुलरक्खिबे, छिति१पुर२दुर्ग३न छोरि ॥
बनचरपन धरि लिय बिपति, जीवन धर्महिँ जोरि ॥ ७९ ॥
संतति दैवे प्रमुख सब, दिल्ली अभिलँत दाहि ॥
सुख तजि स्वभट१कुटुंब२सह, उदय गह्यो दुख आहि ॥८०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ वीतिहोत्रव-सुधेश्वरबीज०व्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यवि

कितने ही लोग इस १ प्रभावशाली जयमल्ल और पत्ता को २ महाराणा प्रतापसिंह के समय में ३ किल्लादार होना कहते हैं ॥ ७६ ॥ ४ शामिल भोजन कराने से जुदा जानकर दुष्टोंने ५ मत्सरता से क्रोध करके ॥ ७७ ॥ ६ राणा के कुल को अपने समान भ्रष्ट करने को ७ चुगली करने से मनको पूर्ण करके ८ बहुत फल दिखाकर लाये " शामिल भोजन नहीं करने के कारण कछवाहे मानसिंहने बादशाह अकबर को क्रुद्ध करके मेवाड़ पर बादशाही फौज चढा लाया था वह युद्ध महाराणा प्रतापसिंह से हलदी घाटी के स्थान पर हुआ था जिसका वर्णन आगे आवेगा" ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ९ सन्तान देवे आदि सब दिल्ली की १० इच्छा को जलाकर ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी राजाओं की व्याख्या के बीज हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृ-

साथ मारागया, जिसपीछे सम्वत १६२४ चैतवदि १२ को मध्यान्ह के समय बादशाह अकबरने चित्तोड़ गढ पर अपना झण्डा खड़ा किया यहां पर गढ के पानी को गौओं के मांस डालने से अपेय कर देना लिखा है सो नहीं बनसक्ता क्योंकि इस गढ के जलाशय गढ के ऊपर हैं वहां शत्रु किसी प्रकार से भी नहीं पहुँच सक्ते थे और गोली लगने से जयमल्ल राठोड़ का उसी रात्रि में मरजाना लिखा सो आईनअकबरी के अनुसार है परन्तु यह सत्य नहीं है वह टूटेहुए पैर से ऊपर सूचना किये हुए स्थान पर प्रभात समय में मारा गया जिसके अनेक प्रमाण विद्यमान हैं सो स्थानाभाव से नहीं लिखेजाते, जिनको देखना होवे, मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में देखें, इस युद्ध का बारह वर्ष तक होना लिखा सो भी असत्य है.

हितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरि-
त्रेबुन्दीपतिसुरजनस्य रणतभँवरदुर्गस्थशेरशाहसलेमभटाश्रयप्रदाने
नरणतभँवरदुर्गस्याधिकारसंपादन १ रणतभँवरविजिगीषुदिल्लीशा
कबरसम्राजोऽहमदाबादपत्तनाधिकारिगर्वगञ्जककाठीजनतोपद्रवो-
दन्तश्रवणादामेरराजभगवन्तसिंहेन सह स्वसैन्यसंप्रेपण २ गुर्जरवि
जयिप्रत्यावृत्तामेरराजभगवन्तसिंहस्य निजकुमारमानसिंहसहितस्य
सहभोजनानङ्गीकारकारणेनापकारिमहाराणोदयसिंहपुत्रीणां यव
नीकरणप्रतिज्ञापूर्वकमकबरान्तिकागमन ३ चित्रकूटप्रयायिसम्राट्
सैन्यं लोभेनाकृष्य ततसहायाद्बुन्दीपुरीप्रत्यादित्सुसुरताणनृपतेर्बुन्दी-
रोधे रात्रिसंगरे पराजित्य पलायन ४ चित्रकूटरोधात्प्रागेव महारा
णोदयसिंहेऽवाचीदिशं संप्रस्थिते चित्रकूटदुर्गाधिकारिमेड़तियारा-
ष्ट्रकूट (राठोड़) जयमल्लस्यामेटपातिपत्ताभिधेयस्य च चित्रकूटमधि
ष्ठायाकबरेण सह समरकरण ५ अकबरकरवन्हिबाणविद्धजयमल्ले
पञ्चताम्प्राप्ते प्रातरेव दुर्गकपाटोद्घाटनेन पत्तादिवीराणां रणशय्या

तांत की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के भूपति सुरजन का रणतभँवर के गढ
में रहेहुए शेरशाह और सलेम के वीरों को अपने शरण में रखकर रणतभँवर
को अपने अधिकार में करना १ रणतभँवर को विजय करने की इच्छावाले
अकबर का अहमदाबाद के हाकिम का गर्व मिटानेवाले काठी लोकों के उप
द्रव का वृत्तान्त सुनकर आमेर के राजा भगवन्तसिंह को साथ लेकर प्रथम
गुजरात पर भेजना २ गुजरात को विजय करके पीछे फिरे हुए आमेर के रा-
जा भगवन्तसिंह और उसके कुमर मानसिंह का चित्तोड़ के महाराणा उद-
यसिंह के शामिल भोजन नहीं करने का अपमान होकर राणा की पुत्रियों को
यवनी बनाने की प्रतिज्ञा करके बादशाह अकबर के पास जाना ३ चित्तोड़ पर
जातीहुई बादशाही सेना को लोभ से मिलाकर बुन्दी को पीछी लेने की इ-
च्छावाले सुरताण का बुन्दी के घर में रात्रि के युद्ध में पराजय होकर भाग-
ना ४ चित्तोड़ गढ को घेरने से पहिले महाराणा उदयसिंह पश्चिम दिशा में
निकल जाने पीछे चित्तोड़ के किल्लादार मेड़तिया राठोड़ जयमल्ल और आमे
ट के रावत पत्ता का चित्तोड़ के किल्ले में रहकर दिल्ली के बादशाह अकबर
से युद्ध करना ५ अकबर के हाथ की बन्दूक लगने से जयमल्ल के मारे जाने

शयन ६ एतत्समरसमयसंबन्धिन्यूनाधिकावधिप्रतिपादकमतभेदसू चनादिकथनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥ आदितोऽष्टाशीत्युत्तरशततमः ॥ १८८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

अकबर३७१२लै चित्तोर इम, रच्छक अप्पन रक्खि ॥
गिनत वंधु आमेरपह, लरन मुरयो जय लक्खि ॥ १ ॥
दरकुंचन रनथंभकुलँ, आयो जित्तन आस ॥
समुझावन भगवंत मुहि, प्रेर्यो सुर्जन२९०१२पास ॥ २ ॥
साहं पाइ कूरम सुता४, सहँ नोरोज मनाइ ॥
गुरुं स्वधर्म नासक गिन्यौं, भूपन सासकँ भाइ ॥ ३ ॥
आन न दिय गढमाँहिं इम, अकबर२७१३स्वसुरहि अक्खि ॥
हुव सम्मुह सुर्जन१९९१३रखि, दुर्जन परखि दुरसक्खि ॥४॥
न बनैं कछु आयेंहि नृप, दैनें कहैं मत नेन ॥
तातैं पठवहु दूत तुम, इत हु यहैं मत ऐनें ॥ ५ ॥

मदनावतारः ॥

भेजि पहु दूत इम कुम्म भगवंतपैं, अप्पनिजधर्म थिति रूपात किय अंतपैं ॥

के पश्चात ही गढ के द्वार खोलकर पत्ता आदि वीरों का माराजाना ६ इस युद्ध के समय की न्यूनाधिक अवधि बताने के मत भेदकी सूचना आदि कथा ओं का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ इठ्यासी मयूख हुए ॥ १८८ ॥

१ सम्बन्धि २ जय की साची से सेना सहित पीछा फिरा ॥ १ ॥ ३ चीच ॥२॥ ४ भगवन्तसिंह कछवाहे की पुत्री को पाकर ५ उत्सव. राव सुरजनने भगवन्तसिंह को अपना धर्म नाश करने में ६ बडा समझा ७ राजाओं को बादशाही आज्ञा में करने की रीति से ॥ ३ ॥ ८ उसको अकबर का सुसरा कहकर ऊपर कहीहुई दोनों साक्षियों के कारण शत्रु जानकर गढ में नहीं आनेदिया ॥ ४ ॥ ९ इस स्थान में यही सलाह है ॥ ५ ॥

दूत तब भेजि इम कुम्भ लिपि[1]दै दिय, लाह[2] छिन बाद तुम साह
अरि जानिलिय ॥ ६ ॥

हुकम बस होइ बिक्ख्यो[3] बघेले बढे, लहत धन १ धाम २ जिन्हँ
नाम जसमैं मढे ॥

अकब्बर३७१२हिँ अज्ज[4] को अज्ज रन अंगमैं, निखिल यह खंड
अरि दंड जिहिं[5]पै नमैं ॥ ७ ॥

तुमहु रनथंभ करि भेट हठ देहु तजि, भोग बहु जोग भय[6] रोग
बिनु लेहु भजि ॥

मान करि रान[7] लघु माँन तजिगो मही, खाँन अफगान बिनु
त्रान भजिगो सही ॥ ८ ॥

समय[9] अनुसार बल अप्पनौं ए सहैं, बिक्खि इन्ह जोर इम सिर
हि अप्पन कहैं ॥

परहु यह जानि हित मान दिल्लीस पय, देहु रनथंभ जुगलेहुस
जिम है सदय[10] ॥ ९ ॥

दुर्ग लिय चोर जिम ध्वांत[11] बिथुरी दयो, अब न रहि है सु महि
साह रवि उग्गयो ॥

कहिदिय जियत तुम बध्य[12] अफगान के, द्वैहि अपराध गिनि
ये न प्रभु दान[13]के ॥ १० ॥

पै अबैं[14] रनथंभ करि भेट सुख पाइहो, जो न यह बत्त तजि भौन
भजिजाइहो ॥

---

१ पत्र दिया २ लाभ के समय॥६॥ ३ देखो ४ आज अकबर को कौन आर्य युद्ध में दबा सक्ता है ५ सब ॥७॥ ६ भय रूपी रोग के बिना ७ न्यून पराक्रमवाला राणा और बिना रक्षा के अफगानिस्थानवाला ८ दूसरा भागगया ॥८॥ ९ हाथ के अनुसार अर्थात् बादशाह का हाथ मस्तक पर रहै तो वही आपना बल है १० दयावान होवे ॥ ९ ॥ ११ अन्धेरे में चोर के समान बिना दियाहुआ गढ लिया है सो शाह रूपी सूर्य उदय होने पर अब नहीं रहेगा १२ मारने योग्य कितने ही अफगानों को तुमने जीवित निकाल दिये ये दोनों अपराध प्रभु के १३ देने योग्य नहीं हैं ॥ १० ॥ परन्तु १४ अब

*कुम्म दल बंचि यह हड्ड[1] नृप कुप्पयो, अंग निजभंग गढ संग गिनि † उप्पयो ॥ ११ ॥

वीर गढमैं हि ‡परदूत ढिग बुल्लयो, खग्ग[1]मत मग्ग तिहिं अग्ग हठ खुल्लयो ।

कुम्मपति जाइ हमबैन[2] क्रम यौं कहो, लुब्भि[3] तुम अप्पि दुहि[4]ताँ हु वसु भूरलहो ॥ १२ ॥

चोर हम साह लखि जो व भजिवो चहैं, साह नाहिंतो हमहिं लाहलंछ[5] क्यौं सहैं ॥

हल्लकरि मोहि गढद्वार अबही हनहु, एह रनथंभ करि गेह छक्क उप्फनहु ॥ १३ ॥

होत निज सरन अफगान दिय कछि हम, सरनगत त्रान कुल[6]धर्म गिनि प्रानसम ॥

साह बरजोर[7] बचिबो न मम है सही, मोहि हनि लखहु रनथंभगढकी मही ॥ १४ ॥

अधिप इम आक्खि परदूत[8] पठवाइकैं, नालि[9] दागिबेहिदिय सैन नियरा[10]इकैं ॥

सूचि पहिलैं न तुम हनहु परसत्थ[11]कौं, वे करैं घात तव सद्धनौं अत्थ[12]कौं ॥ १५ ॥

---

* कछवाहे का यह पत्र बांचकर † क्षोभित हुआ ॥ ११ ॥ ‡ शत्रु के दूत को पास बुलाया १ खड्ग चलाने का विचार २ हमारे वचन कछवाहे से इस क्रम से कहो कि ३ लोभ करके ४ पुत्री देकर धन और भूमि तुम ही लो ॥ १२ ॥ बादशाह को देखकर अब जो हम भगजावैं तो चोर हैं नहीं तो हम ही शाह (साहूकार) हैं सो हमको ५ मिलेहुए लाभ के व्याज को (चाहा हुआ अर्थ सिद्धि के अन्य अर्थ का कहना व्याज है) क्यों सहन करें ॥१३॥ ६ शरण गये हुए की रक्षा करना कुल धर्म है ७ बलवान् है ॥ १४ ॥ ८ शत्रु दूत को ९ तोप चलाने को १० समीप लेकर ११ शत्रु के साथ को १२ अपना अर्थ साधना चाहिये ॥ १५ ॥

दुजनदल[1] टारि तब तोप गढकी दगी, लाय मुगलेस उर तदपि बढती लगी ॥
चहत रन दुर्ग सिर नालि उतकी चली, आइ गढमैं लगी गि-
रन गोलावली[2] ॥ १६ ॥
सुर्जन१६०।१हु अक्खि[3] तब साह दल संहरन[4], सज्ज हुव[5] लरन धु-
वमरन असरनसरन ॥
तोप दुहुँ ओर दगि भूत पंचक[6] तप्यो, जनन डरि मनन संवर्त्त[7]
आगम[8] जप्यो ॥ १७ ॥
झुम्मि[9] डगमग्गि गिरि शृंग जंगम भये, छित्ति निभ[10] काल कर-
वाल[11] लहरू[12] छये ॥
सांधि[13]विधि जानि कति दुर्गढिग हे सिविर[14], करनै[15] निज टारि ब-
दि तेहु गय दूर किर[16] ॥ १८ ॥
फेरपर फैर वलि दहन[17] दिसदिस फुरयो, जानि कपिदत्त[18] लंका-
हिं जारन जुरयो ॥
गोल लगि सीस गजभद्र[19] मुक्ता गिरे, करन भुव[20] चित्र[21] करकौं
निकर[22] ज्यौं किरे[23] ॥ १९ ॥
तुंग[24] गृह कलस१ध्वज२छत्र३इत उत्तरे, पत्ति[25]१गज२वाजि३बाँ[26]सं-
त४उत ढहिपरै ॥
लुत्थिपर लुत्थि बहु बुत्थि[27] संचितलगैं, पार पलचार[28] दलकार
पल नाँ पगैं ॥ २० ॥

---

१ शत्रु की सेना को बचाकर २ गोलों की पंक्ति गिरने लगी ॥ १६ ॥ ३ कहा ४ संहार करने को ५ तैयार हुआ ६ पंचभूत (पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश) तपगये ७ प्रलय का ८ आना कहा ॥१७॥ ९ चलायमान होगये १० सदृश ११ तरवारों की १२ लहरें छागई १३ मिलाप होजाने की विधि जानकर १४ डेरे १५ अपना नाश बचाकर १६ किल (निश्चय) ॥१८॥ १७ अग्नि १८ हनूमान को दिया हुआ १९ भद्रजाति के हाथियों के मस्तक पर गोले लगकर २० पृथ्वी पर आश्चर्य करते हैं २१ ओलों (गड़ों) के २२ समूह २३ गिरें ॥१९॥ २४ ऊंचे २५ पैदल २६ ऊँट २७ मांस के टुकड़ों के समूह लगते हैं २८ मांस खानेवाले॥२०॥

यौं विजय आस कछुमास अकबर ३७।१ अरयो, काल नृप
तास दलग्रास तोपन करयो ॥
कुम्भ भगवंत तब साहमति यौं कह्यो, लग्गि *चिर निट्ठि चित्तो
र अप्पन लह्यो ॥ २१ ॥
मुख्य†दुर्गेस जयमल्ल[1] जो नाँ मरैं, पुनिहु जयम्मौंहिं बहु अब्द[2]संसय परैं
तोहु तिम ह्रास[3] बहु आस दलको तहाँ, ज्यौंहिं अब आँहिं[4] गढ-
माँहिं सुर्जन १९०।१ जहाँ ॥ २२ ॥
इष्ट तिहिं अप्पि[5] यह दुर्ग अब अंगमैं[6], जिम सु निज होइ इत
अमल अप्पन जमैं ॥
यहहि बहराम[7]सुख[8] भटन हित उच्चरयो, कुम्भ तब साह सुहि
राह रच्छक करयो ॥ २३ ॥
कुम्भ गढद्वार[9]गत एह कहिसुक्खी, झुल्लि जिम लोहि बलि इष्ट
अक्खहु बली ॥
दुर्ग बिच कुम्भ१ चउ४ सुत तब तुल्लि हुत, पीठ[10] इक१ बैठि
दुर्गेस मिल्यो प्रसुत ॥ २४ ॥
कहिय कछवाह मम मंतु[11] बिस्मृत[12] करहु, इष्ट लहि अप्पगढ दै
रु जस उद्धरहु ॥
बलिय सामंत१८७।१ तँहँ साह बलवान है, मरिहु गढ देत तु-
मरो न इम मान है ॥ २५ ॥
लेहु लिखवाइ मनचाह थित लाह जो, सोहि अब दैहिं गढ
लैहिं इम साह जो ॥
सत्त७ लहि बत्त[13] तब दैन गढ स्वीकरिय, इमहि नरनाह कछ-
वाह प्रति उच्चरिय ॥ २६ ॥

---

* बहुत समय लगकर ॥ २१ ॥ † किल्लादार १ वर्ष २ सेना का नाश ३ हुआ ४ हैं ॥ २२ ॥ ५ उसकी इच्छा के अनुसार देकर ६ लेवें ७ बहराम आदि ८ उस मिलाप के मार्ग की रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ ९ गढ के द्वार पर जाकर १० एक मंच (आसन) पर बैठकर ॥ २४ ॥ कछवाहे ने कहा कि ११ मेरे अपराध को १२ भूल जाओ ॥२५॥ १३ सात बातें लेकर गढ को देना स्वीकार किया ॥२६॥

पुत्ति दिय अप्प तिन हम न परिनाइहैं१, सु किय नोरोज तँहँ न हम तिय जाइहैं२ ॥

अटकँ नदि पार पठयैं सु नहिं उत्तरैं३, आम१ अरु खास२ इक१ सस्त्रसह अनुसरैं४ ॥ २७ ॥

लालकोटलग वँब हम्मरो बजैं५, तुरगतन लग्गत सु दग्ग जवन न तजैं६ ॥

काज कछु सजँ नहिं अर्ज्ज अनुगतकरैं७, सत्त७ ए बत्त लहि साह हित अनुसरैं ॥ २८ ॥

अधिक हुव साह अब दै सु तुम उच्चरहु, कुम्म नरनाह तब चाह गहकी करहु ॥

सुनि सु नृप मंत भगवंत गय साहपैं, रक्खि रीति कहिय हित होत इहिं राहपैं ॥ २९ ॥

चविय[12] ठगि साह तुम हिंदु हिंदुन चहो, क्यों हमहिं बंचि[13] यह स्वीय कल्पित[14] कहो ॥

कहिय भगवंत चलि अप्प सुनिये कथा, तेहु लखिलैन[15] वपु वेस बदलहु तथा ॥ ३० ॥

पलटि तब वेस मुगलेस गहि दूतपन, संग गय हड्ड६१ हठ वैन निहचै सुनन ॥

आपने पुत्री दी तैसे हम नहीं परणावेंगे१ जो नोरोजों का उत्सव नियत किया है उसमें हमारी स्त्रियां नहीं जावेंगी २ अटक नदी के पार भेजे सो नहीं उतरेंगे ३ आम दरबार और खास दरबार में एक शस्त्र लेकर जावेंगे॥२७॥४ लालकोट तक हमारा ५नगारा बजेगा ६घोड़ों के शरीर में दाग लगता है वह दाग लगाना यवन छोडदेवें ७ किसी कार्य पर लज्जित करने में ८आर्य का ९सेवक नहीं करै अर्थात् किसी आर्य्य को सेनापति करके हमको उसके साथ नहीं भेजें ॥ २८ ॥ १० राजा सुरजन का मंत्र (सलाह) सुनकर ११ प्रीति रखकर ॥२९॥ १२ कहा १३ हमको ठगकर १४ यह अपनी कल्पना की हुई वार्ता क्यों कहते १५ देखने के लिये शरीर का वेश बदलदो ॥ ३० ॥

इक१*जलधार हुव२ दास तिम दूत इक१, संगगढमाँहिँ गय
पुच्छ यह साहसिक ॥ ३१ ॥

दूत१वह टारि तँहँ धारि मुगलेस२हुत, तत्थ गय कुम्म१पुनि स
त्थ जन च्यारि४जुत ॥

कहिय बुंदीसप्रति एह हठ नाँ करहु, धरनिप्रभु साह आदेस
मत्थैं धरहु ॥ ३२ ॥

कोल करि एह करिये न तिहिँ कोपमैं, अप्पि गढ दै सु ध्रुव
लेहु जस ओपमैं ॥

सु सुनिनृप कुप्पि गहि मुच्छ असि संग्रह्यो, कहि कुल हद्दु६१
रनथंभ दब्बहु कह्यो ॥ ३३ ॥

अद्ध५ तुम जवन इम जवनहित आचरत, धरनि१धन२चाहि नि-
रजाहि उँपपद धरत ॥

हमहिँ वहिकाइ तुम ज्यौं करहु सो न है, कुलर्य नृप अज्ज चहि
मिच्छसम कोन है ॥ ३४ ॥

कोल हम पुब्ब कुलधर्म रक्खनकरैं, उचित लहि देस पुनि से
स कृति आदरैं ॥

तो ब रनथंभ हम अप्पि आश्रय तकैं, नाँहिँ यह होइ तब छुं-
द लोभहि नँकैं ॥ ३५ ॥

धर्महित सीस दिल्लीस सासनधरैं, कज्ज निज धर्महित रज्ज त्या-
गहु करैं ॥

धर्महित रान१सहबाम१२वन धाम किय, कुंडल१रु वर्म१३तजि क
र्ण३जग नाम किय ॥ ३६ ॥

---

* जल रखनेवाला १ हठी ॥३१॥ १भूमि का पति बादशाह है जिसकी २आज्ञा मस्तक पर धरो ॥ ३२ ॥ ३ नियम ४ शोभा में ॥ ३३ ॥ ५ तुम आधे यवन हो इसकारण यवन का हित ६ करते हो ७ पदवी (खिताब) ८ कुलवान आर्य ॥ ३४ ॥ ९ तुच्छ लोभ १०नहीं करेंगे ॥ ३५ ॥ ११ अपने राज्य को भी छोडदेवैं १२ स्त्री सहित १३ कुण्डल और कवच देकर ॥ ३६ ॥

भूप सिवि[1]संस जिहिंकज्ज अप्पन भयो, देहजिहिंकज्ज जीमूत वाहन[2] दयो ॥

तक्कि जिहिं भूप अजमीढ[5]प्रसुता तजी, भूप हरिचंद[6] जिहिं कज्ज ध्रुवता भजी ॥ ३७ ॥

सोहि हम रक्खि मुगलेसढिग संचरैं, कोहि तिहिं खोइ जड स्वामि मिच्छहिंकरैं ॥

जो रुचत एह करिदेहु तो लेख जिम, अकबर[3]७[4]हिं नाह गिनि तजहिं रनथंभ इम ॥ ३८ ॥

है न यह लेख तव अप्पि सिर[5]धर्महित, इक्क[1]जस रक्खि हम हड्ड[6][1]करिहैं उचित ॥

कहि अफगान रनथंभ लिय नीति करि, और बिधि ताहि लहिहो न तुम धर्मअरि ॥ ३९ ॥

साह[1]तुमरो रु तुम[2]मोहि जवसंहरहु, कलह जय पाइ तव दुर्ग सासन करहु ॥

कुम्म सुनि दूत निभ साहप्रति यौं कह्यो, सुनत तुम हड्ड[6][1]बिनु लेख सासन सह्यो ॥ ४० ॥

ताहि सम बैन बिच द्वापरहि स्वीकरैं, कहहु तुम हड्ड[6][1] बिनु कोल रनही करैं ॥

स्वीकरैं[1]हीकरैं[2] अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ध्वस्त लखि धर्म [10]बुंदी हु तनलौं तजैं, भूप निजधर्म[11]अनुरूप तुमकों भजैं ॥ ४१ ॥

---

१ मांस २ जीमूतवाहन नामक राजा ने " यहां जितने उदाहरण दिये हैं तिनकी कथा ऊपर आचुकी है इसकारण यहां परटीका करना अनावश्यक है"३ चाण्डालपन लिया॥३७॥४जावेंगे॥३८॥५धर्म के शत्रु"अकबर को पुत्री विवाहने से भगवन्तसिंह को यहां धर्मअरि कहा है" ॥३९॥ ६तुरुक को मारडालोगे ७दूत के सदृश वेष धारण किये हुए बादशाह से कछवाहे ने कहा॥४०॥८सन्देह करें तो ९ धर्म का नाश देखकर१०बुन्दी को भी ११अपने सदृश धर्म रखकर तुम्हारी

दूतमिससाह१कछवाह२इम तत्थ हुव२, हड्ड६१नृप बैन सुनि सैनं पुनि जातहुव ॥

साहप्रति कहिय कछवाहअप्पहु सुनी, गाँढसह हड्ड६१जुहिटेक किय सोगुनी ॥ ४२ ॥

अज्ज हम अप्पसन कज्जं३ छल आदरहिं, पाप सहि ताप तब क्यौं न दोजख४ परहिं ॥

साह तब छापसह कोल लिखि सत्त७ही, कुम्मकर भेजि देआहु हड्ड६१हि कही ॥ ४३ ॥

भूं५ अधिक लैन जो बैन सुर्जन१९०१भनैं, परगनैं सत्त७तो देय तिहिं अप्पनैं ॥

करहि इच्छा पुनिहु लैन छिति६ तो कहो, लोभ मित७ देस गुडवान जित्ति रु लहो ॥ ४४ ॥

जेहु पुनि दुर्ग गय सत्त७हद लेख जुत, देस समक८सहित दैन लग्गो सु हुत ॥

सत्त७हदलेख नृप हड्ड६१ तँहँ स्वीकरयो, देस लैको सु गुडवान जय आदरयो ॥ ४५ ॥

कहिय गुडवान जय साह उपदा९ करौं, धरनि इच्छा अमित१० तबहि वलती धरौं ॥

देय भुव लेख करिदैन जो आदरहु, सोहु लिखि साह रनथंभ अपनौं करहु ॥ ४६ ॥

कुम्म इम लैन भुव हड्ड६१इच्छा कहिय, बावनी११देन तब सा

[ले]वा करेगा ॥ ४१ ॥ १ सेना से पीछे गये २ हठता से ॥ ४२ ॥ ३ कार्य में ४ नरक में ॥ ४३ ॥ ५ अधिक भूमि लेने का वचन ६ फिर पृथ्वी लेने की इच्छा करें तो ७ छोटा देश वा लोभ के माफिक ॥ ४४ ॥ ८ गुडवान देश को विजय [क]रके लेना स्वीकार किया ॥ ४५ ॥ गुडवान को विजय करके जब बादशाह की ९ नजर करूंगा तब इच्छा के १० अनुसार अधिक भूमि लूंगा ॥ ४६ ॥ ११ [ब]ावन परगने देने की बादशाह ने

- ह संधावहिय ॥
पत्र लिखि साह सुहु इह६।१डिगप्रेसियो, दुर्ग खालीकरन तदनु सासन दयो ॥ ४७ ॥

दोहा ॥

भगवंतहिँ सुर्जन१९०।१भनिय, अब निसिवेला आत ।
कल्हि दुर्ग खाली करहिँ, पावहु साह प्रभात ॥ ४८ ॥
कुम्म सुनत तहँ इम कहिय, सुर्जन१९०।१प्रति सामंत१८७।१।
गढ दे तुमसासन गहहु, इहाँ चहत हम अंत ॥ ४९ ॥
जब बुंदिय सुरतान१९६।१जड, मारनलग्गो मोहि ॥
मैं तब निकस्यो रन मरन, हठहि जरठपँन द्रोहि ॥ ५० ॥
तब सलेम३३।१करि दुर्गपति, थप्यो मैं रनथंभ ॥
ओर सुभट मम्मबस अखिल, रक्खे जयआरंभ ॥ ५१ ॥
अबलग तबतैं किय असन, या गढको मैं अन्न ॥
अब मोहि न जीवन उचित, अतिबार्द्धक्क आपन्न ॥ ५२ ॥
तहँ सुर्जन१९०।१भगवंत१तिहिँ, सुपहु रहे समुझाइ ॥
तदपि सज्ज सारन१८६।१तनुज, भयो मरन रन भाइ ॥५३॥

षट्पात् ॥

इम तहँ कूरम इनहिँ कहिय सामंत१८७।१जोरि कर ।
बडे१रिपुन कर बहि बनत लहुरेहु कित्तिवर ॥
अफगाननको अन्न पर्यो मम जठर दह्वपन ।
जियत मैंहि तिन्ह जोध सकल दिय कट्टि इहाँ सन ॥
अकबर३७।१हि मारि निर्भय अबहु हुलासि सिकंदर३६।१चहत हम ।

१ प्रतिज्ञा की २ भेजा ३ जिसपीछे ॥४७॥ ४ रात्रि का समय आगया है ॥४८॥ ५ तुम गढ देकर बादशाह की आज्ञा ग्रहण करो ६ हम यहीं मरना चाहते हैं ॥४९॥ ७ बुढापे से द्वेष रखनेवाला ॥५०॥ ८ सब ॥ ५१ ॥ ९ भोजन १० अत्यन्त वृद्धपन से ११ दुःखी हूं ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ कछवाहों के राजा को हाथ जोड़ कर सामन्त ने कहा कि १२ छोटे भी बडे शत्रुओं के हाथ से मारेजाकर कीर्ति के पति होते हैं १३ पेट

आगमर्मे यहै न सहिबो१ उचित तुजन हमहिं हनिबो२हि दमें३ ॥५४॥
कूरम नृप तब कहिय इड्ड६१सामंत१८७१सुनहु हित।
उहाँ तुमहिं गढअधिप अबहु रक्खहि जसअंकित ॥
पटा१मरातबें२पाइ भुग्गि खंडारि१प्रमुख भुव।
थिर बिलसहु रनथंभ दुर्ग हुल्लसहु सारन१८६१सुव ॥
साहकौं जिते परिकर५सहित आवनदेहु तितोंहि अब।
गढमैं स्वसंग लावहिं मुगल६सिर झेलहु यह भार सब॥ ५५॥

दोहा ॥

इड्ड६१नृपहु दैवे कहिय, अधिक परगनाँ१एक१।
तदपि जरठ सामंत१८७१तँहँ, टारी नैंक न टेक ॥ ५६॥
सारन१८६१सुत आक्खिय सुपहु, चित्त न दिल्लिय चाह।
हमहि दुर्गके द्वारहनि, सबजुत प्रविसहु साह ॥ ५७॥
है सपथहु याकौं हुव२हि, सुपँहु रहे समुझाइ।
तदपि न हठ सामंत१८७१तजि, लरन खरो हित लाइ ॥५८॥
पहु कूरम यह साहप्रति, आनि कहिय पट औैन।
पंचलक्ख५०००००दम्मन पटा, दिल्लीसहु किय देन ॥ ५९॥
हठी तदपि सामंत१८७१हुव, लनाभित सक्षत ताहि।
महिपति इत कहि मुक्कलिय, अब छिनदागम आहि॥ ६०॥
कल्हि दुर्ग खाली करहिं, अप्पन विभव अवेरि।
संझ दुहाई साहकी, दिय अंफलासहु हेरि ॥ ६१॥

॥ षट्पात् ॥

कूरम यह आधिप कहाइ विष्णुप्रतिमाँ दुव२वंदित।
ठ्यवहित३ कहिय बीर दुर्गबाहिर आनंदित ॥

में १ आना २ दण्ड ॥ ५४ ॥ ३ जय से जाना जावै ऐसा करके ४ इज्जत ५ हे सारण के पुत्र! ६ परगह सहित ॥ ५५ ॥ ॥५६॥ ५७॥ ७ राजा ५८ ॥ ८ डेरों में ॥ ५९ ॥ ९ अब रात्रि का आगम है ॥ ६० ॥ १० चिन्ता करके ॥ ६१ ॥ ११ विष्णु भगवान की दो मूर्तियां १२ सावधान होकर

अग्गैं निकसी एहि उभय२आलय अलसीके ॥
ते पठई निस तबहि नैर बुंदिय विधि नीकें ॥
तोपहु निकासि रक्खिय अतुल३ गढबाहिर४ दुव५गर्तगत।
तनुमात्र६ तेहु पठई तिनहि निज निकेत दुर्लभ नियत ॥ ६२ ॥

पथ्यागीतिः ॥

इक१चतुर्भुज१आख्यम, दूजी२कल्यानराज२नाम्ना है२ ।
भूपति ल्याय सिलाय, पुरबुंदिय तोप दोउ२जुत पठई ॥ ६३ ॥
सिव मंदिर पहिली१ सो, प्रतिमा१ बुंदीपुरहि पधराई ॥
महिप लुआंकि मिली सो, उदित तिलक चोक च्यारि८भुज वारी ॥
धुर९ नालि धूरिधानी, जिस दूजी २ कर११क बिज्जुली २ जानी ॥
एर सुभटन पुर आनी, तारागढ तेहु चरखन चढाई ॥ ६५ ॥
दुव२प्रतिमा नाली दुव२, व्यवहित१२ए उउ४पठाइ इम बुंदी ॥
सुर्जन१९०१नृप अर्जुन१८८१सुत१३, पुनिगढ रनथंभ अप्पन प्रमान्यों ॥
वैभव निज काढि बहुरि, करि खाली दुर्ग प्रातहि कहाई ॥
जवन१४जवन आवहु जुरि, दिल्लीपतिकी वैं१५ फेरहु दुहाई ॥ ६७ ॥
दल१६ पठ्यो जब अकबर३७१, सम्मुह सामंत१८७१काढि तब किलेसों ॥
प्रथम१७ विरचि तोरन१८पर, भट निज सतसत्त७००जुत तिलतिल भो ६८
जाहि भरोसा जानत, अफगान सलेम२३१साह गढ अप्पो ॥
मस्तक संटे१९ मानत, तोकों सामंत१८७१यों असिन२० तुट्यो ॥ ६९ ॥
सुर्जन१९०१कोसत्कारहु, सबभूपन अधिक आनि अकबर३७१सों

अलसीके१ अरुढार में निकली थीं २उत्तम रीति से ३तुलना रहित(बडा) ४गढ के बाहिर दो खड्डों में ५बिना चरख शरीर(नाली)मात्र ६ अपना घर निश्चय ही दुर्लभ जानकर ॥ ६२॥ ७ नामक ॥६३॥ ८प्रकाशित॥६४॥ ९ मुख्य तोप १० धूलधानी नामक ११ कड़क बिजली नामके ॥ ६५ ॥ १२ सावधान होकर वा छाने १३ अर्जुन का पुत्र ॥६६॥ १४ यवन लोग इकट्ठे होकर शीघ्र आओ १५ अब ॥६७॥ १६ सेना १७ युद्ध १८ बाहिर के द्वारपर ॥ ६८ ॥ १९ मस्तक के बदले, २० तरवारों से

प्रथित[1] सुजस करि निजपहु, अप्पन अफगान लोन उद्धारयो ॥६९॥
साहभट सहँस१००० संहरि, विजुसीसहु बहि मुगल बहु मानी ॥
कुलहड्ड१६न उज्जल करि, सोयो सामंत१८७१चार भटसज्जा[2] ॥७१॥

सतसत्त ७०० संग सुभटहु, जो बिरुदहु सेरसाह३२ सत्रु जई ॥७२॥
प्रभु रावरे कुल प्रथम, सुर्जन१९०१चउ नेत्र आछि१६२४मित सकमैं
सत्तहि७हद अकबर३७१सन, लिखाइ गढ दै तदाश्रय[3] लयो यौं ७३
राजा च्यारि४ सम्हारहि, भुग्गि सु रनथंभ होइ तस भेदी ॥
गढ दै पुनि आश्रय गहि, इम हुव सुर्जन१९०१सहाय अकबर३७१ कैं।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ वीतिहोलवसुधेश्वरबीजव्याख्यानवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुंन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे सुरजनस्यामेरराजभगवन्तसिंहद्वारा नियमसप्तकपुरस्सरं रणतभँवरदुर्गस्याकबरसम्राडायत्तीकरणसूचन १ समरकराकबरसंशीतिदूरीकरणार्थं भगवन्तसिंहस्य दूतवेषावृताकबरसम्राजः सुरजनान्तिकप्रापणम् २ तादृशाकबरसम्राजः सुरजनहठावलोकेन तद्विहितनियमसप्तकस्वीकरणम् ३ प्रतिज्ञापत्राप्तरणस्तम्भदुर्गेऽकबराधिकारकरणं ष

लूटा ॥ ६९ ॥ १ प्रसिद्ध ॥ ७० ॥ २ वीरशय्या सोया ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ३ उस का आश्रय लिया ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुरजन का आमेर के राजा भगन्तदास द्वारा सात नियम कराकर रणतभँवर का गढ बादशाह अकबर के आधीन करने की सूचना करना १ उस युद्ध करनेवाले अकबर का सन्देह दूर करने के कारण दूत के वेस में उस अकबर को राजा भगवानदास को हाडा के पास लेजाना २ बादशाह अकबर का दूत के वेस में सुरजन का हठ देखकर उसके कहे हुए सात नियमों को स्वीकार करना ३ अकबर से नियम पत्र पाए पीछे रणथम्भ के गढ को अकबर के आधीन

ष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥ आदितो नवाशीत्युत्तरशततमः ॥ १८९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

पहिलैं अमल कराइ पुनि, अकबर३७१२गढपर आइ ॥
रनथंभहि कतिदिन रह्यो, जोध स्वकीय जमाइ ॥ १ ॥
कुम्भ१ वघेल२नतैं कियउ, सुर्जन१८०१२ अधिक प्रसन्न ॥
भूपहु नो अकपट भज्यो, स्वामिधर्म संपन्न ॥
याही जिन नृप १६२४साक इत, भूप उदय जस भव्य ॥
गयो जानि चित्तोरगढ, नगर बसायउ नव्य ॥ ३ ॥
ग्रँथित नाम तस उदयपुर१, ताके ढिगहि तड़ाग ॥
रुचिर उदयसागर२ रच्यो, रान उदय जसराग ॥ ४ ॥
उदयरानके सुत उदित, वीस२०प्रमित वरवीर ॥
जेठो१कुमर प्रताप२जँहँ, धर्म सहायक धीर ॥ ५ ॥
सगतसिंह१जगमाल२सम, अतिधृति१९मित सुत ओर ॥
अठ८भये कुलधर अउँर, जिनमैं रन घनजोर ॥ ६ ॥
सगत२जग्ग३अगर४रु सगर५, पंचायन६गन७नाम ॥
कन्ह८रु लवनादिक करन९, कुलतानक जसकाम ॥ ७ ॥
कुल तिनके तिन्ह नाम करि, अग्ग कहावत उत्त ॥
सगताउत्त१प्रमुख्य सब, जानहु इम जसजुत्त ॥ ८ ॥

करने का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ निवासी १८९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ कपट रहित स्वामिधर्म से सेवन किया ॥ २ ॥ २ शुभ यश से ३ नवीन * नगर बसाया ४ प्रसिद्ध ५ तालाब ६ यश में प्रीति करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ आठ पुत्र कुल चलानेवाले निर्भय हुए ॥ ६ ॥ ८ कुल को फैलानेवाले ॥ ७ ॥ ९ सगता

---

* मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि चित्तोड़ छूटने से पहिले सम्वत् १६१६ में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर बसाया और इसी सम्वत् में उदयसागर नामक तालाब बनाना प्रारम्भ किया सो १६१९ में समाप्त हुआ और सम्वत् १६२२ की वैशाख सुदि ३ को इस तालाब की प्रतिष्ठा हुई ।

किते उदयनृपकै कहत, जेठो१सुत जगमाल३ ॥
पै कछु हेतु अमोघ परि, सयउ प्रताप१सुवाल ॥ ९ ॥
पहिलैं हुव इत जोधपुर, मालदेव नृप नाम ॥
ताकै चउ४प्रकटे तनय, रीति सुनहु प्रभु राम२०३१४ ॥१०॥

पादाकुलकम् ॥

जेठोचंद्रसेन१तँहँ जानहु, पहु तस वंस अनाथ प्रमानहु ॥
तनु२छोरिय नृप मालदेव तँहँ, जरिय अछुत्त३ उमा रानी जँहँ ॥११॥
इम भट१बंधु२जोधपुर आये, पुत्र सकल जिम्मन पठवाये ॥
जिनदिवसन बंधुन कुमारजन, जाते सब अंतहपुर जिम्मन ।१२।
जाइ सिसुन इम असन पह्यो जब, तरजे५ चंद्रसेन१जननी तब ॥
भाखिय तुमहिँ असन६ खिनभावत, पहु अबहि मेरो सुत पावत ।१३।

वत आदि ॥८॥ १ मघा ॥९॥ ॥१०॥ २ मालदेव का देहान्त हुआ तब ३ अस्पर्श की हुई उमादे नामक राणी जली ॥११॥ ४ जनाने में जीमने जाते थे ॥१२॥ जब बालकों ने भोजन मांगा तब चन्द्रसेन की माता ने ५ धमकाकर कहा ६ भोजन करने का समय ॥१३॥

❋ मारवाड के इतिहास में राव मालदेव का देहान्त सम्वत् १६१९ के कार्तिक में होना लिखा है और कुटुंब के बालकों को भोजन नहीं करानेवाली माता के ज्येष्ठ पुत्र को राज्य से वञ्चित रखना और बालकों को भोजन करानेवाली माता के लघु पुत्र को राज्य बिठाने आदि कथा लिखी सो इस समय की नहीं है, किन्तु राव सूजा के समय की है. जिसका संक्षेप वृत्तान्त इस प्रकार है, कि राव सूजा को असाध्य रोग हुआ तब उस समय के समीपी सभी भाई एकत्रित हुए उस समय सूजा का बड़ा पुत्र बाघा कुमारपन में ही परलोक चलागया था और बाघा के पुत्र वीरम, गांगा आदि विद्यमान थे, जब जोधपुर के समीपी भ्राताओं के बालक जनाने में भोजन करने गये तब वीरमदेव की माता ने कहा कि मैं भठियारी नहीं हूं सो इतने लोकों का भोजन बनाऊं यह सुनकर गांगा की माता ने उन बालकों को अपने स्थान पर लेजाकर भोजन कराया इसके कुछ दिन पीछे राव सूजा का देहान्त होगया तब राज्य के हकदार वीरम को निकाल कर उमराव सरदारों ने विक्रमी सम्वत् १५७२ के कार्तिक में राव गांगा को जोधपुर का राजा बनाया, उस समय बगड़ी के ठाकुर जैता ने तिलक की सामग्री नहीं मिलने के कारण अपने हाथ के अंगूठे को चीरकर रुधिर से तिलक किया, तभी से जोधपुर के सिंहासन पर बैठते समय राजाओं को बगड़ीवालों के तिलक करने की प्रथा चली आती है ॥ और उस समय बगड़ी के ठाकुर जोधपुर के सिंहासन बैठनेवाले नये अधीश को निवेदन करते हैं कि आप को जोधपुर मुबारिक हो इसके उत्तर में अधीश कहते हैं कि तुमको बगड़ी मुबारिक हो.

ताको अनुजराम४चोथो४तँहँ, तिहिँ कुल मालवे[1] आमझरा जँहँ॥
दूजो२उदय२चउ४न बिच दारुनँ[2], राजाहुव साधुन रोखारुनँ[3] ॥ २२ ॥
कलिमल[4]जो इहिँ घोर कुमायो, अब कहियत अवसर तस आयो।
पहिलैँ यह जब हुतो बालपन, जननी तब याकी सह परिजन ।२३।
जान लगी तीरथ या सुत जुत, दासिन रथ वृख इक१तत्र मृत हुतँ[5]।
स्व[6] पतिसीम मग जँहँ बहु सासनँ[7], नियति[8] कियउ तँहँ तिहिँ वृख नासन ॥ २४ ॥
दस१०दस१०कोसहिरायाचहुँ४दिस, नमिल्योकहुँपति[9]ग्रामभईनिस
सासन ग्राम मिले मंडल[10] सब, तिनमैं नमि[11] इक१वृख संग्यो तब ।२५।
कहुँ द्विज१कहुँ चारन दुर्विधि[12] करि, मिलि रु मूढ बोले दैहैँ सरि।
भेजैँ हमन तृनहु आजू[13] भनि, बालिसँ[14] बके विविध परज्यौँ बनि ।२६।
सुल्लहु दै रानी वृख मंगिय, सोहु दयो न नटेहि कुसंगिय[15] ॥
रत्ति रही तत्थहि तव रानिय, अह दूजे[16]२अनुगनँ वृख आनिय ।२७।

---

१ उस रामसिंह * का कुल मालवे में आमझरा नामक नगर में है. २ भयंकर ३ श्रेष्ठ पुरुषों पर क्रोधित ॥ २२ ॥ ४ इसने घोर पाप किया ॥ २३ ॥ दासियों के रथ का एक बैल ५ शीघ्र मरगया ६ अपनी सीमा के मार्ग में ७ उदक के बहुत ग्राम थे वहाँ पर ८ भाग्य ने बैल को मारा ॥ २४ ॥ ९ अपने पति का कोई ग्राम नहीं मिला १० उस प्रान्त में सब उदक के ग्राम ही मिले ११ नम्रता करके एक बैल मांगा ॥ २५ ॥ १२ खोटी सलाह करके १३ वगल १४ मूर्ख ॥ २६ ॥ १५ खोटे संगवाले १६ दूजे दिन सेवकों ने बैल आना ॥ २७ ॥

---

* मारवाड़ के इतिहास में लिखा है कि विक्रमी सम्वत् १६१९ में राव मालदेव का देहान्त हुआ जिस पहिले ही मालदेव ने अपने वडे पुत्र रामसिंह जिसको रामराजा भी लिखते हैं देश बाहिर निकाल दिया क्योंकि रामसिंह पिता (मालदेव) को मारडालना चाहता था, बाकी १० पुत्र रहे जिन में वडा उदयसिंह था उसको माता की अप्रसन्नता के कारण मारवाड़ से निकाल के छोटा भाई चंद्रसेन गद्दी बैठगया, परन्तु रामसिंह और उदयसिंह, बादशाह अकबर के पास पुकारू हुए इसकारण बादशाहने सेना भेजकर चंद्रसेन को दूसरे ही वर्ष निकाल कर जोधपुर को खालसे कर लिया, चन्द्रसेन शिवाणे में रहकर शाही सेना से १६३६ तक लड़ता भिड़ता रहा, फिर उसका देहांत हुए पीछे सम्वत् १६४० में बादशाह अकबर ने राजा का पद देकर उदयसिंह को जोधपुर देदिया, जिसका इतिहास यहां आगे लिखा है। और इस चन्द्रसेन का वंश इस समय अजमेर के जिले भणाय में है ॥

जब आदरवारी दासिन जुत, द्वारावति सु गई रिसमैं हुत ॥
रानीकोहि कहत कति वह रथ, पै निज देसहु कुमग लह्यो पथ ॥२८॥
इहिं सिसु उदय[2]सुपन दुख दरस्यो, सु नृप लैन वपुला अवसिकरस्यो।
जिते नटे सासनवारे जन, सासन तिन्ह लिय छिन्नि क्रोधसन ॥२९॥
मरुधर रीति यहै हठ मानैं, इक दुख सब सासनधर आनैं ॥
जातैं द्विज चारन मुख सब जन, संगी हुव तिन के तन मन सन ॥३०॥
पुर खैरवा हुतो जब पापी, फिर लै दत्त कुमति तहँ थापी ॥
सुनत लिके सासनजीवी सब, तिन्ह इतरन दत्तहु छिन्नैं तब ॥३१॥
सर्व षट्दरसन इम अखिल रिझाये, इहिं सिर मरन आउवा आये।
करि इक सिवमंदिर बिचमैं किर, सब बैठे लंघनँ धरनाँ सिर ॥३२॥
चंपाउत गोपाल सुरनँ चहि, सुभटन नृप वरज्यो कुवैन सहि ।
सुनि न तदपि कह्यो उत धरि मन, धरनाँ तुमहि दिवायो सुतनैं ॥३३॥
यह सिवतर्फ तुम कुमति उपायो, अब सैहो व फलहु तस आयो।
लंघनँ दिन नसस अद्भुत लग्गो, तब जिर्यंन सबन मन भग्गो ॥३४॥
अक्खयराज बारहठ अप्पन, कुंभ्याहरपति जुल्जि सहीधँन ।

---

१ शोक ॥ २८ ॥ इस उदयसिंह बालक ने २ स्वप्न का दुःख देखा था ॥ २९ ॥ ३ सांसणवाले एक का दुःख सबका दुःख समझते हैं ४ ब्राह्मण, चारण, आदि सब लोग साथी हुए ॥ ३० ॥ उस समय वह पापी उदयसिंह खैरवा ग्राम में था ५ सांसणों को लेने की कुमति करी सो सुनकर ६ सांसणों से जीनेवाले सब लोग जब एकत्रित हुए तब ७ अन्य लोगों के उदकग्राम भी छीन लिये ॥ ३१ ॥ इस कारण सभी ८*षट्दर्शनों को मोहित किये सो इस (उदयसिंह) पर मरने को आउवा पुर में आये और ९ बिचाल में एक शिवमन्दिर को बीच में करके १० उपवास करके धरना देने को बैठे ॥ ३२ ॥ ११ गोपालदास चांपाउत चाहि १२ तुम ही पूतों ने धरना दिवाया है ॥ ३३ ॥ १३ शिव का वृक्ष १४ अब खाओगे १५ उपवास करते १६ जीने का भय ॥ ३४ ॥ १७ राजा ने

---

* मारवाड़ में संन्यासी (रामावत, नीमावत, हिन्दू साधु, जो विशेष कर देवमंदिरों के पुजारी भी होते हैं) १ ब्राह्मण २ चारण ३ जती (जैनमत के साधु) ४ फकीर (यवनमत के साधु) ५ देवताओं के पुजारे जाति, जैसे रामदेवजी के पुजारे तँवर वंश के दासी हैं ६ इन छहों को षट्दर्शन कहते हैं अर्थात् ये छहों दर्शन करने योग्य हैं, इन्हींको डिंगळभाषा में खटवन भी कहते हैं ।

भेज्यो वह रु कह्यो इम भाखहु, रसा[1] अमंतु लै रु जिय राखहु ।३५।
अपराधिंन संगति पै उज्झहु, गिनि तिन्ह हेय देह तजि गुज्झहु ॥
अक्खय इतर पठावन अक्खिय, राजा वहहि भेजि हठ रक्खिय ३६
पटगृहतैं सु निकासि नय पावन, स्वामि निदिष्ट चल्यो समुझावन
जब नृपको दुंदुभिवादक जो, संगहि गय गोविंद नाम जो ॥ ३७ ॥
अक्खय जब धरनाँ बिच आयो, जाचकजूह बिबिध बिरुदायो ।
मुक्ले बिरुद चारन१रु बिप्र२हु, छोरन वपुनें भये हम छिप्रहु ॥३८॥
अक्खय सब स्वामीजव ऐहैं, वसुधेसहि तब खेल बतैहैं ।
अहँ लंघाइ इते प्रभु आये, स्वजन तदपि हम अधिक सुहाये।३९।
अक्खय कहिय मंडि बिच आसनं, समुझावन आयो नृप सासन ।
अब पै मरत१जाँति१द्विज२आदिक, मरन१हित न२जावन१मा-
सादिक२ ॥ ४० ॥
इम कहि न्हीत अक्खयहु इनमें, रहिगो मरन धरनधारिनमें ॥
गह्यो मरन वादक गोविंदहु, उत यह सुनत कुप्पि नरइंदहु ।४१।

अपने बारहठ सूँधियावाड़ के पति अखैराज को बुलाकर. जिनमें अपराध नहीं है वे अपनी १भूमि लेकर जीव को रक्खो अर्थात् मत मरो ॥३५॥ परन्तु अपराधवालों का साथ २ छोड दो उन अपराधियों को ३ त्याज्य जानकर ४ दूर से देह को छोडने दो ५ अक्षयसिंह ने दूसरे को भेजने के लिये कहा परन्तु राजा ने हठ करके उसीको भेजा ॥ ३६ ॥ ६ डेरे से ७ पवित्र नीतिवाला ८ स्वामि की आज्ञा से ९ राजा का नगारची (ढोली) ॥ ३७ ॥ १० चारणों के याचकों के समूह ने अखैसिंह को ११ उत्साह बढानेवाली स्तुति से बिरुदाया १३ हम शीघ्र ही १२ शरीरों को छोडनेवाले हुए हैं. हे अखैसिंह जब सब का स्वामि आवेगा तब उस १४ राजा को १५ इतने दिन लंघन कराकर आप इधर आये हो ॥ ॥ ३९ ॥ अखैसिंह ने सबके बीच में १६ आसन लगाकर कहा १७ अपनी जातिवाले (चारण) और ब्राह्मण आदि मरते हैं इसकारण मरना ही अच्छा है १८ महलोंवाले (राजा) के पास जाना अच्छा नहीं; अथवा महलों में जाना अच्छा नहीं ॥ ४० ॥ १९ लज्जित होकर २० धरणा लगानेवालों में रहगया २१ गोविन्द नामक ढोली ने भी मरना ही स्वीकार किया २२ राजा भी क्रोधित हुआ ॥ ४१ ॥

भेजि कटार कहाई निर्भय, यहें[1] तुमहु मारहु गुद अक्खय ॥
हरखि लयो सुहु उछि बारहठ, हुव[2] प्रातहि अब मरन फार हठ ।४२।
जरठ[3] इक्क खाटिक[?] आयो जहँ, तिहिं प्रातहि धुव मरन सुन्याँ तहँ ॥
जो चारन भजिगो घर उरजुत, सउँन[4]-परनि आयो तब तस सुत ।४३।
पुच्छयो तिहिं वह करत प्रवेसहि, दैवविलोम[5] बच्यो किम देसहि ॥
किम हुव सांम[6] उक्को धरनाँ किम, जंपहु तात उदंत[7] बन्यों जिम ।४४।
व्हीर्त जनक झुल्ल्यो खय होतें, सरिजैबो[8] न बन्यों सुत मोतें ॥
आलय में यातें भजिआयो, सह दुलही[9] तू दुलह सुहायो ॥४५॥
यह सुनि लंपित[9] छुराइ सु अंचल, चढि देहलि दुलही तजि चंचल ॥
सुरजन[10] दसन[1] नोर[2] कंकन[3] सह, आयो भजि धरनाँ तस सुत वह ।४६।
अहें[11] खट[6] लंघि दिवस सप्तम[7] हुत, हिय धरि धुव प्रातहि मरनोहित
विविध सुरस भोजन बनवाये, इकठाँ सब जिम्मन जुरिआये ।४७।
पंति बनत वह दुलह पैंड्ठो[12], हठ करि नर्म[13] कतिन हसि दिट्ठो ॥
परिवेसन[14] पैंचहु[15] इम अक्खिय, पिता[1] पुल[2] एहु वरहि असनें[16] प्रिय ।४८।
पत्तरि[17] दुव[2] तातें परिवेसहु, इक लै[1] जाइ खाय इक[1] एसहु ॥
इम रिस दुलहु खाटिकहिं[18] आई, पत्रावलि[19] द्वै[2] ही परुसाई ॥ ४९ ॥
उमामूर्ति[20] थप्पी सु पूजि अब, सप्तम[7] दिन वित्तत जिम्मे सब ॥
अंबाकी प्रतिमाके अग्गैं, ज्वलन[21] हविस्य[1] धूप[2] जहँ जग्गैं ।५०।

---

१ हे अक्षैसिंह यह गुदा में मारना २ हठ के समूह से प्रभात ही मरना निश्चय हुआ ॥ ४२ ॥ वहां पर एक ३ बूढा खेड़िया शाखा का चारण आया ४ उसके घर में उसका पुत्र व्याहकर आया ही था ॥ ४३ ॥ ५ देश का उलटा भाग्य कैसे बचा ६ मेल कैसे हुआ ७ हे पिता जैसा वृत्तान्त हुआ होवे तैसा कहो ॥ ४४ ॥ ८ लज्जित ॥ ४५ ॥ ९ लज्जित होकर वह गठजोड़ा छुडाकर १० उस भाग जानेवाले खेड़िया चारण का पुत्र ॥ ४६ ॥ ११ छः दिन का लंघन होकर इधर सातवें दिन ॥ ४७ ॥ १२ पांत में घुसा १३ हँसी करके १४ परोसने के १५ समय भी १६ भोजन के प्यारे हैं ॥ ४८ ॥ इसकारण इसको दो १७ पत्रावली परोसो १८ खेड़िया शाखा के दुल्हह को इसकारण क्रोध आया और १९ दो ही पातलें परोसाई ॥ ४९ ॥ २० देवी की मूर्ति २१ अग्नि में घृत का धूप ॥ ५० ॥

वाद्य पटह१दुंदुभि२मुख बग्गैं, लक्खन विध पद्यन थुति लग्गैं ।
भीरु सुनत सिंधुव३ स्वर भग्गैं, मरुप४ उदय पीठहु५ डगमग्गैं ॥ ५१ ॥
अक्खन मैं हु उमा आवाहन६, करिकरि कछि जजनँ७ लग्गो जन ॥
बैठे सवन निसा सु बिहाई, इम इच्छित बेला८ छिग आई ॥ ५२ ॥
अर्द्धउदित रवि जानि तजन असु९, सिवमठ१० सिर थप्पो गोबिंद सु११
खिंत१२ रहि मैं न लखौं इतनौं खय, इम गल छेदि गिरयो सु इनोदय१३
पिक्खि गिरत गोबिंदहिं ढुडपन, गिनलित सग्गनंलगे जाचकजन ॥
वह खाटिक ढुक्कह विच आयो, बप्प१४तनय२जुग२मरन बतायो ५४
यहमेरी१ जनककी२है यह, बिधि इन छिन्न भिन्न किय बिग्रह१५ ॥
सवन अरज किय इष्टदेवसन, जिम हम मरत सँगे१६ नहिं है२जन ५५
जीवहिं इक१तुरसा२अह्ना जाँकि१७, तो इहिं नृपहिं लजावे१८ खल तकि ।
जीवहिं यह ढुक्कह२दूजो२जिम, तिमजुत आयुसमय बिलसैं तिम ५६

उमा१९ सवन विन्नति मन्नी यह, जुग२ए बचे छिन्नभिन्नहु जह ॥
जन खिल हत१घायल हुव जानहु, मानव लक्ख१०००००अधिक
तँहँ मानहु ॥ ५७ ॥

---

१ ढोल नगारे आदि २ छन्दों में देवी की स्तुति होती थी ३ सिन्धवी रागिनी के स्वर लगने से अर्थात् पड़े राग के दोहे लगने से कायर भागने लगे ४ मारवाड़ के राजा उदयसिंह का ५ सिंहासन हिलने लगा ॥ ५१ ॥ अक्षों में देवी का ६ आव्हान (निमन्त्रण) ७ पूजन करने लगे ८ चाहाहुआ समय ॥ ५२ ॥ आधा सूर्य उदय होनेपर ९ प्राण छोड़ना जानकर १० शिव के मन्दिर के शिखर पर ११ उस गोविन्द नामक राजा के नगारची (नगारखाने की नौकरी करने वाले) ढोली को बिठाया १२ उस गोविंद ने सोचा कि मैं बाकी रहकर इतना नाश नहीं देखूं इसकारण गला काटकर वह सूर्य १३ उदय होते ही गिरा ॥ ५३ ॥ वह खेड़िया ढुलकहा सेवक बीच में आया और १४ पिता और पुत्र दोनों का मरना बताया अर्थात् एक घाव अपने नाम का और एक पिता के नाम का दोनों अपने ही शरीर पर मारे ॥ ५४ ॥ १५ शरीर का १६ दो जने साथ नहीं चले अर्थात् नहीं मरे ॥ ५५ ॥ एक तो तुरसा आढा १७ गिरकर जी जावे १८ तो राजा को दुष्ट देखकर लज्जित करै ॥ ५६ ॥ १९ देवी ने ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥

पापी नृप हुव जोधपुर, इम सु उदय अभिधान ॥
नामतज्यो जाको नरन, मानि अवाच्य समान ॥ ६६ ॥
इन१२मित सुत हुव उदयकै, कुलधर तहँ जसकाम ॥
सूर१कृष्ण२दलपति३सहित, माधव४सगत५सनाम ॥ ६७ ॥

॥ वैतालः ॥

भगवानदास६रु रतन७पुनि जगनाथ८भूपति९नाम ॥
नव९ए भये कुलवृद्धि जनक रु महिप चउ४प्रभुराम२०३।४।
पहु सूर१रु पट्ट रु कृष्णकुल नृप कृष्णगढ अब आँहिं ॥
रतलामआदि नरेस दलपति३वंस मालवमाँहिं ॥ ६८ ॥

॥ षट्पात् ॥

माधव४चोथो४महिप प्रथित हुव पुर पीसंगनि ।
महरचौं१जुन्न्या२प्रमुख नदी खारी तस कुल खनि ॥
ए चउ४नृप खिल इतर पंच५कुल अबपहिचानहु ।
सगतसिंह५खैरवा सु प्रभुराम२०३।४प्रमानहु ।
गोइंदगढ१रु बड़ली२बहुरि बज्जूथल३खरवा४दि बहु ॥
भगवानदास६कुल बस भनत सेस त्रिकं३ज ग्रामन सुपहु६९

दोहा ॥

लहैलुट्टी१७ग्ररु चोसला२८, निछोठी३१९सुखँ नाम ।

का चारण भदोरा नामक ग्रामवाला राजा को छोडकर चारणों की नाममा-
ला में शामिल न हुआ वह दुष्ट बहुत दिन तक जात बाहर रहा ॥ ६५ ॥ १
उदयसिंह नामक २ नहीं कहने योग्य समझकर लोकों ने उसका नाम लेना
छोडदिया ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ३ पिता के कुल की वृद्धि करनेवाले ४ चार राजा
हुए ५ हे प्रभु रामसिंह! ६ अब कृष्णगढ में हैं ॥ ६८ ॥ ७ प्रसिद्ध ८ आदि ९
उसके कुल की खान खारी नदी के पास है अर्थात् उपरोक्त सब ठिकाने खारी
नदी के समीप हैं १० हे प्रभु रामसिंह! सगतसिंह के कुल को खैरवा में जानो
११ बाकी के तीन पुत्रों के वंशवाले ग्रामों के ठाकुर हैं ॥ ६९ ॥ १२ ग्राम का
नाम है जिसको लैखोटी कहते हैं १३ नीठोठी आदि

क्रमतैं ए नव९उदयकुल, रमैं[1] भजत अविराम[2] ॥ ७० ॥
पीछैं छिप्रहि[3] पाप पकि, मरहिं सु उदय महीप ॥
तखत लहहिं सुत सून[4]तस, दुरित दूर कुलदीप ॥ ७१ ॥
अकबर३७७१निज रनथंभ इत, थप्पि रु जावत थान ॥
पठयो जित्तन हड्ड[5]पहुं, गडवागी गुडवान ॥ ७२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरवीतहव्याख्यानबीजहड्डाधिराजअस्थिपाल १७५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्येबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे चित्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहस्योदयपुराभिधनवनगरोदयसागराख्यतडागनिर्माणं १ उदयसिंहस्य विंशतिपुत्रेषु नवसूनुसंततिकथनं २ योधपुराधीशमालदेवसूनौ पट्टपुत्रचन्द्रसेनदायापहृतिपुरःसरं तदनुजोदयसिंहसिंहासनसमारोहणं ३ मातुस्तीर्थाटनसमयवृषभदानास्वीकारकुपितोदयसिंहस्य ब्राह्मणचारणादिधरापहरणं ४ धरापहरणकुपितब्राह्मणचारणादेरा उवाभिधग्रामेऽनशनव्रतोत्तरमात्मघातेन लक्षमनुष्यमरणं ५ अवशिष्टब्राह्मणादीनां गोपालदासचाँपावत

---

१ लक्ष्मी का सेवन करते हैं अथवा क्रीड़ा करते हैं २ निरन्तर (विश्राम रहित) ॥ ७० ॥ ३ शीघ्र ही इस पाप का फल पककर ४ पाप दूर करके ॥ ७१ ॥ ५ हाड़ों के राजा को ॥ ७२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में चित्तोड़ के महाराणा उदयसिंह का उदयपुर नामक नवीन राजधानी और उदयसागर नामक तालाब बनाना १ उदयसिंह के बीस पुत्रों में नौ पुत्रों के कुल की वृद्धि का कथन २ जोधपुर के राजा मालदेव का देहान्त होने पर पाटवी का हक मिटाकर छोटे उदयसिंह का राजा होना ३ माता के तीर्थाटन समय वृषभ देना अस्वीकार करने के कारण क्रोधित होकर उदयसिंह का ब्राह्मण और चारण आदि की उदक भूमि उतारना ४ उन खटदर्शन का क्रोधित होकर आउवा ग्राम में सात दिन का धरणा लगाकर एक लक्ष मनुष्यों का आत्मघात करना ५ शेष याचकों को मेवाड़ में लेजाकर गोपालदास चांपावत का अपनी

कृतभेदपाटनयनेन निर्वाहकरणं ६ बीकानरेशदत्तदशोत्तरद्विशत-२१०ग्रामप्रदानेन बारहठशंकरदानस्य षड्वर्षपालनं ७ उदयसिंह नृपतिपुत्रद्वादशाके नवानां वंशवृद्धिवर्णनं तेषु च चतुर्णां राज्यकरणं सर्वेषां च वंशजस्थानसूचनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥ आदितो नवत्यु त्तरशततमः ॥ १९० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९०।१इम जिन आदि१६१४सक, सत्त वचन अनुसार ।
लै आश्रय मुगलेस६कौं, दिय रनथंभ उदार ॥ १ ॥
सज्जं भरोसाके सुभट, थप्पि अचल रनथंभ ॥
पुर दिल्लिय प्रस्थानको, अकबर३७।१किय आरंभ ॥ २ ॥
साह कहिय तब सुर्जन१९०।१हिं, जो गुडवान विजेय ॥
जो जयकारि आवहु तुमहिं, देस इष्ट तव देय ॥ ३ ॥
कुम्भहिं तव सुर्जन१९०।१कहिय, साह चलहु कछु संग ॥
संगैं वा नहि संल सत, अप्प लहहु नय अंग ॥ ४ ॥
कुम्भ कहिय जो नृप करहु, इच्छितदेसलआस ॥
चित्त सहाय न तो चहहु, पानिप करहु प्रकास ॥ ५ ॥

हरिकस् ॥

जवंकरि करि सिक्ख तबहि सुर्जन१९०।१जवनेसतैं ॥
पहिलैं बुंदिय पधारि दल सव लिय देसतैं ॥

ओर से निर्वाह करना ६ बीकानेर के राजा के दिये हुए २१० ग्रामों को देकर बारहठ शंकरदान का खड्वर्ष को पालना ७ राजा उदयसिंह के बारह पुत्रों में नौ का वंश वृद्धि करना और उनमें चार का राजा होना तथा सबके वंश के स्थानों की सूचना करने का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ १९० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ तैयार करके ॥ २ ॥ २ वाञ्छित देश ३ फिर देवेंगे ॥३॥ ४ बादशाह की सेना भी ॥ ४ ॥ ५ वाञ्छा कियेहुए ६ पराक्रम ॥ ५ ॥ ७ शीघ्रता से

टूदा[१११]अरु भोज[१९१]हुव[२]हि रच्छक धरि देसमैं ॥
सूरहु कति तिन्ह सहाय रक्खिय अवसेसमैं[१] ॥ ६ ॥
नववय गृह रक्खि इमसु माइ पयनमैं नम्यौं ॥
सुर्जन[१९०]समुचित[२] अनीक[३] संगत पुनि संक्रम्यौं[४] ॥
रोप रु दृग अष्टि[१६२५]लगत संवत ऋतुराजमैं[५] ॥
हंकिय इम हड्ड[६१]नृपति कोविद[६] जयकाजमैं ॥ ७ ॥
वारि गढ गय सवेग गंजत गुडवानकौं ॥
घेरि रु जरि नालि जाल[७] मंडिय घमसानकौं[८] ॥
तोपन गढ गोलन जरु तोपन दगि लग्गयो ॥
मच्छत भरमार भार[९] भूतल डगमग्गयो ॥ ८ ॥
कलमलि फनंदेस[१०] सेस[१]कुंकारि हुव कुंडली[११] ॥
त्रास्त[१२] किरि[१३] जास[२]मचकि जानुनबिच[१४] टुंड[१५] ली ॥
पत्थरनिभ[१६] अंग समिटि कच्छप[३]चिपटो परयो ॥
प्रोथित[१७] अतलों[१८]दिग्गुट[७]न संकट घन स्वीकरयो ॥ ९ ॥
गोलन वमती प्रलंब नालिन[१९] अरि भू ग्रसैं ॥
निक्किन नरहल्ल[१]गज टल्ल[२]न पुनि निक्खसैं ॥
मानहु वनि ग्रासक[२०] निजनासक निगिलैं मही ॥
कह्हन इत जानि निज कि पीलुव[२१] प्रबिसे पैंही[२२] ॥ १० ॥

---

१ वाकी ॥६॥ २ उचित ३ सेना साथ लेकर ४ चला ५ वसन्त ऋतु में ६ चतुर ॥ ७ ॥ ७ तोपों की जाली लगाकर ८ युद्ध रचा ९ तोपों की भरमारी के भार से ॥ ८ ॥ १० फणों को हिलाकर शेषनाग ११ अपने अंग को कुण्डलाकार करके १२वराह को त्रास देने लगा १३ वराह ने उससे मचककर १४ घुटनों में १५ तुण्ड कर ली १६ अपने अंगों को समेटकर कच्छप पत्थर के समान चिपटा होगया १७ प्रसिद्ध अथवा घोड़ों (घोड़ों की दौड़) से १८ अतल आदि नीचे के लोकों ने ॥ ९ ॥ १९ गोले उगलती हुई लम्बी तोपों के पहियों को २० सो मानों अपना नाश करनेवाली जानकर भूमि उन तोपों का ग्रास करके गिटती है और २१ हाथी उनको अपनी जानकर घुसे हुए २२ पहियों को निकालते हैं ॥ १० ॥

जाम१हु इक१ठाम दगत तोपन पकरैं जथा[१] ॥
परिपरि छिति दूर पूर पलपल पलटैंप्रथा ॥
संतत[२] तम रत्ति१दिवस२घेत्ति[३] बिबस संकुल्यो ॥
डेर१न गढके२रन मन आँन्हिक बिधिमैं[४] डुल्यो ॥ ११ ॥
भासत इकधुंधि[५] भू१नभ२प्रसरीभई[६] ॥
दिनकर[७] उपराग[८] मनहुँ खं[९] ग्रसि प्रथनों[१०] दई ॥
दिग्गज[११]१ सुख ईह न रत चीहैं[१२] करत दिग्गजी२ ।
लीह डरत धीह स्फुरत सीहैं[१३] परत ज्यौं लजी ॥ १२ ॥
पावत इक१ हत्थिय गढ तोपन उडिकैं परे ॥
पावत उत२ पंथ परन दुग्ग[१४] वैरन[१५] जे परे ।
बाहिर कति गोडनगन सौप्तिकैं[१६] रन बित्थरैं ।
सुर्जन१९०१ भट सज्जित[१७]करि लज्जित तिन्ह संहरैं ॥ १३ ॥
बावन ५२ दिन हड्ड६१ लरत गढबिच बल बित्तयो ॥
जोधन रतिवाह[१८]हु तजि गौडेप[१९] नहि जित्तयो ।
कोटहु ढहि ठामठाम पैठन पदवी[२०] करी ।
निश्रेनिन दै तब नृप उच्च चढन उच्चरी ॥ १४ ॥
सासकैं[२१] सह व्याकुल तब बारीगढ सूर है ।
दुर्जन इम दै कहाइ सुर्जन१९० रन दूर है ।
तो हम बचिबो बिचारि संभरैं[२२] सरनौं तकैं ।

---

१ रीति २ निरन्तर ३ दिन में ही रात्रि घालकर अंधेरा भरगया ४ अंधेरा होजाने के कारण सन्ध्या करना भूलगया ॥ ११ ॥ ५ अंधेरा ६ फैली हुई ७ सूर्य के ८ ग्रहण में मानों ९ खग्रास का १० विस्तार दिया ११ दिग्गजों को सुख की इच्छा नहीं होने से दिग्गज की स्त्री १२ चीख मारने में रत हुई, नगारों के उत्कट शब्द से सीमावधि डरन लगी १३ जैसे सिंहके ऊपर पड़ने से लज्जित होवे तैसे वे दिशाओं की हथनियें लज्जित हुई ॥ १२ ॥ १४ गढ के १५ कोट १६ रातिवाह १७ सजे हुए ॥ १३ ॥ १८ रात्रि का युद्ध १९ गौड़ क्षत्रियों का पति २० मार्ग (पगडण्डी) ॥ १४ ॥ २१ मालिक सहित २२ चहुवाण का शरण

अप्पहु गुडवान तउ न अप्पहु इम ओदकैं ॥ १५ ॥
जो अब विरगैं न मान१ थानहु नहि जाइ२ तो ।
अप्पहिं मनसैं चुहान गोडनगन आइ तो ।
सुर्जन१९०१९ यह सुनि बिचारि गोडन मत स्वीकरयो ।
चीरन गरु वीरन काति धीरन तहँ उच्चरयो ॥ १६ ॥
भाखिय नृप मारन१ सन धारन सरनाँ२ भलो ।
चारन सुनि कारन इन्ह लार न किम लैचलो ।
अप्पन अरजासन इन्ह सासहु सुव अप्पिहैं ।
थान जु गुडवान सु सुनि गौडन घर थप्पिहैं ॥ १७ ॥
अक्खि तहँ राम१८९१२ अनुज पुच्छहु पहिलैं पहूँ ।
लावहिं१ छिग कै इन्ह हनि आवहिं२ भनिये लहूँ ।
संभर सुनि विन्नति लिखि आसय लिय साहको ।
लावन१हनि आवन२ सन सूचिय जस लाहको ॥ १८ ॥
पुव्वहु नय३ बेर कटक गोडनपर प्रेरयो ।
हटिहटि उलटो गयो सु काहुन जय हेरयो ।
काहु न मित दम्मन व्यय कोरनसन लग्गयो ।
भी करि रन गोडन मन गर्वन तउ भग्गयो ॥ १९ ॥
सुर्जन१९०१९तिन्ह लावन१हनि आवन२ दुव२स्वीकरैं ॥
तो अब गहिलावन तिन्ह धी हम जह महीधरैं ॥
साहहु यह सोधि रीति सुर्जन१९०१९प्रति सूचई ॥
आनहु गहि तो इम अति जानहु जस है जई ॥ २० ॥
लखि यह फरमान नृपहु गोडनदल लेखयो ॥

आप गुडवान नहीं दोगे इसकारण १डरते हैं ॥ १५ ॥ २ नमस्कार करें ॥ १६ ॥ ३ हलकारों से कारण सुनकर ॥१७॥ पहिले ४ राजा से पूछा ५ शीघ्र ॥१८॥ किसीने भी ६ न्यून खर्च नहीं किया ७ भय ॥ १९ ॥२०॥ ८ गौड़ों को पत्र लिखा

दै बच निज इष्ट[1] उनहिं अप्पहु लिखि त्यौं दयो ॥
गौडहु तजि बारियगढ नते[2] तब नृपपैं गये ॥
भनिभनि सरनौं स्वकीय बिन्नति रचतेभये ॥ २१ ॥
गौडन तिन्ह दै बिसास भूपहु गढमैं गयो ॥
अकबर३।७।१ध्वज गहि आन फेरत जब उन्नयो[3] ॥
नृप तँहँ निजनाम पोलि उच्छ्रित[4] इक१निर्मई ॥
भाँ[5] तिम दिनदिन बिसेस बारियगढकी भई ॥ २२ ॥
पोलि[6]१सु बनवाइ पतित साँल[7]२हु सुधराइकैं ॥
लक्खनमित जनपद कर जन पद कर लाइकैं[8] ॥
घन जिम जयके निसान[9]१दुंदुभि घुरवाइकैं ॥
ठल्लन[10]१थरक्काइ दुर्ग चामर२फुरवाइकैं ॥ २३ ॥
गौडनजुत हंकिय इम जय करि गुडवानमैं ॥
दिल्लिय पहुँच्यो उदार प्रतिपल अतिमानमैं[11] ॥
दिल्लिय बिच थान[12] यहाँ सो न लियउ संभरी ॥
बाहिर करि दल मुकाम निर्भय तिथिही करी ॥ २४ ॥
जानिय बिनुबंधन लखि गौडहिं पकरैं जथा ॥
पातल[13] कबहू खिजं हु अप्पन कुलकी प्रथा ॥
यौं लखि भुव[14]१काल२नगर बाहिर नृप उत्तरयो ॥
अवसर गुडवान बिजय अकबर३।७।१उपदा[15] करयो ॥ २५ ॥
अक्खिय नृप गौड हुकम है प्रभु तव आदरयो ॥

---

१ अपने इष्ट का वचन देकर २ नम्र होकर ॥२१॥ ३ उठा ४ ऊंची बनाई ५ कान्ति ॥२२॥ ६ द्वार ७ पड़ीहुई शाला को सुधरा कर ८ देश के लाखों रुपयों का हांसिल और मनुष्यों के हाथ अपने पांवों में लाकर (लगवाकर) ९ नगारे "यहां निशान शब्द नोवत का और दुन्दुभी शब्द नगारे का वाचक है" १० बडे झन्डे खडे करके ॥२३॥ ११ अत्यन्त बल में १२ दिल्ली में स्थान नहीं लिया १३ शरणागत की रक्षा लेकर ॥ २४ ॥ १४ देशकाल देखकर १५ नजर ॥ २५ ॥

वंधव. काति हे *विलोम †विग्रह तिन विस्तरयो ॥
तिन्ह मरतहि गोडनृपति अप्पन सरनौं तक्यो ॥
वारीगड साह आन फेरन पहिलैं बक्यो ॥ २६ ॥
देस१हिँ कर देस२खेत१रोकन हमकोँ२दई ॥
सासन वस जो कही सु लज्जित सिरही लई ॥
वारीगड बाहिर निज परिजन सब बुल्लये ।
द्वारन निज रक्खि हमहि केवल रहिवेदये ॥ २७ ॥
अग्गहु पठये अनीक तब जब मिलिवो तक्यो ॥
इतरन अटक्यो यह तिहिँ आगँस पुनि ओर्दक्यो ॥
पिसुनन मत श्रुति परैं सु अप्प न उर आनिये ।
गोडन पति पय लगाइ मोदित सनमानिये ॥ २८ ॥
संमरपर रीझि साह सूचित सब स्वीकरयो ॥
यांकँहँ कृत लेख देय अप्पन पुनि उच्चरयो ।
यह सुनि फरमाँ वजीर१ सुनसीर२ प्रति मंगयो ।
सर्तवर विरचि सु समुद्र दिल्लियपतिकौँ दयो ॥ २९ ॥
वावन ५२ मित जनपद लिपि ताविच पहिलैं बनी ।
भाखिय अक्बर ३७१९ बरं को भुव तुमरो भनी ॥
कासी१ सबसौँ वर नृप अक्खिय हमरै कहैँ ।
मरतहि जन जत्थ मुक्ति लाह सु सहजैं लहैँ ॥ ३० ॥
हड्ड६१ हिँ सुनि एह साह अकबर३७१९ अति तुष्ट ह्वै ॥
जुहु दिय वढती लिखाइ कासिय१ हित जुष्टँ व्है ।
जंपिय किय माफ तुमहि कासिय १ हद हाजरी ।

गौड़ के कितने हीं भाई * विरुद्ध थे उन्होंने †युद्ध किया ॥ २६ ॥ १ अपने सब सेवकों को बुलाए ॥ २७ ॥ २ अन्य लोकों ने रोका ३ उस अपराध से ४ डरा ५ चुगलों का मत कान पड़े उसको आप मन मानो ६ प्रसन्न होकर ॥ २८ ॥ ७ फरमान ८ शीघ्र छाप लगाकर ॥ २९ ॥ ९ देशों की लिखावट १० तुमको श्रेष्ठ भूमि कौनसी दीखती है ॥ ३० ॥ ११ हित में प्रीति करके

चाहत हित सब्बहु खिल[1] बावन ५२ की चाकरी ॥ ३१ ॥
जनपद तब नृप छवीस २६ कासिमढिग जँछये[2] ।
दल२ करि इतके छवीस २६ दँलाविच[3] रहिवेदये ।
इहिं क्रम फ़रमान अपर[4]२ लिपि जुत करवाइकैं ।
लेख सु दिय सुर्जन१९०१।१ हित घन हित मन लाइकैं । ३२ ।
पदवि रावराजा निज करि हय[5] पट[6] अप्पिये ।
भूखन अरु हेति[8] पंच सहँस हु सुनसव दिये ।
अकबर ३७।१ वर वैभव इम सुर्जन १९०।१ हित अप्पयो ।
वारीगढ गौडनपय लाइ रु वहुग्यौं दयो ॥ ३३ ॥
अग्रज १ हित बुंदिय इत मध्यकुमर आइकैं ।
भोज१९१।२ सु मिलिजावहिं द्रुत[9] खटपुर निसं[10] भाइकैं ।
राजकुमरि १९१।१ भोज१९१।२ रमनि[11] बुंदिय विमना रहैं ।
अच्छ न वपु[12] आकृति इम चित्त न तिहिं जो चहैं ॥ ३४ ॥
हुव रन रनथंभ तवहु मध्य२ कुमर पैत्त[13] व्हाँ ।
ही वह कुमरानि न्हाइ पति रीत अँनुरत्त[14] व्हाँ ।
अँग्रज१[15] तिय देवर तँहँ रक्खिय निस इक१ ही ।
गर्भ स्थिति ताहि रजनि देवरजुवती गही ॥ ३५ ॥
प्रातहि चढि गो कुमार भोज१९१।२सु अपनी पुरी ।
क्रम करि इत बुंदिय वह गर्भस्थिति अंकुरी[16] ।
सायक हग सोलह १६२५ सक सावन५ दल२ स्वेत[17] १ मैं ।

---

१ बाकी बावन परगनों की चाकरी साधो ॥३१॥ २आगे उन बावन परगनों को आधा करके छबीस परगने इधर बुन्दी के समीप ३पत्रमें रहने दिये ४अन्य॥३२॥ राव राजा का खिताब देकर ५हाथी ६वस्त्र ७शस्त्र ८श्रेष्ठ॥३३॥ इधर बुंदी से मध्यम कुंवर भोज अपने बडे भाई दूदा से मिलकर ९ शीघ्र १० रात्रि में खटकड़ा नामक ग्राम को जाता था ११ भोज की स्त्री बुन्दी में उदास रहती थी १२ उसके शरीर की आकृति अच्छी नहीं थी ॥३४॥ १३ वहां गया १४ प्रीतियुक्त १५ बडे भाई की स्त्री ने ॥ ३५ ॥ १६ उठी १७ श्रावण के शुक्ल पक्ष में

चउदसि १४ जनम्यौं कुमार गणकन खिन चेतमैं ॥ ३६ ॥
जयवति १८८।१ नृपमाइ जबहि मोदित मन मंडयो ।
देय सु बहुस्वापतेय मग्गनगनकौं दयो ।
दुर्जनसल्ल१९।१।१ हु भतीज जनि सु बसु१ भूर२ दये ।
बुंदिय महके बिनोद भोज नन बहुतेभये ॥ ३७ ॥
सुर्जन१९०।१ अब दिल्लिय इम नत्तिय जनम्यौं सुन्यौं ।
लक्खन करि दान इतर दानन बढिबो लुन्यौं ।
नत्तिय अभिधानहु नृप रत्न १९२।१ हि चहि रक्खयो ॥
ए इहि गणकनअर्थास होवहि इम अक्खयो ॥ ३८ ॥
इति जस लहि सिक्ख बहुरि बुंदिय नृप आत भो ।
जेठो १ सुत सम्मुह तस पत्तनसेन जात भो ।
पहु करि पुरमैं प्रवेस पय परि प्रैनमी प्रसू ।
बुल्लि सु सुतसुत बिधारि बलि मह बक्खस्यो वसू ॥ ३९ ॥
बुंदिय तब आइ भोज१९१।२ खटपुरसन बेगही ।
वंदित निज तात१ मात२ आसिखैं सुखमाँ वही ।
नूतन नृपमाइ पुब्ब सर १ मंदिर २ निर्मये ।
दोउन्न इक१ उच्छव जब संचयँ खुलिबे दये ॥ ४० ॥
पल्वल कुहि मैनन किय तारागढ पुब्बघाँ ।
हडु६।१ नपति माइ हाल बिस्तृत किय ताल१ हाँ ।
लक्खन खैनिबे लगाइ दीनन अवलंबदे ।

१ज्योतिषियों को॥३६॥२उत्सव३धन ४भतीज के जन्मपर ५बुंदी में आनंद और गोठें बहुत हुईं; वा बुंदी में तो आनंद बहुत हुआ परंतु भोज को विशेष नहीं क्योंकि यह पुत्र दुहागिन स्त्री के हुआ था ॥३७॥ ६पोते को ७ अन्य राजाओं के दान बढने को काटदिया ८ज्योतिषियों ने कहा कि यही राजा होवेगा।॥३८॥ ९पुर से१०माता को नमस्कार किया११धन दिया॥३९॥१२पिता को१३ आशीर्वाद की१४शोभा धारण की१५तालाव १६ धन॥४०॥ १७तालाव जो मीणों ने तारागढ के पूर्व दिशा में किया था वहां वडा तालाव वनाया १८ खोदने को

रक्खन निज किति दम्मन लक्खन *निकुरंब दै ॥ ४१ ॥
ताल१ सु गहिरो खुदाइ अंकिय निजनामतैं ॥
पालिहु गिरि प्रमान तास बंधिय विधि बामतैं ।
बापीसम द्वार तास †सेतुहि बिचबंधयो ।
सीढिन सुधराइ पंति पद्धर पथ संधयो ॥ ४२ ॥
अंदर ‡अपसव्य१ +सव्य२ रक्खिय दुव२ ओवरी ।
¶बीजक लिपि सव्य२ सुद्ध पत्थर तँहँ बिस्तरी ।
अच्युतगृह बीजक लिपि तत्थहि खुदवाइकैं ।
प्रतिकृति[2] हरिकी पुनि दिय मंदिर पधराइकैं ॥ ४३ ॥
गोल्हा[3] कृत बापी दिग सिखिदिस[4]२ हरिगेह जो ।
नूतन बिरच्यो अपुब्ब जयवति १८८।१अति नेह जो ।
लच्छो[5]१ सह नारायन२ थप्पिय तँहँ लाडसौं ।
उच्छ्रित[6]पन मंदिर वह छन्न न कहुँ आडसौं ॥ ४४ ॥
नव इम सर१ मंदिर२ जुग२अर्जुन १८८।१ तिय निर्मयो ।
भूपति अब आतहि तिन्ह उच्छव बिधिसौं भयो ॥
व्यय[7] परि धन लक्खन सर१मंदिर२दुव२ यौं बनैं ॥
लक्खन पुनि उच्छव लखि धाँधाँ[8] उघरे घनैं ॥ ४५ ॥
सायक दृग सोलह१६२५सक उच्छव यह इद्ध[9]भो ॥
सुनिसुनि जस[10] जस बिसाल बैरिन हिय विद्ध[11] भो ॥
दूदा१९१।१दुभगासुत[12] इम ताहि न नृप आदरैं ॥
वर्णा[13]१स्याम२नक्क[14]१वक्र१धारहु छबि नाँ धरैं ॥ ४६ ॥

---

* समूह॥४१॥ †पालसें॥४२॥‡दाहिनी+बांई¶ओवरी में शुद्ध पत्थर पर उसका बीजक लिखाया१विष्णु भगवान् के मन्दिर का बीजक उसी में खुदवाकर २मूर्ति ॥४३॥ ३गोल्हाकी बनाईहुई बावडी४अग्नि दिशा में५लक्ष्मी सहित६ऊंचे पन में॥४४॥ ७खरच८दिशा दिशा में ॥४५॥ ९बडा उत्सव हुआ १० जिसका बडा यश सुन सुनकर ११बेधन हुआ १२ दुर्जनशाल दुहागन का पुत्र था इसरकाख १३ कालारङ्ग १४ बांकी नासिका ॥ ४६ ॥

भोज१९१।२आसेचनक[1]रु वल्लभ तियकै भयो२ ॥
तकि इम अति नेह ताहि लालन[2]पन सो लयो ॥
तीजो३सुत रायमल्ल१९१।३जाहि हु हितसौं तकैं ॥
नैंकहु जनकत्व[3]नेह जेठे१सुतपै न[4]कैं ॥ ४७ ॥
वनिता जेठे१रु मध्य२इक१इक१पहिलैं वरी ॥
अब नृपसुत तीन३न जिम व्याहन भाति आदरी ॥
पुत्रनत्रिक३व्याहिय तिम वेगहि महसौं पहू ॥
वर[5]जुत जितनी वधाइ घर लिय दुलही वहू ॥ ४८ ॥
नाम१रु मिति२जाति३नेर४कहियत क्रमकी कथा ॥
जे अब प्रभु राम२०३।४सुनहु रवि[6]कवि वरनैं जथा ॥
कर्मध्वंज[7] छत्रसिंह अव्हरपतिकी कनी ॥
जेठे१सुत उमा१९१।२नाम दूजी२परनी जनी ॥ ४९ ॥
रानाउति धन्यकुमरि१९१।३भारत तनया भनी ॥
विजयनगर यह तीजी३दूदा१९१।१विवही वनी ॥
भूपति इम तीन३हि तिय व्याहिय सुतकौं भली ॥
चंद्राउति चोथी४पुनि अप्पहिं वरिहै[8] वली ॥ ५० ॥
बुंदियपति तिम विवाह भोज१९१।२हिं खट६व्याहयो ॥
गंदियत जिम रूच्य[9] दान अर्णव[10] अवगाहयो[11] ॥
जगन्नाथ कूर्मपुत्रि जसोदा१९१।२सनाम जो ॥
आनी तिय भोज१९१।२कुमर दूजी अभिराम[12] जो ॥ ५१ ॥
पंचानन पुत्रिय पटु[13] रट्ठोरि जु छप्पर्नी[14] ॥
जसकुमारि१९१।३सु भोज१९१।२कुमर तीजी३परनी जनी ॥
मालदेव मरुपतिसुत रामसिंहकी सुता ॥

१अत्यन्त रूपवान २लाड से ३पितापन का स्नेह ४नहीं करता ॥४७॥५ शिसं ॥४८॥ ६ सूर्यमल्ल कवि वर्णन करता है सो सुनो ७ कमध्वज (राठोड़) आहोर के पति की कन्या ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ८ कहते हैं ९ दुल्हह ने १० दान के समुद्र का ११ थाह लिया १२ सुन्दर ॥५१॥ १३ चतुर १४ छप्पन देश की "ईडर के देश को छप्पन

जो व्याही भाग्यवती१९१।४चुत्थी४गुनसंजुता ॥ ५२ ॥
पुत्रि झल्लसिंहकी सु लालकुमरि१९१।५पंचमी५ ॥
मानकुमरि१९१।६खदिराट गनेससुताही छमी६ ॥
तनया बलकर्णकी अभिजनकुमरि१९१।७तोमरी ॥
पट्टानिपुर पहुँचि वीर सप्तमी७यहै बरी ॥ ५३ ॥
भोज१९१।२हिं पुनि इम छ६व्याह व्याहि रु अब भूपती ॥
सत्त७हि दिय व्याह रायमल्ल१९१।३कुलजा सती ॥
बिक्रम भुवनांगवंस द्रौपदि१९१।१तनया दई ॥
इम चालुक पित्थल तिहिं रंगकुमरि१९१।२अप्पई ॥ ५४ ॥
कृष्णकुमरी१९१।३तीजी३कछवाह कुंभकी कनी ॥
जिम चोथी४अग्रकुमरि१९१।४कुम्भ अचलजा जनी ॥
कांबंधिय राजकुमरि१९१।५चंद्रसुता पंचमी५ ॥
छत्रकुमरि१९१।६चंद्राउति अचलकी सुता छमी ॥ ५५ ॥
सप्तम७सीसोदनी सु रामसुता रुक्मिनी१९१।७ ॥
गहि क्रम ए दुव२छ६सत्त७सुत त्रय३बिवही गिनी ॥
जंपहि अवसर[४] समस्त[५] संतति[६] इनकी जथा ॥
करि हित प्रभु राम२०३।४सुनहु संभव पहिलीकथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रत्रिक३हिं इम व्याह पहु, अवनि बिभागहु अप्पि ।
रुचिर कनी उपयम[७] रचिय, थान१लगन२वर थप्पि ॥ ५७ ॥
लालकुमरि१९१।२मध्या२ललित, मदनकुमरि१९१।३लघु नाम ।
ए कन्याभावहि उभय२, बिनु अमु किय बिधि बाम ॥ ५८ ॥
इन दोउ२नसन अग्रजा१, कन्या पूरकुमारि१९१।१ ॥

कहते हैं और इस छप्पन का थोड़ा सा भाग उदयपुर और डुंगरपुर के अधिकार में भी है" १ चौथी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २ राठोड़ी ॥ ५५ ॥ ३ कहेंगे ४ समय पर ५ सब ६ सन्तान को ॥ ५६ ॥ ७ विवाह ॥ ५७ ॥ ८ सुन्दर ९ कन्या

ब्याहन नृप संचय विविध, सह मह दिन्न पसारि ॥ ५९ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जोधपुरभूप कीनौं पंचम उदय२पापी भाख्यो भू विहीन चंद्रसे-
न१ताको जेठो भ्रात ॥
ताके उग्रसेननाम पट्टपकुमार हुतो बुंदीपति ताहि न्यौंतिबुल्ल्यो
बहु लै बरात ॥
भोज१६११९वारी सोदर स्वसा जो पूरकुमारि १९१११ सो उचित
सुदाय अप्पि ताकँहँ बिबाही तात ॥
स्वीय आरतीके नेग सासूसौं छुराइदीनौं सुर्जन१६०११पुरोहितन
तबतैं मिल्योहीजात ॥ ६० ॥
चोथो४चंद्रसेन१जो भाख्यो रामसिंह४भाई भाग्यवती१९११४ ता-
की धिय चोथी४तिय ब्याह्यो भोज १९११२ ॥
पीछैं कहि आये सो उदंत रु इहाँतो इम कन्या उग्रसेनही बि-
वाही भूप ब्याति ओज ॥
दीनौं आयु अवधि स्वकन्याकौं सुरथपुर कीनौं जसविदित वि-
बाहत महत सोज ॥
पीछैं कर्मसेन१कन्ह२आदि सुत ताकै भये भागिनेय भोज १९११२
के फिरावन अरिन फोज ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

इम बिवाहि कन्या अधिप, सह दुल्लह दिय सिक्ख ।
रस बहुत दुव१दिस रह्यो, त्याग१असन२दुव२तिक्ख ॥ ६२ ॥
सुत पट्टप सामंत१८७११को, बलकर्ण१८८१जु अधिवीर ॥
भुजनगरी१तिहिं सह विभव२, धरनीपति दिय धीर ॥ ६३ ॥
कुवपु१रूप२जेठो कुमर, दूदा१९११सूर१उदार२ ॥

पन में ही मरगई ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ १ श्रेष्ठ दहेज देकर २ अपनी ॥ ६० ॥ ३ पु-
त्री ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ४ राजा ने ॥ ६३ ॥ ५ शरीर से कुरूप

पितरभक्त३कुलधर्म पटु४, अवनी१जस२रखवार५ ॥ ६४ ॥
तदपि जानि दुभगातनय, राच्यो सुभगा रंग ॥
भूप न रक्खैं भूपनहु, इक्क१हु याके अंग ॥ ६५ ॥
रजतकेहु भूखन रहित, वाजि१रु स्वर्धाहि बस्त्र२ ॥
अनुजनसम नहिं आदर३हु, सुवरन खचित न सस्त्र४ ॥६६॥
दुजनसह्य१९११२दुर्विध दसा, पट रहि तदपि प्रसन्न ॥
अनय न चिंतै कबहु यह, वसु व्यय विरह विपन्न ॥ ६७ ॥
पै याकों बुंदी२पुरी, दिय सह पट्टनिरद्रंग ॥
यातैं अब कासी१अधिप, मंडै रहन उमंग ॥ ६८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे दिल्लीदेशाद्बुन्द्यागतसज्जसेनसुरजनस्य गुडवानबारीदुर्गावरणं १ आवरणयुद्धव्याकुलशरणागतगौडराजमकबरयवनेन्द्रान्तिकमानीय सुरजनस्य तदर्थतद्दुर्गदीपनं २एतत्समरपारितोषिकद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्राप्त्यनन्तरं वाराणसीमासाद्य सुरजनस्य रावराजापदप्रापणं३ कनिष्ठा-

१ पिता का भक्त २ भूमि की ॥६४॥ ३ दुहागिन का पुत्र ४ सुहागिन के रङ्ग में रचा ५राजापन का चिन्ह एक भी नहीं रखता था ॥६५॥६ अल्पमूल्य के वस्त्र ७ छोटे भाइयों के समान ही उसका आदर नहीं था ८ स्वर्ण में जड़ेहुए शस्त्र नहीं थे ॥६६॥ ९ दरिद्रता में १० धन के खरच के विरह में आपदा से पीड़ित था तो भी अनीति का स्मरण नहीं करता था ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में सुरजन का दिल्ली से बुन्दी आकर सेना सझकर गुड़वान में बारी गढ को घेरना १ उस घेरे के युद्ध से व्याकुल होकर शरण आयेहुए गौड़ों के राजा को बादशाह अकबर के समीप लेजाकर सुरजन का वह गढ पीछा उसीको दिलाना २ इस युद्ध की प्रसन्नता के दान में बावन परगने और काशी का निवास पाकर सुरजन का रावराजा पद पाना ३ सुरजन के छोटे पुत्र भोज के पुत्र

त्सुजंभोजस्य रत्नसिंहस्यानुजन्माकर्णनेन यवनेन्द्राज्ञया सुरजन
स्य बुन्दीमागमन ४ बुन्द्यामर्जुनपत्नीसुरजनजनन्योः कासारमन्दि
रप्रतिष्ठानन्तरं सुरजनपुत्रानुपुत्रीपाणिपीडनसूचन ५ कुरूपदुर्भ
गापुत्रहेतोर्ज्येष्ठकुमारदुर्जनसल्लोपरि सुरजनस्याप्रसन्नत्वभणन ६
नाष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥ आदितः एकनवत्युत्तरशततमो मयूखः ॥ १९१ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

बालीगढ जयपै बनी, बावन५२गढ बखसीस ॥
छंकन हुत१ अकबरहि उत२, कंटिलये बुंदीस ॥ १ ॥
ग्रामनि सह कासी१नगर, मिल्यो इजाफामाँहिं ॥
यातें तँहँ रहिबे अधिप, अब मन चिंतन आँहिं ॥ २ ॥

॥ मनोहरम् ॥

बावन५२दुर्ग जे देस तिनमैं छ सात गढ विमुखन दाबिराखे ते-
हू साहनैं दये ॥
सबहि लये ज्यों फरमानमैं लिखाइ नृप त्यौंही काढि विमुख
स्वकीय करि ते लये ॥
खींची१३रायमल्लहिं फिराऊ सो समुझि मऊ१ताकी राजधानी
दैन अच्छर जबैं भये ॥
भूप तब भ्रातनमैं भेद न उचित भाखि गो नटि मऊ१पैं ताके
वर्ण बदलेगये ॥ ३ ॥

रत्नसिंह का जन्म सुने पीछे बादशाह से विदा लेकर सुरजन का बुन्दी आना ४ बुन्दी में अर्जुन की स्त्री और सुरजन की माता के तालाब और मन्दिर की प्रतिष्ठा हुए पीछे सुरजन के पुत्रों के विवाहों की सूचना और सुरजन की पुत्री के विवाह का कथन ५ कुरूप और दुहागन का पुत्र होने के कारण बड़े कुमार दुर्जनसाल से सुरजन के अप्रसन्न होने के कथन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से १९१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ ग्रामों सहित २ अधिकाई में ॥ २ ॥ ३ शत्रुओं ने ४ अक्षर ॥ ३ ॥४॥

बुंदीके समीप †हिंगुलाजगढ१साहाबाद२मालपुर३टोडा४टोंक५
रामपुर६मानिये ॥

सेरगढ७केकरी८सिरोंज९खरवाडा१०बलि बालाभेट११खाताखे-
री१२भेलसा१३बखानिये ॥

खंडारि१४रु मल्लारनाँ१५चैनपुर१६बारी१७खैरी१८रैनगढ१९सिं
घोली२०रु भैंसरोर२१जानिये ॥

केथोली२२रु साढोरा२३गुगौर२४पुनि खल्लीपुर२५मीतसह आग
र२६छबीस२६पहिचानिये ॥ ४ ॥

कासी१के समीप *प्रांत †प्रथित छबीस२६पाये जाँनौंजिते नाम
तिनहूके अवधारिये ॥

गढ चरनाल१माँडाँ२रामगढ३मैनपुर४सैदाबाद५फब्बलपूर६आ
वर७निहारिये ॥ ५ ॥

कोटापतिभीम१९१२ रावराजा बुधसिंह१९७१समैं बुंदी लूटि
लेखाल[2]य लेख सब लेगयो ॥

जिह सह नाम फरमान इन देसनको जाइ सरवस्व साथ कोटा-
गढमैं ठ[3]यो ॥

माग[4]धन कल्पि[5]त कितेक लिखिदीनैं यातैं साक्खि[6]सह पायो ति-
न्हैं मन कहिबे भयो ॥

कासी१बिनु हाजरी इजाफा सब ग्रामनसौं तहाँ रहिबेकौं नृप
नियम अबैं लयो ॥ ६ ॥

रानी मध्यमा२जो सुर्जन१९०१कै कनकवती१९०१२दुर्गापुरी ता-
कैं तँहँ ताल[7]१तिंहिं निर्मयो ॥

सो कनकसागर१कहावत अबहू ख्यात रा[8]म२०३४नरनाह देखो
तबको खन्योंगयो ॥

---

* प्रदेश † प्रसिद्ध १ सुनो ॥ ५ ॥ २ दफतर लूट कर ३ रहा ४ बड़वाभाटों ने
५ झूठे ६ साची सहित ॥ ६ ॥ ७ तालाब बनाया ८ हे राजा रामसिंह

सो मानी बनिक बेनीदास१रु मथुरादास२अधिक अमात्य जु-
गरनृपसों करयो नयो ॥
दिल्लीहोइ कासी रहिबे पर प्रयान कीनों नूतन अमात्यजुग२सं
ग यहही लयो ॥ ७ ॥
पट्टानि१सहितबुंदी२बूदा१९११क्यों दई बिचारि लाखेरी रु खटपु-
र२भोज१९१२के बिचारिकैं ॥
पल्हायथे१सों साँगोद२दीन्ही रायमल्ल१९१३हित अप्पन उचित
यातें कासी धिय धारिकैं ॥
आगें भो अमात्य जाजपुरके मुकामन जो सेवराके भाखें भावी
नृपहिं निहारिकैं ॥
देसमैं सो नारायन बनिक खटोर राखि लीनैं संग नूतन अमा
त्य दुव टारिकैं ॥ ८ ॥
उभय२अमात्यन निवेदी नृपतें यों कासी रहिबोही आयु अवधि
——बिचारयोतो ॥
छाया सम संगी अवरोधन१अनुग२आदि संग चलिहैंही दिल्ली पंथ
किम धारयो तो ॥
भिन्न मग स्वीयन पठैबो पहिलैं जो होइ स्वामिबिनु काहू नयो
अमल निवारयो तो ॥
साँडा१दिक दुर्ग लाह राह रुकि जैहैं हाहा हैहैं लिख्यो हुकम
हजूरको हु हारयो तो ॥ ९ ॥
पहिलैं पधारि कासी अमल जमाइ यातैं अंतेउर१ आदिक ध-
नीके धाम धरिये ॥
स्वामि अनुरागिनी प्रजाहू सँरिहैं हीं संग ताकों वास बिहित बि
सास दै बितरिये ॥

१ नवीन ॥७॥ २ बुद्धि में ॥८॥ छाया के समान साथ रहनेवाले ३ जनाना और सेवक आदि ॥ ९ ॥ ४ जनाना ५ साथ चलेगी ६ उचित ७ दान करो

माँडा१सुख जो न फरमान मानैं ताकौं जीति आन एक अपनी
अमोघ अनुसरिये ॥
पीछैं पातसाहकी पधारि पीछे प्रीति पहु इच्छित अनहेलौं सने
ह सेवा करिये ॥ १० ॥
———मानि अरजी यौं जवनेसकौं दै सीख लै सुहायो जस
बागके बगरमैं ॥
अंतहपुरा१दि लै स्वकीय सब संग चल्यो दायादन दैकै देस
जगरसंगरमैं ॥
बुन्दी तजि द्वैसत२०० गृहस्थ पुरवासी गये सबन निबाहि भक्ति
लै गरे सगरमैं ॥
सुरजन१९०१जाइ स्वामी भो स्वकीय झण्डे झटिति झुकाइ
विश्वनाथके नगरमैं ॥ ११ ॥
पीछैं चरनाद्रिगढ१आदि चउबीस२४प्रांत कासीके समीप उतर
पाये अपनाइकैं ॥
रामगढ१माँडा२कुवर२दसुनैं दये न दावि दीनैं तहँ बेनीदास१स-
चिव पठाइकैं ॥
खो हा लहु जाइ लै दिन नव दूनैं रामगढ१ दुर्जर दुर्ग गोलन
को गजैर लगाइकैं ॥
सुर्जन१९०१के धीसैन पलेटा हर्तनाको डारि खाँडोके खि-
लहार लयो माँडार गरकाइकैं ॥ १२ ॥

१खाली नहीं जावै ऐसी२वाञ्छित समग्र पर्यन्त॥१०॥३राणी के४नगाड़े (चोक) सं.४ दायभाग पानेवालों को ५ चमकता हुआ ६ गैल (साथ) सं ७ सगड़ (शकट), "यहां सगड़ शब्द एक वचनांत है परंतु ऊपर कहेहुए दो सौ कुनबों के संबंध से बहु वचनांत जानना चाहिये". ८ मालिक हुआ ९ काशी में अप- ने झन्डे १० शीघ्र खड़े करके ॥ ११ ॥ ११ शत्रुओं ने १२ निरन्तर प्रहार १३ मन्त्री ने १४ सेना का १५ खड्ग के खिल्हाड़ी ने ॥ १२ ॥

वज्रभ्कर गोलनको सोलह१६दिवस *बूठि दाबी द्युति[1] कल्प[2]के
घुमंडेघोर घनकी ॥
तोरन१वरन२अट्ट[3]३गढके गिराइ अधिरोहिनी[4] भिराइ माँहिं पैठो
माँडि मनकी ॥
दुर्गी[5] किते दाटि करवालन कितेक काटि पाटि जस खाटि यौं
बडाई बीरपनकी ॥
सो मानी सचिव माँडा२सौं मानी फिराइ आयो सत्रह१७दिव
स दुहाई सुर्जन १९०१२ की ॥
ईसपुरी अंतिकं छवीस२६ ही परगनाँ यौं अमल जमाइ अप-
नाइ चरांचरकौं ॥
थानथान थानाँ धरि आपुनौं उचित इत मध्यभाग कासीको
लयो दे मोल पटकौं ॥
नाम राजमंदिर १ बनाइ तहाँ धाम निज आसादन[10] चहुँ ४ घौं[11]
बसाइ परिकर[12]कौं ॥
राखि बीच अवरोध अमित[13] अनीक[14] चौसैं आराधन[15] आयो अब
आप अकबर ३०१२ कौं ॥ १४ ॥
सौध[16] १ नव[17] रचन उपक्रम[18] लगाइ सिल्पी[19] चिति रचना[20]मैं मति-
मान चुनि चाहसौं ॥
बेल[21] २ विबुधालय[22] ३ निपान[23] ४हु बनाइबेकौं बिबिध बिदग्ध[24] रा
खि राजं रुचि राहसौं ॥
संगर[25]की सामग्री समस्त चरनाल सजि सेना सविसेस देस बां
धन ७२ के लाहसौं ॥

---

* वृष्टिकरके १ कान्ति २प्रलय के ३बुरज ४निसरनी लगाकर ५किल्लेवालों को ६ वैश्य जाति विशेष ७ मानवाला ॥ १३ ॥ काशी के ८ उलीप ९ चर और अचर सब को अपना करके १० महलों के ११चारों ओर १२परिवार को १३ बहुत १४ सेना के बीच में जनाने को रखकर १५सेवन करने को ॥१४॥ १६ महल १७ नवीन १८ आरम्भ १९ सिलावट २० चुनावट (महल) बनाने में अनुभव रखने-वाले २१ बाग २२ मन्दिर २३ जलाशय २४ चतुर २५ युद्ध की ॥ १५ ॥

कासीअधिराज इम सुर्जन १६०।१ बिलासी बीर आइ पुर आ-
गरा सभामैं मिल्यो साहसौं ॥ १५ ॥
आगैं लोन आगरतैं ग्राम आगरा जो कीनौं नैर गढ बादलसो
सिकंदर २८।१ साहनैं ॥
सो स्वनाम अंकितकौं अकबर३७।१ साह बडो विधिसौं बसायो
अब स्वर्ग सुखसा हनैं ॥
जमुनातटीपैं जथा जा समैं बनतहो जो व्हाँ यौं जवनेस ही तहाँ
यौं बरबाहनैं ॥
आपुनी अपुब्बआठअयुत. ८०००० अनीकिनीसौं दिल्ली नर-
नाह१भेट्यो कासीनरनाह२नैं ॥ १६ ॥
तबहु कहाई ऐसैं सुर्जन१६०।१ तैं सुलतान आगराके अंदर रहो
धवल धाममैं ॥
तदपि न मानि रहि बाहिर कहाई ताहि माँहिं वास बंधन बनैं-
गो हुत काममैं ॥
साधिहो समीप रहि सासन निसीथहुको सोही स्वीकराइ स-
मुझ्झाइ सोही सामसैं ॥
लालकोट तोरनलौं राहतैं बजत बंब साहतैं मिल्यो सो एक १
आयुधसौं आममैं ॥ १७ ॥
कहत कितेक बहराम सब अंगमिकैं आगैंहो बजीर बयबाल
अकबर३७।१ को ॥

पहिले १ नमक (खारी) बनाने के आगर के कारण जिस ग्राम का नाम आगरा था जिसको बढाकर सिकन्दर ने पुर बनाया उसको अपने नाम से जानाजावे ऐसा अकबर ने विधि पूर्वक बसाया जो अब स्वर्ग की २ परम शोभा को मिटाता है ३ जमुना नदी पर ४ सेना से ॥१६॥ ५ आधी रात्रि को भी ६ मिलाप में ७ लालकोट के दरवाजे तक नगारा बजाता हुआ ८ बडी सभा में एक शस्त्र लेकर मिला ॥१७॥ बहराम ने सब को ९ दबाकर

तानैं छलघात[1] हनि साहकौं चह्यो तखत सो सुनि भज्यो सिसु
डरायो काल डरकों ॥
आगरालौं आत खानखानाँ वहराम सुव जाइकैं मिल्यो लै सि
र काहि पाप परको ॥
जांइमिले स्वीय सवही जहाँ तहाँ तवतैं नियत[2] वढैवो वन्यौं
आगरा नगरको ॥ १८ ॥
कोविद[3] वजीर खानखानाँ आगराही करि पूछि प्रिय अध्यापक[4] दूजे वहरामकौं ॥
स्वामी वनि दिल्लीआइ प्रकृति[5] सुधारि सव नीतिनिपुनत्वकैं[6]
निकारयो निज नामकौं ॥
मोहिकैं प्रजामन स्वकोसँ[7] १ देस २ दुर्ग ३ सेना ४ जोग[8] १ खेमें[9] २ प्रेर सुंचि[10] सचिव छ ६ जामकौं ॥
आनि आन १ अंदुकें[11] २ मैं राज्य १ इभ २ साह ऐसैं कंदुकें[12]
कुमार ज्यौं उठायो कर कामकौं ॥ १९ ॥
अज्जनैंकी[13] विद्या उपयोगिकी अधिक जानि आदरी वहै हू खोलि खतँम[14] खजानाँसे ॥
वानिज टोडरमल्ल १ नरहरि १ गंग २ वंदी सूरि १ कवि २ नाना
सभ्य पावें सुधापानाँसे ॥
विप्र पंच५ गौडनमैं कान्यकुब्ज वीरवल १ वाँधैं जो विहासैं[15] १
प्रतिउत्तर २ मैं वानाँसे[16] ॥

---

१ बादशाह को छल घात से मारकर तखत लेना चाहा २ निश्चय तभी से आगरा बढा ॥ १८ ॥ ३ पण्डित ४ पढानेवाले ५ राज्य के अंगों को सुधारकर ६ नीति की निपुणता से ७ अपना खजाना ८ उपाय ९ क्षेम में १० चतुर सचिवों को दिन रात्रि के आठ पहर में छः प्रहर तक प्रेरणा की और अपनी आज्ञा रूपी ११ सांकल में राज्य रूपी हस्ती को लाकर राज्य कार्य को ऐसा उठाया कि जैसे बालक १२ गेंद को उठाता है ॥ १९ ॥ १३ आर्य्य लोकों की १४ सम्पूर्ण १५ हसी के १६ पीछा नहीं हठ ने का चिन्ह

अज्जनकी[1] १ आपुनी २ उभै २ ही अपनावैं उभै २ स्वामी बुध[2]
आप १ से वजीर खानखानाँ २ से ॥ २० ॥

पंडित१रु मोलवी२समान जानैं जाकी प्रीति अज्जनकी[3]१विद्या
तऊ सन अति आदरैं ॥

मिच्छनतैं पहिलैं गयो घटि द्विजन मान एधमान[4] सो अब स-
नाथ सुखमा[5] धरैं ॥

स्मृति१श्रुति२नीति३आदि आसय सबै समुझि काम१अर्थ२तं-
त्र[6]हु समान प्रभु एकरैं ॥

साहकौं सुहावैं तिते तदपि समाँजी[7]१सूरि[8]२जदपि निमाजीआदि
जवन किते जरैं ॥ २१ ॥

कलमाँ१निमाज२रोजा३आदि अपनो जो कर्म साधि अर्थसहि-
त कुरान२मान कहतो ॥

आखरी जमाँके[9] मजहबके अकाम[10]१ अर्चि सासनाँ[11] सकाम२
हु फकीरनकी सहतो ॥

विद्यामैं बिसेस जानि तदपि स्व बुद्धिबल चित्त अज्ज सूरिनैं[12] स
वित्त१मित्त[13]२चहतो ॥

धौतैं[14]पटधारक क्रिया अवधि[15] आप्लवतैं[16] कच्छाँ[17] एक१करि कि-
तेक[18]काल रहतो ॥ २२ ॥

नित्य जगि नित्यहिं निवेरि१मैं डैं मूलमंत्र२ज्यौंहीं तसलीमलौं[19] सबै
सचिव जातपैं३ ॥

---

१ आर्यों की और यवनों की दोनों विद्याओं को २ चतुर ॥ २० ॥ ३ आर्यों की विद्या का अधिक आदर करता था ४ बढकर ५ परम शोभा ६ शास्त्र ७ सभासद ८ पण्डित ॥२१॥ ९ महीना के अन्तिम शुक्र वार के दिन अपने धर्म के कार्य १० कामना रहित करता था ११ पूजन करके फकीरों की आज्ञा को कामना सहित सहन करता १२ आर्य पण्डितों को धन सहित १३ मित्र चाहता था १४ धोती पहिनकर १५ कार्य की अवधि पर्यंत १६ स्नान से १७ एक काछा १८ कितनेक समय तक रहता ॥ २२ ॥ १९ सलाम

निज पर देसनकी खूर उदै सुद्धि सुनि४विविध नियोगं दै सुनत
तिन बातपैं५ ॥
रीति के नई सुनि प्रजा सुख निमित्त रचैं६नीति दै नियोगिनैं७
गिनैं न श्रम गातपैं८ ॥
राज्यलखि९एक१भोजी१०सूरिन समाज रहि११जाम जुग१२सो-
इ११जगैं पहर१के प्रातपैं१३ ॥ २३ ॥
जानैं पच्छपात व्यवहारमैं न कहुँ जान्यों सर्वकौं१सदाही साव
धान सरसायो२जो ॥
सिच्छिकस्योन गुनवानगको जानैं संग३कोऊ मतनिंदक न
कबहु कहायो४जो ॥
भीतनकों त्राता५सुभकाज मैं विलंबी६भयो लोकनकौं हेलन
निवारि मग लायो७जो ॥
ईश्वरउपासक८अलोलुप९सदय१०सूर११दाता१२मिले दुक्खहु
प्रसन्नमुख१३पायो१४जो ॥ २४ ॥
दिल्ली१अरु आगरा२उभै३ही राजधानी राखि नीति१धर्म२प्रेरत
सगह्यो नरनरनैं ॥
दैदै जोर अमल जमायो नये देसनमैं कोसैंनसैं आवतदयो न छेह
करनैं ॥
चरनैं निहारयो निज१पर२न जथा चरनैं सरनविहीन ह्वैरहे के
दीन सरनैं ॥

---

१ खबर २ आज्ञा ३ समूह पर ४ आज्ञा पालन करनेवालों को नीति देकर ५ शरीर पर श्रम नहीं जानता ६ दिन में एक समय भोजन करना ७ पण्डितों की सभा में रहकर दो प्रहर शयन करके एक प्रहर रात्रि बाकी रहे उठता ॥ २३ ॥ ८ पक्षपात. डरे हुओं का ९ रक्षक १० शुभ कार्य में विलंब नहीं करने वाला हुआ ११ लोकों के अपराध को मिटाकर मार्ग में लाया ॥ २४॥ १२ खजानों में हांसिल ने छेह नहीं दिया अर्थात् हांसिल निरंतर आता रहा १३ हलकारों से अपने और पराये को जाना १४ चरणों में आने के विना, ही दीन

पहिले छत्तीस२६पातसाहन न जैसी पाई औसी एक अदल[1] ज-
माई अकबर३७१२नैं ॥ २५ ॥
साकरी१फतेपुर२मुकाम्मन रहत साह जोग्य बय जानि रु प्रमा
नि परिचै[2] परैं ॥
दूदा१९११ भोज१९१२बुदा१९९८५९९तैं बुलाइ दैरही भूप ह्वाँ
मिलाये जाइ कुमर सभाभैं ॥
मुख्य सत्र१बस्त्र२रूप३भूखन४न मानि मुख्य भोज१९१२हिं
मिल्यो याँ पहिलैं१खिलत[3] भा धरैं ॥
पीछैं मिल्यो दूदा१९११सो लयो पै पहिरयो न पेलि[5] पूछैं कह्यो
इष्टहिं[6] चढाइ पहिरयोकरैं ॥ २६ ॥
स्यामरंग१बाँकीताक२साधारन बस्त्र३सस्त्र४दीस्यो जो१अमुख्य[7]
यौं न ताहि पहिलैं दयो ॥
जानि मुख्य आदर सुहागिनितनूजर्नुको[8] नायक जनाइबेसैं मौ-
न नृपहू लयो ॥
सीख लैकैं पीछैं स्वीय सिविरं सिधारंतहू निरखि बिलोमैं[11] दूदा
१९११अनौंखि[12] रु नाँ नयो ॥
यौंहिं चल्यो मानी स्तब्ध[13] जानिहसि साह याकौं भाख्यो खाँन
लक्कर[14]१९११ सु नाम तबतैं भयो ॥ २७ ॥
राजा रह्यो हाजरि कुमार २ चले डेरनकौं भोज १९१२ रह्यो पीछैं
तब तैसी सोधि भयतैं ॥

लोग शरण में रहे अर्थात् दीन लोग दूर रहने पर भी निर्भय रहे १ इन्साफ ॥ २५ ॥ २ जानकारी में आवें. शस्त्र, वस्त्र, रूप और भूषण से बडे कुमर को मुख्य नहीं जानकर भोज को ३ खिलत पहिले मिला४ कान्ति ५ हटाकर.पूछने पर कहा कि पहिले६ इष्टदेव को पहिनाकर पीछे पहिनते हैं ॥२६॥७ बडा नहीं दीखा इस कारण पहिले इसको नहीं दिया ८ सुहागिन का पुत्र जानकर ९ पाटवी की सूचना करने सें राव सुरजन भी चुप रहा १०डेरों में ११यह उलटी रीति देख कर १२क्रोध करके दूदा ने सलाम नहीं की १३अनम्र(अशिक्षित)जानकर बाद शाह ने इसको १४लक्कड़खान कहा तभी से इसका नाम लक्कड़खानहुआ॥२७॥

जान्यो मोहि लैं दयो सुहि असह जानि अग्रज हनैं ही * छद्म
घातके अनयतैं ॥
यातैं पहिराइ अनुगतकौं खिलत एह आप वेस और करि जो
बचोतो अयतैं ॥
संकल्प ऐसो कैं गनेस जोइसीको स्वीयं खिलत उतारि पहि
रायो स्वीय संयतैं ॥ २८ ॥
श्रीगौड़ १ रु मेवारे २ उदीच्यं ३ तिम सह्वोदरे ४ कासीके प्रं-
संगकरि बुंदी बसते भये ॥
पूरकुमरि १९१।१ के ससुरालयप्रसंग परि ठाम लै इहाँही आइ
विष्णुनगरे ५ ठये ॥
अधिप बिवाह्यो रानी मध्यमा २ कनकवती १९०।२ दान जँहँ
सुर्जन १९०।१ बिमान सबकौं दये ॥
बाँसवह्यालेको लै प्रसंग चउबीस ६ विप्र ऐसैं ए गनेस १ आ-
दि बुंदीपुर आगये ॥ २९ ॥
सो गनेस १ हो तब कुमार भोज १९१।२हीके संग ईख्यो छल
माँहिं तिहिं दीख्यो दान इतही ॥
अग्रजं १ विचारी अग्र भेद जननीको यातैं हेरि हिय धार्यो
नाँ पिताहू सम हितही ॥
मुख्य मानि अनुजं २ न बोल्यो तिहिं लैहौं मारि मानी उत
ऐसैं इत भोज १९१।२ भयभित्तही ॥
अग्रज १ तैं दुरिबो १ विचार्यो सो उचित पै[10] यों चिंत्यो वध वि
प्रको करैबो २ अनुचितही ॥ ३० ॥

---

* छलघात करके बडा भाई मारेगा इसकारण १ सेवक को २ वह अपना खिलत पहिना कर ३ आनेवाले समय के शुभ कर्मों से ४ ऐसा विचार करके ५ अपना खिलत अपने ६ हाथ से गणेश नामक ज्योतिषी को पहनाया ॥ २८ ॥ ७ ये ब्राह्मणों के जाति भेद के नाम हैं ॥ २९ ॥ ८ बडेभाई ने. दूदा ने ९ छोटे को बडा मानकर १० परन्तु ब्राह्मण का वध विचारा सो अनुचित ही है ॥ ३० ॥

बस्त्र द्विजकों जे पहिराइ भोज १९।१२ दूजे २ बेस टोकि न स
कैं को ज्यों चुकाइ चिन्ह टरिगो ॥
खार[1]माँहिँ आगैं नीलीखेतके समीप खरो पंथ रोकि दूदा१९।११
रह्यो ऐसो द्रोह परिगो ॥
आतहि निसामैं जानि हरित दुकूलवारो[2] कारो[3] काढि तापैं एक१
कुंत[4] हाथ करिगो ॥
सो पै उर बिद्ध[5] बिप्र गिरत कराह्यो[6] सुनि मानी मानी[7] भोज-
१९।१२तो बच्यो को रंक[8] मरिगो ॥ ३१ ॥
भोज१९।१२की भुजा हु हनी प्रास[9] वेधी एक१भट इतर गये भ
जि अचानक[10] भै आनिकैं ॥
हे[11] तजि सु घायल कुमार दुरयो खेतहीमैं दीपिकातैं[12] दूदा१९।११
मृत बिप्र इत आनिकैं ॥
बुंदी भजिआयो इत एह सुनि बुंदीपति तत्थ लाहि सिक्ख आइ
उच्च स्वर तानिकैं ॥
हेलौ[13] प्रियपुत्रकौं दयो तिहिँ कुमर हेरि नीलीतैं[14] सु निखस्यो
पिताही पहिचानिकैं ॥ ३२ ॥
देखत तराजि कह्यो भीरुता क्यों तू दुर्यो भाख्यो भोज१९।१२
अग्रजतैं दुरिबो भलाई ही ॥
सो सुनि सराहि बिद्धबाहु[15] सिबिकामैं[16] सुत लज्जित सिबिर[17] ला-
यो भाखि रिपु भाईही ॥
भजि उपचार[18] कल्प[19] मध्यम२कुमार भयो साहहु तथा सुनि प्रमाद

१ खाल (नाले) में नील के खेत के समीप २ हरे वस्त्रोंवाला ३ वह काले रङ्ग वाला (दूदा) ४ भाले का ५ हृदय बेधन होने से ६ दुःख का पतन (हाय हाय) किया सो सुनकर जाना कि ७ मानवाला भोज तो बचगया और ८ कोई गरीब मरगया ॥३१॥ ९ भाले से एक वीर ने भोज की भुजा को भी बेधन की १० भय ११ घोड़े को छोडकर १२ चिराग से १३ बुलाया १४ नील के भीतर से ।३२। १५ फटे हुए बाहु से १६ पालखी में १७ डेरे में १८ इलाज से १९ नैरोग्य.

लपा पाईहीं ॥
कह्यो नृपतें यो तैं जनायो बडो दूदा१९११२क्यों न ता१हि देकैं
दै तो या२हि तो मा पटुताई ही ॥ ३३ ॥
चीनी हमहू व मुख्य१मध्यम२कों कियोचहत नविनु बिसेस है
सो रीति मनसों नई ॥
दूदा१९१।१हू दुबुद्धि मनतें तो श्रोज१६।१२कों गो मारि हमरे
ढिगहि ठानि कानि हमरी हुई ॥
पहिलैं परंतु मंतु भासैं पिता१ पुत्र२नमैं गोई रिस तातैं गई यह
तो गिर्नागई ॥
दूदा१९११२हु बुलाइ इक१वेर तो बिसासि देनौं भूपहि यौं उपा-
लंभि साहके छमा भई ॥ ३४ ॥
बुंदीसहु जानि साह आसय यहै बिदित दूदा१९१।१कौं बुलैबै
पुर बुंदी दलं यौं दयो ॥
इतके प्रमाद जो भई पै जानि जेठो१अब गिनिहै प्रथम१साह मं
तुहुं करयो गयो ॥
आवहु निसंक प्रीति पावहु कुमर इहाँ लावहु न संसै लखि भा-
वहु भलो लयो ॥
कीनोंही अजानैं विप्रपातकको प्रतीकार भ्रातक२को जातंक
को पै मन मनैं भयो ॥ ३५ ॥
पिताके निदेसपहिलैं इत बुंदी आइमारयो द्विज यातैं मृत आ-
पुनकों मानतो ॥

उस भूल की १ लज्जा २ चतुराई थी ॥ ३३ ॥ हम ने भी ३ जाना कि मध्यम पुत्र को पाटवी किया चाहते हो ४ अदब मिटाई ५ अपराध ६ क्रोध छिपाकर ७ उहलना देकर बादशाह के क्षमा होगई ॥ ३४ ॥ पादशाह का ८ अभिप्राय जानकर ९ पत्र १० भूल ११ अपराध क्षमा किया १२ वैर शुद्धि १३ भाई के मन में वैर उत्पन्न हुआ था परंतु वह भी मिटगया है सो निःशंक होकर यहां आजाना ॥ ३५ ॥

जानैं बिनु कीनैं को बनाइ प्रतिकार जथा दीनैं और द्विजन
असेस बिधि दान तो ॥
तनय गनेसको बुलायो ग्राम१दै वे तहाँ जोहु जड बुन्दीतैं गयो
भजि भै जानतो ॥
तातनैं बुलायो अव लैसिरनिदेस ताको पुनि गो हजूर दूदा१९१।१
प्रीति पहिचानतो ॥ ३६ ॥
तातके अनीकंपास जातहि तुरंग तजि एकाकी१असस्त्र२कारि
वस्त्र वेढँ करसौं३ ॥
प्रनम्यौं पिताकौं जाइ नाइ सिर पायनमैं भूप सयं छायो उर
लायो नेह भरसौं ॥
पाइही खिसाइ दूदा १९१।१ भोज १९१।२ व्हाँ बुलाइ पुनि उ-
रहिं मिलाइ भाइ भेट्यो धाइ अँरसौं ॥
आगसँ छमाई पीछैं लाइ नृप ओसरमैं आदर दिवाइ जो मि-
लायो अकबरसौं ॥ ३७ ॥
साह सनमान्यौं दूदा १९१।१ जेठो भोज १९१।२ हू सौं जानि
भ्रातहु परस्पर व्हाँ स्निग्ध दुव २ ही भये ॥
साधि साह सेवन समौं इक १ यौं सुर्जन १९०।१ हु ठाम गयो
कासी उभै २ कुमर इहाँ ठये ॥
कूरमनरेस भगवंत इतछोर्यो काय मान व्है महीप दान प्रेतैं
बिधिके दये ॥
उदयपुरी यौं रान उदय हु होत अस्त ता सुत प्रतापलाभ धर्म
१ जस २ के लये ॥ ३८ ॥
बिधिके प्रसाद[13] आउवाके धरनाँतैं बच्यो आढा दुरसा जो बे-

॥३६॥ पिता की १ सेना के २ घोड़ा छोडकर ३ अकेला ४ वस्त्र से हाथ बांधकर. राजा ने मस्तक पर ५ हाथ रक्खा ६ शीघ्रता से ७ अपराध ८ क्षमा कराके ॥ ३७ ॥ ९ साहोंमाह (एक दूसरे से) १० स्नेह युक्त ११ एक वर्ष पर्यंत. मानसिंह ने आमेर का राजा होकर १२ प्रेतकर्म में दानदिया ॥३८॥ ब्रह्मा की १३ प्रसन्नता से

धि कंठ छुरिका अनी ॥

पढत सभामैं स्वरभंग किम सोह पूछी भनी स्वान काट्यो तोहू
को ह्याँ पहुँच्यो भनी ॥

उदय कबंध रोखि ढिगहि बतायो उहाँ ताकी जवनेस तहाँ निं-
दा रिसकैं तनी ॥

पापी सो इतैं अव परासु भयो जोधपुर धाम तस जेठो सूरसिंह
सुत भो धनी ॥ ३९ ॥

दूआ १।६१।३ भोज १९१२ दिल्ली रहे संवन कुमार द्वैरही मानैं
जानि सुद्धमन साहहु मेहरपैं ॥

एतेमाँहिं गुज्जरधरालौं डर डारि इतैं साह भो जवन कोऊ सूर-
ति सहरपैं ॥

कोहु कहैं हो जो कुलवर्ग १ मैं कितेक कहैं औरन २ मैं द-
क्खिनी पे दंस दें अँहरपै ॥

दिल्ली १ भू दबावन प्रपंचमैं परयो सो सुनि लीनी जय संधा
साह साहस लहरपैं ॥ ४० ॥

मेघहिं दै लाज गाज भेरिनें दराजैं मची फावीं फीतैं फीलैंन
पताका पंति फरकी ॥

१बादशाह ने पूछा कि स्वरभंग क्यों है इसपर दुरसा आढा ने कहा कि कुत्ते ने काटा है. बादशाह ने २ कहा कि यहां तक कैसे पहुँचा तब दुरसा आढा ने क्रोध करके राठोड़ उदयसिंह को कबंध ही बनाया. तब बादशाह ने ३ क्रोध करके उस (उदयसिंह) की निन्दा फैलाई. वह पापी अब *जोधपुर में ४ मरा ॥३९॥ ५ कृपा पर ६ गुजरात तक ७ अवर पर दांत देकर अर्थात् होठ चबाकर. जय करने की ८ प्रतिज्ञा ॥ ४० ॥ ९ नगारों की गर्जना १० बडी ११ समूह १२ हाथियों पर

---

* यहां आमेर के राजा भगवानदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदैसिंह का देहान्त एक ही समय पर होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का देहान्त विक्रमी सम्वत् १६२८ में और आमेर के राजा भगवानदास का देहान्त १६४६ में और जोधपुर के राजा उदयसिंह का देहान्त सम्वत् १६५२ में होना इन तीनों राज्यों के इतिहासों में लिखा हुआ है।

* अंबरमैं † धावके फिराव हय लैलै अात ‡ संवरमैं नावके
तिराव भूमि सरकी ॥
लाखन कटक मिल्यो पाखन हिलोर लेत फैलंत § फनी १ के
फन२ कोल १ दड्ढ २ करकी ॥
सूरतिके लाह पर वाह लै सनाह सजी ऐसे राह सेना चढी
साह अकबर ३७।१ की ॥ ४१ ॥
सुरजन १९०।१ राखी नये लाभतैं अधिक सेना बुंदीको वेरूथ
लै कुमार जुग बरसो ॥
दूदा १९१।१ भोज१९१।२ संगहि लये ए सुलतान द्वै २ ही सज्ज
सु चल्यो यौं दिल्ली चापसैन सर सो ॥
मग्गके मिवासनकौं पद्धर करत पूगि झारि जव लोलनको
गोलनको झरसो ॥
तीनौं ३ दिस लीनौं बेढि बाहिर छवीनौं तोरि सूरतिमैं तापी
कोस भास दर हर सो ॥ ४२ ॥

झरसो १ हरसो२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

बासर बहु तोपन बन्यौं, मृध जन मारनमूल ॥
बारि रह्यो सीतल १ बिमल२, कछु तापी पैरकूल ॥ ४३ ॥
रहती बनि रन रत्तिके, सो नदि अग्गि समान ॥
जनु कहती सूरति नजरि, परि पायन चहि प्रान ॥ ४४ ॥

---

* आकाश में † दौड़ने के फिराव लेकर घोड़े फिरे और ‡ जल में नाव तिरै इस प्रकार भूमि डिगी § शेषनाग के ॥ ४१ ॥ १ सेना २ सज्जित होकर. दिल्ली रूपी ३ धनुष से बाण के समान चला ४ मेवासों (चौर आदि के स्थानों) को सीधा करता हुआ वेग युक्त ५ चपल गोलों का झड़ लगाकर ६ सूरत नगर में तापी नामक नदी के कोश में प्रकाश करके ७ भय मिटाया ॥ ४२ ॥ ८ बहुत दिन ९ युद्ध १० जल ११ पैले किनारे का ॥ ४३ ॥ १२ रात्रि के १३ अग्नि के समान होकर वह तापी नदी यह कहती थी कि सूरत शहर नजर है ॥ ४४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सनिश्चयज्ञातसुर्जनद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्रगणनं १ बुन्दीप्रस्थितसावरोधवाराणसीप्राप्तसुर्जनस्य सैन्यसहितस्वामात्यप्रेषणेन रामदुर्ग-मांडाप्रान्तविजयीकरणं २ आगरानगरप्रसिद्धिकारणसहितवृद्धिकथनेन सहाकब्बरयवनेशगुणवर्णनं ३ स्वानुजभोजार्थयवनेन्द्रदत्तपारितोषिकप्रथमप्राप्तिनिमित्तभोजवधोत्सुकदूदाकृतभोजभ्रमहेतुकगणेशज्योतिर्विहननं ४ कनिष्ठसूनुपट्टपाचिकीर्षुसुर्जनस्य यवनेन्द्रोपालम्भप्राप्तिहेतुकपट्टपकुमारदूदाबुन्दीसमानयनतन्मन्तुक्षमापनं ५ आढागोत्रदुरसाचारणप्रार्थनासहितयवनेन्द्रकृतोदयसिंहाधिकरणं ६ आमेरराजभगवन्तदास-उदयपुरमहाराणोदयसिंह-योधपुरेशोदयसिंहपरासुत्वसूचनानन्तरयवनेन्द्राकब्बरससैन्यसूरतपुरवेष्टनं नाम नवमो मयूखः ॥ आदितो द्विनवत्युत्तरशततमः ॥ १९१ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन को बावन परगनों के मिलने में निश्चयता पूर्वक जाने हुओं की गणना १ बुन्दी से जनाना सहित काशी गये हुए सुर्जन का अपने मन्त्री को सेना सहित भेजकर रामगढ और मांडा नामक परगनों को विजय करना २ आगरा नाम के प्रसिद्ध होने के कारण सहित आगरा नगर की वृद्धि के साथ अकबर बादशाह के गुण कथन ३ अपने लघुभाई भोज को बादशाही खिलत अपने से पहिले मिलने के कारण भोज को मारने की इच्छावाले दूदा को भोज के धोखे से गणेश ज्योतिषी को मारना ४ छोटे पुत्र को पाटवी बनाने की इच्छावाले सुर्जन का बादशाह से उपालम्भ पाने के कारण पाटवी पुत्र दूदा को बुन्दी में बुलाकर उसका अपराध क्षमा करना ५ आढा शाखा के चारण दुरसा का बादशाह से राजा उदयसिंह को अधिकार दिलाना ६ आमेर के राजा भगवन्तदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदयसिंह के देहान्त की सूचना ७ गुजरात में सूरत नगर में शत्रु के प्रबल होने की सूचना पाने पर बादशाह अकबर का सेना सहित सूरत नगर को घेरने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ बानवें १९२ मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

जगि तोपन सूरति जरत, उछरत झरत अलात ॥
पंथ बरन १ अट्टन २ परत, जोध लरत रुकिजात ॥ १ ॥
जलजंतुन पुर ढिग जब सु, छोरयो आतप छिजि ॥
दिय परपक्खी अब दहन, धामहु रहन न धिज्जि ॥ २ ॥
जान्यों सूरति साह जब, परें हनिहैं अब पैठि ॥
जय संसयमय कढिजुरयो, वय अतिरय हय बैठि ॥ ३ ॥
निजसेनासह निक्खरयो, साँचे मन इम साह ॥
इनंहु भई तोपन अटक, लैन रटक असिलाह ॥ ४ ॥
बीर हाक बीरन बजी, धीरन अभिमुख धाव ॥
मिलि तीरन की रन मिले, दल चीरन असि दाव ॥ ५ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

ऐसैं सूरति साह चाह अपनी देखो वृथा दुर्गतैं ॥
केते बासर तोप जंगैं करिकैं सो हाँ कढ्यो सज्जही ॥
दिल्लीकेहु बरूथ देखि दृढता ताकी सराही तहाँ ॥
किल्ला तो मरि दे परस्पर कह्यो लद्धी इहाँ लज्जही ॥ ६ ॥
बत्तैं होत लगैं बिलंबवहु सो पै यों प्रसंसा पैगे ॥
ए१भाखैं जितनैं निरोंइ उनरके लोहा चखैवे लगे ॥

---

१ अग्नि २ बुरजों और कोटों में ॥ १ ॥ ३ ताप से छीजकर ४ शत्रु ॥ २ ॥ ५ शत्रु भीतर घुसकर मारेंगे ६ विजय के सन्देह सहित ७ अत्यन्त वेगवान् घोड़े पर बैठकर ॥ ३ ॥ ८ खड्ग से युद्ध करने के लाभ से ॥ ४ ॥ ९ सन्मुख दौड़ ॥ ५ ॥ इसप्रकार सूरत के बादशाह ने गढ से अपनी चाह वृथा देखी. कितने ही १० दिन तोपों से ११ युद्ध करके वहांसे बादशाह १२ सज्जित होकर निकला वहांपर दिल्ली की १३ सेना ने उसकी दृढता देखकर प्रशंसा की और सूरतवालों ने कहा कि किल्ला तो मरकर देंगे जिस पर दिल्लीवालों ने कहा कि किल्ला नहीं लेने से हमको यहां लज्जा ही मिली है ॥ ६ ॥ इसप्रकार बात करते तो विलंब होता है सो भी इसतरह प्रशंसा में १४ प्राप्त हुए. इधरवाले (दिल्लीवाले) जब तक उन को १५ समीप लेकर कहने लगे तब तक वे शस्त्र चलानेल-

ताजी वेग मिलाइ एहु तवतो मित्रत्व मानी मिले ॥
थोछे अंतर देत लेत उरझे जेजे समीपी जिले ॥ ७ ॥
फाटे वाजि गिरैं१भिद गज कहीं लैलें तँवारे फिरैं२ ॥
खंडाधार खिराइ हड्ड विखरैं३के लुत्थि लुत्थी किरैं४ ॥
पै पै ईस हसैं रु गान विलसैं५त्यों ताल दै पब्बई६ ॥
ज्यों रीझे चउसट्ठि६४बावन५२अनैं यौं ए१रु यौं ए२जई७ ॥८॥
मज्झैं नारदहू वजात महती घूमैं सँगनैं घनैं८ ॥
लूमैं रक्खस१भूत२डाकिनि लटी वँटैं स्व दाँई वनैं९ ॥
भूमैं सीस गिरैं न ज्यौं भटनके त्यौं खेल संभू तनैं१० ॥
झूमैं साकिनि झुंड रक्त झगरैं अच्छे पिवैं उप्फनैं११ ॥ ९ ॥
पैठे कंक१रु गिद्ध२चिल्ह३पलमैं गोदादि मेदे गिलैं१२ ॥
पावैं यौं पल दूर पूर पसरैं मंगैं जुही ज्यौं मिलैं१३ ॥
कंकाली डमरू वजाइ किलकैं कंकाल संचैं करैं१४ ॥
काली खप्पर मांडि[12] इंडि[13] कालिहै भूखी वँपासौं धरैं१५ ॥१०॥

गे तब तो दिल्लीवाले भी १ घोड़े उठाकर मित्रों के समान छाती भिड़ाकर मिले और थोड़े अंतर में देने लेने समीप के दोनों तरफ उलझे ॥ ७ ॥ घोड़े फटफट (कटकट) कर गिरते हैं और कहीं पर भिदे हुए हाथी २ झोखे लेकर (लगकर) फिरते हैं तरवारों की धारें खिरकर हड्डियां बिखरती हैं और कितने ही लुथ लुत्थ होकर गिरते हैं जहां पैर पैर पर महादेव हँसते हैं और ३ पार्वती ताल देकर गाने का सुख लेती है और रीझे हुए चौसठ जोगिनी और बावन भैरव इधर इनको और उधर उनको विजयी बताते हैं ॥ ८ ॥ बीच में नारद ४ महती नामक वीणा को बजाकर ५ मस्तक घुमाते हैं. डाकिनियों की ६ केशों की लटी से लटक कर राक्षस और भूत ७ दायभागी बनकर बंट करते हैं और वीरों के मस्तक भूमि पर नहीं गिरने पावें इसतरह का महादेव खेल फैलाते हैं. साकिनियां होकर झगड़ा करती हैं और उफना हुआ अच्छा रक्त पीती हैं ॥ ९ ॥ मांस में कंक गिद्ध और चील्हें घुसती हैं और ८ मज्जा आदि ९ मांस खाते हैं इस प्रकार मांस का समूह दूर तक फैला हुआ पाते हैं जिसमें फैलकर जो मांगते हैं वही मिलता है १० किलकारें करती हुई कालिका डमरू बजाकर ११ हड्डियों का संचय करती है और कालिका खप्पर १२ मांडकर १३ स्तुति करके १४ मज्जा को धारण करती हैं ॥ १० ॥

के बाँनैत कटैं१ ऐंटैं२रु उलटैं३फुट्ट४रु फाली फटैं५ ॥
हत्थी१घोरन२तैं किते असि हनें है व्यंग६ह्वै भूअहटैं८ ॥
घोटे४ स्वास बिनासमैं बिछुरिबे घाँघाँ घनें के घटैं९ ॥
रीझे देखत मारते१रु मरते२श्लाघाँ सुपर्वा रटैं१० ॥ ११ ॥
बेत्री७ ह्वै बहिकाइ प्रेत प्रतिभू घाँघाँ भिरावैं घनें११ ॥
ते तुट्टैं भर मुंडमाल तिनकी बंडैं कपाली बनें१२ ॥
हत्थीकृत्ति प्रसारि अंसु हुलसे जे छक्क भूली जनें१३ ॥
भृंगी१नंदि१०२भुल्लाइ१४भजानें१५उमा सँ पाइ जके भनें१६॥१२॥
मंड्यो प्रातहिसौं महामृध मजा कुप्पी चमू द्वै२कटी ॥
घोरे१गै२भरैं३द्वै२हि पंति छूटतैं पैलीर अनीही घटी ॥
त्यों बेधी रु---क(?) छोरैं१५ तजिकैं ठाँ अद्ध नाँ ठाहरे ॥
तोहू सूरति साह मंडि तुमुल्लैं धाराहि पैं पै धरे ॥ १३ ॥
जो दिल्लीदलकी हरोलैं१७ हनिकैं अग्गैं बढ्यो यों जहाँ ॥
पैनें१८ सस्त्रन पाइ सूर प्रसभी तुट्टे दुहूँ२घाँ तहाँ ॥

कितने ही १ बाणविद्या जाननेवाले अथवा युद्ध का बाना बांधनेवाले २ फिरते हैं और ३ छलांग मारनेवाले फटते हैं तरवारों के मारेहुए हाथी घोड़े जुदे होकर भूमि को छाकर हटते हैं ४ श्वास घुटकर नाश के समय बहुत शरीर बिछुटते हैं और मारते और मरते हुओं को देखकर ६ देवता ५ प्रशंसा करते हैं॥ ११ ॥ ७ बेत हाथ में रखनेवाले अर्थात् छड़ीदार होकर बहकाते हुए प्रेत जामिन हो हो कर ठौर ठौर पर बहुतों को भिड़ाते हैं उन तूटे हुए (कटे हुए) वीरों की महादेव युद्ध में मुंडमाला बनाते हैं और कन्धे पर ८ गजचर्म को फैलाकर प्रसन्न होते हैं ११ भगते हुए ९ भृङ्गि और १० नन्दि नामक गणों को भूलकर पार्वती भय पाकर फिर मिलजाना कहती है ॥ १२ ॥ प्रभात से ही १२ युद्ध का मजा रचकर कोपी हुई दोनों सेनाएं कटीं. घोड़े हाथी और १३ वीर दोनों पंक्ति के १४ घटते ही सूरत की सेना घटी त्यों(?)१५ छोड़कर और अपने स्थान को तजकर वहां पर आधे भी नहीं ठहरे तोभी सूरत के बादशाह ने१६ भयंकर युद्ध करके तरवारों की धार में पग पग आगे दिया ॥ १३ ॥ दिल्ली की सेना की १७ हरोल (सेना के अग्रभाग) को मारकर इसप्रकार जहां सूरत का बादशाह आगे बढा तहां १८ तीखे शस्त्रों को पाकर

कंच्छी भोज१ह१।२कुमारको हु कटिगो संबाध संग्राममैं ॥
ह्वै पाइकैं खरो हरोल करिबेलग्गो त्वरा काममैं ॥ १४ ॥
रुट्ठो जत्थ कुमार खग्ग पटकैं बद्धीन लग्गीरहैं ॥
अप्पैं वाह सिपाह रीझि इतके खासा चढैबो चहैं ॥
सोहू जानि बखानि पाँनि चलते उच्छाह दै साहहू ॥
वाजी किर्याव१नाम खास बखस्यो आरोहिदै बाहहू ॥ १५ ॥
वाजी खास अरोहि भोज१०।२बढिकैं ज्यों खग्ग झारयो बली
चक्ख्यो सूरति साह अग्गं चमू चै चै सु पच्छी चली ॥
सोहू सत्रु हरोल तुट्टत समै गे गाहि नेरैं गयो ॥
भाला छत्तिय मारि पारि अरिकों जे पुव्व ग्राही भयो ॥ १६ ॥
गौहैं फैंकि रु सीस पट्ट गिरतैं ताको लयो तोरिकैं ॥
जामैं इक्क१अतुल्ल्य वज्र१निकस्यो भा इंदु जो जोरिकैं ॥
मानिक्याश्दि महर्घ सर्व मनिमैं जो हो असंभू तथा ॥

दोनों ओर के हठवाले वीर टूटे (मरे) वहां २ भयंकर युद्ध में बुन्दी के कुमर भोज का १ घोड़ा कटगया तहां ३ पैदल होकर आगे खड़ा हुआ और युद्ध के कार्य में ४ शीघ्रता करने लगा ॥ १४ ॥ वह कुमार क्रोधित होकर जहां खड्ग पटकता था तहां बाधी (चमड़ी) भी लगी नहीं रहती थी जिसकी सिपाह प्रसन्न होकर ५ प्रशंसा करते थे और इधरवाले उसको खासा घोड़े पर चढ़ाना चाहते थे और उसकी ६ प्रशंसा जानकर और ७ हाथ चलते देखकर बादशाह भी उत्साह देता था और अपनी सवारी का क्रियाव नामक घोड़ा ८ चढ़कर ९ प्रहार करने को दिया ॥ १५ ॥ उस बलवान् ने खासा घोड़े पर चढ़कर आगे बढ़कर खड्ग चलाया सो १० आगे चलनेवाले सूरत के बादशाह ने उस खड्ग को चखा और उसकी सेना ११ टपक टपक कर पीछी चली उस शत्रु की हरोल टूटते समय उसके हाथी को मारकर समीप गया और उस (सूरत के बादशाह) की छाती में भाला मारकर और शत्रु को गिराकर विजय को प्रथम लेनेवाला हुआ ॥ १६ ॥ १२ घोड़े को झपटाकर गया सो शाह के गिरते समय उसके मस्तक से शिरपेंच तोड़लिया जिसमें एक १३ तुलना रहित हीरा निकला जो चन्द्रमा के समान १४ कान्तिवाला था १५ माणक आदि सब १६ महँगी मणियों में वह १७असंभव हीरा था तोभी

तोहू ता सिरुपेच[1]मैं तरनि[2]लौं भास्यो सु हीरा १ जथा ॥१७॥
सो लैकैं सिरुपेच भोज१९१।२मुर[3]र्यो भाला तज्यो सत्थही ॥
तीखे तोमर[4] १ सांगि[5] २ तेग ३ मृतपैं पीछैं चले तत्थही ॥
जाहीठाँ मुगलेस जाइ रिपु जो पिक्ख्यो मर्‍यो भू पर्‍यो ॥
भाला फूटिरह्यो कुमारकरको जामाँहिं सोभा भर्‍यो ॥१८॥
कोनैं एह हन्याँ कह्यो बहु तहाँ झूठेहि हंता[6] बनैं ॥
याको मारक जास प्रांस[8] सुहि यौं भाखे हु मो मो भनैं ॥
अक्खी कुंत कढाइ देखि कर लै दिल्लीस काको यहै ॥
नाना[9] तोहु धनी बनैं भर नये जो कौन जाको यहै ॥ १९ ॥
काको यहै १ जाकोयहै २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
दिल्लीसासक पूछि पासहि लख्यो आं[10]कुंत दूदा१९१।१ हुको ॥
बुल्ल्यो दुर्जनसल्ल १९१।१ कुंत यहतो मो भ्रातके बाहुको ॥
भू नातौं[11] कछवाह मानहु भनीभाला यहै भोज १९१।२ को ॥
फूटो सूरतिसाह जाकरि अहो स्वामी इती फोजको ॥ २० ॥
दाहुको १ बाहुको २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
भाला तावकैं[12] है कि भोज१९१।२ प्रति यौं दिल्लीस पृच्छा[13] भई ॥
भाख्यो भोज१९१।२ धनैं[14] धनीन घन भो जो क्यौं बजैं मो जई ॥
मोकौं सूरति१तैं दई मुगल८यौं भाखी वली भोज १९१।२ सौं ॥
यातैं बुंदिय २ तोहि मैं दिय अवैं जान्यौं जई ओजैंसौं[15] ॥२१॥

उस १ शिरपेच में २ सूर्य के समान वह हीरा दीखा ३ वह हीरा लेकर भोज पीछा फिरा और वह भाला वहीं पर छोडा, उस मरेहुए बादशाह पर ४ तीखे भाले ५ बरछी और तरवारें पीछे चलीं ॥ १८ ॥ झूठे ही ६ मारनेवाले बने ७ जिसका यह भाला है वही इसका मारनेवाला है सो यह सुनकर यह भाला 'मेरा है, मेरा है' ऐसा सभी कहने लगे ८ भाला निकलवाकर ९ अनेक वीर उस भाला के धनी बने ॥१९॥ १० यह भाला किसका है सो दूदा से पूछा ११ भूमि के सम्बन्ध से ॥ २० ॥ १२ तेरा है क्या? १३ दिल्लीश ने पूछा १४ इस भाले के बहुत स्वामी होगये हैं. तहां बादशाह ने कहा कि मुझ को सूरत शहर तूने दिया है इसकारण तुझ को बुन्दी दी १५ पराक्रम से ॥ २१ ॥

वैतालीयम् ॥

भाखत इम साह भोज१९१२तैं, हनि रिपु सूरति१ तैं दई हमैं ॥
किय दुष्कर२ नन्निमोजतैं, हम दिय बुंदिय३तोहि तुष्ट ह्वै॥२२॥
दुर्नय४ प्रभु राम२०३।४देखिये, सुनत कुमार इतीहि भोज१९१।२सौं॥
हुलस्यो५ गिनि लाभ जो हिये, करनभयो हि सलामराज्यकी॥२३॥
बिग्गी नहिं यों न बिन्नती, बुन्दीतो हमरेहि है बनी ॥
प्रभु रीझे सर्व भूपती, अप्पहिं देन कहा न ओर है ॥ २४ ॥
न इम्हु कुल्ल्यो बरानसी, जनक अनंतर मोहि देहु जो॥
बुंदिय इक१वित्त१धी६ २वसी, लखि पार७कँ कवड्डु८ रंकलौं ॥ २५॥
बुंदिय इम देत वेगही९, करताहिं भोज१९१।२सलाम राज्यकी ॥
मन्निय दूदा१९११।१गईमही, न अबाहि पैं उपदा१० निवेदई ॥ २६॥
यह इक न लेन आ११सहे, बदलैं रीझ वहारि बोध१२सौं ॥
इहिं मृगतृष्णा१३ लग्यो यहै, दूदा१९१।१हू रिसकों दबातभो॥ ॥२७॥

॥ सहै१यहै२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

इत सूरति ठानि अप्पनी, रच्छकरक्खि बिसासके बली ॥
अब अकबर३७।१मोरिकैं अनी, पलट्यो दल दक्खिनमाँहिपद्धरो१४॥२८॥
चंदा अभिधान चाय१५सौं, अहमदनैर जु राज्य अंग१६मैं ॥
सुहि बेगम संपराय१७सौं, बिधवा प्रतिभट साहपैं बनी ॥ २९ ॥
करि गोला हेम१तार२के, बहु मासन तस दुर्गतैं बहे ॥
कस अकबर३७।१वीर वार१९के, तोपनभार भुनैं झरे तहाँ ॥३०॥

---

१ कठिन २ रीझ ३ प्रसन्न होकर ॥ २२ ॥ ४ हे प्रभु रामसिंह इस अनीतिवाले को देखो ५ प्रसन्न हुआ ॥ २३ ॥ २४ ॥ यह नहीं कहा कि पिता के पीछे काशी मुझे दो ६ बुद्धि में ७ पराई ८ कौड़ी को रङ्क देखे इसप्रकार उसने बुन्दी को देखा ॥२५॥ ९ शीघ्र ही १० परंतु नजराना नहीं किया है यही पक्ष ॥२६॥ ११ आशा है १२ विचार से बुन्दी देने का यह रीझ बदल देवे १३ झूठे लोभ में लगकर ॥ २७ ॥ १४ सीधा ॥ २८ ॥ १५ इच्छा से १६ अहमदनगर के राज्य को दबाए हुए थी १७ युद्ध से ॥२९॥ सोना १८ चांदी के गोले चलाए १९ वीरों की बाड़; अथवा बाहर के वीर ॥ ३० ॥

जिम सूरति१जंग भो जई२, तत्थ२हु भोज१९१।२कुमार ठानि त्यौं।
दुर्गहि अधिरोहिनी दई, गो चढि जो उतके गिराइकैं ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

सत्थ सहिल्ली सत्तसत७००, चहि लहि खग्गचलाक ॥
जो बेगम सम्मुह जुरी, तुट्टत गढ रढ तार्कें ॥ ३२ ॥
सूरति१सम अत्थ२हु सबल, भट निज पिल्लत भोज१९१।२ ॥
गढसिर चढि पहिलैं गयो, आँजि अतुलैं अति ओजें ॥ ३३ ॥
बाहिर कढि इम बेगमहु, तुमुल स्फारि तलवारि ॥
जुरी सत्तसत७०० सखिनजुत, परी तिय सु बहु पारि ॥ ३४ ॥
रन जवनी चंदा रच्यो, ऐसो बहुरि न ओर ॥
सेना अकबर ३७।१ साहकी, घनी हनी बनि घोर ॥ ३५ ॥
करत कतल बाहिर कढी, सुनि गढ तुट्टत सैंद ॥
कथित सखिन सह जो कटी, हसत नरन रनहद्द ॥ ३६ ॥
अहमदनैर२हु विजितयह, करि गढ भोज १९१।२ कुमार ॥
इक्क सफरमैं बस उभय २ , किय अकबर३७।१जसकार ।३७।
रीझि साह पुनि भोज१९१।२ रन, अहमदपुर अपनांइ ॥
कहिय इष्ट मंगहु कुमर, भनहु जुदी मन भाइ ॥ ३८ ॥

षट्पात् ॥

रीति लखहु प्रभुराम २०३।४ मन्नि बुंदिय संटनै मन ॥
भू इतर न लिय भोज १९१।२ सोहि दृढ किय साहस सन ॥
इम जंपिय जिम अचल आहि दिल्लिय तुम आलय ॥
इम बुंदिय मम अयन निबाहि भुग्गैं कुल निर्भय १ ॥
हसि साह कहिय इतरहु लहहु मंगिय तव पंच ५ हि कुमर ॥

१निसंरनी लगाकर॥३१॥।सात सौ २सहेलियां को साथ लेकर३हठ४देखकर।३२। ५ भेज कर ६युद्ध में७तुलना रहित८बड़े प्रताप से॥३३॥ ९भयंकर॥३४॥३५॥१० शर्त॥३६॥११अहमदनगर॥३७॥१२इच्छा होवे सो मांग॥३८॥ १३बुन्दीको बदल कर१४जैसे आप के घर में दिल्ली दृढ है तैसे बुन्दी मेरे दृढ रहै१५और भी लो

सुनि लेहु तेहु नरनाह सब बिरुद रूप दिय जेहु बर ॥ ३९ ॥
थप्पि कोल रनथंभ सत्त ७ पहिलैं किय सुर्जन१०११२ ॥
तिनमैं सप्तम ७ तुच्छ मन्नि पछिताइ रहिय मन ॥
गो१ सुरमूरति २ गेह ३ नसत ढिग कबहु निहारे ॥
करि प्रसन्न साहकौं बहुरि ए ३ लैन बिचारे ॥
न मिल्यो तथापि अवसर नृपहिं रीझन खिन हेरतरह्यो ॥
अबभोज११।१२प्रथम त्रिक३लैन यह करन जोरि इहिं बिधि कह्यो४०
देसढिग१ रु दैवलढिग२ हु न व्है यह त्रिक ३ कहुँ नासन ॥
गो१सुरमूरति२गेह३लहैं हम लखन त्रिनास न ॥
यह त्रिक३जब दिय अप्प बहुरि दुव२तब मंगैं बर ॥
बरखा लहि सिरखबिनु घुमँडि ऋतु छबि जैहौं घर१ ॥
चढि अप्प चलत हित यान चढि सह चलिहैं बिनु सासनहु२॥
इम त्रिक ३ रु जुगल २ मिलि पंच ५ ए बरहिं भोज १०११२
लहि कहिय बहु ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

त्रिक३ जुग२मिलि ए पंच ५ तहँ, मंगे इष्ट कुमार ॥
साह रीझि दे तेहि सब, दिय असि छह६ उदार ॥ ४२ ॥
जास गदा अभिधान जग, कहत हु मुख्य कृपान ॥
छट्ठो ६ अकबर३७।१रीझि छैम, दयो अधिक हित दान ।४३।
बुंदी नहि सैंठी बुधहु, जातैं हानि जनात ॥

१ स्तुति रूप ॥ ३९ ॥ रणथम्भ के गढ में सुरजन ने सात कौल किये थे जिनमें अन्तिम कौल को तुच्छ मानकर पछिताया और मन में यह माना कि गौवें, २ देवताओं की मूर्ति और देवताओं के मन्दिरों को नाश होने समीप में कभी नहीं देखेंगे ये तीनों बातें बादशाह को प्रसन्न करके फिर कभी लेवेंगे परन्तु राजा को ३ समय नहीं मिला ॥ ४० ॥ ४ सेना के समीप ५ देवमूर्ति ६ ऋतु की शोभा देखकर ७ इच्छा पूर्वक सवारी पर चढकर ८ बिना आज्ञा भी ॥ ४१ ॥ ९ खड्ग ॥ ४२ ॥ १०जिसका नाम 'गदा' कहते हैं ११ समर्थ ॥४३॥ १२बुन्दी नहीं बदली इसकारण उसकी बुद्धिमानी

जँहँ इक१त्रिक३जुग२सब जुरत६, आसि तँहँ सप्तम[1]७आत ।४४।
कुमरहिं ए सब७ कति कहत, सूरतिही दिय साह ॥
हुव पीछैं बेगम हनन, रन सु भिन्न मत राह ॥ ४५ ॥
दूदा १११।१ तब जानिय दुमनैं[2], अब बुंदिय गत आहि ॥
सत्रु भयो यह साहहू, जानत हे प्रभु[3] जाहि ॥ ४६ ॥
पै कैसी भवितव्य[4]पर, संग रह्यो यह सोधि ॥
अब दिल्लिय पहुँचाइ इहिं, बनी निवेरहिं[5] बोधि[6] ॥ ४७ ॥
गढ जिस्यो अहमदनगर२, है रन भोज९९।२ हरोल ॥
भोजबुरज१ बिरची भली, तँहँ निजनाम अतोल ॥ ४८ ॥
इमहि ख्यात[7] कहियत अबहु, अहमदनैर सु अट्ट[8]१ ॥
अकबर३७।१ दिल्लिय पत्त इम, बैरिन कारि दहवट्ट[9] ॥४९ ॥
गंदत किते अहमदनगर, सफर अंत्यँ[10] लिय साह ॥
तो न कुमर१नृप२भोज१९।२तँहँ, इम ह्वै मति अवगाह[11] ।५०।
सूरति ही तब संभवंत[12], रीझ लहन कुमरेस ॥
प्रचुर[13] प्रमान मिलाइ पै, अक्खिय हम दृढ एस ॥ ५१ ॥
जानी दूदा १९।१ हू तजी, अहमदपुर भुव आस ॥
जिस्यो कुमरहिं भोज१९।२जँहँ, गढ चढि करि पर ग्रासैं[14] ।५२।
साहहिं दिल्लिय पत्त[15] सुनि, पहु सुर्जन १९०।१ जँहँ पत्त ॥
तँहँ उर लायो भोज१९।२तिम, दुत हित जिम सब दत्त[16]॥ ५३॥
दूदा१९।१ हू चिंतिय दुमन, करैं जनक अब कोन ॥

में हानि दीखती है १ साल की गणना आती ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ २ उदास होकर ३ जिसको स्वामि जानते थे सो शत्रु होगया ॥ ४६ ॥ ४ आगे क्या होता है ५ जैसी बनेगी तैसी निवेड़ेंगे ६ यह विचार के ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ७ प्रसिद्ध ८ बुरज ९ बरबाद ॥ ४९ ॥ १० अंतिम सफर में लिया था ११ इसप्रकार बुद्धि का थाह होता है ॥ ५० ॥ १२ तब सूरत के युद्ध में ही बुन्दी आदि रीझ का मिलना सम्भव है १३ बहुत प्रमाणों से ॥ ५१ ॥ १४ शत्रुओं का नाश करके ॥ ५२ ॥ १५ गया हुआ सुनकर १६ देकर ॥ ५३ ॥

पै तिम इक्कयो भोज१९।१।२प्रिय, दिय आसा तजि दोउन ॥५४॥
सहसा सत्थ स्वकीय सजि, रत्ति चल्यो चढि रुट्ठि ॥
सरनि फतेपुर१सीकरी२, पति साहहिं दियपुट्ठि ॥ ५५ ॥

॥ मनोहरम् ॥

साहको तवेला सीकरी करो हो सो सकल लूटि आयो पुर बुं-
दी दूदा१९।१।अनखाइकैं ॥
सुनत सु सोर साह अकबर३७।१घोर सेना सजिय कितीक बुं
दी लेन दरसाइकैं ॥
मेरतिया नाम बलभद्र इक१गहडर खूनी अकबर३७।१को भयो
जो धन खाइकैं ॥
सगपन स्वीय जानें रामपुर कीनों पर परनिसकै न अब दिल्ली
डर पाइकैं ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सुर्जनकनिष्ठसूनुभोजकृतयवनेन्द्रशत्रुसूरतपतिमारणतच्छिरोरत्नानर्घवज्रतत्करपतन १ एतत्समरप्रसन्नयवनेन्द्राकबरकृतभोजार्थबुन्दीप्रदानाज्ञोत्तरमहमदाबादविजयपरितुष्टयवनेन्द्रप्रसादेनभोजस्य स्वसमक्षगोदेवमूर्तिदेवमन्दिरविध्वंसनाभाववरप्रापण २ यवनेन्द्रदिल्लीयानानन्तरभोजबुन्दीप्राप्तिसुर्जनप्रसाददर्शनरुष्टदूदाकृतफत

अकबर और राजा सुरजन १दोनों से बुन्दी मिलने की आशा छोड दी॥५४॥ १ अचानक अपने साथ को सजकर ३ नागं. बादशाह को स्वामि समझने में ४ पूठ दी ॥ ५५ ॥५ अपना सम्बन्ध ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के लघुपुत्र भोज के हाथ से बादशाह के शत्रु और सूरत नगर के पति का माराजाना और उसके मस्तक का अमूल्य हीरा भोज के हाथ लगना १ इस युद्ध की प्रसन्नता में बादशाह अकबर का भोज को बुन्दी देने की आज्ञा दिये पीछे अहमदाबादको विजय करने के कारण बादशाह को प्रसन्न करके गौ, देवमूर्ति और देव मन्दिर अपनी दृष्टि के आगे खण्डित नहीं होने का भोज का वर पाना २ बादशाह के दिल्ली गये पीछे भोज

हपुरसीकरीस्थितयवनेन्द्रहयशालांलुण्टनोत्तरबुन्द्यागमनं नाम दश-
मो१०मयूखः ॥ आदितस्त्रिनवत्युत्तरशततमः ॥ १९३ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्रकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सूर * मुरड़ि इम साहसूँ, लूटे हय जय लाह ॥
हणि रच्छक दूदा१९१।५हठी, आयो धरत उछाह ॥ १ ॥
बुंदी आइ सम्हालि बळ, सावधान करि सर्ब ॥
दूदो१९१।१मुंड़ि रहियो दुसह, पावण जस रणं पर्व ॥ २ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय बलभद्र१नाम मेड़तियो राठोड़ धाड़ायतांमैं धुरंधर कहावै।
अर जिणरा आतंककरि दूरदूरै मार्गभी सोदागर न हालै र के-
ही देस निरंकुस वसण नपावै ॥

जिण राठोड़ कँवर दूदा१९१।५नूँ अकबर३७।१हूँ मुरड़िआयो जा-
णि जिकोही आपनूँ अवलंबरो देणहार विचारियो ॥

अर रामपुरै आपरो समपण हुवो जिणरा विवाहणमैं दसोररा
फोजदारनूँ नीड़ैं जाणि केईवार संकल्प पाछो पाड़ि तुरकाँरा पे-
चमैं कैदहोणरो डर धारियो ॥ ३ ॥

मेड़तिये बुंदी आइ दूदा१९१।१थी कहियो आपरो सहाय मिलै
तो रामपुरै चंद्राउताँरै द्रंगं विवाहणरै काज जाईजै ॥

अर आप न हालो तो कन्यानूँ तरुणी हुई जाणि चंद्राउताँ
पुरोहितरो धरणाँ दिवाइ मोनूँ बींदरा वेस कराइ साहसथी आणि-
यो तोभी दिल्लीरा दूत दसोर पूगा जाणि पाछोही पैलाईजै ॥

को बुन्दी मिलने में राव सुर्जन की प्रसन्नता देखकर फतेपुर सीकरी में बाद-
शाह की हयशाला को लूटकर दूदा के बुन्दी आने का दशमा १० मयूख समाप्त
हुआ ॥ आदि से एकसौ तरानवें १९३ मयूख हुए ॥

* बदल कर ॥ १ ॥ १ सेना २ विरुद्ध होरहा ३ युद्ध के समय ॥ २ ॥ ४ भय से
५ चले ६ निर्भय ७ आधार ८ समीप ९ विचार ॥ ३ ॥ १० नगर ११ आगू

दूदो १९।१। कँवर सरणाईसाधार सुणताँही सहाइ देर लार हुवो जिकण आपरा अनादररै आँटै अकबर ३७।१ जिसड़ा पात साहथी तोंड़ि तिणरो प्रतीकार दिखावणरैकाज केवल वीरभाव रो जस चाहियो ॥

अर घणाँ देसाँरा लूटणहार धाराँरा अधीस पराईभूमिरा भो-हणहार मेड़तिया बलभद्र १ नूँ रामपुरै लेजाइ विवाहियो ॥ ४ ॥

जरैं चंद्राउताँभी पहली ओराँरा विवाहणहार कुमार दूदा १९।१।१ नूँ बडा साहसरैसाथ एक १ पुत्री विवाहि पछैं बींदणीं हुती जिका दूजी २ पुत्री राठोड़ बलभद्रनूँ विवाहि दीधी ॥

अर आवस्यक कृत्य वणिसकियो जिको करि दसोरथी फोज चाली जाणि दो २ ही वराताँ प्रातही बिदा कीधी ॥

दो २ ही जानाँतो रामपुराथी आइ भाणपुर मुकाम दियो ॥

अर निसीथरैसमय दसोररै फोजदार दो२ ही वर आइ नेड़ाविया जिको सुणताँही बलभद्र १ नूँ ऊढाँ उभय २ रैसाथ आगैं च-लाइ कँवर दूदा १९।१।१ पाछैं रहि मरणीकैं थियो ॥ ५ ॥

दोहा ॥

सउँच[12] १ न्हाण२ सुरह साधि सव,राचे गजसराह ॥
क्रम वेठो संभ्या करण, दूदा १९।१।१ कँवर दुवाह ॥ ६ ॥
कारि संभ्या १ जप २ आदि क्रम, पूजि इष्ट गोपाल३ ॥
स्व[13] कराँ करि भोजन सदा, करी निवेदण काळ ॥ ७ ॥
आप करै सोही असँण[14], इष्ट भोग अँवसेस[15] ॥
इम पूँपी[16] जुगर करि उठै, प्रभुरै कीधी पेसँ[17] ॥ ८ ॥

---

१ शरण आये हुओं का आधार २ बदले ३ वैर मिटाना ४ भागनेवाला ॥ ४ ॥ ५ दुलहन ६ जरूरी काम ७ बरातें ८ आधी रात्रि के समय ९ समीप लिया १० दोनों दुलहनों के साथ ११ काम आने (मारेजाने) को तयार हुआ ॥ ५ ॥ १२ शौच जाकर स्नान करने आदि ॥ ६ ॥ १३ अपने हाथ से भोजन [illegible] ॥ १४ भोजन १५ बाकी १६ रोटी १७ भेट धरी ॥ ८ ॥

॥ संचरणगद्यम् ॥

जतरैंतो दसोररा चालिया प्राणांरी बाजीरा खेल्हणहार अक वर ३७।१ रा बानैंत काळरा किंकर अणचींतिया पाहुणाँ साँकै डैही आयपूगा ॥

जिकाँनूँदेखताँहीँ पुळियार कायराँरै कंप १ बीराँरै वीररसरा सोगुणाँ जोस २ ऊगा ॥

दूदो १९।१ प्रभुरो भोगावसेस भोजन करि इष्टदेवरौं बटवो गळे बाँधि साँवळिया तुरंगरी पीठि आयो ॥

जतरैं इणरा साथियाँ तुरकाँरो संपात नीठि रोकियो ॥

अर कँवरभी आरूढहोताँहीँ त्रिभागो तोमर भुजादंडथी भ्रमाइ सत्रुवाँरै साम्हैं आपरो वाह झोकियो ॥ ९ ॥

पैलाँमैं पविर्पातरै प्रमाण पूगताँही उठीराभी कायर चळविचळ थिया॥

अर सूर हूँता तिकै कँवर दूदै १६।१।१मेहमानी मिलाइ निहाळकिया ॥

भालारी भचाकाँ चखाइ केही पटेतँनूँ पाडि कुमार आपरै-देसरी दिसा आडै पग आवणनूँ मरतैमारतै प्रयाण कीधो ॥

अर तुरंग साँवळियारा वेगहूँ पैलाँरा बाजियाँरा वेग थकाइ एकला १.फोजदारनूँ आपरै समीप आवणदीधो ॥ १० ॥

दो२ ही बीर साँकैडै भिल्पिया दावकरता १ बचता २ हडोती-के मार्ग बहियाआवै ॥

अर ओरभी दो २ ही तरफरा प्रैबीर जुदाजुदा जुद्धकरता याँ दो २ ही महाबीराँरै पाछैं रहियाआवै ॥

आगैआवताँ एक खाळै बारह१२हाथको चोडो १ घणाँ ऊँडो २

---

१ बाण चलानेवाले; अथवा बानाबंध २ यमराज के सेवक ३ समीप ४ भोग से बाकी रही वस्तु ५ प्रहार ६ भाला चलाते समय उसके दो भाग आगे को और एक पीछे को रखकर थामने से उसको त्रिभागा कहते हैं ७ भाला ॥९॥ * बदल मार ९ महमानी १० पट्टा फैंकनेवालों को ११ चला ॥१०॥ १२ समीप ५ चले ६ नि... गिर १४ नाला

आडे आयो जठै कुमार दूदो१९२।१तो सहजमैं साँवळियानैं झपाइ खाळैरे वार आइ भालो ऊवाइ साम्हों खड़ो रहियो ॥

जिको दुष्कर देखि पैंहली रुकिये२थके जवन नाम पूछियो जदैं कुमारभी आपरा सहाय देगारो सारोही उदंत३ अभिधान सहित कहियो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९२।१सुत१बुंदी सदन२, संज्ञा३दुरजणसाल१९३।१ ॥
व्याहरा हूँ बलभद्रनूँ४, हुवो सहायक हाल ॥ १२ ॥
सरणसहायक बिरुदसिर, पहलीही कुळपांण५ ॥
अकबर३७।१हूँ मुड़ियो अबैं, अस्त करूँ तुरकांण६ ॥ १३ ॥
जिम थांरो सूनों जिको, किरै बलभद्र कबंध ॥
अठै विवाहण आणियो, सर्गां मैं बळसंध ॥ १४ ॥
भड़ म्हांरा पाछैं भिड़ै. जिकां बेहोड़ो जाइ ॥
अब जे झड़ियो एक१०भी, तो पड़ियो पँवि तांइ११ ॥ १५ ॥
ऊजड़१२ दसपुर अंगसूँ, वळे तिकांरे वैर ॥
निज घर थे जावो नतो, खान विचारो खैर ॥ १६ ॥

॥ सप्तरणगद्यम् ॥

या सुणताँही कुमाररा पाणिपैनूँ प्रमाणकरि पाछो जाइ फोजदार आपरा वीरांनूँ वहोड़ि दसोर पूगो ॥

अर पाछैंसूँ आपरेसाथ आइमिळियांपछैं कवँरभी आगलासाथमैं आइ मेडतियानूँ अभयरोमहामह मनाइ अर्क१५रे उपमान ऊगो ॥

इणरीति बुंदीसरो वडोकुमार दूदो१९२।१सहाय देर मेडतिया बलभद्रनूँ विवाहण रामपुरे गयो जठै आपभी आपरा वीरपणारा

---

१ कुद्राकर २ वृत्तान्त ३ नाम सहित ॥ ११ ॥ ४ घर ॥ १२ ॥ ५ कुल के पराक्रम से ६ तुरकों के राज्य को कम्पित करूंगा ॥ १३ ॥ ७ निश्चय ८ बल की प्रतिज्ञा से ॥ १४ ॥ ९ पीछा फेरो १० वज्र ११ तहां ॥ १५ ॥ १२ शून्य १३ मन्दसोर को दवाऊंगा ॥ १६ ॥ १४ पराक्रम १५ सूर्य

लुभाया चंद्राउतनरेस दुर्गदासरा पुत्र रामपुरारा अधीस गजसिंहरी कन्याजसकुमरि१९१।४कुमराणीनूँ बिबाहि बुंदी आयो ॥

अर राठोड़नूँ रंभणीसहित केहीदिन राखि भरोसारा भडसाथ देर उणरै आगारै पुगायो ॥ १७ ॥

जिको सुणताँही अकबर ३७।१ रै जाणैं वारूदरा गंजमैं दमंग झडै जिणरीति क्रोधानळरो प्रकंप छांयो ॥

तिको तबेलारी लूटरा घावपर वडा खूनीनूँसहाय देर लूण लगायो ॥

पातसाह सुर्जन १९०।१ नरेसनूँ कहियो बुंदी छुडावणरैकाज फोजमैंथाँरोबी जावणौं होइ तो ठीकहै ॥

जठै नरेस कहियो फोजरै अर भोज १९।२ रैसाथ म्हारा जावणमैंतो पिता१पुत्राँ २ रै दोरहीतरफ अपजसरो अनीक है ॥ १८ ॥

जिणथी म्हारा भाई काका भीमरा १८८।२पुत्र सिंह १८६।१ नूँ भेजीजै तो सुजसरैसाथ हुकम सधसी ॥

अरजुद्धमैंजय हुवाँ दूरा१९१।१ जिसा दुष्टांरैऊपर हजरतरो अप्रमाण असह आतंक वधसी ॥

जिणथी भाईनूँ बधारो देर भोज१९१।२रै सहाय फोजरै साथ कीजै ॥

अर जुद्धरा जीतणहार टळिया वानैत भरोसारा होइ तिके लार दीजै ॥ १९ ॥

जरैं जवनेस सुर्जन १९०।१ रै कहियाँ भीमाउत १६१२ हाडा सिंघदेवनूँ १८९।१।१ सहस्राप १ सहररैसाथ अढाईहजारी २५०० रो मुनसब देर बुंदी रैं ऊपर बिदाकीधो ॥

अर जवनाँमैं मालिक करि भोज१९१।२ रोभीडूँ नबाब मुहब्बतखान २ साथ दीधो ॥.

---

१ स्त्री सहित २ घर पहुँचाया ॥१७॥ ३ समूह में ४ अग्नि ५अधिकता ६ बुराई ७ सेना ८ इसंकारण से ९ भय ॥ १९ ॥ १० सहायक

लक्कडखान १ रै ऊपर चलावणारा कारण करि जिको नवाब मार्गहीनें कुठारखान २ कहायो ॥

इणरीति सिंघदेव १ मुहब्बतखानसहित मध्यम २ कुमार भोज १९।१२रै सहाय बडाकुँवर दूदा१९।११नूँ मारणरैकाज बुंदीऊपर अकबर ३७।१रो अनीक[1] आयो ॥ २० ॥

ग्राम बडधा १ कुमारती २ रै बीच मुकाम हुवो ॥

अर रात्रिरे आगमें[2] तिकाँरै प्रमादै[3] राखणरो कुकाम हुवो ॥

निर्लापरै[4] समय कुमार दूदै १९।११ तिकाँमाथै जाइ नञीठा[5] वाजी[6] पटाकिया ॥

अर दिल्लीरा वीराँनूँ कोरडो[7] लोह चखायो जिणआगै बडाबडा दुरंगाह[8] वानैत[9] न टकिया ॥ २१ ॥

नागराजरा भोग[10] फेणाँभरिया लटकिया ॥

अर तुरकाँरा हाडाँपर हाडाँ६१रा खारा खड्ग खटकिया ॥

चंद्रहासाँरा चोरिया जठीतठी बकतर[11]टोपाँ[11]रा टूक चटकिया[12] ॥

अर कायराँरा प्राण केवल नाँडियाँमाँहैं अटकिया ॥ २२ ॥

जठै कुमार लक्कडखान१चौडै खेत जाइ कुठारखान२भाँजियो[13] ॥

अर आपणाँ अनुज भोज१९।१२काका सिंहदेव१८९।१समेत अवसेस दिल्लीरो दळ गाँजियो ॥

मुहब्बतखान२रै मरताँही दिल्लीरा दोइहजार२०००वीराँरो खेत पडियो जाणि कुमार भोज१९।१२रो वचिवो न मानि तिकणनूँ ले र सिंहदेव१७९।१हाडापणाँनूँ फीको दिखाइ नीचा नेत्र करि पाछो दिल्ली पूगो ॥

---

१ सेना ॥२०॥ रात्रि २ आने पर ३ गफलत ४ बहुत शीघ्रता पूर्वक; अथवा अत्यन्त दौड़कर ५ घोड़े डाले ६ निकेवल ७ यह वीर का विशेषण है ८ नहीं भागने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले; अथवा बाण विद्या को जाननेवाले ॥२१॥ ९ फण १० भाग से ११ खड्ग १२ यह तूटने के शब्द का अनुकरण है ॥ २२ ॥ १३ विजय किया, अथवा मारा

अर जठीतठी बडाकुमार लक्कडखान१९१।१रा पराक्रमरो सुजस ऊगो ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

ले मुनसब पहली पडंगा, आयो सिंह१८९।१अबीह ॥
भाँजिकुठार१भजाडियो, सोरलक्कड१९१।१रखासीह ॥ २४ ॥
करि बळ दूरखाँ कोपियो, जिको दुसह जवनेस ॥
सुर्जन१९०।१हू कहियो सजे, अब मारो सुत एस ॥ २५ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अठी कुमार दूदे १९१।१ विजयरा बंब घुराइ बुंदी आइ आप समैं भरोसा भागो जणाइ कुमार रत्न १९२।१ सहित अनुज भोज १९१।२ री वडी कुमराणि बालखोति रायकुमरि १९१।१ बुंदीहूँ दिल्लीनरेसरै कनै भेजिदीधो ॥

तिको सुर्जन१९०।१ भी पुत्रसहित कासी भेजि धर्मरा धारणमैं बडा कँवररी तारीफ कीधी ॥

अकबर ३७।१ भी बडा साहसरैसाथ सुर्जन १९०।१ नूँ सजाइ बुंदीमाथै विदाकीधो ॥

अर नबाब रणमस्तखान २ नूँ भोज १९१।२ री लाज़ भळाइ तिकोभी लार दीधो ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९०।१नृप रणमस्त२सह, भोज १९१।२कुमारक भीड ॥
भामी अकबर३७।१ भेजिया, नामी प्रतिभट नीड ॥ २७ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अकबर३७।१ कपटकरि आखियो जै दूदो१९१।१थाँरो समुझायो चाकरीकरणनूँ आवै तोतो फेरभी बुंदी१ रै एवंज तिकणनूँ बी

॥ २३ ॥ १ पहिली मरने को २ निर्भय ॥ २४ ॥ २५ ॥२६॥ ३ न्योछावर योग्य ४ स्तुति योग्य अथवा दूदा के समीप ॥ २७ ॥ ५ कहा.

जोग्स्थान दीधोजावै ॥

अर नहींतो हरामखोर इण आर्यावर्तमैं कठैही वचण न पावै ॥

इसड़ो हुकम सुणि नरेस सुर्जन१नवाब रणमस्तखान२ कुमार भोज १९।१२ नूँ लेर बुंदी आया ॥

अर दूदा १९।।१ नूँ सोमरैसाथ आइमिलणमैं अनेक लाभ जणाया ॥ २८ ॥

दोहा ॥

कालिह मिले दूदै १९।१२ कही, पछै करे रणवात ॥
पगे पडण निहचै पछै, तजि असि आऊँ तात ॥ २९ ॥

सचरणगद्यम् ॥

इसही कहाइ दूजै२ हीदिन कुमार दुर्जनसाल १९।।१ आखेटरा रमणाहूँ परमारोंही घोडाँरा चाकराँनूँ बरजाइ दोडाँरा साधिया घोडाँरा पचास ५० ही छडा असवार साथ लेर पितारे पगेलागणनूँ दिल्लीरी फौजरैसमीप आयो ॥

अर पचास ५० ही घोडाँनूँसूनाँ छोडि तिकाँरै हाँनैं भाला लगाइ जनकरै आगैं प्रणामपूर्वक माथो नमायो ॥

नरेससुर्जन १९।१२ भी पुत्ररो खाँधो थापलि हृदयहूँ लगाइ विस्वासियो ॥

जिको दोन्ही पिता १ पुत्राँ २ रो मिलाप सुणि अंतरमैं एक जाणि तुरकाँरो तोस नासियो ॥ ३० ॥

नरेस १ भी दूदा १९।१२ रा आवणरी जणाइ रणमस्तखाँ २ बुलायो तिकणभी आइ दूदो १९।।१ सादगीरैसाथ न पहिचाणियो ॥

अर बैठाँ पछै नरेसरै कहियाँ च्यारिपाँच साथियाँरै हेठे बैठो

१ मिलापके साथ॥२८॥२९॥ बिना फराकर२घाड़ा डालने में सिखाए हुए घोड़ों को ४ अल्प अथवा केवल ५ बिना रक्षक ६ आसन के अगले भागपर ७ मन में ८ सन्तुष्ट ॥ ३० ॥ ९ नीचे

जाणियो ॥

जवनभी उरहूँ लगाइ कहियो जिण वीरराघोडाँमैं इसडो एको तिकणनूँ पाणिरा पाणरैसाथ पातसाहरो प्रेरियो किसड़ो बानैत आसंगमैं आणौँ ॥

अर सामरैसाथ सत्कारहूँ मिलायोथको सीसरैसाँटै स्वामीरोही सासन प्रमाणौँ ॥ ३१ ॥

जठै नरेस १ नवाब २ हूँ कहियो आपणौँआवताँ अकबर ३७।१ रो आदेस इसड़ो हुवो सो बुंदी१रैएवज औरस्थान२ लेर चाकरीकरणौँ न मानैंतो दूदा १९१।१ नैं पकडियाणौँ ॥

अरु नहींतो भेजणौँ उणरा सीसरो नजराणौँ ॥

अब ए दूदा १९१।१ रा साथीभी पचास ५० ही दूदा१९१।१रै साथहै जिणथी समस्तराही सीस वढि सँलीतो भरि दिल्ली पुगावो ॥

अर पुत्र १ रा मारणमैं पिता २ रो अखंड अपजस उगावो ।३२।

॥ दोहा ॥

भणी जवन१ जदि भूप२ हूँ, सूरकँवर करि साहि ॥
हाँलि मिलावो साहहूँ, चुगली मेटण चाहि ॥ ३३ ॥
अधिप कही जदि हालि अब, सुत तू म्हारैसाथ ॥
मिलि पाछौ लै मह महर, अकबर ३७।१ सूं सह साथ ॥३४॥

॥ षट्पात् ॥

कवँर जरै जोडिकर प्रणमि कहियो नरेसप्रति ॥
प्रभुरो आयाँ पत्र निडर आतो धारे नँति ॥
पणारण मस्त १ पटैत भोज २ भाई करि मेळा ॥
अण अवसरै इम आइ खोलिदीधी डर खेळा ॥

१ हाथ के पराक्रम के साथ २ भेजा हुआ ३ काबू में करसक्ता है ४ मस्तक के बदले ॥ ३१ ॥ ५ सब के मस्तक काट कर ६ ऊंट का योरा भरकर ॥ ३२ ॥ ७ चलकर ॥ ३३ ॥ ८ कृपा ९धन सहित ॥३४॥ १० नम्रता धारण करके ११ विना समय १२ क्रीड़ा ॥ ३५ ॥

जियाहेतु काल्हि रणएक जुडि पछैं लागि प्रभुरै पगाँ ॥
कँद है चालि मुजरो करूँ लार सुजस १ अपजस२लगाँ ॥३५॥

॥ दोहा ॥

वदियो जदि रणमस्त वहु, मानि कवँर सो वेण ॥
विण[1] रण हालो दास वणि, अप्पण पावण ऐणाँ[2] ॥ ३६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सो सुणि दुरजणसाल १९१।१ कोपि रणमस्त वकारे ॥
कहियो थाँ जिम कवणाँ[3] मान भाँजै छळ मारे ॥
पहली भेजण पत्त हुक्कम करतो है हाजरि ॥
अब सो सुर्जन १९०।१ आँख[4] प्रधन पहली ईखूँ अरि ॥
है जरे[5] वळे सह हालिहूँ कपट विलंब न खिण १ करूँ ॥
नरनाह१ टाळिजै इम नहीं[6] तोतो दळ नँहो[7] तरूँ ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

दूदो इम भाखे दुसह, आयो ऊठि अगार[8] ॥
सग गहियो रणमस्त२ मिलि, प्रकटे निज मन प्यार ॥ ३८ ॥
दूदा १९१।१ सुणि माने अदल[9], सम्मद तो१ मो२ साखि ॥
मोरें नँहँ मिळियाँ सुगल६, राज१ धरा२ धन३ राखि ॥ ३९ ॥
कहियो सुणि दूदै१९१।१ कवँर, इळा[10] न लेणी ओर ॥
लेहालो बुंदीलगा, जाणूँ मालिक जोर ॥ ४० ॥
विहसे तदि सुर्जन१९०।१ वदी, बुंदीही तव वाँहँ ॥
वावर ३१।१ सुत वाँधै वळे, छत्रहेठ दे छाँहँ ॥ ४१ ॥
कर जोडे पाछो कवँर, कही जनक वळ कोडि[11] ॥
एक१ बुलावण आवतो, दास धावतो[12] दोडि ॥ ४२ ॥

---

१ विना युद्ध किये. अपना २ घर पाने के लिये ॥ ३६ ॥ ३ कौन ४ सौगन. ५ युद्ध में ६ झुक कर ७ नाडा (तुच्छ जलाशय) रूपी ॥ ३७ ॥ ८ घर ॥ ३८ ॥ ९ इन्साफ ॥३९॥ १० भूमि ॥४०॥४१॥ ११ कोड़ पल है तो भी १२ दौड़ना "यहां दौड़ने की अधिकता बताने के लिये एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग है"॥४२॥

॥ षट्पात् ॥

जरैं कुमर हठ जाणि जनकआगैं इम अंक्खी ॥
आप टळै दिस एक सकल बळ आइ * समक्खी ॥
किंकर दूदो १९१।१ काढि अनुज१९१।२ बूंदी अवधारो ॥
आंजि भचक लै एक१ बळे डर मूक्फ बिचारो ॥
जैं डर न होइ जाणौं जनक प्रणंत कालिह लागूँ पगाँ ॥
सो जैं न होइ दीजै सहज सुत अपजस असगाँ१सगाँ २ ॥४३॥

॥ दोहा ॥

आयो बूंदी भाखि इम, संधाँ लडण समाहि ॥
करण बिजै दूदै१९१।१ कँवर, चुणिया भड अई चाहिं ॥४४॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

दूजैदिन कँवरतो पहली सुरथपुर जाइ रक्तदंतारो पूजन कीधो ॥ अर पैलाँरै कटक जोफ्रूरा तंडागरै उत्तरतट आइ मुकाम दीधो ॥
जठाहूँ दोइहजार२०००असवाँरा सुरथपुर आइ कुमार वेढियो॥
अर दूदै१९१।१भी अंबारा अर्चनरै अनंतर आपरासाथियाँ समेत सान्है आइ घोर घमसाण कियो ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

पैला रण जिण छूटि पग, पुळियाँ डेराँ पाइ ॥
जरैं कहाई जनकहूँ, दूदै१९१।१ सपथ दिवाइ ॥ ४६ ॥

सचरणगद्यम् ॥

बिजयरालोभी रजपूत चाहै जिणसमय आइ सम१ बिसम २ जुद्धकरै ॥

* सन्मुख १ धारण करो २ युद्ध में ३ प्रणाम करके ४ यदि नहीं होवे तो ५ विना सम्बन्धवालों में ६ सम्बन्धवालों में ॥ ४३ ॥ ७ प्रतिज्ञा ८ हठ करके ॥ ४४ ॥ ९ रक्तदन्ता नामक देवी का १० तालाव ११ देवी का पूजन करने पीछे ॥४५॥ १२ भागे ॥ ४६ ॥

अर जनकादिक गुरुजनाँनूँ टाळि तिकाँरैसाम्हैतो अनुगत भाव धरै ॥

जिणथी आपरो सिविर ऊँचास्थलपर होइ तो कुपुत्रनूँ आदाव राखणरी सुद्धि रहै ॥

अर बाकीरा वीर दो२ ही तरफ आपसमैं असिवर चखाइ वानै-तपणाँरा विरुद्द वहै ॥ ४७ ॥

इसडी कहाई तोभी नरेस सुर्जन १९०।१ आपरा डेरा जुदा न टाळिया ॥

अर एक१ ही घररो जुद्ध जाणि अठी १ उठी२ दोही २ तर्फरा सर्वही स्वकीय भाळिया ॥

जरैं दूदै१९१।१ कुमार जोभूरा सरोवररो उत्तरतट फुडाइ जळ काढियो ॥

अर डूडता वचता बीजा२ चतुरंगनूँ चळविचळ हुवो जाणि रति-वाह देर अचाणक आइ वाँढियो ॥ ४८ ॥

जिण घोरसमयमैं सस्त्राँरा प्रहारकरि व्याकुळहुवो नबाब रणम-स्तखाँन१ तो कुमार भोज२ नूँ लेर एक गर्त्तमैं तृणाँरासमूहहेठै द-वि रहियो ॥

अर महीपभी आपरी माळानूँ मंचपरही मेलि एक दिसारो मा-र्ग गहियो ॥

वाजी साँवळियारा चरण डेराँरा तणाँवाँ उळभिया जाणि कु-मार दूदा१९१।१ रो चावक वहियो ॥

जरैं परवस झाँप लेताँ आँत तूटी जिणथी कवँररै घोडैभी पर-लोक लहियो ॥ ४९ ॥

---

१ बडे लोकों को २ डेरा ३ खबर ४ बाना धारण करने के यश को धारण करै ॥ ४७ ॥ ५ सेना को ६ काटा ॥ ४८ ॥ ७ खड्डे में ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

जठै भोज१ रणमस्त२ जुग२, वचिया गेर्त्त बिचाळ[2] ॥
पुळियो[3] जिम सुतहूँ पिता, महीपाळ तजि माळै ॥ ५० ॥
ईखे हय म्रत[5] आपरो, दूदा १९।१ कुमर दुबाह ॥
बाजी खास नवावरो, ले चढियो जयलाह ॥ ५१ ॥
जनक१ सिबिर १ टाळे जिको, जवनसिबिर२ धन जोडि[6] ॥
आयो पुर दूदो १९।१ अडर, माफी परदळ मोडि ॥ ५२ ॥
गो दिल्लीदळ जैतगढ, मंडे समय मुकाम ॥
बीजे२ दिन दूदै१९।१२ वळै, कीधा मिळण मुकाम ॥ ५३ ॥

सचरणगद्यम् ॥

इणरीति ग्राम वोरखंडीरा घमसाणमैं दिल्लीरा दळनूँ भजाइ दूजै २दिन दूदो १९।।१ हाथबाँधि जैतगढराडेराँ जाइ पिताराः पगाँ पडियो ॥

जिणरा वीरपणाहूँ रीझियेथकै रणमस्तखानभी उरहूँ लगाइ हितरो संलाप घडियो ॥

नरेसहूँ नवाव२ कहियो अब दूदो १९।।१ आइमिळियो जिण थी इणनूँ लेजाइ साहरा कदमाँ लगावाँ ॥

अर बूँदी रै अेवज कुमार भोज १९।।२ बीजी२ठाम दिवाइ दो२ ही भाइयाँरै आपसमैं वधियो विरोध भगावाँ ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

हाँलो धाम दिवाडिहाँ, अथवा इणनूँ ओर ॥
पण अब मेलाँ साहपग, जाणाँ जय१ नय२ जोर ॥ ५५ ॥
जंपि सपथ रणमस्त जदि, बीच अलाह बताइ ॥
लीधो दूदो १९।।१ लारही, कटकाँ कूँच कराइ ॥ ५६ ॥

१ खड्डे के २ बीच में ३ भगा ४ साला छोडकर ॥ ५० ॥ ५ अपने घोड़े को मरा देखकर ॥ ५१ ॥ यवन के डेरे का धन ६ इकट्ठा करके ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ७ वार्तालाप ॥ ५४ ॥ ८ चलो ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

पातसाह अकबर ३७१ पगे, जिको लगायो जाइ ॥
सोधे भूप१ नवाव२ सुभ, स्व धरम सपंथ सुणाइ ॥ ५७ ॥
तोभी अकबर ३७१ ताकिया, उणरा खून अमोघ ॥
करि मिळियो अंतर१ कपट२, ऊपर १ आदर२ ओघ ।५८।
नृप १ नवाव २ सकियो नथी, जिको आह छळ जाणि ॥
कँवर मिळायो हेत करि, पावन आख प्रमाणि ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठ ६ राशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सुर्जनषष्ठपकुमारदुर्जनशल्य (दूदा) सहायेन मेड़न्तिकबलभद्ररामपुरपरिणायनोत्तरं तत्रैव तत्परिणयन १ स्वानुसृतदशपुराधिकारिविजयपूर्वकोभयजन्यसहितबुन्द्यागमन २ एतदपराधश्रवणारुष्टयवनेन्द्रससैन्यसुर्जनलघुसूनुभोजबुन्दीप्रस्थापन ३ दुर्जनशल्यपराजितभोजप्रत्यागमनातिरुष्टयवनेन्द्राकबररणमस्तखांसहितरावसुर्जनबुन्दीप्रस्थापन ४ सरणमस्तखांसुर्जनपराजयोत्तरविनयसमागतकुमारदुर्जनशल्येन सह रावसुर्जनस्य यवनेन्द्रान्तिकगमन ५ दुर्जनशल्यकृतामोघमन्तुनिमित्तकान्तश्छलेऽपि बहिरादरदर्शनपूर्वकयवनेन्द्रमेलनवर्णनं नामैकादशो११ मयूखः ॥ आदितश्चतुर्नवत्यधि

अपने धर्म के १ सौगन सुनाकर॥५७॥२खाली नहीं जावें ऐसे३समूह॥५८॥५९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के पांचवी पुत्र दुर्जनसाल(दूदा)का मेड़तिया बलभद्र को अपनी सहायता से रामपुरे परणा कर वहीं पर अपना भी विवाह करना १ अपना पीछा करनेवाले मन्दसोर के हाकिम को विजय करके दोनों बरातों सहित बुन्दी आना २ इस अपराध के सुनने से कुपित होकर सुर्जन के लघु पुत्र भोज को सेना सहित बादशाह का बुन्दी पर भेजना ३ दुर्जनसाल से पराजित होकर भोज के पीछे आने से अत्यन्त कोपवाले बादशाह अकबर का रणमस्तखां सहित राव सुर्जन को बुन्दी भेजना ४ रणमस्तखां सहित पिता को जीतकर नम्रता पूर्वक आयेहुए कुमर दूदा को साथ लेकर राव सुर्जन का बादशाह के समीप जाना ५ कुमर दूदा को अमोघ अपराधों के कारण मन में छल और ऊपर से आदर दिखाकर अकबर के मिलने के वर्णन का ग्यारह

कशततमः ॥ १९४ ॥

प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इंदु राम नृप १६३१ साक इत, द्विज कवि तुलसीदास ॥
किय नूतनपुर कोसला, रामायन मतिरास[1] ॥ १ ॥
सदन छोरि यह हरि सरन, भयो रामपद भक्त ॥
मधु१सित२नवमी९कुज[3]मिलत, सो तिहिं रचन प्रसक्त ॥ २ ॥
प्रकट१ प्रीति२ अंतर १ कपट २, सद्धि मिलत इतसाह ॥
किन्न छलि रु दूदा १९।१ कुमग, राज्य मुदित कछु राह ॥३॥
सिक्ख दई नृप सुर्जन १९०।१ हिं, कासी यह करि कज्ज ॥
अरु पठयो रनमस्त इत, सूबा लवपुर[6] सज्ज ॥ ४ ॥
तस सहाय दूदा १९।१ हु तँहँ, हित दिखाइ लाहोर ॥
संगहि पठयो साहनैं, जानि पिहित छल जोर ॥ ५ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

ऐसैं कुमार दूदा १९।१ तो रणमस्तके संग करि पहिलेंही पंजाबमैं भेजिदीनों ॥

अरु पीछेंसों आमेरकेअधीस कूर्म मानसिंहकों काबलके सूबापर बिदाकीनों ॥

सिंधुनदीकेपार दिल्लीको अमल रह्यो सो काबलकी सीमाकरि ताहीको सूबा कहायो ॥

ताको प्रबंध कराइबेकों राजा मानसिंहकों सासनगहायो॥६॥

॥ दोहा ॥

यां ११मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ चोरानवे १९४मयूख हुए ॥

१ बुद्धि का समूह ॥ १ ॥ २ घर. चैत्र सुदि नवमी ३मङ्गलवार. रचने में ४ आसक्त हुआ ॥ २ ॥ ५ बादशाह अकबर ॥३॥ ६ लाहोर के सूबे पर ॥४॥ ७ गुप्त ॥ काबुल की सीमा के सम्बन्ध से उस सूबे का नाम काबुल का सूबा हुआ ॥६॥

कुम्महिँ इम जावत कह्यो, साह कपट अनुसार ॥
दूदा १९१।१ हनि लाहोर हुतँ, पीछैं जावहु पार ॥ ७ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

ऐसैं साह१को सासककछवाह२ सौं गुप्त भयो तथापि रणमस्तखाँनके पुत्रनैं यह दूदा१९१।१कों मारिवेकी बात जानिलीनीं॥
अरु तबही आपुनैं पिताप्रति एक १ पत्रिका ऐसीरीति लिखिके भेजिदीनीं ॥
सो दूदा १९१।१ अपनैं बाँहवचनसैं बिस्वास करिआयो ॥
अरु अब ताको कपट करि मारिवेकौं १ वा गहिभेजिवेकौं २ पीछैंसौं साहनें साळा मानसिंह पठायो ॥ ८ ॥

दोहा ॥

तासौं अब हे तात तँनु, दूदा१९१।१ संगहि देहु १ ॥
कहि रु भेजहु पिहित कै २, अति अधर्म लखि एहु ॥ ९ ॥

सचरणगद्यम् ॥

या पत्रिकाके पढतही रनमस्तनैं दूदा१९१।१ सौं समस्तही अभिप्राय खोलिदीनों ॥
अरु कुमारनैंहू दूजी २ कुमरानी राष्ट्रकूटी उमाकुमरि १९१।२ संगही ताकौं पुरुसके बेस बनाइ द्वैही पति १ पत्नी२न तीजे ३ तुरंगी जोइसी जगन्नाथ ३ सहित प्रच्छन्ननिकसि आपनैं देसकौं प्रयान कीनों ॥
साहनैं राजामानकौं काबलके सूबापर भेज्यो तबही नवाब नो सेरखान१ कौं मध्यम२ कुमार भोज १९१।२ कौं अमल कराइबे काज बुंदी पठायो ॥
अरु इतकौं कुमर १ कुमरानी २ जोइसी जगन्ना___ इनको

बादशाह के कपट के १ साथ २ शीघ्र ३ सिन्धु नदी के पार वे ५ ... ॥ ४ शरीर को ॥ ९ ॥ ५ घोड़े का सवार ६ ज्योतिषी ७ छाने

त्रिक ३ ही कहीरीति प्रच्छन्न कढि कासीकी समताके महातीर्थ कुरुक्षेत्र आयो ॥ १० ॥

तहाँ जोइसी जगन्नाथकों ग्राम खानखेडा १ दान दैकैं पीछैं राखि मिथुन२ हां मथुरा आवतभयो ॥

तहाँ आपुनों सालक अह्वग्नाम एक १ ग्रामके अधीस रठ्ठोड छत्रसिंहको कुमर मिल्यो ताके साथ दैकैं कुमरानी राष्ट्रकूटीकूँ ताकैं पिउइर पठावतभयो ॥

आप इक्कल१ असवार आमेर आइ उहाँसों ओर वाजी वदलि लायो सोहू टूँकनगरके परिसरलों पहुँचत पंचमी५धाराके प्रयान करि थकिग्यो ॥

तव टूंकके चालुकन वीस २० सादी संग दैकैं आपुनैं खासा हयपैं चढाइ भेज्यो तानैं नंदनांग्रामलों आवत कितोक आपुनों परिकरहू सम्मुह लह्यो ॥ ११ ॥

दोहा ॥

नृपसुत आवत नंदनां, वुंदियभट विस्वस्त ॥
सम्मुह जाइ कुमाररत्न, मिले समोद समस्त ॥ १२ ॥
बानैंधर तिनमैं बली, बेसत २० वीर दुवाहैं ॥
मिले तिनहि कुमरहु मिल्यो, रक्खि भरोसाराह ॥ १३ ॥
कुमरानीढिग सिबिर११करि, सुन्यों परयो नोसेर ॥
तिहिं जित्तन पहिलैं तक्यो, दूदा१९१।१ विरचि नदेर ॥ १४ ॥

सचरणगद्यम् ॥

नंदनांसों चलाइ कुमार दूदा१९१।७रतिवाहदैकैं अकबर ३७।१

काशी की १ बराबरी करनेवाले ॥१०॥ २ जोड़ा स ३ पीहर ४समीप की भूमि तक ५ आस्किन्दित, धारित, रेचित, वल्गित, प्लुत इन पांच प्रकार की धा में (समूह धारा से कूदनाहुआ) चलने के कारण ६ सवार ७ परगह ॥११॥ ८ मुख ॥ २ । ९ आनन्द पूर्वक ॥ १२ ॥ १० बाना को धारण करनेवाले वीर कुल की संदेरा ॥ १४ ॥

के अनीकपैं अचानक आइपरयो ॥

अरु अनेक जवननके ओघ पारि नोसेरखानकौं भजाइ पहिलैं सत्रुनके सिविर लूटि पीछैं पुरमैं प्रवेसकरयो ॥

पितामही जयवती १८८।१ के पयन परि ऐसैं अकबर ३७।१ सौं तोरि आपुनैं साहसकरि बुंदीको राज्य सम्हारयो ॥

अरु तारागढके तरैं निजनामकरि नयेमहल१ तथा गीदड़गढ२ से दुर्ग२ बनाइ अपुनों आतंक प्रसारयो ॥ १५ ॥

कुमारदूदा १९१।१ के कृष्णावती १९२।१ रामा १९२।२ स्यामा १९२।३ भानुकुमरि१९२।४ए च्यारि ४ही कन्या भई तिनमैं पहिली१ तो आमेरकेराजा मान२ कौं परिनाई दूजी२ रामपुराके अधीस गजसिंहके कुमार चंद्राउत चद्रसिंह२ कौं विवाहदई ॥,

तीजी३ अरु चोथी४ के स्वसुरालय न जानैंगये ॥

अरु ऐसैं ही या वडे१ कुमार के चतुर्भुज १९२।१ परसुराम १९२।२ स्यामसिंह १९२३ ए तीन ३ ही पुत्र भये ॥ १६ ॥

इनमैं पहिलो १ पुत्र चतुर्भुज १९२।१ सोहि दूजे२ नाम करि अमरसिंह १९२।१ कहायो ॥

पीछैं इनकेही वंसनैं दूदाउत२२।१८ कहाइ हड्ड६१नमैं बावीसमौं२२ भेद पायो ॥

ऐसैंही पीछैं रायमल्लके कुपुत्र रामचंद्र १९२।१ के अनंतर रामसिंह १९२।२ बुद्धिचंद्र १९२।३ दीपचंद्र १९२।४ पृथ्वीसिंह १९२।५ स्यामसिंह १९२।६ प्रद्युम्न ११२।७ पद्मसिंह १९२।८ भगवद्दास१९२।९ कल्यान १९२।१० सोही भुवनांग १९२।१०ए दस१०ही भये तिनमैं कुलधर पंच५नके वंसके हड्ड६१नमैं तेवीसमौं २३ भेद रायमल्लोत २३।२९ कहाये ॥

अकबर की १ सेना पर अचानक २ समूह ३ दाढी ४ नीचे ५ भय फैलाया ॥ १५ ॥ १६ ॥

ए द्वै२ही नयेभेद भावीबातके प्रसंगमैं आये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कछु यह हम भावी कहिय, वर्त्तमान अब वत्त ॥
सोह भज्यो नोसेर सुनि, पूरे कोपहिं पत्त ॥ १८ ॥
दल दुवलक्ख २००००० सहाय दै, भेज्यो बुंदिय भोज १९।२॥
सक रदं नृप १६३२ लग्गत समय, मची वहुरि रन मोज॥१९॥
जानिय दूदा १९१।१ कुमर जब, बुंदिय अब रहिबो न ॥
चहि हित जो धारैन चढैं, करैं राज्य तब कोन ॥ २० ॥
यह बिचारि रनझारि असि, द्रोहिन हत्थ दिखाइ ॥
कथित १६३२ साक दूदा १९१।१ कुमर, कढिगो भय न कहाइ॥
निजनिज पिउहर नारि निज, दूदा १९१।१ कुमर उदार ॥
दिल्लीमंडल दोरिबे, सज्ज भयो गहि सार ॥ २२ ॥
कह्यो परसुधर १ कुमरकैं, स्वीय पुरोहित सत्थ ॥
सनतैं गो हम्मीर १९०।१।२ मिलि, यह भ्राता रहि अत्थ॥२३॥
अग्रज १ दोरत भोज २ इत, बुंदिय देस बिनास ॥
सुनि पुरतैं अवरोध सब, पठयो सुर्जन १९०।१ पास ॥ २४ ॥
कढि रद नृप१६३२सक इम कुमर, जिहिं दूदा१९६।१अति जोर॥
बुंदिय १ जुत मंडिय वहुल, दिल्लिय २ मंडल दोर ॥ २५ ॥
कुमरभोज १९१।२ इत स्वीय करि, बुंदिय बिरचि प्रबेस ॥
नये सचिव लय ३ किय निपुन, सुनि सु बनिक जससेस ।२६।

॥ सचरणगद्यम् ॥

पहिले सचिव खटोर बनिक नारायन परलोक पायो जानि भोज१९१।२ कुमार बुंदी बैठतही खइरांरा चालुक्क जोगीदास१ दहिया दोलतसिंह२इन दोउनको जकुट७ तो कर्म सचिव कीनों ॥

॥ १७ ॥ कोप में १ प्राप्त होकर ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ मारेजावें तो ॥२०॥२१॥ ३ खड्ग लेकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ जनाना ॥ २४ ॥ ५ दौड़ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ६ खैराड़ा का ७ जोड़ा

अरु सनाढ्यविप्र लछमन३कों वरूथेस बनाइ चोरीके प्रबंधपर प्रेरयो ताहीनैं पीछैं खानखवास३ऐसो उपटंक रूपा।तिमैं लीनौं ॥

इतकों आमेरके अधीस मानसिंह काबलके सूबामैं अच्छीरीति अकबर३७।१ को अमल जमाइ हजूर आयो ॥

अरु लवपुरतैं आपुनैं स्वसुर कुमारदुर्जनसल्ल१९।१।१को पहिलैं ही कढिजैबेको उदंत सुनायो ॥ २७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सेना नगर मऊ इत साजैं, रायमल्ल खिची १३ नृप राजैं ॥
भट पित्थल रट्ठोर तास भो, सु बसु रीँछवानगर जास भो ।२८।
हय निमित्त जिहिं सठ बिरच्यो व्यसुं, मातुल निज खिची१३महराज सु।
तापर चंद२पुकारयो सुत तस,तव अकबर३७।१पठये दल जुत तस २९
जे दुवरवैर कंबध सु जित्यो, वलि बिस्वास दुरधाँ मन वित्यो ॥
रायमल्ल हुव पित्थल रच्छक, धरी न भ्रात हन्यों तापर धक ॥३०॥
वलि यातैं दै संग कटक बहु, पठयो साह सु कुम्भ मान पहु ॥
लक्खेरिय दरें निकसि भग्ग लहि, चम्मलिपुनि लंघ्यो सत्वर चढ़ि ३१
जो दूदा१९।१।१व गिन्यों न जमाई, धौंटि पटकि दल लूट धमाई ॥
जिहिं बहीर पीछैं सन धनजुत, दैल नंदि लंघत लुट्टिलई द्रुत॥३२॥
मान जाइ पित्थल वह मारयो, नृप खिची१३लै मऊ निकारयो ॥
संगहि तास कढ्यो सुरतान१८९।१सु, वलि पछवारा रन सु भयो व्यसु
रायमल्ल लखिमतापरानहिं, गो सु उदेपुर उज्झि गुमानहिं ॥
जु इक१समों लरि जित्ति मऊ जिम, मान मुख्यो करि साह अमल इम३४
दूदा१९।१।१ कुमर असह हित दोरयो, बुंदिय१दिल्लिय२मुलक बिलोरयो

१ सेनापति २ पदवी ३ प्रसिद्ध ४ लाहोर से ५ वृत्तान्त ॥ २७ ॥ घोड़े के कारण ६ मारा ॥ २९ ॥ ७ दोनों ओर ८ क्रोध ॥ ३० ॥ लाखेरी के ९ दरें से निकलकर १० शीघ्रता ॥ ३१ ॥ ११ धाड़ा १२ आभी नदी उतरने पर ॥ ३२ ॥ १३ मारागया ॥ ३३ ॥ १४ छोडकर १५ गुमान (घमंड) को १६ एक बर्ष चढ़कर ॥ ३४ ॥ १७ मथा

मातुलकुलरट्ठोर मिलाइ रु, इक्कसमय थाँनालग आइ रु ॥ ३५ ॥
कहिपठई बुंदिय * जुज्झनकौँ, तापर दल भोज १९११२हु पठयेतँहँ
कटकमाँहिं कल्यान १९२१० मुख्य किय, भोज १९११२हु इम
सम्मुह तिहिं भेजिय ॥ ३६ ॥

कुमर मारि दूदा १९११११ कल्यानरहिं, स्व हय कटक मन्न्यौं
अवसानहिं ॥

जिम इततैं हम्मीर १६०११ भ्रात जव, तिहिं दिय पिहित खास नि-
ज हय तब ॥ ३७ ॥

तिम निकस्यो दूदा १९११ चढि तापर, भीर भये ते बहुत कटे भर
जीवित पुनि जुज्झन जय जानत, मुरिगो तब दूदा१९११ भय मानत
दास १९०११ भरत १९०१२ खज्जूरीके ७१३ हुव २, हद्दे ६१ एहु
कुमरसंगी हुव ॥

दूदा१९११अनुमत[४] लखि तिन्ह दोरि रु, लुट्टिलयो धन देस बिलोरि रु॥
कुमरभोज१९११२उच्छिन्न तेहु किय, द्विज तिन्ह पिट्ठि खवासखानकिय
जिहिंलगि पिट्ठि उभै२इम तारे, न वलि वसत कहुँ सुनैं१निहारे२ ।४०।
खानखवास विरचि जिहिं खेटे, मैंने[९] हनि रु प्रजादुख मेटे ॥
पुर बरोद घारुव २खिच्चो१३ पहु, लरि सु कुमर दूदा१९११दंड्यो[१०] लहु ॥
धिंगरमल्ल २ पकरि खिच्चो १३ धन, सुलैव[११] लटे छ अयुत ६०००० लिय तासन ॥

पकरि बहोरा चंप३भानपुर, अयुत १००००दम्म लै तज्यो सु आतुर[१२] ।
सारंगपुर१ दसोर२ सिरोञ्ज३ हु, लुंटि सेरपुर४ सालपुरा५ लहु ॥
बलि सह डाबरी६ रु बंभोरी७, लुट्टि पट्टनि८ रु मऊ९बिलोरी ॥४३॥
बलि सुखेत१० गौँछ्वा ११ बकानी १२, सुरि इतिमुख[१३] लुट्टे बहु मानी ॥

॥ ३५ ॥ * युद्ध करने के लिये ॥ ३६ ॥ १ अन्त २ छाने ॥ ३७ ॥ ३ भट ॥ ३८ ॥
४ सलाह ५ मथकर ॥ ३९ ॥ ६ उच्छेदन (नाश) ७ ताड़े (निकाले) ॥४०॥ ८ युद्ध
९ सैनों को मारकर १० शीघ्र ॥४१॥ ११ तांबे के साठ हजार टके लिये १२ पी-
ड़ित ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ १३ इत्यादि

इम दूदा१९११होरत हुव उत१इत२, सुध सब करे वेद तर भू१५४मित ।
सत्तावन ५७ तिनमें इक दीनों, दूदा १९११ रन किन्ने दिल्लीसों ॥
रन पन्नास५०सुतताके राजन, सैंतालीस४७घा टिपा तिनसन ॥४५॥
कलह१इन१७४दूदा१९११कुमार करि, थकतिम अकवर३७१इनन
चित्त धरि ॥
पातसाह बीजापुरको पुनि, सो पत्नन भयो अतिबल सुनि ॥ ४६ ॥
कर्यो न कोउ दिल्ली नापति कहि, बुल्ल्यो ताहि सहाय अप्प वहि ॥
तिहिं दूदा१९११सु बुलायो तत्थहि, सुनत कुमार चल्यो चरसत्थहि ।
मालवमें देवग्रामनामक, दुर्ग वसति पहुँच्यो सु तहाँतक ॥
ताके जनन नहादुष्टन तँहँ, करि अधर्म दिन्नों विष ताकँहँ ॥ ४८ ॥
इम बलु गुन खट ससि१६३८सक अंतर, तजिग देह दूदा१९११तदनंतर
भोज १९१२ कुमार सु सुनत तज्यो भय, जितातिन स्वश्रुव जमाइ
रह्यो जय ॥ ४९ ॥
वसि कासी नृर्जन१९०१इत भुवर्ग, पूरवमग निर्भय किय पद्धर ॥
विप्र च्यारि४कुंडिय वसवाये, पहु तिन्ह नाम सुनहु इम पाये ॥५०॥
पूर१भट्ट सक्कोदर प्याग, उपाध्याय लोहार मेवारा ॥
श्रीगौड़ जु गोविंद३जोइसिय, क्रम संगहि औदीच्य वेनु४किय ॥५१॥
बुंदी ए चउ४भजि वसाये, पुर कासी वहु जस नृप पाये ॥
कनकतुला जुग२अप्प दान किय, हढदय रजततुला पंचक५दिय
पुरटतुलां इक१ ठानि अनूपँहँ, तिम बुध द्विजन दिवाई सो तँहँ ॥
दुहितौ निजकर इक१दिवाई, इक१हि पौत्र रतन१९२१वढ आई ।५३।
ए दुव२ रजततुला हुव ऐसें, जानहु अब आलय क्रम जैसें ॥
उपवन इक१पुरढिग तनवायो, वसन राजमंदिर रचवायो ॥ ५४ ॥

---

१ दुद ॥ ४४ ॥ २ बराबर के राजाओं [illegible] पहर [illegible] से ॥ [illegible] ॥ ४६ ॥ ४ हलकारे के साथ ही ॥४७॥ ५ जिस पीछे ॥ ४८ ॥ ६ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ज्योतिषी ॥५१॥ ९ चांदी का तुलादान ॥ ५२ ॥ १० एक सोने की तुला [illegible] करा‍ई ११ पुत्री के हाथ से ॥ ५३ ॥ १२ बाग को फैलाया ॥ ५४ ॥

सुरमंदिर पुरबिच चोरासिय८४, कुंड बीस२०करि किंय बर कासिय
मग जगदीस अवधि भय मेट्यो, भयद चौर काहु न जन भेट्यो ।५५।

॥ सचरणगद्यम् ॥

इहु६१नको बेद साम ३ यातैं राज्यमैं हस्त१३ नक्षत्रपर हो तो श्रावनिका को महे तो ॥

अरु प्रजामैं सदैव पूर्णिमा १५ केदिन रहतो ॥

नरेस सुर्जन १९०।१ नैं यहउत्सव पूर्णिमा१५ केदिनहू राखि द्वै२ ही समय हर्षके मानैं ॥

अरु हाडा ६१ मान १८६।१ केपुत्र हम्मीर १९०।१ नैं अब शुक्लवापीकेसम्मुख है सो वापी १ अरु गैंडेकोवाग २ कहावै सो उपबन२ ए दो२ हीस्थान बुंदीमैं बनाये जानैं ॥ ५६ ॥

इतकों आमेरको अधीस मानसिंह १ आपनैं पुत्र जगतसिंह २ सहित अकबर ३७।१ नैं आर्यावर्तके ईसानकोन८ के अंतर आसामदेसके विजयकों पठायो ॥

तानैं ब्रह्मपुत्रनदमैं नावनकों पेलिपेलि सत्रुनको दुर्ग पायो सो ही तोपनको ताप दे रु नैठायो ॥

याहीसमरमैं भोज१९।१।२कुमारको जामाता ऐसो राजामानासिंह १ को कुमार जगतसिंह २ परलोक पावत भयो ॥

ताके सोक करि द्विर गुन कोपारुन कूर्मराजके बिक्रम करि परनसों पलटि आसाम अकबर ३७।१ के आवतभयो ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

यहहि देस आसाम, कामरूप अपनैं कहत ॥
करि रन दुष्कर काम, जितिलयो नृपमान जो ॥ ५८ ॥
ब्रह्मपुत्र नदबीच, जाही रन नावन जुरत ॥
मानकुमर लिय मीचं, जगतसिंह अभिधान जिहिं ॥ ५९ ॥

---

१ भय देनेवाला ॥५५॥ २ श्रावण मास का ३उत्सव ४बाग ॥५६॥ ५नष्ट किया ६क्रोध में लाल ७पराक्रम से ८शत्रुओं से ॥५७॥ ९कठिन॥५८॥ १०मृत्यु॥५९॥

सुभमति १९२।१ व्याह्यो सोहि, कुमर भोज १९१।१ वारी कनी ॥
जास सुता हुव जोहि, दारा ४०।१ कँहँ पीछैं दई ॥ ६० ॥
सुत हुव जास सलेम ४१।१, नत्ती साहजिहान ३९।२ को ॥
वाको नाना एम, मानकुमर यह यँहँ मग्गो ॥ ६१ ॥
सुनि आमेर सतीसु, ज्वलन वैठि सुभमति १९२।१ जगी ॥
गहि कुलतियन गती सु, स्वर्ग गई निज पतिसहित ॥ ६२ ॥
सैसव वय लहि श्रेयं, तनय हुतो रघुनाथ तस ॥
जोहि रतन १९२।१ जाँमेय, कुमर भोज१६१।२ दौहित्र कहि।६३।
सो सिसु कछु भय साहि, आयो भजि नाना अयन ॥
इम बुंदीपुर याहि, भोज १९१।२ रतन १६२।१ रक्ख्यो भलैं।६४।
अक्खिय एह उदंत, तनु अंतर भावी तथा ॥
उत कूरमसुत अंत, भयो तदपि विजई भयो ॥ ६५ ॥
भिरतहि हनि १ रु भजाइ २, कामरूपके कौलंजन ॥
इम देस सु अपनाइ, मान रह्यो कछुदिन मुदितं ॥ ६६ ॥

॥ षट्पात् ॥

कामाक्षा जँहँ कहत आहि देवी वर आलय ॥
वाकी प्रतिकृति अपर २ दिपंत कौलन दुर्गालय ॥
ते हारत खिंन ताहि गेरि संपू ऱ्हदविच गय ॥
पहु मौनहिं इम स्वपन दयो देविय तिहिं सोदय ॥
मोकहँ निकासि लेचलि महिप जुरिहैं वलि १ अर्चन २ जथा ॥
सेवक कहाय अनुकूल सुभ तव निकेत रहिहौं तथा ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

---

१ जिसके पुत्री हुई सो २ दाराशाह को ॥६०॥ शाहजहां का ३ पोता ॥ ६१ ॥ ४ अग्नि में ॥६२॥ ५ बालक अवस्था ६ श्रेष्ठ. रत्नसिंह का ७ भानजा ॥ ६३ ॥ नाना के ८ घर ॥६४॥ यह वृत्तान्त कहा सो ९ कुछ देरी से होनेवाला है ॥६५॥ १० वाममार्ग-वाले लोकों को ११ प्रसन्न ॥६६॥ उस देवी की १२ मूर्ति १३ शोभायमान. हारते १४ समय १५ मान को १६ दया पूर्वक १७ बलिदान. तुम्हारे १८ घर में

आनी तब कूरम अधिप, जलतैं उद्धरि जोहि ॥
गिनहु बिदित आमैरगढ, सल्लहादेविय सोहि ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जन चरित्रे रणमस्तखांसहितसुर्जनपट्टपकुमारदुर्जनशल्यलाहोरगमनतच्छलघातवधसूचनोत्तरनिभृतनिःसरणबुन्द्यागमन १ दूदाकृतस्वसेनापतिनवशेरखांपराजयपलायनश्रवणातिरुष्टाकबरलक्षद्वय सैन्यसहितभोजप्रेषणादूदानिःसारणोत्तरभोजार्थबुन्दीवितरण २ यवनेन्द्राकबरससैन्यकूर्ममानसिंहमऊप्रस्थापन ३ राष्ट्रकूटपृथ्वीसिंहवधोत्तरखिच्चीनृपरायमल्लनिःसारकमऊग्राहककूर्ममानसिंहयवनेन्द्रान्तिकप्रत्यागमन ४ कुमारदुर्जनशल्यकृतबुन्दीदिल्लीप्रमुखराष्ट्रलुटनरणगणनानन्तरविषप्रयोगतन्मरण ५ आमेरभूपमानसिंहासामदेशविजयनवासमार्गीयदेवीमूर्तिसमानयनसल्हादेवीसंज्ञयाऽऽमेरदुर्गतत्स्थापनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥ आदितः पञ्चनवत्युत्तरशततमः ॥ १९५ ॥

॥ ६७ ॥ जल से १ निकास कर ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के पाटवी पुत्र दुर्जनसाल का रणमस्तखां के साथ लाहोर में जाकर अपने छल घात से मारने की सूचना मिलने पर छाने निकल कर बुन्दी आना १ अपने सेनापति नोशेरखान के दूदा से पराजित होकर भागने की खबर से क्रोधित अकबर का भोज के साथ दो लाख सेना देकर दूदा को निकाल कर बुन्दी का राज्य भोज को देना २ बादशाह अकबर का कछवाहा मानसिंह को सेना सहित मऊ की ओर भेजना ३ उस मानसिंह का पृथ्वीसिंह राठोड़ को मारकर और खीची राजा रायमल्ल को निकालकर मऊ लेकर पीछा बादशाह के पास जाना ४ कुमर दूदा के बुंन्दी और दिल्ली आदि देश लूटने में युद्धों की गणना के अनन्तर विष देने के कारण दूदा की मृत्यु होना ५ आमेर के राजा मानसिंह का आसाम देश को विजय करके वाम मार्गवालों की देवी की मूर्ति को लाकर सल्हा देवी के नाम से आमेर के गढ पर स्थापन करने का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से एकसौ पचानवे १९५ मयूख हुए ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भगिनी मान सुवालकी, अकबर३०१२व्याह्यो अग्ग ॥
तक्कँ तस कूरम त्रपा, मिलि संबंधिन सग्ग ॥ १ ॥
द्रम्म१ रु गज२ ग्रामा३दि दिय, जिहिँ तब सरनाँ जोरि ॥
कूटहि कित्ति कराइबे, कूटहि कविन छकोरि६०००००००।२।
विप्र१ सूत२ वंदि३न तबहि, गनिकामत अवगाहि ॥
अनयदान लै बंटि वह, आप्पिय अति जस याहि ॥ ३ ॥
इक्क१नको कुलवारहठ, सुकवि धीर सासोर ॥
पुव्वहि जिहुसंतति परयो, अन्वय न रह्यो ओर ॥ ४ ॥
हम तुलर हुव वारहठ, रीति सु अब प्रभु राम२०३।४ ॥
सुनिय जिम सच्चे सुकवि, धूरि गिनहिँ धन१ धान२ ॥ ५ ॥
सुन सोँसा जब अग्ग सुन, महिप रतन१ रविमल्ल२ ॥
सीसोद१न हड२न सहज, हुव विरोधपन हल्ल ॥ ६ ॥
रतन१ अनुज विक्रम२ रह्यो, तस गद्दिय चितोर ॥
निज कवि जिहिँ मेरे निखिल, अब्भज कत्थन ओर ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूसुर१ चारन२ भट्ट३ सबन विक्रम निदेस सुनि ॥
रान रतन काव्य रचि चविय तस जस प्रकर्ष चुनि ॥
मिहिरमल्ल१८८।१ कहि सूड कुजस वरनिय ताको किल ॥
प्रभु ममकुल परपुरुष ख्यात कवि भानु१६।२ रहे खिल ॥
रंचं न निदेस किय गनको विक्रम हुव तिनपर खिन्न ॥

---

१ भूपति की २ लज्जा ॥ १ ॥ ३ रुपय ४ झूठी कीर्ति कराने के लिये ५ झूठे कवियों को ॥ २ ॥ ६ चारण ७ वेश्या के मत का ८ अनीति का दान ९ दिया ॥ ३ ॥ १० वंश ॥ ४ ॥ ११ भूमि ॥५॥ हरिणों की १२ शिकार में ॥६॥ १३ सब ॥७॥ १४ ब्राह्मण. विक्रमादित्य की १५ आज्ञा सुनकर १६ कहा. रत्नसिंह का १७ विशेष यश किया १८ सूर्यमल्ल को १९ निश्चय २० कुछ भी आज्ञा नहीं मानी २१ उदास

संसदं गये न तबतैं सु कवि मन्निजडहि तिंहिं अँचि मन ॥८॥
विमनं१ चिमन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सासन उंटोलाव१ सह, इनके ले सब इट्ठ ॥
असन१ बसन२ हित ग्राम इक१, रक्खिय केवल रिट्ठ ॥ ९ ॥
किय तत्थहि निर्वाह कवि, पै न गये जडपास ॥
ठहे नृप बुल्ले उँदय हठि, आये तबहु उदास ॥ १० ॥
पधराये जिन्ह उदयपुर, गदियँत भानुगनेस ॥
प्रचुर ताल१ मंदिर२ प्रमुख, प्रोज्झित रचिय प्रदेस ॥ ११ ॥
आक्खिय तिनप्रति नृप उदय, मुख्य कविन यह मग्ग ॥
चवहिं सत्य१ अन्तर२ न चवहिं, लोभहिं रंच न लग्ग ॥ १२ ॥
छिति गत लेहुव हमहिं छमि, अघज कृत अपराध ॥
अरु रजपूतन आचरन, बरनहु जिम अघबाध ॥ १३ ॥

॥ षट्पात ॥

नृपहिं भानु१६४१२तब नटि रु निजहु सासन गत लिय नन ॥
रक्खिय इक्क१ हि रिठ अँतहु बरन्यौं न पुब्ब रन ॥
पीछैं तदनुज पुत्र सुकवि ईस्वर१९५१आख्यौंसह ॥
पहु अब रान प्रताप बहुरि बुल्ले अति आग्रह ॥
अरु कहिय कविन कुलरीति यह कहत तिमहि जिम हम करहिं ।
अब रन सु सत्य बरनहु अभय धरहु स्वीयँ करि गत धरहिं ॥ १४ ॥
बनैं जिम न तुम बदहु त्रास बाहुजँ२ न भजँ तब ॥

---

१ सभा में ॥ ८ ॥ २ इष्ट (उत्तम अथवा अनुकूल) ३ रीठ नामक ग्राम ॥ ९ ॥ ४ उदयसिंह ने ॥ १० ॥ ५ कहते हैं कि उनों ने भाणा गणेश को पधराये ६ बहुत ७ छोडे हुए प्रान्त में ॥ ११ ॥ ८ मार्ग ॥ १२ ॥ ९ गईहुई भूमि को हम को १० क्षमा करके लो ११ पाप मिटानेवाला ॥ १३ ॥ पहिले के युद्ध को १२ सत्य नहीं कहा १३ नाम. गईहुई भूमि को १४ अपनी करके धारण करो ॥ १४ ॥ भागनेवाले १५ क्षत्रियों का डर नहीं है

तिनहुमाँहिँ इम मत्त करी चहि सुनि इच्छैं कब ॥
इष्ट सपथ१मम सपथ२अप्प बरनहु कृतै बत्तहिँ ॥
इम निहोरि नृप इमहिँ मुदित गत दैनलग्यो महि ॥
सु लई न तदपि ईस्वर१९५।१सुकवि पैं निदेस करनों परयो ॥
जब रैनैं कुजस१रविमल्लैं१८८।१जसरकारि कवित्व ख्यापित करयो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

निरपराध कहि हड्ड६१नृप१, सत्यँसंध प्रभु सूर ॥
रान२चकित जडपापरत, कह्यो कुतर्क सठ क्रूर ॥ १६ ॥
पैं रहिबो न बिचारि पुनि, तजि गिहि१हु कवि तत्थ ॥
जावन चिंत्यो जोधपुर, स्व कुलधर्म नयँ सत्थ ॥ १७ ॥
महिप प्रतापहु सुक्खमन, सपथ१प्रनैंति२ अनुसार ॥
लहि साहस३रक्खन लग्यो, प्रकटि ऋतंवद प्यार ॥ १८ ॥
पै न रहे ईस्वर१९५।१सुपहु, राम२०३।४सुनहु कुलरीति ॥
कहिय अधम कहि स्वामिकँहँ, आश्रितैं रहन अनीति ॥१९॥
इत बुंदीहु उदंत यह, कुमर भोज१९१।२करि कर्ण ॥
पठई बिन्नति जनकप्रति, पुर कासिय लिखि पर्ण ॥ २० ॥
तब सुर्जन१९०।१यह सुनि त्वरितैं, पठयो इम प्रतिपैंत्र ॥
तुम सुत सादर बुल्लि तिन्ह, तकि हित रक्खहु तत्र ॥ २१ ॥
जो न रहहिँ तो कछु जुकैंति, इहाँ तिनहिँ लै आहु ॥
कित कवि जैहैँ सत्थ कारि, निज कुल सुजस निबाहु ॥२२॥

मस्त हाथी हैं तो १ अङ्कुश २ सत्य ३ प्रसन्न होकर गईहुई भूमि को देने लगा ४ राणा रत्नसिंह का ५ सूर्यमल्ल का ६ प्रसिद्ध किया॥१५॥ ७ सत्य प्रतिज्ञावाला ८ छली ॥ १६ ॥ ९ नीति के साथ ॥१७॥ १० नम्रता ११ सत्य बोलनेवाले से प्यार करके ॥ १८ ॥ १२ हे राजा रामसिंह. जिस स्वामि को अधम कहा उसी के १३ आश्रित रहना अनीति जानकर ॥ १९ ॥ १४ सुनकर १५ पत्र लिखकर ॥ २० ॥ १६ शीघ्र १७ पीछा पत्र भेजा ॥ २१ ॥ १८ कुछ युक्ति करके ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत ईस्वर१९५।१कवि उज्झि निलय मेवार धरा निज ॥
चलिय जोधपुर चाहि वृत्ति कविता जस वानिज ॥
सावँर पहुँचे सुनत भोज१९१।२निजकर दल भेजिय ॥
दोला१जोगियदास२दासिकैं१चालुक्य२संगदिय ॥
ए सचिव जाइ सावर उभय२पहु तिन्ह इत लाये प्रनमि ॥
प्रभु राम२०३।४स्वकविकुल परपुरुप जव आये हितभाव जमि ।२३।
नगर बरोदन निकट अचल दक्खिन २ दँर अंतर ॥
संक्रमि कुमरहु सुमुख भोज१९१।२ प्रकट्यो हित निर्भर ॥
इम बुंदिय तिन्ह आनि जिम सु आकूत जनायो ॥
एह न भायो इनहिँ भावकुमरहिँ सु न भायो ॥
तव कहिय होइ कासी तुमहु जावहु कवि निज इष्ट जित ॥
रंचक अनेहँ सम्मिलि रहैं१अरु अलभ्य व्है तीर्थ२ इत ॥ २४ ॥
कासी गो यह कुमर निजहिँ लै संग मुदित तब ॥
अधिपहु तोरन अवँधि आय सम्मुह लैगो अब ॥
सह गौरँव समुझाइ वदिय वित्तत कछु वासँर ॥
करि तिम हमहिँ कृतघ्न तुमहिँ जैबो न उचिततर ॥
इमतैं न होहिँ जो अप्प हित वँलि कहुँ गमन बिचारिये ॥
कछु काल सफल यह गेह करि इतहु नेह अँवधारिये ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बित्ते हड्ड६१न बारहठ, संतति विजु सामोर ॥
जिम सगोल सिसु बुद्धि जिन, अंकस्थैं न किय ओर ॥ २६ ॥

---

१ छोडकर. यश का २ व्यापार करने को ३ सावर नामक ग्राम में ४ पत्र ५ दिया क्षत्रिय ६नमस्कार करके ॥ २३ ॥ दक्षिण के पर्वत तक ७दरा के भीतर ८ जाकर. अपना ९ अभिप्राय. जो इस कवि को नहीं १० रुचा सो कुमरको भी नहीं रुचा. अपनी ११इच्छा होवे जहां. कुछ १२ समय ॥ २४ ॥ बाहिर के द्वार १३तक १४बडप्पन सहित १५दिन १६फिर १७ धारण करो ॥२५॥ १८गोद

ताते लै कुलवृत्ति तुम, पय हम सयन पुजाइ ॥
होहु य हड्ड१न बारहठ, प्रकटि कृपा हित पाइ ॥ २७ ॥
कवि मन्त्री नृपके कहत, अति आग्रह करि एह ॥
हुव हड्ड१न कुलबारहठ, गिनि बुंदिय निज गेह ॥ २८ ॥
कुंकुम१ मुक्ता२ प्रमुख करि, पूजि सु पहु कवि पाय ॥
थिर१जो दिय जो पुनि अथिर, गाम२०३·४सुनहु नरराय ॥२९॥
आत१ जात२ गौंव१ उभय२, मिलतहि अप्प महीप ॥
बलि हुव२ तारन वृत्तिमैं, दये दुलभ कुलदीप ॥ ३० ॥
सुत१न सुता२ उछव१ समय२, बलि दोउ२न संबंध१४ ॥
पुनि दोउ२नके व्याह२।६ पर, सिद्ध वृत्ति करि संध ॥ ३१ ॥
पुंसवन२।७ रु सीमंत२।८ पुनि, नियतहि अष्ट८ अनेह ॥
दई वृत्ति तिनमैं दया, औंडय ग्राम जुग२ एह ॥ ३२ ॥
बम्हनखेट१ रु नाम बलि, मीसखेट२धनमूरि ॥
द्रंग मऊ१के ग्राम हुव२, पहु अप्पे हित पूरि ॥ ३३ ॥
निलय राजमंदिरनिकट, उचित हवेली१अप्पि ॥
छमैं कुटुंब सब लेखछदेर२, थिर महाँदि दिय थप्पि ॥ ३४ ॥
अधिपनम्न कुमरहिं उचित, दलँ२।३रु निमंत्रन२।४देन३ ॥
व्याह१मरन२मुख हेतु बलि, आवन नृप कवि ओनैं४ ॥३५॥

नहीं रक्खा ॥ २६ ॥ हमारे १ हाथों से पैर पुजाकर ॥ २७ ॥ २८ ॥ २ आदि-स्थिर करके दिये थे सो बुन्दी का देश जाने के कारण ३ अस्थिर होगये, अर्थात् हमारे वे ग्राम भी बुन्दी के परगने बारां मऊ के साथ ही जो उन प्रांतों में थे वे नष्ट गये ॥ ॥ २९ ॥ ४ ताजीम ॥ ३० ॥ ५ जन्म के समय ६ प्रतिज्ञा करके ॥ ३१ ॥ ७ संस्कार विशेष जो गर्भाधान से दूसरे अथवा तीसरे महीने में किया जाता है ८ आगरणी जो पञ्चनामा के नाम से प्रसिद्ध है. इन आठ ९लग्न पर १०धन युक्त ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ [illegible] १२ [illegible] के पत्र में अर्थात् परवाने में १३ [illegible] शब्द लिखकर पीछे कवि शब्द लिखने की रीति दृढ की ॥ ३४ ॥२८॥ १४ पत्र. कवि के १५घर पर ॥ ३५ ॥

पच्छिम३सूरजपारितैं, चउ४हट्टन ढिग चाहि ॥
स्व पुरहु इक१ *हट्टा१सहित, जु दिय हवेली२जाहि ॥३६॥
सब इतिमुख आदर१सहित, दै † समुचित सब ‡ देय२ ॥
§ अच्छत्तैं मुत्तिय३दै अलिक, पोलिपात्र किय प्रेय ॥ ३७ ॥

॥ षट्पात् ॥

दुव२हि वृत्तिमाँहिँ दिय ग्राम चम्मलि पर२तट गत ॥
कहि सब सासनमुकुट मही दोउ३न निश्चलमत ॥
बम्हनखेट१रु भीलखेट२जिन्ह नाम विदित जग ॥
वलिनिज भुव क्रय वस्तु मुल्ल नृप कर जिहिँ जिहिँ मग ॥
बीसम२०विभाग३ताको हु वलि देय नियत करि तिन्ह दयो॥
हममैं प्रजाहु प्रेरतैं महिप उपदा करि कछु४अप्पयो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

जढ बंबावद बस गयो, धर मेवार अधीन ॥
सामोरन सासन सबहि, हुव ते नृप सब हीन ॥ ३९ ॥
समर१८१।७दये इत संवसथ, मन कवि इच्छित मानि ॥
कच्छोला१दिक खेट६कथित, जेहु लेहु इम जानि ॥ ४० ॥
कच्छोला१संग्रहि कथित, रोसुंदा२हरिना३रु ॥
दोडुंदा४गिंडोलि५दिय, पंचक खेट६हु चारु ॥ ४१ ॥
तेहु टारि रक्खे तिमहि, निज अभुक्त नरनाह ॥
अप्पे सासन तेहि अब, रक्खी सासनै राह ॥ ४२ ॥
पै तिन्ह तुच्छहि जानि पहु, गुरु१२ अप्पिय खेट६ग्राम ॥
पट्टनिपुरके परगनाँ, करि सासन जसकाम ॥ ४३ ॥

---

* दुकान ॥ ३६ ॥ † उचित ‡ दान. मोतियों के § अचत १ ललाट में लगाकर २प्रिय ॥३७॥ अपनी भूमि में ३बेचीजानेवाली वस्तु के मूल्य पर बीसवां हिस्सा ४ निश्चय. राजा की ५ प्रेरणा से ६ नजराना॥३८॥३९॥ ७ ग्राम ८ वाञ्छित॥४०॥ भी सुन्दर ॥ ४१ ॥ १० राजा ने अपने खालसे में नहीं मिलाकर अभुक्त रक्खे द्वार ११ उदक में हाथ नहीं डालने की रीति रक्खी ॥ ४२ ॥ १२ वडे ॥ ४३ ॥

तँहँ लवान१गोठ्ठ२तिम, देवीखेट३हु देत ॥
इम खट६में कोटा४अपर२,पर्पट५नगर६उपेत ॥ ४४ ॥
ते हे पट्टनि१तंत्र तव, अब लक्खेरि२अधीन ॥
जे ए अधिक उड४गाम जँहँ, नहु अप्पे वसुपीन ॥ ४५ ॥
सालवमु८ खट६ ग्राम७ सह, निर्यंता१ निपँत२ निदान ॥
ए चउदह१४ नृप अप्पिकैँ, दिय वैभव बहु दान ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

दुव२ अलिपुंजित द्विरद१ तुरग२ चालीस४०त्वरागति ॥
संघ३ बसु ससि१८ मय मत्त भये मंरुचपल भ्रानमति ॥
सिंधिका४।१ रथ५।२ सिरुपाव६।३दुलभ अंतिम६इक१इक१ दिय॥
आयुध ७।१ अरु आभरन ८।२ जु रुचि सब खास समप्पिय ॥
निम अयुत पंच५००००रुप्पय९।१दितें१किंकुम१मुत्ति२न तिलककरि
पूजिंतन धनसिभोज१९।१रहिँ भनिय धर्म बिरुद अभिलाखँधरि।७४।

॥ दोहा ॥

हे सुत अब वय वृद्ध हम, संधा तुम इमसाहि ॥
कुल मूढन बोधँहु स्वकुल, ए व बारहठ आहि ॥ ४८ ॥
पय निज खंध दिवाइ पहु, इम चढाइ इम अक्खि ॥
पहुँचाये डेरन प्रथित, राजा स्व बिरुद रक्खि ॥ ४९ ॥
निज सगोत्र१ असगोत्र२ नृप, पुनि कवि थान पठाइ ॥
प्रथित कगायउ सवन पँहुँ, उपदादिकैँ१ अधिकाइ ॥ ५० ॥
सक ख वेद रस ससि१६४०समय, गहि इम वैभव१ग्राम२ ॥

१ सहित ॥ ४४ ॥ पाटण के २ अधिकार में थे ३ धन से पुष्ट ॥ ४५ ॥ पहिले-वाले ४ निश्चय उदक और पीछेवाले ५ अनिश्चय (जागीर) ॥ ४६ ॥ ६ भ्रमरों के समूहवाले (मस्त) ७ हाथी ८ शीघ्रगतिवाले ९ मस्त ऊंट १० मारवाड़ के उत्पन्न ११ देकर १२ पूजन कियेहुओं का भोज ने भी प्रणाम किया १३ यश की १४ अभिलाषा धरकर ॥ ४७ ॥ १५ प्रतिज्ञा. अपने कुल के मूर्खों को १६ समझाओ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ १७ नजराना आदि ॥ ५० ॥

हुव इम तुमकुल बारहठ, रसारमन प्रभु राम२०३१४ ॥ ५१ ॥
हायन[2] हुवरतत्थहि रहिय, कवि१जुत भोज१९१२ कुमार ॥
धराधीस यह छत्रधरि, हुव तत्थहि अघहार[3] ॥ ५२ ॥
हुव२आश्रम नृप१६४२ सक तदनु, मिलत दोजि४सित१मग्ग९॥
सुर्जन१९०१२नृप अंतिमसमय, इम किय उचित उदग्ग ॥५३॥
कथित घट्ट मणिकर्णिका, पहु गंगातट पत्त ॥
दै विधि देय रु तजिदयो, गंगांकै[6] रहि गत्त ॥ ५४ ॥
सुर्जन१९०१२नृपको जनु[8]समय, सर हय तिथि१५७५मित साक ॥
पहु हुव सित्र नृप १६२१साकपर, छकि बुंदिय जस छाक ॥५५॥
अब हुव आश्रम४२साक इम, दिय इहिं नृप तजि देह ॥
तनु हुत[9] करि रानी त्रिकहि, गय संगहि सुरगेह ॥ ५६ ॥
भोज१९१२स्व मातामात भनिय, चलहि जरहु क्यों अप्प ॥
दूदा१९३१सो टरिगो दुसह, बालक तुमहि सदर्प[10] ॥ ५७ ॥
बिरचहु सुतके राज्यबिच, दे निदेस सब दान[11] ॥
लहि व्रतादिक२विहितै सब, स्वर्गभजहु अवसानै[12] ॥ ५८ ॥
कनकवती१९०१२पच्छोकह्यो, सुत तैं न कहिय साँहु[13] ॥
जसुदा१९०१३न भज्यो सुतहि जिम, दुभग्गौं[14] जिहिं दूदा१९३१३हु ॥
सु तो जरैं पतिसंगहीं, मैं व रहौं सुत माहि ॥
मो पहिलैं जो तू मरै, तो हुव२हत्या तोहि ॥ ६० ॥
यह लिखि दै सु लिखी न इहिं तीन३हि रानिन तत्थ ॥
तनु हुत किय गंगातटहि, स्वामीके बपुसत्थ ॥ ६१ ॥
ब्रह्मनालिबिच तिहिं बिदित, अब तग चौंरा१आहि ॥

१ हे भूपति रामसिंह ॥ ५१ ॥ २ वर्ष ३ पाप को मिटानेवाला हुआ अर्थात् देहान्त होगया ॥ ५२ ॥ ४ मार्गशिर ५ उदग्र ॥५३॥ ६ गङ्गा के जल में ७ शरीर रखकर ॥ ५४ ॥ ८ जन्म ॥ ५५ ॥ शरीर ९ होमकर ॥ ५६ ॥ १० सदर्प (घमंड सहित) ॥ ५७ ॥ ११ उचित १२ अन्त में ॥ ५८ ॥ १३ साधु (श्रेष्ट) १४ दुर्भाग्य ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

कथित ढिगहि मणिकर्णिका, जु पै जनावत जाहि ॥ ६२ ॥
न रच्यो सुर्जन१६०१कछु निलय, बुंदीनगर विसेस ॥
कासी सब विस्वे कहे, अब ऐसें सृत एस ॥ ६३ ॥
प्रेतकरम सब किय प्रथित, अप्पनविधि अनुरूप ॥
सग२ विमल१ तेरसि१३ तदनु, भोज१६१२कुमर हुव भूप ॥ ६४ ॥
कवि ईस्वर१६५१जुत दिवस कछु, रहि तँहँ हड्ड६१नरेस ॥
आये पुनि पुर आगरा, अकबर१६७१सेवन एस ॥ ६५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे आमेरनृपमानसिंहस्य स्वस्वसृयवनेन्द्राकबरपाणिपीडनजन्यलज्जानिवारणार्थब्राह्मणचारणमागधषट्कोटिद्रम्मवितरणं १ हड्डक्षत्रियबारहठसामोराख्यचारणधीरवंशविनशनानन्तरहड्डबारहठीभूतमिश्रणशाखचारणेश्वरदासदेयवस्तुनियमनं २, वाराणसीमध्यरावसुर्जनपञ्चत्वानन्तरभोजभूपतीभवनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥ आदितः षण्णवत्युत्तरशततमः ॥ १९६ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पतांगन इन उदयपुर, अप्पन विधि अनुसार ॥
अज्जधरम प्रेरिय अखिल, भुज धरि सासक भार ॥ १ ॥

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ १ प्रसिद्ध २ अपने सदृश ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

[श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में आमेर के राजा मानसिंह का अपनी बहिन बादशाह अकबर को परणाने की लज्जा मिटाने के कारण ब्राह्मण, चारण और भाटों को छः करोड़ का दान देना १ हाडा क्षत्रियों के बारहठ सामोर शाखा के चारण धीर का वंश नष्ट होने पर ईसरदास नामक मीसण शाखा के चारण का हाडों का बारहठ होकर नेग नियत कराना २ काशी में राव सुर्जन का देहान्त होने पर भोज के भूपति होने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ छिनवें १९६ मयूख समाप्त हुए ॥

३ महाराणा प्रतापसिंह. सम्पूर्ण ४ आर्य लोकों को धर्म में चलाए; अथवा आर्यों के सब धर्मों की प्रेरणा की ॥ १ ॥

* दसपुर१मुख पत्तनदुलभ, लिय दिल्लिय धर लुट्टि ॥
इत उत बहु गंजे अडर, † करवालन अरि कुट्टि ॥ २ ॥
कहिय पुब्ब तिम कति कहत, यह हुव सब भुव ईस ॥
बदत किते हुव यह विदित, अद्धी[१] ‡ अवनि अधीस ॥ ३ ॥
चित्तोरहु कनि जवन चहि, जसगाहक लिय जित्ति ॥
जिमतिम तपिमेवार जिहिं, किय निज बिक्रम[२] कित्ति ॥४॥
चेटक१नाटक२मुख प्रचुर[३], रान लये हयराज ॥
न दयो पै भ्रातन निजन, इक१हु अस्व वर बाज ॥ ५ ॥
इम रुट्ठो ताको अनुज, सँप्ति न लहि सगतेस२ ॥
सेवन अकबर३७।१निजन[५] सह, आयो दिल्लिय एस ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

दिल्ली१अकबरदंग[६]२उभयर अकबर३७।१निवास इम ॥
कहुँ यहँ१कहुँ यह२कहिय तदपि समुझहु संभव तिम ॥
सगतसिंह२ सीसोद साह आतहि सनमान्यों ॥
पहु इत रान प्रताप१ प्रबल प्रतिभट[८] पहिचान्यों ॥
सजि बरूथ[९] बहुरिहु अखिल प्रस्थित[१०] हुव मेवारपर ॥
सीमा प्रवेस पावतसमय कहत चल्यो[११] असि रानकर ॥ ७ ॥
अडर रान इक्क१लहि अर्ब[१२] चेटक चढि आयो ॥
व्यवहित[१३] रहि कछुवेर साहदल मिलित सुहायो
सरत[१४] जबहि निजसीम अंघ्रि[१५] हुव२ दिय अकबर३७।१ईभ[१६] ॥

---

* नन्दसोर आदि नगर † खड्गों से ॥ २ ॥ आधी ‡ भूमि के स्वामि ॥ ३ ॥ १ यश के ग्राहक ने. अपने २ पराक्रम से ॥४॥ ३ बहुत घोड़े ॥५॥ ४ घोड़ा नहीं मिलने के कारण सगतसिंह रूठगया ५ अपने सेवकों सहित ॥ ६ ॥ ६ आगरा ७ कहीं पर दिल्ली और कहीं पर आगरा कहा है परन्तु जिस समय जहां पर बादशाह होवे वहां उसी स्थान को जानना चाहिये. यहां स्थान बताने का प्रयोजन बादशाह की समीपता से है ८ शत्रु ९ सेना १० चले. कहते हैं कि राणा के हाथ का ११ खड्ग चला ॥ ७ ॥ चेटक नामक १२ घोड़े पर चढकर १३ गुप्त. बादशाह अपनी सीमा में १४ चला तब १५ चरण. अकबर के १६ हाथी ने

तँहँ झारिय तरवारि नृपति जमकी[1] रसनानिभ[2] ॥
कछवाह मान गज अग्ग कछु भैंपद खानबहलोल भट ॥
हो तँहँ प्रताप तस सिर हरयो कटि पक्खर हय जुत प्रकट ॥८॥
बहुत बह बहलोल खग्ग उततँहुं चल्यो खर[3] ॥
इक तिहिँ चेटक अंघ्रि अवनि[4] कट्टि रु प्रकटयो अंर ॥
सो नृप जानि सक्यो न कढत अतिवेग[5] यहै करि ॥
त्रय पय चेटक तुरग धुरंग मारयो सु पंटी[7] धरि ॥
जिहिँ पिट्ठि बहुत लग्गे जवन जँहँ पहुँचत दुवर जानिकैँ ॥
कर जोरि अरज सगतेस किय मन अग्रज हित मानिकैँ ॥९॥
अग्रज जव लिय अस्त्र याहि तिनमैँ दिय इक्कन ॥
तव रिसाइ सगतेस संगि भूखन[8] मातासन ॥
तैसोही इक्क तुरग लोल[9] सोदागरतैं लहि ॥
इम अकवर पँहँ आइ रक्खि कछु दाँय[10] गयो रहि ॥
अव जानि त्रिपय हय अग्रजहिँ चहत बचावन इम चविय ॥
जो होइ हुकम मैँ पूगि जिहिँ जातहि हनि आऊँ जविय[12] ॥१०॥
साह कहिय संगतेस जाहु मारहु रानहिँ जव ॥
वाजि दपटि यह वीर त्वरित साजित पहुँच्यो तव ॥
उभय जवन हे अग्ग तिनहिँ हनि अग्ग वढ्यो तिम ॥
रानहिँ अक्खिय रहहु अनुग[13] यह सगतसिंह इम ॥
पगतहि जवन तिन्ह मारि पथ कछु अप्पहि[14] आयो कहन ॥
हय त्रिपय छोरि चढि जवनहय[15] व्रजहु भ्रात पन निव्वहन ॥११॥

॥ दोहा ॥

यमराज की १ जिह्वा के सदृश २ भयंकर ॥ ८ ॥ ३ तीक्ष्ण ४ भूमि पर ५ शीघ्र ६ बहलोलखाँ को मारकर ७ घोड़े की अत्यन्त दौड़ का नाम पट्टी है ॥ ९ ॥ ८ माता से भूषण मांग कर ९ चपल १० अपने कुछ दायभाग को छोडकर ११ बडे भाई के घोड़े को तीन पैरोंवाला जानकर १२ वेगवाले को ॥ १० ॥ १३ सेवक १४ आप को १५ यवन के घोड़े पर चढकर जाओ ॥ ११ ॥

असंभूत सम बत्त यह, बाढत मन न बिसास ॥
जे अकबर३७।२ बानैत जिम, पहुँचै इक१ न पास ॥ १२ ॥
द्वै२ ही पहुँचत जानि हठ, तिनहि हनैं सगतेस ॥
पहुँचैं यह याकोहि पुनि, अद्भुतसूचक एस ॥ १३ ॥
बिरचैं जन दुकरहु अबहु, मन कज्जनैं महिपाल ॥
तनुके कज्ज बनैं न तिम, बनैं सु बिरचैं बाल ॥ १४ ॥
पिहित साहदल मिलि पता, करिलै पुव्व कही सु ॥
अनुज२हिं पहुँचैं नहिं इतर२, रीति अचिज्ज रही सु ॥ १५ ॥
पै धुरधर अबके नृपन, तब हुव रान प्रताप ॥
बिपिनधर्म हित जो बस्यो, आपत्तिहु सहि आप ॥ १६ ॥
बीरपनहु याकोहि बलि, उघर्यो सब सिर एक ॥
इठि इमै तँहँ संभव चहत, अद्भुत जसहु अनेक ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक१आकृति कति कहत हुते उभय२हि बंधुन हय ॥
पहुँचि अनुज२इम पास रान हय लिय सु लि३पय रय ॥
चपल स्व हय अग्रज१चढाइ पठयो पन पालन ॥
आक्खिय साहहिं आइ कहि जवनन करवालन ॥

१ यह वार्ता * असम्भव सी है ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ २ दुष्कर. मन से राजाओं के ३ कार्य अब भी करते हैं परंतु शरीर के कार्य इसप्रकार नहीं बनते ॥ १४ ॥ ४ गुप्त ५ अन्य नहीं पहुंचें ६ यह आश्चर्य की रीति है ॥ १५ ॥ ७ इस कलिकाल के राजाओं में धुर को धारण करनेवाला महाराणा प्रतापसिंह हुआ जिन्हों ने धर्म के कारण ही ८ वन में वास किया ॥ १६ ॥ १७ ॥ ९ इसकारण इस कथा का होना संभव मालूम होता है क्योंकि इनके अनेक अद्भुत यश हैं १० एक से रूपवाले ११ तीन पैरों से चलने वाला १२ खड्गों से ॥ १८ ॥

* ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) ने इस इतिहास में सन्देह लिखा है परन्तु यह इतिहास मेवाड़ के इतिहास में इसी प्रकार लिखाहुआ है, भेद इतना ही है कि यहां स्वयं अकबर के स्थान में आमेर के कुमर मानसिंह कछवाहे का सेनापति होकर आना लिखा है यह युद्ध खमणोर नामक पुर के समीप हलदी घाटी के स्थान पर विक्रमी सम्वत १६३३ में हुआ था. और दूसरा फर्क यह है कि सगतसिंह अपने पिता महाराणा उदयसिंह के समय ही अकबर के पास दिल्ली चलागया था सो पहिले के नोट में भी लिखागया है ॥

पुनि छंडि इक्क१नस्त्र हय पयहु दुस्सह भय जय खिन दयो ॥
सो रान प्रबल हजरत सुनहु गंजि सवन बचि इक्क१गयो ।१८।
संकासि अकबर२।३।७सुनत*अपन बल अतुल उदैपुर ॥
चित्तोरहि † कति चवत धारिय बहुविध जुज्झन धुर ॥
जिहिं बहुदिन लरि जिति ‡ पुहवि मेवार लई पुनि ॥
रक्खन धर्महि रान वसिय बन बलि चित्रनै चुनि ॥
पठई कहाइ दिल्लीस पहु सासन मम कछु अनुसरहु ॥
नहिं और नृपन सम तुम नृपति रहि दिल्लिय सेवन करहु ।१९।

॥ दोहा ॥

हमरे रक्खहु दाग१हय२, नीचैं चिन्ह३निसान२ ॥
कहिहैं हमरे३यहहि करि, राज्य करहु पहु रान ॥ २० ॥
नैंक न मन्नी रान नटि, सुनहु राम२०३।४प्रभु सोहु ॥
पठई कहि रहिहैं स्वपथ, हम नासहि किन होहु ॥ २१ ॥
इत अकबर हठ अंकुरयो, प्रतिभट उतसु प्रताप२ ॥
मन्न्यों नन दुव२घाँ मिलन, आंप मतहिं तजि आप ॥ २२ ॥
सूनु रानके दस१०सुनैं, पै तिहिं समय प्रवीर ॥
पट्ट कुमर अमरेस१ पट्ट, भये जनक मत भीर ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

उभय२ पिता१ सुत२ अतुलँ कट्ठि नारि१न संगहि करि ॥
सव भट २ परिजर्न३सहित धर्म न तजन मन पन धरि ॥
गहन वरुनदिस९गिरिन रहिय चिरलौं तहँ रानाँ ॥

* यहां † जिनने ही चित्तोड़ कहते हैं ‡ भूमि १ आश्चर्य कारक २ मेरा कुछ हुक्म मानो और दूसरे राजाओं के समान दिल्ली में रहकर सेवा मत करो ॥ १९ ॥२०॥ २१ ॥ हठ में ३ खड़ा हुआ ४ दोनों ओरवालों ने मिलना नहीं माना. अपने ५ आपे को छोड़कर; [illegible] जल (पराक्रम) को छोड़कर ॥ २२ ॥ ६ पिता के मत का सहायक हुआ ॥ २३ ॥ ७ तुलना रहित ८ सेवक ९ वरुण की दिशा (पश्चिम) के पर्वतों में १० बहुत समय पर्यंत

भोगे हड्ड सब भांति खुल्लि आपत्ति खजानाँ ।
कंटकी[1] तरुन आवृति[2] कलित[3] तिहिँ अंतर तृन१पत्र२तनि ॥
इम विविध कायमान[4]१ रु उटज[5]२वनवाये नृप वन्य[6] वनि ।२४।
तहँ अंतहपुर[7] तिमहिँ रक्खि रानिन१ कुमरानिन२न ॥
अप्प१कुमर२कछु ओटरहे[8] बाहिर छंद छानिन ॥
आवृति[9] बाहिर अखिल वीर१ अरु अनुग२ बसाये ॥
पिउहर निज पठई न लार नारिन कतिलाये ॥
अवरोध[10] तेहु अक्खिय अधिप निज पुत्रिन सन्न हित निर्यत[11] ॥
साहस अमोघ इहिँ संकटहु जवन मृत्यु न वरेँ जियत ॥२५॥
रह्यो इत सु भुव रुंधि[12] सबल छोरैँ हठ साह न ॥
अधिक अधिक दुख देत रोकि अन्नागम[13] राहन ॥
दूजे२ तीजे३ दिवस स्वजन[14] जुहि अन्न प्रवेसहिँ ॥
बंटि सबन इक१ बेर अप्प[15] लै तब अवसेसहिँ ॥
कोंद्रव[16]१गवेधुर[17]२ न मिलैँ कबहु साक१फल२न व्है तब असन[18] ॥
कल्हिको[19] खिलहु विन डारि कछु रंधिलहहिँ हेरहि रसन[20] ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

पै जब व्है तव पंति परि, बिचजिम्महिँ नृप बैठि ॥
निजनिज स्वामिन खिल[21] अनुग, पावहिँ अवसर पैठि ॥ २७ ॥
रीति सु तहँ पीढिन रहैँ, जहँ विपदा बढिजाइ ॥

---

१ कांटोंवाले वृक्षों के २ घेरा लगाकर अर्थात् कांटों की बाड़ करके ३ विदित. उन के भीतर तृण और पत्र छाकर अनेक प्रकार के ४ तृणकुञ्ज (तृणों की झोंपड़ियें,५ पर्णकुटी (पानों की छाईहुई टपरियें) बनाकर वह राजा६वनवासी हुआ ॥ २४ ॥ ७ जनाना. बाहर की ८ टपरियों में ९ बाड़ के बाहर के १० जनाने में ११ निश्चय ॥ २५ ॥ १२ भूमि को भर कर १३ अन्न आने के मार्गों को रोककर १४ अपने लोकों में जिस अन्न की परोसगारी होती थी वह सब को दिन में एक समय बांटकर बाकी रहता सो १५ आप लेता १६ कोदों १७ गेहूं १८ भोजन. कल का १९ बाकी रहा हुआ.२० स्वाद नहीं देखते थे ॥ २६ ॥ २१.बाकी के सेवक ॥ २७ ॥

पै सहभोजन[1] उदयपुर, होत अवहु यह हाइ ॥ २८ ॥*
प्रतारान इम धर्मपर, संधा[2] अवितथ[3] साहि ॥
रोर[4] दुखहु सहि पुरिरखो, निजजन सब निर्वाहि ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिहिं विपत्ति[5] गर्भजुत रहतकोउक कुमरानिय ॥
वासर[6] तीजेउ कबहु अन्न स्वजनन तँहँ आनिय ॥
हुव तस रुट्टी[7] होहि अखिल बट अद्धी[8] अद्धी ॥
गुरुपन कारन[9] द्विर गुन लाभ ताकँहँ इक[1] लद्धी ॥
आहार करत आतापिनी[10] गगन झपटि तिहिंलैगई ॥
अमरेसनारि[11] करि त्राहि वह भयविहाल क्रंदत[12] भई ॥ ३० ॥
स्वसुर[1] सुनत वट स्वीय[13] अद्ध पूपिय[14] तिहिं अप्पिय ॥
सो हि स्वबट सरसूर हु दंडत[15] मग रहि वधूहिं दिय ॥
इम ताकैं हुव इक[1] जोहु न लगी खावन जँहँ ॥
सस्नु[1] तह सह सपथ[16] कठिन भो[17] जो स्ववधू[2]कँहँ ॥
दुखको न लेस अन्नहु दुलभ सूर तदपि संगर[18]रसिक ॥
अरि जवनतिमिर[19] भास्यो उदित अज्जनृपन[20] रवि रान इक[1] ॥३१॥

---

१ साथ भोजन ॥ २८ ॥ २ प्रतिज्ञा ३ सत्य ४ भयंकर दुःख सहन करके ॥ २९ ॥ उस ५ विपत्ति में ६ तीजे दिन ७ रोटी ८ सब का आधी आधी रोटी का बट होना था ९ गर्भवती के वडप्पन के कारण उस कुमरानी को एक रोटी मिलती थी भोजन करते समय १० संवली (चील्ह) ने झपट मारकर ११ अमरसिंह की स्त्री १२ रोने लगी ॥ ३० ॥ १३ अपने बट की आधी १४ रोटी उस कुमरानी को दी १५ प्यार के मार्ग से बहू को दी १६ सोगन सहित १७ कठिनाई से भोजन कराया तो भी १८ युद्ध के रसिक थे जो १९ यवन रूपी अन्धेरे में २० आर्य्य राजाओं में एक महाराणा का ही सूर्य के समान उदय दीखा-

* यहां पर अब भी यह रीति होना लिखकर ग्रन्थकर्ता ने खेद प्रकाश किया है सो अपने सरदारों को पंक्ति में बिठाकर अपने सन्मुख भोजन कराना तो राजाओं को शोभा दायक है परन्तु सरदारों के सेवक पंक्ति में आकर सरदारों की उच्छिष्ट पातलें भिक्षा की रीति के अनुसार उठा ले जाते थे यह रीति अनुचित समझकर महाराणा स्वरूपसिंह ने छोड़ दी सो अब नहीं है ॥

॥ सौराष्ट्रि दोहा ॥

स्व धरम दृढ संवादि, दै सीस१हु को भू२द्रविनं३ ॥
अग्गहु लक्खनआदि, रानहि बहु सुरेरहे ॥ ३२ ॥
याहीतैं जन अज्जं, अज्जनइनं भाखैं इनहिं ॥
लुपत धर्म कुल१लज्ज२, तकी इनं इतरन न तिम ॥ ३३ ॥
जवन कहत लघु जानि, अप्पम अज्जन हिंदु इम ॥
मति जड सुहि दृढ मानि, हिंदू हम अज्जहु कहत ॥ ३४ ॥
हिंदुस्थान कहंत, अज्जावेत्तहिं अज्ज इम ॥
लज्ज न सुनि हु लहंत, मिच्छन हिंदुस्तानमित ॥ ३५ ॥
भाख्यो हिंदुन भानु, जनन इमहि रानन जननें ॥
सो जँहँ ज्वलित कृसानुं, हुव प्रताप अरि करन हुवें ॥ ३६ ॥
भोज१मान२से भूप, सचिव खानखाना१हि सब ॥
रहे स्व स्वं अनुरूप, करन संधिं सगुभाइके ॥

॥ षट्पात् ॥

पठई कहि मानप्रति राम यह वत्त धर्मरत ॥
दुहितौं जवन न दै रु तुमहु संबंध उतहि तंत ॥

अपने धर्म को दृढ १ कहकर अपना मस्तक देते हैं तिनके भूमि और २ धन क्या है ३ गढ लक्ष्मणसिंह आदि ॥ ३२ ॥ इसी कारण से ४ आर्य्य लोक इनको ५ आर्य्यदिवाकर कहते हैं ६ अन्य लोकों ने देखी ऐसे इन्होंने नहीं देखी अर्थात् अपने धर्म में दृढ रहे ॥ ३३ ॥ यवनलोक ७ छोटे जानकर हम ८ आर्य्यों को हिन्दुवा कहते हैं सो मूर्खों ने इसी बात को दृढ मानकर ९ आर्य्य भी कहते हैं कि हम हिन्दू हैं; वा आज भी हिंदू कहते हैं ॥३४॥ इसी कारण आर्य्यलोक भी ॥ ३५ ॥ १०आर्य्यावर्त को हिन्दुस्थान कहते हैं सो यवनों के समान हिन्दुस्थान कहने में लज्जा नहीं पाते ॥ ३५ ॥ इसकारण लोकों ने महाराणा के ११ वंश: को हिन्दुवासूरज कहा सो वहां जलते हुए १२ अग्नि के समान शत्रुओं को १३ होम करनेवाला प्रतापसिंह हुआ ॥३६॥ १४ अपने अपने १५ सदृश १६ मिलाप ॥३७॥ १७ धर्ममें रत महाराणा प्रतापसिंह ने कछवाहा मानसिंह को कहलाया १८ पुत्री १९ इसकारण से

अकबर३।४१जामिपअग्ग क्यों न नतं हमहिँ करावहु ॥
अब पै सगपन१असन२पंति पेजभय पावहु ॥
जो पुनि नदेहु लिखि देहु जब लवकुल पुत्रिन तब लहहु ॥
हम स्वीय भटन देतहि हरखि रुचत नतो मिरजा रहहु ॥३८॥

॥ दोहा ॥

करौं जवन लवकुल कँनी, कहिय अग्ग तुम कुप्पि ॥
बिगरायो सु न कारि वचन, लज्ज१धरम२कुल३लुप्पि ॥३९॥
कनी दूर जवनी करन, कछवाहहु लै कोहु ॥
तनया लवकुलजा ततो, हमकौं तुम अघ होहु ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

जब प्रताप असुँ जाइ कुम्म व्याहहु तब मो कुल ॥
तनया१ व्याहहि न तनु तनय२ व्याहहु अतीततुल ॥
कहा रुठि तुम कियउ सिंह इत आनि फेरुँ सम ॥
हत्थी समुझे हमहिँ तुल्य समुझे न अंध तिम ॥
कंदरा लिय सु बहु मिलि किमहु तिम जो सद्देँ हुकम तस ॥
तो हमहिँ धर्म तुँमलौं तजै बदहु सिंह१कित सिंह२बस ॥४१॥
मुख जो रक्खहु मुच्छ साह श्रुँति गहि समुझावहु ॥
दग्ग१ सु हय२ न दिवाइ चिन्ह१ध्वज२निजहि चलावहु ॥
उत उत्तर यह अप्पि भूप भोज२९१।२हिँ इम आक्खिय ॥

---

१ पहिनाई. अकबर के आगे हमको २ नम्र क्यों नहीं कराओ ३ भोजन ४ इस लव के वंश से. हम अपने ५ उमराओं को ही प्रसन्नता से पुत्रियें देते हैं ६ मिरजा पद पानेवाले यवन ही रहो ॥ ३८ ॥ ७ कन्याओं को ॥३९॥ कन्याओं को ८ यवनी कराना तो दूर रहा परन्तु ९ कछवाहा भी कोई १० लव वंश की कन्या को लेवे तो हमको ११ पाप होओ ॥ ४० ॥ प्रतापसिंह के १२ प्राण जावें तब १३ बराबरी को छोडकर १४ गीदड़ के समान. किसी प्रकार बहुतों ने मिलकर १५ सिंह के रहने का स्थान लेलिया १६ तुमारे समान ॥४१॥ बादशाह का १७ कान पकड़ कर १८ घोड़ों के दाग दिवाकर ध्वजा में बादशाही चिन्ह चलाओ

उतमैं न दैन दुहिता[1] यहहु जो बलि[2] दै सोहू जवन ॥
दूदा१९१।१रु तुम१६१।२हु तनया[3] दई कहहु धर्म रक्खहिं कवन ।४२।

॥ दोहा ॥

मन्नहु अप्पहु अबहि किम, रक्खत ए छलराह ॥
कछवाहनके जिन करहु, बिनु लिंपि[4] पुत्रन व्याह ॥ ४३ ॥
अंतर१ मिच्छन बंधु[5]२ इम, ए ठग उप्पर१ ओर२ ॥
अंज कवन धिज्जैं[6] इनहिं, चौरैं[7] दीसत चोर ॥ ४४ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम कहाइ रान इत बस्यो गिरिदुर्ग[8] दुर्गबन[9] ॥
जँहँ सकैं न अरि जाइ जाइ दिन निंहि निजहि जन ॥
साक पलास[10]१ पलास२पलासनके उटजन[11] पहु ॥
रहैं जलन तँहँ रंच बिसैं[12] झर जदपि लगैं बहु ॥
बरखा अनेहँ[13] तँहँ कछु विघन अमर उटज प्रच्युत[14] उदक ॥
कुमरानि१सहित अनुतापै[15] किय जगिनिस कुमर१न पाइ जग ।४५।
पिहित सुनत सब पास रजनि बिचरैं उठि रानहु ॥
कुमर उटजढिग[16] कहत कथन[17] परिगो वह कानहु ॥
अमर दुखित उच्चरिय अहो हम सम न अभागे ॥
बन यह सहत बिपत्ति जलहिं टारन निस जागे ॥
थिर सुर्जन१६०।१ रनथंभ काल हम सुनिय सत्त७ किय ॥

---

१ पुत्री नहीं देना २ फिर ३ पुत्री ॥ ४२ ॥ ४ विना लिखावट कराए ॥ ४३ ॥ भीतर से ये यवनों के ५ सम्बन्धी हैं ६ कौन आश्चर्य इनका विश्वास करै ७ चौड़े (प्रसिद्ध) ही चौर दीखते हैं ॥ ४४ ॥ ८ पर्वतों के गढ में ९ दुर्गम होकर; अथवा दुर्गम वन में १० वृक्षों के पत्तों का शाक और मांस का भोजन, इसी प्रकार ११ पत्तों की छाई हुई झोंपड़ियों में रहे. अधिक झड़ लगता है जब उनमें जल १२ प्रवेश होजाता है १३ समय. अमरसिंह की झोंपड़ी में पानी १४ टपका १५ सन्ताप किया ॥ ४५ ॥ कुमर को १६ झोंपड़ी के समीप. अमरसिंह का यह १७ कहना महाराणा प्रतापसिंह ने सुनलिया

सब अधिप धन्य हमरे मगे महलन बितवत यह समय ॥
प्रबलहिं बुलाइ पद करि प्रहत न क्यों गहत नृप संधि१नय ।४६।
छंदन निलय निज छन्न आइ सुत्तो सुनि नृप यह ॥
परिकर बुल्लि रु प्रात सबन प्रति भनिय सूनुसह ॥
तुमहिं संधि जो रुचत करहु तो है अनुमत किल ॥
इक१ सो लठ अपराध बसहु क्यों सब कारा बिल ॥
यह सुनत भीत१विस्मित२अखिल कहतभये यह अंज किम ॥
प्रभुसंग हुव१रु तुख२परिजनन जानहु हमहिं स्वछाँहँ जिम ।४७।
कहिय रान जलाकनन कुमर अनुताप रत्ति किय ॥
छिज्जि मिलहु पीछैंहि जु अब किन गिनहु उचित जिय ॥
करन राज्य नमि कुमर बुरे बोलि हमहिं बतावैं ॥
हम छत सादर मिलहु जिम न अरि अरुचि जतावैं ॥
तब व्हीत१भीत२आक्खिय अमर गति दरिद्र१आढ्य२न गदत ।
मिलिसोहि मन्नि किम प्रभु कहहु निज१पर२परदासहु नदत ।४८।

॥ दोहा ॥

कुमर लजानो इम कहि रु, रह्यो सदा तिहिं राह ॥
जुग२न रिपुन नैंन जिमहि, पैने तिमहि सिपाह ॥ ४९ ॥

॥ षट्पात् ॥

अकबर२७१पाउसअंत गयो तँहँ धरि२छकंगन ॥

अन्य १ राजा यह समय महलों में २ बिताते हैं. राजा पन के पद का ३ नाश करके राजा संधि की ४ नीति क्यों नहीं ग्रहण करते ॥४६॥ अपने ५. पत्तों के घर में ६ परगह को ७ पुत्र सहित ८ तुम को मिलाप करना रुचता है तो. निश्चय ही तुम्हारी ९ सलाह है तो १० कैदखाने में बसने हो ११ डर से चकित होकर १२ यह आज क्या हुआ १३ नेवकों को १४ अपनी छाया के समान साथ रहनेवाले जानो ॥४७॥ रात्रि में कुमर ने १५ सन्ताप किया १६ छीजकर १७ फिर. भयभीत और १८ लज्जित होकर. दरिद्री की भांति १९ धनवान् नहीं कहते हैं २० गर्जना करता है ॥४८॥ जिसप्रकार पिता और पुत्र दोनों शत्रुओं को २१ नमानेवाले थे तिसप्रकार उनके सिपाही भी तीक्ष्ण (वीर) थे ॥४९॥

इम प्रताप असु[1] अवधि प्रथित[2] निबस्यो स्वधर्मपन ॥
स्वकुल समप्पन सुजस धर्म अप्पन थप्पन धुर ॥
स्वामि[3] सुनहु जिहिं समय इक्क१हुव यहहिउदैपुर ॥
बिपदाह सहि रु अब्दन[4] बहुन बिहित[5] बाहि रु थिति चहि बिपिन[6] ॥
बितयो स्व आयु तस देस१वसु२अंमल गयो करि साह इन ॥५०॥

॥ दोहा ॥

आतहि दिल्ली साह इम, सब भूपन हुव सिक्ख ॥
पास रह्यो इक१मानपहुँ, तहँ सालकपन तिक्ख ॥ ५१ ॥
पुर आमेर१रु जोधपुर२, आदि बहुत अवनीस ॥
तियनजुतहि जे जाइ तिन्ह, सिक्ख रुचैं ऊंचि सीस ॥ ५२ ॥
रहैं साह पुरबाहिर१हि, जेहु कतिक लेजाइ ॥
बुंदी१मुख[11] लखि बाहुरैं, पुर निज साह पुगाइ ॥ ५३ ॥
इम भोज१९१।२हु हुव२अब्दकी, लहि सिक्ख रु जसलाह ॥
पहीलैं बुंदिय स्वीयपुर, आयो सबल१उछाह ॥ ५४ ॥
कुमर रत्न१९३।१संबंध किय, इन दिवसन आमेर ॥
कूरमतैं जु लिखाइ क्रम, बदहिं सु अग्ग बिबैर[12] ॥ ५५ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

जान्यौं बुंदिय जाइ, प्रतिमग मुरि रहि साहपँहँ ॥
पुनि उत सिक्खहिं पाइ, कासी रहिहँ अब्ब कछु ॥ ५६ ॥
इम हड्ड६१नकुल ईस, पुर बुंदी आयो प्रथम ॥
सब निजकरि बखसीस, बिसवासे इतके बिबिध ॥ ५७ ॥
अप्पन बंचित[13] अग्ग, जो गनेसद्विज जोइसी ॥

---

१ प्राण रहा तब तक २ प्रसिद्ध ३ हे स्वामिरामसिंह ४ बहुत वर्षों तक ५ उचित धर्म धारण करके; अथवा उचित मार्गमें चलकर ६ वनमें ॥५०॥ ७ राजा मानसिंह ८ सालापन की बडाई से ॥ ५१ ॥ ९ राजा १० प्रसन्नता ॥५२॥ बुन्दी ११ आदि "यहां अजहत् स्वार्था लक्षणा से बुन्दी आदि का राजा जानना चाहिये" ॥५३॥५४॥ १२ विना द्वेष से आगे कहेंगे ॥५५॥५६॥५७॥ १३ ठगाहुआ.

दूदा१९॥१कुमरउदग्ग, मार्यो निज खिन रोकि मग ॥५८॥
महादेव जिहिँ नाम, सो नृप बुज्झि गनेससुत ॥
दिय तिहिँ वसु उद्दाम, निवसथ सासन ढिम्मली२ ॥५९॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे उदयपुराधिपमहाराणाप्रतापसिंहयवनेन्द्राकबररणानन्तरविपत्समयगिरिनिवासस्वधर्मदृढरक्षण १, आर्यकुलकमलदिवाकरख्यातिकारणप्रसिद्धीकरण २, बुन्दीभूपभोजामेरनृपमानसिंहसचिवखानखानादिसंधिवचनानादरकधर्मदृढीभूतराणाकृतपरुषोपालम्भमाननृपलज्जितीकरण ३, विविधापत्प्राप्तिहेतुकुमारामरसिंहदुःखितवचनश्रवणसमकालमहाराणाकुमारत्रपासादन ४, यावज्जीवमहाराणाप्रतापसिंहधर्ममार्गस्थितिसहितान्यार्यनृपार्थदिल्लीन्द्रज्ञात्स्वस्वराज्यगमनाज्ञावर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः सप्तनवत्युत्तरशततमः ॥ १९७ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल दायाद रन, इत कारि ईस्वरदास ॥

---

१ उदग्र ॥ ५८ ॥ २ ग्राम ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह का बादशाह अकबर से युद्ध करके विपत्ति के समय पर्वतों में निवास करके अपने धर्म को दृढ रखना १ हिन्दुआसूर्य कहलाने का कारण प्रसिद्ध करना २ बुन्दी के राजा भोज, आमेर के राजा मानसिंह और सचिव खानखाना आदि के सन्धि के वचनों को नहीं मानकर धर्म में दृढ रहनेवाले राणा का कठोर उपालम्भों से राजा मान को लज्जित करना ३ अनेक आपत्तियें भोगने के कारण कुमर अमरसिंह के दुःख के वचन सुनकर महाराणा का कुमर को लज्जित करना ४ जीवन पर्यंत महाराणा प्रतापसिंह के धर्म पथ में रहने के सहित अन्य आर्य्य राजाओं को दिल्ली से अपने अपने राज्यों की सीख मिलने के वर्णन का चौदहवां १४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ सत्यानवे १९७ मयूख हुए ॥

रायमल्ल का २ भाई युद्ध करके

पैठो नगर मऊ१सु पुनि, नृपपन तजन निरास ॥ १ ॥
रहत साहके रच्छकन, भिरि वह कट्टि१भजाइ२ ॥
भोखिच्ची१३गतभूमिको, अधिप मऊ१अपनाइ ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि असहन यह साह दयो बुंदिय भोज१९१।२हिं दलं ॥
नृप तब सीमा निकट भयो प्रतिभट खिच्ची१३खल ॥
गहि१वाहिनि२तिहिं गहहु हड्ड६१दिय तुमहिं मऊ१हम ॥
सब ग्रामनजुत सीम करहु निज करि निज विक्रम ॥
सुनि यह निदेस बुंदिय सुपहु सबल सज्जि हंकिय सजव ॥
मनरनमिलाय पत्तन मऊ१लिय गरदाइ लग्यो न लव ॥ ३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम बेढि मऊ१पुर असह अप्प, दै तोप दु२दिन हरि अरिन दप्प ।
हल्ला करि तीजे३दिनहि हड्ड६१, अंदर पहु पैठो तोरि अड्ड ॥ ४ ॥
बज्जिय तँहँ खग्गन निसित बाढ, गज्जिय१भट२भज्जिय१चक्कित गाढ२ ॥
भूपतिको तिंहिं रन भागिनेय, जिहिं नाम कन्ह मन रन अजेय ।५।
सो पूरकुमारि१९१।१लघुतनय सूर, पानिपकारि मातुलअग्ग पूर ।
पीवत कबंध रन परन प्रान, वह कन्ह खिरयो खग्गन अमान ।६।
इक जाम मच्यो मृधं तँहँ दु२ओर, घोटक१नर२तोटक असह घोर ॥
पैनें असि हड्ड६१न करि प्रतीत, भज्जिगो वहईस्वरदास भीत ।७।
पहु भोज१९१।२मऊ१सह विजय२पाइ, झंडे तस मातहु दिय झुकाइ
कै कथित मान जय अनवहित्थ, पहिलैं हन्यों जु रंठोर पिथ्थ ।८।

॥ १ ॥ २ ॥ १ पत्र २ शत्रु ३ अथवा मारकर ४ पराक्रम ५ शीघ्र ६ लगा भी नहीं लगा ॥ ३ ॥ ७ दर्प ८ आड (रोक) ॥ ४ ॥ ९ तीक्ष्ण १० भानजा ॥ ५ ॥ ११ छोटा पुत्र १२ पराक्रम १३ अतोल ॥ ६ ॥ १४ युद्ध १५ घोड़े १६ मारनेवाला १७ तीक्ष्ण ॥ ७ ॥ १८ राजा मानसिंह ने प्रसिद्ध जय करके १९ पृथ्वीसिंह को ॥ ८ ॥

नंदन तदीय[1] जो भानुनाम, पैठो सु रीछवा पुनि प्रकाम[2] ॥
बस है मऊ२हि खिचि१ ३न प्रबंध, क्यों तस लहैं न तिन भट कबंध ।९।
यह बहुरि रीछवानैर आइ, निज जानि रह्यो तब सब नमाइ ॥
भूपति जब खिची१ २गो सु भागि, तस भटहु भजे गृह स्वस्व[3] त्यागि १०
छलि तब कबंध तस संग छोरि, बैठो सु रीछवा रुपि बहोरि ॥
इहिं हेतु मऊ२सन चढि अधीस, संक्रमिय भानु रठोरसीस ॥११॥
विंध्यो पुर जातहि तोप वार, दु[5]मुँहूर्त सही पुर भू दरार[4] ॥
कढि जान असंभव लखि कबंध, सय जोरि परयो पय प्रहतसंध[6] ।१२।
न हन्यो १न गह्यो२तब पटु[8] नरेस, आन्यों गिनि निज भट संग एस ।
तदपि न दयो सु जिंत[7] पुर हि ताहि, बुध ओर पटा दियनय निबाहि ।१३।
बुंदीके अनुगत[9] नय-प्रबंध, कहियत तबतैं तस कुल कबंध[10] ॥
अब तिहिं कुल स्वानुज[11] साल एस, निवसथ[12] गागरनी हैनरेस ॥१४॥
अहँ[13] कछुक मऊ पहु गहि अत्रस्त[14], सीमाके ग्रामहु लखि समस्त ॥
सब ठाम रक्खि परिचित[15] सिपाह, वलि आयो बुंदिय नरननाह । १५ ।
प्रभु गाम२०३।४मऊ१ग्रामन उपेत, तबतैंहि भई हड्ड६१न निकेत[16] ॥
बुंदिय दुरअब्द निक्खहिं बिताइ, जिम स्व कुलधर्म राज्यहिं जमाइ १६
खंड़रारौं[17] चालुक सचिव खास, अभिधा[18] जिहिं जोगीदास१ आस ॥
दोलतसिंह२सु दहिया द्वितीय२, रक्खे स्वराज्य निवहन गरीय ॥१७॥
जगभास्कत खानखवास३जाहि, सुहि द्विज सनाढ्य सलमन३सराहि
लखि चोरनजारनरोध[19] लाह, सेनानी[20] रक्ख्यो प्रिय सिपाह ॥ १८ ॥

---

१ उसका पुत्र २ विशेष कामना से ॥९॥ ३अपने अपने घर छोडकर ॥१०॥११॥
४ केरा ५ दो घड़ी ६ प्रतिज्ञा छोडकर हाथ जोड़ कर चरणों मे गिरा ॥१२॥
७ विजय किया हुआ पुर ८ चतुर ॥ १३ ॥ ९ सेवक १० राठोड ११ आप के छोटे भाई का साला है १२ गागरणी में रहता है ॥ १४ ॥ १३ कुछदिन १४ निर्भय १५ परिचय पाएहुए सिपाहों को ॥ १५ ॥ हाडों के १६ घर मे॥ १६ ॥
१७ खैराड़ा १८ नाम ॥ १७ ॥ १९रोकने का लाभ २० सेनापति ॥१८॥

हनि बारह१२खेटनन गिनि हेथ, मैनैं खल गंजे जिहिं अमेयं ॥
नृपभोज१६१।२कृगतकासोनिवास,इहिं छतन खलनजियआसआसं ॥
रच्छक रचि चोरी१लूट२गेध, सुख संब प्रजाहिं दिय द्विज सबोध ॥
जिहिं त्रास अग्ग बय१काल२जाँहिं, मैर्नान प्रजागर रोगमाँहिं ।२०।
बुंदी बलपति तीजो३प्रबीर, सो द्विजहु इहाँ रक्ख्यो सु धीर ॥
अधिकार कुमंगपन जिनहिं अप्प, दियपुब्बहि दुजनन दलन दंप्प २१
उन तीनन बुंदीबल उपंत, नृप रक्खि चल्यो दिल्लीनिकेत ॥
सेना नव बावन५२प्रांतसत्थ, पहुँच्यो नृपनिहिं जुत इंदपत्थँ ॥ २२ ॥
जिन दिनन अंसह सब रिपु लजांइ, बसुधातल डंका इक१बजाइ ॥
इम राज्य अकंटक बिरचि ईस, सो अकबर३७।१प्रतपत सबन सीस॥
निज सचिव खानखानाँ नवाब, आनिय जिहिं सत्तम स्वकुल आब ॥
नोसेर खान१सम अदल न्याय, दाता हातम२सम सकल दाय।२४।
परकी बिक्रम३सम हरन पीर, बानैंधर रुस्तुम४उपम बीर ॥
भाखाखट६संस्कृत मुखनैं भोज५, मंजुल पर दूजो२जनु मनोज ।२५।
अरबी१मुख निजभाखा अगाध७; बिरचैं सब बादिनैं बचन बाध८।
रिझवार९काव्यकर१०गुनन रासि११, पटुमनि१२गुनगाहक१३ज-
स प्रकासि ॥ २६ ॥
ध्रुरधारक कर्ण१४कि स्वामिधर्म, सब दईत१५सील साकर१६सु-
कर्म१७ ॥

मैनों के बारह खेड़ों को मारकर (विध्वस्नकरके) १ त्याज्य २ प्रमाण रहित. दुष्टों को जीने की ३आशा नहीं ४हुई ॥१९॥ मैनों की स्त्रियों को ५जागरण में. यह लोकोक्ति है कि 'जिसके भय से थेपड़ेहुए छोकरे सोते हैं'; अथवा जिसके त्रास से मैनों की स्त्रियों की अवस्था और उनका समय जागरण के रोग में ही बीतता है ॥२०॥ ६दर्प॥२१॥७ इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) ॥२२॥ ८भूतल पर ॥ २३ ॥ ९ कान्ति ॥ २४ ॥ १०नहीं भागने का चिन्ह धारण करनेवाला. संस्कृत ११ आदि १२ सुन्दरता में १३कामदेव ॥२५॥ १४शास्त्रार्थ करनेवालों के १५ चतुरलोकों का मणि ॥२६॥ सब का १६ प्यारा १७ शक्कर के समान

जिहिं छत खल कत्थन * मूकजाहि१८, सबल१९वहि † अज१अग्गहु
रहत सीह२ ॥ २७ ॥

‡लौकिकपटु१९ §सकरुन२० ॥ऋजु२१सलज्ज२२, सतपुरुखन संगति
सतत सज्ज२३ ॥

निज स्वामि अभ्युदय तेहु२४नेक२५, हठ पन२६समदरसी२७पहहि
एक१ ॥ २८ ॥

इक दुर्बल२ द्विज रिस उपेत, हुव होहु मिलेच्छ खय साप देत ॥
सुनि कहिय होहु पंचमि५समास, तब द्विज प्रसन्न हुव वचन तास २९
परवहि निज फेंकी रीझि पास, नहिं विफल उदारन रीझ नास ॥
वह छिद्र[illegible]मलिन[illegible]जनु कूट वीस२०, सुहि लै नवाब बंधी स्वसीस ३०
मां७वानी८हुव९इक१०घर मिलाइ, द्विज किय सु आढ्य बहु वसु दिलाइ
इक धनिक नारि वय११मदन१२अंध, सो कबहु लख्यो जावत सुसंध ३१
तब लज्जहिं१३ जुव्वन१४ मत्त तोरि, नवबय नवाब तुल्लयो निहोरि ॥
तस पिहिंर्नें जनन अनुकूल१५ तत्थ, सो गो हु खानखानाँ समत्थ ॥३२॥

जिसके होते हुए दुष्ट लोक दुष्टता की कथा करने में *गूंगे थे † बकरे के आगे सिंह भी सीधा रहता था ‡ लौकिक के कामों में चतुर ॥ २७ ॥ § करुणा सहित ॥ सीधा १ निरन्तर सत्पुरुषों की संगति करनेवाला २ प्रताप ३ निर्बल और सबल को समान देखने वाला ॥ २८ ॥ एक दरिद्री ४ पण्डित ब्राह्मण ने क्रोध सहित शाप दिया कि यवनों का शीघ्र नाश होजावे यह सुनकर खानखाना ने कहा कि यहां पञ्चमी विभक्ति का ५ समास होवे (अर्थात् तुमने षष्ठी विभक्ति के समास से शाप दिया है कि म्लेच्छों का नाश होवे यहां पंचमी विभक्ति का समास होवे अर्थात् "म्लेच्छों से नाश होवे" व्याकरण का कायदा है कि समास में विभक्ति का लोप होजाता है) ॥ २९ ॥ नवाब ने वह पगड़ी लेकर ६ अपने मस्तक पर बांध ली ॥ ३० ॥ ७ लक्ष्मी और ८ सरस्वती को एक घर में मिलाकर उस ब्राह्मण को ९ धनवान् कर दिया १० एक धनवान् की स्त्री, अवस्था और ११ कामदेव से अन्ध थी उसने १२ उस श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाले खानखाना को जाते देखा ॥ ३१ ॥ १३ जोबन में मस्त होने के कारण लज्जा को तोड़कर १४ होने १५ उस व्यभिचार के अनुकूल ॥ ३२ ॥

बलि बुल्ल्यो बुल्ल्योक्यों बिकाल[1], बुल्ली वह तुम सम लहन[2] बाल।
आधानहि[3] संसय१कहिय आप, बलि है सुताहु२बिथरैं बिलाप ३३
है सुत हु मरैं३अल्पायु[4] होइ, खल है४तो प्रत्युत[5] हृदयखाइ ॥
अरु व्यंग[6] हेहु५सुख देन ऐन, है मूढ६तोहु मनकाम है न ॥ ३४ ॥
हायन[7] इतके मम७तुल्य होन, कायहु रहै न८ तो लखहिं कोन ॥
तातैं तू जननी१मैं तनूज२, सासन सिर वहिहौं कृत सुपूज ॥ ३५ ॥
सुत गेह पधारहु जो सुहात१, मैं वा मिलिजैहौं नित्य२ मात ॥
इम कहि लगात निज मुख उरोज[9], मिटिगो व्रीडाँ[10] करि तस मनोज[11] ३६
कर[12] जोरि प्रनमि तवतैं सनेह, आजन्म[13] गिनी तिहिं माइ एह ॥
अरु लोटि सीसकरि तास अंक, आयो पहिले१घर वह असंक ।३७।
स्मर[14]१पारत२जारत इहिं समान, प्रभु राम२०३१४न जोगी मति प्रमान
इहिं१तजिय बिजन[15] तिय सेज्ज आइ२, जोगी२दृग मुंदि१रु बनहु जाइ३८
मोलविन१द्विज२न कहुं ओड[16] माँहिं, अक्खिय गुन निजनिज महतआँहिं
मध्यस्थ नवाबहि द्विजन मंडि, खत लिय कराइ मत पग्न खंडि ।३९।
यह लिपि नवाब किय कृष्ण अंत[17], मैं जानत इकसन इक महंत
वंसी बिभूषित[18]आदिक बनाइ, दिय मुख्य हरि१रु संस्कृत२दिखाइ ।४०।

१ मुझको विना समय क्यों बुलाया. तुम्हारे समान बालक २ लेने के लिये अर्थात् तुम से सम्भोग करने में तुम्हारे सदृश ही बालक होवेगा. खानखाना ने कहा कि प्रथम तो ३ गर्भ रहने में ही सन्देह है और जो गर्भ रहकर पुत्री हुई तो अधिक विलाप होवेगा ॥ ३३ ॥ पुत्र होकर ४ थोड़ी अवस्था में मरजावे तो भी दुःख है, और दुष्ट होवे तो ५ उलटा हृदय खावेगा. घर में सुख देने में ६ व्यंगवाला अर्थात् दुःख देनेवाला ॥ ३४ ॥ मैं जितने ७ वर्ष में हुआ हूं उतने ही वर्षों में मेरे समान होसक्ता है जब तक तू जीवित ही नहीं रही तो कौन देखेगा इसकारण तू माता और मैं तेरा ८ पुत्र हूं सो तेरी आज्ञा मस्तक पर धारण करूंगा ॥ ३५ ॥ ९ स्तन के मुख लगाते ही १० उस लज्जा से. उसका ११ कामदेव मिटगया ॥ ३६ ॥ १२ हाथ जोड़कर १३ जन्म पर्यन्त ॥ ३७ ॥ १४ कामदेव को १५ एकान्त में ॥ ३८ ॥ मोलवियों ने और ब्राह्मणों ने कुछ १६ आड में अपने अपने गुणों को बडे बताए जहां पण्डितों ने इस नवाब को मध्यस्थ किया और मोलवियों के मत को खण्डन करके विजय पत्र लिखवा लिया ॥ ३९ ॥ १७ अन्त में कृष्ण को मुख्य बताकर यह लेख किया. १८ वंशी आदि से भूषण युक्त करके विष्णु और संस्कृत को मुख्य दिखाया ॥ ४० ॥

छितितल[1] वसंततिलका सु छंद, अज्जहुँ[2] वढात भक्तन अनंद ॥
सुरवानि[3]१जवनवानि२रू हुँ२सीर३, बरनें[4] बहु इँति[5]१मुख जिहिं प्रवीर ४१
इक कहिय अरि१न अपकार२अप्पिं[6],थिर मित्रजन१न उपकार२थप्पि
वंधु१न सतकार२हि तिम बनाइ, प्रँख्यात[7] होत अधिकार पाइ ।४२।
इहिं[8] विहसि कहिय तजि फल उमंग, सोहत उपकारहि सवन संग ॥
ऐंसो नवाव यह बुध बजीर, वहरामतनय हत अँनय[9] वीर ॥ ४३ ॥
सुनि वांद[10] संसकृत काव्यसीस, त्रि३००००० रहित दिय रुप्पय ल-
क्खतास २७००००० ॥

प्रभु जैसो अकबर३७१पातसाह१, तैसोहि सचिव२किय दैव ताह ४४
इक सेख जवनमत निपुन आस, जग अबुलफजल३फुट नाम जास
अकबर३७१सों तीजो३रत्न एह, छमें[11] सर्व सोलविन मति अछेह ४५
आईनअकबरी१ग्रंथ आदि, तिहिं रचिय जवनवानीं[12] विवादि[13] ॥
पुनि अज्जनके[14] दफतर२प्रबंध३, वहु किय जवनानी[15] लेख वंध ।४६।
प्रबंध १ खबंध २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अरु टोडरमल्ल४हु पटु अलभ्य, सु वनिक हुव चोथो४रत्न सभ्यं[16] ४७
जासहि सहाय तिहिं सेख३जात, विरची निजलिपिमैंय[17] अज्ज वात ॥
छमें[18] कान्यकुब्ज वंच फुरन[19] छिप्र, वीरबल१ रत्न पंचम५सु विप्र ॥४८॥
इम रत्न अपूरव गानऐंनें[20], समुझहु नृप छठ्ठो ६ तानसैन६ ॥

१ भूतल पर इस खानखाना का बनाया हुआ वसंततिलका छंद २ आज भी ३ संस्कृत ४ दोनों मिलीहुई भाषा ५ इत्यादि ॥ ४१ ॥ किसी एक ने कहा कि शत्रुओं को अपकार ६ देकर मित्रों का उपकार करना चाहिए ७ विख्यात ॥ ४२ ॥ ८ इस नवाव ने हँसकर कहा कि पीछा फल लेने की आशा छोडकर सब के साथ उपकार ही करना चाहिये ९ अनीति को मिटानेवाला ॥ ४३ ॥ १० भाट ॥ ४४ ॥ ११ लक्ष्मी कुंनवा के समान ॥ ४५ ॥ १२ फारसी भाषामें १३ विशेष कथन करनेवाला होकर; अथवा वाद रहित १४ आर्यों के दफतर ग्रंथ १५ फारसी में लेख वंध किये ॥ ४६ ॥ १६ सभासद ॥ ४७ ॥ जिस टोडरमल्ल की सहायता से इस अबुलफजल ने अपनी १७ भाषा में आर्यों की वार्ता (कृषि वाणिज्य आदि का ग्रंथ) रची १८ समर्थ १९ वचन की शीघ्र स्फुरणा में ॥ ४८ ॥ २० गान के स्थान में

इन[3] साह१सचिव खट६रत्न अत्थ, ए तिहिँ अनेह सुनियत समत्थ ४९
रत्न नव९ कहत कति नृपतिराम[2] २०३१४, न विदित तँहँ तीन३न
खिल्लन[3] नाम ॥
इह चोथो४टोडरमल्ल४आहि, जन कति कायस्थहु कहत जाहि ॥५०॥
तिम साह पुव्वँ[4] वितये छतीस३६, अकबर३७१ सम तिनविच न
हुव ईस ॥
अरु श्रुति[5] १ कुरान २ मत जुग२ हि एह, सिरधरहिँ तदपि इत[6] १
अति सनेह ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

बहुत न्याय इतरन विसम, सुमति निवेरे साह१ ॥
उदधि खानखानाँ१ हु इम, थाहे दुगम[8] अथाह ॥ ५२ ॥
मुलक किते जित्तन१ मथन२, मन्न्यों समुचित मान ॥
जिहिँ कावल१ आसाम२ जिम, थिर दव्व बहु थान ॥ ५३ ॥
अज्जन[10] विच कूरम यहहि, गिन्यों भरोसा गैल[11] ॥
हुरसँ[12] अनुजके विदित हुव, फोजनवारे फैल ॥ ५४ ॥
भगिनी कति भगवंतकी, नृपति मानकी नाँहिँ ॥
व्याह्यो अकबर३७१ जो वदत[13], मति तँहँ द्वापर[14]माँहिँ ॥ ५५ ॥
बल रहहु तिम जिम बनी, चायकै[15] हमहिँ न अत्थ ॥
निर्मूलहि[16] जन जो बदत, सो न लिखहिँ हठ सत्थ ॥ ५६ ॥
अकबर ३७१ सो दिल्ली अयनँ[17], न इक १ भयो जवनेस ॥
सहित समर्थन प्रभु सुनहु, अग्ग किरँन[18] विच ओस ॥ ५७ ॥

---

१ उस अकबर के समय में ॥ ४९ ॥ २ हे राजा रामसिंह ३ बाकी के तीन रत्नों के नाम प्रसिद्ध नहीं हैं ॥ ५० ॥ ४ अकबर से पहिले छत्तीस बादशाह बीतगये ५ वेद ६ वेद से अधिक स्नेह था ॥ ५१ ॥ ७ उलटे ८ दुर्गम ॥ ५२ ॥ ९ राजा मानसिंह को उचित माना ॥ ५३ ॥ १० आर्यों में. भरोसा के ११ साथ १२ हुरसी का छोटा भाई ॥ ५४ ॥ १३ कहते हैं. ग्रंथकर्ता कहते हैं कि हमारी मति में यहां १४ सन्देह है ॥ ५५ ॥ १५ इसको हठ नहीं है १६ निर्मूल कहानी को नहीं लिखते हैं ॥ ५६ ॥ दिल्ली के १७ घर में १८ अगले मयूख में उस का समर्थन करते हैं सो सुनो

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोज चरित्रे भोजस्यकच्छप्रान्तप्राप्तिहेतुमकच्छविजयोत्तरदिल्लीगमन १, यवनेन्द्राकबरसचिवखानखानागुणवर्णनेन सहाकबरपरिषत्षड्रत्नगणन२, अकबरगुणवर्णनेन सह गुणसमर्थनप्रतिज्ञाकरणं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितोऽष्टनवत्युत्तरशततमः १९८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पातसाह अकबर ३७।१ प्रतिभ, न भयो दिल्लियनैर ॥
कितहु राम२०३।४ प्रभु स्वीय कवि, बंधैं प्रीति१ न बैर२ ।१।
तथ्य न व्है कथितव्य तो, अप्पहिँ ध्रुवँ अवनीस ॥
कबहु सुकवि अनृत न कहत, सहत जदपि दुख सीस ॥ २ ॥
यह प्रभुसंगतिको असर, पायो निज रहि पास ॥
तथ्य१हि प्रिय लग्गत तिनहिँ, अनृत२करि न असुँ आस ॥३॥
बैठे रजियाँ५।२हेम३८।२बिनु, तखतहु साह छतीस३६ ॥
लखहु हुमायों३६।१अवधिलग, अकबर३७।१सम को ईस ॥४॥

॥ पद्धतिका ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में भोज के चरित्र में भोज को कच्छ का प्रान्त मिलने के कारण कच्छ विजय करके भोज का दिल्ली जाना १ बादशाह अकबर के सचिव खानखाना के गुण वर्णन के साथ अकबर के सभासदों में छः रत्नों की गणना करना २ अकबर के गुण कथन के साथ गुणों के समर्थन की प्रतिज्ञा का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ अठानवे १९८ मयूख हुए ॥

१ सदृश २ हे राजा रामसिंह आपका कवि (सूर्यमल्ल) किसीके साथ प्रीति और वैर नहीं रखता किंतु जो इतिहास सत्य होवे वही लिखता है ॥ १ ॥ कहने की वार्ता ३ सत्य नहीं होवे तो हे राजा रामसिंह ४ निश्चय ही. आपका कवि ५ झूठ नहीं कहता ॥२॥ झूठ बोलकर ६ प्राण की आशा रखना भी अच्छा नहीं लगता ॥३॥ ७रजिया बेगम और हेमू बनिया इन दोनों के बिना ॥४॥

सप्तम७कह्यो जु महमूद७साह, तेवीसम२३सय्यद खिजर२३ताह।
बिरले हुव इतिमुख्ख[1] नय निबाहि, सुख दिय प्रजाहिँ जिन धर्म साँहि[2] ॥
इक्कदसम११अलाउद्दीन११आदि, बढिगय काति निर्दय जुलम बादि।
निर्लज्ज१प्रमत्त२हु कछु सनाम, रैमनी[3]१मदिरा१रत सुनहु राम
२०३।४ ॥ ६ ॥

हुव चोथो४रुक्नुद्दीन४।१हाइ, लज्जा तजि तिय१मधु[4]२हिय लगाइ।
अंतहपुर[5] रहि जड जाम[6] अट्ठ, रंचहु[7] न सम्हारे रज्ज[8]१रट्ठ[9]२ ॥७॥
रजिया५।१तस भगिनी तब रिसाइ, इहिँ कीलि[10] रु बैठी तख्त आइ ॥
सब निज मिलाइ लहि साह सव्द, इहि भोगी दिल्लिय च्यारि अव्द।८।
यह जानि पठंनाको अधीस, सजिकैं दल आयो तास सीस ॥
अभिधान[11] जास अलतूनियाँ१सु, मन इत बढाइ पहुँच्यो मियाँसु ॥९॥
॥ नियाँसु१मियाँसु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
रजिया५।१हु समुह जुरि रचिय रारि, गहिलिय तिय तँहँ तिहिँ बल बिगारि ॥

तबही बनि प्रत्युत[12] नारि तास. आई इत पतिजुत पट्ट आस।१०।
ताको द्वितीय२बहराम५।२भ्रात, भगिनीसैं[13] जवन हनि खिल भगात ॥
डरघर रजिया१कहँ कैद डारि, साह सु हुव पंचम५।२सब सम्हारि ११
तस अग्रज रुक्नुद्दीन४।१ तत्थ, कारा[14] हि मर्‌यो कामुक[15] बिकत्थ[16] ।
बलि इमहि नवम९सठ कैकुबाद९।१, पायो सुरापैं[17]१कामुक२ प्रमादं[18] ॥ १२ ॥
तिहिँ इम प्रजाहु लखि संक तोरि, बहु हुव प्रमत्त घर मद्य बोरि।

---

१ इत्यादि. धर्म को २ पकड़कर ॥ ५ ॥ ३ स्त्री ॥ ६ ॥ ४ मद्य ५ जनाने में ६ आठों प्रहर ७ कुछ भी ८ राज्य के सात अंग "स्वाम्यमात्यौ पुरंराष्ट्रं कोशदण्डौ सुहृत्तथा॥ सप्त प्रकृतयो ह्येताः सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते" इति वरदातन्त्रे ॥ ९ राष्ट्र (देश) ॥ ७ ॥ १० कैद करके ॥ ८ ॥ ११ नाम ॥ ९ ॥ १२ उलटी उसीकी स्त्री बनकर ॥१०॥ १३ बहिन के पति को ॥११॥ १४ कैद में ही १५ कामी १६ नहीं कहने योग्य १७ मद्य पीने से १८ भूल अथवा आलस्य अथवा बावलापन ॥१२॥

मस्जिदनमैंहु छकि मद अमान, हुव रत[1] प्रसक्त[2] कारि तास हान १३
को निज१पर२परतहि दृग कलत्र[3], सुख दिय लगाइ आसव[4] अमत्र[5] ।
तेरहम१३मुबारिक१३।१तजि नरत्व१, वनितात्व[6] भरि समझ्यो वरत्व[7]२ ॥ १४ ॥
विस्त्र सु बनाइ पननारिवेस[8], सजिकैं पट१ भूखन२तिम असेस ॥
जुग बंधि अभीरन[10] गेहजाइ, बनि ठनि नचि१गावैं२न्हो[11] विहाइ १५
पंडत्व[12] हाव१भाव२न पसारि, मुरनैं[13] सगह लै राहमारि ॥
अरु बैठि[14] नग्रहिं खास१आम२, नासा१सह रक्खैं नपट२नाम ।१६।
पट्टप सु अलाउद्दीन११पुत्त, ऐसो हुव कुल मल जस अछुत्त ॥
पंद्रह१५मसुहुम्मद१५।१पातसाह, रच्यो[15] पुनि तुगलक३जुलम-राह ॥ १७ ॥
वीरत्व१संजम[16]२रु भक्ति३वार, यहदानी४पंडित५तदपि आसँ ॥
खल जिमहि तपियइहिं आलिफखान१५।१, किन्नी यह अनुचित धरहु कान ॥ १८ ॥
सूवा गत जित्तन स्वापतेय[18], लग्यो सु प्रजासिर डारि लेय ॥
अवनिपर[19] बढायो कर इतोक, जो देसकें न कर्षुक[20] जितोक १९
जन तबहि गेह१खल जान२जारि, सब भजनलगे जिय धन सम्हारि ॥
अप्पहि तब हैडुन[21] अस्वबार, सहँसन जन मारनमि सिकार ।२०।

---

१ मैथुन में २ आसक्त ॥ १३ ॥ ३ स्त्री दृष्टि में आते ही ४ मद्य का ५ पात्र (प्याला) ६ स्त्रीपन को ७ श्रेष्ठ समझा ॥ १४ ॥ ८ उस नकटे (नासिका विहीन) ने ९ गणिका का वेष १० अहीरों (गवालों) के घर जाकर ११ लज्जा छोड़कर ॥ १५ ॥ १२ नपुंसकपन के १३ बादशाहों के मार्ग को मिटाकर १४ काष्ठ के स्तम्भ के समान होकर; अथवा नासिका सहित होकर भी नाम मात्र को वस्त्र पास नहीं रखना अर्थात् नकटा मनुष्य तो लज्जा छोड़कर नग्न होजाता है परन्तु यह नासिका सहित होकर भी नग्न रहता था ॥ १६ ॥ जुलम के मार्ग में १५ रचा (रक्षा) ॥ १७ ॥ वीरपन और १६ इन्द्रियों का रोकना १७ हुआ ॥ १८ ॥ १८ धन १९ पृथ्वी पर हासिल इतना बढाया २० करसे (खेती करनेवाले) ॥ १९ ॥ शीघ्र २१ घोड़े पर बैठकर ॥ २० ॥

तिन्ह भजत गरीबन सीस तोरि, प्रति कपिसिरै[1] बंधे पोरिपोरि।
ऐसैं हि हुमायौं३१।१ काम अंध, बिरच्यो इकतीसम३१पहु प्रबंध २१
वर१जो नवं[2] निकस्यो मग हु व्याहि, तो भोगि प्रथम दिय बरनि[3] २ताहि ॥
करुनाको जस जिम लवनं[4] लाइ, चूगी पजाहु कर अति चलाइ २२
समुझायो सो जड सेरसाह३२, इक्ख्यो तब दुक्खहु वस्तुवाह।
इम पहिले साहन अति अधर्म, किय तिमहि सुनहु इतरहुँ[5] कुकर्म ॥ २३ ॥
पहिलैं अज्जन सुरगृह[6]१पराइ, लगवाये मस्जिद२प्रसभ[7] लाइ१ ॥
किय द्विज[8]१हु जवन२मुख थूकिथूकि२, कति जन वचेहु परि पयन कूकि३ ॥ २४ ॥
जिंजिया[9]१दि दंड तिनपर जुराइ, महसूल लये बहु४नय[10] सुगाइ।
दधि१दुग्ध२दारु[11]३तृन४आदि दम्म, कटकन[12] दये न कहुँ अटन[13] कम्म५ ॥ २५ ॥
खिन रन केते संपन्न[14] खेत, कटवाइदये किल[15] हयनहेत६ ॥
सुंदरपन ह्वै बो तियनसंग, तब हुव कलंक७रहि धर्म तंग ॥ २६ ॥
लग्गे जे दुहितां[16] नृपन लेन, इतरन किम टारे गिनहु ऐनं[17]८ ॥
जिन कियहु रोधं[18] दुहिता१दि जान, तोप१नजुत लिय तिन्ह सवन प्रान९ ॥ २७ ॥

---

१ कोट के कांगरे कांगरे पर ॥ २१ ॥ २ नवीन वर जो कोई विवाह करके मार्ग में निकला ३ दुलहन ४ लेशमात्र ॥ २२ ॥ ५ अन्य भी ॥ २३ ॥ ६ आर्यों के देव मन्दिर गिरवाकर ७ हठ करके ८ ब्राह्मणों के मुख में थूक थूककर ॥ २४ ॥ ९ आर्यों के तीर्थों पर एक प्रकार की लागत १० नीति मिटाकर ११ काष्ट १२ काटनेवाले को १३ फिरने नहीं दिये ॥ २५ ॥ १४ युद्ध के समय में तो खेती से भरे हुए खेत १५ निश्चय ही घोड़ों के लिये कटवादिये ॥ २६ ॥ १६ जो राजाओं से पुत्रियें लेने लगे वे अन्य के १७ घरों को कैसे छोड़ें १८ पुत्री देने को रोका ॥ २७ ॥

मनजहु भय दैदै बिष्टि[1] माँहिं, निखिलन गहि प्रेरे[10] नाँहिंनाँहिं[2]।
थाँती[3] मित लैले सिपह थट्ट, बिलु भय चले न कहुँ पथिक[4]
वट्ट[11] ॥ २८ ॥
तोहु तिन धाँटिन[5] पटकि त्रास, बहु खिन लगि लुट्टे[12] हनि बिसास।
लानत[6] कलंक तिनके हु लग्ग, अकबर[2][3][7][1]के तुल्य न कोहु
अग्ग ॥ २९ ॥
प्रभु एह सवन अपजस पखाँरि[7], जन सुखित करतहुव दुखहिं
जारि ॥
सुनिये जिहिं बिहरन करन[8] सर्म्म, सक मीर लखे जन बिठि[9] कम्म ३०
बिरचन[10] कुंकुम चयं तिन्ह बिसासि, मानिक बसु करिदिय
भासि[11] मासि[12] ॥
पै जे लखे न आजू प्रसक्त[13], वे अवस रहे व्है दुक्खयुक्त[14] ॥३१॥
जिहिं नीति रीति राज्यहिं जमाइ[2], लिय प्रीतिरीति सब हृदय लाइ[3]।
हुव द्विजन कल्पतरु बुध[15] यहै[4]हि, कविलोक अबहु तस जस
कहैंहि ॥ ३२ ॥
लखिये सु संजमीपलहु[16] लैन[5], बलि रविपूजन रत[6] सबल बैन[7]।
आदित्यवार दिन सीस अंत, हिंसा न होनदिय जिहिं[8] महंत ।३३।

---

१ बेगार (बिना तनख्वा दिये बलात्कार कार्य कराने) में २ वहां नाहीं की भी नाहीं रही अर्थात् बेगार कराने का नाम भी न रहा ३ धरोहर (अमानत अर्थात् सौंपाहुआ धन) ४ मार्ग चलनेवाले ॥ २८ ॥ ५ धाड़ा डालनेवालों ने ६ यह यवन भाषा का धिक्कार वाची शब्द है ॥२९॥ उनके अपयश को ७ धोकर, गमन करने के ८ समय में ९ बेगार के कार्य में मीरों को भी भय था अर्थात् कोई बेगार नहीं करा सकता था ॥ ३० ॥ केसर के १० समूह रचनेवाले अर्थात् केसर का तिलक करनेवाले (पुजारियों) को विश्वास देकर उनके माणिकों का धन कर दिया "सब रत्नों में माणिक बहु मूल्य हैं इससे माणिकों से धनवान होना लिखा है" ११ प्रकाशमान १२ मासिक (वेतन) तनखा कर दी १३ एक ओर आसक्त रहे अर्थात् बादशाह से दूर रहे वे १४ दुःख युक्त अवश्य रहे ॥ ३१ ॥ १५ पण्डित ॥ ३२ ॥ १६ मांस खाने में इन्द्रियों को रोकनेवाला ॥३३॥

प्रति अब्द[1] जन्मदिन स्मृतिप्रधान[2], देतो स्वतुल्य भर[3] कनकदान९
इक१बेर असन१हिंसा विहेय[4]११, धरतो सु जवन इक नामधेय[5]।३४।
चहती प्रजाहु जिहिं इक स्वचेत, हुव बहु तस छात्रहि[6]१२सुकहेत
जिहिं राज्य कबहु कछु दुक्खजोग, जान्यौं न जनन१३भरि
भौंन भोग ॥ ३५ ॥
सुमन[7]१न विक्रय बासठ्ठि६२सेर१४, जव२सेर नवति चउ जुत९४
न जेर[8]१५ ॥
इहिं राज्यकरत इम न कछु ईति[9], प्रकृतिन[10] कहुँ जानी आनि
प्रीति ॥ ३६ ॥
सीमा निज किय यह नियम साह, विनु तरुन व्हैन सिसु मि-
थुन[11]२०ब्याह१६ ॥
सूबा१७सरकार१८महाल१९सुद्ध, पटवारी२०कानूगो२१प्रबुद्ध[12] ३७
आईन[13] थप्पि ऐसे अनेक, इहिं रक्खे सब कुलधर्म एक१ ॥
प्रस्थान जास इसतबल[14] पास, इभ[15]१पंचसहँस५०००हय२अयु-
त१००००आस ॥ ३८ ॥
किंमखाब[16] फरस१प्रसरात कंति[17], परदे मखमलमय मुत्ति[18]२पंति३
परि कोसनलग डेरन प्रसार[19], हुव सघ्घ सिविर इम निज बिहार ३९।
जिजिया१दि जानि कर सबन सीस, पहिले प्रवृत्त[20] अटके इकीस२१ ॥

१ हरसाल २ आर्य्यों के धर्मशास्त्र को मुख्य मानकर अपने शरीर के ३ भार के बराबर स्वर्ण देता था, एक समय भोजन करता और हिंसा बहुत ४ त्याज्य थी. मुसलमानी एक ५ नाम ही धरता था ॥ ३४ ॥ ६ शिष्य ॥ ३५ ॥ ७ गेहूं. इससे ८ कम नहीं थे ९ कभी ईति (अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः। स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः) का भय नहीं हुआ १० राज्य के अङ्गों ने ॥ ३६ ॥ बालकों के ११ जोड़े का विवाह नहीं होवे १२ बहुत चतुर ॥ ३७ ॥ १३ कानून १४ जिसकी हय शाला के पास पांच हजार १५ हाथी और दस हजार घोड़ों का गमन होता था ॥ ३८ ॥ १६ जरी की बिछायत १७ कान्ति फैलाती थी १८ मोतियों की पङ्क्तिवाले १९ फैलाव ॥ ३९ ॥ पहिले २० जारी हुए जिजिया आदि कर रोके.

*महमूद इते२१ †अज्ज१हि स्वमत्थ, सहते सब हिंदू२२रहन सत्थ ४०
मन ‡सदय तिन्हैं अकबर३७।१मिटाइ, विश्वस्त करे सब भद्र भाइ।
ऐसे उदंत समुचित अनेक, अकबर३७।१हि करे प्रभु राम २०३।४एक ॥ ४१ ॥
पै अब हुरे हु जे किय प्रगल्भ, विख्यात असह विस्वास वल्भ।
तिन्ह देहु श्रवन जँहँ गुन१इतेक, तउ दवि वढत अवगुन२कितेक ॥ ४२ ॥
कूरमनृप कन्या पुब्ब काल, व्याह्यो जु तात तव हो सु वाल।
पै अबहु ताहि न बुरी प्रमानि, तिल चाहिय प्रत्युत प्रसभ तानि ४३
जोधपुर सूर भूपति जनी सु, कुल रट्ठोरन तारक कनी सु ॥
सुत निज सलेम३८।१के अर्थ साह, व्याही१करि अज्जन विधि विवाह ॥ ४४ ॥
सूरहु तस डोला आनि संग, मुगलेससुतहिं दिय छिति उमंग।
इतरहु बहुकुलजा सहठ आक्खि, रानी१न होनादिय हुरम२रक्खि ।४५।
भट्टी१सोढा२दिक बहु भुवाल, सक्कतहुव हुकम सु जदपि साल ॥
जिहिं करि प्रवृत्त मीनाबजार, देखी नोरोजहु सवन दार३ ॥ ४६ ॥
निजदारन बनिठनि निकसि नारि, सब जे रहि ठेढ्ढे कुल बिसारि ॥
उमरा१गरीब२सबकोहि आइ, देती तिहिं उपदा नति दिखाइ ॥४७॥
अतिरूप जु होती ताहि अप्प, वसु दे रु बुलातो४ जिम स्व बप्प ॥

---

* महमूद के मत की इक्कीस लागतें † आर्य्य लोक अपने मस्तक पर सहते थे ॥ ४० ॥ ‡ अकबर ने दया सहित उन लागतों को मिटा दीं. कल्याण करने की रीति से सब को १ विश्वास युक्त किये २ वृत्तान्त ॥ ४१ ॥ ३ उस बुद्धिमान् ने नहीं सहने योग्य बुरे कार्य किये थे विश्वास के ४वल्लभ अर्थात् मानने योग्य सुनो ॥ ४२ ॥ ५ पहिले समय में ६ पिता ने ७ उलटा हठ फैलाकर ॥४३॥ ८ सूरसिंह की पुत्री ९ कन्या १० आर्य्यों की रीति से ॥ ४४ ॥ ११ राजाओं को नहीं विवाहने दी ॥ ४५ ॥ १२ राजा १३ सबकी स्त्रियों को देखी ॥ ४६ ॥ १४ खड़े रहे १५ उमराव १६ नजर ॥ ४७॥ १७ आप १८ धन देकर १९ जिसप्रकार इसका पिता हुमायों बुलाता था तिस प्रकार

करतो परंतु यह *पिहितकर्म, †किंते कहत धरयो नन जारधर्म ।४८।
मीनाँबाजारहि इक्क मंडि, छवि लखि खुस होतो कुमग छंडि ॥
सो पुनि निज ‡गुरुजन स्मृति समीप, मुंडित करवातो सब महीप ।४९।
§इतिमुख छुरेहु कछुकछु उदंत, सुनिये प्रभु तासहु बदत संत ॥
नोरोज१रु डोला२द्वै२अनीति, राजनलग प्रेरी असह रीति ॥ ५० ॥
पै करि प्रजाहिँ बहुविधि प्रसन्न, बसलग चहीं न दारिद ¶ विपन्न॥
जो राज्य इक्क१सासन जमाइ, प्रतप्यो समस्तासिर वाह पाइ ॥५१॥
सिरक्कसहु सुन्यौँ जिततित जुसाह, सुहि कियउ नम्रसुभट१रु सिपाह
इहिँसमय सिरोहीवत्त एह, समुझहु हुव [१]अनुचित [२]हंत सनेह ॥ ५२ ॥
सुरतान करत जहँ राज्य सूर, पै बय [३]किसोर [४]सारल्यपूर ॥
चहुवान देवरा९धर्मचार, रक्खैँ रन१[५]बितरन२नहिँ नकार ॥ ५३ ॥
तासहि सगोत्र भट बिजय तत्थ,सचिव सु हुव धन१व्यय२मद समत्थ॥
सब [६]प्रकृति गंजिभोगत असंक, आनैँन स्वामि भय [७]मत्तअंक ।५४।
कालिंदीनामक द्रंगकेर, स्वामी सु बिजय हुव सबन सेर ॥
मुखपर न केस तउ बल महान,मन्नैँ खिल सुभटन [८]मसकमान ५५
संबंध स्वामि१को निजसमेत, कहुँ भिन्नगोत्र [९]बाहुज२[१०]निकेत ॥
जिहिँ किय बहिनीजुग२सुनि सुरूप, भलव्याहन अप्प१रु अप्प भूप२
बलि लग्न गये [११]परिनय बिचारि, [१२]परिसर मिलान दिय समय पारि
[१३]अनुजा१सन प्रभु२संबंध आनि, जेठी१सन निज किय [१४]विजय२जानि

*छाने †कितने ही कहते हैं कि इसने व्यभिचार नहीं किया ॥४८॥‡ अपने बडे लोकों के मरने पर सब राजा लोकों को मुंडन कराता था ॥४९॥ §इत्यादि ॥५०॥ ¶ आपदा (कष्ट) ॥ ५१ ॥ १ अनम्र २ स्नेह का नाश करनेवाली ॥ ५२ ॥ ३ बालक ४ सीधा ५ दान में ॥ ५३ ॥ ६ राज्य के सब अङ्गों को दबाकर ७ मस्तपन के चिन्ह से ॥ ५४ ॥ उसके मुख पर बाल नहीं था तो भी बडे बल से ८ मच्छर के समान ॥ ५५ ॥ ९ क्षत्रिय के १० घर में किया ॥ ५६ ॥ ११ विवाह के विचार से १२ ग्राम के समीप की भूमि में मुकाम किया १३ छोटी बहिन से राजा का और बडी से १४ विजयसिंह ने जानकर अपना सम्बन्ध किया था ॥ ५७ ॥

उततैं हुव सचिवहिं विदित उक्त, जेठी१कुरूप लघु२रूपजुक्त ॥
गादिपठैई तब तिहिं स्वसुरगेह, हमरो लघुवहिनी२सौं सनेह ।५८।
सुनि जान्यौं तिन एहहि समर्थ, अनुजा२तब व्याही विजयअर्थ ॥
जेठी१सुरतानहि सिचय जोरि, पहिलैं तिन व्याहिय सुख्य पोरि॥५९॥
दिन चोथे४मिलतहि ऊँढ दार, वरन्यौं पति नृपमति छल विथार॥
चेल निज १ जुस्यो प्रभु अप्प चेल २, मम भाग्य उदित सुभ कर्म मेल ॥ ६० ॥

पै प्रभु प्रधान कपटिन प्रधान, किय अति अधर्म सुहु धरहु कान
जेठी १ मैं भगिनी विजय जत्थ, अनुजा २ मम ही प्रभु अप्प अत्थ ॥ ६१ ॥

पै सुनि सुरूप अनुजा प्रधान, इम सोहि वरी सठ दर्पवान ॥
मैं अति प्रसन्न हुव इम महीप, पति पैंत देवर९न वंस दीप ।६२।
पै निज प्रमत्तपन असह पिक्खि, समुझहु नरेस नय अवहु सिक्खि
अप्पहि किसोरवय जानि एह, समुझयोमैं प्रभुजिम प्रभु सनेह ।६३।
यातैं तिहिं संगी मैं १ सु अप्प, दै तुमहिं वरी अनुजा२सदर्प ॥
अस्सहु अधीस १ को को अधीन२, लखि नय न होहु आलस्यलीन ॥ ६४ ॥

नृपतिन प्रभुताविनु है न नाम, अटकी सुहि अप्पन विजय वामैं
कुल जदपि वाहुज१न व्है २ किसोर, तोहू नृप न तजत नृपन तोरैं ॥ ६५ ॥

सचिव को १ मालूम हुआ कि २ कहला भेजा ॥ ५८ ॥ ३ वस्त्र जोड़ा अर्थात् गठ जोड़ा लगाकर ४ मुख्य द्वार पर ॥ ५९ ॥ ५ दुलहन ने ६ वस्त्र ॥ ६० ॥ ७ आपका प्रधान कपटियों में प्रधान (मुख्य) है. विजयसिंह है ८जहां अर्थात् मुझ वडी वहिन का सम्बन्ध विजयसिंह के साथ हुआ था. मेरी छोटी वहिन आपके ९लिये थी ॥ ६१ ॥ देवड़ा के पति के यहां १० पहुंची ॥६२॥ ११ अपने प्रमत्त पन से ॥६३॥ १२ घमण्ड सहित, हे स्वामि आपके अधीन कौन कौन है ॥६४॥ विजयसिंह ने १३विरुद्ध होकर १४ क्षत्रियों के कुल में १५प्रताप ॥ ६५ ॥

अक्खते[1] मैं यहहु न अबहि अप्प, दलि याहि राज्य विलसहु सदप्प ॥
पै अक्खत यह रहि सब प्रजाप[2], प्रभु सक्ति धरहु नन वजहु पाप ॥ ६६ ॥

सुनि यह गहि अमरख सं[3]भरीक, पिक्खे समर्थ तस प्रत्य[4]नीक
इक आनमाँहिं सुरतानईस, सो गिनतहुतो खिल भ[5]र स्वसीस।६७।
निज भटन कल्प[6] यह सुनि निहारि, इक १ निम्मदेव बुल्लयो विचारि ॥
याकै हे बिधिकारि कर अलं[7]ब, सो नर्म[8] करतहो सचिव संब[9] ।६८।
अँचन असि परिहै कबहु कम्म, अँचहुगे कैसैं तव अ[10]सम्म ॥
नृ[11]प बिजन बुल्लि वह निम्मदेव, अक्खिय प्र[12]गल्भ हुव विजय एव ॥ ६९ ॥

मेरीहु कानि न करत प्रमान, मानत बली न कहु मोसमान ॥
रक्खैं जु राज्यमुद्रा मदीय[13], तिहिं छिन्नि गंजि बल मद तदीय[14] ।७०।
कै दुष्ट हनहु १ कै देहु कढ्ढि२, बैठारहु कारा[15]३ कैन[16] वढ्ढि ॥
चेताइ स्वभट सब भोरि चेत, पठयो इम निम्म सु बलउपेत[17] ।७१।
गरदाइ[18] विजय तिहिं तबहि गेल, डारयो डर चटकन[19] मनहु डैल[20]
जंपिय तू कहतो बिजय जत्थ, असि कैसैं गहिहैं लरन अत्थ ।७२।
सुहि निम्म मैंहु लघुकर सलज्ज, असि अँचन१वाहन लखहु अज्ज

मेरा १कहना २ प्रजा के पति ॥ ६६ ॥ ३ चहुवाण ४ उसके शत्रुओं को ५ आण के विना बाकी का ५ भार अपने मस्तक पर जानता था ॥६७॥ अपने उमरावों के ६समूह को ७नीमदेव के हाथ छोटे थे ८ हँसी किया करता था ९ वज्र के समान ॥ ६८ ॥ १० समानता रहित ११ राजा ने उस निम्मदेव को एकान्त में बुलाया १२ विजयसिंह धीठ होगया है ॥ ६९ ॥ राज्य की १३मेरी छाप १४ उसके मद को ॥ ७० ॥ १५ कैद में १६ मारने के लिये १७ सेना सहित ॥ ७१ ॥ १८घेरकर १९चिड़ियों में मानों २० ढेला (ढकल) डाला ॥ ७२ ॥

सुरतानभूप भाखत सकोप, अब बचहु अप्पि मुद्रा१रु ओप२ । ७३ ।
दव्व्यो सु अचानक इम दिखाइ, जिम रन तदीय मद विफल जाइ।
मुद्रा लहि तालन स्व बल मंडि, छमँ निम्म१अछम दिय बिज-
य२छंडि ॥ ७४ ॥
नृप देत गहन१मारन२निदेस, असुँ देत तदपि मैं निम्म एस।
भुल्लहु उपकार न बचहु भज्जि, सीमा हु न प्रविसहु बहुरि सज्जि७५
लघु कर मम कहता त लखेहि, असुँ दै भजात अब तोहि एहि।
अरु कतिक रहे तव ढिग अजान, भट तेहु मुरहु इत भूपमान।७६।
विजय१हिं भजाइ इम खिल विसासि, रहि निम्म२सचिव वी-
रत्वरासि ॥
सुरतान१हुकम बहि सतत सीस, आजन्म गिन्यौं निम्म२सु
अधीस ॥ ७७ ॥
पापी भजि तियजुत रानपास, विजय सु हुव आश्रित लहि
विसास ॥
तव हो प्रताप१वा अमर२तत्थँ, सहि विपिनँवास आपत्तिसत्थ।७८।
तिहिं रान अन्न वटि ढँव्वि ताहि, स्व सरन गिनि रक्ख्यो प-
द समाँहि ॥
बहुवेर पिछ्छि वह डमरपात, अर्बुदभुव आयो मद अघात ॥७९॥
तवतवहि निम्म भिरि मद उतारि, पठयो सु विजय श्रम मोघँ पारि।
पै डरत सिंगदीकी प्रजासु, आई ढिग पुनिपुनि कुक्कि आसुँ।८०।
सुरतान१विजय२लखि लखि समीप, मत दूर भजावन गिनि महीप॥

छाप और सचिव पन की यह १शोभा देकर बचो ॥७३॥ २उसका ३छाप ४समर्थ निम्मदेव ने उस असमर्थ विजयसिंह को छोडदिया ॥७४॥ मैं तुम्हारा ५प्राण देता हूं।७५। ६ मेरे छोटे हाथ कहता था सो देखो. येही हाथ तुझको ७प्राण देकर भगाते हैं ॥७६॥ ८वीरता का समूह ९निरन्तर ॥७७॥ १०तहां पर राणा प्रतापसिंह था अथवा अमरसिंह था ११वनवास ॥७८॥ १२ठहराकर १३अपने पद को ग्रहण करके अर्थात् शीशोदिया की शरणाई लाचार कहते हैं इस पद को ग्रहण करके १४ भाड़े डालकर १५ पद से तृप्त ॥ ७९ ॥ १६ निरर्थक करके १७ शीघ्र ॥ ८० ॥

पिक्खी यह रानहु सहि बिपत्ति, प्रेरत्त इम बिजयहिँ ज-
दपि पेत्ति ॥ ८१ ॥

॥ बिपत्ति१पिपत्ति२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

प्रेरहिँ उपाय ऐसो प्रमानि, जिम रान बिडारहिँ अधमजानि ॥
इम मंडि उपव्हर मंत्रआप, पठयो इक चारन रहि अपाप ।८२।
कछु छल तिहिँ बिजय सु दिय कढाइ, पुनि पाइ इत१हु वंसु
उत२हु पाइ ॥
इत बिजय गिनी ए भूपअँज्ज, लखि माँहिंमाँहिं सगपन सलज्ज। ८३ ।
सुरतान १ कानि तिम न मम संग, इम अखिल चहत कछु
भय अभंग ॥
सबको गुरु यातैँ सेइ साह, पुनि दुहुँ२न दहाँ लहि बल सि-
पाह ॥ ८४ ॥
इम गिनि गो दिल्लिय बिजय एह, सवरीति कह्यो अकवर३७।
१सनेह ॥
बुल्ल्यो कहि सीसोद१न बिराह, रठोर२ कुम्भ ३ बलि याहि
राह ॥ ८५ ॥

बिराह १ हिराह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भिन्न कति१कतिक अप्पहिँ भुलाइ, निज पन दिखात छलि
स्व सिर नाइ२ ॥
पै आइ करत ठगमत प्रनाम, बिक्खहु तिनको मन कपट बाँ-
म ॥ ८६ ॥
लघु राज्य सिरोही अल्प लाह, सोहू न गिनत प्रभु तुमहिँ साह ॥
अब स्वामि मोहि भेजहु उदग्ग, मद मारि करौं सुरतानमग्ग ।८७।

१पैदल ॥ ८१ ॥ २ जिसकारण से ३ निकाल देवें ४ एकान्त में ॥ ८२ ॥ ५ धन ६ आर्य्य राजा हैं ७ परस्पर ॥ ८३ ॥ राणा को जैसी सुरतांण की ८ कांण है ऐसी मेरी नहीं है ॥ ८४ ॥ ९ कुमार्ग ॥ ८५ ॥ १० आप को भूलकर ११ देखो १२ विरुद्ध है ॥ ८६ ॥ १३ लाभ १४ उदग्र ॥ ८७ ॥

॥ दोहा ॥

दे कछु [1]दल साहहिं विदित, भेजहु साह अभीत ॥
जो करि आऊँ विजय जब, [2]पिक्खहु विजय प्रतीत ॥ ८८ ॥
बुल्लि मीरबख्सी तबहि, सासन इम दिय साह ॥
कहत विजय जिमतिम करहु, [3]रोकत लघु नृप राह ॥ ८९ ॥
कछु दल इम इहिं अरज करि, दिय तस संग [4]दुरूह ॥
गढ सिरोहि विजय सु गयो, जित्तन प्रभु दल [5]जूह ॥ ९० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठ६राशौ बुन्दीशभोजचरित्रेऽकबरभूतपूर्वदिल्लीशपट्त्रिंशद्यवनेन्द्रदुर्गुणगणन १ अकबरगुणवर्णनानन्तरतद्दुर्गुणभणन २ सीरोहीपरावदेवडासुरतांणस्वसचिवविजयसिंहानीतिनिमित्ततन्निष्कासनोत्तरनिम्बदेवप्रधानामात्यकरण ३ कियत्कालपर्यन्तलब्धोदयपुरमहाराणाश्रयदेवडाविजयसिंहयवनेन्द्राकबरान्तिकगमनयवनेन्द्रचमूसहितविजयसिंहसीरोहीविजयार्थयानवर्णनं षोडशो मयूखः ॥ १६ ॥ आदितो नवनवत्युत्तरशततमः ॥ १९९ ॥

॥ प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

---

१ सेना २ देखो विजयसिंह की प्रतीति ॥ ८८ ॥ ३ छोटे राजा भी मार्ग रोकते हैं ॥ ८९ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी. सेना के ५ समूह से ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के नृपति भोज के चरित्र में अकबर से पहिले हुए दिल्ली के छत्तीस बादशाहों के अवगुणों की गणना १ अकबर के गुण वर्णन करने के अनन्तर उसके कुछ अवगुणों का कथन २ सीरोही के राव देवड़ा सुरतांण का अपने मन्त्री विजयसिंह की अनीति के कारण उसको निकालकर निम्बदेव को प्रधान करना ३ कुछ समय पर्यन्त उदयपुर के महाराणा से आश्रय पाए हुए देवड़ा विजय का बादशाह अकबर के समीप जाकर बादशाही सेना के साथ विजयसिंह का सीरोही विजय करने को जाने के वर्णन का सोलहवां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ निन्यानवे १९९ मयूख हुए ॥

बनि अकबर३७१४बल कारि प्रवल, बिजैय देवरा१वीर ॥
चल्यो सिरोही लैन चहि, गहि सुरतान गँहीर ॥ १ ॥
तीजो३रान प्रतापतैं, जु हुव अनुज जगमाल३ ॥
हो अकबर३७१४आश्रित बहहु, संग दिय सु रिपु साल ॥२॥
सगतासिंह१अग्रज उपम, रानहिँ यहहु टराइ ॥
गढ सिरोहि जगमाल गो, ढिग दिय सिबिर ठराइ ॥ ३ ॥
महडू चारन नाम करि, जड्डै१रु सह जगमाल२ ॥
रहत बँढ मैत्री रचे, चिरतैं इक१मन चाल ॥ ४ ॥
जगमाल१सु कवि जड्डु२जुत, बिजैय५वीर इम बीर ॥

१ विजयसिंह देवड़ा २ गम्भीर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ जाडा नामक ४ बहुत मित्रता करके ॥ ४ ॥ ५ ※ विजयसिंह की सहाय ॥ ५ ॥

※ यहां बिजादेवड़ा के साथ जगमाळ का जाना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि सिरोही के राव सुरताण और बिजादेवड़ा में परस्पर विरोध होने के कारण बीकानेर के राजा रायसिंह के द्वारा सिरोही का आधा राज्य बादशाह अकबर के खालसे में होगया था सो अकबर ने उदयपुर के महाराणा उदयसिंहके छोटे पुत्र जगमाळ को देदिया था जिस पर अमल करने के लिये बादशाही सेना सहित जगमाल सिरोही गया जिसके साथ बिजादेवड़ा भी था क्योंकि जगमाल ने बिजा की बेटी से विवाह किया था, सम्वत १६४० के कार्तिक सुदी ११ के दिन महाराज जगमाल और चारण जाडा महडू आदि वीरता से मारेगये सो सिरोही के इतिहास में विस्तार पूर्वक लिखा है और जगमाल का दिल्ली में अकबर के पास रहने का कारण यह था कि संवत १६२८ मे उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का गोगूंदा नामक नगर में देहांत हुआ तब पाटवी कुमर प्रतापसिंह तो महाराणा के दाग में चलेगये और उदयसिंह का छोटा पुत्र जगमाल पीछे रहा. जगमाल की माता से महाराणा उदयसिंह अधिक प्रसन्न थे इसकारण अपनी माता की सहायता से जगमाल मेवाड़ की गद्दी पर बैठगया परंतु जब महाराणा का शरीर दग्ध करके युवराज प्रतापसिंह अपने उमराओं सहित पीछे गोगूदा में आये उस समय मेवाड़ के उमराओं ने जगमाल को गद्दी से उतारकर महाराणा प्रतापसिंह को गद्दी बिठादिये इसकारण जगमाल वहां से आमेर के राजा मानसिंह के पास चलागया और जाडा नामक महडू को जीविका का उपाय करने को दिल्ली भेजा जिसने अपनी योग्यता और कविता के बल से अकबर के वजीर खानखाना अब्दुररहीम को प्रसन्न करके जगमाल के नाम मेवाड़ का परगना (जो जहाजपुर के नाम से प्रसिद्ध है)लिखवादिया सो जब जगमाल को सीरोही का आधा राज्य मिलगया तब जगमाल ने वह जहाजपुर का परगना चारण जाडा नामक महडू को देदिया परंतु जाडा ने जहाजपुर का परगना पीछा जगमाल को देकर उसमें से 'सरस्या' नामक एक ग्राम अपने अधिकार में रखलिया जो इस समय जाडा के वंशवालों के अधिकार में है ॥

सजिआयो सुरतानसिंह, स्वामिधम्म धरि सीर ॥ ५ ॥
इतरहु वहु सुरतानसुतअधिप, आये संग अनाते ॥
ग्राम दतानी सीमगत, पटक्यो कटक प्रपातें ॥ ६ ॥
अहाँ तिम दुरसा वहहु, छतनी संगहि पत्त ॥
गरुआवन चहि प्रात गउ, रत्ति रहे अनुरत्त ॥ ७ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुरतान देवरा नृप सिरोहि, मन्नंद उतहु सुनि असह सोहि ॥
अव्वूपति खातहि दल अखर्व, सुमिरायो विजयहिं दुरित सर्व॥८॥
करि तैं सठ पहिलैं वह कुकर्म, अब मैन भुवहिं मंडिय अधर्म।
द्विप१ जानि हमहिं सिंह२न दिखाइ, लायो सृगाल३फल कोन लाइ॥९॥
ऐसे हि हैन सिंहहु अनेक, इतकेहु सहहु अब एक१एक१ ॥
विजयहु प्रतिउत्तर तजिविलास, पठयो इम नृप सुरतानपास ॥१०॥
तुम उद्दन्त न गिनत साहतोर, जिततित सुव दब्बत विथोरि जोर ।
गिनत सदा जु साहन गनीम, सो रानभज्यो इत छोरि सीम ॥११॥
तुम दिय सहाय सव रीति ताहि, चक्खहु फल ताको उचितचाहि ॥
सुरतान सुपहु इम सुनि असंक, करि मंत्र करन सत्रुन ससंक ॥१२॥
सुहि निम्म जु पिल्ल्यो विजयसीस, वहकरि समस्त निजवल अधीस ॥
छिति ग्राम दतानी कोप छाइ, पविपातें परयो इम रत्ति आइ॥१३॥
पैनैं अव्वूपति निज कृपान, दिल्ली दल मेरे जय निदान ॥
गज१वाजि२भट्टन३जिततित गिराइ, परदल फिगाइ दिय हिय पिराँइ

१वहुत२पड़ाव।३।३जो आवुवा के धरण में घायल होकर बचा था और जिसने बादशाह अकबर के मुख से जोधपुर के राजा उदयसिंह की निंदा करवाई थी वह आढा शाखा का चारण दुरसा ४सेना के साथ ही पहुँचा ५अनुरक्त ॥७॥ ६सज्जित हुआ ७ बड़ा. विजयसिंह का ८पाप स्मरण कराया ॥ ८ ॥ ९ हाथी १० गीदड़ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११अनन्त १२ प्रताप १३ फैलाकर १४ शत्रु ॥११॥१२॥ १५ वज्रपात के समान ॥ १३ ॥ जय के १६ कारण १७ पीड़ित करके ॥ १४ ॥

बल भजत साहको भय बनादि, अठ८नृप परे जगमाल१आदि।
बहु पारि सिरोहीके प्रबीर, धारन चढ्यो सु सीसोद धीर ॥१५॥
इकओर पर्‍यो कवि जड्ड१एह, दुरसा२हु पर्‍यो कछु बिकलदेहु।
इकओर पर्‍यो बिजय३सु अधर्म, कति कहत भज्यो फलि पु-
ब्बकर्म ॥ १६ ॥
इम जत्रकुत्र करि परअनीक, सुरतान नृप सु जित्त्यो समीक॥
खोजन पुनि निज१पर२सून्य खेत, अब्बूपति प्रबिस्यो हित
उपेत ॥ १७ ॥
पहिलैं छत बिकल सु सुद्धि पाइ, अड्ढा कवि दुरसा लिय उठाइ।
अहिफेन पाइ तिहिँ हितउपेत, नृप धरि नृजान पठयो निकेत।१८।
निज१पर२कितेक जीवत निहारि,सब लिय उठाइ बैरहु बिसारि॥
सो जड्ड१कविहु कछु आयुसेस, निरखत बिसासि ढिग गो
नरेस॥ १९ ॥
अहिफेन दैनलग्गो उठाइ, सो जड्ड१नट्यो यह नय सुनाइ ॥
जगमाल२सुहृद मम आहि जत्थ, तह लैंन उचित लैचलहु
तत्थ ॥ २० ॥
इहिँ छलि नृजान धरि भेजि ऐन, सीसोद२लख्यो ब्यसु म-
ध्य सैन ॥
बिनुस्वास सुच्छ भौंहन फवाइ, वलि कोहु देवरा९तर दबाइ २१
सुत्तो तस उरपर कर कटार, पायो मृत सुहु करि सत्रु पार ॥
सुरतान राजकुल अति सराहि, तब किय बिधि समुचित द-
हन ताहि ॥ २२ ॥

१ललकार (मारमार) का भयंकर शब्द करके; अथवा भयंकर कोलाहल करके ॥ १५ ॥ २ जाडा नामक महडू शाखा का चारण ॥१६॥ ३ युद्ध ॥१७॥ ४घावों से ५ अमल ६ पालखी में ॥ १८ ॥ १९ ॥ मेरा ७ मित्र जगमाल है तहां ॥ २० ॥ ८ घर ९ मराहुआ. किसी देवड़ा को १० नीचे दबाकर ॥२१॥ ११ छाती पर ॥ २२ ॥

जड्ड१हु जगमालहिं अनसु जानि, गल छेदि मरयो पुनि असह ग्लानि ॥
जगमाल१आदि तिहिं घोरजुद्ध, पहुं अट्ठ८परे इत१के प्रबुद्ध ।२३।
सुरतान पितृव्यक समरसीह१, इत्यादि मरे उत२के अबीह ॥
जगमाल१विजय२समरा३दि जारि१, लग्गुहु सव घायल इम स-म्हारि२ ॥ २४ ॥
दुरसा१इक१रक्खिय स्वीयभंग, पठये खिल करि पटु साहसंग।
अहाँ हु रह्यो तव गिनि सुअैन, लखि उचित देवँर९न अन्न लैन २५
अकबरपति तव तिहिं वृत्ति अप्पि, थानक निज रक्खिय स्वीय थप्पि ॥
तवतैंहि देवरहन वृत्ति तास, कुल धरत राम२०३।४प्रभु जस प्रकास ॥ २६ ॥
कति कहत हारि यह सुनत क्रुद्ध, पठयो दल अकबर३७।१पुनि प्रबुद्ध ॥
रानाँजिम कुल मग हठ रहंत, कढिगो सुरतानहु कति कहंत ।२७।
इत जो बुंदीपति भोज१९१।२एह, गो सब्बन सासन साह गेह।
पै दत्त कातिकैं अनुचित प्रमानि, जिहिं नृप करी न कुल हेय जानि ॥ २८ ॥
जान्यों सुर्जन१९०।१छत्र१मनति जोरि, कूरम कनीसु व्याहत२ वहोरि ॥
पै हुव सछत्र जवतैं नृपाल, हम मानत तवतैं अवर हाल ।२९।
दिल्लीविच वहुरि हु थान देत, न लयो१जु पुब्व सुहि गिनि निकेत ॥

---

१ मगाहुआ जानकर २ राजा ३ बहुत चतुर ॥२३॥ ४ निर्भय ॥ २४ ॥ ५ अपने नगर में ६ आढा शाखा का चारण दुरसा ७ देवड़ा का ॥ २५ ॥ २६ ॥२७॥ ८ त्याज्य ॥ २८ ॥ ९ नम्रता १० कछवाहे की कन्या ११ छत्र सहित (राजा) हुए पीछे ॥ २९ ॥

इक खिन गोमारन[1] गहत ऐन, निरखे नृप मारक[2] अप्प नैन ।३०।
बरजे न रुके जं कछु बिसास, ताडित[3] तब तिन्ह करि असह त्रास॥
पुनि छोरे तिनहु न किय पुकार, अकबर३७।१गिनि अर्ज्जन[4] हित उदार ॥ ३१ ॥

हो कुम्भ[5] सुताको स्वसुर होइ, इतको सब जानतहो अथाइ ॥
कासि ढिग[6] जिहिं मान सु साह कान, दिय डारि वज्र[7]आगम निदान ॥ ३२ ॥

सुनि बहुत काल पुब्बहि सु साह, गंभीर सिंधु[8] मन किन्न ग्राह[9] ॥
सुर्जन १९०।१ नृप पीछैं अवधि सेस, न इतेक काल पुच्छ्यो नरेस ॥ ३३ ॥

संसदं[10] कहुँ अक्खिय सहज साह, लख्यो तैं सूरति वजू[11] लाह ॥
नहि कबहु दिखायो हे नरेस, अबतो सु दिखावहु हुकम एस ।३४।
इम कहिय अधिप कर धरि कटार, वो पवि[12]को जानहु यह अगार ॥

यामाँहिं रहत हीरासु एक१, कबहुक लखिलैंहैं खल कितेक ।३५।
सुनिएह गईकरिगो[13] सु साह, अक्खिय जग भोज १९१।२ हिं वाहवाह ॥

मुगलेस सहन[14] यह सुभ न मानि, जरिगो सु मान छम[15] नृपहिं जानि ॥ ३६ ॥

---

१ गौओं को मारने के लिये मार्ग में पकड़ते हुए २ मारने वालों को देखे ॥३०॥ ३ ताड़ना करके ४ आर्य्यों के ॥ ३१ ॥ ५ कछवाहा मानसिंह बुन्दी के राजा भावसिंह की पुत्री का स्वसुर था तो भी खेद है कि ६ पास जाकर. सूरत के युद्ध में ७ हीरा हाथ लगा था सो कारण सहित बादशाह को सुनादिया॥३२॥ ८ समुद्र रूपी मन में ९ मगर रूपी उस वार्ता को छिपादी ॥ ३३ ॥ १० सभा ११ हीरे का लाभ ॥ ३४ ॥ १२ उस हीरे का यह घर है ॥३५॥ १३ क्षमा कर गं. अर्थात् सुनी अनसुनी करगया. बादशाह की इस १४ सहनशीलता को बुंदे. का १५ समर्थ जानकर मानसिंह जलगया

छूट अयुत ६०००० दम्म जिहिं अर्घ ख्यात, देखन हु न दिय सो पंवि वंदात ॥
इहिं लंतुं साह नृप हनन आदि, करतो कितीक प्रभुता प्रबांदि ॥ ३७ ॥
नागर गर्भार पें सहिय साह, वलि नृपहि गिन्यो निज जय निबाह ॥
ओगन असत्य तउ किय अनेक, ईनराम २०।३।४ सुनहु तिन एकएक ॥ ३८ ॥
जननीहु साहकी मरिय जत्थ, सब अंज्ज नृपन बुल्लि रु समत्थ
इन अकिल्लय तुमकुल रीति एह, व्है मुंडित गुरुजन मृति अनेई ॥ ३९ ॥
हम जननि मरन तिन क्यों न होहु, सब नृपन धरयो सिर हुकम सोहु ॥
आमेर१ जोधपुर २ मुखं अधीस, सब मुंडित हुव गिनि हुकम सीस ॥ ४० ॥
बुंदीस भोज१।९१।२तहँ प्रसभ बंधि, सुहु कथन न किय कुल धर्म संधि ॥
इन भोज १।९१।२ साह परिखेद हु आइ, भास्यो तिन्ह संढे १ न पुरुख २ भाइ ॥ ४१ ॥
मन्नत कति बेग्हनि साह माइ, मत भेद इहाँ संभव मनाइ ॥
जनम्यों यह ऊमरकोट जात, बरनी जु हुमायों ३।१।१ समय बात ॥ ४२ ॥

उन हीरे का १ मूल्य साठ हजार प्रसिद्ध है. उस ३ उज्ज्वल २ हीरे के इस ४ अपराध पर ५ ललकार कर भोज को मारना तो उस की कुछ प्रभुता थी. ॥ ३७ ॥ ६ हे राजा रामसिंह ॥ ३८ ॥ ७ आर्य राजाओं को बुलाकर बडे लोगों के मरने के ८ समय मुंडन कराते हैं ॥ ॥ ९ आदि ॥४०॥ १० हठ करके ११ सभा में आकर १२ उन हींजड़ों में पुरुष की भांति दीखा ॥४१॥ १३ बादशाह की उस माता को कितने ही आलमगी मानते हैं ॥ ४२ ॥

पै जवन१ खिलन इम निज *प्रबंध, सुनिये †व ख्याति अप्प-
२न जु संध ॥

भजिगो सु हुमायौँ२१।१ जवहि भीत, तब तजि अंतहपुर दुख
प्रतीत ॥ ४३ ॥

सब हुरम भजी जिततित ससंक, इकके तँहँ उघरे भाग्य अंक ॥
जिहिंगर्भ साह सो भजतजात, बंधूगढ पहुँची दुख बितात ॥४४॥

तत्थहि हुव अकबर३७।१तनय तास, उभय२ हि तँहँ कछुविधि
बिदित आस ॥

तब नृप बघेल लैजाइ ताहि, सादर सपुत्र रक्खी सराहि ।४५।
पुनिदिल्ली अकबर ३७।१ जनक पाइ, बनिता जिततित सुनि
लिय बुलाइ ॥

नृप तब बघेल धरि तिन्ह नृजान, पहुँच्यो हजूर सासन प्रमा-
न ॥ ४६ ॥

बनिसोहि बघेलन उदय बीजं, धी धारत अज्जन करत धीजं ॥
अग्गहु कछु सूचित यह उदंतं, सन्नहु प्रसंगकारि पुनि सुमंतं ।४७।

ज़वन२न निज ग्रंथन जत्थजत्थ, लिखिदिय अलीकं अज्ज २
न अनत्थं ॥

रन प्रथम१ सहाबुद्दीन हारि, पित्थ १७।१ हिं हनि दूजैं२-गो
पधारि ॥ ४८ ॥

लैगो गहि ३ वहु जन यहहु लापं, इम कतिक कहौं व्है दुख
अमाप ॥

प्रभुके[12] चरित्र अवसर प्रसंग, सूचित सु होहिं निज१पर२असंग।४९।

यवनों ने अपने *ग्रन्थों (तवारीखों) में लिखा है † अब अपनी ख्याति में जो लिखा है सो सुनो. १ जनाना दुःख की प्रतीति से ॥ ४३ ॥४४॥ २ प्रसिद्ध हुआ ॥४५॥ अकबर के ३ पिता ने ४ स्त्रियों को ॥ ४६ ॥ बघेलों के उदय का ५ कारण हुआ ६ विश्वास ७ वृत्तान्त ८ बुद्धिमान् ॥ ४७ ॥ ९ मिथ्या १० पृथ्वीराज को ॥ ४८ ॥ यह भी ११ कथन है १२ हे प्रभु रामसिंह आपके चरित्र में प्रसंग के

निज निलय बीरबल इक अनेह, साहहिं निमंत्रि बुल्ल्यो सनेह ॥
परिजन १ नवाब २ नृप ३ मुख्य पास, इम गो सु बीरबलद्विज निवास ॥ ५० ॥
उतरत बसंत१ ऋतु ग्रीष्म२ आत, प्रसरत निदाघ असहन प्रपात ॥
सब कुंकुमादि जल बहु सुगंध, विरचि सु भरि कृत्रिम कुंड बंध ॥ ५१ ॥
किय अरज बीरबल उचितकाल, हजरत इहिं प्रविसहु करि निहाल ॥
पहिलैं तहँ अकबर३७।२ करि प्रवेस, पुछे भट१ सचिव २ अनुग२ विसेस ॥ ५२ ॥
तब मान? खानखानादि तत्थ, सब लग्गे प्रविसन हुकम सत्थ ॥
प्रविस्यो न भोज१.९।२ तहँ हठ प्रमानि, ठह्यो असि १ अङ्कन२ सज्ज ठानि ॥ ५३ ॥
मुगलेन्द्रहु आग्रह जदपि मंडि, छमं बुल्ल्यो तदपि न ग्रसभ छंडि ॥
बुल्ल्यो प्रमत्त सब इम विचारि, ठह्यो मैं रच्छक हृदय धारि ।५४।
इक अकबर३७।१ अंतिकं होहु अल्प, पटु बीर बहुत चहियत प्रकल्प ॥
जिन्ह करत सत्रुमन न बढिजाइ, है चोकी वहु भट उचित होइ ॥ ५५ ॥
सो बीरबलहु करि सबन सक्खि, आयेंहजुत बुल्ल्यो बिसेंहु अक्खि

अवसर पर यवनों के और आर्यों के मत भेद की सूचना की जावेगी ॥ ४९ ॥
एक १ समय. बीरबल ब्राह्मण के २ घर पर ॥५०॥ ३ पवन अर्थात् असह्य गर्मी पड़ी तब केसर आदि सुगंधित जल भरकर ४ बनाए हुए कुण्ड में ॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥ ५ मानसिंह कछवाहा ६ तरवार ढाल लेकर ॥ ५३ ॥ ७ समर्थ अकबर ने बुलाया तो भी हठ नहीं छोड़कर बोला ८ रक्षक ॥ ५४ ॥ ९ समीप १० विशेष सामर्थ्यवाले चतुर बहुत चाहिये ॥ ५५ ॥ ११ साक्षी १२ हठ १३ प्रवेश

मेरे घरही मम न अपमान, बुंदीस करहु लखि सब विधान ॥५६॥
तुम सब प्रमत्त इम अक्खि ताहि, सो भोज१९१।२खरो इक
. हठ समाहि ॥
इहिं आगसें१साहहु कोप आनि, पविं१सुच्छ२न दैनहु हठ
प्रमानि ॥ ५७ ॥
पहिलैं रिझाइ अकबर३७।१हिं पूर, सुर्जन१९०।१लिय बावन५२
प्रांत सूर ॥
बुंदी१समीप तिनमैं छवीस२६, बलि कासी२ढिग एकोन-
वीस१९ ॥ ५८ ॥
॥ छवीस१नवीस२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
ए पैंतालीस४५हि लिय उतारि, सप्तक७जुत कासी दिय सम्हारि॥
तँहँ सुर्जन१९०।१लक्खन व्यय प्रतानि, नव थान१दुर्ग२सुरगृह३
निपान४ ॥ ५९ ॥
मँडा१कासी२चरनाद्रि३मुख्य, सब ठाम रचे निज धाम मुख्य ॥
पच्छे नलये ते अब्द८प्रांत, भोज१९१।२हिकै रक्खे अनय भ्रांत॥६०॥
नृप भत्रिय बुंदिय क्यों न लेहु, उज्झैं न धर्म सुचिबंस एहु ॥
रहिगो बल अद्धो तदपि राज, मुदितहि रह्यो सु तिहिं खिन
समाज ॥ ६१ ॥
जिहिं पुनि कहुँ अवसर करनै जोरि, बिन्नति जवनेसहिं किय
बहोरि ॥
समुझत हम प्रभुकी छिति[10] असेस, दैहो सुहि रक्खहिं जि-
यन देस ॥ ६२ ॥

करो यह कहकर १ विधि ॥ ५६ ॥ २ इस अपराध से ३ हीरा और डाढी मूंछ के बाल नहीं देने के कारण अर्थात् बादशाह की माता के मरने के समय मुण्डन नहीं हुआ था सो हठ जानकर ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ४ लाखों रुपये खरच करके ५ मन्दिर ६ जलाशय ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ७ धर्म नहीं छोड़ेंगे ८ अग्निवंश ॥ ६१ ॥ ९ हाथ जोड़कर १० सब भूमि आप की ही समझते हैं ॥ ६२ ॥

जित लरन काम तित नरन जाँहिं, निज स्वामि अनुग हम नाँहिं[1] नाँहिं ॥
हनि धर्ममाँहिं कहुँ किमहु होइ, गति कर्म नाँहिं रक्खे सु गोइ[2] ६३
प्रभुकोहि भरोसा तबहु पाइ, हम बजत अब्ब लज्जन विहाइ ॥
न करहिं विलंब सिर देंन नैंक, कुलधर्म मिटत कछु चित्त चैंक[3] ।६४।
इहिं रक्खि हमहिं छिति देहु तुच्छ, मति लेहु कुविध इम नरन पुच्छ ॥
जिजिया[4] दि तज्यो प्रभु दम जितोक, वाकोंहु अनुग न गिनत इनोक ।
कुल मग्ग रक्खि जो लेहु काम, लघु असन[1] वसन[2] तो अतिललाम।
अकबर[3] ७१[4] हु अरज यह सुनि प्रसन्न, छितिपहिं ऋजु[5] जान्यौं न छलछन्न ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

लवपुरको[6] देवे लग्यो, इहिं सूबा अधिकार ॥
नृप अक्खिय कासी निलय, ह्वै आवत दुख हार ॥ ६७ ॥
हाँ हुँ[7] कग्म दुक्करहु हुकम, सब्बनहाँ प्रभु सज्ज ॥
सिर जो रक्खहु स्वामिसिय[8], किर[9] को दुष्कर कज्ज ॥ ६८ ॥
अतिप्रसन्न साह सु अरज, मन्नि कहिय नृपमोर ॥
ह्वै कासी आवहु बहुरि, लघु जावहु लाहोर ॥ ६९ ॥
नृप गो तब कासीनगर, मंगि बिलंब छम्मास ॥
कुमर रैन१६१२मुख प्रकृति कुल, आनंदित सब ग्राम ॥ ७० ॥
अकबर ३७१[1] जैरा[11]ति करन इन, आत अनय अजमेर ॥
दुव २ मि[12]लान आमैर दिय, स्वसुरालय वल सेर ॥ ७१ ॥

---

१ सेवक २नांही करने की नांही है अर्थात् कभी नांही नहीं करते ३ छिपाकर नहीं रक्खेंगे ॥ ६३ ॥ ३चित्त पर ४ क्रोध होता है ॥६४॥ ६५ ॥ ५ सीधा ॥ ६६ ॥ ६ लाहोर का सूबा ॥६७॥ ७दुष्कर कार्य और दुष्कर आज्ञा को साधने में तैयार हूं ८ हाथ ९ किल (निश्चय) कठिन कार्य कौनसा है ॥६८॥ १० राजाओं के मुकुट ॥ ६९ ॥७० ॥ ११ यह यावनी भाषा का देश वाची शब्द है १२मुकाम ॥ ७१ ॥

सस्सू तँहँ मुगलेसकी, माननृपतिकी माइ ॥
दिय महिमानी दुवरहि दिन, मैह[1] वहु पुरहु मचाइ ॥ ७२ ॥
बुल्ल्यो वह अवरोध[2] बलि, जामाता[3] निज जानि ॥
साहहु गो सस्सू[4] सदन, उर आदर भर आनि ॥ ७३ ॥
नजरि१ निछावरि२ सह्निनिज, बहुरि बंधूगन[5] बुल्लि ॥
सुबिधि कराई सबन[6] सन, भाग्य सराह न भुल्लि ॥ ७४ ॥
हड्डीहू दुवर तँहँ हुती, इक सुभमति१९२।२ अभिधान[7] ॥
जगतसिंह निज कुमर जिहिँ, मह करि व्याह्यो मान[8] ॥ ७५ ॥
सु तो जरी जब मृत सुन्यौं, अप्पन[9] पति आसाम ॥
भोज१६१।२सुता दुव२कुल भले, उज्जल किय अभिराम[10] । ७६ ।
बुंदीही तस सुत बस्यो, नाम जास रघुनाथ ॥
भोज१९१।२सु रक्ख्यो श्रेष्ठ[11] भनि, सुता तनय हित साथ ॥७७॥
कृष्णावति१९२।१जेठी१[12]कैनी, दूजी२तँहँ दूदा१९१।१हु ॥
माननृपहिं व्याही कुमर, विधि१ मह२ सह करि व्याहु[13] ॥७८॥
दाहु१ व्याहु२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सोही तव पै तिहिँ समय, अति मसमहु आई न ॥
गई लैन सस्सूहि गहि, हा कुबधू मतिहीन ॥ ७९ ॥
तबहि खाइ कर्पूर तिहिँ, छिहिर्त[14] छुरी लै पास ॥
कछु अंतर सन गमन किय, अनुचित जियन उदास ॥ ८० ॥
पठई सस्सू अग्ग पुनि, आई व्याकुल एह ॥
दिट्ठिपरत साहहु दुखित, देखी कंपतदेह ॥ ८१ ॥
पग डारत इतउत परत, बुल्ले अकबर३७।१ बिक्खि[15] ॥

---

१ उत्सव ॥ ७२ ॥ २ जनाने में. अपना ३ जमाई जानकर बुलाया ४ सासू के घर में ॥ ७३ ॥ ५ पुत्र की बहुओं को बुलाकर ६ सब संविधि पूर्वक नजर न्यौछावर कराई ॥ ७४ ॥ ७ नाम ८ मानसिंह ने ॥ ७५ ॥ ९ अपने पति का १० सुन्दर ॥ ७६ ॥ ११ प्यारा कहकर ॥ ७७ ॥ १२ बड़ी कन्या १३ विवाह ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १४ छाने ॥ ८० ॥ ८१ ॥ १५ देखकर

को आवत यह अमु विकल, सासन निवहन सिक्खि ॥८२॥
यह दूदा१।२।१की अंगजा, सुनि बुल्ल्यो उठि साहु ॥
सस्सू जड तैं किय विरस, लेत सभा रस लाहु ॥८३॥
जो हड्डी६१ यह तो सजर्व, जिम तिन गृह लै जाहु ॥
खायो कछु इहिं मरनकहु, सस्सू जदपि सुहाहु ॥८४॥
जाहु१ लाहु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
विरचावहु वैचन विहित, आसु जियन उपचार ॥
सस्सू गय ढिग यह सुनत, लखी विकल ह्वी लार ॥८५॥
औषध दिय वैद्यन उदित, जिहिं पच्छी लैजाइ ॥
छन्न ढिग निकसत छुरी, हेतु कह्यो करि हाइ ॥८६॥
मैंयाकहँ उर मारती, सुख लखतो जो मिच्छ ॥
ताहु लखी हड्डी६१हु तिहिं, यातैं जियन अनिच्छ ॥८७॥
तुमरे सुतके अब तलप, जैबो परभव जोग ॥
कहि इम पुरबाहिर कढी, भवके परिहरि भोग ॥ ८८ ॥
इक ग्राम हड्डीपुरा, बाहिर रहिय बसाइ ॥
जब मृत मान सु तब जरिय, स्व कुलहि मुख्य लसाहि ।८९।
यह भावी पैं इम सु अब, अकबर३७१ है अजमेर ॥
दिल्लीपुर गो पुनि दुसह, बाहुरि सम्भव बेर ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोजचरित्रे सीरोहीविजयार्थयुद्धशीर्पोदजगमालादिमरणारावसुरताणवि

१प्राण २आज्ञा ॥८२॥ ३ पुत्री ॥८३॥ ४ शीघ्र ॥८४॥ ५उचित ६शीघ्र ७ इलाज ८लज्जा सहित ॥ ८५ ॥ ९ कारण ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ १० शय्या पर ११ दूसरे जन्म में १२ संसार के भोग छोडकर ॥ ८८ ॥ १३ भिन्न १४ मानसिंह मरा तब १५ शोभायमान करके १६ यह वार्ता आगे होनेवाली है १७ पीछा फिरकर १८ सम्भव समय पर ॥८९॥९०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज के चरित्र में सिरोही को विजय करने के युद्ध में जगमाल शीपोदिया आ-

जयासादन १, यवनेन्द्राकबरबुंन्दीशभोजकृतानेकापराधक्षमनभोजस्वधर्मदृढीभवन २, अजमेरनगरपीरयात्रार्थप्रस्थितयवनेन्द्राकबरस्वश्वशुरगृहामेरगमनादिकथावर्णनं सप्तदशो १७ मयूखः ॥

आदितो द्विशततमः ॥ २०० ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक छ बेद सोलह१६४६ समय, इत कासीनृप ऐन ॥
कुमर रत्न१९२।१ के हुव कुमर, दुर्जय पर भय दैन ॥ १ ॥
असित१ भाद्रपद६ द्वेजि२ अह, जन्म तास लिय जानि ॥
आठह्य गोपीनाथ १९३।१ इहिं, पायो गनित प्रमानि ॥ २ ॥
अधिप मान दौहिल यह, लीला१९२।१ औरस सूर ॥
सुनि जनम्यो बरख्यो सुपहु, पुरटमेर्ह यह पूर ॥ ३ ॥
कछु कासी१चरनाद्रि२कछु, रहिय भोज१९१।२अधिराज ॥
बुंदी जिम बिलसिय बिभव, सुरपति प्रतिम समाज ॥ ४ ॥
हुतो पुरोहित संगही, द्विज इक१ देवीदास ॥
गैल इतर कोउ न गयो, बुंदीही करि बास ॥ ५ ॥
दिष्टै ज्वरी किय सोहु द्विज, यातैं नृप अनखाइ ॥
पलटन और पुरोहितन, भोज१९१।२चहिय हिय भाइ ॥ ६ ॥
किय बिन्नति तँहँ जोरि कर, व्यास चक्रधर बिप्र ॥
पुब्ब पुरोहित गर्बपर, छोर न समुचित छिप्रं ॥ ७ ॥

दि मारे जाकर राव सुरताण का विजयी होना १ बुन्दी के राव भोज के अपराधों को बादशाह अकबर का क्षमा करना और भोज का अपने धर्म में दृढ रहना २ अजमेर में पीर की जारत करने को प्रयाण करनेवाले बादशाह अकबर का अपने श्वसुर गृह आमेर में जाने आदि कथाओं के वर्णन का सत्रहवां मयुख १७ समाप्त हुआ और आदि से दोसौ २०० मयूख हुए ॥

काशी के १ स्थान में ॥ १ ॥ २ द्वितीया के दिन ३ नाम ॥ २ ॥ ४ स्वर्ण का मेरु ॥ ३ ॥ ५ इन्द्र के ६ सदृश ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भाग्य ने ८ ज्वर युक्त किया ॥ ६ ॥ ९ उचित १० शीघ्र ॥ ७ ॥

पैंडवाल१द्विज तजि सुपहु, चोलंख्या२पुनि चाहि ॥
करहु पुरोहित प्रीति करि, निज कुल रीति निबाहि ॥ ८ ॥

॥ मनोहरम् ॥

चोलंख्या धनेस्वर जो भूसुरसों भूपभोज१०१२,
करन पुरोहित विचार्यो जानि जबही ॥
दैवीदाल ज्वरकी दसाहुमैं दुसह दुक्ख,
ताको नाकि देसमैं पठायो पत्र तबही ॥
नामा१सिवदास२दूदा३रामा४ओझा५केदार६,
न परसा७अवदेसतैं ए सात७आइ सबही ॥
द्वार रहि ठाढे दीन विन्नति करन लागे,
क्यों तजो हमैं यह करी न काहू कबही ॥ ९ ॥

॥ पद्धतिका ॥

नृप कहिय हाल कल्लोल नाम, जो रहत मत्त इभ२ अष्ट८जाम ॥
इहिं पूजि पुरोहित रहहु अप्प, द्विज तजहु नतो अब मोंघ३ दप्प १०
नामा तब पूज्यो बहहि नाग, भाख्यो न जाइ हम वृत्ति भाग ॥
इम नम्र विविधकर जोरि अक्खि, सुंडाधारि हल्लन सबन सक्खि४ ११
पूजनविधाइ किन्नौं प्रनाम, करिराज भयो सुभ द्विजन काम ॥
पहिलेहि विप्र इम रहत पोरि, रहिगो सु धनेस्वर मनहिं मोरि ।१२।
नाभाहित पुहवी कछु नरेस, बखसन जँहँ लग्गो हित बिसेस ॥
भाखिय तँहँ नाभा जिम स्वभग्ग५, एकासी८१बीघा६ अवनि अग्ग ।१३।
पाई कुलपुरुखन विधि प्रमान, लहि हेतु कछु सु गत हुव लँवान७ ॥
सुहि मोहि देहु नृप धर्म सोधि, बारहठ सुकवि ईस्वर१९५१प्रबोधि
महिपति तब ईस्वर१९५१मन मनाइ, भुव सोहि दिवाई उचित भाइ
आक्खिय नृप कवि तुम लेहु ओर, जो पै न लई कवि सुमति जोर ॥१५॥

॥ ८ ॥ १ देखकर ॥ ९ ॥ २ हाथी ३ झूठा घमंड ॥ १० ॥ ४ साक्षी ॥ ११ ॥ १२ ॥
५ अपने भाग (हिस्से) की ६ भूमि ॥ १३ ॥ ७ ग्राम का नाम ॥ १४ ॥ १५ ॥

लिखि सुतहिँ पल सुद्दि छिति लवान, दिय सर्व पूर्वगत द्विजन दान॥
द्विज नाम धनेस्वर१कों स्व देस. निबसथ सु धौहरा२दिय नरेस । १६ ।
रहि दूदा१९१।१ढिग जिहिँ परसुराम१, किय अति विरोधमय विविध काम ॥
तोहू व ग्राम गग्घोस२ताहि, सुर्जन१९०।१ सुत अप्पिय गुन सराहि
चरनाद्रि१रु कासी२मास च्यारि४, संभरनरेस रहि सल सम्हारि ॥
रच्छक तहँ रक्खिय कुमर रेन १९२।१, अक्खिय सुत आनहु सबन अैन ॥ १८ ॥
पुर दिल्ली पुनि सासनप्रमान, आयो बुंदीपति बल अमान ॥
संसद बुलाइ तिहिँ कहिय साह, मचि डमरँ मिटत लाहोर लाह ।१९।
निज बल सिख हीरासिंहनाम, नानक्क विनेय जगहित निकाम ॥
अनुमंत्रि नरन रचि धाटि एस, वपुगी प्रजाहिँ लुट्टत बिसेस ॥२०॥
तासों बचाइ नृप जाइ तत्थ, सूबा सम्हारि विरचत समत्थँ ॥
पुहवीस सु सुनि लाहोर पत्त, सूबापति तँहँ हुव चाहि स मत्त ।२१।
जुतधर्म१नीति२राज्यहिँ जग्गाइ, पट्टु चरँ पठाइ सिख सुद्धि पाइ ॥
बेढ्यो हि जाइ खल हड्ड६१वीर, सुमिराइ विलुट्टनँ पाप सीर ।२२।
तरवारिझारि तिम रन रचाइ, मार्‍यो सु धाटिधर जस मचाइ ॥
सूबा अभीत करि संभरीक, प्रतप्यो सम्हारि तस सब प्रतीकँ ।२३।
बुंदीस स्व बल जिम सिख विपन्न, सुनि तिम उदंत अकबर३७।१ प्रसन्न ॥
मालपुर१टौंक२टोडा३समेत, यह त्रिक३बहोरि दिय हित उपेत २४
इतकों बुंदेलन बल उफान, थानों बहु कट्टिय थानथान ॥

---

१ ग्राम ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ सभा में ३ उपद्रव ॥ १९ ॥ नानक का ४ शिष्य होकर. संसार के हित में ५ निकम्मा ६ अपनी सलाह में लेकर ॥ २० ॥ ७ समर्थ ॥ २१ ॥ ८ चतुर ९ हलकारा भेजकर १० लूट स्मरण कराके ॥ २२ ॥ ११ उस सूबा के सब अंगों को सम्हाल कर ॥ २३ ॥ १२ विपद् ग्रस्त ॥ २४ ॥

मकंटहि दुश्यावलग लूट पारि, अति धन बहु निवसथ दिय उजारि ॥ २५ ॥

सूबा प्रयागको अग्नि साह, पठयो सिरीफखाँ१ बल प्रबाह ॥
तिहिं जान अरज किय हित बताइ, हतु६.९.नवस गढ चरनाद्रि१ लाइ ॥ २६ ॥

अधिकारि तेरे गढ उपेत, खल सब जुरि जित्तहिं बीर खेत ॥
बहु लोहि हेतु तिनसों उतारि, दगि लखहु प्रजा सुख सुभ विचारि ।
जाकोहिनन फरमान तत्थ, अकबर३.७१.पठयो गढ देन अत्थ ॥
लाहौर तिनहिं दृजो४लिखाइ, भेज्यो सु भोज१.९१.२पति उचित भाइ ॥ २८ ॥

नृपहुकि बहुरि कुमरहिं निदेस, पठयो लिखाइ गढ करहु पेस ॥
पहुँच्यो सु बिलंबि न कुमरपास, सूबापति अग्गाहि गो सकास २९
जिहिं गढ प्रयाग प्रभुता जमाइ, लेवे गढ पठयो दल१ लिखाइ ॥
सौंपे फरमान२हु ताहि तत्थ, सूबापति पठयो बल समत्थ ॥ ३० ॥

इत रैन१.९.२.१ कुमारहु जिहिं अनेह, अधिवीरं हुतो चरनाद्रि एह ॥
गो तहँ फरमान१ सु तिहिं गिन्यो न कहि हमहिं देत नृप हुकम२ क्योंन ॥ ३१ ॥

पच्छो सु इन पुनि गो प्रयाग, भाख्यो न देन गढ गिनि स्वं भाग ॥
सुनि यह सिरीफ जाहि अल्प सत्थ, संमुझावन कुमरहिं गो स- मत्थ ॥ ३२ ॥

जिहिं रैन१.०.२.१ कुमर चरनाद्रि जाइ, समुझायो छोरहु गढ सुनाइ
नृपको हि कुमर मंग्यो निदेस, मूबापति बुल्यो खिजि बिसेस ॥
तू बेप्प हुकम क्यों चहत तोनि, मुगलेस बडे अप्पहिं प्रमानि ॥

---

१ ग्राम ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २ नहीं ३ अर्थ (गढ देने के लिये) ॥ २८ ॥ गढ ४ नजर करदो ५ देर से पहुंचा ६ समीप ७ दल ॥ ३० ॥ जिस ८ समय में ९ वीरों का पति ॥ ३१ ॥ १० अपने हिस्से का जानकर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ पिता का हुकम १२ खैंच करके

कुमरहु यह सुनि खिंचि हनि कटार, फारयो सिरीफ उर[1] गर्व फार[2] ॥ ३४ ॥

महिपति भोजा१९१।२नुज रायमछ१९१।३, सुत रामचंद्र१९२।१ तस सर्व कुल सल्ल ॥

सिसु बैहि जनक सन जों रिसाइ, पति कछुदिन दूदा १९१।१ कुमर पाइ ॥ ३५ ॥

पुनि रहि सिरीफखाँ स्वामिपास, बहिकाइ करायो तस विनास

मरतहि सिरीफ सुहु राम १९२।१ मूढ, अरि कुलको गो भजि तँहँ अगूढ ॥ ३६ ॥

जुज्झे इत१उत२के कछुक जोध, बलि जवन भजे असहन विरोध

पुनि भोज १९१।२ हुकम गो कुमरपास, सुत देहु दुर्ग सासन विनास ॥ ३७ ॥

अंतर इतेक पहिलैंहि एह, इत हुव उदंत आगस[6] अछेह ॥

सो असह सुनत अति क्रुद्ध साह, चितयो हड्ड६१नसिर हनन चाह ॥ ३८ ॥

ओरनसम अकबर३७।१पै न आँहि, गंभीर सिंधुमन नयथगाहि ॥

सिवपुरिय१परगनाँ सत्त७सत्थ, सब लिय उतारि अड८हि समत्थ

सुर्जन १९०।१ के विरचे थान साह, लिय नहि कालीविच गिनिकुलाँह ॥

माँडा१चरखादिक२आदि माँहिं, वाकेहु रचे लिय सर्व आँहिं ।४०।

अधिकार दये लवपुर३उपेत, लालपुर१टोंक२टोडा३समेत ॥

इंतकेहु लये है अप्रसन्न, बुल्ल्यो नृप भोज १९१।२ हिं चहि विपँन्न[11] ॥ ४१ ॥

---

१ हृदय २ समूह ॥३४॥ ३ भोज का छोटा भाई ४ अपने कुल का साल ॥३५॥ ५ प्रसिद्ध ॥३६॥३७॥ ६ अपराध ॥३८॥ ७ अकबर अन्य बादशाहों के समान नहीं था ८ मन का गम्भीर समुद्र ९ नीति का थाह लेनेवाला ॥३९॥ १० खोटा लाभ ॥ ४० ॥ ११ विपद्ग्रस्त ॥ ४१ ॥

पहु भोज१९।१।२तवहि सासन पठाइ, बुंदी सब अपनें लिय बुलाइ
रनवाससहित तव कुमर रेन१९।२।१. आयो सब स्वीयन स्वीय
ऐन ॥ ४२ ॥
अहि वेद अष्टि१६४८संवत अनेह, इम पत्तो बुंदिय रत्न१९।२।१एह
इत भोज १९।१।२ हु दिल्ली सजव आइ, जवनेसहिं सेयो नति
जनाइ ॥ ४३ ॥
इहिं कृत वहु रन जय चित्त आनि, जवनेस बुलायउ स्वीय जानि
दिय नृपहिं उपालंभहुं दु २ बार, किय यह अति हेलन तव
कुमार ॥ ४४ ॥
तव कानि तज्यो नहिं नो सत्रास, हनतो मैं रेन१९।२।१हिं हेर्न हास
मार्‍यो सिरीफ जिहिं निलुहि मंतु, तस मैं न रक्खतो कुलहु तंतु ४५
सुर्जन१९।०।२को१तेर२पै सुकर्म, मैं अटक्यो सुमिरत विविध मर्म ॥
इम होइ होत कछु दिन अतीतं, पच्छोनरेस किय साह प्रीत ॥४६॥
इहिं समय नाम जाको अयाज, सु जवन तातारी रहित सौंज ॥
विगर्‍यो विपत्तिआगमें विसेस, इतकों तव आयो दुखितएस ॥४७॥
वनितौंसगर्भ संगहि विहाल, कन्न्या हुव ताकै प्रसवकाल ॥
तातार१अज्जभुव२अंतरॉल, वन गहन प्रसूता हुव सुवाल ॥ ४८ ॥
हे भूखे पुव्वहि सत्वहीन, दुखमें पुनि यह दुख दिष्ट दीने ॥
इम रूपवती कन्याहु उज्झि, वनमें रु चले मग अग्ग बुज्झि ।४९।
तिम सिसुसन कछुकछु दूर जाइ, मुरि मुरि तिम देखत वप्प१माइ२
कन्न्या परी सु पद्धति किनारं, माताकों तँहँ दिय मोह मार ।५०।
वच्चा वच्चा कहि तवसु वाल, विलपात गिरी भुव अति विहाल ॥

---

१ जनाना २ सेवकों सहित अपने ३ घर में आगा ॥ ४२ ॥ ४ शीघ्र ५ नम्रता दिखाकर ॥ ४३ ॥ ६ ओलम्भा ७ अपराध ॥ ४४ ॥ ८ यह हँसी नहीं है ९ बिना अपराध ॥ ४५ ॥ १० व्यतीत ॥ ४६ ॥ ११ बिना सामग्री १२ विपत्ति आने से ॥ ४७ ॥ १३ स्त्री. तातार और १४ आर्य्यावर्त के १५ बीच में ॥ ४८ ॥ १६ पराक्रम हीन १७ छोडकर ॥४९॥ १८ उस छोडेहुए बालक से १९ यह कन्या मार्गके किनारे परपड़ी थी ॥५०॥ २० बच्चा बच्चा कहकर विहाल होकर भूमि पर गिर पड़ी

तिहिं लखि अयाज पच्छोहि जाइ, लायो कनी सु उरतैं लगाइ ५१
कति कहत लख्यो सिसु कहनकाल, वपु वेढिरह्यो तस काल २ब्याल
वह गो भजि इहिं तनया उठाइ, अप्पी निज नारिहिं वहुरि आइ ५२
तँहँ मग मिलि सोदागरन ताहि, वसु ३कछुक दयो करुना निवाहि ॥
वाके वल लवपुर ४ तिनहु आइ, वासर ५ कछु कहे दुख विताइ ॥५३॥
वनिता१रु सुता२जुत सुनि सु वत्त, पुनि यहअयाज दिल्लीहि पत्त ६॥
साहहु तिम पटु सुनि लखि समाज ७, वह कियउ मीरबखसी अयाज
ताकै दुव२सुत हुव जदपि तत्थ, सो प्रीत तदपि तनयाहि सत्थ ॥
अति रूप सुता वह लखि अयाज, विय्याहु स्वीय सिखई सवाज ८ ५५
गुन१रूप२उभय२लाहि वहि गंगाय, वय मध्य१।३लहत हुव वाढि ९वरीय १०
पहिलैंहि फिरंगी पोर्तुगेज१, आय पुनि निज भुव अंगरेज२ ॥५६॥
अधिराज ११ राम२०३।४जिम यह उदंत, सव सुनहु सोहु क्रम अव
सुमंत ॥
अग्गैं यूरुपजन मग अजानि १२, अज्जनैं १३ भुव सोदागरन आन ॥ ॥ ५७ ॥
मग हेरि थके जिततित सदीप, पथ उत्तर४।१पच्छिम३।२लखि प्रैतीप १४॥
वहु वरफ फसे जिनके जिहाज, सहँसँन १५ जन मरिगय तउ सलाज ॥५८॥
उद्योगिन न तज्यो प्रैस्रभ १६ एह, आयेदक्खिन२।३दिस जिहिं अनेह ॥
समय१रु सोदागर नाम२संग, प्रभु राम२०३।४सुनहु अव हुव प्रसंग ५९
प्रसंग१ प्रसंग२ अन्त्यानुप्रासः १॥
संवत जब गुन सर तिथि१५५३समान, पावत तव नृप इह इहिं प्रमान ॥

१ कन्या को छाती से लगाकर लाया ॥ ५१ ॥ कितने ही कहते हैं कि उसकी माता ने बचा बचा कहा उस समय उस लड़की को काले २ सर्प ने घेर रक्खी थी ॥ ५२ ॥ ३ धन ४ लाहोर ५ दिन ॥५३॥ वह अयाज दिल्ली ६ गया ७सभा में ॥ ५४ ॥ ८शीघ्रता से ॥ ५५ ॥ ९ भारी १० सुन्दर ॥ ५६ ॥ ११ हे राजा रामसिंह जिसप्रकार यह वृत्तान्त है सो सुनो १२आगे यूरुप के लोग आर्य्यावर्त का मार्ग नहीं जानते थे १३ आर्य्यों की भूमि का ॥ ५७ ॥ १४ उलटे १५ हजारों मनुष्य ॥ ५८ ॥ तो भी उद्योगियों ने १६ हठ नहीं छोडा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

संग्राम१रान चित्तोर२सीस, इत बुंदी१नागयन१८७।१।२अधीस॥६०॥
गढ जोधपुर३ सु जब गंगदेव, आमेर भूप भगवंत एव ॥
लोदी४सु सिकंदर२८।५दिट लाह, सो हो जब दिल्लिय५पातसाह॥६१॥
वलि ज्ञान आगरा जिहिं बिथारि, पुर किय बादलगढ नामपारि॥
धल्लिय तस अकबर३७।१अधिक घेर, वदि सुनहु सिकंदर२८ही
हि वर ॥ ६२ ॥
रानाँ संग्रामा१दिक नरेस, वरनें जब तब हुव यह बिसेस ॥
पुर१ लिसबन२ जनपद२ पोर्टुगाल२, जब सज्जिय सोदागरन
जाल ॥६३॥

॥ दोहा ॥

सान्देन लिसबन साहको, पोर्टुगेज जन पाइ ॥
आवन तब अज्जेन अंवनि, भये सज्ज हितभाइ ॥६४॥

॥ हरिगीतम् ॥

वास्कोडिगामा नाम तिन विच मुख्य सोदागर बन्यों,
॥
राजा१ प्रजा२ बरज्यों कह्यो बहु पोत फसि हिममैं रहे,
बहुते मरे१ कछु बाहुरे२ जन ठंपग्रभाव बहे बहे ॥६५॥
पहुँचे न अज्जनखंड तू जिन जाहु जल मग पोततैं,
जन बरफ१तैं न बचै तथापि जथापि सागर स्रोततैं ॥
वास्कोडिगामा१ बुल्लयो तजिकैं उदीचि१।१ प्रतीचि ३।१स्यों,
के हों दे दक्खिन२।३ पंथमैं पहुचे जिहाज सभद्र ज्यों ॥६६॥
तिनतो जथापि मस्योगिन्यों यहतो तथापि चल्यो तथा,

॥ ६३ ॥ लिसबन नामक बादशाह की १ आज्ञा लेकर २ आर्य्यावर्त में ॥६४॥ ३ जहाज बर्फ में फंसे ४ व्याकुल ॥ ६५ ॥ ५ समुद्र के प्रवाह में ६ उत्तर ७ पश्चिम को छोडकर ८ अब ९ कुशलता पूर्वक ॥ ६६ ॥

पृथु[1] द्रव्य तीन३जिहाजभरिलिय आफ्रिका मगकी[2] प्रथा ॥
जो उत्तमासा १ केप अब गुडहोप २ नाम उभैं[3] भजैं,
तिंहिं अंतरीप गयो यहै जन साहसी[4] पन क्यों तजैं ॥ ६७ ॥
बास्कोडिगामा१ केप अब गुडहोपतैं मुरि बामकों,
धुव अद्ध जुत दस१०मास करि पहुँच्यो सु अंज्जन धामकों[5]॥
प्रभुराम२०३।४तँहँ सक अप्पनौं चउ पंच तिथि१५५४मित पिक्खयो,
भुव अप्पनी पहिलो१फिरंगी१एह तब प्रविसतभयो ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

मंदराज हाता२महिप, अनल कोन२ दिस आहि ॥
अंग्रेजन परतंत्र अब, तातैं नैऋत५।४ ताहि ॥ ६९ ॥
केरल[7]भुव आयो कहत, जलनिधि[8] तट पुर जत्थ ॥
कल्लीकोट जु नाम करि, तरिनें[9] लगाई तत्थ ॥ ७० ॥

॥ युग्मम् ॥

पुर दिल्ली कोटहि प्रथम १, सब उतारि संभार[10] ॥
लाभ अधिक तानैं लह्यो, वेचि सु वस्तन वार[11] ॥ ७१ ॥
इहाँ फिरंगी पुव्व यह, प्रविस्यो[12] इस मग पाइ ॥
लाभ बहुत धन लैगयो, लिसबन विभैव[13] लसाइ[14] ॥ ७२ ॥
पातसाह१ अरु सब प्रजा२, लखत ताहि हिय लाइ ॥
हुलसि[15] बधाई करतहुव, जितवित हरख जनाइ ॥ ७३ ॥
ताको इम जस१ जुत तबहि, सब यूरुप हुव सोर२ ॥

१वडे धन से. २आफ्रिका के मार्ग की रीति ली ३दोनों नामों को धारण करता है अर्थात् उस प्रान्त के दोनों नाम से प्रसिद्ध है ४साहसी पुरुष अपनी प्रतिज्ञा को नहीं छोडते । ६७ । ५ आर्य्यावर्त में पहुंचा ॥६८॥ ६अग्निकोण में है ।६९। कहते हैं कि वह ७केरल देश की भूमि में आया था ८ समुद्र के किनारे के ९ जहाज ॥ ७० ॥ १० सामग्री ११ समूह ॥ ७१ ॥ यहां सब से पहिले यह फिरङ्गी १२आया लिसबन नामक बादशाह के १३वैभव को १४ शोभायमान करके ॥ ७२ ॥ १५ प्रसन्न होकर ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

आगे लखि जलमग्ग यह, अब किन चल्लहु ओर ॥७४॥
पोर्टुगेज१ आदिक प्रचुर२, लंघु तब पूरपलोक ॥
धरि पोतन३ विक्रेय धन४, आनलगे इहिं ओक५ ॥ ७५ ॥
यातें सबनें अति अधिक, लह्यो विक्रय लाह६ ॥
लखि नु कतिन पुर लंडनहु, चित्त बढी सुहि चाह ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीशभोजभूपचरित्रे लाहलाहोराधिकारभोजनानकपन्थिहीरासिंहमारणात्तत्प्रान्ततापनिवारणम् १ कुमाररत्नसिंहकाशीचरणाद्रियवनेन्द्राधिपत्यार्थप्राप्ताज्ञान्वितसिरीफखांयवनमारणम् २ एतदपराधात्काश्यादिपुयवनेन्द्राधिकृत्याच्च कुमाररत्नसिंहस्य वाराणसीतो बुन्द्यागमनभोजस्य दिल्लीगमनोत्तरसप्रश्रययवनेन्द्रप्रसादापादनं ३ तातारागच्छन्नूरजिहांजनकायाजार्यावर्तागमनसमयाध्वान्तर्नूरजिहांप्रादुर्भवनलाञ्छित-लाहोरदरिद्रदशापन्नायाजदिल्लीगमनानन्तरसेनापतिपदवितरणम् ४ आर्यावर्ताध्वान्वेषकयूरपजनानेकपोतहिमग्रासनाशोत्तरपोर्टुगीजेशलिस्बनाज्ञावर्तिवास्कोडिगामानामवणिज आर्यावर्तप्रथमागमन ५

---

१ बहुत २ शीघ्र ३ जहाजों में ४ बचने का धन भरकर ५ इस स्थान में आने लगे ॥ ७५ ॥ ६ बेचने का लाभ ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज के चरित्र में भोज का लाहोर के सूबे पर जाकर नानक पन्थी हीरासिंह को मारकर उस सूबे का ताप मिटाना १ काशी और चरणाद्रि को खालसे करने की आज्ञा लेकर गये हुए सिरीफखां को कुमर रत्नसिंह का मारना २ इस अपराध के कारण और काशी आदि के खालसा होजाने से कुमर रत्नसिंह का सकुटुम्ब काशी से बुन्दी आना और भोज का दिल्ली जाकर नम्रता पूर्वक बादशाह को प्रसन्न करना ३ नूरजिहां के पिता अयाज का तातार से आर्य्यावर्त में आते समय मार्ग में नूरजिहां का जन्म होकर दरिद्र दशा में लाहोर होकर दिल्ली आने पर मीरबख़्शी के पद पर नियत होना ४ यूरप के लोकों के आर्य्यावर्त के मार्ग के ढूंढने में अनेक जहाज बर्फ में फसकर नष्टहुए पीछे पोर्टुगेज के बादशाह लिसबन की आज्ञा से वास्कोडिगामा नामक सौदागर का सब से प्रथम आर्य्यावर्त में आना ५ इसके अपूर्व लाभ को देखने

एतद्पूर्वलाभदर्शनोत्तरयूरुपान्यवणिजांलण्डननिवास्यांग्लानांचार्या-
वर्ताजिगमिषावर्द्धनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥ आदित एकोत्तरद्वि-
शततमः ॥ २०१ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत नृप रान प्रताप सुत, सुनि अकबर३७।१कछु सोचि ॥
सस्त्र पठाये सस्त्रधर, अब न काम आलोचि ॥ १ ॥
इम न भई तो डारि असि, दुल्ल्यो न अब विधान ॥
मोहि सस्त्र अवधानमैं, रक्खतहो इक रान ॥ २ ॥
सुनि यह अमर प्रतापसुत, खेटक४दुवरदुवरखग्ग ॥
पठये अकबरसाहप्रति, इम कहि बचन उदग्ग ॥ ३ ॥
रक्खहु अप्प प्रसन्न रहि, सस्त्र द्विरगुन अबसाह ॥
पुत्रहुरानप्रतापके, रक्खत निज कुल राह ॥ ४ ॥
पै पाछैं कति जन कहत, अति लोभी अमरेस ॥
हुकम साहको सह्रि हुव, उदयनैर प्रभु एस ॥ ५ ॥
सो भावीपै अब सुनहु, वर्णन खिन सक वत्त ॥
मह्रि अजन अंग्रेज मिलि, आये जिमि अनुरत्त ॥ ६ ॥

॥ वेतालः ॥

दिल्ली सिकंदर२८।१हो जहाँ बुंदी नरायनदास१८७।१।२ ॥
अवनी इलाँ मग लखन जस तब पोर्टुगेज१न आर्स ॥
जबतैंहिं यूरुपरके घनैंजन आनलग्गिय अर्त्थ ॥

स यूरुप के अन्य सौदागर और लण्डन के अंग्रेजों की आर्य्यावर्त्त में आने की चाहना बढने का अठारहवां १८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ एक २०१ मयूख हुए ॥

इन शस्त्रों से अब काम नहीं है यह १ विचार कर ॥ १ ॥ २ प्रवृत्त अथवा विधि अर्थात् अब शस्त्र रखने का काम नहीं है ३ शस्त्र रखने की सावधानता में ॥ २ ॥ ४ ढाल ५ उदग्र (निरंकुश) ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ प्रीतियुक्त ॥ ६ ॥ ७ भूमि और भूमि के मार्ग को देखने का यश पोर्टुगेजवालों को ८ हुआ ९ यहां

सबकेहि लाभ विसेस संचित भो जिहाजन सत्थ ॥ ७ ॥
अंग्रेज१लोकहु चाहि तबसैन अज्जजनपद२आन ॥
अब सज्जि च्यारि४जिहाज इन मिलि किन्न सीर प्रमान ॥
नरसाहतो जब हो नहीं नहिं इंग लंडन लाह ॥
निय नाम ऐलीजवथ१ही तहँ साहजादिय साह ॥ ८ ॥
अब है जैथा विक्टोरिया तिनसी हुती प्रभुतत्थ ॥
सासन नहींय लिखाइ इन लिय वनिज सीरिन सत्थ ॥
इनने हि वस्तुनको उहाँ क्रय अल्प पंद्रह१५ होइ ॥
वानिज्यनो कन जाइ बिरचहिँ छंदनें न बिगोइ ॥ ९ ॥

॥ सामान्यलक्षणोनोल्लालाविशेषणाकर्षरोला ॥

तब सासन ऐलीजवथ तिन्ह, अप्पि तिन रु पठये हि अँर ॥
कहि ईस्ट१इंडिया२कंपनी३, पुब्ब१अज्जभुव२वनिक३पर ।१०।
सब सीरदार सोदागर१न, कहत उहाँजनकंपनी२ ॥
तिम पुब्ब१ईस्ट२अरु इंडियो१, भुव अज्जन१जावत भनी ।११।
कनि सीरदार वानिज्य कर, ऐलीजवथ निदेस इम ॥
अंग्रेज१ प्रथम आये इहाँ, जोहु समय सुनिये हैं जिम ॥ १२ ॥
इत दिल्लीपति यह अकबर३७११२हि, इत बुंदी नृप भोज१९१२यह
असरेस२ रान सीसोद इन, सूर४जोधपुर इत सु मह ॥ १३ ॥
आमेर मान१५ छत वनिक१६ ए, चउ४ जिहाज धरि द्रव्य१७ चय१८ ॥
अंग्रेज२प्रथम आये यहाँ, सक रस सर सोलह१६५६समय ।१४।

॥ ७ ॥ १ तब से २ आर्य्य देश में आने लगे. उस समय ३ पुरुष बादशाह नहीं था ॥ ८ ॥ ४ जिसप्रकार इस समय विक्टोरिया है तिसप्रकार उस समय ए-लीजेबिथ नामक मलका थी ५ उसकी आज्ञा ६ छल से ॥ ९ ॥ ७ शीघ्र ८ आ-र्य्यावर्त्त के पूर्वदिशा के व्यापार पर ॥ १० ॥ ९ हिस्सेदार व्यापारियों को यहाँ कम्पनी कहते हैं १० पूर्वदिशा को ईस्ट, और आर्य्यावर्त्त को ११ इंडिया कहते हैं ॥ ११ ॥ १२ अब ॥ १२ ॥ १३ शीशोदियों का सूर्य राणा अमरसिंह १४ सूर-सिंह ॥१३॥ १५ मानसिंह १६ व्यापार करनेवाले १७ धन के १८ समूह से॥१४॥

प्रभुराम२०३।४ आइ इम निज पुहवि; साधुभाव सह रीतिसन ॥
वानिज्य करनलग्गे बिबिध, चितवत दृढ अप्पन चलन ।१५।
अकबर३७।१हु साह दिल्लीस इत, कंटक हत राज्यहिँ करत ॥
सासन तदीयँ भूपाल सब, धन१तन२मन३बचन४न धरत ।१६।
सक अट्ठ पंच सोलह१६५८सु कवि, केसव विप्र कवित्व करि ॥
श्रीरामचंद्रिका१ ग्रंथ सुभ, पारंभिय पद्धति पकरि ॥ १७ ॥

त्वकारि१ पकरि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

अप्पिय सुनसब अग्ग हहु१कहँ पंचहजारी ५००० ॥
सत्तहजारी७०००सहित कुम्म२किय निज अधिकारी ॥
रीति इहाँ प्रभु राम२०३।४बिबिध जन बिबिध बतावत ॥
पै बहु बुधन प्रमान जथा निज सुकवि जतावत ॥
रुप्पय१तृतीय३अंसँ जु रहत वह मन्नहु इक१दाम अब ॥
तिन्ह त्रिक३सु इक्क१रुप्पय तिमहिँ तिनँकरि हो व्यवहार तब ॥

---

१ हे प्रभु रामसिंह २ अपनी भूमि (आर्य्यावर्त) में ३ अष्ट भाव से ॥ १५ ॥ ४ उसकी आज्ञा ॥ १६ ॥ ५ केशव नामक ब्राह्मण कवि ने ६ कवियों का मार्ग पकड़कर ॥ १७ ॥ ७ कछवाहे को. हे प्रभु रामसिंह अनेक लोग ८ अनेक विधि बताते हैं परन्तु ९ बहुत विद्वानों के मत से आपका कवि कहता है. एक रुपये के तीसरे १० हिस्से को ११ एक दाम जानो इसीप्रकार १२ उन तीन* दामों का अेक रुपया जानो जिससे सब व्यवहार होता था

---

* यहां पर ग्रन्थकर्ता ने रुपये के तीसरे हिस्से को एक दाम रक्खा है परन्तु निश्चय नहीं होता कि ग्रन्थकर्ता को यह प्रमाण कहां मिला है क्योंकि दाम का यह प्रमाण बहुत अधिक है, हमने बादशाही फरमानों में छोटे छोटे परगनों की आमदनी (रेख) के क्रोड़ों दाम लिखे देखे हैं सो यदि उन दामों का प्रमाण रुपये का तीसरा भाग समझाजावे तो उन परगनों की आमद किसी अवस्था में भी इतनी नहीं होसक्ती, हमने जहां तक फारसी तवारीखों में इस प्रकरण की जांच की तो दाम की तादाद एक रुपये के चालीसवें हिस्से की निश्चय हुई सो ही ठीक समझी जासक्ती है, अर्थात् चालीस दाम का एक रुपया होता था। इसका अधिक विवरण देखना होवे तो तवारीख "गयासुल्लुगात" में देखो और मुन्सब के विषय में आईन अक्बरी में लिखा है कि बादशाह अकबर के समय में दश से लेकर दश हजार पर्यंत मुन्सब थे इनमें जात का बराबर सवार हो तो वह प्रथम श्रेणी का मन्सब माना जाता है और जात से आधे तक

अयुत च्यारि४००००दाम इम जु इक१बिस्ती२०मुनसब जँहँ ॥
दोइ२लक्ख२०००००मिलि दाम तिमहि इक१सदी१००को तँहँ
बीस२०लक्ख२००००००दाम बलि हुतो पद इक१हजारी१०००
पंच५हजारी५०००प्रथित कोटि१०००००००दामन अधिकारी ॥
मुनसब हि कहत सेना प्रमिति१क्रम तिन दामन करि किते ॥
कति कहत हुते इँहिँ मान करि इन दामन पर हय२इते ।१९।

॥ दोहा ॥

सूबा अकबर३७।१ सीमके, विदित सह्रबाईस२२ ३ ॥
कहुँ देस१न कहुँ पुर२न करि, मन्नहु ख्याति महीस ॥ २० ॥

॥ पद्धतिका ॥

तँहँ सूबा दिल्ली१प्रथम१जानि, पुनि सोहु लेहु देहली१प्रमानि ॥
सूबा द्वितीय२पुर आगरासु, जिम नाम अकबराबाद२जासु ।२१।
लाहोर३सु लवपुर३गेय गम्य, रावी तट वाम सु वसत रम्य ॥
मुलतान४नाम बलि पुर४समेत, कसमीर५श्रीनगर५पुर निकेत
पेसोर६पिसावर६कहतकेहु, त्रय३वढ मिलि कावल७।१इक१
रु तेहु ॥
उत्तर४।७अफगानिस्तान१आस, जमँ ओर२।३बलूचीस्तान२जास
हैं चर्म३।५खुरासान३सु हिरात३, दावल७इक१ए त्रय३मिलि

१प्रसिद्ध २ सेना के प्रमाण से ३ इस प्रमाण से इन दामों पर इतने घोड़े होते थे ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ उसी दिल्ली को दहली कहते हैं ॥ २१ ॥ ५ कहते हैं ६ सुन्दर ॥ २२ ॥ ७ दक्षिण दिशा ॥ २३ ॥ ८ पश्चिम

सवार हो तो वह दूसरी श्रेणी का मन्सब है और जात से आधे से भी कम सवार हो तो वह तीसरी श्रेणी का मन्सब है, इन प्रत्येक मन्सब के साथ घोड़े, हाथी, ऊंट नियत थे और प्रत्येक मन्सब के साथ वेतन(तनखा)भी नियत थी जिसमें विशेष कर परगने दिये जाते थे, इसका उक्त ग्रन्थकर्ता अबुलफ़ज़ल ने एक नक्शा भी लिखा है परन्तु वह विस्तार के भय से यहां नहीं लिखा जासक्ता. बादशाही समय में एक प्रकार के तोल का नाम भी दाम था. और वर्तमान समय में एक पैसे के पचीसवें हिस्से को दाम कहते हैं अर्थात् पैसे के २५ दाम होते हैं परंतु यह व्यवहार वाणिज्य में है बादशाही दाम तो एक रुपये के चालीस ही मानने चाहिये ॥

कहात ॥

पुर गजनी१सुहि जाबुल१पुरान, पुर काबुल२नूतन१ अब प्रधान॥२४॥
ता२केहिनाम मुलक सु७प्रतीत, वाला हिसार३।१तँहँ गढ विगीत२ ॥
है ता७सन नैर्ऋत४कंदहार८।१, कादि रु८।२खंधार८।३हु तस प्रकार ॥ २५ ॥
इँ८हिंसीम अमल किय वरुनँ ओर५।३, दक्खिन३।२दिस ११८ इनसन सुनहु दोरँ ॥
सूबा अजमेर९।१हु पुर२सनाम, गुजरात१०दसम१०पुनि सहँस १०००ग्राम ॥ २६ ॥
अहमदआबादक१०।१पुर२अधीन, जो मिलि सुरठ१गुज्जर२जमीन१० ॥
मानत सुरठ११कति भिन्नमान, थप्पत वहु दु२हि गिनि दसम १०थान ॥ २७ ॥
ठट्ठो११।१पुर१भक्खर२दुर्ग२ठानि, जो सिंधु११ग्यारहम११देस जानि।
इत सूबा मालव१२पुर अवंति१२।१, पुनिखानदेस१३सुख थान पंति ॥ २८ ॥
बुरहानपुर१३।१सु पुर प्रथम१वास, अब नव्य२धूलिया१३।२दंग आसँ ॥
औरंगाबाद१४।१हिं भिन्न भक्खि, सूचत कति तत्थ१३हि नगर सक्खि ॥ २९ ॥
सूबा बीजापुर१५।१समनँ ओर३।३, अरु भागनगर१६।१बल दँमन ओर१।१ ॥

॥ समनओर१दमनओर२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

पुर नाम हैदराबाद१६।१पाइ, सुहि भागनगर१६।१अब जग

१नवीन॥२४॥२कहते हैं ॥ २५ ॥ ३ पश्चिम दिशा ४फैलाव ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ नवीन धूलिया नगर ५है ॥ २९ ॥ ६ दक्षिण दिशा में ७ अग्निकोण ॥ ३० ॥

सुहाइ ॥ ३० ॥

कर्णाट१७हु सूबा कहि कहंत, सूचत पुर अरु अटि१७१तँहँ सुमंत ॥

थिर खानदेस१८लन पुव्वथान, सूबा बरार१८जानहु सुजान ३१

अलकपुर१८१ *पुरातन देश ग्रत्थ, जग ख्यात नागपुर१८२ नैव्य जत्थ ॥

इत पुव्व१९ इलाहाबाद१९१आहि, सोही प्रयाग१९१ अघहर सदाहि ॥ ३२ ॥

जिहिं उत्तर४१७ सूबा अवधि२०१२ जानि; पुर आदि१ अयोध्या २०१सुंहि प्रमानि ॥

नृप जिनहु बंगला २०१ मध्य२नैर, सुहि फैजाबाद२०१२ हु रम्य सैर ॥ ३३ ॥

तँहँ पुर लखनेऊ२०१२अब तृतीय३, कहियत लक्खनउर २०१३ प्राकृतीय ॥

सूबा बिहार२१।१ पूरव१।१दिसा रु, चित गयपुर२१।२ पाटलि पुत्र२१।२ चारु ॥ ३४ ॥

तृतीय१कृतीय२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इस पुव्व२।१हि सूबा बंगदेस२२, बरनत जँहँ ढाका२२।१पुर बिसेस

उड्डीसह२३उत्कल२३ निज दु२ नाम, जो सूबा पूरव १।१ जल धिंजाम ॥ ३५ ॥

गढ १ बारह भट्टी २३।१ जँहँ गिनात, पुर२ कटक २३।१ नाम तँहँ धाम पात ॥

इनमैं इक१कोउक गिनत अद्ध१, सूबा इम ए बाईस सद्ध२२ ॥३६॥

सीमाभुव अप्पन बंटि साह, बंध इम जय करि नय निवाह

---

*पुराना १नवीन २ पाप मिटानेवाला ॥३२॥ ३३ ॥ ३ प्राकृत भाषा जाननेवाले ४ समुद्र से उत्पन्न अर्थात् समुद्र के किनारे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ नीति

इत पुब्ब१।१जीति आसामअंत, दब्बे प्रदेस सब बल दुरंत[1] ॥ ३७ ॥
दक्खिन२।३कर्णाटक२लग दबाइ, निज किय बहु भूपति पयन नाइ
इत कंदहार३काबल३उपेत, दब्बिय दिस पच्छिम३।५जोर देत।३८।
उत्तर ४।७ हिमाद्रि४ लग स्ववस आनि, प्रतप्यो सु अखिल सिर जित प्रमानि. ॥
अरु सासन बाहिर लखत आप, पायो इक१रानाँ वह प्रताप ॥३९॥
साहस बल बिनु दल खग्ग[2] साहि, बाजी[3] प्रानावधि[4] गो निबाहि ॥
अब सुनहु राम२०।३४ प्रभु वृत्त[5] एह, अकवर३७।१ सुत मोहित जिम अछेह ॥ ४० ॥
नौरोजन सम सब नगरनारि, निजनिज घरबाहिर थितनिहारि ॥
स्व जनक सन छन्नँ जिहिँ सलेम३८।, प्रमदा[6] वह पिक्खी धारि प्रेम
भाखी अयाजतनया जु भूप, राची निज गुन१वय२कांति३रूप४ ॥
इहिँ पुब्ब अँनूढा[7] पिक्खि एह, सबविधि धारतहुव दृढ सनेह ।४२।
पै तिहिँ अयाज यह सुद्धि पाइ, स्वीकार न किय अनुचित सुनाइ
अरु व्याहि सेर अफगानअर्थ, सबविधि सुदाय[8] दिय बसु समर्थ ।४३।
सो तकि सुखहि रहिगो सलेम ३८।१, न सक्यो सफली[9] करि प्रीति नेमँ ॥
बनिताहु[10] सलेम३८।१हिँ प्रिय बिचारि, ही रत्त[11] तदपि हुव एह हारि
इम पुनि नोरोज१हिके अनेहँ[12], अंखिनँकरि[13] मिलतहि यह१रु एह२
प्रछन्न[14] दुव२हि कढि बिजनपत्त[15], निकटहि कहुँ निष्कुट[16] रमन रत्त[17]

---

१ दूर है अन्त जिसका ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ हुक्म के बाहर एक राणा प्रतापसिंह ही पाया सो २खड्ग लेकर ३ दाव ४ जीवन पर्यंत ५वृत्तान्त ॥ ४० ॥ ६ स्त्री को ॥ ४१ ॥ ७ अविवाहिता (कुमारी) ॥ ४२ ॥ ८ दायजा ॥ ४३ ॥ अपनी प्रीति के नियम को ९ सफल नहीं करसका १० वह स्त्री भी ११ प्रीति युक्त थी ॥ ४४ ॥ नोरोजों के १२समय में १३ नेत्रों से मिलकर अर्थात आंख से आंख मिलते ही १४ छांने १५ अकान्त में गये १६ घर के समीप का बाग १७ रमण करने में आसक्त होकर ॥ ४५ ॥

धरि रक्खक अनुचर उचित धाम, कामुक जुग मिलिगय तँहँ प्रकाम
वनिता सब तब नारोज़ वार, अति तंग पहिरि आती इजार ।४६।
तस ग्रंथ स्वस्व पति जरत ताल, कुंची ढिग रक्खत गमनकाल ॥
पर ऐनरंग वह दिवस पाइ, वँहि रंग तिलक लहँगा बनाइ ।४७।
आयौ बन्दाहिर तिमहि एह, निकसी अयाजतनया सनेह ॥
पै अब सलेम सन रमन प्रीत, वह रीति करी तिहिं इम
अतीत ॥ ४८ ॥
निष्कुट तरु साखा लुंबि नारि, तालित इजार वह दिय उतारि
लहि इष्ट हरुगि वपु तिम लँफाइ, लुंबी गुहि साखा करन लाइ ४९।
जिम पुब्ब तिमहि तिहिं गुहि इजार, पहिराइ कुमर दिय करत प्यार॥
ऐसे प्रबंध बोधहि अधीस, संसय है प्रत्युत तियन सीस ॥ ५० ॥
उघराइ बस्त्र लै लहि इष्ट, दीसैं न किमहु सीलोपदिष्ट ॥
इम ताहितु पिहितासक्ति आनि, चाहतरह्यो हि नैय न पहिचानि ।५१।
पै जोग जनक अकबर ३७१ प्रताप, अलपहु न सक्यो करि किमहु
आप ॥
इतरहु करि इत नय बहु उदंत, इहिं जनक कुपायेउ जियन
अंत ॥ ५२ ॥
पहु भोज १९१२ हु अकबर ३७१ सिक्ख पाइ, बुंदीपुर हायन
चउ ४ बिताइ ॥

---

१ कामी २ विशेष कामना से. सब ३ स्त्रियें ४ पैजामा ॥ ४६ ॥ उनके पैजामों के नाड़ों में ५ अपने अपने पति ताले लगा देते थे ६ वह वस्त्र भीतर रखकर ७ ऊपर ८ यवन वस्त्र विशेष जो गले से पैरों तक लहँगे के आकार रहता है ॥ ४७ ॥ ९ उस रीति को दूर करी ॥ ४८ ॥ १० बाग के एक वृक्ष की शाखा से लटक कर ११ ताला जुड़े हुए उस पैजामे को उतार दिया १२ शरीर को पतला करके १३ हाथों में उस शाखा को पकड़कर लटकी ॥ ४९ ॥ १४ जैसा पहिले था तैसा १५ वृथा १६ उलटा ॥ ५० ॥ १७ उसके शील में उपदेश नहीं दीखे १८ छाने आसक्ति लाकर १९ नीति को नहीं पहिचान कर ॥ ५१ ॥ और भी अनीति के बहुत २० वृत्तान्त किये. जीवन पर्यंत पिता को २१ कोपित किया ॥ ५२ ॥ २२ वर्ष ॥ ५३ ॥

जे बिबिध कृत्य किय तँहँ जनेस, अग्रिम मयूख कहिहैं असेस ५३
पुनि सिक्खअवधि गय *इंदपत्थ, तनु छोरिय अकबर३७।१तबहि तत्थ
†प्रभुभाव अब्द इक१घटि पचास४९, भूमी जिहिं भोगी असह भास॥
अब ससि रस सोलह१६६१सक अनेह, परलोक पत्त बपु उ-
जिझ एह ॥
प्रभु सुनहु इहाँ मतभेद पाइ, दुव रीति लिखत संसय दिखाइ ॥५५॥
कति कहत तीन३अकबर३७।१तनूज, पहिलो१सलेम३८।१तँहँ
अजस पूज ॥
परेज३८।२नाम दूजो२प्रबीन, कछवाहिगर्भ जिहिं बास कीन ५६
तीजो३तनूज कहियत जुतास, अभिधा तस दानासाह३८।३आस
अब साह मरत आमेरईस, सब पंच कोरि कछु लोभ सीस ।५७।
परेज३८।२स्वसासुत धरन पट्ट, किय मंत्र स्व भुव बाहन कुबट्ट ॥
परेज३८।२अनुज तब भोज१९।१।२पेलि, थप्पिय सलेम३८।१
पर मत उथेलि ॥ ५८ ॥
सुत इक्क१सलेम३८।१हि कति कहंत, मग तजि पै इच्छत अ-
नयंत ॥
पुनि हे सलेम३८।१कै उभय२पुत्त, जेठो तहँ खुसरो३९।१नीति
जुत्त ॥ ५९ ॥
ताकोहि नाम परेज३९।२तत्थ, सिसु अनुज खुर्रम३९।२सुत
हो समत्थ ॥

* इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) † स्वामिपन ॥ ५४ ॥ १ समय में २ शरीर छोडकर ३ सन्देह ॥ ५५ ॥ ४ पुत्र ५ अपयश में प्रतिष्ठा पाया हुआ ६ आमेर के राजा भगवानदास कछवाहा की पुत्री के गर्भ ॥ ५६ ॥ ७ नाम ८ हुआ ॥ ५७ ॥ ९ बहिन के पुत्र को १० कुमार्ग से. उस छोटे * परेज को बुन्दी के राव भोज ने ११ हठाकर ॥ ५८ ॥ १२ अनीति ॥ ५९ ॥ १३ बालक

* अकबर के तीन पुत्रों में छोटे दो तो अकबर के समय में ही मर चुके थे, उसके देहान्त के समय एक सलीम ही बाकी था सो पिता के सिंहासन पर बैठा ॥

यातें सलेम३८।१की लखि अनीति, परंज ३९।१ मांहिं किय
मानें प्रीति ॥ ६० ॥
तातें पैठानहो सु ताहि, चहुवान भोज१९।१२तव धर्मचाहि ॥
अक्खिय न जनक१छत सुत२हिं जानि, करिहैं सलाम हम
स्वामि कानि ॥ ६१ ॥
पहु नरहिं बघेलन करि सपीर, सब हुव बुंदीस१हुभोज१९।१२सीर
रामगढ१श्रीनगर२केंहु राज, अरु दुव२नवाव२तीजो३अयाज३॥६२॥
इन जद र तीन३नृपतीन३अज्ज, सह बल बुंदीपति ओर सज्ज ॥
इम न हुव मानचिंतित अनीति, रक्खिय हड्ड६१नपति धर्मरीति ॥
थिर नाहिय थप्यो सुहि सलेम३८।१, पै हो यह अघकर कुम-
गं प्रेम ॥
जिहिं हनन सेरअफगान जानि, पठये बहु घातक छल प्रमानि॥६४॥
यह गानि सोहु बचि खिन अनेक, कढिकढिगो मारक बं-
चिं केक ॥
बचिबो परंतु कबलग बनाइ, जँहँ लक्खन दलपति रुट्ठि जाइ ॥६५॥
मारयो सु सेरअफगान मंद, छिन्नी तस जाया कौमछंद ॥
पुत्री अयाजकी जो सपंक, निजगृह सलेम३८।१डारी निसंक ॥६६॥
धारि जहाँगीरा३८।१भिधान, दिय नूरमहल१तिहिं ना-
म दान ॥
इहिं जनक अयाज१सु कियवजीर, साले२हु बडे अधिकार सीर
इम हैसलेम३८।१दिल्ली अधीस, सठ रुट्ठो जेठे१पुत्र सीस ॥

---

१ मानसिंह ने ॥ ६० ॥ २ पिता के होते हुए ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ३ आदि ४ इन कारण मानसिंह की विचारी हुई अनीति नहीं होसकी ॥ ६३ ॥ ५ पाप कारके ६ कुमार्ग में प्रेम करनेवाला ७ छल के प्रमाण से अर्थात् छल करके ॥६४॥ मारनेवालों को ८ ठग कर ९ लाखों सेना का पति क्रोधित होजावे तब कब तक बचै ॥ ६५ ॥ १०काम के वश होकर उसकी स्त्री को छीन ली ११कलंक युक्त ॥ ६६ ॥१२जहांगीर नाम रखकर१३ दिया ॥६७॥ बडे पुत्र पर १४ कोधित

बैठारतहे ईहिं इम बिचारि, दिन्नौं खुसरो३१९१२वह कैद डारि ।६८।
हत्थी१हयाश्दि बिहितोपहार१, सब नृपन निवेद सबन सार ॥
बलि किय उत्तारन२वसु विसेस, इम सब सचिवादिन किन्न एस

॥ दोहा ॥

तदनंतर कछु दिवस तँहँ, रहि हड्ड६१न अधिराज ॥
पुर बुंदिय लहि सिक्ख पुनि, सो आयउ बल साज ॥७०॥
गुन रस सोलह१६६३सक लगत, पंचमि५मधु१सित२पाइ ॥
कुमर रत्न१६२१के कुमरकै, भयो कुमर जसभाइ ॥ ७१ ॥
सत्रुसल्ल१९४१तस नाम सुभ, भाख्यो भूपति भोज१९११॥
यह पैहैं सबतैं अधिक, अवनि१धर्म२जस३ओज४ ॥ ७२ ॥
पाई भोज१९११रहु जे प्रजा, परिनाई जिम पुव्व ॥
सुनहु तिन्हहु स्वसुरन सहित, दिय जिनजिन दधि१दुव्व२ ।७३।
भूप व्याह पुव्वहु भनैं, अवहु प्रसूचन अत्थ ॥
जथा अनूढ खवासि जन, सबे सुनहु क्रम सत्थ ॥ ७४ ॥
कुलवर्द्धक१अरु अल्पकुल२, पुत्रन हित महिपाल ॥
दये थान जेजे उदित, सुनहु तेहु रिपुसाल ॥ ७५ ॥
नृप१इतउत रानिन निकर२, बहुरि खवासिन व्रात३ ॥
कृत्य करे कछु दुष्करहु, उनबिच जस अवदात ॥ ७६ ॥
सुरगृह१ सौध२निपान३सुभ, उपवन४आदि अनेक ॥
सती तियनपतिसह गमन५, बिदित सुनहु सबिबेक ॥ ७७ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ६राशौ बुन्दीशभो-

हुआ १ इसको तख्त बैठाते थे सो विचार ॥ ६८ ॥ २ उचित नजराना ३ न्यौछावर ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ४ चैत्र सुदि ॥ ७१ ॥७२॥ ५ सन्तान ६ दूर्वा (विवाह के समय पर दही दोब देने की आर्य्यों में रीति है) ॥ ७३ ॥ ७ विशेष सूचना ८ विना विवाही ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ९ समूह १० समूह ११ कठिन कार्य १२ उज्वल ॥ ७६ ॥ १३ मन्दिर १४ महल १५ जलाशय १६ बाग १७ प्रसिद्ध १८ विचार पूर्वक ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज

जचरित्रे उदयपुराधिपप्रतापसिंहवधत्यक्तायुधाकबरान्तिकराणाऽम
रसिंहद्विगुणशस्त्रप्रेषणं १ प्राप्तलण्डनाधीशराज्ञयेलीजबथाज्ञेङ्गले-
ण्डदेशागतेगिंडयाकम्पनीतिसंज्ञाधरवणिग्जनकृतसूचितशकसम--
यार्यावर्तव्यापारप्रवर्तनं २ दिल्लीशकालिकद्रम्माधिकारविवेचनपूर्वा--
कबरसामयिकसार्द्धद्वाविंशतिप्रान्तपरिगणनं ३ नवाहमहजहांगीरनू--
रजहांप्रथमसमागमकथनं ४ अकबरमरणानन्तरसुतमतभेददर्शनोत्त
रजहांगीरराज्यसमासादनं ५ कृतशेराफगानवधजहांगीरतत्स्त्रीनूरजहां
पत्नीकरणं ६ बुंदीशभोजप्रपौत्रशत्रुशल्यप्रादुर्भवनं ७ भोजस्त्रीसन्त--
त्यादिकृतस्थानसूचनमेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

आदितो द्व्यधिकद्विशततमः ॥२०२॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भोज[१६।१।२]नृपतिके सुत भये, सप्त७प्रमित अति सूर ॥
सुता तीन३ प्रकटी सुगुन, प्रगुन धर्म१ कुल२पूर ॥ १ ॥
पुत्र च्यारि४ रानिन प्रसव, तीन३तथा दुहितोहु ॥

के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह के मरने से शस्त्र त्यागनेवाले अकबर के समीप राणा अमरसिंह का द्विगुण शस्त्र भेजना १ लंडन की रानी एलीजबथ की आज्ञा लिखवाकर इंग्लिस्थान से आये हुए व्यापारियों का सूचना किये हुए सम्वत् में ईस्ट इंडिया कम्पनी के नाम से आर्य्यावर्त में व्यापार खोलना २ बादशाही समय के दाम और मुनसबों के विवेचन के साथ अकबर के समय के साढे बाईस सूबों की गणना करना ३ नौरोजों के उत्सव में जहांगीर और नूरजहां के प्रथम समागम का कथन ४ बादशाह अकबर के शरीर छोडने पर उसके पुत्रों के मत भेद दिखाने पश्चात् जहांगीर का बादशाह होना ५ बादशाह जहांगीर का शेर अफगान को मारकर उस की स्त्री नूरजहां को घरमें डालना ६ बुन्दी के राजा भोज के प्रपौत्र शत्रुशाल का जन्म होना ७ भोज के सन्तान तथा रानियें आदि स्त्रियों के अथवा उनके बनाए हुए स्थानों की सूचना करने का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ दो २०२ मयूख हुए ॥

१प्रमाण २ विशेष गुणवान् ॥ १ ॥ ३ रानियों के प्रसव से ४ पुत्रियां

तीन३खवासिनकै तनय, विदितभये बल बाहु ॥ २ ॥
रतन१९२।१हृदयनारायन१९२।२रु, दृढबल केसवदास१९२।३ ॥
रानिन प्रसव मनोहर१९।४हु, यह चतुष्क४प्रभु आस ॥ ३ ॥
सुता बडी सुभमति१९२।१ सुही, कहियत रत्नकुमारि१९२।१ ॥
महितकुमरि१९२।२तिम भानुमति१९२।३, सुद्ध द्विरकुल अनुसारि
इत वलू१रु संकर२ अतुल, वलि गोवर्द्धन३वीर ॥
तीन३खवासिनकै तनय, *सनय भये जय सीर ॥ ५ ॥
जाया सप्तक७ भोज१९१।२कै, वरनिय सुद्ध दु२वंस ॥
तस खवासि चउ४हुव तिमहि, अधिक सतीपन अंस ॥ ६ ॥
पहिली१ फुल्ललता१ रु पुनि, रूपलता२ अभिराम ॥
वलि कर्पूरलता ३ विदित, दिव्यलता ४उद्दाम ॥ ७ ॥
जिन अपत्य जे जे जनिय, कहनभयो तिन्ह काल ॥
ग्रथित नाम छप्पय गिनहु, प्रथित राम२०३।४ भूपाल ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

वल्लन चालुकबंस राजकुमरि१९१।१ जु पटरानिय,
सुत रयन१९२।१रु सुमति१९२।१ सुता सु जाठर तस जानिय ॥
क्रम तीजी३ जसकुमरि१९१।३ जनँ रट्ठोरिजुग२हि जिम ॥
हृदयनरायन१९२।२बहुरि महितकुमरि१९२।२ सु अपत्य इम ॥
रानीद्वितीय२जो कूरमिय जाहि जसोदा१९१।३ भनत जग ॥
सुत केसव१९२।३भानुमति१९२।३सुता संतति तस उभय२हि सुभग ॥

॥ दोहा ॥

भाग्यवती१९१।४चोथी४ भनिय, रामसुता रट्ठोरि ॥
तनय मनोहर१९२।४ प्रसव तस, जानहु इत क्रम जोरि ॥१०॥
फुल्ललता१सुत छवि फवत, वलू१कुमर इत बुद्ध ॥

॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ * नीति सहित ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ सुन्दर २ निरंकुश ॥ ७ ॥ ३ सन्तान ४ गुथे हुए ५ विदित ॥८॥ ६ उदर से ७ सन्तान ८ सुन्दर ॥९॥ १०॥

रूपलता२ सुत संकर२सु, रक्खन चोरन रुंध१ ॥ ११ ॥
गोवर्द्धन ३ तीजो ३ गदित, सुत कर्पूरलता ३ सु ॥
जन्यों महाभुज करन जय, अरि दुर्गन चढि आसु३ ॥ १२ ॥

॥ पद्धतिः ॥

रतनेस१९२कुमर हड्डन नरेस, उपयम४ नव९व्याह्यो सुकुल एस
सुत हृदयनरायन१९२।२व्याह सत्त७, पहु रैन१९२।१विवाह्यो अप्रमत्त५
अपनैं मन पीछैं कुमर एह, स्व विवाह पंच५ व्याह्यो सनेह ॥
व्याह्यो पुनि केसव१९२।३पंच व्याह, नृप रैन१९२।१ठानि मह हड्ड९१नाह
न चउम४मनोहर१९२।४संभरीक, उपयम दुव२व्याह्यो रन अभीक६
आमैरकुमर जगतेसअर्थ, सुभमति१९२।१सुता सु व्याहिय स-
मर्थ ॥ १५ ॥
अनुजाँ तनुजा दुव२मृत अनूढ७, त्रिक३तुल्य वधू१मुख त्रिक३
हु व्यूढ८ ॥
वलि सवन स्वसुरपुर१नाम२वंस३, अब सुनहु राम२०३।४प्रभु
कुलवतंस१० ॥ १६ ॥
नृप भोज१९१।२पुव्व दिल्लीनिवास, कूरम निमंत्रि बुल्ल्यो स-
कास११ ॥
तँहँ मान कहिय मम इक१सुता सु, सुत रत्न१९२।१हिं व्याहहु१
आदि१आसु ॥ १७ ॥
नृप कहिय जाइ बुंदी निकेत१२, पुनि दूत पठैहौं हित उपेत ॥
संबंध करन उपहार१३ सत्थ, तव अप्प पठावहु सुजन तत्थ ॥१८॥
यह कहि तब बुंदी भोज१९१।२आइ, पुच्छ्यो इम रान सु दल१४
पठाइ ॥

---

१ रोकनेवाला २ कहते हैं ३ शीघ्र ॥ १२ ॥ ४ विवाह ५ सावधान ॥१३॥१४॥ ६ निर्भय ॥ १५ ॥ राजा की पुत्रियें जो सुभमति की ७छोटी बहिनें थीं ८बिना व्याही मरगईं ९ विवाहे १० कुल के मुकुट ॥१६॥ ११ समीप ॥ १७ ॥ बुन्दी के १२ स्थान में १३ सामग्री सहित ॥ १८ ॥ १४पत्र

मम सुतहिँ सुता निज देत मान, रुचि अप्पनं कैसी लिखहु रान॥
पच्छी कंहिपठई तब प्रताप, अग्गैँ सु ताहि दूदा१९१।२रु आप १९१।२ ॥

आमैर मान१जगतेस२अत्थ, तब दिय हम पुच्छे क्यों न तत्थ २०
हुव सु बिधि जनकवस कहिय हड्ड६१, अव अप्पहिँ पुच्छत न कछु अड्ड॥

पुनि रान पत्र दिय इम पठाइ, लेहु व तिन कपटिन यह लिखाइ॥ २१ ॥

ब्याहैं न सुता जवनन बहोरि, चुक्कैं न वचन कहुँ चित्त चोरि॥
कूरम१लिखिदे सुहि तो कुमार, परिनावहु ह्वै जिम जस प्रसार २२
पुनि यह हि कबंध२न देहु पत्र, तिम भट्टी३सोढ४न लिखहु तत्र॥
सुहि नृप लिखाइ पठई सुबोध, रान सु प्रताप हठि करत रोध२३
उनके अनुमतविनु नहम ईस, हिंदुरवि वजत अब जे महीस॥
दुहिता तुम जवनन पुनि न दैन, भेजहु लिखि अकपट गिनहु भै न॥ २४ ॥

नहिंतो सीसोद१नके निकेत, हड्ड२न सति ह्वैहैं ब्याह हेत॥
अनखाइ सुनत यह महिप मान, किंल चिंतिय डारन साह कान॥
पंचन तँहँ अक्खिय हे नृपाल, जाति सन चलत१व्यवहार जाल॥
जातिसन रुकत२तँहँ इतर जोर, अल्पहु चलिसकत न न्याय ओर॥ २६ ॥

दै अकबर३७।१हड्ड६१न जो हु दंड, खिल भूप तोहु पलटैं अखंड॥
सिलगावहु क्यों दवं गिरिन सीस, अनुमत लिखिभेजहु पिहितैं ईस॥ २७ ॥

भेजकर महाराणा से पूछा १ आप की क्या रुचि है॥ १९ ॥२० ॥२१॥ २ फैलाव॥ २२॥ ३ रोकते हैं॥ २३॥ ४ सलाह विना ५ जो हिन्दुवासूरज वजते हैं ६ कपट रहित॥ २४॥ ७ घर में ८ निश्चय॥ २५॥ व्यवहार का ९ समूह॥ २६॥ १० बाकी के भूपति पर्वतों पर ११ अग्नि क्यों सिलगाते हे

अप्पन हरि को गति लहहिं अज्ज, किल परत जाति१सन जा-
तिर२कज्ज ॥
सोढा१कवंध२मही३असेस, इम जो लिखिहैं पिहित एस ।२८।
अप्पहि हरि तोतो वजत अज्ज, करिहो कित व्याहन सिसुन कज्ज।
यह सुनत मान हर्गं दूर आनि, पठयो दलै सुहि लिखि सुहि
प्रमानि ॥ २९ ॥
सु दिखाइ जोधपुर लेख सोहि, जिनसौंहु लिखाप्यउ मत जितोहि
पहु पत्र गंग गनहु स्व पत्र, तकि धर्म पठायउ तत्रतत्र ॥ ३० ॥
इम सोढे१भट्टिन२नियम आनि, पुनि नृप सुत व्याहन लिय
प्रमानि ॥
नृप मान सुता वहु गुनविधान, जिहिं नाम रामशीला१९२।१सु
जान ॥ ३१ ॥
सोरत्न१९२।१ प्रथम कर तास साहि, बुंदीसकुमर आयो विवाहि॥
सीला१०२।१हु यहहि दूजे२ सनाम, रामकुमरि१९२।१ तीजैं३ सु
अभिराम ॥ ३२ ॥
सुत चोथैं४राहिवदेवि१६१।२सोहि, अभिधा चतुष्क४इम जास जोहि
वरिकुमररत्न१९२।१ पहिले१ विवाह, वसुज्ञातवितरिलहिकित्तिलाह॥
पुर बुंदिय दंपति२ किय प्रवस, प्रनसैं पूज्यन पय सद्धि सेस ॥
तोमर नृसिंह तनया द्वितीय२, राजकुमरि१९२।२नाम जुगुनंगरीय ॥
सुहि सहजकुमारि१९२।२अभिधाँ दुर्सोर, व्याहा पुर पट्टनि जाइ वीर
तीजी३जु जांववति१९२।३नाम तास, भोजाउति चालुक कुल सुभास
दुहिता मिलापकी सुगुन देह, आयो विवाहि तिहिं कुमर एह ॥
चोथी४कछवाही वहुरि चाहि, वरनाथ सुता आयो विवाहि ॥ ३६ ॥
अभिधा अमानकुमारि१९२।४सु अर्मढ, बुंदीपुर आई कुमर व्यूढ ॥

गुप्त १ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २ दूरदर्शिता (दूरंदेशी) करके ३ पत्र ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥ ४ नाम ५ धन का समूह देकर ॥ ३३ ॥ ६ गुण में भारी ॥ ३४ ॥ ७
नाम ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ८ चतुर ९ व्याहकर ॥ ३७ ॥

पित्थल१सहूल२दु२नाम पात, सोलंखी तस तनुजा सुहात ॥ ३७ ॥
स्यामा१९२१५ लाडकुमरि१९२१५ नाम सीर, व्याही सु पंचमा५ रत्न
१९२१ बीर ॥
गोपालस्वसा गंगा१९२१६जुगोरि, बिबही सु कुमर छट्ठी बहोरि।३८।
निजभट तो जुग्गियदास नाम, लघुतनया ताकी यह ललाम ॥
बुंदीपुरीहि हुव तस बिवाह, रुप्पय व्यय बहु किय किंत्ति राह।३९।
स्यामा१९२१७हि दहर मोहनसुता हु, बरिआनी सप्तम बिरचि व्याहु
सीसोद भीमसुत अजबसीह, लहि देवकुमरि २९२१८ तनया सु
लीह ॥ ४० ॥
व्याहतहुव रत्न१९२१हिँ मह बिसेस, अष्टम बिवाह बरि ताहि एस ॥
अचलेससुता नवमी९उदूढं, गदियत कुल१नाम२हु तस सगूढ ।४१।

॥ दोहा ॥

पताराणको अनुज पटु, सगतसिंह तस नाम ॥
तस बहु सुत अचलेस तहँ. लहिय सुता जु ललाम ॥ ४२ ॥
अभिधाकरि रंभावति १९२१९सु, नवमी९आनि निकेत ॥
रत्न१९२१कुमर बिलस्यो बिभव, हड्ड६१न कुल जस हेत ।४३।

॥ पादाकुलकम् ॥

नंदन दूजो हृदय नरायन१९२१२, व्याह सप्त७व्याह्यो धरनीधन ॥
आदिनाम कमला१९२१चंद्राउति, निपुन कुंभतनया पावन नुंति ॥
कुल सीसोद कृष्णकन्याही, ब्रजकुमरी१९२१२दूजैं२इहिँ व्याही
कुल कबंध तीजी ३ अखैकुमरि १९२१३, बलि जिहिँ अनुपम
सुता लई बरि ॥ ४५ ॥
गंगाउत दुल्लह सुत गायो, नाम भवानीसिंह जनायो ॥

गोपाल की १बहिन ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ २.विवाही ३ कहते हैं ॥ ४१ ॥ ४ महाराणा प्रतापसिंह का छोटा भाई ॥४२॥४३॥ ५ पुत्र ६ राजा ने ७ स्तुति योग्य ॥४४॥४५॥

तनुजा नाम जसोदा१९२१४ताकी, अरचोथी४रूयाहिय खंनि भाकी ॥
नानाउनि कुम्मानसुता रुचि, सो दौलतकुमरि१९२१५पंचमी५ सुचि
पुनि दम्जेल नरुक्क जु निबड़िपनि, वाकी सुता छठीद रंभावति१९२१६
तिमचालुक स्वसुतानमि७, जदुकुमरि१९२१७सु ब्याहीवयहितजमि
॥ ४८ ॥

विदनी पंच्य भोज१९२१८पीहिं वर, सुनहु तेहु भावी सब संभर ॥
जादव धनपालकी सुता जिम, अष्टम८मह वरि इंदुमती१९२१८इम
कूम्म जोग कन्या कमलावति१९२१९, नवमी९वरि सो पुर जस उन्नति
प्रानारी गनपति सुना अद्भुत, दसमी १० अभिजनकुमरि १९२१०
वरीद्रुत ॥ ५० ॥

फिर ग्यारही ११ सुजानकुमरि १९२१११चहि, लौंनकरन रट्ठोर
सुता लहि ॥

बल्लनोत धनराज सुता बलि, अमृतकुमरि १९२१२ बारही१२
कलिअलि ॥ ५१ ॥

इम पहिलें१अरु जनक अनंतर २, बारह२२ हृदय नरायन १९२१२
बरि वर ॥

अमर्ज हुव अंतिम चउ४इनमैं, तोके जनिय सोलह१६खिल८तिनमैं५२
अडु८नमें तेरह१३हुव अंगज, सुता तीन३ प्रकटी तस संगज ॥
जनतभई जोजोतिय जिहिंजिहिं, तुमप्रभु सुनहुजथाक्रमतिहिंतिहिं५३
॥ हरिगीतम् ॥

तँहँ जैत्रसिंह१९३।१वडो१सुत रु जसवंत१९३।१पंचम५जानिये,
चोथी४जसोदा१९२१४ द्वै२ हि सोदर ए जने पहिचानिये ॥
दूजी२ प्रिया व्रजकुमरि१९२१२ सुन बलराम१९३।२दूजो२ देखिये,

१खान२कान्ति की ॥४६॥३ पवित्र ४ मध्य ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ५ दे चहुवाण ॥४९॥
६ विशेष स्तुति योग्य ॥ ५० ॥ अंजन कुमरी रूपी ७ कली का भ्रमर ॥ ५१ ॥
८ बिना सन्तान ९ बालक ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

तीजो३ बडी१ कमला१९२।१ तनै लघु विजयराम१९३।२सु लेखिये
क्रय वालकृष्ण१९३।४ चतुर्थ४सुत शृंगारकुमरि१९३।१ बडी जनी,
जिम रहकुंरि अखैकुमरि१९३।३ तीजी३हु एह द्वैयी जनी ॥
तँहँ छट्ठ६ केसव१९३।६ सोहि कृष्ण१९३।६ हुव नामं सप्तम७चंद्र
१९३।७ त्यों ॥
पंचमी५दोलतकुमरि१९३।५पतनी उभय२जनिय अंतंद्र त्यों ॥५५॥
कन्या अमानकुमारि१९३।२ जो इनर्काहि सो अनुजा कही ॥
लहि दिष्टै तिम रंभावती१९३।६ छट्ठी६हु पुत्र द्वयी२ लही ॥
इहिँ गर्भ दोलतसिंह१९३।८ अष्टम८ पुत्र नवम९प्रयाग१९३।९भो ॥
भनिये ब सत्तमि७चालुकी जडुकुमरि१९३।७सुत जुग२भाग मो५६
तस दहम१० मान१९३।१० अमान१९३।११ एगारहम११ द्वै२ हुव ए
तथा ॥
जदोनि अष्टमि८ इंदुमति१९३।८ त्रितयी३ जनी सुनिये जथा ॥
सुत बारहम१२ अमरेस१९३।१२ अक्खय१९३।१३तरहम१३तीजी३
सुता ॥
जिहिँ नाम अमृतकुमरि१९३।३ यह हुवसोलही१६ सब संजुता५७
जसवंत१९३।५पंचम५पुत्रजुत तनुजात अंतिम११।१२।१३तीन३ही ॥
लहि दिष्टबल इन च्यारि४ भ्रातन ऊढ अर्भजता लही ॥
नव९ के चले कुल जो भिंदा लहि अग्ग करन सनामहै ॥
रु अनूढ१ ऊढ२ सुता त्रयी३न लिखी तहाँ उपराम है ॥५८॥

॥ पादाकुलकम् ॥

बदत किते जेठो१ बलराम १९३।२हिँ, किते विजयराम१९३।२
हिँ चहि कामहिँ ॥
बडो जैत्र१९३।१ तस कुल हुव बिधिबस, अब दुर्बिधद्रुम भजत

१दो सन्तान २आलसी ॥५५॥ ३छोटी बहिन ४भाग्य ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५विवाह करके ६विना सन्तान ७ भेद ८ निवृत्ति है अर्थात् इन तीनों के विवाह कहां हुए सो हमने नहीं जाना ॥ ५८ ॥ ९ दरिद्री ॥ ५९ ॥

थान अस ॥५९॥

केसवदास१.९२।३तृतीय३कुमार सु, व्याह पंच५ व्याह्यो नृप दै वसु
रूपकुमरि१.९२।१ पहिली१कुमरानी,जो कूरम खेमसुता जानी ६०

रत्नु१. वसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥

रानाउति दूजी२ राजकुमरि१.९२।२, वर खंडारि उदयदुहिता वरि.
सुता प्रताप की जु सीसोदनि, तीजी३ रामकुमरि१.९२।३ वरि ज-
स तनि ॥६१॥

रूपकुमरि१.९२।४ चोथी४ राठोरिय, पिथ्थलकी पुत्री गुनगोरिय ॥
मह पंचम५ गोरि किसोर कुमरि१.९२।५,सत्तलसुता वरी हित
अनुसरि ॥६२॥

अग्रज महि पंचमी५ इनमैं, चतुर पंच५ सुत हुव च्यारि४नमैं ॥
जेठो रूपनरायन१.९३।१ जानहु, पहिली१ सुत सहि कर्ण१.९३।१
प्रमानहु ॥६३॥

सुंदरदास१.९३।२ स्याम१.९३।३ तीजे३ सह, तनय जर्कुट२ दूजी२
कै हुव तह ॥

अजबसिंह१.९३।४ चोथी४ तीजी३ तिम, तरनिमल्ल१.९३।५ पंचम५
चोथी४ इम ॥६४॥

पहिली१चउ४न जने ए पंच५हि,इक्क१हु न हुव सुता कि अलंचहि॥
पंच५सुतनमैं चउ४मृत अग्रज, वड कर्ण१.९३।१कोहि चल्यो कुल
ध्वँज ॥६५॥

वढन१ घटन२ सवकै हि नियति वस, तँहँ बुध कै जु न मोद१
सोक२ तस ॥

क्रम हुव२ व्याह मनोहर१.९२।४ के किय, तँहँ प्रसुराम२०३।४सुन

१धन देकर।६०। यश२विस्तार कर ।६१।३वरलब ।६२।६३।४जोड़ा।५नहीं।६मल्ल।६४।७मानों निषेध चाहकर अर्थात् अब बस है ऐसा चाहकर८समूह।६५।९भाग्यवश १० चतुर होता है उसको न तो हर्ष होता है और न शोक होता है।।६६॥

हु जिम जे किय ॥६६॥

सीसोदनि प्रथम१ सिंहसुता, जो गंगा१९२१२ *अभिधान गुनजुता॥
जदव रामसुता स्यामा१९२१२ जिम, यह दूजी२ कुमरानी तस इम६७
सबलसिंह१९२१२ गोपालसिंह१९३१२ सुव, †हिर दुव२ एहि मनोह-
र१९२१४ कै हुव ॥
जानिय सु न प्रसव जास जनिय, भेद नाम अग्रिम ‡किरन भनिय६८
तीन३ बलू१ मुख ¶भुजिष्या तनय, समकुल व्याहे तेहु नृप संनय
जिहिंजिहिं रानी संतति जोजो, सूचितकिय पहिले क्रमं सोसो ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रन दिय जेजे पटा १, किय सहतिय जे कृत्य २ ॥
सुनहु राम २०३१४ प्रभु तेहु सब, संतति क्रम अनुसृत्यं ॥७०॥
हृदयनरायन १९२१२ कुमर हित, दै कोटा १ वरद्रंग ॥
जिम दूजी २ आवाँ जुतहि, सुपहु दये हितसंग ॥ ७१ १
कति चोसाँ दिय केसव १९२ हिं, कहत बड़ोद १ कितेक ॥
जंपत कति अप्पिय जुग २ हि, इम संसैहु अनेक ॥ ७२ ॥
बंभोरी १ अरु डाबगी २, अप्पि मनोहर १९२१४ अँत्थ ॥
तिमहिं बलू १ आदिक त्रिक३ हिं, समुचित दिय हित सत्थ ॥

॥ पटूपात् ॥

रानी जेठी १ राजकुमरि १९१२ बापी इक १ कीनी ॥
बुंदीपुर वह विदित चतुर लोकन इम चीनी ॥
पहिले १ कटले पास द्वार पच्छिम ३ सैन दक्खिन२ ॥
जुपै बल्लनोति जस सरसबाढत कवि सक्खिन ॥

---

* नाम ॥ ६७ ॥ † स्वर्ण रूप अथवा हीरे के समान ‡ अगले मयूख में ॥६८॥
¶ पासवान के पुत्र १ नीति पूर्वक २ क्रम से ॥६९॥ ३ स्त्रियों के साथ ४ हे
रामसिंह ५ अनुसार ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ६ संदेह ॥ ७२ ॥ ७ अर्थ ८ उचित ॥७३॥
९बावड़ी १० पहिचानी ११ से

प्रसुंरृह१निंपान२उपंवन३पुनि सु न्दन१०२१राज्यकरतहु रचाहि
होंगवर्ताहु इक१ कि तिहुन लेहन अंक भावी रचाहि ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

भोज १०१।१ भुजिन्यों जो भनिय. फुल्लता१ गुन फार ॥
तिहिं लहु भोज नालको, किय सु नदा कासार ॥ ७५ ॥
वहु नहँसन करि दम्मं व्यय, नियँत फुल्लसर १ नाम ॥
जिहिं सक नव सर अहि १६५९ जहँ, रचिय ताल अभिरामँ ।७६।
पुनि सहँसन उच्छव परहु, दम्मन खरचि उदार ॥
तस अप्पन१ जुत भोज १०१।२ को, किय कारि जग उपकार ।७७।
बिरच्यो उपवन १ भोज १०१।२ बुधँ, नवलक्खा१ तस नाम ॥
अब जँहँ १ ताल२ न पुव्वं१ इत, रामबाग१अभिराम ॥७८॥
महलन बिच बहल महल १, फुल्लमहल २ छवि फीत ॥
तिनके तर गजसाल ३ तिम, पहुँ बिरचे जस प्रीत ॥ ७९ ॥
संभग्गनृप तोजो ३ सचिव, कायस्थहु इक कीन ॥
अभिधाकरि जयमल्ल ३ वह, अविरँत हुकम अधीन ॥ ८० ॥
बालचंद नामक दुधहि, जोंमितनय हुव जास ॥
बालचंदपाँड़ा१ विदित, अबहु तदंकित आसँ ॥ ८१ ॥
तिम पहिलँ नहिलोतनी, अर्जुन १८८।१ पतनी अत्थ ॥
ताल १ रच्यो जो जयवतिय १८८।२ श्रीहरिमंदिर सत्थ ॥८२॥
तोँल कास पर नियत तव, किय माधव कायस्थ ॥
अबहु तदंकित घँट्ट इक १, तारागढ दिस तत्थ ॥ ८३ ॥

---

१ मंदिर २ जलाशय ३ बाग ४ द्वारकामें ५ उत्सव ६ अगले समय में होनेवाला ।७४। ७ पासवान ८ गुणों की समूह ९ बड़ा तलाव बनाया ॥ ७५ ॥ १० रुपये ११ निश्चय १२ सुन्दर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ १३ चतुर १४ पूर्व दिशा में ॥ ७८ ॥ १५ राजाने ॥ ७९ ॥ १६ नाम १७ निरन्तर ॥ ८० ॥ १८ भानजा १९ छुहारा २० इसके नाम से जाना जाता २१ है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ २२ तालाव के कामपर २३ घाट ॥ ८३ ॥

समय न है सुमिरन सब न, जो सेसहु रहिजाइ ॥
सुमिरि सु माधव घट्ट १ सम, अग्गैं कहियत आइ ॥ ८४ ॥
इक वसु नभ सोलह १६०८ समय, पंचमि५माघ प्रकास ॥
भव तँहँ भूपति भोज १९१।२ को, अतुल ओजको आस ।८५।
नयन वेद नृप १६४२ सक नियत, मिलि सित तरसि १३ मग्ग॥
जनक पट्ट बैठो सु जँहँ, खंडि विरद गहि खग्ग ॥ ८६ ॥
समय वेद रस अष्टि १६६४ सक, सुक्र चउत्थिय ४ स्वेत ॥
उज्झो वपु नृप भोज १९१।२ अब, आपति उचित उपेत ॥८७॥
है जु चूलियारामहृद, तासों दक्खिन ३।२ तत्थ ॥
कुमर रत्न १९२।१ तस दाह किय, सतीनं अष्टक८ तत्थ ॥८८॥
रानी दूजी२ कूरमी१, निपुन जसोदा १९१।२ नाम ॥
कांवंधी २ जो जसकुमारि १९१।३ वह तीजो ३ अभिराम ॥८९॥
भाग्यवती १९१।४ चोथी४ भनिय, रानी सुहि रट्ठोरि३ ॥
पुनिलालकुमारि १९१।५ पंचमी, जँहँ झल्ली ४ हित जोरि ॥९०॥
इन चउ ४ रानिन कुल उभय२, सोभित करि विहसंत ॥
धव वपु कुणप स्व अंकधरि, अग्गि न्हान किय अंत ॥ ९१ ॥
चवी जु झल्ली पंचमी, ५ तुलसीदाट तदीय ॥
सु अब रंगमंडप सविध, पूजित संसुभि पदीय ॥ ९२ ॥
आदि१ रु छट्ठी६ अन्तिमा७, रानी तीन३ जरी न ॥
जरी भुजिष्या चउ४हि जिम, हुती जदपि कुलहीन ॥९३ ॥

॥ मनोहरम् ॥

फुल्ललता १ रूपलता २ ललितकपूरलता ३,

---

१ स्मरण नहीं होता है वह २ बाकी रहजाता है ।८४। माघ ३ सुदि ४ जन्म ५ घर ॥ ८५ ॥ ६ यश उपार्जन करके ॥ ८६ ॥ ७ ज्येष्ठ सुदि ८ चौथ ९ भाग्य ।८७। १० आठ सतियों सहित ॥ ८८ ॥ ११ राठोड़ी ॥ ८९ ॥ ९० ॥ १२ पति के १३ मृतक शरीर को गोदी में धरकर १४ अग्नि स्नान किया ॥ ९१ ॥ १५ उसकी १६ रामणा चौकी को पूजते हैं ॥ ९२ ॥ १७ पासवानें ॥ ९३ ॥ १८ चरणपादुका।

दिव्यलनाथ४ च्यारि४ हु भुजिष्या जगी जानिये ॥
दाह जँहँ कीनों तिहिं ठाम पीछें राजा रत्न१२।१,
बाग जो बनायो छारबाग सु बखानिये ॥
दूजो२ तीजो३ जे भने भुजिष्या तिनके हु तनैं,
संकर १ रु गोवर्द्धन ३ प्रथित प्रमानिये ॥
रत्न १०२।१ नरनाहको चरित्र अब ऐहैं तहाँ,
उनकी पूरी रजपूती पहिचानिये ॥ ९४ ॥

॥ दोहा ॥

अष्ट८ सतिन जुत अधिपको, कुमर सविहि सूनकर्म ॥
रवि१२ दिन संजम१नियम२गहि, भोजि४ द्विजन दिय भर्म ।९५।

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठ६राशौ बुन्दीशभोजचरित्रे भोजसंततिपाणिपीडनतत्सन्तानवर्णनं १ भोजतद्राज्ञीतत्पार्श्ववर्तिनीनिर्मापितस्थानवर्णनं २ भोजपरासुभवनतदष्टसहधर्मिणीसहगमनं विंशतितमो मयूखः ॥ २० ॥

आदितस्त्र्यधिकद्विशततमः ॥ २०३ ॥

---

१ रत्नसिंह ने २ पुत्र ३ विदित ॥ ९४ ॥ ४ भोजन कराके ५ स्वर्ग दिया ॥९५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज के चरित्र में भोज के सन्तानों का विवाह और उनके सन्तानों का वर्णन १ भोज के और भोज की रानियों तथा पासवानों के बनाए हुए स्थानों का वर्णन २ भोज का देहान्त और उसके साथ आठ सतियां होने का बीसवां २० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ तीन २०३ मयूख हुए ॥

प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा—बरस ऊन चालीस ३९ वय, असित[1] आदि १ आषाढ ॥
हड्ड६१न पति तँहँ रत्न१९।२।१ हुव, पाइ पट्ट गुन गाढ ॥ १ ॥
हृदयनरायन१९।२।२ कुल हुव जु, हिरदाउत्त२४।२० कहाइ ॥
चउवीसम २४ भेद सु चल्यो, इम हड्ड६१न बिच आइ ॥ २ ॥
केसव भोजपउत्त[2]५।२१कहि, केसवदास१९।२।३ कुलीन ॥
उदित पचीसम २५ भेद यह, हुव हड्ड६१न अघहीन ॥ ३ ॥
सूनु मनोहर१९।२।४को सदल१९।३।१, जहाँगीर३८।१ढिगजाइ ॥
रक्खि लोभ आश्रितरह्यो, पटा उचित कछुपाइ ॥ ४ ॥
तापीछैं लुपिगो सु तिम, जननैं[3] मनोहर १९।२।४ जात ॥
न चली संतति दुहुँन के१९।३।१, प्रतिरोधक[4] बिधि पात ॥५॥
न तो छवीसम २६ भेद नृप, हड्ड६१न यह होतोहि ॥
पै अब माधव१९।३।२ वंस पर, जैंइ अंकहु जोरहि ॥ ६ ॥
बैजनाथ सिवतैं बिदित, अनैल[5] दिस२ रु ढिग आहि ॥
बाग मनोहर१९।२।४ को अबहु, तुम प्रभु जानहु ताहि ॥ ७ ॥
रायमल्ल१९।१।३ सुत रान१९।२।१जिहिं, पाहलैं दूदा१९।१।१ पास ॥
कछु दिन कहे सिसु कुमर, अंतर जनक उदास ॥ ८ ॥
बारह१२ हायन[6] अर्वँ[7] वय, इम दूदा१९।१।१ ढिग एस ॥
बाहिर रहि खल इक१ बरस, दोरयो बुंदिय देस ॥ ९ ॥
मुव[8] दूदा१९।१।१ तब रहि कुमति, सिरीफखाँ ढिग सोहि ॥
तस पंचन बनि मुख्य तँहँ, दुष्ट बढ्यो कुलद्रोहि ॥ १० ॥
गो लैबे चरनाद्रिगढ, सोहु सिरीफ प्रसंग[9] ॥
बहु अबाच्य[10] बदि जवन जब, अरि१ हुव प्रत्युत[11] अंग ॥ ११ ॥

---

१ कृष्णपच ॥ १ ॥ २ ॥ २ भोजपोते ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ वंश ४ रोकनेवाला ब्रह्मा ही पाया जाता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ अग्निकोण में ॥ ७ ॥ ८ ॥ बारह ६ वर्ष पर्यंत ७ बारह वर्ष की अवस्था से दूदा के पास रहकर ॥ ९ ॥ दूदा ८ मरा तब ॥ १० ॥ शरीफखां के ९ संबंध से १० खोटे वचन ११ उलटा ॥ ११ ॥

बेताल३।खिजिबैन१ १९२।२ कुम्मर सिरीफखान सु मिलत तिम लियमारि
रन भंग गो भजि रामचंद्र१९२।१हु आस्य वारि उतारि ॥
किय रीस बुंदिय सीस अकबर१७।१ईस सुनि यह काम ॥
सुत जो नबाब तदीय सज्जन धीर दिय धन१ धाम२॥१२॥
पठयो प्रयाग सिरीफसुत इहिं बहुरि सूबा अप्पि,
रहि तास पासहु रामचंद१९२।१ थक्यो न रिपुपन थप्पि ॥
पुरकासिका१चरनाद्रि२ हुंस तजि रत्न१९२।१ बुंदिय पत्त,
अपनाइके लिय रामचंद्र१९२।१।१ सिरीफसुत२अनुमत्त॥१३॥
पुनि राजमंदिरकी विभूति सु लुट्टिलाइ प्रयाग,
दुवर बेर बुंदिय देस दोरि दयो स्ववंसहिं दाग ॥
अब रत्न१९२।१ भूप हन्यौं यहै बलि भ्रात तीजी३ बेर ॥
कछु काल पुव्वहि रायमल्ल१९१।३हु वास किय दिवंकेर१४
संगोद१ सहित पल्लायथा२ पुर यो तदीयँ उतारि,
मग सुद्धि रक्खि रु रामचंद१९२।१ लयो सु दोरत मारि ॥
करि ताहि भोज१९१।२ हन्यौं कहैं नृप है रु अब रतनेस,
बलि बुद्धिचंद१९२।३ तदीय भ्रात सु बुल्लयो सविसेस॥१५॥
सुत रायमल्ल१९१।३ पितृव्यको तीजो३ यहै सनमानि,
हय१ हत्थि२ दे रु कह्यो करी खल रामचंद्र१९२।१हि हानि॥
जिहिं बुद्धिचंद्र१९२।३हि ह्वां दयो पुरमाण्थल१ हित जोरि,
बलि जाइ कैं १ताके हि कुल पर आइ कै२सु बहोरि॥१६॥
दस१० रायमल्ल१९१।३ तनूँज तिन बिच पंच५कुल धर दिट्ठ,
उनमें बडो वह रामचंद्र१९२।१ बज्यो दिवान अनिट्ठ ॥
भुरि सत्रु भो कुलकोहि रत्न१९२।१ सुनो लयो तिन मारि,

१रत्नसिंह ने २सुख बिगाड़कर ३स्वामि ४ उनके लोगों को ॥१२॥ ५ आदि ॥१३॥ ६ स्वर्ग गया ॥ १४॥ ७ उसके ८ खबर रखकर ॥१५॥ ९ काके का ॥१६॥ १० पुत्र ११ कुल को धारण करनेवाले १२ बुन्दी के भूपति का अनिष्ट ॥

तस रामसिंह१९३।२ द्वितीय२ भ्रातहु टेक निर्गुन टारि॥१७॥
बुध तास भ्रात तृतीय३ बिक्खि सु बुद्धिचंद१९३।३बिसासि,
पट्टा दयो लिखि सारथल४ पुर रैंन१९३।१ नृप गुनरासि ॥
इम अप्प भूपति ह्वै इहाँ सब राज्य स्वीय सम्हारि,
बलि नैर डिल्लिय पत्त लक्खन साह चित्त बिचारि ॥१८॥
जिहिं स्वीय नाम सलेमगढ१ किय जो सलेम३८।१सजोर,
अब बज्जि साह जहाँनगीर३८।१ सु प्रबल न गिनत ओर
पतनी अयाजसुता करी घर डारि जो अति प्रेम,
सो हुरम नूरजहाँ१ कहाइ बढी बिमोहि सलेम३८।१॥१९॥
चउ४ अब्द तो पति तास सेर हन्यों सु ह्रीं हिय चाहि, ॥
न सक्यो सु मिलि रहि दूर दुक्खित नारि संक निबाहि ॥
इक१ कालपरतहि दिट्ठि हुरम सु संक तस तजि एह ॥
उरसौं लगाइ रह्यो अचानक दोरि नेह अछेह ॥ २० ॥
अति नम्रता करि पाय चुंबि प्रसन्न तिहिं करि आप ॥
लिय मंतु माफ कराइ दुव दिस संडि हिन संलाप ॥
सर तर्क सोलह १६६५ मांन सक इम होइ तस बस साह ॥
बाजीगरी जनुं सिक्ख बंदरकौं तद्दुक्ति निबाह ॥ २१ ॥
किन्नौं बजीर१अयाज१तास पिता मुसाहब काम ॥
अरु भ्रात आसिफखान२कौं किय दंडनायक२आम ॥
अनुजात तास द्वितीय२।३कौं दिय ओर कछु अधिकार३ ॥
भेज्यो महोबतखान४ दे सूबा सन्हारन भार४ ॥ २२ ॥
ऐसों वजीर भयो कृती यह साह स्वसुर अयाज१॥

।१७। १देखकर २ अपने राज्य को ३फिर ४नगर ॥१८॥ ५ अयाज की पुत्री नूरजहां ६ विशेष मोहित करके ॥ १९ ॥ ७ लज्जा अर्थात् उसके पति शेरखां को मारा था इस लज्जा से चार वर्ष पर्यंत नूरजहां से नहीं मिल सका ॥२०॥ ८ अपराध९स्नेह के वचन बोलकर १० प्रमाणवाले संवत् में ११मानों १२उसके कथन का निर्वाह करके॥२१॥ १३सेनापति१४सब सेना का१५छोटा भाई२२ १६पण्डित

जिहिं न्याय अदल्ल जमाइलिय जस रक्खि आपजस लाज ॥
जगमैं प्रवर्त्तन अदल*बीजहुं गिनत सु जहाँगीर२८॥१॥
पै नूरमहल१हि तास तृप्त न्याय लोचन पीर ॥ २३ ॥
यह तो अयाज महा धुरंधुरकी अदालति१माँहिं ॥
मृगराज१सोँ अज२ वादमंडिय न्यायमग जिहिं माँहिं ॥
अवरोध नूरजहाँ१ रैं लगि साह२ हुव जनु अस्त ॥
तोहू अयाज जमाइ राज्य करे सब रिपु ग्रस्त ॥ २४ ॥
सुमरयो प्रजाहु न साह सब विधि याहि जानि सहाय ॥
रहिवे दयो दुख काहुकैं न भनप्पि समुचित राय ॥
नहि साह१ नूरजिहाँ२ बिनाँ कबहू सक्यो रहि नैंक ॥
चुगली गिनी हितकी भनी तउ आनि तापर चैंक ॥ २५ ॥
नृप सूर जोधपुरेसकी तनयाहु नारि निकेत ॥
चिर तास वास अलंघि कहुँ अवकास उत दिय चेत ॥
जब नूरमहल१अगम्य है रज आदि कारन जानि ॥
तोहू सकै न सु औररसौं मिलि ख्यात प्रसुपन तानि । २६ ।
प्रच्छन्न तासन द्वैर घरी कहुँ क्यौंहु अवसर पाइ ॥
जबहू सु संकित लंघि मासन ओर तिय ढिग जाइ ॥
इम तकि ओसर साह गो रहोरि१केहु अगार ॥
मन भीत तोहु टिक्यो मुहूर्त्तहि मन्नि असहन मार ॥२७॥
गहि काच भाजन भिन्न तामिच पेय समुचित गेरि ॥
हसि नम्र सूचि भई सु हाजरि कोकपति मुख हेरि ॥

इन्साफ का* कारण ॥ २३ ॥ १हे १ जनाने में २ मालों ॥ २४ ॥ ३ स्मरण नहीं किया ४ उचित धन देकर ५ किसीने हित की बात कही वह भी चुगली (पिशुनता) जानकर ६ क्रोधित हुआ ॥ २५ ॥ ७ नरसिंह की बदहून समय तक ८ रजस्वला आदि कारणों से गमन करने योग्य नहीं रहे तब ॥२६॥ १० कामदेव को ॥२७॥ ११ पात्र १२ पीने का उचित पदार्थ डालकर १३ कटाक्षवाला मुख देखकर

सल हास*नक्कहिं दे कह्यो किम पात्र भिन्न असुद्ध ॥
विहसी सु छुल्लिय रावरे प्रिय भिन्न पालहि बुद्ध ॥ २८ ॥
सुनि रुट्ठि आपउ साहसों रु गंदैं किते पुनि गोन ॥
भो रत्तँ नूतन नारिप्रति जिम बाल धात्रिय भोन ॥
दिन१ रत्ति२ की नहि सुद्धि दिल्लिय यों सलेम ३८।१ अचेत ॥
सिखवैं जु नूरजिहाँ१ सुही विरचैं सु भीसमवेत ॥ २९ ॥
बैठे सभाहु अयाज प्रेरित क्योंहु जो कछु बेर ॥
कर तोहुँ पिट्ठि लग्यो रहैं पटछन्न वा तियकेर ॥
जब द्वैरहि अंग रहै जुरे तबही परैं जर्क ताहि ॥
यह रीति साह गही चही हु न नीति नैंक उमाहि ॥ ३० ॥
इत भ्रात संकर२ कों चमूपति रक्खि बुंदिय अत्थ ॥
संबोधि पट्ट कुमार गोपियनाथ१९३।१कों हित सत्थ ॥
इम रत्न१९२।१ भूपति साह सेवन पंत दिल्लिय अप्प ॥
देखी सु साह दसा असाधुं प्रभुत्वं खोइ कुदप्प ॥ ३१ ॥
जबही सभा अवकास भो तव तत्थ हाजरि जाइ ॥
उपदा १ निछावरि २ कैं रह्यो निजठौं खरो नृप आइ ॥
कुसलत्व पूछि रु साह अक्खिय आत क्यों चिर किन्न ॥
नृप किन्न बिन्नति देस दुष्टन रोध अंतर दिन्न ॥ ३२ ॥
कछु अब्द भूप रह्यो तहाँ इम ताहि सद्धन कज्ज ॥
अवनीस अज्जँ गये भवे तिम को रहैं धुरि अज्जँ ॥

---

*नासिका में सल डालकर १ हे चतुर आपको भिन्न पात्र ही प्यारा है ॥ २८ ॥ कितने ही २ कहते हैं कि फिर कभी नहीं गया ३ आसक्त ४ जिसप्रकार धाय के घर में बालक रहै तिसप्रकार ५ डर के साथ वही कार्य करता था ॥ २९ ॥ ६ अयाज की प्रेरणा से ७ तो भी पीठ पर नूरजहां का हाथ लगा रहता था ८ चैन ॥ ३० ॥ ९ सेनापति १० गया ११ आप १२ बादशाह की बुरी दशा देखी १३ प्रभुता गुमाकर १४ कुदर्प ॥ ३१ ॥ १५ नजर १६ देरी क्यों की ॥ ३२ ॥ १७ आश्चर्य १८ आज उससे मुह

इन साहकी अनुरोध लोकिन जोधनृपति एह ॥
नृप रह्यो इह विनयनो तिन तांहु जीवन नेह ॥ ३३ ॥
करांबंधि गादिय तास हैं गजसिंह पट्ट कुमार ॥
आयो जु दे नँहँ साह सेवन एह निज अनुसार ॥
इहिं रूप२को गजसिंह कों गज खास इक१ इक१ अप्पि ॥
रच्यो खास खेलक तांहु निज इक१ हैं दिसेस समप्पि ॥ ३४ ॥
अंतेक ? अकबर३ऽ१ वेंर छप्पन अष्टि१६५६ संवत आइ ॥
कारन भये क्रय१विक्रया२ दिक जे स्वसत्यं जमाइ ॥
अबलों सबें लखते भये पट्ट अंग्रेज्ज मिच्छरन ओनें ॥
विपरीत त्यौं चलते लखे दुव२ काय१ मौनस२ बैन३ ॥ ३५ ॥
अब आइ दिल्लिय अङ्क रस खट इंदु१६६८ संवत एहि ॥
उपदा निवेदि अनेक अद्भुत साह मन सु बिसेहि ॥
निज बुद्धितें कलके रचे घटिका१दि जंत्र अनेक ॥
के दूर देखन जंत्र दर्पन२ तुपक३ क्रीडन४ केक ॥ ३६ ॥
नाना प्रकार दुकूल५ दर्पन भाजना६दि निवेदि ॥
भरि भेट नृपजिहां१ नबाव२ नृपा३दि सब मन भेदि ॥
करि त्यौं वजीर ४ हु कों प्रसन्न निकासि अप्पन काम ॥
धन मुल्ल दे लिखवाइ लिय कछु नेर सूरति१ धाम ॥ ३७ ॥
खाडी तंदुत्तर पास घोघा २ बंदर रु खंभात ३ ॥
विरचे अहमदाबाद४ जुत चउ४ ठाम कोठिन जांत ॥
सौराष्ट्रतैं तापी२ नदी लग कोन नैर्ऋत४ सीम ॥

कर कौन रहे ? १ अनुरोधपन से २ खुर्रसिंह ३ जीने से स्नेह जानता था तो भी ॥ ३३ ॥ ४ राठोड़ों की गादी ५ माला ६ घोड़ा अधिक दिया ॥ ३४ ॥ अकबर के७ समय में ८ मोल लेना ९ बेचना १० अपनी सत्ता जमाकर ११ आर्य और यवनों के १२ घर देखे १३ तन और वचन से ॥ ३५ ॥ १४ नजर १५उन्हों ने बादशाह के मन में प्रवेश किया १६घड़ी आदि१७दूरबीन ॥३६॥१८वस्त्र १९ काच के पात्र२०मूल्य (कीमत) देकर ॥३७॥२१ उसके उत्तर दिशा में२२समूह

निज बासकों इन पुब्ब यों चउ४ ठाम डारिय नीम ॥ ३८ ॥
सोदागरी पटु पुत्र१ मित्र२ कलत्र३ संगि४न अत्थ ॥
अंग्रेज ए रहिबे लगे घर मंडि तव सैन अत्थैं ॥
उपदा अनेक प्रकार ओरहु अंज्ज७मिच्छैं८न अप्पि ॥
मन१बैन२धर्म३ अधर्म४ लौं सबके लये सब मप्पि ॥ ३९ ॥
बानिज्यके व्यवहारतैं वसु संचि लक्खन भांत ॥
लखि जेयें लंडनलौं रहे इतको उदंत लिखात ॥
पहिलैं हि अकबर३७।१ के अनंतर मान१ इत खिंन पाइ ॥
भेज्यो अयाज बजीर दक्खिन ३।२ सेस जित्तन भाइ ॥ ४० ॥
सुत जगतसिंह मरयो जु तस सुत मुख्य जु महासिंह२ ॥
वह स्वीय नत्तिय संगलै तँहँ मान गो जय ईहैं ॥
आसेर१गढ गत जित्ति जिहिँ बुरहानपुर२ अपनाइ ॥
जँहँ मंजरा१ तापी१ धुंनी मिलि जात तँहँ पुनि आइ ॥ ४१ ॥
जिम सप्तपुटं गिरिको प्रदेस१ रु चूलिका२गत जित्ति ॥
किय वाह वाह कहाइ यों कछवाह अप्पन कित्ति ॥
जबही मुहुम्मद १५।१ नाम तुगलक ३ पंद्रहम १५ जवनेस ॥
दिल्ली उजारि लग्यो बसावन देवगढ २ सह देस ॥ ४२ ॥
अरु देवगढ १ अभिधान दिय आबाद दोलत आदि२ ॥
बसिबे लग्यो तिहिँ राजधानिय रक्खि जो हठ वादि ॥
सँकको चउद्दहमों१४ सतक१००जो होत पूरन जत्थ ॥
तुगलक३मुहुम्मद साह१५।१०हाँ बसिवो विचारिय तत्थ । ४३।

॥ ३८ ॥ १ स्त्री २ साथी ३ तब से ४ यहां रहने लगे ५ नजराना ६ आदर्य ७ यवनों को देकर ८ माप लिये ॥ ३९ ॥ ९ धन इकट्ठा करके १० समूह ११ जीतने योग्य देखकर १२ वृत्तान्त १३ पीछे १४मानसिंह को १५ समय पाकर १६ बाकी के देश को ॥ ४० ॥ १७ अपने पोते को १८विजय की इच्छा से १९ तापी नदी ॥ ४१ ॥ २० सतपुड़ा पर्वत २१ कीर्ति ॥ ४२ ॥ देवगढ़ का २२नाम दोलताबाद दिया २३ विक्रम के शाक का ॥ ४३ ॥

अंग्रेजर कोठिन बंधिबो इनसौंहु उत्तर एह ॥
अब साह लघु सुत खुरम ३१२ विरचित अनैय सुनहु अछेह ॥
खुसरो ३९१२ जु अग्रज कैदहो खल ताहि कछु विधि खंडि ॥
मन बप्प गद्दिय लैन चाहि विरोध तासन मंडि ॥ ४९ ॥
जगतेस २ पुत्र रु मान १ नत्तिय काम आयउ जत्थ ॥
तजि नैर दिल्लिय भज्जिगो सु सहाय पावन तत्थ ॥
मिलि बप्प वैरिनसौं छली तिनकोहु वंट मनाइ ॥
लग्गो सु दिल्लिय देस दव्वन जोर तोर जनाइ ॥ ५० ॥
पठयो महोवतखान तापर साह दे दल पूर ॥
करि जुद्ध जातहि खुरम ३९१२ कौं सु भजाइ आयउ सूर ॥
जनके कहंत वजीर प्रेरित साह गो तिहिं जुद्ध ॥
वरनैं किते सु नवाव गो तिहिं त्यौं लह्यो जय कुद्ध ॥ ५१ ॥
बीजापुरादि अपाच्य मिच्छन लै सहाय बहोरि ॥
दिल्लीस देस लग्यो सु लुट्टन नर्मदा लग दोरि ॥
इम होत दिस दिस विक्ख विग्रह गर्व गोरहु आनि ॥
बदलेहि वारियदुर्ग वलि जवनेस अलसहिं जानि । ५२ ।
खिच्ची१३ हु ईस्वरदास सो लहि छिद्द जो गहि खग्ग ॥
इतकौं मऊ१पुर पैठि गो पुनि लै स्ववीरन अग्ग ॥
इम रत्न१९११सौं तब साह अक्खिय गोरवारिय गंजि ॥
भिरि हड्ड६१ जातहि लै मऊ१ इत दर्प खिच्चि१३ न भंजि । ५३ ।
मम बीर जात कुपुत्र पैं तुम जाहु पुनि तिनमांहिं ॥

अंग्रेजों का दक्षिण में कोठियें बांधकर रहने की वार्ता इनसेंभी १ पीछे की है. खुर्रम की रची हुई २ अनीति को सुनो ३ मारकर॥ ४९ ॥ ४ तहां ५ पिता के शत्रुओं से मिलकर ६ हिस्सा ॥ ५० ॥ कितने ही लोक कहते हैं कि वजीर की ७प्रेरणा से बादशाह ही उस युद्ध में गया था ॥ ५१ ॥ ८ दक्षिण के यवनों से ९ गौड़ क्षत्रिय भी घमंड लाकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

नृप बंधि१ आनहु मारि२ कै तिहिं छोरिवो सुभ नाँहिं ॥
इम सिक्ख लै नृप आइ बुंदिय सज्जि अङ्ग१ अनीक ॥
पठयो सु दारिय दुर्गपै बहु पुज्जि बाहु प्रतीक ॥ ५४ ॥
तँहँ पुत्र कर्ण कबंध को जिहिं नाम अविदित१ ताहि ॥
जिन गौर जुग्गियदासको लघुपुत्र सुंदर२ जाहि ॥
करिकैं चमूपति पिल्लयो दल गौर जित्तन कज्ज ॥
रट्ठोर१ गौर२ उभैर गये बनि सुख्य दव्वन रज्ज ॥ ५५ ॥
जयभो न ह्याँ तँहँ होत संसय घोर१ गोर२ जुरे१ कि ॥
मन क्योंहु गोर१ कबंधर के इत माँहि माँहि मुरे२ कि ॥
पंतिमल्ल गोर बलिष्ट दारिय त्यों सहेन परे३ कि ॥
कहु छद्मसों जुरिकैं अचानक ए अधीर करे४ कि ॥ ५६ ॥
विधि कोहु होहु परंतु बुंदिय चक्क आस्यँ विगारि ॥
जुरिकैं मज्योंहि चमूप जुग२ जुत भीरु गति मति मारि ॥
इम गौर सज्जिय दुर्ग दारिय रक्खि अप्पन आन ॥
सुनि हारि सो इत दुर्मनों हुव रत्न१९२।१ तैं सुलतान । ५७ ।
इम आत भज्जि अनीकिनी पहु रत्न१९२।१ त्यों अनखाइ ॥
रट्ठोर१ गोर२ उभैर दये निज देसतैं निकराइ ॥
रट्ठोर कर्ण१ प्रसन्नभो निज पुत्र कढ्ढन रैन१९२।१ ॥
न परंतु जुग्गियदास२ भो रिस आनि स्वसुरहु नैन ॥ ५८ ॥
चढिगो मऊ१ पुर लैन भूपहु सज्जि दुव्वर चक्क ॥
वह कढ्ढि खिच्चिय१३ अप्पनों करि देस हड्ड१न अर्क ॥

धाधी१ सेना सज्जित करके२ अङ्गों सहित भुज पूज कर ॥५४॥ जिसका नाम३ नहीं मालूम है ४ सेनापति करके ५ भेजा ६ गौड़ों का ७ राज्य ॥५५॥ ८ सन्देह ९ गौड़ और राठोड़ों के मन परस्पर मुड़े १० शत्रु ११ छल से युद्ध करके ॥५६॥ १२ बुन्दी की सेना १३ मुख बिगाड़ कर १४ उदास ॥ ५७ ॥ १५ सेना १६ राजा रत्नसिंह ने क्रोध करके ॥ ५८ ॥ १७ चक्र (सेना) १८ हाडों का सूर्य

थित नैर बुंदिय भ्रात संकर२*दंडनायक थप्पि ॥
स्व कुमार गोपियनाथ१९३।१कौं तिम राज्य भार समप्पि ।५९।
जवनेसके दलमैं मिल्यो नृप रत्न१९२।१ हू द्रुत जाइ ॥
उततैं सु दिल्लिय†वाहिनी नृपतैं मिली मग आइ ॥
गजसिंह१ भूप कबंध त्यौं जयसिंह२ कूरम गज्जि,
सेह त्यौं महावतखान३ मिच्छ अजीमबेग४हु सज्जि ॥६०॥
इत्यादि साह प्रवीर मिलतहि रत्न१९२।१तैं छित आनि,
मन इक्क१ ठानि चले सबै गहिलैन खुर्रम३९।२हिं मानि ॥
इत नैर बुंदिय उप्फन्यौं सठ गॅब्ब१ जुब्बन२ साथ ॥
नरनाह रत्न१९२।१ कुमार पट्टप नाम गोपियनाथ१९३।१॥६१॥
दस इक्क१ ब्याह दयो बिवाहि जु भूप रत्न१९२।१ उदार,
परदार संग रच्यो तथापि सु मार मत्त अपार ॥
चंदेरनी इक ब्रह्मनी अति रूप सोभित चाहि,
तरुनत्वं दर्प कुमार बुल्लि भजैं तिरोहितैं ताहि ॥ ६२ ॥
इक१ द्वै२ अनेहैं दुरै कुकर्म तथा न संतत एह,
गिनि धर्महीन कुमारकी निंदा बढी प्रतिगेह ॥
जब रत्न१९२।१ बुंदिय नैर आयउ तत्थ तेहु द्विजात,
मिलि सर्व पुच्छत यौं भये पुर इक्क चोर न मात ॥ ६३ ॥
ताको बँहाइ करैं कहा हम रत्न१९२।१यौं सुनि तत्थ ॥
सुतकौं न जानि कह्यौ करो तुम जो बनैं सु समत्थ ॥
जानैं स्व पुत्रहि चोर तो कारांधरैं द्रुत जाहि,
ऐसो यहै नृप जास सर्व प्रजा स्वसंतति आहि ॥ ६४ ॥

---

*सेनापति।५९। †सेना१साथ ॥६०॥२ बढा३गर्व (घमंड)४ जोबन के साथ५राजा रत्नसिंह का ॥ ६१ ॥ ६ पराई स्त्री ७ तो भी ८अपार कामदेव से मस्त होकर ९ ब्राह्मणी १० तरुणपन के ११ घमंड में १२ बुलाकर १३ सेवन करैं १४ गुप्त ॥ ६२ ॥ १५ समय १६ निरन्तर नहीं छिपता १७ ब्राह्मणों ने मिलके पूछा कि ॥ ६३ ॥ १८ अब १९शीघ्र कैद करदेता. सब प्रजा २० अपने सन्तान के सदृश है

सुनि गुप्त चोर पुकार सो दंम अक्खि समुचित दैन,
नप लाहके क्लारंग दक्खिन१।३ खेद ढंकत गैन ॥
बुंदीस पट्ट कुमारसों अवसान जो हुव वत्त,
सुनिये वं हे प्रभुराम२००।४ सूचन ठाम सोहु समत्थ ॥६५॥

॥ दोहा ॥

गोपीनाथ२१३।१ कुमार गुन, इतर सु जस अवदात ॥
संपद्दन१ हि कालंक लागि, विदित सूढपन वात ॥ ६६ ॥
कन उपद्दन आदिक कथन, अक्खिलहि तास उदंत ॥
आयो अवसर सुनहु अब, समुझि जथातथ संत ॥६७॥
गोपीनाथ१९३।१ प्रसंग गत, सब भ्रात१ रु संतान२ ॥
निर्यंत इहाँ कहियत नतो, संभव रत्न१९२।१ वसान ॥६८॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठराशो बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे बुन्दीदेशधावकरामचन्द्रवधोत्तररत्नसिंहदिल्लीगमन १ नूरजहांवशवर्तिजहांगीरास्तप्रायीभवननूरजहांजनकप्रधानामात्यायाजप्रशंसासादन२ योधपुरेश्वरशूरसिंहमरणोत्तरपट्टपपुत्रगजसिंहसिंहासनाक्रमण ३ विविधवस्तुनिवेदनप्रसन्नजहांगीरक्रीतसूरतिनगर१ घोघाबन्दर२खंभात३अहमदावाद४प्रदेशाङ्ग्लपण्यगृहनिर्माणनिवसन ४

॥ ६४ ॥ उचित १ दण्ड देना कहकर २ आकाश को ३ अन्त में जो वार्ता हुई सो ४ अब हे प्रभु रामसिंह ५ सूचना करने के स्थान पर सब सुनो ॥ ६५ ॥ ६ उज्वल ॥ ६६ ॥ ७ विवाह ८ उसका वृत्तान्त ९ हे सन्त (श्रेष्ठ) ॥ ६७ ॥ १० निश्चय ११ रत्नसिंह के अन्त पर कहना सम्भव था ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में बुन्दी के देश में दौड़नेवाले रामचन्द को मारकर रत्नसिंह का दिल्ली जाना १ नूरजहां के वश में होकर जहांगीर का अस्तप्राय होना और नूरजहां के पिता वजीर अयाज का प्रशंसा पाना २ जोधपुर के राजा सूरसिंह के देहान्त होने पर उसके पाटवी पुत्र गजसिंह का गद्दी बैठना ३ अनेक पदार्थ भेट करने से पादशाह जहांगीर को प्रसन्न करके मूल्य देकर सूरति नगर, घोघाबन्दर, खम्भात और अहमदाबाद में अंग्रेजों का कोठियें ब-

अमात्यप्रेषितकूर्ममानसिंहाशेरदुर्गबुरहानपुरादिप्रदेशविजयप्रशंसा - पात्रीभवन ५ स्वपौत्रमहासिंहमरणमृतप्रायामेरागतमानसिंहमरणो त्तरतत्प्रपौत्रजयसिंहभूपतीभवन ६ जहांगीरात्मजखुरमपितृप्रतीपादि ल्लीनिष्क्रमणानन्तरपठानमोहोबतखांपराजयन ७ बारीदुर्गगौडप्राती प्यहेतुयवनेन्द्रादेशबुन्दीशरत्नसिंहनिजनेमःसैन्यबारीदुर्गप्रस्थापनत - त्पराजयप्रत्यावर्तन ८ विजितमऊपुरराबरत्नसिंहखिचिनिष्कासनान- न्तरस्वपुत्रगोपीनाथायत्तीकृतबुन्दीकखुरमप्रस्थितबलसंमिलन ९ र त्नसिंहपट्टपुत्रगोपीनाथदुराचरणविवहनतत्सहोदरसंततिशंसनसंधा नमेकविंशो मयूखः ॥ २१ ॥ आदितश्चतुरुत्तरद्विशततमः ॥२०४॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम मयूखहि राम२०१४प्रभु, बरनैं रत्न१९२१ बिवाह ॥
संतति क्रम तस अब सुनहु, रक्खैं निज कुल राह ॥ १ ॥
कुमर च्यारि४नृप रत्न१९२१के, खट६हु कितिन मत ख्यात ॥
प्रकटिय दुव२ कन्या निपुन, अब क्रम निश्चय आत ॥ २ ॥

नाकर रहना ४ वजीर के भेजेहुए कछवाहा मानसिंह का आशेरगढ बुरहान पुर आदि प्रदेशों को जीतकर प्रशंसा प्राप्त करना ५ अपने पोते महासिंह के मरने से मरण प्राय होकर आमेर में आयेहुए मानसिंह के मरने पर पोता के पुत्र जयसिंह का राजा होना ६ जहांगीर के पुत्र खुरम का पिता से विरुद्ध होकर दिल्ली से भागे पीछे पठान मोहोबतखां से पराजित होना ७ बारीगढ के गौड़ों की विरुद्धता के कारण बादशाह की आज्ञा से बुन्दी के राव रत्न- सिंह का आधी सेना को बारीगढ पर भेजने के अनन्तर उस सेना का परा- जित होकर पीछा आना ८ राव रत्नसिंह का मऊपुर से खीचियों को निका लकर उसके लिये पीछे बुन्दी को अपने पुत्र गोपीनाथ के आधीन करके खुर- म पर भेजी हुई बादशाही सेना के शामिल होना ९ रत्नसिंह के पाटवी पुत्र गोपीनाथ के दुष्टाचरण के साथ उसके विवाह और उसके भ्राताओं के स- न्तान के कथन की प्रतिज्ञा का इक्कीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चार २०४ मयूख हुए ॥

१ सन्तान का ॥ १ ॥ २ कितनोंक के मत से ॥ २ ॥

गोपिनाथ १९३।१ माधव १९३।२ गदित, नाम हरि१९३।३रु जग-
नाथ१९३।४ ॥
बदनकुमरि१९३।१ हरिकुमरि१९३।२ बलि, सुता उभय२ गुन साथ ॥३॥
बदनकुमरि१९३।१ अनुज हि बदत, जन कति अखय१९३।५ सुजान१९३।६
वाजहि पूत इस नहि बिदित, दोउ २न गिनत निदान ॥ ४ ॥
नव ९ रानिन बिच जिन जनित, ए छह६ कि अठ ८ अपत्य ॥
तु पै नाम १०।१४ प्रभु क्रम सुनहु, मिथ्यापन अवमत्य ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

पहिलो १ तँहँ गोपीनाथ १९३।१ पूत, सीला १९२।१ कछवाही
जो प्रसूत ॥
तीजी३ जांबवती१९२।३ के तनूज, पटु दूजो२ माधव १९३।२
प्राप्तपूंज ॥ ६ ॥
या३ केहि बडन४ जगनाथ१९३।४ एह, सोदर दुव२ भ्राता ते सनेह ॥
जिम चोथी४ रानी प्रसव जात, हरिसिंह१९३।३ कुमर तीजो ३
सुहात ॥ ७ ॥
जेठी१ सुता बदनकुमरि१९३।१ जोहि, है दूजी२ रानी जनित सोहि ॥
यह गिरिपुर राउल पुंज अंत्थ, स्वकनी नृप व्याहिय रीति सत्थ ॥
जामाँहि एंजसनैं पुत्र जात, गिरिधर तस नामहु कवि गिनात ॥
सो दूजो२ तोमरिकी प्रसूति, यह बदनकुमरि १९३।१ पहिली१
सौति ॥ ९ ॥
तिम रानाउति रंभावती१९२।९जु, संभर कलत्र नवमी९ सतीजु ॥
हुव तास प्रसवहुव अवधि धारि, कन्या यह दूजी २ हरिकु-
मारि१९३।२ ॥ १० ॥

१कहते हैं २ पुनि ॥ ३ ॥३ छोटे भाई ४कितने मनुष्य ५ कारण ॥४॥ ६सन्तान ७ मिथ्यापन का अपमान करके अर्थात् सत्य सत्य सुनो ॥ ५ ॥ ८पूजने योग्य ॥ ६ ॥ ७ ॥ ९ डूंगरपुर के राउल पुञ्जा के १०अर्थ ११अपनी पुत्री को ॥ ८ ॥ १२ पुञ्ज राउल से १३ सौति (सौत) ॥ ९ ॥ चहुवाण की १४स्त्री ॥ १० ॥

याकौं हम भाखत मृत*अनूढ, बहु बीकानैरप कर्ण व्यूढ ॥
सोतों न बनत तँहँ१ सूरसींह १, इत सत्रुसल्ल १९४।१ बुंदिय २ अबींह ॥ ११ ॥

जिम दिल्लीपति साहेजिहान३।९।२, समकालहुते ए२ह सुजान ॥
वह सूरसिंह१ सुत कर्ण२ आहि, सो भावसिंह१९५।१ उपकृत सदाहि ॥ १२ ॥

सुत चउ४ तस अनुपम३।१ पद्मसीह३।२, इम केहरि३।३ मोहन रन अबीह ॥
सो मोहन३।४ मृगरन कहुँ रिसाइ, इक मिच्छ हन्यो मद जोर आइ १३

सो मिच्छ हन्यौं जिहिं पद्मसीह ३।२, नानाँ न रत्न १९२।१ तस अघ निरीह ॥
नृप चंद्राउत्तहु रत्न१नाम, रामपुर भयो इक भूप राम२०१४। ।१४।

वह तस कनीजे जो पद्म३।२आस, सो हमहु न जानत ख्याति तास
बुंदीस रत्न १९२।१ चउ ४ सुत बिबाह, सुनिये वं राम २०।१४ प्रभु सह सराह ॥ १५ ॥

पट्टप जो गोपीनाथ१९३।१ पुत्त, व्याह्यो एकादस११जस बहुत्त ॥
कुमरानीतैं अंबा कुमारि१९३।१, पहिली१रानाउति हित प्रसारि।१६।

जगमाल रान तनयासु जाहि, बर उदयनैर आयो बिबाहि ॥
सुहि दीपकुमारि१९३।१ कहियत सुधाम, नृप ताको दूजो२ यहहु नाम ॥१७॥

---

*विना बिवाही मरी१ बहुतलोक बीकानेर के राजा कर्णसिंह को२परलाई कहते हैं ३ उस समय वहां सूरसिंह था४निर्भय ॥११॥ ५एक समय में थे६हुआ७उपकारी ॥१२॥ ॥१३॥ ८रत्नसिंह उसका नाना नहीं होसक्ता९पाप की इच्छा नहीं रखने वाला १० हे राजा रामसिंह ॥ १४ ॥ ११ कन्या का पुत्र (दौहित्र) १२ हुआ १३ अब ॥ १५ ॥ १६ ॥ १४महाराणा उदयसिंह के देहान्त होने पर महाराणा प्रतापसिंह का छोटा भाई जगमाल उदयपुर की गद्दी पर बैठगया था जिस को मेवाड़ के उमरावों ने गद्दी से उतार कर प्रतापसिंह को राणा बनाया

कछवाह कन्ह तनुजा कुलीन, करगहि मह एगारहम११ कीन ॥
बर अंतिम गोपीनाथ१९३।१ व्याह, आनी सदाकुमरि१९३।११सह उछाह ॥ २७ ॥

· षट्पात्

पहिली१ तीजी३ पितर गिनहु सीसोद१वंस गत ॥
दूजी२ चोथी४ दुहुँ२न महिप चालुक२ अन्वय मत ॥
पंचमि५ अष्टमि८ सुपहु जथा तोमर३ कुल जाई ॥
रमनि गोरि६।४रठोरि५।७ पृथक इक१ इक१ कुल पाई ॥
कछवाह६ बंस अंतिम त्रिक३रु अंत्य ११ नरूकी गिनहु इत ॥
दसमी१०रु यहहि एकादसी११दोउ२न पिउहर नन बिदित।२८।

॥ दोहा ॥

अधिप रत्न१९२।१ सुत ज्येष्ठ१ इम, बरि एकादस११ ब्याह ॥
सुत तेरह१३ अरु इक१ सुता, लहे कुमर अर्य लाह ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

प्रथम१सत्रुसल्ल१९४।१पुनि इंद्रसल्ल १९४।२ सु द्वितीय२ इमं ॥
बैरिसल्ल१९४।३बल बिदित तदनु हुव राजसिंह१९४।४ तिम ॥
मुहुकम१९४।५ पंचम५ कुमर उदय१९४।६छत्रोद६ रन अद्भुत ॥
सूरसिंह१९४।७ सप्तम७ रु स्यामसिंह१९४।८ सु अष्टम सुत ॥
क्रम नवम९महासिंह१९४।९सु कुमर दसम१०केसरी १९४।१०दुजनँदम
जिम कनकसिंह१९४।११नगराज१९४।१२जँहँ रामसिंह १९४।१३ तँहँ तेरहम१३ ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

क्रम सन ए हुव कुमरके, सुत तेरह१३ अति सूर ॥
सदाकुमरि१९४।१हुव इक१सुता, पटुपन निजनिज पूर ॥ ३१ ॥

---

१ पिता २ वंश ३ भिन्न ४ प्रसिद्ध नहीं है ॥ २८ ॥ ५ अच्छे भाग्य के लाभ से ॥२९॥ ६ जिसपीछे ७ दुष्टों को दण्ड देनेवाला ॥३०॥ ८ चतुरपन ॥३१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सजुमल्ल१९४१पट्टप पहिलो१सुत, चोथो४राजसिंह१९४१४रन अच्युत
कुलचोलुक्क दूजी२कुमरानी, मदनावती१९३।२जने दुव२मानी।३२।
इंद्रमल्ल१९४।२दूजो२खल आकर२, पंचम५दुहुकमसिंह१९४१५धर्म पर
नीजी३वदनकुमरि१९३।३चंद्राउति, सोदर ए दुव२जनें बहन श्रुति ३३
वीरमल्ल१९४१३तीजो३सोभित बल,उदयसिंह१९४१६छट्टो६जसउज्जल
लालमनी१९३।४चोथी४वाघेलिय, अवसर दुव२हि तनय जनि एलिय
नरसिंह१९४।७नानकसप्तम७सुत,जानहु दसम१०केसरी१९४१०संजुत
छट्टी६नन्दनावती१९३।६गोरि छिम, दुव२सगर्भ ए जनें अरिंदम॥ ३५ ॥
अष्टम८ स्यामसिंह१९४१८ बिधि अनुसरि, कन्या तस अनुजा
सदाकुमरि१९४१२ ॥
गानकुमरि १९३।५ तोमरि कुमरानिय, जुग२सुत१ सुता२ जने
ए जानिय ॥ ३६ ॥
जु नवन ९ महासिंह १९४१९ तस जननी, नाथकुमरि १९३१९
नवमी९जस जननी ॥
तसजननी जस जननी२ अन्त्यानुप्रासः॥ १ ॥
एगारहम११ सु कनकसिंह१९४११इम, जँहँ नगराज१९४१२
बारहम१२क्रमजिम ॥ ३७ ॥
राजकुमरि१९३।७सत्तमी७स्व औरस, जुग२गट्ठोरि जनें ए अति जस।
कछवाही कमला १९३।१० दसमी१० क्रम, रामसिंह १९४१३
इक१ तास तेरहम१३ ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

आदि१अष्टमी८अंतिमा११, त्रिक३कुमरानिन तत्थ ॥

---

१ सोलंखी ॥ ३२ ॥ २खल की खान ३ वेद को धारण करनेवाले ॥ ३३ ॥ ३४ ॥
४ समर्थ ५ शत्रुओं को दण्ड देनेवाले ॥ ३५ ॥ ६ छोटी बहिन ॥ ३६ ॥ ७ यश
की ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

रहिय अहो संतति रहित, स्वस्व बिफल बिधि सत्थ ॥ ३९ ॥
आदि त्रिक३ रु पंचम५ नवम९, पंच५ सुतन कुल पात ॥
चोथे४को कछु दूर चलि, वलि खिल सब८न बिलात ॥ ४० ॥
कहियत गोपीनाथ१९३।१को, जो माधव१९३।२ अनुजात ॥
परिनायो वंह रत्न१९२।१पहु, व्याह नवक९बिख्यात ॥ ४१ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तोमर कुल डुंगरकी तनुजा, गढ गुग्गेर अमरकी अनुजा ॥
केसरकुमरि१९३।१नाम जिहिं कहिलिय, परन्यौं कुमर माधव १९३।२ सु पहिलिय१॥ ४२ ॥
कुल कबंध अभिधा स्याम कुमरि १९३।२, बर दूजी २ लिय उदय सुता बरि ॥
अरु सीसोद स्याम दुहिता इम, तीजी ३ संवलकुमरि १९३।३ व्याह्यो तिम ॥ ४३ ॥
तस सगोत्र संग्रामसुता तँहँ, करगहि चोथी४राजवती१९३।४कँहँ ॥
जिम चालुक भगवंत जु जाई, पंचम५व्याह चंद्रवति१९३।५पाई।४४।
इम प्रताप तनया रानाउत, भाग्यवती१९३।६छट्ठी६बरि भानुति ॥
कल्यान कबंध कनी क्रमकरि, बिहित सप्तमी७चंद्रवती१९३।७बारि
गोर जसराज दुहिता करगहि, राजवती१९३।८अष्टमि८सोपुर लहि
अखय कबंध सुता जु बरअली, किय निज रायकुमरि१९३।९ नवम९कली ॥ ४६ ॥
क्रम पंचमि५सप्तमि७कुमरानिय, जथा नवमि९ अग्रज त्रय३जानिय ॥
हुवसंततिखिलछ६कै चउद्दह१४, सप्त७कुमरसत्त७हिकन्यासह ।४७।
जँहँ मुकुंद१९४।१ मोहन१९४।२ सुत जानहु, पुनि कन्ह१९४।३ रु जुज्झार१९४।४ प्रमानहु ॥

---

१ आश्चर्य है ॥३९॥ २पाता है ३ बाकी ॥४०॥ ४ छोटा भाई ॥४१॥४२॥४३॥४४॥
५ स्तुति योग्य कांतिवाली ६ कन्या ॥ ४५ ॥ ७ श्रेष्ट सखियोंवाली ॥ ४६ ॥
८ विना सन्तान ॥ ४७ ॥

सुत किसोर१ १९४१५ पंचम५ छट्ठो६ सुत, सु हनतसिंह१९४१६ छठी ४१९४१६ हुव नाम जुत ॥४८॥
सुत संग्रामसिंह१९४१७ तँहँ सक्तम७ कन्या सप्त७ सु सुनहु जथा क्रम
जे हरिकुमरि१९४१४ मनाकुमरि१९४१२ हु जिम, रु कुसलकुमरि १९४१३ स्वरूपकुमरि१९४१४ इम ॥४९॥
आकुवनकुमरि१९४१५ पंचमी५ इक्कहु, पुनि छट्ठी६ सु सत्यभामा १९४१६ पहुँ[३] ॥
कन्या सप्तमी७ हुवदीपकुमरि१९४१७, सबकी प्रसू सुनहु क्रम अ-नुसरि ॥ ५० ॥
जेठो जनिय कुमर जेठी१ जँहँ, तस अनुजा जेठी१ कुमरी तँहँ ॥
सुत दूजो२ दूजी२ पंचमि५सह,त्रिक३ यह जन्यौं वधू दूजी२तह॥५१॥
सुत तीजो३ चोथो४ छठी६ सुता, जनि अष्टमी८हुव त्रि३तोक जुता
तुक पंचम५ सप्तम७ तीजी३ तिम, यह त्रिक३ जनि समज चोथी ४ इम ॥ ५२ ॥
छम६ कुमर रु सप्तमी७कनी छम, कुमरानी तीजी३प्रसूति क्रम॥
जनि छट्ठो६ रु कनी चोथी४ जँनि,बहू छह६इम समर्जा गई बनि५३
पहिले पंच५ तनय हुव समज, अंतिम सिसुहि मरे हुव२ अंमज ॥
जयसिंह१९दि कुलि व्याहहिँ जिम, यह कति सुता मरी कति सिसु इम ॥ ५४ ॥
सो तीजो३ हरिसिंह१९३१३ रत्न१९३१२ सुत, व्याह अट्ठ८ व्याह्यो जस संजुत ॥
उदय भन्यौं जु जोधपुर अधिपति, तस लघु सुत दलपतिकी सं-तति ॥ ५५ ॥

॥४८॥ ४९ ॥ १ देखो २ प्रभु ३ माता ॥ ५०. ॥ ५१ ॥ ४ तीन बालकों सहित ५ बालक ॥ ५२ ॥ ६ समर्थ ७ माता ८ सन्तान सहित ९बिना सन्तान ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥

कन्या बडी नाम इंद्रकुमरि१९३।१, व्याह प्रथम१ हरिसिंह१९३।३ लई वरि ॥
याहीकी अनुजा वसुधावर सत्रुसल्ल१९४।१०व्याहहिँ नृप अनुसर५६
जिहिँ सुत भावसिंह१९५।१ हैहैं जिम, अग्रज१ स्वसा वरी तस हरि१९३।३ इम ॥
खंडेलापुर लहि सेखाउत, रायसल्ल प्रतप्यो बढि राउत ॥५७॥
पटकि त्रास निर्वान८ कढ्ढि पहु, बलि कलि सम्मुह भये बढ्ढि वहु
अग्रज१ लवन करनके अग्गैं, वढियो चहि करारी गहि वग्गैं॥५८॥
कहुँ यह अनुज२ साहको जयकरि, अधिक पाइ मनसुब हनि तस अरि ॥
निर्वान१न पुनि जित्ति वह नगर, खंडेला लिय झारि खग्ग खर ॥ ५९ ॥
कातिक कहत पोपाँ कुंभारिय, पत्तन यहै लैन ढव पारिय ॥
मिलि निर्वान८ कढ्ढि मद्दव मिस, यह पैठाइ दयो राकाँइस ।६०।
कुमर सत्त७ तसगिरिधरा१दि क्रम, परसुराम५ तिनमैं हुव पंचम५
तस हुवनाम अग्रमति१९३।२ तनया, सु हरि१९३।३ वरी दूजे२ मह सनया ॥६१॥
कच्छर सुता नरूकी गहि कर, वरि तीजी३ नरवद कुमरी १९३।४ वर ॥
कुंपाउत रट्ठोर उदयकी, कनी चित्रमति१९३।४चोथी४ सय की६२
पंचम५मह सदूल सुता पिय,बदनकुमरि१९३।५गंगाउति व्याहिय।
जद्दव सहँसपाल दुहिता जिम, ऊंढा छट्ठी६ महाकुमरि १९३।६ इम ॥६३॥

१भूपति ॥ ५६ ॥ २वहिन ॥ ५७ ॥ ३युद्ध में॥५८॥४ तीक्ष्ण ॥५९॥ ५नगर६भागने के मिष से ७ आश्विन सुदि पूर्णिमा को ॥ ६० ॥ ८ नीति सहित ॥ ६१ ॥ ९ हाथ, अर्थात् कर ग्रहण (विवाह) किया ॥ ६२ ॥ १० विवाही ॥ ६३ ॥

दुर्जन चालुक तनया वय सम, सुजानकुमरि१९३।७ वरी मह सप्तम७ ॥

मेरतिया जगमाल सुता मह, अष्टम८ वरी उमेदकुमरि१९३।८ अह ॥ ६४ ॥

इनमें इन्द्रकुमरि१९३।१ पहिली१ इम, तीजी३ चोथी४ पंचमी५ हुतिम ॥

न लही संतति इन चउ४ नारिन, चले प्रसव ग्यारह११ खिल च्यारि४ न ॥ ६५ ॥

तिनके तनय अष्ट८ तनया त्रय३, भये जथाक्रम सुनहु वीतभय ॥

बडो१ कुमार सुजानसिंह १९४।१ जु वलि, अनुजनु विजय१९४।२ अभय१९४।३ रनसुमन अलि ॥ ६६ ॥

चोथो४ अजबसिंह १९४।४ अरु पंचम५, छम राजसिंह १९४।५ रु जयसिंह१९४।६ छम६ ॥

परसुराम१९४।७ सप्तम७ अष्टम८ पुनि, सबन अनुज समरेस १९४।८ लेहु सुनि॥६७॥

कनी अनंदकुमरि१९४।१सहजकुमरि१९४।२, इंद्रकुमरि१९४।३ ग्यारह११ ए क्रमकरि ॥

प्रथम१चतुर्थ४सुतसुता पहिलिय१, गर्भ स्वीय दूजी२त्रिक३गहिलिय

दूजो२तीजो३रु कनी दूजी२, प्रसव तत्र य३हि सप्तमि७पूजी ॥

छट्ठी६जनित कुमर पंचम५छम६, अंतिम कुमर सप्तम७रु अष्टम॥६९॥

तीजी३सुता अष्टमी८औरस, तोकँ त्रय३हि अंतिम यह हुव तस ॥

कोहू कनी विवाही कोहू, सिसुहि मरी विदित न क्रम सोहू ।७०।

सुत तृतीय३पंचम५अरु सप्तम, सह अष्टल८अमज मृत चउ४सम ॥

चउ४सुत खिल तिनके वंस चले, वलि जगनाथ १९३।४त्या-

---

१ समान अवस्थावाली ॥ ६४ ॥ २ बाकी ॥ ६५ ॥ ३ छोटा भाई ४ युद्ध रूपी पुष्प का भ्रमर ॥ ६६ ॥ ५ समर्थ ॥ ६७ ॥ ६ ग्रहण किया ॥६८॥ ६९ ॥ ७ बालक ८ किस कन्या को किससे विवाही

ह भनंत भले ॥ ७१ ॥

कुमरानी पहिली१दीपकुमरि१९३।१,कुल कबंधजगनाथस्वसुरकारि
परनी कुमर जाइ जुगयापुर, व्याह्न सुनहु दूजो२जसबंधुरं[१] ॥ ७२ ॥
छट्ठो६स्वसुर रत्न१९२।१नृपको छमं[२], जोगीदास गोर हत संजम[३] ॥
बुंदी पटा लहि रु भर बज्जैं, लज्ज गयेंहु नैंकहु न लज्जैं ॥७३॥
जाकै सुत गोपाल१ सु जिट्ठो[४], कहियत सुंदरदास२कनिट्ठो[५]२ ॥
पठयो जो बारीगढ उप्पर, भ्रातन सन आयोभजि जो भरं[६] ॥७४॥
कुप्पि जु रत्न१९२।१देस सनँ कढ्यो,वैरहि जास स्वसुर हिय बढ्यौ
हुतो स्वंसालक[७] जदपि कन्ह हर, सुपहु[८] तदपि बुल्ल्यो न सु सुंदर।७५।
कंनी[१०] तदीय गोरि अमरकुमरि १९३।२, वर जगनाथ १९३।४
लई दूजी२ बरि ॥
परसुराम सेखाउतपुत्रिय,केसर कुमरि१९३।३प्रिया तीजी३किय।७६।

॥ दोहा ॥

सुंदर चालुककी सुता, इम गोरी१९३।४ अभिधान[११] ॥
आनी बर जगनाथ१९३।४ यह, करि चोथी४ सविधान ॥७७॥
मागधलोकन[१२] मूढता, यह जानी अधिराज[१३] ॥
पत्निनके[१४] प्रपिता१ पिता२, लिखत बदलि बिनुलाज ॥ ७८ ॥
यातैं स्वसुरन नाम ग्रहँ, जेजे न मिलैं जत्थ ॥
तियन पितामह नाम ते, तुम प्रभु जानहु तत्थ ॥ ७९ ॥
लगि खोजन सु कविहु[१५] लयो, जँहँजँहँ निश्चय जानि ॥
दिन्नौं क्रम तँहँतँहँ बदलि, अभिधाँ[१६] स्वसुरन आनि ॥ ८० ॥
कुमरानि१न रानिन कहै, जनकन नाम जितेक ॥

॥ ७० ॥ ७१ ॥ १ यश में उच्च ॥ ७२ ॥ २ समर्थ ३चंचलायमान इन्द्रियोंवाला अर्थात् व्यभिचारी ॥ ७३ ॥ ४ ज्येष्ठ ५कनिष्ठ ६ भड़. यह शब्द यहां वक्रोक्ति से कहागया है ॥ ७४ ॥ ७ से ८ अपना साला ९ कन्ह का पौता ॥ ७५ ॥ १० उस की पुत्री ॥ ७६ ॥११नाम ॥ ७७ ॥१२बड़वा भाटों की मूर्खता १३हे स्वामि १४ स्त्रियों के ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १५ ग्रन्थकर्ता कवि सूर्यमल्ल ने १६ नाम ॥ ८० ॥ ८१॥

श्वसुर पिताके१ वे श्वसुर२, कहुँ कहुँ तिन विच केक ॥८१॥
सुत चौथो जगनाथ १९३।४ सो, व्याह्यो इम चउ ४ व्याह ॥
इनमैं जेठो१ अग्रजा, जिम त्रिक३ सुत त्रिक लाह ॥ ८२ ॥
कुलकर बडो१ तँहँ केसरी १९४।१, मध्यम२के जुग२नाम ॥
जु धनैसिंह १९४।२ जु जैत जिम, कुल तानेक जस काम।८३।
जगतसिंह १९४।३ तीजो३ तनुज, अग्रज प्रथम १ रु एह ३ ॥
सन्तानकोहि कुल प्रसरि नहिं, लहि रहिगो विधिलेहँ ।८४।
गोपीनाथ १९३।१ प्रसंग गहि, अनुजनकेहु अपत्य १ ॥
प्रि[illegible]न रघुकुल३नं नाम पुनि, सह कुल४ आक्खिय सत्य।८५।
अनुजन व्याह१ अपत्य२ ए, अव१ रु रत्न१९२।१ अवसान२॥
किते भूत १ भावी २ किते, मन्नहु संभव मान ॥ ८६ ॥
अभिय जदपि सबतैं अधिक, निज सुत गोपीनाथ १९३।१ ॥
पत्निनाथउ तेरह १३ प्रिया, सवय सवय १ बल २ साथ ।८७।
तदपि सु लंपट पर तियन, विलसे पिहित विलास ॥
तात रत्न १९२।१ सम डरत तिम, प्रकट न बुल्लैं पास ॥८८॥
श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पष्ठराशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे रत्नसिंहसूनुपाणिपीडनतत्संततिवर्णनं द्वाविंशो मयूखः।२२।
आदितः पञ्चोत्तरद्विशततमः ॥ २०५ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

॥ ८२ ॥ १ कुल को फैलानेवाला ॥ ८३ ॥ २ ब्रह्मा के लेख से ॥ ८४ ॥ ३ सन्तान ॥ ८५ ॥ ४ छोटे भाइयों के ५ रत्नसिंह के अन्त पर ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में रत्नसिंह के पुत्रों के विवाह और इनकी सन्तानों के वर्णन का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पांच२०५ मयूख हुए ॥

अमर रान पुव्वहि इतसु, अनसु उदैपुर आस ॥
करनसिंह१ पट्टप १ कुमर, तब गहिय लिय तास[1] ॥ १ ॥
अडर सरनपालक[3] अनुज[4], भ्रात करन १ को भीम ॥
कहि हैं अवसर ताहुको, सरनदैन रनसीम ॥ २ ॥
इत दिल्ली दल जाइ अर, घोर पटकि रनघात ॥
खुरम३९१२ भजायो बहुरि खल, सह सहाय सकुचात[5] ॥३॥
पहु तीन३हि[6] बुरहानपुर, जबहि रक्खि जवनेस ॥
दिल्लिय बुल्ल्यो जवनदल. समुझि विजय सविसेस ॥४॥
तब कूरम१ रट्ठोर२ तिम, हड्ड६९१३ रहिय असिहत्थ[7] ॥
पहु तीन३हि बुरहानपुर, पत्तन[8] ढिग रनपत्थ[9] ॥५॥

वेतालः ॥

बलसह[10] महावत खान१त्यौंहि अजीमवेग२ बुलाइ,
भूपाल तीन३हि साह ए रक्खे तहाँ जयभाइ ॥
कछुकाल तत्थ सबै रहे जय ठानि दिल्लिय कज्ज,
सब देस दक्खिनसो रसो सुनि सत्रु ते हुव सज्ज ॥६॥
इक१को स्वसापति[11]१ खुरम३९१२ वह इक१को स्वसासुत[12] आहि
तिम भीर दक्खिन वीर यों समुझ्यो बलिष्ठहु ताहि ॥
किय मंत्र कुम्म[13]१ कबंध[14]२ तब पच्छोहि करन पयान,
बुंदीस सुनि बरजे उहाँ इन व्याज[15] चिंतिय आन ॥७॥
दिन इक्क१ कुम्म१ कह्यो अहो किम जाइ वारिय दुग्ग,
भटरावरे सहही भजे अब गौडकै हुव उग्ग[16] ॥

---

१ प्राण रहित २ हुआ ॥ १ ॥ ३ शरण आये हुए की पालना करनेवाला राणा कर्णसिंह का ४ छोटा भाई भीमसिंह ॥ २ ॥ ५ शीघ्र ॥ ३ ॥ ६ तीनों राजाओं को ॥ ४ ॥ ७ खड्ग हाथ में लेकर ८ नगर के समीप ९ युद्ध में अर्जुन ॥ ५ ॥ १०सेना सहित ॥ ६ ॥ खुर्रम उक्त दोनों राजाओं में एक के ११बहिन का पति और दूसरे का १२भानजा है १३कछवाहा १४राठोड़ १५छल ॥७॥ १६उग्र

निज देन लौकिक काकवाचक शब्दलैं कटुनर्म ॥
सुनि यों कह्यो गजसिंह२क्यों भयमैं वनैं जय कर्म ॥ ८ ॥
भिनु दंनि हडुन संघ संधन जे सबै उडिजात ॥
हनि क्यों परैं तिननैं उहाँ जय प्रानसंसय बात ॥
रहुवान३अक्लित्रय चक्रमैं किय मुख्य गौड४कंबंध ॥
सठ भीरु तेहि भजे अचानक प्रानलै हतसंध ॥ ९ ॥
नेता करैं जु भलौ१बुरौ२सु गिनैं अधीनहु न्याय ॥
करि संग कातर१को प्रवीर२हु के वजैं प्रियकाय ॥
हमनो गिनैं भय जत्थहैं दुंहिताहु मिच्छन दैन ॥
हिय छत्रधागि१न मैं जु काकर२नकेहु ता रिसहैं न ॥ १० ॥
तुम१२ पितामहकी स्वसा वरिकैं लजे हम त्योंहु ॥
इनके स्वसापतिको कह्यो न वन्यों वैं दुर्मन योंहु ॥
पहिलैं मरे गिनि जे लरैं भट नेहु दै पयपिट्ठि ॥
इह हेतु है कछु ज्यों पतौ१जयमल्ल२भिल्लन ईठि ॥ ११ ॥
परभुम्मि भाइ सुवाइ पुत्रिन लाइ मिच्छन पास ॥
हमनोंहु वैभवमैं वढै भय ह्वाँ गिनों न सुहास ॥
गज्जैं वली अरि देवगढ तुम१रो इहाँ हनि तातैं ॥
इनै२कोपितामह स्वों वज्यों भय ह्वाँ न संसैद आत ॥ १२ ॥
रस१मैं गिन्यों विरसत्व२यों कटुनर्म होत रिसाइ ॥
भरि वारिकोहु समुद्र ह्वाँ धरि यों कह्यो अघभाइ ॥
हम नीर हड्ड६१न दैचुके अवतो न सगपन व्हैहि ॥

---

१ काकुभाषा (वक्रोक्ति) में २ कडुई मसकरी का ॥ ८ ॥ ३ टगकर ४ समूह ५ भेना में ६ प्रतिज्ञा छोडकर ७ आज्ञा करनेवाला (स्वामि) ८ कायर का ९ कायर वजने हैं १० पुत्रियें ११ राजाओं को १२ भय ॥ १० ॥ दादा की १३ बहिन १४ अब १५ उदास १६ चित्तोड़ का किल्लादार रावत पत्ता १७ इष्टि (इच्छा) ॥ ११ ॥ १८ पिता १९ कछवाहे का २० इवान २१ सभा में ॥ १२ ॥ २२ खोटी हसी होने से २३ पानी का तासला (समुद्ग नाम डिब्बे का है परन्तु यहां पा-

बदि यौं खिजे उठि बेग जे दिल्ली चले चढि व्है२हि ॥ १३ ॥
बुंदीस चाहिय जाइ तिन समुझाइ रक्खन बत्त ॥
रिस कौं कह्यो तँहँ बंधु१बीर२न अप्प क्यों अनुरत्त ॥
बज्जैं दुरहत्थन तालि व्हाँ उनकोंहि वारि उतारि ॥
तुमकों चढाइ गये उभैरव्राजिहँ दये पहु टारि ॥ १४ ॥
॥ उतारि१ह्वुतारि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
जेहो निहोरि मनाइबे गिनिबे ततो इत जोर ॥
इम मानिहै डरि भीरु हह६१सहाय इच्छत ओर ॥
नृप अप्प ह्वैरहि व्ये चमूपति देसतँहु निकारि ॥
निज सालकैत्व गिन्यौं न यौं वहु क्यौं चढ्यो कुलवारि ॥१५॥
सुनि बंधु१बीर२नकी यहै न गयो निहोरन सोहु ॥
दिल्ली गये अनखाइ कुम्भ१कवंध२भूपति दोहु ॥
तँरजे वजीर अयाज ते बरजे लये न बुलाइ ॥
उल्लंघि साह निदेस ह्वे२रहिहो कहाँ इत आइ ॥ १६ ॥
बुल्ले उभै२नहि रत्न१९२१के हमरे वर्ना हितवत्त ॥
तिन्ह बुल्लिकें१हमकों पठावहु तोहि कें२वहु तत्त ॥
सबमाँहिँ मुख्य पठाइ ओरहि देहु कैँ३तुस संग ॥
भनि यौं सिटेहु जथा तथा दुवर व्हाँ रहे मन भंग ॥ १७ ॥
अवधानतैं नृपरत्न१९२१हू इत साह सीस सम्हारि ॥
रुपि अद्रि सैत्त७ पुरे समीप रह्यो सु इच्छत रारि ॥
इत नैर बुंदिय रत्न१९२१ को जु कुमार पहुप आइ ॥
व्यायाम बिद्या सो बहै सिसुकालतैँहि समाहि ॥ १८ ॥

नी के सम्बन्ध से तालला लिखागया है) खरकर ॥ १३ ॥ १ आप अनुरक्त क्यों होते हो २ उनका तेज उतारकर ३ राजा ने निकाल दिये ॥ १४॥ ४ सालापन ५ नीर (तेज) ॥ १५ ॥ ६ क्रोध करके ७ धमकाए ८ बादशाह की आज्ञा को उल्लंघ करके ॥ १६ ॥ ९ तहां वही बहुत है ॥ १७ ॥ १० सावधानता से ११ सतपुड़ा पर्वत (विन्ध्याचल) के समीप १२ कसरत ॥ १८ ॥

किय अद्वितीय बली भली चहुँ४ओर अप्पन कित्ति ॥ २३ ॥
गुन ओर बीर१बदान्य२तादिक जे लये बलगर्ब ॥
३स्मरनैं दबाइदये अनर्गल आत जुव्वन सर्ब ॥
याके जथापि करे महीपति इक्कदस११ उपयाम ॥
न तज्यो तथापि कुमार अप्पन पारदारिक नाम ॥ २४ ॥
जिहिं पुत्र तेरह१३ त्यों सुता इक१ यों चउद्दह१४ जात ॥
प्रछन्न तोहु नईनई परनारि संगति पात ॥
गुडवान जित्ति नरेस सुर्जन१९०१ वाहुर्यो जब गैल ॥
बहु ६व्रात्य ७चंदिपुरी लखे द्विज ८बित्रई भरि बैल ॥ २५ ॥
सबही मिलैं जिनके परिक्रम देसदेसन १०सुद्धि ॥
बलि ११क्रय्य१ १२क्रेय२ १३महार्घ देसहुमैं मिलैं सुख बुद्धि ॥
उनमैंहिसों नृप १४विप्रबंधु कितेक बुंदिय आनि ॥
कर अद्द रक्खि दये बसाइ बिसेस १५वानिजकानि ॥ २६ ॥
चरनाद्रितैं आनैं तथा इनकौं कितेक १६बदंत,
हे पंच५गौडन माँहिं पै किय लोभ बानिज हंत ॥
अब मूढ एहु कहैं बसे इम बंग१७९१ देव१८०१ १७अनेह,
इमहोहु पै न प्रमान सूचत अत्थ संसय एह ॥ २७ ॥
इक१ बिप्रबंधु १८बधू हुती तिनमाँहिं सुन्दर अंग,
सम रूप१ जुव्वन२ द्वै२ परस्पर उज्झले तस संग ॥
लखि बिप्रबंधु बधू वहै चंदेरनी अतिलाग,
रच्यो तहाँ सबतैं बिसेस कुमारको १९अनुराग ॥ २८ ॥
मिलिजात दोउरन नैंन१ त्यों मन२हू मिलें २०रतिमाँहिं,
२१अतिप्रान त्योंहि भजैं कुमारहु छन्न नृप भय आँहिं ॥

॥ २३ ॥ १ दातार २ कामदेव ने ३ आड़ रहित ४ विवाह ५ पर स्त्री का ॥ २४ ॥ ६ संस्कार हीन ७ चन्देरी में ८ बनजारे ॥ २५ ॥ ९जिनके फिरने से देशदेशों की १० खबर मिले ११ विकने की वस्तु १२ मोल लेने में १३ बडे मूल्य की १४ अधम ब्राह्मणों को १५ व्यापार करनेवालों को ॥२६॥ १६ कहते हैं १७ समय ॥ २७ ॥ अधम ब्राह्मणों की १८ स्त्री १९ प्रीति ॥ २८ ॥ २० प्रीति में २१ बडा

[illegible] १९७।१ कुंदिय आत बिमन लौं्दयो तु[illegible]निदेस,
[illegible] करि [illegible] द्विज चेन [illegible] देस ॥ २९ ॥
[illegible] लयो [illegible] कुमारहु सुनि आयुके अवसान,
[illegible] तोहु [illegible] तज्यो नन होत निज जस हान ॥
[illegible] सक्लिष्टता मद्यसक्तता जुत [illegible],
[illegible] जब गेह तासहु [illegible] बंधुन होइ ॥३०॥
जो [illegible] द्विजातिन मद्रिकैं तृन मान,
[illegible] मनो विलसैं बसैं वलवान ॥
[illegible] दाव घनें द्विजातिन मोघ जे हुव मानि,
[illegible] जो तथापि तज्यो न उद्यम [illegible]१९७।१ सासन जानि।३१।
[illegible] निसा सब बाग१ बाग्गि[illegible] वेढि,
मन [illegible] न रुके सबे ब्रहुवेलज्यों इक मेढि ॥
अति सावधान कुमार गो तिनमाँहिसों कढि एह,
न तज्यो परंतु कृतांत प्राघुन जो द्विजासन नेह ॥३२॥
परकामिनी१ व्यसनी जु ह्वै व्यसनी सु व्है मधुपानैं२,
इम [illegible] दोष लगे कुमारहि गेरिबे छल आँन ॥
[illegible] मत्त कुमार सो सुनि गो तदीय अगार,
विट१ चेट२ दूत३ विदूपका४दिन सिक्ख दे तिहिं वार ॥३३॥

बलवान[illegible]आज्ञा ॥ २९ ॥ १ अन्त में २ रात्रि में ३ प्रसन्न होकर प्रवेश करना ४ घर खाली होता तब ॥ ३० ॥ ५ चन्देरी के ब्राह्मणों को तृण समान जानकर ६ हरिणों में सिंह के समान ७ ब्राह्मणों ने बहुत दाव देखे परन्तु निष्फल हुए ॥ ३१ ॥ ८ घेर कर ९ मेढी (बीच के अपनी कक्षा पर घूमनेवाले) बैल के साथ बाहिरवाले वृषभ फिरैं इसप्रकार फिरें १० यमराज का ११ पाहुँना १२ उस १३ ब्राह्मणी से ॥ ३२ ॥ १४ मद्य पीने का व्यसनी होकर ॥ ३३ ॥ १५ अत्यन्त मद्य पीने से मस्त होकर १६ उस ब्राह्मणी के घर गया १७ सम्पूर्ण काम कला में निपुण सखा को विट कहते हैं और१८नायक नायिका को सङ्केत किये हुए स्थान में मिलानेवाले चतुर सखा को चेट कहते हैं और१९परस्पर नायक नायिका के सन्देश पहुंचानेवाले का नाम दूत है और२०कौतुक से नायक नायिका के प्रसन्न करने में समर्थ सखा का नाम विदूपक है ॥

पुनि पानकैं घर सून्य सो गिनि ह्वै बिसेस प्रमत्त ॥
इक२ही रह्यो सब३ रत्ति बिलसन बम्हनी अनुरत्त ॥ ३४ ॥
निद्रा निसीथ४समैं फिरी अतिपानतैं बढिन्याय ॥
अब गेहस्वामिनकौं कुर्‌यो वह छद्मघात५ उपाय ॥
लहि सुद्धि सोवनकी निरोहित६ आइकैं तिन लार ॥
कछु रीति पैठि दयेहि मंच७क बंधि दार१ कुमार२ ॥८ ३५ ॥
कछु हे सहायक छन्न बाहिर ते गये भजि कूर ॥
सहसा९ सु जग्गतहाँ उठ्यो सह१०मंच१ बंधन२ रूर ॥
लहिहू सके न कुमारके कर१ पैर२ विवंधन११ होन ॥
मच१२काइ अंग न तोरि मंच सक्यो खगेगहि सो न ॥ ३६ ॥
इहिं छिद्र१३पैं गतनिद्र पैं करि गेहस्वा१४मिन वार ॥
किय लार दार१ कुमार२ दोउ१५न पार सौंर कटार ॥
भुजजु१६द्ध मल्ल१न जित्तिकैं जिहिं सिंह१७ कै दिय भंजि ॥
गति दांव कोहु१८ कुर्‌यो न यों रु लयो भिखारिन गंजि ॥३७॥
गजे१९मार१ वीर२ रु सिद्धसस्त्र२० अंसे४ दढी२१ हढगत्त६ ॥
परनारि संगहनैं सुनें भरे यों अनेक प्रमत्त ॥
अति दुर्दसा करि मारि दोउ२२न गेरि चत्वर२३ आइ ॥
जन सर्व वा घरके जुरे भजिकैं दुरे कहुँ जाइ ॥ ३८ ॥
कति यों कहंत हन्यों यहै संकेत बेलैं२४ कुमार ॥
कैसैंहु होहु मर्‌यो सु बद्धहि२५ चोरके अनु२६कार ॥

१ फिर मद्य पाकर २ रात्रि ३ ब्राह्मणी से ॥३४॥ ४ आधी रात्रि में ५ छलघात का उपाय ६ गुप्त ७ मांचे पर ८ स्त्री और कुमर को बांध दिये ॥ ३५ ॥ ९ अचानक १० मंच सहित ११ हाथ पैर दोनों नहीं बंध सके १२ बल पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ जागृत हुए पर १४ घर के स्वामियों ने १५ छेदकर, अथवा तरवार और कटारी पार कर दिये १६ बाहु युद्ध में १७ कितने ही सिंहों को १८ कोई दाव समरथ नहीं हुआ ॥ ३७ ॥ १९ हाथियों को मारनेवाला २० शस्त्रों को सिद्ध किये हुए २१ दृढ शरीर २२ वीरों को २३ चौक में आकर डाला ॥३८॥ २४ सङ्केत कियेहुए बाग में मारा २५ बन्धा हुआ २६ चौर के सदृश मरा ॥

जरती नतो सब अग्गव्है परती चितापर जाइ ॥ ४४ ॥
दूजी२।१रु चोथी४।२पंचमी५।३छट्ठी६।४रु सप्तम७।५दार ॥
लगि प्रीतिबस नवमी९।६तथा एकादसी११।७ पतिलार ॥
ए सप्त७कुमरानी जरी इनमैं जु चोथी४ * आहि ॥
ज्वर१ † रेक२आदि असाध्य व्है चिरतैं ग्रसी गद जाहि ॥४५॥
क्रम रीति सब जब लेगये छह६ वधू समेत कुमार ॥
सस्सून रक्खिय रोकि यह तब घोर गद अनुसार ॥
चहिंकैं भई मृततुल्य सो दृग१फेरि२स्वास१चढाइ२ ॥
छल तास जानि सके न स्त्री जन सोक दुस्सह जाइ३॥ ४६ ॥
मृत जानि पीछैं मुक्कली सु सुवाइ सवरथ५ माँहिं ॥
निज विप्र लैहिगये निचोल६ ढकी सके लखि नाँहिं ॥
पतनीं छह६जुत कुमार१९३।१चिति धरि अग्गिदेत प्रजारि ॥
संबनैं गई यह जानि सूचिय देहु चितिपर डारि ॥ ४७ ॥
बुल्ली यहै पटको न यौं करि न्हान१आदि विधान१ ॥
सृंगार२ ठाइ उमा३ पुजाइ चढाइ देहु सु जान ॥
तब द्विजन जीवत जानि तिहिं कथितादि१० कृत्य कराइ ॥
पीछैं चढाइ चिता दई पय वंदि विस्मय पाइ ॥ ४८ ॥
उपयामैं११क्रम चोथी४ बधू सहगोनैं१२ दूजी२ एह ॥
पीछैंगई इम सप्तमी७ पुनि संह्वि स्वामि सनेह ॥
पति१तात१३२ बंस पुजाइ पै चढि रोगग्रस्त चिता सु ॥
सहगोन अद्भुत सह्वि बाघेली४।२।७ बढी इम आँसु ॥ ४९ ॥

---

* है † दस्त १ बहुत समय से २ रोग ॥ ४५ ॥ ३ छः स्त्रियों सहित ४मरने के समान होगई ॥ ४६ ॥ ५ मुरदे के रथ (सनेथी, तिरकटी) में सुलाकर ६ वस्त्र से ढकीहुई ७ मरी हुई जानकर ॥ ४७ ॥ ८स्नान आदि ९ देवी का पूजन कराकर १० कहेहुए कार्य कराकर ॥४८॥ ११ विवाह के क्रम से यह चौथी थी और १२ सती (पतिव्रता) के क्रम से यह दूजी थी अर्थात् प्रथम नम्बर पर अम्बा नामक कुमराणी और दूसरे नम्बर पर यह थी १३ पिता के १४ शीघ्र ॥ ४९ ॥

तासु१ ...
... भांति ... अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इक१ स्यानि सोति ... छ८ संग लैं कुमरानि गेदरूस एह,
बसती भई दिं... ...स मर्व जाइ बाढत अप्प कित्ति अछेह ॥
जन केँ कहैं यह वन्हनीहु दईसु तत्थहि जारि,
कानि यों कहैं किय भिन्न दग्ध सु मंतुके अनुकारि ॥ ५० ॥
खट वेद सोलह१६४६ साक गोपिपनाद१०३१ उर्द्धव ख्यात,
दसइक्क११ कुमरानी उदूढ प्रजा पउढह१४ पात ॥
अब होत अब्द पचीस२५ नित वय दिष्टिके अनुसार,
ससि बाजि आठ१६७१ समें सतोजन लै गये स्वरगार ॥५१॥
अपकित्तिको मखिवा१ तदा तौरुण्यमैं२ मुहु धांस,
हाकार१ हुव इम नैरबुंदिन२ दुर्जनालय१ हास२ ॥
विट१ चेटका२दि कुमारकोहु भज्यो सहायक भांत,
इक१ साँदिर्द्धल रु दूतिका कितहू गये अकुलात ॥५२॥
किय सत्रुसल्ल१०४१ कुमार निजकर तातको मृत कर्म,
विधि उक्त सद्धि दयेसु किमन भूमि१ गोर पट३ भर्म४ ॥
ख तुरंग लोचन राम३२७० दिन वयमैं सु संतति१ खग्ग२ ॥
एता सम्हारि उभै२ लग्यो दहिदं अराँ उदग्ग ॥५३॥
अबलौं हि सत्रह१७ अंदलौं रहि रत्न१०३१ हड्ड६१ अधीस,
मरिहैं बख्यो लखि धर्मभारहिं सुतुके सुत सीस ॥
परख्यो पितामह ज्यौं बख्यो सुतंपुत्र बाढन प्रीति,
निरख्यो तऊ तिहिं अग्ग१ धर्म२ रु पिट्ठि१ दे नृपनीति ॥५४॥

---

१ रोग से दुर्बल २ स्वर्ग में ३ कीर्ति ४ कितने ही लोग कहते हैं कि ५ उस अग्रगामी को भी वहीं जला दी ६ अपराध के सदृश ॥५०॥ ७ सम्बत् में ८ जन्म ९ विवाहकर १० सन्तान ११ भाग्य में १२ स्वर्ग ॥५१॥ १३ अपकीर्ति का १४ तरुण अवस्था में १५ हुआ १६ शत्रुओं के घर में हर्ष हुई १७ समूह १८ एक नाजर ॥५२॥ १९ वस्त्र २० स्वर्ण २१ तीन हजार दो सौ सत्तर दिन की अवस्था में २२ दान २३ निरन्तर २४ उदग्र ॥ ५३ ॥ २५ इस पर्यन्त २६ पौत्र के मस्तक पर २७ पुत्र का पुत्र २८ धर्म को आगे और राजाओं की नीति को पीछे रखकर

यशभास चितापर जाइ ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥　　संभ्रम७१५दार ॥

सक भू हय सोलह१६७१समा, सित१।७ पतिलार ॥
गोपीनाथ१९३।१हु स्वर्गगय, सती सप्त२ संग्रहि ॥　　॥
उज्जल१ पंचमि५ राध३ अंह४, प्रथितें पितामह पास ॥
विदित दाह छारोपवन६, अठ८नको इम आँस७ ॥५६॥

॥ षट्पात् ॥

सुपहु रत्न१९२।१ यह सुनत पत्र इम स्वपुर पठायउ ॥
जानतहे सब जदपि मोहि क्यों नहिं समुझायउ ॥
करि सुतकों हुत कैद इतहु आतो तदनंतर ॥
तो अपजस होतो न नैंन नीचे करते नर ॥
पुर विप्र भजे बुलवाइ पुनि रहनदेहु कर माफ रचि ॥
इन मम निदेस लहि किय अखिल विधि लिपिसैंन नन रहत बचि॥

॥ दोहा ॥

दै सहाय जे हुव दुजन, सुतहिं बिगारन सूर ॥
तिन्ह देसहु बुल्लहु न तुम, देहु रहन अब दूर ॥ ५८ ॥
आतहि नृपको पत्र यह, बानिजविप्र१२ बिसासि ॥
बुल्लि बसाये द्रंग१३ वलि१४, नीचन सबन निकासि ॥ ५९ ॥
भोज१९१।२भुजिष्या१५ जठर१६ भव, भट संकर२।१ नृप भ्रात ॥
सेनापति जिहिं देस सुख, दिन्नौं जस अवदात१७ ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदिय मुलक प्रबंध कियउ सेनापति संकर२।१ ॥
चोरी जिहिं घर चोर रचि रु कहैं वसु१८ बिस्तर ॥

---

१ सम्वत में २ सात सतियों के साथ ३ वैशाख ४ दिन ५ विदित ६ छार बाग में ७ हुआ ॥ ५६ ॥ ८ तो भी ९ शीघ्र १० जिस पीछे ११ ब्रह्मा के लेख से ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ व्यापार करनेवाले ब्राह्मणों को १३ नगर में १४ फिर ॥५९॥ १५ पासवान के १६ उदर से जन्म १७ उज्वल ॥६०॥ १८ धन

स्वामि कहँ ताहि सम धरैं तस घर नृपको धन ॥
पुनि चोरन प्रकटाइ प्रवल वहुगुन लै अप्पन॥
देसहिँ असेस हुव सुख उदय विसंत रुके तस्कर वहुल ॥
कोऊ रुक्यो न ताको कलहि किय संकर२।१उच्छिन्न कुल ।६१।

॥ दोहा ॥

अति सुख बुंदिय देस अब, न जुरै अररँ निकेत ॥
जोलों यह संकर२।१जियत, हुव तोलों सव हेत ॥ ६२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नदि वनास तट निकट अधम चालुक नाथाउत ॥
उत्थरनाँ अभिधान वसत निवसथ भय विद्रुत ॥
नाम सिंह नीच नर चोर चोरन हित चाहत ॥
मैंना१ भिल्ल२न मित्र ग्रंथ देसन अवगाहत ॥
पत्तन अलोद चोरी प्रचुर होतहि दे रुप्पय हरखि ॥
प्रकटाइ चोर संकर२।१प्रवल किय प्रयान मुच्छन करखि ॥६३॥
स्वामी चोरन सिंह पुव्व ताकहँ सुनि प्रस्थित ॥
अड्डो मगविच आइ दुरयो पव्वयँ दुर्ग स्थित ॥
अतिढिग संकर२।१आत गूढ झारिय तुपकन गन ॥
इक१गुटिका लागि अलिक परयो हह६१सु अचेतपन ॥
भोज१९।१२सुत अँनसु ततकाल भो नाथाउत आइ सु निकट ॥
सिर तास कट्टि लैगो सँदन बुंदिय धँर आन्यौं विकट ॥ ६४ ॥

प्रस्थित१गस्थित२ अन्त्यानुप्रासः ॥

१घर का स्वामि कहै उतना २उसके पास राजा का धन घर देना ३प्रवेश करते हुए ४ बहुत चोर रुक गये ५युद्ध में ६कुल का नाश कर दिया ॥६१॥ ७ घर के किंवाड़ नहीं जुड़े ॥६२॥ ८नाम ९ग्राम १०भय से भागकर ११ चोरों को इकट्ठे करके देश का थाह लेना १२ बहुत १३ मूछें खेंचकर ॥६३॥ चोरों का स्वामि सिंह नामक उस शंकर को पहिले १४ गया हुआ सुनकर १५आ रहे के दुर्ग में छिपकर आडा बैठा १६ ललाट पर १७मृतक १८ अपने [illegible] का झट ले विना [illegible] कर ॥६४॥

॥ दोहा ॥

हाहारव सब देस हुव, सुनि संकर २।१ अवसान ॥
जाग्यो घर बिनु सिर ज्वलन, विधि उदर्क बलवान ॥
संकर२।१ भ्रात निपात सुनि, सुपहु रत्न१९।२।१ किय सोक ॥
पठयो छंद लिखि भटन प्रति, उपालंभ निजओकं ॥६६॥
तिम दक्खिन गढ तामरनि, सुरि न गिनत सुगलेस ॥
जानि प्रथम तँह साध्य जय, चढन चहैं उत एस ॥६७॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीन्द्र रत्नसिंहचरित्रे उदयपुरमहाराणाऽमरसिंहपञ्चत्वानन्तरकर्णसिंह-पट्टसमासादन१, बुरहानपुरजोधपुराम्बेराधीशकृतकटुनर्मरत्नसिंहविरोधोक्तनृपद्वयदिल्लीगमन २, बुन्दीशरत्नसिंहपट्टकुमारगोपीनाथबलप्रशंसापुरःसरव्यभिचारनिमित्तप्राप्तदुर्मरणतत्सहधर्मिणीसप्तक सहितदहन३, रावरत्नसिंहभुजिष्यात्मजभ्रातृसंकरचौराधिपासिंहकरमरणं त्रयोविंशो मयूखः ॥२३॥

आदितः षडुत्तरद्विशततमो मयूखः ॥२०६॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

बारीगढ निजदल बिजय, नभयो इम नरनाह ॥

१अन्त२अग्नि ३ॆ३भाग्य ॥६५॥ ४भाई शंकर का मरना सुनकर५पत्र६उमरावों के नाम ७ ओलम्भा ८ अपने घर में ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा अमरसिंह के देहान्त होने पर कर्णसिंह का पाट बैठना १ बुरहानपुर में कडवी हँसी करने के कारण जोधपुर और आमेर के राजाओं से रत्नसिंह का विरोध होकर उक्त दोनों राजाओं का दिल्ली जाना २ बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के पाटवी कुमर गोपीनाथ के बल की प्रशंसा के अनन्तर व्यभिचार के दुराचार के कारण उसका दुर्दशा से मारा जाकर सात सतियों के साथ दग्ध होना ३ राव रत्न के पासवानिये भाई शंकर का चौरों के५ पासिंह के हाथ से मारे जाने का तेईसवां २३ मयूख और आदि से दो सौ छः २०६ मयूख हुए ॥

कछु सुब भिल्लौ बल करन, सजे अडर सिपाह ॥१॥
रहत निकट गढ तिस्सरनि, जयहु-साध्य तँहँ जानि ॥
इक्कसमय चढिगो अधिप, तिहिँउप्पर दलतानि ॥२॥

षट्पात्

गढ जातहि गरुवाई नृप तोपन रन मंडिय ॥
गोलन गजब गिराइ स्तोम१ कपिसिर२ सिर खंडिय ॥
कछुक बीर उतकोहु चढे अंदर रावन रुख ॥
सहज हानि गढ सिथल मिले निकटहि बढि सम्मुख ॥
नृप बीर चढत अधिरोहिनिन उभय५ तुट्टिगय भर अतुल॥
तीजीअकुनी न हुंडीस तब हुल्ल्यो निज गज बपु विपुल॥६॥

॥ दोहा ॥

घटा निसेननि सघनघन१, रन अट्टालकं रूप ॥
सदन तुंग प्राकार सन, भेरयो सो गज भूप ॥४॥

॥ षट्पात् ॥

जानिपरत इत जोर बान१ बंदूकर२ प्रहरि बहु॥
सैनिहि लरत अरि सूर प्रेहत करि दूर दये पँहु ॥
बारन सन कछु बरन उच्च रहिगो तिहिँ इक्खत ॥
भूत भुजिष्या प्रभव हेरि निजजय बिलंब हत ॥
सहि छत अनेक गोवर्धन३ सु गहि नट गति गज पिट्ठि गय ॥
गिनि चढत ससिहि पुनि सत्रुगन खंडिय तँहँ भार हेतिमय॥५॥
बाहिर सन बंदूक१ बान२ बाँनाउदिक हुट्टन ॥

॥ १ ॥ १ सेना फैलाकर ॥ २ ॥ २ घेरकर, बोम (बुरजें) और ३ कोट के कंगूरे ४ नीसरनियों पर चढे सो दोनों नीसरनियें अनोल ५ भार से टूटगई ६ बडे शरीरवाले अपने हाथी को चलाया ॥ ३ ॥ युद्ध की ७ बुरज के रूप ८ ऊंचे कोट से ९ भिड़ाना ॥ ४ ॥ १० प्रहार करके ११ एकत्रित होकर १२ मारकर १३ राजा ने १४ हाथी से १५कोट कुछ ऊंचा रह गया सो देखकर १६पासवान से १७उत्पन्न भाई १८घाव १९शस्त्रों का भट लगाया ॥ ५ ॥२०धनुष के या-

बहु मृत घायल बनत अधर[1] दुरिबे तिन उद्धत ॥
गोवर्धन३ बलगाढ भ्रात भट ऐंचिऐंचि इभ[2] ॥
अंस[3] लै रु उप्परहि निखिल[4] प्रेरे मारुति[5] निभ[6] ॥
उर बाम भिन्न गुटिका१ असह्य विद्ध त्रि३सर उर मज्झ गलि ॥
इक१ सहि स्वसीस असह्न उँपल[7] किय गोवर्धन चित्रकलि[8] ।६।

॥ दोहा ॥

भ्राताके सब प्रेष्ठ[9] भट, इम चढाइ निजअंस[10] ॥
गोवर्द्धन३ पहुँचाइ गढ, दये स्वसाहस[11] दंस[12] ॥ ७ ॥
तिन दुरि बैठे हिट्ठ[13] तिन्ह, गहि असि कट्टि गिराइ ॥
रच्यो अमल गढ तिम्मरनि, फबि जय आन फिराइ ॥८॥

॥ षट्पात् ॥

रतन१९२।१ जित्ति तिम्मरनि दई दिल्लीस दुहाई ॥
बारिय मंतु[14] बिसारि साह मन सु सुनि सुहाई ॥
जु इत भुंजिष्याजात[15] भ्रात गोवर्द्धन३ भूपहु ॥
किल्लापति तँहँ किन्न विरचि घायन उपाय बहु ॥
बढतो न आयु प्रारब्धवस ताही रत्ति[16] स्वकाय[17] तजि ॥
नृप भोज१९१।२ तनय गोवर्द्धन३ सु भो जैंससेस[18] स्वरोक भजि ।९।

॥ दोहा ॥

सबल१९३।३मनोहर१९३।४अनुजसुत, तिँहिँ गढपति करि तत्थ ॥
पहु आयउ बुरहानपुर, सीम सिबिर जससत्थ ॥ १० ॥
नैकैं[19] १ अगरतिम दक्खिनि१न, रह्यो सु रोधक रत्न१९२।१ ॥

ण और बारूद के भरेहुए बाण १ नीचे २ हाथी पर ३ अपने कन्धे पर लेकर ४ सपकों ५ हनुमान के ६ सदृश ७ पत्थर ८ युद्ध में आश्चर्य किया ॥ ५ ॥ ९ भाई के श्रेष्ठ वीरों को १० अपने कन्धे पर ११ अपने साहस रूपी १२ कवच से ॥ ७ ॥ १३ नीचे ॥ ८ ॥ बारीगढ विजय नहीं हुआ उस १४ अपराध को १५ पासवानिया भाई १६ उसी रात्रि को १७ अपना शरीर छोडकर १८ कीर्तिशेष हुआ अर्थात् मरकर देवताओं के स्थान (स्वर्ग) को गया ॥ ९ ॥ १० ॥ १९ नीति करके और पर्वतों से ॥ ११ ॥

कछु इत प्रविसन खुरम२९।२कोँ, जोलोँ न फुरयो जत्न ॥११॥
पुर मऊ सु लहि छिद्र पुनि, इत लिय खिच्चि१३न आइ ॥
हद्दवर्ती हाकार१ हुव, परतट धाटि२न पाइ ॥ १२ ॥
दै तब दिल्ली अरज दे३ल, चहिय सिक्ख चहुवान ॥
अक्खिय अब रोधक इहाँ, पठवहु अपर५ प्रधान ॥ १३ ॥
पुव्वहि इत सु अयाज पटु, मरयो स्वसुर तब मीर६ ॥
साल७कँ निज किय तास सुत, आसिफखान वजीर ॥ १४ ॥
जामाता८को जिहिं जियत, प्रकटायो न प्रमाद ॥
जिहाँगीर३८।१बारा बज्यो, अँ१०दल जास आबाद ॥ १५ ॥

॥ षट्पात् ॥

आदि११लै मरत अयाज मच्यो हाँ१२रव भुवमंडल ॥
जनक१३हिं रोवत न जन जिते रोये दृग भरि जल ॥
पितामरन खिंनपाइ हुरम दिल्लीसकी जु हुव ॥
अप्प-हुकम अब एह भयदं१५ लग्गी प्रेरन भुव ॥
अधिकार आदि बहुतन बदलि दास्सन निजन समप्पि दिय ॥
करिरहिय स्वबस पति अरु कतिक कहत वजीरहु और किय ।१६।
हुरम चलावत हुकम देस दिसदिसन उपद्रवं ॥
डमर१ डकैती२ डाँह३ जुलम४ सब मचिग बडे जब ॥
अधिप रत्न१९२।१लिपि१८ अरज एह पहुँची जिहिं अवसर ॥
हुरम सु चहतहुतीहि अँ१९पर हाकिम पठयो अँर ॥
बुंदीस बुल्लि गढपति सबल१९३।१रचि खाली सह तिम्मरनि१ ॥
हृदजुन सु देस दै हाकिमहिं तब हंकिय हद्द६।१नैंतरानि ॥ १७ ॥

---

१ चामल नदी के पेले किनारे २ धाड़ायतियों को ॥ १२ ॥ ३ पत्र ४ शत्रुओं को रोकनेवालों को ५ अन्य ॥ १३ ॥ ६ बादशाह ने ७ अपने साले ॥ १४ ॥ ८ जमाई को ९ भूल १० न्याय ॥१५॥ ११न्याय करनेवाला १२हाहाकार शब्द १३ पिता को नहीं रोवे जितने १४समय १५भयंकर ॥१६॥ १६ उपद्रव १७ द्वेष १८लिखीहुई अर्जी१९अन्य २०शीघ्र २१ सीमा सहित २२ हाड़ों का सूर्य ॥१७॥

॥ दोहा ॥

अब्द छ सत्त बिताइ इम, रहि दक्खिन पहु रत्न१९२।१ ॥
जित्ति अधिक इक१ दुर्ग जँहँ, सब किय रुद्ध* सपत्न ॥ १८ ॥
पुनि बुलाइ हाकिम† अपर, अप्पि सु तिँहिँ अधिकार ॥
आयो दिल्लिय अप्प इम, पायो सुजस अपार ॥ १९ ॥

॥ गुज्झरू ॥

रन जय१ किय लिय तिम्मरनि२, अरि कोउ न लिय आन३ ॥
आंसिफ सिखयो साह इम, मिल्यो बढावत मान ॥२०॥
इक१ हत्थी हय खास इक१, पविनंजटित इक१ पेंच ॥
साह दये मिलतहि सभा, बहु सराहि कुलवेंह ॥२१॥
कातिक मास तँहँ बासकरि, सदन लिक्ख लहि नूर ॥
आयउ बुंदिय रत्न१९२।१ इम, प्रसरायउ जस पूर ॥२२॥
कुमर अरिहु केर माफकरि, बिलवासे सब बिप्र ॥
परंतट खिंखि१३न हनन पर, छितिप चल्यो सजि छिप्र ॥२३॥

॥ हनुमत्फाल: ॥

इत देस दक्खिन३।२ एहु, डुरि अवर बहु रिपदेह ॥
अब रत्न१९२।१के इतआत, भो खुरम३।१।२कौंहु प्रभात ॥२४॥
बीजापुरा१दिकबीर, लह भागपुर२ करि लीर ॥
पुनि हाँ जु हाकिम पत्त, गन ताहि गिनि तृनमत्त ॥२५॥
आंबाद१ दोलत आदि, गढगंज सब संपादि ॥
अतिभार परत अनेहँ, अँवलंब गिनि गढ एह ॥२६॥
बुरहानपुर दै बास१, करि सजदलौं जयकास ॥
मरहठ्ठ भटहु मिलाइ, पथ सून्य अवसर पाइ ॥२७॥

---

*शत्रु॥१८॥ † अन्य ॥१९॥ १ आसिफखां का सिखाया हुआ ॥२०॥ २हीरों का जड़ा हुआ ३ सिरपेच ४ मार्ग ॥२१॥२२॥ कुंवर के शत्रुओं का ५ हासिल माफ करके ६ चामल के पैले किनारे ७ शीघ्र ॥ २३ ॥२४॥ ८ साथी ९ तृण के समान ॥२५॥ १०दोलताबाद ११सम्पादन करके १२समय १३ आधार ॥२६॥ १४ सेना ॥२७॥

महि वंट लोभ उमंग, अब लै सहायक संग ॥
इम खुर्रम[1] दनि बलवान, प्रभु दर्प किय प्रस्थान॥२८॥
सुनि सोर यह इत साह, चतुरंग सजि जय चाह ॥
पहिलैं अटक नदि पार, प्रतिमास[3] पाइ पुकार ॥२९॥
खड्गी महावतखान, पठयो सु जंग प्रधान ॥
तिहिं सिंधुनदि पर तीर, सूबा सन्हारि सधीर ॥३०॥
दुख दूरिकरि तिहिं देस, इम देत हुव सुख एस ॥
जौलौं न ठंहै भर[4] जत्थ, तौलौं घनौं इक तत्थ ॥३१॥
जँहँ साह आन जमाइ, सु रह्यौ अनिष्ट[5] समाइ ॥
सुत आत सुनि अद सीम, भट संगदै बहु भीम[6] ॥३२॥
सुतरोध[7] कज्ज सधीर, पठयो अजीम[8] प्रवीर ॥
रहौर[1] कूरमराज, दुल्है उमेर अतिवाज ॥ ३३ ॥
कछु हेतु[9] तिन नहिं कज्ज, सेनाहि निजनिज सज्ज ॥
पठई चमूपति[10] पास, उनको न आगम[11] आस॥३४॥
जब किन्न अरज अजीम, सुत सत्रु प्रबिसत सीम ॥
रहितत्थ नृप रतनेस[1], दिय जो न प्रबिसन देस ।३५।
आयो सु अब निज औनं[12], सुव सून्य अरि गिनि भै न ॥
नहि सर्व दक्खिन[13] लार, अब आत चैक उदार ॥ ३६ ॥
प्रभुको जु हाकिम पास, जान्यौं न कछु भय जास ॥
यातैं सु बुंदिय ईस, अब संग देहु अधीस ॥ ३७ ॥
जिम खुर्रम गहि इम जंग, आनैं प्रकीलित[14] अंग ॥
मुगलेद्स तब फरमान, पठयो सु लेख प्रधान ॥ ३८ ॥
नृपरत्न[1] तोकँहँ न्याय, सब वहत लैन सहाय ॥

---

१ घमंड॥२८॥ २ सेना ३ मास मास प्रति ॥२९॥ ३०॥ ४ भार ॥३१॥ अनिष्ट ५ मिटाकर ६ भयंकर ॥ ३२ ॥ ७ पुत्र को रोकने के कार्य ८ बहुत शीघ्र बुलाए ॥ ३३ ॥ ९ कारण १० सेनापति के पास ११ उनका आना नहीं हुआ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ १२ अपने घर १३ सेना ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १४ कैद करके ॥ ३८ ॥

लखि मुज्भ गहिय लज्ज, करनौं वे ध्रुव यह कज्ज ॥ ३९ ॥
इततैं अजीम उपेत, बल आत मम समवेत ॥
तस संग जावहु तत्थ, सुत खुरुम३९।१ हनहु संमत्थ ॥ ४० ॥
कै बंधि भेजहु२ कूर, गहि वंग गंजि गरूर ॥
अरि तस सहायक ओर, जिनपैंहु डारहु जोर ॥ ४१ ॥
इतकों मऊ१ सिर एह, अधिराज चढत अनेह ॥
मुगलेद्रसको फरमान, पहुँच्यो सु प्रीति प्रधान ॥ ४२ ॥
वह इक्खि बंधिविचार, किय चित्त कृत्य प्रकार ॥
लिपि हुकम यह इत१ लद्ध, इत२भुम्मि जावत अद्ध१।२ ।४३।
इहिहेतुं निज१पर२अज्ज, करतव्य उभय२हि कज्ज ॥
सजिस्वीय चक्क असेस, करि मुख्य तँहँ कुमरेस ॥ ४४ ॥
कलि खुरुम३९।२सद्धन कज्ज, लखिउचित भुजधरि लज्ज ॥
जो अष्टि१६सम वय जुत्त, पट्टु सत्रुसल्ल१९४।१पउत्त ॥ ४५ ॥
फरमान मित सजिभोज, इत१मुक्कल्यो अतिओज ॥
जँहँ गोर जुग्गियदास१, अधिराज स्वसुर जु आस ॥ ४६ ॥
जिहिं रक्खि बलपति जंग, सुहु दिन्न सुतसुंत संग ॥
तब रत्न१८२।१अक्खिय ताहि अब परख गोरन आहि ॥ ४७ ॥
अब स्वसुर इहिं वय आइ, जिन देहु वंस लजाइ ॥
सुत स्वीय सुंदरदास, पहिलैंहु लै जिय पास ॥ ४८ ॥
गुडवानसन भजिगोहि, जिनकरहु जनकहु जोहि ॥
बनि पग्घ१ मुच्छ२विहीन, दल ईस न बजहु जु दीन ॥ ४९ ॥
यह सुनत मन्नि अनिष्ट, मन गोर किय अघमिष्ट ॥

१अपर२निश्चय ॥ ३९ ॥ अजीम३सहित४सेना५साथ ६ समर्थ ॥ ४० ॥ ४१ ॥७समय ॥ ४२ ॥ ८ कार्य ९ मिला ॥ ४३ ॥ १० कारण ११ करने योग्य १२ सेना ॥ ४४ ॥१३युद्ध में १४ सौलह वर्ष१५पोता ॥ ४५ ॥१६फरमान के माफिक॥४६॥ १७पोता के साथ दिया ॥ ४७ ॥१८इस अवस्था में आकर१९तुम्हारा पुत्र॥४८॥ २०पिता ॥ ४९ ॥२१बुरा मानकर २२पाप से मन मीठा किया

जो प्रकट१ प्रीति जनाइ, लघुवैर *अंतर२ लाइ ॥ ५० ॥
कह्यो जु †सालक कूर, तवतैँहि स्वसुरहु सूर ॥
सो मुख्य सुतसुत संग, भो चहत ‡प्रत्युत भंग ॥ ५१ ॥
लहि सर्व §निजबल लार, ¶क्रमि सत्रुसल्ल१९४१कुमार ॥
मिलि साहदल सन मग्ग, इक१ व्है वढे सब अग्ग ॥५२॥
सजि अल्प खिलबल्ल संग, इत भूप जंग अभंग ॥
तनुजनु तृतीय३ द्वितीय२, हरिसिंह१९३।३माधव१९३।२हीय।५३।
लखि रहन स्वजनक लार, पहु संग लै नदि पार ॥
गय जैयन खिच्चि१३न गज्जि, सब ठाम साधक सज्जि॥५४॥
मग सत्रुभट दुवर मारि, पैर पास आस प्रसारि ॥
घेर्‌यो मऊ१ बलघोर, जितति दयो अतिजोर ॥५५॥
जिम सून्य परघर जानि, मन चोर लै निजमानि ॥
जबही धनी मिलिजाइ, कैसैं सु लव१हु टिकाइ ॥५६॥
पँवि रूप गोलन पात, दव कल्प कल्प दिखात ॥
पछिताइ खिच्चि१३न पंच, रहि नाँ सके रुपि रंच ॥५७॥
परिवेढ मध्य परंतु, मग क्यों लहैं करि मंतु ॥
इम भूप सम्मुह आइ, खैर अग्ग खग्ग चलाइ ॥५८॥
खिरि मुख्य सत्रह१७ खेत, सत उभय२०० भट सैमवेत ॥
नृप अनुज केसव१९२।३नाम, कैंलि मुख्य आयउ काम।५९।
सत१०० भट परे तस संग, इतकेहु जुज्झि अभंग ॥
बुंदीस अनुजनु बहुर, हृदयादि नामक१९२।२ ह्रुह ॥६०॥
सुहु सत्रुसल्ल१९४१ सहाय, उत मुक्कल्यों जय आय ॥

---

*मन में ॥५०॥ †मूर्ख साले को निकाला ‡ उलटा नाश चाहता है ॥५१॥ §अपनी सेना ¶ चलकर ॥ ५२ ॥ १ बाकी थोड़ी सी सेना के साथ २ पुत्र ॥ ५३ ॥ ३ अपने पिता के साथ ४ जीतने को ॥ ५४ ॥ ५ शत्रु के पास ॥ ५५ ॥ ६ क्षण मात्र भी नहीं टिकता ॥ ५६ ॥ ७ वज्र रूप ॥ ५७ ॥ ८ घर में पड़कर ९ अपराध करके १० तीक्ष्ण ॥ ५८ ॥ ११ साथ १२ युद्ध में ॥ ५९ ॥ १३ छोटे भाई ॥ ६० ॥

तनुजात[1] छह६ सु तास, दलि सत्रु केसवदास१९३।६ ॥६१॥
सब अंग्ग अति जंव[2] सिक्खि, दुरि दुवत[3] अरि नृप इक्खि ॥
पहुँच्यो सु खिंचिय१३ पास, दिय रोकि ईस्वरदास ॥ ६२ ॥
हनि छत्ति अरि ढिग होत, पटक्यो सु तोमर[4] प्रोत[5] ॥
कति कहत तस यह तोल[6], सहिगो सु भजि सगोत्र[7]॥६३॥
बहु बदत[8] हनि अरि बिद्ध[9], आयो सु जय जस इद्ध[10] ॥
पुर यों मऊ१ जयपाइ, सब देस दुक्ख नसाइ ॥६४॥
सरिता[11] अडीरिय सीम, भट थप्पि अप्पन भीम ॥
अनुजनु[12] मनोहर१९२।४ अक्खि, रच्छक[13] मऊ१पुर रक्खि ।६५।
उत फेरि बुंदिय आन, दिन अट्ठ८ रहिय दिवान ॥
मुगलेद[14]स दल[15] इत मत्त, प्रति खुरम३९।२ सम्मुह पत्त[16] ॥६६॥
रिपु चक्क[17] तँहँ नियराइ[18], हनिवेहि हहु६१न हाइ ॥
गहि स्वामिद्रोहहिँ गोर, चहि छन्न निकसन चोर ॥ ६७ ॥
वंदि[19] पुत्र कढ्ढन बैर, खल वंछि परबल[20] खैर[21] ॥
पुर खुरम३९।२लन दब पाइ, लक्खैरि१पिहित[22] लिखाइ ॥६८॥
कलि[23] गोर[24] जित्ति कुम्हार, दव्वी जु देव १८०।१ उदार ॥
पुनि जोहि गोरन पेलि, हम्मीर१८३।१लिय कुलहेलि[25] ॥ ६९ ॥
लक्खैरि सोहि लिखाइ, पलट्यो सु यह खिनपाइ[26] ॥
दल देस पुब्ब पठाइ, सिसु१नारि२निस निकसाइ ॥ ७० ॥

---

१ पुत्र ॥ ६१ ॥ २ वेग ३ शत्रु को भाग कर छिपता हुआ देखकर ॥ ६२ ॥ ४ भाला ५ प्रवेश किया; अथवा भाले में पोकर गिरादिया ६ यह भाला सहन करके ७ गोत्र सहित ॥ ६३ ॥ ८ कहते हैं ९ वेधन करके १० बढे हुए यश के साथ आया ॥ ६४ ॥ ११ नदी १२ छोटे भाई १३ रक्षक ॥ ६५ ॥ १४ यह बुन्दी के राजा का उपपद है १५ सेना १६ प्राप्त हुआ ॥ ६६ ॥ १७ सेना को १८ समीप लेकर ॥ ६७ ॥ इसके पुत्र को बुंदी के देश से निकाल दिया था इस वैर को१९कहकर२०शत्रु की सेना को२१कुशलता२२छाने लिखाकर ॥ ६८ ॥ २३ युद्ध में२४गौड़ों को जीतकर२५कुल का सूर्य ॥ ६९ ॥ २६समय पाकर ॥ ७० ॥

संकेत निस छिन सोहु, भूपाल दल[1]पति भोहु ॥
पुत्रादि निज तजि पास, हुत[2] छन्न जोगियदास ॥ ७१ ॥
जवनेस सुत[3]के जोर, गो चलि स्वसुरहु गोर ॥
सो ताहि निस चलि सूल, हैं[4]त स्वामिद्रोहिन मूल ॥ ७२ ॥
गोपाल तस सुत गोर, अब खुरम[5]दाशगिनि जन ओर ॥
मिलि पुच्छि पंडल मर्म, करिबे जनक[6] मृत कर्म ॥ ७३ ॥
वहु अप्पि ताहि बिसास, पठयो स्व[7]नारिन पास ॥
सब सुरम[8]शतिच[9]सिकुरमंत. है देवगढ इम हंत ॥ ७४ ॥
आवा दौ[10]लत आदि, गोपाल[11]नय छल छादि ॥
तब अनुज[11] सुंदर नास, पहुँच्यो स्व अग्रज[12] पास ॥ ७५ ॥
भजि अब मिल्यो हिय भिन्न, दुदुकारि[13] ज्येष्ठ सु दिन्न ॥
पै स्वामिद्रोहहिं पाइ, कुल गोर आरि इम हाइ ॥ ७६ ॥

॥ चतुर्भिः कलापकम् ॥

छम तास सुत रनछोर, इक[14]जो रह्यो नृप[15]ओर ॥
स्व कुटुंब निकसत सूर, पजळ्यो न लहि जस पूर ॥ ७७ ॥
जानें मऊपुर जाइ, सब वृत्त[16] दिन्न सुनाइ ॥
उततैंहु सुनि सु उदंत[17], महिपाल किय इम मंत ॥ ७८ ॥
पठयो करोलिय पत्र, तुम भेजि कछु बल तत्र ॥
जामात स्वीय सुता[18]जु, निर्बाहि तास नैंता जु ॥ ७९ ॥
इहिं पिछितें[19] दलन आहु, जंदु[20] लै करोलिय जाहु ॥

---

१ सेनापति २ शीघ्र ॥ ७१ ॥ ३ शाहज़ादे के दल से ४ उसी रात्रि में शूल का रोग होकर मरा ॥ ७२ ॥ ५ शत्रु की सेना को ६ पिता का मृतकार्य करने के लिये ॥ ७३ ॥ ७ अपनी स्त्रियों के पास भेजा ८ श्रेष्ठ ९ खेद है ॥ ७४ ॥ १० दौलताबाद ११ छोटा भाई १२ अपने बड़े भाई के पास गया ॥ ७५ ॥ १३ धिक्कार देकर निकाल दिया ॥ ७६ ॥ १४ तनय १५ राजा की ओर रहा ॥ ७७ ॥ १६ वृत्तान्त १७ वह वृत्तान्त सुनकर ॥ ७८ ॥ १८ सम्बन्ध ॥ ७९ ॥ १९ आगे २० यादव

*दल इतहु निज†दल दिन्न, कुबिरोध गौडन किन्न ॥ ८० ॥
इक१ दुष्ट मग अनुसारि, टरिजात बहु मन टारि ॥
‡कलि स्वामिद्रोह कुमाइ, हुव गौड अरिन सहाइ ॥ ८१ ॥
ताकि बेर §छुद्रहि तत्थ, मति घातदै सिसु मत्थ ॥
इहिँहेतु जदुभट[1] आइ, जो लै कुमारहिँ जाइ ॥८२॥
सिसु कढ्ढितो तिन्ह सत्थ, तुमदेहु जावन तत्थ ॥
बल[2] सर्ब अप्पिँ[3] बिस्वास, पटुरीति रक्खहु पास ॥८३॥
इतहू मऊ१ निज ओहिँ, मैं आत अब तुम माँहिँ ॥
ह्दयादि१९२।२ स्वानुज[4]हत्थ, तिम पत्र पहुँचत तत्थ ॥८४॥
पुनि आत जदुभट पास, किय सत्रुसल्ल१९४।१ निकास ॥
कढि निठ्ठि वह गुरु कानि, मन पिहित[5] लज्जित मानि ॥८५॥
इम कुमर तिनजुत एह, गो स्वसुर जंदुनृप[6] गेह ॥
जिम प्रकट व्याज[7] जनाइ, मृगया[8] गयो सु मनाइ ॥८६॥
सजि सावधान स्व सत्थ, जंपी[9] अजीमहिँ जत्थ ॥
सुरि गौड़ बदलत मात्र, मन मलिन करत कुपात्र॥८७॥
इत खुरम३९।२ बल अधिकात, प्रतिदिवस[10] बढतहि पात ॥
इहिँहेतु चलि कछु अग्ग, सुरिहैँ न लहि जंय मग्ग ॥ ८८ ॥
तुम भीर बाइके[11] तेग, बल सेस बुल्लहु बेग ॥
नृप अनुज कथन निदान[12],मन मन्नि मिच्छ प्रमान ॥८९॥
सुहि पत्रदै निज सोरै[13], भट बहुरि बुल्लिय भीरै[14] ॥
जंपी जु नृप अनुजात[15], सुहि मिच्छ मन्नि सुहात ॥९०॥
मुरि किन्न कछुकछु मान, पथ अग्ग अग्ग प्रयान ॥

---

* पत्र † अपनी सेना में ॥ ८० ॥ ‡ युद्ध में ॥ ८१ ॥ § तुच्छ १ यादवों के ॥ ८२ ॥ २ सेना ३ देकर ॥ ८३ ॥ ४ है ॥ ८४ ॥ मन में ५ छिपीहुई लज्जा मानकर बड़े लोगों की कानि से कठिनाई से निकलकर गया ॥ ८५ ॥ ६ करोली गया ७ छल ८ शिकार ॥ ८७ ॥ ९ कही ॥ ८७ ॥ १० प्रतिदिन ॥ ८८ ॥ ११ खड्ग चलानेवाले १२ कारण ॥८९॥ १३ शामिल १४ सहाय १५ छोटे भाईने॥९०॥

उत खुरम३।९।२ चक्के उदार, लखि भजत लग्गिय लार॥९१॥
सेरि घट्ट वो दल सैल, गहि पिट्ठि दब्बत गैल ॥
इम सेरपुर लग आत, बुंदीस चिंति सु१ बात॥९२॥
लक्खैरि पत्तन लुट्टे, सुरि गोंड अग्गिहुव सुट्ट॥
अब सो१हि केसव१९३।६ अत्थ, सनमानि दिय गजरसत्थ।९३।
खिर्ची१३स जिहिं हनि खेत, किय कित्ति वल समवेत ॥
अनुजात२ सुत छन६ एह, नृप पुजि भुज अति नेह ॥९४॥
सुहि कृष्ण१९३।६ केसव१९३।६ सोहि, इभराज खास अरोहि ॥
लक्खेरि१।६ तिहिं लार, वहु दन वैभव२ वार ॥९५॥
जिम भ्रात केसव१९२।३जास, सुहि कर्ण१९३।१रूप१६३।१सनाम
इहिं बुल्लि सहगज१ इट्ठ, नृप ग्रामदिय अर निट्ठ ॥९६॥
करि ताहि इत कँटकेस, दिय सिक्ख रक्खनदेस ॥
तिम राम१८९।४रत्तिप तुल्लि, वलवंत१९१।१भ्रातहु बुल्लि ॥ ९७ ॥
इन्ह संगकरि वलै एस, हुव२रक्खि रच्छक देस ॥
असवार१पत्ति२हु अल्प, करि संग नृप चढि कल्प ॥ ९८ ॥
भ्राता१भतीज२सु भाइ, खिल्लै लार लहि अनखोंड ॥
चल्ल्यो खुरम३।९।२सिर चंड, खल करन खग्गन खंड ॥९९॥
इत सेरपुर तिहिं आत, पहुँच्यो सु होतहि प्रात ॥
अनुजात१निज रु अजीम२, सुनि पत्त सम्मुह सीम ॥ १०० ॥
मिलि स्वीय भट सिरमोर, आनंद सव सवओर ॥
पहुँ जाइ सिविरं पइट्ठ, दल दैरहि दुर्मनं दिट्ठ ॥ १०१ ॥

---

१ सेना ॥ ९१ ॥ पर्वतों के घाटे में सेना २ चली ॥ ९२ ॥ लाखेरी नगर का ३ लोभी ४ सूर्य ॥ ९३ ॥ ५ सेना के साथ कीर्ति की ॥ ९४ ॥ ६ बड़े खासा हाथी पर सवार होकर ७ वैभव का समूह दिया ॥ ९५ ॥ ८ हाथी सहित ९ इष्ट ॥९६ ॥ १० सेनापति ॥ ९७ ॥ ११सेना१२ पैदल१३प्रलय करने को ॥ ९८ ॥१४ बाकी१५क्रोध करके ॥ ९९ ॥ १६ छोटा भाई ॥ १०० ॥१७प्रभु १८ डेरों में१९ प्रवेश हुआ २० उदास २१ देखा॥१०१॥

इहि अंतराय बजीर, बहु लै सहायक वीर ॥
खल दंमन[1] आसफखान, पहुँच्योहि सर्व प्रधान ॥ १०२ ॥
मिलि नृप१अजीम४ससोद, करि सज्ज बल चहुँ४कोदें[2] ॥
रहि रत्ति प्रातहि रंग, जयआस चाहिय जंग ॥ १०३ ॥

॥ दोहा ॥

नियं[3]राये खुरम३९।२हु निखिल, उततैं सं[4]त्वर आत ॥
होडं[5]ल पल्वलं[6] जुद्ध हुव, पंचम५दिवस प्रभात ॥ १०४ ॥

॥ पद्धपात् ॥

उत्तरं[7]१दक्खिन२उभय२कटक उत्तर१दक्खिन२क्रम ॥
जुज्झे तापन जाम[8]१दुस्सह जयकाम अरिंदम[9] ॥
बलि उत्तर१ दल बाजि[10] तरल[11] पटके बिच तिक्खे ॥
भंगी फौजन मुलक१ विजय२न मिले कहुँ बिक्खे[12] ॥
अंबमर्द[13] मचत चलि घोर असि चलत धार नर१ बाजि२ चय[14] ॥
उत्तर१ अनीक[15]मय नाहमय[16] गय[17] दक्खिन२ पय छुट्टिगय।१०५।

॥ दोहा ॥

जुग२ मरहट्ठ रु त्रय३ जवन, परत सुरूप भट पंच५ ॥
सब भज्जे उत खुरम३९।२ सह, रुपिसके न रहि रंच ॥१०६॥
बहु ठामन सन भंगि बल[18], किन्न खुरम३९।२एकत्र ॥
इक मनसों किम अं[19]कुरैं, तंत[20] सत मन रत तत्र ॥१०७॥

शत्रु को १ दण्ड देने का ॥१०२॥२ चारों दिशा ॥१०३॥३ खदीप लिये ४ शीघ्र. सेना रूपी ५छोटे तालाव में ६नाव रूपी वह युद्ध हुआ अर्थात् शीघ्र उसके पार निकल गये "हौडः नौकाविशेषे, इति शब्दार्थचिंतामणिः" दिल्ली की और खुर्रम की दोनों सेनाएं क्रम पूर्वक ७उत्तर और दक्षिण दिशा में रहीं ८एक प्रहर ९शत्रुओं को दण्ड देनेवाले १०बादशाही सेना के घोड़े ११चपल. भांगी हुई फौज से विजय और मुल्क मिलते कहीं नहीं १२देखे १३ युद्ध १४ समूह. बादशाही १५ सेना रूपी १६ मृगपति (सिंह) से दक्षिण रूपी १७ हाथी के पैर छूट गये अर्थात् दक्षिण की सेना भगी ॥ १०५ ॥१०६॥ १८ सेना १९ खड़े रहैं २० तहां अथवा तिनके ॥ १०७ ॥

आसफखान१ रु रैन२ इत, खरे जिति रनखेत ॥
कतिदिन तहँ तकि अवधि कछु, बसे सुजस समवेत ॥१०८॥
सुरि भजहु न दूर सग, लंघत हुव कछु लज्ज ॥
ठहगये जब लोभ टगि, सकल होन पुनि सज्ज ॥१०९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीन्द्ररत्नसिंहचरित्रे रत्नसिंहतिलंगनिविजयनं १, जहांगीरश्वसुरायाजमरणाद्देशकोपद्रवसनयनूरजहांशासनानुसाराधिकारिपरिवर्तनबुरहानपुराधिकारस्थरत्नसिंहदिल्लीगमनपुरःसरबुन्द्यागमनं २, खुरमप्रतिरोधार्थार्जमविनयानुसाररत्नसिंहाजीमान्तिकगमनार्थपवनेन्द्राज्ञावितरणं ३, खुरमप्रतिरोधकस्वपौत्रशत्रुशल्यप्रेषणानन्तररत्नसिंहमजविजयनं ४, स्वपौत्रसंगतसेनापतीकृतस्वश्वसुरगौडयोगिदासप्रतीपभवनश्रवणात्खुरमप्रतिरोधार्थरत्नसिंहगमनं ५, रत्नसिंहासफखानकृतसमरखुरमपलायनं नाम चतुर्विंशो मयूखः ॥२४॥

आदितः सप्तोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥२०७॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

---

१ रत्नसिंह २ यश के साथ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में रत्नसिंह का तिलंगनि को विजय करना १ दिल्ली के बादशाह जहांगीर के श्वसुर अयाज के मरने के कारण देश में उपद्रव होकर नूरजहां की आज्ञानुसार अधिकारियों की बदली होने के कारण रत्नसिंह का बुरहानपुर के सूबे से दिल्ली होकर बुन्दी आना २ खुरम को रोकने के कारण अर्जास के विनय के अनुसार रत्नसिंह को अजीम के समीप जाने की बादशाह का आज्ञा देना ३ अपने पौत्र शत्रुशाल को खुरम को रोकने के लिये भेजे पीछे रत्नसिंह का मज विजय करना ४ अपने पौत्र के साथ सेनापति करके भेजे हुए अपने श्वसुर गौड़ जोगीदास के पलटने की खबर सुनकर रत्नसिंह का खुरम को रोकने के लिये जाना ५ रत्नसिंह और आसिफखान से युद्ध करके खुरम के भागने के वर्णन का चौबीसवां २४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ सात २०७ मयूख हुए ॥

थक्कत इत रय[1] ठहरि थिर, दक्खिन१।२ दल लखि दाव ॥
दिन कछु कहुँक मिलान किय, श्रम हरत जय भाव ॥ १ ॥
इतहु देवगढको असह, जब पहुँच्यो अति जोर ॥
पर्‌यो त्रास बुरहानपुर, सूबा, जितालित सोर ॥ २ ॥
हाकिम जो पठयो हुरम, देस१ काल२तिहिँ देखि ॥
दल सहाय इच्छक[3] दयो, लघु वजीर प्रति लेखि ॥ ३ ॥
आसफखान१हु बंचि वह, मंडि रतन१९।२१।२सन मंत्र ॥
अलप सत्थ पत्त[4] उभय२, तब दिल्ली नय तंत्र ॥ ४ ॥
जवँ करि कुम्भ१कबंध२जुग२, उपालँभ बुलवाइ ॥
कहिय मिलहु निजनिज कटक, जँहँ अजीम तँहँ जाइ ॥ ५ ॥
रहिय रत्न१९२।२बुरहानपुर, तोलौं न सुन्यौं त्रास ॥
यातैं सुहि सूवा इनहि, मिलिहैँ दलन मिवास ॥ ६ ॥
सूबापति सतकार सब, ढुंढर नृपहिँ दिवाइ ॥
पठयो पुनि बुरहानपुर, साह हुकम दरसाइ ॥ ७ ॥
सहँस उभय२०००दल दिन सहित, महिप अनुज इत संगि ॥
कलह अजीम सहायकिच, रोकन रिपु रन रंगि ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

जवहि रत्न१९२।१नृप सजव[12] साजि हंकिय सूबा सिर ॥
उभय२मास गृहआइ थप्पि प्रकृतिन[13] प्रबंध थिर ॥
बुल्लि करन१९३।१बलवंत१९३।१भुजन तिन्ह अप्पि राज्य भर[14] ॥
प्रसू[15] प्रमुख[16] पय प्रनामि मऊ१चेताइ मनोहर१९३।४ ॥
निज अनुज हृदयनारायन१९३।२हिँ कथित[17]२०००हयन जुत रहन कहि

---

१ वेग थकने से २ मुकाम ॥ १ ॥ २ ॥ सेना से सहाय की ३ इच्छा करनेवाला ॥ ३ ॥ ४ प्राप्त हुए ५ नीति के आधीन रहकर ॥ ४ ॥ ६ वेग (शीघ्रता) करके ७ ओलम्भा देकर ८ सेना में ॥ ५ ॥ ९ नाश करने को १० लुटेरों के घरों को ॥६॥ ११ धर्षणा में नहीं आवे ऐसा ॥ ७ ॥ ८ ॥ १२ शीघ्रता से १३ राज्य के प्रधान पुरुष १४ भार १५ माता १६ आदि के १७ ऊपर कहेहुए ॥

मस्थान करन बुरहानपुर*स्वदल और बुल्लिय सबहि ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

†स्वसुरालय तन पुनि‡सता१९७१३, कुमर बुल्लि ततकाल ॥
सब सानकों रक्खि सु सदनें, प्रस्थित हुव भूपाल ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्रज१रुर्न जानि अनुज२हुकम परिमित२०००रक्खे हय ॥
केसव१९३१६नस छमह६कुमर मानिय जनकहिं तँहँ निर्भय ॥
न रहहु रहहु निदेस भ्रात कूरम१कबंध२अंब ॥
पिसुनन रान बचि पाय सोधिमग धरहु बोधि सब ॥
द्वारकादास१नामक विदित सेखाउत कूरम सहित ॥
केसव१९३१६रइतीक कहि लाहि कटक आनि मिलिय दब्बत अहित

॥ दोहा ॥

पृतना सह बुरहानपुर, पत्तो पहु जैसपीन ॥
कुम्मं द्वारकादास१ कँहँ, कँटकईस तँहँ कीन ॥ १२ ॥
भेजि रायमलोत२३१९भट, बुद्धिचंद १९३१३ बर बंधु ॥
रक्ख्यो गडपति तिम्मरनि, अरिगन गेरन अंधु ॥ १३ ॥
माधव१९३१२हरि१९३१३केसव१९३१६प्रमुख, सूलु१भतीजरन सत्थ
सूबा सोस सम्हारि सब, तप्यो निरंकुस तत्थ ॥ १४ ॥
सासक करि हम्मीर१९०१२सुत, पूराउत१७१२३प्रताप१९११२ ॥
पठयो पत्तन अलचपुर, सुनि उत डमर सताप ॥ १५ ॥
कहत किते आसेर यह१९११२, रक्ख्यो गढ अनुरूप ॥
रहिय अप्प बुरहानपुर, भू नॅव दब्बत भूप ॥१६॥

---

*अपनी सेना ॥ ९ ॥ †सासरे से ‡शत्रुशाल को १आज्ञा करनेवाला२घर में ३गमन किया ॥ १० ॥४पञ्च५हुकम माफिक६आज्ञा धारण करो७चुगलों से८सबको समझा कर ९०शत्रुओं को दबाता हुआ ॥ ११ ॥ १० सेना सहित ११ पुष्ट यश से १२ कछवाहा १३ सेनापति ॥ १२ ॥ १४ कूप में ॥ १३ ॥ १५ आदि ॥ १४ ॥ १६ उपद्रव ॥ १५ ॥ १७ नवीन भूमि दबाने के लिये ॥ १६ ॥

जंपहिँ[1] कति आसेर जब, उत हो आरिन[2] अधीन ॥
रक्खि तहाँ तिय१ सिसु२ खुरुम३९१२, कलह[3] उपक्रम कीन ॥१७॥
पै दक्खिन१ बुरहानपुर२, उत्तर१ गढ आसेर२ ॥
परिबिच तापी१[4] सर्वपुट२, फलमैं भासत फेर ॥१८॥
तत्थहु[5] है संभव तदपि, अंतर दिल्लिय आन ॥
दक्खिन१ उत्तर२ अरि दुर दिस, तिम न जनश्रुति तान ॥१९॥

॥ षट्पात् ॥

हाकिम पठयो हुरम ताहि प्रतिमग्ग[6] भेजि तिम ॥
इत अवहित[7] हुव अप्प१ हेलि[8]२ तुरकान१ महा हिम[9]२ ॥
आसिफखान वजीर अक्खि सत्वर[10] पहुँचन इत ॥
अटकन खुरुम३९१२हिँ उक्त महिप पठये बल सम्मित ॥
रट्ठोर१ साहदल मुख[11]२ रहत चलत कुम्म१ चंदोल[12]२ चाहि ॥
अक्खिय सु चिंति जयसिंह१ अब पलटन यह[13] यह मंत्रपाढि ॥२०॥
सुनहु साह१ सह सचिव२ अयुत दुव२०००० दल मम आश्रित
साँदी[14] पंचहि सहँस५००० अधिप गजसिंह२ तंत्र[15] इत ॥
नियत[16] मोहि नासीर[17]१ थट्ट ईसहिँ[18] अब थप्पहु ॥
मित[19] रट्ठोरन मद्दित सहित चंदोल२ समप्पहु ॥
जय गिनहु जुद्ध बहु चक्रबस हजरत इम बदलहु इमहिँ
करि सुहि कबंध दुर्मन[20] किय सु सूर[21]सुतहु टारि संक्रमहि[22] ॥ २१ ॥

१कहते हैं युद्ध करने का विचार पूर्वक २आरम्भ किया ॥ १७ ॥ ३ तापी नदी ४ सतपुड़ा पहाड़ बीच में पड़ता है इसकारण इसके होने में फरक दीखता है॥१८॥ ५ ऐसी दन्तकथा नहीं है ॥ १६ ॥ ६ पीछा ७ सावधान ८ सूर्य ६ तुरकान रूपी बरफ का १० शीघ्र ११ राठौड़ बादशाही सेना की हरोल में रहते हैं और कछवाहे १२ चन्दोल में (पीछे) रहते हैं १३ इस रीति को ॥ २० ॥ १४ सवार १५ आधीन १६ निश्चय १७ आगे (हरोल में) सेनापति करके १८ राठोड़ थोड़े पूज्य हैं जिनको १९ अधिक सेना के आधीन २० उदास २१ सूरसिंह का पुत्र सेना से टलकर २२ चला ॥ २१ ॥

दोहा

साह पठाये सुत सम्मुख, रहि तव मत अनुरूप ॥
अग्ग१ पिछिर क्रम तजि*अयन, भिन्नचले दुव२ भूप ॥२२॥

षट्पात्

रानअमर सुल्तान करन१ अक्खिय पहिले क्रम ॥
भ्रात अनुज तस भीम२ दुंमह सूचिय परबल दम ॥
साह पटा लहि होहु होहु कों१ तब तँहँ हाजरि ॥
कों२ पठयो होहु कहुँ सरँने कों३ होहु तिंत्थ सरि ॥
कों४ पिक्खि वंस अनुकूल क्रम होहु भीर निर्बल हटत ॥
पै अप्पि सरन खुर्रम३ ९।२हिं प्रथित करहिं किंत्ति काटत१कटंत
इम इक१ आहव अंत सरन यह रक्खि साहसुत ॥
जातहि कासीं जुरहिं सुरहिं अभिमुख धारन धुत ॥
मरहिं कवंधन माँहि कुम्म१ हड्डन विद्रुत करि ॥
इहिं मयूख सुहि अधिक होहि प्रभु सुनहु रामहरि२०।१४ ॥
जोहो हजूर तोतो१ जबहि पठयो वहहु स्व पुत्र पर ॥
हो दूर तास्हु अवसर इरखि भयो सरन सिर मरन भर ॥२४॥

दोहा

होहु कितहि यह भीमहरि, पै कुलधर्म प्रसंग ॥
रक्खि सरन खुर्रम३ ९।२हि खिरयो, अप्पन तिलतिल अंग ।२५।
वह उदंत अँहैं अबहि, इक्क१ समरके अंत ॥
मिले अजीमहि इत उभय२, कुम्म१ कवंधर कुंकंत॥२६॥

आगे पीछे चलने का * स्थान छोड़कर ॥ २१ ॥ उदयपुर के राणा कर्णसिंह का१छोटा भाई भीमसिंह २ शत्रु की सेना को दण्ड देनेवाला ३ मार्ग में ४ अथवा तीर्थ करने गया होवेगा ५ खुर्रम को शरण देकर ६ कीर्ति प्रसिद्ध करेगा ॥ २३ ॥ ७ सन्मुख ८ राठोड़ों में जाकर मरेगा ९ कछवाहों और हाडों को १० भगाकर ११ हे रामसिंह १२ जो बादशाह के हजूर में था तो ॥ २४ ॥ १३ भीमसिंह ॥ २५ ॥ १४ वृत्तान्त १५ एक युद्ध होने के पीछे १६ भूपति ॥ २६ ॥

पठये दल दोउ२न प्रथम, जिन्हजिन्ह सिविरन जाइ ॥
भूप मिले निजनिज भटन, सुनि१ पुनि कुसल सुनाइ ॥ २७ ॥
सीसोदहु जो संग हो, ता अजीम मिलि ताहि ॥
निवसायो अप्पन निकट, सिबिर प्रबंध सराहि ॥२८॥
महिपरत्न१९२।१ अनुजहु मिलिय हृदयनरायन१९२।२हह६१ ॥
नृप अवंति सूबा अनुग, बिविध मिले बल बढ्ढ ॥ २९ ॥
॥ पादाकुलकम् ॥
कुमरहु खुरम ३९१२ खलन बहिकायो, उततैं साजि दक्खिन ३१२ बल आयो ॥
आंजि मच्यो सहसा दुहुँ२ओरन, हुव संकुल जिम सिंधु हिलोरन।३०।
उत्तर पवन चल्यो तिहिं अवसर, झरयो प्रथम लोलन गोलन झर॥
गिरनलगे नर१गैंय२हय३मय४गन, फिरन लगे झेलन भुव अहि फन
किरन लगे छत्र१चमर२केतन, खिरनलगे मनि१कनिस२कि: खेतन
घिरनलगे कातर चिंतत घर, चिरन लगे गिरि चमकि चराचर ।३२।
तिरनलगे नभ१उदधि२गिद्ध तिम, उभय२चक्र तहँ भिरनलगे इम॥
कछु अनेहँ कलकल तोपन करि,बल दल वहुरि बडे जंव बिस्तारि३३

---

१ डेरों में जाकर ॥ २७ ॥ २ निवास कराया ३ उज्जैन के ४ सूबाके सेवक ५ बडे बल से दोनों ओर ७ अचानक६ युद्ध हुआ सो समुद्रों के हिलोळों केसमान ८ भरगया ॥ ३० ॥ ९ चपल गोलों का झड़ लगा जिससे१०हाथी, घोड़े ११ऊँटो का समूह गिरने लगा, पृथ्वी को झेलनेमें१२ शेषनाग फण फिरानेलगे "यहां अहि शब्द सामान्य सर्प का वाचक है परन्तु पृथ्वी को झेलने के योग से शेषनाग का ग्रहण है" ॥ ३१ ॥ छत्र चमर और १४ ध्वजा १३ गिरने लगे और युद्ध में मणियें बिखरने लगीं सो १६ मानों खेतों में १५ धांधियें (धान्य की मंजरी) बिखरती हैं १७ कायर लोग चिन्ता के घर में घिरने लगे चर और अचर चौंक कर चीर होकर गिरने लगे ॥ ३२ ॥ इसप्रकार आकाश रूपी १८ समुद्र का गीध तिरने लगे इसप्रकार दोनों १९ सेना भिड़ने लगीं १९ कुछ समय तोपों का २१ कोलाहल करके फिर दोनों सेना ने २२ शीघ्रता करके (पराक्रम) फैलाया ॥ ३३ ॥

कुंतन¹ सरन² असि³ उन्न⁵ संकुलि कौलि, बत्थन⁴ करहँ पाइक्क⁶ जुरत बलि ॥
इत१ के उत२ उत१ के पैठे इत२, मिलन मित्र चिरतैं बिछुरे मित्र⁷ ।३४।
मज्जकि कपाल कढन लगि मज्जा⁸, लचकि गिरंत सुमिरत भट लज्जा
अंत्रनजाल गिरत कढि अग्गैं⁹, लंघि¹⁰ तदपि सम्मुखहि पग लग्गैं ।३५।
उडत सीस१ रुंड¹¹ रहि बहु उट्ठत, बिहसि कि कीर१ दसंगुल¹² बुट्ठत ॥
उत्तर¹³ अनिल इतनु अनुकूलहि, सम्मुह दिस२ खटक्यो हिय सूलहि
हेति¹⁴ हत्थ¹⁵ इत१ कहि सफल हुव, मन्नी उन२ अवता जियत रहु मुव¹⁶ ॥
रन घन हहन मिच्छ१ मरहट्ठे२, निज जिय पियँ दक्खिन दल नट्ठे ।३७।
रतन१ फट बीजापुर२ रंज्यो, इमहि अजीम१ भागपुर२ भंज्यो ॥
अतिबल सुरत हरहि दल असैं, मतिहँन खिल्लहु कौन घर पैसैं । ३८ ।
जिन्ह बल खुरम३१ रखन्यौं साजि जोधँक, मगमग मुरे बिमुख गति बोधँक
भगी धाँरि समय सुरकानी, मनहु लख्यो न खुरम२१ शंकित मानी
स्वबलैं सुरत जान्यौं न साहसुव, हुलसि कुंम्भ बलाबिच जुज्झत हुव
अति भर परत पिट्ठि बल इक्ख्यो, समुझि सु सून्य प्रद्दवहि सिक्ख्यो

---

१ भालों से २ तीरों से ३ तरवारों से ५ उन्न युद्ध को ४ भरकर कितने ही ६ पैदल बाहु युद्ध करने लगे. बहुत समय के बिछुड़े हुए ७मित्र के समान मिलने लगे ॥ ३४ ॥ वीर आदि के सनूहों के टूटने से ८गूद (अस्थिसार) निकलता है और नमकर गिरते हुए वीर लज्जा का स्मरण करते हैं आंतों का समूह निकल कर आगे ९गिरता है १०तोभी इसको लांघकर वीरों के पैर सम्मुख ही उठने लगते हैं ॥ ३५ ॥ मस्तक गिरते हैं और बहुत से ११ बिना मस्तकवाले धड़ हैं सो मानों कीर हसकर १२ खरबूजों की वृष्टि करता है उत्तर की दिशा का १३ पवन दिल्ली की सेना के अनुकूल होकर खुरम की सेना के हृदय का शूल होकर चुभा॥३६॥१४शस्त्रों के हाथ१५जीते ही मृतक हुए१६अपने जीव को प्यारा जाननेवाली दक्षिण की सेना भागी॥३७॥१७नाश होने से बाकी रहे जिन्हों ने जाना कि अब किस घर में घुसेंगे॥३८॥सज कर,१८धोखा बना था १९बिना विचार भागे २० वह भागीहुई धाड़ ॥ ३९ ॥ २२ खुरम ने अपनी २१ सेना को भगी हुई नहीं जानी इसकारण प्रसन्न होकर २३ कछवाहों की सेना में युद्ध करता रहा जब अत्यन्त २४भार पड़ा तब २५पीठ की सेना को देखी उस स्थान को शून्य देखकर वह भी २६ भागा ॥ ४० ॥

हो ढिग१कै कछुदूर२ पंताहर, संकट भीम सहायक संगर ॥
होहु कितहि पै तास सरन हुव, स्वसत नसत नासि त्रसत साहसुव ४१
लखत सरन खुरम३९।२ सु हियलायो, साह पटा सुन अधि-
क सुहायो ॥

तस दल अग्गैं भजि सु भीरु तिम, अप्पन मरन लई कासी इम
किते कहत सूबा प्रयाग को, भीमतंत्रहो खुरम३९।२ भागको ॥
सो तँहँ जाइ भयो सरनागत, बाँहगहिय तिहिं होहु कितहु बत ४३
ताहि उबारि मरन निश्चय तकि, थान पहुँचि मुरस्यो सु मनों थकि ॥
धीर कतिक दै संग धीरधुर, पठयो खुरम३९।२ निकासि उदयपुर ४४
करँन रान रक्ख्यो हु मास कति, भजिजँहँ दक्खिन तस्कर भति।
इत इहिं कहि भीम रन अंकुरि, मरन खेतं मिलतहि पच्छोमुरि ४५
पिछिलगे पहुँचत दिल्ली दल, परयो सिंह तिनपर प्रहरि प्रतल ॥
पिक्खहु चाहि मरे सु रांम२०३।४ पहु, बढैं समुख न गिनैं अ-
ल्प१ रु बहु२ ॥४६॥

जावत सरन मरन कासी जब, सगताउत्त मान१ यह सुनि सब ॥
धूलिमित्र भीम२हि गति धारयो, बुंध तिहिं संगहि मरन बिचारयो॥
उज्झि सबन द जल मेवारहिं, वंटन वेग भ्रात सन भारहिं ॥

---

१ महाराणा प्रतापसिंह का पौत्र समीप था अथवा दूर था परन्तु वह सी-
सोदिया भीमसिंह उस युद्ध के २संकट में खुरम का सहायक हुआ ४बादशाह
का पुत्र(खुरम) ३ भाग कर उसकी शरण में हुआ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ५ भीमसिंह
के आधीन था ६ यह वार्ता कैसे ही होओ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ७ महाराणा करण-
सिंह ने खुरम को कितने ही महीनों तक उदयपुर में अपने पास रक्खा ८ चो-
र की भांति भाग गया ९ भीमसिंह युद्ध में खड़ा होकर मरने योग्य १० का-
शी का क्षेत्र मिलते ही पीछा फिरा ॥ ४५ ॥ ११ हातल का प्रहार करके वह
सिंह दिल्ली की सेना पर गिरा १२हे प्रभु रामसिंह देखो जो मरना बिचार लेता
है वह शत्रु के सन्मुख ही पढता है १३ थोड़ा और बहुत नहीं देखता ॥ ४६ ॥
१४ बालमित्र १५ उस चतुर मानसिंह ने ॥ ४७ ॥ १६ सब को छोड कर

---

* विक्रमी सम्वत १६७१ में महाराणा अमरसिंह के साथ बादशाह जहांगीर की सन्धि हुई तब शाह

जा दिन भीम जुरयो दिल्ली दल, पहुँचत तादिन तिहिँ नलगी पल ॥४८॥
प्रथमैं उपक्रम किन्नत महापटु, कछु कहि भिन्न मरन हितकी पटु
सजि निज सान १.. सभो अग्रेसर, गोकुलदास २ सहित सजि संगर ॥ ४९ ॥
कासी मग्ग मोरि लय कच्छी, मुरे बार भट दंक जिम मच्छी।
साह कटक मज्जल जानत सठ, हरखत पिट्ठि लग्यो जित्तन हठ ॥ ५० ॥
तससिर कुपि सीसोद परयो तब, मग्ग हार मन्नैं सु सहे सब ॥
वढिगो अतिबल जलधि बिलोरत, मुरत१ न सुन्यौं सुन्यौं पैंर मोरत२ ॥ ५१ ॥
अग्गि प्रजरयो सीसोदन ऐसो, कहँ सुकवि मारी गद कैसो ॥
दिस पुब्ब सन प्रविसि साह दल, किन्नौं मरन मारि अरि कलकल ॥ ५२ ॥
वह्नो भीम अग्गि प्रलय भीमैं विधि, नमरयो मग्ग लयो कासी निधि
सु मुरि पंचक्रोसी बिच सम्मुह, सत्रुन दैन लग्यो दुल्लहसुह ॥५३॥

१ जिस दिन ॥४८॥ २ युद्ध के विचार पूर्वक ३ आरम्भ होने ही वह ४ अत्यन्त चतुर ५ अग्रणी हुआ ६ घोड़े ७ जल में जिसप्रकार मच्छी पीछी फिरै तिस प्रकार पीछे फिरे ॥५०॥ ८सेना प्रति ९समुद्र को मथता हुआ १० शत्रुओं को मोड़ता हुआ ॥५१॥ ११ महामारी (मरी) रोग के समान तरवार चलाई १२ कोलाहल १३ ॥ भीमसिंह का १४ खड्ग १५ भयंकर प्रलय की विधि से चला १६ दुर्लभ सुख ॥५३॥

जादा खुर्रम ने भीमसिंह को अपने साथ लेजाकर बादशाह से भीमसिंह को राजा के खिताब के साथ बड़ा दरजा दिलवाया तभी से भीमसिंह बादशाही सेवा में रहता था इसकेलिये ऐसा प्रसिद्ध है कि शाहजादा खुर्रम की माता भीमसिंह के राखी बान्धती थी इसकारण भीमसिंह खुर्रम को भानजा कहता था इसीकारण से भीमसिंह बादशाही सेवा से निकलकर अपने भानजे खुर्रम का सहायक हुआ. इस युद्ध का वृत्तान्त बहुतसी तवारीखों के हवाले से वीरविनोदनामक मेवाड़ के इतिहास में लिखा है जिसमें जोधपुर आमेर आदि को भगाकर शहजादे पर्वेज के समीप बादशाही सेना में भीमसिंह का माराजाना लिखा है. यह युद्ध विक्रमी सम्वत १६८१ में काशी के समीप हुआ था ॥

उभय२ गोकुल१ रु मान२ पास इम, जय रन रमत चक्ररच्छक२ जिम ॥
परत बजूगति सरन मरनपन, कूरम१हड्ड२जवन३किय कनकन५४
टिकत कबंध१ खरो इकदिस टरि, कलि वह लखत मत्त आसव करि ॥
संग्र रँगमय चल्लत सीसोदन, गय१हय२नर३न झरन लग्गे गन५५
कहुँक रुंड लै मुंड स्वीयकर, है हियदिट्ठि[10] पहुँचि पूजैं हर ॥
भूत दूतबनि बहुन भिरावत, खावन अतिभट सिरन खिरावत।५६।
परत भार लखि जियनपरायन, नट्ठो[12] हड्ड६१सु हृदयनरायन ॥
कुल कलंक कानि न कछु किन्नी, लै प्रियप्रान दिसा इकलिन्नी५७
अग्रज भपहु न कछु मन आन्यौं, प्रिय[14]१जिय अप्रिय१नक्क[15] प्रमान्यौं
इत सीसोद भीम कट्टत अरि, कूरम१हड्ड२जवन३कनकनकरि५८
संकट[16] पुब्बँ[17] भजत जान्यौं सुहि, सम्मुह मुरत काल मान्यौं सुहि
इक चित्तोर करन निज उज्वल, बाहुरि भिरत बरन पिक्ख्यो बल
कोउक रह्यो अछुत्त भीमकर, सब हुव जत्रकुत्र अग्रेसर ॥
समर खरो जयपाइ अमर सुव[19], दुजन अदिट्ठ हेति[20] जर्जर हुव ।६०।
छिज्जत कूरम१जवन२लोह छकि, छिति लोटत कति भजत मोहछकि
बिजय निसान[21] घुराइ भीम बलि[22], असह खेत ठट्ठो जसउज्जलि ६१

---

१ अर्जुन और २ श्रीकृष्ण के समान; अथवा श्रीकृष्ण की रक्षा से अर्जुन युद्ध करै इसप्रकार युद्ध किया. कछवाहे और हाडों को ३ तितर बितर करदिये ॥ ५४ ॥ जोधपुर का राजा राठोड़ गजसिंह टलकर एक ओर खड़ा रहकर ४ युद्ध देखता रहा था ५ मद्य में मस्त होकर ६ हाथ ७ वेग सहित ८ हाथी ॥५५॥ ९ अपने हाथ से अपना ही मस्तक लेकर १० हृदय की दृष्टि से ॥ ५६ ॥ ११ जीने में तत्पर होकर १२ भागा १३ शंका ॥ ५७ ॥ १४ जीव को प्यारा और १५ नाक को अप्रिय माना ॥ ५८ ॥ १६ घेरा लगने से १७ पहिले ॥ ५९ ॥ १८ भीमसिंह के हाथ से कोई ही कहीं अछूता (घाव रहित)रहा१९राणा अमरसिंह का पुत्र शत्रुओं से नहीं देखा जासके ऐसा; अथवा उस युद्ध में शत्रुओं को खड़ा नहीं देखकर २० शस्त्रों से ॥ ६० ॥ २१ नगारे २२ फिर ॥ ६१ ॥

लोहछकि १ मोहछकि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रतिभट ओर टिकत नहिंपाये, दिसइक१खरे कवंध दिखाये ॥
इनहि भीम गजसिंहहि अक्खिय, रन जयविरचि खेत मह रक्खिय
वंवं[3] तुम न जयसूचि[4] बजावहु, यहहिं दर्प[5] तो सम्मुह आवहु ॥
भाखी सुनि गजसिंह सुज्झ भट, अप्रतिहत[6] न रुकहिं बट१उब्बट२
तुम करिबिजय खेत रक्ख्यो तिम, उचित[7] करन अवजाहु सिबिर[8] इम
बजत बंब न रुकैं[9] मामक बल, फोरि देहु तव रुकैं स्रवंन[10] फल ६४
क्यों बचहु अब मरन कुमावहु, जय१जस२रक्खि सिबिर निज जावहु
मानी भीम यह न तव मानी, रट्ठोरन सन रारि रचानी ॥ ६५ ॥
ए१वंधु भिन्न२हुते वे१अक्षतं२, हुव तिलतिल सीसोद हेति[13] हत ॥
सिरतस हारधरयो हसि संकर, वस्यो त्रिदिव दुलही अच्छरिवर ६६
मुख अग्गैं[14] सु झरयो भट मान१हु, उ[15]वरयो सु गोकुल२छतवानहु[16]
जयलच्छी[17] सीसोद१लही जो, बहुरि जित्ति रट्ठोर२[18]वही जो ॥ ६७ ॥
भीम अग्ग मान१हु तिलतिल भो, खग्गन[19] खिन्न गोकुल२सु खिल[20]भो
रानाउत१सगताउत२जुग रन, परे प्रवीर निबाहि मित्रपन ॥६८॥
भीम१ मान२ इम स्वर्ग वसे वीर[21], गोकुल बच्यो आयुबल गैत्वर[22]॥
पहिलैं दल साहको दल्यो पारि, अब गजसिंह लयो जय उद्धरि ६९
जु सुनि साह छंद[23] हुकम भेजिजिम, उपालंभ[24] बुंदीसहिं दिय इम॥
स्वीय[25] अनुज न भजैं जो सत्वर[26], तो न मुरैं ममदल रनचत्वर[27] ।७०।

---

१ शत्रु २ राठोड़ ॥ ६२ ॥ ३ नगारा ४ जय की सूचना करनेवाला ५ घमंड है तो ६ अभंग मनवाले; अथवा रोकने से नहीं रुकनेवाले मेरे वीर नहीं रुकेंगे ॥ ६७ ॥ ७ उचित कार्य (घावों का इलाज) करने के लिये ८ डेरों में ९ मेरी सेना में १० कान फोड़ डालो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ११ शरीर से घायल १२ घाव रहित १३ शस्त्रों से कटकर ॥ ६६ ॥ १४ मानसिंह भी भीमसिंह के मुख आगे गिरा १५ बचा १६ घायल होकर १७ जो जयलक्ष्मी शीसोद भीमसिंह ने ली थी वह १८ राठोड़ ने धारण की ॥ ६७ ॥ १९ खड्गों से क्षीण होकर २० बाकी रहा ॥ ६८ ॥ २१ वीर २२ गमन शील आयु के बल से ॥ ६९ ॥ २३ पत्र २४ ओलम्भा २५ तुम्हारा भाई २६ शीघ्र २७ युद्ध क्षेत्र से ॥ ७० ॥

जो गजसिंह बीर न लहैं जय, मचैं कुजस अप्पन रीढामय ॥
जोध हृदयनारायन१९२।२ जैसें, अब कहुँ काम न भेजहु ग्रेसें ७१
दल पठयो तिहिँ सुनि नृप बुंदिय, कुलहि कलंकित अहो अनुज
किय ॥
मोतैं अब सु मिलैं न मंदमति, करहु रुद्ध कोटा१ रु ग्रामकति७२
कुमरसता१९४।१हु हुकम लोपैं किम, तास रक्खि दुन्नी१आवाँ२
तिम ॥
ग्रामक१ सह छिन्न्यौं कोटा२ गढ, रह्यौ दुरि सु दुन्नी लज्जितरढ ७३
केसव१९३।६कुमर हुतो पँहुपासहि,याको सुत हुव किंमहु उदासहि
सु करि मंत्र निज नाम श्रांतसन, मुरे दुहुँ२न खट्टन बिसेस मन७४

॥ दोहा ॥

स्याम१९४।८ जु गोपीनाथ१९३।१ सुत१,
सुत केसव१९३।६ को स्याम१९४।१ ॥
पहुँचि महावत खान पँहँ, रहे लोभ अबिराम ॥७५॥
अटक पार दुव२ पँत्त इम, भ्राता कुल मगखुल्लि ॥
अनुचित सुनि नृप रत्न१९२।१यह, खिज्यो दुर२दिस रिसखुल्लि७६॥
एह महावतखान इत, रन वीरन रिझवार ॥
पंचसहँस५०० राउत भेकर, लहैं छाहसँम लार ॥७७॥
जैंत्थ किसोरहि बंधु जुग२, वयमैं तिथि१२ १५तिथि १५ बर्ष ॥
रीझि महावत रक्खये, पिक्खये लरत भैकर्ष ॥७८॥
खानं अमानत नियत खलु, इत सूबा अंजमेर ॥
रजंपूतहि ताकौं रुचत, समँरसमर लखिसेर ॥७९॥

---

१ पीठ देने से ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ २ हठ ॥ ७३ ॥ ३ राजा के पास ४ किसी कारण से ५ सम्पादन करने को ॥ ७४ ॥ ६ विश्राम रहित लोभ से ॥ ७५ ॥ ७ गये ॥ ७६ ॥ ८ वीरों को ९ परगह १० छाया के समान साथ रखता है ॥ ७७ ॥ ११ जहां १२ पन्द्रह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में १३ विशेषता ॥ ७८ ॥ १४ युद्ध में सिंह के समान स्मरण करके और इसीप्रकार देखके; अथवा समरसिंहना-

संभर वंधु दयाल१९०।१ सुत, जई अखैराजोत१९।१५ ॥
जाइरह्यो भूपति१९।१२ जहाँ, सुनि कुल अपजस स्रोत ॥८०॥
सवल१९३।१ मनोहर१९२४ अनुज सुन, वहु इत्यादि वहोरि ॥
रत्न१९२।१ अनुजरन्हीं करि रहे, जिततित श्रितही जोरि ॥ ८१ ॥
कहै ६१ भज्जत तो हमहु, भज्जहिं इंम सवभाखि ॥
विनु हुकमहु जुज्झन वढे, वंस विरुद रुचि राखि ॥ ८२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीन्द्ररत्नसिंहचरित्रे शत्रुभीतिवारणार्थयवनेन्द्रजहांगीररत्नसिंहबुरहानपुरप्रेषणं १ यवनेन्द्राज्ञानुसारराष्ट्रकूटीयसेनाग्रगामिताधिकारकूर्मप्राप्तिनिमित्तकभूपद्वयाग्रानुयायिताक्रमत्यजनं २, समरपलायितशरणागतखुर्रमरक्षकशेखावतभीमसिंहहतकूर्मयवनेशसैन्यविजयानन्तरयोधपुराधीशगजसिंहप्रधनतनुत्यजनं ३, रत्नसिंहसोदरहृदयनारायणरणापलायनयवनेन्द्ररत्नसिंहोपालम्भप्रदानं पञ्चविंशो मयूखः ॥ २५ ॥

आदितोऽष्टोत्तरद्विशततमः ॥ २०८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सब चहुवानों को युद्ध में सिंह के समान देखकर; अथवा युद्ध प्रति वीरता देखकर ॥ ७९ ॥ १ चहुवाण का ॥ ८० ॥ २ लज्जा करके जहां तहां ३ आश्रय ही है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में बुरहानपुर के सूबे में शत्रुओं का भय होने के कारण बादशाह जहांगीर का रत्नसिंह को बुरहानपुर भेजना १ राठोड़ों का हरोल में चलने का अधिकार बादशाह की आज्ञा से कछवाहों को मिलजाने के कारण दोनों राजाओं का हरोल और चन्दोल का क्रम छोड़कर चलना २ युद्ध से भागेहुए खुर्रम को शरण रखकर शेखावत भीमसिंह का हारा, कछवाहा और बादशाही सेना को भगाकर जोधपुर के राजा गजसिंह के युद्ध में माराजाना ३ रत्नसिंह के भाई हृदयनारायण के युद्ध से भागजाने के कारण बादशाह का रत्नसिंह को उपालम्भ देने का पचीसवां २५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ आठ २०८ मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

इत जयसिंह१ अजीमर२ इन्ह, समुपालब्धन साह ॥
लै [2]हरोल१ अधिकार [3]लहु, रक्खे निज कुल राह ॥१॥
बिहित पटा१ गज२ बाजि३ बसुं४, आयुध५ भूसन६ अप्पि ॥
गजसिंह सु अतिबल गिन्यौं, थानहरोल१हि थप्पि ॥२॥
तबहि साह इक१ [5]पातुरिहु, [6]निपुन अनारां७ नाम ॥
[7]हुलसि दई गजसिंह हित, [8]कसवट्टी रसकाम ॥ ३ ॥
[9]प्रभनैं कति सुहि खुरुम३९।२ पुनि, जब हुव [10]साहजिहान३९।२॥
तब [11]अप्पी पातुरि तिमहु, [12]द्वापरें फुरत निदान ॥ ४ ॥
पै तस बस गजसिंह पहु, अब भावी बस एस ॥
जेठे१ [13]कुंमरहिं टारि जड, दैहैं लघुर हित देस ॥ ५ ॥

॥ उद्धरः ॥

रन इत खुरुम३९।२ [14]बिद्दव बढ्ढि, कछुदिन [15]करन सरन हु कढ्ढि॥
छलबल खल उदैपुर छोरि, दक्खिन३।२गो हठी पुनि दोरि ।६।
इम [16]आबाददौलत आदि१, [17]बनितां१ सुत२न मिलि [18]जयबादि॥
बीजापुर२हिं जाइ बहोरि, जय [19]बैंट भागनगर३हिं जोरि ॥ ७ ॥
[20]नवंनव बजत साह१नबाब,सबमिलि लक्ख१०००००फोज हिसाब
फैज१ रु अमर चय२ [21]फैबि फुल्लि, दढमत आकबत३ अबदुल्लि४ ।८।
दरियाखान५ कुतब६ उदार, लिय तिम खाँ गुमान७हु लार ॥
[22]अंतंतकी मुहम्मद आदि८, सब मिलि मंत्र इक१ मत सादि ॥९॥

---

१ बादशाह ने ओलम्भा देकर २ आगे चलने का अधिकार देकर ३ शीघ्र ॥१॥ ४ धन ॥ २ ॥ ५ वेश्या ६ चतुर ७ प्रसन्न होकर ८ कामरस की कसोटी ॥ ३ ॥ ९ कितने ही कहते हैं १० खुरम शाहज़हां का नाम धारण करके बादशाह हुआ तब ११ दी १२ सन्देह होता है ॥ ४ ॥ १३ बडे कुमर को छोडकर छोटे को मारवाड़ का देश देवेगा ॥ ५ ॥ १४ भागकर १५ उदयपुर में राणा कर्णसिंह के शरण में ॥ ६ ॥ १६ दोलताबाद १७ स्त्री १८ जय कहकर १९ विजय के बंट से; अथवा विजय के मार्ग से ॥ ७ ॥ २० नवीन नवीन २१ फूलकर ॥ ८ ॥ २२ तकी शब्द है अन्त में और मुहम्मद है आदि में जिसके ऐसा अर्थात् मु-

मग्गहँ हु केहु मिलाइ, प्रतिभट देस वट सवपाइ ॥
खुर्रम३।१।२हिं ठानि दुल्लह खेत, सबनिज जन्य वलै ससुपेत१० ॥
मिलि तिन विजन किय इम मंत्र, तब हुव हारि निजविधितंत्र ॥
जुरि बुरहानपुर अव जीति, परखहु पुब्ब सबन प्रतीति ॥११॥
लहि आसेर पुनि अवलंब, करि बस सीम सत्रु कदंब ॥
जिम जिम अग्ग प्रविसहिं जाइ, परभुव लाभ तिमतिम पाइ १२
इम अब दच्छि मालव अंत, क्रम करि होहु सब छितिकंत ॥
यह मत मन्नि खुर्रम३।१।२उपेत, हंकिय दक्खिनी जय हेत १३
इक दल है अनी बनवाइ, भेजिय प्रकट पथ इक भाइ ॥
स खुर्रम३।१।२मुख्य असेस, जुरे दूजी अनी जवनेस ॥ १४ ॥
उत्तर ओर पिहिनै सु आइ, प्रविसनै सप्तपुट गिरि भाइ ॥
लहि इहिं वास द्रोनिनैं लीन, दलउत अद्ध प्रेरि सु दीन ॥ १५ ॥
सो पहिली अनी वनि सेर, घुमड़त वित्थरी घनघेर ॥
उतरत्तन नेर ढिग तिहिं आइ, किंय रन घोर पन प्रकटाइ ।१६।
इम बुरहानपुर रिपु आत, सुनितिन्ह रत्न१९।२।१इत हुल्लसांत ॥
दलसंह खुल्लि दक्खिन द्वार, कढि नृप कल्पभैव अनुकार ॥१७॥
स्व तुरग हंकि तोपन सीस, प्रहरिय वज्र असि पुहवीस ॥
इहु रन फेर दुव दुव होत, कनकंन किन्न तोपन गोत ॥ १८ ॥
वढि रन औनैं रैन१९।२।१वरूथ, जिततित दच्छि परदल जूथ ॥
झारिय खग्ग इम यह झोकि, रिपु वहु संहरे रन रोकि ॥ १९ ॥

हम्मद तकी ये सब के नाम हैं ॥ ९ ॥ १ जान (बरात) २ सेना सहित ॥ १० ॥ ३ एकान्त में सलाह कर ४ विधि के वश सें ५ प्रथम ॥ ११ ॥ ६ आधार ७ समूह ॥ १२ ॥ ८ भूपति ९ सहित ॥ १३ ॥ १० सब ॥ १४ ॥ ११ गुप्त १२ सतपुड़ा में प्रवेश किया १३ खोहों (खोद्रों अथवा खरलों) में ॥ १५ ॥ १६ ॥ १४ प्रसन्न होकर १५ सेना सहित १६ प्रलय के शिव के १७ सदृश ॥ १७ ॥ १८ वज्ररूपी खड्ग का प्रहार किया १९ भूपति ने २० तोपों के फरेन्स को विखेर दिया; अथवा भालों से तोपों को विखेर दी ॥ १८ ॥ २१ युद्ध के स्थान में २२ रत्नसिंह की सेना २३ शत्रु के समूह को ॥ १९ ॥

सिर१धर२हत्थ३पय४भुज५संध, जितनित जानु६कटि७उर८जंघ९
अबिरंत झरत सुभटन अंग, रन हुव द्वैरघगी इकरंग ॥ २० ॥
सिखये सत्रु लखि अवसान, प्रतिभंग वेग मंडि प्रयान ॥
लोभित हट्ट६१पिट्ठि लगाइ, परभट लेचले स्मृतिपाइ ॥ २१ ॥
अरि सब पिक्खि भूप इतेहि, जानत हैं जितेहि जितेहि ॥
दब्बत पिट्ठि पहुँचत दूर, सजि इतकी अनी२अब सूर ॥ २२ ॥
पर्बत सप्त७पुट थितिपाइ, उत्तर४।७ओर सन तिन आइ ॥
करि अधिरोहिनिँन लग कोट, चक्खिय नैक काहु न चोट ॥२३॥
पुर बिच यों अचानक पैठि, बैरिन रोकि रच्छक बैठि ॥
चढि अधिरोहिनीन चलाइ, अंतर्दुर्ग हू लियआइ ॥ २४ ॥
रच्छक रक्खिगो रतनेस१९।१२, आये काम तेहु असेस ॥
पै इक्र१अट्ट तोपहिं पाइ, भट कछु उब्बरे रन भाइ ॥ २५ ॥
दलपति द्वारकादिकदास१, कूरम पाइ तँहँ अवकास ॥
तिम वह भरि यहीसैन तोप, किय रन तास बल अतिकोप ।२६।
इक न चढिसक्यो तिँहिं अट्ट, बढिबढि समुद्द हुव दहवट्ट ॥
कछु हरपाल१८२।२ लाल१८४।२कुलीन, तिम भट निम्म१८५।३ वंसिय तीन३ ॥ २७ ॥
चालुक बल्लनोतहु च्यारि४, सेरहु केक टेक सम्हारि ॥
वह करि इक्क१अट्ट अजेय, लखि इक१तोप बल जसलेय ।२८।
दल इन द्वारकादिकदास, प्रेरित ए रहे भट पास ॥
आरिजिन नाँ दगे ढिग आन, परिजिन अल्प कल्प प्रमान ॥ २९ ॥

---

१ समूह २ छुटने ३ निरन्तर ४ एकसा ॥ २० ॥ ५ अन्त में ६ उलटे मार्ग से ॥ २१ ॥ २२ ॥ ७निसरनियों से कोट पर मार्ग करके ॥ २३ ॥ ८ भीतर का गढ (जीवरखा) लेलिया ॥ २४ ॥ ९ रत्नसिंह रक्षक रख गया था १० सब ११ बुरज पर ॥२५॥ १२ द्वारकादास १३ यहां से ही तोप भरकर ॥ २६ ॥ १४ विध्वंस (बरबाद) ॥ २७ ॥ १५ कितनेक हठ करके १६ नहीं जीतने में आवे ऐसी एक बुरज करके ॥ २८ ॥ १७ सेवक १८ प्रलय ॥ २९ ॥

इम मुहिं स्वप्न दिय हरि अज्ज, करि अरि कदन*सद्धहु कज्ज ॥
सब भट१ बंधुरतो गिनौं वे हमैंहु, जिम सबिसेस आन जनैंहु ।३९।
सह जबै सोहु सुनि नरनाह, किय पुर पिछि पक्खर बाह ॥
जुज्झत जात जात बजार, कालि किय कल्प खिन भ्रमंकार ॥४०॥
कइकइ सज्ज बढि उतकेहु, आवत दलत तावत एहु ॥
गोखन जाल नारिन ग्रान, पिक्खत कंपि कुत्त प्रकाम ॥४१॥
हुवं बहु रंगरेजन हट्ट, मगि मनु छुट्टि जावक मट्ट ॥
रहि मग तूल१ पट२ सितै रासि, भन किय इक्क लोहितै भासि ॥४२॥
परिपरि अंत्र मालिन पत्त, तनियत लोहि समधिक तत्त ॥
पुहपनं ओर रंग पिधाइ, उफनिय रंग रत्तहि आइ ॥४३॥
इम मग अन्न रासि अनेक, इतउत लक्खत पल पन एक ॥
करिकरि चित्त बहु मनिकार, विलक्खत लाल सब मनि दार ॥४४॥
घुपि पुर इक्क१ सोनित धार, सुहि किप रक्तवस्त्र सिंगार ॥
कुद्दत लोहछकि हय केक, उलटत बंधि अट्ट अनेक ॥४५॥
जवन१हु चक्खि हड्डन जोर, घन रन मन्नि अंतक घोर ॥
इन१ इम तेर लयेहि ढंढोरि, जिम दिय घायँ घायन जोरि ॥४६॥
जवन१न चले लै नृप जोध२, कलरवँ१ सेन२ हुव गतिक्रोध ॥

शत्रुओं का नाश करके कार्य * साधन करो १ अब ॥ ३९ ॥ २ वेग सहित ३ सीधे घोड़े बढाए ४ समूह ५ युद्ध ६ प्रलय का सन्देह करनेवाला ॥ ४० ॥ ७ इनको तपाते हैं अथवा तप तक ये उनको मारडालते हैं ८ समूह ॥ ४१ ॥ ९ मानों अलता (लालरङ्ग) के माटे छूटे हैं १० मार्ग में रुई और वस्त्र ११ स्वेत रङ्ग के समूहवाले थे.१२ सो लाल रङ्ग के शोभा देने लगे ॥ ४२ ॥ मालनियों की छाबों में आंते पड़ पड़ कर १३ अधिक प्रकाश फैलाते हैं १४ पुष्पों का अन्य रंग ढककर १५ एक लाल रंग ही चढा ॥ ४३ ॥ १६ समूह (ढेर) अर्थात् अन्न की राशियों पर मांस गिर गिर कर वे राशियां मांस की बनती हैं १७ आश्चर्य. सब रंग की मणियों के समूह को लालरङ्ग मय (माणक) ही १८ देखते हैं ॥ ४४ ॥ १९ रक्त की धार से ॥ ४५ ॥ २० काल के समान भयंकर २१ रोकलिये २२ घाव से घाव जोड़ दिये ॥ ४६ ॥ २३ कोलाहल

दुहुँ[1]दिस होत खंड दुनाह, लिय अब सम्यगढ ढिग लाह॥४७॥
माधव १९।३।२ हरि १९।३।३ नरिंद[2] कुमार,
केसव १९।३।६ अनुजसुत जयकार[3]॥
चलि पहुँ अग्ग[4] खग्ग चलात, बलि बहु सुलभ विजय दिखात॥४८॥
प्रविसन दुर्ग द्वार न पाइ, पर[5] काँति बाहुरेहु पलाई[6]॥
अँहत[7] तिन्ह गयेहु मरे स, पहत कुणप[8] द्वार प्रवेस॥४९॥
इम सुत लेत नृपसुख बाह, लकतहि जटित अँगर न राह॥
लखि अँधिरोहिनी[10] गढ लग्ग, अहुँरन[11] अप्पि बाजिन वग्ग॥५०॥
केसव१९।३।६ उमेशहि कुमार, हुव सब अग्ग पहुँचनहार॥
प्रेरन बाह देत नृपाल, कुम्भरन पिट्ठि हुव ततकाल॥५१॥
वीरहु बहु संगोग१ निगोग, प्रहरत तुपक१ तोर२ रु तोलें[12]३॥
चढिचढि ठामठाम चलाइ, छितिदिय मिच्छ[13] लुत्थिन छाइ॥५२॥
मचि तँहँ तुमुल[14] भैरन[15] मार, हुव अवमर्द[16] खय[17] अनुहार॥
कटि उर१ जत्रु[18]२ कंठ३ कपाल४, कटि[19]५ कर६ अंस[20]७ पय८ तिहिकाल
सुव हुव पूर नरपल[21] भीर, धुन हुव दूर परबल धीर॥
इकदिस१ खुर्रम१ हठ अनुवादि, उतहि तकी मुहम्मद आदि.५४
मिलि अबदुल्ल२ सहित गुमान२, इकदिस२ अंकुरे[22] पगि पान[23]॥
इकदिस३ सेर्स[24] अरि अवनीस[25], इकदिस४ कुम्मनृप[26] दलईस॥५५॥
इकदिस सँत्थसह[27] चढि आप्प[28], दलि किय दक्खिनिन हत दप्प[29]॥

१ वीरों के टुकड़े ॥ ४७ ॥ २ राजा के कुमार ३ जय करनेवाले ४ राजा के आगे ॥ ४८ ॥ परंतु ५ कितने ही ६ भागकर ७ उन बुर्जों के पास गये सो ही मरे ८ मुरदों से द्वार के प्रदेश को पाटते हैं ॥ ४९ ॥ ९ किवाड़ जुड़ने से १० नीसरणी ११ सेवकों को घोड़ों की वागें सौंपकर ॥५०॥५१॥ १२ भाले १३ म्लेच्छों की लोथों से ॥ ५२ ॥ १४ भयंकर १५ शस्त्रों की १६ युद्ध १७ प्रलय के समान १८ कन्धा और कांख की सन्धि को जत्रु कहते हैं (कण्ठ के नीचे का भाग जिसको लोक में हांसली की हड्डी कहते हैं) १९ कमर २० कन्धा ॥ ५३ ॥ २१ मनुष्यों के मांस से ॥ ५४ ॥ २२ लड़ेहुए २३ पराक्रम में प्राप्त होकर २४ बाकी के २५ राजा २६ कछवाहों का राजा ॥५५॥ २७ साथ सहित २८ आप (रत्नसिंह) २९ दर्प

तँहँ हरिसिंह१९३।३ दै त्रय३तीर, बेधिय खुरम३९।२अतिबल वीर
पकरिय साहसुत पुनि पूगि, अरि१ तम२ मध्यहरि१ रवि२ ऊगि॥
बंधिय तसहि पग्घ बिछोरि, संगहि केसव१९३।६हु हुतें[2] दोरि ।५७।
अंबुधि[3]१ बैरिसल्ल२ बिसिं[4] उव्वं[5], पर जु तकीमुहम्मद पुव्वं[6]२ ॥
लघु[7] खरसत्थ घाय लगाइ, जो गहि जेरक्किय इहिं जाइ॥५८॥
अधिपति थप्पि[8] कुमररन अंस, दुव२ अरि करि बिबंधन[9]१ दंसं[10]
इम खुरम१ रु मुहम्मद आदि२, व्यायुध[11] करि उभै२हि बिबादि
इनकहँ रहन सनियम[12] अक्खि, रच्छक छिसत२००सुभटन रक्खि
किल[13] खिल[14] गंजि१ दलि२ इतके रु, महिपति अग्ग थुपि जिम मेरु
असि अबदुल्ल१ सहित गुमान, पहु लिय छिन्न दोउ२न प्रान ॥
तिम मरहट्ठ दुव२ हनि तत्थ, संतुव१ रामधन२सह[15]सत्थ ॥६१॥
दिसदुव२ जित्ति किय दहबट्ट[16], थप्पिय तत्थ निज भट थट्ट[17]॥
इम गहि द्वै२ रु चउ४ हनि एस, हंकत हुत्त सकुचिय सेस ।६२।
सहबल पत्त इत१ नृप सज्ज, कूरम वीर उत२ कृतकज्ज[18] ॥
दुव२दिससौंहि अब गरदाइ[19], अरि गन मध्य खिल लिय आइ
दोहा—कथितै[20] स्वभट इक१ अट्टकरि[21], अजित हुते इक ओर ॥
इक१ नाली[22] करि ते अवहु, रहे रचत रन रोर[23] ॥६४॥
जीवरखा खिलं[24] त्रि३दिस जिन्ह, जिरयो प्रबिसि सजोर ॥
पहु[25] सेनानी कुम्म[26] पटु, असह टिक्यो इक१ओर ॥६५॥

॥ ५६ ॥ शत्रुओं रूपी १ अन्धेरे में हरिसिंह रूपी सूर्य उदय होकर २ शीघ्र ॥ ५७ ॥ ३ समुद्र में ४ प्रवेश किया ५ बड़वाग्नि के समान ६ प्रथम मुहम्मद और पर (अन्त) में तकी अर्थात् मुहम्मदतकी ७ तीक्ष्ण शस्त्रों से छोटे घाव लगाकर ॥ ५८ ॥ ८ कन्धा थापकर ९ दोनों शत्रुओं के बंधन और १० कवच काटदिये ११ विना शस्त्र शस्त्र करके दोनों को वर्जित किये ॥ ५९ ॥ १२ नियम सहित रहना कहकर १३ निश्चय १४ बाकी के ॥ ६० ॥ १५ साथ सहित ॥ ६१ ॥ १६ विध्वंस १७ समूह ॥ ६२ ॥ १८ कृतकार्य १९ घेरकर ॥ ६३ ॥ २० कहेहुए २१ एक बुरज पर २२ एक तोप से २३ भयंकर ॥ ६४ ॥ २४ सब २५ बुंदी के राजा का सेनापति २६ चतुर कछवाहा ॥ ६५ ॥

तत्थ न होती तोप तो, देते रहन न दुष्ट ॥
पै हुव कारि तत्त बल प्रधन, ए अल्पहि जस पुष्ट ॥६६॥
पहुँच्यो इत जित्तन सुपहुँ, जुग२ दिस अमल जमाइ ॥
देखि स्ववस तीजी३ दिस रु, अब चोथी४ लिय आइ॥६७॥
तीजी३दिस पँहुनेनपति, हुसह द्वारकादास ॥
बुरज रक्खि वह तोपबल, अधिपहि दिय उल्लास ॥६८॥
इत१ सेनानी कुम्भ अरु, इत२सहदबल अधिराज ॥
खिल अगति लै बिच निखिल, बढिदब्बे अतिबाज ॥६९॥

॥ षट्पात् ॥

भागनगर भूमीस१ सहित बीजापुर सासक२॥
जँहँ इत्यादिक जवन निरखि हद्द६१न निज नासक ॥
खिल असु दरियाखांन१ आकबतर२ कुतबखान३ इम ॥
फेजबखस४ बिनुफैज अमर चय५ विगत तमाँ इम ॥
ए मुख्य मिच्छ पंच५हि असुनँ दक्खिनपति समुझत दुलभ॥
भुजभुज दुकूलँ फेरतभये नेजन बव्र प्रसारि नभ ॥७०॥

मदनावतारः॥

पिक्खि यह भूप निज१ रोकि पैर२ पुच्छये ॥
देहु जियदान तिनएहि उत्तर दये ॥
कहिय नृप मान इक१ लेर२ रु सब१ देर२ कढहु,
बहुरि जिन सज्जि इत काल कोप न बढहु ॥७१॥

---

१ युद्ध में ॥ ६६ ॥ २ श्रेष्ठ राजा ३ अधिकार ॥ ६७ ॥ ४ राजा का सेनापति ५ प्रसन्नता ॥ ६८ ॥ ६ सेनापति कछवाहा ७ सेना सहित ८ स्वामि (रत्नसिंह) ९ बाकी के १० सब शत्रुओं को बीच में लेकर ११ शीघ्रता से दबाये॥६९॥ १२ भूपति १३ हाकिम १४ हाडों को अपने नाश करनेवाले देखकर १५ बाकी के प्राण सहित १६ विना जय १७ लोभ छोडकर १८ प्राणों को १९ प्रत्येक मनुष्यों ने अपने अपने हाथी में वस्त्र लेकर फेरा "युद्ध में वस्त्र ऊंचा करके दिखाना आश्रित होने का चिन्ह है" २० भालों से वस्त्र बान्धकर आकाश में फैलाये ॥ ७० ॥ अपने लोकों को रोककर २१ शत्रुओं से पूछा ॥ ७१ ॥

इज्जत१ रु प्रान२ जुग२ देहु तिंन उच्चरिय,
कौल पुनि सुनहु तुम१सों बै हमर जो करिय ॥
प्रधन[3] दिल्लीस दल काम जँहँ जँहँ परैं,
लखत टरिजाँहिं हम नाँहिं हहुद६१न लरैं ॥७२॥
रावरे पीत[4]छवि केतु[5] जित जित रहैं,
सोहि दिस छोरि सुरिजात सब्बहु सहैं ॥
तुम१ रु हमर बीच हे रब[6]१ कुराँ[7]२ पंज[8]५ तन३,
पुस्तदर[9]पुस्त लिखिदेहु यह नेकपन ॥७३॥
द्वारपथ पिहित[10] नृप कहि तब ते दये,
सस्त्र१ पट२ प्रान३ सह सर्व गेहन गये ॥
जोहु सबिसेस प्रभुराम[11]२०१४ सुनिलेहु जिम,
अप्पकवि[12] सभ्य[13] रविमल्ल[14]१७१४ छवि काव्य इम ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

अद्ध[15]१ अटक इम अरिनको, पुरबाहिर तिम पेलि ॥
द्रंग प्रबिसि दल[16]१ दलै दल्यो, खग्ग दुरोदर[17] खेलि ॥ ७५ ॥
प्रातहि जित्यो रनप्रथम१, कति भजाइ१ कति कहि२ ॥
पुनि पायो संध्या समय, दूजो२जय अरि दट्टि[18] ॥ ७६ ॥
जीवरखा प्रबिसंत[19] जवहि, भीम[20] मचत रन भीर ॥
तकीमुहुम्मद आदि१तिम, पकर्‌यो खुरम२ प्रबीर ॥ ७७ ॥
दुव१मिच्छ रु मरहट्ठ दुव२, खंडखंड[21] करि खेत ॥
जवन पंच५कट्ठेजियत, इज्जत१काल२उपेत ॥ ७८ ॥

---

१ नियम २ अब ३ युद्ध में ॥ ७२ ॥ ४ पीले रंग की ५ ध्वजा "बुन्दीवालों की ध्वजा पीले रंग की है ६ यह यावनी भाषा का ईश्वर वाची शब्द है" ७ कुरान ८ पञ्जा (हाथ से वचन देना) ९ पीढी दर पीढी के लिये ॥ ७३ ॥ १०छाने ११ हे स्वामि रामसिंह १२ आपके कवि १३ सभासद १४ सूर्यमल्ल का काव्य सुनो ॥ ७४ ॥ १५ आंधी १६ सेना से १७ खड्गों का जूवा (हारजीत) ॥७५॥ १८ दबाकर ॥ ७६ ॥ १९ प्रवेश करते हीं २० भयंकर ॥ ७७ ॥ २१ टुकड़े टुकड़े ॥ ७८ ॥

आदितो नवोत्तरद्विशततमः ॥ २०९ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कूरम इम बाहुरि कह्यो, जतन अमोघ[1] जनेस[2] ॥
दिय तिनलखि जु करार दैल[3], अच्छैं रक्खहु एस ॥ १ ॥
जीवरखाके जित्तहि[4], रतन१९२१९ चिंति दुख रंच ॥
पहिले१खेत सम्हारि पर, पठये भट सतपंच ५०० ॥ २॥

॥ मदनावतारः ॥

ऑरर खुलवाइ[5] खिनपाइ[6] तिन जाइ उत,
दीपिका[7] संग सह रंग[8] वह हेरि हुन[9] ॥
छित्वर१रु मान२मुख तान४९ मित मानछैत[10]१ ॥
गंग१सुरतान२मुख द्वै रु सत२०२मानगत२ ॥ ३ ॥
कुणप[11] रखवार तँहँ जामिकन[12] सज्जकरि,
ध्यान[13]१ छैत[14]२वान सब उक्त नरजानि[15] धरि ॥
सूर अरि[16] घायलहु रच्छकन सौंपिसब,
अप्पनैं लै रु इम पत्त[17] पुर तेहु अब ॥ ४ ॥
वैद्य मत उचित उपकार[18] सबको वन्यौं,
भूरि[19] पुर घायलन सोहि साधन भन्यौं ॥
तिमहि बिसवासि खुरम१हुहुन्मदतकी२,
होन तिन्ह स्वस्थपन[20] हानि नैंकहु नकी ॥ ५ ॥
द्वारकादास१कँहँ द्रंग[21] करउर२दयो,

दि से दो सौ २०९ नव मयूख हुए ॥

१ खाली नहीं जावे ऐसा २ हे राजा ३ पत्र ॥ १ ॥ ४ विजय करते ही ॥ २ ॥
५ किवाड़ ६ समय पाकर ७ चिरागों के साथ ८ युद्ध भूमि को ६ आदि १० खेत सहित ॥३॥ ११मुरदों के रखवाले १२पहरायतों को १३ चेतवाले १४घायलों को १५ पालखियों में धर कर १६ शत्रु के घायलों को भी १७ पुर में गया ॥४॥
१८ इलाज १९ बहुत २० नैरोग्य होने में ॥ ५ ॥ २१ नगर

पुत्र हरिसिंह१हित कापरनि२ अप्पयो ॥
मन्त्रि सुत माधव१हिं द्रंग कोटा२सु दिय,
केसव१हिं हाँडु खटू६ग्राम२ बक्सीस किय ॥ ६ ॥
भूखन१रु सखर२गज३ग्राम४हय५ रीझ भरि,
कृत्य निजनिज उचित अप्पि सब तुष्टकरि ॥
होत इम बित्ति जुग२जाम३ निस प्रातहुव,
खेजि जन दे६रहि सुधवाइ पुनि रंगभुव ॥ ७ ॥
भक्त गदिकाधर जु नैर प्रविसत भनी ॥
वेरिगन जीति सुहिरीति निहचैवनी ॥
गायकं सु भक्त गिनि लुछि सनमांनि वहु ॥
दास जगदीसको पास रक्ख्यो सु पहु ॥ ८ ॥
देसँ निज द्रंग ताकों बरोदा१ दयो,
लक्ख१०००००मुद्रा बितरि स्वीय ततिमैं लयो ॥
सोहु सकुटुंब बुंदीहि तब संक्रम्यों,
जास इम वास तबतें बरोदा१ जम्यों ॥ ९ ॥
सुनि सु सासन सेता११९४१ कुमर अभिमतें कस्यो ॥
द्रंग बुन्दीहु तिन लुछि वह आदस्यो ॥
पाइ जय रत्न१९२१ इत लै सु बुरहानपुर ॥
पकरि जवनेस सुत किंत्ति बाढी प्रचुर ॥ १० ॥
किन्न उल्लाघ वह अरर भंजक करी,
अंग गत भल्ल भयव्याधि तस उद्धरी ॥
तिमहि किय स्वस्थ खुरम१ रु मुहुम्मदतकी२, ॥

---

१ सन्मान करके ॥ ६ ॥ अपने अपने २ कार्य के उचित दो ३ प्रहर ४ युद्ध भू-
मि को ॥ ७ ॥ ५ श्रीकृष्ण के भक्त ने नगर में प्रवेश करते समय कही थी ६
उस गानेवाले को ॥ ८ ॥ ७ अपने देश में लाख रुपये ८ देकर अपनीह पंक्ति
में लिया १० चला ॥ ९ ॥ ११ शत्रुसाल १२ वांछित १३ आदर किया १४ व-
हुत ॥ १० ॥ १५ नैरोग्य किया १६ किंवाड़ तोड़नेवाले १७हाथी को

नाम्म[1] काराहिधरि कोहु बाधा[2] नकी ॥ ११ ॥
रच्छकन मुख्य तँहँ कुमर हरि१९३।३ रक्खयो,
दुक्ख न लहैं दुवरहि अधिप इम अक्खयो ॥
एहु हुव स्वस्थ तब भिन्न रक्खे उभयर,
वीर हरि१ इत रु उत थप्पि रच्छक विजयर२ ॥ १२ ॥
पत्रदिय साह इँहिं राह रननाह[3]प्रति,
चाह जयलाह सुनि चाह मिलिबेहि अति ॥
आहु आहूत[4] करि तंत्र निर्णय उतैं,
त्यौं[5] बँ भेजहु मुम्मदतकी१सह सुतैं[6]र ॥ १३ ॥
यह छंद१रु संग तिन्ह लैन सध्यद उभयर२ ॥
मुक्कलिय सुद्धि सब सुद्धि हित सुद्धिमय,
आइ तिन अप्पि फरमान यह उच्चरिय ॥
कीलितन देहु जे रुद्ध कारा[10] करिय ॥ १४ ॥
रैन१९२।१सुनि बैन सुख ऐन[11] तिन्ह रक्खये,
तब मुहुम्मद१ तर्का[12]पे निगड नक्खये ॥
खुरुमर२ पेलैंव[13] लख्यो आइ नरनाह इत,
हेतु पुच्छत कह्यो बिजँन[14] कछु सुनन हित ॥ १५ ॥
सबन करि दूर तब खुरुम३९०।२पुच्छ्यो सु पहु,
लेतंदृग[15] लेत परिपाय बुल्ल्यो सु लँहु[16] ॥
हरि१९३।३कुमर दास जिम मोहि रक्खैं इहा,
कैदबिच कैद बाबा कहौं मैं काहा ॥ १६ ॥
व्यजनँ[17]१ढुरवात२ भरवात१ हुका२ बनैं,

---

१ नाम मात्र को कैद में रखकर २ पीड़ा नहीं की ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ रत्नसिंह को ४ बुलाने से ५ अब ६ पुत्र सहित ॥ १३ ॥ ७ पत्र ८ खबर लेने को भेजे. उन ९ कैदियों को १० जेलखाने में कैद किये हैं ॥ १४ ॥ सुख के ११ घर में १२ बे ड़ियां १३ दुर्बल १४ दुर्बल होने का कारण पूछने पर खुरम ने कहा कि एकान्त सुनो ॥ १५ ॥ १५ नेत्र मिलते ही १६ शीघ्र ॥ १६ ॥ १७ पङ्खा करवाता है.

हाँ करौं जो न नासा टिपोरे हनें ॥
पूपली सर्व्व खैंदो न अवसर परहु,
कोहु अटकैं न तिहि तर्व वद्ली करहु ॥ १७ ॥
मैं कह्यि तीन३ तव तीर भुज विद्ध मम,
सेस गद लेस कछु यों न छँम पुर्व्व सम ॥
तोहु हग निरिस करि मोहि तरजैं तथा,
सोहु नहि कोहु सुनि जोहु वरजैं जथा ॥१८॥
अरजइक१ एह दूजार२ वं सुनिये अहो ॥
मोहि भेजोहु मति कूटं व्याधिन कहो ॥
रावरे सरन मम प्रान वावा रह्यो ॥
सोहि उत जात वाचिहैं न परिहै सह्यो ॥१९॥
सदयं सुनि भूप दिय सीसं सय१ सहसरैंन२ ॥
रजतमय स्वेल्प भर रक्खि वैरी चरन ॥
वंधि उपनाह भुज१ पाय२ वपु३ घाय विधि ॥
व्याज ज्वर१ वोधि नृप अप्पि तिहिं मान निधि ॥२०॥
रेचनरहु दे रु असमर्थ तिम रक्खयो ॥
अप्प सुत माधव१९३।२हिं रहन तँहँ अक्खयो ॥
पास तस और भट वृन्द थप्पे प्रंथित ॥
सूचि सुत१सुभट२सब करहु याको कथित ॥ २१ ॥
कुमर हरिसिंह१९२।३खिजि सत्थजुत दूरकिय ॥
कानिसैंन सप्पदरन खुल्लि हित पूर किय ॥

१ हां नहीं करूं तो २ नासिका पर ३ टांटा ४ गरम उसको कोई नहीं ५ रोकता है ॥ १७ ॥ ६ रोग ७ समर्थ ८ पहिले के समान ॥ १८ ॥ ९ अब १० झूठा रोगी बताओ ॥ १९ ॥ ११ दया सहित राजा ने मस्तक पर १२ हाथ दिया १३ शरण के साथ १४ चांदी की १५ थोड़े भारवाली पट्टी १६ पट्टी (घाव का उपचार) ज्वर का १७ मिष १८ समझाकर राजा ने उसको मान रूपी धन दिया १९ जुलाब देकर २० प्रसिद्ध २१ कहना ॥ २१ ॥ २२ मदद से

जंपि[1] अबही सुहुम्मदतकी१ जाइहै,
खुरम्म२ [2]गदखिन्न [3]उल्लाघ हुंत आइहै ॥ २२ ॥
सुनि सु जवनन कहिय हमहु इक्खैं सही ॥
मन्नि गद मूढ करि लेहिं तुमरी कही ॥
जोहु दिखवाइ रंखवाइ तिन्ह [4]भाई जिम ॥
तीन[5] आहै मान महमान दुव२ रक्खि तिम ॥२३॥
[6]तूर्ण लै आहु कहि साह नहि हद तकी ॥
तबहि तिन संग पठयो सुहुम्मदतकी ॥
कहि वेरी [7]तदनुँ खुरम३.९।२ निर्बंधकिय ॥
कुमर माधव१९३।२ तिम सु विगत दुख गंध किय ॥ २४ ॥
तात [8]सासन सनहु अधिक आदर तनैं ॥
बैठिबे तास अब खासगह्ली१ बनैं ॥
सयन [9]पल्ल्यंक२ [10]छुरकर्म३ भूखन४ वसन ॥
समय अनुसार [11]ह्व सैद्य [12]अभिमत असन६ ॥२५॥
हे[13]तिबिनु ओर सब इष्ट [14]संपन्न ठहे ॥
विविध [15]खिलिवत्तें [16]छमँ भूप भय छन्न ठहे ॥
मोहि[17] इम साहसुत चित्त माधव१९३।२ कुमर ॥
स्वामि पन सद्धि तस काम हुव अग्रसर ॥२६॥
बढन कोटा विभव बीज तबको [18]वयो ॥
[19]अक्खिहैं काल [20]आगामि सुहु उग्गयो ॥

---

१ कहा २ रोग से दुर्बल है सो ३ आराम होने पर शीघ्र आवेगा ॥ २२ ॥ ४ भाई के समान रखकर; अथवा जिस प्रकार उनको रुचा तिस प्रकार रख कर ५ दिन ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ जिस पीछे ॥ २४ ॥ पिता की ८ आज्ञा से भी ९ पर्यङ्क (शय्या) १० हजामत बनवाना ११ तुरत का पका हुआ १२ इच्छानुसार भोजन ॥ २५ ॥ १३ शस्त्र बिना १४ मास १५ हसी खेल १६ समर्थ १७ मोहित करके ॥ २६ ॥ १८ कोटा के बढने का बीज उस समय बोया गया जिसका ऊगना २० आगे के समय में १९ कहेगें

कैद पुरलोक जानें खुरुम३।१।२ के करयो ॥
पै न सुकर१ सुकृत२ को बोध जान्यौं परयो ॥२७॥
साह उत कुप्पि भंज्यो खुरम३।१।२ सय्यदन ॥
कहियतिन है सु गंदकस्त जैसें कदन ॥
पुनिहु फुरमान बुरहानपुर दै र पहु,
बुल्लयो खुरम३।१।२सुत द्रुत उपालंभि बहु ॥ २८ ॥
बंदमें जो न परिजाइ ऐसो बनैं,
तबहि लै साहु न बिलंब सिरकरि तनैं ॥
बंचि दल साहमत तासमुतसों बहिय,
देखि तुहिं अत्थ कारांहु रहिबे न दिय ॥ २९ ॥
साहसुत तबहु करजोरि भंज्यो सरन,
चाहि इक प्रान नहिजान बंदें चरन ॥
उचित सब बुल्लि तब रैन१९२।१किय मंत्र इम,
कहहु कुलधर्म सह साध्यविधि है ब किम ॥ ३० ॥
विहित जो लै खुरम३।१।२संग जैबो बनैं,
है कुपित साह तो याहि निहचै हनैं१ ॥
सरनगत दै जु निज धर्मसौं अपसरैं२,
पुत्रहु न साहकै ओर जान्यौं परैं३ ॥ ३१ ॥
एह जो कॉल लहि पट्ट लहिहै१ अहो,
क्यों न तो स्वीयँ अहसान बहिहै२ कहो ॥
भजि जैहेहु ह्वैहै तंतो अरिकोउ,
सत्रु सब टारि मरहट्ट इहिं सीरको ॥ ३२ ॥

॥ २७ ॥ १ भोगी २ करने योग्य ३ उलहना देकर ॥ २८ ॥ ४ मार्ग में ५ यहां ६ कैद में भी ॥ २९ ॥ ७ प्राण की याचना करके नहीं जाने के लिये चरणों में ८ नमस्कार किया ॥ ३० ॥ अपने धर्म से ९ चलायमान होवें तो भी ॥ ३१ ॥ १० समय पाकर ११ अपना उपकार क्यों नहीं १२ धारण करेगा ॥ ३२ ॥

तोहु अैहैं तवहु बिक्खिलै हैं बली,
जानपावै न सब्ब सौंहि यह उज्जली ॥
भ्रात१ काका२ रु सुत३ गोत्र४ असगोत्र५ भट,
कहतहुव घोरगद[1] ब्याज[2] यह अप्रकट ॥ ३३ ॥
अप्पनैं साहभट जेहु विस्वस्त[3] आति,
ते न कहिहै रु लहिहै न लखि सेस तंति[4] ॥
भाखि अतथ्यहु[5] कुलधर्म१ धरिवो भन्यौं,
बहुरि तस पिछ्छिलगि अर्थ२ अैवो बन्यौं ॥ ३४ ॥
काम३ तसपिछ्छि बिधि एह सम्मत करहु,
देरकरि जाहु तव विघ्न डारैं डरहु ॥
आसु[6] कामांध[7] इम साह मरिवो इतहु,
करहु प्रस्थान पहु खुरम२९।२ न डिगैं कितहु ॥ ३५ ॥
रत्न१९२।१ सुहि मन्त्रि वर्ग अर्थ३ तँहँ रक्खयो,
बुल्लि चलि[8] वीर विस्वस्त इम अक्खयो[9] ॥
बुद्धिचंद्र१९३।३ रु पता१९१।१ एहु आये बली,
भूप प्रस्थान खिंन[10] रीति सूचैं भली ॥ ३६ ॥
सुनहु माधव१९३।२।१रु हरि२९३।३।२ पुत्र केसव१९३।६।३सहित
द्वारकादास ४ सेनेस अर्दनैं[11] अहित ॥
सूर सहगोत १ असगोत्र २ इत्यादिसब,
सो गुनौं मोहुंसन[12] आनि अवधान[13] अब ॥ ३७ ॥
आन जिनदेहु[14] बुरहानपुर सीम अरि,
सर्व सूबाहि रक्खहु सुखी मारि अरि ॥

---

१ भयंकर रोग २ इस छल को प्रसिद्ध नहीं करके ॥ ३३ ॥ ३ विश्वासवाले थांकी की ४ पंक्ति ५ झूठ बोलकर भी कुल धर्म धारण करना कहा ॥ ३४ ॥ ६ शीघ्र ७ काम में अन्धे हैं इसकारण ॥ ३५ ॥ ८ सेना ९ कहा राजा के चलने के १० समय ॥ ३६ ॥ शत्रुओं को ११ दण्ड देनेवाले १२ मुझ से १३ सावधानी ॥ ३७ ॥ १४ मत आने दो

जान दिनदेहु यह खुरुम[1] कहि मानजिम ॥
एहि हुवद बल सबदल सुसहोन इम ॥३८॥
सोहि सहुस्याह नरनाह तब संक्रमिय ॥
कज्ज यह लखि जवनेसजन भेट किय ॥
क्यों न आन्दों खुरुम[2] साह पुच्छिय कहो ॥
अरजकिय रैन[3][4] मरतो[5] सु मगमैं अहो ॥३९॥
छिमें यह अर्प्प[6] सुनि होहि यर्पुआरिहै ॥
वैद्य विविध्योषधि उपचार[7] सब वारि है ॥
खान आसफ कहिय आय जैहै खुरुम ॥
कहे रहिय हाल वह सीतहत जातिसुम[8] ॥ ४० ॥
जिति हुव जुद्ध हुव रत्न आगम जहाँ ॥
त्यों उपालम्भ[9] को क्योंहु संभव तहाँ ॥
तोहु अरि सुक्ख्य गहि गाढ जय तानिकैं ॥
आँन निज रक्खि अब हुवत पय आँनिकैं ॥ ४१ ॥
साह प्रभु चाह दिचि ताह नरनाहसों ॥
कहे कि सिर दाह जुत लाह खिन लाहसों ॥
कुरम रहोर मुख[10] भूप तंत्रै[11] न किते ॥
अँन नृप रैन के दैन चरनहु किते ॥ ४२ ॥
साह हसि मंदे[12] कहि वाह इह गाहै[13] सुनि ॥
प्रीति वह किन्न बखसीस तह रीति पुनि ॥
द्विरद तहँ कोहसुख जंग नामक दयो ॥
अरव दिलयार ईरान असि अप्पियो ॥ ४३ ॥
मंजु सिरपेच तिम पूंचि जुग वज्रमग[14] ॥

---

१ मनजाने दो ॥ ३८ ॥ २ चला ॥ ३९ ॥ ३ शीघ्र ४ आप ५ मरगा ६ रोग ७ इलाज. सरदी का माराहुआ ८ चमेली का पुष्प होवे जैसा ९ ओलम्भा देने का १० चाहिये ११ आधीन नहीं है १२ मुस्करा कर १३ इस जगह १४ हीरों की जड़ी हुई

आमलकनाम मुक्तान कुंडलं उभय ॥
बेरु लिय हार वलि ज्योति गुन फारैं जुरि ॥
बे रु लिय इक्क१ मनि मुठि खंजर८ बहुरि ॥ ४४ ॥
खास पोसाक९ फौलादमय चर्म१० खरं ॥
तार नक्कार तिम रूपदरसन११ रंवरं ॥
परगनाँ सत्त७ दिय टुंक१टोडा२प्रमुख ॥
रामपुर३ मालपुर४ च्यारि४ दिस वाम१ रुख ॥४५॥
चेचत५।१ रु जीरपुर६।२ खैराबाद७।३ चहि ॥
दीन ए तीन३ वंसुपीन दक्खिन२ दिसहि ॥
अप्प कर थप्पि नृप अंस इम उच्चरिय ॥
काहुनैं रैन १९२।१ तव ऐनैं जय नाँकरिय ॥ ४६ ॥
सुर्ज्जन१९०।१हु पुब्बं गुडवान१ जित्यो समर ॥
गंजि सूरति१ लयो भोज१९१।२ अहम्मदनगर ॥
तोहु नन तेहु आरूढ हुव तो तुँला ॥
सत्रुगहि जित्ति लिय रारि जुगर संकुलां ॥४७॥
साह सालकैं सचिव त्योंहि जस सँग्रह्यो ॥
बिरुद निज अज्ज तुंहीस निर्वाहियो ॥
भोज१९१।२ सुर्ज्जन१९०।१ सनैंहु कित्ति पाई भली ॥
बीर को साहके काम ऐसो वली ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

---

१ मोतियों के २ कर्णभूषण ३ शरीर पर पहिनने गुणों का ४ संमूह. ये ऊपर कहे हुए और एक ५ मणियों की जड़ी हुई मूठवाला खंजर ये दोनों लिये ॥ ४० ॥ ६ ढाल ७ उत्तम ८ चांदी का नगारा जो रूप के ९ देखने में १० अत्युत्तम ११ आदि १२ बुन्दी से बाईं ओर ॥ ४१ ॥ १३ धन से पुष्ट. अपने हाथ से राजा का १४ कन्धा थापकर कहा १५ तेरा घर ४२ ॥ १६ पहिले १७ तेरे बराबर वे भी नहीं हुए १८ सङ्कुलित (अवकाश रहित युद्ध करके) ॥ ४३ ॥ १९ साला अर्थात् नूरजहां का भाई सचिव था उसने भी यश किया २० ग्रहण किया २१ निबाहा २२ से भी २३ कीर्ति ॥ ४४ ॥

सिक्ख नृपहिँ इमदिय सिविर[1], साह विरचि वखसीस ॥
सब सभाहु सूचिय सुजस, अहो[2] पराक्रम ईस ॥ ४९ ॥
सिवप्रसाद कुंथी[3] कियउ, भूप जवनपति[4] भेट ॥
सम्मुह नन रन रहिसकैं[5], फोज अरिन जिहिं फेट ॥५०॥
संभर इम आयो सिविर, संसद[6] पाइ सराह ॥
जय उद्धरि[7] लायो सु जिम, वसुमति[8] आदिवराह[9] ॥ ५१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिंधु[10] सरितपरैं[11] पुहवि हुतो इत खानमहावत ॥
रजपूतन रिष्फवार कलह[12] जयकार कहावत ॥
तासौं इकगढ तत्थ जेर न भयो बहु जुज्झत ॥
कलावीस[13]१ कहुँ कथित सु पै अपरैं[14]२ हि कहुँ सुज्झत ॥
तहँ गोपीनाथ१९३।१ केसव१९३।६ तनय दुवरहि स्याम१९४।८ १९४।१ बुल्ले विदित ॥
पच्छे न जाइ जे रत्न१९२।१ पहु सहतौं[15] सद्धु बुल्लि इत ॥५२॥
सुनत महावत सोहि दयो अरजीदल[16] दिल्लिय ॥
इत अफगानन असह प्रचुर[17] जितातित बल[18] पिल्लिय[19] ॥
दुगम लैन यह दुर्ग प्रथित[20] बुंदीस पठावहु ॥
हम जुंगर[21] जोर हजूर ओर अवनिहु[22] अपनावहु ॥
आसफ वजीर अरजी सु अरैं[23] पहुँचि निवेदिय साहप्रति ॥
अरु कहिय रत्न१९२।१ भेजहु उहाँ गढ जय पहहि अमोघगति ५३

॥ गीतिः ॥

---

१ डेरों में २ आश्चर्य युक्त ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ बादशाह के ॥ ५० ॥ ५ पहुवाग ६ सभा में ७ निकालकर ८ पृथ्वी को ९ आदि वराह अवतार लाये थे इसप्रकार ॥ ५१ ॥ १० सिन्धुनदी की ११ पार की भूमि में १२ युद्ध में १३ कहीं उसका नाम कलवीस कहते हैं १४ कहीं दूसरा ही नाम दीखता है १५ साथ ॥ ५२ ॥ १६ पत्र १७ बहुत १८ सेना १९ भेजी २० प्रसिद्ध २१ दोनों के बल से २२ भूमि २३ शीघ्र ॥ ५३ ॥

जंपिय साह नृपहिं जिम, सिंधुधुनी[1] पार जाइ संभर वै ॥
तुम१महावत२मिलि तिम, इक१दुर्ग्गम दुर्ग्ग जित्ति आहु इहाँ।५४।
भूप[2] कहिय बसु[3] व्ययभो१, अब्दनमैं मैं प्रवासैं रहि आयो२ ॥
जिम रावरो विजय भो३, द्रोही पकरे४ न सीम उतदव्बे५ ।५५।
तदपि[6] पठावहु जितितित जैहौं रु निदेसबस[7] परिहु जैहौं ॥
इक१ पैं[8] सिंधु[9] उतरि इत, जैहो हमरै सु जियत मरि जैहो ५६
सत्त७ किय कोल सुर्ज्जन१९०१२, अकबर३७१२ तिनमैं यहैहु लिखि अप्पी ॥
जंपैं जु कोहु सुजंन, सोहि न प्रभुके विधेयं[10] साहससो ॥ ५७ ॥
यहहि वजीर१हिं अक्खी, पटु[11] आसफखान मन्निलिन्नी पै ॥
समुझाइ लेख सैक्खी[12], कही दुहु२न तोहु साह जाहु कही ।५८।
तव निजधर्महि तक्किय[13], न जावन१ रु मंडि रन२ नृपतो ॥
मत्युत[14] यह फल पक्किय, सदाहि तन१मन२धन३सन सेवनको ५९
बुल्लि सचिव केसव बलि, जो मथुरादास वनिक तनुजन्मा[15] ॥
कहिय रचहिं बुंदी कलि[16], सजि तू संभार[17] जाइ पुर सवही ।६०।
सुतसुत[18] बीर सता१९४१२कों, स्वसुरालय[19] कहुँ पठाइ कछु मिससौं ॥
तक्कन[20] देहु न ताकौं, मेरो सकुटुंब[21] भावि[22] रन मरिवो ॥ ६१ ॥
सताकौं१नताकौं२अन्त्यानुप्रासः॥ १ ॥
बलि सुज्जपोलि[23] बाहिर, वस्यो नगर तास वैरन[24] जु वनायो ॥
जामैं कछु खिल[25] जाहिर, पूरन वह करहु वेग सह परिखा[26] ।६२।

---

१ अटक नदी के पार २ हे चहुवाण ॥ ५४ ॥ ३ धन खरच हुआ ४ वर्षों में ५ परदेश ॥ ५५ ॥ ६ तो भी ७ आज्ञा के आधीन ८ परन्तु ९ अटक नदी उतर कर जाना ॥ ५६ ॥ १० कर्तव्य अथवा उचित ॥ ५७ ॥ ११ चतुर १२ साक्षी ॥ ५८ ॥ १३देखा १४उलटा ॥ ५९ ॥ १५पुत्र १६ युद्ध १७ सामग्री ॥ ६० ॥ १८पुत्र के पुत्र वीर शत्रुशाल को १९ सासरे २० देखने मत दो २१ कुटुम्ब सहित २२ आगे होनेवाले युद्ध में ॥ ६१ ॥ २३ सूरजपोळ २४ कोट २५ बाकी २६ खाईसहित ॥ ६२ ॥

कथि वत्त विदित न करहु, बिलंबि कछुकाल आत मैं बुंदी ॥
तब केसव चतुरतरहु, कज्जै कथित देस आइ सब किन्नौं ।६३।
इत भूप महावतको, आह्वान विचारि पत्र पठयो यौं ॥
मित्र तुमहु हम मतको, निश्चय जानन बुलात सु न नीको ।६४।
बर मरन१ आइबे२ सौं, सोहै तिहिं सुनि प्रसन्नहोहु सखे ॥
बहुरि पछिताइबेसौं, पलपल मति छिज्जिछिज्जि दुख पैहो ।६५।
पहुं पुनि स्यास १९४।८।१९४।१ उभय २ प्रति, कुपुत्रकहि पत्र
कोप लिपि पठयो ॥
मृत तुम जियनहु दुर्मति, लंघि अटक त्यौंहि मोहि करन लगे ।६६।
अब बुंदीहु न ऐहो, कुटुंब१संबंधि२जाति३दूरकरे ॥
ब्रात्यहि आयु बितैहो, गहिले कुलधर्म पुच्छि क्यौंनगये ॥ ६७ ॥
तबहैंरही पछिताये, नियमहु सुमिरयो सु बंचि दलैं नृपको ॥
ग्रंथि किं बनिक ठगाये, कहतभये हैंद नबाबप्रति कुलकी ।६८।
सुमिरि महावत सोही, दिल्ली बिन्नत्तिपत्र दिय दूजो२ ॥
जबहो दुर्गम जोही, सोगड अब सुगम भूपहिं न भेजो ॥ ६९ ॥
तब सौहस साह तज्यो, कछुदिन दै सिक्ख गेहको नृपकों ॥
सुनि अरिगन बहुरि लजो, पठयो रैन१९२।१बुरहानपुर पच्छो ।७०।
आतछिनैं साह अक्खिय, पहुं जातहि हनहु अब खुरम३९।२पापी
पुनिहु जथा पैरपक्खिय, न करैं हल्ला रु भीतपन निबहैं ॥ ७१ ॥

---

१ युद्ध की वार्ता प्रसिद्ध मत करना. २ कुछ विलम्ब करके ३ बहुत चतुर ४ कहेहुए कार्य ॥६३॥ ५ महावतखां को ६ बुलाना ७ हमारे मत का अर्थात् एक सलाहवाले ॥ ६४ ॥ ८ हे मित्र ॥ ६५ ॥ ९ राजा १० अटक नदी को लांघक-र मुझ को भी तुम्हारे समान करनेलगे ॥ ६६ ॥ ११ संस्कारहीन होकर १२ हे पागल ॥ ६७ ॥ १३ अटक नदी उतरने का सुर्जन का किया हुआ नियम १४ स्मरण किया १५ पत्र १६ मानों गांठ का ठगाया हुआ बनिया होवे तैसे लज्जित होगये १७ मर्यादा ॥६८॥ १८ अर्जी ॥ ६९ ॥ १९ हठ ॥ ७० ॥ २० आते समय २१ हे राजा २२ शत्रु २३ कायरपन ॥ ७१ ॥

बिजन[1] बजीरहु बुल्ल्यो, इक१सुत[2] यह कढ़िदेहु तुम यातैं ॥
भरि कोप साह भुल्ल्यो, भगिनी[3] भाखैं सुही हुकम सहैं ॥ ७२ ॥
यह सुनि बुंदी आयो, संमुचित[4] सद्धि रु प्रसू[5] पयन प्रनम्यो ॥
पुर बंरन[6] अखिल१पायो, तारागढ सर्व संचय२तथाही ॥ ७३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे बन्दिखुरमदत्तदुःखकुमारहरिसिंहनिवारकरत्नसिंहकुमारमाधवसिंहरक्षककरणं १, गदव्याजस्वशरणारक्षितयवनेन्द्रयाचितखुरमाप्रदानात्रत्नसिंहतदसुरक्षणं २, कुमारमाधवसिंहकृतबन्दिखुरमसुखवितरणंभाविकोटावृद्धिबीजवपनप्रख्यापन ३, यवनेन्द्रपुनःपुनर्याचितरुङ्मिषाप्रदत्तखुरमरक्षार्थबुरहानपुरस्थापितनेमसैन्यरत्नसिंहदिल्लीगमन ४, बुरहानपुरविजयिरत्नसिंहयवनेन्द्रपारितोषिकपट १ पट्ट २ समासादन ५, ज्ञातकरतोयापरप्रान्तविजयार्थाज्ञाऽस्वीकाराऽप्रसन्नत्वविसृष्टतदुल्लङ्घनधर्महानरत्नसिंहसमरांगणानिधननिश्चयन ६, सूचितकरतोयोल्लङ्घनधर्महानिरत्नसिंहस्वसुहृन्महा

---

१ एकान्त में २ बादशाह के यह एक ही पुत्र इस है कारण ३ मेरी बहिन (नूरजहां। ॥ ७२ ॥ ४ उचित ५ माता के चरणों में नमस्कार किया ६ शहरपनाह सम्पूर्ण पाया ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में कैद में खुरम को दुःख देने के कारण कुमर हरिसिंह को दूर करके रत्नसिंह का कुमर माधवसिंह को रक्षक नियत करना १ रोग के मिष से अपनी शरण में रक्खेहुए खुरम को बादशाह के मांगने पर भी नहीं देकर रत्नसिंह का खुरम के प्राण बचाना २ कुमर माधवसिंह को कैदी खुरम को सुख देने के कारण आगे आनेवाले समय में कोटा की वृद्धि का बीज बोने की सूचना करना ३ खुरम को बादशाह के बारम्बार मांगने पर भी रोग के मिष से नहीं देकर आधी सेना उसके यत्न के लिये बुरहानपुर में रखकर रत्नसिंह का दिल्ली जाना ४ बुरहानपुर की जीत के कारण रत्नसिंह का बादशाह से खिलत और परगने पाना ५ अटक नदी के पार के प्रान्त विजय करने को जाने की आज्ञा नहीं मानने के कारण बादशाह की अप्रसन्नता देखकर और अटक नदी के उल्लंघन करने में धर्म की हानि जानकर रत्नसिंह का युद्ध करके

वतखानान्तिकपत्रप्रेषणानन्तरदर्शितदुर्जयस्थलविजयमहावतखान
यवनेन्द्रान्तिकरत्नसिंहाप्रेषणाविजयप्रार्थनापत्रनिवेदन७,महावतखा
नप्रार्थनापत्रपठनत्यक्तकरतोयापरप्रान्तरत्नसिंहप्रस्थापनहठयवनेन्द्र
जहांगीरखुरंमघातशिक्षाप्रदानपुरःसरबुरहानपुरप्रतिप्रस्थापन ८, बु
रहानपुरगमनान्तरसमयरत्नसिंहबुन्द्यागमनं सप्तविंशो मयूखः॥२७॥

आदितो दशोत्तरद्विशततमः ॥२१०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

आयत जो प्रभु गज्ज[2]०।४यह, पुरबुंदिय प्राकार[3] ॥
तिम सु बनायो रत्न१९।१तब, दृढ अट्टक[4] चउ४ द्वार ॥ १ ॥
खिल्ल[5] दुव२दिस रहि खातिका[6], सो दुव२दिस हुव सिंद्ध[7] ॥
अप्पं रचित प्रासाद इत, इक्खे वैभव इंद्ध[8] ॥ २ ॥
दक्खिनदिस बुंदी बढी[9], अद्रि त्रि३दिस ढिग आत ॥
कहत ताहि जुंन्नी[10] किम सु, जान्यौं हेतु[11] न जात ॥ ३ ॥
रंब्बनपोलि[12]१ भैरववलंज[13]२, अंतर जुन्नी आहि[14] ॥
सोहु बढाई नृप समर१८।१७, समय उक्त नयसाहि[15] ॥ ४ ॥
तासहु मध्यप्रदेस तिम, गिनियत मैनन[16] ग्राम ॥

मारे जाने का मत दृढ करना ६ रत्नसिंह का अपने मित्र महावतखां को अटक नदी उल्लंघन करने से धर्म हानि होने का पत्र भेजने पर महावतखां का दुर्जय स्थल को जय करलेना दिखाकर रत्नसिंह को नहीं भेजने के विषय में बादशाह की सेवा में निवेदन पत्र भेजना ७ महावतखां की अरजी पढने से रत्नसिंह को अटक पार भेजने का हठ छोडकर बादशाह जहांगीर का खुरम को मारडालने की शिक्षा देने के साथ पीछा बुरहानपुर भेजना ८ बुरहानपुर जाते समय रत्नसिंह का बुन्दी आने का सत्ताईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ २१० दश मयूख हुए ॥

१ बडा २ हे प्रभु गजसिंह ३ कोट ४ बुरजें ॥ १ ॥ ५ बाकी ६ खाई ७ तैयार ८ आपका रचाहुआ महल ९ बडा ॥ २ ॥ १० जूनी बुन्दी कहते हैं ११ इसका कारण नहीं जाना ॥ ३ ॥ १२ सूरजपोल १३ भैरूं दरवाजा के बीच में जूनी बुन्दी १४ है १५ नीति ग्रहण करके ॥ ४ ॥ १६ मैनों का प्राचीन ग्राम ॥

नृप सु पुरानी१ खिल[3] नई२, रची स्वकुल अभिराम ॥ ५ ॥
आयो पहिलैं१ याहितैं, मुरूपथान यह१ मानि ॥
पट्टनि१ करउर२ आदिपुर, कियअर्धान इहिँ[4] कानि ॥ ६ ॥
बुंदी बेष्टित[5] अब बरनं[6], अधिप रैन१९२।१ कृत एह ॥
बहुरि बढे बाहिर बसे, उपपुर भावि[7] अनेह ॥ ७ ॥
निजपुर बुंदी रैन१९२।१ नृप, इम दिल्ली सन आइ ॥
सज्ज लखे उपहार[9] सब, जिततित विहित[10] जमाइ ॥ ८ ॥
स्वकृत[11] दुर्ग[12] प्राकार[13] सिर१, तारागढ सिर२ तोप ॥
सामग्री कोसन[14] सकल, इक्खी धारत ओप[15] ॥ ९ ॥
केसव सचिव सराहकरि, अरु तस थप्पलि अंस[16] ॥
सिक्ख प्रमित[17] निबस्यो[18] सदन, इम हड्ड६१न अवतंस[19] ॥ १० ॥
सता१९४।१प्रमुख[20] सुतके सुतहुं[21], न कढे सवहि निहारि ॥
उपालंभि[22] कछु लाइ उर, रक्खे गिनि नन रारि ॥ ११ ॥
भो तंति[23] बाहिर अनुज भजि, हृदयनरायन१९२।२ हड्ड ॥
सिटयोरहत दुन्नी सु तो, अंखिं त्रपा[24] लहि अड्ड ॥ १२ ॥
तब बुल्ल्यो अति वीर तस, जेठो अंगज[25] जेत१९३।१ ॥
अनुज[26] थान वह आदरयो, वली अतुल बानैत[27] ॥ १३ ॥
पुरबुंदिय रक्खे प्रथम, वीर करन१९३।२बलवंत१९१।१ ॥
अब सु जैत१९३।१ तीजो३इहाँ, रक्खनँ[28] मुलक रहंत ॥ १४ ॥
रैन१९२। सुपहु निजराज्यको, भुज तीन३न धरिभार ॥

---

१ हे राजा वह पुरानी बुन्दी है२बाकी नई है ३ सुन्दर॥ ५ ॥ ४ इसकी शंका से ॥ ६ ॥ ५ घेरे हुए ६ कोट ७ आगे आनेवाले समय में ॥ ७ ॥ ८ से ९ सामग्री १० उचित ॥ ८ ॥ ११ अपने बनाए हुए १२ नगर के १३ कोट पर १४ खजाना में १५ शोभा ॥ ९ ॥ १६ कन्धा १७ सीख के माफिक १८ घर में निवास किया १९ मुकुट ॥ १० ॥ शत्रुशाल २० आदि २१ पोते के नहीं निकालने से २२ ओलम्भा देकर ॥ ११ ॥ २३ पंक्ति बाहिर २४ लज्जा ॥ १२ ॥ २५ पुत्र २६ छोटे भाई के स्थान में २७ युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाला ॥ १३ ॥ २८ देश की रचा करने को ॥ १४ ॥

※सासक रक्ख्यो सवनसिर, कुमर सता१.९४१.१ जयकार[2] । १५ ।
इंद्रसल्ल१.९४१.२ ताको अनुज, बुंदिय थप्पि बलेस[3] ॥
बैरिसल्ल१.९४१.३ हैगढ़ंग[4] बलि, पठ्यो ढवन प्रदेस ॥ १६ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

पलट्योन जो रनछोर१ गोर सु टुंक२नैर पठाइकैं ॥
महराज१चालुक्य लालपुर२ पठ्यो जथोचित पाइकैं ॥
टोडा१ पुरी अधिकार अप्पिय बनिक[5] टोडरमल्ल२ कौं ॥
दिय रामपुर१अधिकार तिम कछवाह दुर्जनसल्ल२कौं ।१७।
रबु१भृत्य चेचत[6]२रक्खि सेसन१मेस२भार समप्पिकैं ॥
थिर देस रक्खन वीर हे तिन्ह त्यों समस्तन थप्पिकैं ॥
बुरहानपुर इत मुकल्यो स्व निदेस पत्रहु वेगही ॥
निज दंडनायक[8] द्वारकादिकदास कूरमतैं कही ॥ १८ ॥
माधव१.९३.१.१ कुमार भतीज केसव१.९३.६.२ अन्यतर[9]१मिलवाइकैं ॥
प्रच्छन्न खुर्रम३.९.१हिं काढ़िदेहु निसीथ[10] ओसेर[11] पाइकैं ॥
जानैं न कोहु स्वकीय[12]जन१अरु द्रंगजन[13]२न सुनैं जथा ॥
रचि त्यों प्रबंध निकासि रक्खहु साह संतति[14] सर्वथा ॥ १९ ॥
लक्खैरि अप्पन रक्खि१ सुत हरिसिंह१.९३.३पे हितलाइकैं२॥
आसान बुंदियके बच्यो३ इम लेख लेहु लिखाइकैं ॥
बुरहानपुर यह पत्र बिक्खत[15] द्वारकादिकदास१ जो ॥
नृप पुत्र माधव१.९३.१.१तैं मिल्यो नृप इष्ट अक्खि निकास जो २०
मिलि निरसलाक[16] उभै२ कह्यो तिहिं साह सासन[17] मारिवो१ ॥

※ आज्ञा देनेवाला (हुकुमत करनेवाला) १शत्रुशाल २जय करनेवाला ॥१५॥ ३ सेनापति ४ नैणवानगर ॥ १६ ॥ ५ बनिया ॥ १७ ॥ ६ नाम विशेष ७सेनापति ८ द्वारकादास ॥ १८ ॥ ९ दोनों में निर्धारित सलाह मिलाकर १० आधी रात्री को ११ समय पाकर १२अपने सेवक भी नहीं जानसकें १३नगर के लोग १४ बादशाह की सन्तान को ॥१९॥ १५ देखते ही ॥ २० ॥१६एकान्त में मिलकर १७ बादशाह की आज्ञा इसको मारने की है

नृपकै अभीष्ट तऊ तुम्हैं कछुरीति गुप्त निकारिबो२॥
हमरो कह्यो सुभ मन्नि जो हरिसिंह१९३।३तैं रिस संहरौ१ ॥
आसान हड्ड६१नैं उब्बरयो कर अप्पं[2] लेख यहै करो२॥२१॥
लक्खैरि हड्ड६१नकी पुरी नहिं गौड़ मौसन सो लहैं३ ॥
रतनेस१९२।१ अब लिय देस इहिं लिपि[4] तहु दत्त[5] बनैं रहैं४॥
तब तुम निकास लहो१ तथा हमतैंहु तुष्ट[6] नरेसहै२॥
बलि पट्ट पाइ हमैं बढावहु तो कृपा सु विसेसव्है॥२२॥
अवँनीस[7]प्रति तब लेखसुहि करि अंत वत्त लिखी यहैं ॥
कछु भार नाँहि मदीय चित्तहु मंगिबो इक तोकहैं ॥
अति नम्र माधव१९३।२ मोहि मालिक सर्वथागिनि आदरयो॥
कारा[9]हुमैं मम चैन जिहिं मन१ बैन२ कायं[10]३ नतैंकरयो॥२३॥
मँहि[11] भाग याहि बिसेस दे सँब[12] मुख्यके सनमानिहो ॥
आसान एह द्वितीय२ बाबा ज्यान मोसिर आनिहो ॥
इम खुरुम३९।२ निज लिपि पत्र अप्पिय द्वारकादिकदासकौं॥
बिचदैं कुरां[13]१ ईंवर[14]२ सौंहँ[15] कैं बिरच्यो बिसेसबिसासकौं॥२४॥
कछु व्याधि[16]कै मिस मुख्य माधव१९३।२ आदि दूर सबै करे॥
समुझाइ रच्छक[17] अन्य संमुचित[18] धीमैं[19]नाइ तहाँ धरे ॥
जिनकौं बिसासि निसीथं[20] संम्मत[21] कुंम्म[22]१ माधव२ जाइकैं ॥
सो खुरुम २९।२ कढ्ढि दयो बिमग्ग[23] लिखो सबै सुमिराइकैं[24]२५
गिनि जन्म नव सुत साहको सु बहोरि बीजापुर गयो ॥
इत तास रच्छक बर्गकौं खिजि व्याज[25] बंधन अप्पयो ॥

१ मिटाओ २ आप ॥ २१ ॥ ३ मुझ से ४ लेख ५ दान ६ प्रसन्न ॥ २२ ॥ ७ राजा के प्रतिदमेरे९कैद में भी१०शरीर से नम्र होकर ॥२३॥११भूमि का भाग१२ सब में मुख्य करके सन्मान करोगे१३कुरान१४ईश्वर के१५सौगन ॥ २४ ॥ १६ रोग के मिष से १७ पहरायतों को १८ उचित १९समझाकर२०आधी रात्रि में २१ सलाह २२ कछवाहा द्वारकादास और कुमर माधवसिंह २३ विना मार्ग २४ स्मरण कराकर ॥ २५ ॥पहरायतों को क्रोध करके२५झूठी कैद में किये

मनसैं मनाइ*चमूप कूरम लोक†ख्यापन सोघही ॥
सबसांसना[1] किय कैदकी तिन त्यों प्रसन्न सु पैसही ॥ २६ ॥
अरजी लिखी नृपकों इतैं कढि छन्न गो सुत साहको ॥
लिपि सोहि[2] बिल्लिय भेजि जाहिर सोद[3] संहरि[4] लाहको ॥
तब दै सता१९४१भुजभार रच्छक राज्यके सनमानि त्यों ॥
जिन्हरक्खि ढुंढिय अप्प हंकिय गम्य[5] दक्खिन३।२जानि त्यों ॥२७॥
ततकाल[6] जातहि ख्यांतिमैं[7] दुव२कुम्भ१माधव२र्तजये[8] ॥
बसु[9] दंड दै१बसुधा[10] उतारि२ रु पास आगम[11] वर्जये३ ॥
बिसवासि अंतर१ह्वै२हि बाहिर२दिट्ठिकैदै[12] दयो बली ॥
भुव पुव्व जामिक[13] कैद है तिनकोहु ख्यात लई भली ॥ २८ ॥
नहि मंतु[14] केसव१९३१६पैं निहारि सु दंडनायक[15] निर्मयो ॥
भजिगो स्वअंगज[16] सो इतैं सुनि साह अमरख[17]मैं भयो ॥
बैलि[18] बेहि[19] सव्यद२कुल्ले अतथा१तथा२सु बिचारिबे ॥
पुनि भूप ते महमान रक्खिय मंतु[21] निच्चय पारिबे ॥ २९ ॥
बसुहीन[22] जामिक१कुम्भ२माधव३कैद[23] तोहु न बिस्वसे[24] ॥
बहु दै प्रजाहित छन्न लोभ रु हां उभै२चिर[25]लों बसे ॥
बहुकालमैं तिनको मिल्यो कछु भेद यों दुव२घातको ॥
पहु[26] तो प्रसन्न प्रजाकह्यो लरतोरह्यो पहु घातको ॥ ३० ॥
इहिं कुम्भ राति अरांति[27] पंचक५सुत्थ कढ़िदयो१ अहो ॥

---

* सेनापति † प्रसिद्ध १ आज्ञा ॥ २६ ॥ २ लिखावट ४ लाख का सोद ३ मिटाकर ५ जाने योग्य ॥ २७ ॥ ६ तुरन्त ७ प्रसिद्धि में (लोगों को दिखाने के लिये) ८ धमकाए ९ धन का १० भूमि ११ पास आना बन्ध किया १२ नजर कैद १३ पहरायत ॥ २८ ॥ १४ अपराध १५ सेनापति बनाया १६ अपना पुत्र भाग गया सो सुनकर १७ क्रोध में १८ फिर १९ वे दोनों सय्यद जो खुरम को लेने के लिये पहिले भेजे गये थे २० झूठ और सत्य विचारने के लिये २१ अपराध निश्चय करने को ॥ २९ ॥ २२ धनहीन २३ पहरायत २४ विश्वास नहीं किया २५ बहुत समय पर्यंत रहे २६ राजा तो ॥ ३० ॥ २७ कारकादास कछवाहे ने पांचों २७ शत्रुओं को

निकसाइ खुरम२९।२दयो तथा अब२पै इहाँ नृपतो न हो ॥
इक कुम्म१आक्खिय काहु काहु मिल्यो कुमार२हु उच्चरयो ॥
पर ३ है४हिवेर चमूपको पर काढ्ढिवो निहचैपरयो ॥ ३१ ॥
उनतैंहु अक्खिय साह आवत सुद्धिलै सब ओरतैं ॥
जो होइ कढ्ढनहार तो तिहिं बंधिआनहु जोरतैं ॥
सैपंच५००साँदि१रु अट्ठसै८००पादाति२दोउ२न संगहे ॥
गहि बास बाहिर१पुनि पदाति बिसे जथा क्रम दंगहे ॥ ३२ ॥
तिन्ह सज्जि सय्यद रत्ति कूरमपैं क्रमे सहसा तथा ॥
जिहिं क्यौंहुँ जानिलई सु सज्जहि स्वल्प सत्थ मिल्यो जथा ॥
तरवारि झारि भिरे अचानक लोक बिस्मयमैं तँच्यो ॥
महि रुंड१ मुंड२न पट्टि त्यौं अवमर्द इक्क१घरी मच्यो ॥३३॥
पहु सो इतैं सुनि द्वार रुंद्धकराइ निजभट पिल्लये ॥
हरिसिंह१९३।३ केसव१९३।६ संग द्वै सबठाम कूरम ठिल्लये ॥
पुरद्वारप्रति सत पंच५०० पंच५०० सिपाह सज्ज पठाइकैं ॥
अरु द्वार अंतर दुर्गके सु खरो रह्यो द्रुत आइकैं ॥ ३४ ॥
ऐबे लग्यो स्व कुमार माधव१९३।२ सो न आनदयो इतैं ॥
भंर कुम्म१ सय्यद२ यों भिरे तँहँ लुत्थ बत्थ जितैंतितैं ॥
पहुँचैं न जोलगि हरि१९३।३रुकेसव१९३।६ मिच्छतोलगि प्रानमैं ॥
कछवाहकों लगि लाह लोलिय संकरैं घमसानमैं ॥
जँहँ स्वल्प सत्थहु द्वारकादिकदास दुस्सह जुंज्झयो ॥
बिनुमत्थ झारत खग्ग लिखि गिरिजा१ गिरीस२हिं बुज्झयो॥

१इसी प्रकार२किसी किसी ने३परन्तु४सेनापति५शत्रुओं को निकालना ॥३१॥ ६ खबर ७ सवार ८ घुसे ९ नगर में ॥ ३२ ॥ १० रात्रि में ११ कछवाहा द्वारकादास पर चले १२ अचानक १३ किसी प्रकार १४ तपा १५ युद्ध ॥ ३३ ॥ १६ द्वार बन्ध कराकर १७ भेजे ॥ ३४ ॥ १८ भट (वीर) १९ बल में २० युद्ध में ॥ ३५ ॥ २१ द्वारकादास २२ लड़ा २३ विना मस्तक लड़ता देखकर २४ पार्वती ने शिव से पूछा

कछवाह वेसहि *चारु भट दुव२भेद †सिख१ ‡नरू२ कुली ॥
तहँ आदि१ §ईस कह्यो यहै जिहिँ रुंड कर ¶असि यों तुली॥३६॥
जवनीन हत्थ यनीन कंकन हीन कीन चमूपै ज्यों ॥
रिपु गत्त रत्त स्रवैं द्रवैं हुरियार होरिय रूपज्यों ॥
जस रक्खि बिहुसिर द्वारकादिकदास१ कछुखिन जुट्टयो ॥
तरवारि झारि घनैंन पारि सु रारि तिलतिल तुट्टयो ॥ ३७ ॥
ताको भतीजहु मान२ खंड बिहंड खेतपरयो तथा ॥
परि संग वीर छतीस३६ ओरहु उब्बरे जसकी प्रथा ॥
पहुँचे न हेरहि कुमार जोलग संगले भट पानके ॥
कछवाह तोलग हेरहि हे सहसत्थ गोचर कानके ॥ ३८ ॥
सुनि एह भूपहु वृद्ध वें भट रक्खि है सत२०० संगमैं ॥
वलि अप्प जीवरखा बिरुयो जरि द्वार वा छलजंगमैं ॥
सब सेस सूरहु मुक्कले हरि१ केसवा२दि सहायपैं ॥
घमसान घोर मच्यो लख्यो तिन घाय लग्गत घायपैं ॥३९॥
दलि कुम्म१ अंतरदुर्गदिस गहिलैन माधव२ वे मुरे ॥
इतनें वढे पहिले कढे भट पत्ति पहुँचत अंकुरे ॥
चढि अट्ट अंतरदुर्गके नरनाहँ वाह कहैं चहैं ॥
श्रुति अक्खि होत समीप सद्दन चंद्रहास बहैं सहैं ॥
कहि केहि नेजैंन वद्ध हाँ रनमाहताब उदेकरी ॥

कछवाहों में * सुन्दर दो भेद हैं एक † सेखावत ‡ दूसरा नरू का जिनमें § शिव ने कहा कि यह सेखावत है ¶ खड्ग ॥ ३६ ॥ १ सेनापति ने २ गात (शरीर) ३ रक्त ४ फाग ५ कुछ समय ॥ ३७ ॥ ६ प्रसिद्धि से ७ पराक्रम के ८ साथ सहित कर्ण गोचर हुआ अर्थात् उसका नाम कानों से जानने योग्य रहा और शरीर से मारागया ॥ ३८ ॥ ९ वृद्ध अवस्थावाले १० जीवरखा में घुसा ११ बाकी के १२ युद्ध ॥३९॥ १३ जीवरखा की ओर १४ माधवसिंह को पकड़ने के लिये १५ पैदल १६ खड़े हुए १७ बुरज १८ भीतर के गढ (जीवरखा) की १९ राजा २० कानों में २१ शब्द २२ खड्ग ॥ ४० ॥ २३ बांसों पर बांधकर

इम दुर्ग१पिक्खि प्रकास द्रंग२हु ही सु जितातित उग्घरी ॥
गढतैं नरेस निदेस[1] निक्खसि वीर जे पंहिलैं गये ॥
लघु[2] पहुँचि तिन अरिकुम्भ१काढि कुमार२घौं[3] सुरते लये ॥४१॥
मिलि हडु६१मिच्छ२न जुद्धमैं पुनि जुद्ध यों सहसौं[4] मच्यो ॥
बुरहानपुर तिहिं रत्ति[5] पुरजन[6] धामधाम[7] बिस्यो बच्यो ॥
चहुँ४ओर वेग वहावती दुहुँ२ओर तेग भलीचली ॥
बरबीर धीर सदाजई जिम छीर[8]१नीर२मिले वली ॥ ४२ ॥
बहि खग्ग टोप१तनुत्र[9]२बाहुल[10]३बहि झल्लरिलौं[11] वजैं ॥
सिदिजात लाघव[12] तंति संव्रन[13] पंति पैठन भौं[13] भजैं ॥
पय१पिंडिका[14]२नलकील[15]३सक्थि[16]४कटीर५तुंद[17]६कटे परैं ॥
उर७कंठ८हत्थ९कफोनि[18]१०भुज११तिम अंस[19]१२मस्तक१३उत्तरैं ४३
पीछे सहाय चल्यो सु सत्थ मिल्यो इते बिच पौनसौं[20] ॥
इम ए१जुर सब इक्कठै सन वेरलुरे तव मानसौं ॥
सामंत१८७कुलभव[21] केसव१८९।२।१६ हरिसिंह१९३।३।२ केसव
·१९३।६।३ संगही ॥
बलभद्र४चालुक वल्लनोत[22] इतेनकी बढिकैं वही ॥ ४४ ॥
कलि[23] संहरे सतपंच५०० अरि सततीन३०० भीतभये कढे ॥
चहि हूर[24] सूर उभैहि सग्गद खग्ग[25] धारनपैं चढे ॥
सतपंच५०० सादिन[26] संघ[27] बाहिर हो सु रत्ति रह्यो सज्यो ॥
सो प्रात स्वामिनकौं हनें[28] सुनि भौन[29] पद्धति[30] लै भज्यो ॥४५॥

---

१ राजा की आज्ञा से २ शीघ्र ३ कुमर माधवसिंह की ओर ॥४१॥ ४ अचानक ५ उस रात्रि में ६ पुर के लोक ७ घर घर में वास करके बचे ८ चीर (दुग्ध) ॥ ४२ ॥ ९ कवच १० दस्ताना ११ शीघ्र १२ सावन में १३ कान्ति धारण करती है १४ पींडी १५ नली की हड्डी १६ जंघा, कमर और १७ पेट १८ कुहनी १९ कन्धा ॥ ४३॥ २० पराक्रम से २१ कुलवाला २२ वालणोत ॥ ४४ ॥ २३ युद्ध में २४ यावनी भाषा का अप्सरा वाची शब्द है २५ खड्ग २६ सवारोंका २७ समूह २८ अपने स्वामियों को मारेहुए सुनकर २९ घर का ३० मार्ग लिया ॥ ४५ ॥

सततीन३०० रिपु निस इक[1] जाम रहंत[2] हहून संहरे ॥
प्रतिकूल विप्रहसूल त्यों सतदोइ२०० घायनसों परे ॥
इतके इते२००हि मरे प्रवीर इतै२००हि घायल उब्बरे ॥
खिलि खेत दुर्जय भूपके सुत१ बंधु२ बीर३ रहे खरे ॥ ४६ ॥
बहु दीपिका[3] महँ सोधि रंग[4] उठाइ घायल बाहुरे ॥
जिन्ह भूप लै गढमैं बहोरि कपाट तोरनके[5] जुरे ॥
पुनि प्रात[6] खिंन उतकेहु घायल इलठाम[7] पठाइकैं ॥
उपचार सासनतैं[8] करयो सबकें हकीमन आइकैं ॥ ४७ ॥
बलि तथ्य साह सिपाहके तिन्ह द्वार प्रातहि[9] बुल्लये ॥
मारखा सुनौं सब सोधं लख्यक क्यों मरे भ्रम भुल्लये ॥
आन्यौन ज्यौंफरमान१ त्यौं हलसौं न आसय उच्चरयो२
किम मोहिमाँहि विरोध नाहक[10] मारि कूर्म[11]कौं करयो ॥४८॥
मनते निजासय[12] मोहि तो तिन्ह संग ताकँहँ[13] भेजतो ॥
रनमैं मरे सठ रक्खि क्यों तनमैंहि आवनको मतो[14] ॥
पठये सुनैं हम सुद्धि[15]लैन सुतो लही सब पुच्छये ॥
अधिकार लै खिजे मैंहु यातहि दिहिकैद उमैर दये ॥४९॥
निहचैं बिनाँ न बिसेस है दंमनै[16] जथातथ जानिकैं ॥
आँकूत[17] स्वीय जनावते स हु मोहि नैंकहु आनिकैं ॥
उन्हसंग तो कछवाह१ माधव२ द्वैरहि मैं करतो अहो ॥
कछु होइ जो तुमसों कही तिम मोहि तो समहू कहो॥ ५० ॥
सबकोंहि मालिक सोंहहे[18] नहि कौंनि[19] रक्खहु न्यायमैं ॥
अपराध अप्पन उहै सु सूचहु काजसिद्धि उपायमैं ॥

---

१ एक प्रहर रात बाकी रहते २ बाकी ॥ ४६ ॥ ३ चिरागों के प्रकाश से ४ युद्ध भूमि को ५ बाहर के द्वार के ६ प्रभात समय ७ इलाज ८ आज्ञा से ॥ ४७ ॥ ९ फिर १० निरर्थक ११ कछवाहे द्वारकादास को ॥ ४८ ॥ १२ अपना आशय १३ उस द्वारकादास को १४ विचार १५ खबर ॥ ४९ ॥ १६ दगड १७ चेष्टा (इसारा) अथवा अभिप्राय ॥ ५० ॥ १८ सौगन १९ भय अथवा अदब

सुनि यों अचानक पैठि पैत्तन[1] कुम्भको उन संहरयो ॥
इतकोहु सत्थ सहायदै तिहिं यों मर्यों१ कछु उब्बरयो॥ ५१ ॥
पहिचानि सय्यद२ खेत खोजत सोकमैं सबही परे ॥
मन होत संसय[2] मोहि पै[3] न जनाइ यों सठ क्यों मरे ॥
अति अंधकार१ हु रैंत्ति[4] मैं बलि जुद्द२ यों[5] न लखेउ भेर२ ॥
समुझे न अप्पन साह सासन लाइ कुम्भ हन्यों सुभे[6] ॥५२॥
रुचि मोरि याहि सभैं सबै जन साहसौं विमँना[7]रहैं ॥
कहिहैं सु अग्रिम अंसु[8] पै इतको उदंत[9] इहाँ कहैं ॥
सुनि साहके सबही सिपाहन भूप आंगस[10] नाँ भन्यों ॥
तिम जित्ति जुग२ रन१ सत्रु पकरन२ आदि तस जसही तैन्यों[11]।५३।
कहि अप्पसौं न दई१ तथा हमसौं कही न२ यहै कही ॥
लगि गूढ साधन दंभ मूढन जोकरी गति सोलही ॥
प्रतिकूल केक बके प्रैमा[12] तिनको बिसौंसहु[13] त्यों तज्यो ॥
सब सेस सुक्कलि स्वस्वथान[14] विधान प्रेतनको[15] सज्यो ॥ ५४ ॥
कछवाह१ आदि जराइ२ सय्यद१ आदि मिच्छ गडाइकैं२ ॥
परिपंथि[16] घायल जे हुते घर ते दये पहुँचाइकैं ॥
सामंत१९७।१ नत्तियँ[17] केसव१.८९।२।१ रु बलभद्र२ मातुल[18] वंस जो
पँहु[19] रीझि दोउ२नको दये गज१ गाव२ ख्यात प्रसंस जो॥५५॥
दँल[20]१ साहपुत्र निकासिबे लिखि पुँब्ब[21] बुंदियतैं दयो ॥
स्व तनूजँ[22] माधव१९३।२ पास हो लखि देसकाल सु पै लयो॥
तिहिं भजि जावत साहको सुत दैगयो लिखि सो२ तथा ॥

---

१ पुर में ॥५१॥ २ सन्देह ३ परन्तु ४ रात्रि में ५ इसकारण ६ सन्देह में अथवा वह भय है ॥ ५२ ॥ ७ उदास ८ अगले मयूख में ९ वृत्तान्त १० अपराध ११ फैलाया ॥ ५३ ॥ १२ जिनको इस बात का यथार्थ ज्ञान था वे प्रतिकूल बोले उनका १३ विश्वास १४ अपने अपने घर १५ मृतक कार्य ॥ ५४ ॥ १६ शत्रुओं के १७ पोता १८ मामा का १९ राजा ने ॥ ५५ ॥ २० पत्र २१ पहिले २२ वह पत्र अपने पुत्र माधवसिंह के पास था सो

*अतिगूढ रक्खिय पास अप्पन जो न ख्याति परैं जथा ॥५६॥
दिल्लीहु यों अरजी लिखी हमकों [1]ख्वासासन नाँ दयो ॥
सिरि [2]रत्ति कुम्भहिँ मारि सय्यद [3]द्वंद्व नष्ट इहाँ भयो ॥
सुनि साह१ कुप्पिय [4]ताँहुसाँ बढि सो न नूरजिहाँ२ सही ॥
दुव२ अप्पनैं पठये [5]दलै गिनि [6]टेक एक यहै गही ॥ ५७ ॥
अब ख़ुर्रन३९।२ कल्हनहार [7]साँरक मारि [8]रैंन१९२।१ नं उव्वरैं ॥
[9]कंलि चंड भेजहु [10]दंडँ हजरत जो निदेस यहैकरैं ॥
हुंडी उतारि१ रु मारि हड्ड६१न२ रैन१९२।१ लावहिँ बंधिकैं३।
जुन होइ तो तिहिँ[11] मारि आवहिँ४ आन अप्पन संधिकैं५॥५८॥
बलि ह्वै प्रसन्न हजूरसाँ सुनि सोहि [12]मो मिलिबो बनैं ॥
बहिकाइ जिमजिम देत बेगम भाव तिमतिम सो मनैं ॥
सब पै मुरे मन यासमैं सचिवादि[13] हे निजसाहसाँ ॥
जिनकों न बेगम स्वीय[14]जानत वेहु ते न उछाहसाँ ॥ ५९ ॥
इतसाँ महावतखान१ आइ प्रबँधसाँ तँहँ उत्तरयो ॥
यह साह फंद गिरयो न [15]प्रत्युत [16]ताँहि गेरनकाँ अरयो ॥
सूबा अमानतखाँ१ रहैं अजमेरकेर सम्हारिकैं ॥
तजि औरको बिसवास त्यों [17]धियँ ताहि अप्पन धारिकैं ॥६०॥
कहि बेग बेगम साहसाँ फरमान तापर मुक्कल्यो ॥
सहसा [18]निसाँ छलि स्वीय सय्यद द्वंद्व२ हड्ड६१न ज्यों दल्यो ॥
तिम तू बली सकुटुंब रैन१९२।१हि मारिकै१ गहिकै२ तथा ॥
पुर१ देस२ छिन्नि [19]असेसैं रक्खहु [20]सेसैं [21]सौसनकी प्रथा ॥

---

*प्रसिद्ध नहीं होवे इसप्रकार रक्खा ॥ ५६ ॥ १ आपने आज्ञा नहीं दी २ रात्रि के समय में ३ दोनों नाश हुए ४ उन सय्यदों पर ही क्रोध किया ५ मारे ६ नूरजहां ने हठ किया ॥ ५७ ॥ ७ मारनेवालों को मारकर ८ रत्नसिंह ९ युद्ध में १० सेना ११ उस रत्नसिंह को ॥ ५८ ॥ १२ आपका मुझ से मिलना तभी होवेगा १३ वजीर आदि के मन बादशाह से मुड़े हुए थे १४ अपना नहीं जानता था ॥ ५९ ॥ १५ उलटा १६ बादशाह को १७ बुद्धि में ॥६०॥ १८ रात्रि में १९ सब २० बाकी २१ आज्ञा की प्रसिद्धि ॥ ६१ ॥

इत जिति इड्डवती स्वबाहुन आहु जाहु न देरसौं ॥
सुनि यौं अमानतखान सज्जि रु उप्पर्यो अजमेरसौं ॥
रजपूत पास बिसेस रक्खहिँ जो महावतखान ज्यौं ॥
पहिलैं चढयो वह लैन बुंदिय वैन हैन प्रमान ज्यौं ॥ ६२ ॥
पुरपर्णवाटै समीप आइ सु दे मिलान निसा पर्‌यो ॥
करि प्रात अग्र अनीन प्रस्थित मध्य गोन स्वयं कर्‌यो ॥
हठमैं बढयो सु चढयो करी तवही अमानत हंकयो ॥
भटबर्ग को दुहुँ२ ओर पंतिन बंधिकैं सुजरा भयो ॥ ६३ ॥
इहिं पास अक्खयराज१८९।२नत्तियँ हो जु भूपति१९१।१सो इतैं ॥
करि सिक्ख अग्ग बढयो कह्यो तब मिच्छ जावंत तू कितैं ॥
सुनि यौं दयालु१९०।१तनै कह्यो अब स्वामि सारन सिक्खहैं ॥
बुंदीसु हड्ड६१नको भैसू तस लज्ज जावत विक्खिहैं ॥ ६४ ॥
तुम जो चढो सजि ओरठौं हम है हरोल भरैं तहाँ ॥
रजपूत यौं सब नाँरहैं जननीहि स्त्रीय मिलैं जहाँ ॥
सीसोद१कूरम्म २ रट्ठउर३ प्रामार ४ जद्दव ५ संभरी६ ॥
प्रतिहार७चालुक८गौड़९मुख सबकैंहि रीति यहै परी ॥ ६५ ॥
सब बंस संगहि रावरेजुहि सत्यहै सु करो सही ॥
क्रमतैं अमानत पुच्छये सबनैंहि सत्य यहै कही ॥
पच्छी बहीर[11] सुराइ तब अजमेर गो ततकालपै[12] ॥
प्रति साह सोहि लिखी लगैं नन बुंदि सम्मुह हालपै ॥ ६६ ॥
इत ए महावत[13] कैदतैं कढि साह१बेगम२उब्बरे ॥
पर तोहु तास प्रबंधमाँहि स्वतंत्रता तजिकैं परे ॥
सुनि यौं अमानत पत्रकछु कहि नाँ सक्यो सु सबै सही ॥

---

१ अपनी भुजा से २ चला ॥ ६२ ॥ ३ पानड़वा नामक पुर ४ मुकाम ५ गमन ६ हाथी पर ॥ ६३ ॥ ७ पोता ८ दयालदास के पुत्र ने ९ माता १० देखेंगे ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ११ आगे जानेवाली भार बरदारी को पीछे फेर कर १२ फौरन ॥६६॥ १३ महावतखाँ की

अकुलाइ साह विध्वस्त भो असि गंधनोल२ जथा अहीर३ ॥ ६७॥
इत पैत्त छुंदिय वीर भूपति१९१।१ सत्रुसल्ल१९४।१सु आदरयो ॥
पर राह रोधक दान दै कछु लाह अर्हतिमैं करयो ॥
प्रपितामही मत ग्राम पंचक५ जाहि देनलग्यो जहा ॥
करि नाँहि ते न लये कह्यो मम बंदगीहु इती कहा ॥ ६८ ॥
नवनाड़१ मालहगा२ रु तारज३ अलप एहि दये नहैं ॥
रु रहैं जितैतित तोहु संकट जानि हाजरि ह्वाँ रहैं ॥
वहि एह भूपति१९१।१ तुष्ट व्है नवताड़ जाइ रह्यो वली ॥
कछु अब्द व्हाँ करिवास कीरति खास दिस दिस मुक्कली ।६९।
नवताड़ बाग१ रु बाँपिका२ जिहिं ह्वैरहि नूतन निर्मये ॥
भाँवी दुकालहु रंक जासैंन प्रानवान वचे भये ॥
पहु रत्न१९२।१को चउ४ अब्दपैं अवसान होंयन आइहै ॥
करि अट्ठ सोलह१६८८ साकैं सुहि दुरभिच्छ घोर कहाइहै ॥७०॥
पंद्रह१५ मनांसन मान वनिकन नीवि धान्य गड्यो परयो ॥
सुहि स्वीग ग्राम विचारि भूपति१९१।१ दानवीर संमुद्धरयो ॥
द्विज१ आदि रंकन बुल्लिकैं वह धान्य बंटि सवैदयो ॥
लिखवाइ दम्मन ग्रामपंचक५ धान्यस्वामिनहू लयो ॥ ७१ ॥
नवताड़१ मुख्य इत पंच निवेसथ अग्ग सुर्जन१९०।१ अप्पये ॥

उस महावतत्वों के प्रवन्ध में १ व्याकुल. जिसप्रकार २ छुछुंदर को ३ सर्प पकड़ कर होवे तिसप्रकार "इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि सर्प छुछुंदरी (गन्धमुखी) को पकड़कर छोडने से अन्धा होजाता है और खाने से मरजाता है" ॥६७॥ ४ पहुंचकर ५ शत्रुओं के मार्ग को रोकने से ६ प्रशंसा करके ७ दान ८ परदादी की सलाह से ॥ ६८ ॥ ९ ग्राम का नाम है १० प्रसन्न होकर ॥६९॥ ११ बावड़ी १२ नवीन बनाए १३ आनेवाले दुर्भिक्ष में १४ जिनसे १५ जीकर १६ अन्त का १७ वर्ष १८ सम्वत् ॥ ७० ॥ १९ तोल विशेष "बारह मन की एक मांणी और सौ मांणी का एक मणासा होता है" २० बिना व्याज का वनिये का मूल धन २१ निकाला २२ रुपयों से २३ धान्य के स्वामियों ने ॥ ७१ ॥ २४ आदि २५ ग्राम

थिति*द्रम्म पूरनहोनलौं तँहँ धान्य†वानिज थप्पये ॥
बरज्योहु रत्न१९२॥१ प्रसं कह्यो तुम करौ२ विक्रम२नाँ बनौं ॥
भाखोहि भूपति१९३॥१ दानवीरन नाम अप्पहुँ यौं भनौं ॥ ७२ ॥
भावी३ उदंत यहै तथा अब वर्त्तमान सुनौं अपो ॥
गिरिकौं महावतखान फंद सु साह४ ज्यौं पकर्यो गयो ॥
छोर्योहु बेगम२ जुत ज्यौं निजजोर निर्भय ठहै छमौ ॥
सबवत्त सो सुनिहो५ वै अग्रिम अंशु६ ओसर संक्रमौ७ ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

जबहि महावतखान जिम, आयो दिल्लिय एह ॥
बंधिसाह जिम अप्प बचि, अर्जिय८ सुजस अछेह ॥ ७४ ॥
कारनसह अग्रिम किरन, रीति सु पै प्रभुराम२०१४ ॥
स्वीय सुकवि सूचित सुनहु, ध्वस्त१० जवन पति धाम॥७५॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशरत्नसिंहचरित्रे बुन्दीप्राकारखातिकादिनिर्मितिकथन १, दत्तबुरहानपुरगमनपूर्वसेनानीस्वसूनुपत्ररत्नसिंहबन्दिखुरमप्रद्रावण २, ज्ञातबन्दिस्वसुतप्रपलायनप्रकुपितयवनेन्द्रजहांगीरप्रस्थापितसय्यदजकुटबुन्दीसेनापतिद्वारकादासवधोत्तरतन्मरण ३, एतदपराध-

* रुपये † व्यापार १ रत्नसिंह की जाता ने २ आप भी उनका नाम लेती हो ॥ ७२ ॥ ३ यह वृत्तान्त आगे होनेवाला है ४ समर्थ ५ अब ६ अगले मयूख में ७ समय पर चली हुई वार्ता को ॥ ७३ ॥ ८ यश सम्पादन किया ॥ ७४ ॥ ९ अगले मयूख में १० विध्वंस ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में बुन्दी के शहर पनाह और खाई आदि के बनने का कथन१ राजा का बुरहानपुर जाने से प्रथम सेनापति और अपने पुत्र के नाम पत्र लिखकर खुरम को कैद से भगाना २ अपने पुत्र के कैद से भागजाने की खबर से प्रकुपित बादशाह जहांगीर के भेजेहुए दो सय्यदों का बुन्दी के सेनापति द्वारकादास को मारकर माराजाना ३ इस अपराध से निर्दोष होने की रत्नसिंह की अरजी पढने से कोप को छोडनेवाले बादशाह को फिर प्रकुपित कर

निर्दोषीभावविषयकस्वरचितप्रार्थनापत्रपठनापनीतकोपयवनेन्द्रपुनरु-
त्कृतप्रकोपनिमित्तनूरजहांकृतससैन्याजमेराधिकृतबुन्दीप्रस्थापन ४,
स्वजननीराजधानीनिर्लज्जताऽनिरीक्षकहड्डदयसिंहात्मजप्रबुद्धाधि-
कृतामानतखानाजमेरप्रतिगमन ५, महाबतखानकृतयवनेन्द्रजहां-
गीरनूरजहांजकुटबन्दीकरण ६, एतद्बन्दीकरणसकारणवर्णनप्र-
तिज्ञानमष्टाविंशो मयूखः ॥ २८ ॥

आदित एकादशोत्तरद्विशततमः ॥ २११ ॥

प्रायो व्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ वैतालीयम् ॥

जब नूरहु भयो अमाजको, तब तनयौ तब स्वामि तोरसौं ॥
लंगर हठ तोरि लाजको, बेगम हाकिम सर्वपैं बनी ॥ १ ॥
अपने बस सर्वदा बहै, गिनि जवनेस जिहानगीर३८।१कौं ॥
राच्यो निज तंत्र जो रहै, अप्पैं ताकैंहँ काम ओरको ॥ २ ॥
सुभट१सचिवरकेहि संहरे१, साकिनि जिहिं भरि कान साहके ॥
कति दंड२कैद कै करे३, कहिदये सरवस्व लै किते४ ॥ ३ ॥
निज सासन सद्धि जे नये, उनकौं इस अधिकार अप्पये ॥
मोहा जिम संकरैं दये, ऐसहु देस असेस संकये ॥ ४ ॥

॥ आधिरुचिरा ॥

नाँघो लुकन३।१।२नहिं रिसकरि निजपतिहिं सनाइ यहहि हठ प्रीत
हुरम हुवरहि लप्पह भेजतहुव पुत्रहिं हनन बुलाइ प्रतीत ॥

के नूरजहां का अजमेर के हाकिम को सेना सहित बुन्दी पर भेजना ४ अपनी
माता रूपी राजधानी की निर्लज्जता नहीं देखनेवाले हाडा दयालदास के पुत्र
के समझाने से सूबादार अमानतखान का पीछा अजमेर जाना ५ महाबत-
खान का बादशाह जहांगीर और नूरजहां को कैद करना ६ इस कैद करने
के कारण सहित वर्णन करने की प्रतिज्ञा का अठाईसवां २८ मयूख समाप्त हु-
आ और आदि से दो सौ ग्यारह २११ मयूख हुए ॥

१ पृथ्वी ॥ १ ॥ २ अपने वश में रचाहुआ ॥ २ ॥ ३ प्राण लेनेवाला ॥ ३ ॥ ४
नम्र हुए ५ दिये ६ कठिनाई से ॥ ४ ॥ ७ नहीं आया

सुनि अपनैं*पठये हत सय्यद रैन१९२।१सिरहु यह अब अति†रुष्ट।
‡सासनमैं न रहत सुहि सालत पालत निजन[1] बिरचि बसु[2] पुष्ट॥५॥
याहीनैं निज भ्रात जु आसफ करि दूर सु किय ओर बजीर॥
ओरहु किय पुव्वहु कति अक्खहि सचिवपन न किय आसफ सीर
आसफ विहित[3] ततो जँहँ अक्खिय सचिव अपरं[5] कृत गिनहु
सुसर्ब॥
पै इम नूरजिहांन प्रसभपर[6] प्रकट कियउ निज सासन पर्ब[7]॥६॥
जिहिं हेतुहि[8] बुरहानपुरहु सब साह भटन हुव सय्यद संग॥
इच्छैंहिं[9] नन हुरमहिं जितितित अब भनहिं करहु हरि डाकिनि
भंगें[10]॥
याहीनैं सु महावत गढ वह लै न सक्यो तापर हठ लागि॥
ताकी तरफ पिसुनपनैं[11] तनि तनि आनिय साह हृदय रिस आगि।७।
हुरम पठाइ अपर तँहँ हाकिम हँकारयो[12] सु महावत हाइ॥
हुकम बिबसैं[13] दिल्ली हुव हाजरि एहहु साधुं[14] तवहि द्रुतें[15] आइ॥
राज्य असेसैं[16] लख्यो विपरीतहि जँत्थ[17] न आसिफखान बजीर॥
साह हुकुम प्राननलग साधक बिमैंन[18] सुन्यौं बुंदी नृपवीर॥८॥
पठयो तँदपि[19] महावत खिंनपर[20] देखन साह हृदय निजदास॥
ताड़ितकरि जवनेस कुपित तिहिं बंधि तवाहि कारा[21] दिय बास॥
सो सुनि असह महावत संकित हठि बुल्ल्योहु गयो न हजूर॥
प्रत्युत[22] वह जवनेसहिं पकरन देखन लंगिय जतन ढिग१ दूर।९।
सय्यद मरन प्रथम इहिं संक्रमि[23] करि नँय[24] लखि स्वामी प्रतिकूल[25]॥

---

*अपने भेजेहुए सय्यदों को मरेहुए सुनकर।†क्रोधित।‡आज्ञा से१अपने लोकों का २धन से॥५॥ ३उचित४कहा५अन्य६हठ पर७अपने आज्ञा करने के समयमें॥६॥ ८ इसी कारण से ९ नहीं चाहते १० इस डाकिनी का नाश करो ११ चुगली करके॥ ७॥ १२ महावतखां को वहां से निकाल दिया १३ हुक्म के आधीन १४ श्रेष्ठ १५ शीघ्र १६ सम्पूर्ण १७ जहां १८उदास॥ ८॥ १९ तोभी २० समय पर २१ जेलखाने में रक्खा २२ उलटा॥ ९॥ २३ चलकर २४ नीति २५ विरुद्ध

जवनेसहि१ पकन्यो कहुँ जावत मेहिला२ वहहु सकल दुख मूल॥
कोउ किमहु सके न कछू कहि ऐसो विरचि प्रबंध उदार ॥
कढि पुरतैं जावत कहुँ क्रीड़न[३] कोपन दुवरहि गहे अघंकार।१०।
बाँहुज पंचहजार५००० हुकमवस विक्खि तदपि कुल हड्ड६१ बिसास ॥
उभयरहि स्याम१९४।८ १९८।१ बुलाइ रु उभयरहि पति१ पतनी२ रक्खिय तिन्हपास ॥
दै अति त्रास तरजि इन[६] दोउ१न तिन्हँ[७] दोउ२न भूखन लिय तोरि ॥
हड्ड६१न सिविरि[८] धरे साह१हुरम२जिम जन रंक अनादर जोरि ।११।
अप्प[९] बचन करि जतन महावत तजिदिय साह१बहुरि पछिताइ ॥
बिन्नतिकरि साहहु हाहा बदि छलसनँ[१०] हुरमहु लिय सु छुराइ ॥
बलि कछु समय महावतके बस न लगत दाव रहिय जवनेस ॥
दिय तब खान अमानत वह दलँ[११] प्रतिसग करि अजमेर प्रवेस ।१२।
इम लिय लेख तखन तुमसों अब हड्ड६१न लिय हजरत प्रभुहोइ[१२] ॥
बुंदी१लैन चहत तुम ए बलि दिल्ली२लैन कहंत मिलि दोइ ॥
मित्र विदितँ[१३] जग रैनँ[१४]१महावत२जुरि जुगर ह्वैहैं बहुरि अजेय ॥
सब बाँहुज[१५] बदलें मग मोसँन[१६] स्व कँटक[१७] इत पठवहु चहि श्रेय ।१३।
दिय जब सुगरि अमानत यह दँल[१८] तब हुव साह महावत तंत्रँ[१९] ॥
जातैं कछु न सक्यो करि जतनहु मन निजँगोइ[२०] हुरमकृत मंत्रँ[२१] ॥
करत परंतु जितें स्वामि१कँथित[२२] केसव२कैन जिनक सहाय ॥
झावलगत जवनेन्द बदलि हुत किय अतिकोप वचन१मन२काय३
मरन चकित भजि तबहि महावत वँसु[२३] अधिकँार[२४] समृद्धि बिहाइ ॥

१ स्त्री (नूरजहां) २ खेलने को ३ पार्था ॥१०॥ ४ क्षत्रिय ५ देखकर ६ इन दोनों हाड़ाओं ने ७ उन जहांगीर और नूरजहां के ८ डेरों में ॥११॥ ९ आपके वचन का १० उस समर्थ से ११ पत्र ॥१२॥ १२ स्वामि होकर १३ प्रसिद्ध १४ रत्नसिंह १५ क्षत्रिय १६ मुझ से १७ अपनी सेना ॥१३॥ १८ पत्र १९ महावतखां के आधीन में २० छिपाई २१ हुरम की सलाह को २२ कहेहुए ॥ १४ ॥ २३ धन २४ ओहदा

स्वजनन सहित सु पै भय संकित इतउत जियन फिरयो अकुलाइ
आसफखान१हुरमको अग्रज जत्थैं हुतो वह पुव्व वजीर ॥
तस अवलंब महावत२टिकि तँहँ धारनप्रान धरयो कछु धीर ॥१५॥
दिपि इत साह स्वतंत्र स्वदंपति३इज्जत लुट्टन वैर उघारि ॥
स्याम१९४१८ जु गोपीनाथ१९३१ कुमर सुत मिसं कछु लिय सु दगावल्ल ४ारि ॥
स्याम१९४१ सु सुनि केसव१९३१६ सुत भजि सठ आयो हुरि लक्खेरि५अगार ॥
नृप परिक्खन पठये जवनेसहु चँवि बुरहानपुरहि इम चाँर ॥१६॥
हम दंपति२भूक्खन लुंटकहुवें केसव१९३सुत यह स्याम१९४१ कुपुत्र ॥
यातैं रत्न१९३१ हनउ उत आतहि अघ निज धोवहु अत्र१ अमुत्र
तास जनक केसव१९३१६ पुच्छयो तब निज बलनायक रत्न१९३१ नरेस ॥
अक्खिय स्याम१९४१ करिय वह अनुचित आयउ हुकुम लक्खहु अब एस ॥ १७ ॥
केसव१९३१६ कहिय सुत सु इक१ दलि कैलि अप्पन सब प्रभु होहिं अमंतु ॥
मत बिनु लंघि अटक पुव्वहि मृत तिहिं को अधम गिनैं कुलतंतु ॥
जित तित दुरहु तऊँ न जियत जिहिं साह अतुल आगस अनुसार
क्यौं न हनहिं अप्पन तिहिं सु कहहु भूपति टरत स्वसिरैं सबभार
नृप सुनि तदपि लिक्खी सुत निकासि रु जाहु वजीर१महावत२जत्थ ॥

---

१ नूरजहां का बड़ा भाई २ जहां ॥ १५ ॥ ३ जोड़ा सहित ४ लाखेरी के स्थान में ५ परीक्षा करने को ६ कहकर ७ हलकारे को ॥ १६ ॥ ८ हम स्त्री पुरुषों को ९ लूटनेवाला इस लोक और १० परलोक के पाप ११ पिता १२ सेनापति ॥१७॥ १३ युद्ध में मारकर १४ अपराध रहित १५ अटक नदी लांघकर पहिले ही मरे हुए के समान है १६ अपराध के अनुसार १७ अपने मस्तक का॥१८॥ १८ तो भी

बलि द्विप*छदन†सता१९४१ प्रति बुंदिय स्याम१९४१हिं
हनहु दुतहि साजि सत्थ ॥
निज बस बनत कबहु दुरि निकसन जानि न हनहु अचानक जाइ॥
जैत१९३१ करन१९३१ बलवंत १९३१ अनुज १९४१ जुत
जबहि सता१९४१ चढिगो सु जनाइ ॥१९॥
तदपि सु स्याम१९४१ निडर न भज्यो तँहँ खग्गन खंड भयो
भिरि खेत ॥
इम नृपरत्न१९३१अनंतु समुज्झि इन साह१मुदित हुव दुरम२समेत।
पै जवनेस अनित लोलुपपन कछु मंद प्रकटि मर्‍यो तिंहिंकाल॥
संवत वेद उरग अष्टि१६८४समय समुझे सबहि टर्‍यो हिय साल२०
बीजापुर पंचन तव विज्ञति दे रु खुर्रम३९१२ बुल्ल्यो निजदेस ॥
भूपहु स्व लिपिछदन तँहँ भेजिय आवहु सँजव समय हुव एस ॥
दरकुंचन खुर्रम३९१२हु सुनि दिल्लिय आइ तखत बैठो तब एह ॥
साहजिहांन३९१२स्वनामलहि सबनृप४रुनवाव५बुलाइ सनेह ।२१।
उपदा६ गहि करवाइ निछावरि७ विहित बिसासि चहे सब वीर॥
पटु करि खानमहाबत१ बलपति आसफखान१ कियो सु वजीर ॥
बीजापुर सन पुनि सुत२बेगम३स्वीय कुटुंब सु बुल्लि समस्त ॥
अंप्पन आन फिराइ तप्यो इम धीमुख मंत सठन करि ध्वस्त ।२२।
अस दारा४०१रु सुजा४०२औरंग४०३ मुरादवक्स४०४ सह
चउ४हि कुमार ॥
तीन११किसोर चतुर्थ४पृथुक१२ तिम सबहि मुदित वैभव अनुसार ॥
समुझन सैरनि पितामह१४की सुनि सज्जित सत्त७हि प्रँकृति सम्हारि
अकबरपुर१६ सु बहुरि चढि आयउ बटि खिन तत्थहु रहन विचारि२३

---

* पत्र † शत्रुशाल को जिन्हा ॥ १९ ॥ १ निरपराधी २ प्रसन्न हुआ ३ रोग ॥ २० ॥ ४ पत्र ५ शीघ्र ॥ २१ ॥ ६ नजराना ७ चतुर ८ सेनापति ९ मन्त्री १०नाश ॥ २२ ॥ ११युवा अवस्थावाले १२बालक १३मार्ग १४ अपने दादा अकबर का १५ राज्य के प्रधान अंग १६ आगरा ॥ २३ ॥

आसफखान सचिव प्रति अक्खिय आये नृप आहूत[1] असेस ॥
हड्डवर्त[2]ीस तथा पति हड्ड६१न राजा आत न क्यों रतनेस१९२।१ ॥
सचिव कहिय सीमा थित संभर बिरचि अभय आह्वान[3] बहोरि ॥
पातहि द्रुत अैहैं सुहि किय पुनि जब नृप हुव प्रस्थित बल जोरि२४

चवि[4] माधव १९३।२ हरिसिंह १९३।३ रहन थुप[5] द्वै २ हि तनय पठये निजदेस ॥
सचिव बनिक केसव१सोमानी उत प्रतिनिधि[6] किय अवनि[7] असेस
अनुज तनय केसव१९३।६जुत अप्पन सब संभव समुचित दलसंग
पहु रैन१९२।१हु पहुँच्यो अकबर इम अवहित[8] निजअंग१ रु उपअंग२
सिद्धापुरहि रह्यो दिन दस१०मित हड्ड६१अधिप न गयो सु हजूर ॥
हुव संसय[10] लिखवाइ छंदन[11] हम कीलि[12] तज्यो सु न०है किम क्रूर ॥
अक्खिय साह सु सुनि प्रति आसफ अबकिम ढिगहु समाज[13] न आत
आसफ गंय वकीलहिं अक्खिय बदबख्त[14] न किम नृपहिं बुलात२६
तापँहँ कहत बनी तब सत्वर[15] गोवध बहु लक्खियत तिहिं गैल ॥
होते कोल सत्त७तउ नाँ हम वधहिं खर लखते गो१ बैल२ ॥
सुनि सुहि साह अरज आसफसन नृप गोचर[16] दिय वधिक[17] निवारि ॥
गंगहिं रीझ बखसि तव नृप गय साह समाज[18] प्रनति[19] अनुसारि।२७।
कहिय तहाँ नृप प्रति अनुकूलहि पै[20] करि१ हरि[21]२ मंगिय प्रतिकूल
कूरम[22]संतति१पुच्छि जथाक्रम माधव१९३।२कुमर२ चहिय सुख मूल
अबहि करी१ हाजरि नृप अक्खिय मनबस[23] कितहु हरी[24]२ उनमत्त ॥
सेखाउत१ सिसु माधव२ सुगिरहि रक्खिय सु लखन बिभव लहिरत्त

१बुलाये हुए २हाडोती का पति ३निमन्त्रण (बुलावा) ॥ २४ ॥ ४कहकर ५पुत्रों को ६ स्थानापन्न (कायम मुकाम) ७ सब भूमि पर ८आगरे में ९ सावधान ॥ २५ ॥ १०सन्देह ११पत्र १२कैद करके छोडा था १३सभा में १४हक मनसीब (भाग्यहीन) ॥ २६ ॥ १५ शीघ्र १६ राजा के देखते हुए १७ गौओं को मारनेवालों को रोक दिये १८ सभा में १९ विशेष नम्रता के साथ ॥२७॥ २० परन्तु २१हरिसिंह को विरुद्ध होकर मांगा २२कछवाहा द्वारकादास की सन्तान २३ स्वतंत्र होकर २४ हरिसिंह उन्मत्त होकर न मालूम कहां रहता है ॥ २८ ॥

अप्पहि दिय सासन पहिलैं इन दाय अधिक माधव १९३।२
कँहँ देहु ॥
कोटा सुख्य परगनौं नवक९हिं इन लहि लख्खन रह्यो तिन्ह एहु॥
अधिपहु किय उपदा[3]उत्तारन[4]रत्न अरज[8]हु सुनि अखिलय साह॥
इभ[5] अबलाहु[1] बुलाहु[2] सुत उभय[2] गत नन गिनियत रीझ
१ गुनाह[2] ॥ २९ ॥
वारन[6] लाहु कहिय अनुगन[7] वलि बार[8] न लाहु जवहि बुंदीस ॥
पीलु[9] तब सु आन्यौं इभपालन[10] श्रुति[11] तालन चालन धुतसीस[12] ॥
साह कहिय उपदा[13] गज १ संटि[14] रु रक्खहु देहु हमहिं यह २
रैन१९२।१ ॥
सुहि नृप करत भनिय पुनि सिसुसम[15] वारन[16] सत्तरि७०लंघन[17] वैन३०
द्विरद[18] जक्यो सु रहत खिल दुव२दिन लंघन अठ रु सठि६८ लगाइ
सूचिय साह परयो अब सिंधुर[19] जान्यों वेल भोजहु[20] अब जाइ॥
किय नृप अरज संमय रन सम करि इभ यह लखहु खरो प्रभु अज्ज[21] ॥
तोपन फेर बनत सुंहिविधि[22] तव सु इभ[23] लग्यो घुम्मन उठि
साज्जि ॥ ३१ ॥
ऐसो गज लिय साह परखि इम वलि कहुँ संसद[24] समय विसेस ॥
कुमर सुराद४०।४ जनक[25] दह्ढीकच खेंचत पकरि हुकम किय एस॥

आपने पहिले १ आज्ञा दी थी २ दायभाग (बन्ट) ३ नजराना ४ न्यौछावर ५ हाथी को और उन दोनों पुत्रों को बुलाओ क्योंकि हम गयेहुए समय की प्रसन्नता और अपराधों को नहीं गिनते ॥ २९ ॥ ६ हाथी को लाओ ७ सेवकों को कहा ८ देरी मत करो ९ हाथी १० महावतों ने ११ ताड़ वृक्ष के पत्तों के समान कानों को हिलाता हुआ १२ मस्तक हिलाता (धुनता) हुआ १३ नजराना करना तो रहने दो और उसके १४ एवज में यह हाथी हम को देदो १५ बालक के समान कहा १६ हाथी के १७ निराहार रहने के वचन ॥ ३० ॥ १८ वह हाथी पड़ाहुआ है और लंघन में दो दिन बाकी हैं १९ हाथी को २० भोजन कराओ २१ आज २२ इसी प्रकार २३ वह हाथी घूमने लगगया ॥३१॥ २४ सभा के २५ पिता की डाढी के बाल

स्वजनक मंतु कबहु न करहु सिसुरोधक लखहु ढिगहि यह रैन १९।२।१ ॥

सिखयो मोहि१ सिखैहैं तोहि२ सु आनत देहि कुपुत्रन ऐन ।३२।

सहजहि साह कहिय यह सुतसन भय मन तदपि लहिय कछु भूप ॥

मित्र स्वकीय बजीर१ महावत२ रहिय इम सु निर्भय अनुरूप ॥

महिप बहोरि कहिय तिन मित्रन अतिबय अब जननी मम आहि॥

द्वारावति करिहै हरि दरसन जात मग न अटकैं कहुँ जाहि ॥३३॥

सुल्कहु दे न सु ऐनें बिसम१ समर२पाइ मुरहिं रनछोर प्रसाद ॥

यह सासन सूबा अधिकारिनि देहु लिखाइ अहमदाबाद ॥

सुहि करि अरज जवनपति सचिवन महिपहिं लिखित दयो फरमान

अकबरपुर बहुदिन रहि नृप इम सबबिधि तुष्ट कियउ सुलतान ॥

सु पुनि बजीर१चमूपति२सम्मत पहु बुंदिय आयउ खिनें पाइ ॥

बासवसैल १९।२।१ सता१९।१।२ बलवत १९।१।३ रु जैत्र १९।१।४कनक१९।१।५प्रनमिय मग जाइ ॥

प्राबिसि नरेस समुख निज पत्तन परि सिर प्रनत प्रसू धुख पाय ॥

थप्पन निजकुलभव वैभव थिर अप्पन आखिल निरखि ठंयय १ आय२ ॥ ३५ ॥

सिक्ख प्रमित रहि तँहँ दस १० आमन बय खिल तनु लखि बिरचि बिभाग ॥

---

१ अपने पिता का २ अपराध ३ रोकनेवाला "जहांगीर की आज्ञा से शाहजहां को कैद किया था इसकारण रत्नसिंह को रोकनेवाला कहा है" ४ घर में ॥३२॥ ५ पुत्र से ६ अपने मित्र ७ अपने स्वरूप के अनुसार ८ अत्यन्त वृद्ध ९ मेरी माता है ॥ ३३ ॥ १० कर (राहदारी) ११ मार्ग में जाने और आने का १२ प्रसन्नता १३ आगरा में १४ प्रसन्न ॥३४॥ १५ समय पाकर १६ इन्द्रशाल १७ शत्रुशाल १८ नमस्कार किया १९ माता २० आदि के चरणों में नमस्कार किया २१ अपने कुलवालों के २२ सब २३ खरच ॥ ३५ ॥ २४ सीख के माफिक २५ दस महीने २६ शरीर की बाकी अवस्था देखकर

नृप दिय तत्थ सर्हा सुत१*नत्तिन२ रक्खि अधिक माधव १९३१२ दिस†राग ॥
साह हुकम माधव१९३१२ हित समुझि सु बिमव दियउ तिहिं सबन बिसेस ॥
पुव्वहिं दिय कोटा१रनजसपर पुनि बसुमँय अव अट्ठ८प्रदेस ॥३६॥
खर्जूरी १ एरंडकखेटक २ कैथोनि ३ रु आवा ४ कनवास ५ ॥
सघुकग्गढ६दिग्घोद७रहल८मिलि अष्टक८यह ग्रामक सह आस
चपल गइंद१हइंद२ रु चामर३संसन४वसन५सूखन६धन७ सत्थ ॥
कोटासहित परग्गनाँ क्रमकरि इम नव९दिय सुत माधव१९३१२अत्थ ॥
जाँववती १९३१३ माधव १९३१२ जननी जव पाइ स्वसुत ढिग रहन प्रसंग ॥
नानतें१०आदि चामलतट निर्वसथ पंच५लिखित लिय पट्ट स्वसंग ॥
प्रसंग१स्वसंग२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रैन१९३१मरन पीछें यह रानी पुरकोटाहि रही सुतपास ॥
पुत्रहि के सचिवन लैंहे पुनि याके ग्राम तवहि उत आसैं ॥ ३८ ॥
माधव १९३१२ सुत पीछें सु प्रसू मृत गिरि दुव हय ससि १७२७ सक सुतगेहैं ॥
कोटा वैस तवतैं लहि कारन अवलग निर्वसथ पंचक५एह ॥
सत्त७हि पुत्र कहे माधव सुत२६१२२तिनमैं पंचक५ हे कुल तीन ॥
हडुन भेद छवीस तीनहुव माधानी कुल पंच प्रमान ॥ ३९ ॥
रीझ मिली हरि१९३१३ कों कापरनि१ रु पिप्पलदा२ अव दि-

* पोतों को † प्रीति १ पहिले २ युद्ध विजय करने पर ३ धन सहित ॥ ३६ ॥ ४ एरण्डखेड़ा ५ हाथी ६ घोड़ा ७ चन्द्राचिन्ह (मोरछल) ८ अर्थ ॥३७॥ ९ अपने पुत्र के साथ १० नानता नामक ग्राम आदि ११ चामल नदी के इस किनारे १२ ग्राम १३ लाटे (हासिल लिया) १४ कोटा के राज्य में हैं ॥ ३८ ॥ १५ माता १६ पुत्र के घर में १७ कोटा के आधीन ये पांचों १८ ग्राम १९ कुल को फैलानेवाले ॥ ३९ ॥

य महिपाल ॥
सारसला२रु मऊ१ हद ससक७१९ साह अधिक नगिनैं जिम साल ॥
निबसथ नव९हि हरि१९३।३हि ए दिय नृप ते बंलि भिन्नहि
भिन्नबताइ ॥
इक१ कापरानि परगनाँ जुत वह प्रथम दई सु रही खिन प्राइ॥४०॥
अष्ट८ कहे पहिलैं हरि१९३।२ अंगज चउ४कुलधर तिनके कु-
ल च्यारि४ ॥
हरिके२७।२३ बजि सु भिदा हुव इहु६१न सत्तावीसम२७ क्रम
अनुसारि ॥
दिय नृप कछु बालूहेरा१दिक जगनाथ१९३।४हिँ मितिवट जेह जानि ॥
त्रय३सुत केसव१९४।१आदि कहे तस तँहँ मध्यम२ सु रह्यो कुल
तानि४१ ॥
जैत्र१९४।२ तथा फतमल्ल१९४।२ विदित जुग२ जस अभिधा
तस कुल जसजुत्त ॥
इहु६१न कुल अट्ठावीसम२८हुव प्रथित भिदा जगनाथपउत्त२८।२४
इम पुत्र१न बसुधा बट अप्पिय बलि दिय नत्ति२न ब्याहि विभाग ॥
अग्रिम किरन सुपै कहिहैं अब रक्खहु खिलहिं सुनन अनुराग४२
बासवसल्ल१९४।२।१ सता१९४।१।२ बलवंत१९१।१।३ रु जैत्र
१९३।१।४ करन१९३।१।५ केसव१९३।६ प्रति जत्थ ॥
स्याम१९४।१ हन्यो सु सुमिरि सकुचे सब मिलतहिँ नाइ त्रपा
करि मत्थ ॥
सब उरलाइ कहिय हसि केसव१९३।६मन्नहु मोहि न स्याम१९४।१
समान ॥

---

१ फिर ॥ ४० ॥ २ पुत्र ३ भेद ४ अल्प चन्ट ५ मूर्ख जानकर ६ वंश को बढानेवाला ॥ ४१ ॥ ७ नाम ८ प्रसिद्ध भेद ९ पौत्रों को १० अगले मयूख में ११ प्रीति ॥ ४२ ॥ १२ जहां १३ लज्जा करके मस्तक नमाया

उमय रसरे सु टर्यो दुग्व अप्पन हैं खल*भाल्य विरचि पथ हान ।४३।
नृप तिम बंटि नहीं सुत१ नत्तिरन रहि दस१०मास†स्वपत्तन रैन१९२।१ ॥
बुरहानपुर१ गमन सापन बलि अप्पिय साह लखहु जित अैन ॥
जननी पवन प्रनन्नि अप्पिय जब सब सह सुख जावन फरमान ॥
संग किय उमट सेर१९२।२पता१९१।१सुत‡द्वारावति देखन धरि ध्यान ४४
रक्खि स्वपुर पंच ५ हि ते रच्छक लै सिसु भाव १९५।१ सता १९४।१सुत लार ॥
पहु बुरहानपुरहि तब पहुँचिय पथ हैनना परि प्रथित प्रसार ॥
इत नृप लाइ गई द्वारावति गिति रस वसु सोलह१६८६सक माँहि
जे जनपर्द जन संग भये जिन्ह निजनिज वसु खरचन दिय नाँहि ।४५।
द्वारावति पहिलैं प्रभुमंदिर प्रारंभिय सुर्जन १६०।१ छितिपाल ॥
वह पूरन करवाइ यहै अब काँमि तँहँ पँत्त प्रतिष्ठितकाल ॥
लक्ख इक १ रु तेतीस ३३ सहँस १३३००० लगं लहि अवसर दम्मन व्यय लाइ ॥
आदि त्रिलोक तदपु सुंदर१यह रक्खिय नाम प्रभुहिं पधराइ ।४६।
इम रनछोर परसि सुरिद्धावत सो सग सारिग पता ११।१ सुत सेर १९२।२ ॥
सुहिय चंद्र१९७।२पता१९१।१हुव्वरे बलि इत दक्खिन वनि जस आंद्रेर
सारथल१३ हिंडोलिय१४तिन्ह सुत जेठे कुवरहि धनोकुव जत्थ ॥
आइ पुर नृप रैन१९२।१मैल इत आर्जित१पुलच२विंतारि१वहु आर्थ१
जे रनथंभ लही प्रतिमा जुगर इक१खिल रहिय सु पै अभिराम ॥

* संस्कार हीन ॥ ४३ ॥ † अपने नगर में ‡ द्वारका ॥ ४४ ॥ १ बु- रहानपुर के पुत्र भावसिंह को साथ लिया २ सेना ३ प्रसिद्ध ४ देश के मनुष्य ९ मन ॥ ४५ ॥ ६ करवाए ७ गई ८ प्रतिष्ठा होने के समय ६ निकलवाके ॥४६॥ १० दमराज दूर्गा धिकारी पना ११ माता १२ सम्पादन १३ दान १४ यहां ॥४७॥ १५ मूर्तियां १६ बाकी

रचि मंदिर२बाराँपधराई श्री कल्यान स राज२सनाम ॥
प्रभु मूरति कोउक पधराई रचि मंदिर३ गोपालपुराहु ॥
खटपुर निकट अबंहु वह पिक्खहु जव पेहु सिंह हनन उतजाहु ॥
बापी इक१पुब्बहि बनवाई रैन१९२।१अँसू बुंदियपुर रम्य ॥
बिरचिय तिमहि मऊ ग्रामन बिच गोपाना दूजी२ जलगम्य ॥
केसव१९२।३पुरचोमाँ उपवन१किय नृपमाता इक१रुचिर नवीन ॥
मंदिर त्रय३बापी द्वय२मंजुल करि इक१वेलँ सु जस जग कीन ।४९।
तिय१सुत२साह बुलाये इत तब गो संगहि गोपाल सु गोर ॥
लक्खैरी न दई चिंति सु लिँपि५अप्पिय थान अधिक तिहिँ ओर ॥
संभर सुत बुल्ल्यो हरिसिंह१९३।३सु पठ्यो नहि भयजानि नृपाल ॥
तातैं नव्यँ परगनाँ सत्त७हि करि रिस साह लये ततकाल ।५०।
रायहरि१हु बुल्लि सु रानाउत भीमतनय उँपकृत नन खुल्लि ॥
द्रंग दये समुचित टोडा१दिक ताहि बडेनृप आदर तुल्लि ॥
सत्त७हि सचिव हुकम यह सुनतहि बुंदीपुर लिय नृपहु बुलाइ ॥
इक गोर सु रनछोर१कट्यो वह खट६दिन लरि करि अरि बहु खाइ
साहजिहान२९।२खिजत पुनि यह सुनि आसफ१सहित महावतँ२आनि
कहिय इतरँ हेलनँ नृपसिर किम मन हजरत प्रत्युत लिय मानि॥
भेज्यो न हरि१३९।३जवनपति भाखत उन आक्खिय मूढ सु उनमत्त
जनकँहुकोँ न कुपुत गिनैं जहँ बदहु कितीक गिनैं खिल वत्त ।५२।
ज्यान१रु माल२बडप्पन३भू४जुत सो सब गिनत हजूर सहाय ॥
बहुरि बिहितँ उपकार बिचारहु निरखहु जुलम हुँरसकृत न्याय ॥
इम नृपतैं रिस टारि दईउत तदपि परगनाँ सत्त७उतारि ॥

---

१ हे प्रभु रामसिंह ॥ ४८ ॥ २ रत्नसिंह की माता ने ३ बाग ॥ ४९ ॥ ४ लिखावट ५ नवीन ॥ ५० ॥ ६ रायसिंह को ७ सीसोदिया भीमसिंह के पुत्र का उपकार नहीं भूलकर ८ उचित ९जोधपुर जयपुर आदि बडे राजाओं के समान आदर करके ॥ ५१ ॥ १० महावतखाँ ११ और १२ अपराध १३ उलटा १४ पिता को भी ॥ ५२ ॥ १५ उचित अथवा कियेहुए १६ नूरजहाँ का कियाहुआ

केसव सचिव बलहु बेसु चप करि सब रक्खिय सबरीति प्रसन्न
तँहँ ज्वर हुव नृपकै एकंतर आयु अवधि बनि विधि बलवान ॥
अगहन९सित१दसमी१०वपु उज्झिय तीजे३बार२तृतीयक३तान५८

॥ वैतालीयम् ॥

सक स५ हुव तर्क भू१६२५समा, ऋतु पाउस३ हुव जन्म रैन१९२।१को.
पुनि चउ खट अष्टि१६६४ की ममा, ग्रीखम२मैं नृपता तथा गही।५९।
गज अहि रस भू१६८८ समा गये, अब हेमंत५ सगीर उँज्झयो ॥
बर्ष त्रि३जुत सष्ठि वै भये, इम गोदातट स्वर्ग गो यहै ॥ ६० ॥
क्रम व्याहनके जथा कही, रानी नव९ नरनाह रैन१९२।१ के ॥
रानी दुव२जीवतीरही, तब तिनमैं दूजी१९२।२दुतीसरी१९२।२।६१।
सीला१९२।१दिक सेस७ सुंदरी, महिपतिसैं पहिलैं सबै मरी ॥
जँहँ दूजी२ संगही जरी, रानी राजकुमारि१९२।२ तोमरी ॥६२॥
ऊंढा बुंदी हुती उभै२, जिनमैं दूजी२ तोमरी१९२।२ जरी ॥
चित्त मरन जास नाँ चुभै, जो तीजी३किम चालुकी१९२।३जरैं।६३।
माधव१९३।२ जगनाथ१९३।४ माइ सो, कोटा जाइ रही तनूजकै ॥
जगनाथ१९३।४ हु संग जाइ सो, अंग्रजके ढिगही रह्यो उहाँ ।६४।
सुत[11]कोसुत[11]रामसिंह१९४।१ सो, सवबुंदी सृतकर्म सद्धिकैं ॥
मानी रन रंगमल्ल सो, भूपतिभो दानी दधीचसो ॥ ६५ ॥

॥ गीतिः ॥

नव९ठान अधेर किय नव, सिर तिनके रत्न दौलत२ सभ[13]ज्या ॥
रत्न निवास३ उपरिभव, ताके सिर रत्नमहल४ विरचिय त्यौं ॥६६॥
नारीकुंजर४ नामक, अब सोही रत्नमहल४ विदित इहाँ ॥
अरु तसासिर अभिरामक, जु रत्नमन्दिर५ दसगुंलक जानौं।६७।

---

१ धन के समूह से सेना को २ शरीर छोडा ३ मंगलवार ४ तीसरे प्रहर ॥५८॥ ५ प्रमाण ॥ ५९ ॥ ६ सम्वत् ७ शरीर छोडा ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ८ विवाहिता ॥ ६३ ॥ ९ पुत्र के १० बडे भाई के साथ ॥ ६४ ॥ ११ पोता ॥ ६५ ॥ १२ नीचे १३ सभा ॥ ६६ ॥ १४ सुन्दर १५ खरबूजे के आकार

अंतहपुर१ जुर२ सवती३, ताके सिर रत्नमंडप६ रच्यो त्यों ॥
चारु रतन४ जस चवंती, छटा५ महलन तिय है इहाँ ख्याता ॥६८॥

स्रवती१ च्रवती२ इत्यन्त्यानुप्रासः ॥

राजत५ खिड़ित६ मनोहर, परिखाँ७ प्राकार८ आदि९ निजपुरके ॥
छार रतन समर्थ१० है छर्न, उपवन जुग११ थान रत्न रचित इते ॥६९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठराशौ बुन्दीश-रत्नसिंहचरित्रे महावतखाननिष्कासनार्थनूरजहांप्रेषितापराधिकारिगमनानन्तरदिल्लीगतमहावतखाननूरजहांजहांगीरबन्दीकरणं, रक्षितमहावतखाननूरजहांजहांगीरकारागारनिःसारणं, कारागारस्थभूषणाकर्षणहेतुकोपपर्यन्तप्रसन्नयवनेन्द्रसेनाप्रस्थापनश्यामसिंहवधानन्तररत्नसिंहोपरिप्रसन्नताप्रकटनं, जहांगीरमरणानन्तरबीजापुर-दिल्लीआगतखुर्रमशाहजहांनामधेयंकृत्वा दिल्लीन्द्रीभवनं, दत्तमहावतखांसेनानीत्वासफखांमन्त्रित्वाधिकारं दिल्लीसमाहूतसकलभूभुजंगानंतररावरत्नसिंहसमाकारणं, यवनेन्द्रयाचितहरिसिंहमाधवसिंहकुमार

---

१ जनाने में २ जोतने ३ यश स्रवती हुई; अथवा यश टपकाती हुई ४ प्रसिद्ध ॥ ६८ ॥ ५ शोभायमान ६ बनाया हुआ; अथवा उचित ७ खाई ८ कोट ९ आदि १० समर्थ ११ बाग अर्थात् छारबाग और रत्नबाग ॥ ६९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के चरित्र में नूरजहां का दूसरे हाकिम को भेजकर महावतखां को निकालने के कारण महावतखां का दिल्ली में आकर बादशाह जहांगीर और नूरजहां को कैद करना १ अपना बचाव करके महावतखां का बादशाह और खुरम को कैद से स्वतंत्र करना २ कैद में बादशाह के भूषण खुलालेने के कारण हाडों पर अप्रसन्न होकर बादशाह के सेना भेजने पर श्यामसिंह को मारने पश्चात् जहांगीर का रत्नसिंह पर प्रसन्न होना ३ जहांगीर के मरने पर बीजापुर से दिल्ली जाकर खुरम का शाहजहां के नाम से बादशाह होना ४ महावतखां को सेनापति और आसफखां को वजीर किये पीछे सब राजाओं को और सबसे पीछे राव रत्नसिंह को दिल्ली बुलाना ५ हरिसिंह और माधवसिंह दोनों कुमारों को बादशाह के मांगने पर रत्नसिंह को टालने का उत्तर

द्वयदत्तसमयातिक्रमणोत्तरलेखितस्वप्रसूद्वारकायात्रानुकूलाज्ञापत्र-रत्नसिंहबुन्दयागमन, विभक्तस्वपुत्रपौत्रभूभागद्वारकाप्रस्थापितस्वमातृकसमाक्रान्तदक्षिणाशाप्रयवनेन्द्रराज्यविस्तारण, स्मृतभीमसिंहसेवयवनेन्द्रशाहजहांशैषोदिरायसिंहटोडाराज्यप्रदानपुरःसरमहामहाराजसमत्वापादन, उदयपुरमहाराणाकर्णसिंहमरणोत्तरराणाजगत्सिंहपट्टप्रापण, दक्षिणदेशयवनेन्द्रराज्यविस्तारकबुन्दीशरावरत्नसिंहकालीवापीनामस्थलतनुत्यजन, रत्नसिंहसमयनिर्मितस्थानगणनमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितो द्वादशोत्तरशततमः ॥ २१२ ॥

बुन्दीशरत्नसिंहसमकालीनाधिकारपूर्त्रायणे षष्ठो राशिः ॥

इति श्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्दमुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूड बुन्दीपूर्विलासिनीविलासि-चाहुवाण-चूडामणि-भारतीभागधेयहड्डोपटंकिमहाराजाधिराज-रावराजे-

---

देकर अपनी माता का द्वारका की यात्रा के अनुकूल फरमान लिखवाकर रत्नसिंह का बुन्दी आना ६ रत्नसिंह का अपने पुत्र और पौत्रों को बंट देकर माता को द्वारका भेजने के पीछे दक्षिण में जाकर बादशाह के राज्य का विस्तार करना ७ भीमसिंह की सेवा को स्मरण करके बादशाह शाहजहां का शीशोदिया रायसिंह को टोडा का राज्य देकर बडे राजाओं के समान बनाना ८ उदयपुर के महाराणा कर्णसिंह के शरीर छोडने पर राणा जगत्सिंह का पाट बैठना ९ दक्षिण और पश्चिम दिशा में बादशाह के राज्य बढानेवाले बुन्दी के राव रत्नसिंह का कालीबाई नामक स्थानपर शरीर छोडना १० रत्नसिंह के समय में बननेवाले स्थानों की गणना का उनतीसवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बारह २१२ मयूख हुआ ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरंद (पुष्परस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुंदीपुरी रूपी स्त्री के विलासि, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले (पूर्ण विद्वान्) हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महारावराजेंद्र श्रीरा-

न्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगिरादिषड्भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गका-
व्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्ति-चक्रि-चरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-
त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्ल
विहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे रावरत्नसिंह१९२।१चरित्र-
समयसमानाऽधिकरणकोदन्तवर्णनं षष्ठो राशिस्समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ समाप्तमिदं पूर्वायणम् ॥

इतिश्री नीतिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय
ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदावारहठ-चारणकुलावतंस- शाहपुराप्र-
तोलीपात्र-सुयोग्यपितुरऽवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन,विदुष्याशृङ्गारनाम
जनन्याःप्राप्तप्रसव-पालन-बालशिक्षोपदेशेन,सुशिक्षितैराऽऽज्ञाकारि
भिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभाव्याऽऽ
धिना कवि-कोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्तकाव्यशि-
क्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसपन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवैष्णव-रामानु
जसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽह्वयगुरोराऽऽसादितसंस्कृ-

---

मसिंहदेव की आज्ञा में, संस्कृत आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के पति का-
व्यरूपी समुद्र के कैवर्त (खेवटिये) वीरमूर्ति विष्णुभगवान् के चरणारविंद के
भ्रमर मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चंडीदान के पुत्र मि-
श्रण (मीशन,) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचेहुए वंशभास्कर महाचंपू के
पूर्वायणमें बुंदीके भूपति रत्नसिंहके समय के समान है अधिकार जिसका ऐसे
वृत्तांतके वर्णनका छठा राशि समाप्त होकर इस ग्रन्थ का पूर्वायण समाप्त हुआ ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद--सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण
धर्ममूर्ति वीर उदार सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा
के पोलपात सुयोग्य पिता ओनाड़सिंह के पुत्र ने, पंडिता सणगारबाई नाम
माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा
पाये हुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से मिटगई
है आनेवाले समय में होनेवाली मन की चिन्ता जिसकी, पंडित कवि अपने
मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, संतोष आदि
गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीम-
त् आचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में

तविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिपराजाधिराजो-
पटङ्गिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीय-गुहि
लोत्त-मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महा-
राणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि-महाराणाफतैसिंहवर्म, भा
नुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्व
रमहाराजयशवन्तसिंहवर्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपाद
भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रति-
पालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयि
तुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवा-
सिना कविवरबारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां
षष्ठो राशिः, तत्र ग्रन्थस्येदं पूर्वायणं समाप्तिमगमत् ॥

पैदा हुए रघुवंशीय राणाउत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाह-
रसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल रा-
जा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गु
णों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठने
वाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकु-
ट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराज जसवंत-
सिंह वर्मा से पाया है दान बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण
आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पा-
लना करनेवाले मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है
पढ़ीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मि-
त्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कवि बा-
रहठ कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमंथनी नाम टीका में छठा राशि समाप्त
हुआ और इस ग्रंथ का पूर्वायण भी समाप्त हुआ ॥
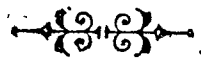
॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ शत्रुशल्य१९४।१ चरित्रप्रारंभ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ औपच्छंदसिकम् ॥

*सूचित सक १६८८ रत्न१९२।१ संभरी सो,
गलीवाड़ विहातभो तनूँकौं ॥
संगहि हो भावकेसरी१९५।१सो, करतभयो सिसु वै पेरेतकज्जैं ॥१॥
चित करि गोदातटी चिताकौं, सुभट सनाभि१सगोत्र२आदि संगी॥
तव सव विधि सहि दाहि ताकौं, अट्ठ८सँमा वपही लही वडाई॥२॥
सूनु सता१९४।१कौं तहाँ प्रसंसी,
लखि भाव१९५।१हिं नृप संग लैगयो हो ॥
वालवयहु अस्थिपाल वंसी, सवन धुरंधरभावमैं सराह्यो॥३॥
सोमानी तत्थ संभरीको, केसवदास अमात्य मंत्रकर्त्ता ॥
नृपको सव प्रेतकर्म नीको, भाऊ१९५।१कर करवाइ भद्र भास्यो४
सक वसु अहि अष्टि१६८८ अँव्द सोहू,
भो अतिमित्त दुकाल खानि भैको ॥
तँहँ केसव मंत्रि मुख्य तोहू, दलं निजमाँहिं सुकालही दिखायो॥५॥

॥ दोहा ॥

वालक हायन अट्ठ८ वय, भाऊ१९५।१ कुमर अभंग ॥
सता१९४।१ तनय सद्यो सुमति, सकलकृत्य विधिसंग॥६॥

---

* कहे हुए संवत् में चहुवाण रत्नसिंह ने कालियाव नामक स्थान पर शरीर छोडा १ भावसिंह साथ था जिसने वालक अवस्था में ही २ प्रेत कार्य किया॥१॥ वुद्धि पूर्वक गोदावरी नदी के किनारे पर चिता करके ३ सपिंड भाई ४ वर्ष ॥ २ ॥ ५ शत्रुशाल को पुत्र प्रशंसावाला वहां था ॥ ३ ॥ ६ मंगल ॥ ४ ॥ सोलह सौ अठ्ठासी के प्रमाणवाले ७ सम्वत् में ८ अत्यंत दुर्भिक्ष हुआ ९ भय की खानि १० अपनी सेना में ॥ ५ ॥ ११ वर्ष ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सब सिसुहत्थ सधाइ सचिव केसव सोमानिय ॥
भावं१९५।१ कुमर*निजभोन जबहि पठयो जो मानिय ॥
सब बल भटन बिसासि लखन न दयो दुकाल लव[1] ॥
अधिक बंटि वसु[2] अन्न[3] मुदित रक्खे सब मानव[3] ॥
इहिं नाम अपर[5] लहि हेतु[4] यह दलथंभन हुव जगविदित ॥
नृपसौंहु अधिक सूवा निखिल जिहिं सम्हारि लिय पुव्वजित
पुनि दिल्लिय लिंखि पत्र अरज पठई केसव यह ॥
अधिप रैन१९२।१गृह अधिप सता१९४।१ अव रहिय सु तासह[6] ।
हमहिं सिक्ख जो होइ जाइ बुन्दी लिवाइ जिहिं ॥
हजरत आइ हजूर चरन चुंबैं अवसर इहिं ॥
सुनि साह गिनि सु पटुतम सचिव अवहित समुझि प्रबंध उत
दिय देस सिक्ख बुंदिय दलहिं जब वह आयउ सबनजुत॥८॥
आतहि केसव एह सचिव बुन्दियपुर वेलसह ॥
सरल सता१९४।१ अवनीस मिल्यो हिय लाइ अमित मेह ॥
सुमति कहिय तब सचिव हृदय१९२।२ बाबा हकारहु[11] ॥
त्रपा[12] अधिक अब तदपि विहित[13] सैंदन[14] मन्नहु बहु ॥
सुनि सोहि हृदयनारायन१९२।२हु जानि न निस्त्रप[15] जात जन ॥
पठई कहाइ क्यों हठ परहु नक्कम[16] मन सुत नक्कसन[17] ॥९॥
नृपजननी इत नियत सुनत सुत मरन असह सहि ॥

---

* अपने घर (बुंदी) १ लेशमात्र २ धन ३ मनुष्य ४ कारण पाकर उस अमात्य का दूसरा नाम ५ सब ॥ ७ ॥ ६ सो.उस सहित अर्थात् उस शत्रुशाल सहित हमको सीख होवे तो ७ अत्यन्त चतुर ८ सावधान ॥ ८ ॥ ९ सेना सहित १० उत्सव से ११ बाबा हृदयनारायन को बुलाओ १२ लज्जा १३ उचित १४ सा-धन करने के लिये १५ निर्लज्ज, १६ नासिका; भीमसिंह शीषोदिया से युद्ध में भागजाने के कारण हृदयनारायन को नकटा की पदवी मिली थी १७ पुत्र को नासिका से अर्थात् पुत्र नासिका युक्त है और मैं नासिका हीन हूं ॥ ९ ॥

असन[1] रहित चउ४ अब्द[2] रंच[3] पय करि जीवत रहि ॥
मरिहैं भावी[4] समय सु तो हुव नव सोलह१६९२ सक ॥
पै तस सेस[5] हुव२ पुत्र अवहि पाहुन किय अंतक[6] ॥
सूच्योजु रूपनारायन१९२।२सु कुन्दी नायउ[7] लज्जवस ॥
वपु तजतभयो छिप्रहु[8] बहुरि तिमहि[9] मनोहर१९२।४अनुज तस ।१०।
मऊनगर तब महिप सचिवबानिज केसव सुत१ ॥
केसव१९२।३सुत तिन करन१९३।१हुवरहि हाकिम पठये द्रुत[10] ॥
वीर अखिल बलि कुल्लि सता१९४।१ सूचिय यह सासन ॥
रैसा[11] विभजि प्रभु रैन१९२।१ सवन अप्पिय प्रभुतासन ॥
सबही सम्हारि निजनिज सदन[12] आवहु स्वत्व जमाइ सब ॥
दिल्लिपप्रयान बनिहै द्रुतहि करिहो कज्ज बिलंबि कब ॥ ११ ॥
विभजि[13] रैन१९२।१नृप जबहि दायभागिन[14] वसुधा दिय ॥
निज नत्ती[15] तब नव९हि बंट पहिले क्रम व्याहिय ॥
सता१९४।१व्याह हुव सत्त७इंद्रसल्ला१९४।२दि अनुज इम ॥
महासिंह१९४।९लग सबहि[16] तरुन व्याहे संभव तिम ॥
विरचहिं विवाह भावी बहुरि स्याम१९४।८रहित अठ८हि सहज
सबकेहि भूत[17]१ भावी२ सुनहु बदियत व्याह१अपत्य२व्रज[18] ॥ १२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

भिक्षुक[19] वधिक जोधपुर भो उदय भूप,

---

१ भोजन किये विना २ वर्ष ३ थोड़े से दूध से ४ आगे आनेवाले समय में ५ बाकी के दोनों पुत्रों को ६ यमराज ने पाहुने किये अर्थात् मरगये ७ नहीं आया ८ शीघ्र ही ९ उसी प्रकार उसका छोटा भाई मनोहरदास मरा ॥ १० ॥ १० शीघ्र ११ भूमि के बंट करके १२ घर में अपना अपना अधिकार जमा कर आओ ॥ ११ ॥ १३ विभाग करके १४ दायभाग पानेवाले भाइयों (रत्नसिंह के पुत्रों) को १५ पोते १६ उत्सव सहित १७ पहिले हुए और आगे होवेंगे सो कहते हैं सो सुनो १८ सन्तान का चलना अर्थात् बढना ॥ १२ ॥ १९ भिक्षुक लोगों को मार नेवालों

जाको सुत तीजो३नृप दलपति नाम जास ॥
जाको बंस मालवमैं पावत प्रभुत्व१ भई,
तनया कनिष्ठा स्यामकुमरि१९४।१सनामा तास ॥
भावसिंह१९५।१जेठो१जनि पीछैं जो सपुत्ता भई,
आनी सता१९४।१आनी कुमरानी यह जेठी१आस ॥
छत्री यह ताहीकी बनाई छबिछाजैं भूप,
जामैं रवि राजैं रूप बारह३२रविभा४बिभास ॥ १३ ॥
दुर्गदुहिता जो प्रेमकुमरि१९४।२सनाम दूजी२,
चंद्राउति ब्याही जाइ रामपुर सत्रुसाल१९४।१ ॥
भाऊ१९५।१सौं कनिष्ठ सुत दूजो२भीम१९५।२ताके भयो ॥
द्वै२ही पति पहिलैं मरी ए जरी द्वै२ही बाल ॥
तेजसुत सिंहकी सुता सो तीजो३ सीसोदनी ॥
ब्याह्यो राजकुमरि१९४।३प्रतापगढ लग्नकाल ॥
कर्मवती१९५।१नाम एक१ कन्या भई ताके पीछैं,
ब्याह्यो जसवंत जाहि जोधपुरको नृपाल ॥ १४ ॥
चोथी४नित्यकुमरि१९४।४नरूकी चंद्रभाणसुता,
ब्याही जो कँकोर ताकै तीजो३तनै भगवंत१९५।३ ॥
सूरजकुमरि१९४।५सुभकुमरि१९४।५दुरनाम सो पै,
सोलंखिनी पंचमी५बिवाह्यो कुमरानी कंत ॥
नाहरखाँ नैनपुरवारेकौं स्वकन्या यह,
दुर्गापुर आइकैं सता१९४।१कौं दई बिलसंत ॥
अद्वितीय याहीको पतिव्रत जगत जान्यौं,
याहीपैं सता१९४।१ की कृपा निबही अवंधिअंत ॥ १५ ॥
आनँदकुमरि१९४।६नाम छट्ठी६कुमरानी औसैं,

१मालवा देश में राज्य करता है २रुई३बारह सूर्ति हैं४कान्ति का विशेष प्रकाश ॥ १३ ॥ ५ दुर्गदास की पुत्री ६ छोटा ॥ १४ ॥ ७ ककोड़ ८ प्रिय अथवा पति ९ नैणवा १० मृत्यु पर्यन्त ॥ १५ ॥

तुलसीबहादुरकी कन्या सो करोली जाइ ॥
व्याह्यो सत्रुसाल१९४१ ताके प्रकटे अपत्य पंच५,
कमनकुमारि१९५१२जेठी१ कन्या तिनमैं गिनाइ ॥
रानजगतेसके कुमार जेठे राजसिंह,
पीछैं यह कन्याहू बिबाही बिधि लग्न पाइ ॥
तीन३ सुत द्वै२ सुता सता१९४१नैं ए कुमारपन,
पाये ताके पंच५हि जे भूत१ अवभावी भाइ ॥१६॥
वाही जादवी६के सुत कन्यासो अनुज च्यारि४,
भारत१९५१४ स भूपति१९५१५ रु भूपालक१९५१६नाम तीन३।
चोथो४ ईस्वरीहरि१९५१७ कनी पुनि समर जेठी१,
पंच५ही प्रजा ए छठी६ पतनी प्रसव लीन ॥
रानी जा कमाउत चालुक्य हरिकेसीसुता,
नाम हरकुमरि१९४१७ बिवाहि दुलही नवीन ॥
आनी सप्तमी७ यह सता१९४१नैं कुमरानी जाकै,
कन्या तीन३ जानी भई स्यार२ तिनमैं बचीन ॥ १७ ॥
तीन३नमैं जेठी१ रामकुमरि१९५१३ कनी सो पीछैं,
बंधूगढ बाघेले अनोपकौं दई बिबाहि ॥
कल्ल्यानादिकुमारि१९५१४ मरी सिसु वय द्वितीय२,
तीजी३ गंगा१९५१५ पीछैं रानाँ जयसिंहकौं बिबाहि ॥
जाके पुत्र रानाँ अमरेस भो उदंत जाको,
भूप बुधसिंह१९४१२के चरित्रमैं उदित आहि ॥
सात७ कुमरानी ए कुमार सता१९४१ आनी आनि,
हैं वे नव९ रानी सुनिलेहु पै प्रसंगसाहि ॥१८॥
दिल्लीहाइ आतहि बिबाही जगतेसरान,
अप्प अनुजा जो चंद्रकुमारि१९४१८ नदीयनाम ॥

१ सन्तान २ बालक ३ आगे होनेवालोंकी रीति बताते हैं ॥१६॥ ४ ईश्वरीसिंह ५ कन्या ॥१७॥ ६ वृत्तान्त ७ प्रकाश ८ है ९ अब १० प्रसंग ग्रहण करके ॥१८॥

ईडरअधीस पुंज कर्मध्वजपुत्री फूल,
कुमरि१९४।९ बिबाही रानी नवमी९सु गुनग्राम ॥
कल्ल्यानादिकुमरि१९४।१० कबंध रामकन्या दसमी१०,
बिबाही भयो गोठैराही उपयाम ॥
कन्याएक तामैं लाडकुमरि१९५।६ भई सो मरी,
सिसुहि सता१९४।१के एहि तेरह१३ प्रजा ललाम ॥ १९ ॥
राजकुमरि१९४।११ सो फूलकुमरि१९४।११ दुनामधारी
एगारही११ रानी ब्याही मल्लनासी रढउरि ॥
लहोरी ईडरेची ब्याही बारही१२ बहोरि जाको,
लच्छी१९४।१२ नाम रानी नारायनकी सुता सो सूरि ॥
तेरही१३ पमारि रानी केसवसुता सो राम,
कुमरि१९४।१३ सनाम ब्याही कामना कविन पूरि ॥
बिठ्ठलकेभ्रात सिवरामकीसुता त्यौं गोरि,
ब्याही पन्नकुमरि१९४।१४ चउदहीँ१४ दे स्वर्न भूरि ॥ २० ॥
पंद्रहीँ१५ बिबाही स्यामकुमरि१९४।१५ सनाम मेघ,
चुंडाउतपुत्री पुर बेघम सुता१९४।१ पधारि ॥
सहजकुमारि१९४।१६ सदाकुमरि१९४।१६ दुनाम झल्ली,
नीबरी१कै गंगराट२ सोलह१६ बिबाही नारि ॥
मानकीसुता सो एही सोलह१६ सता१९४।१नैं बरी,
भूत१ सप्त७ भावी२ नव९ लीजिये श्रवन धारि ॥
तेरह१३ अपत्य भये तिनमैं प्रथम पंच५,
भूत१ अष्ट८ भावी षट्ट लोनसमैं बीच पारि ॥ २१ ॥
भाऊ१९५।१ भीमसिंह१९५।२ भगवंतसिंह१९५।३ भारत१९५।४त्यौं,
भूपति१९५।५ भूपाल१९५।६ ईस्वरीहरि१९५।७ तनय सात ॥

---

१ पूंजा नामक राठोड़ की पुत्री २ गुणों का समूह ३ पुर का नाम है ४ विवाह ५ सन्तान ६ सुन्दर ॥१९॥ ७छोटी ८ बहुत स्वर्ण देकर ॥ २० ॥ ९ पुर का नाम है ॥ २१ ॥ २२ ॥

तीन३हि कनिष्ठ मरे बालहि रु जेठे च्यारि४,
समज भये पै रह्यो साम१९५।२हीको कुल ख्यात॥
कन्या च्यारि४ कथित बिवाही सिसु द्वै२ ही मरी,
चोथी४ अरु छट्ठी६ बहुतासों इहाँ आवी बात ॥
भ्राता अट्ठ८इंद्रमल्ल१९४।२ आदिक सता१९४।१के व्याहे,
भूत१ भावी२ ते अब प्रजासहित आखेजात ॥२२॥
दूजे२ निजनाती इंद्रसाल१९४।२हिं रतन१९२।१दये,
मुख्य अनेघोरा१ टीपेरी२ त्यों कर्करोद३ थान ॥
याके भूत१ भावी२ सब व्याह दस१० जानों पुत्र,
बारह१२ कनी चउ४ भये पुनि समैप्रमान ॥
सीसोदनी जेठी१ कुसरानी नगराजसुता,
नाम रूपकुमरि१९४।१ बिवाही सो सहविधान ॥
भानकुमरि१९५।१ त्यों चंद्रकुमरि१९५।२ सुता द्वै२ ताकै,
सबनसों जेठी सूचियत हैं सुजान ॥२३॥
दूजी२ तिस चालुक कमाउत कनक कनी,
नाम हरिकुमरि१९४।२ बिवाही इंद्रसाल१९४।२ वीर ॥
तीन३ सुत जेठो१ गजसिंह१९५।१ रु अमान१९५।६ छट्ठो६,
अष्टम८ गुमान१९५।८ ए भये तस गुनगहीर४ ॥
बेनीदासपुत्री ऊनियाराकी नरूकी दीप-
कुमरि१९४।३ सु तीजी३ जाके नवमों९ करन धीर ॥
नाथाउति चोथी४ कृष्णाकुमरि१९४।४ दयालुसुता,
दूजो२ कृष्ण१९५।२ तीजो३ रनछोर१९५।३ सुत जाके सीर ।२४।
रट्ठउरि जुन्न्याकी कल्यानरायपुत्री,
पंचमी५ सो स्यामकुमरि१९४।५ बहोरि बरी इंद्रसाल१९४।२॥

---

१ ग्राम का नाम २ ग्राम का नाम ३ ग्राम का नाम ॥ २३ ॥ ४ गुणों का गम्भीर ॥ २४ ॥ ५ जून्या नामक ग्राम का ॥ २५ ॥

द्वै२ही सुत ताकै पुरुषोत्तम१९५।४ चतुर्थ४,
अनंदसिंह१९५।५ पंचम ए प्रकटे प्रसूतिकाल ॥
सेखाउति छठी६ इंद्रकुमारि१९४।६ बिहारीसुता,
सप्तम७कुसलसिंह१९५।७इक्क१हि तदीय बाल ॥
राजाउति सप्तमी७किसोरकुमरी१९४।७ त्यौं पुत्र,
बारहम१२रामसिंह१९५।१२इक्क१हि लिखायो भाल ॥ २५ ॥
सुरतकुमारि१९४।८ नाम त्यौंहीं निधिपालसुता,
जादवी बिबाह्यो ब्याह अष्टम८ करौलीढ़ंग ॥
जादव बहादुर सुता जसकुमारि१९४।९ ब्याह,
नव९ बिबाह्यो सर मथुरा अतिउमंग ॥
द्वै२सुत रु द्वै२ सुता अपत्य चउ४ ताकै भये,
नाहर१९५।१०दसम१०एगारहम११पहार१९५।११ संग ॥
आनंदकुमरि१९५।३तीजी३चोथी४जमुना१९५।४त्यौं भये,
ए चउ४अपत्य ताकै भाखे नाँहि क्रमभंग ॥ २६ ॥
नाम रुक्मकुमारि१९४।१०विवाह्यो जो दसम१०ब्याह,
राजाउति सोहू देवकरन सुता सुजान ॥
इंद्रसाल१९४।२ए दस१० बिबाही तियमाँहिँ बधू,
अप्रजं उभै२रु भई अष्ट८ हि प्रसूतिमान ॥
सोलह१६अपत्यनमैं आदि१।२अंत१५।१६द्वै२द्वै२कनी,
केती१ऊर्द्ध२केति१न अनूढपन छोरयो प्रान ॥
दूजो२कृष्ण१९५।२चोथो४पुरुषोत्तम१९५।४नवम९कर्ण१९५।९,
नाहर१९५।१०दसम१०च्यारि४ अप्रज सुतन थान ॥ २७ ॥
सेस गजसिंह१९५।१ रनछोर१९५।३ रु अनंदसिंह१९५।५॥
छट्ठो६ अमानसिंह१९५।६सु सप्तम७ कुसल१९५।७नाम ॥
अष्टम८ गुमान१९५।८एगारहम११ पहारसिंह१९५।११,

१सन्तान ॥२६॥ २बिना सन्तान३जननेवाली४विवाही ५ बिना विवाही ॥२७॥

सबसों अनुज रह्यो बारहम१२पुत्र राम१४।१२ ॥
चाले इन अष्ट८न के अन्वय बहुरि भावी,
संकुचन१ बर्द्धन२बनैं सो विधि तंत्र काम ॥
वाजे इन्द्रवंसी इंद्रसालउत्त२१।२५ हड्ड६१नमैं,
एकऊनतीसम२१भिदा सो लखिये ललाम ॥ २८ ॥
पीछैं इंद्रसाल१९४।२ रह्यो भीर हथी ग्राम ठाम,
इंद्रगढ ढंग निजनामसौं नयो बसाइ ॥
याको लघु नाती अमरेस१९६।२भयो भावी जानैं,
गोरं गंजि कीनो गढ खातोली अमल जाइ ॥
इंद्रगढ१ खातोली२ उभै२ ही मुख्यथान यातैं,
इंद्रसाल१९४।२अन्वयमैं सबसौं जुदे जनाइ ॥
तीजे३निजनाती वैरीसाल१९४।३हिं अधिप रैन१६२।१,
बलवंनि१अंबर्थंनि२मुख्य दिय भू बटाइ ॥ २९ ॥
याके भूत१भावी२नव६०व्याह तिनमाँहिं वधू,
तीन३भई सप्रज छ६ अप्रज निर्यति जोर ॥
जेठी१तँहँ केसरकुमारि१९४।१बलभद्रसुता,
भोजाउति चालुकीवरी दुलह वंधि मोरं ॥
दूजी२सारदूलसुता चालुकी दयालुकुमारि१९४।२,
भो गोविंद१९५।१जेठो१ सुत जाके तनु आयु दोर ॥
चंद्राउति तीजी३ चित्रकुमारि१९४।३ अचलसुता,
रठऊरि चोथो४हरकुमरि१९४।४ सुनौं व ओर ॥ ३० ॥
पंचम५ बिवाह अचलेससुता सीसोदनी सो,
अनोपकुमारि१९४।५सनाम वरी वैरीसाल१६४।३ ॥
जाके चंद्रकुमरि१९५।१सुता सहित दूजो२सुत,

---

१ भेद ॥ २८ ॥ २ गौड़ वंश के क्षत्रियों को मारकर ३ पुर का नाम ४ पुर का नाम ॥ २९ ॥ ५ भाग्य के बल से ६ मोड़ ॥ ३० ॥

मानी कुलतानी भयो नामकोंरि जो गोपाल१९५।२ ॥
छट्ठी६ स्यामकुमरि१९४।६नरूकी जैतकन्यां बरी,
सीसोदनी सत्यभामा१९४।७सप्तमी७ बिहित काल ॥
उद्दलजा अष्टमी८ मघाकुमरि१९४।८ चंद्राउति,
नवमी९प्रमारी वीरकुमरि१९४।९ मराली चाल ॥ ३१ ॥
राघवसुता सो जाके तनया अघाकुमरि१९५।२,
ब्याहे नव९ तोहू तँहँ तीन३ कैं प्रजा ए च्यारि४ ॥
जेठो१ सुत द्वै२ सुता तऊ त्रय३ सिसुहि मरे,
सो गोपालसिंह१९५।२ रह्यो एक१ ही कुलप्रसारि ॥
बैरीसालउत्त३०।२६ ताकेंकुलके कहाये भये,
हड्ड१नमैं भेद यह तीसम३० प्रमान धारि ॥
स्वामीद्रोह पापकरि बिपदाबिगारी ऐसी,
राजसिंह१९४।४ संतति सुनो अब लुपनहारि ॥ ३२ ॥
पाटवें प्रगल्भ जानि सोदर सता१९४।१को ग्राहि,
रैन१९२।१ भूप बख्स्यो हरीगढ बिदित धाम ॥
ब्याह्यो पंच५ब्याह यह तिनमैं सदाकुमरि१९४।२दूजी२,
कूरमीकैं भो सुत त्रय३ सुनौं ब नाम ॥
जेठो१विष्णुसिंह१९५।१मधुसिंह१९५।२दूजो२तीजो३पत्ता१९५।३,
अप्रज मर्‌यो सु३ द्वै२हि जेठे रहे कुलकाम ॥
पुत्र विष्णुसिंह१९५।१कैं भो पापी बलभद्र१९६।१अनिरुद्ध१९६।१,
कें समै जो हाइ स्वामीसौं मुरयो हराम ॥ ३३ ॥
पुत्र मधुसिंह१९५।२कै भो अनुपमसिंह१९६।१जोही,
खैबरके खेत पर्‌यो भूप बुधसिंह१९७।१भीर ॥
ताकैं नाती तीन३हि बंखामैं प्रभुसंग रहे,

१ कुल का विस्तार करनेवाली २ उदयसिंह की पुत्री ३ हंस के समान गति वाली ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ चतुर ५ बुद्धिमान् ६ विना संतान मरा ॥ ३३ ॥ ७ अफगानिस्तान में प्रवेश करने के हिमालय पर्वत के घाटे के युद्ध में ८ आपत्ति में

दोल१९७।१ सुत नाहर१९८।१ उमेद१९८।२ रु खुसाल१९८।३ वीर ॥
मध्यम उमेद१९८।२ यह सूरति उमेद१९८।५ संग,
बुन्दी पहिले रन रह्यो त्यों लही गोलांपीर ॥
इनको रह्यो न वंस संख्यामैं लयो न यातैं,
कहिहु दिखायो कछु कलना समास सीर ॥३४॥
पंचम५ पउत्त मुहुकम१९४।५ कों महिप रैन१९२।१,
दुर्गापुरी दीनी जो वै जाहिर दुधारी द्रंग ॥
सोह गिनि अल्प लोभी सेइकैं सुजा४०।२ कों आयो,
ताहि तबै दीनों सता१९४।१ करउर ताकि तंग ॥
याके भून१ भावी२ सप्त७ ब्याह पै जनी चउ४ मैं,
बारह१२ अपत्य सुत अष्ट८ चउ४ कन्या संग ॥
पुत्री दुव२ ब्याही त्यों मरी दुव२ अनूढ ताही,
पुत्र८ नमैं प्रसरे छ६ के कुल इ जितजंग ॥३५॥
प्रथम बिबाह ब्याह्यो मुहुकम१९४।५ सिंह सुता,
पूर्णमति१९४।१ नाम उनियारेकी नरूकी जाहि ॥
जोरावर१९५।१ जेठो१ सुत पंचम५ कनकसिंह१९५।५,
छट्ठो६ सगतेस१९५।६ इन तीन३ न प्रसू सो आहि ॥
नाथाउत चालुक दयालुदासपुत्री नाम,
कल्यानादिकुमरि१९४।२ लई सो घर दूजी२ ब्याहि ॥
सप्तम७ तनूज जगमोहन१९५।७ रु कन्या दोइ,
प्रकटी त्रयी३ यह तदीय गर्भ अँवगाहि ॥३६॥
इंद्रसाल१९४।२ साली नाथकुमरि१९४।३ सनाम वरी,
तीजे३ ब्याह चालुक क्रमाउत कनकगेह ॥
चौथे४ ब्याह अंगजा कबंधज अनंदवारी,

---

१ एक प्रकार की पट की पाग ॥ ३४ ॥ २ पोता ३ अब ४ युद्ध जीतनेवाले यह रामसिंह का विशेषण है ॥ ३५ ॥ ५ इन तीनों की माता है ६ पुत्र ७ ब्याह लेकर ॥ ३६ ॥

कर्मवति१९४।४ नाम परन्यौं तिय निंयतनेह ॥
गोवर्द्धन कूरमकनी त्यौं व्याह पंचम५ राजाउति,
व्याह्यो फूलकुमरि१९४।५ सुलग्न लेह ॥
तनय गरीब१९५।२ दूजो२ तीजो३ जसवंत१९५।३ कृष्ण११५।८,
अष्टम८ रु तीजी३ सुता च्यारि४नकी माता एह ॥३७॥
पट्टिमादिदेवी१९४।६ नाम रानाउति छट्टी६ बरी,
तनय कल्यान१९५।४ चोथो४ चोथी४ सत्यभामा१९५।४तास॥
सप्तमी७ बिवाही लाडकुमरि१९४।७ कबंधकन्या,
एह७ अरु तीजी३ चोथी४९ त्रय३ अतोकै आस ॥
कन्या लाडकुमरि१९५।१ निधाना१९५।२गतनामा १९५।३तीजी३,
पुत्रनमैं द्वै२ अतोक कृष्ण१९५।८ रु गरीबदास१९५।२ ॥
बंस खट६के जे कजे मुहुकमसिंहउत्त२१।२७,
भेद इकतीसन३१ सो हुइ६१नमैं धारैं भास ॥३८॥
रैन१९२।१ नृप छट्टो६ स्वीय नाती जो उदयसिंह१९४।६,
ताकँहँ बिबाहिदयो गोहट्टक१ आदि थान ॥
संतति भई न तास सोही लै निंदान ताके,
व्याहहु कहे न जानि व्यर्थ बनतो बितान ॥
नाती सूर१९४।७ सप्तम७कौं लोहि हित नगर दीनौं,
दीनौं स्याम१९४।८ अष्टम८कौं थानथान जलदान ॥
सूर१९४।७के सुता इक१ सो बिंझोली बिवाही रहे,
असुत उभैरही यौं न भाखे इन्हं व्याह मान ॥३९॥
नवम९ पउत्त महासिंह१९४।९हिं पितामहनैं,
जज्जाउर दीनौं हरपालपोते५।१ पच्छे पारि ॥
व्याहयो भूत१ भावी२ व्याह अष्टम८ यहेहू तहाँ,

---

१ निश्चय ही स्नेह करके ॥ ३७ ॥ २ बिना बालक हुई अर्थात् इसके सन्तान नहीं हुआ ३ कान्ति ॥ ३८ ॥ ४ पोता ५ कारण ६ विस्तार ॥ ३९ ॥

सस्सू१६३१९ कुल१ नाम२ नाथकुमरि१६४१।१ सु जेठी१नारि॥
चंद्रावति दूजी२ ब्याह्यो वदनकुमारि१६४१।२ जासैं,
तीजो३ सुत लालसिंह१९५१।३ जनन्यो रनजितारि॥
भोजावत उदय सुलुक्ककुसुता तीजी३ जिहिँ,
वदनकुमारि१९४१।३ तोक पंच५ जनैं गर्भ धारि॥४०॥
जेठो१ मान१९५१।१ चोथो४ जय१९५१।४ इ२ सुत त्रि३ कन्या तहँ,
मान१ कृष्णा२ अजब२ कुमारि११५१।१-१९५१।२-१९५१।३ क्रमतैं ए नाम॥
रहडारी१९४१।४ चोथी४ गोरि पंचमी५ महाकुमरि१९४१।५,
हठीसिंह१९५१।५ पंचम५ तनै जिहिँ जँठर जामैं॥
छट्ठी६ नाथकुमरि१९४१।६ नरूकी जाकै चोथी४ सुता,
अन्वयकुमारि१९५१।४ ऐसैं सप्तम७हू उपयाम॥
कुंपावति नाम रूपकुमरि१९४१।७ वरी सो सुता,
स्यामवारी जानैं प्रजा जुगरहि लही ललाम॥४१॥
क्रमतैं द्वितीय२ सुत ताकै भो कनकसिंह१९५१२,
पंचमी५सुता सो व्रजकुमरि१९५१।५ बखानीजात॥
अष्टमी८ अचलसुता कुंपावतिही वरी स,
अक्षयकुमारि१९४१।८ जरिहैं जो पति के निपात॥
एह८ अरु जेठी१ चोथी४ अग्रज वधू ए तीन३,
पंचकै प्रजा दस१० सुता५ सुत५ सम गिनात॥
मानकुमरी१९५१।१ मुख सुता त्रय३ वदत ब्याही कहत,
कितेक ब्याही पंच५हि विदित बात॥४२॥
कनक१९५१।२ द्वितीय२ लालसिंह१९५१।३ सु तृतीय३ सुत,
अग्रज उभै२ही ए सता१९४१।१के संग आये काम॥

१ युद्ध में शत्रुओं को जीतनेवाला २ सोलंखी उदयसिंह की पुत्री ३ बालक ॥ ४० ॥ ४ उदर से ५ जन्मे ६ विवाह ७ सन्तान ॥ ४१ ॥ ८ आदि ॥ ४२ ॥

मान१९५१२ जयसिंह१९५१४ हठीसिंह१९५१५ इन तीन३नके,
बंस जे बढे ते महासिंहउत्त३११२८ धारैं नाम ॥
बत्तीसम३२ भेद प्रकटानौं एह इद्द६१नमैं,
पैंतीस३५हि इद्द६१नके हेलिं अधिप राम२०३१४ ॥
केसरी१९४१० कनक१९४११ नगराज१९४१२ रामसिंह
१९४११३च्यारि४,
गोपीनाथ१९३१२तनय मरे सिसु विधिहि बाम ॥ ४३ ॥
पट्टिमादिदेवी१९३१५राजकुमरि१९३१५दु२नामवारी,
पंचमी५जो व्याही प्रिया पट्टनि नगर जाइ ॥
ताही कुमरानी तोमरीमैं सुन स्याम१९४१८,
तनया सदाकुमरि १९४१९ नाम पाइ ॥
प्रकटभई सो वयपातहि पितामहनैं,
रान जगतेसकौं प्रथासौं दई परिनाइ ॥
ऐसैं गोपीनाथ१९३१२के तनूज१ तनूजा२ए दस१०,
व्याहे रैन१९२१२सत्तन७कौं बंटहु दये बटाइ ॥ ४४ ॥
रैन१९२१२ जब बुंदीसुत तीन३न बिभाग दये,
ऐसैं तबही दै सत्त७ नत्तिन विभाग एस ॥
पीछैं जाइ दक्खिन जई हैं जुग२ अब्दपीछैं,
कालीवाड ग्रामपर्यो गोदाके तटप्रदेस ॥
उचित काइ अष्ट८द्वापर्न बे भाऊ१९५१२हाथ,
केसव सचिव न दिखायो ह्यौं दुकाललेस ॥
साह सिक्ख पाइ दलथंभन कढाइ पीछैं,
बुंदी आइ कीनौं सज्ज संक्रम सता१९४१२नरेस ॥ ४५ ॥
बुंदी दल आउतही हाकिम अपर जात,
दक्खिनके मिच्छ१ मरहट्ठ२ पुनि पैनैं होइ ॥

---

१ सूर्य ॥ ४३ ॥ २ रीति से अथवा प्रसङ्ग से ३ पुत्री ॥ ४४ ॥ ४ पोतों का ५ दो वर्ष पीछे ६ गोदावरी७नदी के प्रदेश में ८वर्ष ॥ ४५ ॥ ९ अन्य१०तीक्ष्ण हुए

खुरमसे३।९।२ लेंटायत अबहि बनैं ५ ताके,
थान मेरुमालाबिच लोदीखाँ जिहाँन१ पाइ ॥
दिल्लीपति लोदी५वहलोल२७ पहिलैं भो ताको,
इब्राहीम२९ नाती हन्यों बाबर३० प्रमादी जोइ ॥
बिक्रमके साक ससि अष्ट सर भू१५८१मैं लई,
मुगलन दिल्ली खरे खग्गन खलन खोइ ॥ ४६ ॥
राज्य करि पीढी तीन३ तबके निरंत भये,
दिल्लीनैं पठान अफगानलोदी सत्वहीनैं ॥
ओरओर छाये मुगलन६के प्रतापआगैं,
खिनखिंन छीन भूति दिनदिन भाँसे दीन ॥
नीतिअंध खुरम३।९।२पितासौं प्रतिकूल भयो,
होत साह सोही राह सोहागहि अंध्व तीन ॥
लोदीखाँ जिहाँन१ सुत च्यारि४न सहित सज्यो,
दक्खिन सहायसौं पताकिनी प्रकर पीनैं ॥ ४७ ॥
जवन कहै जे नृप रैन१९।३।१तैं करार करि,
तेहू ततकाल बल बुंदीकौं गयो बिचारि ॥
लोभ लगि के भये सहायक पठान संग,
के रहे निकेतैं सूलमंत्र दै रचन रारि ॥
औरहु अनेक मरहट्ठ मुख तैसी ताकि,
पुव्व उपकार अपनैंको मन जोर पारि ॥
ठौंठौं लूटि दावन लगे यौं मुगलेस थानौं,
धोरीखाँ जिहाँन अफगानकौं निमित्त धारि ॥ ४८ ॥
च्यारिअहि अनी करि पठानके सुतहु च्यारि४,

---

१ युद्ध करनेवाला २ मेरु माला यह पृथ्वी का विशेषण है ३ जिहांनखां लोदी ॥ ४६ ॥ ४ नियुक्त ५ पराक्रम हीन ६ क्षण क्षण में विभूति का नाश होकर ७ दीखे ८ विरुद्ध ९ मार्ग १० सेना और परगह ११ पुष्ट ॥ ४७ ॥ १२ कितने ही घर में रहे १३ आदि १४ पहला उपकार देखकर १५ ठाम ठाम (जगह जगह) १६ कारण ॥ ४८ ॥

जनकनिदेस१दक्खिनीन उपदेस२ जोर ॥
स्वामि होनलागे बुरहानपुर१सूबा सीस,
वारिधिमैं वाड़वलौं अटिअटि ओरओर ॥
भिन्नभिन्न भ्राता जे मचाइ भय मग्गमग्ग,
अग्गअग्ग अवधि अवंती१लौं रचाइ रोर ॥
डमर१डकैती२मैं पुरोगति परतभये,
कीलित करतभये दक्खिनदिसाकी कोर ॥ ४९ ॥
समय जिहानगीर३८।१केहुसौं बिसेस बढि,
दावा करि दिल्लीपैं यौं दक्खिननि डारयो द्रोह ।
आसफ१ अमात्य दंडनायक महावत२से,
सुनिसुनि साहजहाँ३९।२सहित मिलानैं मोह ॥
केही प्रतिमल्ल भट भेजे सुर सज्जकरि,
लोहँचाखिचाखि ५ मुरे पै न फल दीनौं लोह ॥
बुंदीपति सो सुनि सता१९४।१हु इत सेना सजि,
तार्खिन विचारयो दिल्लीजावंन जुराइ जोह ॥ ५० ॥
केसव१अमात्य भ्राता इंद्रसाल१९४।२वेरीसाल१९४।३,
काका जिन जेत१९३।१सवला१९३।१दिक लै संग एस ॥
राजसिंह१९४।४मुहुकम१९४।५ उदय१९४।६रु सूर१९४।७आदि,
देस निज भ्राता राखे अनुज बली बिसेस ॥
माधव१९३।२बुलायो जो न आयो कछुब्यौज करि,
भिन्नपन भायो सो बिहायो तब संभरेस ॥
सबल सुहायो रजोगुन छक छायो ऐसैं,

१ समुद्र में २ वड़वाग्नि के सदृश ३ भय, उपद्रव और डकैती में अग्रणी होकर दक्षिण दिशा को रोकी ॥ ४९ ॥ ४ फैलाव वा द्रोह ५ सेनापति ६ मुकाबिला करनेवाले ७ शत्रुओं के शस्त्र चख चख कर पीछे मुड़े परन्तु इनके शस्त्रों ने फल नहीं दिया ८ उस समय ९ योद्धा इकट्ठे करके ॥ ५० ॥ १० रक्षा करने वाले ११ मिस करके १२ छोड़ा अर्थात् बुन्दी के राजा ने उसका त्याग किया

आयो आप दिल्ली सता१(९४११)बुंदीपुरी वैसुवेस ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

इम पत्तो दिल्लिय असह, सता१(९४११)बहुमद१सूर२ ॥
सहि उचित मिलि साहसन, पायो आदर पूर ॥ ५२ ॥
हिंद जहाँगीर३(८१)हि दयो, पहिलैं रत्न१(९२१)नृपाल ॥
सिवप्रसाद दिय साह सुहि, हत्थी हड्ड(६१)हिं हाल ॥ ५३ ॥
अँर्वादिक इतरहु उचित, नृपहिं अप्पि जवनेस ॥
सादर तँहँ रक्खिय सता१(९४११), वसु जल बादर वेस ॥ ५४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधाधवशत्रुशल्यचरित्रे अवाप्तराज्यशत्रुशल्यस्य दक्षिणादेशाद्बुन्द्यागमन १, ससहोदरशत्रुशल्यपाणिपीडनपुरःसरसन्ततिकथन २, प्राप्तबुन्दीराज्यदिल्लीगतशत्रुशल्यस्य यवनेशपारितोषिकप्रापणं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदितस्त्रयोदशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१३ ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पुव्वहि अष्टम८ रैन१(९२१)पहु, सता१(९४११) कुमर संबंध ॥
किय उदैपुर प्रीति करि, समकुल स्थापितसंध ॥ १ ॥
बुंदीसन दिल्ली बहुरि, चढत सता१(९४११)नृप चाहि ॥
तबहि कहाई रान तुम, वहिनी जाहु बिवाहि ॥ २ ॥

---

१ भूपति ॥ ५१ ॥ २ प्राप्त हुआ ३ दानी ॥ ५२ ॥ ४ हाथी ॥ ५३ ॥ ५ घोड़ा आदि ६ धन रूपी जल से ७ बादल (मेघ) से विशेष होकर ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का राजा होकर दक्षिण से बुन्दी आना १ शत्रुशाल और शत्रुशाल के भाइयों के विवाह और सन्तान आदि का कथन २ बुन्दी का राज्य पाकर दिल्ली गये हुए शत्रुशाल का बादशाह से खिलत पाने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१३ मयूख हुए ॥

८ प्रभु रत्नसिंह ने ९ प्रसिद्ध प्रतिज्ञावाले ॥ १ ॥ २ ॥

भेजि स्वजन बुंदी भनत, त्वरा[1]-रान जगतेस ॥
कहिय सता१९४।१ दिल्ली गमन[2], आगत पहिलैं एस ॥ ३ ॥
तातैं मिलि जवनेस तक[3], समय विधेय[4] सधाइ[5] ॥
व्याहन ऐहौं तुम वहिनि, अर पच्छो मैं आइ ॥ ४ ॥
पत्तो इम कहि हड्ड६१ पहु, दिल्लीनामक दंग ॥
लंचा१[6] दै वखसीस२[7] लिय, सब समुचित हित संग ॥ ५ ॥
दुर्दस दक्खिन देसकी, पत्ती तवहु पुकार ॥
लोदीखान जिहान लघु, हुक्म चलावनहार ॥ ६ ॥
साह कहिय तब संभ्रंरहिं[8], जाहु सता१९४।१ वरजोर ॥
जनपद[10] दक्खिन करहु जय, इहिं छिन[11] सुख्म न ओर ॥ ७ ॥
सासन यह केसव१ सचिव, जैत१९३।१ पितृव्यक जानि ॥
संसर्के[12] करि आसफ सचिव, आरजकराई आनि ॥ ८ ॥

॥ राजसवतिका ॥

जुरि दलथंभन१ जैत[13]२ दुहुँ२ न जब आसफखान प्रवोधि वजीर ॥
इम अवसरं[14] विन्नति करवाई संगहि ठानि महावत सीर ॥
नत्तीको[15] संवंध रत्न१९२।१ नृप उदयनगर पुव्वहि कृत आस ॥
काल होत चिर रान त्वँरा[16] किय जानहु निकट लग्न अवजास
यातैं भूप व्याहि हुंत आवहिं सब निदेस सक्कहि धरि सीस ॥
दुवरहिं[17] अप्प इम सिक्ख दिवावहु मास कछुक ग्रह जान महीस ॥
आसफ१ सचिव चमूप महावत २ जंपिय इम दोउ२ न तब जाइ ॥
हजरत सिक्ख सतां१९४।१ कँहँ व्याहन पहिलैं देहु लग्न ढिग पाइ१०॥

१ शीघ्रता २ शत्रुशाल ने कहा कि दिल्ली का जाना पहिले आगया है इसकारण ॥ ३ ॥ ३ पर्यन्त; अथवा देखकर ४ उचित ५ शीघ्र ॥ ४ ॥ ६ नजराना ७ उचित ॥५॥ ८शीघ्र॥६॥९ चहुवाण को १०देश ११इस समय ॥७॥१२ आसफखां से मिल कर; अथवा वाकिफ करके ॥ ८ ॥ १३ केशवदास सोमाणी का उपपद है १४ समय पर १५ महावतखां को सामिल करके अरज कराई कि रत्नसिंह ने पोते का १६ है १७ शीघ्रता ॥९॥ १८ शीघ्र १९ कहा २० शत्रुशाल को ॥१०॥

है किन ओर लग्न इहिं*हायन साह कढ्ढिय आनहु तिन्ह सुद्धि ॥
विन्नति किय†पराक्रन इहिं‡बच्छर व्याहन लग्न चतुष्टय ४ बुद्धि ॥
अक्खिय साह सु सुनि कुतआइ रु विरचहु दूजे२ लग्न विवाह ॥
खानजिहांन जित्ति पहिलैं खल नृपहिं विधेय निदेस निवाह ।११।
तोपन विनु सब लूट लहहु तुम तनंहु नव्य जस पुहवि पतान ॥
आतहिंवे लिक्ख हम अप्पहिं व्याह भूप सव्वहु सविधान ॥
केसव१ जैत२हुकम सो स्वीकारि नृपहिं निवेदि चित्त दिय नीति ॥
सुनि यह न्त्रुसल्ल१९४।१ पहु सज्जिय बल निज वीर१ बारन२रु बीति
कुल्लि लउ सन करन१९३।१ पितृव्यक भोज१९१।२ तनय केसव १९२।३ सुत भीर ॥
बुल्लिय तिम हरिसिंह१९३।१ पितृव्यकं बुंदीसन इतरंहु ए वीर ॥
बुद्धिचंद१९२।३ सुत कृष्ण१९३।१ समरबुंध तिम दयालु १९०।१ सुत भूपति१९१।१ तत्थ ॥
पर दयालु१९२।१ बलवंत१९३।१ तनै पुनि सुर्जन१९०।१ अनुज राम १८९।२ कुल सत्थ ॥ १३ ॥
सुर्जन १८८।१ अनुज भीम १८८।२ कुलउद्भव सूर सनाभि हठी १९२।१ रन संत ॥
पूरन१८८।३ दूर हम्मीर१९१।१ वंस पुनि जो सुत स्याम१९३।१ पिता जसवंत१९२।१ ॥
भजनेरी पति सारन १८६।१ कुलभव केसव १८९।२ सुत पित्थल १९०।१ जयकाज ॥
एह सगोत्र१ सपिंड२ सेस इम रन इतिमुख्ख बुल्ले रनराज ॥ १४ ॥
विदित गौर रनछोर१ आदि वलि बुंदीसन असगोत्र बुलाइ ॥

---

* इस वर्ष में † ज्योतिषियों ने ‡ इस वर्ष में चार लग्न हैं ॥ ११ ॥ १ फैलाव २ नवीन ३ हाथी ४ घोड़े ॥ १२ ॥ ५ कांका ६ अन्य भी ७ युद्ध में चतुर ८ दूसरा दयालसिंह ॥ १३ ॥ ९ इत्यादि ॥ १४ ॥ १० गौड़

रक्खे[1] इतर देस सुख रक्खउ भट रच्छक समुचित[2] हित भाइ ॥
नृपउच्छाह बढावत[3] बल निज साहहु स्वबल.अयुत१००००लिय संग
प्रथित[4] सज्जि इन सबन चल्यो पहु उफनत दक्खिन.बिजय उमंग १५
आसपास गढगढन त्रास अति पथ संगत भूपन हिय पारि ॥
सरिता लंघि नर्मदा सत्वर[6] रचिय सता१९४११लोदिन प्रति धारि ॥
खानजिहान सुनत सुत खग्गन सम्मुह जुरयो सबन.सह सज्जि ॥
दारुन कलह मच्यो तहँ दुवर दिस बंब[7]१ पटह[8]२ काहल[9]३ बल
सज्जि ॥ १६ ॥
डोलि अवनि डुंगर डगमग्गिय भग्गिय भैर्ग[10]१ समोहितभाव[11] ॥
लचि आलुक[12] तालुक[13] भर लग्गिय चंडीर चित्तहु जग्गिय चाँव[14] ॥
नच्चहिं कलहबिसारद नारद३ महती तंतिन कोने[15] मिलाइ ॥
लखहिं प्रेत४डाकिनि५बेताल६रु जोगिनि७बीर[16]८जातु[17]९गन जाइ१७
बनि कुरूप१पररूप२बहूरद३थनमुख४ ह्रस्व५ दिग्घ६ कृस७थूल८[18]॥
बहु गावहिं१कति वाद्य बजावहिं२कति लावहिं३ तंडव अनुकूल॥
अयुततीन३०००० दल पिक्खि सता १९४१ इत टक्करदैन गहिय
रन टक ॥
उत पुराया१बीजापुर२आदिक अज्ज[19]१ रु जवन२रुपे बनि एक।१८।
जे उत संग लगे बनि जन्य[20] रु वर वह खानजिहान बनाइ,
तनय चतुष्क४ समेत सुपै तहँ इच्छत हुव दुलही भुव आइ ॥

---

१ अन्य २ उचित ३ बादशाह ने भी अपनी सेना को ४ प्रसिद्ध ॥ १५ ॥ ५ मार्ग में आये हुए राजाओं के ६ शीघ्र ७ नक्कारा ८ ढाल ९ वाद्य विशेष ॥ १६ ॥ १० शिव के ११ समाधिभाव १२ शेषनाग झुककर उसके १३ मस्तक पर १४ उत्साह १५ नखी (मजराफ) अर्थात् नारद ने महती नामक वीणा के तारों से नखी मिलाकर नाच किया १६ बावन वीर १७ राक्षस ॥ १७ ॥ १८ कुरूप से लेकर थूल पर्यंत बेताल आदि के नाम हैं १९ आर्य्य ॥ १८ ॥ उस खानजिहान को दुलहा बनाकर उधरवाले २० जानेवाले (बराती) होकर साथ लगे वह चार पुत्रों सहित भूमि को दुलहिन बनाकर चाहने लगा परंतु उस समय यह दुलहिन

पै दुलही सु चहत अप्पन पति जव दिल्लीपति साह जिहान२९।२,
भय धरि चित्त सता१९४।१से भूपन इक्खे नहि माहि उपपति आन ॥ १९ ॥
वर करि जार तदपि दुल्लह बनि इम जुट्यो लोदी अफगान,
संग लये बलवान सहायक दक्खिनके सब विजयनिदान ॥
जुग२दिन तोपन जुज्झि पहर जुग२वलि वाजिन करी गहि वग्ग
पहुँच्यो अरिन अनीक सता१९४।१ पहु अप्प तथापि सबन सन अग्ग ॥ २० ॥
प्रहरन सर१ तोमर२ असि३ पट्टिस४ संख्य असंख्य चले दुव२सेन
इक१ मुहूर्त अवमर्द मच्यो इम वे१ न बढे इत तिम उत ए२न ॥
जे बीजापुर आदि जवन जव कढत रतन१२९।१सन विरचि करार
पीवले लखि झुन्डीस पताकन वे हुव भिन्न वचन अनुसार ॥ २१ ॥
कहिपठई नृपतैं हयहंकहु जिन संकहु हमकों अरि जानि ॥
खलन गंजि खर खग्ग चलावहु इमदिस बढिआवहु नहि आनि॥
अयुत१०००० साहबल निजबल द्विअयुत२०००० हंकि तबहि भट तीसहजार३००००,
प्रविस्योसूर सता१९४।१ पर पृतना भीम पटकि लोदिन सिर भार ॥ २२ ॥
चले नचत संगहि डाकिनि१ चय वलि के ताल देत वेताल२,
जोगिनि३ गात बजात वीर४ जहँ भनत वाह दुर्गा१ ससिभाल२
चंद्रहास हहु६।१न कर चल्लिय वेरिन उरसल्लिय प्रतिवीर,

शाहजहां को ही पति चाहती थी क्योंकि छत्रशाल जैसे राजाओं का भय करके अन्य उपपति को नहीं देखती थी ॥ १९ ॥ १ कारण ॥ २० ॥ २ कटारी ३ उस युद्ध में ४ दो घड़ी तक भयंकर युद्ध हुआ ५ पीले रंग की ध्वजाओं को देखकर रत्नसिंह से किये हुए पहिले नियम के अनुसार जुदे होगये ॥ २१ ॥ ६ शत्रुओं की ७ सेना में ॥ २२ ॥ ८ समूह ९ शिव के द्वारपाल (अकस्मात् आकाश में दीखनेवाले भूत विशेष) १० शिव

बढे ग्रयहि रनछोर१ गोरबलि[1] नृपति२ रु हरि३ काका नासीर[2]।२३।

कटक ग्रद्द२ लखि सिथिल प्रसभ करि बल दल३ खिल उत-केहु बढाइ,

खानजिहानकेहु सुत चउ४ खिजि ग्रग्ग भये जुज्झन ग्रकुलाइ ॥

ज़वन कोलबाहिर हे तिन जुत हनुमत१ स्याम प्रमुख मरहट्ठ,

ठहें सहायलोदिनसह इंकिय ग्रतिवल दिग्गिभ[3] घुज़ावत ग्रठ८।२४।

जँहँ प्रभुराम२०३।४ उभय२ दिसतैं जुरि मच्यो ग्रसह ग्रनुपम ग्रवमर्द ॥

इततैं जिम दक्खिन ग्रपनावहिं क्रमि उतरैं तैं जिम दैन कपर्द[4]॥

मिल तन सूरन दुद्व१ सिंता२ मित प्रहरिय प्रहरन प्रचुर प्रहार,

समर जुरे जे कथित सिवादिक बिलसे निजनिज उचित बहार।२५।

संकर१ सयन सूरसिर संचत साधक हुव चंडो२ हु सहाय,

महती[6] सारिन भुल्लि पिसुँन३मुनि केवल बिहसि झुकावत काय

प्रेत१ दास डाकिनि५ दासी पुनि दासनप्रति बेताल६ दुराइ ॥

जोगिनि७ बीर८ जातु९ कं[8]९न पले ज़ँहँ जो जिहिं इष्ट देत सु-हि जाइ ॥ २६ ॥

कांड[10]१कुंत[11]२कासूं[12]३करवालक[13]४कट्टार५रु खंजर६छुरिका७दि ॥

बाहन[14]१सादि२निसादि[15]३न बाहत बहु जादिन[16] बादि१न प्रतिबादि२

कहत दुरदिस भरहर कर कंडू[17] उतरन ग्रह निठिन किय ग्रज्ज ॥

---

१ गोड़ २ ग्रग्रणी (सब से ग्रागे) ॥ २३ ॥ ३ दिशा के हाथियों को ॥ २४ ॥ ४ शिव को ५ दुग्ध में शक्कर मिले तिस प्रकार मिलकर बहुत शस्त्रों का प्रहार किया ॥ २५ ॥ महादेव अपने हाथी से ६ महती नामक वीणा के दंड को भु-लकर ७ नारदमुनि (नारद का स्वभाव इधर उधर चुगली करने का होने के कारण उसको यहां 'पिशुन मुनि' लिखा है) ८ मस्तक ९ मांस ॥ २६ ॥ १० बाण ११ भाला १२ बरछी १३ खड्ग १४ घोड़ों के सवार १५ हाथियों के सवार १६ उस दिन. कहते हैं कि दिन के उतरने पर भार का हरनेवाला (संध्या) कार्य्य ग्रौर हाथ से शरीर की १७ खुजली मिटाने का कार्य्य ग्रार्य्यों ने कठिनाई से किया ॥ २७ ॥

तिमहि मिलत मिलन मित तकितकि सकिसकि जयसद्दन गन
सज्ज ॥ २७ ॥

कति वपुहेति विंसत हिय विकसित चिन्हित जिम समानुजचक्र।
जड़जन दुसह दुकाल परैं जिम तकि उपधान्य पूपिकाश्तक्रर. ॥
जहँजहँ घात पात निज जानत मिलि भोंहन चुंवत उठि मुच्छ ॥
अप्पहि धन्य मन्नि लखि अच्छँरि तक्कत जिन्ह जिय. प्रिय तिन्ह
तुच्छ ॥ २८ ॥

कहुँपर हेतिछिन्नि निज सिर कर गहि लंचाकहि जजंत गिरीस
सिर निज कहुँ तिलतिल लखि सूचत सैन करि न अक्खय मम
सीस ॥

जिततित रुंड१फटत वहु जवन२न मुंड१कटत मरहट्ट२न मानि ॥
सव भर धरि लोदीसुत निजसिर अग्गैं चउश्हि.वढे धकैं आनि॥
जंलमाँहिं मिलिजात इच्छुं जिम तिम अवमर्द घोर हुव तत्थ ॥
इम दिल्ली१दक्खिन२जुरि असहन सद्धतहुव निज१पर२असुं सत्थ।
जहँ हरि१वीर मुख्य अरिसुत जुग२मारि अधिक भूपहिं दिय मोद
दुव२असिघाय काय सहि दोउ२न विहसि सहज मन गिनिय वि-
नोद ॥ ३० ॥

तीजो३सुत नरनाह सता२जहँ आसि हनि किय उँपवीत उतार ॥
कौंसू तिम रनछोर३ वीरकिय पट्टु चोथे४लोदी सुत पार ॥

१ शरीर में शस्त्र २ घुसकर ३ जिसप्रकार रामानुज संप्रदाय वालों के तप्त मुद्रा में सुदर्शन चक्र का चिन्ह होता है तिसप्रकार चिन्ह युक्त होते हैं ४ जैसे मूर्ख लोग असह्य दुर्भिक्ष पड़ने पर सावां मलीचा आदि अहक धान्य की ५ रोटी और ६ छाछ को देखते हैं तैसे वीर लोगों ने शत्रुओं को देखे ७ अप्सरा ॥ २८ ॥ कहीं पर ८ शस्त्र से कटेहुए अपने मस्तक को हाथ में लेकर ९ नजराना करके १० शिव की पूजा करते हैं ११ इसारा करके कहता है कि मेरा मस्तक अक्षय नहीं है १२ विना मस्तक का धड़ १३ क्रोध करके ॥ २९ ॥ १४ इक्षु (गंना) १५ प्राण १६ खड्ग के घाव ॥ ३० ॥ १७ जनेऊ के आकार शरीर को काटकर १८ यहाँ

करन१हन्यो मरहट्ट स्याम२कहँ हठीसिंह१मास्यो हनुमंत२,
पूराउत२८।१४जसवंत१कियो पट्ट अमन२करीम३जवनजुग२अंत॥
अरि बलबीर परत ए अठ८हि जियन भज्यो सिटि खानजिहान॥
सोहि भजत डरि सत्रु भजे सब अतिबल पिट्ठि लगे चहुवान ॥
सिबिरहु लै न सके अरि सत्वर छिपतभये जिततित हठ छोरि ॥
लुट्टि सबन सिबिरन बैभव लिय हड्ड६१न पति लहि बिजय बहोरि ॥ ३२ ॥

तीन३ प्रहार लगे नृप १९४।१।१के तनु तोमर इक१ इक१ असि इक१ तीर ॥
पंच घाय हरिसिंह १९३।३।२ लहिय पर पंसुलि गत असि दुव२ हिय पीर ॥
करन १९३।१३ लहे चउ४घाय सुसह कछु पंच५ गोर रनछोर ४ प्रहार ॥
हठीसिंह १९२।१५ दुव२ छंत लहि हड्ड६१नवंसहिँ बिसद चटायउ बाँर ॥ ३३ ॥

बुद्धिचंद १६२।३ सुनकृष्ण १६३।१६ लह्यो बपु इक१ असि घाय असह अतिअंस ॥
तनय मनोहर १९२।४को जु सबल १९३।१७ तस दुव२ सर जत्रु लगे भिदि दंस ॥
भंजनेरी पुरपति पित्थल १९०।१८ भुज इक१ लग्यो असि बाहुल बट्ठि ॥
जसवंत १९२।१९ जु हिंडोलीपति जस कंठ बेधि इक१ सर गय कट्ठि ॥ ३४ ॥

॥ ३१ ॥ १ डेरा भी शीघ्र नहीं लेसके॥ ३२ ॥ २भाला ३ घाव ४नीर (उज्वलता) ॥ ३३ ॥ ५ कन्धे पर ६ शरीर और कन्धे की संधि (हसली की हड्डी) पर ७ कवच कटकर ८ दस्ताना कटकर ॥ ३४ ॥

पंच लहे छत जैत्र१९३।१।१०पितृव्यक तोमर असह लग्यो इक १.
तत्थ ॥
अनुज इंद्र १९४।२।११ अरि १९४।३।१२ सल्हदुहुन इम सहिय ए-
क१ दुव२ छत क्रमसत्थ ॥
सूर सचिव केसव१२ सोनानी अट्ठ८ प्रहार लहे निज अंग ॥
इतिमुख हुव चउसत४०० घायल इम भट कहियत अब जे असु-
भंग ॥ ३५ ॥
परयो दयालु १९०।१ तनय वह भूपति १९१।१ अर्जुन १८८।१ अ-
क्खयराज १८९।१ पउत्त १६।१२ ॥
सेखाउत्त कुम्म वहु संहरि जोध अमान२ परयो जसजुत्त ॥
भीर३ परयो जहवकुलभासक अरिसासक नृप सालक एह ॥
भीम४हिनाम कबंध घनैं भट गेरि अराति गये सुरगेह ॥ ३६ ॥
रामसिंह५ सीसोद महारन वसु हुव खंडनखंड विखंड ॥
गोहिल स्याम६ संखुला गिरिधर७ दहिया मान८ चंड परदंड ॥
वीर जवन मुबहान९ वहादुर१० परे नूर११ सहतीन३ पठान ॥
सव इतिमुख वुन्दीस सहायक द्विसत रु सहि२६० कारे जयदान३७
परत छनन उतके सत पंच५ रु मरत त्रिसत३०० अष्टक८मुख्यादि
खानजिहान भज्यो जिय लै खल सभय पगजयफल संपादि॥
गयो दुरि सु लोदी कोलागढ जितितित इतर सहायक जूह ॥
सबन सिबिर लुट्टे पहु संभर देखिदेखि द्रुत पहुँचि दुरूह ॥३८॥
रैन१९२।१ भूप बुरहानइंग रन मंडि कोल कढे जे मिच्छ ॥
उनहि टारि लुट्टे वसु इतरन वसुपर रहियन लोभ अनिच्छ ॥
सिविरिसेस सेवन लुट्टे सव तँहँ वुन्दीस चलावत तेग ॥
गहिय लूट सत्रह जुत सत ११७गज बाजी सर हग दुव२२५ वरवेग ३९

---

१ इत्यादि २ मारेगये ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३ घायल ४ अर्जन (संग्रह) करके ५ छिप गया ६ अन्य ७ समूह ८ डेरा ॥ ३८ ॥

मंजुल तोप त्रिसट्ठि६३ अयोमय जोर जबर सत्तरि७० जंबूर ॥
सब सिबिरन इतिमुख सामग्री सबहि गहिय बुन्दीपति सूर ॥
गिनि लोदी प्रविस्यो कीलागढ द्रुत सुहु जाइ लयो गरदाइ ॥
अय१ दिन१ रत्ति२ सतत दै तोपन लोपनगढ़ लग्गिय हठजाइ॥४०॥
नठो डरि कछु खिल तीजी३ निस जानि प्रलय खिन खानजिहान॥
नृपसह भट पहुँचत निश्रेनिन सक्यो न रहि जिम असु अवसान ॥
उपहारहु कछु लै न सक्यो यह हेति१ द्रविन२ सुख गढहि बिहाइ
संधि चोर जग्गत जिम स्वामी इम कढिगो जिमातिम अकुलाइ४१
बिजय निसान झुकाइ सता१९४१ बुध कीलागढहु स्वबस इम किन्न ॥
कढि न सके कति सत्रु सहायक लसि हसि लोहु लाइ उर लिन्न
पर तिहि दुर्ग न रक्खे ते पर बल न गहै जँहँ तत्थ बसाइ ॥
निज सुभटन मिलि हठन निहोरत प्रत्यागमन कियउ खिन पाइ ॥ ४२ ॥
अयुत१०००० साहदल बिच जो उत्तम मरत१ बचत जान्यौं महिपाल ॥
कीलागढ दुर्गाधिप तिहिँ करि सेन अयुत१०००० तँहँ धारि अरिसाल ॥
इम अरिसाल१९४१ प्रथम१ जय उद्धरि हनि बहु अरि गय साहहजूर ॥
मिलत अंस थप्पलि मुगलेसहु सो सराहि लायो उर सूर ॥४३॥
जंपिय नृप लोदी सुत जेठे२ हरि११३१३ काका जो प्रथम हनै न॥
तो जवनेस गिनहु निहचै तुम बिजय रावरो कबहु बनै न ॥

---

१ लोहे की २ निरन्तर ॥ ३९ ॥ ३ निसरनियों से ४ प्राण के अन्त में ५ शस्त्र और धन आदि ॥ ४१ ॥ ६ शोभायमान होकर ७ परन्तु उन शत्रुओं को उस गढ में नहीं रक्खे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

बडे कुवरहि लोदीसुत बहुत छोटे[2] हने में[1] रु रनछोर[2],
खानजिहान भज्यो रन तजि खल इहिं जय[1]हेतु हरी१९३।३
हि न और ॥ ४४ ॥

तखतनसीन हुकम बस वत्ती प्रभु इन्ह सहज इतर निरपेक्ष[2],
स्वामी हठ परखहु दै सासन अब न होहु तव गहन अवेक्ष[3] ॥
तिम नृपसंग साहसट हे तिन सुहि जयबीज कह्यो हरिसीह१९३ ॥
नृपतिन सह यह बहुरि निवेदिय यह जस लिय काकाहि अबीह[4] ॥
इहिं जय रीझ जोहि प्रभुके उर हरि१९३।३ कहँ बखसहु सो-
हि हजूर,
अरहन जदपि साहदिय हो यह पहु संकोच तदपि परिपूर ॥
स्वस्थ भयो हरि१९३।३ जब घायनसन संसद बुल्लिं[5] तबहि तिहिं साह,
दम्म[6] लक्ख१००००० मित आय[7] पटा दिय लिखि गुग्गेर१ मुख्य
पुर लाह[8] ॥ ४६ ॥

दम्म त्रिलक्ख३००००० पटा कति मत दिय पै पत्तन गुग्गैर१ प्रधान ॥
सह गज१ अपि हजारी१००० मुनसुव२ मन्त्रिय खास सभासद मान ॥
अरु बुरहानपुर सु किय आगस[9] माफ कराइ सुपै महिपाल ॥
उपदाँ[10] भिन्न भिन्न उत्तारन[11] हरि१९३।३ पँहँ तसहु सधाये हाल ॥४७॥
विजयरीझ सुहि सखुझि साह वलि बिनुलूटन दिय नृपहिँ विसेस ॥
तदपि निवारि लूटमें तोपन पीलु[12] तुरग[14] मुख सब किय पेस ॥
सिंधुर सकल इक्कसतसत्तह११७ प्रथित[13] सँप्ति सत द्वै रु पचीस२२५ ॥
आयत[14] मुख्य पटा लय अट्ठ८क वर जंबूर पचास रु वीस७० ॥४८॥
भनियत तीन३ रजतमय[15] भेरी[16] अरु त्रिलक्ख३००००० मुद्राकछु अग्ग

---

१ इस जय का कारण हरिसिंह ही है ॥ ४४ ॥ २ इच्छा रहित ३ वस्तु का देखना अर्थात् परीक्षा ४ निर्भय ५ सभा में बुलाया ६ रुपये ७ आमद अर्थात् लाख रुपये सालाना आमदनी का पट्टा दिया ८ लाभ ॥ ४६ ॥ ९ अपराध १० नजराना ११ न्योछावर ॥ ४७ ॥ १२ हाथी १३ प्रसिद्ध १४ घोड़े १५ बड़े फैलाववाले आठ डेरे ॥ ४८ ॥ १६ चांदी के १७ नक्कारे (नोवत)

असि१बंदूक२आदि बहु आयुध१अंकं चमर२ध्वज२छंत्र३उदग्गं ॥
इत्यादिक नृपकैं सब आये अरिसिविरन लुंटित उपहार ॥
नालीजंत्र त्रिसठ्ठि६३दये नन साह लये सासन अनुसार ॥ ४९ ॥
आसफ१सहित महावत२चक्खिय नृपहिं जदंपि इम बहुत निहोरि॥
हरि१९३।३कँहँ रीझ दिवावहु क्यों हठि जोकिनलेहुतुमहिंसबजोरि
तदपि नरेस न लुब्धं भयो तँहँ देसहु काका अर्थ दिवाइ ॥
बलि करि सिक्ख समागत बुंदिय पहिलें इम दक्खिन जयपाइ॥५०॥
पुनि तँहँ सचिव रानके प्राघुन व्याहन चढन त्वरा करि वेहि ॥
पुर बुंदिय आये तिनतैं पहु जुत हित मिलि प्रमुदित किय जेहि ॥
व्याहन चढन सचिव केसव बुध किय आरंभ अनेक प्रकार ॥
उचितन उचित निमंत्रन अप्पि रु बुल्ले सब सह महव्यवहार॥५१॥
हडुवती सत्ता१९४।१दुल्लह हुव अर्चि गनेस१मातृगन२ आदि ॥
मंगल वस्तु१सकंकन२मिश्रित सयं बंधिय जयजस संपादि ॥
उफनतछक्कमनसिज द्युति आकृति भूप जई गय१हय२मय३भीर ॥
सब असगोत्र१सगोत्र२सनाभि३न बीरन सज्जि जथाक्रम वीर ।५२।
॥
॥
भूपति१९१।१आदिकटे रन जे भट सुत तिनकेसबविधि सनमानि
बलि अप्पन जयकार प्रवीरन आदर अधिक जथाक्रम आनि।५३।
सबयं जिते भूखन१प्रहरन२सम कुंकुम बसन३दुलह अनुकार ॥
जन्यं बने नृपसंग चल्ले जुरि अन्य घने बयबट्ठ उदार ॥
गज१बेसंत२संकट३वेसर४गन संभृत करि लक्खन धन संग ॥

१राज्य चिन्ह२उदग्र३तोपें ॥४९॥ ४लोभी नहीं हुआ५आया ॥ ५० ॥६पाहुने ७ प्रसन्न किये ८ उत्सव सहित ॥ ५१ ॥ ९ कंकण डोरड़ा से मिलीहुई १०हाथ के बांधा११कामदेव की सी कान्ति१२ऊंट ॥५२॥५३॥१३अपने समान अवस्थावालों को भूषण, शस्त्र, केसरिया वस्त्र दुलह के १४ सदृश दिये १५ बराती १६ ऊंट १७ खचर १८भरकर

बुंदीपति किय कुंच विवाहन चढि मारीचैं लसत चतुरंग ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

अनुज१ पितृव्यक२ बंधु३ इम, गुन सगुत्त१ असगुत्त२ ॥
संग चल्ले सामंत सब, अर्जन सुजस अछुत्त ॥ ५५ ॥
रक्खन जनपद कति रहे, स्वामिकथन अनुसार ॥
गहगह भय डारत गये, बट्ट बरातिन बार ॥ ५६ ॥
सद्दि उचित बुंदीहि सब, रुचि कोटा अनुरत्त ॥
माधव१ ९३ । २ काका कछुक मिस, पच्छो गेहहि पत्त ॥ ५७ ॥
पहुँच्यो पहु इत उदयपुर, वरसत धन धन बिंदु ॥
अर्थिन करत प्रसन्न इम, उत्पलगन जिम इंदु ॥ ५८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे शत्रुशल्यस्योदयपुरपाणिग्रहणात्पूर्वं यवनेशाज्ञया दक्षिणदेशमासाद्य समरे लोदीखानजहाननामानं विजित्य यवनेन्द्रजयसंपादन१, राजादिबुन्दीवीराणां क्षतमरणासादनानन्तर शत्रुसामग्रीलुण्टनभणन २, एतद्विजयाच्छत्रुशल्यस्य स्वपितृव्यहरिसिंहार्थं यवनेन्द्राल्लक्षार्यमितदेशदापन३, दिल्लीदङ्गाद्बुन्द्यागतशत्रुशल्यस्य करग्रहणार्थमुदयपुरगमनवर्णनं द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥

---

१ मुख्य हाथी पर सवार होकर सेना सहित शोभायमान हुआ ॥५४॥ अछूता यश २ संपादन करने को चले ॥५५॥ ३ देश की रक्षा करने के लिये ४ समूह ॥ ५६ ॥ ५ गया ॥ ५७ ॥ ६ रात्रिविकासि कमलों को चन्द्रमा प्रसन्न करता है तिसप्रकार धन रूपी बिन्दु से याचकों को प्रसन्न करता हुआ उदयपुर पहुंचा॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का उदयपुर विवाह करने के पूर्व बादशाह की आज्ञानुसार दक्षिण देश में जाकर लोदीखानजहांन से युद्ध करके बादशाह का विजय करना १ राजा आदि बुन्दी के वीरों के घायल होने और मारेजाने के अनन्तर शत्रु की सामग्री लूटने का कथन २ इस विजय के कारण शत्रुशाल का अपने काका हरिसिंह को बादशाह से लाख रुपये का पट्टा दिलाना ३ दिल्ली से पीछे बुन्दी आकर शत्रुशाल का विवाह करने के अर्थ उद-

आदितश्चतुर्दशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१४

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उतरतजाइ बरात इम, सज्जिय समुचित सद्य ॥
पहुँचन तोरन लग्नपर, आरंभिय अनवद्य ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदीअधिप बरात पत्त जिहिँ लग्न उदैपुर ॥
वाहीदिन दुवर ओर धरनिपति धरि दुल्लह धुर ॥
आये तिनप्रति एह सता १९४१७ पठई कहि सत्तम ॥
गज १वा हय२चढि गमन करहिँ तोरन कैसे क्रम ॥
दंभीन तबहि तिन दुल्लहन चढि बाजिन चलिहैं चविय ॥
अप्पहि गइंद छन्न न अवनि जोग्य हयहि इहिँ खिन जविय ॥
सता १९४१९ यहहि गिनि सत्य क्रमन हय संज्ज करायें ॥
उतके दुल्लह उच्च इभन छल करि चढि आये ॥
जान्यौं छल नृप जदपि बाँह तजि न गज बइठो ॥
पहुँचत मुख्य प्रतोलि दुलह हय थित इक्क दिठो ॥
हरिदासनाम कवि बारहठ वचन बान दिय तहँ विदित ॥

यपुर जाने के वर्णन का दूसरा मयुख समाप्त हुआ और आदि से २१४ मयूख हुए ॥

१ उचित कार्य २ तुरन्त ३ पाप रहित अर्थात् पुण्य कार्यों का आरंभ किया ॥ १ ॥ जिस लग्न पर बुन्दी का राजा विवाह करने को गया उसी लग्न पर अन्य दो राजा विवाहने को आये उनसे ४ अत्यन्त पूज्य राजा शत्रुशाल ने कहलाया कि तोरण पर हाथी वा घोड़ों पर सवार होकर ५ किस रीति से चलेंगे ६ घोड़ों पर चढकर चलना कहा ७ अपने हाथी पृथ्वी में छिपे हुए नहीं हैं इसकारण इस समय ८ वेगवान् घोड़ों पर चढकर चलना ही उचित है ॥ २ ॥ ९ ऊंचे हाथियों पर १० घोड़े को छोडकर हाथी पर नहीं चढा ११ द्वार (तोरण पोळ) १२ संढायच शाखा के हरिदास नामक चारण ने (सामान्य रीति से चारण मात्र को बारहठ कहते हैं इसी कारण हरिदास संढायच

गज उचित द्वार हय चढ़ि गमन हड्ड६१न सम न प्रसाद हित ।३।
सोहु असह सहि सुपहु कृत्य सज्जिय तुरंग करि ॥
वर सब उत्तरि बहुरि बरे निजनिज ओसर वरि ॥
ठाम जथोचित ठानि स्वसुर प्रासाद रीति सब ॥
अप्प अप्प पट१अयन अय२हि वर ऊढ गये तब ॥
नृप दिय निदेस बुंदियनगर अप्पन१ अरु बंधुन२ अखिल ॥
इभ सेस जिते भेजहु इहाँ क्रम इम दम्म दुलक्ख२०००००किल ।४।
पुर इम हुकम पठाइ बिहि३तकारि नित्य जथाविधि ॥
द४व्वनचहि खिल दुलह निखिल खुल्लिय अलका निं६धि ॥
जिते गान जगतेस सुकवि पटुपन सनमानिय ॥
भूसित इक१ इक१ भेजि दये तिन्ह घर गज१ दानिय ॥
पोसाक२खास भूखन३प्रगुन अरु संगहि मुद्रा अयुत१००००॥
हे विदित जिते तिन्ह हित हुलसि जव पठये अति मानजुत ॥५॥
द्वार द्विरंद नृप दैन गहत किल कृपन कदाग्रह ॥
दियउ रत्ति हरिदास उपालंभ जु सनर्म वह ॥
तसग्रह खास तुरंग१ सता१९४१पठयो भूखनसम ॥
ओरन सन दल३अग्घ सिचय२ भूखन३ दूखन सम ॥
मुद्रा हजारपंच५०००हि प्रमित भेजि तदनु ओरन भवन ॥
समुचित पठाइ बुंदिय सुपहु कित्ति लियसु वंटहि कवन ॥ ६ ॥
किय संभर सतकार इमसु लिय सवन सुआदर ॥
दुखित इक्क१ हरिदास वंड लूमं सु करिहे वर ॥

को बारहठ लिखा है) ॥ ३ ॥ अपने अपने १ डेरों में २ विवाहे हुए ॥ ४ ॥ ३ उचित ४ सम्पूर्ण ५ कुबेर की पुरी की ६ समृद्धि ॥ ५ ॥ ७ द्वार का हाथी, अर्थात् तोरण का हाथी देने के कारण निश्चय ही कृपण राजा ८ किसी लाभ में आ-ग्रह करते हैं इसी कारण हँसी पूर्वक ९ ओलम्भा दिया १० आधा आदर और वस्त्र ११ जिस पीछे ॥ ६ ॥ शत्रुशाल को दिये हुए घोड़े की १२ पूंछ १३ काट कर

बहुरि तास गल्ल बंधि भिन्न मिट्टीमय भाजन ॥
दलअंतर तारिदिय सपट१ द्रम्मा२दि समाजन ॥
सुनि नृप लिवायं जे देय सब देखि उचित औरन दये ॥
खिल त्याग लेय सुनि कवि निखिल भागधेय मोदित भये ॥७॥
बदिय भूप मम बाजि.दयो तजि जिहिं करि दुर्दस ॥
सो आवहिं ममसीम ततो मुख असित ठानि तस ॥
चक्रीवान चढाइ बुरीगति खलहिं बिडारौं ॥
अंकहिं तो अवकास मूढ रंकहिं जो मारौं ॥
हमरै न द्विरद कछु देनहो हय दिन्नौं इम ताहि हम॥
कटुबैन कुटिल तिस रत्ति कहि किन्न अवहु यह नीचक्रम।८।
उपालंभ सुनि एह दयो रानहु हरिदासहिं ॥
संढायचहु सिटाइ पुनि न जिम स्वमद प्रकासहिं ॥
बुंदीपतिढिग बुल्लि स्वीय कविजन इत सादर ॥
अक्खिय वढि सबअग्ग वित्त वरसहु बनि.बादर ॥
दम्मन जितेक पुव्वहु दये वहुरि न दिय जिमकोहुबढि ॥
इहिंरीति त्याग वंटहु असह पुनिपुनि मंगहु लेहु पढि ॥ ९ ॥
गजआरूढन गर्व बिगारि जिम न सुख बतावहिं ॥
बहुरि बिबाहक बरन सकल अप्पन सुमिरावहिं ॥
बिरचहु ऐसी बत्त हुव जु अत्र१ न अन्यत्र२ हु ॥
रोम सुनत उब्भरहिं सिटहिं आधुनिकन सत्रहु ॥
साँवल१६६।२नगेस१६७।१मिश्रन स्वकवि बंदी दोलतराम१बलि

उसके गले में मिट्टी का फूटा*पात्र (गर्ग्) बांधकर सेना में वस्त्र और१रुपये आदि सामग्री सहित ताड़ दिया२सब३अपना अपना बंट लेकर॥७॥४काला मुख करके५ गधे पर चढाकर उस दुष्ट को निकालूंगा६अवकाश हुआ तो उसको चिन्हयुक्त(कलंकित)करके उस मूर्ख को७रात्रि में ॥ ८ ॥८ओलंभा ॥९॥ ९ हाथी पर चढकर तोरण बांधनेवाले दुलहों का गर्व मिटाकर सुख नहीं बतासके जैसे१०इस समय के ११ यज्ञ अथवा उत्तम दान ॥१०॥

सुनि प्रभुनिदेस इहिँ मुख सवन किय प्रारंभन दान कलि ।१०।
इम *ग्रंहति आरंभ भयो मबतैं बढि भासत ॥
मिलि कवि चारनमुख्य प्रकट जस अधिक प्रकासत ॥
कछु मेवारेकविहु गंठि अंतर छल साग्रहँ ॥
चल्तजं आइ इन सवन अरज भूपहिँ पठई यह ॥
कविमात्र सिरहि उपकार किय सगताउत गोकुल सुमति ॥
तसहत्थ त्याग बंटहु ततो अल्पहु लै व्यय है न अति ॥ ११ ॥
सता१२२।१अरज सुहि सुनत अनखि पठयो यह उत्तर ॥
होहु बिगारनहार त्याग जेजे वंदान्यनर ॥
तेतैं छत्र१ रु तुम२हु मुख्य गोकुल३सम्मत मिलि ॥
कोरि विघ्न किन करहु गरुव वितरन जैं हैं मिलि ॥
हमरे न गजहु हरिदाससहित हय मम दुर्दसं तबहि हुव ॥
कें गान चहि रु इम जस करत धन जामिनघर रक्खि ध्रुव।१२।
सिक्ख कविन यह सूचि दई संभर दिन दुल्लह ॥
स्वसुरालय गय समय महामह मचत महामहँ ॥
सयनमहल सोपान चढ्यो बावन५२ अनुक्रम चहि ॥
दिय तहँ बावन५२द्विरद रसिक गजकेतु तुलौ रहि ॥
नारीन निकर वादन१ नटन२जहँ हे गान३जितेक जुरि ॥
ते बंटिदये इम सब तिनहिँ बहुल निष्क१दम्म२हु बहुरि ।१३।
न लखि होत निर्वाह थान जिनजिन गज थप्पिय ॥

---

*दान १ आग्रह सहित २द्वार पर आकर॥११॥ ३ अधिक दानी होवे सो हमारे त्याग को विगाड़ो ४ क्रोड़ ५ बड़ा दान ६ बुरी दशा. धन का ७ प्रतिभू (जमानत देनेवाला). घर में ८ निश्चय ही रखकर ॥ १२ ॥ ९ बडा उत्सव होकर वह १० बडा तेजस्वी समय पर स्वसुर के घर पर गया ११ शयन करने के महल की सीढियों १२ कर्ण की बराबरी करके १३ स्त्रियों का समूह वाद्य बजाने और नाचनेवाला और गानेवाला जितना वहां था उसको १४ बहुत मोहर और बहुत रुपयों के साथ हाथी बांट दिये॥ १३ ॥

मंगिय जिनजिन मुल्ल अधिक तिन्हतिन्ह प्रभु अप्पिय ॥
दुरे महल खिल दुलह सिटत प्रातहि श्रद्धासम ॥
रांन बसहि धरि रित्थ तित्थ बनि तित्थ कृपनतम ॥
बुंदीस सुजस दव्वे बिमन रंच दिनन पाये रहन ॥
इहिँ बीच लिखे पहुँचे अखिल सेस द्विरद सब देससन ॥१४॥
बीकापुर१इक्क१वर पर२सु भट्टी जेसलपुर२ ॥
कतिक ख्यात इम करत धरत कति इतर नाम धुर ॥
वर इक्क१हु कति वदत बरन त्रिक३ कतिक बतावत ॥
किमहु होहु ऋत कोहु जोहु संति मग्ग न जावत ॥
गृह निज परंतु जे सब गये दुर्मनपन धारत दुलह ॥
संभरअधीस रहि इक१ सता१९४१ मंडिय अतुलित दानमह ।१५।
बुंदीपति चिर वहुरि उदयपत्तन रहि इक्कल१ ॥
अखिल त्याग उपहार बंधि तँहँ निचयं बित्तबल ॥
इममूरति नवअष्टि१६९ दये मेंगल दिन दुल्लह ॥
इक गुन सर५३१ मित इभन मुल्ल अप्पिय उद्वह मह ॥
अप्पिय मतंग सतसत्त७०० इम सहँस इक्क१००० वाजी सु गत ॥

बाकी के दोनों दुलहे अपनी श्रद्धा सहित लज्जित होकर १ छिपगये सो वे अत्यन्त कृपण दुलहे राणा के २रिक्थ(धन)को धारण करके अर्थात् महाराणा के दिये हुए धनको लेकर वसे और ३दीखने में स्त्री के रज के समान होगये; अथवा स्त्री की रजयुक्त योनि के समान अदर्शनीय(नहीं देखने योग्य)होगये "यहां एक तीर्थ शब्द स्त्री का रज वाचक और दूसरा तीर्थ शब्द दर्शन वाचक तथा योनिवाचक है. जिसमें शब्दार्थचिंतामणि का प्रमाण है यथा "तीर्थम्–नारीरजसि । दर्शने । योनौ" इसके उपरान्त सामान्य क्षेत्र का नाम भी तीर्थ है जिससे यह अर्थ भी होसक्ता है कि उस क्षेत्र में वे नारीरज के समान अदर्शनीय होगये. एक दुलहा बीकानेर का और दूसरा दुलहा जेसलमेर का भाटी था ४ कितने ही अन्य नाम कहते हैं और कितने ही लोग एक वर और कितने ही तीन वर कहते हैं सो किसी प्रकार होओ और कोई बात सत्य हो परंतु ५ उदास ॥ १५ ॥ ६ धन के समूह के बल से ७ मूर्तिमान् हाथी ८ विवाह के

मुत्तीन द्विसत२०० कुंडल जमल२ स्वर्णकटक जुग२पंचसत५००
पंचसहँस५००० सिरुपाव करभ आदिक औरहु कति ॥
इम वितरन उपहार रक्खिइ इतरन वितरन रति ॥
खिल रुप्पय त्रयलक्ख३००००० अखिल खटलक्ख६००००० जुरे इम ॥
किय निहाल जाचकन जलद चातक१ केकि२न जिम ॥
दंततहि छोरि संचिवन बहुरि आयउ बुंदिय अपन इत ॥
उत स्वापतेय विंदुन उम्फलि मेघ सचिव बरखे अमित ॥१७॥
उदयनेर आश्रइन पीलु इक१ दियउ ग्राम१ प्रति ॥
हुव जँहँ पावनहार अधिक तँहँ अधिकअधिक अति ॥
सिंधुर मोतीसर१न मिले खट नृप जसजामिन ॥
लहे उभय२ राउल२न द्विरद इक१ मित दम्मामि३ न ॥
बारहठ१ विप्र वंदी३ बहुल हेलीसह गजबंध हुव ॥
इम कहत लोक पावत अबहु भैर्म१ रंजत२ तिहिंइंग भुव॥१८॥
अज१ न भये तिन्ह अपन भय तिन्ह अयनं गज२न भर॥
लघु मंगन डुंबें लग बंधि अंगन लिय गैवर ॥
जाचक जाचकजनहु धनी हत्थिन हुव धामन ॥
भरे द्रविनं जिनभौन कौन कहि कहि धनकामन ॥
जन रान अन्न जीवन जिने अक्खहि दुल्लह इक१ यह ॥

उत्सव में हाथियों की कामना की १ मोतियों के जोड़े २ स्वर्ण के कड़ों के जोड़े ॥ १६ ॥ ३ ऊंट ४ इसप्रकार दान की सामर्थ्य रखकर दूसरों की दान में प्रीति नहीं रक्खी अर्थात् इतना दान देने की श्रद्धा किसी में नहीं रही ५ मेघ ६ मयूरों को ७ धन की ॥ १७ ॥ ८ उदयपुर के आश्रित चारणों को प्रति ग्राम एक एक हाथी दिया ९ मोतीसरों (चारणोंके याचक विशेषों) को छः हाथी मिले १० ढोलियों को हाथी मिला चारण, ब्राह्मण, भाट ११ खेल में ही गजबंध होगये १२ स्वर्ण १३ चांदी उस नगर की भूमि में अब भी पाते हैं ॥ १८ ॥ जिनके घरों में कभी बकरा भी नहीं रहा तिनके घरों में हाथियों के समूह होगये १४ छोटे याचक ढोली पर्यन्त १५ हाथी १६ धन से

जान्यौं सता१९४।१हि दातार जिहिं महँविच गृहगृह किन्न मह१८
नृप सचिवन तँहँ नियत त्याग बंटिय छमास६तक ॥
इतबुंदियपहु अप्प भूति विलसिय जसभासक ॥
इक्क१हि गहि गल आँट दम्म सहजहि छलक्ख६०००००दिय ॥
सो किम व्यय संकुचहिं प्रचुर कौतुक१ हंगाम२ प्रिय ॥
जगतेसरानवाहिनिहु जिम चंद्रकुमरि१९४।८ रानी चतुर ॥
निज रमन इष्ट सद्धिय नियत पायउ सुजस कुटुंब१पुर२ ।२०।
पट्ट लहि रु यह प्रथम१ वरी अष्टम८ रानी वर ॥
व्याही नवमी९ बहुरि उक्त रानी गढ ईडर ॥
स्यामलनामक सहर इक्क जँहँ तँहँ सिवआलय ॥
परंपरा तँहँ पिक्खि इड६१ सततीन३०० दये हय ॥
तिम नृप बिसेस त्यागहु बितारि बुन्दीपुर आयउ बिदित ॥
खिल सत्त७ इमहि बरिहें निखिल जिम अवसर तिम सत्रुजित२१
पातुरि इत जोधपुर अधिप गजसिंह पुव्व ॥
नाम अनाराँ नारि साहसन लहिय रीझर ॥
वस तस इम सुकबंधसदा रक्खहिं सिर सासन ॥
जननि स्वसुत जसवंत तत्थ पठयो लघुतासन ॥
अक्खिय पदत्र तस तिहिं उठत अग्ग धरहु कहि दास इत ॥
जो मंगि कहै तो जोधपुर तू लघुसुत मंगहु त्वरित ॥२२॥
नम्र जाइ तस निलय जननि प्रेरित जसवंतहु ॥
पातुरिअग्ग पदत्र लहत खिनं जाइ धरे जहु ॥
मतिमति कहि तिहिं कुमर अधिक लालित लायो उर ॥

१ उस उत्सव में घर घर में उत्सव कर दिया ॥१९॥ २उत्सव प्रिय ॥ २० ॥२१॥ माताने अपने पुत्र यशवंतसिंह को वहां शीघ्र भेजा और कहा कि वह गणिका उठे तब ३ जूतियां हाथ में लेकर उसके आगे रख देना और कहना कि मैं आपका दास हूं उस समय वह कहै कि मांग, तो तू लघु पुत्र है सो शीघ्र ही जोधपुर मांगना ॥ २२ ॥ ४ घर ५ उस समय शीघ्र उसके आगे जूतियां जाकर धरीं ६ लाड करके

मंगि-कव्वत लिय मंगि प्रसू सिखयो सु जोधपुर ॥
पातुरि दुवत्त गजसिंह प्रति सुचि कहिय मम एह सुत ॥
लिखवाइदेहु कहि लाह लग जोधपुरहि इहिं पट्ट जुत ॥२३॥
अंगज जेठो१ अमर वीर विनु मंतु विचारत ॥
पातुरि लालन प्रबल धुवंहिं करिवो इत धारत ॥
रट्ठोरन अधिराज रंच प्रतिपत्ति मूढ रहि ॥
दव्व्यो कलि१ कंदर्प२ चित्त रत पट्ठु अभीष्ट चहि ॥
लुल्ल्यो स्वपुत्त जसवंत लुध पट्ठु कनिष्ठहु पाइहै ॥
हमरे अभाव एहहि हुलसि चामर१ छत्र२ चलाइहै ॥२४॥
प्रमदान इम प्रमद दै रु पत्तो जब दिल्लिय ॥
हजरतकेहु हजूर करन जोरि सु विन्नति किय ॥
अंगज जेठो१ अमर लहहु नागोर अप्पँ लिपि ॥
जोधपुरहिं जसवंत२देस जुत पाइ रहहु दिपि ॥
ओरहु विसेस कति कहु इह मिलत मन्नि सुलतान सुहि ॥
प्रतिलोम दिक्खि अग्रज१अनुज२जुग२ठाँ करिदिय लेख जुहि २५
कछुहु वाग्मनि कुमर अमर जनकहिं नन अक्खिय ॥
साहलिपिहु धरि सीस रहत नागोरहि रक्खिय ॥
इम पट्ठप जसवंत जनक संम्मत हुव अनुजहु ॥
वडीसुता संबंध प्रप्छें वह वरिय सत१९४१ पहु ॥
क्रम जो तृतीय३रानी कहिय सिंह सुता सीसोदनिय ॥
कर्मवति१९५१२तास जेठो१कनी करग्राहन तहँ निर्यंत किय ।२६।
नृपपतनी नाम करि कथित तीजी३राजकुमारि१९४१३ ॥

१ माता के सीखने अनुसार ॥ २३ ॥ बडा पुत्र अमरसिंह विना अपराध था तो भी २ निश्चय ही ३राठोडों का राजा उसकी प्रवृत्ति में; अथवा उस अमरसिंह के वडप्पन में मूर्ख रहकर ४ कामदेव के युद्ध में दबकर ५ छोटा ही पावेगा ॥ २४ ॥ ६ बादशाह की हजूर में हाथ जोडकर अर्ज की ७ आपके लेख से ८ प्रकाशित होकर ९ उलटापन ॥ २५ ॥ १० पिता की सलाह से छोटा होगया ११ पीछे १२ विवाह १३ निश्चय ॥ २६ ॥

तनया पहिली१तास बिंद जसवंत लई बरि ॥
बदत किते किय व्याह महिपपन लहि कवंधमनि ॥
कुमरपनहि कति कहत बरी दुलही सु दुलह बनि ॥
सक बिदित तत्थ निश्चय सहित कहिय तत्थ लिपि प्रकट करि
खिल जे उदंत बिचबिच अखिल भासि निकट भव दिन्न भरि।२७।
पुब्ब२पर२नहिं नियत बिदित जान्यौं जिन्ह बत्तन ॥
तिन्ह संभव होइ तिम मिलत समुझ्झहु श्रोता सन ॥
बरसन अंतर बत्त जदपि हम जोरिदई जँहँ ॥
लेहु सुनत अनुलोम१तजहु प्रतिलोम२भाव तँहँ ॥
कहुँ कथन सिंह अवलोक१क्रम भेकफाल२क्रम कहुँ भनित
॥ २८ ॥
उदयनैर सन आत सिक्ख दै नृप प्रबोधलह ॥
निज काका हरि१६३।३नामअँरहि दिल्ली पठयो वह ॥
तिम सिखयो मद तजहु भजहु जवनेस नम्र भँति ॥
इम न रहहु उनमत्त गहहु प्रभुपास दासगति ॥
गुग्गैर रहैं जिम स्वीयगृह जिम न लहैं खिन पिसुनजन ॥
जल१दुद्ध२मिलत इक१होइ जिम मिलि तिम सद्दहुसर्ब मन ।२९।
पहिलैं बुरहानपुर रोपि जिंहिं भुज बेधे रन ॥
बलि पकरयो भरि बत्थ बंधि तस पग्ग निबंधन॥

१दुलह॥२७॥ इन वार्तों में पहिले कौन हुई और पीछें कौन हुई यह क्रम नहीं जाना सो जहां जिसका सम्भव होवे तहां तैसा श्रोतागन समझ लेवैं इन वार्ताओं में वर्षों का अन्तर है तो भी हमने जोड़ दी है परंतु वहां २ पहिली पहिले और पिछली पीछे कही गई है जिसमें ३ उलटा क्रम नहीं है इन में कहीं कहीं तो सिंहावलोकन (सिंह अपने मारे हुए भक्ष्य को आगे चलते समय पीछा फिरकर देखता है) क्रम से और कहीं कहीं भेकफाल (मैंडक कोई छलांग छोटी और कोई मोटी भरता है) के क्रम से कही है ॥ २८ ॥ ४ शीघ्र ५ नम्रता की रीति से ६ समग्र ७ चुगल ॥ २९ ॥ ८ बाण से शाहजहां के भुज को बेधा था और उसी शाहजहां की ९ पगड़ी के १० बंधन से बांधा था

दिय कैद हु भय दुसह प्रनत किंकर विधि प्रेरिय ॥
सोहि खुरुम३१२अव साह हुव रु औगुन१गुन२हेरिय ॥
होते न होतु लोदिन हनन पाते किम गुग्गौर पुर ॥
न बढै प्रवीरपनसौंहि नर प्रभु देखत सेवन प्रचुर ॥ ३० ॥
इम प्रबोधि हरि १९३।३एह भूप दिल्लियपुरभेजिय ॥
जिहिं उद्धत तँहँ जाइ कछु न सिच्छा सुमिरन किय ॥
इक्क समय आखेट हन्यौ असिकारि मइंद हरि१९३।३ ॥
सु असि दिखावन साह कहिय मन रीझ देनकरि ॥
कढ्ढि सु कृपान गहि मुट्ठि कर दिय तदग्र करि साहदिस ॥
मुगलेस हरि१९३।३सु मदमत्तमन रक्ख्यो तवहु पचाइ रिस।३१।
दिल्लिय गय बुंदीस जवन पति तवहु भेजि जन ॥
सो माधव१९३।२वल सहित क्षीतिकहि बुल्ल्यो कोसन ॥
मत्थ धरि सु फरमान अरज माधव१९३।२पठई यह ॥
प्रभुके अतुल प्रसाद लह्यो वैभव मैं दुर्लह ॥
पुहवी प्रधान नव९परगनाँ१नियम धाम कोटा२नगर ॥
गज३वाजि४चमर५गढ६कोस७गन विविध मिले सव वस्तुवर ।३२।
बुंदीसन कढि सहित अंबुग बंधिय नव आलय ॥
यातैं करियत उचित चर्य उपहार सवै चय ॥
परिगह१सुभट२प्रधान३थान नूतन इम थप्पहिं ॥
आदर१वसु२अधिकार३सवन अधिकार समप्पहिं ॥
करि देस अभय धरि रच्छकन सीमा स्ववस जमाइ सव ॥
सदनहिं सम्हारि चुंवन चरन ऐहौं पासहिं दास अव ॥ ३३ ॥

॥ अष्टपात् ॥

---

१ नम्र करके २ चाकर की रीति से प्रेरणा की ३ बहुत चाकरी देखते हैं॥३०॥ ४ शिक्षा ५ शिकार में हरिसिंह ने खड्ग से सिंह को मारा ॥ ३१ ॥ ६ आपकी अधिक प्रसन्नता से ॥ ३२ ॥ ७ सेवक ने नवीन घर बनाया है ८ संग्राम सामग्री का ९ संचय करके १० परगह सहित ॥ ३३ ॥

नृपकाका [1]अधिनम्र अरज माधव१९३।२ पठाइ यह ॥
अबलग निबसि [2]अगार स्वीय जन धरि सम्हारि सह ॥
उदयनैर बिधि [3]ऊढ अधिपबुंदी जब आयउ ॥
माधव१९३।२ दै फरमान बहुरि तब साह बुलायउ ॥
संगहि तस रैन१९२।१[4]सुव सज्जि निज सर्व गर्वगति ॥
पहुँच्यो दिल्लिय मनत सिक्ख संगी न सता१९४।१ प्रति ॥
सुनतहि तदीय आगम सभा हजरत बुल्ल्यो हितसहित ॥
सेवन स्वकीय पहिलो सुमिरि उर लायो कर ऐंचि इत३४

॥ षट्पात् ॥

उपालंभ कछु अप्पि पास चिर करि आगमपर ॥
दियउ खास दीवान सतत अप्पन ढिग [5]औसर ॥
सक हुव नव नृप १६९२ समय आत नृप रैन१९२।१ प्रभू इत॥
दिय बुंदिय तजि देह होरि जिहिं जिपत सर्वहित ॥
नृप सत्रुसल्ल१९४।१विधि करि नियत प्रेतकरम [6]सह्यि प्रथित
दिय द्विजन [8]पुरट१ गो२ छिति३ प्रमुख करि [7]असेय व्यय
श्रुतिकथित ॥ ३५ ॥

बल्लनोति[9] अन्नबिनु रतन१९२।१ पीछैं चउ४ समरहि ॥
अलप दुग्ध आहार व्रत सु तापस [10]दुष्कर बहि ॥
[11]अब्द त्रि बसु ८३ लहि आयु सद्धि सब बिधि सबकै [12]सिवं
इम सक उक्त अनेह देह [13]परिहरि [14]पत्ती [15]दिवं ॥
महिपाल मरत प्रपितामही धरि [16]संजम१ [17]अवधान२ धुव ॥
[18]महिदेव१ जाति२ पुरजन३ प्रमुख भोजि अखिल किय कित्तभुव ।३६।

१ अत्यन्त नम्रता से २ घर पर रहकर ३ विधि पूर्वक विवाह करके ४ रत्नसिंह का पुत्र ॥ ३४ ॥ ५ समय (अवकाश) ६ विदित ७ स्वर्ण ८ वेद के कथनानुसार अप्रमाण खर्च करके ॥ ३५ ॥ ९ बालणोति १० कठिन ११ वर्ष १२ कल्याण १३ कहे हुए समय में शरीर छोडकर १५ स्वर्ग में १४ गई १६ इन्द्रियों को रोककर १७ सावधान हुआ १८ ब्राह्मणों और अपनी जातिवाले पुर के लोगों सहित सबको भोजन कराके

छल महल१ पुनि छितिप रचन बुंदिय आरंभिय ॥
केसवमंदिर१ *कमन पुरी पट्टनि पारंभिय ॥
पृथुल१ तुंग२ पासाद उभय३ अद्भुत अपुव्व इम ॥
वनतभये अतिवेग लगेलक्खन जिनमैं जिम ॥
नृपरचित थान इतरहु निखिल पुनि सूचहिँ अवसानपर ॥
सब वत्तमैंहि सबसोँ सता१९४।१ बधिय धुरंधर कित्तिबर ।३७।
माधव१९३।२ दिल्लिय मुदित सहित जगनाथ२९३।४सहोदर
अनुज तास दिन इक्क१ साह पुच्छयो लहि औसर ॥
जंपहु रे जगनाथ१९३।४ दुहुँ२न माता इक्क१ कि दुव२॥
हो यह इक१ इंगहीन समुभि सुहि प्रश्नरैन१९२।१सुघ ॥
अक्खिय हजूर मम अंखि इक१ गदविसफोटक फुट्टिगय ॥
सुनि साह अक्खि फुट्टिय श्रुतिहु सुन पूछयो पुनि कहुँसमय ३८
इत लोदी अफगान समर झारिपरत चउ४हि सुत ॥
कीलागढ तजि चकित जियहि लैगो साध्वसंजुत ॥
जिहिं अवसर अव जानि जोर पकरयो पुनि जुट्टन ॥
बल अदंभ्र बल बंधि लग्यो दिल्लिय धर लुट्टन ॥
गयपैठि बहुरि कीलागढहु जंपत इमहु कितेक जन ॥
चहि सुतन वैर वालन चल्यो पैंडपैंड मंडत प्रधन ॥ ३९ ॥
दक्खिन जन इम दुखित पुनिहु दिल्लिय पुक्कारिय ॥
वललोदी अव वंडत दंमिजु हड्ड६१न दुक्कारिय ॥
उनहिं पंठावहु अवहु साह निजकज्ज सुधारन ॥
वेहि चंहतरन अंडरँ मरन१ अलसन अरि मारन ॥

॥ ३६ ॥ * सुंदर १ बड़ा २ ऊंचा ३ महल ४ और भी ५ सब ६ शत्रुशाल के अन्त समय पर कहेंगे ॥ ३७ ॥ ७ सगा भाई ८ समय पाकर ९ कहो १० एक नेत्र से काना था १२ माता (चेचक) के ११ रोग से ॥ ३८ ॥ १३ भय सहित १४ बहुत सेना से बल बांधकर ॥ ३९ ॥ १५ दंड देकर १६ धिक्कार देकर निकाला १७ निर्भय

सुनि साह बुल्लि माधव१९३।१ सुमति*अंसन थप्पि सराहि†अर ॥
दे ताहि रीझ१ सह स्वीयदल२‡पिल्ल्यो खानजिहानपर ॥४०॥
स्वीय जनक दिय सत्त७ रीझि रैन१९२।१हिं जयकारन ॥
तबहि परगनाँ तेहु बहुरि छिन्नत किय बार न ॥
सुत हरि१९३।३ बुल्ल्यो साह सा न पठयो जिम संभर॥
आगसं सिर धारि एह धनी वनि छिन्निलई धर ॥
तामाँहिं तीन३दक्खिनतरफ कहे परगनाँ नाम क्रम ॥
जीरपुर१खैर आबाद२जँहँ तीजो३चेचत३आढयंतम ॥ ४१ ॥
ए त्रय३माधव१९३।२अर्थ प्रथित चोथो४खलजीपुर४ ॥
चउहि अप्पि हित चाहि आनि बिरुदनं उछाह उर ॥
बखसि खास गज१बाजि२कटक अयुत१००००हि सहायकरि ॥
मनहु राम हनुमान इम सु पठयो दट्टन अरि ॥
बुंदीस सता१९४।१ तैसें बिजय लूटहु विनुतोपन लहैं ॥
जातहि इतोक माधव१९३।२ जहाँ कृपा दुरदिस अंतर कहैं ।४२।
रैन १९२।१ सुतहु रनरासिक सजि अप्पन वरूथ सब ॥
साह अयुत१००००दल सहित तानि सुच्छन हंकिय तब ॥
बीजापुरढिग१बदत कति रु तासौं उत्तर१कति ॥
कति रेवा परकूल२तुली सूचनं फौजन तंति ॥
कछुकाल तोप संग्राम करि निडर रंच देरहु न किय ॥
तिहिं खिन उठाइ माधव१९३।२तुरग करारी बग्गन वीच किय । ४३।
नकिय१चकिय२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
उडत तरत्तर१ अमित सीस जितातित आसि संक्रम ॥
सुमन गिनहु निज समय सुमन चटकत२गुलाबसम ॥

---

* कंधा थापकर † शीघ्र ‡ भेजा ॥ ४० ॥ १ अपराध २ अत्यन्त धनवान् ॥४१॥ ॥ ३ प्रसिद्ध. ४ उत्साह वर्धिनी स्तुति सें ५ सेना ॥ ४२ ॥ ६ सेना सजकर ७ सन्मुख होकर जुड़ी ८ पंक्ति ९ घोड़े की बाग को करड़ी करना दौड़ानें का सूचक है ॥ ४३ ॥ १० खड्ग चलनें से ११ श्रेष्ठ मनवालों के सन

करर१पयर२ पल्लव१किरन तरुन लोहित किसलय२तति ॥
गुटिका१अलिगन गुंजि कुसुम१लोचन२विकसे कति ॥
गज१छिन्नभिन्न१मानहु गिरि२न सुम किंसुम२चल वात सह ॥
केतनँ१रसाल२पिक१घंट२करि किय माधव१९३।२माधव कलह ॥
आयो उलटत उदधि इक१ वीरहु अरि अड्डन ॥
जो खल खानजिहान हन्यो निर्दय बढि हड्ड६१न ॥
परि दुहुओर भट प्रचुर लुत्थिपर लुत्थि विलग्गिय ॥
पलरासिन लहि पंति भूख पिसितासिन भग्गिय ॥
दुस्सह भजाइ दक्खिनदलन दलन बिजै वहि चलन चहि ॥
पहुँच्यो हजूर माधव१९३।२प्रथित लोदीसिर१सह किति२लहि॥४५॥
सुनमुव दिय मुगलेस हड्ड६१कँहँ तीनहजारी ३००० ॥
इभ१हय२भूखन३अप्पि किन्न अधिक सु अधिकारी ॥
सेवन हरि१९३।३सक्यो न रचि उनमत्त भाव रस ॥
गढ तस लै गुग्गेर बखसि किन्नौं माधव१९३।२वस ॥
रंचक सिटाइ आदररहित हडुवती पुनि आइ हरि१९३।३ ॥
बुंदीस उपालंभित वस्यो कापरनि सु निजवास करि ॥ ४६ ॥
दिल्लीपुर बहुदिवस रह्यो माधव सेवन रत ॥
प्रतिदिन अधिक प्रसन्न साह रक्खिय नतिसंगत ॥
सुता बिवाहन सिक्ख पाइ कोटा आयउ पुनि ॥
जयसिंहहिं जामात चहि रु बुल्ल्यो उपदा चुनि ॥

अपने उस समय में गुलाब के पुष्प फूलने के समान फूले २ कलियों की पंक्ति के समान १ रक्त में हाथ, पैर और अंगुलियें गिरती हैं ३ बन्दूक की गोलियां रूपी ४ भ्रमरों का समूह ५ पुष्पों रूपी नेत्र फूले. कटे हुए हाथी हैं सो ही पवन से चलायमान ६ केसूला (ढाक के फूल) हैं ७ ध्वजा रूपी आम और ८ घंटा रूपी कोयल करके माधवसिंह ने ६ उस युद्ध को वसंत ऋतु के समान करदिया ॥ ४४ ॥ १० मांस के समूह को लेकर ११ मांसभोजियों की भूख भागी ॥ ४५ ॥ १२ पागलपन में रंगा हुआ रहा ॥ ४६ ॥ १३ सेवा में प्रीति करके

बनि दुलह कुम्भ पत्तो तवहि मंडि बिबिध अनुरूप मह ॥
दिन्नी बिबाहि तनया बिदित सद्धि समय विधि१प्रीति२सह ।४७।
प्रभु कविकुल परपुरुष मान १६७।१ अभिधान सुद्धमति ॥
महमानी तह मंडि असन चउ४ विध भावित अति ॥
निखिल बरात१निमंत्रि सहित जाचक२ जन संघन ॥
सह भट३ माधव१९३।२ सहित सकल भोजे पटुतासन ॥
तिनसौंहि वृत्ति माधव१९३।२तदनु लग्गि प्रसभ रिस करि लई॥
अरु सोहि दई महियारियन भूप सुनहु यह जिम भई ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

बुदी पहिलैं बारहठ, सूचिय कवि सामोर ॥
संतति तिन्ह हुव नष्ट सब, जब उदर्कविधि जोर ॥ ४९ ॥
तवहि उदैपुरबास तजि, जात जोधपुर जानि ॥
नृपको लहि सम्मत निपुन, कुमरहु करि गुरु कानि ॥५०॥
सावरतैं बुल्ले सुकवि, क्रमि सम्मुह हुव२ कोस ॥
ईस्वर१६५।१ बुन्दी आनिकैं, तिम रक्खे निज तोस ॥ ५१ ॥
कुमर भाज१९१।२सह लुछि कवि, पुनि कासी खिन पाइ ॥
अधिपवृत्ति दिय ईस्वर१६५।१हिं, सुर्जन१९०।१ उचित सुहाइ।५२।
परसुराम१६६।१ साँवल१६६।२ प्रमुख, तिनकें पंच५ तनूज ॥
तँहँ चउत्थ४खंधिल१६६।४तिमसु, पुनि माधव१९३।२कृतपूज ।५३।
निट्ठि निट्ठि कोटानगर; जिमतिमको हुव जान ॥
तिन्ह दै निजकुलवृत्ति तँहँ, माधव१९३।२तिम किय मान।५४।
जयसिंहहिं तिनके तनुज, महमानी दिय मान१६७।१ ॥
पुनि माधव१९३।२ जिम खर्बपन, नृप हुव गर्बनिदान ॥ ५५ ॥
बुन्दीसन नृप भिन्न बजि, मान१६७।१ रोध किय मुद्ध ॥

॥ ४७ ॥ १ समूह २ हठ करके ॥ ४८ ॥ ३ आनेवाले समय के कर्म फल से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ४ चलकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५ छोटे पन से ६ राजा का गर्व ही कारण हुआ ॥ ५५ ॥ ७ मूर्ख ॥ ५६ ॥

आत रुक्यो न लवान१, यह, सता१९४१२ ढिग२हु मन सुद्ध ।५६।
सता१९४१२ समन भूपहु सुन्यों, इम खिजि वृत्ति उतारि ॥
अप्पी कवि महियारियन, मान१६७१३ मान सठ मारि ।५७।
लघु निवसंथ इक१ मोलखाँ, इनके रक्खि अधीन ॥
छिन्नि इतर सब किय छमहु, मिथ्रन तनु जल मीन ।५८।
हिंडोली जिम ताल हुव, बनिक प्रधान विधेय ॥
कहियत सब अग्रिम किरन, सह विस्तर यह श्रेय ॥५९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे शत्रुशल्यस्योदयपुरविवाहानेहसि हयमारुह्य तोरणावन्दनाद्धरिदासचारणस्य शत्रुशल्योपालम्भप्रदान१, उक्तहेतोरितरचारणार्थकरिदायकशत्रुशल्यप्रत्ताश्वस्य दुर्दशां विधाय हरिदासस्य शत्रुशल्यसेनायां तदश्वमोचन२, शत्रुशल्यस्य चारणादियाचकार्थसप्तशतकरिसहितलहस्रमिताश्वयुतत्रिंशदयुतदानकरण३, अनारांनामवारांगनाप्रसादाद्गजसिंहकनिष्ठात्मजयशवंतसिंहयोधपुरराज्यासादन४, कथापूर्वापरापरिज्ञानहेतुकसमयानिश्चयसूचन५, बुन्दीपति शत्रुशल्यपितृव्यहरिसिंहोन्मत्तताभणन ६, समरकरदक्षिणदेशस्थ

१ पोंळपात पना उतारकर ॥ ५७ ॥ २ ग्राम ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल के उदयपुर विवाह करने के समय घोड़े पर आरूढ़ होकर तोरण बांधने के कारण हरिदास चारण का शत्रुशाल को उपालंभ देना १ उपरोक्त कारण से अन्य चारणों को हाथी देनेवाले शत्रुशाल के दिये हुए घोड़े की दुर्दशा करके हरिदास का उस घोड़े को पीछा शत्रुशाल की सेना में छोड़ना २ शत्रुशाल का चारण आदि याचकों को सात सौ हाथी और एक हजार घोड़ों सहित तीन लाख रुपयों का त्याग देना ३ जोधपुर में अनारां नामक पातुरी की प्रसन्नता के कारण राजा गजसिंह के छोटे पुत्र यशवंतसिंह को जोधपुर का राज्य मिलना ४ कथा के पूर्वापर नहीं जानने के कारण समय के निश्चय नहीं होने की सूचना करना ५ बुन्दी के पति शत्रुशाल के काका हरिसिंह की उन्मत्तता का कथन ६ रत्नसिंह के छोटे पुत्र माधवसिंह को दक्षिण में खानजहान को युद्ध में जीतने के कारण पादशाह ज-

खानजहानविजयाच्छाहजहांयवनेन्द्रस्य रत्नसिंहकनिष्ठात्मजमाधव सिंहार्थसहस्रत्रयमिताश्वाधिपत्यप्रदान७,कोटाप्रतोलीपात्रत्वस्य मि-श्रणाशाखीयचारणपरित्यागान्महियारियाशाखीयचारणासादनं तृ-तीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदितः पंचदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ दोहा ॥

प्रभु तुमरे कुल परपुरुख, नृप मानिक्य सनाम ॥
क्रम चोथो४ इहिंनाम करि, ध्रुव हुव संभरधाम ॥१॥
नगरकोट गो जब नृपति, व्याहन चरम बिबाह ॥
सैरनि मुकामन धाम सब, बितरे सुजस बिबाह ॥२॥
इम कुल तब परपुरुख हुव, चंडकोटि मति चंड ॥
बाद छह भाखा मिश्र बदि, दिय बादिन जिन दंड॥३॥
मिश्रन दूजो२ नाम महि, जिनको ते जँहँ जाइ॥
सुकवि रहे मानिक्य सन, पट्टालय१ पुर पाइ ॥४॥
कवि तिनके कुलमैं करन१५३।१, पीछैं हुव मतिपूर ॥
निबसे जे मैरुसाँ नियत, दिस नैर्ऋत४ कछु दूर ॥ ५ ॥
करन१५३।१पुत्र हुव दोल१५५।१ कवि, तिनकै डुंगर१५५ तत्थ ॥
बिजयसूर१५६।१ तिनके बिदित, सूर१ सूरि२ गुन तत्थ ।६।
जिन लहि कबहु दुरकाल जब, अर्बुद जनपद आइ ॥
बट्टी कह व्याही बहिनि, भाँम समुद सुमाइ ॥ ७ ॥
सुरामत्त जिहिं भाम सठ, मतिबिनु संसक निमित्त ॥

हांगीर का तीन हजार मनसब देना ७ कोटा के पोळपात पन की वृत्ति मीशण शाखा के चारणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के वर्णन का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१५ मयूख हुए ॥

॥१॥ १ अन्तिम विवाह २मार्ग के मुकामों के ॥२॥३॥४॥ ३ मारवाड़ से ॥५॥ ४पंडित ॥६॥ ५ देश में ६ वाटी शाखा के चारण ७ बहिनोई॥७॥ ८ एक खरगोस के कारण

विजयसूर१५६।१ हनि सत्रु वनि, वंधिय अपजस वित्त॥८॥
जरत संग तिनकी जुवति, पूरन गर्भ प्रवीन ॥
दारि पिट्ठि सिसु कढ्ढि द्रुत, देंय ननंदहिं दीन ॥ ९ ॥
हुव तिनको इम पिंढव१५७।१, धरा विदित अभिधानं ॥
जिम सुकुंभनृप कोटि१०००००००जिन, सुररि तजी तृन मान ।१०!
तिनहिं गोरँ दिय अबूज१००००००००००तब, बच्छराज बरबीर ॥
बाधनवारे१ सहित वलि, सांसन सप्तक७ सीर ॥ ११ ॥
तिनके हुव ग्रह सूर१५८।१तिम, सुत तिनके महसूर१५९।१ ॥
अंगज तिन्ह आनंद१६०।१ इम, प्रथित भक्ति गुन पूर ॥ १२ ॥
कर्मानंद१६१।१सनाम कवि, सुत तिनकै सुभसक्त ॥
बंप्प१तनय२ए हुव२विदित, भये मुख्य हरिभक्त ॥ १३ ॥
कर्मानंद१६१।१तनूज कवि, धरिय लुंव१६२।१ अभिधान ॥
तिन्ह वुल्लिय चित्तोर तब, रायमल्ल जब रान ॥ १४ ॥
सासन उंटोलाव१ सह, देय तिनहिं सब दत्त ॥
करि हित रक्खे लुंव१६२।१कवि, रायमल्ल अनुरत्त ॥ १५ ॥
लुंव१६।१सुकवि चउ४ सुत लहे, प्रष्ठ सुनाभ१६३।१प्रगाथ ॥
तदनुज वामन१६३।२नाम तिम, रायमल्ल१६३।३अरु नाथ१६३।४ ॥
सुत हुव तीन३सुनाभ१६३।१कै, माधव१६४।१भानु१६४।२सुमंत ॥
अरु तीजो३गोइंद१६४।३इम, त्रय३हि रान परतंत्र ॥ १७ ॥
तनुं अग्रज माधव१६४।१तजत, थप्पि भानु१६४।२तिन थान ॥
प्रथित रान संग्राम पहु, मन्नैं अति सनमान ॥ १८ ॥
जदन्खमूल जब रनरहे, महिपरैन१ रविमल्ल२ ॥

॥ ८ ॥ १ पीठ फाड़कर २ ननँद को दिया ॥ ९ ॥ ३ पीठवा (पृष्ठभग) ४ नाम ५ महाराणा कुम्भा के क्रोड़ रुपयों के दान को ६ मुरडकर तृण के समान छोड़ दिया ७ अजमेर के गोड़ राजा वछराज ने ८ सांसण (उदक) ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ समर्थ १० पिता ॥ १३ ॥ १४ ॥१५॥ १६ ॥ १७ ॥ ११ विना सन्तान शरीर छोडने पर ॥ १८ ॥

उत हुव बिक्रम१ भूप इत, सुरतान२सु बुधसल्ल३ ॥ १९ ॥
बिक्रम अक्खिय कवि१ बुध२न, करहु मद३ग्रज कित्ति ॥
मरिय मारि रविमल्ल१८८। मृध, जिम सब द्दु६१न जित्ति ।२०।
कविता तिमतिम सवन किय, भनिय कछु न कवि भानु१६४।२ ॥
तिनपर बिक्रम रुट्ठि तब, किय दर्ग कोप कृसानु ॥ २१ ॥
जिहिं तिनतैं सब ग्राम जुत, उंटोलाव१ उतारि ॥
असनहिं रक्खिय रिंठ इक१, निजढिग गमन निवारि ॥ २२ ॥
हठिदासी सुत रान हुव, बिक्रम हनि वनवीर ॥
नाये कवि तासहु निकट, सो रिठहि गिनि सीर ॥ २३ ॥
जबहि उदय हुव रान जिहिं, हठन सुकवि हक्कारि ॥
सत्य कहहु अक्खिय सुपै, न कवि कहिय निरधारि ॥२४॥
लई छितिहु दैबेलग्यो, इसहि प्रताप उदार ॥
क्रम दोहु२न हठ लंघि कवि, सोहु न किय स्वीकार ॥ २५ ॥
सच्ची वर्णन दै सपथ, पुनि जब कहिय प्रताप ॥
कहि जिम हुव तिम तबहु कवि, इलाँ गत न लियं आप ।२६।
तिम निकसत मेवारतैं, तजि दिन्नौं तिन देह ॥
मन्नहु नृप यह अप्पमत, अब बहुसम्मत एह ॥ २७ ॥
मिश्रन अग्रज भानु१९४।२मृत, उदैपुरहि बिधि अंत ॥
तब ईस्वर१६५।१गोइंद१६४।३सुत, मुख्य भये हगमंत । २८ ।
जिनतैं साहस१सपथ२जुत, पता नृपहु लहि पट्ट ॥
किय निदेस सच्ची कहन, बदहु जथातर्थवट्ट ॥ २९ ॥
ईस्वर१६५।१तब जिम हुव अखिल, इत१उत२भूत उदंत ॥

१बुद्धि के शाल॥१९॥ २मेरे बड़े भाई कीर्ति करो३युद्ध में ॥२०॥४नेत्र५अग्नि ॥२१॥ ६ रींठ नामक ग्राम ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ७ गई हुई भूमि नहीं ली ॥२६॥ हे राजा रामसिंह यह उपरोक्त वृत्तांत थोड़े लोगों की सम्मति वाला है और इससे आगे का वृत्तांत बहुत लोगों की सम्मति का है ॥ २७ ॥ २८ ॥ ८ सत्यता के मार्ग से ॥ २९ ॥

वरन्यौं तहँ कविता विरचि, आधिप रैन छल अंत ॥ ३० ॥
तदनु सुकवि वह वास तजि, किय मरु गम्य प्रकार ॥
सासन ऊँटोलाव१सह, देतहु न लिय उदार ॥ ३१ ॥
पट्ट हुतो जब जोधपुर, नाम उदय नरनाह ॥
तब कवि ईस्वर१६५।१ चिंति तँहँ, रहनलगे मरुराह ॥३२॥
कुमर भोज१९।१।१ यह श्रवनकरि, कासी नृपहिं कहाइ ॥
सासन लहि बुल्ले सुकवि, गह्रे सपथ गहाइ ॥ ३३ ॥
सावरपुर पहुँचे सचिव, बुंदिय ओर बहोरि ॥
आनैं ईस्वर१६५।१ अग्घ१ अति, जथा उचित हित जोरि ३४॥
नगर बरोदाके निकट, दक्खिन दिस गिरिद्वार ॥
कुमर समुख तँहँ जाइ कवि, लायो सादर लार ॥ ३५ ॥
क्रम्यौं बहुरि तिन्ह संगकरि, कासीनगर कुमार ॥
सुर्जन१९०।१ तँहँ आदरसहित, आनिय सुकवि अगार ।३६।
सूचित विधि सब करि सुपहु, तिम ईस्वर१६५।१ कवि तत्थ॥
इक्क६१नके किय बारहठ, अप्पि वृत्ति सह अत्थ ॥ ३७ ॥
नेग बजत वृत्ति जु नियत, गुरु तामैं दुव२ ग्राम ॥
अप्पिय बम्हनखेट१ अरु, भीमखेट२ अभिराम ॥ ३८ ॥
जब पट्टनि१ बस ग्राम जे, अब लक्खैरि२ अधीन ॥
ऐसे निवसथ३ अप्पये, खट६ करि दारिद खीन ॥ ३९ ॥
तिनमैं मुख्य लवान१ तिम, देवांखेट२ दुपट्ट३ ॥
पर्पट४ बक्क५ रु रामपुर६, बखसे खट६जसवट्ट ॥ ४० ॥
केसवकवि सामोरकहँ, समरसिंह१८१।७ नरनाह ॥
प्रथम बरोदाप्रांत जे, दिय खट६ गाम दुबाह ॥४१॥
तिन्हकुल कोहु रह्यो न तब, भिन्नहि रक्खिय भूप ॥
सुर्जन१६०।१जे खट६ईस्वर१६५।१हिं, अप्पे तब अनुरूप ४२

॥३०॥३१॥३२॥३३॥ १ आघ (आदर) ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ २ घर ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥
३ ग्राम ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

तँहँ कच्छोला१ मुख्य तिम, रोसुंदा२ हरिना३ रु ॥
दोडुंदा४ गिंदोलि५ दिय, चंपकखेट६ हु चारु ॥४३॥
कवि ईस्वर१६५।१ सकुटुंब किय, बास अजस्र लवान ॥
इत हरिना कहुँ आगमन, बस तिन अटन बिधान ॥४४॥
कवि ईस्वर१६५।१कै नियति करि, पंच५ विदित हुव पुत्त ॥
परसुराम१६६।१ साँवल१६६।२ प्रथित, स्याम१६६।३ सुगुन संजुत्त ॥ ४५ ॥

तिम खंधिल१६६।४ चोथो४ तनय, सबलघु पंचम५ सूर ॥
सहँसमल्ल१६६।५ अभिधान सो, पन रन अचलन पूर ॥४६॥
प्रकट बसायउ सहँसपुर, निबसथ जिनजिननाम ॥
जु अब रावरे भट्टजन, रहि भोगत प्रभुराम२०३।४ ॥४७॥
सहँसमल्ल१६६।१ पतनी सती, कहियत लालकुमारि१६६।१॥
जो अप्रज पतिसह जरी,अतुल दुपक्ख उधारि ॥४८॥
परसुराम१६६।१ हुव पुत्रजुत, पट नगराज१७६।२हिं पाइ ॥
साँवल१६६।२ सुत भूपाल१६७।१ सुहि, भगवतदास१६७।१ सुभाइ ॥ ४९ ॥

सुत तीजे३ सुत स्याम१६७।३के, कर्मचंद्र १६७।१ पट्कर्म ॥
चोथे४खंधिल१६६।४कै चतुर,मान१६७।१दलन अरिमर्म५०
ईस्वर१६५।१कै हुव सचिव इक, बनिक राम बसु बित्त ॥
दोडुंदा कवि तिहिं दयो, चहि सासन बस चित्त ॥५१॥
कन्या हुव इक१ रामकै, सो हम्मीर१९०।१ सुथान ॥
हिंडोली व्याहीहुती, भनि समीप सुखभान ॥५२॥
दोडुंदा पाउसदिनन, कबहु न जाइ क़नी सु ॥
आई घर रथतैं उतरि, स्वचरन पंक सनी सु ॥५३॥

॥४२॥४३॥ १ निरन्तर लवान नामक ग्राम में रहे और इधर हरणा नामक ग्राम में भी कभी कभी आते रहे ॥४४॥ २ भाग्य से ॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥ ३ शत्रुओं का मर्म दलनेवाला ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ४ कीचड़ से भीगे हुए चरणों से

सरस्सु प्रति मंगिय सलिल. अंघ्रिन धोवन आक्खि ॥
छुल्ली यह तव बप्पकें, संचित धन जग सक्खि ॥ ५४ ॥
कहि तासों व्यय करि कछुक, बिरचि तालमय बीच ॥
नावचढो आवहु निलय, कबहु न लग्गैं कीच ॥ ५५ ॥
इहिं आक्खिय तातहिं रहे, तिहिं जल संभव तुल्लि ॥
रचिय रामसागर सर सु, खरच खजानाँ खुल्लि ॥ ५६ ॥
इन्द्र१।९०।१कहिय मम ढंग इह, तुमरो है किम ताल ॥
कहिय वनिक तुमरो सु किम, हम चाहत जसहाल ॥ ५७ ॥
इत वोडुंदा सीम इन, मही रुकैं जलमाँहिं ॥
सो हमरी जानहु सदा, निज इह हमरी नाँहिं ॥ ५८ ॥
वनिकरास यह लिखि विदित, पुनि ईस्वर१६५मत पाइ ॥
रुचिर रामसागर रच्यो, नव कासार खनाइ ॥ ५९ ॥
कवि ईस्वर१६५।१वपुहान किय, परसुराम१६६।१लिय पट्ट ॥
रक्खिय मोदर नृप रतन१९२।१, वहिय हुगम कुल वट्ट ॥ ६० ॥
दक्खिनतैं जव आइ द्रुत, बुंदी माधव१९३।२वीर ॥
लोभी पुनि जावनलग्यो, सो कोटा लहि सीर ॥ ६१ ॥
परसुराम१६६।१सन तव प्रनतँ, अक्खिय माधव१९३।२एह ॥
संग देहु इक१वंधु१ सुत२, गिनि स्वकीय मम गेह ॥ ६२ ॥
जंपिय कवि हम अल्पजन, तुम कुल प्रचुर प्रतानें ॥
हाकिम कित है वारहठ, सित१ कवि२वहु१जजमान२ ॥६३ ॥
तदपि प्रसभ माधव१९३।२तन्यौं, कवि तव करि तस कानि ॥
अक्खिय खंधिल१६६।४जाहु उत, माधव१९३।२कवि हिय मानि ॥
माधव१९३।२तव सुत मान१६७।१९२, मित्तहु चित्त मिलाइ ॥
विरसहु इम कवहु न वनैं, जमहु अभय तँहँ जाइ ॥ ६५ ॥

आई १ पैर धोने को जल मांगा २ जगत् साक्षी है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥ नर्मान ३ तालाव खुदवाया ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ विशेष नम्रता से
॥ ६२ ॥ ५ बहुत विस्तार वाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६ मित्र ॥ ६५ ॥

अक्खिय खंधिल१६६१४ अग्रज१हिँ, महिपबंस सबमाँहिँ ॥
मेटहु जो न बिभाग मम, यह तो स्वीकृत आँहिँ ॥ ६६ ॥
इम खंधिल१६६१४अरु मान१६७१९, उभय२पिता१सुत२आनि ॥
॥६७॥
मित मासन अंतर अवधि,दिय खंधिल१६६१४ तजि देह ॥
किय तसथान सु मान१६७१९कवि, नुत माधव१६३१२अतिनेह॥६८॥
पै पहिलैं चउ४ परगनाँ, खत बखसीस लिखाइ ॥
त्रय हजार३०००मुनसब तखत, पुनि गुग्गेर१सु पाइ ॥ ६९ ॥
बारनं१ हय२भूखन३बसन४, पंचम५प्रीतिप्रसाद५ ॥
आतहि कोटा पाइ इम, बढ्यो अहम्मति बाद ॥ ७० ॥
कन्या निज दिय कूरमहि, मिश्रनकवि तँहँ मान१६७१९ ॥
जाचक१स्वक२रु बरात३जन, भोजे सब रुचि भान ॥ ७१ ॥
तदनंतर अप्पहिं अतुल, माधव१९३१२ मन्नि महीस ॥
बुंदी१जैपुर२प्रतिम बनि, स्मयभर ओड्यो सीस ॥ ७२ ॥
कवि मान१६७१९हिं माधव१९३१२कहिय, ममकुल वृत्ति स्व मानि
इतरन लेहु न देहु अब, अधिपति कविपन आनि ॥ ७३ ॥
सफर भये तुम सिंधुके, जिन अब बुंदिय१ जाहु ॥
बरजि लवान२हु निज व्रजन, लेहु विभव सुख लाहु ॥ ७४ ॥
हम भूपति१तुम बारहठ२, उज्झहु ओरन आस ॥
अक्खिय कवि सुनतहि अनखि, गर्वहु जिन लघुग्रास॥ ७५ ॥
बुन्दीसम कबहु न बढहु, जिन गर्बहु मद जोर ॥
स्वीकृत तुम कुल वृत्ति सन, अंसु रक्खन तजि ओर ॥ ७६ ॥
पुरबुन्दी१ रु लवान२पै, रुकिहै गमन न रंच ॥
अन्नदकौं कहि दै अधिप, बिनु नृप पदहु अंबंच ॥ ७७ ॥

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १ हाथी ॥ ७० ॥ ७१ ॥ २ बुन्दी और जयपुर के सदृश बनकर गर्व का भार मस्तक पर ३ झेला ॥ ७२ ॥ ७३॥ ७४ ॥ ४ औरों की आश छोडो ॥ ७५ ॥ ५ भाग ॥ ७६ ॥ ६ स्पष्ट (नहीं ठग कर) ॥ ७७ ॥

प्रति ओसर तुमकोंहु पुनि, बुन्दीगमन विधेय ॥
गम्य रोध१ अपजस२ गहत, गमन१ वहत जस२ गेय।७८।
यह सुनतहि माधव१९३।२ अनखि, तहँ कविवृत्ति उतारि॥
छिन्नि त्रि३सासन मुख्य छिति, मान१६७।१मानपन मारि७९
मित कर ग्राम जु मोलखी१, सो तस रक्खि सदाहि ॥
अक्खिय कवि सबठाँ अटहु, अब तुम रोध न आहि ।८०।
मिश्रन कुल कवि मान१६७।१तैं, निजकुलवृत्ति निवारि
दिय कवि लखमीदासकों, चहि सासन वसु८च्यारि ॥८१॥
माधानि२६।२२न सन तब मिटे, नियत मिश्रनन नेग ॥
अरु पाये महियारयन, विधि उदर्क२ लहि वेग ॥ ८२ ॥
इम मिश्रन१ महियारयन२न, बाढगो तबहि विरोध ॥
तामें व्याहि कनीन त्रिक३, बहुरि लयो सुखबोध ॥ ८३ ॥
पहिलैं रहि बुरहानपुर, सेयोखुरम३९।२ बिसेस ॥
अब कोटा हुव भिन्न इम, वाको फल मिलि एस ॥ ८४ ॥
निवसथ ए पंच५हि नियत, इतके चम्मलि वार३ ॥
पाये तिम माधव१९३।२ प्रसू, स्वक जीवन अनुसार॥ ८५॥
जबहि मरी माधव१९३।२ जननि, उडु सत्रह १७२७सक अंत ॥
आये तबहु न ग्राम इत, यह हुव ताम उदंत४ ॥ ८६ ॥
नृप भाऊ१९५।१ सन जिनदिनन, दुष्ट हुतो ओरंग४०।३॥
कोटापति तब राम१८८।३ कछु, सब्बिय हुकम प्रसंग॥८७॥
इम रहि पंच५हि ग्राम इत, आगत१ पुनि गत२ आहि ॥
अवसर पर सब अक्खिहैं, वर्णन नियम निवाहि ॥ ८८ ॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव.

१ जाने योग्य को रोककर ॥७८॥७९॥८०॥८१॥ २ आनेवाले समय के शुभ फल से ॥८२॥८३॥८४॥ ३ चम्बल नदी के इधर ॥८५॥ ४ तहां ५ वृत्तांत ॥८६॥८७॥८८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में कोटा के पोळपात पन की वृत्ति मीशण शाखा के चा-

सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे कोटाप्रतोलीपात्रत्वस्य मिश्रणशाखीयचारणपरित्यागान्महियारियाशाखीयचारणासादनेन ग्रन्थकर्तुः संक्षिप्तवंशवर्णन १ ग्रंथकर्तुर्दौंडूंदानामग्रामान्तिकरामसागरतडागनिर्माणवर्णन २, कोटाराज्यस्य बुन्दीजयपुरराज्यसमत्वासादनकथन ३, ग्रन्थकर्तृकार्याणां भाविसमययातायातत्वकथनप्रतिज्ञानं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः षोडशोत्तरद्विशततमः ॥ २१६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इन दिवसन प्रभु राम२०३१४ इत, समय१ अर्घ२ अनुसार ॥
अंगरेज लोकन इहाँ, बढ्यो बहुल व्यापार ॥ १ ॥
रंगराजनामक रहैं, विजयनगर वसुधेस ॥
तोफा किय बहु भेट तस, व्यापारिन सविसेस ॥ २ ॥
बल्लारी१पुरतैं विदित, उत्तर१दिस जो आहि ॥
अन्नागुंडी२तैं हु इस, जंपहिं दक्खिन२ जाहि ॥ ३ ॥
धारवार१पुरतैं जु ध्रुव, थिर प्राची१ दिस थान ॥
जो मूटीगढ२तैं हु जिम, पच्छिम२ ओर प्रमान ॥ ४ ॥
वातैं पच्छिम१सैह्य अँग, तसपर२सागर तत्थ ॥
गिनियत ढिग गोवा नगर, पोर्टुगेजजन पत्थ ॥ ५ ॥
नदी तुंगभद्रा निकट, दक्खिन१तट यह ढंग ॥

रणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के कारण ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के वंश का संक्षेप वर्णन १ ग्रन्थकर्ता के दौडूंदा नामक ग्राम के समीप रामसागर नामक तालाव के रचने का वर्णन २ बुन्दी और जैपुर के समान कोटा के राज्य के होने का कथन ३ ग्रन्थकर्ता के कार्मों का आने और जाने का भविष्यत् काल में कथन करने के वर्णन का चतुर्थ ४ मयुख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ २१६ सौलह मयूख हुए ॥

१ समय के मूल्य के अनुसार ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४॥ २ पर्वत का नाम है ३ पर्वत ४ मार्ग ॥ ५ ॥

अन्नागुंडी नामर अब, यहहु गिनहु तस अंग ॥ ६ ॥
प्रथम नदी बिच दक्खिन पुर, इन दोउन हो एक१ ॥
नाम जास विद्यानगर, विद्यावढन विवेक ॥७॥
कोउ दसक१०विस्तर कथित; बसि जिहिँ ढंग विरक्त ॥
आचारिज माधव उदित, भये विदित हरिभक्त ॥ ८ ॥
संप्रदाय पहिलो१ सगुन, इनकरि प्रकटयो अत्थ ॥
अधिपतिके मंत्री हुए, प्रथम हुते रहि पत्थ ॥ ९ ॥
अग्ग बसायउ ढंग यह, बीरबक्क नरनाह ॥
नाम जास विद्यानगर, दक्खिन सफल सराह ॥ १० ॥
प्राकृतबानी नाम परि, बिज्जानयर बन्यों सु ॥
बिजयनयर दर्शायबिच, भावितबहुन भन्यों सु ॥ ११ ॥
अग्ग जहाँके अधिपनें, फोजसहित फीरोज८१ ॥
जित्यो दक्खिन साह जुरि, आहव बिस्तरि ओज ॥१२॥
अब जिहिँपुर हो उक्त वह, रंगराज नरराज ॥
पालतहो निज राज्यपद, समुचित लहि सब साज ॥१३॥
वस्तु अंगरेजन बहुन, लहि भेट तस सज्ज ॥
लिखित हुकम नृपसों लयो, कोठी बिरचन कज्ज ॥१४॥
रंगराज नरराजसों, लहि इम सासनलेख ॥
कोरोमंडल कूल बिच, रसा परखि रुचि रेख ॥ १५ ॥

पादाकुलकम्

जिहिँ पूरब१ सूटी१ गढजानहु, पच्छिम१ धारवार२ पहिचानहु
जिहिँ दक्खिन १ बल्लारी१पुर जिम, उत्तर २ दिस अन्नागुंडी२ इम ॥ १६ ॥

तैटिनि तुंगभद्रा दक्खिनतट, विजय नगर जो विजय बुधन भट ॥
जाको नृप हो रंगराज जँहँ, जिहिँ करि तुष्ट अंगरेजन तँहँ ॥१७॥

॥६॥७॥८॥ १ सगुण ॥९॥१०॥११॥१२॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥१५॥१६॥ २ नदी ॥ १७ ॥

कारोमंडलतट सतंत्र किय, कोठी गढ सम रचन मंत्र किय॥
अक्खिय रंगराज अंग्रेजन, सो बिरचहु मम नाम चिन्हसंन॥१८॥
इन अक्खिय कोठी१ हम अंकित, सहर२ रचहिं तुमनाम असं-
किंत॥
आये जे पूरबतट कहि इम, तँहँ गढप्रतिम रचिय कोठी तिम।१९।
फोर्टसेंटजार्ज१ सु अभिधा फबि, छमन रचिय वह हट्ट दुर्ग छबि॥
ध्रुव तँहँ रंगराज अभिधा धरि, रचनलगे पुर कलिंत कोल
करि॥ २०॥
सक सर अंक अष्टि१६९५ सम्मित सम, कतिकन मत रस अंक
अष्टि१६९६ क्रम॥
अंग्रेजन तँहँ रचि कोठी वह, बिरचिय नगर सिंधुतट सुखबह।२१।
दक्खिन१पुर चुंगलपट्ट२ बिदित, उत्तर१ पल्लीकाट२ झील इत॥
इन्ह पुर१ झील२ दुहुँ२न के अंतर, बिरच्यो नगर अपुब्ब छटावर
बिजय नगर दक्खिन धर बीचहि, रोहित तुरग कोन२ तासौं रहि
ललित पुब्बसागर तट लहियत, कारोमंडलनाम सु कहियत।२३।
पल्लीकाट१ रु चुंगलपट्टुव२, दिस जासौं उत्तर१ दक्खिन२ दुव२॥
तिन्ह बिचकारोमंडल अंतर, कोठी१ पुर२ बिरचे क्रय जस कर।२४।
अक्खहिं गढहिं फोर्ट अंग्रेजन, सेंटजार्जगढ१ हट्ट२ नामसन॥
किय व्यापारिन मंत्र असंकित, कोठी किय नृपनाम अनंकित२५
अब नृपनाम रचैं पुर यातैं, बिहित कोल नहि बचन बिघातैं॥
इम तिहिं पुर अभिधा बिचारि उर, रक्खन लग्गे रंगराजपुर।२६।
तँहँ नृप रंगराजके मंत्रिय, जानि नृपहिं प्रतिमा प्रमत्त जिय॥

॥१८॥ १९॥ १ समर्थों ने २ विदित॥ २०॥ ३ सुख प्राप्त करके॥ २१॥ २२॥ ४ रुका हुआ ५ अग्नि कोण॥ २३॥ ६ मोल लेकर॥ २४॥ ७ अंगरेज लोग गढ को फोर्ट कहते हैं इसकारण मदरासके गढका नाम फोर्टसेंटजॉर्ज है और कलकत्ते के गढ का नाम फोर्टसेंटविलियम है ८ कोठी पर राजा का नाम नहीं रक्खा॥ २५॥ ९ उचित १० वचन का नाश नहीं करते ११ नाम॥ २६॥ १२ मूर्तिमान्

सामद्दान२ दुव२ उपाय अनुसारि, कहिय कहहु पुर जंनक
नाम करि॥ २७ ॥
छितिपति राम२०३१४ अनेह पाइ छम, अंग्रेजन जान्यौं फल उद्यम॥
गढ सोपुर१ सचिवन करि ज्यौं गय, ज्यों तिन्ह कपटभये नर-
उर२ जय ॥ २८ ॥
तिम नयपट्ट भला जालम तब, कही सवन नमि रीभ१खीज२सब
हुव अंग्रेज कुसल जब हाकिम, तस नत्ती लिय बट तीजो३ तिम
इम प्रमत्त चिरतें हुव अधिपति, महि दै सचिवन चहत भोगमति॥
इम ठग रंगराजके सचिवहु, लंचा१ बटँ२ लिपिपत्र अप्पि लहु३०
प्रभुमैं कछु न प्रभुत्व प्रमानत, जिम करिहौं सु होहिं यह जानत॥
चीनापानिज जंनक नाम चहि, किय पुर फुटँ चीनापट्टन कहि३१
अंगरेज मन चहत हुते यह, स्वामी१ सचिव२ विरोध मचैं सह ॥
यातैं सचिव कथित अब धार्यो, नृपको हुकम समूल निवार्यो॥
मंदराज१चीनाँपट्टन२माहि, लहि सु दु२नाम वस्यो तव खिन लहि॥
भूप्राची सागरतट मंडल, महीविदित वह कारोमंडल ॥ ३३ ॥
सो तँहँ रंगराज सासनसन, उक्त रचिय कोठी अंग्रेजन ॥
कोठी हुव पुव्वहु तँहँ केही, आनि उचित न हुती पर एही ॥३४॥
सेंटजार्ज अभिधान रक्खि सो, अब विरची रन उचित आक्खि सो।
पुर मंदराज१चीनाँपुरपट्टन२, धरि दुव२नाम बसायो अति धनं ।३५।
व्यापारिन तासौं क्रय१ विक्रय२, अधिक वढ्यो फल भौंगधेय अँय॥
वाहिसमय दिल्ली हु आइ अँर, साहजिहान३९।२ तुप्ट करि अवसर

१ रंगराज के पिता के नाम से नगर रचा ॥२७॥ हे नृपति रामसिंह २ समय पाकर उन समर्थ अंगरेजों ने. ३ जिस प्रकार सचिवों के कारण सोपुरगढ गया और उन्हीं के कपट से नरवर विजय हुआ (ये दोनों दृष्टान्त हैं) ॥ २८ ॥ ४ जालिमसिंह के पोते ने ॥ २९ ॥ ५ बहुत समय से ६ नजराना और ७ बंट (विभाग) की लिखावट देकर ८ शीघ्र ॥ ३० ॥ ९ रंगराज के पिता का नाम १० प्रसिद्ध ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ११ भाग्य १२ आगामि काल के शुभ कर्मों से १३ शीघ्र ॥ ३६ ॥

लेख निदेस तदीय तथा लहि, चित्त क्रयोचित[1] बंगदेस चहि ॥
नदी१रु पुर२ जँहँहुगली नामक, आइ तहाँ लखि भुव अभिरामक
तिहिं प्रदेस नाना कोठिन तनि, व्यापारिन-बहुलाभ गयो बनि ॥
अकबर३७।१साह समय ए आये, छितिपर सनैंसनैं इम छाये ।३८।
सक कति कहत व्योम ससि सप्तह१७१०, इम किय मंदराज
कोठी वह ॥
हुव तिहिं पुब्बहि बंग[2] वलेस्वर, इम कथन मत१लिपि२कछु अंतर ३९
इत गोपालदास चंपाउत, जाचक पुब्ब बचाये हितजुत ॥
तससुत सूर भये बहु तिनमैं, ख्यात प्रबीर बलू जासिनमैं ॥४०॥
अमरकुमरढिग रहतहुतो यह, तसकरगन[3] अजा१ हुँडर[4] घेरे तह ॥
बलू चढयो न अमर तँहँ बुल्ल्यो, तुम बढि भीर क्यौंन असि तुल्ल्यो ॥
बलू कह्यो है दुख गो१बिप्र२न, छिति३कै जातचहैं भट छिप्र न ॥
स्वामी तब समुझहु हम हेलन[5], ओरहि बहु अज१हुड२उब्बेलन[6] ।४२।
गदिय कुमर हम संकट साग्रह[7], साह पटा तजिकैं सरिहौं सह ॥
अज१हुड२मोरि न आनत यातैं, बिरस भयो ऐसी बढि बातैं ॥ ४३ ॥
भई जोधपुर१कति यह भाखैं, लहि नागोर२क्रिते अभिलाखैं ॥
बिरस परंतु होत इम रस बढि, चंपाउत तजि पटा गयो चढि ॥ ४४ ॥
पत्तो बीर बलू सु उदैपुर, अग्घ कियउ जगतेस लाइ उर ॥
रान कहिय कहु रुपि रु रचैं रन, जिहिं रवि देत सूरपन सो जन।४५।
बीर बलू बुल्ल्यो इक१बारहु, रवि हमरो वीरत्व बिगारहु ॥
रविदिस यह तबतैं रढरावन[8], अर्घकाललगि छार[9] उडावन ॥ ४६ ॥
इम सु तदनु दिल्लीपुर आयो, पटाबिसेस साहसन पायो ॥
पहिलैं कवि मति फुरन न पाई, इहाँ कहीं यह यौं स्मृति आई ।४७।

१मोल लेने से उचित बंगाल को जानकर ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ २बंगाला ॥ ३९ ॥४०॥ ३ चोरों के समूह ने बकरे और ४ भेड़ ॥ ४१ ॥ ५ अपराध ६ बचानेवाले ॥ ४२ ॥ ७ आग्रह सहित ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ रावण के समान हठ रखने-वाला ९ अर्घ देने के समय सूर्य के सन्मुख भस्मी उडाने लगा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

पुव्व१अपर२नवकोटिहि न पावत, उलटि१पलटि२वत्तैं इम आवत ॥
अधिप सुता १९५११ हु सुता दूजी इत, कमनकुमारि १९५१२रक्खि वय अंकित ॥ ४८ ॥
राजसिंह जगतेसगान हुव, धीदा वरन वर सु वुल्ल्यो ध्रुव ॥
कमनकुमारि १९५१२ दिय ताहि लग्नक्रम, रचि सब संचय उचित मनोरम ॥ ४९ ॥
जिहिं अनुजा कल्यान कुमरि१९५१३ जिम, आयु अल्प करि सिसुहि मरी इम ॥
कन्या तस अनुजा रामकुमरि १९५१४, क्रम वय लहत पहहु संभव करि ॥ ५० ॥
बंधू नृप चाहुवान बघेला, कुझि अनोपसिंह सुभवेला ॥
परिनाई [illegible] हु सुता पहु, वितरि अखिल आखिलन समुचित वहु
अलपाहि हुव व्याहन इन्ह अंतर, दुरकनी दिय जस छाइदिगंतर ॥
अमरसिंह गजसिंह तनै इन, जिम नागोर लह्यो तव अरि जित ॥ ५२ ॥
जुव्वन वय उकतपन जाके, तदपि जनकसासन सिर ताके ॥
तातैं जहि नागोरहु तुट्टहि, जितातिम कियउ जवनपति जुट्टहि ॥ ५३ ॥
तदपि जोधपुर द्रविन आढ्यतम, कित नागोर तास क्रम कमकम ॥
इम जसवंत साह अधिकारी, किय ऊंचा पूरन वधिकारी ॥ ५४ ॥
अमर कबहु दीवान न आयो, व्याधि कछुक बहु दिनन दबायो ॥
नाम सलावतखान नवाहि नामे, किय छल विन्नति साह गांह क्रमि
अमर रोगमिस इतहिं बुलावत, अप्प अंगद दीवान न आवत ॥
कहिय साह जो एह सत्यक्रम, दम्म लेहु तासों देकैं दम ॥ ५६ ॥

॥ ४८ ॥ १ पूर्व को देकर पलटने के लिये २ निश्चय ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ३ प्रसन्न ४ प्रीति युक्त किया ॥ ५३ ॥ ५ धन से ६ अत्यन्त धनवान् ७ कम से कम ॥ ५४ ॥ ८ अपने स्थान (जगह) पर जाकर बादशाह से विनंती की ॥ ५५ ॥ ९ नैरोग्य है तो भी सभा में नहीं आता ॥ ५६ ॥

सुनि यह *पत्ति पठाइ सलामत, तिम संगे †दम्म दम्म दिनन तत ॥
रोज तलब दैदै अमरेसहु, लहि हठ न दिय दंडमैं लेसहु ॥ ५७ ॥
तदनु कबहु उल्लाघं होइ तँहँ, पत्तो अमर असंक साहपँहँ ॥
मिच्छ मीरबखसी जु सलामत, ताकँहँ मुख्य प्रकोष्ठ मिल्यो तत ॥
अक्खिय तिहिं दै दम्म जाहु इत, हठजिन करहु गँवार मरनहित ॥
सुनत गँवारबचन अमरेसहु, लै पट्टिस कंचुक गोपित लहु ॥ ५९ ॥
छमें करि पार सलामत छत्तिय, घोर सजोर कुलाहल घत्तिय ॥
माँहिं गयो इम मारि सलामत, बिक्ख्यो रुहिर कटारहिं बामत ६०
भैचकि सभा निरायुध भूपन, प्रद्रुत हुव गिनि काल निरूपन ॥
जनत्राता इक्क१हु न लह्यो जिम, अंदर दुरन साह नट्ठो इम ॥ ६१ ॥
बलज रुकाइ संधिल्ला बट्ट सु, आतुर पहुँचि सिरोगृह अट्ट सु ॥
टिकि उप्पर जे भेर निज टारे, पकरन१मारन२ताहि प्रचारे ॥६२॥
हँसे सुभट कहि सिंह नख न हम, नहिं तिम दट्ठ नाम१सूकर२सम
जानहु सेस जीह रन जनिवो, व्है किम अब गहिवो१कै हनिवो२ ॥
डरबिनु साह कुपित ओठन डसि, उप्परसन दुव२तब डारे असि ॥
अर्जुन१गोर अमरसालक इक१, संग्रहि अपर२द्वितीय साहसिक ॥
समुख चलै द्वै२ही असि सायुध, जत्रकुत्र जन इतर निरायुध ॥
अमर कहिय इक१पैं दुव२आवहु, गंजि असिन मम सीस गिरावहु
साहहु मूढ अंध अनुसारी, करैं खलन अैसे अधिकारी ॥

सलामतखां ने*पैदल भेजकर †दंड के रुपये ॥५७॥ १नैरोग्य होकर २ मुख्य द्वार (डोढी)पर ॥५८॥ ३बागे (जामे) में ४छिपी हुई कटारी लेकर शीघ्र ॥५९॥ उस५ समर्थ ने उस कटार से रुधिर टपकाता हुआ देखा॥ ६० ॥ ६ भागे ॥ ६१ ॥ ७ सुरंग के (गुप्त) मार्ग का द्वार रुकाकर ८ ऊपर के महल की छत पर चलागया ९ भट ॥ ६२ ॥ उन सुभटों ने हँसकर कहा कि न तो सिंह के समान हमारे नख हैं और न सूअर के समान डाढा और तुंड हैं फिर बचन युद्ध से कैसे पकड़ा जावे और मारा जावे ॥ ६३ ॥ यह सुनकर बादशाह ने ऊपर से दो खड्ग डाले जिनमें से एक तो १०अमरसिंह का साला अर्जुन गौड़ था उसने लिया और दूसरा किसी साहसी ने लिया ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

कहैबो दंड बुरो न कहे हम, तदपि अवाच्य अहो विस्मयतम ॥६६॥
अटयो अमर संसदं इम अक्खत, तिहि उभैरहि दिट्ठिविच रक्खत ॥
अमरातंकें सभा अकुलाई, मनु होरी हुसियार मचाई ॥ ६७ ॥
अवलाजनहु उच्च आवासैन, प्रचुर सुन्यों कलकल चहुँ पासन ॥
साहसुताहु व्यग्र कति सूचत, मन्निरही अमरहिं पतिपन मत ६८
कहत वजीरसुतासंगत कति, अपर कितेक कहत मिथ्या अति
पटुँ मनुंजन निश्चय यह है पर, जिमतिम जड़न सूचियत अवसर ६९
अक्खिय साल गोर अर्जुन इम, करहु भाम मोमैं संसय किम ॥
अमर तदपि सब गंजि सभा वह, गोरहिं लखि सालकपन साग्रह ॥
अक्खिय तुम मम समुख न आवहु, लरि जिन मंतुं भाम सिर लावहु
अर्जुन कहिय अहो संसय इत, है को खल संवद्ध हननहित ॥७१॥
चाहि तुमहिं गृहलग पहुँचैहों, लाभसमय अपजस किम लैहों ॥
तदपि अमर मन्नी न वंत्त तस, सूचिय नन प्रत्यय अव साहस ॥७२॥
रहि इम पिट्ठि चरन मम रक्खहु, चरन सत्रु जानहु तिहिं चक्खहु ॥
सालक भो करि सौंह ओट इम, तव अमरहु विस्वास मन्नि तिम ॥
साहसभा सब कहि नारिनसम, भुजकट्टार पारि जिततित भ्रम ॥
कहनलग्यो खिरकी विक्रम क्रम, सालक जानि सत्यपथ संगम॥
अधम गोर विस्वास दयो इम, स्वीय स्वसा करिहों विधवा किम।
विश्रंभहु कछुकछु इम वैनन, लखि खिरकी वाहिर असु लैनन॥
मस्तक करि प्रविस्यो खिरकी मैं, धरत जदपि अवहिंतपनधी मैं ॥

---

१ सभा में अमरसिंह इसप्रकार कहता हुआ फिरा और दोनों के रिष्ट (खड्गों) को दृष्टि में रक्खा २ अमरसिंह के भय से ॥ ६७ ॥ ३ स्त्रियों ने भी ४ कौतू-हलों से ५ बहुत कोलाहल सुना ६ आसक्त अथवा व्याकुल ... को पति मानती थी ॥ ६८ ॥ ७ चतुर ८ मनुष्य ॥ ६९ ... में बुन्दी के भूपति ॥७०॥ ९ बहिनोई लड़कर मेरे मस्तक पर १० अपराध ... नामक शहर व-भरोसा नहीं है ॥ ७२ ॥७३॥ १२ पद विन्यास ... बगाले में रहना ? जोधपुर बहिन को विधवा क्योंकर करूंगा १३ विश्वासक चांपावत का उदयपुर होकर

पय इक१ अमर कछन न पायो, चोर गोर तहँ जोर चलायो॥७६॥
कट्टिय भास चरन अघकारी, कट्टी श्रुति तस फैंकि कटारी ॥
बीर अमर बाहिर जकि बैठो, प्रगत श्रवन अर्जुन उत पैठो॥७७॥
कुहँक गोर अमरहिँ अचरनकरि, कलुखी बिरहित इक्क१करन करि॥
पच्छो जाइ साह प्रति प्रनम्यौं, निरायुधहु अमरसु इत न नम्यों७८

चरनकरि१ करनकरि२ प्रनम्यों१ ननम्यों२ अन्त्यानुप्रासौ२॥

मिलि सो बहुन सायुधन मारयो, कनकट गोर बुधन हुहुकारयो ॥
निजन कुमार कुँश्राप इत आनिय. किय प्रारंभ जग्ग कुसगानिय॥
यह सुनि बत्त बल्लू१ चंपाउत, जो निजबंधु नाम भाऊ२ जुत ॥
अमर भीर खिरकी लग आयो, प्रान बिहीन कुमर तँहँ पायो ८०
दुवरहि पट निज फैंकि साह दिस, रारि मचाइ रचाइ काल रिस।
कुमर बेर संगै सु देहु कहि, तोरन पर जुज्झे भँरजातहि ॥ ८१ ॥
कुमरानीप्रति जरन कहाई, बाचिक इक१ हमरो तुम बाई ॥
यह लैजाइ कहहु पतिअग्गैं, अक्खिय हमहिं क्रोधमति अग्गैं ८२

पतिअग्गैं१ मतिअग्गैं२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

अब तुम जो न छुरावहु हुड१अजर२, गहि असि तो दलिहो कब गुँडगज ॥
साहपटा तजि तुम रचि सँगर,स्वामिसहाय लज्ज धरि लंगर ।८३।
समसहाय धारन चढि मरिहो, कब तब सफल दर्प यह करिहो॥
आनिबनो सुहि बत्त अमर अब कबतैं दर्प हुतो सु गयो कब ८४

पन धारण करता था तो भी ॥ ७६ ॥ उस पापी ने बहनोई का चरण काट
...मथ ...और अमरसिंह ने कटारी फैंककर अर्जुन गौड़ का कान काट डाला
सुरंग के (गुरु...लसाज २ वह पापी एक कान से हीन होकर ॥ ७८ ॥ ३ अपने
६ भट ॥ ६२ ॥ उन...र को ॥ ७९ ॥ ८० ॥ वह ४ भट बाहर के द्वार पर जाकर
नख हैं और न सुअर के हमारा एक वचन पति के आगे जाकर कहना ॥ ८२ ॥
कहा जावे और मारा जावे...रे नहीं छुडाओगे तो पाखरों सहित हाथियों को
...ड्र डाले जिनमें से एक तो १०६ घमंड ॥ ८४ ॥
या और दूसरा किसी साहसी

तनमन हम तब साहपटा तजि, और आइ तुम मरनथान भजि॥
कंकनहीन बहुल कीबिन करि, धव जस मनि कै डौक अतुल धरि ॥ ८५ ॥
पथचर्वक गोरहु जो पाते, हुत तस सुनपन सफल दिखाते ॥
सहकरि हम इम मरत इहाँ अब, सति पति प्रति मति१ गति२ सूचहु सब ॥ ८६ ॥
जे ऐसैं समुझाइ सतीजन, करत अंज्ज१ मिच्छर२न मन कन कन ॥
बहु हनि वीर बिरचि घायल बहु, लरि मरि कुमर सभापहुँचे लहु

॥ दोहा ॥

तिहिँकालहु प्रभुराम२०३१४ तुम, पिक्खहु इम रजपूत ॥
वचन गँवार न सहि बहुन, पारि परयो गंजपूत ॥८८॥
आँट वचनकी धरि इमहि, बलू१ कबंधहु वीर ॥
परयो पारि बहु पुव्वके, स्वामि लोन करि सीर ॥
सु निज बंधु भाऊ१सहित, सह सज्जित निज सत्थ ॥
बहि भिग्गत खिलखिल बलू२, तिलतिल कट्टिय तत्थ ॥९०॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे सेंटजार्जनामदुर्गं चीनापट्टननामनगरं च निर्माय विजयनगरसमीपे वङ्गदेशे चाङ्गलजननिवसनं १, योधपुराधीशात्मजामरसिंहरुष्टचाम्पाउत्तबल्लाख्यस्योदयपुरगमनपूर्वकदिल्लीग

---

* पति के यश रूपी मणि की अतुल १ शोभा धारण करके ॥ ८५ ॥ २ धरण के चलानेवाले गोड़ को पाते तो ३ उसका कुत्तापन ४ साथ करके ५ हे सती ॥ ८६ ॥ ६ आर्य और म्लेच्छों को ७ शीघ्र ॥ ८७ ॥ ८ गजसिंह का पुत्र ॥ ८८ ॥८९ ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में सेन्टजार्ज नामक गढ और चीनापट्टन नामक शहर बनाकर अंगरेजों का विजयनगर के समीप और बंगाले में रहना १ जोधपुर के कुँवर अमरसिंह से रुष्ट होकर बल्लू नामक चांपावत का उदयपुर होकर

मन १, सलामतखांनिधनयवनेन्द्रसभाभयापादकशाहकूटकुमारामरसिंहस्य स्वश्यालकार्जुनगौडकरचरणकर्त्तनानन्तरतत्कर्णामुत्कृत्य वीरतया पञ्चत्वासादन ३, कुमारामरसिंहवैरवालनहेतुचाम्पाउत्तबल्लवाख्यस्य वीरतया मरणं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितः सप्तदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लोदीखानजिहान लै, दक्खिन भीर दुरंत ॥
दिल्ली छुत्र दब्बत दल्यो, सो माधव१९३।२रन संत ॥ १ ॥
जाकै संगी सेस जे, दक्खिनअधिप दुवाह ॥
जिनपर साहजिहान३९१।२इत, सजि चल्लै अब साह ॥ २ ॥
नृप१नबाबरलाहि सत्थि निज, अकबर३७।१नत्ती एह ॥
लोदी पक्खन लुंचिबे, गो दक्खिन गिनि गेह ॥ ३ ॥
संगहि हे माधव१९३।२सता१९४।१, जयसिंह१रु जसवंत२ ॥
बुंदेला बरसिंह ३ बलि, सूर ४ कबंध सुमंत ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

लिपि पठई मुगलेस पहुँचि दक्खिन सत्रुन प्रति ॥
लोदी संगति लग्गि देस लुट्टिय तुम दुर्मति ॥
चोरन चोरन चाह होत गृहपति जग्गनहद ॥
अब किन सम्मुह आहु मोहि अपनौं दिखाहु मद ॥
उनकै न रह्यो अवॅलंब अब जिहि मिस सब सम्मुह जुरैं ॥

दिल्ली जाना २ सलामतखां को मारकर बादशाह की सभा में भय डालनेवाले कुंवर अमरसिंह राठोड़ का अपने साले अर्जुन गोड़ के हाथ चरण कटे पीछे अर्जुन का कांन काटकर वीरता से माराजाना ३ कुमर अमरसिंह का वैर लेने के कारण वल्लू चांपावत का वीरता के साथ मारेजाने का पांचवां५मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१७ मयूख हुए ॥
॥ १ ॥ १ वीर ॥ २ ॥ २ पंख उखाड़ने के लिये ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ३ आधार

लोदी सु मरत टरिवो हि लखि मन व्यंवाहित घरघर मुरैं ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

थक्कि बैठ इम अरि थानथान, सुहि सानुकूल समुभ्रत सुजान ॥
दिल्लीस विहरि दक्खिनप्रदेस, बढि जत्रकुत्र किय अरि बिसेस ।६।
भिरि असक्केहि गढ भिन्नभिन्न; भर दुसह केहि किय छिन्नभिन्न
पहिलैं गयो सु आसेर१पाइ, बिचके प्रदेस२वसके बनाइ ॥ ७ ॥
जयं करि तिन अहमदनगर ३ जित्ति, प्रथम १ हि प्रयान किय विजय कित्ति ॥
इम खानदेस निज जंत्र आनि, पच्छिम सह्याचल४हद प्रमानि ।८।
अब दुलभ दोलतावाद५आइ, घेरयो गढ गोलन गंजर धाइ ॥
सुत१नारि२कुमरपन जत्थ साह, रक्खे चिर निर्भय सरन राह ।९।
बीजापुर सम जाको विसास, इहिं खुरुम३९।२लही जँहँ जिय न आस
दुर्ग सु हो दुर्गम पै सुदिट्ठ, पाके सहाय हुव फलन इट्ठ ॥ १० ॥
यह विदित मर्म हो निवसि अग्ग, मिलिजात फलहिं अनुकूल मग्ग
गढविच इम संकट किम हु गेरि, हद्दे६१स सता १९४१ दिक पास हेरि ॥ ११ ॥
लिय ऐसै संकट सत्रुलोक, अप्पन बचैं न जिम तजिहु ओक ॥
बुरहानपुर जु हुव कोल बैन, हद्द ६१ न पति हाकिम रहत रैन १९२।१ ॥ १२ ॥
पुहवीस सता१९४१सुमिरन सुपाइ, वासी गढके कहु बचाइ ॥
तिन मन्नी उत७जिय दिय सता१९४१ हि, जयबीज गिन्यों इत २ साह जाहि ॥ १३ ॥
अतिजस मनाइ भूपति दुरओर, जित्यो वह दुर्गहु खग्ग जोर ॥
इत तंत्र दोलतावाद५ आनि, जयहेतु सता१९४१ कहँ साह जानि

१ छिपकर ॥ ५ ॥ ६ ॥ २ भट (लार) ३ आमेर गढ ॥ ७ ॥ ४ वेग ॥ ८ ॥ ५ निरन्तर प्रहार से ६ घाव करके अथवा मारकर ॥ ९ ॥ ७ श्रेष्ठ भाग्य से ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ८ घर ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ९ जय का कारण

इम भेट दयो पहिले अनेह,नृप रत्न१९२।१जहांगीर२८।१हिं सनेह
सो सिव प्रसाद गज खास साह, बुंदीसहिँ बखस्यो सह सराह ॥
या द्विरद१माँहिँ हे गुण्ण अनेक, क्रम तास संग दिय बस्तु केक ॥
पोसाक२ खास भूखन३ उपेत, यह४ हेति५ दये जयहेतु हेत।१६।
दक्खिनप्रदेस इम कति दबाइ, अकबरपुर प्रबिस्यो साह आइ ॥
करि सिक्ख नृपहु अप्पन निकाय, क्रमि आयो बुंदिय सु रुचि काय ॥१७॥

निकाय१ चिकायर अन्त्यानुप्रासः॥१॥

पूर्बा १ पर २ बत्तन क्रम न पात, इम बदलि कथानक बहुत आत॥
जँहँ हम सक निश्चय लिखहि जानि, मेधावी तँहँ क्रम लेहु मानि१८
अंबर बसु सोलह १६८० सक अनेह, उपज्यो पट्ट भाऊ १९५।१ कुमर एह ॥
अब सक ख सून्य अत्यष्टि १७०० अंत, याकैं हु कुमर हुव मेह अनंत ॥ १९ ॥
जेठीकुमरानी जनित जोहि, संज्ञा करि पृथ्वीसिंह१९६।१ सोहि॥
नत्ती यह जनमत सुनि नरेस, बुन्दीस सता१९५।१ दिय बसु बिसेस ॥ २० ॥
दौहित्र जनम सुनि उदयदंग, जगतेस रान जँहँ अतिउमंग ॥
करि रीझ उतहु किय महप्रकास, मरिगो सु कुमर पुनि रहि दुर मास ॥ २१ ॥
क्रम करि तबलौं भाऊ१९५।१ कुमार, ऊढाँ कुमरानी त्रय३उदार॥
धनकुमरि १९५।१ बडी१तँहँ गुननिधान, जगतेसरानतनया सुजान
हरिसिंहसुता दूजी२ बहोरि, जो पुर प्रतापगढ गंठि जोरि ॥

---

१ समय ॥ १५ ॥ २ सहित ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पहिली पिछली बात का क्रम नहीं पाकर इसप्रकार कथा ४ बुद्धिमान् वहां क्रम मान लेवें ॥ १८ ॥ ५ उत्सव ॥ १९ ॥ ६ नाम ॥ २० ॥ २१ ॥ ७ विवाहिता ॥ २२ ॥

निजपतनी भाउलदेवि १९५।२ नाम, कुमरानी आनी वरि प्रकाम
वडगुज्जरि तीजी३लग्गनेर, कन्या जु भूप फतमल्लकेर ॥
हरकुमारि १५९।३ नाम हद निपुन नारि, परनी सु राजपुरगढ प-
धारि ॥ २४ ॥

इत दिनन कुमर संबंध एक, बुंदेलन विरचन किय विवेक ॥
भूपति बुंदेलहु खुरम ३९।२ भीर, पहिलैं हुव टारन परन पीर॥
जिहिं कै व साह साहिजिहान३९।२, सन्नैं स्व सहायक अधिक मान
सीसोद १ भीमसुत रायसीह, बुंदेल२ भूप तिम रन अबीह ॥२६॥
बैठतहि पट्ट दोउ२न बुलाइ, भूपाल बनाये उचित भाइ ॥
कछु लहि कुजोग बुंदेलवंस, पुव्वहि सु हीन हुव हत प्रसंस ॥२७॥
बुंदेलभूप बरसिंह वीर, वढि अब सु सुद्धकुल करन सीर ॥
अपनैं निहारि कन्या अनीकं, वसुधेस वरहिं तनि सह तितीक॥
बुंदीसकुमर कतिकन दताइ, जंपिय यह सगपन बनिहुजाइ ॥
तो आहि कनी तुमरे जितीक, वसुधेस वरहिं तनि महँतितीक२९
बरसिंह सुसंगत समुझि बात, भेजे पुर बुंदिय सचिव१ भ्रात २॥
संबंध उचित उपहार सत्थ, आये फल चाहत तेहु अत्थ ॥३०॥
आदर१ सह डेरा२ तिन्ह दिवाइ, पाहुन सनमानैं मोद पाइ ॥
वनि सुनि सता १६४।१ हु सगपन बिचार, करि बिजन मंत संग-
त कुमार ॥ ३१ ॥

नटि जान अक्खि तिहिं सह निदान, पठई कहि न करत सुत
प्रमान ॥

याकै बिवाह लिक३ पुव्व आस, तिनमैं हि तुष्ट अधिकन उदास
बुंदेलन जानिय लोभवैन, स्वीकारि है सुनतहि उचित अैन ॥
पठई कहि पातैं बुल्लि पास, पुनि कग्गहु सभा आसय प्रकास ॥३३॥

---

१ विशेष कामना से ॥ २३ ॥ २४ ॥ २ विचार ॥ २५ ॥ ३निर्भय ॥ २६ ॥ २७ ॥
४ कन्याओं की सेना ॥ २८ ॥ ५ उत्सव करके उतने ही राजाओं को विवाहंगे
॥२९॥ ६साथ७पाहुने८कुंवर के साथ एकान्त में सलाह करके ॥३०॥३१॥३२॥३३॥

रचि संसद बुल्ले तब नरेस, बेठारे सब मिलिहित बिसेस ॥
प्राघुनन कहिय सिंधुर१ पचास ५०, इककोटि १००००००० दम्म२ पुनि देय आस ॥ ३४ ॥
सत १०० हीरक ३ बहुगुन १ अर्घ २ सुद्ध, वेजाकर हम भुव जनित बुद्ध ॥
पुनि सीम बिदित हुव २ परगनाँ ४ हु, वसुं आढ्यं पाइ रीझहिं वनाँहु ॥ ३५ ॥
अनुचर१न मिथुन २ सत १०० सत१०० सुसेव, दुरगुनाँ सब दायज लेहु देव ॥
नृप कहिय कुमर व्याहन निरास, स्वीकार नतो सगपन भिसास
पुनि कहिय मिलावन जन्मपत्र, तमक्यो हरि १९३१३ काका सुसुनि तत्र ॥
अपनाँ कुलसंकर तउ उदार, गिनियत जगसुद्धहि गहिरवार ।३७।
हम कुलहु करन तुम सम चहंत, दुरि अब घर जावहु हे महंत॥
संकर तथापि बुंदेलसूर, ऐसी सहैं न दूर१ रु अदूर२ ॥३८॥
असि ऐंचि ऐंचि तिन कहिय एह, गिनियत कुल सुद्धहिं हम्म १८३।१ गेह ॥
नृप आनि डोडे हरराज नारि, बंसहि यह तासौं दिय बिथारि ॥३९॥
ते इम अवाच्य कहि पकरि तेग, बुंदेल मुरे प्रतिमग्ग बेग ॥
बरसिंह क्रुद्ध हुव सुनि सुवत्त, दिल्लीसहिं जिहिं इम अरज दत्त।४०।
जिम मान बढायो मम हजूर, पायो तथाहि अपमान पूर ॥
जिम मोहि बरनसंकर जनाइ, हड्ड६१न दुदुकारयो असह हाइ१४१
अब ऐंचे सु सगपन करहु अप्प, देखहु कै हम कुल सुद्धि दप्प११ ॥

पाहुणों ने कहा कि १ हाथी ॥ ३४ ॥ २ कीमती ३ हीरे की खान ४ धन से ५ धनवान् होकर ६ दुलह भी प्रसन्न होवेगा ॥ ३५ ॥ ७ सेवकों का जोड़ा ॥३६॥ ८ चत्रियों का वंश विशेष ॥ ३७ ॥ १८ ॥ ९ डोडिया ॥ ३९ ॥ ४० ॥ १० खेद का वचन ॥ ४१ ॥ ११ दर्प ॥ ४२ ॥

सुनि साह कहिय इत१ उत२ समान, हमतैं न होइ दुव२पच्छ हान
वलि देन उपालंभहु बिसेस, आनत्त सता१९४१ संकोच एस ॥
गिनि सुहि निदेस वरसिंह गज्जि, सेना समस्त दुवअयुत२०००० सज्जि ॥ ४३ ॥

बुंदेलवीर तिम पकरि तेग, बुन्दीपर आयउ वज्रवेग ॥
सुनतहि न देर किय इत सता१९४१ हु, वल सज्जि मुदित आजानुवाहु ॥ ४४ ॥

मारुत जव वाजिन वीच मेलि, झारिय असि सीमा ढिगाहि झेलि॥
वज्जिय सब सस्त्रन निसित वाढ, गन भीरु भज्जियत जतन गाढ
वल कटत लुंथिलुत्थिन बिलग्गि, जोगिन समाधि सिवशहित जग्गि
वेताल१ प्रेत२ डाकिनि३विलास, राचे रचि जोगिनि४वीर५रास ४६
जंपत कितेक वहु दुरदिन जुद्ध, वहमत दुर जाम वह कलह बुद्ध॥
वढिवढि दुर ओर बहु झरत वीर, भयकार भई अवसह भीर॥४७॥
अर्यं उदय भयउ बुन्दीस ओर, इतकेहि अस्त्र जिम लहिय जोर ॥
काहू कर गुटिका लगि कपाल, वरसिंह परयो गजतैं बिहाल ४८
सतपंच५०० परे इत१ उत२ सिपाह, बुंदेल भजे खिल मोरिवांह ॥
घायल दुरओर खटसत६०० घुमात, बुंदीस लह्यो जय जस बिभात ॥ ४९ ॥

जो सबल १९३।१।१ मनोहर १९१।४ तनय जत्थ, तोमर प्रताप २ हरि४झल्ल तत्थ ॥
ए सैंटि तीन ३ सामंत अत्थ, संभर सता १९४१ सु जय लिय समत्थ ॥ ५० ॥

जयसिंह इत सु कूरम जनेस, आमेर विभव विलसत असेस ॥

शत्रुशाल को ओलंभा देते संकोच १ लाते हैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ तीखे धार ॥४५॥ ४६ ॥ ३ पीड़ाकारी युद्ध में ॥ ४७ ॥ ४ भाग्य ५ गोली ॥ ४८ ॥ ६ वाहन ॥ ४९ ॥ ७ बदले में देकर ॥ ५० ॥

राच्यो ब्रजभाखा काव्य रंग, सुंचि १ रस बिसेस अतिसय प्रसंग ॥
सासन तस इक द्विज धारि सीस, किय सत्तसई ७००।१ दोहा कवीस ॥
अभिधान बिहारी सु कवि एह, सनमान्यों माथुर अतिसनेह ॥५२॥
दोहा १ मति इक १ इक१ मुहुर दीन, कवि१ नृप२ जस निजनिज बिदित कीन ॥
द्विजग्रंथ अबहु यह अर्थ१दीप, पै छंद१सब्द २ मेलन ३ प्रतीप ।५३।
जिहिं बिप्र बिहारी बंसजात, कवि बालकृष्ण प्रभु अन्न पात ॥
जिम बिस्वनाथ द्विज इत सुजान, धरि सत्रुसल्य चरिताभिधान ॥
बुंदीस काव्य संस्कृत बनाइ, पटु आदिकविनबिच नाम पाइ ॥
श्रवन सु कराइ पाये समत्थ, सासन चउ ४ रुप्पय लक्ख १००००० सत्थ ॥ ५५ ॥
इत जनक मरत लहि पट्ट एस, जसवंत जोधपुर हुव जनेस ॥
काहू कवि किय जिहिं प्रीतिकाम, नव भाखाभूखन३ग्रंथ नाम ।५६।
बहु जत्थ अलंकारन बिबेक, ऐसो रच्यो सु लघु ग्रंथ एक ॥
जसवंतनृपहु करि श्रवन जाहि, सासन१गज२बसु३दिय गुन सराहि ।
लच्छन १ मुख न मिलत सब ललाम, नृप १ कवि२ जुग २ पायो तदपि नाम ॥
महिपाल सता १९४।१ इत सबन मान्य, बरखैं बसु बिंदुन अति बदान्य ॥ ५८ ॥
बुध१कवि२जन दुर्विधभाव बोरि, निज रीझ दये लक्खन निहोरि
पुहवीस करैं सहजहु प्रयान, धरि संग लक्ख १००००० दम्मन निधान ॥ ५९ ॥
सकटन जे संभृत बहुतबेर, दिय मंगनमात्रन न किय देर ॥

१शृंगार रस ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ छंद और शब्दों के मिलाप में २विरुद्ध है ॥ ५३ ॥ ३ शत्रुशल्य चरित्र नामक ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ४ राजा ॥ ५६ ॥ ५७ । ५ दानी ॥ ५८॥ ६ दरिद्र भाव मिटाकर ॥ ५९ ॥

द्विज १ सूरिन सत्रह १७ ग्राम दत्त, पंद्रह १५ लहि चारन २ हुव सुपत्त ॥ ६० ॥
इकवीस२१दये भट्टन३उदार, लक्खन पट१भूखन२रीझ लार ॥
कवि चारन देवहिं दम्म१ कोरि१००००००, बखसी सह सासन२ गज३वहोरि ॥ ६१ ॥
देवहु निजजाचक लुछि द्वार, सब रीझ दिय सु किय जस प्रसार ॥
अहिफेन फलन जल कढि अर्क, देवहिं नृप पायो जस उदर्क ।६२।
तदपि न बिरुदायो देव ताहि, सबरीति नृपति आदर सदाहि ॥
अनुगत्व कबहु नृप करि अतुल्य, कवितैं सु लह्यो निज बिरुद कुल्य
ऐसो अलुब्ध कवि देव एह, नृपजन सब जाको चहत नेह ॥
दिय जाहि सता१९४१ जो उक्त दान, सब दिय सु जाचकन जिंहिं सुजान ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

याहीतैं महियारियन, एह भयो अवतंस ॥
करी१कोटि२सासन३बरिस, निरुद लहत तसवंस ॥ ६५ ॥
अब लिय सब महियारियन, यहहि बिरुद अपनाइ ॥
तजैं बडाई कोन तँहँ, अनायाँस जँहँ आइ ॥ ६६ ॥

॥६०॥*देवा१नाम महियारिया चारण को ॥६१॥१तिजारे के डोडा का अर्क निकाल कर २ भविष्यत् काल में यश करने के लिये ॥ ६२ ॥ ४ सेवकपन ५ अपने वंश से उत्पन्न हुआ बिरुद लिया ॥ ६३ ॥ ६ इसी कारण से महियारिया चारणों में मुकुट हुआ जिससे महियारिये हस्तिबगीस कोड्बगीस कहलाते हैं ॥६५॥७विना परिश्रम किये ही जो बडाई मिल जावे उसको कौन छोडे।६६।

---

* बुन्दी के राव शत्रुशालने मेहन्दूं ग्राम के महियारिया शाखा के चारण देवा की जूतियें (उपानत्) अपने हाथ से उठाकर देवा के आगे रक्खी उस समय देवा ने निम्न लिखित यह दोहा कहा सो इस समय भी राजपूताना में बहुत प्रसिद्ध है ॥

॥ दोहा ॥

पाणां गह पैंजार, सुकवि अग्ग धरतां सता ॥
हिक हिक वार हजार, पह सूमां माथे पड़ी ॥ १ ॥

इस दोहे में पह शब्द (पहु) अर्थात् प्रभु शब्द का अपभ्रंश है ॥

आरंभिय जवनेस इत, लंघि अटक भुव लैन ॥
अर्ज१जवन२बुल्ले अखिल, इक्खन काबल ऐन ॥ ६७॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-वसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे दक्षिणप्रस्थितयवनेन्द्रशाहजहांकृतलोदी-पलायन १, सुतासंबन्धकरणककटुवचनहेतुकबुन्देलहड्डबाहुज-विरोधसमरहड्डविजयन २, भाषाभूषणविहारीसप्तशतीनिर्माणव-र्णनतद्योग्यायोग्यत्वग्रन्थकर्तृसंमतिकथन ३, महियारियाशाखीय चारणदेवाकृताप्रतिमसेवानिमित्ततच्छाखीयचारणार्थशत्रुशल्पमत्त-हस्तिबरीसक्रोडबरीसविरुदप्राप्तिवर्णनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितोऽष्टादशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अटकपार दिल्ली अमल, इक१सूवा सिर आहि ॥
काबल१अटक२दु२नाम करि, जग जन जंपत१ जाहि ॥ १ ॥
काबलवासी निकट करि, उतके अरि अफगान ॥
अवसर अवसर उप्फनैं, दब्बन धरनि निदान ॥ २ ॥
कलाबीस अभिधान करि, जाहिर इक गढ जत्थ ॥

---

१ आर्य २ घर ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां का दक्षिण में जाकर लोदियों को भगाना १ पुत्री का संबंध करने में कटु वचनों के कारण बुंदेला और हाडा क्षत्रियों में विरोध होकर युद्ध में हाडों का विजय होना २ विहारीसतसई और भाषाभूषण दोनों ग्रंथों के बनने का वर्णन और उक्त दोनों ग्रंथों के योग्य अयोग्य होने में ग्रन्थकर्ता की सम्मति ३ राव शत्रुशाल का महियारिया शाखा के चारण देवा की अतुल्य सेवा और महियारिया चारणों को हस्तबरीस क्रोड़बरीस का विरुद मिलने के वर्णन का छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि से२१८ मयूख हुए ॥

१ कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

सो कबहुक इन्ह१अनुसैं, है कबहुक तिन्ह२हत्थ ॥ ३ ॥
कितै कहत उतकोहि यह, जित्तहिं अब जवनेस ॥
किमहु होहु पैं काबलिन, दब्यो कछुक प्रदेस ॥ ४ ॥
तस पुकार सुनतहि तमकि, अब बल सजि अमान ॥
करन पराजित काबलिन, हंकिय साहजिहान३९१२ ॥ ५ ॥

॥ मदनावतारः ॥

भूपगन सर्व-आहूत हाजरि भयो,
गेह विकल सूर अभिधान नृप नाँ गयो ॥
रोग परतंत्र बीकानयर अप्प रहि,
सजि जिहिं पट्टधर कर्ण पठयो सुतहि ॥ ६ ॥
साह दरकुंच अनुसार हुव भूप सब,
अटकपर जात पछितात बिमना हु अब ॥
भूप बुंदीस जब गो तबहि दर्प्प भरि,
कुप्पि इम साह तरज्यो उपालंभ करि ॥ ७ ॥
मारि नरसिंह१ तव पास गत मित्र मम,
सुक्रमति छुद्र हुव तूहु किम सत्रुसम ॥
हठ्ठ६१ नृप कहिय वह आत मो घर हन्यौं,
तासघर जाइ नहि गैंक रन मैं तन्यौं ॥ ८ ॥
बंधु तस बैन कटु गेह मम बुल्लये,
गाढ अपराध तब मूढ कहिगये ॥
तोहु हरिसिंह१९३१३काका हि किय बाद तिम,
कटुक मम बैन सुनि तेहु मरते न क्रिम ॥ ९ ॥
क्रूर हरि१९३१३ टारि हम नम्र हुव जोरि कर,

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १ बुलाये हुए २ रोग से विकल होकर बीकानेर का राजा सूरसिंह नहीं गया ॥ ६ ॥ अटक नदी के उल्लंघन करने से आये हुए राजा अपनी धर्म हानि समझने थे तिस कारण ३ उदास हुए ॥ ७ ॥ ४ तेरे पास गये हुए मेरे मित्र नरसिंह बुंदेले को तुमने मारडाला ५ वह मेरे घर पर चढ कर आया तब मैंने मारा है ६ मूर्ख हरिसिंह के बिना

तोहु बुंदेल कटु भाखि हुव सत्रुतर ॥
जे न कुल सुद्द इमं रारि बढिजावती ॥
तोहु गिनतेहि मम हानि प्रभु तावती[1] ॥ १० ॥
देस मम लुट्टि वह भ्रात मारन दल्यो,
चित्र[2] तब ताहि कित जाइ हनिबो चल्यो ॥
भूपअरजी सु कछु साह मन्नी भली,
बैन कटु पात मरि जात समुझ्यो बली ॥११॥
पै व इम नित्य दरकुंच चलि प्रातही,
अधिप करि मंत्र सब सँझ[3] अकुलातही ॥
कहिय बुन्दीस तुम छन्न इत कोप है,
एह तब सीस मम भार आरोप व्है ॥१२॥
भीत होहु न तदपि इष्ट करिहैं भली,
छोनि[4] लहि धर्म बिगराइ जीवैं छली ॥
धर्म रहि भूमि सब जात प्रानहु धरैं,
मेटि जिहिं रक्खि भुवक्कोन जीवत मरैं ॥ १३ ॥
पै व पंजाबलग आँट कछु पारि हैं,
बिन्नति हु सर्व कर जोरि बिसतारि हैं ॥
प्रेष्ठ[5] करि मोहि मग रोंहि[6] पछिताइहैं,
होहु प्रभुकोहु सचिवत्व हम पाइहैं ॥१४॥
जद्दव१ रु गोर२ वाघेल३ बडगुज्जर४न,
सोहि सम्मत कह्यो होहु कोऊ सरन ॥
भोज्य गुन जुत्त हग छुत्तँ[7] हम नाँ भजैं,
लंघि नदि सिंधु लहि सिच्छपन क्यौं लजैं ॥१५॥

१आप तक मेरी ही हानि मानी जाती ॥१०॥ २तब उसके मारनेमें क्या आश्चर्य हुआ॥११॥ ३ सन्ध्या समय ॥ १२ ॥ ४ भूमि लेकर ॥ १३ ॥ ५ मुझ को आगे करके ६ मार्ग रोक कर ॥ १४ ॥ ७ यवनों के देखेहुए भोजन को भी हम नहीं खाते हैं तब अटक नदी लांघकर यवन होकर कैसे लजेंगे ॥ १५ ॥

हैं न वलवान तुमतुल्य लघुथान हम,
कर्म निजधर्म रहिजाइ करिये सु क्रम ॥
कुम्म जयसिंह१ रठोर जसवंत२ क्रमि,
छमन किय अग्ज अपराध इक१ लेहुँछमि॥१६॥
रंच हम धर्म नदि सिंधु लंघिन रहैं,
क्यों न तो नाम करि याहि अटकहु सहैं ॥
धारि हित सिंधुतट वार रहि धर्ममैं,
मरन परजंत हम सज्ज प्रभुकर्ममैं॥ १७ ॥
होइ संदेह तो स्वामि परखो हमैं,
देहु तव दंड जव एहु मिथ्या जमैं ॥
कोपकरि साह सुनि एह पच्छी कही,
मोरसह गोन तजि कोन भजिहै मही ॥१८॥
होत इम वत्त गय लंघि पंजाव हद,
नाम तिन्ह सुनहु प्रभुराम२०३१४ जिम पंचनद ॥
जो सतद्रू१ सु सतलंज२ जिम जानिये,
जो विपासा२ सु व्यासा२ हु तिम जानियें॥ १९ ॥
जिमजानिये१ तिमजानिये२ अन्त्यानुप्रासः१॥
नाम ऐरावती३ सोहि रावी३ नदी,
चंद्रभागा४ सु चिन्हाव४ वहुयों वदी ॥
जो वितस्ता५ सु झेलम५ हु ए पंच५ जँहँ,
ते सबै लंघि जवनेस गय अग्ग तँहँ ॥२०॥
वत्त तव मंत्रमय एह भूपन वदी,
नाव चढि साह जव सिंधु लंघैं नदी ॥
पार लहिहैं न तव वार रहिहैं परे,

---

१ समर्थों ने ॥ १६ ॥ यदि इस सिंधु नदी के उतरने की रोक नहीं है तो इस को २ अटक क्यों कहते हैं ॥ १७ ॥ ३ साथ जाना छोडकर भूमि को कौन भोगेगा ॥ १८ ॥ ४ नदियों के नाम हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ इस किनारे

अक्खिहैं दास इत खास रच्छक खरे ॥ २१ ॥
केक माधव१९३१२ प्रमुख मंत्रबाहिर कढे,
बंधि पिसुनत्व उत बत्त ख्यापन बढे ॥
द्रोह कछु जानि कछुमानि दिल्लीस हू,
रक्खि कछु प्रीति१ कछु रीति किय रीस२हू ॥२२॥
सिंधुतटवार कछुकाल रक्खे सिबिर,
चलन तसपार दिय हुकम अब व्है न चिर ॥
बुल्लि सुहि प्रात सबठाँ नकींबावली,
धारि अवधान अविलंबहित धावली ॥२३॥
भूमिपति सूर गढ्पूर तबही भयो,
पट्टसुत पास दल वेग पहुँचन दयो ॥
कुमर तब सिक्ख लै दैन भूपन कहिय,
लैनहो देस तिम तास सम्मत लहिय ॥२४॥
तिहिं कहिय इष्ट जैबो हि हठ तानिकैं,
पुत्रपन हीन न दिखाइ जिम पानिकैं ॥
कुमर मत एह लखि सर्ब नृप कानिकैं,
याहिकुल बिरुदवच साँनसित आनिकैं ॥ २५ ॥
कहिय तुमकोंहु जैबोहि सम्मत कुमर,
बहुरि तव बंस पहुकेहि हुव धर्मपर ॥
कर्या हम तोहि अब अग्ग यातैं करैं,
एह अवलंब लहि धर्म करि उव्बरैं ॥ २६ ॥
सौंह करि भूप इक १ होइ बुल्ले सबहि,
वाहि कहि हैं अखिल कित्ति तुमरीहि कहि ॥
अप्प जै होइ करि जाहु यह नाम इत ,

॥२१॥२२॥१डेरे२छड़ीदारों की पंक्ति३सावधान होकर विलंब नहीं करने के कारण ४दौड़॥२३॥ ५पत्र॥२४॥ ६यश के वचन रूपी ७सान पर तीक्ष्ण करके॥२५॥२६॥

अप्प रहि भार हम बंटि करिहैं उचित ॥ २७ ॥
सोहि सुनि हड्ड १ कछवाह २ रट्ठोर ३ सन,
करन हरिसोंहँ करि सौंहँ अप्पे करन ॥
हड्डवति १ देस मरुदेस २ ढुंढाहर ३ हु,
कहिय हम पिट्ठि तुम जाइ समुचित करहु ॥ २८ ॥
कर्ण तरुनत्वमद सोहि मत स्वीकर्यो,
कानि १ विसवास २ धर गोन घरही कर्यो ॥
सोर हुव धर्मधरि कर्णनृप सूरसुत,
अज्ज इत रक्खि सुनि वप्प दुख पत्त उत ॥ २९ ॥
भूप रहि सेस यह व्याज करते भये,
भारकछु पटकि सलँ अग्ग कछु भेजये ॥
साह लंघिय अटक माधवा १९३।२ दिक सहित,
ओर नृप अग्ग न गये गिनें ते अहित ॥ ३० ॥
स्याम १९४।३ हिंडोलि ईस ओर जसवंत सुत १९२।१,
अभय १९१।३ हरिसिंह१९३।३को पुत्र तीजो ३ हु उत ॥
छन्न कोटेस सन एहि मिलि हेरहि छद्दं,
माधव १९३।२ हिं गुप्त लिखिदेत हुव पाप मद ॥ ३१ ॥
गेलविच तत्र तिन्हपत्र पकरेगये,
भीत दुवर जानि भजि देस आवतभये ॥
कुमरपति भूप दिय पत्र तव एह कहि,
द्रोह करि दुष्ट आये हनो ए दुरवहि ॥ ३२ ॥
देखि नृप पत्र भाऊ १९५।१ कुमरकोप दवँ,
स्याम १९३।१ वह टुंकड़ा जाइ होम्यों सजव ॥
सो अभैसिंह १९४।३ तवतो वच्यो काकसम.

॥२७॥ १ करणसिंह ने विष्णु की सोगन करके सबको वचन दिया और सबने करणसिंह को वचन दिये ॥ २८ ॥ २ युवा अवस्था के मद में ॥ २९ ॥ ३ ऊंट ॥ ३० ॥ ४ पत्र ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ५ अग्नि ॥

कुमर भगवंत १९५।३ मार्यो सु पुनि कालक्रम ॥ ३३ ॥
लाइ उर स्याम १९३।१ सुत रुक्म अंगद १९४।१ लयो,
द्रंग हिंडोलि तस तंत्र रहिबेदयो ॥
जो कलाबीस गढ साह इत जित्तिलिय,
कलह जय सद्धि तँहँ माधव१९३।२हु कित्ति लिय ॥ ३४ ॥
रीझि जवनेस कोटेस बल पिक्खि रन,
कुप्पि बुंदीसप्रति लुप्पि वचनादिकन ॥
परगनाँ मुख्य बाराँ १ मऊ२ छिन्निलिय,
द्वैरहि लखि माधव १९३।२ हिं तत्थ सुलतान दिय ॥ ३५ ॥
साक गुन व्योम हय इंदु १७०३ बिक्रम समय,
ग्राम इम ताम चउ इंदु सत १४०० छुट्टिगय ॥
भूप सुनि एह घर पत्र भेजतभयो,
देस जुगरमाधव१९३।२हिँ साह अपनौं दयो ॥ ३६ ॥
सचिव सब लेहु बुलवाइ निज नैर सुत,
देहु तजि द्वैरहि कोटेस बस जानि द्रुत ॥
कियसु आदेस अनुसार भाऊ १९५।१ कुमर,
नैर दुवरठाम हुवसज्ज कोटेसनर ॥ ३७ ॥
अटक सूबाहि रहि साह चउ४ अब्द इत,
जो अभय देस करि सेस अरि दब्बि जित ॥
सप्त नभ अद्रि इक १७०७ अब्द मित होत सक,
आइ पच्छो सु जवनेस लंघ्यो अटक ॥ ३८ ॥
ताम[1] नृप अज्ज[2] हाजारि रहे वारतट,
पंथ नियरौंइ[3] सब जाइ प्रनमैं प्रकट ॥
राजगन पिट्ठि सजि सेन निज निज रही,
कछुन नयराह तँहँ साह इनसौं कही ॥ ३९ ॥

॥३३॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥३७॥ ३८ ॥ १ तहां २ आर्य ३ समीप जाकर ॥ ३९ ॥

गेह इम स्वीय सुलतान दिल्ली गयो,
भूपगन तत्थ सह सत्थ हाजरि भयो ॥
कुप्पि तब साह दम दैम्म सबकौं करे,
इष्टविधि कोहु मिलि थान जिन्ह उव्वरे ॥ ४० ॥
अत्थ मतभेद प्रभु राम२०३१४ बहु इक्खये,
गहन कति परगनाँ सबन कछु कछु गये ॥
कतिक तिन्ह अधिक१समर२न्यून३गत भूरकहैं,
रुप्पय हि खिल्लन कति कहत पहुँचे रहैं ॥ ४१ ॥
होहु कछु खिल्लन गत भुम्मि जानैं न हम,
कहत सब बुद्धि अनुकूल इकमूल क्रम ॥
दै सवन सिक्ख जयसिंह१ढिग बुल्लि द्रुत,
पूर रिस करि कहिय मानकुल तू प्रैनुत ॥ ४२ ॥
ज्ञान करि मान नदि सिंधु तरि क्यों गयो,
भोन रहि अभ्युदय क्यों न तवही भयो ॥
बुल्लि जसवंत तमही उपालंभ बदि,
निपट खिजि कहिय लंघी न तैं सिंधु नदि ॥ ४३ ॥
कोहु लखि हेतु हम माफ औगुन करयो,
अधिक अपराध पर अल्प दम उद्धरयो ॥
जो अबहु हानि कछु काम पर जानिहौं,
तानिहो त्रास करि हो नतो कानिहौं ॥ ४४ ॥
भूप बुंदीस सिर रीस ऋद्धिगुनीभई,
देस प्रति सिक्ख इम दंडि सबकों दई ॥
जोहि बढि रोग बीकानयर भूप जब,
तनुज पहुँच्यो तदनु सूर हुव सांत तब ॥ ४५ ॥

---

१ दंडके रुपये ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ विशेष स्तुति योग्य ॥४२॥ ३ धन जन की वृद्धि ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४ सूरसिंह मरगया

भूमि तस लेत संमवेत सब भूमिपति,
प्रनत हुव साह सचिवेस१ सेनेस२प्रति ॥
सिक्ख है दूर इम तेहु मंगि न सके,
बप्प गदै घोर सुनि अप्प पुनि अकबके॥ ४६ ॥
गेहु अब तेहु हमरेहि पठये गये,
भाग्यबस सांत तह तात तिनके भये ॥
देत तिन्ह दंड हमकों सु बटिदीजिये ॥
करि अरज एह आसान उत कीजिये ॥ ४७ ॥
साह तब लिहि तिनके कहे स्वीकरी,
अवनि सबकोहु तिनतैंहि नहि उत्तरी ॥
कर्णसिर जोहु हित जत्न सबनैं करे,
पंच५ गुन तोहु दसें दम्म देनैंपरे ॥ ४८ ॥
पै सु घरही रह्यो मिच्छभय पाइकैं,
आवत न बेठि गह्योहु अकुलाइकैं ॥
सिक्खकरि भूप आये सदन सबही,
लेखक्रम ठ्याधि दिल्लीहि माधव१९३१२लही ॥ ४९ ॥
अद्रि नभ सत्त ससि१७०७ साक घर आइकैं,
पिंडँ माधव१९३१२तज्यो अंत खिन पाइकैं ॥
तास जेठे मुकुंद१९४१श्रभिधानी तनै,
बीर कोटेस बनि इक्क१ किन्नौं अनै ॥ ५० ॥
कामबस नारि अबली सु मैनी[10] करी,
दूर करि लज्ज रति कज्ज मति आदरी ॥
सोहु विस्मै न प्रभु राम२०३१४ कलिके समय,

१ बीकानेर वालेसे करने पर सब राजा सामिल होकर अरजोऊ हुए २ पिता का घोर गाज सुनकर ३ घबराये ॥४६॥ ४ नाश ॥४७॥ ५ दंड के रुपये ॥ ४८ ॥ ६ घर ॥ ४९ ॥ ७ कोटा के राव माधोसिंह ने शरीर छोडा ८ मुकुंद नामक ९ अनय (अनीति) ॥ ५० ॥ १० मैने (चांडाल विशेष) की स्त्री को

मिच्छपन नारिन होत रत प्रेमसय ॥ ५१ ॥
मिच्छकहँ अप्पि तनयाहु है मिच्छही,
कोनकुल नीच तनया जु अपनैं कही ॥
त्याहि ननपाहि संबंधि मिच्छन बनैं,
तत्थ किम धर्म मैंनीन करि मैं तनैं ॥ ५२ ॥
साह घर आत इत देस प्रायागसन,
सोइ करि कुमर दारा ४०।१ हु आयो मिलन ॥
सील १९५।२बुंदीस सुत तत्थ गतप्रान भो,
हो जु दारा४०।१ सु भट तास वपु हान भो ॥ ५३ ॥
अब्द सुनि व्योम हय इंदु१७०७ सक वत्त यह,
शाम हुव पोसदहि तीज३सवके असह ॥
सोहि कुन्दीहु दिन सत्त७ पीछैं सुनी,
इन सुनि अग्ग विस्तारि चैंविहैं चुनी ॥५४॥
पा१८०७शहिमक साह लघुतीन३सुत काल अहि;
तीन३ दिस लाह करि नाह पठयो तबहि ॥
सोहु प्रभुराम२०३।४ क्रम१ नाल२ जुत लेहु सुनि,
पात फल्ल वप्प जिन्ह दप्प रुकि अप्प पुनि॥५५॥
सुजुदजो२ सुजा ४०२ पुव्व४दिस पेसयो,
देस अधिकार सब प्राच्य५ तासौं दयो ॥
पुत्र औरंग४०।३ तीजो३ सु दक्खिन६पती,
मुक्कल्यो अप्पि अधिकार दारुनमती ॥५६॥
देस प्रातीच्य३ चोथे४ मुराद४०।४हिं दयो,
राज्यपति मुख्य१ दारा४०।१ सु ढिग रक्खयो ॥
अधिक बाढि बुद्धि१ छल२ पाप औरंग४०।३ के,
जाइ आवाच्य२ दिय दक्खिनिन जंगके ॥५७॥

॥५१॥ १ म्लेच्छ का पुत्री देकर २ भय ॥५२॥ ३ प्रयाग में ॥५३॥ ४ काँटों॥५४॥ ॥५५॥ ५पूर्व दिशा का ॥५६॥ ६ पश्चिम दिशा का ७ दक्षिण दिशा के॥ ५७॥

दुंग ओरंगआबाद१ बहु दाम करि,
निर्मयो तत्थ ओरंग४०।३ निजनाम करि ॥
देस तापी१रु गोदावरी२ पूत२ दुवर२,
है दुहूँ२ ओर तिन्ह बीच यह नैर हुवं ॥५८॥
॥ सौराष्ट्री दोहा ॥
उत्तर१ तापी२ आँहिं, दिसदक्खिन२ गोदावरी२ ॥
मंडल जो इनमाँहिं, खानदेस सो भाखियत ॥५९॥
अग्गि३ कोन पुर२ एह, दुर्ग दोलताबादतैं ॥
अति ढिग आढ्यं अछेह, बहुरि सुनहु जैसैं बन्यौं ॥६०॥
हुत लहि जनक निदेस, साहकुमर ओरंग४०।३सो ॥
बिरच्यो नगर सुबेस, उत ओरंगाबाद इम ॥६१॥
नृपको इत वह नाग, सिवप्रसाद मिलि बिधि मरचो ॥
या गजमैं अनुराग, सबको हो साहन सहित ॥६२॥
प्रतिमा तस महिपाल, पुर बुन्दी थप्पिय प्रथित ॥
सो बाजार बिसाल, नियत सिंह चत्वर निचित ॥६३॥
इत कहुँ समर उदंत, हुकम सता१९४।१को सद्धि हद ॥
भूप कुमर भगवंत१९५।३, अभय१९४।३ हन्यौं हरि१९३।३पुत्र वह॥
पीछैं सासन पाइ, अधिप कुमर भगवंत१९५।३ यह ॥
जय कर दक्खिन जाइ, रह्यो सुभट ओरंग४०।३कैं ॥६५॥
जबहि सता१९४।१ नृप जाइ, किय सहाय ओरंग४०।३को ॥
जन कति इमहु जनाइ, तत्थ रह्यो भगवंत१९५।३ तब ॥६६॥
असि करि हनत मइंद, भुज पेठे तस नख उभय२ ॥
इम बहु गाम१ गइंद२, सता१९४।१ सुतहिं दिय साहसुत ॥६७॥
दारा४०।१ हुकम दिवाइ, पहु सुत दूजा२ भीम१९५।२ पुनि ॥

१ पवित्र ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २ अग्निकोण ३ धनवान् ॥६०॥ ६१ ॥ ४ हाथी ॥६२॥ ५ प्रसिद्ध ६ सिंहचौक में बनी हुई है ॥ ६३॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ७ खड्ग से सिंह को मारते समय ८ हाथी ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

छम बुलाइ हित छाड, निज आश्रित रक्ख्यो निपुन ॥६८॥
यह अति पुञ्ज उदंत, जब दारा४०।१ निज जनकसौं ॥
लिखउ प्रयाग लसंत, भीम१९५।२ रह्यो तब तास भट ॥६९॥
निहित रामगढ१ नाम पुनि सिंगावद२ परगनाँ ॥
ए उभयनहि अभिराम, दारा४०।१ तहँ भीम१९५।२हिँ दयो७०
अटकपार रन एह, पुर जब आयो जवनपति ॥
दिल्लीतद तजिदेह, भीम१९५।१ कुमर सुरपुर भज्यो ॥७१॥
बच्यो याहिको बंस, औरनके बिनसे अखिल ॥
यह हड्ड६१न अवतंस, सह विस्तर इत सूचियत॥७२॥
बंस रहे बय बाल, जिहिँ सुत कृष्ण१९६।१प्रयाग१९६।२जुग२
कर्यो अनुज२ सिसु काल, रन समर्ज अग्रज१रह्यो ॥ ७३ ॥
भीम१९५।१मरन सुनि भौन, जिमकुमरानी चउ४ जरिय ॥
हाहा बुंदिय हौन, कहियत सब अग्रिम किरन ॥ ७४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-वसुधाधरशत्रुशल्यचरित्रे अफगानिस्तानविजयशाहजहांप्रयाणसमयकरतोयोल्लङ्घनार्यराजास्वीकरणं १, करतोयापरतटसहगामिमाधवसिंहार्थशाहजहांबुन्दीराज्याच्छिन्नबारांमऊप्रान्तप्रदानं२, काबुलप्रत्यागतयवनेन्द्रस्य करतोयानुल्लङ्घकार्यराजदमनं३, विक्रमनगराधिपसूरजसिंहमरणे पट्टाधिकृतकर्णसिंहयवनेन्द्रदण्डसंप्रापणं ४, दि-

१ शोभायमान ॥ ६९ ॥ २ सुन्दर ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ मुकुट ॥ ७२ ॥ ४ संतान सहित ॥ ७३ ॥ ५ अगले मयूख में कहते हैं ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में अफगानिस्तान विजय करने को शाहजहाँ के जाते समय अटक नदी उल्लंघन करने को आर्य राजाओं का अस्वीकार करना १ कोटा के अधीश माधवसिंह को अटक पार बादशाह के साथ जाने के कारण शाहजहाँ का बुन्दी के राज्य से बारां और मऊ के परगने खालसे करके कोटा के आधीन करना २ बादशाह का काबुल से पीछा आकर अटक नदी नहीं लांघनेवाले आर्य राजाओं को दंड देना ३ बीकानेर के राजा सूरजसिंह

ह्लीदङ्गकोटाप्रत्यागतमाधवसिंहतनुत्यजन५, शाहजहांस्वात्मजपृथ-
कूपृथक्प्रान्तवितरण६, राजपुत्रभीमसिंहमरणं सप्तमो मयूखः॥७॥
आदित एकोनविंशत्युत्तरद्विशततमः॥ २१९ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥

किय विवाह भाऊ१९५।१ कुमर, सब बारह१२ विधिसत्थ ॥
तासचरित कहिहैं तितै, कृष्ण१९६।१ कुलहु तिम तत्थ॥१॥
अब प्रसंग संगत इहाँ, बरनत भीम१९५।१ विवाह॥
कुमरानी खट६ जिहिं कुमर, रुचिर वर्ण विधिराह ॥२॥
भोजाउत बलभद्रकी, कनी अनोपकुमारि१९५।१ ॥
प्रथम१ नरायनपुर परनि, निपुन चालुक्की नारि ॥३॥
सेखाउत दूजी२ सुमत, अमरकुमरि१९५।२ अभिधान ॥
कन्हसुता व्याही कुमर, सुतदुव२ जास सुजान ॥४॥
खीनाँपुर जुज्झारखाँ, वैल्लन चालुक वास ॥
कनी बडी१ देउलकुमरि१९५।३, तीजी३ व्याहियतास ॥५॥
जिम सर मथुरा जादवी, चौथी४ वरिय बिचारि ॥
सुता बहादुरकी सु पै, कथित अनोपकुमारि१९५।४ ॥६॥
दुबलानाँ चालुक दई, जिम राउत जगतेस ॥
कनी सोहु देउलकुमरि१९५।५, उपयँम पंचम५ एस ॥७॥
रामसुता रंभावती१९५।६, व्याहिय छट्ठ६ व्याह ॥
कै१ सगनाउतिही१ सु कै१. राजाउति२ भ्रम राह ॥८॥

का देहान्त होने पर कर्णसिंह का गद्दी बैठकर बादशाह से दंडित होना ४ चहुवाण माधवसिंह का दिल्ली से कोटे आकर शरीर छोडना ५ बादशाह शाहजहां का अपने पुत्रों को भिन्न भिन्न सूबे देना ६ राजा के पुत्र भीमसिंह के मरने का सातवां मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ प्रसंग के साथ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ बालखोत सोलंखी ॥ ५ ॥ ३ कही हुई ॥ ६ ॥ ४ विवाह ॥ ७ ॥ ८ ॥

ऊढा ए·खट६ भीम१९५।२ इम, हित वय दुल्लह होइ ॥
भई पंच५ अग्रज भये, दूजीके सुत दोइ२ ॥ ९ ॥
दारा४०।१ नैं यह तिन दिनन, साह कथन अनुसार ॥
नृपसों कहि रक्खो निकट, कोबिद भीम१९५।२कुमार।१०।

॥ मनोहरम् ॥

सासनसों दारा४०।१ जब पाइकैं प्रयाग सूबा,
जायकछु हायन रह्यो सो तँहँ जानिये ॥
सूबा निजमाँहिंसों व्हाँ रामगढ१ सिंगावाद२,
परगनाँ द्वेरही दये भीम१९५।२हि प्रमानिये ॥
गंगातट दक्खिन व्हाँ प्रसंगम पैं दारागंज,
दारा४०।१ जो बसायो देख्यो बिदित बखानिये ॥
अटकतैं दिल्ली सुनि तात निज आयो दारा४०।१,
दिल्लीहू उहाँ भो भीम मृत्यु उर आनिये ॥ ११ ॥

॥ रुचिरा ॥

संबत समय नयन बसु सोलह१६८२ भीम१९५।२ कुमर जनु
लोत भयो ॥
अद्रि गगन सत्रह१७०७संबत इम दिल्ली तब तजि देह गयो ॥
पोस १० असित २ तिथि तीज ३ समें पर भीम १९५।२ परत
अति हानि भई ॥
दिन सप्तम७तासों दसमी१०पर गढ बुंदिय यह बत्त गई ॥१२॥
कुमरानी छट्टी६पहिलैं कछु मंदनियति लहि रोग मरी ॥
पंच५हि खिल तिनमें चउ४पत्नी जरन तंदुपवन जाइ जरी ॥
अमर कुमार १९५।२ दूजी २ सेखाउति पोतक कृष्ण १९६।१
प्रयाग १९६।२ प्रसू ॥
अतिसाहस निश्चय लागि एहहु उट्टिय सह हुत करन असू ।१३।

१विवाहिता ॥ ९ ॥ २ चतुर ॥ १० ॥ ३ संगम पर ॥ ११ ॥ १२ ॥ ४ मंदभाग्य
५ छार बाग में ६ बालक ७ प्राण होम करने को ॥ १३ ॥

सो सत्वर निज स्वसुर सता१९४१।१के रोकत अति हठ निष्ठि रहीं
पुर कापरनि रची जिहिँ बापिय मंजुल अवलग विदित मही ॥
कृष्णा १९६।१ बच्यो तनिये प्रभुको कुल मिलि गेंद [सिसुहि प-
याग १९६।२ मरयो ॥
प्रभुमत विनु अनुजात जु पंचम ५ भ्रात सु मुहुकम१९४।५ लोभ
भरयो ॥ १४ ॥
पासहि रक्खि जनक दारा४०।१पुनि दिस अग्र३खिल सुत अग्र१हिँ दई
तकि मुहुकम१९४।५पछिलैँ दिल्ली तव लेन पटा हठ आस लई॥
अग्रजके अनुमतविनु आवत सुनि पावत दिल्लीस सुही ॥
पिसुन१कुपुत्र२जनाइ रु अत्थुत गिनि अनुचित अपकित्ति गुँही॥१५॥
साह ढिग सु बुल्ल्यो हु न सादर कछुक पटाह न देन कह्यो॥
तव मुहुकम १९५।५ प्राची १ पतिकोँ तकि रुट्ठि सुजा ४०।२ ढिग
जाइरह्यो ॥
पहु यह सुनत सता१९४।१खिजि तापर लिखत दुघारिय छिन्नलई॥
लोभित इंद्रगढेसहु दिल्लिय दूजे२अनुजहु दिट्ठि दई ॥ १६ ॥
अलप पटा दिय ताहि जवन इम भोगि अचिर तिहिँ विरत भयो॥
सुत गजसिंह१९५।१हिँ रक्खि तहाँसन लजि अप्पन गृह आइ लयो
उप आलंभ दयो नृप१अनुज२हिँ किम बिनु सासन अमन करयो
अवनि१तथापि कितीक लही अरु धन२जस३पद हु कितोक धरयो१७
मूढ अनुज तव जिम हुव मुहुकम१९४।५तूहु लुभाइ न होहु तथा॥
सह जस१लाभ२चढहु आदरसन पिक्खहु निज कुल धर्म प्रथा॥
मान बढाइ मिलैँ विनुमंगिय१मंगिय२सो न घटाइ मिलैँ ॥
जे जग जनम न उच्च वढैँ जिन्ह खट्टन जस हिय सुमनँ खिलैँ १८

१ शीघ्र २ रोग ३ छोटा भाई ॥ १४ ॥ ४ बडे भाई की सलाह. विना ५ चुगल खोर ६ उलटा ७ अपकीर्ति गुथी ॥ १५ ॥ १६ ॥ ८ विरक्त ९ ओलंभा ॥ १७ ॥
१० खाटवाँ (सम्पादन) ११ हृदय रूपी पुष्प ॥ १८ ॥

इम*वासवसल्ल१९४।२हिँ समुझाइ रु पुब्व जथा पय लाइ लयो ॥
कुमर सुजा४०।४मिलि इत सुहुकम१९४।५कहँ देय पटा कछु कढ्ढियो
पहिलैं ताजमहल इत अतिप्रिय मंजु जवनपति हुरम मरी ॥
सांहजिहान३९।२अतुल दुख सोचि रु धी जग जस तस रहन धरी १६
अकबरपुर जमुनातट वाकैंहँ देस उचित दफनाइ दई ॥
कोटिन दम्म खरच तापर करि ललित सुकविरा किति लई॥
†उपल विविध अति‡अर्घ चिराइ रु जिहिँ आलय सब जेहि जरे ॥
पसु१फल२फूल३लता४दुम५पच्छिय६इम सब उपलन कोरि करे २०
पटुनम चित्र करहु गजरदपर रुचिर कमलकरि चित्र रचैं,
तदपि न नैंक धरे छबि तिनकी मन जिन्ह ऊतपन चित्र मचैं ॥
इक१इक१अल्प कुसुमबिच अद्भुत सत्तरि७० सकल जराव सज्यो
नखंहु घिस्यो जिनपे अटकैं नहिँ तिम इक१वनि तिन भेद तज्यो ।२१।
मंडप तस खट रस ससि१६६कर मित उच्छ्रित मनहु अकास अरैं
व्यासहु तास छ वेद४६ करन वनि प्रतिदिस जास प्रकास परैं ॥
॥
वेगम्कबर रुचिर ताके बिच बहुधन उपलन जटित बनी ॥२२॥
चउ४ कोनन मीनार बनें चउ४ उच्छ्रित अंतर मग्ग अहो ॥
जहाँ खिन प्रभु मैंहु चढ्यो जँहँ क्यों न टिक्यो हटतेंहु कहो॥
आयत चउ८ द्वारनपर आयत वर्ण जवनलिपि जटित बनें ॥
बहु जलजंत्र१कुसुमवाटी२वर खचित नितेंदि१प्रनाल२खनें ।२३।
अमित जनन सबऋतु जँहँ प्रविसत माधव१ऋतु सरवस्व मिलें,
अलि१खग२गन गुंजन१कूजन२इत खिनखिन जित तित कुसुम३खिलें

---

*इन्द्रजाल ॥ १६ ॥ †पाषाण‡बहु मूल्य १ पत्थरों को २खोदकर ॥ २० ॥ ३ हाथी दांत पर ४ सत्यपन में आश्चर्य होता है ५ जड़ाव ॥ २१ ॥ ६ ऊंचा ७ विस्तार ॥ २२ ॥ ग्रन्थकर्ता कहता है कि८तीर्थ यात्रा के समय में भी इस पर चढ़ा था ९ चौड़े१०फारसी के बड़े अक्षरों में ११ फव्वारे बने हुए हैं १२ नालियें खुदी हुई हैं ॥ २३ ॥ १३ वसंत ऋतु

महकि सुगंध१ मंद२ हिम मारुत हिय१ संगहि श्रमर२ सबन हरैं॥
जासन रुचिर अगार अखिल जग प्रथित न ओरहु जानिपरैं ।२४।
सत्रह१७लक्ख त्रि३कोटि३१७००००० लगे सब रुप्पय जिहिं
सिर लिखितरहैं ॥
जिहिं सिल्पी सु रच्यो तस फल जँहँ कट्टिय कर तस साह कहैं॥
तैसो अदय हुतो हाहा तव गीदर सुत ओरंग४०।३ गह्यो ॥
जो बितथहि तो सोहु अदय जिहिं वितथ कथन श्रम विफल
वह्यो ॥ २५ ॥
अैसो हुरमसुकविरा अद्वय२ ललित विरंचि जस-साह लयो ॥
जाकँहँ ताज हुरम रोजा जग भनत इमसु तिहिं काल भयो ॥
इत बुन्दी१ पट्टनि२ दुवर्पुर इम रुचिर सता१९४१प्रासाद रचे
अद्वय एहु उभय२सम अधिपन आयत१ उच्छ्रित२ जटित३ जचे
प्रभुपद छत्रमहल१ बुन्दीपुर जटित सितोपल तुंग जथा ॥
गंजत जो पारदं लित रुचिगुन परिचित सारद जलद प्रथा॥
सब गुन१ उच्च२पृथुल३दृढ४ जासम सौध द्वितीय२न जात सुन्यों
सूल१ दिसा२ साधित जो सिल्पिन चतुरन चित्र विचित्र चुन्यों ॥२७॥
याकै सिर हाटकँमय उत्तम दिव्य जटित मनि छत्र१ दयो॥
पाद सु बुद्ध१९७।१समय कोटापति गंजि सबन लै भीम१९५।२गयो
यह रचि छत्रमहल१ बुंदी इम पट्टनिपुर प्रासाद२ प्रथा ॥
सवसन तुंग चढाइ रच्यो सुभ जग इक१हिम गिरि सिखर जथा २८
चम्मलि वामतट सु जाके चर्य पंच५ निवर्त्तन पीठ परयो ॥

---

१ मकान ॥ २४ ॥ जिस कारीगर ने उसको बनाया था उसके हाथ कटवाडाले तभी उसके पुत्र औरंगजेब ने उस गीदड़ को कैद किया २ जो यह बात झूठ है तो वह निर्दय है कि जिसने यह झूठ कहने का वृथा श्रम किया है ॥२५॥ ३ चौड़े और ऊंचे ॥ २६ ॥ ४ श्वेत पत्थर का जड़ा हुआ जो ५ पारे की श्वेत क्रांति के गुणको दबाता है और शरद ऋतु के बादल का परिचय कराता है ६ महल॥ २७ ॥ ७ स्वर्ण का ॥ २८ ॥ ८ सबूह ९ बीस बांस का एक

जिंहिं*उच्छ्रय वाहिर वंह जा सन धरनि समाहित द्विगुन धर्‌यो ॥
इकसत१०० कर चम्मलि ह्द अंतर गाढ†निचित छिति मग्नगयो
‡पीठकमध्य विभाग महा दृढु ठाम विहित प्रासाद ठयो ॥२९॥
सव भुवके दुव१विध प्रासादन उच्छ्रित हुव प्रासाद वहै ॥
जोजन चउ४ दूरहु जो मनुजन रम्य सविध सम दिठ्ठि रहै ॥
सुवरनछत्र१कलसरुव२सोभित वहु धन उपलं विचित्र वन्यौं ।
प्रभु केसव जामैं पधराये तँहँ व्ययसह मह अतुल तन्यौं ॥३०॥
पट्टनि तंनं जितोक परनाँ सो सव तत्थ लगाइ सदा ॥
राज्य प्रताप अधिक्क तँहँ रक्खिय उदित विभव सव राज्य सदा ॥
तँहँ भेरीवादन१प्रतिजामरु रंजन गायन१मिथुन२रहैं ॥
घटिका जंत्र ३ घटी १ प्रतिघोसक ४ जकुंट लकुंट प्रतिहार
५ लहैं ॥ ३१ ॥
समयसमय सेवन वहु सेवक६ तखत७ रु चामर७छत्र८तती ॥
प्रभु अवसर वाहिर पधरावैं सह गज१०सादिय पंचसती५००।११॥
भूखन १२ ससन १३ वसन १४ नवनव भांते समयसमय मह
१५ वहुल वढै ॥
केसव कोसैं वचैं सु रहैं वसु१६चित वसुवलि जुहि भेट चढैं ॥३२॥
मंदिर विघ्नविनासक जन१८सुख मासिकमैं दिय तिन्हहु मही
राजविभव प्रभुकैं इम रक्खि रु आयउ पुर अरिअनिलं अही
वुंदीतैंहु रहत खिल वासर च्यारि४घरी हय डाक चढ्यो ॥

निवर्तन होता है ऐसे पांच निवर्तन अर्थात् सौ १०० वांस का जिसका पीढा (चबूतरा) है. वाहिर * ऊंचा है उससे दुगुनी भूमि है †नींव (बुनियाद) ‡ उस पीढे (चबूतरे) के मध्यभाग में बड़ा मोटा ॥ २९ ॥ १ ऊंचा २ पत्थर ॥ ३० ॥ ३ आधीन ४ नोबत का बजना ५ प्रहर प्रहर प्रति ६ जोड़ा अर्थात् दो द्वारपाल ७ छड़ी लिये रहते हैं ॥ ३१ ॥ ८ पंक्ति ९ नैवेद्य वा पवन १० नवीन नवीन भांति के ११ खजाने में ॥ ३२ ॥ १२ शत्रुओं रूपी पवन क

संध्या पट्टनि सद्धि सिधारंत विघ्नन पारतभक्ति वढ्यो ॥ ३३ ॥
इम प्रासाद उभय२रचि अद्भुत लोभी नृप जसलुट्टिलयो ॥
इकदिन सब *संसद लहि अवसर भाऊ१९५।१प्रति इम प्रनतभयो ॥
†पलित धरत अब हम रन‡प्राघुन मह अहं चाहत निंयति अजों ॥
तूहु तरुन सुत१ सिसु मरिगो तव प्रभु इम दैहैं बहुरि प्रजों ॥३४॥
त्योंहु निंयति प्रतिकूल मिलैं तँहँ भीम१९५।२तनय लहि अंक भलैं
व्याहन सिसु गंगा१९५।५तव वाहिनी फल यह जो नाहिं हमहिं फलैं ॥
बिक्खहु तो जवँ जामि उचित वय करि लहतो यह देहु कुलैं ॥
अनुजा लाडकुमरि१९५।६न वची इम तस भर तक सिर नाहिं तुलैं॥
भाऊ१९५।१कुमर प्रनत सुनि भाखिय प्रभु मतयैं नहि भेदपरैं ॥
आधिप सता १९४।१ सकुटुंब कलि४ हु इम कृत ९ जुग बुंदिय
विलसि करैं ॥

ग्राम अयुत१००००लगते बुंदीगढ जँहँ ‹›त चउदह१४००जवन लये॥
कौतुक१रीम्फ२हगाम३तदपि क्रम दिनदिन नृप धन अधिक दये ३६
इत ओरंग४०।३नसाइ नगर वह कछु चढि दक्खिन अमल कस्यो ॥
भागनगर१बीजापुर२भटगन गोकि वढन रन अड्ड अरयो ॥
साहजिहान३९।२जिती भुव सद्धिय यह जब तासहु अग्ग चल्यो ॥
वेगहि तब दक्खिन२।३दल बीरन दिल्लिय दल द्रुत आइ दल्यो ।३७।
इत अतिबीर सितारा३के अरि पच्छिम३।५सन मरहट्ट परे ॥
जितहि वढे सित आइजुरे जिन फन फन प्रतिभट सुगल करे ॥
सीम जितीक लई निज दाबि सु लहि अब अधिकहु लैनलगे ॥
तोपप्रमुख१०उपहार सबै तनि गढ गढ निज साजि गैन११लगे ॥ ३८ ॥

पीनेवाला सर्प ॥ ३३ ॥ * सभा में † श्वेत बालों को धारण करनेवाले ‡ युद्ध के पाहुने १ प्रतिदिन २ भाग्य की ३ अनुत्पत्ति (मोक्ष) चाहते हैं अर्थात् प्रतिदिन यही चाहते हैं कि हमारी मोक्ष होवे ४ संतान ॥ ३४ ॥ ५ और जो भाग्य विपरीत मिले तो ६ भीमसिंह के पुत्र को गोद ७ शीघ्र ८ बहिनोई ॥ ३५ ॥ कलियुग में इसप्रकार ९ सत्य युग करता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १० तोप आदि ११ आकाश में लगे यह अत्यंत उच्चत के लिये कहावत है ॥ ३८ ॥

भाननगर१ पूरव१ भयकारक बीजापुर२ जनें ओर२ वली ॥
पच्छिम३ अलह सितारा३ पत्तन चउ४दिस तीन३न तेग चली ॥
बढत बढ्यो ओरंग४०।३ सु पै अब घटत अंतंत्र सिखाइ घनों ॥
गंठिहुके जु गुमाइचुक्यो गढ पाइ न ह्वाइ प्रंदीरपनों ॥३९॥
तबहि सिटाइ इयो दलं ताताहि भूमिबढात बिपत्ति भिरी ॥
बुंदीभूप पठावहु तो दलि फेलतपावहु आन फिरी ॥
बड़ दुर्लन भुव तस लै अप्पहु कोटापतिवस जदहि करी ॥
अप्पनअर्थ लग्ग यह साधंत धी तस अप्पन कानि धरी ॥४०॥
सो करि तुट्ट लता१९४।१ नृप संभर प्रभु इत भेजहु भीर परी ॥
पत्र सु दंिन्न बुलाइ सता१९४।१ पुनि कछु जवनेसहु प्रीति करी ॥
नाम गजादि गनेसकरी१ जिन तुरग२ विदित रहवाद तथा ॥
वस्त्र३ रु भूखन४ सस्त्र५ सबै बर जे दिय दुर्लभ उचित जथा ॥
तदपि सहां न दई रंचहु तिम कथन१ सुगल सह कित्ति२कह्यो ॥
अबकी बर लता१९४।१ जय आनहु लघु तब जानहु देस लह्यो ॥
इम कहि सिक्ख दई तब अधिपहु लै बलं बुंदिय सिक्ख लई ॥
जनपदँ आइ सजे रन जोधन भिरन प्रबोधन रीझ भई ॥४२॥
बंटि चतुर१००००रुप्पयतँहँविप्र१न लहि खिंन कवि२जन बुल्लिलये
तिनहित इकलत तीस१३०तुरंग१रु दम्म२सहँस चउवीस२४०००दये
सतत्रय३००वाजि१ रु दम्म२ सहँस सुर३३००० जो धन जोध३न अप्पि जथा ॥
दु अयुत २००००दम्म सचिर्व मुखं दास४न पननारि५न वसु स-हँस ८००० प्रथा ॥४३॥
छसहँस६००० दन्म गामक६न दिय छैम इतर७न पंचक५ सहँ-

१ दक्षिण दिशा २स्वतंत्रता घटने पर बहुत सिटाया ॥ ३९ ॥ ३ पिता को पत्र लिखा ॥ ४० ॥ ४गणेशगज ॥ ४१ ॥ ५ जीव ६ सेना ७ देश में ॥४२॥ ८ समय पाकर. सचिव ९ आदि सेवकों को १० वेश्याओं को ११ प्रसिद्ध ॥ ४३ ॥ १२ उस समर्थ ने.

हँस५००० अहो ॥
बरख्यो धन सावनघनंके विधि निर्धन रंकहु लखन नहो॥
इम करि रीझ प्रबिसि प्रभु आलय पीतंवर१ पय प्रनत परयो ॥
पूजन ठानि प्रसाद लह्यो पुनि धी कुलदेवियर दरस धरयो ॥४४॥
आसापूरनि२ पूजि उमा वह जासहु पाइ प्रसाद जहाँ ॥
लाये कृष्ण१९६।१ कुमार ललाटहिं स्व अलिक अच्छतशति-
लक२ तहाँ ॥
सोहि सबन तब पट्टकुमर सुवं पट्टकुमर यह समुझिपरी ॥
भाऊ१६५।१कुमर सुहीं सन भाइ रु ध्रुव तस सिर निज पग्घ धरी ४५
यह लखि होइ प्रसन्न सता१९४।१ इम अधरं महल नमि इष्ट उभे
दक्खिन२।३ चढन विचारिय दुब्भर दूर करन ओगंग४०।३ दुरभे ॥
सक नव नभ सत्रह१७०९विक्रम सम इन१सित१माधव२तीज३अखे
परसुधरन जिहिंदिन अवतरि प्रभु खिजि किय छत्रन बंस रखे ॥
जाहिदिवस चंडासि जनमि जब बानतनय जुगर काल बन्यों ॥
जाहिदिवस समरेस१८१।७कुमर जब तिम लहि बुंदिय सुजस तन्यों
जाहिदिवस ताके सुत जैत्र१८२।३हु कोटा निवसन सिद्धि करी ॥
जाहिदिवस यह ग्रंथ रचन जिम धी कवि इहिं आरंभ धरी ॥४७॥
जाहिदिवस नरनाह सता१९४।१जवं कुंच सु दक्खिन२।३ओर करयो
पट्टकुमर भाऊ१९५।१ढिग नयपट्टु धीर चतुष्क४कहैं सु धरयो ॥
बासवसल्ल १९४।२।१ अनुज धारि बुंदिय तिम रुक्मंगद १९५
१।२स्याम१९४।१तने ॥

॥ ४४ ॥ १ ललाट में २ पाटवी कुँवर का पुत्र ॥ ४५ ॥ ३ नीचे के महल में ४ दोनों भय अर्थात् भूमि जाने का और हारने की लज्जा का ५ राजा ६ वैशाख सुदी तीज अर्थात् अक्षय तृतीया के दिन, जिस दिन परशुराम ने अवतार लेकर ७ क्षत्रियों के वंश को क्षय सहित किया था ॥ ४६ ॥ ८ खड्गवाण ९ कुमर समरसिंह ने १० जिस दिन कवि सूर्यमल्ल ने इस ग्रंथ (वंशभास्कर) की रचने की बुद्धि की ॥ ४७ ॥ ११ शीघ्रता से

मुकल१८४।४वंस अनुज माधव१९३।१को आसकरन१९३।२।३
तिम[1]महंत[2]अनै ॥ ४८ ॥
केसव १९२।२ कुल सुखसिंह १९४।२४ उचित कहि धुर भट
ए चउ४ गेह धरे ॥
सूचित दिन संतत नृप संक्रमि क्रम क्रम दक्खिन[3]कुंच करे ॥
व्यूह[4]१विधान सरँनि[5] ध्वजिनी बहि रत्ति सु सिविर[6]२विधान रह्यौ
पहुँच्यो इम ओरंग नगर पहु गढगढ सत्रुन भीति गह्यौ ॥४९॥
आइ सुमुख लेजाइ मुदित अति साह कुमर जयलाह सज्यो॥
जिम नृप कहिय तिमहि हित जानि रु तक्कि नयपुब्ब प्रमाद तज्यो ॥
भागनगर१बीजापुर भूपन दुव२दिस नृप इम पत्र दये ॥
तुम १ हम २ वचन हुतो सु अविदित[7] न लिखि जुहि इज्जत १
ज्यान२ लये ॥ ५० ॥
वपमद करि ओरंग४०।२३तैं वढि लुब्ध कुमग्ग अनर्थ लह्यो ॥
गढ गंजे चिरकेहु गुमावत बालिसपन[8] हठ विफल वह्यो ॥
तुम अब पुब्बहि सीम रहो तिम हद पर जानहु हमहु हटे ॥
क्यों इत१ उत २ सुभटन विफलहि कलि[9] करि अनुचित सब
लखहिं कटे ॥ ५१ ॥
दुव२जवनेस लखि सु इतको दल भूपति प्रति इम लखतभये ॥
न हमहिं दोस सता१९४।१नृप नैंकहु दिस त्रय३वढि पय सुगल दये
पूरव१तिम दक्खिन२अरु पच्छिम३धामहि इक दुव नाँहिं ग्रहे ॥
गढ पहिले दब्बे अपनैं गिनि चित्त अधिक हमरेहु चहे ॥ ५२॥
इत इक१अज१जवन२दुव२हम इत दिल्लीप्रति त्रय३इक्क१द्वि[10]पँ
वचन मिलि सु हम त्रिकैं[11]३हि निवाहत लेस न जिम कहुँ भेद लिपँ

---

२ अनीति को १मिटानेवाला ॥ ४८ ॥ ३ व्यूह की रचना से ४ मार्ग में ५ सेना चलकर ६ रात्री में डेरा रचकर रहा ॥ ४९ ॥ ७ अप्रसिद्ध ॥ ५० ॥ ८ मूर्खपन ९ युद्ध करके ॥५१॥ ५२ ॥ १० शोभायमान ११ तीनों

रैन१९२।१नृपति आसान जु सुमिरत तुमसन नन मन हितहिं तजै
हम२सह सपथ मिले मरहट्ठ१न भुवहित त्रिक३एक१त्व भजैं ।५३।
हम१तुम२मेल सुनैं मरहट्ठ३हु तो छल रिपु इम हमहिं तकैं ॥
दिष्ट सफल समुदित तिनके दिन समुझि सु भिन्नहु न रहिसकैं ॥
तकि दिल्ली अरिपन हम तीन३न मथितन भेदहु जानिपरयो ॥
किम तुम१ हम२हिं तुम१हिं हम२ हित करि कालि तनि बच-
न निबाह करयो ॥ ५४ ॥
मरहट्ठहु अपनैं सुनि मेलहि ततखिन हमसन मेल तजैं ॥
यातैं करि गढगढ रन इक१इक१लेहु इम न हम उतहु लजैं ॥
साहहु ठानि कुमरपन सपथ रु कालिं हम अखिल सहाय करे ॥
सिसु१बेगम२अपनैं हम आश्रय धुव दौलत आबाद धरे ।।५५।।
दैन हमहिं कहतो बटि देसहि जे१हम२एस१हि साहजहाँ३९१।२
कित दैबो सुन गिनि उपकार२हु तक्कत ए१अरि हम२हिं तहाँ ॥
साह१ कपट सपथन बिसवासन इम ओरंग४०।३।हु तसहि तनै ॥
रक्खि सरन हम जिहिं असुं रक्खिय अरि गिनि चहत सु हनन अनै
अग्ग पितर हमरे रन आलुल कट्टत रैन१९२।१ज़ु काल करयो
तुम सह रन टरिबो हढता बिच धुवक्रव इतर२न टरन धरयो ॥
यातैं तुम निज दल करि गढ इक१ कै दुव२लहि जय भिन्न करो
गंजे हम सिर सैंटि जिते गढ धक जितने सब लैन धरो ।।५७।।
इत१ मरहट्ठ२ गिनैं तुमकों अरि रीति सु तुम१ उत२ गिनतरहो॥
तुम बिसवास प्रमत्त रहैं तँहँ चित्तहु हमहिं न हनन चहो ॥
साहकुमर न तजैं जो साहस तुम१ हम२ बचि खिल लरहिं ततो।
देहु न दोस दलत खिल पर दल निजनिज पंन मन मिटहिं नतो।४८।
महिपति अप्प तृतीय३ कुमारहु हमहिं लखत भगवंत१९५।३हनैं।

१ सौगंद ॥ ५३ ॥ २ भाग्य के फल से उनके दिनका उदय है ॥ ५४ ॥ ३ युद्ध में ॥ ५५ ॥ ४ प्राण ५ युद्ध को मथनेवाले ॥ ५६ ॥ ६ मस्तक के बदले में ॥५७॥५८॥

कै१ जानैं न जुदो तुमसन कै१ वैरिय वैरिय गिनि सु वनैं ॥
यह दल वंचि दयो नृप उत्तर भाँवित सव तुम उचित भनी ॥
देहाँ सुत समुझाइ सुतो दृढ अव टरि टारहिँ अप्प अनी ॥ ५९ ॥
पै मम चंक्र जुदो करि पानिर्प लारि कछु जो कछु दुर्ग लहैं ॥
बचन दिखाइ मरन१ मारन२ विनु रन मरि१ मारि२न वचन रहैं॥
उचित हमहिँ लरिवो संगहि इम इक्खत निजनिज टरहिँ अनी ॥
जुरि हम१तुम२इतरनसन जुज्झहिँ धर जित लरि मरि देहु धनी ६०
तिम दोलत आँवाद लयो तव गढ जन सवकछु कहि गलो ॥
अप्प वचाइ निकासे ते अव आधिकहिँ इच्छत भूप भलो ॥
मूढ दुरदिम यह मति हुव गढगढ विचविच मारन१मरन२बुरी ॥
भूपहु सुत उद्धत भगवंत१९५।३हिँ दृढ करि वोधिय वत्तदुँरी ।६१।
इम चउ पंच दिवस रहि अधिपहु कुमर विजंन लहि मंत्र करयो ॥
ओरंग४०।३हु लखि नृप आलंवन क्रमकरि सव तस तंत्र करयो ॥
मंत्रकरयो१ तंत्रकरयो२ अन्त्यानुप्रासः १॥
दक्खिन२।२ देस मुदित१ अरु दुर्मन२ भूपहिँ इम सुनि भीर भयो ॥
आहवँ साज निचंय साजि अवसर लहि जिमतिम अवधान लयो ६२

॥ दोहा ॥

सता१९४।१ सिविर रजनीसमय, आयो तँहँ अवरंग ४०।३ ॥
अक्खिय अव दादा उचित, जानि जितावहु जंग ॥ ६३ ॥
कहिय भूप जड़ताहि किय, हद लंघत तुम हाइ ॥
रेखैं कुट्टत कोनं रस, जँहँ पन्नग भजिजाइ ॥ ६४ ॥
तदपि अज्ज सुलतानको, पुहवी अतुल प्रताप ॥
जथा सकति हमरे जतन, अरि गन गंजहु आप ॥ ६५ ॥

---

१ पत्र बांचकर २ यह प्राप्त वार्ता तुमने उचित ही कही है ॥५९॥ ३ मेरी सेना ४ पराक्रम करके ॥ ६० ॥ ५ छिपीहुई वार्ता को जनाई ॥ ६१ ॥ ६ एकान्त में लेकर ७ युद्ध के साज ८ समुच्चय ९ सावधान ॥ ६२ ॥६३॥ १० सर्प निकल गये पीछे लकीर कूटने से क्या लाभ है ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

सिबिरसंमागम हेतु मन, उपदा गज१ हय२ आदि ॥
साहिंमाँहिं लिय दिय मिलत, सह हित मह संबादि ॥ ६६ ॥
इम दक्खिन२।३ जातहि अधिप, जुग२ दिस आसय जानि ॥
सज्जे रन उपहार सन, पर दल प्रसभ प्रमानि॥ ६७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-वसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे अकब्बरपुरताजगञ्जनिर्माणतद्रचनावर्णन १, बुंदीपुरच्छत्रप्रासादपट्टनमहलमन्दिरनिर्माणभणन२, औरंगजेव दलागमनेन साहजहांनिदेशात्ससैन्यशत्रुशल्यस्य दक्षिणस्यामौरंग जेबान्तिकगमनवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

आदितो विंशाधिकद्विशततमो मयूखः ॥ २२० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सज्जे दल संभर सता१९४।१, बज्जे सूचक बंबे ॥
भर५ छज्जे भज्जे अमर६, लज्जे अलस६ बिलंब ॥ १ ॥
सिलह१ सस्त्र२ भूखन३ बसन४, गज५ हय६ रुप्पय७ग्राम ॥
बल इत१उत२ द्रुत बंटिपत, आदर गुन अभिराम ॥ २ ॥
झहनावत सानन झगत, हेति मनहुँ तपहेलि ॥
मन गहिलीघंट भट मुदित, किधौं सबय सिसु केलि ॥ ३ ॥

१ नजराना २ उत्साह के वचन कहकर ॥ ६६ ॥ ३ हठ.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में आगरे में ताजगंज के बनने की कथा और उसकी रचना का वर्णन १ बुन्दी में छत्र महल और पाटण के महल मंदिर बनने का वर्णन २ औरंगजेब के पत्र भेजने पर बादशाह शाहजहां की आज्ञानुसार बुन्दी के राव शत्रुशाल का सेना सहित दक्षिण में औरंगजेब के पास जाने के वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बीस २२० मयूख हुए ॥

४ युद्ध की सूचना के नगारे बजे ५ भड़ (वीर) शोभायमान हुए ६ कायर भागे और देरी करनेवाले आलसी लजे ॥ १ ॥ ७ शीघ्र ८ सुन्दर ॥ २ ॥ ९ मानों ग्रीष्म के सूर्य के समान शस्त्र चमकते हैं १० पागल स्त्री के कलश के समान

जब हारी अवरंग४०।३ जुरि, अग्नि मत्थैं अग्गि ॥
सो व सिलग्गी सारसम, जोर बिलग्गी जग्गि ॥ ४ ॥
धुव जितजित दामंक१ ध्वनि, हुव इत१ हित अनुहार ॥
हैंवर१नर२ छाये हुलसि, पक्खर१ कवच२ पसार ॥ ५ ॥
जोरी बेलन बहु जर्कुंदर, चोरी गैलन चाल ॥
नाली काति हंकिय निठुर, काली तति जिम काल ॥ ६ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनीरोला ॥

भूप सता १६४।१ अवरंग ४०।३ भीर सज्जे दल संगर,
बज्जे भेरिन असह शैल धमकात धरा १ धर२ ॥
पिट्ठि गजन केतन प्रलंब उडि छायो अंबर ॥
हुल्लि नकीबन क्रम विसेस संक्रम किय सत्वर ॥ ७ ॥
सिव१आदिक कुतुकी समाज सब न्यौंति समोसर,
सावन छल्ली सरित सेन दिपि हल्ली दुद्धर ।
उद्धत दल ऐंचत अमान लंबे अय लंगर,
पय अंडे डारत पयान बैंडे गज बिस्थर ॥ ८ ॥
मँदझरनाँ सरनाँ मनौंकि झरनाँ गिरि झंगर,
भद्रकै१मँद्रक२मृग३आभिन्न४कुल१खेत२ प्रथाकर ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ १ नक्कारों के शब्द २ सदृश ३ घोड़े ॥५॥ ४ जोड़ा ५ तोपें ६ देवी की पंक्ति ॥ ६ ॥ शत्रुशाल ने औरंगजेब की सहाय के लिये ७ युद्ध पर सेना सज्जी वहां नहीं सहने योग्य पर्वतों को धुजानेवाले नौबतों के ८ समूह बजे और हाथियों की पीठ पर १० लंबी ९ ध्वजाओं ने उड़कर ११ आकाश को ढकदिया १२ शीघ्र चले ॥ ७ ॥ उस समय शिव आदि तमाशा देखनेवालों के १३ समाज (समूह) को निवता दिया और सावण मास की छलती हुई नदी के समान कठिनाई से थंभा की जावे ऐसी सेना शोभायमान होकर चली. उद्धत बलवाले (नहीं माननेवाले) १४ हाथी लोह के अतोल लंबे लंगर खींचने लगे और वे मस्त हाथी घमंड के पैंड देकर विस्तार से चले ॥८॥ १५ उन हाथियों के मद का गिरना है सो मानों झाड़ीवाले पर्वतों का झरना है १६ भद्रजाति के १७ मन्द्र जाति के, मृग जाति के और संकर जाति के हाथी अपने कुल और खेत को १८ प्रसिद्ध करके

उलटावत ऊँध उठात पन्नगगति पुंक्खर[1] ॥
ईसा[2] दंतन लसत अच्छ बर हाटक बंगर ॥९॥
हिमकर१ दिनकर२ मिलित व्है कि प्रतिमास अमा३०पर।
तनित चलावत करन तालसम पच्छ खगेस्वर ॥
स्याम घटा पाउससमै कि बक१ विज्जु २ बरब्बर ।
इभ[3]१न घटा भल्ली अनेक इम हल्ली उक्करैं[4] ॥१०॥
प्रोथी२ बाल्हिक१ पारसीक२ कांबोज३ प्रथाकर,
खुरासान४ ताजिक५ तुखार६ भाड़ेज७ छटाभर ॥
जवन बनायुज ८ खेत जात चमकात चरा१चर२ ॥
क्रमि जलउप्पर किलकिला कि प्रसरैं दल उप्पर ॥ ११ ॥
चंक्र हयच्छट झुकि बहंत कोदंड हसीकर,
पच्छे छुवत उठातपाय दगि भू बैसंदर ॥
ससि१ खुर१ तम२ खुरतार२ संग बिहरैं जनु विज्वरं ॥
क्रम नलकौल१न नैलकिनी२न घनपन मृग घत्वरैं ॥ १२ ॥
पुट्ठै जुग२ पिंडक प्रगोलैं मृदु चक्र मनोहर,
उर आयतविष्टर बिडंबि धारन दव्वैं धर ॥
करन जुग२ल लघुपनं कलीन केतक निंदाकर,

१सूंड के अग्रभाग को ऊपर करके सर्प के फण के समान उलटाते हैं २लंबे दांतों में श्रेष्ठ सुवर्ण के बंगड़ शोभा पाते हैं ॥९॥ सो मानों प्रति महीने अमावास्या पर सूर्य और चन्द्रमा सामिल होते हैं और गरुड़ की पांखों के समान तनेहुए कानों को हिलाते हैं किंवा वर्षा ऋतु में कालीघटा में बक(बुगला) और बिजली बराबर दीखती हैं ३इसप्रकार की हाथियों की उत्तम घटा(सेना)४उत्कर(हाथ पग हिला कर)अर्थात् पगों और सूँडों को हिलाकर चली ॥१०॥ बाल्हिक आदि देशों में उत्पन्न होनेवाले ५घोड़े ६पानी पर किलकिला पची चले जैसे सेना पर फैलते हैं ॥ ११ ॥ सेना में गर्दन झुकाकर ७ धनुष की ८ हसी करते हुए चलते हैं भूमि को स्पर्श करते ही पग पीछा ऐसा उठाते हैं जैसा ९ अग्नि से जलकर उठावे, चंद्रमा रूपी खुरों के साथ खुरताल रूपी राहु १० विगतज्वर (विना पीड़ा)होकर विहार करता है चलनेमें ११नलियें और १२जंघाओं की अधिकता से मृगों में १३ घुसते हैं ॥१२॥ जिन घोड़ों के दोनों १४विशेष गोल पुट्ठे कोमल सुंदर चाक के समान हैं, जिन घोड़ों की १५छाती १६बाजोट की नक-

सहनाइन चढ़ैन समान मुरि प्रोथैं मनोहर ॥ १३ ॥
वत्थ न माइ नमाइ वंक कसते धनु कंधर,
यालैन जूरा१ विसिख२ ओप प्रतिवंधँ१ ज्यका२ पर ॥
जवनी१ सालिग्राम२ जानि अंखी१ छद२ अंतर,
गो१धि''२ सु नत जिम सुनत१ ''गोधि२ पन्नगदल पद्धर॥१४॥
थान१ उठे वपु२ चरन१ थंभ२ चल वालधि१ चामर२,
लेत कुसा छेकत मलंगि द्वै२द्वै वरछी धर ॥
पलट१ उलट२ सफरीप्रमान मृगडान मनोहर,
विस्मय जव नटके वटॉ१न कुलटाहग केकॅर२ ॥ १५ ॥
गहि वत्थन पीछैं गिरात अवनी जवनी अर,
मुकुर विंव दिन चलन मान परिछो १ उडिवो१ पर ॥
जिन्ह पिक्खत प्राकार जात न गिनैं त्राता नर,

ल करनेवाली है और वे दौड़ने में भूमि को दवाते हैं, जिनके दोनों कान छोटेपन में केतकी की कली की निन्दा करते हैं जिनके सुंदर २ फुरणा (नासिका) सहनाई के ? मुख के समान मुड़े हुए हैं ॥ १३ । जिनके धनुष के समान नमे हुए कंधे पाथ में नहीं माते हैं और उन कंधों रूपी धनुष में ३ केसवाली का ४ जूड़ा (केशों का समूह) है सो ही ५ तीर की ६ उपमा के समान है. और ७ जरबंध है सो ही ८ प्रत्यंचा है ९ उजाली (नेत्रों के ऊपर का वस्त्र) के भीतर नेत्र हैं सो मानों पड़दे के भीतर शालिग्राम है, उन घोड़ों के श्रेष्ट नमेहुए ११ ललाट १० गोह (गोहिली) सर्प के नमेहुए ललाटके समान है और सेना में सीधे चलनेवाले हैं (गोह भी सीधा चलनेवाला सर्प है) ॥ १४ ॥ जिनके संधि की गांठों(घुटनों आदि) के अंग उठे हुए, थंभ के समान चरण; और चमरके समान हिलना हुआ १२वालछा(पूंछ)है. १३जिनकी डाग उठाने ही दो दो बरछी भूमिको जो फांद जाते हैं १४मच्छी के समान उलट पलट करनेवाले और लंबे दौड़ने में सुंदर मृग, जिनके विस्मय (आश्चर्य) करानेवाले वेगके समान न तो १५नट का छोकरा और न कुलटा के नेत्रों के १६ अपांग(कटाक्ष) हैं ॥ १५ ॥ भूमि रूपी कनात को पाथों में भरकर शीघ्र पीछे गिराते हैं, उनका शत्रुओं पर उडकर गिरना १७काच विंब के समान और सूर्य किरणों के समान हैं, जिन घोड़ों को देखते मनुष्य कोट को अपना रक्षक नहीं समझते

जे प्रापंक द्रुम सुमन जाल बहिंफाल:बरब्बर ॥ १६ ॥
बैरीबाधक बिबिध बंस साधक भट संगर,
सज्ज सयन चउँ४ भेद सस्त्रपर भेद प्रथापर ॥
इक१पतनीव्रत जे अभंग रन व्याह बनैं बर,
कति अच्छरि न चहैं कलत्र गिनि निज सहगत्वर ॥ १७ ॥
के हरिपद१ हरपद२ कितेक इच्छे कुल उद्धर,
भाखैं सत्य१ असत्य२ भंजि मनके मकराकर ॥
सज्ज्यो कबहु न स्वामिलौंन जिनकै परि जाठर,
सुमनकली१ नासीर२ सीर भर भोग अलीभर ॥ १८ ॥
चालुक१ तोमर२ चाहुवान३ प्रतिहार४ प्रथाधर,
के कूरम५ जद्दव६ कबंध ७ सीसोद ८ पुरस्सर ॥
सैंगर ९ दाधिम १० सक्रवाल ११ परमार १२ परंपर,
चावोरे १३ दहिये १४ चलाक गोहिल १५ बडगुज्जर १६॥ १९ ॥
मोहिल१७ बिंदु१८ रु मंकुवान १९ कुल गोर प्रभाकर,
लुल्लक २१ जाव २२ प्रभावलौंन उफनाव अतित्वर ॥
इत्यादिक बाहुजें१२ उदार बलबाहुज बिस्तर,
मरद किते बहुभेद मिच्छर पहु भेद उमेर पर ॥ २० ॥

२फांदकर चलने में वृक्षोंकी बराबर होकर उनके पुष्पों की १सुगंधि लेते हैं ॥१६॥ शत्रुओं के नाना वंशों को बढानेवाले और युद्ध को साधनेवाले वीर जो अपने ३ हाथों में ४ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त और यंत्रमुक्त इन चार प्रकार के शस्त्र चलानें के भेदों में प्रसिद्ध हैं. कितने ही वीर अपनी स्त्री को अपने साथ ६ जानेवाली (सती होनेवाली) जानकर ५ अप्सराओं को स्त्री बनाना नहीं चाहते हैं॥१७॥ उन वीरों में कितने ही विष्णु के और कितने ही शिव के पदवाले और उत्तम कुल का उद्धार करनेवाले हैं जो झूंठ को मिटाकर सत्य बोलनेवाले और मन के ७ समुद्र हैं ८ जिनके पेट में पड़कर कभी स्वामी का लौंन पाचन (हजम) नहीं हुआ, जो श्रेष्ठ मनवाले कली के भ्रमर भार के भोगने में सीरी और सब के ९ आगे रहनेवाले ॥१८॥ १० अग्रणी ११क्षत्रिय जो अपनी भुजा से उत्पन्न हुए बल को फैलानेवाले ॥ २० ॥

लगि आली नाली प्रलंब काली कदनाकर,
लालीमुख लोहित लुभाइ चाली रंन चत्वर ॥
गढलोपन गोपन गिरिंद ओपी अग्रेसर,
जनु हल्ली डाकिनी जमाति असहन आडंबर ॥ २१ ॥
हरि१ गज२ अहि३ मकराश्वदि हिंस्र आनन भय आकर,
जुत्ते इभगन विविध जोट पथ ऐंचत पद्धर ॥
पीलुन ठट्ठ पिट्ठि पाइ सरके बलि ओसर,
चरखन अवनि ग्रसात चक्र निकसात घने नर ॥ २२ ॥
इम चल्ली तोपन अनेक मिलि पंति मनोहर,
मरहट्ठनसिर प्रथम मंडि सीमाहित संगर ॥
नासिक१ पुर तिनको निराइ देख्यो बल विस्तर,
सूचत जहँ रावनस्वसा सु बनि विरूप लयो वर ॥ २३ ॥
तहँ लरि तोपन दिवस तीन३ जिरयो नृप सत्वर ॥
मरहट्ठे रनबहुत मारि पुर पाइ वहै अर ॥
विंट्यो गढ त्र्यंबक२ बहोरि सजि तोपन संगर ॥
लग्गी गोलन असह लाग जग्गी धलगंज्जर ॥ २४ ॥
तहँ बाहिर रन प्रलय तोर विस्तारि कछु बौसर ॥
निश्रेनिन दद्दे नरिंद पिल्लि[12] भट उप्पर ॥
प्रचुर बन्यौ गढके प्रवेस कैलि[13] एस भयंकर ॥
कँपिसीसन[14] पहुँचत कलाप अरि बाहिर१ अंदर२ ॥ २५ ॥
खग्गन खंडविखंड खेरि किय खेत सवाकर[15] ॥

---

१ लम्बी तोपों की पंक्ति लगी जो २कालिका के समान ३नाश करने की खान थी. लाल मुखवाली रुधिर का लोभ करके युद्ध के ४ चौक में चली ॥ २१ ॥ सिंह आदि हिंसा करनेवालों के मुखवाली भय की खान ५ हाथियों के ठट्ठ पाकर ॥ २२ ॥ ६ समीप लेकर जहां रावण की बहिन (शूर्पणखा) ने ७ नकटी होकर वर लिया था तहां ॥ २३ ॥ ८ शीघ्र ९ शीघ्र १० निरंपर पतन ॥ २४ ॥ ११ कुछ दिन १२ भेजे १३ युद्ध १४ कांगरों के समीप ॥२५॥ १५ मुर्दों की खान

गिरैं सुभटताजि कंगुरेन कटि सिर१ कटि२ पै ३ कर४ ॥
नट जैसैं तिंहरी निघातं धरि गैनं छुवैं धर,
लंका जातु१न बिबिध लूंन बंका जिम बंदर२ ॥ २६ ॥
कटि कंगुर कंगुर किरंत इम भट अग्रेसर,
उत१के कटि इत२ अधंर आत इत१के उत२ अंदर ॥
बिदित सता १९४।१ के नव९ प्रबीर तँहँ जुज्झे सत्वर,
दुव२हड्डे६१ कछवाह दोइ२ सोलंखि स्वभू सर५ ॥ २७ ॥
हड्डे ६१ तँहँ हरजस १९३।३।१ पहार१९५।४।२ वड्डे जस बित्थर।
बनि तिलतिल्ल सामंत १८७।१ वंस जस किय उज्जागर ॥
सूर अजव१ आनंदसिंह२ कूरम कित्तीकर ॥
ए दुव२ कट्टे जस उवारि आमेर अनंस्वर ॥ २८ ॥
नवल१ तथा हरि२ चंद्रभानु३ नाथाउत निड्डर ॥
खेमाउत सद्दूल४ खंड बपु किन्न वरव्वर ॥
बदन५ कमाउत निसित वाढ लग्गो लज लंगर ॥
ए पंच५हि चालुक असंक आलुक भर उद्धर ॥ २९ ॥
अस्त्रन भिदिभिदि अंग अंग बनि नाकबंधूवर ॥
बुन्दी भूपति मुख्य बीर धारन तुट्टे धर ॥
इमहू घायल भट अनेक अर्जन१ अग्रेसर ॥
निडर मरत मारत नरेस दब्बयो मढ दुस्तर ॥ ३० ॥
रनबिजई ओरंग४०।३ रक्खि ध्रुव दब्बिगई धर ॥
नासिक१ सम गड्डे निसान त्र्यंबक२गढ सत्वर ॥
इम पच्छिम३दिस जित्ति आप धर संह्य तरैं धर ॥
पूरव१दिस तिम किय प्रयान संह चक्र नरेस्वर ॥ ३१ ॥

---

१ तिहरी कुलांट २ आकाश ३ राक्षसों को ४ काटकर ॥ २६ ॥ ५ गिरते हैं ६ नीचे आते हैं ॥ २७ ॥ ७फैलाकर ८ प्रसिद्ध ९ कीर्ति करके १० आमेर के यश को बचाकर अमर किया ॥ २८ ॥ ११ शेषनाग का भार उतारकर ॥ २९॥ १२ अप्सराओं के पति ॥ ३० ॥ १३ सह्याचल एक पर्वत का नाम है ॥ ३१ ॥

दक्खन अब इत बिदर१ दुर्ग बेढ्यो जुहिं बिद्दर ॥
बज्जैं जुहिं ग्रंथन बिदर्भ२ इम देसी अक्खर ॥
जहँ सिल्पीजन रूप जस्त मृदु मंजि प्रथा३ पर ॥
करि हुक्का१ कंचोल२कादि दै क्रीत दिसावर ॥ ३२ ॥
जेहु कहावैं बिदरजात तपकाल सिसिरतर४ ॥
सो गड बेढ्यो सत्रुसल्ल१९४१ बुन्दी बसुधावर५ ॥
रुंध तोपन धम्मचक्क मंडि सम चँक्क ऍरस्सर ॥
गडके जवनन गंजि गंजि किन्नैं भयकातर ॥३३॥
छुल्ल कुंतू बारूद पूरि बसुधा११ बँरनं१२तर ॥
अग्गि लगाई इक्क ओर अति घोर उपव्हर१२ ॥
उडि उतको हुत कोट अंस पथ भो कछु पद्धर ॥
लै तिहिं मग ओरंग४०१३ लार नृप पैठो निड्डर ॥३४॥
खग्गन सेस बिसेस खंडि करि दुर्ग वहै कर ॥
झंडे हजरतके झुकाइ जय तीजें३ जित्वर॥
धरि थानाँ तिहिंदुर्ग धाम धीरन बानैंधर१४ ॥
कल्ल्यानी४ उप्पर कुपाइ अब लाइ चमू अरैं१५ ॥ ३५ ॥
सुपहु सता१९४१श्रवरंग४०१३संग सज्ज्यो हद संगर ॥
दिवस किते तोपन दरार पटकी किल्लापर ॥
सनैंसनैं बढि बल्ल समीप पढि फल जय पीवँर ॥
अनी उभय२उभय२हि अनीक बटि भार वरव्वर ॥ ३६ ॥
आरुहि चल्ले ओर ओर निश्रेनिन दै नर ॥

१गढ का नाम है. संस्कृत में जिसका नाम बिदर्भ है उसका देश भाषा में बिदर हुआ है२प्रसिद्ध३रूपे और जस्त के हुक्के और कटोरे आदि ॥ ३२ ॥ ग्रीष्मकाल में ४अत्यंत ठंढे होते हैं ५ भूपति ६ युद्ध ७ सेना के ८आगे ॥ ३३ ॥ ९ पडे १० कुप्पों (पीपों) में बारूद भरकर ११ भूमि और कोट की संधि में १२ एकान्त में भयंकर अग्नि लगाई ॥ ३४ ॥१३जीतनेवाले१४युद्ध से नहीं भागने के चिन्ह रखनेवाले ॥ ३५ ॥ १५ शीघ्र १६ मोटा ॥ ३६ ॥

कपिसीसन पहुँचत कराल मचि कतल महाभर ॥
तेगन मज्झी तुट्ठितुट्ठि इत१उत२के ओसर ॥
उलटि उलटि गढतैं अचेत धर१सीस२गिरे धर ॥ ३७ ॥
तत्थहु हड्ड६१ नरेस तेग बल वेग चली बर ॥
विविध पठाये बट्ठि वट्ठि अरिलोक अनस्वर,
कतिकन वह सुमिराइ कोल टारी जम टक्कर ॥
पायो जय चोथे४ मघात कल्ल्यानी४ लै कर ॥ ३८ ॥
धीर रच्यो गढ धामिनी५ सु पंचम५ रन पद्धर ॥
अँधिरोहिनि पहिलैं अरोहि बुंदी बसुधावर ॥
हद झारी तरवारि हड्ड६१ घनमारी घँस्मर ॥
जिते जवन त्रातव्य जोध तिन्ह रक्खि दिगंतर ॥३९॥
खिल मिच्छहु खग्गन खपाइ दुग्ग सु लिय दुद्धर ॥
इम इक१हायन अंतराय हड्डा६१ सुर्जन१९०।१ हर,
पंच५ समर पुर१दुर्ग२पंच५निजबल जित्यो नर ॥
कहत गोलकुंडा६हु केक सजि छट्ठ६ संगर ॥ ४० ॥
जित्यो गढ धरनीभुजंग परअंग कटापर ॥
कतिक कहैं सुलतान संग सजि आयो संभर ॥
गढ दोलत आबाद गंजि धन खिन्न धनीधर ॥
जबहि गोलकुंडाहु जित्ति जोधन पूर्यो जर ॥ ४१ ॥
अब इम पच्छे सुररि आइ अवरंग४०पुरी अर ॥
दखल सुन्यौं बलि बिजित देस पच्छिम३छदि पक्खर ॥
राजा तँहँ अवरंग४०।३रक्खि निज पत्तन निड्डर ॥
आहव जित्यो अत्थ अप्प तँहँ पत्त आतित्वर ॥ ४२ ॥
सह्य१ सिलोच्चय१ निकट सीम मंजुल नदि१मंजर२,

१ कोट के कांगरों के समीप ॥ ३७ ॥ २नाश नहीं होनेवाले लोक (स्वर्ग) में भेजे ॥ ३८ ॥ ३ नीसरनी पर ४ बहुत खानेवाला ॥ ३९ ॥ ५ रक्षा करने के योग्य थे उनको ६वर्ष के अन्तर से ॥ ४० ॥ ७राजा ॥ ४१ ॥ ८धन ॥ ४२ ॥ ९ सह्याद्रिनामक पर्वत के समीप

जुंरत जहाँ अवमर्द उग्र सह्यो यह संमर ॥
सोदर तँहँ निज राजसिंह१९४।४सुत्तो झारि संगर ॥
पंच५सुभट इतर हु पटेत धरथंभ परे धर ॥ ४३ ॥
जिम यह छट्ठो६समर जित्ति किय कित्ति कलाकर ॥
आसेर७हु अक्खैं अनेक पुनि गो१ सुं लयो२पर ॥
दक्खिन२ धर इम बहुत दब्बि निज तंत्र नरेस्वर ॥
थिर सासक अवरंग४०।३ थप्पि मुरि अप्प महीवर ॥ ४४ ॥
तुला१ पुग्ग उज्जेनि तुल्लि करि दान प्रभाकर ॥
आयो ढ़िल्लिय घसत अभ्भ बल१ तेज२ विकस्वर ॥
हिय लायो साहेजिहान १९।२ बदि मैं अब विंज्वर ॥
इतरदेस१ गज२वाजि३अप्पि प्रतिरीझ करी पर ॥ ४५ ॥
न दये तिन द्वे२ही निकेत धाराँ१ रु मऊ२ वर ॥
माधव१९३।२ सुत मोगैं मुकुंद१९४।१ ध्रुव जो इतकी धर ॥
इतर दये सुनिये असेस प्रभु राम२०३।४ दयापर॥
इभ नव घन१ दिलदार२ अस्व पोसाक३ प्रभाकर ॥ ४६ ॥
पंचकोटि५०००००००दंम्मन प्रमान जिम अप्प्यो जेवर४ ॥
इम त्रिक३ पंचक५ क्रम दु२ओर बसु८ सेस दये वर ॥
दिस उत्तर१ त्रिक३ टुंक१ ढुंग धन मालपुग२धर ॥
कहियत तीजो३ केकरी३ सु अप्प्यो नृपको अर ॥४७॥
प्रथित परगनां सुनहु पंच५ ए दक्खिन२ अंतर ॥
हथनीगढ गढ हिंगुलाज२ केथोलि३ धंनाकर ॥
पानगढ४ रु भैंसोद५ पंच५ घल्ले बुन्दीधर ॥
ही गतभुवें उम्मेद होइ न दई सु छलीनर ॥४८॥

और मंजरा नदी की सीमा में।युद्ध॥४३॥४१॥२स्वर्ण की तुला ३पिकाश करनेवा ४ ला४ खेद रहित ॥ ४५ ॥ ५ परम दयापात्र ६ क्रांतिवाली ॥ ४६ ॥ ७ रुपयों के प्रमाणवाला ८ शीघ्र ॥ ४७ ॥ ९ प्रसिद्ध १० धन की खानि११गईहुई भूमि 'मऊ और धारां' मिलने की उम्मेद थी ॥ ४८ ॥

एहि परगनाँ बखसि अट्ठ८ सनमान्यौं संभर ॥
आमिल थप्पे टुंक१ आदि सबमैं अग्रेसर ॥
हाकिम जोलौं हिंगुलाज२ पहुँचे न समैंपर ॥
अखयसेन१ खिच्चिय१३ अराति तोलौं कपटीतर ॥४९॥
साह अमल उट्ठत सवेग घुसि बैठो ज्यौं घर ॥
सारथल२हु इत भीमसिंह३ पैठो कुहनापर ॥
गोर जु दुल्लह३ मंगरोल ३ इत बैठो अंदर ॥
चोरत धन लखि इक्क१ चोर ओरहु चोरैं अर ॥५०॥
तिम तीन३न ए थान तीन३ दब्बे बनि दुंद्दर॥
पहु संभर इत रीझ पाइ कुलहट्ट६१ दिवाकर ॥
सक दस सत्रह१७१० पाइ सिक्ख घुमडत आयो घर ॥
राजकुमर भाऊ१९५१ पुरोग वर जे वसुधावर ॥५१॥
अब रहि आपहि दु२दिन ढंग तव सज्ज्यो निड्डर ॥
मृत१ घायल२ कुल अधिप मानि बखस्यो बसु विस्तर ॥
॥
नहिं मावत सह बल नरिंद उफन्यौं धर१ अंबर ॥५२॥

॥ षट्पात् ॥

तारागढसन तोप उभय२ नरनाह उतारिय ॥
नाम धूरिधानी१ रु करक विज्जुलि२ हलकारिय ॥
लघुँहि जाइ गढहिंगुलाज बेढ्यो दल विस्तर ॥
दिन चउ४ तोप दगाइ पंथ पंचम५करि पद्धर ॥
श्रेढिनि लगाइ चढिगो सु पहु अरि वह हनि खिच्चिय१३अखय१॥
बल तस बिलोरि छसहँस बलिय६००० जो गढ१ लिय स-
ह कित्ति२ जय३ ॥५३॥

---

१ चहुवाण शत्रुशाल का सन्मान किया २ शत्रु ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ३ कठिनाई से धर्षणा किये जावें ऐसे. राजकुमार भाऊ को ४ आगे जाने से राजा ने मना किया ॥५१॥ ५ धन का विस्तार ६ बढा ॥५२॥ ७शीघ्र८निसेनी ९मथकर ॥५३॥

माधव१९३।१ निजभट जक्खमूल पति जो रन पारथ ॥
तस बंधुव नामन प्रतीत तँहँ होइ कृतारथ ॥
सह बारह१२ भट सूर भये तिलातिल गढमैं भट ॥
सुहि माधव१९३।२ तँहँ सुपहु किन्न गढपति रन उत्कट ॥
गिनि अखय सेन१घर भीमगढ२पुनि सु जाइ जित्यो प्रधन ॥
हनि तास अनुज मुहुकम२कुहँक जित्ति गढ सु थप्पिय स्वजन५४
पूराउत्त१७३।२ प्रताप१९१।१ लिख्यो सासक हिंडोलिय ॥
नाम गंग१९२।५ तस अनुज पर्यो पंचम५ जुज्झन प्रिय ॥
एह रायथल अधिप सहित एकादस११ सादिन ॥
गिर्यो भीमगढ गहत वह्नि बहु बल प्रतिवादिन ॥
तिम रायसिंह१ रट्ठोर तँहँ जुज्झि अनुज रविमल्ल जुत ॥
मह१जल२चढाइ पुर मेरता परे सहित तिथि१५भट प्रनुत ।५५।
इम हथनीगढ१आदि प्रांत खिलँ चउ४सम्हारि पहु ॥
धरि तँहँ रच्छक धीर बदलि विस्वस्त वीर बहु ॥
तदनु सारथल२तिमहि गंजि भूपतिहनि गोलन ॥
खिच्ची१३भीम३हिं खंडि रुचिर जित्यो तीजो३ रन ॥
तिम बंधु रायमल्लोत२३।१९तँहँ जथा प्रथम थप्पे सजय ॥
तिलतिल स्वबंधु तुट्ट्यो सु तत्र भट हरदाउत२४।२०वीतभय ।५६।

॥ दोहा ॥

रस गुन३६ भट जुत रन रह्यो, खेत सारथल३ ख्यात ॥
पुर दुन्नीसं प्रयाग१९४।२को, यह चोथो४अनुजात ॥ ५७ ॥
सुपहु जित्ति इम सारथल३, रायमल्ल१९१।३ कुल रक्खि ॥
मंगरोल४गोरन मिलन, आयो जुज्झहु अक्खि ॥ ५८ ॥
भक्खरोतँ सीसोद भट, साहबसिंह सनाम ॥

---

१ युद्ध में अर्जुन २ तीव्र ३ युद्ध ४ छली ॥ ५४ ॥ ५ सवारों से ॥ ५५ ॥ ६ विशेष स्तुति योग्य ॥ ५६ ॥ ७ बाकी के ८ भरोसा के ॥ ५६ ॥ ९ दूंणी नामक आगर का पति १० छोटा भाई ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ११ भाकरोत वंश का क्षत्रिय

तास कुमर दुव२वीर तँहँ, कोलि करि आये काम ॥ ५९ ॥
सुनहु राम२०३।४प्रभु नाम सन, जेठो१कुमर जवान१ ॥
अनुज२कृष्ण२द्वै२ही अडर, थिर सोये रनथान ॥ ६० ॥
सादी तेरह१३ सत्थके, सोये कुमरन संग ॥
दुल्लहसाहि४ सु गोर दलि, जिस्यो भूप सु जंग ॥ ६१ ॥
जई परगनाँ तासजुत, जित्ति चउम४रन जोहु ॥
मंगरोल४अप्यो महिप, साहबसिंहहि सोहु ॥ ६२ ॥
सिवसत्रह१७११ सम लगत सक, पहु इम इक्क१प्रयान ॥
ग्रामक जुत चउ४जित्ति गढ, आयो पुर चहुवान ॥ ६३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे दक्षिणदिक्पञ्चदुर्गविजयिदिल्ल्यागतशत्रुशल्यस्य शाहजहांयवनेन्द्रान्नूतनप्रान्तसहितसत्कृतिप्रापणं १, नव-लब्धप्रान्तविजयानन्तरशत्रुशल्यबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥ आदित एकविंशाधिकद्विशततमः ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अवलग दिल्लिय आदरयो, जो पति साहजिहान३९।२ ॥
पै अब सुनिये राम२०३।४प्रभु, अहो समय अवसान ॥ १ ॥
तीजे३सुत अवरंग४०।३तँहँ, अति मदमति वद आइ ॥
जनकैं कीलि लिय पट्ट जिम, जोर प्रभुत्व जमाइ ॥ २ ॥

---

१ युद्ध करके ॥ ५९ ॥ ६० ॥ २ सवार ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में दक्षिण में पांच गढ विजय करके शत्रुशाल का दिल्ली जाकर बादशाह शाहजहां से नवीन परगने और सत्कार पाना १ नये पाये हुए परगनों को विजय करके शत्रुशाल का पीछा बुंदी आने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२१ मयूख हुए ॥

३ अन्त समय ॥ १ ॥ ४ पिता को कैद करके ॥ २ ॥ ३ ॥

जिम जेठे१ दारा४०।१हिं दलि, अरु सुजा४०।२हिं मरवाइ ॥
गही अनुज मुराद४०।४ गहि, पाई अवसर पाइ ॥ ३ ॥
सो कहियत बारहु श्रवन, सज्जन सहु नरनाह ॥
जिहिँ रन प्रभुकुल सूल जिम, लहिय सता१९४।१दिंवलाह ॥४॥

प्रायो नष्टदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ लघरखागद्यम् ॥

जिण समय दिल्लीस साहजिहान३९।२रै मूत्रकृच्छ्रनामक महातंक रो प्रकोप थियो ॥

जिकरी पीड़ारै परतंत्र होइ आपरा अधिकाररै ऊपर बडापुत्र दारा४०।१नूँ रखादियो ॥

जिकी बात प्राचीश्रा अधीस दूजा२ कुमार सुजासाह४०।१ रा उरमैं न माई ॥

अर अनामय पूछणरो व्याजकरि पिता१नूँ बडा१ भाई२ समेत मारि साहहोणरो संकल्प करि दिल्लीमाथै आपरी चतुरंग चमूचलाई।

तिको मंत्र उपह्वरं भी चारलोकाँरा चतुरपणाँथी चौड़ै आयो थको पहलीहीं इसो घाट घड़ता तीजा३साहजादा औरंगजेब४०।३ रै सहायक बणियो ॥

जिकण महापातक माथै लोर आधी पातसाहीरो लोभ दे प्रतीचीश्रा पति आपरा अनुज मुरादसाह४०।४नूँ मिलाइ पाउसरी कादंबिनीरै अनुकार आपरो अनीक तणियो ॥

अठी दूजै२साहजादै सुजासाह४०।२भी पहलीरी सूचनारै समान दिल्लीरै अभिमुख प्रयाण कीधो ॥

जैं बुंदीहूँ हाडोतीरै अधीस सत्रुसाल१९४।१भी वचावणरो वि-

---

१ सभासदों सहित २ स्वर्ग का लाभ ३ महाभयंकर रोग का ४ पूर्व दिशा का पति ५ आराम पूछने का मिस करके ॥ ५ ॥ ६ एकांत की सलाह ७ हलकारों के ८ पश्चिम दिशा का हाकिम ९ वर्षा की मेघमाला के १० सदृश ११ सेना फैलाई १२ सन्मुख १३ गमन किया ॥ ६ ॥

चारि आपरा पंचम अनुज मुहुकमसिंह१९४नूँ हित पत्रलिखाइ इ-
णारीति दीधो ॥ ६ ॥

अब सुजासाह४०।२रै समीप रहियाँ भाई तू बुन्दीरी बसुधारो
विभाग परलोकमैं पावसी ॥

अर अबही प्राचीश्रा अधीसकपटी दूजा२ साहजादानूँ छोडि
आयाँ म्हारा आसयरै अनुहार पिताराघरमैं खटावसी ॥

जिको पत्र पढताँही हड्डा६१धिराजरै पंचम अनुज मुहुकमसिंह
१९४।५आपरा अधीस अग्रजरा आदेसरै अनुसार अब भावीरा भ-
रोसामैं भ्रम देखि प्राचीरापति सुजासाह४०।२नूँ तजि आपरे देस
आइ अनुगतभाव दिखाइ संभरसिरोमणि सत्रुसाल१९४।१ रा प-
गाँमैं प्रणाम कीधो ॥

जरैं राजा रत्न१८२।१रा बडा कुमार गोपीनाथ१९३।१रै पट्टपु-
त्र नरेस सत्रुसाल१९४।१भी आपरा अनुजनूँ प्रामता समेत पहली-
रा दुर्ग्गपुररो प्रतिनिधि इणारा अग्रज इंद्रसाल५६४।२रै अंतिकै
आलोचि करउर ढंगदीधो ॥७॥

अठी दूजा२साहजादानूँ आपरैऊपर चलायो जाणि तिकणानूँ पा-
छो फेरणरैकाज कुमार दारासाह४०।१रा कुमार सलेमसाह४१।१
बिदा कियो ॥

तिकणरैसाथ कछवाह जयसिंह१ गोड अनिरुद्धसिंह२ नबाब
दलेलखान३तीनही मुख्य सामंत देर आपरो उद्धत अनीक दियो ॥

तीन३ही सामंताँ सलेम४१।१रैसाथ साम्हैं जाइ बाणारसी रे समी-
प कुमारारा काकानूँ कोरडो लोह चखायो ॥

जिणाथी पहला१ही प्रघातमैं परम्मुख होइ दूजो२कुमार दूजा२
रो प्रहार भी न खायो ॥ ८ ॥

---

१ आज्ञा २ सेवक भाव ३ समीप ॥ ७ ॥ ४ अनम्र अथवा चंचल ५ सेना ६ निकेवल शस्त्र ७ युद्ध में ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

साह सुजा४०१२ गंजे समर, सामंताँ३ र सलेम४११ ॥
मदविण पाछो मेल्हियो, जिम्हग१ रंदविण२ जेम ॥ ९ ॥
पिता१ पितामह२ थी प्रख्यात, लिखि सलेम४११ जयलाह ॥
कलह जई सतकारिया, पटा दिवाइ सिपाह ॥ १० ॥
पंचलाख५००००० मुद्रा पटा, लै जयसिंघ१दलेल२ ॥
लीधो गौड़ दुलाख२००००० लगें, खग्गाँरण जय खेल ॥ ११ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणरीति आपरा ओर भी विसेसवीराँनूँ वधाइ काकारा द्वाररो कँवाड़ होइ सेनासमेत सलेम४११ उठेंही आडो रहियो ॥

अर काकैभी पुळिपार होइ प्राची४रो परिकर इकट्ठोकरि फेर भी दिल्लीपर चलावण दृढभाव गहियो ॥

इणवातरैं हाके पहलीही सिताराश१ बीजापुर२ भागनगर३प्रमुख दक्खिणरा२ अधीसाँनूँ विजयरा फळमैं विभागी वणाइ दक्खिण २ पच्छिम ३ रा अधीस दो२ ही साहजादा मिळिया तिके दूजा२ अग्रजरै अनुकाँर साँचै संकल्प दिल्लीरा दायाद६ होइ साम्हाँ चलाया॥

अर दिल्लीसभी घणाँसाहसथी आपरा जावणमैं आडो होइ चलायो इसड़ा वडा१ कुमार दारा४०१ नूँ साम्हैं पूगणरो निदेस देर विदाकीधो जनरे तापी१ नूँ लाँघिनर्मदा२ नदीरै नजीक आया ॥१२॥

साह कहियो म्हाँरा आनँामयरो उद्देस करि आवै तिकाँनूँ साम्हैं जाइ हूँही समुझाइ पाछा मोड़िआऊँ ॥

तिकोभी तातरो निदेस सनमानि दारा४०१ कहियो पितारा पधारणमैं हूँभी पाटरोपुत्र१ प्रतिष्ठा नूँ पाऊँ ॥

जैरैं पातसाह दारा४०१रै साथ जोधपुररो अधीस राठोड़ जसवंत१चयारि४ही अनुजाँसहित कोटारोअधीस हाडा६१मुकुंद१९४१२

---

१ सर्प २ विना दांतवाला ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ३ भागकर ४ पूर्व दिशा की पर गह ५ सदृश ६ पंदायत ॥ १२ ॥ ७ आराम पूछने का ८ पिता की आज्ञा का ९ जब

मालवदेसरा पच्छिम ३ प्रांतरो पुहवीसें रतळाम्भनगररो वसा-
वणहार राठोड़ रत्नसिंह३ बिस्वासघातकरि आपरो भामें अमरेस
रा चरणाँरो छेदणहार गौड़ नरेस अर्जुनसिंह४।।राणाउतराजा राय-
सिंह५ नवाब कासिमखान१ करीमखान २ प्रमुखँ आपरा मुख्य
सामंत सहायक करि वडा वॅरूथरे साथ जूझणरा साहसी कुमार
दारा४०।१ साहनूँ ओरंग४०।३ मुराद ४०।४ रै साम्हैं विदा कीधो ॥
अर इणरा कुमार सलेम४१।१ नूँ पहलीसूँत्रिया सहायकाँसमेत
प्राची१ रै पंथ सुजासाह४०।२ आडोरहण दीधो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

अर्जुन१ रयण२ मुकुंद३ए, सोवण संगर सीम ॥
क्रमिया ए राखण कँवर, कासिमखान१ करीम२ ॥ १४ ॥
रायसीह१ जसवंत२ रण, जावैं तजिकढिँजाण ॥
ले दारा४०।१ क्रमिया लॅगस, फोजाँ सॅगस उफाण ॥ १५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी पातसाहीपर जादा भार पड़तोजाणि साहनैं कोटेसरे बाराँ
१ राखि मऊ२ उतारि तिकणरैएवज माधाणी२६।२२ मुकुंद १९४।१
नूँ ओर परगणां देर दारा४१।१रै साथ जावणरो हुकम दियो ॥
अब बुन्दीसरो बुलावो विचारि मऊ२रो फरमाण लिखाइ पह-
लीही बुन्दी भेजि हाडाँ६१रा ईसं सता१९४।१नूँ बखसीस कियो॥
नरेसभी फरमाण आताँही जाइ मऊ२ गरदाइ झगडो जमाइ
कोटेसरा राखिया मऊ२रा फोजदार खीची१३नगराजनूँ उचित आ-
तंकं देर बारैं काढियो ॥

अर एकादस११ अब्दरा गया मऊ२पुरमैं परगणाँसहित पाछो
अमल जमाइ प्रतीपँ दीठो तिको ही गहियो१ र बाढियो२ ॥१६॥

१भूपति २ बहिनोई अमरसिंह का पैर काटनेवाला ३ आदि ४ सेना के साथ
५और ॥ १३ ॥ ६ चले ॥ १४ ॥ ७ निकल जाना ८ लम्बे चले ९ क्रोध सहित
१० सूर्य ११ भय १२ विरुद्ध ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

सक चउदह सत्तह १७१४समा, लागाँ इम जय लेर ॥
नाटि रुठाँ लीधी मऊर, दळाँ पराभव देर ॥१७॥
कीधी थान विनायकौ, राडि वळाँ नग्राज ॥
सो झीर्ची१३ हरियो सतै१९१४१, हरियो तीतरवाज॥१८॥

॥ सन्तरगणगद्यम् ॥

पहली अकबर३७१ अवसांख्समयरै समीप रीछवारा राठोड़ नृप भोज१३१४२रै पगाँ पड़िया तिकै अब मऊ१ वाराँ२ छूटाँकेड़ै पाछा प्रतीप थिया ॥

जिकाँसाथै हाडैनरेस मऊरथी राजकुमार भाऊ१९५१ भेजियो जिकण जाताँही राठोड़ द्रहवट्टाँकरि काढिदिया ॥

इणरीति रीछवा१ वकाणी२सूधीजनकरी आण जमाइ कुमार भावसिंघ१९५१ पाछो मऊ आयो ॥

जठै आपरो अकंटक अमल जमाइ नरेसभी बुन्दी आइ विजयरो गुजस १ सत्रवाँ २ समेत दिसादिसा हुलायो ॥ १९ ॥

अठी साहरै समाधी हुवाँकेड़ै दारा४०१साहनैं अधिकाररो कामभी छोडिदीधो तोभी तीन३ही भायाँगे तखत साथै चलावणाँ जाणि प्राची१में पुत्रनूँ भेजि अँवाची२कूँ आवता दो२ही पुत्रानूँ समुझावण सान्हैं जावता पातसाहनूँ पेलि तिणरो वडो१पुत्र साहसरै सहाय पहली कहिया कटकरै साथ दरकूँचाँ दक्खिण७रै अँभिमुख चलायो ॥

तिकण अँवंती पुरीरै परै पंच५कोसरै मराण पुगिवीराँगी वासठिहजार६२००० सेनारै साथ मेळ पायो ॥

जठै दो२ही फौजाँरै रूजही दिवसकाळैकोपतो पाँराघोरघमसाणराचियो

---

१ पराजय ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ शान्त समय ३ चिन्ह ४ पश्चात् ५ अमाया ॥१९॥ ६ आराम ७ पूर्व दिशा में ८ दक्षिण ९ मना करके १० सन्मुख ११ उज्जैन १२ युद्ध हुआ

अर बीचबीच बैंडीरा बैंहेंड़ा बजूबेग बानैत बीरांरै सस्त्रांरो सं-
पात माचियो ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

असीसहँस८०००० सेना अठी१, सहँस उठी२ बासट्ठि६२००० ॥
भड़ां१ ओपियाँ भीरवां२, नीर गया मुख नट्ठि ॥२१॥
जिण दक्खिण२धररो जरै, अरि हूँतो अवरंग४०१३ ॥
सोभी लै अब सीरमैं, जुड़ण चलायो जंग ॥२२॥
त्रय३ भीडू दक्खिण२ तणा, बदिया पहलै बाद ॥
धुर चोथो४ पच्छिमधणी, मेळे अनुज मुराद४०१४ ॥२३॥
प्रथम गजर तोपां पड़े, गोळा बजर गुड़ाण ॥
मचियो जिणदिन माझियां, घोर प्रळै घमसाण ॥ २४ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय दो२ही फोजांरा हिलोळा समुद्रैं समाण प्रमाणमैं आया॥

अर तोपांरी गाजहूं सेसरासीसां१ समेत मकराकर मेखळा मही२ रै मचोळा लगाया ॥

दिकपाळां१ रा गाढसमेत दिग्गजांरा मद छूटि आठूंही अनेकपँ चकितपणांका चीकार करणलागा ॥

अर रज १ धूम २ रा बितानमैं मार्तंडरा मयूखँ अंतर्धानविद्यारो अभ्यास धरणलागा ॥ २५ ॥

दो२ ही तरफ गोळांरी गजरहूं ओट आवै जिताही घोडां१सिपाहां२ समेत हाथियां३ रा गोळँ उडणलागा ॥

अर इळां१ आकासरैर हारावळीरूप बिघ्नकारी डूँगरांरा डोहैंणहार बिघ्नबिहीण परिरंभैं जुड़णलागा ॥

---

१ पागल स्त्री के २ कलश के समान ३ बानाबंध (युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले ४ प्रहार ॥ २० ॥ ५ कायरों का ॥ २१ ॥२२॥२३॥२४॥ ६ समुद्र की मेखलावाली ७ दिग्गज ८ सूर्य के ९ किरण छिपने लगे ॥ २५ ॥१० समूह ११ भूमि १२ हार की पंक्ति के सदृश १३ मथनेवाले १४ शरीर से शरीर मिलाकर

जिणसमैं महामारीरै मंडाण नरांगै नास देखि कोईक कच्चा-मंत्ररादेणहार आइवेश अमेध सालंनर लूचिया घोड़ै चढणरी हूंस धारि दारासाह४०।१ हाथीरूप तखतहूं हेठो उतरियो ॥

जरैं पैलाँरा प्रबळ प्रहारहूं पड़ियो१ कै पुळियार हुवो २ जाणि साहरी सेनारा सिपाहां मतेमतै मार्गलागणरो आरंभ करियो ।२६।

दिल्लीरा दळमैं दरोळ देखतांही साहजादा२री सेना बडेजोर बं-धीथकी आगैं आइ उछाहरै उफाण महाप्रळै मचायो ॥

जठैघणाँरा कचरघाणमैं आपरा अनीकरा पदूद्रवरा प्रवाहसैं प-ड़ियो नवाब कासिमखान १ समेत कुमार दारासाह ४०।१।२ भी ठहरण नपायो ॥

जठैतो बडावडा अमीरांग आपाणा प्रहारपहलीहा पड़तादेखि राठोड़राजा जसवंतसिंह१ राणावतराजा रायसिंह२ प्रमुख किता ही आर्य१ जवनां२रा ओघ दारा४०।१ रो साथ छोडि दाँर२ रो साथ करण आपआपरै अगार चालिया ॥

अर च्यारि४ही भायांसमेत माधाणी२६।२२ हाडो६१ मुकुंदसिं-ह १९४।१।१ गोड़अर्जुनसिंघ२ राठोड़रत्नसिंह३जिसड़ा जोधार का-लीग कलस रणागळियार होइ हाथियांरै माथे हाथकरता साथि-यांरै सूरतांरो साणलगावता साहजादां२रे समीप हालिया ॥ २७ ॥

घणां घोड़ां१ भड़ां२रो घाणकाढि बूंदी१ कोटा२ दो२ही ऊज-ळादिखाइ हाडां६१रा वंसनूँ बीजाँसैं बधतो बताइ लाजरूप लंगर रा खैंचिया पैलांरा प्रतिमल्ल मर्दांलागा मईंद माधाणी२६।२२ मुकुं-दसिंघ१९४।१ मोहणसिंह१९४।२ कन्हीराम१९४।३ जूझारसिंघ १९४।४ च्यारि४ही भाई पैलांनूँ जयसंसय जणाइ खागांरा खेल्हसैं खंडविहंड होइ विमाणांबैठा नारियांरै साथ गलवांहँ कीधां सुरलो-

---

१ युद्ध के २ अपवित्र ३भागा ॥ २६ ॥ ४ उपद्रव (बखेड़ा)५भागने के६आदि७ स्त्री का साथ करने को ८ खुरशाण ॥ २७ ॥ ९ सिंह

क पूगा जिकाँनूं इंद्रादिक *अमरा बधाइ आघालीधा ॥
तिकाँ सुधारूप सिंधुरा छाकियाँ नंदनबनरे निवास सुधर्मा स-
भामैं बैठि सुरारैसाथ विलास कीधा ॥
अठी पाँचमाँ५भाई किसोरसिंघ१९४।५ केही हाथियाँनूं हठाइ
बरबीर बैरियाँनूं अग्रजाँ१रा तथा आप२रा साथी बणाइ धरारो
कँवाड़ होंण करवाळ३रूप क्रकचाँ२मैं अंगरा फाचरा उडाइ सेंदाँ
१रा सालाँ१करि पाछो जुड़ाइ खेतपड़ियो ॥
अर आपरी आऊरेवळ ऊबरिया अंगनूँ कँवाड़पणाँमैं गाढाक-
रणा कलंब१रूप काँटाँ२मैं जड़ियो ॥ २८ ॥
गौड़राजा अर्जुनसिंघ२ बैरियाँरा थाट विरोळि बैंडा गजाँरे चा-
चर चंद्रहास चलाइ सैंकड़ाँ सूराँनूँ साथी करि महारुद्ररी माळामैं
आपरा मुंडरो मेरु चढाइ रुंडथकाँ भी धारामैं तिलतिल पलचराँ
री पाँती पूंजळन राखि इष्टलोक पूगियो ॥
इणरीति रतळामरैराजा राठोड़ रत्नसिंह३ सारथी१ समेत तर-
णि२नूँ तमासै लगाइ केही गजदंतां१सहित सुंडादंड२ सूनाँ करि
ईठा दायँणाँरै सोणित भद्रकाळीरो खप्पर भराइ बीर बेताळाँनूँ
गूदरो गाळा जिमाइ बिनाँमाथे भी साहजादाँ१नूँ संकाइ लोहछ-
क घूमता गजाँरी घड़ामैं सूरसज्जासूतै इच्छारै अनुसार परलोक
लियो ॥
उठी हाडाँ६१रा अधिराज नरेस सत्रुसाल१९४१रो तीजो३ कु-
मार भगवंतसिंघ१९४।३ ओरंग४०।३ आगैं केही पैलांपटैताँनूँ पो-
ढाइ प्रेत१ गीधा२दिकपलचराँनूँ धपाइ चंडीरा चसकामैं आपरो अ-
सृ३ आसव पूरि च्यारि४ तरवारि लागाँ जीवताही खेत रहियो ॥

---

* देवता † मद्य १ देव सभा २ खड्ग रूपी ३ करोतों में ४ काष्ठ ॥ २८ ॥ ५ उ-
डाकर ६ खड्ग ७ मांस भक्षण करनेवालों की ८ शरीर ९ सूर्य को १० शत्रुओं
के ११ मज्जा १२ रक्त रूपी मद्य

अर दो२ही तरफ हजाराँही सिपाह मरिया१ तथा घायल२ करिया तिकाँमैं दिल्लीरा दळरे भागवे अठीरो घायल वंधुपणाश दावमैं पड़ियो थको दूजे२दिन एक१भी जीवतो न लहियो ॥२९॥

॥ दोहा ॥

ऊतरियो गजतूँ अठै, दारा४०।१ चूके दाव ॥
तदि ऊतरियो तखतसूँ, भोळो स्वमति भ्रमाव ॥३०॥
गज तजताँ पुळिया गिणे, स्वामी१ कासिम२ संग ॥
दळ भग्गो दिल्लीसरो, जाणे परवळ जंग ॥३१॥
भागंताँ दलभाजिया, दारा१ कासिम२ दो२हि ॥
पुळिया टाँडा१ जोधपुर२, आदि घणाँ भड़ ओहि ॥३२॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जठै इणरीति हाडाँ६१।१ गोड़ाँ२ राठोड़ाँ३ आप आपरा लूण उजाळिया ॥
अर हजाराँ वैरियाँनूँ वसुधामाथै विछाइ ढालाँ समेत केही गज राज ढाळिया ॥
सातूँ७ही सामंत खास बाड़ानूँ तोड़ि गजाँरा गोळमैं जावता जकिया ॥
अर ओरभी सीसोदिया राउत जगरूप८ जिसा केही अछूती अणीरा वींद उठैही पूगताँ पड़िया लोह छकिया ॥३३॥
वीजाँरा वरूथमैं जिकाँरा संबंधी जाणिया तिकेतो दिल्लीरा दळरा घायल जावता रहिया ॥
ओर हजाराँही खेत सोधणारे समय सचेत१ अचेत२ प्राणधारी पाया तिके सर्वही ओरंग४०।३रा आदेशरूप अनळमैं दाहिया ॥

॥२९॥३०॥१ भागा हुआ जानकर॥३१॥२ आधर्थ॥३२॥३ निशानों समेत४गिरे*॥३३॥

*इस युद्ध में शाहपुरा का राजा शीसोदिया सुजाणसिंह पांच पुत्रों सहित दाराशिकोह के पक्ष में बड़ी वीरता के साथ काम आया था परन्तु विदित होता है कि ग्रन्थकर्ता को यह इतिहास नहीं मिला.

आपरा घायलांरा जीवणरा जतन कराइ दक्खिणरा सहायसहित दो२ही साहजादा अवंतीरै उपकंठ केही मुकाम किया ॥

अर आपरा१ भड़ांनूँ लाखांरी रीझ देर केही परायां२नूँ पलटावणरा कुकाम किया ॥ ३४ ॥

इणरीति ओरंग४०।३ रा. भागरैं जोर सोरंगसाहरा भड़ाँ तजियो ॥

अर तिकोभी यों विसाळापुरीरो कंजियो जीति आगरामाथै आवणरा आरंभमैं सहियो ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

उज्जैणी रण जीति इम, वीराँ मन विकसाइ ॥
उभैं२ भ्रात रहिया उठै, छक्रऊपर धक्र छाइ ॥३६॥
सक चउदह सत्रह १७१४ समै, उज्जैणी रण एह ॥
हुवो हजाराँ मरण हद, मचि असिधाराँ मेह ॥३७॥

सचरणगद्यम् ॥

अठी नबाब कासिमखान१ दारासाह४०।२।२रै साथ दरक्कूँचाँ लाखैरीरै देरै कढि आगरे आयो ॥

अर साहरी हजूर आपभी बणियो उँदंत सारोही सुणायो ॥

जिके वज्रपातजिसड़ा वचन सुणताँहि पातसाहरा मनमैं भी पातसाही करणरी आधी१ आस रही ॥

जठै दारा४०।२नूँ उपालंभदेर पछतावारै प्रमाण सोकरा समुद्रमैं मग्न मुगलेस इणरीति कही ॥३८॥

॥ दोहा ॥

पूत घणाँ मैं पालियो, जूझण तूँ मति जाइ ॥
हूँ मोड़े[12] आऊँ हमैं, सुत दो२हीं समुझाइ ॥३९॥

---

१ उज्जैन के समीप ॥ ३४ ॥ उज्जैन का २ युद्ध ३ सफा ॥ ३५ ॥ ४ उत्साह ५ क्रोध ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६ मार्ग ७ वृत्तान्त ८ वज्र पड़े ९ जैसा १० ओलम्भा ॥३८॥ ११ मना किया १२ पीछा फेरकर ॥ ३९ ॥

मूरख कथन न मानियो, लसियो मूँछ लजाइ ॥
तानूं रंव न दियो तखत, दो२नूँ रखत दिखाइ ॥ ४० ॥
दारा४०।१ चुप रहिओ दुमन, सिर नमाइ अतिसोच ॥
सतो१९४।१ बुलावण साहरै, उरथायो ओलोच ॥ ४१ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

साहजादा२तो पाउसकाळ माळवमैंही कीधो ॥
तिकाँ समासरै अंतर थोहड़ा थोहड़ा कूच करि आपआपराअ-
नीकाँनूँ आगे आवणरो आदेसँ दीधो ॥
दिल्लीसभी राजा१ नवाव२ रहिया तिकाँनूँ बुलावणरा फरमा-
णा दिया ॥
अर वडा सतकाररैं साथ बुलाइ साराही आगरे एकत्र किया

॥ दोहा ॥

बुन्दीरा फरमाणविच, इम लखियो आदाव ॥
भूप सता१९४।१ थाँरै भुजाँ, अब म्हाँरै घर आँव ॥ ४३ ॥
मुँखाँ किता दीधी मऊ१, इण फरमाण अधीन ॥
पंच५ मास अंतर पड़े, वेळा अधिक बधी न ॥ ४४ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

नरेस कहियो पहली मऊ१रो फरमाण आयो जरैंही म्हेतो जा-
णिलीधी अब साहरै म्हारामाथसूं काम पड़ियो ॥
अर इणसंकटसूं भी विसेस अब किसो काम रहियो जिणरी
रीझमाथै वळे वाराँरो देवो तेवँड़ियो ॥
दक्खिणमैं साह१रै तथा इणरा तीजा३ कुपुत्र२रै साथ केही जु-
द्ध जीति केही पुर१ दुर्ग२ दावि पचहत्तरिलाख७५०००००रो मुल-

१ शोभायमान हुआ २ खुदा ने ॥ ४० ॥ ३ हुआ ४ विचार ॥ ४१ ॥ ५ वर्षा ऋतु के संक्षेप होने से पीछे अर्थात् वर्षा मिटे पीछे ६ सेनाओं को ७ आज्ञा ८ इकट्ठे किये ॥ ४२ ॥ ९ बडप्पन १० शोभा ॥ ४३ ॥ ११ कितने ही कहते हैं १२ फर्मान के साथ १३ समय ॥ ४४ ॥ १४ विचारा

क दिल्ली हेठै पटकियो ॥
तोभी छोटा परगणाँ ओरओरही दीधा पणबिनाअपराध मऊ१
बाराँ२ लीधा तिकाँरा पाछादेणरो संकोचभी न अटकियो ॥ ४४ ॥
अब आपरैऊपरमहासंकट मानि एक१दांधो तो परमेश्वर दूजो
२भी देसीही परंतु आपदामैं दिल्लीसभी इसो व्याकुल थियो ॥
जिकणबिनाही अरज पूगियाँपहली मऊ१रो परगणाँ लिखाइ
दियो ॥
इणआदेसरे अनंतर ओर किल्लादार भेजि तिकणरै भुजाँ हिं-
गुलाजगढरो भार तुलायो ॥
अर मोकळ१८८।४ वंसरा अवंतंस भाई माधोदास१९३।१नूँ ब-
डेवेग खासरुक्को दे र हजूर बुलायो ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

तिम निजकर कीधो तिलक, भाऊ१९५।१ अंगज भाल ॥
पहु दीधो भूपाळपद, साह सबळ अरिसाल१९४।१ ॥ ४६ ॥
कर जोड़े भाऊ१९५।१ कँवर, नटियो साच निराट ॥
साहे हठ तोभी सतै१९४।१, पाणो धरियो पाट ॥ ४७ ॥
सकळ राजधानी सरम, भार उदार भळाइ ॥
कहियो कुळ सरणी कँवर, चलणाँ नम न चलाइ ॥ ४८ ॥
सुर्जन१९०।१ परिक्कर सेस सह, देखो नयण दयाल ॥
लेताजस१ अपजस२ लहै, चूकै जे कुळचाल ॥४९॥
सिसु गंगा१९५।१ थारी स्वर्सा, एक१ तजे आमेर ॥
क्रम ईखे देणी कँवर, बर१ बय२ कुळ३ घर४ बैर५ ॥५०॥
राजा दै इम राजरो, भाऊ१९५।१रै सिर भार ॥
मन निंहचै धरियो मरण, करणा घणां उपकार ॥ ५१ ॥

---

१ मुकुट ॥ ४५ ॥ २ पुत्र के ललाट में ॥४६॥ ३ अत्यन्त ४ ग्रहण करके ५ बला-
त्कार (जबर्दस्ती) ॥ ४७ ॥ ६ कुल के मार्ग में ७ शत्रुओं से नमकर नहीं चलना
॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ८ बहिन ॥ ५० ॥ ५१ ॥

वय बीरां सह बोळिया, केसर कुंड दुकूळ ॥
वेळे तरुण भड़ बरजिया, मंडे साहस मूळ ॥५२॥
कहियो वय थाँरो कढै, सम म्हाँरो तंदि सूर ॥
कुळ चील्हां ऊजळ करो, जाणो मरण जरूर ॥५३॥
क्रम चोथो४ भारत१९५१४ कँवर, नटताँ रुकियो नीठि ॥
मुँखियो भारत नाम मम, दीधो किण गुण दीठि ॥५४॥
माइ१ जनक२ भ्राता३ मिळण, अतरा अंतर अंत ॥
अतिजर्व तीजो३ आवियो, भूप कँवर भगवंत१९५१३ ॥५५॥
सीखकरे अवरंगसूं, इणखिण बुन्दी आइ ॥
पयलग्गो प्रणमे पितर२, मिळियो इतर मनाइ ॥५६॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहांसूनुचतुष्कस्य मिथोविरोधवृद्धिहेतुतातबन्दीकरणपूर्वकदिल्लीपट्टाधिगमाभिषेणनकुशलप्रश्नव्याजदिल्लीगमन१, वाराणस्यन्तिकसलीमशाहाहवयवनेन्द्रापत्यसुजाप्रद्रवण२, दक्षिणदेशाद्दिल्ल्यागच्छदौरङ्गजेबमुरादवक्साभ्योज्जयिनीसमीपयुद्धदाराशिकोहप्रपलायन३, यवनेन्द्रपुनर्दत्तमऊप्रान्ताधिकारसमासादनानन्तरपञ्चत्वाभिलाषुकदिल्लीयियासुबुन्दीन्द्रावशत्रुशल्यस्य स्वसूनुभावसिंहनृपीकरणं दशमो मयूखः ॥१०॥

---

१ डुबोये २ वस्त्र ३ फिर ४ हठ । ५२ ॥ ५ तब ६ मार्ग ॥ ५३ ॥ ७ कहा ॥ ५४ ॥ ८ बहुत वेग से ॥ ५५ ॥ ९ इस समय १० पिता ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां के चारों पुत्रों में विरोध बढ़कर पिता को कैद करके दिल्ली का पाट लेने के अभिप्राय से आराम पूंछने के मिस दिल्ली जाना १ काशी के समीप सलीमशाह के युद्ध में शाहजादा सूजा का भागना २ दक्षिण से दिल्ली आते हुए औरंगजेब और मुरादबख्स से उज्जैन के समीप युद्ध करके दाराशिकोह का भागना ३ बादशाह के पीछे दिये हुए मऊ के परगने में अमल करके मरने के अभिप्राय से दिल्ली जाने के विचार से बुंदी के राव शत्रुशाल का अपने पुत्र भाऊ को राजा बनाने का दशवां

आदितो द्वाविंशत्युत्तरद्विशततमः ॥२२२॥
प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥

समवयरा सुहड़ाँ सहित, बोळे कुंकुमवास१ ॥
पग रगालंगर पहरियार, भूखगा३ उडुंगगा भास ॥१॥
केसकळप तजियो सकळ, भजियो कजियो भूप ॥
वजियो इगा१ गुण रूवय, सजियो तरुगा सरूप ॥ ॥ २ ॥
कहियो पहु कोटेसरा, सुत चउ४ लग्गा सार ॥
ऊबरियो पंचम५ अनड़, भरियो जय१ जस२ भार ॥ ३ ॥
अब दूरगां रगा आपगां, पड़ियाँ सुजस प्रकास ॥
प्रकटै बूंदी पट्ट पगा, न कटै नास बिनास ॥ ४ ॥
॥ षट्पात् ॥

सणंणंकै खुरसाग १ खागधारां २ खणणंकै ॥
रणणंकै रगाराग३ झिलम४ पाखर ५ झणणंकै ॥

---

१० मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२२ मयूख हुए ॥

अपनी बराबर ऊमरवाले १ सुभटों सहित २ केसर में वस्त्र २ डुबोये और पैरों में युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने और ४ तारों की भांति चमकते हुए (जड़ाऊ) भूषण पहिने ॥ १ ॥ ५ केशों में रंग करना बिलकुल छोड़दिया 'क्योंकि मरते समय शरीर से नील के रंग का स्पर्श होना आर्य धर्म के विरुद्ध है' और उस राजा शत्रुशाल ने ६ युद्ध का सेवन किया और इस (वीरता के) गुण से विदित होकर तरुण पुरुष के समान सजा ॥ २ ॥ राजा शत्रुशाल ने कहा कि कोटा के पति के चार पुत्र ७ तलवारों लगे अर्थात् अभी काम आये हैं और पांचवां पुत्र ९ अनम्र होकर जय और यश के भार से भराहुआ ८ बचा है ॥ ३ ॥ इसकारण अब कोटेवालों से अपने वीर युद्ध में९ हुगुने मारेजावें तब यश का प्रकाश होकर बुंदी का पाटवी पन प्रकट होगा और इसप्रकार विनाश होने से ही नासिका नहीं कटेगी नहीं तो नकटा पन है ॥ ४ ॥ १० यह शब्द सान के शब्द का अनुकरण है इसीप्रकार खणणंक रणणंक आदि प्रत्येक पदार्थ के भिन्न भिन्न अनुकरण हैं ११ तलवारों की धारा १२ टोप

चणाणांके भड़ चिहुरं६ छीजि कातर छणाणांकै ॥
टणाणांकै टामंक७ भ्रमर८ फौजां भणाणांकै ॥
ठणाणांक घंट९ गैदळां ठहे गणाणांकै पळचर१० गयणां ॥
हणाणांक हीस हैगाम हय११जय कणाणांकै वंदिजणा१२ ॥५॥
गयराजां१ गुडे ग्रहणा रहणा पाखर हयराजां२ ॥
पांजाँ छैलि दळ३ मेंघणा सघणा बरसाल समाजाँ ॥
तॉव थैलाजाँ४ तंग्स संरस रणा चाव सैलाजाँ५ ॥
वर्णं न रौजाँ वहिरै गाहिरै तोपाँ घणा गाजाँ६ ॥
दूजाँ दुरूह काजाँ करणा वाजाँ७ जयबोधक वयणा ॥
साजाँ सुरेस चढियो सतो१९४१राजामणि बीजो रयणा१९२१ ॥६॥
गज१ ठाणियाँ घण ग्राह२ वाह१ जाणियाँ बाढाळक२ ॥
तणियाँ करम१ तिमिसं२ चरम१ भणियाँ घउ४ चाळक२ ॥

(सिलह) वीरों के १ चिकुर (केश) खड़े हुए 'यहां चिकुर शब्द सामान्य केशों का वाचक है परंतु भड़ शब्द के योग से मूछों के बालों का ग्रहण है जिसका अर्थ है कि वीरों की मूछों के बाल खड़ेहुए' तथा वीरों को रोमांच हुए "रोमांच भय से भी होता है और उत्साह से भी होता है" सो यहां उत्साह से रोमांच जानो २ कायर जलने हैं ३ नगारा ४ हाथियों पर ५ हाथियों के समूह में लगाये हुए वीरघंट ६ मांसभोजी ७ आकाश में ८ घोड़ों के समूह में घोड़ों का हिनहिनाना और भाट लोगों का 'जयहो' ऐसा शब्द हुआ ॥ ५ ॥ ९ गजराजों पर हाथियों की सिलह को और घोड़ों पर पाखरों को रखकर सेना १० पाज (मर्यादा) पर ११ छलकर अर्थात् मर्यादा छोड़कर ११ वर्षा ऋतु के मेघ के समाज से (समान) १२ दरवाजे से बाहिर हुई १४ उस सेना के ताप से १५ निर्लज्जों को १६ कंप और १७ लज्जावालों को युद्ध का १७ बहुत १८ उत्साह हुआ २० तलवारें म्यानों के २१ बाहिर हुई २२ तोपों की बहुत गंभीर गर्जना हुई दूसरों के २३ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसे कार्यों का वाद्यों से और वचनों से जय का बोध हुआ इंद्र के समान २४ सामग्री से अन्य राजाओं का मौलिमणि दूसरा २५ रत्नसिंह रूपी यह शत्रुशाल चढा ॥ ६ ॥ अब यहां हाडा क्षत्रियों की सेना का समुद्र के रूपकालंकार से वर्णन करते हैं कि इस सेना में हाथी हैं सो तो बड़े बड़े १७ मगर २६ हुए और २८ घोड़े हैं सो ही समुद्र पर चलनेवाले २९ बहल हुए फैलेहुए ३० ऊंट ही ३१ तिमिंगिल हुए, और वहां ३२ ढालें ही चारों पैरों से ३३ जल को छाननेवाले कच्छ-

मणियाँ१ रयणाँ२ अमोल रोपं अणियाँ१ मोती२ रूखं॥
सोहत धणियाँ१ सीप२ मिळे असिबर१ फणियाँ२ मुख ॥
हद धरम१ सीम२ गणियाँ रहणा वणियाँ मेळ१सुवेळ२वधि ॥
खणियाँ१ न होड नाडाँ२खटे ऊफणियाँ हाडाँ१ उदधि२ ॥७ ॥

॥ उल्लाल: ॥

मँह मह सुगंध१ चिक्कस२ मळणा, जीतणा तप अहमहं जुंई ॥
जँह मँह विवाह लाडाँ जुड़णा, हाडाँ६१ धर गँहमह हुई ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

हाडाँ ६१ धर गहमह हुई, जाँडाँ विरुद लुभाणा ॥
गाडाँ भरि जाडाँ गळाँ, खाडाँ तुरक खपाणा ॥ ९ ॥
पंचम५ राणी अति प्रिया, सूरजकँवरि१९४१५ सनाम ॥
निज बाँसक कहियो निसा, इम साँसक अभिराम ॥ १० ॥
करणाँ सो अबही कियो, मरणाँ बेसं महीप ॥
दिल्ली मग मोनूं दहे, दीजै पग कुळदीप ॥ ११ ॥
जाँतै रण पैला जरैं, सुरपुर वसणा समीहँ ॥

प कहीगई. वीरों के आभूषणों में जो मणियां हैं वेही अमूल्य १ रत्न २ बाणों की अनियां (नौकें) ही जहां मोतियों की ३ भांति हुईं, उस सेना के धणी (सेनापति) उन मोतियों को उत्पन्न करनेवाली सीप रूप हुए और श्रेष्ठ तलवारें समुद्र में रहनेवाले मुख्य ४ सर्प हुईं. वीरों के धर्म की सीमा ही समुद्र की सीमा अर्थात् मर्यादा और वीरों का उस सेना में मिलना ही श्रेष्ठ तरंगों का बढना हुआ, ऐसे हाडों रूपी समुद्र के बढने में अन्य ५ खोदेहुए नाडे समता में नहीं ६ खटा (ठहर) सकते ॥ ७ ॥ ७ मीठी सीठी, सुगंधिवाला ८ चून का मालिस (उबटन) कराके यवनों का तप जीतने के लिये ९ मैं आगे मैं आगे कहती हुई वह सेना१० जुड़ी ११ जहांपर विवाह के १२ उत्सव में दुल्लह जुड़े इसप्रकार हाडों की धरा (भूमि) में १३ अत्यन्त भीड़ हुई ॥ ८ ॥ १४ दुलहों के १५ यश पर लुभाये हुए बडी गर्दनवाले तुर्कों को छकड़े भरकर खड्डों में नष्ट करने के लिये हाडों की धरा में अत्यंत भीड़ हुई ॥ ९ ॥ १६ रात्रि के समय अपने बारे में कहा १७ पति से १८ सुंदर ॥ १० ॥ मरने का १९ बनाव (लिबास) अब ही करलिया ॥ ११ ॥ २० श्रेष्ठ इच्छा से स्वर्ग में वास करोगे

किम सेवा वखासी कहो, दासीविरण चउ४ दीह ॥ १२ ॥
मुणियो*धव जीवण१ मरण२, है राणी हरि हाथ॥
है अपजस उलटोहुवाँ, सोपण छूटै साथ ॥ १३ ॥
इम पहली हालू१४२१ अनुज, मिया दहे रोपाळ१८१ ॥
विणसंभव मरियो वळे, सोचे कुजस†सिघाल ॥ १४ ॥
नारि वळणदीधी नथी, वरसे घण घण वाज ॥
तोभी सुणि पछतावियो, सोनगिरो७ जसराज ॥१५॥
पिंडदहण जिणभी प्रिया, भावी प्रथम भलो न ॥
है समुचित भावी हुवाँ, सही विफळ व्है सो न ॥१६॥
कटक सजे कीधो क्रमण, सो इम नृप समुझाइ ॥
काँकड़लग क्रमियो कँवर, भूप पुगावण भाइ ॥ १७ ॥
सक चउदह सत्रह१७१४ समै, सिसिर६ चरण४अवसाण ॥
असित२ तपा११ कंदर्प अह१३, चढियो इम चहुवाण ॥ १८ ॥
पीतंबर १ पूजे प्रथम, वंदे प्रभुजस वाद ॥
कुळदेवी२अर्चित करे, पायो उभय२ प्रसाद ॥ १९ ॥
वंद निज गुरु जण वळे, सज्जे चक्र सिपाह ॥
पांव दियो हय पागड़े, चाव कियो रण चाह ॥ २० ॥

॥ भुजंगप्रयातम् ॥

सतो१९१४१हालियो आगरै चक्र सज्जे,वजेबंत्र१भेरी११२मुरे१३नंवे१४वज्जे
छैले मेहज्यों खेहं आकास छाई, दिपै चंचला सेलधारा दिखाई ।२१

॥ १२ ॥ * पति ने कहा ॥ १३ ॥ † अधिक ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ इसकारण हमारे मरे पहिले शरीर को जलाना उत्तम नहीं है २ उचित ॥ १६ ॥ ३ सेना सजकर ४ गमन किया ॥ १७ ॥ ५ फाल्गुन वदि ६ कामदेव का दिन (तेरस) ॥ १८ ॥ ७ पूजन करके दोनों की प्रसन्नता पाई ॥ १९ ॥ ८ सेना में ९ युद्ध का उत्साह इच्छा पूर्वक किया ॥ २० ॥ शत्रुशाल सेना सजकर आगरे चला जहां पर विजय के १० नगारे ११ नोबत १२ मृदंग और १३ तासे बजे १४ चढेहुए मेघ के समान आकाश में १५ धूलि छागई जिसमें १८ भालों की धारा१७ बिजली के समान १६ शोभायमान हुई ॥ २१ ॥

घमंके जड़ी पाखराँ थाट घोड़ाँ, झमंके झड़ी पाखराँ आगि झोड़ाँ
ठहक्के कड़ी कंकटाँ ठौर ठाँई, डहक्के भड़ाँ वंकड़ाँ घोर डाँई ॥ २२ ॥
तुली ढाल रूड़ी घली काळओपाँ, चली जोटं जूड़ी हली ज्वाळ तोपाँ
कहे एम दीठाँ मळे नेम कोपाँ, लगी टेक गोळाँ दगी अद्रि लोपाँ २३
इसो रूप कीधाँ जिके त्रास आखौं, जिके आगि लीधाँ गडाँ ग्रास जाखौं
गजाँड़े घणाँ घोर यूँ घोर गाजे, विलागा किनाँ डूँगराँ वज्र बाजै ।२४।
जथा कै कड़क्कै छटा१मेघ२जोड़ाँ, मचै सिंधुके मंथ पब्बै घमोड़ाँ ॥
बमै झाळ जे फांड़ियाँ काळ वाँका, मळे जीतरो चिन्ह धारै पताकाँ २५
करी१सिंह२वाराह३रै तुंड केनी, लँमै ग्राह४चक्री५मुखी वाह लेती ॥
लगाँ नागणी जागणी नींद लोपै, अँगाँ दागणी लागणी भाग
ओपै ॥ २६ ॥
हुवै गैल चोड़ा जठै सैलहूँता, हलै वैलजोटाँ घणाँ वेलहूँता ॥
ठही चोट दे झंझरी कोट ठाँणै, छकी पान जे अट्टरै वट्ट छाणै ।२७।
टळै ढील लागाँ घणाँ फील टल्लाँ, दळै नीठि पाँइक्क१मल्लाँ हमल्लाँ ॥

पाखरें बर्जा जिनके १ झोड़ से (टक्कर से) अग्नि चमक कर गिरने लगी ३ कवचों की कड़ियां २ ठहक (शब्द) कर ४ निरंतर बाघ ५ हुआ ७ बांवड़ी अर्थात् भयंकर घात जाननेवाले बांके वीर ६ च्यौंके (सचेत हुए) ॥ २२ ॥ ९ काल की उपमा घला हुआ (दिया जाने योग्य) सुंदर ८ सेना का बडा झंडा खड़ा हुआ और १० बैलों की जोड़ियां जुपी हुई ज्वाला के समान तोपों की पंक्ति चली ॥ २३ ॥ ११ मेघ की गर्जना के समान मानों पर्वतों से १२लगकर वज्र बोलता है अथवा मेघ में बिजली १३कड़कती है ॥ २४ ॥ १४समुद्र के १५मथने में१६पर्वत के घोर शब्द होते हैं१७उगलती हैं १८ मुख १९ध्वजा ॥ २५ ॥ २०हाथी के २१ सूअर के २२ मुखवाली २३ शोभायमान २४सर्पों के मुख की प्रशंसा लेती हुई २५ जामकी (अग्नि लगाने का तोड़ा) २६ जाग्रित होनेवाली २७ पर्वतों का जलानेवाली २८ शोभित ॥ २६ ॥ २९ मार्ग ३० पर्वत ३१धूपंभों की जोड़ियों से चलनेवाली तोपें बहुत बैलों से चलीं ३२ चोट देकर कोट को जर्जरीभूत (ढीला) करती हैं ३३ छांकीहुई ३४ बुर्जों के ३५ मार्ग ॥ २७ ॥ ३६ हाथियों के जोड़ों से ३७ पैदलों के

तिकाँ अग्ग हेरंब१ कै छैलं२ तूटै, छकायाँ सुरा३ रोधरै खैल छूटै ।२८।
चढी नाँळियाँ वाह सूँ गाह चल्ली, हलाड़े धजाँ के गजाँ पंति हल्ली ॥
लसै आल१ जंगाल२ सिंदूर३ सुंडा, इळामैं धसैं धाँवरा पाव उंडा ।२९।
उठावै कराँ पोंगराँ के उछाळा, किनाँ लागणाँ रांग पैंनाग काळा ॥
चलै कर्णताळाँ१ उछाळाँ चलावै, धरे काळ माँ अद्रि पंखाळ धावै३०
ठणो भद्र१ मंदाँ२ मृगाँ३ वंस ठावा, छटा फैलै हालै किनाँ सैल छाँवा
खँहाँ साथ जेता करै दुर्ग खोळा, महीश्रै अँहीश्साथ देता मचोळा ॥
धराँरूप लंबी कराँ धूप धारै, नराँ एक१ एकोश्हजाराँ निवारै ॥
झरंता पटाँ डाँण पव्वे झरीज्यूँ, करंताथटाँ प्राणभैके हरीज्यूँ । ३२।
रचैं लार गुंजार रोलंब रोजी, भैगाणाँ भड़ाँ रोध औ लंब भाजी ॥
अँरानाँ हसै डूँगराँ रैणा आँटै, छदी जे कराँ सीकराँ गैण छाँटै ।३३।
डगाँ घीसता साँकळाँ सूतडोरा, धरा पूँ खणौं ज्यूँ वणौं खेत धोरा ॥
भला जूहवे वेरियाँ व्यूह भेदी, बिजै मित्र जे चित्र संग्राम वेदी ।३४।

उनके आगे १ गणेश का नाम करकर (निर्विघ्नता से चलने के लिये गणेश का नाम लिया जाता है) २ बकरे लूटते हैं बलिदान होता है और मद्य से परिपूर्ण करने पर थकने का दुःख छूटता है अर्थात् चलती हैं ॥२८॥ ३ तोपें ४ रंग विशेष ५ रंग विशेष ६ पृथ्वी में ७ दौड़ने के पैर गहरे घुसते हैं ॥२९॥ ८ सुंड का अग्रभाग ९ मानों गिरनारी रांग पर काला सर्प १० ताड़ वृक्ष के पत्रों के समान कानों को ११ उछाल कर १२ कांति १३ पांखोंवाले पर्वत दौड़ते हैं ॥ ३० ॥ १४ सज्जित हुए १५ यहां भद्र, मंद, मृग, ये हाथियों की जाति विशेष हैं १६ शोभा फैलाकर १७ मानों पर्वतों के पंख चलते हैं जिन जिन गढ़ों से १८ भिड़ते हैं उन उन गढ़ों को १९ ढीला करते हैं २० शेषनाग सहित ॥ ३१ ॥ २१ पर्वतों रूपी लंबा सीधा खड्ग सुंड में धारण करके २२ मिटाते हैं २३ हाथी के कानों के आगे मदधारा बहने को पटा कहते हैं २४ मद २५ पर्वत के २६ झरना के समान २७ समूह को २८ प्राणों का भय २९ सिंह के समान करते हैं ॥३२॥ ३० साथ ३१ शब्द ३२ भ्रमरों की ३३ पंक्ति, वीरों की ३४ रोक को ३५ भगानेवाले और ३६ लंबे दौड़नेवाले ३७ क्रोधित होकर ३८ पर्वतों को धूल करने के लिये ३९ सुंड के जल कणों से आकाश को छांटते हैं ॥ ३३ ॥ ४० पैरों से ४१ खेत सींचने का जल बहने के मार्ग की भांति भूमि को खोदते हैं ४२ समूह ४३ सेना की रचना को भेदन करने वाली, विजय के मित्र और ४४ युद्ध के चत्रतर ॥३४॥

इसा रंग[१]भू द्रंगं[२]रा अट्ट[३] ऊँचा, सिंटावे[४] जिकाँ हेठै[५] पंखी संमूँचा[६] ॥
उदैहाँटकी[७] वंगड़ाँ[८]१दंत[९]२ईसा, सुहावै लियाँ आर[१०]१रौका[११] ससी२सा ॥
कसे रेसमी लाल कंठाँ१कलावाँ२, किनाँ[१२] बंढियाँ[१३] राहु१दे भाँण[१४]२कावा[१५]
सिरीसीसँ[१६] कुंभा मणी हेम साँऊ[१७], जथा नारि[१८] वँक्षोजचोळीजड़ाऊ
उभै२ घंट भासाँ दुरपासाँ अरोहै[१९], ससी१ सूर२ रै बीच ज्यूँ मेरु सोहै
रखांके तिकाँ घोर रूड़ी रचाई, ठखांके किनाँ झूलरी ठोर ठाई ३७
नंखी[२०] जाँणि झूलाँ जरीतास नाँहीं, मिली तालसी१शजसी२छत्तिमाँहीं
प्रकासै किता लंब दंडाँ पताका, भलै डूँगराँ सीस ज्यूँ ताल भाँ[२१]का
मिले पीठि छत्री मनाँ केक मोहै, सिरे[२२] जाणि प्रासाद[२३]रै गोखँ[२४] सोहै
किताँ पीठि होदा लसे चित्रकारी, उघाड़ै जिके तुंग[२५] सोभा अटारी[२६]
बडे नाँद भेरी किताँ पीठि वाजे, लखंताँ घटा स्यामरी गाज लाजै॥
डिगाया डगाँ जे मगाँ डाकँदाराँ, लगा चंड वेतंड यूँ दंड लाराँ ।४०।
बणो लूमझूमाँ हुवा सज्ज वाजी, तुखारी१खुरासाण२भाड़ेज़३ताजी
किता खेत कंबोज५ वाल्हीक६ कच्छी७,
उडै फाँळ[२९] लै लै फिरे डाँळ[३०] अच्छी ॥४१॥
धटी८ जंगली९ दंगली१० वेग धाराँ,
अरव्वी११ इराकी१२ र रूमी१३ अपाराँ ॥
लगा पाखराँ१साज लूमाँ लड़ीसूँ, अडीनाँ[३१] चलै ज्यूँ नटी पट्टड़ीसूँ ॥

---

१ युद्ध भूमि रूपी २ नगर का ३ ऊंची बुर्ज ४ लज्जित होवें ५ नीचे ६ सर्वत्र ७ सुवर्ण के ८ वंगड़ों से ९ लंबे दांतों में लगे हुए हैं सो १० मंगल ग्रह और ११ पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान शोभायमान होते हैं ॥ ३५ ॥ १२ हाथी के कंठ में महावत के पैर रहने का रस्सा है सो मानों राहु ने १४ सूर्य को १५ गोलकुंडा लगाकर १३ घेरा है १६ हाथी के मस्तक का भूषण १७ सुन्दर १८ स्त्री के कुचों पर ॥ ३६ ॥ १९ चढाये (लगाये) ॥३७॥ २० डालीं. उत्तम पर्वतों पर ताड़ वृक्ष की शोभा के समान २१ प्रकाशित होता है ॥ ३८ ॥ २३ महल के २२ मस्तक पर २४ झरोखा २५ ऊंचेपन में २६ छत की शोभा ॥३९॥ २७ नोबत के शब्द २८ छोटे घाव लगाकर क्रोध दिलानेवालों (सांटमारों) ने मार्गों में डिगाये इस प्रकार भयंकर हाथी सेना के साथ लगे ॥४०॥ २९ झंप ३० रीति ॥ ४१ ॥ ३१ उडने में ॥ ४२ ॥

मिले मोहराँ चोंहराँ पँति मोती, कळा कर्त्तरी[1] जीतपावै कनोती[2] ॥
दिपै[3] भाल बैठा तवाँ[4] जंब[5] देता, लसै गल्लकी[6] ग्राव१ भा नैण२ लेता
चुभै चित्त नासाँ मुड़े वंक्र[7] चौड़ा, गयाँ संकड़े[8] पंथ छेके छक[9] गाडा ॥
कवी लेहै[10] जे गाचिया रेहै[11] कूदे, सजे डांगा[12] लंबा मृगाँ माणा[13] सूंदे ॥
कसंता विजैमंडै[14] कोदंडै[15] कंधाँ, बणावै वृथा वेहरै[16] जेरबंधाँ[17] ॥
ऐंटा[18] थालजाळी[19] जटाळी[20] सुहावै, प्रिया नागवाळी लखै[21] दाग पावै ।४५।

करै हाँलरा[22] कालरा[23] नाद कंठाँ,
ग्रँथीला[24] मणी झालरा[25]१ लूमै[26]२ गंठाँ३ ॥

सचोड़ा उराँ माँकड़ा[27] ग्रासणोटाँ, मँडै[28] पीठ मंचाँ[29] जिसा गात[30] मोटाँ
जिकाँ गोळ पीडा उभे२ ग्राक जोडै, तिकाँ चामरी[31] लूमै[32]१ भा लूम२ तोडै
तळोटाँ[33]१ खुराँ२ थंभ१ पावाँ२ तै राजै[34], सको पिंड१ प्रासाद२ आधार साजै[35]
जड़ै वज्र नाळाँ झड़ै फूल ज्वाळा, मनों मेघ सैंचोत[36] खद्योत[37] माळा[38]
धुजावै धरा दाबि दे काळ धक्का, पड़ै काच ज्यूं आवजावां पळक्का ४८
फटै कोट चोड़ा जिकाँ चोट फेटाँ, चळे[39] सीमँहू[40] कुडयँ[41] पट्टी चँपेटाँ[42] ॥
नचे वेगमैं आँखि[43] ताराँ[44] न मावैं, गजाँ डाणा[45] लागाँ वयाँनैं[46] गमावै ४९

---

१ कतरणी अथवा केतकी से २ कान ३ ललाट ४ ललाट की दबीहुई हड्डी से ५ शोभा देते हैं उन घोड़ों के नेत्र ६ गंडकी नदीके पत्थर (शालिग्राम) की शोभा लेते हैं ॥ ४३ ॥ ७ बांके मुड़े हुए ८ नासिका के मुख (फुरने) चित्त पर चुभते हैं ९ लगाम के १० चाटने में रंगेहुए ११ फाड़ (परिखा, खाई) को कूदते हैं १२ दौड़ने में लंबाई सजकर मृगों के मान को १३ काटते हैं ॥ ४४ ॥ १४ विजय की शोभा १५ धनुष १६ शरीर के १७ जेरबंध वृथा बनाते हैं; अर्थात् विना जेरबंध ही जिनके कंधे झुके रहते हैं १८ गर्दन के बालों की १९ केशवाली २० जटावाली सुहाती है २१ जिसको देखकर सर्पिणी जलती है ॥ ४५ ॥ २२ कंठ भूषण २३ अवाच्य शब्द करते हैं २४ गुंथे हुए २५ झालरीवाले २६ वालछा (पूंछ) २७ पीठतंग २८ रचे २९ मांचा (पिलंग) ३० शरीर में ॥ ४६ ॥ ३१ चमर के गुच्छे की शोभा को ३२ पूंछ (वालछा) ३३ पैर के नीचे का भाग अर्थात् फर से नीचे और घुटना से ऊपर का भाग ३४ सदृश है सो शरीर रूपी महल की नींव को ३५ सजते हैं ॥ ४७ ॥ ३६ चमक सहित ३७ जुगनू की ३८ पंक्ति ॥४८॥ ३९ चलायमान होती है ४० सीमा (नींव) सहित ४१ (दीवार) पट्टी की दौड़ में ४२ चपट लगने से ४३ नेत्रों में ४४ नेत्रों की पुतली ४५ मस्त हुए हाथियों को ४६ खाई में घुमाते हैं ॥ ४९ ॥

मुड़े तार कच्चे किनाँ वार मच्छी, अटेफार जे पंच५ही धार अच्छी ॥
गिणीजे पटीमैं किनाँ तोपगोळा, टळावै टळै लागरे नागटोळा ५०
धरै कक्क सोभा अटे चक्र धावाँ, फिरै पाँन१पाँणी२अजे ज्यों फिरावाँ
पड़े वंक्र बीची किताँ नागपेचाँ, मिळै आथलूँ भी समैसाथ मेचाँ ५१
लसे रीलि नाना खुराँ अंक लागाँ, बणावै धरा चित्र नाना विभागाँ
हसावै भड़ाँ ताँखड़ाँ लांघि हाथी, उडै पाव ज्यूं ताव दाँकै इळाथी ५२
छुवंता झळै ओझळे आप छाया, जिके अंबु १ अग्गिन्त१ के वायु
३ जाया ॥

उडंता मृगाँ४कंध कोदंड आगाँ, त्रि३वंणीं उरैं होइकै वेर तागाँ ॥
नचै थुंग थेई रचै भेद न्यारा, भिड़ावै खलाँ हैदलाँ वेग भारा ॥
सजीलाँ भड़ाँ प्राण जोडे सुहावै, वहे झंप हौदाँ कटाराँ छुहावै ।५४।
खगाँ जीतणाँ धावमैं दाव खेल्है, मलंगाँ तंडाँ माकड़ाँ पीठ मेल्है ॥
घणाँ जोम माता इसे रूप घोड़ा, चलै थट्ट ऐंडा चलै वट्ट चोड़ा।५५।

१जल में मच्छी फिरे उस प्रकार २फिरते हैं ३ समूह. घोड़े की धौरित रेचित आदि पांचों गतियों से ४ अत्यन्त दौड़ने में ५ हाथियों के समूह को ॥५०॥ गोलकुंडा की दौड़ में दौड़कर कितने ही घोड़े शोभा धारण करते हैं सो उनकी बराबरी करने के कारण पवन और पांणी६अब भी७उन आग में फिरां ते हैं ८टेढी ९लहर से १०सर्प की गति के समान ११वन से भी १२ समय के साथ १३मौका मिलता है ॥५१॥ १४ शोभायमान १५चिन्ह १६आश्चर्य कारक अनेक प्रकार के विभाग१७चंचल वीरों को१८अग्नि की ताप से जलें इसप्रकार १९ पृथ्वी से पैर उठाते हैं ॥ ५२ ॥ २० रान का स्पर्श होने से जलते हैं और अपनी ही छाया से २१चमकते हैं वे घोड़े ज़ल२२अग्नि और पवन से२३उत्पन्न हुए हैं२४धनुष२५वरण (कोट) संबंधी गढ को; वा तीन कोटवाली खाई को फांदकर२६इस पार होकर वैर लेते हैं २७भेदन करावे२८घोड़ों की सेना २९वेग के समूह ३०सजे हुए वीरों को३१प्राणों के बराबर सुहाते हैं ३२झंप लेकर ३३ हाथियों के होदां में कटारों के वार करवाते हैं ॥५४॥ वे घोड़े३४ पक्षियों को जीतनेवाले३५दौड़ने में३६पेच खेलते हैं ३७बांसों तक फांदकर३८लंगूरों (काले मुख के वन्दरों) को पीछे रखते हैं ३९ अत्यन्त ४० बल वा घमंड से ४१ पुष्ट ४२ इसप्रकार के ४३ समूह ४४ घमंडी ४५ मार्ग ॥ ५५ ॥

खुराँ नेउराँ१पाखराँ२नाद खुल्लै, तिकाँ वाहरी इंद्रै चाह तुल्लै ॥
जिसा अर्व४वै सोहणा पर्यजाखे, तिसा जोह६आरोहणाँ मूँछ ताखे
लसै ओज पूरे १ तिके फोज लाडाँ २, गऊ ३ बिप्र ४ भीडू.दया ५
लाज ६गाडा ॥

वळी७दीनबंधू८धरै वंसबानाँ९,अकूपार गंभीर१० रोळै अरानाँ११॥
दिपै मेघ गाधेय सर्वस्व दानी१२, महाकष्टभीमाँगवै भूप मानी१३॥
हुवाँ प्राणसंसै नथी झूठ हेरै१४, फणीदीठ पैलाँ अणीं पीठ फेरै ॥
सदा एक १ राणीव्रती १५ धर्मसेवी१६, खँरा जुद्ध सिंधू बिजैनाव
खेवी१७ ॥

हठी जेन आगे१८न भागाँ प्रहारै१९, धराँ लंगराँ संगराँ पाव धारै२०
अजोराँ नराँ लेण आँटा उधारा२१,सजोराँ हणे देण बाँटा सुधारा२२
महा स्वामिधर्मी२३ लियाँ हाथ माथा२४, गवै देसदेसाँ जिकाँ पाँथ
गाथा२५ ॥ ६० ॥

उडाँ धारि बंदूक२६मोती उतारै, सराँ२७मारि जाता खगाँ गैणा सारै

१घोड़ों के चरण भूषण २शब्द ३उन घोड़ों पर सवारी करने की इंद्रको भी इच्छा होती है ४ घोड़े ५ सबंध अथवा युद्ध ६ जोध (वीर) ७ चढनेवाले ॥५६॥ ८शोभायमान ९ पराक्रम के पूरे १०सेना के हृदय ११वंश के चिन्ह को धारण करने वाले १२ गम्भीरता के समुद्र १३ युद्ध में १४ निरंकुश ॥५७॥ १५ शोभा देते हैं १६ दानादि में १७ कर्ण के बडे कष्ट में भीमसेन के समान अंगवाले १८प्राणों का संदेह होने पर भी झूंठ नहीं बोलने १९ सर्प के समान दृष्टिवाले २० शत्रुओं की २१ सेना की ॥ ५८ ॥ २२ एक स्त्री का २३ नियम रखनेवाले २४ धर्म की सेवा करनेवाले २५ सदा २६ युद्ध रूपी समुद्र में २७ चलानेवाले २८युद्धों में पर्वतों रूपी लंगरों को धारण करनेवाले २९ निर्बल मनुष्यों का उधारा ३० वैर लेनेवाले और बलवानों को मारकर ३१ श्रेष्ठ (सुधार पूर्वक) बंट दिलानेवाले ३२ स्वामी के कार्य का सुधार करनेवाले और मरने के लिये अपना माथा हाथ में रखनेवाले ३३ अर्जुन के समान ३४ कथा ॥ ६० ॥ ३५ आकाश में जातेहुए पक्षियों को वेधन करते हैं.

वळी तोमराँ२८ दावके चांव बांधै, समर्थाँ गुणाँ खग्गरा मग्ग-
साधै ॥ ६१ ॥

लगें लाह कासू ३० क्रिया बाह लीधाँ, कटारी ३१ छुरी २ साँकड़े
सिद्ध कीधाँ ॥

महावीर पाड़ै पछाड़ै मइंदाँ३३, गहे दंत रोके मदाळाँ गइंदाँ ॥ ६२ ॥

सजे ओपँरा टोप१ सोभा सिवाळी, जिके भीड़ियाँ दंसैर नागोद ३
जाळी ४ ॥

सबाहुत्र५ऊरुत्र६जंघात्र७संगी, चहै वंसथी लैहा रहै एक१रंगी ।६३।

लसै सैंक जोड़ै इसो चैंक लीधो, कढे थानसूँ भूप प्रस्थान कीधो ॥

जठै रोकियो पुत्र चोथा४जिकोभी, तजे प्राणआँसाहुवो संग तोभी

भड़ाँ ले अठी हालियो साथ भाऊ१९५।१,

पितारो बडो भक्त सीमा पुगाऊ ॥

क्रमे चंपवाड़ी कनैं आदि१केरा,

दिया जैवती१८८।२ ताळ१ भूपाळ डेरा ॥६५॥

उठै फोजरी हाजरी दीठि आताँ, वखाई किता सूचकाँ छद्मवाताँ ॥

जणाई जिकाँ वीठलो१९४।१ सेर१९३।२ जायो,

अजे नाहथाँणाँ तणो नाँहिं आयो ॥६६॥

कथासो सुणी१नाँसुणी भूप कीधी, द्विजिंदाँ१कविंदाँ२भड़ाँ३री झंदाधी

---

१. भालों के २ उत्साह ३ बधाते हैं अथवा बांधते हैं ४ सब गुणों से ५ खड्ग के मार्ग (पैंतरे) साधते हैं ॥ ६१ ॥ ६ लाभ ७ वर्छी के ८ चलाने की क्रिया को लियेहुए ९ सिंहों को १० मदवाले ११ हाथियों को ॥ ६२ ॥ १२ शोभावाले १३ शिरत्राण सजते हैं १४ अधिक १५ कवच १६ पेटी १७ पड़तला १८ दस्ताने १९ घुटनों का कवच २० जंघा का कवच २१ वंश का मार्ग चाहते हैं २२शोभायमान २३इन्द्र की बराबरी में २४ सेना २५ प्राण की आश छोड़कर॥६३॥ २६चला २७चलकर २८स्थान का नाम है २९समीप ३०प्रथम के ॥६४॥ ३१वहां पर सेना की हाजरी ३२दृष्टि में आते ही ३३जानकारी करनेवालों ने ३४ छल की बातें ३५ थाणा ग्राम का पति ॥ ६५ ॥ ३६ श्रेष्ठ ब्राह्मणों को ३७ श्रेष्ठ कवियों को ३८ वीरों को ३९ दान दिया

किंयो सिंह१.८९।१.कौसार२ विश्राम बीजो२,
जठेही हरीदास पूगो कवी जो ॥६७॥
मवीजो१ कवीजो२ अन्त्यानुप्रासः १॥

केनैं भूपरैं वैंण ऐंहो कहायो, अवैं हूँ खरारूढ़हीं होण आयो ॥
दियो खासहाथी१मिळे तास दानी, गजी२साथ हालै सदा सो गुमानी
सुणी कीरती छाँकवाळे सवादी, विनाँ नारि हालै नथी कील बादी
करी१.गैलं तो एक दीधी करेणू२, वळे डाँकदाराँ सजे लंव वेणूं६९
गजी१ साथ गै२ पाँत डेरे पुगायो, इळानाम शकेस जोड़उगायो
सतै१९४।१ कीध विश्राम तीजा३ सिहाणँ३,
जठै रीभ्फ वूँठो वळे इंद जाणैं ॥ ७० ॥

भंजे वास चोथो४ नदी मेभ्फ४ पे डै, नरौनाह यूँ नाँनणाँ द्रंग नेडै ॥
क्रमे पंचमोँ५ वास नीवोद५कीधो, दळाँ पाँत वंसी६छवो६जाइ दीधो
उठै थंभि दो२ दीहँ लाखां उँडाऊ,
हठाँ लै भटां भेजियो द्रंग भाऊ१९५।१ ॥
जिकी वात भाऊ१९५।२.घणी नीच जाणी,
पितारै मतै नीठि सोही प्रमाणी ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

---

१ सिंह तलाव पर दूसरा मुकाम किया वहां पर संढायच शाखा का हरिदास नामक चारण पहुंचा जिसने शत्रुशाल की मान हानि करके शत्रुशाल के दिये हुए घोड़े की उदयपुर में दुर्दशा की थी ॥ ६७ ॥ २पास ३वचन ४ऐसा ५ गधे पर चढने के लिये ही आया हूं ६ आगे हथनी होने पर चलनेवाला ॥ ६८ ॥ उस कीर्ति की ७ तृप्ति के ८ स्वाद लेनेवाले ने यह सुना कि ९ हठ से बंधा हुआ हाथी हथनी के साथ बिना नहीं चलता १० हाथी के साथ ११ हथनी १२ सांटमारों ने १३ लम्बे भाले सजकर ॥ ६९ ॥ १४ हाथी १५ पात्र (चारण) के डेरे पुगाया १६ पृथ्वी पर चन्द्रमा के बराबर उज्ज्वल नाम किया १७ वर्षा की ॥ ७० ॥ १८ चौथा मुकाम किया १९ मेभ्फ नदी के समीप २० भूपति २१ नानणा नगर के समीप २२ पड़ाव ॥ ७१ ॥ २३ ठहर २४ दिन तक २५ उड़ानेवाला भाऊ को बुन्दी २६ नगर में भेजा २७ पिता की सलाह से २८ कठिनाई से २९ प्रमाण करी ॥ ७२ ॥

वारण१ हय२ भूखण३ वसण४, सतै११४।१ करे बखसीस ॥
भाऊ१९५।१ पाछो भेजियो, नीठिहठां अवनीस ॥ ७३ ॥
भाऊ१९५।१ साथे भेजिया, भड़ाँ अरथ भूपाळ ॥
सांठि६० तुरग सिरुपाव सत१०० दीधा दस१० दंताळ३।७४।
भेजे इम अणियां भँवर, जेठी१ कँवर जनेस ॥
बंसी५हूँ चढियो बळे, धन चय६ देण धनेस७ ॥७५॥
क्रमियो नँह भारत१९५।४ कँवर, पाछो प्रसभ८ प्रकास ॥
कहियो छोडे साथ किम, दुलभ पितारो दास ॥ ७६ ॥
बीठळ१९३।१ सो नायो बळे, थायाँ पुर जिणथान ॥
सूची सो खळ९ सूचकाँ, कीधी भूप न कान ॥ ७७ ॥
आप करे दरकूँच इम, मथुरा जाइ महीप ॥
पर्व माघ११ सित१ पूरण१५, दान किया कुळदीप ॥ ७८ ॥
मुंडण१ न्हावण२ श्राद्ध३ मुख, साधे पूरब सूर ॥
बखसे धन कीधा बळे, दुजराजाँ१० दुख दूर ॥ ७९ ॥
तारतुळा११ १ हाटकतुळा१२ २, एक१ एक१ दे आप ॥
सुरभी१३ आठ समेत सत१०८, दीधी दीन दुराप१४ ॥ ८० ॥
कनक१ कोस सींगाँ२ सजे, रजत१५ १ खुराँ२ अभिराम१६ ॥
इम गोगण१७ दीधो अधिप नियँत१८ उबारण१९ नाम ॥ ८१ ॥
हुई कटक२० अब हाजरी, मथुरा नयर२१ मुकाम ॥
सब कुंसुभ२२ १ केसर२ बसण, तुले बराती ताम२३ ॥ ८२ ॥

---

१ हाथी २ वस्त्र ॥ ७३ ॥ ३ हाथी ॥ ७४ ॥ ४ सेना के अग्र भाग का रसिक ५ ग्राम का नाम है ६ धन का समूह देने में ७ कुबेर ॥ ७५ ॥ ८ हठ करके ॥७६॥ ९ दुष्ट ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ १० उत्तम ब्राह्मणों के ॥ ७९ ॥ ११ चांदी की तुला १२ स्वर्ण की तुला १३ गौएं १४ दुर्लभ ॥ ८० ॥ सोने के सींग और १५ चांदी के खुर १६ सुन्दर १७ गौओं का समूह १८ निश्चय ही १९ अपना नाम बाकी रखने के लिये ॥ ८१ ॥ २० सेना की २१ नगर २२ कुसुंभा के रंग में २३ तहां ॥ ८२ ॥

कहियो नृप आपण सकळ, वीर बरातीवेस ॥
एक दुलंद१ बणियो अठै, साहै पूरण सेस ॥ ८३ ॥
कथन हास साँचो करण, वीराँ दे जस बोल ॥
भूप भाट समुचित२ भणे३, दुलंह बणायो दोल४ ॥ ८४ ॥
वरसो दुलही१ दिवबधू२ मन जिण आणि मरोड़ ॥
वरै कंकण१ वर बंधियो, माथै धरियो मोड़२ ॥ ८५ ॥
हुकम दीध तिणनूँ हसे, हालण आप हरोल ॥
विणमाथै जूझण वळे, वंदी बदियो बोल ॥ ८६ ॥
मेचक११ २ फागुण १२ पंचमी५, चढे अडर चहुवाण ॥
आयो पट्टण१२ आगरै, परदळ दट्टण१३ पाण१४ ॥ ८७ ॥
इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-
वसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहांनिदेशाद्दाराशिकोहपक्ष-
वर्तितयौरंगजेबसमरार्थबुन्दीशशत्रुशल्यस्यबुन्दीनगरादकबरपुरगम-
नमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितस्त्रयोविंशत्यधिकद्विशततमः ॥ २२३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुपहु सना१९४१ आगंम सुनत, हरखिय साहजिहान१९१२ ॥

---

१ बींद ॥ ८३ ॥ २ उचित ३ कहकर ४ दोला नामक भाट को ॥ ८४ ॥ ५अप्स-रा को दुलही करने का घमंड ६ उस दुलहे ने ७ श्रेष्ठ कंकण डोरड़ा हाथ के बांधा ८ विवाह करने का मुकुट ॥ ८५ ॥ ९ चलने का १० अपने आगे ॥ ८६ ॥ ११ कृष्णपक्ष १२ पत्तन (नगर) १३ दबाने को १४ बल से ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में पादशाह शाहजहां की आज्ञानुसार दाराशिकोह के पक्ष में होकर औरंगजेब से युद्ध करने के लिये बुंदी के राव शत्रुशाल का बुं-दी से प्रयाण करके आगरे जाने का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२३ मयूख हुए ॥

बूंदीपति बुल्ल्यो विरचि, दूजे[2] दिन दीवांन[1] ॥ १ ॥
मुगल६सुता१९४।१जातहि मिल्यो, लेत नयन उर लाइ ॥
सुत१की बय२की संदन३की, दई सरम विरुदाइ[3] ॥ २ ॥
सप्तहजारी७००० मनसब१ रु, सह सिंधुर२ हय३ सस्त्र४ ॥
प्रीत दये दस१० परगनां५, विविध आभरन६ वस्त्र७ ॥ ३ ॥
गजपहाड़[5]१ गज१ अरु अरब[6]२, फतेजंग२ जवफौंत[7] ॥
पहु[8] सुनिये दस१० परगनन, अभिधा[9] समर अभीत ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तँहँ आगर१सागर२छबडाँ३ तिम; इत सिरोंञ्ज४सारंगपुर५हु इम ॥
भेलसा६रु बालाभेटा७दिक, दत्त७दये निंजसीम प्रसौंदिक[10] ॥ ५ ॥
इत बारां१।८रु बरोद२।९आढ्यतम[11], संगहि खेराबाद३।१०रीझ सम
जगतसिंह१९५।१कोटा बिलसैं जिन्ह, यह त्रय३दिय तासौं उतारि इन्ह
अनुजंनु[12] त्रय ३ रु मुकुंद १९४।२ अवंतिपैं[13], दयिते[14]प्रान रन साहअ-
रथ दिय ॥
जगतसिंह१९५।१ ताके तनूज जँहँ, कोटापति भोगत तीन३नकँहँ
ता संन लै रु सता१९४।१हिं दये त्रय३ मो इम साह ग्रस्यो संकटभय
पै मुकुंद१९४।१माधव१९३।२सेवा[15]पर, सुमिरन आनि तथासित सत्वर[16]८
और त्रय३हि तैसें इहिं अप्पिय, थिर कोटाहु कृपाविच थप्पिय ॥
त्रय३हि छिन्नि बारां१सुख[17] तासौं, संभर[18] पट्टलिखे सुखमासौं[19] ॥ ९ ॥
पहु दस१०पाइ परगनाँ जंपित; अमलकरन पठयो निदेसइत ॥
भुजबल तंत्थ[20] अमलकिय भाऊ१९५।१, यह उदंत[21] कछु गिनहु अगाऊ
महिपहिं दै इम रीझ मुदित मन, जानि बहुरि सुत१भ्रात२भतीजन

१ सभा में बुलाया ॥ १ ॥ २ घर की ३ स्तुति करके ॥ २ ॥ ४ हाथी सहित ॥३॥ ५पहाड़गज नामक हाथी ६ घोड़ा ७ वेग का समूह ८ हे प्रभु ६ नाम ॥४॥ १० प्रसन्नता से ॥ ५ ॥ ११ अत्यन्त धनवान् ॥ ६ ॥ १२ छोटे भाई को १३ उज्जैन १४ प्यारे प्राण ॥ ७ ॥ १५ चाकरी पर १६ शीघ्र ॥ ८ ॥ १७आदि १८चहुवाण (शत्रुशाल) के पट्टे में १९ परम शोभा से ॥ ९ ॥ २० तहां २१ वृत्तान्त ॥ १० ॥

पूछि नाम१वय२इक्क१इक्क१प्रति, अप्पन लग्गो खिलत अर्घअति११।
अप्पिय प्रथम१ कुमर भगवंत१९५।३हिँ, इहिँ सु लयो न मन्नि नैं-
यमंतहिँ ॥

पुछत कारन भूप पर्यपिय, इहिँ ओरंग४०।३कुमर स्वामीकिय१२।
तातैं दत्त रावरो लेत न, बैरि यह इतके सम्वेतन ॥

मुगल६कहिय ओरंग४०।३हमारो, नृपसुत कहि तूही किम न्यारो
भूपहु साह सैनकरि भाखिय, लेहु खिलत प्रभुमत॰ अभिलाखिय
तदपि खिलत न लयो भगवंत१९५।३।१ सु, अक्खिय हम लैहैं इ-
तके असु ॥ १४ ॥

साहहु तब हसि कुमर सराह्यो, चिक्कन निंप न लिपन जल चाह्यो
दूजो२ खिलत२ दयो सुख मोदित, हुलसि कुमर चोथे४ भारत,
१९५।४।२ हित ॥ १५ ॥

खल स्वामी किय साहसुजा खल, साह कुपित इमँ आनि भृकुटि
सल ॥

कहि दुस्सह हेलैंन मुहुकम१९४।५।३ कँहँ, तीजो३ खिलत३रिसाइ
दयो तँहँ ॥ १६ ॥

याकोसुत जेठो१ जोरावर१९५।१।४, दयो खिलत४ चोथो ४ तिहिँ
सादर ॥

याको अनुज कथित छट्ठो६क्रम, सगतसिंह१९५।६।५ जगमोहन
१९५।७।६ सप्तम७ ॥ १७ ॥

पंचम५छट्ठ६खिलत तिन्ह पावत, इत ढग वैरिसल्ल१९४।३सुत आवत
जेठो१ वह गोपाल१९५।१।७ बुल्लि जँहँ, ताहि खिलत७ सप्तम अ-
प्प्यो तँहँ ॥ १८ ॥

---

१ बहुत मूल्य के ॥ ११ ॥ २ नीतिवान् ३ राजा ने कहा ॥ १२ ॥ ४ दान ५ इधर के साथ [इनके] शत्रु हैं ६ हे राजपुत्र ॥ १३ ॥ ७ प्राण ॥ १४ ॥ ८ चिकने घड़े पर ॥१५॥ ९ शाहजहां के द्वितीय पुत्र का नाम है १० इसकारण ११ अपराध ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

इंद्रसल्ल१९४।२ सुत दुव२हग आये, बलि रनछोर१९५।३।८ गुमान
१९५।८।९ बुलाये ॥
तीजो३अरु अंष्टम८क्रममैं तिन, अष्टम नवम९खिलत८।९पाये इन१९।
सुत दूजो२मधु१९५।२।१०राजसिंह१९४।४सन, × × × ॥
सता१९४।१अनुज छठ्ठो६ अरु सप्तम७, उदय१९४।६।११ सूर१९४।
७।१२ आंव्हय वर बिक्रम ॥ २० ॥
एगारहम११ बारहम१२इनकौं; खिलत११।१२दये समुचित लखि
खिंनकौं ॥
महासिंह१९४।९।१३ नामि नवम९ नृपानुंज, भट लिय खिलत१३
तेरहम१३ अतिभुंज ॥ २१ ॥
ताहीके तनयहु जेठे१।२।३त्रय, मान१९५।१।१४रु कनक १९५।२।१५
लाल१९५।३।१६ विक्रममय ॥
चहुहहम१४ पंद्रहम१५ खिलत१४।१५ चढ़ि, सह सोलहम१६मिले
इन्ह३ संगहि ॥ २२ ॥
इक१भगवंत१९५।३।१न लिय तिनमैं अरु, सूचिय हम इतके सैल१
नखरु२ ॥
तदनु समीप बुलाइ सता१९४।१ तँहँ, कटि तस धरि निज खास
खग्ग१ कँहँ ॥ २३ ॥
नृपहिं पास बैठानि ठानि नुतं, सो नृपअंक धरयो दारा१४०।१ सुत
पलित१पट्ट२सुत३सूचि अवधिपर,कहिय आँन तीन२न अब तो कर
पानी१ हग२ गद्गद१ स्वर२पावत, दिय भर साह नृपहिं बिरुदावत

---

१ फिर ॥ १६ ॥ २ नाम ॥ २० ॥ ३ उचित ४ समय देखकर ५ राजा का छोटा भाई ६ महाबाहु ॥ २१ ॥ ७ पराक्रम सहित ॥२२॥ ८ इधर को रोकने के लिये पर्वत और मारने को सिंह हैं, तथा नकार को निषेधार्थ में रक्खाजावे तो यह अर्थ भी हो सकता है कि हम इधर की भूमि को स्थिर रखनेवाले पर्वत नहीं हैं किन्तु खरु (क्रूर) हैं ९ जिस पीछे १० खड्ग ॥२३॥ ११ स्तुति १२ राजा की गोद में अपने पुत्र दाराशाह को रक्खा १३ अपने श्वेत केश १४ रचा ॥२४॥ १५ भार

उर लगाइ दारा४०।१नृप अक्खिय, रघुवर जो धर१पर सिर२रक्खिय
तो गहिय अप्प३हि रहिहो तिम, प्रभु२पीछैं एसहि दारा४०।१।२इम
हड्ड६१नपति यहकहि ठड्डोहुव, दुपयन धरत कंनक शृंखल दुव२
पिक्खि सु कुंम्मकुमर नर्म पचिय, रायसिंह१ कीरतिसिंह२ रचिय
कहिय सतां१९४नृप जरठ कहावहु, पय लंगरधरि किम छबिपावहु
अक्खिय अप्प रुप्यो रन रहनौं, गिनहु लज्जलंगर१ नहिं गहनौं॥
अनि भर कष्ट तदपि जो आवहिं, आडअद्रि इनमैं उरझावहिं २८
इनहिं घसीटि भजे तव अप्पहु, थिररहि हास्य जथामति थप्पहु ॥
कूरमनृप जयसिंहके कुमर, तहँ यहसुनि चुप भये न्हीतंतर ।२९।
सिक्ख भई वलि सब भट सभ्यन, भनिय साह सुभविधि बिनु लभ्यन,
तव सहाय बुंदीपति तावहु, अप्प सिबिरं दारा४०।१लैजावहु॥३०॥
सता१९४।१कहिय दारा४०।१प्रभुपासहिं, वहु विलसहु सुख भोग-
विलासहिं ॥
इम अवरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।२ हटावहिं, उँपदा१बिजय२ नि-
वदन आवहिं ॥ ३१ ॥
साह कहिय पुब्बंहि बरज्यो सुत, यह गो तउ भज्जन अवंति उत
इहिं वरजत हम अबहु रहन इत, मानत सो न मूढ वय मदमित ॥
यातैं नृप तवसंग पठावत, याहि सरन याहि न भय आवत ॥
तू नृप१अरु कासिम२जाफर३तिम, अरु साइस्तेखान४चउम४ इम
च्यारि४न सरन करत सुत मैं चहि, विधि कछु याहि बचावहु हित थंहि

॥ २५ ॥ १ खड़ा हुआ २ दोनों पैरों में ३ स्वर्ण के ४ लंगर पहने था ॥ २६ ॥ ५ जैपुर के कछवाहे के कुंवर ने हंसी की ६ बुड्ढा ॥२७॥ ७ शत्रुशाल ने कहा कि युद्ध में खड़ा रहना है इसकारण ये ८ लज्जा के लंगर हैं भूपण नहीं हैं ९ बुन्दी का आडावला नामक पर्वत इन में उलझैगा १० खैंचकर ११ आप भी १२ खड़े रहकर १३ बहुत लज्जित होकर ॥ २८ ॥ १४ सभासदों को १५ तहां १६ डेरे में ॥ ३० ॥ १७ भेट ॥ ३१ ॥ १८ पहिले ही १९ उज्जैन ॥ ३२ । ३३ ॥ २० हित करके

भूपकहिय तउ सिबिर न भेजहु, प्रस्थित होहिं हमहिं लै यह पहु ॥
पै इक अरज सुनहु दिल्लीपति, अज्जलोकै हम जिते नम्र अति ३४
साधत हुक्म रावरो सबविधि, निजधर्महिं रक्खन रंक कि निधि ॥
हम निजधर्म भंगकरि हजरत, होत मृतक जियतहि स्वदिष्ट हत
प्रभु हम धर्म भंग जनि पारहु, पुनि सब जितातित मरन प्रचारहु॥
हम सिर १ धर २ निज देत धर्म्महित, याहि रक्खि धन गिनत
अपरिमित ॥ ३६ ॥
पै सुतको प्रभुके प्रपितामह३१।१, गढ आमेर ब्याह क्रियसाग्रह
बलि प्रभुपिता३८।१जोधपुर ब्याहे२, ए दुव२विघ्न मुख्य अवगाहे ॥
इन२करि धर्म चतुर्थ४हु अंस न, विद्यमान अब बाहुज२वंस न ॥
सुनहु पुब्ब स्वामी अकबर ३७।१ सन, सत्त ७ करार लहे नृपसु-
र्जन १९०।१ ॥ ३८ ॥
दुर्ग तबहि रनथंभनाम दिय, कोलहु नियत लेख दैल ए किय ॥
न कैनी दैन१जान नोरोजन२, संसदै गमन इक१आयुध सन३ ।३९।
कबहु करैं न अटक उल्लंघन४, साह दाग न धरैं हय संघनैं५ ॥
बंब मुख्यतोरन लग बज्जैं६, अंज्ज अनुगव्है संग न सज्जैं७ ॥४०॥
लंघन१ संघन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अटक पार न गमन४यह इनमैं, खल पन मिलतजात उत खिनमैं
पुब्बहु सुर्जन ३८।१लगे पठावन, रतन१९२।१ भूप न गये रहँरावन
करि बैल सज्ज मरन स्वीकृताकिय, अटक गमन४तन१ मन२ करि
उज्झिय ॥

---

१ आर्यलोक ॥ ३४ ॥ २ धन ३ अपने भाग्य से हीन ॥ ३५ ॥ ४ संजा ५ प्रमाण रहित ॥ ३६ ॥ ६ आप के प्रपितामह ने ७ आग्रह सहित ॥ ३७ ॥ ८ क्षत्रियों के वंश में ॥ ३८ ॥ ९ निश्चय १० लिखावट के पत्र में ११ कन्या १२ सभा में ॥ ३९ ॥ १३ अटक नदी १४ घोड़ों के समूह में बादशाही दाग नहीं लगावेंगे १५ मुख्य द्वार तक नगारा बजेगा १५ आर्य राजा के सेवक होकर साथ नहीं जावेंगे ॥ ४० ॥ १६ रावण के समान हठ करनेवाला ॥ ४१ ॥ १७ सेना १८ छोड़ा ॥ ४२ ॥

प्रभु अप्पहु जब तत्थ पधारे, नृप हम सबहि रहे रुकि न्यारे॥४२॥
मम काका संगहि गय माधव१९३।२, धी हित गिनि तुम कियउ धराधव ॥
हुते कहा न और देवेहित, बूंदिय देस दयो रसुबर्धित ॥४३॥
बूंदीमाँहिं मऊ१ तिम बाराँ२।१, लखहु प्रान२ बूंदी१ बपु२ लाराँ॥
सोहि प्रान तुम कढ़ि समप्पिय, स्वास रहित बूंदी प्रभुअप्पिय ४४
हमरी१ भुव विधिवस तुमरी२ हुव,धर्यो हमहु आश्रय प्रभुको ध्रुव
धर्म रह्यो गिनि भूदुख२न धर्यो, सब अज्जनं प्रभुहुकम अनुसर्यो
अटकहिं लंघत रुक अज्ज इम,नह माधव९१३।२पायउ प्रसाद तिम
यह न गिनी धर्महि जिहिं उज्झ्यो, साधन जाहि लोभ इक सुज्झ्यो
अरि मम कोहु सबल जब ऐहैं, लंव तब पलटत यह न लगैहैं ॥
इम न इक्खि काका आढ्यकर्यो, बुंदिय प्रान जु देस सु वितर्यो
देते अप्प और बहु देसहि, बनाते सु हमतैं सु बिसेसहि ॥
तो हि उचित न परंतु अप्प तव, सो मम जीवन देस दयो सब ४८
को तँहँ मंतु अटकबिनु कढ्ढिय, बलि अब दैन हेतु का बँछिय ॥
आयउ करन जनक सुनि आतुर, तिम ओरहु हुव चलन त्वराँतुर
आतुर१ रातुर२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रोकि सबन मैं तब तत्थ रह्यो, चित्त उदय हजरतकोहि चह्यो ॥
आये आप संग तव आये, समुचित दंडहु सबन पुनि पाये ॥५०॥
तबहु मऊ१ बाराँ२ न दईतुम, सेवक भयो बिदल जौतीसुम ॥
दिय अब प्रभु किहिंकारन हरही, वितरन बिनहु हुकम सिरठहही

---

१ बुद्धि में २ भूपति ॥ ४३ ॥ ३ बुंदी रूपी शरीर के साथ ॥ ४४ ॥ ४ निश्चय ५ आर्य लोगों ने ॥ ४५ ॥ ६ प्रसन्नता ७ छोड़ा ॥ ४६ ॥ ८ दूण ९ धनवान् किया १० बुन्दी के प्राण रूपी ११ दिया ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १२ अपराध १३ कौन कारण पड़ा १४ बीकानेर के कुमार कर्णसिंह १५ पिता को १६ व्याकुल सुनकर १७ शीघ्रता में आतुर ॥ ४९ ॥ १८ दंड ॥ ५० ॥ १९ बिना पत्तों का चमेली का पुष्प २० बिना दिये ही हुक्म होवे सो मस्तक पर है ॥ ५१ ॥

निबह्यो पन तब अटक न लंघन, प्रानहु दैन करत अब हम पन॥
*अज्जन धर्म रक्खि प्रभु ऐसैं, पठवहु मरन काल रन पैसैं।५२।
है हम धर्महानि जिहिं हेतू, सुहि निवारि बंधहु बिच सेतू ॥
कोटिन अरज अरज यह इक्क१ हि, मित रक्खहु धन१ धाम२चमू३महि४ ॥ ५३ ॥

धर्महि इक्क१निबाहि अखैधन, सब जयकाम लेहु प्रभु हमसन ॥
करैं बिजय प्रभुको दुस्सह कलि, बढन आस प्रभुसौंहि चहैं बलि
मृधं लोदिन पहिलो१जग१मंडिय, खानजिहान पुत्र चउ४खंडिय ॥
भय बिहस्त लोदी लु भजायो३, जिम कोलागढ अमल जमायो॥
हुव तहँ रीझ लूट के गज१हय२, मन्नि तदपि मम अरज न्यायमय
काका हरि १९३१३ गुग्गेर अधिपकिय, हम सोही सब रीझ गिनी हिय ॥ ५६ ॥

दुर्ग दोलतावाद१ प्रमुख बलि, करि अधीन जीत्यो दूजो२कलि ॥
सो जय मिल्यो रावरे संगहि, उहाँ रही भुव मिलन उमंगहि॥५७॥
सिवप्रसाद१मुख कथित समप्पिय, अवनी लेसहु तबहु न अप्पिय
दक्खिन२।३कुमर सौंह पदवायो, प्रभुसासन तीजो३जयपायो।५८।
महि लै लक्खपंचहत्तरि ७५००००० मित, किय ओरंग४०।३ तंत्रै जस अंकित ॥

ओरहिं तबहु परगनाँ अष्टक८, पायो तउन मिल्यो निज नैष्टक ॥
पै हम धर्म हानि जब न परी, क्रम बढिबढि सेवाहि तय करी ॥
लखिधर्महि इक१अटक न लंघिय, सब तहँ परेरहे प्रभु संघियें॥
बिक्खिं धर्म दृढ तब न बिसासे, तुम प्रत्युत दंडि रु सब त्रासे ॥

---

* आर्यों का ॥ ५२ ॥ १. कारण २ मर्यादा ३ न्यून ॥ ५३ ॥ ४ युद्ध में ५ फिर ॥ ५४ ॥ ६ लोदी यवनों से प्रथम युद्ध में ७ भय से व्याकुल ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ८ आदि ९ युद्ध ॥ ५७ ॥ १० आदि ११ बादशाह के ॥ ५८ ॥ १२ आधीन १३ अपना नाश हुआ परगना नहीं मिला १४ साथ में ॥ ६० ॥ १५ देखकर १६ उलटे

ताहि मम काकाहिं दिवायो, प्रभु प्रसादै सो मैं ममपायो ॥ ६१ ॥
हंग गो बधन१सुरालय ढाहन२, बूंदिय दिल्लिय अवधि निवाहन३॥
बेनुसिक्खहि पाउस गेह बसन ४, पाये कुमर भोज १९१।२ इ-
ति मुख पन ॥ ६२ ॥
प्रभु जो लिखित निदेसहु पलटैं१, हद जो न गिनि समुद्रहु नहटैं२॥
नभविच अधर मही जो न रहैं३, वट्ट संतत रवि१ससि२जो न वहैं ४॥
विधिप्रपंच तो अखिल विनासैं, पन निजनिज सब जो न प्रकासैं
अवतैं धर्म निवाहहु अंज्जन, सज्जन समर खरे हम सज्जन ।६४।
मृधं गंजैं ओरंग४०।३।१मुराद४०।४।१हिं, वढ्ढैं संजव सत्रु छलबादहिं।
इहिं संकल्प देव अनुसरिहैं, कै जय१कै उपदा सिर२ करिहैं ।६५।
जोलौं हम धर१ सिर सिर२ जानहु, तौलौं सतनैंय प्रमदैं प्रमानहु॥
यह करि अरज सिबिर नृप आयो, संगर उचित बरूथ सजायो ।६६।

॥ दोहा ॥

साहपास प्रासादही, रक्खि कुमर दारा४०।१ सु ॥
भूप चढत मिलिहैं भनि रु, आयो स्व सिबिर आसु ॥ ६७ ॥
रासु१ आसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥
सेर१९२।२ तनय विठ्ठल१९३।१ सुभट, आयो तामें न एह ॥
किय निंदा तस सूचकन, नृप न सुनिय करि नेह ॥६८॥
तंदनु प्रात करि सिक्ख तँहँ, भूप कुमर भगवंत१९५।३ ॥
स्वामी निज ओरंग४०।३सन, मिल्यो जाइ मृधमंत ॥६९॥
अरु चोथो४ सुत भूप इत, समुझायो सविसेस ॥
तव वय अबहि न रन तलंप, सयन उचित अतिसेस ॥७०॥

---

१ प्रसन्नता ॥ ६१ ॥ २ मंदिरों को गिराना ॥ ६२ ॥ ३ आकाश में ४ मार्ग में नि-रन्तर ॥ ६३ ॥ ५ ब्रह्मा की रचना (सब लोक) ६ आर्यों को ७ युद्ध के प्यारे ८ हम मित्र होकर खड़े हैं ॥ ६४ ॥ ९ युद्ध में १० शीघ्र ११मस्तक भेट करेंगे ॥६५॥ १२ शरीर के ऊपर १३ मस्तक १४ पुत्र सहित १५ हर्ष १६ सेना ॥ ६६ ॥ १७ महलों में ही १८ शीघ्र ॥ ६७ ॥ १९ तहां ॥ ६८ ॥ २० जिस पीछे २१ युद्ध के विचार से ॥ ६९ ॥ २२ युद्ध शय्या सोने की ॥ ७० ॥

बिसेस१ तिसेस२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥ न॥
करनजोरि भारत१९५।४ कुमर, बिन्नति किय प्रति*बप्प ।२।
भारतसिंह१९५।४ ।ममाऽभिधा, अप्पी क्यौं प्रभु अप्प॥७१॥
मम यहनाम लजाइ मैं, भज्जि दुरौं किम भौन ॥
जुद्ध जनक अग्गैं जुरौं, पय१ पब्बय२ कर पौन२ ॥७२॥
आलय भेजन प्रसभ अति, जदपि सता१९४।१ किय जाहि ॥
करि साहस चोथे४कुमर, तदपि नमन्निय ताहि ॥ ७३ ॥
क्रय१ बिक्रय२ स्वीकारकरि, प्रानन के व्यापार ॥
बनिक तुला आरुहि सवय, किय बहु सज्ज कुमार ॥७४॥
धार१ अनी२ लग्गी छुपन, लोहन सानन लेह ॥
पटु बारन रन पाहुँनैं, दीसन लग्गे देह ॥ ७५ ॥
मुच्छैं१ भौंह२नसौं मिलन, जिमजिम सुग्ग जाइ ॥
इत अति संम्मद अच्छरिन, उत तिमतिम अधिकाइ ॥ ७६ ॥
अंज्ज१ जवन२ दल हुव अतुल्ल, आकारितैं एक१त्र ॥
उब्बट२ वह पाउस उदक, तुल्ला न पावत तत्र ॥ ७७ ॥
नर१ बाहन२ आयुध निकर, जिततित पिक्खजात ॥
जिन्ह संचय अति दर्प्प जगि, मनमन जयहि जनात ॥७८॥
भवतैं मुरि अंज१ विष्णु१ भव३, स्वर्ग४ बिमत्र हिय साहि ॥
दैन परंभव१ दुर्जनन, संभव२ लेत समाहि ॥ ७९ ॥
दान१पठन२जय३मह४दिपत, हवन५सउच६तियहान७ ॥

*पिता प्रति | मेरा नाम ॥७१॥ १ पिता के आगे २ पैरों को पर्वत और हाथों को पवन रूपी-करके ॥७२॥ ३ घर भेजने का हठ ॥७३॥ ४ लेना देना ५ अपनी समान अवस्थावालों को ॥ ७४ ॥ ६ तलवारों की धारा ७ भाले आदि की अ-णियें उज्वल होनेलगीं ८ सांग चाटने लगा ९ चतुर वीरों को ॥ ७५ ॥ १० हर्ष ॥ ७६ ॥ ११ आर्य १२ बुलाये हुए १३ वर्षा ऋतु का जल १४ बराबरी नहीं पाता ॥ ७७ ॥ १५ समूह १६ घमंड ॥ ७८ ॥ १७ संसार से मुड़कर १८ ब्रह्मलोक १९ कैलास २० पराजय ॥ ७९ ॥ २१ उत्सव २२ होम २३ स्त्रियों का त्याग (ब्रह्मचारी)

पृतना१ अज्जन२ सुभट प्रति, वरतत सरिस विधान ॥ ८० ॥
संध्या न्हयइ३ गंगा सलिल, आप्लव पूत४ अधीस ॥
इह६१ उपासैं इष्ट हरि, स्वकुल धर्म धरिसीस ॥ ८१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे यवनेन्द्राच्छत्रुशल्यदशप्रान्तप्रापणपुत्रबान्धवादिपारितोषिकासादन १, बारांमऊप्रान्तानधिगमहेतुधर्मोद्देशमुख्यताप्रतिपादनपुरःसरानेकोदाहरणपूर्वकशत्रुशल्ययवनेन्द्रनिवेदन २, यवनेन्द्रान्तिकदाराशिकोहरक्षकशत्रुशल्यरणसज्जीभवनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥

आदितश्चतुर्विंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥
प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुभट१सस्त्र२वाहन३सिलह४, बानौं नरन बटाइ ॥
रोकि इतर गोचर५रहे, असह आगरा आइ ॥ १ ॥
जवन१न चलन कुरान२जिम, अज्ज१न श्रुति२ अनुसार ॥
क्रम चिंतन१अर्चन२कलित, होत उचित व्यवहार ॥ २ ॥

---

१ सेना २ आर्यों की ॥ ८० ॥ ३ स्नान ४ पवित्र ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में बुंदी के राव शत्रुशाल का बादशाह की ओर से दश परगने और पुत्र बान्धवादिकों को खिलत मिलना १ बारां और मऊ का परगना पीछा नहीं मिलने के कारण धर्म को मुख्य बताकर बादशाह से शत्रुशाल का अनेक उदाहरणों सहित निवेदन करना २ दाराशिकोह को बादशाह के समीप रखकर शत्रुशाल का युद्ध के अर्थ सज्जित होने का बारहवां १२ मयूख समाप्त हुआ आदि से २२४ मयूख हुए ॥

५ युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह ६ देखते रहे ॥ १ ॥ यवनों का चलन कुरान के अनुसार और आर्यों का चलन ७ वेद के अनुसार होकर क्रमपूर्वक चिन्तवन और ८ पूजन ९ विदित होते रहे ॥ २ ॥ अब आगे पावस के रूपक से सेना का वर्णन करते हैं ॥

*पाउस घन घनपन१ †प्रतिम, पुहवी ‡दलन प्रपात२ ॥
कढि लहरू१ कि प्रसार कौं, जनता२ जिनतैं जात ॥ ३ ॥
इंद्रायुध१ केतन२ उदित, चपला१ असिवर२ चंड ॥
गति खद्योत१ फुलिंग२गन, बक१ बारन द्विज दंड२ ॥ ४ ॥
गज्जन१ बज्जन२ भेरिगन, फुर्ज्जहु१ तोपनफेर२ ॥
चातक१ घंटा२ चीरिका१, सिंजित२ दिखवत सैर ॥ ५ ॥
अज्ज१ जवन२ इम आगरा, आये सब आहूत ॥
भूप बिसालातैं भजे, दुरि घर न लखैं दूत ॥ ६ ॥
जथा जोधपुर१ आदिजे, आये व्हीतैं न अत्थ ॥
रायसिंह२ संसय रहत, सुनहु स्व निश्चय सत्थ ॥ ७ ॥

पादाकुलकम् ॥

इक्खे साह सुभट सब आये, पैं कति तदपि न हाजरि पाये ॥
गेह अवंति जुद्ध तजि जे गय, रिसकरि बुल्ले तेहु बड़े रय ॥ ८ ॥
त्रपा१ बिदुर२ सब तजि भय आतुर, पत्तो भजि जसवंत१ जोधपुर
तनया कर्मवती १९५।१ जु सता १९४।१ की, एह हुती रानी तँहँ याकी ॥ ९ ॥
बासंक हो ताको तिहिं बासैर, बिस्यो तसाहि प्रासाद धरावर ॥
इहिं रानी पति सुनि भजि आयो, रटत महानस लोह रुकायो ॥१०॥

* वर्षा काल के अत्यन्त मेघ के † समान पृथ्वी पर ‡ सेना का पड़ाव हुआ १ मनुष्यों के समूह का उत्पन्न होना ही जहां मेघ की लहरों का फैलाव हुआ ॥ ३ ॥ २ ध्वजाओं का उदित होना ही इन्द्र धनुष ३ भयंकर खड्ग ही विद्युत् ५ अग्निकण ४ जुगुनू, और हाथियों के ६ दांत जहां बगुले हुए ॥४॥ ७नोबतों के समूह का बजना ही मेघ की गर्जना, और तोपों के फैर ही ८ बिजुली की कड़क, हाथियों के वीर घंट ही चातक और १० झूपर्णों के शब्द ही जहां ९ झिल्लियों की ११ शोभा दिखाते हैं ॥५॥ इसप्रकार आर्य और यवन १२बुलाये हुए आगरा में आये १३ उज्जैन से भगेहुए राजा घरोंमें छिपगये जिनको दूतों ने नहीं देखा ॥ ६ ॥ १४ लज्जित ॥ ७ ॥ १५ तौ भी १६ उज्जैन का १७ वेग से ॥ ८ ॥ १८ लज्जा १९ भय से व्याकुल ॥ ९ ॥ २० बारा २१ उस दिन २२ प्रवेश किया २३ भूपति ने २४ रसोई में लोहे का बजना बंद करवा दिया ॥ १० ॥

आलय सत्र दुराइ दूर२ अरे, इभरद३ वलयें ढंकि पटअंतर ॥
छोनी. वह पगमंडन छाई४, अप्प व्यंजन गहि सम्मुह आई५ ।११।
दासिन वदिय वधाई वंटन६, खिन तिहिं टारि वाजनैं भूखन७ ॥
वलि लैजाइ तल्पें वैठार्यो८, पयदव्वन लगि९ हरख प्रसार्यो१०
अधिप न समुझि व्यंग्यजुत इनकों, चविय ढकहु क्यों कर चूरिनकों ॥
वदिय प्रकट गजरद वलया११ वलि, विघ्नकरैं प्रभु रहन इहाँ१२वलि॥
वरज्यो हनहि महानस वज्जत१, सिंजितें के न भूखनहु सजत२ ॥
स्वानि लखन चिरेंकारि हुव संभव, अहु तामैं जिन होइ विघ्न लव।
यह समुझि रु मैं रातिकरी यह, सुनि सु कवंध १ सिटायो छवि २ सह ॥
वहुरि राह जसवंत वुलायो, इहिं आगसैं सो ह्रीतें न आयो ॥१५॥
रायसिंह१ भजि तिम टोडा रहि, दुर्धर भीम जनैंक जस सुत दहि॥
अंदर पैठि न वाहिर आयउ, तस जस नारि उदार तनायउ ॥१६॥
सुपै न तब दिल्ली जाइसक्यो, तजि वाहिर१ अंतर२ रहन तक्यो ॥
गहतें किते भजि गो भय साग्रह, अनरसिंहसुंत रायसिंह२यह।१७।
नृप जसवंत भतीज निहारहु, धी नागोरैंपुराधिप धारहु ॥
सूचत किते अवंती रनसैंन, भज्यो सु वीकानेर भूमिधंन ॥१८॥

---

१ शीघ्र २ हाथी दांत का ३ चूड़ा कपड़े से ढका ४ भूमि को ५ पंखा लेकर ॥ ११ ॥ ६ शय्या पर बिठाना ॥ १२ ॥ ७ इस व्यंग्य में राजा यशवंतसिंह नहीं समझा ८ कहा कि चुड़ियों को क्यों ढकती है ९ राणी ने प्रसिद्ध कहा १० हाथी दांत का चूड़ा११ बलवान् है सो फिर आपके यहां रहने में विघ्न करेगा ॥ १३ ॥ १२ रसोवड़े में १३ बजनेवाले भूषण भी नहीं पहने १४ बहुत समय से आपका देखना हुआ है १५ शीघ्र ॥ १४ ॥ १६ इस अपराध से १७ लज्जित होकर नहीं आया ॥ १५ ॥ १८ पिता भीमसिंह के यश को जलाकर ॥ १६ ॥ १९ कितने ही कहते हैं २० यह रायसिंह अमरसिंह का पुत्र था ॥ १७ ॥ २१ बुद्धि में २२ नागोरपुर का अधिप २३ उज्जैन के युद्ध से २४ राजा ॥ १८ ॥

पै वह रायसिंह ३ अति*पुव्वहिं, अकबर३७।१ समय हो पव-
न१†न्हीर२ अहि ॥
जहाँगीर३८।१ लग संभव जाको, तबको सुनहु उदंतहु ताको१९
यह प्रेबया परन्यो भटियार्नी, जो वय१ रूप२ अतुल जगजानी ॥
यह नोरोज स्व तरिन आई, सुगल६नयन१ उर२ लखत न माई २०
दृगदृगामिलत मिले मन दोहुरन, कतिदिन कढ्यो बिरह खिन
कोहु न ॥
रायसिंह ३ सुहु जानि सहिरह्यो, यह१ गढ़िर२ वैभव३ देस४
लहिरह्यो ॥ २१ ॥
हुव दिल्ली चिरै वास हवेलिय, जत्थहु जाइ साह किय केलिय ॥
कैद मुहुम्मद तकी१ खुरम३६।२।२ किय, जिहिं कहुँ साह बि-
जनै लहि जंपियं ॥२२॥
अहो रैन१९२।१ नृप मम आलोचैंत, गयसिंह३ भीरुकर्पन रोचत॥
है हमसंगम कबहु हवेलिय, करन तास रानी सन केलिय ।२३।
इम असगोत्र१ सजातीय२हि तव, सजहु नैर्म कहि असह मर्म
सव ॥
असि १ फेर२ ताहि रैन१९२।१ तुम अप्पहु, थाहनै मोहि हन-
न मति थप्पहु ॥ २४ ॥
तुमरे नर्म लजि रिस तानैं, असि१ फर२ गहि मुच्छहु कर आनैं॥
पुरुखारथ १ तो तास प्रमानैं, जो नहि तो बैं असत्वै२हि जानैं ।२५।

---

* बहुत पहिले † पवन रूपी लज्जा को खानेवाला सर्प "सर्प का नाम पवना-
शन है" इसकारण पवन रूपी लज्जा को खानेवाला कहा सो इस निर्लज्जता
का कारण आगे वताते हैं ॥ १९ ॥ १वृद्ध अवस्था में२अपने (बादशाह के) द्वार
पर ॥ २० ॥ २१ ॥ ३ बहुत समय तक ४ क्रीडा ५ एकान्त में लेकर६कहा॥२२॥
७ मेरे विचार से ८ कायरपन ॥ २३ ॥ ९ एक ज्ञातिवाले १० हँसी. हे रत्नसिंह
११ ढाल तलवार देकर उसके मन का१२थाह लेने के लिये मेरे मारने की मति
स्थापन करो ॥ २४ ॥१३ अब १४ बलहीन ॥ २५ ॥

जुवती भोगसक्ति१ ह्वै जामैं, सो नर जार२ सहै न सभामैं ॥
सह्वि रहस्य साह१ नरनाह२मु, रचि नोरोज मुगल६ किय राहसु
मस्जिद लग गो जात१ तियनमैं, मन्त्रिय श्रात२ कही सु कियनमैं
यह तब भेजि हुरमजन अग्गहि, मुग्यो भटन संगत तस मग्गहि॥
प्रविसि हवेली तजि ठाँ प्रवहन, नालि चाढ सु सहसा रहौ नवहन
रायसिंह३ दंपति२ जहँ राजत, ताहि महल्ल गो साह मदन तत२८
लखि तजि तल्प सलाम करि लज्यो, भेट तिय सु करि नृप नि-
कसि भज्यो ॥

हुतो प्रैकोष्ठ प्राहरिक रैन१९२१२हि, बुल्ल्यो सो असहन कटु बैनहि
मम असि लैं रु मुरारि वीर बनहु, हम१ तुम२माँहिं जाहु साह हनहु।
नृप असि रायसिंह३ जब न लयो, भरि स्वर तार साह कहतंभयो
प्रसभ राव राजा किम पावत, यह काहूकी दई न आवत ॥
अखिलन सन्नि रत्न१९२१२ अपराधी, बचै अब न जान्यो प्रभुबाधी
सु किय परंतु साहके सम्मत, गंदी कछु न इम साह मर्म गत ॥
रायसिंह३ नृप१की यह रानिय१, याकी बहिनि२ देवरहु आनिय ॥
पृथ्वीराज२अनुज निज पति२को, सो व्यांह्यो इहिं धर्म सुमतिको
ही स्वसा१२ सु देरानी२इमं हुव, दिष्टे तत्र इक१घर आई दुवर ।३३।
कबहु कहिय जेठी १ अनुजा २ कहँ, जुग२हि करैं इक१ थाल
असन जहँ ॥
अनुजा२कहिय छुयो तव अंसहि, छत्र२कुलीन पिवे सु अछभहि३४

१ स्त्री के भोगने की शक्ति २ सलाह ३ बुन्दी का राव रत्नसिंह ॥ २६ ॥ ४ जाते समय ५ साथ ॥ २७ ॥ ६ नरयान (तामजाम) ७ लज्जा ८ स्त्री पुरुष ९ कामदेव के कारण ॥ २८ ॥ १० शय्या ११ द्वार पर १२ रत्नसिंह पहरायत था ॥ २९ ॥ १३ उच्च स्वर से ॥३०॥ १४ हठ १५ सब ने १६ स्वामी को मारनेवाला ॥ ३१ ॥ १७बादशाह की सलाह से १८ इस कारण बादशाह ने कुछ नहीं कहा ॥३२॥ १९ छोटा भाई २० बहिन २१ भाग्य के वश होकर ॥३३॥ २२बड़ी बहिन ने २३छोटी बहिन से कहा २४भोजन २५तेरा स्पर्श किया हुआ जल भी ॥३४॥

अनखे सु सुनि जेठी१उर आई, साहहिँ इम बनि पिसुन२ सुनाई ॥
मोमैँ रूप कहा प्रभु मानहु, जामि अनुज३ देवर घर जानहु ॥३५॥
तिनहु रूप मोमैँ नहि ताको, वह किन इक्खहु पुंज प्रभाको ॥
अँख्यो मुगलँ६ जब ताहि बुलावन, पित्थल ३।१ हो हरिभक्त सु पावन ॥ ३६ ॥
इहिँ संकट जिहिँ उमा उपासिय, कँच्छ वासिनी पच्छ प्रकासिय
स्वप्न कहिय मैँ १ ह्वै तव तिय २ सम, दलिहौँ दर्प मिच्छको दै दंम ॥ ३७ ॥
पै मम जान न पिहितैं पठावहु, तव तिय अतुल लखैँ जग तावहुँ ।
तिम नृजान भेज्यो पित्थल तह, सब पुर भनिय अतुल छवि साग्रह
मर्दित जाय कर्यो मुगलेऽसहिँ, लज्ज्यो तव तजि नरपन लेसहिँ।
अरु किय नियम कुँसुम १ तिय २ तू १ अँलि २, बीकानेरनैं न मंगहु बँलि ॥ ३९ ॥
बिमति रह्यो किन व्यूँढ १ बुलैबो, पै अबतैं डोला२ हु नपैबो ॥
साह दियउ लिपिर्दल सुहि स्वीकरि, टार्यो बीकानेर गयो टरि ।४०।
कतिक कहत जेठी१ यह कन्या, रायसिंह३।१ न बरी धँव धन्या
सो १ गिनि हुरम बरी जवनेस१हि, अनुजा २ तस पित्थल २ बरि एसहि ॥ ४१ ॥
आनी बहुरि गई पिउहर ए२, असँन निमित्त सुरी हठपर ए२ ॥
जेठी१जाइ साहप्रति सूचिय, तव बलकरि बुल्ली अँनुजा२तिय ४२

१ क्रोध २ चुगल खोर होकर ३ छोटी पहिन ॥ ३५ ॥ ४ कांति का समूह ५ हठ किया ॥३६॥ ६ देवी की उपासना की ७ कच्छ देश में निवास करनेवाली राजबाई नामक चारण कुल की देवी ने ८ पक्ष ९ दंड ॥ ३७ ॥ १० यान ११ छिपाकर मत भेजना १२ तहां ॥ ३८ ॥ १३ मनुष्यपन १४ स्त्री रूपी पुष्प का १५ भ्रमर १६फिर ॥३९॥ १७विवाही हुई को बुलाना तो कहां रहा १८लिखावट १९ स्वीकार करके ॥४०॥ कितने ही कहते हैं कि उस बड़ी कन्या जिसका नाम राजपूताने में "नाथी भटियांणी" प्रसिद्ध है जिसको २० प्राप्त होकर रायसिंह ने नहीं विवाही थी ॥४१॥ २१ भोजन के कारण २२ छोटी बहिन को ॥ ४२ ॥

भक्तन मति पित्थल१स्तवही भजि, सो उमाहु भक्तहिं अवसर सजि
जो पठई अपिहितं तिय जैसैं, तँहँ ह्वै सिंह त्रास दिय तैसैं ॥ ४३ ॥
जंगल४ तिय न चहैं सु जवन जिमं, अंबा लिखित कराइ लयो इम।
इमहु होहु हमहिं न कछु आग्रह, साह १ हुरम १ अनुजा २ पित्थल
२ सह ॥ ४४ ॥
नत्थी १ तिहिं भटियानी १ नामहु, कहत कृति रु तासहि यह
कामहु ॥
तो यह वत्त होहु ऐसैं तँहँ, करन चही निजसम अनुजा१कँहँ ।४५।
अंबा किय अनुजों २ सहाय इम, जस जिततित पित्थल१को हुव
जिम ॥
रायसिंहकी कोउक रानी, मुगल६राज तों ओरहि मानी ॥४६॥
पै लापर निंदाकरि पित्थल२, किय अग्रज१ अपजस कोलाहल॥
कहिय भ्रात१ वपु मळ्यो कंनकमैं, नक्क रु१ पग्घ२रहे न तंनकमैं।
जाँमि वडी१पित्थल२तिय२की जो, रायसिंह१अग्रंज१न वरी जो ॥

१देवी ने भी २प्रसिद्ध ३ सिंभ*॥४३॥ ४जंगल धरा (वीकानेर के राज्य) की ५ देवी ने ६हमको हठ नहीं है ॥४४॥ ७ नाथी ८ उसी से यह कार्य हुआ ९ अपने समान छोटी बहिन को करनी चाही ॥ ४५ ॥ १० देवी ने ११ छोटी वहिनकी सहाय की ॥ ४६ ॥ १२ स्वर्ग में १३ कुछ भी नहीं रहे ॥४७॥ १४वड़ी † वहिन

* इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि पृथ्वीराज द्वारका गया तब चंडारया नामी ग्राम में उसको राजबाई नामकी चारण जाति की स्त्री मिली जो उस समय शक्ति का अवतार मानी जाती थी उसने प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहा कि तुममें काम पड़े तब मुझे याद करना इसकारण पृथ्वीराज ने इस कष्ट में याद करी सो उस देवी ने पृथ्वीराज की स्त्री का रूप किया और महायान पर बैठकर वह देवी बादशाह के समीप गई ताव उसको महायान से उतारने के लिये बादशाह समीप गया तब देवी ने सिंह का रूप करके उसको त्रास दिया और राजाओं की स्त्रियों को फिर नोरोज में नहीं बुलाने का प्रण करालिया ॥

† बीकानेर और जसलमेर के इतिहासों से सिद्ध है कि, जैसलमेर के रावळ हरराज के तीन पुत्रियें थीं जिनमें एक तो नाथी नाम की बादशाह अकबर को परणाई और दूसरी गंगा बीकानेर के राजा रायसिंह को और तीजी चंपा (चांपा) रायसिंह के भाई पृथ्वीराज को परणाई थी सो यहां नाथी को राजा रायसिंह की राणी लिखकर उसका अकबर के साथ व्यभिचार लिखा सो मिथ्या है ॥

तो वह१ होहु साह१ ब्याही तिम, अरु पिथल '२ तिय२ सील बच्यो इम ॥ ४८ ॥
रायसिंह१ नृपकी तउ राँनी१, ओरहि कोहु साह उरऋाँनी ॥
मुनसब१ सप्तहजारी७००० सम्मद, पायउ रायसिंह३।१ राजापद२
बहु परगनाँ३ बसन४ भूखन५वलि, करी६तुरग७पाए तिय मुक्कलि
सजातीय१ अरु बिजातीय२ सब, ताको अपजस करनलगेतब५०
रायसिंह१ कविलोकन रक्खिय, दान पटा१ मनि२ धन३ लक्खन दिय ॥
सो कवि जबहि बारहठ संकर, उज्झि जोधपुर बास१ ग्रास२ अर
चंपाउत गोपाल जंगचहि, लगे न जे तिन्ह सबन यहै लहि ॥
संकर१ सह खट६ दरसन खेला, बीकानेर गयो तिहिं वेला ॥५२॥
रायसिंह ३।१ कवि कहँ तिय२ रोधिय, पट्ट लिखित करि दई पलोधिय१ ॥
तास ग्राम दसअग्ग दुसंत २१० तब, संकर खट६ दरसनहिं दये सब ॥ ५३ ॥
कविसंकरहित बहुरि रीझकिय, पुर नागोर२त्रिलक्ख३००००० पटा दिय ॥
बीकानेर बढ्यो तबतैं तँहँ, किय इम रीझ घनैं सुकविपन कँहँ।५४।
जान्यौं कवि टारहिं तिय अपजस, बरख्यो इम वसु[11]बिंदु त्रपा[12]बस॥

---

१ बादशाह की विवाही हुई ॥ ४८ ॥ २ हर्ष सहित ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ स्त्री को भेजकर ५ अपनी जातिवाले और दूसरी जातिवाले ॥ ५० ॥ ६ छोडकर ७जीविका ८ दीर्घ ॥ ५१ ॥ ९ मारवाड़ में ब्राह्मण चारण आदि को * खट दरसन कहते हैं १०क्रीड़ा सहित ॥५२॥५३॥५४॥ ११धन रूपी बुन्दों से१२लज्जा

---

* मारवाड़ में ब्राह्मण १ चारण २ संन्यासी २ (हिन्दू साधुमात्र) जती ३ (जैनी साधु) फकीर ५ (यवन साधु) और देवताओं के पुजारी क्षत्रिय ६ (जैसे रामदेवजी के [illegible] तँवर क्षत्रिय हैं) इनको खट दरसन कहते हैं अर्थात् ये छहों दर्शन करने योग्य हैं ॥

पै न टरैं ऐसे कलंक पंवि, क्यों न उपाय करहु कोटिन कवि ।५५।
जु यह रायसिंह३१२का कथा जिम, अकबर३७१ छत हुव कहत किते इम ॥
बूंदीपति तँहँ भोज१९१।२ विचारहु, नेम सु तब तस रचित निहारहु
पै इहिं रायसिंह३१ संभव पर१, अचिर जहाँगीर३८।२ रु चिर३अ-कवर३७१ ॥
जो अब भज्यो जुद्धतें अतिजव, सो यह न तँहँ द्वै६हिको संभव५७
रायसिंह टोडा१ रानाउत, सह नागोर२ कबंध अमरसुत ॥
इनमैं इक१कै द्वै६हि भजे अरे, साहजिहाँन३९।२ साहके अवसर
ए२ हु साह आँहूत न आये, जिम जसवंत१।३ सु तिमहि लजाये
बीकानेर करननृप तब हों, जुगर८ठाँ रायसिंह जुगर जंवहो ॥५९॥
पुव्वै कथित करि मंतु कर्यो पहु, आयो नहि तब१को भीतें अवंहु ॥
भजि रन तब द्वैरही ए भूपति, हीत रुके आवनमैं लखि हँति ॥६०॥
तमँकि साह अददी पठये तह, दुसहँस २००० दम्म अक्खि दँस प्रतिग्रह ॥
अप्पि दमहु ए बहुरि न आये, बलिबलि तिमासिर दम्म बढाये ।६१।
भनत किते इम वढतवढत भय, प्रतिदिन दिय अयुत १००००हु दम रुप्पय ॥
आये तउ न पाइ साध्वस१ अति; प्रतिदिन कुपित सह्यो सु जव-नपति ॥ ६२ ॥

के वश होकर १ वज्र रूपी ॥ ५५ ॥ २ हँसी ॥ ५६ ॥ जहाँगीर के समय में ३ अनिश्चय और अकबर के समय में ४ निश्चय है ५ अत्यन्त शीघ्र ॥ ५७ ॥ ६ शीघ्र * ॥ ५८ ॥ ७ बुलाये हुए ८ दोनों जगह दोनों रायसिंह थे ॥ ५९ ॥ ९ पहिले कहा हुआ १० अपराध ११ डरकर १२ लज्जित १३ हानि ॥ ६० ॥ १४ क्रोध करके १५ रुपये १६ दंड के १७ प्रतिदिन ॥ ६१ ॥ १८ भय ॥ ६२ ॥

---

* उज्जीण के युद्ध सें अनेक इतिहासों से टोडावाले सीसोदिया रायसिंह का ही भागना सिद्ध है ॥

इत ओरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।२ अवंतिय, पट्ठु[1] करि निखिल घायलन पंतिय ॥

उचित रीझ सब बीरन अप्पिय, मग लखि चरन कुंच भुव मप्पिय
दुवरहि भीरले इम सब दक्खिन३।२, पट्ट१ लहन गंजन परपक्खिन[2]
जुग२ हि साहज़ादे तदनंतर१, हैं रहैं[3] हंके अकबर३७।१ हरे[4] ।६४।
दम्म[6] इक्क१ पर बाजीगर हुव२, इमदिल्ली१पर ए२ हंकतहुव ॥
दसँ १० मैं जोहि सता १९।४१ वृद्धिदसा, लिय छट्ठो ६ परगनाँ भेलसा६ ॥ ६५ ॥

तस सीमाढिग है बेल तिनको, उत्तर७।४बढयो ग्रीखम कि[10] इनको[11]॥
इम कढि देस निषधमग अंतर, कालीसिंधुकेर पेरतट पर ॥६६॥
निषधा१पुर जु बजत अब नरउर१।२, धारी जँहँ नल भूप राज्य धुर
ठहे तँहँ साहसुतन दल हंकिय, अग्गैं मग जोजन जुग२ अंकिय ।६७।
कछु मुकाम ग्वालेर निकटकरि, सेनापति न बुझि क्रम अनुसरि ॥
सैनन संधि दुहुन दिट्ठी[12] दिय, लैनन बंधि हाजरी तँहँ लिय ॥६८॥
इत आगरा सोहि क्रम अनुसरि, कासिमखान १ सता १९८।१।२ सम्मत करि ॥

जितो स्वचक्क[13] कुमर दारा ४०।१ जब, सह हाजरी सम्हारिलयो सब
उत१तैं वे भ्राता दुव२आये, धीर बीर इत २तैं ए धाये ॥
दलन हक्क फुट्टिय देसंतर, इत१उत२बढे मिटावन अंतर ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

चतुरंगिनि[14] हुव चंक्रमन, रन अंगन भुव रीझि ॥
हिय जसप्रीत[15]१न हुल्लसे, स सभीतन[16] गय सीझि ॥ ७१ ॥

---

१ सब घायलों को निरोग करके ॥६३॥ २ शत्रुओं को ३ जिस पीछे ४ धीरे धीरे ५ अकबर के पोते ॥६४॥ ६ एक रुपये पर ७ ऊपर कहे हुए दस परगनों में ८ इजाफे में ॥६५॥ ९ सेना १० किनारे ११ ग्रीष्म का सूरज ॥६६॥६७॥ १२ दृष्टि ॥६८॥ १३ अपनी सेना ॥६९॥ ॥७०॥ १४ चतुरंगिणी सेना का गमन हुआ १५ यश में प्रीति रखने वालों के हृदय प्रफुल्लित हुए और १६ वहाँ हृदय भयवालों के जल गये ॥७१॥

दुन्द२दिय क्रमत अनीक दुवर,*मह सह दुवांटामंक ॥
बारा अंकन विप्फुरे, बंकनकह्हन बंक ॥ ७२ ॥
अज्ज१ जवनदल उज्झले, रिपुन लवन आरंभ ॥
पलटे थिति१ दिन जिम प्रलय२, उलटे सिंधुन अंभ ॥ ७३ ॥
केतु४न पखर५न कंकट६न, बीर४न बाह५न बात ॥
छोनी मग दुहुँ२घाँ छई, अहि१धोनी२अकुलात ॥ ७४ ॥
गद्दी रक्खन इत१गरज, उत२लरि लैन उपाय ॥
जोध रचन रन जय जत्तन, करैं बचन१मन२काय३ ॥ ७५ ॥
प्रतिरन भावत धोलपुर, ठाम जंनावत ठीक ॥
निधिपर धावत रंक निंभ, आवत उभय२अनीक ॥ ७६ ॥
इत१दारा४०।१।१ओरंग४०।३।२उत, धरिबाजीगर२ धम्म ॥
चहत दब्यो दल१चम्मरतैं, दिल्ली१कंह्हन दम्म२ ॥ ७७ ॥
दारा४०।१।१इत१अप्पन सदन, जानत रक्खन जंग ॥
सिंहनके कैसे सदन, उत२मानत ओरंग४०।३२ ॥ ७८ ॥
जंत्र१तंत्र२मंत्र३न जतन, इत दारा४०।१।१चउ४अंग ॥
इक्क१न अंकुस आदरे, उत पन्नग ओरंग४०।३।२ ॥ ७९ ॥
सिर अतिबिस ओरंग४०।३की, दिसदिस त्रासत देस ॥
फोज१न रूप उठाइ फन२, आयो फुंकरि एस ॥ ८० ॥
मनमैं गिनत मुराद४०।४कौं, बिजय अनंतर बंधि ॥
इक्क१छत्र रहिहौं अभय, सब दहिहौं भयसंधि ॥ ८१ ॥
इत१हंके ताजि आगरा१, सफल मनोरथ सुज्झि ॥

---

* उत्सव सहित १ नगारे हुए ? समय को अपने नाम से चिन्हित करनेवाले क्रोधित हुए ॥ ७२ ॥ २ शत्रुओं के नाश करने के आरम्भ से ३ जल ॥ ७३ ॥ ४ पाखर (घोड़े का कवच) ५ कवच ६ समूह ७ दोनों ओर ८ शेषनाग की ठोडी ॥ ७४ ॥ १ गद्दी लेने का उपाय ॥ ७५ ॥ १० धन पर ११ लड़ना ॥ ७६ ॥ १२ धर्म १३ सेना रूपी चर्म (ढाल) से दिल्ली रूपी १४ रुपयों को दबाना चाहा ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ १५ विजय हुए पीछे ॥ ८१ ॥

करि चल्ले जयं संकलप, उतर ग्वालेर हिं उज्झि॥ ८२॥

इति श्रीवंशभास्करे मम्हाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे विशालारणमतिनिवृत्तयोधपुराधीशयशवन्तसिंहस्वपत्नीतिरस्करणं १, विशालाप्रपलायितरायसिंहसंदेहहेतुकविक्रमनगराधिपरायसिंहनिर्लज्जताकथनं २, धवलपुरसमीप दाराशिकोहौरङ्गजेबसैन्यसंगमवर्णनं त्रयोदशो मयूखः॥ १३॥

आदितः पञ्चविंशोत्तरद्विशततमः॥ २२५॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा॥

॥ पादाकुलकम्॥

सता १९४।१ चलिय विरचन जब सो रन, मिलि ओरंग४०।३मुराद ४०।४हि मोरन॥

भ्रातासुभ्रातृज२आदि तबहु भट, वंट्ट मिले बहु स्वबल विसंकट॥

जेठो१इंद्रसाल१९४।२को जायो, संज्ञाकरि गजसिंह१९५।१सुहायो

अनुज तास पंचम५आनंदक१९५।५,ते दुव मिले कोस पंचक५तक

सोदर राजसिंह १९४।४ को जो सुत, जेठो १ विष्णुसिंह १९५।१ अभिधाजुत॥

जेठो१सुत काका हरि१९३।३को जिम, अग्गैं कछुक सुजान१९४।१ मिल्यो इम॥

सुतहु तास जेठो१ गजसिंह१९५।१रु, अनुज चउत्थ४अजब १९४।४ शत्रु नखरु॥

---

१ विजय का संकल्प करके २ ग्वालियर को छोड़कर॥ ८२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में उज्जैण के युद्ध से भागेहुए जोधपुर के महाराजा यशवंतसिंह का उनकी राणी से अनादर पाना १, उज्जैण के युद्ध से भागनेवाले रायसिंह के संदेह में बीकानेर के राजा रायसिंह की निर्लज्जता का कथन २ धोलपुर के समीप दाराशिकोह और औरंगजेब की सेना के मिलने के वर्णन का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२५ मयूख हुए॥

३ भतीजे ४ मार्ग में ५ विशाल अथवा विशेष संकट में॥ १॥ ६ नाम॥ २॥ ॥ ३॥ ७ शत्रुओं पर सिंह रूप

पंट आलय दारा४०।२ पैठायो, अप्पहु अधिप सिविर निजआयो

॥ दोहा ॥

इम क्रिय प्रथम१ मुकाम इत, रन लोभिन रहि रत्ति ॥
चले प्रात दरकुंच चहि, घँन आडंबर घत्ति ॥ १४ ॥
उततैं वे दुव२ साहसुव, मिलि औरंग४०।३ मुराद४०।४॥
दरकुंचन आये दुसह, बिस्तारत जय बाद ॥१५॥
घोर प्रलय घनकी घटा, जिम दुव२ अभिमुख जात ॥
इम हल्ली पृतना उभय२ मही वैलय मचकात ॥१६॥
उभय२ अनीकनतैं अनी१, जिम लहरू२ कढिजाइ ॥
मृगयामुख कोतुक करत, जित तित स्वजय जनाइ ॥१७॥
घटत निवानन पान घन, नाँसीर१न करि नीर२ ॥
क्रमि तँहँ तँहँ चंदोल१के, पंकर्थहिं लखत प्रवीर ॥ १८ ॥
बन दुर्ग१न पद्धर२ बनत, दिसदिस मग्ग दिखात ॥
भजि भजि फोजन भीरमैं, जंतुव जन थकिजात ॥ १९ ॥
दुसह कंप लगि दिग्गजन, अकिबकि खंड असेस ॥
उदंक समुद्रन उच्छलत, प्रसरत बिजल प्रदेस ॥ २० ॥
मृड१ चंडी२ दंपति३ मुदित, सह नारद३ लगि संग ॥
ओघ बिमानन अच्छरि४न, आये बरन उमंग ॥ २१ ॥
गजतुंडा१दिक जोगिनी५, भैरव६ भीम हगादि ॥
चउसट्ठि६४ रु बावन५२ चले, छक लावन मह छादि॥२२॥
किन्नर७ डाकिनि८ साकिनी९, रक्खस१० प्रेत११चुरेल१२
बिहसि जच्छ१३ बेताल१४बलि, गुह्यक१५ लग्गे गैल ।२३।
गिद्ध१६।१कंक॥७।२चिल्ल१८।३न गगन१, उडत छये बहु ओघ ॥

ढंरे में ॥ १३ ॥ ३ मेघ के समान ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ सन्मुख ४ भूमि मंडल को ॥ १६ ॥ ५ सेनाओं से ६ शिकार आदि ॥ १७ ॥ ७ आगे चलनेवालों को ८ सेना के पीछे चलनेवालों को कीचड़ मिलता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ९ पानी १० निर्जल प्रदेशों में ॥ २० ॥ ११ शिव ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

मही२कोक१९।१जंबुक२०।२मुखन, मन्न्यौं सुख न सुमोघ२४
सिव१ आदिक ए उक्त२० सब, हुव संगहि हरखाइ ॥
इत बीरन उच्छाह अति, बीर दगन बरखाइ ॥ २५ ॥
जुव्वनदय जिम रसिकजन, मन्नैं व्याहत मोद ॥
इम सूरन रन मह अतुल, किय सूचन चहुँ४कोद ॥२६॥

॥ मनोहरम् ॥

उभय२ अनीकनमैं कालीसम नाली केक,
चाली मतवाली पारैं वज्रमैंहु बुरमाँ ॥
सूरि निज दासनकौं आसनकौं पूरि दुख,
नासनकौं भूरि देत थैली१ थान२थुरमाँ ॥
नीठि नीठि जाइ पै वडेगढ निराइ खंड,
खंडन खिराइ खाइ जाइ जैसै खुरमाँ ॥
फैलन के फीलं१न जुती जे जूह बैल२नके,
गैलनके बीच करैं सैलनके सुरमाँ ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

एक१हि दिल्ली१आगरा२, साह सदन सामान्य ॥
सुकवि कथन सामान्यमैं, मन्नहु जुग२धा मान्य ॥ २८ ॥
पुव्वर्हु लिखि आये प्रथित, अवै२ जनावत एह ॥
इन दोउ२नमैं अन्यतर, गिनहु कोहु तस गेह ॥ २९ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनीरोला ॥

दिल्लीपति चहुवान भान छै पान विदाके,
करि सब घात दारा२०।१कुमार भट साज्जि प्रभाके ॥
पहुँ भेज्यो अज्जनपुगेगैं हुव तेज्जस हाके,

1 व्याघ्र 2 गीदड़ 3 आदि ॥२४॥२५॥ 4 उत्साह 5 चारों दिशाओं में ॥ २६ ॥ 6 तोप 7 छेद 8 पंडित 9 पत्थर 10 रुपयों की थैली 11 दुराशा 12 समीप लेकर 13 हाथियों से 14 समूह 15 पर्वतों का कज्जल ॥२८॥ 16 प्रसिद्ध ॥२९॥ 17 कांतिवाले 18 राजा शत्रुशाल का 19 आर्य लोकों का अग्रणी 20 उसके यश के

कथित राम १।२ कीरति१।३ कुमार कूरम नेताके ॥ ३० ॥
इत्यादिक गुरु१लघु२अनेक नृप१ कुमर२न नाके,
मिच्छन कासिमखान१मुख्य सममान सता१९४।१ के ॥
जिन साइस्तेखान२ जोध जाफर३ ढिगजाके,
कहत कलीज४हु कों कितेक क्रम विचिकिच्छाके ॥३१॥
नहिं जो याके भागनैर तोतो इत१याके,
भागनगर जो तासभाग तो उत२ पहु ताके ॥
अधिक सता१९४।१।१कासिम२उभै२हि सासक सेनाके,
अँर चल्ले दारा४०।१उपेत छक्कछाइ छूटाके ॥ ३२ ॥
इम दक्खिन३।२।१उत्तर७।४।२अनीक तिम सम्मुह ताके,
दरकुंचन हल्ले दुरूह जम जूह जिलाके ॥
अग्गैं१अंभ२सु पिछ्छि१पंक२तँहँ सर१सरिता२के,
परि जलजंतुन असह पीर रहि सीर सिराके ॥ ३३ ॥
डगमग्गिय डुंगर डरात पविपात प्रथाके,
अंग मच्छ दलन धाव उफनाव इलाके ॥
करशकिय आलुकं कपाल फटि जाल फैंटाके,
प्रविसैं तस रद कमठपिठ किंमु टंकंक्रियाके ॥ ३४ ॥
सिंधू लग्गत भटनसीस कारन झोकाके,
सिंहछटा के असह सूर करतार कँटाके ॥
बीरन रद जिम इक्क१वेर छुल्लन बाचाके,

१ कीर्तिसिंह. कछवाहों के २ पति का ॥ ३० ॥ ३ नांहीं नहीं करनेवाले ४ सेनापति ५ शत्रुशाल के समान आदरवाला ६ विचिकित्सा (संदेह) के काम में है अर्थात् इसमें संदेह है ॥ ३१ ॥ ७ शीघ्र ८ शोभा ॥ ३२ ॥ ९ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १० आगे पानी और पीछे कीचड़. तालाब और ११ नदी के १२ ऊपर से सीर का आना बंध होगया ॥ ३३ ॥ १३ वज्र पड़ने की प्रसिद्धि से १४ पृथ्वी के १५ शेषनाग के १६ फणा के १७ मानों १८ पत्थर पर टांकी छुवे इसप्रकार ॥ ३४ ॥ १९ निन्दनी रागनी के २० युद्ध वा कलह करनेवाले २१ हाथी के दांतों के समान (हाथी के दांत एक ही बार) बाहिर निकलते हैं जो पीछे नहीं घुसते ॥

तुच्छ चउद्दह१४ लोक्क ताक्कि किल[1] अतिक्कंता[2]के ॥४०॥
कर वल मेटनहार केक बहु वैर व्[3]यथाके,
हद संसृति[4]की रहनहार विच कित्ति[5] कथाके ॥
इभ[6] गंजन मजबूत अंग जमहूत जराके,
चल्ले इम रजपूत चंड पुरुहूत[7] प्रथाके ॥ ४१ ॥
हुलसे अतिभट चलनहार प्रतिभट पज्जा[8] के,
हेलां[10] संगर वहनहार लंगर लज्जाके[9] ॥
पल[11]भोजिन पालक पुगाइ मधु रस मज्जा[12]के,
लुंभि[13] सयन सुख लेनहार सूरन सैंज्जा[14]के ॥४२॥
इत निर्भय जीवन उदास खिल्ल[15] दास खुदाके,
मानी अति बल मुसलमान मनमत्त मुदा[16]के ॥
पर खंडन पटकैं प्रपात तरवारि तुदा[17] के,
इम पंजवर्तन[18]१ च्यहार४ यारे२ जिम इष्ट जुदाके ॥४३॥
उभय२ दीन जय पीनें[20] ओज तहँ भिन्न तफा[21]के,
होडाहोडी बढनहार बल१ लोंन वफा[22] के ॥
दब्बैं संकल असह दाव पय काल कफा[23] के,
द्वै२ ही दिस इच्छक दुरूहैं[24] निज कित्ति नफा के ॥

१ निश्चय २ उल्लंघन करनेवाले. (इस छंद में अन्त्यानुप्रास में 'के' शब्द आये हैं सो बहुधा कितनों के वाचक हैं) ॥ ४० ॥ ३ पीडा के ४ सृष्टि की सीमा ५ कीर्ति ६ हाथियों के मारने में ७ इन्द्र के समान प्रसिद्धिवाले ॥ ४१ ॥ ८ शत्रुओं को ९ नीच बनानेवाले वा दबानेवाले १० युद्ध में क्रीड़ा पूर्वक चलनेवाले ११ मांस भोजन करनेवाले पशु पक्षियों के १२ मेद (हाड के भीतर की मींजी) १३ लोभ करके १४ शरशय्या ॥ ४२ ॥ १५ बाकी के १६ हर्ष १७ 'तुद व्यथने' इस धातु से तुदा शब्द का अर्थ पीड़ा देनेवाला है १८ दिन भर में पांच वार निमाज पढनेवाले १९ आर्यों में चार वर्ण हैं इसीप्रकार यवनों में शेख, शय्यद, मुगल, पठान ये चार जातियें हैं सो इन चारों में कितने ही का मजहब (सुन्नी सिया आदि) जुदा था परन्तु परस्पर में १९ मित्र थे ॥ ४३ ॥ २० पुष्ट. जुदे जुदे २१ जिलों के २२ निमक हलाल २३ क्रोध से काल की सांकल को पैर से दबानेवाले २४ कठिनाई से तर्कना में आवैं ऐसे

कढुनहार करिनकोंपे समसेर सफा के ॥४४॥
बाँदी डारन विजय बाद अभिवर आँखा के,
कोप जहर भासक कराल आसक ताखाँ के ॥
सुग्वानीं१ अरवी२ स सुख्य भाखन भाखा के,
तेरह१३ चउ४ आदिक प्रतानँ संस्कृत साखाके ॥४५॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपतिशत्रुशल्यचरित्रे धवलपुरान्तिकदाराशिकोहौरंगजेबसमरारम्भवर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः षड्विंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

विदित तीज३ आसाढ४ बदि२, जोसी हरजि द्विजात ॥
समर सुद्धि१ पग्घरन सहित, अप्पी बूंदिय आत ॥ १ ॥
रानि१न कुमरानि१न सरुचि, चहि ठकुरानि३न चाय ॥
सुनि बहुतन पतिसृत समर, किय प्रातहि हुत काय ॥२॥
तीजी३ अरु चोथी४ तिनहिं, इम छट्ठी६ अंसु आस ॥
रानीत्रय३ जीवत रही, करि अपकित्ति प्रकास ॥३॥
तीजी३ राजकुमारि१९४१३तँहँ, जो प्रतापगढ जात ॥
जाके वापी१ बाग२ जुगर, कोटा मग्ग कहात ॥४॥

---

१ स्त्रियों के शरीर से २ साफ तरवार निकालनेवाले ॥ ४४ ॥ ३ हठ करनेवाले पूर्ण ५ तजक ६ संस्कृत. तेरह और चार शाखाओं को ७ फैलाकर ८ पोषण करनेवाले; अथवा श्रेष्ठ रीति से पुष्ट करने वाले यह धाये और यवनों का वर्णन यथा संख्या से है ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के नृपति शत्रुशाल के चरित्र में धौलपुर के समीप दाराशिकोह और औरंगजेब के युद्ध प्रारम्भ होने का चौदहवां १४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२४ मयूख हुए ॥

९ब्राह्मण१०युद्ध की खबर॥१॥११शरीर होमे ॥२॥ १२पाप की आशा से ॥३॥४॥

नित्यकुमरि१.१४।४ तिम भारवी, चोथी४ जीवन चाहि ॥
बिक्खन सुख बिलसन बची, सुत भगवंत१९५।३ सराहि ५।
इम छट्ठी६ असु लोभ वह, करि आनंदकुमारि१९४।६॥
वडो१ सुतहु मरतहु बची, बधू सगर्भ बिचारि ॥ ६ ॥
पंच५हि सुत भारत१.९५।४प्रिया, उठी जरन हित आति ॥
चऊ४ सगर्भा चालुकी, तँहँ रोकी हठ ता ति ॥ ७ ॥
अक्खी ममसुन अंसयह, उदर तिहारे आहि ॥
यातैं तू१ रहि मैंरहु इम, जियत रही लखि जाहि ॥८॥
रानी ए३ इम बचिरही, तीन३हि लोन ठ्यताई ॥
सत्त७ मरी सुभगा सुनहु, पति पहिलैं बिधि पाइ ॥९॥
बूंदीसन दिस वारुनी३।५. अंग सिर ओयत एस ॥
रविछत्री१ बिरंची रुचिर, वँसु जिहिं खरचि बिसेस ॥१०॥
स्यामकुमरि१९४।१ रठोरि सो, पुव्व गई परलोक ॥
जेठी१ यह भाऊ१९५।१ जननि, सुभगा सतिय बिलोक॥११॥
चंद्रावति दूजी२ चतुर, प्रेमकुमरि१९४।२ खिनपाइ ॥
भीम१९५।२ मँसू सद्गति भजी, बिधिवल छेह बिहाइ ॥१२॥
नवम९ ईडरेचा निपुनि, अरु पिछली चउ४ ऊढ ॥
पति पहिलैं सुभगापनहि, मृत ए सत्त७ अमूढ ॥१३॥
रानीखट६ अब नृप मरत. पंच५ खवासि उँपेत ॥
जे पातुरि चालीस४० जुत, हुत हुव सहगति हेत ॥१४॥
प्रिया चालुकी पंचमी५, सूरजकुमरि१९४।५ सनाम ॥
ऐकी हठि पहिलैं जरत, अब सु जरी अभिराम ॥१५॥

१नरूकी २सुख देखने की ॥५॥ ३प्राण के लोभ से ४ पुत्र की बहू को गर्भवती जानकर ॥ ६ ॥ ५ उस स्त्री को, अथवा उसको स्त्रियों ने रोकी; अथवा माता रूपी सासू ने रोकी ॥७॥६है ७इसकारण से भी ॥८॥८निमक हराम होकर ॥९॥ ९पश्चिम दिशामें १०पर्वत के ऊपर ११बडा १२धन॥१०॥११॥१३भीमसिंह की माता ॥१२॥१४बिवाही हुई १५सुहागनपन में १६चतुर ॥१३॥१७सहित ॥१४॥१५॥

जाके वापी१ बाग२ जुग३ अबहु सुजस अंकूर ॥
छारबाग तन इन सु छबि, दिस दक्खिन१।३ कछु दूर ॥ १६ ॥
रानी सप्तम७ इन्द्रकुमारि१४।७ उदित चालुकी आहि ॥
रानाउति अष्टम८ रुचिर, चंद्रकुमारि१४।८ जस चाहि ॥ १७ ॥
जाके वापी१ बाग२ जुग३, मिलत कुमारनि मग्ग ॥
इमहि जगी तैं अष्टमीन, पद करि कित्ति उदग्ग ॥ १८ ॥
कावंधी दसमी१० कही, क्रम कल्यान कुमारि१४।१० ॥
सोहु जगी आगे मीनिसह, असह विरह अवधारि ॥ १९ ॥
विदित बेल१ अस वापिका२, याके दक्खिन१।३ ओर ॥
छारबागके ढिगहि छबि, जे सूचत जसजोर ॥ २० ॥
कावंधी एकादसी११, फुल्लकुमरि१४।११ गुन फैल ॥
जो महलन दासी जगी, भूपविरह अवभीत ॥ २१ ॥
जासु बेल१ वापी२ जुग३हि, माडुंदापुर मग्ग ॥
अंकित जसरूपक अबहु, लसत पुब्ब१ दिस लग्ग ॥ २२ ॥
अपर रई इंगोदहु इम, धुव लच्छो१४।१२ अभिधान ॥
रहउरी यह बारहीं, विरसि कृसानु विहान ॥ २३ ॥
पंच७ कुंजिंदा गिर२०।४ प्रभु, वरी सुनहु अब जन्थ ॥
प्रथम१ चमेली१ नाम यह, स्वामि विरह कृत मत्थ ॥ २४ ॥
बाहर जो चौगानके, गोपुर ढिग इत आहि ॥
कहियत ताके नामकरि, सो यह विदित नदाहि ॥ २५ ॥
गिरिईस ओर८ चौगान ढिगहि, सिखरबंध हरिसद्म१ ॥
तिहिं विरचो अजहु तनत, प्रभा प्रात जिन पद्म ॥ २६ ॥

---

१ राठौड़ी २ धारण करके अर्थात् विरह को असह्य जानकर ॥१९॥ ३ बाग ॥२०॥
४ गुणों का समूह ५ राजा के विरह से डरी हुई ॥२१॥ ६ जिसका बाग ॥२२॥
७ दूसरी इंदोरवी ८ प्रवेश किया ९ अग्नि में १० प्रभात समय ॥२३॥ ११ पास-
वान किये १२ हे प्रभु रानसिंह ॥ २४ ॥ १३ शहर के दरवाजे के पास ॥ २५ ॥
१४ ईशानकोण में १५ चौगान के समीप १६ विष्णु का मंदिर १७ जिस प्रकार

इम खवासि दूजी२ इहाँ, जरी अनारा२जास ॥
पुर सांखापुर छत्रपुर, बापी१ हरिगृह२वास ॥ २७ ॥
स्यामरंग३तीजी३सुमति, चोथी४तँहँ चंपा४रू ॥
पटु हरिमाला५पंचमी५, चढी चिता ए५ चारु ॥ २८ ॥
तिम पातुरि चालीस४०तँहँ, गई मयूरी१गैल ॥
पुरढिग तस छत्री१प्रथित, सर्मन दिसा२।३के सैल ॥ २९ ॥
इम दूजी२ आसावरी, अट्ठतीस३८ तिम ओर ॥
चालीस४०हि प्रविसी चिता, ठानि सुजस सबठोर ॥ ३० ॥
छह६अरु पंचचालीस४५छम, इहिँ क्रम रानि१न आदि ॥
इक्कावन५१प्रविसी अँनल, सत्थहि हित संवादि ॥ ३१ ॥
चिता निलय आयत रुचिर, इक्क विसी सबआइ ॥
किय भाऊ१९५।१सबको स्वकर, दाह सु विधि दरसाइ ॥ ३२ ॥
जिम निज निज पति पग्घजुत, सुनहु जरी अवसेस ॥
कुमरानी भारत१९५।४कुमर, ऊढा पंचक५एस ॥ ३३ ॥
आदि सुता आनंदकी, सेखाउति रंभा१९५।१ सु ॥
परनि मनोहरपुर प्रिया, यानी भारत१९५।४ आसु ॥ ३४ ॥
पुनि कोलासर सिवपुरी, राजाउत अमरेस ॥
कुमरहि दिय जमुना१९५।२ कनी, इहिँक्रम दूजी२ एस ॥ ३५ ॥
बछनोत जुज्झार बलि, कनी सुजानकुमारि१९५।३ ॥
परिनाई खीना पति जु, निपुन तृतीय३ सु नारि ॥ ३६ ॥
सोलंखी हरिसिंहकी, रत्नकुमारि१९५।४ कुमरी सु ॥

प्रभात समय में कमल कांति फैलाता है तिसप्रकार यह मंदिर भी फैलाता है ॥ २६ ॥ १ पुरा (शहर के द्वार के बाहर का छोटा ग्राम) ॥२७॥ २ सुन्दर ॥२८॥ ३ प्रसिद्ध ४ दक्षिण दिशा के ५ पर्वत पर ॥ २९ ॥ ३० ॥ ६ समर्थ ७ अग्नि में ८ स्नेह का कथन करके ॥ ३१ ॥ ९ चिता के चौड़े सुन्दर घर में १० इकट्ठी होकर घुसीं ११ अपने हाथ से ॥ ३२ ॥ १२ विवाही हुई ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

कुमरानी भारत१९५।४ कुमर, व्याह चतुर्थ४ बरी सु ॥३७॥
मरीसु१ बरीसु२ अन्त्यानुप्रासः १॥

॥ दोहा ॥

कनी गोर रनछोरकी, इंद्रकुमरि१९५।५ अभिधान ॥
पंचम५ व्याह कुमार पटु, परन्यौँ रीति प्रमान ॥ ३८ ॥
ए पंच५हि जरिबे उठी, इन्हँ सस्सू तँहँ आइ ॥
चउमन४ सगर्भा चालुकी, रोकी प्रसभ रचाइ ॥ ३९ ॥
बरजी भाऊ१९५।१ जेठ बलि, *ओक रही इम एह ॥
तनय जन्यौं आनंद१९६।१ तस, उच्छव किन्न अछेह ॥४०॥
बहुरि मर्यो चउ४मास बचि, यह बालहि आनंद१९६।१ ॥
अति सोच्यो भाऊ१९५।१ अधिप, मन कल्प न कहि मंद ॥४१॥
यह कछु भावी१ सुनहु अब, वर्त्तमान२ सुहि वत्त ॥
चोथी४ भूंगु सु चालुकी, रोकी जियन विरत्त ॥ ४२ ॥
तास सपत्नी चउ४हि तिम, सुचित जाइ मसान ॥
ज्वलन अप्रसूता जरी, सह पतिपग्घ सुजान ॥ ४३ ॥
अधिप अनुज मुहुकम११४।५।१ उदय, १९४।६।२ सूर १९४।७।३ परे नृप३ सूर ॥
परे भतीजे चउ४ प्रधन, पहु सुनिगे जसपूर ॥ ४४ ॥
दलि ओरंग४०।३ मुराद४०।४ दल, परे जहाँ अतिप्रान ॥
इंद्रसल्ल१९४।२सुत अष्ट८महु, गिनिये प्रथम१गुमान१९५।८। ॥४५॥
तिम जेठो मुहुकम१९४।५तनय, जोगावर१९५।१।२भुज जोर
प्रधन,तत्थ दूजो२ पर्यो, रचि खग्गन घन गोर ॥ ४६ ॥

॥३७॥ ३८॥ ३९॥ * घर में॥ ४०॥ ४१॥ १ बालक २ विरक्त ॥४२॥ ३ बिना सन्तानवाली ॥ ४३ ॥ ४ युद्ध में ॥ ४४ ॥ ५ बलवान् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

दूजो२ अरु तीजो३ दुवरहि, महासिंह१९४१९ सुत मेय ॥
ए तीजो३चोथो४इहाँ, कनक१९५१२१३लाल१९५१३१४जसंक्षेप ॥४७॥
इक१ कुमर अरु त्रय३ अनुज, बंधुन चउ४ समवेत ॥
स्वयं नवम९ संभर सता१९४१, खिरयों असमें रनखेत ॥ ४८ ॥
त्यों मुहुकम१९४१५ मुख सत्त७ जहँ, तुट्टे तेगन तँह ॥
तिन संगहु निज निज तियन, किय सहगोन अकंष्ट ॥ ४९ ॥
जुग२मुहुकम१९४१५पतनी जरी, सती विदित पतिसंग ॥
इक१इक१सेसहन संग इम, अनल विसी हुतअंग ॥ ५० ॥
किते कनक१९५१२लाल१९५१३हि कहत, दिय अनूढ रागतदोइ
किते विवाहे पै कहत, गई न तिय जिय गोई ॥ ५१ ॥
विट्ठल१माधव२आदि वलि, परे सुभट सतपंच५०० ॥
चउसत४००तँहँ धारैन चढ, वाहुज२वीर अवंचै ॥ ५२ ॥
वाहुज२तहँ कोउक विरंयो, ललना विनु सुरलोक ॥
क्रम इतरन संगहु किती, सती जरिय गतसोक ॥ ५३ ॥
इम सुचि४असित२चउत्थि४अँह, हुव घरघर हाकार ॥
विसवासे भाऊ१९५१२वस्यसि, अखिलन विभव उदार ॥ ५४ ॥
कैविहैं पहु भाऊ१९५१२चरित, बंधन दोउ२न व्याह ॥
भीम१९५१२व्याह पुव्वहि भनैं, त्रय३वालहि सुत ताह ॥ ५५ ॥
अधिप सता१९४१विरचेहु अब, सुनि ए थान असेस ॥
अधिप ख्यात सूचत अवहु, निज जस राम२०२ नरेस ॥ ५६ ॥
चउ४मंदिर हरिके रुचिर, पुरविच इक१प्राकार१५ ॥
तिहिं ढिगइक१चोगान१६तँहँ, इक१दुर्गा आगार१७ ॥ ५७ ॥

---

१ प्रमाण (गणना) वाला २ यश खरीदनेवाला ॥ ४७ ॥ ३ साथ ४ चहुवाण शत्रुशाल ५ जिसके समान दूसरा कोई नहीं ऐसा ॥ ४८ ॥ ६ आदि ७ खड्गों से छोटे छोटे टुकड़े होकर ८ विना कष्ट ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ९ स्वर्ग गये १० विना विवाहे ११ जी छिपाकर ॥५१॥ १२ घायल हुए १३ चत्रिय १४ नहीं ठगनेवाले ॥ ५२ ॥ १५ स्त्री विना कोई ही चत्री स्वर्ग में गया १६ आषाढ बदि चौथ के १७ दिन ॥ ५४ ॥ १८ कहेंगे ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १९ कोट २० देवी का मन्दिर ॥५७॥

दुव२गोपुर२।८प्रासाद२।११दुव२.इक१.सर१।१२इक१.उद्यान१।१३
ए तेरह१३अविवाद इम. पहु मर्याद थित थान ॥ ५८ ॥
पत्थरगज१।१४इक१।१४अद्वपर, संसय तँहँ दरसात ॥
सब ए अब क्रमतें सुनहु, आयत जस अवदात ॥ ५९ ॥
श्रीकेसव मंदिर१सुभग. अतुल जु पट्टनि आँहिं ॥
दुव२स्यामल२जगदीस२के, मंदिर२।३बूंदीमाँहिं ॥ ६० ॥
हिन निजपर बलराम१हुव. सेवक विप्र सनाढ्य ॥
किय चोथो४तसनामकरि, इहाँ विदित छवि आढ्य ॥ ६१ ॥
पूरब नृपजपालितें, वर्म्यो जु संतनि वीत ॥
दामोदर१राधा२विदित, पधराये तँहँ प्रीत ॥ ६२ ॥
बलदुरज१सन बारुनी३।५, करि गिरि२लगि प्राकार१।५ ॥
बाहिर करि दक्खिन२।२वसति, बिचकिय चोक१।६बिथार।६३।
उमा हर्षदाको उहाँ, मंदिर१।७ पंचम५ मंडि ॥
गोपुर१।८तँहँ चोगानको, विरचिय चोर विहंडि ॥ ६४ ॥
दूजो तँहँ मंडूकदर, तँहँ गोपुर२।९रचि ताम ॥
दृढ त्रि३खंड१।१०चउ४खंड२।११दुव, रचे महल२।११अभिराम।६५।
महलन बिच पहिलो१ महल१।१०, गत्रिखंड अभिधान ॥
गजदुक्खसाल१ रु रंगसुख, मंडप२ मंजु अमान ॥६६॥
मुकुट आदिमंदिर३ महित, तीजो३खंड जु तास ॥
महलन भिरि दूजो२महल२।११, प्राची१ करत प्रकास ॥६७॥
जाको खंड चतुष्क४जुत, नाम इक१ नरनाह ॥
छत्रमहल२।११ विख्यात छिति, सो यह लेत सराह ॥६८॥
केतु१ कलस२ दोउ२न कमनें, छत्रमहल२।११सिर छल ११२ ॥

---

१ शहर के द्वार २ महल ३ तालाव ४ बाग ॥ ५८ ॥ ५ पाषाण का हाथी ६ बुर्ज पर ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ७ तहाँ ॥ ६५ ॥ ८ नाम ९ गजशाला १० रंग मंडप ॥ ६६ ॥ ११ मुकुट मन्दिर १२ पूर्व दिशा में ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ १३ सुन्दर

गढ कोटा जिहिं लैगयो, अघको भीम१९८।१अमल्ल ॥६९॥
पाती२नाम निजधाइ पटु, ताके नाम तैड़ाग२ ॥
रवि प्रताप सागर१।१२ रुचिर, भूप भज्यो जसभाग ॥७०॥
राहित रक्तदंता निकट, बिहित सुरथपुर बाग१।१३ ॥
माधवं३ ऋतु बिक्खन मनुज, रक्खैं जँहँ अनुराग ॥७१॥
प्रतिमा गज१।१४इक१अट्टपर, दक्खिन१।३दिस सो स्निंग्ध॥
नगर बरोदाके निकट, सता१९४।१ रचित संदिग्ध ॥७२॥
गज जवानभाई गदित, तस प्रतिमा वह तत्थ ॥
रची रतन१९२।१ कति इम कहत, सो पै संसयसत्थ॥७३॥
एक१ कुंड१ छत्री१।३ उभय१, धन्य पंती१ नृपधाइ ॥
किय प्रतापसागर१।१२ निकट, पंहु मैंह अह पधराइ॥७४॥
अग्ग मनोहर१९२।४ भोज१९१।२ उत, जो उपवन किय जत्थ ॥
तास ढिगहि जो कुंड१ तिम, सुभ छत्री२।३जुग२सत्थ।७५।
इम नृपधाली भ्रात इत, मान्नि सुजस फलमान२ ॥
छत्री१ किय ढुंथु तास छिति, थित प्राची१ गिरिथान॥७६॥
सक ढुव वसु सोलह१६८२ समय, भूपकुमर हुव भीम१९५।२ ॥
तनुत्यागी सूचित समय, सत्त ख सत्रह१७०७ सीम ॥७७॥
भूपकुमर भारत१९५।५ भयो, इम नव आष्टि अनेह ॥
पंद्रह सत्रह१७१५ साक पर, दिव पत्तो तजिदेह ॥७८॥
गुनं खट सोलह १६६३ सकल गत, भयो सता१९४।१यह भूप ॥
सिंधुर अहि सोलह१६८८समय, राज्य लह्यो अनुरूप।७९।
पंद्रह सत्रह सक परव, तनुभव१ भ्रात२ भतीज३ ॥

१ पाप का पात्र ॥ ६९ ॥ २ तालाव ॥ ७० ॥ ३ वसन्त ऋतु में ४ प्रीति ५ बुर्ज पर ६ सचिक्कण ७ छत्रुशाल के रचने में सन्देह है ८ जिस हाथी को जवान भाई कहते हैं ॥७२॥ ९राजा की धाय ने १०प्रभु का ११उत्सव सहित दिन में पधराये; अथवा उत्सव के दिन पधराये ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ १२ राजा का धाय भाई १३ मोटी १४ पूर्व दिशा के पर्वत पर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

अष्ट८ सहित सुत्तो अधिप. धवलद्रंग रनधीज ॥८०॥

*इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीवसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे हरजीनामविप्रशत्रुशल्यादिवीरमरणोदन्तप्रापणराज्ञीकुमारपत्नीपतिलोकगमन१, शत्रुशल्यसामयिकप्रासाददेवालयादिस्थाननिर्मितिवर्णनं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितः सप्तविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२७ ॥

---

१ धौलपुर के युद्ध में ॥ ८० ॥ *

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शत्रुशाल के चरित्र में हरजी नामक ब्राह्मण का राव शत्रुशाल आदि-वीरों के मारेजाने की खबर लाने पर राणियों और कुमराणियों का सती होना १ शत्रुशाल के समय में महल मंदिर आदि स्थान बनने के वर्णन का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२७ मयूख हुए ॥

---

* ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की इच्छा थी कि शत्रुशाल के मारेजाने के इस युद्ध का वर्णन अत्यन्त उत्तमता के साथ किया जावेगा इसकारण शत्रुशाल के बुन्दी से चढने का वर्णन करके युद्ध के वर्णन का स्थान खाली छोडदिया और आगे शत्रुशाल के मारेजाने का और उसके साथ मारेजाने की गणना करके बुन्दी में सतियें होने का वर्णन करदिया है, परन्तु फिर या तो सावकाश नहीं मिला अथवा स्मरण नहीं आया, इसकारण इस युद्ध का वर्णन नहीं होसका, यह हमने स्वयं सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से सुना है ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भावसिंह१९५।१चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रचि चउत्थि४दिन ग्यारहम११, कथित श्राद्धकरटा१दि ॥
दान अखिल बिप्रन दये, सब विधेय संपादि ॥ १ ॥
बहु भोजन दिन बारहम१२, जन द्विज१मुख जेमाइ ॥
तद्दिन विधि सम सद्धि तिम, ठाम महाजय१ठाइ ॥ २ ॥
सक पंद्रह सत्रह१५७१५समय, रीति सद्धि अनुरूप ॥
सुचि४संगत पंचमि५असित२, भावसिंह१९५।१हुव भूप ॥ ३ ॥
कनक छत्र१चामर२कलित, छादन१वीजन२छाइ ॥
जनक पट्ट भाऊ१९५।१जई, बैठो नय विकसाइ ॥ ४ ॥
आये जन गुरु१लघु२अखिल; संभगराज समाज ॥
उत्तारन१उपदा२दि इन, सब सद्धिय विधि साज ॥ ५ ॥
सुधा वचन सबके श्रवन, पुट सह प्रीति पिवाइ ॥
आस्वासन करि आदर, स्वच्छभाव दरसाइ ॥ ६ ॥
पीतांबर१पायन प्रनमि, रचि अर्चन अभिराम ॥
आसापूरनि२अंबिका, पूजी सविधि१प्रनाम२ ॥ ७ ॥
तद्दिन इम बैठो तखत, पट्ट भाऊ१९५।१ भूपाल ॥
मित्र१न घत्ती धर्ममति, सत्रु१न छत्ती साल ॥ ८ ॥
जुग२भ्रातन अब जंपियत, ब्याह अखिल बिलसंत ॥
परनैं पुव्व अनेह इम, भाऊ१९५।१।१अरु भगवंत१९५।३।२ ॥९॥
कुमरपन हि भाऊ१९५।१करे, बारह१२मित सब ब्याह ॥

---

१ एकादशा आदि श्राद्ध २ उचित सम्पादन करके ॥ १ ॥ ३ आदि ४ श्राद्ध विशेष ॥ २ ॥ ५ अषाढ वदि पंचमी ॥ ३ ॥ ६ विदित ७ छत्र ८ चमरों से॥४॥ ९ सभा में १० न्यौछावर ११ नजराना ॥ ५ ॥ १२ कर्णपुट में अर्थात् कानों के खड्डों में ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ १३ पहिले समय में ॥ ९ ॥

अष्ट८कारे भगवंत१९५।३इम रचि निगमोदितें राइ ॥ १० ॥
॥
ए क्रम कारि कहियत अखिल, राजराज प्रभु राम२०३।४॥११॥

॥ घनाक्षरी ॥

रानीं राजसिंहवारी भगिनी कुमार भाउ१९५।१,
नाम धनकुमरि१९५।१वरी जो पहिले१ बिबाह ॥
साक ख ख सप्तह१७००तनूज ताके पृथ्वीसिंह१९६।१,
जो भयो सो जियत हु२मास भयो नरनाह ॥
दूजी२हरिकी सुता प्रतापगढ सीसोदनी,
मातुलादिदेवी१९५।२नाम ब्याह्यो अधिके उछाह ॥
राजपुर तीजी३हरकुमरि१९५।३सनाम बड-
गूजरि बिबाह्यो फतैसिंह सुता रुचिराह॥ १२ ॥
कल्यानकी कन्या ईडरेची रहठारि ऊढा,
चोथी४कुमरानी नाथकुमरि१९५।४तदीय नाम ॥
भीम जमुनादि भालुदहर दु२नाम वारो ताकी,
सुता पंचमी५बिबाह्यो गंगा१९५।५अभिराम ॥
नाथाउत चालुक्क प्रतापसुता छट्टी६नाम,
अमरकुमारि१९५।६सो बरी निज रिहानीं ग्राम ॥
चंद्राउत नरहरी अमरसुता जो सप्तमी ७सो,
दीपकुमरि१९५।७ बिबाह्यो भाटखेरी ताम ॥१३॥
स्वसुरको नाम सो न जान्यो पर अष्टमी८ यों,
कल्यानाहिं कुमारि१९५।८ बिबाह्यो जोधपुर जाइ ॥
चुंडाउत राजसिंहकन्या देवकुमरि१९५।९ बिबाह्यो,
नवमी९ यों पुरवेषम सुपर्व पाइ ॥

---

१ देद के कथनानुसार ॥१०॥ २ हे राजाओं के राजा; अथवा दूसेर रामसिंह ॥११॥ ३ मातुल देवी ४ प्रीति के मार्ग से ॥ १२ ॥ ५ पिपाहिता ६ उसका ७ तहां ॥ १३ ॥ ८ श्रेष्ठ समय पाकर.

लाडकुमरी१९५।१० सो प्रेमकुमरी१९५।१० दुनामवारी,
दसमी१०कबंध हरनाथकी सुता सुभाइ ॥
एगारहीं११ मल्हनादिवासी रट्ठउरि सदा-
कुमरि१९५।११ सुमेरुसाहिपुत्री बरी छक छाइ ॥१४॥
सो सीसोदनी जो सुता सहस्रमल्लवारी बारहीं१२,
कुमरानी लाडकुमरि१९५।१२ बरी कुमार ॥
भाऊ१९५।१ कै सुता इक१ खवासकी भई सो अन्न,
पूरना१ बिबाही रानाउत रघुनाथ दार ॥
आठों८ भगवंत१९५।३कै बिबाह सुनि ए वे सबै,
जंपैजात राम२०३।४ नरनाह क्रमके प्रकार ॥
भाग्यवती१९५।१ जेठी१ जसकुमरि१९६।१ कैनौकी प्रसू,
प्रमारि जु रामठेस भानुकी सुता सुढार॥१५॥
दूजी२ मंचहेरी फतमल्ल बडगुज्जरकी,
देवमति१९५।२ कन्या सो ही वखतकुमारि१९५।२ नाम ॥
तीजी३ चंद्रकुमरि१९५।३ चालुक्य हरिकन्या चोथी४,
नष्ट जिहिं नाम बल्लनोति१९५।४सु बिबाही बाम ॥
कल्यानकी कन्या पट्ट पंचमी५ मऊके प्रांत,
रट्ठउरि राधा१९५।५ सुभ लग्न सो लही ललाम ॥
चंद्राउत उदय तनूजा तिम छट्ठी६ छत्र-
कुमरि१९५।६ बिबाहयो जाडभानुपुर भव्य धाम ॥१६॥
राघवकी कन्या सप्तमी७ जो जाइ रामगढ,
व्याहयो व्रजकुमरि१९५।७ सनाम गोरि बिंदबनि ॥
तामैं भई दूजी२ भगवंत१९५।३ कै तनूजा नाम,
कुमरि१९५।२ बरी सो रामपुर के महीप मनि ॥
रतनकबंधकी कनी जो हरकुमरि१९५।८,

॥ १४ ॥ १ रघुनाथ की स्त्री २ अब ३ कन्या की माता ॥ १५ ॥ १६ ॥ ४ पुत्री

बिवाही अष्टमी८ सो भगवंत१९५।३मह मंजु तनि ॥
भ्राता च्यारि४ ए इम कुमार हि बिवाहे क्रम,
बारह१२ छ६ अठ८ पंच५ भूत सु उदंत भनि ॥१७॥
वर्त्तमान वात अव अन्वय मैं आनी जात,
भाऊ१९५।१भयो भूपति पिताको इम पट्ट पाइ ॥
सचिव सुसील सनमानैं उपधा मैं आनि,
राज्यके सम्हारे सब अंग दृढता दिखाइ ॥
घायलन पाये जब पाटवँ तबहि तैंसैं,
कामआये बीरन के पुत्र बली बुलाइ ॥
ते१रु तिम घायल २ अघायल ३असेस आप,
नियत निवाजे बीर बाजे जसके बजाइ ॥ १८ ॥
धोलपुर धारन लगे १ जे धुर धारन सपिंड१,
असपिंड २ रु सगोत्र ३ असगोत्र ४ सूर ॥
घायल भये २ जे नहि घायल भये २ पै जे,
विसेस बढि जूझे मुख्य मुख्य प्रतिघात पूर,
जूझे सतपंच५०० नाम तिनमैं जितेक जानैं,
दिप्रा१दिक बीर जे अमुख्य हु कलह क्रूर,
तिनके तनूजनके बैभव बढाये भाऊ १९५।१,
इह६१न अधीस ए बुलाइ सबही हजूर ॥ १९ ॥
सता१९४।१के सपिंड१ तूटे एकादस११ संगरमैं,
एक१अंगजन्मा१भ्राता३।४तीन३रु भतीज४।८च्यारि४ ॥
तीन३हि सपिंड१ भ्राता ३।१९ सात७ असपिंड२ रु,
सगोत्र ३ दुव २तूटे असगोत्र ४ दस १०राचे रारि ॥

---

१ सुन्दर उत्सव फैलाकर २ भूतकाल का वृत्तान्त ॥ १७ ॥ ३ पंथ में ४धर्म अर्थ कामादिक से आशय की परीक्षा करके ५ नैरोग्यता ॥ १८ ॥ १९ ॥६पुत्र

याही क्रम घायल २सनाभि १ असनाभि २ रु,
सगोत्र३ असगोत्र४ इन्ह पीछैं वदिहैं बिथारि ॥ २० ॥
सता १९४।१के सपिंड१ ए क एकादस११ जानों इहाँ,
इक१सुत भारत१जो हारत गजन हालें ॥
सूचे क्रम भ्राता सुहुकम१९४।५।२ज्यों उदय१९४।६।३सूर१९४।७।४,
भ्रातृज गुमान१९४।८।५जोरावर१९५।१।६त्यों कनक१९५।२।७ला-
ल१९५।३।८ ॥
ईटावा अधीस हिरदाउत२४।२०उदयसिंह१९४।१।९,
बिट्ठल१९३।१।१० रु माधो१९३।१।११ पूर१८८।३ मोकल-
१८८।४ प्रसंस्तिपाल ॥
ए ब असपिंड२सात७सारन१९६।१पिनाति रायसिंह१९०।१।११,
नंगराज१९१।१।२ पिता१ पुत्र२ तलवासवाल ॥२१॥
कल्यानादिसिंह१९०।१।३नवगामपति निम्माउत१२।८,
भाई नवरंग पोते८।४उभय२इहाँ अर्वाह ॥
खेरूनाँ१ खजूरी२ पति हृदयनरायन१९२।१।४रु,
साँवल१९३।१।५सधीर अरि एनँ संहरन सीह ॥
हालूपोते४वंधु दुव२ हाभीपति हरिसिंह१९२।१।६,
ओवनअधीस दूजो२कनक१९१।१।७उदार ईह ॥
खीची१३द्वै२सगोत्र३ जोध१ जुन्न्यापति गैरोलीस,
गोवर्द्धन२ ए ब असगोत्र४दस१० जेत लीह ॥ २२ ॥
भाटी जैतसिंह१चंद्राउत्त सुहुकमसिंह२,
गोर सदानंद३ दहिया दुव२बिजय २।४राम२।५ ॥
डाभीआसकरन६ कबंध चंद्रसिंह७ रूपसिंह१।८,
लालसिंह१।९ दुव२चालुक रु भाला स्याम१० ॥

१ विस्तार से कहेंगे ॥ २० ॥ २ हाथियों के निशान को गिरानेवाला ३ दस्तावेजों (लिखावटों) का पालनेवाला ४ पोता ॥ २१ ॥ ५ कल्याणसिंह ६ निर्भय ७ शत्रुओं रूपी हरिणों का मारनेवाला सिंह ८ इच्छा ॥ २२ ॥

विप्र१दुव२दोर जोगीराम१बलराम२च्यारि४,
लाल१।३हरि२।४रत्न३।५खेम४।६ए४बनिक३आये काम ॥
फतेचंद१।७कायथ गुमान१।८ऊदा२।९गुज्जर रु,
माली खेम१।१०नाथू२।११पज्जे४पंचक५योंकीनों नाम ॥२३॥
जानौं अब जवन दलेलखान१अलीखान२,
दाऊद३रु रुस्तुम४सलेमखान५सोनखान६ ॥
पीरखान७गाजीखान८हैदर९रहीमबेग१०,
कुतब११करीम१२सेखकादर१३पहलवान ॥
तेरह१३ए नामी खरे खग्गनकी धार खिरि,
स्वामी सत्रुसाल१६४।१के समीप परे अतिमान ॥
ओर गज१बाजि२चामरा३दिन के चाकर,
अनेक ही परे पै उनके न जानैं अभिधान ॥ २४ ॥
इत्यादिक संकल परे जे जूझि पंचसत५००,
रीझि दै बिसासे पुत्र तिनके बुलाइ बीर ॥
पुत्र जिनके हुते न तिनकी तियन पाये,
स्वापतेर्य जीवन लौं पुराय१ रु निबाह२सीर ॥
नारिहु हुती न जिनके तो तिनके निमित्त तीरथ,
प्रयाग१गया२आदिक निखिल नीर ॥
कौंकस१गिराइ दान२भोजन कराइ कवि,
लोकनके काव्यन मढाये,धर्मधारी धीर ॥ २५ ॥
घायल२हु बीस२०जे सपिंड१असपिंड२पंच५,
यौं त्रय३सगोत्र३सप्तदस१७असगोत्र४आइ ॥
तीजो३इंद्रसाल१९४।२को तनूज रनछोर१९५।३।१दूजो२,
गोपालादिसिंह१९५।२।२सुरूप१बैरीसाल१९४।३को बुलाइ ।
मुहुकम१९४।५स पुत्रस तेग१९५।६।३जगमोहन१९५।७।४है२,

१शूद्र ॥२३॥ २ बलवान् ३ नाम ॥ २४ ॥ ४ धन ५ हाड ॥ २५ ॥ ६ गोपालसिंह

छठो६अरु सप्तमह्सराहि मन मोदछाइ ॥
कका महासिंह१९५।५रु तदीय सुत जेठो१मान१९५।१६,
ए खट६सपिंड१न मैं मुख्य बढते बनाइ ॥ २६ ॥
याही क्रमसे सजे चउद्दह१४सपिंड१इहाँ,
जनक के काका हरि१९३।३को सुत बडो१सुजान१९४।१।१
याको भ्रात चोथो४अजबेस१९४।४।२रु तनय याको,
जेठो१गजसिंह१९५।१।३कुलपट्टप नेय निधान ॥
पट्टप प्रयाग१९४।१।४नाती हृदयनरायन१९२।२को,
जेठे१रनछोर१९५।१५सुत संजुत प्रथितपान ॥
भाई सबलेस१९४।१।६याको काका बलराम१९३।१सुत,
काका विजैराम१९३।३सुत घासीराम१९४।१।७मतिमान २७
रतन१९२।२के भ्राता के सोदास१९२।३को पिनाती मुख्य
सातल१९५।१।८सधीर सनमान्याँ सतकार ठानि ॥
रायमल्ल१९१।३तनय कुपुत्र जेठो१रामचन्द्र१९२।१,
ताको मुख्य१नाती अजबेस१९४।१।९हु अधिक मानि ॥
सुर्जन१९०।१के भ्राता अखैराज१८९।२के पिनाती दोइ२,
जेठो१रूपसिंह१९३।१।१०दूजो२साखा बख्तेस१९४।१।११जानि॥
सुर्जन१९०।१को चोथो४भ्रात राम१८९।४को पिनाती मुख्य१,
मान्यौं त्यौं मुकुंद१९२।१।१२हु प्रबीरन मैं पहिचानि ॥ २८ ॥
अर्जुन१८८।१के दूजो२भ्रात भीम१८८।२को पिनाती मुख्य१,
प्रेमसिंह१९३।१।१३नाम ताको वैभव१पटा२बढारि ॥
अर्जुन१८८।१के तीजे३भ्रात पूरन१८८।३को नाती मुख्य,
हिंडोलीस नाम रुकमंगद१९४।१।१४बली बिचारि ॥
निकट छ६बंधु अरु दूरयौं चउद्दह१४,
सपिंड१सब ही ए बीस२०धायन परे निहारि ॥

१ उसका पुत्र ॥ २६ ॥ २ नीति रूपी धनवाला १ प्रसिद्ध बलवाला ॥२७॥२८॥

रासे२०३।४दिनदुल्लह सुनों ये असपिंड२पंच५,
घायन परे जे मुगलन की मरोरि मारि ॥ २९ ॥
भूपति सुभांड१८६।४को जो भ्राता अखैराज१८६।१वडो१,
स्वामिद्रोह ठानि खोयो जाके कुल स्वामिधर्म ॥
तामैं मुख्य१सूर सिवसिंह१९४।१।१असपिंडन,
पाये घाय सत्रुनके सस्त्रन विदीर्ण वर्म ॥
कालाउत२०।६जैतसिंह१८५।१वंस अवतंस मान१९१।१।२,
डुंगरपउत्त७।३बल्लू१९१।१।३कलिमैं कृतान्त कर्म ॥
भीम१९३।१।४हरपालपोता५।१हाथाउत्त३धीर१९४।१।५अस,
पिंड२पंच५घायल ए मर्दक मुगल६मर्म ॥ ३० ॥
ए त्रय३भदोरिया६सगोत्र३चहुवान अब,
भंडपुरभूप को भतीज सत्रुसाल१नाम ॥
दूजो२ अभैपुर को अधीस्वर मुकुंद२तीजो,
खंडाउरी सासक जो सो पै चंद्रसिंह३नाम ॥
अव असगोत्र४सुनों सोढा बनमालीदास१,
साला रविमल्ल३स्वीय चालुक जनैन जाम ॥
गोहिल मुकुंद३प्रतिहार त्यों परसुराम४,
झाला रत्नसिंह५रु बिहारीदास६धीरधाम ॥ ३१ ॥
मानकुल मंडन त्यों कूरम अजबसिंह७,
तोमर प्रतापसिंह८जादव विजयपाल९ ॥
सकवाल राघव१०कबंध सेरसिंह११ रु,
प्रमार जयसिंह१२हरी सैंगर१३कलहकाल ॥
बाँधूगढ भूपको भतीज भीमसेन१४बंस,

---

१ हे रामसिंह २ अब ॥ २९ ॥ शस्त्रों से कटे हुए ३कवचवाला ४ युद्ध में यम राज के समान कार्य करनेवाला ॥ ३० ॥ ५ तहां ६ सोलंखी वंश में जन्म लेनेवाला ॥ ३१ ॥ ७ युद्ध में यमराज

चालुक्क बघेल वीर डाहन गजन डाल ॥
भाटी रतनेस१५बडगूजर कनक१६वैस,
बंसी बलवंत१७वीर वीरतरु आलबाल ॥ ३२ ॥
ऐसैं बीस२०घायल सपिंड१असपिंड२ पंच५,
तीन३त्यौं सगोत्र३सप्तदस१७ असगोत्र४आनि ॥
भूसुर सदासिव१जनेस जलधारी धाय,
भाई सिवराम१सुत भारत१९५।४को ठानठानि ॥
इत्यादिक स्वस्थ भये सप्तसत७००घायल,
बुलाइ कैं निवाज भट भावसिंह१९५।१भूमीजानि ॥
घायल भये न जे बिसेस बढि जुज्झे तेहु,
सुनिये समस्त मुख्य मुख्य पट्टुता प्रमानि ॥ ३३ ॥
राम२०३।४नरनाह तिनमैं हु जे सपिंड१अस-
पिंड२ऐसैं जानहु सगोत्र३असगोत्र१ जोध ॥
जेठो१इंद्रसाल१९१।२कोतनूज गजसिंह१९५।१।२तथा,
आनंदादिसिंह१९५।५।२सुत पंचम५ रिपुन रोध ॥
बिष्णुसिंह१६५।१।३जेठो१राजसिंह१९४।४को तनूज वीर,
दूजो२मधु१९५।२।४वैरिन बिदारन बिसँदबोध ॥
दूदाउत२२।१८मुख्य१प्रेम१९४।१।५काका अमरेस१९३।१।६सुत,
नातो रायमल्ल१९२।३को त्यौं केसरी१९३।१।७कलह क्रोध ॥३४॥
सूर सुरतान१८९।१को पिनाती रामसिंह१९३।१।८मुख्य,
आठ८ए सपिंड१असपिंड२अब जंपेजात ॥
चुंडाउत१४।१०मुख्य१नसे सेसनमैं मुख्य१लाल१९३।१,
ऊदाउत१५।१७मुख्य१अखैराज१९२।१।२तिन्न खग्ग ख्यात ॥
सारन१९६।१के अन्वर्थ अधीस१जसवंत१९२।१।३नव-

वीरता रूपी वृक्ष का१थांवला॥३२॥२ब्राह्मण३राजा का जल रखनेवाला (पाणे-री) ४ नैरोग्य ५ भूपति ॥३३॥६आनन्दसिंह ७उज्वल ज्ञानवाला ॥३४॥ ८ वंश

सो लैजाहु मै न जिहिँ भो न सन तैरे थाइ ॥
दारा४०।१यौं कहाई वनैं दिल्ली टिकिवो न अब,
जानिहो अभय जहाँ बचिहौं जियत जाइ ॥ ३८ ॥
भाखि इम लै धन अभीछ दारा ४०।१ भजि,
होइ मरुदेस मैं लग्यो सो पंचध्नंद मग्ग ॥
जोलौं कछवाह१ गोर२ जवन३ न जुदे भये,
ता सुत सलेम ४१।१ सौं बिसालि राख्यो गढ़ि वग्ग ॥
पीछैं जो पवांइत ह्वै श्रीनगर सासकैं सौं,
पाइहै पनाँह ज्यौं उदंतैं सु कहैंगे अग्ग ॥
पाइ जय पापी अवरंग ४०।३ रु मुराद ४०।४ इत,
आये आगरा पैं गूढ़ तखत के लोभ लग्ग ॥ ३९ ॥
सुतन समीप सुन आवत उभय साह,
यौं कहि पठाइ घुरि जाहु तुम स्वस्व धाम ॥
कपट करंडै इन दोउन कहाई एह,
खानैंजाद आये एक चुंबन चरन काम ॥
आयो सुनिवेमैं खेद प्रभुके असाध्य यातैं,
भेजिहो दरस दे तो गिनिहो हमैं गुलाम ॥
यौंही भेजिवेमैं खीज खोली इत जानीजात,
द्वापरमिटाइ देहु तातैं तात तिम ताम ॥ ४० ॥
ऐसीदेत अरजी समीप आगराके आइ,
पर१भट भेदि केक तँहँ तँहँ स्वीय२ राखि ॥
साहसौं कहाई आप दारा ४०।१ कौं द्रविनैं देकैं,
भेजते नहीं जो ऐसैं अंगजतौ अभिलाखि ॥

॥ ३८ ॥ १ पंजाब के मार्ग २ भागकर ३ श्रीनगर पर आज्ञा करनेवाले से ४ शरण ५ वृत्तान्त ॥ ३९ ॥ ६ अपने अपने घर ७ कपटके करंड (छबड़ा) अर्थात् कपट का (टोकरा) पात्र ८ सन्देह ९ तहां ॥ ४० ॥ १० धन देकर ११ पुत्रपनकी

तो तो हमैं संसय न होतो पर यातैं अब,
*प्रानत्रान जतन कियोहै प्रभुको †भै भाखि ॥
याको आप धोखा जिन आनहु दरस दैकैं,
पुत्र२न पठावहु ‡सनातन सनेहसाखि ॥ ४१ ॥
साह कहि पठई कही सैं तब दारा ४०।१ सन,
अनुजप्रतिहार सोपैं पूछन कुसल भ्रात ॥
मानी मूढ तोहू मम सम्मति न मानी खल,
जून्यो जाइ जाइ कैं अवंती१ धौलपुर ख्यात ॥
नाहक अनीकैं आपुनैं ही दुहुँ२ओर के जे,
मालिक विनासे तातैं सो३न सुत मैं४न तात ॥
याही तैं विंडार्‍यो पुर पैठन दयो न द्रव्य,
कछु न दयो मैं कौन कहत वृथाही बात ॥ ४२ ॥
पुत्र५कहाई सो हु सुनि रु पिता सौं पीछी,
अपहु सलेम४१।२प्रभु सासन सौं अजआहि ॥
सत्रुसुन सौं जो प्रीति रावरी न व्है तो आप,
दारा४०।१के निदान क्यौं न तबही विंडारो ताहि ॥
दारा४०।१संग द्रव्य दैकैं अब जो नटत आप,
यातैं मम धोखा रहैं याकरन चित चाहि ॥
अंतर प्रकोटसौं जे चोकी रावरी है उहाँ,
आपुनी उतीही सम राखहिं नय निबाहि ॥ ४३ ॥
निजरतवैर भली१०भाखत विलम्ब२खान,
यातैं करी सो सब प्रसादी साह अंगीकार ॥
जान्यौं जेल तेम छुट्ट मिलिहु छुरैं तो ताज१,
तखतरदवाइ देखिलैहौं पुनि जोरदार ॥

---

*प्राण रक्षा का †भय दरकर ‡प्राचीन स्नेह रखकर ॥४१॥ १ सलाह २ सेना ३ खर्च ४ निकाला ॥ ४२ ॥ ५ हमारे शत्रु दाराशिकोह के पुत्र से ६ कारण ७ निकाले ८ भीतर के द्वार पर ९ नीति ॥ ४३ ॥ १० समय

आपुनैं१प्रबीर पलटाये जे न जानि उन,
माँहि उतनैंही राखि रिपुनके२ रखवार ॥
अंतर प्रकोष्ठ अंत *छलिनके छंदकरि,
स्वल्प रचि †संसद बुलाये कुवरही कुमार ॥ ४४ ॥
अंतर ‡वलज आइ पैठन लगे न उहाँ,
पूछत कही यों क्यों व पुत्रन मैं धोखा पूर ॥
चुंबन चरन बाला ज्यान के अधीन इहाँ,
स्वीय बालबच्चे इन लाये सब ही हजूर ॥
धावरन अंक यातैं एहु सिसु ऐहैं भय,
प्रानको छम हु तातैं आपक तजैं न दूर ॥
ऐसी भाखि ठहरि.प्रकोष्ठपैं कछुक काल,
सिबिरं सिखाइ राखे सैन सूँ बुलाये सूर ॥ ४५ ॥
ड्योढी साहजादनके वढत बिसेस बीर,
जैहैं मिलैं जालम प्रनादी इम साह जानि ॥
भाखी सावधान रन अंदर्न मैं आनवेहु,
यों जिते सभामैं तिते सुतन के संग ठानि ॥
सासन सु पाइ अवरंग४०।२रु कुमार४०।४उमैर,
पुत्र१न लै आगैं त्यों तेहुन२न को तोम तानि ॥
पीठि दै प्रजाकों दुव२दुष्टन चरन छुवै,
अश्रुन उपेत व्है रुमालसन बंधि पानि ॥ ४६ ॥
दै दै उपालंभ साह ए दुव२लगाय इम,
लेत दृंग लेत सब सिसु हु लगाइ उर ॥
भाख्यो अब जाहु नेक निपुन सुपुत्र तुम,
दारा४०।१ज्यौं करो त्यौं करिहो न धारि धर्म धुर ॥

*छलियों के आधीन करके †छोटी सभा रच कर ॥४४॥ ‡भीतर के द्वारपर १ धाउओं की गोदों में २बच्चों को३डेरे में ॥४५॥४गोदों में५बच्चों को६सम्मूह७ सन्तानों को अपनी पीठ पीछे रखकर ८हाथ ॥४६॥९झोदंभा१०नेह मिलते ए

सुनि अवरंग४०।३कही सुतते दरद हम,
चारिदिनपै तो छती सारे ही चित्त *क्रूर ॥
तो हू बादशाहके अद जिंद मैं मिलावहु हमैं,
तो जानहें है अभीष्ट हमैं आगरे +पुर ॥ ४७ ॥
चलन सुनि अवरंग४०।३कहि ऐसैं ऊठि,
अर्जुन दिखाइ आयो मधन१§दकोष्ट पर ॥
आनत हि दोउन ।।दिलालके बुलाये हुते,
ते सब पठाये कहि साहू हाथ कैद घर ॥
एतेमैं मुराद४०।४ हु सचैन उठि आयो मिलि,
ढाकिन प्रकोष्ठ रुपि तापै डारयो एक डर ॥
साहके जिते छे तिन सो दस १० गुनित दोरि,
पकरन पैठे लेरे छल्लनके पापपर ॥ ४८ ॥
सिसुन बनाइ गहिलीनों इम साह तिन,
पाके१ हुते ताके ते छिरे लौं न्यारि तरवारि ॥
नमि नमि कायर२ साहजादन सों रांचे धरा१,
धाल२ धन३ जाचे तिन्हैं सावे लिखे सुखकारि ।
डर्जिक जयसिंघ१ अनिरुद्ध२ दलेल३ इत,
साह रोक्यो. सुतन सकेन ११।२ भज्यो बनमारि ॥
श्रीनगर सासकंके सरन गयो सो पीछैं,
ताहि गहिदैहैं सो विसासघात विसतारि ॥४९॥
एक१देह इहीलौं अवरंग ४०।३ रु दारा ४०।४ उभै२,
पकरि पिताकौं दयो कारानाम धान धरि ॥

---

* क्रूर (तीक्ष्ण) । चांदी में ‡ नगर अर्थात् हमारा भाव और हमारा नगर ही हमको चाहिये ॥ ४७ ॥ § राज्य जोड़ी पर ॥विश्वासपात्र सेवकों को १ उन मनुष्यों को लानेवालों ने ॥ ४८ ॥ २ पहले दिखाववाले बादशाह के तरफ थे ३ शाहजादों के रंग में रंगे ४ जयसिंह आदि नीच विश्वासों को छोड़कर ५ आज्ञा चलानेवाला (हाकिम) ॥ ४९ ॥ १ इस समय तक ७ कैद के घर में

यातैं जयसिंह १ अनिरुद्ध२ रु दलेला३ दुव२,
बंधनसौं रूची हम काकौंगिनैं साह करि ॥
अब अवरंग ४०।३ लै मुराद ४०।४ हिं बिजंन बोल्यो,
कैसीकरिहैं वैं लिखी कूरम तो पाप परि ॥
ऐसी कहि ताहि पञ आरहि दे आप लघु,
बाधा मिस आयो छली घेरनं को घाट धरि ॥ ५० ॥
दूजे२ द्वार आपुनैं भरोसाके असेस भट,
भेजिके मुराद ४०।४।१ हिं गहाइ पापी पुत्र२ जुत ॥
कूटमंत्रि निर्दय निसंक करि कैद तेहु,
ग्वालेरके गढमैं पठाइदये द्वै२ हि हुत ॥
आपुनैं पिताकौं आगरेही राखि कारा अब,
आप भयो साह व्है निरंकुस निखिल कुंत॥
दिल्लीपुर जाइ पीछैं नृप१ रु नवाव२ सब,
बेगहि बुलाये अवंरंग ४०।३ तीजे३ साहसुत ॥ ५१ ॥
जब जयसिंह१ अनिरुद्ध२ रु दलेल३ एहू,
सैदाबाद सौं चलि कैं दिल्ली गये वैस्य बनि ॥
भूमिपति भाऊ १९५।१।१ गयो बुंदी तैं सम्हारि सेना,
आयो जसवंत२ जोधपुरतैं खलात्वैंखनि ॥
गो इत मुकुंद १९४।१ सुत कोटातैं जगतसिंह १९५।१।३,
इत्यादिक औरिज१ मलेच्छ२ जुरे तोमैं तनि ॥
आमैरेअधीसकौं हजारी एक१००० को अधिक,
मुनुसब दीनौं ख्यात कीनौं भानबंस मनि ॥ ५२ ॥

---

१ बादशाह को कैद करनेवाले औरंगजेब और मुरादबख्श से पूछा कि हम २ किसको बादशाह जानैं ३ मुराद को एकान्त में लेकर ४ अब ५ लघुशंका करने के मिससे ६ मुराद को घेरने का घाट पकड़कर ॥ ५० ॥ ७ खोटे मंत्री ८ शीघ्र ९ कैद में १० सब से स्तुति पाकर ॥ ५१ ॥ ११ आधीन बनकर १२ कुष्टता की खान १३ आर्य १४ समूह ॥ ५२ ॥

सहससत्त७००मुनसब१सहित, इभ२हय३प्रमुख उपेत ॥
पाइ एकदस११परगनाँ४, खिरयो सता१९४१ रनखेत ॥ ३६ ॥
गद्दी को चाकर गिन्यौं, जो भजिगो जसवंत ॥
जो तुट्टयो सत पंच५००जुत, सतसप्तक७००छतसंत ॥ ६४ ॥
गद्दीपति तंत्र न गिन्यौं, सता१९४१नृप सु अतिसूर ॥
इभ चउ४दिय भाऊ१९५१अधिप, जे पुनि रक्खि हजूर ॥५६॥
इती अधिक उपदा हु इहिं, रक्खिहु संतुत रुष्ट ॥
पहुके मुनसब१परगनाँ२, दुव२हि घटाये दुष्ट ॥ ६६ ॥
पहिलै मुनसब१परगनाँ२, सता१९३१दये भँजि साह ॥
आगरें बिनु ओरंग४०३६, लछि लये खगराह ॥ ६७ ॥
सो सब क्रम१उद्देसँ२सह, अग्रिम किँरन उदंत ॥
कहियत अब सुनिये कछुक, नहिद राम२०३४मतिमंत॥६८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-भूपभावसिंहचरित्रे भावसिंहबुन्दीसिंहासनाधिरोहणविवाहादिकथन १, धवलपुरसमरहतशस्त्रक्षतवीरतारतम्यादिवर्णन २, यवनेन्द्राप्रसाददाराशिकोहपञ्चनदपलायन ३, कपटरचनया यवनेन्द्रान्तिकप्राप्तकुमारौरंगजेबमुरादकृतबन्दीकरण ४, कीलितमुरादौरंगजेबयवनेन्द्रीभवन ५, पूर्वाधिकैकसहस्राश्ववाराधिकारप्रदानपूर्वक

१घायल॥६४॥२अधीन ॥६५॥३ज्यादा क्रोधित हुआ ॥६६॥४बादशाह का सेवन करके ५बिना अपराध ॥ ६७ ॥ ६ अनुसंधान सहित ७ अगले मयूख में ॥६८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में भावसिंह का बुंदी की गद्दी पर बैठना और विवाहादि का कथन१ धौलपुर के युद्ध में मरनेवाले, घायल होनेवाले और वीरता से युद्ध करनेवालों की गणना२ बादशाह की अप्रसन्नता से दाराशिकोह का पंजाब की ओर भागना३ कपट की रचना से शाहजादा औरंगजेब और मुरादबख्श का बादशाह शाहजहां के पास पहुंचकर उसको कैद करना४ मुरादबख्श को कैद करके औरंगजेब का बादशाह होना ५ जैपुर के राजा जयसिंह को एक हजारी मनसब अधिक देकर उसको और जोधपुर के राजा जसवन्त

जयपुराधीशजयसिंहयोधपुराधीशयशवन्तसिंहप्रसादापादन ६, बुन्दीन्द्रभावसिंहास्ववराधिकारह्रासवर्णनं प्रथमो मयूखः ॥ १ ॥

आदितोऽष्टविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुनसव इक्कहजार१०००मित, जयसिंह१हिं दिय जत्थ ॥
गद्दीपति तंत्रे सु गिन्यौं, तोसो समुचित तत्थ ॥ १ ॥
दारा४०।१कुमर हिं पिछि दै, जो रन तैं जसवंत२ ॥
गो भजि तिहिं गज१हय२द्विगुन, सहतुररा३दिय संत ॥२॥
अधिक निवेदे च्यारि४इभ, सो भेटहु लहि साह ॥
भाऊ१९५।१ प्रति रुष्टहि भयो, रंच न समुझ्यो राह ॥ ३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अल्पहि रीझ सता१९४।१मन आये, पहिले अट्ठ८परगनाँ पाये ॥
टौंक१मालपुर२केकरी३हु तिम, अरु गढहथनी४हिंगुलाज५इम।४।
भैंसोदा६रु पानगढ७भासक, केथोली८वलि सुवलि प्रकासक ॥
अखैसेन१मुहुकम२खिच्ची१३अरि, सोदर द्वै२हि तहाँ मित संहरि५
तिनकौं जित्ति भीमगढ९पत्तन, लयो नवम९लरि धीर धरार्धन ॥
गढमऊ१रु वारौं२पहिलैं गत, लये साह तव अटक न लंघत ।६।
मिलि अवरंग४०।३मुराद४०।४इक्क१मन,सव आयेउज्जयिनी जुज्झन
पुव्वहि तव सु मऊ१पुनि पायो, अरु बुंदी हि पटा तस आयो।७।
जव औरंग४०।३मुराद४०।४हि जित्ते, विसौंलाहि इतके भट वित्ते॥
दारा४०।१।१सहित जियन मन दिन्नौं, कासिमखान पलायन

सिंह को अपनी प्रसन्नता में लेना ६ बुंदी के राजा भावसिंह का मनसब घटाने के वर्णन की प्रतिज्ञा का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२८ मयूख हुए ॥

१ आधीन ॥१॥२॥ २हाथी ३क्रुद्ध ॥३॥४॥ ४ नाश करके ॥ ५ ॥ ५भूपति ६अटक नदी के पार नहीं जाने के समय ॥६॥ ७ ॥ ७ उज्जैन के युद्ध में ८ भागा ॥८॥

किन्नौं ॥ ८ ॥

बुंदी अधिप सता१९४।१तब बुल्ल्यो, तस आदर बढतो इम तुल्ल्यो
प्रथम लयो सु दयो बाराँ २ पुनि, संग अधिक नव ९ प्रांत लेहु
सुनि ॥ ९ ॥

बाराँ२जुत ते दस१०हि बखानत, जहँ बाराँ१पहिलो१ सब जानत
बहुरयो खैराबाद२बरोद३हु, लै कोटासन लय३हि दये लेहु ॥१०॥

अप्पन तंत्रै चउम४दिय आगर४, सारंगपुर५भेलसा६सागर७ ॥
बालाभेट८ सिरौंझ९ द्रंग बलि, छबरा१ अप्प्यो दसम १० रीझ
छलि ॥ ११ ॥

दस १० ए मऊ १ सहित एकादस११, बीस २० भीमगढ १ जुत
पहिलो८बस ॥
नृप परगनाँ इते२०क लहे हुँत, सप्तहजारी७०००मुनसुब संजुत१२

नृप भाऊ१९५।१गुन साह न धारे, अब ए बीस२०हि प्रांत उतारे
हो जब मुनसब सप्तहजारिय ७०००, अबहु सहचउसहँस४५००
उतारिय ॥ १३ ॥

अद्धसहित दुसहँस२५००मुनसब इम, जिहिँ भाऊ१९५।१कैं रक्खि
इतरैं जिम ॥
सहँससद्धदुव२५०० मित रनसंतहिँ, भनि मुनसुब दिन्नौं भगवंत
१९५।३हिँ ॥१४॥

दिय तिहिँ संग मऊ१ बाराँ२ दुव२, सम आदर किय द्वै२हि सता
१९४।१ सुव ॥
भाऊ १९५।१ कै कछु अधिक रही भुव, होइ तदपि स्वानुज स्व
तुल्य हुव ॥ १५ ॥

॥ ९ ॥ १ शीघ्र ॥ १० ॥ २ अपने अधिकार में ३ रीझ में उमंग कर ॥ ११ ॥ ४ स्तुति योग्य ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ ढाई हजार ६ अन्य राजाओं के समान ७ युद्ध में श्रेष्ठ जानकर ॥ १४ ॥ ८ शत्रुशाल के पुत्र ९ खेद की बात है कि १० छोटा भाई अपने बराबर होगया ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

मुनसब¹मुनसब²माँहिँ सौं, देस¹माँहिँ सौं देस२ ॥
भिन्न रावपद³पाइ भो, इम भगवंत१६७।३इलेसं ॥ १६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सहँस दुसह२५००रक्खि मुनसब सब, इम किय अल्पविभव भाऊ १९७।१ अब ॥
लुब्धे सहचउसहँस४५००छिन्नि लिय,दुव२दल³ सहँस२५००तावि च उक्त हिं त्रिग ।१७।
पुनि यह हुर्वे सु रावपद³पै हैं, जेठे¹सौं हु बहुरि बढिजैहैं ॥
पंचसहँन५०००दल२५००बटि इम ए पहु,लखि जेठे¹सम अनुज३।२ कानि लहु ॥ १८॥
कहि अब रावपद२ हु सम करि है, साह१ कथित२ दिसंहित अनुसरिहै ॥
खल मुनसबदुवसहँस२००० रख्यो खिँल, किन्नौं स्वबल खालसा सो किल ॥ १९ ॥
अग्गैं सता १९४।१ प्रांत अप्टक८ इम, जित्ति भीमगढ९ नवम ९ लयो जिम ॥
वाराँ १ मऊ २ गई सु लई वलि, क्रमतैं दई मऊ २।१० पहिले कलि ॥ २० ॥
प्रांत सता १६४।१ कोही यह १० ही पैर, दयो माधवहि १९३।२ साह जथा ¹¹र ॥
तस संगहि वाराँ २।११ हु गई तिम, जब नव ९ संग दई सूचिन

---

१ भूपति ॥ १६ ॥ २ लोभ करके ३ दो और आधा (ढाई) ॥ १७ ॥ ४ शीघ्र ५ पांच हजार का आधा आधा ६ शीघ्र ॥ १८ ॥ ७ बाकी ८ निश्चय ॥ १९ ॥ ९ युद्ध में ॥ २० ॥ १० परन्तु ११ भय से ॥ २१ ॥

जिम ॥ २१ ॥

मिलिबरोद१बारां२आगर३*सुख,खैंराबाद४सिरौंज५†सुधनसुख॥
इक घटिबीस २० स खिल इत्यादिक, बीसम २० तत्थ भीमगढ
९।२० आदिक ॥ २२ ॥

ए भाऊ१९५।१ सनसब२०हि उतारे, पुनि मऊ१।१० रु बारां२।११
‡बट पारे ॥
ते दुव२ अप्पि स्वभट भगवंत १९५।३ हि, सुरि साह रु मन्नि न
कछु मंतहि ॥ २३ ॥

रहे भीमगढ९।२०जुत अट्ठारह१८, ते सब प्रांत खालसा करि तह ॥
सुनसब कथित तुल्य दै लित मित, इत भाऊ १९५।१ भगवंत
१९५।३।२गिन्यों इत ॥२४॥

मऊ१बहुरि बारां२ खल मंत सु, अधिप भयो लहि जुग२ भगवंत
१९५।३ सु ॥

कही इम न मैं अग्रज१किंकर, अग्रज१को किम सहों अनादर२५
कुंदी सब हड्डन जननी वर, जनन्यों मैंहु अवहि जिहिं जाठर ॥
किम चंडातक तस कतराऊँ, प्रभुसों भिन्न नई भुव१पाऊँ ॥२६॥
भिन्नहि तिम सुनसुव लहि भासौं, प्रसू सुजस मैं पुत्र प्रकासौं ॥
सक्तहि हजरत भिन्न समर्प्पन, अप्पन कछु अप्पन हित अप्पन
अग्रज१भुव१सुनसब२चहि अक्खय, मोहि इतर अप्पैं बहु वसुमय
सुमैं तदपि न वढौं अग्रज१सन, मन्नौं सदा मुख्य स्वामीमन ।२८।
पुहवी१कछु पद१कछु घटिपाऊँ, अग्रज१सासन स्वसिर उठाऊँ ॥
सता १९४।१ तनयंपन तव राम सुधरैं, कित्ति मंदीय सुकवि अ-
तुल करैं ॥२९ ॥

---

*आदि †श्रेष्ट धन ॥ २२ ॥ ‡बँट कर दिये १ललाट ॥२३॥ २थोड़ा थोड़ा ॥२४॥ ३दुष्ट विचार से ॥२५॥ ४उदर में ५ल्लहूँगा ॥ २६ ॥ ६ माता ७ समर्थ ८ देने में ॥ २७ ॥ ६ धनमय ॥ २८ ॥ १० शत्रुशाल का पुत्रपन ११ मेरी कीर्ति ॥ २९ ॥

जन्मसफल तो मैं मम जानौं, *प्रभु१प्रभु प्रभु२मम उचित प्रमानौं
भाऊ१९५।१ अनुज तबहि मैं ।भूतल, विदित रहौं जस‡खहि बा-
हुबल ॥ ३० ॥

पै प्रभु राम२०३।४न यहहु प्रमानी, जिहिं सठ स्वार्थ वृद्धि सुभजानी
मति सोधी भाऊ१९५।१अग्रज१मम, सो क्यों रहैं दुष्ट०हैं मोसम॥
कछु ताहू सौं तिक्ख निकारौं, प्रभुता बंटि ताहि तनु पारौं ॥
सुहि गिनि जुनसब३देस२सुकाये, अग्रज१के इहिं खल उतराये।३२।
तउन प्रांत बीस२०हि पाये तिहिं, कुमार५मऊ१रु बारां१हि मिले जिहिं
मुनसब सङ्क सहँसचउ ४५०० मिटाइ, पुनि तासौं सङ्क दु सहँस
२५०० पाइ ॥ ३३ ॥

अग्रज१पूज्य जदपि संभव आहै, मन्नि तदपि निज वृद्धि महासँह
कुटिल तमैं दुसहँस २००० मुनसब करि, उक्त प्रांत अट्ठारह १८
लिय अरि ॥ ३४ ॥

पँहुनैं साह रीझ यह पाई, उपदा तँहँ चउ४गज अधिकाई ॥
भोज१९१।२।१प्रतिभ भो यह भगवंत१६५।३।२हु, लिन्नी भुव दूदा
१९१।१ सनं जिहिं लहुं ॥३५॥

यह न कही हो प्रभु तुम अकबर ३७।१, बखसहु भिन्न विभव
भूमुख बर ॥

पै सुनि कहि बुंदी तिहिं पाई, अग्रज१सन गिनि मन अधिकाई॥
इलाहि दुष्ट भगवंत१९५।३इहाँ यह, मन्नत भो घर बंटि बडो मँह॥
भेट अधिक चउ४गज तउ भूपति, करि मन्निय इस दिन जैहैं काति॥

---

* हे स्वामी मेरी स्वामिता के समान स्वामिता मिलना उचित है, अथवा हे प्रभु आप स्वामी के स्वामी हो सो मेरे उचित होवे सो प्रमाण करो ।भूमि पर ‡सम्पादन करके ॥३०॥१हे स्वामी रामसिंह २ अपनी ॥३१॥ ३ न्यून ॥३२॥३३॥ ४ जन्म दिन से ५बढने में बड़ा उत्सव माना ६उस कुटिल औरंगजेब ने अपने अधिकार(खालसे) में ॥ ३४ ॥ ७ राजा ने ८ सदृश ६ दुर्जनसाल से १० जिसने शीघ्र भूमि ली थी॥३५॥११हे अकबर बादशाह १२भूमि आदि ॥३६॥ १३उत्सव

*बलिहु गिनैं न साह गही बस, तजिबो तब †समुचित आश्रय तस
इहिं बिचार अलपहि लहि आदर, बिस्यो सिबिर निज बुरि बुंदीवर
भगवंत १९५।३ हु अग्रज १ निभ भास्यो, करि खलभाव ससत्व प्रकास्यो ॥
साह लयो दुसहँस २००० मुनसब सौंमि, अट्ठारह१८ परगनाँ अतिक्रमि ॥३९॥
आमेर१जोधपुर२आदि इँनन, पाइ देप अरु३ हि इत अँजुपन ॥
भयो खिंन कछु तँह नृप भाऊ१९५।१, इच्छि मरन रन सबन अगाऊ।
जान्यौं कामप गहिं तब जुज्झहिं, बिक्खैंसु साह कौ हि बलि बुज्झहिं
बीरत्वहि लखि जु यह दढावहिं, पुनि तोतो बिभवहि हम पावहिं
तदपि स्वकीय गिनैं न साह तब, समझहिं अब बिपदा स्वीकृत सब
रान प्रताप रहे जिम रहिहैं, बनैं तिम न तो दिवँ सुख लहिहैं । ४२ ।
सुनि यह अरज करी सब सुभटन, पटा तजहु अब सजहु बीरपन॥
को इहहेतु बिसिख यह कुप्प्यो, लज्जा१रीति२प्रीति३सब लुप्प्यो
भूप कहिय अबहि न इम भाखहु, रंचक बीर धीरपन राखहु ॥
अपनौं मन जो लखि यह उज्वल, खलपन तजि बहुरि न भासैं खल
याके अनुग हैंहितो अप्पन, पुनि लखिलैंहि स्वामि मत थप्पन ॥
बहुरि न मिच्छ प्रीति जो बिक्खहिं, सब सम्मत तोतो सुहि सिक्खहिं
पै यह सोक अतुल हम पायो, दुव२प्रांतन सब ग्रास दुरायो ॥
बिष्णुसिंह १९५।१ आदिक बीरन बस, हरीगढा१दि हुते जय साहस ॥ ४६ ॥

॥ ३७ ॥ * फिर † वञ्चित १ अपने डेरे में प्रवेश हुआ २ बुन्दी का पति ॥ ३८ ॥ ३ सहश ४ बराबर पन ५ ठंढेपन से; अथवा काट लिया ६ उल्लंघन करके ॥ ३९ ॥ ७ राजाओं ने ८ सीधापन ९ उदास ॥ ४० ॥ १० देखकर ११ फिर किसको पूछेगा १२ वीरता ॥ ४१ ॥ १३ अंगीकार १४ स्वर्ग के सुख ॥ ४२ ॥ १५ बिना शिखावाला (यवन) ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ सेवक ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

ते सब गये रही मम भू तेलु, जवन लाई हेलनं लखिकैं जनु ॥
अब न इतीक मिलैं छिति इनकौं, जथाश्रद्ध मिलिहैं तउ जिनकौं
बदि यह निज अध्यच्छ बुलाये, ए बस सब बुंदी चलि आये ॥
काका महासिंह १९४।९।१ जहँ हाकिम १, अरु दहिया सुंदर २
चमूपं२ इम ॥ ४८ ॥
सचिव३ रायमल्लोत२३।१९ सपिंड सु, बंधु नाम हरिभानु१९४।१।३
बुद्धिवसु ॥
त्रय ३ हि मऊ १ वारां २ अधिकृत तव, ए हे ते भाऊ १९५।१
बुल्ले अब ॥ ४९ ॥
सुनहु पुव्व दहिया यह सुंदर २, वन्यौं सता १९४।१ छत सचिव
वर्ग वर ॥
मऊ १ रच्यो सु सज्जि भट मेला, दल्यो सता १९४।१ जब नृप बुं-
देला ॥ ५० ॥
अनरुप्यो तब कछु साह देखि उर, पलटयो यह प्रभुभक्त मऊ१पुर
सूबा मालवईस बिसाला, हो जो सेरखान१जिम हाला ॥ ५१ ॥
सोहि नसा बढिकैं निज सूरन, प्रस्थित भो दिल्ली कछु पूरन ॥
कढन लग्यो मग मऊ१सामकरि, तँहँ सुंदर२ आनि समरसिंधु तरि
फिरि अड्डो रु रोकि तस फैलन, गेर्यो मारि दयो वह गैलन ॥
अबहु चमूप हुतो दहिया यह, सुहु आयो निज स्वामिधर्म सह५३
अंतिम दोउ२न ग्रामहुतें उत, जेहु गये इतरन बहुतन जुत ॥
वलि इत्यादि मऊ१ वारां२ वस, जहँ आये निवहन सासन १ ॥
जस२ ॥ ५४ ॥
जड़ हरपालपउत्त५।१भये जिम, उतर्यो इननैं जज्जाउर इम ॥

१अल्प मानो २अपराध देखकर ३श्रद्धा के अनुसार ॥४७॥ ४ अपने अधिकारी ५सेनापति ॥४८॥ ६ राजा के सात पीढी के भीतर का भाई ७ बुद्धि ही है धन जिसके ८ अधिकारी ॥ ४९ ॥ ९ समूह ॥५०॥१० उज्जैन का ११ जहर ॥५१॥ १२ युद्ध रूपी समुद्र को तिरकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १३ आज्ञा ॥ ५४ ॥

सता१९४।१महासिंह१६४।९हिँ बितर्यो सो, काका हाकिम मऊ १करयो सो ॥ ५५ ॥
मंत्री१सेनानी२रु सचिव३मत, ते आये सिटि जदपि हुते तत ॥
हो जज्जाउर महासिंह१९४।१हित, अतुल ग्राम तो जुत प्रवृत्त इत
यातैं उत३न मिल्यो कछु याकैँहँ, तिन सेसनके ग्राम हुते तँहँ ॥
नृप अधिकृत सुंदर ३।१, हरिभानुक ३।२, भये छुधित तत्रत्य ग्रास भुक्त ॥ ५७ ॥
इनको त्रिक३बुंदी जब आयो, पहु तब समुचित हुकम पठायो ॥
ग्राम हई२ जुत ठिक्करिया १ गुरु ३।२।१, अप्पो सुंदर २ हित देस अनुरु ॥ ५८ ॥
अरनिष्ठा१।२दुव२ग्राम सहित इम, हरिभानु१९४।१।३हिं दिय नृप८हैं उर हिम ॥
अधिकृत दुर्मन त्रय३नहिँ आये, दुव अंतिम दै कथित दिपाये।५९।
राजसिंह१९४।४कुल मुख जस रक्खन, बिष्णुसिंह१९५।१ आदिक दव अरिवन ॥
इत्यादिक सुभटादिन अखिलन, ग्रास बिहीन भयेउत बहुगन।६०।
गदित हमारे नेगन ग्रामहु, परबस परि इम दुव२हि गये पँहु ॥
बंभन खेट१रु भीमखेट२बलि, वृत्ति नियतहै बहुल भेट बलि ।६१।
खेटबलि१भेटबलि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
ग्राम जुग२हि वह मऊ गलै गय, इम बिनु वृत्ति भये हम बिनु अय
विष्णु १९५।१ राजसिंहोत १।३१ आदि वर, भये अनार्यं जिते अप्पन भँर ॥ ६२ ॥

---

१ दिया था सो ॥५५॥५६॥ २ भूखे ३ वहां के ग्रामों को ४ भोगनेवाले ॥५७॥ ५ तीनों का समुदाय ६ समीप ॥५८॥ ७ ठंडे हृदय से ८ कहे हुए ॥५९॥ ९ अग्नि ॥ ६० ॥ १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपने नेग के ग्रामों को कहते हैं ११ हे राजा १२ ब्राह्मणों का खेड़ा १३ निश्चय १४ बहुत ॥६१॥ १५ बिना शुभ भाग्य के १६ बिना आमदनी १७ भट ॥६२॥

इत चम्मलि सन तिन्हहु मिले अब, संवसथा¹दि सवन क्रमतैं सव
हमरे पितरहु वृत्ति हीन हुव, दिल्ली पहुँचे खेम१६८।।१।राम१६८।१।
१ हुव २ ॥ ६३ ॥

सुकवि खेम१६८।१।नगराज१६७।१ केर सुत, जहँ भूपाल १६७।१
तनूज राम१६८जुत ॥
दिल्ली गये वृत्ति बिनु ए हुव², छत्रपति सन विमन मिलन हुव६४

॥ दोहा ॥

भूप कह्यो जिन दुख भजहु, गये जदपि ए ग्राम ॥
गिनहु उभै³हमरे गये, तुम सिर शारन ताम ॥ ६५ ॥
उनको जो कर आवतो, दम्म ताहिमित देय ॥
समय समय बंटि सु सुकवि, सकल लेहु गिनि श्रेय ॥ ६६ ॥
संवधन¹⁰याहनशसिसुन, गर्भधरनशतिम गेह ॥
वंसु इतमुख अवसर विभंजि, अखिल लम्हहु एह॥६७॥
उरलाये कवि स्वीय इम, बुंदी अधिप विसासि ॥
नेगन बंधिय रीति नव, प्रीति विसेस प्रकासि ॥ ६८ ॥
गत बुनसव नृपको गिन्यों, सहँससह४५००चउ४सर्व ॥
समुझिरहे कविजन सुमति, अप्पत यहहु अखर्व ॥६९॥
कहियत सो अग्रिम किरन, राजमुकुटमनि राम२०३।४ ॥
नेग कविन जिम हुव नियत, गुमत वृत्तिमय गाम ॥७०॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे यवनेन्द्रौरङ्गजेबाप्रसत्तिहेतुबुन्दीन्द्रभावसिंहप्रान्ता-

---

१ ग्राम ॥६३॥ २ उदास ॥६४॥ ३ तहां ॥६५॥ ४हासिल ५उतने ही रुपये ॥६६॥ ६धन ७ इत्यादि समय ८बंद करके ॥ ६७ ॥ ९ नवीन ॥६८॥ १० जो देते हैं सो ही बहुत है ॥६९॥ ११अगले मयूख में १२ हे राजाओं के मुकुट रामसिंह ।७०।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में बादशाह औरंगजेब की अप्रसन्नता के कारण बुंदी के राव भावसिंह के परगने और मन्सब कम होकर उसके छोटे भाई भगवंत-

इववाराधिकारन्ह्रासतदनुजभगवन्तसिंहवृद्धिवर्णनं द्वितीयो मयूखः
आदित एकोनत्रिंशदधिकद्विशततमः ॥२२९॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ दोहा ॥
इमतैं खिंल जे पंच५हे, नेगी हे नरनाह ॥
ग्राम तिनहुके सब गये, हे पैरतट ते हाह ॥ १ ॥
इमहिं सबन किन्नी अरज, जिन जिन दिल्लिय जाइ ॥
तिन तिन सबन विसासि तँहँ, किय नृप हित अधिकाइ ।२।
प्रथम पुरोहित१व्यास२पुनि, चारन३भट्ट४हुचित्त ॥
पंचम५नापित५डौंवँ६पुनि, बिलवाले भूवित्त ॥ ३ ॥
कतिक नेग सामान्य किय, सब इम तथ्थ सरीक ॥
दुव२त्रय३चउ४पंचम५विदित, ठौंठौं सुहु अब ठीक ॥ ४ ॥
जे उद्देस१९ चिन्ह२जुत, अब कहियत अवनीप ॥
ते मुक्तागन धरहु तिम, स्रवन सु पेसल सीप ॥ ५ ॥
॥ पादाकुलकम् ॥
जब जब स्वस्व समय रानीजन, लहँ प्रथम११सुत दोहँदलच्छन ॥
सह परिजन तबछ६हि तृप्त्यासन, नृपघरहोइ भैंसवलग भोजन॥६॥
प्रथमेतैंर गर्भहिं जब पावैं, जिम तब करि सीमंतं जिमावैं२ ॥
प्रथम १ पुत्र संभवँ उच्छवपर, बंटैंछ६हि खटसत ६०० रुप्प-
य ३ बर ॥ ७ ॥

सिंह की वृद्धि होने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ॥और आदि से २२९ मयूख हुए ॥

१ पाकी २ चामल नदी के पैले किनारे ३ खेद है ॥ १ ॥ २ ॥ ४ उदास ५ नाई ६ ढोली ७ भूमि ही है धन जिसके ऐसा राजा ॥ ३ ॥ ८ ठौर ठौर ॥ ४ ॥९ मोतियों के समूह के समान धारण करो १०कानों रूपी सुन्दर सीप में॥ ५ ॥ ११गर्भ१२ घर के लोगों-सहित१३तृप्ति भोगनेवाले१४बालक के जन्म होने तक ॥ ६ ॥१५ब्राह्मण (पुरोहित) को छोड़कर अन्य१६पंचमासी १७ जन्म ॥ ७ ॥

अन चउ४मुख्यन चउ४गज४उत्कट, पुरुष१तियरनके संव भूख
न ५ पट ६ ॥

अंत्य जुग२ हि सब यह हय४ आदिक ५।६, सुनहु कनिष्ठ सुतन
प्रासादिक ॥ ८ ॥

करें तबहु यह६तारतम्य करि, पुत्र जितेक तितेक भेद परि ॥
प्रसवनंत अखिल जो पूरव, सुता जन्म अवधिहु सो८ सो९जब ॥
अरु कन्याके प्रसव अनंतर, पावहिं जे कहिहैं अवसरपर ॥
खिलन नग जे भिन्न रहे खिल, ते तिन्ह जानैं होहु गिरि११ कि
तिल२ ॥ १० ॥

पुत्र निमित्त अधिक हम३पावहिं, सो बैं सुनहु सबनिंयतसुहावहिं
हम३कृत मुख्य दंपती२६हैं जे, लहि गौरव यह बढत लहैं जे ॥
प्रथम१पुत्रभैंव सुंत्तिन पूजन१।१०, जहँ गावैं प्रभुबंधु बधूजन२।११
इम महंर्घ भूखन ३।१२ पट ४।१३ अंर्चित, सदन क्रमैं अंवरोध
समर्चित५।१४ ॥ १२ ॥

पूजन१धूजन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सब घरके हम वैंसन ६।१५ लहँ सब, तिम स्त्रीजन अवरोधें लहैं
७।१६ तब ॥

महुर ८।१७ पंच ५ इक१ हार ९।१८ पुरटमय, जैंज्ञादै कवितियहि
जसोदंय ॥ १३ ॥

---

१ प्रथम कहेहुए मुख्य चार जनों को १ मदोन्मत्त ३ नाई और ढोली ४ छोटा पुत्र ५ प्रसन्न होकर ॥ ८ ॥ ६ विचार ७ जन्म होने से ८ पुत्री के जन्म पर्यन्त ॥ ९ ॥ ९ जन्म पीछे १० बाकी के ११ चाहे पर्वत के समान बड़े होवें, अथवा तिल के समान छोटे होवें ॥ १० ॥ १२ अब १३ निश्चय १४ स्त्री पुरुष का जोड़ा १५ बड़प्पन ॥ ११ ॥ ११ प्रथम पुत्र का जन्म होने पर १७ज्ञातियों से पूजन १८ आपके भाइयों की स्त्रियें १९ महँगे २० पूजित होकर २१ घर जाते हैं २२ जनाने से पूजित होकर ॥ १२ ॥ २३वस्त्र २४जनाने से २५ज्ञा- धा (जाननेवाली) सुवर्ण का हार देती है २६यश को उदय करने के लिये॥१३॥

नेग नवक ९ इमकों यह निंयतहि, लिखिदिय प्रथम१ कुमर उ-
द्भव लहि ॥
कुमर सम्बंधन अनेंह क्रम, मिले महुर१।१९दस१०कनकें मनोहर
प्रथम १ कुमार प्रथम १ सगपनपर, धरैं कटकं १।२० इम खट ६
हि वृत्तिधर ॥
सत१००सत१००रुप्पय२।२१तिमहि लहैं सब, तुरग३।२२वंस्त्र४।२३
समुपेत तथा तव ॥ १५ ॥
लघुसुतादिं प्रसवादि समै लहिं, सगपनलाग कछुघटिइमं ५।२४
सबहि ॥
अब बिवाह बिधि वृत्ति इलांपति, मति क्रम कहियत सुनहु महा-
मति ॥ १६ ॥
ज्येष्ठ१कुमर व्याहन बिधिक्रम जँहँ, कहत लहत जोजो जाजा कँहँ
कहुँ छ६ पंच५ चउ४ त्रय३ दुव२ इक१ क्रम, पै इम बंट सु सुनहु
जथा प्रम ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

गनपतिपूजनतैं गिनहु, बंधुनसहित बुलाइ ॥
सुरस अन्न नृपके सदन, खट६हि वृत्तिधर खाइ१।२५।१८।
आम अन्न२।२६सबके अरथ, बलि मन मिति चउबीस२४॥
मिलैं सु बंटैं खट६हि मिलि, अलतंनाम अधीस ॥ १९ ॥
वृद्धिबेंराभिध धान्य३।२७वलि, मनन बिहत्तरि७२मान ॥
बंटैं सुहु खट६वृत्तिधर, सब सब वृत्ति सुजान ॥ २० ॥
बहुरि बिहत्तरि७२मन बिहित, आमैं सालिमय अन्न४।२८॥
जवैं पावनदिन मिलहिं जो, सब बंटहिं संपन्न ॥ २१ ॥
मँहँडेकेदिन सत१००मंहुर५।२९,पेसैंल खट६सिरुपाव६।३०॥

---

१ निश्चय २ जन्म ३ समय ४ स्वर्ण की ॥ १४ ॥ ५ फड़े (कंकण) ६ सहित ॥ १५ ॥ ७ हे भूपति ॥१६॥ ८ प्रमाण ॥ १७ ॥ १८ ॥ ९ कच्चा अन्न १० भाखे ॥१९॥ ११नेग का नाम है ॥२०॥ १२कच्चे चावल १३यव धान्य ॥२१॥१४ सुन्दर

खंभहिं रोपत महुर७।३१खट६,भूखन८।३२खट६मनिभाव ।२२।
इक१खंभहिं बँधं सु इभं१।३३, मनन विहत्तरि७२ मेंय ॥
मधुर नव्यं गोधूम मय, अट्ट१०।३४पिंड अभिधेय ॥ २३ ॥
वेढैं खंभहिं जो वसन११।३५,विहित जरीमय शुद्ध ॥
तुलित विहत्तरि७२मन तिमहि, सुरस मिठाई१२।३६सुद्ध ।२४।
तिहिं वासर अवसान तिम, निस वीरत निसनाम ।
सूचित७२मित समिता१३।३७सुमन, त्योंहि सुमन१४।३८तँहँ तौम७२
आज्य१५।३९विहत्तरि७२मन इहाँ, सक्कर१६।४०ता७२हि समान
इम वीरत निस नेग ए४,अखिल दलित अभिधान ॥ २६ ॥

॥ षट्पात् ॥

दूजे२दिन इम दिष्ट निचैंय वसु परन निमंत्रन१।१७।४१ ॥
धवपट१भूखन२धरन२।१८।४२रु तस वैंढवा आरोहन३।१९।४३
दस१०।१पंच५।२रु पंचदस१५।३महुर३०त्रय३ठाँ इम मीसँन ॥
वृत्तिलहैं ऋप३वढत विदित वृद्धन सँक्खी सन ॥
चढि चलि वरात पथ गम्यं चलि व्याहैं दुलहनि जाइ वर ॥
तहँ निंयत वृत्ति दूजे२दिवस प्रथित त्याग आरंभ पर ॥ २७ ॥

मीसन१खीसन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

नेग छ६मित तँहँ नियत त्याग पहिलैं इम तीन३न ॥
भेदक चारन१।३भट्ट३।४जथा अंतिमें६ पटहा जन३।६ ॥
महुर२०।४४तीन३धरि मध्य पंचैं५अंगुलि भरि रुप्पय२१।४५

॥ २२ ॥ १ हाथी २ प्रमाण (तोल) ३ नवीन ४ गेहूं ५ इस नेग का नाम आटा का पिंड नाम है ॥ २३ ॥ ६ थम्भ के लपेटते हैं वह वस्त्र ॥ २४ ॥ ७ उस दिन के अन्त में ८ मैदा (गेहूं का बारीक आटा) ९ गेहूं की १० गेहूं ११ तहां ॥ २५ ॥ १२ घृत ॥ २६ ॥ १३ धन का समूह १४ पति के वस्त्र १५ घोड़ी १६ मीशण शाखा के चारण १७वृद्ध लोगों की साक्षी से १८जाने योग्य स्थान पर जाकर १९ निश्चय २० प्रसिद्ध ॥२७॥ २१ ढोली २२ पांचों अंगुलियों से

सयं निज निज संग्रहित तावं मानव इमहीं त्रय३ ॥
ए बीरमुष्टिनात्मक उंदित तीन३न३तीन३हि नेग तिम ॥
तीन३न बहोरि त्रय३त्यागमैं नेग सुनहु पालन प्रतिमं ॥ २८ ॥
चंडाल१रु चम्मार२ रंजक३तच्छक४०योकार५रु ॥
क्रम नापित६कुंभार७आदि कारुक उपेत अरु ॥
भृत्य८रु बेतनभृत्य९जिते जाके पुनि जाचक१० ॥
सुरपूजक११तिम साधु१२बिप्र निजवृत्ति सु बाचक१३ ॥
जामात१४भाम१५भानेज१६जुत संवित सुत१७रु बिधवा१८संहित
लै द्विगुन त्याग२२।४६निज निजकुलजपुरुख दूरदेसहु प्रहित।२९।
रु१ अरु२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
रुप्पयं१गज२हय३करभ४बसन५भूखन६जाजाविधि ॥
बंटहिं त्याग बिसाल नियत खुलवाइ कोस निधि ॥
तास द्विगुन हम त्रय३हि गहैं गौरव१लाघव२गति ॥
भूखन१गज२हय३ मोलि४अयनं इक१इक१इक१इक१अति ॥
जाचक१ रु पुरोहित२ भृत्य३ जन पावहिं द्विगुनित पुरुखमति ॥
खिल नाम द्विगुन इक१इक१ लखहिं सबन तदपि पालनसुमति३०
वाहीदिनके अंत पंति भोजन जब पावहिं ॥
कन्नी जनकसन कहि रु दुलह यह हमहिं दिवावहिं ॥
पंच५महुर१।२३।४७नर पुरट मंजु मन बीस२ मिठाई२।२४।४८
बलि घर आइ बरात दुलह प्रविसैं बसुदाई ॥

मुट्ठी भरकर १ अपने अपने हाथ से २ तहां ३ सदृश ॥ २८ ॥ ४ चमार ५ धोबी ६ खाती ७ लुहार ८ नाई ९ कमीणों सहित १० चाकर ११ तनखा पानेवाले नौकर १२ मन्दिर का पुजारी १३ स्वामी (संन्यासी आदि) १४पुरोहित १५ जमाई १६ बहिनोई १७ पुत्र सहित पुत्र की माता १८ अपने अपने कुल के पुरुष १९ दूर देश में विखरे हुए भी दूना त्याग लेते हैं ॥ २९ ॥ २५ ॥ २०ऊंट २१धन का खजाना २२बड़प्पन २३ऊंट २४एक एक के घर २५ सेवक २६ बाकी के ॥३०॥ २७कन्या के पिता से २८ सुवर्ण की २९ धन देनेवाला ॥

तँहँ महुर१।२८।४९ जुगर रु कुलदेवतहिँ पूजत २।२६।५० पंच५ रु वहुरि वंर ॥
कंकन तजंत दस१०महुर३।२७।५१करि ध्रुव इम हुव इम वृत्तिधर

॥ दोहा ॥

पयलग्गैं दुलहनि प्रथम१,पंच५ महुर१।२८।५२ करि पेस ॥
तिम पगलग्गैं कवितिनय, ईतर इक्क१ दे एस२।२९।५३ ॥३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

मध्य२ कनिष्ठ३ कुमार जितेजिहिँ क्रम प्रभु जानहु ॥
नेगहु तिहिँक्रम१।३०।५४ प्रचुर१ न्यून२ प्रति दुलह प्रमानहु ॥
लै जन्म१हिँ व्याह२लग गेह आवन३ लग यागति ॥
नियत इते५६इम नेग करे इम खिलन भिन्न कति ॥
हमरेहि नेग१ कैकै हमहि महिपे भाग जिनमैं मिलहिँ२ ॥
तेअत्थ कहि१रुकहियतं२तथा खेतन मिति जिम तजि खिलहिँ।३३।
सव व्याहन सव सुनत नेग सम च्यारि४ घटैं नन ॥
इम मुखसन सव असन१ करहिँ मोचन लग कंकन ॥
वंधैं गजश्खंभ वलि सोहु पलटैं न सदासम ॥
वीरमुट्ठि ३ तिन बहुरि त्याग४ आरंभ नियत तम ॥
परदेस थितहु निजकुलपुरुख कारुनजुत पहिलेहि क्रम ॥
लै द्विगुन त्याग४ए च्यारि लघु व्हैन नेग इम तुष्ट हम ।३४।
कंनी नेग अव कहत गर्भआदिक पहिलीगति ॥
प्रसवकाल छ६हि पात्र महुर१।३१।५५द्वादस१२लै१सम्मति ॥
सिरुपाव१।३२।५६न त्रिक३ संहित महुर२।३३।५७।३ पंद्रह १५ तीन३न मैं ॥

---

१ दुलहन पहिले पहिल पगे लागै २अन्य ॥ ३२ ॥ ३ यहुत ४ थाकी के लोगों के ५ हे राजा ६ सब ॥ ३३ ॥ ७ कंकण डोरड़ा खोलने तक ८ कमीण लोगों सहित ९ छांटे ॥ ३४ ॥ १० कन्या के नेग

बरके घरतैं वृत्ति मिलैं ए दुव२ सगपनमैं ॥
हम१ भट्ट२ तथा पंटही सहित बरपरखाई नामविधि ॥
तँहँ ए दु२नेग बंटैं त्रय३हि नेग व्याह सुनिये सुनिधि ॥३५॥
ननमैं १पनमैं२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
व्है पूजित हेरंब उहाँ बारह१२ मन अच्छत १।३४।५८ ॥
जथा पुव्व सब जनन असन२।३५।५९ तबतैं तँहँ अबिरत ॥
बावन जव चउवीस२४ मान सुमनन अच्छत ३।३६।६० मन ॥
मंडप दिन खट६महुर४।३७।६७ प्रथित पीवल कपर्दपन ॥
खट६ महुर५।३।८।६२ खंभरोपन खिन रु जिंहिं बेढन१अंसुक ज-
री ६।३९।६३ ॥
मन चउं रु बीस२४अच्छत सुमन७।४०।६४ क्रमतिहिं बंधे सो
करी ८।४१।६५ ॥ ३६ ॥
पुनिछ६महुर९।४२।६६ सिरुपाव१०।४३।६७तत्थखट६मिलहिंखंभतल
मधुर मिठाई११।४४।६८छ६मन मिलहिं सबके वट निर्मल ॥
पंच५महुर१२।४५।५९सिरुपाव१३।४६।७०संहत पंच५रु पचीस२५मन
अट्ट१४।४७।७१पिंड अभिधान तास बट पंच५सदातन ॥
तिहिं दिवस अंत बीरत तमी मन बारह१२बिदलित सुमन १५।४८।७२-
मन छं६छ६हवी१६।४९।७३रु सक्कर१७।५०।७४मिलहिं जुट्ठ हम बंटहिं
पंच५ जन ॥ ३७ ॥
मन पचीस२५पुनि सुमन१८।१।७५नेग यह अच्छत नामक ॥
पंच५महुर१९।५२।७६सिरुपाव२०।५३।७७पंच५तँहँमिलहिंप्रकामिक
पिंडा१४दिन हम पंच५बंट पावहिं तँहँ व्यास२न ॥
बंट सबहन बालि बदहिं सकल सनियम जिम सासन ॥

१ढोली ॥३५॥ २गणेश ३ निरन्तर ४ गेहूं ५ प्रसिद्ध ६ पीली कोडी ७ थम्भ के लपेटने का ८ जरी का वस्त्र ९हाथी ॥ ३६ ॥ १० बडे सिरपाव ११ दलेहुए गेहूं १२ घृत ॥ ३७ ॥ १३ विशेष कामना सहित १४ जैसी आज्ञा है

तँहँ मन छतीस३६सालि२१।५४।७८कि सुमन२१।५४।७८वृद्धि वरन
लहिहै छ६वट ॥
दापा सनाम जावत दये प्रति नर दुव२रुप्पय२२।५५।७९प्रकट॥३८॥
लग्नसमय प्रभुमिलहिँ हमहिँ इक१महुर१।२३।५६।८०विवाहत ॥
तँहँ वंटत तंवोल मिलहिँ भूखन२।२४।५७।८१इक१सम्मत ॥
जंपति२कर जुग२जुरन समय जरमय इक१सारिय३।२५।१८।८२
बहुरि दुर२कर बिच्छुरत भर्ममाला४।२६।५९।८३इक१भारिय ॥
ए नेगच्यारि४हमरेहि अव पटजर चँवँरी १।२७।६०।८४मंडप२।२८।
६१।८५नं ॥
छादक जितैक तिन्ह वंट छइहि समय हैं रु पहुँचन सवन ॥३९॥
इम प्रभु अठाईस२८कनीउँपयाम नेगकिय ॥
वरके घर सन बहुरि सुनहु जे नियत प्रकासिय ॥
समुंद्र मेलसिरुपाव१।२९।६२।८६महुर२।३०।६३।८७खट६खंट६प्रभु
मानहु ॥
दापानामक द्रम्म३।३१।६४।८८प्रमिति खटसन६००पहिचानहु ॥
इम नेग सवन त्रय३वस्तु ए लहि विभाग छइहि इम लहैं ॥
हम त्रय३हि नेग पंचक५लहत करहु अवन ते अनकहैं ॥ ४० ॥
आदिम१तोरन इभ१।४३।२।६५।८९रु दैत गोनदिन दाई ॥
तिथि१५महुर२।५।३३।६६।९० रु सिरुपाव३।६।३५।६७।९१तीन३मन
दुनस१२मिठाई४।७३।५।६८।९२ ॥
दास१कारु२जुत द्वि२गुन पुरुख त्याग५।६।३७।६९।९३सु सवपावहिं
हम१भट्ट२रु पटहीर२सुविसिखे७मित नेग वटावहिं ॥
इम गर्भआदि१०व्याहनअवधि२नेग५।८।३६।६९।९३पुत्र१पुत्रि२नानियत
वंधि रु नरेसभाऊ१९५।१२वदिय जिन दुख पावहु मो जियत ॥४१॥

१चावल, अथवा गेहूं॥३८॥२पानबीड़ा३स्त्री पुरुष का हथलेवा ४नाम की साड़ी
५दोनों हाथ (हथलेवा)छूटते समय ६ सोने की माला ॥ ३९ ॥ ७ कन्या के विवाह
में ।४०। ८तोरणका हाथी ९ चाकर और कमीणों सहित१०डोली११पांचों ही।४१।

॥ दोहा ॥

बुल्लि सपिंड१सगोत्र२वल्लि, इंद्रसल्ल१९४।२कुल आदि३५ ॥
सबन सुनाये नेगसब, सब देहुव संबादि ॥ ४२ ॥
सब हड्ड६१न घर तवहि सन, नियत भये सब नेग ॥
नदिय लुपन हम वृत्ति नृप, बंधि रीति यह्न वेग ॥ ४३ ॥
के हमरी१ हम बंट२कै, अक्खी वृत्ति सु अत्थ ॥
भिन्न कतिक अपरन भई, सो सो नहीं समत्थ ॥ ४४ ॥
इम नैमित्तिक१ अप्पि अब, नित्य२नेग नरनाह ॥
प्रतिबच्छर१ अवसर प्रथितँ, रचै सुनहु ध्रुवराह ॥ ४५ ॥
जिनमैं हम पावत जितै, कहियत बिन्नति कर्म ॥
श्रवनदेहु भूपति श्रवन, बिजय१ धर्म२ जस६ बर्म ॥ ४६ ॥

॥ षटपात् ॥

मधु१ सित१ प्रतिपद१मिलन दम्म १।९४नवँ अब्द लगत हुव२॥
मन१ मोदक २।९५ गुनगोरि६ हेतु अंतहपुरतैं हुव ॥
पुनि इक१इक१सिरुपाव१।३।९६महुर२।४।९७सित१राधँ२तीजमत्त
जिट्ठ३अमा३० दम्म५।९८जुग२सु पहु अंतहपुर संगत ॥
इम अट्ठ१आदि सावन५अमा३०सब भोजन उपहार६।९९ सब॥
रक्खी अनेहँ पुरिणाम१५रुचिर तिथि जब रुप्पय७।१००पंच५॥
तब ॥४७॥

ज्यौं कुलदेविय जँजत दम्म१।८।१०१ईस७सित१छट्ठी६दस १०॥
दिन नवमी९पुनिदम्म२।९१०२तेहु दस१० मान अग्ग तस ॥
दसमी१० बिजयादिवस महुर ३।१०।१०३दस१०दये महीपति॥

---

१ कथन करके ॥ ४२॥४३॥२ अन्य लोगों की॥४४॥ ३ सावाना ४ प्रसिद्ध॥४५॥५ यश के कवच ॥ ४६ ॥ ६ चैत सुदी एकम ७ नवीन वर्ष लगता है तब ८ लड्डू ९ जनाने से १० वैशाख सुदी तीज ११ ज्येष्ठ वदि अमावास्या १२ समय ॥ ४७ ॥ १३ पूजते हैं तब १४ आसोज सुदि छठ और दशमी के दिन

*प्रथित इक्क१सिरुपाव४।१२।१०४ मुल्लवहु मेयं महामति ॥
दस१०दम्म१।१२।१०५दीपमाला३०दिवस अखिलनेग मनुजन
प्रसन २।१३।१०६ ॥
जँहँ इम प्रदेय रानी जनन बिदितखाद्य१रुप्पय२ बसन३ ।४८।
नियत पट्टरानी सु पैक मोदक१।१४।१०७ मन पंचक ५ ॥
।च५ दम्म ४।१५।१०८पहुँचात इक्क१सिरुपाव५।१६।१०९अवंचक॥
इम लघुरानी अखिल दु२मन मोदक६।१७।११० रुप्पय ७।१८।१११
दुव२ ॥
भेजैं तँहँ हम भोन धन्य सिरुपाव८।१९।११२इक्क१धुव ॥
जीरोति नाम यह नेग जिम तिथि दूजी२सुदि१उँज्ज८तँहँ ॥
मंगालदम्म१।२०।११३ पंच५रु सुमन जावक२।२१।११४ मिति मन
पंच५जँहँ ॥ ४९ ॥
अहछट्ठी६तस अग्ग देय थप्पिय रुप्पय२२।११५दस१० ॥
माघ११बिसद१पंचमि५यजुगल२महुर२३।११६हि साधकजंस ॥
होरी१५दिन आहेरँ पुरटमुद्रा२४।११७किय पंचक५ ॥
कर्क४।१ मकर१०।२ सक्रांति असन १।२५।११८।२।२६।११९ सब
जनन अवंचक ॥
जबजबहिफागखेलन जुरहिं तब तब इक्क१उष्णीसं १।२७।१२०तहँ
तुरा२।२८।१२१रु हार३।२९।१२२सुमननँ बितरि किय सु वृत्ति इम
कविन कहँ ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

जन्मदिवस नृपको जहाँ, महुर१।३०।१२३इक्क१अतिमान ॥
जिट्ठे१कुमरके जैन्मपैं, द्रम्मैं१ ३१ १२४पंच५मित दान ॥ ५१ ॥

---

*विदित १यह प्रमाण का ॥४८॥ २ पके हुए लड्डू ३सरल चित्त से ४कांती सुदी दौज ५ जब ॥ ४६ ॥ ६ छठ के दिन ७ होली के दिन की शिकार में ८ सोने की ९ पगड़ी १० श्रेष्ट मन से; वा फूलों के हार और तुर्रा देकर ॥ ५० ॥ ११ पाटवी कुमर के १२ जन्म दिन (सालगिरह) पर १३ पांच रुपये देते हैं ॥५१॥

इतर कुमारन जन्म अहैं[1], दुव२दुव२रुप्पय३।३२।१२५ देय ॥
तजि रोगहिँ नृप न्हान तँहँ, महुर१।२३।१२६ द्वि२संख्या मेय॥५२॥
जिष्ठ१कुमरके न्हान जिम, रुप्पय२।३४।१२७पंचक रक्खि ॥
दुव२दुव२इतरन न्हानदिय, अप्पन रुप्पय३।३५।१२८अक्खि॥५३॥
बीस२० महुर १।३६।१२९रन नृपविजयैं[2], पुत्रखन[3] प्रति सिरुपाव[4] २।
३७।१३० ॥
महुर३।३८।१३१पंडसुत पंच५मित, चैलँ४।३९।१३२उचित जयचाव
इक१महुर४।४०।१३३ सन दस१०अवधि, दम्म५।४०।१३३ खिल्लन[5]
जय देय५।४०।१३३ ॥
इक१हय५।४१।१३४दै नृप खिलत२।४२।१३५इक१, साह[6] रींझलहि
अेप्र ॥ ५५ ॥
मँहिखी[7]१केर द्वि२रागमन, जँहँ[8] पग लग्गत जाव ॥
मिलैंसुकवितियकौंमहुर१।४३।१३६,पंच५रुइक१सिरुपाव२।४४।१३७
उभय२महुर ३।४५।१३८ सिरुपाव ४।४६।१३९ इक१, क्रम रानीजु
कनिष्ठ[9] ॥
इक१महुर५।४७।१४० सिरुपाव६।४८।१४१ इक१,जिष्ठ१ कुमर तिय
जिष्ठ[10]१ ॥ ५७ ॥

॥ सोरठी दोहा ॥

पटसव७४९।१४२रुप्पय८।५०।१४३पंच५,अप्पै कुमरानी इतर[11] ॥
रीति यहै तँहँ रंच, हड्ड६१हेलि[12] न न्हासहै[13] ॥ ५८ ॥
जाँया[14] भ्रातन जेम, आवै घर मुख्य१रु इतर२ ॥
अंबर[15] ९।५१।१४४ नाणकें[16] १०।५२।१४५ एम, अप्पैं ते निज निज

---

१ जन्म दिन पर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ २ युद्ध में राजा के विजयी होने पर ३ पाटवी पुत्र के युद्ध जीतने पर ४ वस्त्र ॥ ५४ ॥ ५ बाकी कुमरों की जय होने पर ६बा-दशाह से रींझ लेने के समय ॥५५॥७राणी के८जहां ॥५६॥९छोटी राणी१०बडे कुँवर की बडी कुँवराणी ॥५७॥ ११अन्य कुँवराणियें १२हाडों के सूर्य १३ चय अर्थात् इन नेगों में चति नहीं करते॥५८॥१४भाइयों की स्त्रियें१५वस्त्र१६रुपये

उचित ॥ ५९ ॥

जिम ए सूचित जाइं, पितालय कछु हेतु पुनि ॥
अप्पन आलय आइ, तँहँ पयलग्गैं कवितियन ॥ ६० ॥
अप्पें महिखी१एह, तब तब रुप्पय१।५३।१४६पंच५तिन्ह ॥
अरु छिज ताहि अनेह, दें पयलग्गत दम्म२।५४।१४७दुव२६१
ह्वेरहि निवेदहिं दम्म३।५५।१४८, मुख्य१कुमर जेठी१जँनी ॥
क्रम पयलग्गन कम्म, दम्म४।५६।१४९इक्क१दे सेस सब ॥६२॥
रक्खि नेग इहिं रीति, सब इह६१न घर तान ससि१४९ ॥
पुनि सोलह१६।१६५सह प्रीति, देस प्रजांप्रति किन्नहढ॥६३॥
कर्पुकें धान्यकुमाइ, जो घरआनैं मन जिते ॥
उनतें क्रम कढि आइ, सेर१।१५०तिते हमरे सदन ॥ ६४ ॥
इक्षु१दसंगुल२अंब३, सैंका४दिन विक्रेय समय ॥
कढि लव१।१५१दसम१०कें दंब, सब पहुँचैं हमरे सदन ॥ ६५ ॥
लहत ज्येष्ट१सुत लाह, पंच५दम्म३।१५२ भेजहिं प्रजा ॥
इतरन भेंत्र उच्छाह, दुव२दुव२रुप्पय४।१५३देय सब ॥ ६६ ॥
दम्म५।१५४पंच५दुव२दम्म६।१५५, याही क्रम तिन्ह व्याह अरु॥
करन असन हम कम्म, सामग्री७।१५६अँट्टा१दि सब ॥ ६७ ॥
हालिक१कारु२विहाइ, श्रीवँ खिलन जन्मत सुता ॥
इक१रुप्पय८।१५७घर आइ, व्याहनतस जुग२दम्म९।१५८वलि॥६८॥
गुड़१घृत२आदिक गैल, विक्रय वट लव१०।१५९वारहम१२ ॥
विक्कि मँहिषी१गो२वैल३, वीसम२०लव११।१६०उपदांवनैं ॥६९॥

॥ ५६ ॥ १ पिता के घर २ किसी कारण से ॥६०॥ ३ राणी ४ समय ५ रुपये ॥ ६१ ॥६ भेट करते हैं ७ माता ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ८ दूरसे लोग ॥ ६४ ॥ ९ गन्ने १० खरबूजा ११ तरकारी आदि १२बेचने के समय १३ दशवें अंश का समूह निकालकर ॥ ६५ ॥ १४ जन्म ॥६६॥ १५ आटा ॥ ६७ ॥ १६ हल हांकनेवाले और १७ कमीणों को छोडकर १८ बाकी के धनवालों के पुत्री होने के समय ॥ ६८ ॥ १९ बारहवां हिस्सा २० भैंस २१ भेट ॥ ६९ ॥

इतपरदेसिन आइ, बारन१हय२मय३मुख बिकत ॥
क्रम लव सतम१०० कढाइ, सष्टिम६०तिम तीसम३० सहित१।
१२।१६१।२।१३।१६२।३।१४।१६३ ॥ ७० ॥

बनिज पटा१दिक बस्तु, व्यापारिन देसि१न बिकत ॥
अंस१।१५।१६६सोलहम१६अस्तु, अस्तु बिदेसि१न अष्टम८सुर।
१६।१६७ ॥ ७१ ॥

इम दिल्लियनृप अक्खि, संसदबिच ए १६७नेग सब ॥
रीति नियत पर रक्खि, स्वीकारिन इइ६१न सबन ॥ ७२ ॥
॥ युग्मम् ॥

अवनि रही घर अद्ध, अद्ध लही उद्धत अनुज ॥
निज पालन सन्नद्ध, भूप तदपि भाऊ१९५।१ भयो ॥ ७३ ॥
॥ पादाकुलकम् ॥

गर्भ१प्रसव२संबंध३कँग्गह४, बच्छरइक१बिच दिवस५चउद्दह१४॥
कर्क४।१मकर१०।२रवि गमन६फाग७क्रम, महिपा१दिन जन्माह८ मनोरम ॥ ७४ ॥

महिपा१दिन गेंद तजि न्हावन मह ९, इम महिपा१दिन जुद्ध बिजय अह१० ॥
सुपहु लहैं जवरीक्ष११साहसन, महिपी१आदि द्विरागम मेलन१२
पुनि पिउहर जाइ रु आवनपर१३, बंस नेग खिल्ल ए तेरह१३बर॥
अर्जनधान्य१।१४फलादि२।१५बिकन इल, तनपादिन प्रसव ३।१६ रु बिबाह४।१७तिम ॥ ७६ ॥

बिकत गुड़१दि ५।१८गवा२दि६।१९ समै बर, परदेसिन गज१मुख बिक्रय७।२०पर ॥

१हाथी २ ऊट आदि ॥ ७० ॥ ३ वस्त्र आदि ॥ ७१ ॥ ४ सभा में ५ अंगीकार किया ॥ ७२ ॥ ६ पृथ्वी ७ तैयार ८ तो भी ॥ ७३ ॥ ९ जन्म १० सगाई ११ विवाह १२ एक वर्ष में १३ जन्म दिन ॥ ७४ ॥ १४ नैरोग्य होकर १५ दिन १६ रात्रि ॥ ७५ ॥ १७ पिता के घर १८ धान इकट्ठा करने पर १९ कन्याओं के ज-

दुकूलां१दि विक्रयन२१ कर देसि१ न, पावतलाभ तस९२२ हि परदेसिन ॥ ७७ ॥

करदेसिन१परदेसिन२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

ए नव९लनय प्रजा वलि अप्पन, सब वाईसर२स्ववृत्ति समप्पन
द्विर्धा गर्भ१सब असन नेग दुव२, होते द्विरधा हि प्रसव२ पंचक २।५।७ हुव ॥ ७८ ॥

कनी गर्भ३ दुव२दुव२।७।९ पूरक्रम, प्रथम१पुत्र भव४ नेग नवक ९।१८ प्रेम ॥

हुव ए नेग नव९हि हमरेही, सुनहु खिलहु सव६वंट सनेही ॥७९॥
छुरिकाबंध५नेगइक१।१९छज्जैं, कुमर प्रथम१सगपन६चउ४।२३कज्जैं
लघु१ सुतादि भव१ जुन सगपन२।७लग, मिलैं सकल यह १।५।२५ तारतम्यं मग ॥ ८० ॥

प्रथमा१दिक सुत७याह२।८तास३०।५४पुनि, सदा सहस तँहँ च्यारि ४लेहु सुनि ॥

गृहजन असन१ रु खंभ बद्ध गजर२, वीरमुष्टि३ अरु द्विरगुन त्याग ४ ७ज ॥ ८१ ॥

दुहिता नव९इक१।५५ रु सगपनँ१०दुव२।५७, हित ए द्वै२हि दुलह घरतैं हुव ॥

अट्ठाईस२८।८५कन्यका उपयम११,प्रभु निजघर१तैं देय जथाप्रम८२
पुनि वरघर२तैं अठ८नियतपन, त्रिक३।३१।८८सव६वंट पंचक५।८।३६।९३ क्रम तीन३न ॥

चउदह१४ समय१५ नेग चउवीस२४।११७ हि, महादिन किय प्रति-अब्द१महीसहि ॥ ८३ ॥

न्म ॥ ७६ ॥ १ वस्त्र आदि ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ २ जन्म ३ प्रमाण ॥ ७९ ॥ ४छुरी बांधने का ५ विचार ॥ ८० ॥ ६ समूह ॥ ८१ ॥ ७ विवाह ॥ ८२ ॥ ८ उत्सव के दिन ९ सालाना ॥ ८३ ॥

दुव२।११९ संक्रांति२६फाग२७त्रय३।२२ दृढदयं[1], तिम नृपा१दि२ज-
न्माहिं[2]३।३०नेग त्रय३।१२५ ॥
अरुजं[3] नृपा१दि३न्हानत्रय३।३३त्रय३।१२८इम, जय३।३६नृप१मुख्य
त्रय३करत पंच५।१३३जिम ॥ ८४ ॥
प्रभु दुव३।१३५साहरीक्ष प्रभुपावत१।३७, खट६हि१द्विरागम ६।४३
दसक१०।१४५ दिखावत ॥
रानि२ न कुमरानि४न ठकुरानि६न, ए गुरु१लघु२पन छ६ खिनन
रनैंइन[4] ॥ ८५ ॥
पिउहर१०हैं चउ४ गेह पधारत४।४७, महिखी१ प्रमुख४ देत चउ४।
१४९ ध्रुव मत ॥
नेग तान भू१४९मित नरनायक, बंधे निजकुल१वृत्ति बिधायक।८६।
सोलह१६सनियम[5] बंधि प्रजासन, सहिप दिवाये हमहिं महामन ॥
सब कृषिधान्य१।४८बंट१।१५० चालीसम४०, दसम१फला१दि१।२।
४९न बंट१।१५१अरिंदम ॥ ८७ ॥
आदि १ रु इतर२ सुतनके संभवं[6]१।१५१, अप्पैं दम्म१।२।१५३पंच ५
दुव२उच्छव ॥
द्वि२विध व्याह१।२।१५३तिनकेहु१।२।१५५पंच५ दुव२, हमरे सब-
मनुजन भोजन३।१५६हुव ॥ ८८ ॥
हॉलिय[7]१कारु[8]२बिनुसुताजन्म१।५४हित, इक्क१।२।१५७रु व्याह१।५८
दम्म१।५८दुव२अंकित ॥
बेचिगुड़ा१दि१।५६ बारहम१२लव१।१५९बट, बीसम२०बेचि१।१५७ग-
वा१दि१।१६०बिसंकट ॥ ८९ ॥
बेचि१।५८ द्विरद१लय१।१६१ सतम१००बिदेसिन१, सठिम६०लव१।
१६२विक्रय१।५६हय२सेसिन ॥

---

१ दृढ दयावाले ने २ जन्म दिन ३ नैरोग्य ॥८४॥ ४ हे युद्ध के सूर्य ॥ ८५ ॥८६॥
५ नियम सहित ॥८७॥ ६ जन्म ॥८८॥ ७ हल हांकनेवाला ८ कमीण ॥ ८९ ॥

वट१।१६३तीसम३०वासंत३न विक्रय१।६०, वेचि१।६० पटा१दि अंस
१।१६४अष्टमन्व्यय ॥ ९० ॥
देसिरनलव१।१६५ सोलहम१६पटा१दि६१न, दृढ ए१६५ नेग करे
नृप जा दिन ॥
चउदह१४दिन प्रतिअब्द१तेहुचुनि, समयनकी संख्याहु लेहुसुनि९१
सब अवसर इकसट्ठि६१संकलन, सोलह१६तँहँ ए नेग प्रजासन ॥
तानइंदु१४९ मित नेग स्वकुल१ तत, सोलह१६ सह पैंसट्ठि अग्ग
सत १६५ ॥ ९२ ॥

॥ दोहा ॥

छितिप वंधे इम नेग छ६हि, वृत्तिधरन विस्वास ॥
पठये सब्ब बुंदीपुरी, रक्खि मुदित गुनरासि ॥ ९३ ॥
हमरे पुव्व पितामहहु, दै आसिख लहिदान ॥
सुकविखेम१६८।१।१अरु राम१६८।१।२सह, विलसे आइ लवान ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लाद्याश्रितनियतवसुप्रतोलीपात्रत्वत्यागादिवर्णनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥
आदितस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मह संमाढ्य वारौं१मंऊ२, भूप भयो भगवंत१९५।३ ॥
अग्रज१भू लिय छिन्नि इम, अनख वढाइ अनंत ॥ १ ॥

---

१ छंद ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥९४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) आदि नेगियों के नेग और पोळपात्र के त्याग आदि के वर्णन का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २३० मयूख हुए ॥

२ धनवान् ॥ १ ॥

बसुधा साह सहाय बिनु, लेतो छिन्नि सु लुद्द ॥
जबहु बीरपन जानते, बदि यह धर्म विरुद्ध ॥ २ ॥
पै जिम सरभ१सहाय पगि, वृकर२ ले सिंह३ बिभाग ॥
भूमि अद्ध४ लहि सम भयो, रक्खि भूपपन राग ॥ ३ ॥
तब भाऊ१९५।१ भूपहु तजी, प्रथित अनुजसन प्रीति ॥
बहुरि दुव२भ्रातन मिलन बिधि, न हुव मान धननीति ॥ ४ ॥
भीरु सुजा४०।२इतजो भज्यो, पहिलैं गंगापार ॥
जय१अनिरुद्ध२दललो३जब, रहे रोध रखवार ॥ ५ ॥
साहभयो अवरंग४०।३सुनि, एहु मिले सब आनि ॥
सुजा४०।२कटक उततैं सज्यो, पुनि दै मुच्छन पानि ॥ ६ ॥
पूरब पाटलिपुत्रतैं, राजमहल अभिराम ॥
पुर गंगातट जो प्रथित, तह आयो यह ताम ॥ ७ ॥
व्है तत्थहि दल हाजरी, चढयो सु दर्प मचात ॥
अहो अनुज गही गही, सल्य सु उर न समात ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुनि आत सुजा४०।२ बल बहुल संग, अवरंग४०।३ चढयो इततैं अभंग ॥
संभवित भूप हाजरि लसात, भाऊ१९५।१ भगवंत१९५।३।२ हु संग भ्रात ॥ ९ ॥
इम समुख मिले उद्धत असेस, दुव२कटक दंगखजुवा प्रदेस ॥
दुश्दिनरु दुरत्ति तोपन दगाइ, ठहरे बिदूर बिच जुद्ध ठाइ । १० ।
तीजे३दिन बाजिन बग्ग तानि, जुग चक्क जुरे बल१सक्र२जानि ॥
आरूढ गजन भाई उभैहि, ललकागत पहुँचे निजन लेहि । ११ ।

१ लोभी ॥ २ ॥ २ सिंह की ३ राजापन से स्नेह रखकर॥ ३ ॥ ४ विदित ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ पटना शहर से ६ प्रसिद्ध ७ तहाँ ॥ ७ ॥ ८ आश्चर्य है कि ॥ ८ ॥ ९ बहुत सेना के साथ १० जिनका हाजर होना सम्भव था वे ॥९॥ ११ खजुवा नगर के पास १२पहुन दूर ॥१०॥१३८सेना१४इन्द्र और बलराजा॥११॥

इतहु इत[1] उत[2] के कनि अमीर, वेतंडन आरुहि मिलन वीर ॥
हुसियार सुजा४०१२ के दल हरोल, लहि अवसर भारे खग्ग लोल
अवरंग ४०१३ कटक कछु सिथिल आस, तिमतिम इत क्रमक्रम बढत त्रास ॥
बिच पैठि सुजा ४०१२ के भटन भ्रात, दृढ सैंय चलाइ कछु जय दिखात ॥ १३ ॥
इमपिछ्छि सुजा४०१२ के इक अमीर, सन्निंधि अवरंग४०१३ हि लै सधीर ॥
गज तास स्वगज टक्कर लगाइ, जानुन जकाइदिय सीघ्र जाइ १४
चीस[10] पुरीसं[11] इम इंभ अचेंत, वेपंन[12] लग्यो सु घुम्मन[13] व्यपेंतं ॥
जो होइ पलायन सक्ति जाहिं, तो जाइ दूरभजि भजि सु ताहि १५
आघात पांत अति असह एह, दिय स्वामि अनुज अरि द्विरददेह
अवरंग ४०१३ चहिय गिरि चढन अर्व, गिनि अंसु विपत्ति इंभपर विगर्व ॥
अवरंग ४०१३ वीर तँह इक अलोह, ललकारयो स्वामि सु तर्ज लोह ॥
गिरिवो यहगज[21] तैं तखत[22] तैं सु, हत्थी रहँहिं निजहिट्ठ हैं सु १७
इंभ[23] ही यह दिल्लीपद[24] अज्ज, करिये नताहि तजि लजि कुंकज्ज

---

१ और भी २ हाथियों पर सवार होकर ३ चपल ॥ १२ ॥ ४ ढीला हुआ ५ समूह ६ हाथ ॥ १३ ॥ ७ औरंगजेब को समीप लेकर ८ उस औरंगजेब के हाथी के अपने हाथी की टक्कर लगाकर ९ घुटनों के बल गिरादिया ॥ १४ ॥ १० लीद करके ११ हाथी १२ कांपने लगा १३ दुर्गति होने से १४ भागने की शक्ति होती तो ॥ १५ ॥ १५ स्वामि के शत्रु छोटे भाई औरंगजेब के हाथी ने १६ औरंगजेब ने हाथी से गिरकर घोड़े पर चढना चाहा १७ प्राण का १८ हाथी पर १९ गर्व रहित ॥ १६ ॥ २० बिना मार्ग से अर्थात् सेवक का स्वामि से यह कहने का मार्ग नहीं है तो भी उसने ललकारा २१ यह हाथी से गिरना है सो तखत से गिरना है २२ हाथी अपने नीचे रहने से ही तखत भी अपने नीचे रहेगा ॥ १७ ॥ २३ यह हाथी २४ खोटा कार्य

उज्जैइनी दारा ४०।१ करि यहैहि, बन बनन भ्रमत बिपदा वहै-
हि ॥ १८ ॥

है मरन१ जियन२ जय३ दैव हत्थ, सब स्वीय लखहिँ गजथित
समत्थ ॥

भनि छत किँ१ भग्ग२ इभ सून्य इक्खि, सब लगहिँ मग्ग उद्रा-
व सिक्खि ॥ १९ ॥

तिम काहिय गजाजीवहिँ प्रतर्ज्जिँ, इभकौँ उठाहु कछु धिर्ज्ज अ-
र्ज्जि ॥

घन रीक्ष१ लेहु तो जय घुमंड, देहु न उठाइ तो प्राणदंड२ ।२०।
वृत्तांत कहत लग्गत विलंब, कौंल सु हुव दुद्धर डर करंबँ ॥
जो लौँ गज उट्ठहिँ पुव्व जास, प्रद्दुत अनीक हुव तास पास॥२१॥
मिथ्याहि नष्ट अवरंग४०।३।१मानि जित्त्यो सुजा ४०।२।२ हि जि-
य सत्य जानि ॥

तहँ नृप१ नबाव२ बहु वदलि तोर, अति त्रस्त भजे पति सिविरँ
ओर ॥ २२ ॥

जसवंत जोधपुरभूप जत्थ, मन्निसु सुजा४०।२ वँ हुव पति समत्थ॥
इहिँ धूर्त अचानक सिविर आइ, सन्नद्ध स्वीय सब बल सजाइ॥
क्रम लुट्टि साह वैभव१ कितोक, जु मिल्यो वरोधँ जेवर२ जितोक
लै बित्तँ जोधपुर गो निलज्ज, अवरंग४०।३ न जान्यौँ जियत अँ-
ज्ज ॥ २४ ॥

१उज्जैन के युद्ध में दाराशिकोह ने हाथी से उतर कर॥१८॥२अपने लोग३समर्थ ४ हाथी को खाली देखकर आप का मरा हुआ या भगा हुआ कहकर सेना के सब लोग ५ भागे ॥ १९ ॥ ६ महावत को ७ धमका कर कहा ८ धैर्य देकर ॥ २० ॥ ९ यह बात कहते वार लगती है १० वह समय ११ भय का समूह होने के कारण दुर्धर हुआ १२ सेना भागी ॥२१॥ १३झूठे ही औरंगजेब को मरा हुआ मानकर औरंगजेब के १४ डेरों की ओर १५ अब ॥२३॥ १६ जनाने में १७धन १८ आज औरंगजेब को जीवित नहीं जाना ॥ २४ ॥

खल एह सुजा ४०।२ जय करंत ख्यात[1], जब लुट्टन लग्ग्यो अर्थ[2] जात ॥
बुंदीस[3] सिविरैं जब नरम[4] व्रात, हो सोह्व सुजा ४०।२ जय सुनि सुहात ॥ २५ ॥
भगवंत १९५।३ सिविर१ संजुत स्वभाइ[5], लुट्टतहुव जँहँतँहँ प्रसभ[6] लाइ[7] ॥
मन बिगरे सबके सिविर माँहिँ, जन बहु पलाइ दिसदिसन जाँहिँ
इम डमर[8] मच्यो इत सिविर१आनि, तिम उत रन२ तिहिँ भट कोप[9] तानि ॥
उतरन दयो न इभतैं स्वईसैं[10], रु कहिय इभपालहिँ[11] बितँत[12] रीस।७२।
इभकौं उठाइंकै लेहु इष्ट[13]१, असु[14] तव कैं लैहौं२ रे अनिष्ट ॥
बिरदवास१ धिज्जर२ व[...]३ मन४ बढाइ, इभ सिथिल निष्टि तिहिँ दिय उठाइ ॥ २८ ॥
उट्ठत मतंग तापर बइट्ठ, दल१ अप्पर अप्प१ दल२ बिकल दिट्ठ ॥
गजकैं गजटक्कर गो लगाइ, जो मिंच्छ हन्यौं भगवंत १९५।३जाइ।९२।
भाऊ १९५।१ नरेस गिनि स्वामि भाव, कछु दूर खरो न भजन कहाव ॥
अवरंग ४०।३ कहिय लखि कवन एह, निज बुल्ले भाऊ १९५।१ यह सनेह ॥ ३० ॥
बुल्ल्यो सु खरो यह सरबिलंद, करिहैं फतेहि तो किति कंद[17] ॥
अवरंग४०।३ अक्खि इम पीलुं[18] पिल्लि, किय हल्ल सुजा४०।२पर

१प्रसिद्ध २धन ३बुंन्दीश के डेरों में ४मनुष्यों का समूह ॥२५॥ भगवन्तसिंह के डेरों सहित ५ अपनी इच्छानुसार ६ हठ करके ७ भागकर ॥ २६ ॥ ८उपद्रव९ क्रोध करके १० अपने स्वामी औरंगजेब को हाथी से नहीं उतरने दिया ११ महावत को १२ क्रोध फैलाकर ॥ २७ ॥ १३ मन चाहा फल १४ प्राण १५ हाथी को ॥ २८ ॥ १६ हाथी के टक्कर लगानेवाले म्लेच्छ को भगवन्तसिंह ने मारलिया ॥ २९ ॥ ३० ॥ १७ कीर्ति का मूल १८ हाथी को पढाकर

सरन किल्लिं ॥३१॥

हल्लाह[1]धिप भाऊ१९५ तस हरोल, बढिगो लै अखिलन देत बोल
बुंदीस दल१रु निजदल२बिसिष्ट,दिल्लीस जुरयो स्वभटोपदिष्ट॥३२॥
अवरंग४०१३ जियत लखि सुभट ओर, ते दूर दूर ह्वै प्रहतजोर॥
मिलि तेहु सबै रचि सल्ल मार, भिलि जुट्टे अरिसिर पटकि भार॥
अवरंग४०१३नियति अनुकूल आइ, इक चित्त जुरे सब छक्क अघाइ॥
भाऊ१९५१ अधीस भुजबल भरोस, सो गोहि पैठि परबल सरोस
चउँ४भेद लरन प्रहरन चलंत, छिति अंग रंग१ नभ२ उच्छलंत॥
सामीप्य लयो गजथित सुजा४०१२ सु, इभ१ इभरन जुरे हय१ ह-
यरन आसु ॥ ३५ ॥
बुन्दीसहिं अक्खिय साह बीर, ह्वै तव भुज रन१ खनि२ बिजय१
हीर२ ॥
सव्वहु तिम खल जिम वढि सकैन, अवसर यह सुनसब बढन ऐन
सुनि नृप प्रसन्न हलकारि स्वीय, गय झंपि सुजा ४०१२ सिर रय
गरीय ॥
जिम परत किलकिला१ सफर२जानि, तिम पहुँचि सत्रु गज रंज
प्रतानि ॥३७॥
पीलु१हिं प्रहारि खर झारि खग्ग, आंधोरन मस्तक कियअलग्ग
दूजी२हु बाजि झंपा दिवाइ, आघात सुजा ४०१२१३ सिर कियउ

१ बाणों से कीलकर सूजा पर हल्ला किया॥३१॥२सब को३युक्त४अपने वीरों से उपदेश पाकर ॥ ३२ ॥ ५ निर्बल होकर ॥ ३३ ॥ ६ भाग्य ॥३४॥ ७ मुक्त, अमु-क्त, मुक्तामुक्त और यंत्रमुक्त इन चार प्रकार के ८ शस्त्र चलते समय ९ नज-दीक १० हाथियों के सवारों का हाथियों के सवारों से और घोड़ों के सवा-रों का घोड़ों के सवारों से ११ शीघ्र युद्ध हुआ (यहां हाथियों का हाथियों से और घोड़ों का घोड़ों से लड़ने में लक्षणा से सवारों का ग्रहण है) ॥३५॥ १२ युद्ध रूपी खान में विजय रूपी हीरा १३ स्थान ॥ ३६ ॥ १४ अपने लोगों को बढाकर १५ बडे वेग से १६ मच्छी को देखकर १७ रजोगुण फैलाकर ॥ ३७ ॥ १८ हाथी को १९ तीक्ष्ण २० महावत को २१ घोड़े को झंप दिलाकर ॥ ३८ ॥

आइ ॥ ६८ ॥

सो खग्ग खवासीके सिपाह४,*अड्डन पर झेल्यो अक्खि वाह ॥
आधोरनं आसन पुनि सु आइ, प्रेरतहुव पीलुंहिं छिदपाइ ॥३९॥
प्रभुं१ वाहु सुजा४०१२ सर इक पइट्ठ, बलि झंपि गयो ढिग हय बइट्ठ ॥
गज़प्रेरकं१ अवर२हु दियउ गेरि, जान्यौं सुजा ४०१२हु हनिहैहि हेरि ॥ ४० ॥
हय१ लिय तिहिं गय२ तजि कछु सहाय, कुंजरं लखि परभट न सून्यकाय ॥
जिहिं जानि नष्ट अवरंग४०१३जेम, तासहु दलभग्गो पुब्ब तेम ॥४१॥
इहिं अंतर मो छुत भानु अस्त, मचि अंधकार छाये समस्त ॥
पर१ अप्पन२ जन बोध न परंत, हुव त्रास सुजा४०१२ हिय आस हंत ॥ ४२ ॥
नृपके भतीज तँहँ रूप१९६१२ नाम, जज्जाउरपति वढि उचित जाम ॥
अरि साहसुजा४०१२को जो वजीर, मारयो सु इवादतखान१वीर॥४३॥
उन्नावं मचतठहरयो न एह४०१२, निज अंसु लै भग्गो रनअनेहं ॥
बुंदीसकेहु कनका१९५१दि वीर, साधक सहाय हुव विजय सीर
अवरंग४०१३केहु खिलभट अनेक, इहिं जय हुव भांगी चित्त एक१
पे हड्ड६१॥ ता१हि गज२ सह पिरांइ, गजपाल१ खवासीभट२ गिराइ ॥ ४५ ॥

---

*ढाल पर१महावत के आसन पर आकर २हाथी को ॥३९॥३राजा भाऊसिंह के भुज पर सुजा का एक तीर लगा४दूसरे महावत को भी ॥४०॥१सूजा हाथी छोडकर घोड़े पर चढा २हाथी को खाली देखकर३जिस प्रकार औरंगजेब को मराहुआ जाना था तिसं प्रकार सूजा को भी मराहुआ जाना ७ पहिले की भांति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ८ जहां ॥ ४३ ॥ ९ भागना १० प्राप्त ११ युद्ध के समय ॥ ४४ ॥ १२ बाकी के वीर एक चित्त होकर १३ चंद्र करनवाले १४ पीडा देकर १५ महावत ॥ ४५ ॥

गजतैं सु गिरायो बिकल गत्त, *घमसान मचायो प्रात घत्त ॥
पति न लखि परन †प्रद्रव परंत, इभ१ बाजि२रहे कति ‡रंगअंत।४६।
इक१ सोहि खासगज रु दुव२ओर; §त्रिगजी३लिय नृप बल बिजय सोर ॥
बलि तिनमैं इकपर रजत बंब४, किय निज तिम तिथि१५ तिम हय कदंब १९ ॥ ४७ ॥
त्रय३ गज हय पंद्रह १५ लुट्टि ताव, भास्यो अवरंग४०।३हिं जयद भाव१९५।१ ॥
पायो सता १९४।१ जु जगजस प्रसारि, बलि मुनसब देबे सोहि बिचारि ॥ ४८ ॥
सतकारि सराहत रीझिसाह, भाऊ१९५।१प्रति भाखिय बाहवाह ॥
बारन त्रय३तिथि१५हय रजत बंब१, लूटहु दई सु कहि जय वलंब
भूपहु प्रसन्नहुव अडर भासि, बचनन निज कत्थन नन बिकासि ॥
कासिम१मुर्ख मिच्छन अक्खि किति, बुल्ले मुगलेसहिं समय बित्ति
अब होत सकल इम जय उपेत, खेलन रन जित्यो कोन खेत ॥
प्रभु अप्प लखत जिहिं दल प्रसारि, इभतैं सु प्रहत दिन्नौं उतारि
तासौं बं उचित इह बुज्झि ताहि, अप्पन मन जो कछु देहु याहि ॥
जवनेस बदिय तुम कहत ज्यौंहि, सह बिजय भये बुंदीस सौंहि
सिबिरन अब याकौं अप्पि सर्ब, अनुमत सराहि गिनिहै अखर्ब॥
रन जित्ति इम सु दुंदुभि घुराइ, पहु भाऊ१९५।१जय अवलंब पाइ
सिबिरन दिस आवत मुदित साह, पथमाँहिं सुन्यौं आगसैं प्रवाह

*युद्ध †अपने स्वामी को नहीं देखकर शत्रुओं में भागना पड़ी ‡युद्ध भूमि के अन्त में ॥ ४६ ॥ §तीन हाथियों का समुदाय १ चांदी का नगारा २पन्द्रह घोड़ों का समूह ॥ ४७ ॥ ३ तहां ४ जय देनेवाला भावसिंह ॥ ४८ ॥ ५ हाथी ६ चांदी का नगारा ७जय का अवलम्ब कह कर ॥४९॥ ८ आदि ॥ ५० ॥९सहित १० मारकर ॥ ५१ ॥ ११अब ॥ ५२ ॥ १२डेरों में १३ उत्साह करने की प्रशंसा करके १४ बड़ा ॥ ५३ ॥ १५ अपराध का

बुंदीस *सिविरके जनन †व्रात, खलभाव विभव लुट्योहि ‡ख्यात
मन्नत जसवंतहिं जड ‡निमित, बुंदीसहि §लोलुभ चहिय वित्त ॥
किय प्रथम लूट जसवंत१कूर, लिविरस्य तदपि बुंदीस सूर ।५५।
करते जो संगति दोस कष्ट, भगवंत१९५।३लिबिर१होतो न भ्रष्ट॥
वलि खास सोर२खी पुर३बजार४, सब लुट्टि न करते लुप्त सार५६
जसवंतसौंहु ए बढत जाव, भगवंत१९५।३विभव लुट्टन प्रभाव ॥
रन चहत सुजा४०।२जय मेच्छरीक, अब जानिपरिय लुट्टत अनीक५७
न पिहित जो व्है इन्ह नृप निदेस, क्यौं मंतु करैं तो असह एस ॥
अवरंग४०।३सुनत यह सिविर आइ, प्रजस्यो कृसानु जनु आज्य पाइ
सासन दिय तोपन पिल्लि लाह, भाऊ१९५।१कँहँ भुंजहु गुरु गुनाह
पाये भगवंत१९५।३हु दुव२प्रहार, तिहिं करहु स्वस्थ तम बेयवार५९
बुंदीस सिविरजन इक१वचैंन, अखिलन पहुँचावहु संमन अँन ॥
यह सुनि लै तोपन तस अनीक, रिस रस बस वेढिय संभरीक६०
उतर्यो इत भूपति सिविर आनि, मन लुट्टन आगस असह मानि
लुंटाकनं धिक्करि बंधि लौन, दृढ किन्न जथोचित दंडदैन ॥ ६१ ॥
जिहिं चंविय आततायिन सजोर, मूढन किय जयश्रम व्यर्थ मोर ॥
पाये प्रहार परभटन पारि, इत्थी तजिगो भजि अरि हु हारि ।६२।
सो मम जस दुर्लभ दलन सज्ज, असुदंड सहहु फल सकल अज्ज॥
जिन्ह हनन खिल्लन दै हुकम जाँव, तोपनगन विंटिय सिविरतावँ
हो लज्ज नृपहु लै असि सहायँ, निजभटन कहिय अब मरन न्याय

* डेरों के लोगों के † समूह ने ॥ ५४ ॥ ‡ कारण § अत्यन्त लोभी १ डेरों में उतरे हुए ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ २ जहां ३ पहुवाय ४ पुरा ॥ ५७ ॥ ५ राजा की गुप्त आज्ञा नहीं होती तो नहीं सहने योग्य अपराध क्यों करते ६ अग्नि ७ घृत ॥ ५८ ॥ ८ तोपें भेजकर ९ बड़े अपराध से १० बहुत नैरोग्य ॥ ५९ ॥ ११ डेरों के लोग १२ यमराज के घर १३ चलुवाय को घेरा ॥ ६० ॥ १४ अपराध १५ लूटनेवालों को धिक्कार देकर ॥ ६१ ॥ १६कहा १७ आततायी लोगों ने १८ विजय के परिश्रम को ॥ ६२ ॥ १९ प्राणों का २०जहां २१ तहां ॥ ६३ ॥ २२ खड्ग को सहाय लेकर

पुनि आततांइगन बुल्लिपास, अक्खिय अबहै इक१मरन आस।६४।
बचिहैंतो दैहैं दंम वहोरि, जितने जस भुजवस लेहु जोरि॥
कति भटन अरज किय नैय प्रकास, पटकहु अपराधिन साहपास
नृप कहिय मोहि दम दैन नीति, इहिं तुम मर्त जियभय कुजस ईति॥
तोहू कति सुभटन प्रसभ तानि, अक्खियं दैहेला दिट्ठि आनि।६६।
हुत हम अपराधिन करत दूर, व्है इष्ट तिमहिं सब्ब हजूर॥
जिन किन्न अरज पच्छेहु जाइ, तिन्हतजिं साह दिय बध बताइ६७
इत कहिय आइ मन्नी न एह, नृप इत निज तर्जे नीति नेह॥
बाहर सु कढ्ढि वाहन बिहीन, लै निजगन मनं पन सरन लीन ६८
अक्खिय इक१पहिलें तोप वार, सहि पीछैं झारहिं निसित सार
चाहैं यह जीवन आस चाहि, सोहैन रहै इत्र आसि समाहि।६९।
पहिलैं तुम सब्बहु स्वामि पच्छैं, मारहु पुनि हमकहँ मिलि समच्छ
अतिघोर अज्ज यह जवन अग्गि, जहँ को पतंग हम जरन जग्गि
पुनि यह उदंत गय साहपास, अति क्रुद्ध तबहु हंताहि आस॥
सासन यह तीजो३ घोर सोधि, बैलमैं हुव हाहा भय पबोधि।७१।
दहु साह मान्य तहँ हुव२ नबाब, सिबिरनथित जय१ बध २ गिनि हिसाब॥
कुंदीस सिबिरढिगैं.कढत बेर, अक्खिय कछु ठहरहु नहिं अबेर७२
मन्नैंन साह तो रैंवीय मग्ग, आँचरि मरि.करियो जसं उदग्ग॥
तोपनअध्यंक्खहु बुल्लिं तत्थ, अरु अक्खिय ठहरहु बुल्लि अत्थ

---

१ लूटनेवालों के समूह को पास बुलाकर ॥ ६४ ॥ २ दंड ३ नीति ॥ ६५ ॥ ४ तुम्हारी सलाह ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ५ तीक्ष्ण खड्ग ॥ ६९ ॥ ६ पक्ष ७सन्मुख (सन्मुख) ८ आज ॥ ७० ॥ ९ वृत्तान्त १० मारनेकी ही इच्छा ११ सेना में ॥ ७१ ॥ १२ डेरों में स्थित १३ डेरे के पास निकलते समय ॥ ७२ ॥ १४ अपने मार्ग (मरने मारने) का १५ आचरण करके १६ तोपखाने के दारोगा को ॥७३॥

जोलौं हम विन्नति करहिं जाइ, अमि तोलौं न करहु हुकम भाइ
जंपिय सकोप तिन दुहुँ२न जाइ, प्रभु गर्वहु तानक दुरजय पाइ७४
दारा सो संत्रु रु उचित दायं, सो दूरभयो हिंदुन सहाय ॥
भग्गो सुजा४०।२ हु तिन्ह त्रास भार, तिनकों न हनहु गिनि अ-
प्रतार३ ॥ ७५ ॥
प्रभुके पिता३९।१हु बौलि विद्यमान, दारा ४०।१।२ सुजा ४०।२।३
हु अरि नय निदान ॥
रिपुव्है कढयोहि रहोरगज४, अरिकरत अप्प या५कोहु आज।७६।
हा भूप पहै प्रभुके हरोल, तस स्वामिधर्म जय बिगत तोल ॥
पीछैं कबंध यह लूट पाइ, संगी किय कति खल फैल सुनाइ।७७।
कुंदीस दये तिनकों विडारि, जोहोइ देहु खल बंधि१ जारि२ ॥
हिंदुन भुव यह हुव अप्प हस्त, प्रतिकूल न वर्तहु तिन्ह प्रसस्त॥
ह्वै इह८।१।१स्वामिहित करनहार, अप्पहु कछु जयफल हो उदार॥
जसवंत जामिपहु मत्रुजानि, प्रभु स्वामिधर्म सेवत प्रमानि॥ ७९ ॥
दैहो हनिवेको इहिं निदेस, अभिमत तव करिहैं सरत एस ॥
प्रभुसों बढिआवहिं जो प्रतारि, व्है तब अनिष्ट न मुरें सु हारि८०
जो कढिहु जाइ तो बंधि जोर, ए द्वै११हि रहैं प्रभु घातओर॥
जो अल्पआयु मारयोहु जाइ, दुर्मन ह्वै तो सब मन दुराइ ॥ ८१ ॥
बिगरैं सब हिंदुन प्रभु बिरास, अति दूर परैं तब राज्य आस ॥
तातैं जो मन्लहु स्वहित तुल्लि, बैल१२तोपर१न प्रत्युतैं लेहु भुल्लि।८२।

॥ ७४ ॥ १ उस दाराशिकोह का संग भी उचित था २ हमने के या नाड़ना के योग्य नहीं जानकर ॥ ७५ ॥ ३ फिर ४ नीति के शत्रु होने के कारण ॥७६॥ ५ लाभ ॥७७॥ ६ निकाल दिये ७ इन ओड़ों के प्रतिकूल न बरतना ॥ ७८ ॥ ८यह्हिन के पति को भी ॥ ७९ ॥ ९वाड़िबंन १०विजेप नाड़ना करके ॥ ८० ॥ ११ जोधपुर का राजा यशवन्तसिंह और बुन्दी का राव भाऊसिंह ॥ ८१ ॥१२ सेना १३ उलटी (पीछी) ॥ ८२ ॥

नहिंतो यह अवसर बलि बनैंन, हजरत पछितैंहो उचित हैंन ॥
इम सत्थु हिताऽहित १ कहनहार, बलि प्रभु प्रमान जिहिं तिहिं बिचार ॥ ८३ ॥
निस अंधकार अति जिहिं अनेह, अक्खी दुरनबावन अरज एह
तिम सुनि भय संसय नेय तुलाइ, बल १ तोप २ निकर साह सैं बुलाइ ॥ ८४ ॥
नृप कहँ बिसासि अक्खिय निसेस, बंधन घरभेजहु फल बिसेस
बल १ तोप २ न जातन्हि मत बिचारि, नृपतैं खल लुंटक दिय निकारि ॥ ८५ ॥
अंकिखय मैं आतहि बेर अंत्थ, सब दंडि बिडारिय खलन सत्थ ॥
ऽहैं तो गहाइ लेहु ब हजूर, देसहु सन ते जन किन्न दूर ॥ ८६ ॥
अवरंग४०।३क्रुधानँलतैं अधीस, रक्ख्यो इम दिट्ठहिं टारि रीस ।
जाफर१साइस्तेखान२जोट३, ए हुव नबाब नृप कष्ट ओट ॥८७॥

॥ दोहा ॥

इम बुंदीपति तैं अनख, निहि न साह निवारि ॥
कथित नवाबनके कहैं, धीरभयो हितधारि ॥ ८८ ॥
कछुदिन अंतर न्हानकरि, भाऊ१९५।१।१अरु भगवंत१९५।३।२॥
भिन्न समय जावतभये, साहसभा बिलसंत ॥ ८९ ॥
करेरीस भगवंत१९५।३कौं, सत्त७परगनाँ साह ॥
पै तिनमैं इक बिघ्न परि, है परतंत्र प्रबाह ॥ ९० ॥
चक्रसेन९अभिधानं चढि, सबररांज अतिसूर ॥

॥ ८३ ॥ १ सत्य २नीति ३ समूह ४बादशाह ने उनको बुलवा लिये ॥ ८४ ॥
५ सम्पूर्ण ६ लूटनेवालों को ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ७ क्रोध की * अग्नि से ८भाग्य ने
॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९ चक्रसेन नामक १० भीलों का राजा ॥ ९१ ॥

---

* अग्नि शब्द पुलिङ्ग है परन्तु लौकिक में स्त्री लिङ्ग से व्यवहार किया जाता है इसकारण हमने भी स्त्री लिङ्ग लिखा है ॥

सहँस पंच५०००भिल्लन सहित, पैठो तहँ बल पूर ॥ ९१ ॥
जावहिँ साह अनीकं जब, जो दुर्गम भजिजाइ ॥
आड़विसैँ बनि ईस यह, पीछैँ अवसर पाइ ॥ ९२ ॥
जत्र कुत्र तत्रत्यं जन, हुव हाकिम दुव३हेतु ॥
तत्थ रहैं इम तोरिवो, कठिन किरातन केतु ॥ ९३ ॥
पुर चाचुरनी१नाम पुनि, खत्ताखेरिय२ख्यात ॥
विलसैँ जो जुगथान बसि, सबर परगनाँ सात७ ॥ ९४ ॥
ते भगवंत१९५।३हिँ रीभतकि, सात७हि अप्पे साह ॥
कह्यो चक्रधर हनि करहु, अप्प अमल रुचिराह ॥ ९५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूप-भावसिंहचरित्रे खजुवान्तिकसूजौरङ्गजेबरणकरणं१, सूजावीरवारणावट्टनेनौरंगजेबारोह्यकरिपातनं २, औरंगजेबपराभवभ्रमयोधपुरेशयशवन्तसिंहस्यौरंगजेबशिविरलुण्टनं ३, भावसिंहानुजभगवन्तसिंहस्यौरंगजेबगजघातकयवनहननं४, हड्डाधिराजभावसिंहसूजारोह्यगजास्कन्धमारणं५, अश्वारूढसूजापलायनेन तत्सैन्यप्रपलायनं६, एतद्विजयहेत्वौरङ्गजेबभावसिंहप्रसत्तिसमययोधपुरेशयशवन्तसिंहस्यौ-

---

१सेना ॥ ९२ ॥ २ वहां के लोग ३ दोनों कारणों से ४ तहां ५ भीलों की ध्वजा ॥ ९३ ॥ ६ भील ॥ ९४ ॥ ७ चक्रसेन नामक भील को ॥ ९५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में खजुवा के पास शूजा और औरंगजेब का युद्ध होना१ शूजा के एक वीर का अपने हाथी की टक्कर दिलाकर औरंगजेब की सवारी के हाथी को गिराना२ औरंगजेब को मराहुआ जानकर जोधपुर के राजा यशवन्तसिंह का औरंगजेब के डेरों को लूटना ३ औरंगजेब के हाथी के टक्कर लगानेवाले यवन को भाऊसिंह के छोटे भाई भगवन्तसिंह का मारना ४ हड्डाधिराज भाऊ का शूजा की सवारी के हाथी के महावत को मारना ५ शूजा के घोड़े सवार होकर भागनें के कारण शूजा की फौज का भागना ६ इस विजय के कारण औरंगजेब का भाऊ पर प्रसन्न होने के समय जोधपुर के राजा यशवंतसिंह का औरंगजेब के जनाने आदि लूटने के समय बुन्दी के लो-

रङ्गजेबावरोधलुण्ठनबुन्दीभटसहायकरणसूचनप्राप्त्या भावसिंहो पर्यौरङ्गजेबसैन्यप्रेषण ७, जाफरखांशाइस्तखांनामयवनद्वयनिवेदन त्क्षान्तभावसिंहापराधनीरुजभगवन्तसिंहप्रान्तसप्तकप्रदानं चतुर्थो मयूखः ॥ ४ ॥

आदित एकत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३१ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जसवंतहु इत जाइकैं, प्रथम कर्मवति १९५१ पास ॥
मुच्छ करेखि हड्डीमहल, अधिक विकत्थन आस ॥ १ ॥
अक्खिय जिहिं आतंकतैं, मोकहँ भग्गो मानि ॥
उज्जइंनीतैं आवतहि, तैंहु नर्मकिय तानि ॥ २ ॥
भय ताकैं जो मैं भज्यो, तो बे तसहि जव जुट्टि ॥
मुच्छ१ रु नासा२ छिन्नि मैं, लायो किम वसु लुट्टि ॥ ३ ॥
आनैं तस अवरोधकैं, हुरम जनन हारादि ॥
ए धारहु तुम आभरन, छलपन संसय छादि ॥ ४ ॥
कर्मवती१९५१रानी कही, जहँ हड्डी करजोरि ॥
स्मरहि प्रभुलाये सदन, वसु लखि छिद्र वहोरि ॥ ५ ॥
पतिके देतहु नलिंयपुनि, बासकं करन बिलास ॥
जथा कुपित जसवंतको, तथा लह्यो सवलास ॥ ६ ॥
लिपि पत्रन पावत लिखित, भाऊ१९५।१नृप भगिनी सु ॥

गों का भगवन्तसिंह की सहायता करने की सूचना पाने के कारण औरंगजेब का अप्रसन्न होकर भाऊपर सेना भेजना७ जाफरखां और शाइस्तखां दोनों नवाबों के निवेदन करने से भाऊसिंह का अपराध क्षमा करके भगवन्तसिंह के नैरोग्य होने पर उसको सात परगने मिलने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ ॥ और आदि से २३१ मयूख हुए ॥

१ दाढी रखी २ मूंछ खींचकर ३ कहता हुआ ॥ १ ॥ ४ हुली ॥ २ ॥ ५ अब ६ धन ॥ ३ ॥ ७ जनाने के ८ हार आदि भूषण ९ समर्थ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०अपने

रैमन विरत अविरत रही, गृहसुख रति न गिनी सु ॥ ७ ॥
प्राची¹ दिस भो प्रद्रवित, भील सुजा ४०।२ इत भजि ॥
बंधनलग्गो बहुरि बंल, सो क्षोभित भट सजि ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

तापर पठ्यो तनय मुख्य¹ सुलतानमुहम्मद ४३।१ ॥
भाऊ१९५।१ बुंदियभूप दयो तससंग दुरासद ॥
कुमर राम१।२ अरु किंत्तिसिंह२।३ कूरमनृपकेरे ॥
नृपति गौड़ अनिरुद्ध४ मैंगुन अर्थजपर प्रेरे ॥
पुनि जगतसिंह१९५।३।५ कोटापतिहु संगहि भोजि मुकुंद१९४।१ सुत ॥
सबनहि कहिय पकरहु१सुजा४०।२हेति" अनल कै रहहु हुत९
पुत्रसंग इन्ह प्रमुख अयुत अष्टक८०००० दल दिन्नों ॥
साहसुनहु बढि सविध कथित काका बल किन्नों ॥
सुना सुजा४०।१ को सुनत एह चिरतें हो इच्छित ॥
सुजा४०।२ सु जानत सहज तास लाहपामैं रच्यो तित ॥
पठई भतीज कहिकहि दिहिति अनुजपुत्र तुम मुख्य१ उत ॥
जानाति होहु जुवराज जिते प्रिया आय व्याहहु मैंसुत ॥ १० ॥
यह न लखिजिन इतर अप्प छन्नै कढि आवहु ॥
करि निकाह आतहि कैनी सु पैननी प्रिय पावहु ॥

वार सं ॥ ६ ॥ १ पति से विरक्त होकर २ निरन्तर ३ प्रीति ॥ ७ ॥ ४ पूर्व दिशा को ५ भागा ६ लेना ॥ ८ ॥ ७ दुष्प्राप्य अथवा दुर्धर्ष " यह बुन्दी के राजा का विशेषण है" ८ कीर्तिसिंह ९ विजय चाहनेवाले १० बड़े भाई सुजा पर ११ अग्नि रूपी अग्नि में १२ होम होकर रहो ॥ ९ ॥ १३ आदि १४ बहुत समय से चाहता था १५ सुल्तान महम्मद सूजा की पुत्री से पाणि ग्रहण चाहता था १६ गुप्त १७ पाहवी १८ जमाई १९ युवराज की भांति अर्थात औरंगजेब को कैद करके तुम युवराज होकर यहां आकर २० विवाह रीति से प्रिया से विवाह करो ॥ १० ॥ २१ अन्य नहीं देखे ऐसे २२ पारसी भाषा का विवाह वाची शब्द है २३ कन्या को २४ की

हम सहाय इत होइ जनक[1] कारे तास जनक२ जिम ॥
दिल्ली बिलसहु दुलभ करहु संदेह अत्थ किम ॥
जामात मारि जो मैं जरंठ[2] कनी रुचिर[3] बिधवा करौं ॥
तुम१हम२मिलाप रैंव[4] सक्खि तब पलटि कोल दोजखपरौं[5]॥११॥
काका लिपि यह कुमर कलित[6] निर्जन गोचर[7] करि ॥
अंतरंग[8] निज अनुग[9] भाँवबोधन[10] लोभी भरि ॥
काका पुब्बहि कुटिल जेहु कुट्टे जर जुत्तिन ॥
ते बुल्ले कहि त्वरित निटिल्ल[11] निज मंडहु मुत्तिन ॥
बिस्वस्त[12] भेजि काका बहुरि जिम बुल्ले तिम चलहु जँहँ ॥
करिजेर बप्प तस बप्प[13] क्रम तुम बिलसहु नव रूच्य[14] तँहँ ॥१२॥
लुब्ध सु लुब्धन लॉपित[15] मन्नि सुलतान मुहम्मद४१।१ ॥
छोरि जनक बलछिद्र[16] पाइ निकस्यो अघ१छल२पद ॥
बुल्ल्यो जो बिस्वस्त सुजा४०।२भेज्यो सुहि तासह ॥
काकाप्रति कतिकाम मिल्यो इक्क सु ब्याहनमँह[17] ॥
कुमरहिं न बिक्खि इत तँहँ कटक[18] पठई सुहि लिखि साह प्रति॥
अवरंग४१।३लिखिय रहियो उतहि मग अहु तुम रोधमति[19] ।१३।
इम लहि हुकम अनीक[20] रहिय तत्थहि मग रोधक ॥
काका सन इत कुमर बिंदबनि[21] मिलिय कुबोधक[22] ॥

---

१ तुम्हारे पिता औरंगजेब को उसके पिता शाहजहां के समान कैद करके २ बुड्ढा ३ सुन्दर कन्या को ४ ईश्वर साक्षी है ५ नरक में पडूंगा ॥११॥ ६ विदित अथवा प्राप्त ७ एकान्त में देखकर ८ खानगी ९ नौकर १० अभिप्राय जानने के लिये ११ ललाट मोतियों से रचो अर्थात् मोतियों के अक्षत चढ़ाओ "निटिल शब्द का अर्थ दशकुमार चरित्र की टीका में प्रमाण सहित ललाट लिखा है" १२ भरोसे के पुरुषों का १३ उसके पिता (शाहजहां) के क्रम से १४ नवीन दुल्लह ॥ १२ ॥ १५ उस लोभी ने लोभियों के कहने को मानकर १६ पिता (औरंगजेब) की सेना को छोड़कर १७ ब्याह करने के उत्साह से १८ सेना ने कुंवर को नहीं देखकर १९ रोकने की बुद्धि से ॥ १३ ॥ २० सेना २१ दुलह २२ बुरी सलाहवाला

स्वसुता तत्थ सुजा४०।२सु भेट किय व्याहि भतीजहिं ॥
अति तामैं आसक्त बन्यों मन्नि सु सुख बीजहिं ॥
अवरंग४०।३पटकि कछु पेच इतकुमर१भ्रात२बिच द्रोहकरि॥
कछु मिस बुलाइ गहि सो कुमर अटक्यो गढग्वालेर अरि१४

॥अष्टूपात् ॥

जराअवधि रहि जत्थ मरहिं सुलतान मुहुम्मद४१।१॥
तिम मुराद४०।४काकाहु तास सहपुत्र१सभासद२ ॥
इत बिजई अवरंग४०।३प्रबल आयो दिल्लीपुर ॥
लरिहों कछुक बिलंबि आइ यह मंत्र सुजा४०।२उर ॥
सो कुटुंब बलसहित तबहि दिल्लिय सीमातजि ॥
छलबध संकित छमहु भीरुदिस पुब्ब१गयो भजि ॥
सो साहसुजा४०।२विस्वाससह अराकान पुरके अधिप ॥
सकुटंब हन्यौं पापी सहज भरि अघ भर निजदेह निप।१५।

॥ घनाक्षरी ॥

वर्मा की विलायतके पच्छिम३।५प्रदेस माँहिं,
इंद्रओर१अप्पनतैं अराकान नाम पुर ॥
तामैं राज्य करत नरेस कोऊ तासमय,
ता विसासघातीनैं धिजोइ दैदै धिज्ज धुर ॥
सोहँदै सहाय मैं रु बिजय विभागी वनि,
इच्छत कृतघ्न अवरंग४०।३को प्रसाद उर ॥
भूलिधीज्यो भोरा जो सुजा४०।२ सो सकुटुंब मार्यो,
छन्नघात कीनौं छद्म मनके महानिठुर ॥ १६ ॥
रोधक सुजा ४०।२के मगमैं जो बल राख्यो साह,

---

१ अपनी पुत्री २ कारण ॥ १४ ॥ ३ वृद्धावस्था पर्यन्त ४ पुत्र सहित ५ विलम्ब करके ६ सलाह ७ सेना सहित ८ छल घात से ९ अपने शरीर रूपी कलश को पाप के भार से भरकर ॥ १५ ॥ १० ईशान-कोण में ११ प्रसन्नता १२ छल ॥ १६ ॥ १३ रोकनेवाली १४ सेना

सो अब बुलाइ भेजे सीख देदे स्वीय घर ॥
जान्यौं जसवंत जोधपुरके नरेस इत,
देह१ पर्यो दुर्लभ तो पुहवी बिदूरपर ॥
आलोचत ऐसैं स्वीयभटन समेत गहि,
दारा४०१२ कौं धिंजोइ सौंपिदेवो जानि श्रेयंतर ॥
दारा४०१२नैं दुर्वेर जो बचायो आगैं तातैं वह,
धीजतहो ताहि सोहि भेज्यो भाटीबंस भेर ॥ १७ ॥
ताके संग औरहु कृतघ्न भट आपुनैं ते,
भेजि रु कहाइ हम हैं वे अवरंग४०१३ अरि ॥
नीतिहूसौं नियत तुमारोही तखत यातैं,
कीजै पातसाही आप हमहिं वजीर करि ॥
चोर अवरंग४०१३ हाहा स्वामीके तखत चढ्यो,
ताहि गहि लेहौं मैं महार्मृध मैं मारिमरि ॥
बीच हरि१ गंगा२ दै बुलावत हजूर हमैं,
पीछैं पछितैहो आज संसय प्रवाह परि ॥ १८ ॥
ज्यौंही इन हाहा जाइ दुष्टन मिलाइ दारा४०१२,
किंतवन त्यौंही भरे कपटके बैन कहि ॥
दावपेच बिरचि लपेटलीनौं दारा४०१२ यातैं,
कोल जोजो कीनौं सो लिखाइ चढ्यो संगचहि ॥
जोधपुर आयो जो सैंतद्रूके समीप सैंन,
दिल्लीपति आदर बढाइ आन्यौं छैद्म बहि ॥
मैंनां१ मेर२ व्याध३ रु पुलिंद४म मुखर मेलि,

---

१ विचार करते हुए २ अपने वीरों सहित ३ विश्वास देकर ४ बहुत श्रेष्ठ ५ भड़ (वीर) " गोयन्ददास भाटी " को ॥ १७ ॥ ६ अब ७ निश्चय ८ युद्ध में ९ संदेह के ॥ १८ ॥ १० ठगों ने ११ नदी का नाम है १२ से १३ छल करके १४ भील १५ नीचों (अप्रिय बोलनेवालों) को मिलाकर

चेंक्र च्यारिअयुत४०००० दिखायो निज रेफ राहि ॥१९॥
दारा ४०१२ कैहु संग तहाँ जुरिगो कितोक दल,
तासहित ताकौं लै कवंधज पयानकिय ॥
दिल्लीढिग आवत अनीक इतकोहु सज्जि,
अभिंमुख आत भीरु प्यारिनके प्रानप्रिय ॥
मँत्रमिस दावमैं लै दारा४०१२ अतिसीम दुष्ट,
देखत गहाइ हग लज्जाको न लेसलिय ॥
दिल्लीपुर आइ पठवाइ कैद दारा ४०१२ जोरि,
कहाई सु वत्त यह लैकें देहु दास जिय ॥ २० ॥
साह जसवंतसौं तो कछु न कहाइ ताहि,
मारनके मंत्र निजफौज चढिबो निवारि ॥
अंतिक बुलाइ दारा४०१२ पूछ्यो अवरंग४०१३ हमकौं,
जो गहते तो कहाकरते तब निहारि ॥
दारा४०१२ कह्यो तेरोकंठ कैर्तन करते हम,
अवरंग४०१३ कह्यो कैसी हमैंकरिबो बिचारि ॥
दारा४०१२ कह्यो जोहि करते हम करौ तुम सो,
सो सुनि हनन भेज्यो वीजैं इक१हू बिसारि ॥२१॥
जवन भरोसाको बहादुरखाँनाम जानि,
भाख्यो अवरंग४०१३ कंठदारा४०१२के छुरीकरहु ॥
दारा४०१२कौं लिवाइ तिहिं बारह१२ पुलन आइ,

---

१ सेना २ ऊपर रहकर अर्थात् रेफ, अक्षर के ऊपर रहता है इसप्रकार सबके ऊपर रहकर; अथवा उस अधम ने अपने को दारा को निज का दिखाया ॥१९॥ ३ राठोड़ ने ४ सन्मुख ५ कायर ६ स्त्रियों के प्राणों के प्यारे ७ सलाह करने के मिस से ॥ २० ॥ ८ दाराशिकोह को मारने की सलाह से जो फौज की चढाई होती थी वह रोक दी ९ समीप १० कंठ कटवाना ११ अब हम को क्या करना चाहिये १२ एक वीर्य से उत्पन्न हुए थे सो भूलकर ॥ २१ ॥

भाख्यो करिलेहु करतव्य जिय जो धरहु ॥
गुसल१ निमाज२ करि दारा४०।१ कछुकाल कहि,
पढत कुरान३ कह्यो क्यों बे चिर आचरहु ॥
सो सुनि कुरानकी किताबकी बहादुरके,
उरमैं दई रु कह्यो पापी पापमैं मरहु ॥ २२ ॥
लै वह किताब कलामुल्लाकी बहादुरनैं,
बैठि उर दारा४०।१ को बिदास्यो कंठ वीर बनि ॥
पुस्तक कितेकनमैं पावत यहहु लेख,
नभतैं[3] प्रसूनं[4] उद्दा[5] बरसे बितान[6] तनि ॥
जोधपुरभूप जसवंत मुख धूरिडारि,
प्रचुर[7] प्रजानैं हाहा धिकधिक भूरि[8] भनि ॥
जानि धूर्त कातर[9] बिडास्यो[10] अवरंग४०।३ जाहि,
फलहि मिल्यो न नाँकदैकैं[11] अपसौन जनि ॥ २३ ॥
श्रीनगर भूपतिके सरन सलेम४१।१हुतो,
दारा४०।१को तनूज[11] अह्यो बिपुल बिसास लहि ॥
मास्यो सुनि दारा४०।१कों कृतघ्ननैं कपटमंडि,
सो गहि सलेम४१।१ भेज्यो सोपै रह्यो कैद सहि ॥
रोकि१ जनकों[12]१दिक सुजा२दिक मराइ२ इत,
दारा३दिक मारि३अकंटक अवरंग४०।३ रहि ॥
दारा४०।१की सुता निज तृतीय३सुत आजम४१।३कों,
दीनी तास ओरहु जो भ्रात हैतो कैदकहि॥२४॥
सेना जो सुजादिसैं[13] ही ताके सब भूप सहि,

१करना होवे सो करलो २ अब विलम्ब क्यों करते हो ॥ २२ ॥ ३ आकाश से ४ पुष्प ५ विशेष फैलकर ६ बहुत ७ बहुत ८ कायर ९ निकाला १० नासिका देकर अपशकुन देने का ॥ २३ ॥ ११ दारा का पुत्र १२ पिता आदि को ॥२४॥ १३ सूजा की ओर थी

गेहन पठाये तब भाऊ१९५।१को अनुज[1] गो न ॥
पंच५मासपीछैं भगवंत१९५।३ चहि सीख भाख्यो,
भेट गुसदैकैं जाइ जाफरनबाब भोन ॥
बुंदीके बरब्बर बढायो वसुधा[2]दै सोहि,
पै नपायो भूपपद[3] सो अब सफल होन ॥
इष्ट उपदा दै[4] अवलंब[5] आप मानैं यातैं,
करहु सहाय इहाँ आपसो इतर कोन ॥ २५ ॥
सोही खान जाफर नबाबहु निवेदि[6],
अवरंग४०।३तैं दिवायो भगवंत१९५।३ काजैं रावपद ॥
पीछैं लहि सीख मऊ पँत्तन[7] गहहु आइ,
मातुल[8]कों मारि वहाँ दिखावतभो राजपद ॥
कल्यानकनाम जो ककोरको नरूकी सुत,
चंद्रभानुको सो हो अमात्य मऊद्रंग हद ॥
प्रीति१ ताकी भाऊसौँहिं१९५।१पिहित[9] प्रमानि,
पकराइ कछु पत्र२ सु हन्यौं यौं गेरि कोप गंद[10] ॥ २६ ॥
भाऊ१९५।१भूमिपाल इत बुंदी भ्रात भीम१९५।२सुत,
कृष्ण१९६।१मान्यौं कुमरसता१६४।१सो स्वांत[11] सत्यकरि॥
कुमरपनैंमैं मुख्य कापरनि१ पत्तनसौँ,
सहँसपचीस२५०००को पटा दिय सनेह भरि ॥
जाँम[12] यह बुंदीकी मँही[13] न बटिजाति तोतो,
पावतो कुमार पटा द्वि२गुन२५००० ध्रुवत्व[14] धरि ॥
तोहू धर्मधीर पुत्र पट्टप[15] प्रमानि ताकौं,
वैभव वढाइ कीनों विदित इतो वितरि[16] ॥ २७ ॥

---

१ भाऊ का छोटा भाई भगवन्तसिंह नहीं गया २ भूमि देकर ३ राजा की पदवी ४ वांछित नजराना देकर ५ आधार ॥ २५ ॥ ६ अर्ज करके ७ पुर ८ मामा को ९ छिपीहुई १० कोप रूपी रोग डालकर ॥ २६ ॥ ११ मन में १२ जहां १३ भूमि १४ निश्चय ही १५ पाटवी १६ देकर ॥ २७ ॥

इत भगवंत१९५।३ मऊपत्तन अधीस होइ,
भाऊ१९५।१सौं विरोध कोटि अधिक तुलापैं आनि ॥
बुंदीके समान सब वैभव बनाइ गज१,
वाजि२ छत्र३ चामर४ चलाये मद१ मोद२ मानि ॥
पीछ खिन पाइ पृतना निज सकल सज्जि,
चाचुरनीं१ खाताखेरी२ जाइ भो अवनिजानि ॥
चक्रसेन सबर बिडारयो जीति चोरैंखेत,
परगनाँ सात७हि तहाँके करे स्वीयँपानि ॥ २८ ॥
चाचुरनी१ चालुक हरी२कौं राखि हाकिम रु,
सोमानी बनिक राम२ खाताखेरी२ ख्यातकरि ॥
अच्छी च्यारिसहँस४००० चमू ह्वाँ इन्हपास राखि,
आयो मऊ आप भिल्ल गंजनके दर्प्पभरि ॥
सोपै ताहि हायनके सावनमैं आइ सूर,
पैनैं पंचसहँस५००० पुलिंदनको जाल जरि ॥
गोगैंन गिराइ परमाँहिं तँनु पाइ खाता-
खेरी१।२ गरदाई जुरयो जमको जलूस धरि ॥ २९ ॥
जाकहँ न आतो जानि मेघागमैं सोद मनि,
घरनैं घनैं भट गयेहे सुख सिक्ख लहि ॥
सोही छिद्रपाइ चक्रसेन इम आइ मेद,
गोलिन मचाइ दुर्ग कीनौं रुद्ध दौंव दहि ॥
बरखा प्रसाद असनादि उपहार बीति,

१समय पाकर २ सेना ३ संब ४भूपति हुआ ५चक्रसेन नामक भील को ६निकाला ७ अपने हाथ में किये ॥ २८ ॥ ८ प्रसिद्ध ९ सेना १० भील को दबाने के घमंड में भरकर ११ उसी सम्वत् के १२ तीक्ष्ण १३ भीलों का समूह १४ गऊओं के समूह को गिराकर और किले में १५ थोड़ शत्रु पाकर १६ घेर कर ॥ २९ ॥ १७ वर्षा के आनंम का आनंद मानकर १८ अपने अपने घरों को १९ वर्षा २० अग्नि से जलाकर २१ मेघ की प्रसन्नता के दान से अर्थात् अत्यन्त वर्षा होने से २२ भोजन आदि २३ सामग्री बीतने से

माँहिके सिपाह भये व्याकुल विपत्ति वहि ॥
अप्पन सहाय मंग्यो तदहु मरुतैं देसक्यो,
न भगवंत१९५।३ सोंपे रुद्र कछु*हेतु रहि ॥ ३० ॥
दुर्गके प्रवीरनकों खाताखेरी१।२ तीन३दिन,
†असनविहीन जात ‡निखिलन ह्वै निरास ॥
माँग्यो धर्मद्वार हारि §सबरसिरोमानिसोइ,
तानैं जय जानिकैं इन्हैंहु दयो अवकास ॥
हरि१अरु राम२हैं३हि ए तब उहाँहि पहुँचे,
ते सब संगले सिटाये भगवंत१९५।३पास ॥
धिक्कारि१न चहि भगवंत१९५।५ह्वाँ दुरहुरन भाख्यो,
असन न अप्पि अहो अब यह कोप४ आस ॥ ३१ ॥
मास इक१लौं तो भूँज्यौं अन्नहु कठिन मिल्यो,
पाँउसमैं तोहू पंचसहँस५०००रुकाइ पैर ॥
जिम तिम जुट्ट छँम संघाते नछुट्टे के,
किरातगन कुट्टे देखि लज्जा१जाति२स्वामि दर३ ॥
भोजनको गंध जब त्रि३दिन न भास्यो तब,
फौजनको आँस्यो फैल खोजनको गैल खैर ॥
स्वामी अब नाहकही विमन वनैं तो कहि,
कट्टहु कृपान गैंदि यों रु कीनैं अग्ग गैर ॥ ३२ ॥
निर्वचन ह्वैकैं तब आगसैं निवारि पीछैं,
पाउसके अंत भगवंत१९५।३साजि सेना भूँरि ॥
प्रबल पुलिंदं चंक्रसेनपैं चलाइ ताकौं,

---

*कारण॥३०॥†भोजन विना ‡सब §भीलों के राजा से १धिक्कार देकर २भोजन नहीं देकर ३हुआ ॥३१॥४भूँगड़ा धाणी आदि भुना हुआ अन्न ५वर्षा में ६शत्रुओं को ७ समर्थ प्रतिज्ञा से ८ भीलों के समूह से ९ स्वामी के भय से १० त्रास दिया हुआ ११ तीक्ष्ण मार्ग १२ उदास १३ खड्ग १४ यों कहकर १५ फंट आगे किये ॥ ३२ ॥ १६ चुप होकर १७ अपराध १८ बहुत १९ भील २० भीलों

बहुरि बिडारि खाताखेरी १।२लई पनपूरि ॥
साहनैंहु काऊकाम तासमैं *समर साध्य,
सौंप्यो भगवंत१९५।३हिं सुधारि सु समरसूरि ॥
दिल्लीके अधीन देस१दुर्ग२जो बिरचि बीर,
आयो मऊ बैरिनको चंड †चतुरंग चूरि ॥ ३३ ॥
ताकों तिहिं रीझपैं बहादुरी बखसि पंच,
लाख५०००००के पटासौं दीनौं गूगेरक१नाम ढंग ॥
साहसौं इतोक अब पावत ‡अतिक अति,
सीमपन पायो दर्पछायो भगवंत१९५।३ अंग,
भाऊ१९५।१सौं §भनाई आजलौं तो तुल्य अप्पहे वं,
साहहौं बढायो सब सुनसब१ देस संग,
बुंदीके घरानैंमाँहिं मैं अब बडो यौं आइ,
मुजराकरहु मोहि पहिलैं बिनय बंगं ॥ ३४ ॥
भाई भगवंत१९५।३बीरपन१मैं बढ्यो त्यौं धर्म१,
धारि मद३मारतो तो भासतो ज्यौं धर्म१मनि२ ॥
पै इम अहंपदके पत्रहिं पठात भनी,
निजनतैं भाऊ१९५।१चलो बिलसैं बिनम्रबानि ॥
पंचन प्रबोध्यो अवरंग४०।३की महर वापैं,
एक१घर बाढयो द्रोह देहैं अपकित्ति तनि ॥
राज्य इत अनुज जमायो भलीरीति बैठे,
आनिके मऊमैं बडेसेठं स्वापतेय खंनि ॥ ३५ ॥

के राजा का नाम है * युद्ध से सिद्ध होनेवाला कार्य † भयंकर सेना को चूर्ण करके ॥ ३३ ॥ ‡प्रशंसा युक्त; अथवा अधिक पाकर बडप्पन पाया कहाई १ अब २ देश के साथ ३ नम्रता के व्यंग्य से; अथवा मस्तक झुकाकर (झुककर मुजरा करने में और प्रथम मुजरा करने में व्यंग्य रूप नम्रता सिद्ध होती है) ॥ ३४ ॥ ४ अपने लोगों से ५ विशेष नम्र होकर ६समझाया ७ अप कीर्ति फैलावेगा ८ धन की ९ खान ॥ ३५ ॥

बुंदीसों बढयो यों सुतवैभव विचारि बुंदी,
माता भगवंत१९५।३की हुती सो आनि मानमंति ॥
नाम नित्यकुमरि१९४।४ककोरकी नरूकी भेदि,
पतिके परिग्रहके लोकहु कढाइकति ॥
सोचि अब बुंदीहे मऊकैवस यातें सब,
चाहो स्वामि सेवन चलो तो इम गूढगति ॥
पाटनके न्हानके बहानेंसों निकासि प्रसू,
लोक बहु लैकें पहुँची यों मऊ पुत्रमति ॥ ३६ ॥
संवत प्रमान आष्टि सत्रह१७१६समय यहै,
यों पति सता१९४।१के घर ईरखा१असूया२आनि ॥
सासु१नके सोति२नके जेठ३देयर४नके प्रभूत,
पलटाइ जन पुत्रकों महत मानि ॥
धावर१धइ२री२दास३दासी४वलि वेतनिक५,
मोल६मनुजाँदिक के लैगई जो लोभी ठानि ॥
रीति गनिकाकी रजपूतहु कितेक गये,
संग१ रु कितेक जुदे२ जाकों वरजोर जानि ॥ ३७ ॥
जीविका मऊवस ही जिनकी कितेक जेहू,
जाइभये तंत्र सनमानें ते समस्तजन ॥
स्वामी सुनो स्वीयं कविकुलको कुलीन कोऊ,
तबहु गयो न मानि कोटाको प्रसाद मन ॥
वृत्तिधर जे गये पुरोहित२ प्रमुख वंस,
बाँधि गज१ बाजी२ तिन्ह वार भरे धाम धन ॥
इनकों सुवर्ण तार पात्रहु अखिल देकें,
बुंदीपैं कटाक्ष कीनों ईरखा अमंदपन ॥ ३८ ॥

१अहंकार की बुद्धि से२छिपाकर३माता ॥३६॥ ४सहित५बडा ६तनखा पानेवाले सेवक ७मनुष्य आदि ॥३७॥८ आधीन ९ हे स्वामी रामसिंह १० आप के कवि (सूर्यमल्ल)के कुल की ११प्रसन्नता १२आदि १३द्वार समय १४चांदी के ॥ ३८ ॥

भाटहु करोढियां चतुर्भुज धनिक्क भयो,
याकों दये जानैं तहाँ अधिक्क बतीस३२ बीति ॥
मातुलको मारिवो प्रबंधन लिखित पायो,
भाट यह कारन बतायो तामैं तजि भीति ॥
गूगैरकौं गैरुइ गिनी सो राजधानी राखि सब,
छक्क पाइ राज्य बिलस्यो रँमनरीति ॥
जहाँजहाँ साहनैं पठायो तहाँतहाँ जाइ,
हत्थन बिकत्थन दिखाइ लुरयो जंगजीति ॥ ३९ ॥
इनही दिन१न कछू पीछैं२ पहिलैं३वा ईतर,
बुंदेलन भूमैं ब्रजभाषाकवि बिप्र तीन ३ ॥
जेठो१ भ्रात भूखन१ रु मध्य२ मतिराम२ तीजो ३,
चिंतामनि३ बिदित भये ए कविता प्रवीन ॥
किंवदंती ऐसी कर्णापावतहे राम२०३४ प्रभु,
भूखनकी भामी कहाँ पीलुं लखि तुंग पीन ॥
हाँसैं गजबाँधवेकी निरश्वसि हृदय हेरि,
भाख्यो किम राखैं भिच्छु दारिद लघुत्व लीन ॥ ४० ॥
जेठो१ यहजानि वा सुमति मतिराम२ मानि,
अग्रज प्रबोधि भजावंतीकौं दुखितपाइ ॥
जेठो१गो सितारा सिवराजको सुजसजानि,
मध्य२ आयो बुंदी रीझ भाऊ१९५१ की गुरु गिनाइ ॥
चिंतामनि३ बिचरयो समीपके रसेसैनमैं,

१करोढिया जाति का भाट२धनवान् हुआ ३घोड़े४मामा का मारना५ग्रन्थों में लिखा हुआ मिला ६ भारी ७ पति की भांति ८ हाथों के विशेष कथन के साथ अर्थात् बाहुबल दिखाकर ॥ ३९ ॥ ९ अन्य समय में १० दंतकथा ११ भूषन कवि की स्त्री ने १२ ऊंचा और पुष्ट हाथी देखकर १३ चाह १४ निश्वास डालकर १५ भिक्षुक होकर दरिद्र से छोटे पन में लीन होरहे हैं॥ ४० ॥१६ बड़े भाई को समझाया १७ भोजाई को १८ बड़ी १९ राजाओं में

लाये सब वारन विसेसक्रमतैं वढाइ ॥
लहुरो३ नजानियें कितेक करी लायो मति-
राम२ इत आयो त्यौं रिझायो भूप गुन गाइ ॥ ४१ ॥
भाऊ१९५।१ को प्रभाव अलंकारन विषय आनि,
नूतन बनाइ ग्रंथ ललितललाम१ नाम ॥
संसंदकौं पाइ सो नरेसन सुनाइ रुचि,
रीझपै बढाइ कह्यो आगम जितेक काम ॥
सब पट१भूखन२रु वारन३वत्तीस३२कहैं,
वाईस२२हु कांति रु दये चउसहँस४०००दाम४ ॥
गेहहि इत गज निबाहन बहुरि दये,
पाटनिके प्रांतके रिरा१रु चिरा२दुव२गाम५ ॥ ४२ ॥
भाऊ१९५।१भूमिपाल अभिलाप मतिराम२को यौं,
कूरन विरंचि भेद्यो जगती जगाइ जस ॥
भौंन भान ललितललाम१हू बिदित भयो,
पढन१पढावन२में सुकविन रम्यरस ॥
बुंध मतिराम२भगवंत१९५।३हु बुलायो सो,
गयो न गिनि गर्व राखि बुंदीसौं बिरोधवस ॥
जेठो१गो सितारा जहँ बनमैं सिकारकेस,
अस्ववार एक१सिवराज२आयो दिठि तस ॥ ४३ ॥
पूछ्यो को१कह्यो मैं कवि२राजाकौं रिझाइ इभ,
भूरि लैन आयो कहो कोन तुम प्रश्नकार ॥
सेवक समीपी छत्रपतिको छितिपै भाख्यो,
मोहि पै सुनावहु सो अनुकंपा अनुसार ॥

---

१ हाथी २ छोटा ॥ ४१ ॥ ३ ग्रन्थ का नाम है ४ सभा को ५ हाथी ६ कितने ही लोग वाईस हाथी देना कहते हैं ७ हाथियों के निर्वाह के लिये ॥ ४२ ॥ ८ पृथ्वी पर ९ पण्डित १० देखकर ॥ ४३ ॥ ११ हाथी १२ पूछनेवाले १३ राजा ने कहा १४ कृपा के

वाकौँ तब भूखन१मनोहर[1] सुनायो एक१,
जंप्यो[2] करजोरि जिहिँ ओरहु कहो उदार ॥
छन्न[3]नृपकौँ इम सुनावत कतिकछंद,
घाँघाँतैं[4] घुमंडि मिले सेनाके विविध बार[5] ॥ ४४ ॥
प्रभु पहिचानि कवि बावन५२प्रमित[6] पद्य,
हे जब उपस्थित[7] सुनाये ते मुदित होइ ॥
कहत कितेक आयो एकाकी[8]सिकार तानैं,
बावन५२सुने यों वृत्त[9] नम्रबनि गोत्रगोइ[10] ॥
किमहु उदंत[11] होहु पै इम सितारा कवि,
आनि सनमानि देकैं द्विरद[12]पचासदोइ५२॥
ग्राम२धाम३दाम४पट५भूखन६उचित अप्पि,
ख्यात[13]कीनौँ भूखन सु दूखन दरिद खोइ ॥ ४५ ॥
बावन५२सुनाये कवि बनमैं नृपहिँ वृत्त,
ताहीमित[14] दंतावल[15]५२दानमैं अचिज्ज[16] येह ॥
दक्खिन३।२के अर्द्ध१ देस पच्छिम५।३को पाता[17] नव,
लक्ख९०००००दलनाथ ताकै गज न कितेक गेह ॥
तनकहु[18] तर्कपैं सता१९४।१नै दई सत्तसई[19]७००,
मूर्त्त[20] तामैं नंद रस भू १६९मित द्विपत देह ॥
कै गज जितेक निवहैं घर तितेक लैकैं,
आयो मचवायो द्वारमैं दुरमदन मेह[21] ॥ ४६ ॥

---

१ मनोहर जाति का छंद २ कहा ३. छिपेहुए राजा को ४ दिशा दिशा से ५ समूह ॥ ४४ ॥ ६ प्रमाण अर्थात् गिन्ती के बावन छंद ७ कंठ थे ८ अकेला ९ छंद १० गोत्र छिपाकर ११, वृत्तान्त कैसे ही होओ १२ हाथी १३ प्रसिद्ध किया ॥ ४५ ॥ १४ उतने ही १५ हाथी १६आश्चर्य है १७ "पा रक्षणे" इस धातु से "पाता" शब्द का अर्थ रक्षा करनेवाला है १८थोड़ी सी तर्क पर शम्भुशाल ने १९ सात सौ हाथी दिये थे जिनमें १६९ हाथी २० मूर्तिमान् (स्वरूप) थे २१ मस्त हाथियों के मद की वर्षा ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

इम भ्रातन त्रय३आनि इभ, बंधि निबह निज *बार ॥
†प्रजावतिन प्रति किय प्रकट, ए घर लखहु उदार ॥४७॥
नाम सत्रुसल्ल१हि नृपति, बुंदेलहु रनबीर ॥
बरनि महुव्वानाह बलि, भूखन १ धन किय भीर ॥ ४८ ॥
बहु उज्वल१के बीर२के, पद्य मनोहर प्राय ॥
जे भूखन३कृत नामजुत, अबहु विदित जस आय ॥ ४९ ॥
मतिराम५हु शृंगारमय, ग्रंथ गोत्र रसराज२ ॥
नेत्रित लच्छन निर्मयो, अपर६हु भासत आज ॥ ५० ॥
चिंतामनि३नृगिरा रचिय, पिंगल३लच्छन पद्य ॥
उज्वल१मुँख वृत्तहु इतर, बहुत अबहुं गुन गद्य ॥ ५१ ॥
भाऊ१९५१गज बर्नित भनत, इक१मनोहर आंहि ॥
आयो अग्रज संग इह, जुपै जनावत जाहि ॥ ५२ ॥
कवि भूखन१निज काव्यमैं, मारित१कथित मुराद ४०।४ ॥
कवि बहुमत ऊँहर२जु कह्यो, पहुँचै कित सु प्रमाद ॥ ५३ ॥
बंधनमैं हु बिसेस बलि, गढ पठयो ग्वालेर ॥
कैदहि तस पुत्रा१दि किय, जोपै तत्थहि जेरं ॥ ५४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेबसूनुसुलतानमुहम्मदस्य स्वपितृव्यसु-

*द्वार †भोजाइयों को ॥४७॥४८॥१शृंगार रस के और वीररस के २छंद जिनमें अधिक छंद मनोहर जाति के हैं ३ लक्षणों को दिखाने वाला; वा लक्षणों की अनर्गलता सहित; अथवा लक्षणों की लक्ष्मीवाला ४ बनाया ५ अन्य अर्थात् ललितललाम नामक ग्रन्थ से अन्य ॥५०॥६देश भाषा में ७ शृंगार आदि छंद भी ॥५१॥ ८ भाऊसिंह के हाथियों का वर्णन ९ है ॥५२॥ १०मुराद को मारना कहा है ११ सूर्यमल्ल कहते हैं कि मैंने बहुतों के मत से कैद करना कहा है ॥ ५३ ॥ १२ फिर १३ वहां ही कैद रहे ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में औरंगजेब के बडे पुत्र सुलतान मोहम्मद का अपने काका-

जासुतोद्वहनतन्मेलनहेतुबन्दीभवन १, औरंगजेबभयमपलायितारा-
कानस्थानस्थितसूजाछलघातमरण २, योधपुरेशयशवन्तसिंहच्छल-
गृहीतदाराशिकोहौरंगजेबमारण ३, भावसिंहानुजभगवन्तसिंहस्य
कोचदानराजपदादानं ४, भावसिंहस्य कृष्णसिंहयुवराजीकरण ५
भगवन्तसिंहस्य चक्रसेनभिल्लनिष्कासनखाताखेडीप्रभृतिप्रान्तादान
तद्वत्सरचक्रसेनतत्स्थानपुनरादान ६, तदनन्तरचक्रसेननिष्कासनेन
भगवन्तसिंहस्य पुनरधिकारसंपादन ७, शिवराजाद्भूषणकवेर्भाव-
सिंहान्मतिरामस्येतरराजभ्यश्च चिन्तामणेः करटिलाभैकैकस्य पृ-
थक्पृथग्ग्रन्थनिर्मितिसूचनं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितो द्वात्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जिम जिम हित साहनैं जनायो, तिम तिम ह्वै भगवंत १९५१३
मुख्य नामी ॥
बिभव अधिक भ्रात१ सौं बनायो, सुनसबकौंहु बढान वृत्ति मन्नी ॥१॥
रुचि पद तस रहऊरि रानी, पटुपटु इक्क१ सुता वहै प्रसूता ॥

शूजा की पुत्री से विवाह करके शूजा से मिलजाने के कारण कैद होना १ औरंगजेब से भागेहुए शूजा का अराकान में छलघात से माराजाना २ जोधपुर के राजा यशवन्तसिंह के छल से पकड़ेहुए दाराशिकोह को औरंगजेब का मरवाना ३ भाऊ के छोटे भाई भगवन्तसिंह का रिश्वत देकर राजा पद लेना ४ भाऊसिंह का कृष्णसिंह को कुमर बनाना ५ भगवंतसिंह का चक्रसेन नामक भील को निकालकर खाताखेड़ी आदि परगने लेना और उसी संवत् में चक्रसेन का फिर खाताखेड़ी विजय करना ६ जिसपीछे चक्रसेन को निकालकर फिर भगवंतसिंह का अधिकार करना ७ भूषण कवि का शिवराज से, मतिराम का भाऊ से और चिन्तामणि का अन्य राजाओं से हाथी पाना और प्रत्येक के भिन्न भिन्न ग्रन्थ बनाने की सूचना का पांचवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ और आदि से २३२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥

जसकुमरि१९६।१जु नामपाइ जानी,उचितविवाह वैया भई सु इक्खीं
जिम सगपन चित्रकूट जाको, रहत समै तिहिँ राजसिंहरानाँ ॥
तनुजंनु सरदारसिंह१ताको,वर गिनि सो भगवंत१९५।३तत्थ बुल्ल्यो
जसकुमरि १९६।१ सुता विवाहि जासौं, द्विरद १ तुरंगम २ ग्राम३
दास४दासी५ ॥
पट६पुरटअलंकृती७प्रथासौं, मनिन जरी परितोख दै समप्पी ॥४॥
जु दुलह सरदारसिंह१जंप्यो, प्रँथित सु पट्टप धर्मसील पिक्ख्यो ॥
स्वजनक रिससौं कृती सु कंप्यो, पटु निजदेह विहातभोहि पीछैं।५।
सक नख मुनि भू१७२०समै वरयो सो, जसकुमरी१९६।१ भगवंत
सिंह१९५।३जाई ॥
सक सर दग वाजि भू१७२५मरयो सो,अवसरपर कहिहैं सहेतुं अग्गैं

॥ घनाक्षरी ॥

संवत प्रमान नख सत्रह १७२० समय हुतो,
लंधनमैं पातसाह दूजो२चारलिस १ नाम ॥
पुत्री ताहि व्याहि पोर्टगेजनके पातसाह,
बंबईपुरी दो इहाँ जाकेबस वत्तीधाम ॥
दायजमैं जानै दूजे२चारलिस१कौं जो दयो,
तदतैं गयो सो अंगरेज८नके ढंग तांम ॥
सुता भगवंत१९५।३नैं विवाही जाही संवत१७२०मैं,
यौं गो अंगरेज८नके बंबई१नगर बाम ॥ ७ ॥
संवत नयन पच्छ मुनि भू१७२२प्रमित समै,
काराअवरुद्ध साहजिहान३९।१हु छोरयो काय ॥

---

१ पय (अवस्था) वाली ॥ २ ॥ २ पुत्र ॥ ३ ॥ ३ स्पर्धा के सूपण की ४ प्रसिद्धि से ५ इनाम देकर ॥ ४ ॥ ६ कपड़ा ७ विदित ८ धर्मपरिचित पिता के क्रोध से कंपायमान होकर ९उस चतुर ने अपना शरीर इस विषाद हुए पीछे छोड़ा अर्थात् आत्मघात किया ॥ ५ ॥ १० समय पर आगे कारण सहित कहेंगे ॥ ६ ॥ ११ तहां १२ उलटा ॥ ७ ॥ १३ कैद में रुकेहुए ने १४ शरीर

तबतौ निसंक अवरंग४०।३।०हे प्रसभ तानि,
सत्वर¹ बुलायो सब भूपनको समुदाय ॥
संवत² निकृति बाजि भू१७२३मित लगत ³समा,
रौधश्मैं गये सब निदेसतंत्र⁴ नरराय⁵ ॥
स्वामी तब कर्ण१बीकानैरको हुतो सो सिटि,
नायो⁶ भूतं⁷ अटक किनारेको सुमिरि न्याय ॥ ८ ॥
सूरसिंह नृपनैं बिहायो जब संहनन⁸,
ताको पट्ट पायो तब कर्ण१हि बडेकुमार ॥
मातम मिटाइबेहु आयो तबतैं न वह,
अटकि न लंघि१मुरि अवेर२के भय अपार ॥
आहूतसु⁹ अबहु न आयो सुहि संका आनि,
दूजो२जसवंत२जोधपुर वै दुरितंकार¹⁰ ॥

१ शीघ्र २ सम्वत् ३ वैशाख में ४ आज्ञा के वश होकर ५ राजा ६ नहीं आया ७ पहिले अटक नदी उल्लंघन नहीं की थी उसका स्मरण करके ॥८॥ ८ देह छोडी तब ९ बुलाया हुआ १० जोधपुर का *पापी पति ॥९॥

*इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) में यथावसर निन्दा और स्तुति सभी की है यहां तक कि बुन्दीवालों के परम विरोधी शीपोदिया क्षत्रियों ने जो जो कार्य स्तुति योग्य किये हैं उन उनकी पूर्ण प्रशंसा की है और स्वयं बुंदेवालों ने जो जो कार्य निन्दनीय किये हैं उनकी निन्दा भी लिख दी है. इसकारण मिथ्यावादी होने का दोष तो इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)पर कदापि लग नहीं सकता. परंतु कहीं कहीं किसी किसी के इतिहास में हेर फेर भी पायाजाता हैं; इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उनको वहवाभाटों आदि से जहां का जैसा वृत्तांत मिला है वहां वह वैसा ही लिखना पड़ा है. जिसके लिये हमने दिग्दर्शन न्याय से जहां तहां नोट कर दिये हैं. वैसे ही इस स्थान में भी लिखा जाता है कि जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह के उज्जैन से भागने के कारण उनकी राणी हाडी का व्यंग्य से पति की निन्दा करना, ओरंगजेब के जनाने को लूटने के कारण अधर्मी आदि विशेषण देना और दारासिकोह के साथ विश्वासघात करना लिखकर पापी लिखना, जोधपुर की ख्यात से सिद्ध नहीं होता. दारा के साथ विश्वासघात का किसी ख्यात में कोई लेख ही नहीं है; और उजैन से भागने के विषय में लिखा है कि युद्ध में सब परगह के मारे जाने पर रतलाम के राजा रत्नसिंह के समझाने पर उनको छत्र चमर देकर महाराजा स्वयं निकल आये और जिस पीछे ओरंगजेब का छलघात करना जानकर उसके हुरमखाने को लूट कर जोधपुर चले आये इत्यादि. इस ग्रन्थ के इस प्रकारके कथन से विरुद्ध लेख उक्त महाराजा से पहिले के और पिछले अनेक मिलते हैं जिनको पाठक लोग स्वयं विचारलेवें, इसमें तो किसीको संदेह नहीं हैं कि उक्त महाराजा वड़े प्रतापी, वीर और बलवान् थे.

दारा४०।१छलिदीनों तोहु जोधपुरलीनों सो न,
दीनों यातैं यहहु न आयो भीति अनुसार ॥ ९ ॥
कहत कितेक यह आयो पै न धीजि' अरु,
रह्यो कछु अंतर सों स्वीय सेना समुपेत ॥
कहत कितेक दारा वंचि' जबदीनों यह,
तोहू आदर्यो न तबहीतैं हो तिहिं निकेत ॥
कहत कितेक यातैं जोधपुर लैकैं याके,
अग्रज समरसुत रायसिंह कहँ देत ॥
देस पुनि लैवेकों गहाइदीनों दारा४०।१सोहु,
मंदहिं मिल्यो न हुतो तबतैं चकित चेत ॥ १० ॥
सेस जे असेस तहँ हाजरि नरेस होत,
निर्भय निदेस अवरंग४०।३तिन्ह दीनों एस ॥
हिंदु न कहावहु बहावहु भ्रमित भेद,
अबतैं जवनहोइ पावहु विभवविसेस ॥
मानिकैं मुहुम्मद१कुरान२करि कंठ नित्य,
साधहु निमाज३बदि कलमा४विहित वेस५ ॥
दुहितासमैं दे ताहि राखतहो भिन्न तुम,
सो अब करो न करो पंति हमरी प्रवेस ॥ ११ ॥
पविसो परत यह सासन सबन सीस,
भीत सबभूपन विविक्त विरच्यो विचार ॥
दीसत दुलभ जाहि मुनसब१देस२द्रव्य३सो,
तुरक होहु दोरहु लोकन लहन सार ॥
भूमिपाल भाऊ१९५।१एक१बेर मारिवोहै भाखि,

१ विश्वास नहीं करके२ अपनी सेना सहित ३ ठगकर४घर में ५नुर्क को ॥१०॥ ६ भ्रम युक्त भेद को छोडो ७ समय पर हमको पुत्री देकर फिर तुम उसको भोजनादि व्यवहार से जुदी रखते हो सो अब ऐसा नहीं करके ८ हमारी पंक्ति में प्रवेश करो ॥ ११ ॥ ९ वज्र के समान १० छानें

भाख्यो मिले सर्व यह झेलहिं सुजन भार ॥
जानैं सीसधरपैं१कृपान[1]करपैं२हैं जोलौं,
मृत्यु१बर[2] मानैं पै[3] न ठानैं जवनत्व[4] प्यार ॥ १२ ॥
एक१मन ठ्है करि समस्तन सलाह एह,
निर्भय निवेदी[5] निवहैं जों हमतैं निदेस॥
सोतो सिरधारैं लौंन आजिमैं[6] उजारैं भेट,
प्राननकी पारैं अरि मारैं प्रभुके असेस ॥
जापैं जाफरा१दिक नबाबन निवाख्यो जोहु,
बाँदी[7] अवरंग४०।३तोहु न तज्यो प्रसभ[8] वेस ॥
भूपन कहाई ऐसी कबहु भई न हम,
हाज़रिहैं मारहु१बढारहु२वा मुगलेस[9] ॥ १३ ॥
हो आमेर कुंम्म[10] जयसिंह कछुकाज तहाँ,
तनुज[11] तदीय रामसिंह२।१हो हे नरनाह ॥
भाटी तस[12]संग जैसलादिमेरवारो[13] भूप२,
सूँचि[14] हित भिन्नलौकैं ए दुवश्प्रबोधे[15] साह ॥
तिनमैं तृतीय३जसवंत३हु कहत केते,
इनसौं कही इम रहो तुम हुकम राह ॥
द्वि२गुन.पटा लै बात[16] स्वीकृत दिखावो सोहि,
सबन सिखावो चित्त आदरि कथित[17] चाह ॥ १४ ॥
जेजे दुहिता[18] न देत तिनपैं जैतन[19] जानौं,
जवन न ठ्हैहैं१तोहु देहैं दुहिता२तो जेहु॥
जो तुम१न मानौं तो तिन्ह२तो दूरजानौं यातैं,

---

१ खड्ग २ श्रेष्ठ ३ परन्तु ४ यवन पन ले ॥ १२ ॥ ५ अरज कराई ६ युद्ध में ७ उस हठी औरंगजेब ने ८ हठ ९ हे मुगलों के पति ॥ १३ ॥ १० कछवाहा ११ उसका पुत्र १२ उसके साथी १३ जैसलमेर का १४ हित जना कर १५ बादशाह ने समझाये १६ यवन होने की हमारी कही हुई वार्त्ता स्वीकार करके १७ कही हुई ॥ १४ ॥ १८ पुत्री नहीं देते हैं १९ उपाय

लेखसंग सुमति कही सो तुम करिलेहु॥
अंजनके अच्छे दिन रंचक हुते यों उन,
लोभ न लह्यो रु कह्यो आलोचिहु अप्प एहु ॥
होइ हमरें जो सुता लेहु तो हजूर हाहा,
दीनविगराइ हमैं जातितैं न जानिदेहु ॥ १५ ॥
अधिप उदैपुर१त्यों रामपुर२बुंदी३आदि,
जाति१तैं बिडारैं कुल२तैंहु टारैं दै कलंक ॥
जवन अमीर इतै रावरे जितक हम,
जंपिहैं१जवन सुता न दैहैं२सहसंक ॥
इत१उत२हैं३हि घाँतैं अंतर१अनादर दै,
वाहिर२ वडेकहि बखानिहैं कथनवंक ॥
पुत्रि१न तो जवन विवाहहिं परंतु रिक्कं,
रहिहैं हमारेकुल पुत्र२नके पैरजंक ॥ १६ ॥
हाहा यह दुष्कर हजूर पकर्‍यो प्रसभ,
अग्गहु सिकंदर१से उग्रन भई न एह ॥
छत्रिय२ न राखौं छिति कहि यौं कुठारकरि,
काटे राम हम कुल तोहु अवहै अछेह ॥
यातैं आहि उचित निदेसको निवारिवोही,
जोन यह तो ज्यों नृपभाऊ१९५।१ विरचिनेह ॥
पहिलैं कराइ ताहि स्वीकृत हमारी पंति,
पीछैं हमैं प्रेरहु लुपैं न ज्यों लपितलेह॥ १७॥
वीकानैरभूप वदले समनैं आइवन्यों,

---

१ जो तुमको श्रेष्ठ सलाह कही है उसकी लिखावट कर दो २आर्यों के ३आप ही विचारो ४ पुत्री ५ धर्म ॥ १५ ॥ ६ निकालैं ७यवन तो कहेंगे और अपनी पुत्रियें नहीं देवेंगे ८ दोनों ओर से ९टेढे कथन मे १०रीता (खाली) ११शय्या ॥१६॥ १२ कठिन १३ हठ १४ परशुराम ने १५ है १६कहा हुआ लेख ॥ १७ ॥

ताकीसुता व्याह्यो कृष्ण१९६।१ भाऊ१९५।१ जो गिन्यौं कुमार ॥
बीकानैर१ बुंदी२ असैं संबंधी उभै२ ए यातैं,
भाऊ१९५।१ जो भनैं सो कर्ण१ क्यों न निबहैं करार ॥
बुंदीसकी बहिनी बिबाही जसवंतजैसैं,
सो१ जिम कहैंतिम करैं यह२ समुझि सार ॥
सोहि जब भाखी साह भाऊ१९५।१ तब भाखी हम,
हाजरि हनहु हमैं बिरचहु ज्यौं बिचार ॥ १८ ॥
असैं अवनीसनतैं सासन लगाइ साह,
दिल्लीकी दुहाईमैं भरोसाके भट पठाइ ॥
हुकम दयो यों ढाहि देवालय हिंदुनके,
मस्जिदन मंडो जिन सामग्री सु व्यर्थजाइ ॥
जबतैं नरेस एक१दीनको हुकमजान्यौं,
बीर जबहीतैं असु आस निहचै बिहाइ ॥
दूजो२सुनि देवालय ढाहन निदेस पत्र,
बुंदा पठयो यों कृष्ण१९६।१ कुमरहिं जो जताइ ॥ १९ ॥
केसवके मंदिरपैं हल्ला जो करैं तो मेरे,
मेरद मरैं पैं दुष्ट मिच्छन छुवनदेहु ॥
जवन न ह्वैबो हमैं१ इत मरिजैबो तुम्हैं२,
उत न बचैबो प्रान निर्भय उचित एहु ॥
बित्तं बहु देकैं मेर१ मैनाँ२ सबरादि बुल्लि,
सदनकी सेना सह लासिकैं भैंचक लेहु ॥
दीठि ज्यौं परैं न भ्रष्टह्वैबो इष्टदेवनको,

१भाऊ ने जिसको कुमर मान लिया उस कृष्णसिंह को २ बादशाह ने कही सो वार्ता कही ॥१८॥ ३ राजाओं से ४ मंदिर गिराकर ५ बनाओ कि सामग्री व्यर्थ नहीं जावै ६धर्म ७ प्राणों की आशा छोडकर ८मंदिर गिराने की आज्ञा ॥ १९ ॥ ९ वीर १०धन ११भील आदि बुलाकर १२घर की सेना से १३युद्ध में नृत्य सहित १४ टक्कर

प्रान१ आगैं पाछैं लाला तिनके गिरहुगेहु२ ॥ २० ॥
कृष्णसिंह१८६१ कुमर पिताको यह पत्र पाइ,
सेना सजि बुंदी पहिलैं यों भयो सावधान ॥
देसकेहु छत्रिय१ चतुर्थ४लैंव दैनहार,
अखिल बुलाये मेर२मुखहु बडे उफान ॥
एतेमाँहि सेना पंचसहँस५००० उपेत इत,
देवालय दारिवेको आयो खल अस्तखान१ ॥
केसवके मंदिरको कलस उतार्यो यामैं,
मिच्छन चमूके देकैं पट्टनिपुरी मिलान ॥ २१ ॥
कलस उतारि ताहि गेरनको जत्नकरैं,
बेर न लगाइ तोलौं बुंदीपतिके कुमर ॥
कृष्णसिंह१९६१ अयुन अनीक लै कराल पहुँच्योहि,
बनि काल तंतकाल परजाल पर ॥
पूरे पृष्ठवाहन प्रसारी जे जवनजन,
अन्नादिक लैन आढ्यग्रामनमैं जात अँग ॥
भिल्ल१ मेर२ रैनें सब संगदै कितेक भट,
तिनपर चंक्र भेज्यो छसहँस६००० तूर्णतर ॥२२॥
बानाधर टारिकैं हजारचउ४००० वीर करि,
दूजी२ अनी आप कढ्यो सिबिरै बिनास काज ॥
पहिलें गये तिन प्रसारमैं पहुँचि पृष्ठ—
वाहन पकरि लूटे१ मारे२ घने सहलाज३ ॥

---

१ हे पुत्र २ गिरो ॥ २० ॥ ३ चौथा दंड देनेवाले ४ आदि ५ मंदिर गिराने को ६ म्लेच्छ सेना के ७मुकाम ॥२१॥ ८ समय विलंब ९दश हजार १०यमराज होकर ११ तुरन्त १२ शत्रुओं के समूह पर १३ बैल पोठियें १४ धनवान् ग्रामों से १५ शीघ्र १६ सेना १७ बहु शीघ्र ॥ २२ ॥ १८ युद्ध से नहीं भागने का चिन्ह रखनेवाले १९ डेरों का नाश करने को २० फैलाव (चालव) में या तृन काष्ठ लानेवालों के समूह में २१ पोठियों (बैलों) को

ताको चहुँ४ओर होत हाको दलके तुरक,
कढिकढि पूगे क्रुद्ध वढिबढि बंछि बाज ॥
घोर घमसान होत तिनके तुमुल बिजै,
बुंदीभट लेतभये सूरनके सिरताज ॥२३॥
सूनैं सिखिरिलपैं अचानक इतैतैं कृष्ण१९६॥१,
कुमर परयो ज्यौं सूकर९न पैं छुधित सीह ॥
गेरे काटि घेरे पारकेरे नर१ बाजि२ गज३,
बैभव अवेरे हेरे लूटि लूटि धनबीह ॥
भाज्यो अस्तखान तजि सेना जत्रकुत्र भूत,
उज्झित सुरालय गिरान अभिमान ईहैं ॥
लोहहु लग्यो न खेतलै जय कुमार खगे,
मानत मरोर जल तानत जगत जीहैं॥ २४ ॥
कोट पंचसहँस चमूको राखि दहनिके,
गैय१ हय२ सस्त्र३ बस्त्र४नैलीजिंल५ पैंटगेह६ ॥
स्वापतेय७ अन्न८ भारबाह९न समेत सब,
उपहारैं सब लूटि लायो आलै कुमर एह ॥
मेर१ सबरां२दिनकौं मधुर मनोदि दये,
ओदन१ बसन२ बित्त३ इनकौं नियत नेह ॥
आसनतैं उचक्यो सकोप सो सुनत साह,
दारुन अैली अैल ज्यौं छुवत मर्थर्द देह ॥ २५ ॥

१घोड़ों पर चढ़ कर २अवकाश रहित युद्ध ॥२३॥ ३डेरों पर ४ मृग विशेषों (नीलगायों) अथवा रोझों पर ५भूखा सिंह ६शत्रुओं के ७निर्भय ८ सेना के बिखर जाने पर मंदिर को गिराने के अभिमान की १०इच्छा को ९ छोड़ कर ११ जिव्हा में ॥ २४ ॥ १२ हाथी १३तोपें १४ डेरे १५धन १६सामग्री १७अपने घर १८ भील आदिकों को १९ बहुत २०अन्न २१बिच्छू के २२डंक का शरीर में स्पर्श होने से २३ सिंह उछलै ऐसे ॥ २५ ॥

भाऊ१ बुंदी१ भू२ पैं इक१ संग दल भेजतो सो,
निठिनिठि निहोरिबे२ नवाब बोले नृपमित्र ॥
मारयो सुनि दारा४०१ मन हारयो खानकासिम१हु,
लाग्यो पथ आनि सोहु बोल्यो पटना पवित्र ॥
बुंदीपति सम्मति कुमार जो करी तो ताहि,
व्है हम हरोल इनं१ कै गहैं२ चहि न चित्र ॥
भाऊ१९५१२ भिन्न व्है तो कोप सहसा करे न हाल,
अप्पनहु हैं ज्यों वारि अंसरी बहिहैं ॥२६॥
माँचिर है घाँघाँमैं उपद्रव निहिं अनेहँ,
चोरी१ घाँटि२ जोरी हेतु प्रचुर परैं पुकार ॥
देस१ दुर्ग२ गाम३ धाम४ सबठाँ हुँजन दाबैं,
यातैं रुक्यो तबतो नवाब मिक२ अनुसार ॥
ऐसैं एक१ दीनें निहोरे होत इत१ उत२,
देस गुड़वानैंकी पुकार आई जैंबवार ॥
वारीगढ़१ चोंकीगढ़२ द्वै३ ही दाबिराखे अब,
गौड़न उपाय इलौं खिलहु करैं अगार ॥२७॥
होत आर्द्रकारक ज्यों सव्य१ अपसव्य२ होन,
एकदीन करत हुतो यों साह व्यग्रप्रीति ॥
घाँघाँकी पुकारैं पुकार सु सुनत घोर,
पठयो लिखाइ फरमान भगवंत१९७१३ प्रति ॥
सूबापति संगलै अवंतीको वजीर खान,

भाऊ और बूंदी की१ भूमि पर २सेना ३राजा भाऊसिंह के ४मित्र ५चतुरता ६सलाह से ६ इसमें आश्चर्य नहीं है ७ भाऊसिंह कुमर से जुदा होने तो ८ अचानक ९ जल के अन्दर में १० शब्द होवे जिसप्रकार ॥ २६ ॥ ११ दिशा दिशा (ठौर ठौर) १२उस समय १३धाड़ा १४कारण से बहुत पुकार १५ दुर्जन १६ वर्ष १७ शीघ्रता से १८ बागी की भूमि को भी अपने घर करते हैं ॥ २७॥ १९ आर्द्र करानेवाला सव्य अपसव्य होता है इसप्रकार २० व्याकुल

गढ दुवर२ लेहु गंजि गौड़न दे कैदगति ॥
साँवनमैं सासनगयो सो धरि लीस ईस,
अंतमैं चढयो सो मिल्यो सूचित सो गुद्धमति ॥ २८ ॥
बानधिर सादी खटसहँस६००० स्वकीय वलि,
रक्खि रनकाज द्वै२हजार२००० बढते बहोरि॥
उज्जइनी जाइ सो वजीरखानकौं लै इम,
गौड़नकौं गंजन गये ए जवं४जोरं५ जोरि ॥
सूची भगवंत१९५।२हाँ वजीरखानतैं सखेद,
तुम१हम२भेज जय वंटन अरिन तोरि ॥
जातैं जाहि जैसी रारि रुचत रचो सो तिम,
दीजिये न दखल जुरैं जहँ मन न गोरि ॥ २९ ॥
यह सुनि दर्प९न अंतर१०मनखै घानि,
अच्छी कहि ऊँपर११तैं सूबापति होइ संग ॥
लुट्टि गुड़वान द्वै२हि वारीगढ१लागे जागे,
भाग्यवल जेसिनके जानिधि जगायो जंग ॥
सुर्जन१९०।१पोरि१घौं मचारि भटस्वीय भग-
वंत१९५।३चढि निश्रेनिन पैठो इततैं अभंग ॥
केते कांटिडारे१ केते पकरि निकारे२दई,
गढमैं दुहाई अधिराज सूचि अवरंग४०।३॥ ३० ॥
सिद्ध जय सीरी पैठि पीछैं तँहँ सूबापति,
बाहिरकी बाँह दै सराह्यो भगवंत१९५।३वीर ॥
ज्योँही जँवी जाइ गरदाइ दूजी२चोकीगढ२,
लैलयो सता१९४।१केसुत तामैं लग्यो इक१तीर ॥

१कैद करके २आश्विन मास के अंत में ॥२८॥ ३नहीं भागने का चिन्ह रखने-वाले ४ सवार ५ अपने ६ वेग ७ पल ८ हर्ष युक्त कहा ॥ २९ ॥ ९ घमंड के वचन १० क्रोध ११ ऊपर के मन से १२अवरंग को स्वामी जताकर ॥३०॥ १३ ऊपर के मन से प्रशंसा करके १४वेगवान

अमल जमाइ गुड़वानें में तुरें उभय२,
सों जय ३उदंत गुप्तदून ४कितव सीर ॥
एक१मत सबन निवेद्यो साह्यागैं भग-
वंत१९५।३।१ जय कीनों जथा अपग्रहु लीनों भीर ॥ ३१ ॥
सोहि सुनि ७मुख भगवंत१९७।३पैं पटाई साह,
खिलत१विभूखन२ह इक१८ग१।३६ है १।४खास ॥
प्रहरन५सब बालामेटको पगनादिक,
पंचकहजारी५०००मुनसब ७ओं जस प्रकास ॥
कानि फरमानमैं बढाई आई राव८कहि,
औरनमें ए धूंगत दर्जाखांन हु उदास ॥
हेत उपचारनैं दिवाइकें गयतो लच्छी,
मारयो भगवंत१९७।३पकल मेचकित२पोस१०मास ॥ ३२ ॥
संवत कृसांनु इग सत्रह१७२३प्रमित समै,
हन्यों भगवंत१९७।३ हेतै खल यों वजीरखान ॥
ताकी वह रुंडि नऊ१गूलेर२हु आई तँहँ,
याकी हुती ऊढा१आठ८जे तब जरी सुजान ॥
संग तिनके तिन्न खवासि२पातुरि३संघ मानि,
हित भसमभई जे चालीस४०परिमान ॥
पंच५ठकुरानी जरी इनमैं नऊ१पुर रु,
धप्पिजस तीन३जरी गूंगोरा२भिधानं थान ॥ ३३ ॥
भाऊ१९५।१इत पत्र कृष्ण१९६।१कुमर संकास भेज्यो,
खूब कीनी वेंतस तैं भजायो अस्तखान खल ॥
देस१काल२हाल लखि लालैं अब भेजिदेहु,
सिविरकी सामग्री जितीक लूटी सो सकल ॥

१वृत्तान्त२छली॥३१॥१हाथी२घोड़ा१मार्ग में२घाव के इलाज में ३धिप दिला कर४पौष वदि पक्ष में॥३२॥५खेद है कि६खवर७विवाहिता स्त्रियें८समूह९गुग्गेर नामक स्थान में ॥३३॥ १०पास ११हे पुत्र १२हे पुत्र १३डेरे की लूट की सामग्री

ऊतरयो कलस सो पैं न तुम चढाहु अब,
ऐहैं हम तो पुनि चढैहैं विधिसौं अचल ॥
*एक१दीनहठ न तजैं हम१मैं तो उहाँ,
तुम२हु मरै पैं देहु आपनों †छोनितल ॥३४॥
इह्लै वारबार इत एक१दीनकाजैं होत,
भाऊ१९५।१‡मुख भूप पेलिदेत जे समे प्रवीन ॥
एक१ गज आगैं ज्यौं बरंडहि के अंतराय,
केही टिकैं खड्गी२ इन यौं नै३ वरंड कीन॥
भाऊ१९५।१ पास भेज्यो दल तासमैं करनभूप,
आप जो सहाय रहो आऊँ तव मैं अधीन ॥
पच्छी लिखी भूप साह भ्रष्ट जो न फेरि६ लिखि,
मैं बोलि बुलाऊँ२ तब आवहु स्वहित लीन ॥ ३५ ॥
मानी साह पट्टनि लुट्यो सो उपहार७ मंग्यो,
मारयो तिहिं वेर मंग्यो मारक८ सुही कुमार९ ॥
भूप लिखिभेजी उपहारतो अबहि भेजि,
कुमरकहाई वंटि लेगये बिजयकार ॥
साह इहिं झंझंट विलंबहि परत सोधि,
लैनलागो पट्टनि तदीयें सब ग्राम लार ॥
भूपहु कहाई नयओटैं लै कुमर१ भेजौं,
आनि तस संग हि लुट्यो सु दूनौं२ उपहार ॥ ३६ ॥
भाखी साह बिरचि विलंब क्यौं न भेजत तो,
तब नृप वेहीमित्र ह्वै बिच नवाव तीन३ ॥

---

*एक धर्म करने का † भूमि तल ॥ ३४ ॥ ‡ भाऊ आदि १ अगड़ के अंतर से एक हाथी के आगे कई २ खड्गवाले भी टिकजाते हैं तैसे ३ नीति का बरंडा (अगड़)किया बीकानेर के राजा कर्णसिंह ने भाऊसिंह के पास४पत्र भेजा५धर्म भ्रष्ट ६ फिर ॥ ३५ ॥ ७ सामान ८मारनेवाले कुमर कृष्णसिंह को मांगा ९विजय करनेवाले १० झोड़ (झगड़े) में११उसके ग्रामों सहित १२नीति की आड़ लेकर १३ सामग्री ॥ ३६ ॥

लक्खदुव२०००० मुद्रा दै बाजिगहि पिहिते लोभ,
बिन्नति कराई इन अपरिन४ पैं यौं मवीन ॥
सुत अपरार्या गहि सौंपन भनत भूप,
दूनौ२ उपहार देन आगतं३ त्रपा२ सौं दीन ॥
ईतर अमात्य जोजों मतलब काहु यातें,
कोलों बहिकावहि हजूरकों सो बलहीन ॥ ३७ ॥
एक१ दीनको हठ हजूर न तजो तो अब,
जोधपुर हीन अतिखीन राजाजसवंत ॥
भाऊ१९।।१ सु भाम तातें याहि बिच दैकैं ताहि,
भीतरहि बुलाइ साँकरमैं लै भयभमंत ॥
देहु यहि लोभ जानिवैमैं सो करैं गदित,
औरहु किते तो करैं नाँकरैं ते पावैं अंत॥
पै इहि प्रसभ हाहा उलटपलट व्है हैं,
हिंदुनके देस ए असेस कहि हंतहंत ॥ ३८ ॥
सरिबेलगैं जे तिनकों तो टारि काहु मिस,
लोभ१ भय२ सौं जे व्है तिन्हैं यौं निजदीनै लेहु ॥
हुकम न मोघ होइ जगहु हसै न जैसैं,
असैं सुनि मानी साह नीठि नीठि मानी एहु ॥
भाखी तुम मोहि भाखी सोहि भाखो भाऊ१९७।।१सन,
देहु अपराधी१जसवंतगहि बुल्लाइ देहु ॥
मिलि सु महीपसौं नवाबन निवेदी गूढ,
यह जो करो तो रहैं पट्टनि निजहि गेहु ॥ ३९ ॥
अधिप कस्यो हैं हम पट्टप अधीन पैंट.

१ छानें २ अपराध की ३ लज्जा से दीन होकर ४ अन्य ॥ ३७ ॥ ५ बहिनोई ६ कहा हुआ ७ नाश ८ हठ से ९ दुक्ल (हाहाकार) ॥३८॥ १० अपने धर्म में ११ कुमर कृष्णसिंह को और जोधपुर के राजा जसवंतसिंह को ॥ ३९ ॥ १२ पाट (तखत) के आधीन

हितही हमारे सतच्यारि४००मरे धोलपुर ॥
पट्टहितही मैं सत्तसय७०० न मह्नार पाये,
ऐसैं अवरंग४०१३ अब पट्टप प्रमानि उर ॥
मैं यों प्रभुजानि उपदा१हु लै अधिक मिल्यो,
धोरी गज च्यारि४त्यों विसेस दये भेट धुर ॥
रीझकी ठौं अर्द्ध३ प्रतिदेय५मिल्यो ओरनसौं,
सोहु सही तोहू पुनि रीझ सुनि ये प्रचुर६ ॥ ४० ॥
मुनसब१मोसौं सत्तसहँस७०००छमासौं छीनि,
बारां१मऊ२प्रबर छमा३हू छीनि अर्द्ध३ इम ॥
अर्द्ध३ अवनी सौं मोहि अढ़ाईहजारि२५००अखिल,
जेठो१करयो अनुज२समान मंतु होइ जिम ॥
ताहि पुनि द्वि२गुन बढायो जैसी रीझ तकि,
तैसी ठाँ सुजा४०११के रन सोपैं प्रतिकूल तिम ॥
नाक काटिबो१जो तुम सबंल न मानों तोहू,
नाक काटिबेमैं२तो कुमी न राखी साह किम ॥ ४१ ॥
पट्टनि हू लेहु तजि एक१दीनको मलम१,
उज्झि१डावरे२कौं तिम दूरनौं लेहु उपहार॥
भृत्यहैं न मेरे जसवंत१रु करन२भूप,
तोहू अभैं देहैं तो चलै हैं कछु जन्त तार ॥
हम पहिलैंही मरिबेकौं हुसियारहैं पै,
कपटकरो तो लगैं पातक हमैं हु हार ॥
भाखैं जग भाऊ१९५१की भलाई विसवास दे,

१मालिक जानकर २नजराना ३ मुख्य ४ जगह ५ उलटा (पीछा) दान ६बहुत ॥ ४० ॥ ७ क्षमा युक्त से; अथवा सम से ८ भूमि ९ अपराध होवे इसप्रकार १०नासिका(मनसब कम होजाने से बुन्दीवालों ने नाक काटना माना)११स्वर्ग की प्राप्ति मिटाने में तो किसी प्रकार कुमी नहीं रक्खी ॥ ४१ ॥ १२मेरे लड़ंं को छोडकर १३सामान १४ सेवक

बुलाइकैं नराय१कै करायेर२कैद अघकार ॥ ४२ ॥
होत ऐसैं झंझट वसंत१दूजो२पूरो होत,
ग्रीखम१के लगत अराजक पुरी गूगोर ॥
माताभगवंत१९५।३की बुलाइ कृष्ण१९६।१कुमरहिं,
निरलोभी छानैं धरयो दूरनैं राज्य सुत ठोर ॥
पहिलैं बुलायो मधु१९५। नाम राजसिंह१९५।४पुत्र,
स्वीयैन ह्वाँ सूची जिन मेटो पतिवंस जोर ॥
वलि जिहिं भेजि गूढ कृष्ण१९६।१सु बुलाइ ताहि,
अंकले नरूकी दीनों पंचकहजारी५०००तोर ॥ ४३ ॥
तैसी सुनि भूप लिखिभेजी अब बुंदी ताहि,
पैठन न देहु गयो अप्पनतैं सो कुपूत ॥
पट्टनिकी लूट सब दूरनी पहुँचाइ कह्यो,
मो वस न कृष्ण१९६।१है बुलावहु दै वर्यांदूत ॥
जोहू साह पट्टनि उतारिवे लग्यो सो तँहँ,
दम्म दुवलक्ख२०००००मानं दै पुनि सचिव सूत॥
अयशहि नवावन वजीर४सह भाखी तहि,
भाऊ१९५।१साध्यो हुकम तऊ न करिये अभूत ॥ ४४ ॥
दूरनों उपहार सब लूटको हजूरकों दै,
कहिगो पिहितैं कृष्ण१९६।१वलि सु दयो वताइ ॥
मरजी तऊ तो कछु लेहु दंम मुद्रा जातैं,
सासनं वनैं१रु जोधभूप न विगारिजाइ ॥
पंचलाख५०००००मुद्रा तव सौंहस सो भूपपर,

१पार्षा ने ॥ ४२ ॥ वसन्त ऋतु का २दूसरा महीना वैशाख मास ३ राजा विना ४ अपने लोगों ने कहा ५ वंश के पति का पक्ष मत मेटो ६ गोद ॥ ४३ ॥ ७पत्र ८ प्रमाण ९ पहिले नहीं हुआ सो मत करो ॥ ४४ ॥ १० छिप कर ११ दंड के रुपये १२ हुक्म १३ वीर राजा है सो विगड़ नहीं जावै १४हठ से

सोहु भरदीनौं रंवांत टेक उतकी टराइ ॥
सो पै टेक साह न तजी रु यौं प्रबोध्यो सोहु,
मीन पैं पललमान लोभको लपेटा लाइ ॥ ४५ ॥
पत्तन गूगोर इत नत्ती१ओ पितामही२के,
राज्य प्रभुतामैं नैंक न बनी विहित४ रीति ॥
भिदिभिदि लोक इत त्यौं उत दुरपाले भये,
ऐसी चढी सो न फेरि समिति६ सखी अनीति ॥
तबही नरूकी तीरथनको बहाँनाँ ताकि,
कोपि चली निकसि भुलाइ यौं करन भीति ॥
अपजस घाँघाँ उड्यो पोते१को पितामही२को,
बात सु सुनतगई साहकी कृपा हु वीति ॥ ४६ ॥
समुझी नरूकी नींती पट्टनि अहित साध्य,
याही अपराध साह कृष्णा१९५।१सौं न अनुकूलें ॥
तातैं मो पुकार सुनि दैहैं सो विडारि ताहि,
मैं त्यौं कृपापात्र भगवंत१९५।३मैंसू हितमूल ॥
च्यारि४धाम को करि बहाँनाँ सो अनखि चली,
संग कुमरानी बडी१भेजी कृष्णा१९६।१सहि सूल ॥
सचिव१सिपाह२ संग दीनैं दै कथित द्रव्य,
हारि यौं प्रबोधे क्यौंहु मेटहु हृदय हूल ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

केसरदेवी१९६।१नाम करि, जेठी१कुमरानी जु ॥

---

१ मन का हठ छुडाकर २ समझाये ३ मछली पर मांस के समान ॥ ४५ ॥ ४ पोता और दादी ५ उचित ६ अनीति रूपी सखी की सभा में; अथवा सभा में अनीति रूपी सखी ऐसी चढी ७ इसप्रकार भूलकर भय करने को चली ८ ठौर ठौर पोता और ९ दादी का अपयश चढा ॥ ४६ ॥ १० पोते ने पाटण में ११ प्रसन्न नहीं है १२ उसको निकाल देवैगा १३ भगवन्तसिंह की माता होने के कारण १४ कहने के माफिक द्रव्य देकर १५ किसी प्रकार ॥ ४७ ॥

*दइत नरूकी संग दिय, जतन निपुन जानी जु ॥ ४८ ॥
साह नाम पंचाय१न जु, सचिव१रु कति सामंत२ ॥
उचित पठाये संग इम, उचित निहोरन अंत ॥ ४९ ॥
तीरथ न्हान१न चित्त तस, प्रत्युत करन पुकारि२ ॥
गया अवधि सो तब गई, बहुरि पुरी इहिं बारि ॥ ५० ॥
कुमरानी१सह कृष्ण१९५।१के, जनवैभव है जेहु ॥
मथुरा आतहि मुग्धमति, गहि हठ पठये गेहु ॥ ५१ ॥
जाइ अप्प अवरंग४०।३जँहँ, किय तिय कुमति पुकार॥
मातासन जातहि मिल्यो, भाऊ१९५।२धरि कुलभार ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी भूपभावसिंहचरित्रे महाराणाराजसिंहसूनुसरदारसिंहस्य चाहुमान भगवन्तसिंहसुतोपयमन १, आंग्लमोहमयीपत्तनप्रापण २, यवनेन्द्र शाहजहांकारामरण ३, आर्यराजयवनीकरणौरंगजेबप्रसभार्यराजा स्वीकरण ४, आर्यमन्दिरपातनतत्सामग्रीयवनमस्जिदनिर्माणौरंग जेवनिदेशन ५, पट्टनिमन्दिरपातनसमयकुमारकृष्णसिंहयवनेन्द्रसै न्यविजयन ६, गुडवानावारीगढविजयानन्तरसविपक्षतौषधिमऊरा जभगवन्तसिंहतनुत्पजन ७, स्वसूनुकृष्णसिंहोपरि भवगन्तसिंहजा यायाः प्रक्रोशार्थदेल्लीदङ्गगमनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

---

*प्यारी;अथवा पति ने साथ दी।४८।१उमराव।४९।२पकाड़ा।५०।३मूर्ख।५१।५२।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में महाराणा राजसिंह के पुत्र सरदारसिंह का चहुवाण भगवंतसिंह की पुत्री से विवाह होना १ बंबई का अंगरेजों के हाथ लगना२ बादशाह शाहजिहांका कैद में मरना ३ औरंगजेब का हिन्दू राजाओं को यवन करने का हठ करना और राजाओं का अस्वीकार करना ४ हिन्दुओं के मंदिर गिरा कर उसी सामग्री से मस्जिद बनवाने का औरंगजेब का हुक्म ५ पाटण का मंदिर गिराते समय बादशाही सेना से बुन्दी के कुमर कृष्णसिंह का विजय ६ गुड़वाना और बारीगढ विजय किये पीछे घाव के इलाज में जहर होकर मऊ के राजा भगवंतसिंह चहुवाण का देहांत होना ७ भगवंत

आदितः [illegible] द्वशततमः ॥ २३३ ॥
प्रायो व्रजदेशीयाप्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ वैतालीयम् ॥

इत भाऊ१९५।१भूप उच्चरयो, कठिन अनुग्रह पुत्रपैं करयो ॥
विंअया जो कृष्ण१९५।१आदरयो,पाप सु पुत्रकपंतितैं परयो॥१॥
अरजा मम चित्त आनिकैं, सामि अरजी हु न देहु साहको॥
जननी सुत मोहि जानिकैं, पुरबुंदी अबहू पधारिये ॥ २
बंदे सिर हीं विराजिये, जोलौं जीवित दासके जथा ॥
सबपे स्व निदेस साजिये, अनुचित बिन्नति दे न उज्झिकै॥३॥
प्रत्युत खिजि नारवी प्रसू, अंगज बेननसोहु आदरयो ॥
बिचकी जन अर्थ दे बसू, पठई बिन्नति स्वीय साहपैं ॥ ४ ॥
हजरत भगवंत१९५।३ माइ हौं, अंकस्थ न जिहिं कृष्ण१९६।
१ आदरैं ॥
प्रभु सासन मान पाइहौं, भय तिहिं दे तँहँ मोहि भेजिये ॥५॥
सो सुनतहि कुप्पि साह हू, अक्खिय जाहु निकाय अप्पनैं ॥
गिनि ममकृत बहु गुनाह हू,लोमिनि अंक कुपुत्र क्यौंलयो॥६॥
तिहिं इम जवनेस तर्जिकैं, बिन्नातिसौं प्रतिकूल व्हाँ बन्यौं ॥
बलि यह वह मान बर्जिकैं,गुग्गेर१ हि तजिकैं मऊ२गई ॥७॥
राजसवर्तिका ॥
बुंदी करे नव९ कृष्ण१९६।१ विवाह चही तिहिं त्यौंहि खवासि.

१सिंह की स्त्री का पुत्र कृष्णसिंह पर दिल्ली पुकारू जाने का १ छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि से २३३ मयूख हुए ॥
१ वीं (आज्ञा) नहीं माननै का कार्य कृष्णसिंह ने अंगीकार किया तो; अथवा कृष्णसिंह ने निर्लज्जता अंगीकार की तो २ पापी ॥ १ ॥ ३ शान्ति करके ॥२॥ ४ सेवक के मस्तक पर ही विराजो ५ अनुचित अरजी देना छोड़कर ॥ ३ ॥ ६ उलटा ७ माता नरूकी ८ पुत्र का वचन ९ धन ॥ ४ ॥ १०गोद रक्खा हुआ कृष्णसिंह ॥ ५ ॥ ११ घर १२ कियेहुए १३ गोद ॥ ६ ॥ १४धमकाकर १५मान

चउद्दह१४ ॥

तत्थहि ताके भये सुत तीन३ *सुता हुव२ तेहु सुनौं क्रमसंग्रह ॥
कर्णाकी नंदिनी राजकुमारि१९६।३ तृतीय३ वधू त्रय३ †तोकजनैं तह ॥
सो अनिरुद्ध१९७।१ रु कीरतिसिंह१९७।२ सुत द्वय२ बख्तकुमारि १९७।१ सुता१ सह ॥ ८ ॥
जादवी ही तस छट्ठी६‡जनी तस इक्क१सुता हुव नाम सुखाँ१९७।१ तस ॥
इक्क खवासिके सूनु भो इक्क१ पै सिवराम१ ए पंच५ प्रजा अस ॥
सो त्रयोविंसति२३ वर्ष वया अब जाइ वन्यौं भगवंत१९५।३ को ओरस ॥
यानैं सबै तिय झुल्ली उहाँ जहँ पंचगई न उबारि त्रैपा जस ॥९॥
सो भयो कृष्ण१९६।१नृपार्जुन को सुत ताके न व्याह कहे सब ताहि सौं ॥
पै जे वधू न गई तँहँ पंच५ सुनौं तिनको क्रमतो सुखमांहिसौं ॥
तीजी३वधू जो प्रजा त्रिक३ की जननी न गई पहिलैं हठि जाहिसौं॥
औरहु च्यारि४गईन उहाँ पतिके अबुंधत्वपैं छिज्जि लपाहिसौं॥१०॥
गोड़ी किसोरकुमारि१९५।५ गिनौं पुनि पंचमी५ जादवी छट्ठी६ जसोवति१९५।६ ॥
सप्तमी७ झल्ली जो गंगा१९६।७सनाम रु अष्टमी कावंधी पूराँ १९६।८ सुंधी अति ॥
बुंदीपुरी इन पंच५ वधून तजी न चहे न पती सुख१ संतति ॥
पंच५ हि ते इत राखो प्रसन्न मनोमँत साधिकैं भाऊ महामति॥११॥

रहित होकर ॥ ७ ॥ * पुत्रियें † बालक ॥ ८ ॥ ‡ माता १ सन्तान २यश वाला ३ लज्जा ॥ ९ ॥ ४ राजा के छोटे भाई भगवंतसिंह का पुत्र ५ स्त्रियें ६ परम शोभा से ७ मूर्खपन पर ८ लज्जा से ॥ १० ॥ ९ राठोड़ी १० श्रेष्ठ बुद्धि वाली ११ मनवांछित ॥ ११ ॥

दै अरजी निज दर्प दहाइ सुरी जब नारवी नैर मऊ मग ॥
कृष्ण१९६।१ पैं ²है तब मिच्छप क्रुद्ध उतारि मऊ हु लई लघुता
लग ॥
नारवी मान तहाँतैं नसाइ गुगोरगई ³प्रतिकूलसे दै पग ॥
तानैं स्वमान गुमायो तऊ सुतकृष्ण १९६।१ घट्यो सु अहो भई
उँच्चग॥ १२ ॥
लै मऊ१ बाराँ२ त्यों संगही लै अवरंग४०।३ नैं कृष्ण १९६।१
घटाइदयो इम ॥
राखी गुगोर१ औ चाक्सुरनी२ खाताखेरी३ अईहि दीय पटातिम ॥
राख्यो हजारउभैं२००० ⁴उपटंक जु पै त्रीहजारी ३००० को छीनि
लयो जिम ॥
तातैं कुभावन स्वस्त रुकौं अवरंग४०।३ विचार्यो सुलोभ दै
अग्रिम ॥ १३ ॥
भाऊ१९५।१ सौं साह सो ऐसैं भनी वह कृष्ण१९६।१ कुपुत्र मर्यो
अपराधन ॥
⁵ढंग वे बाराँ१ मऊ२ अब ⁶इ२ हि लहो तुमरेतुम है हमैं लोभ न ॥
जो इक१ दीनमैं होहु जई तो होहु वजीर हमारे सनातन ॥
सुर्जन १९०।१ पायो जितो लाहि सर्व करो जस ख्यात भरो घर
कंचन ॥ १४ ॥
जिति सुजा४०।२ को लयो जस एसैंही सासन एहहु मानिबो
सारहै ॥
जो न रुचैं यह तो जसवंत१ रु कर्ण२बुलावहु सु पै उपकारहै ॥
भूप भन्यौं नहिं ⁷पूर्व निदेस बनैं तस क्यौं हठ बारहिबार है ॥

१नरूकी २बादशाह ३ऊंची गति वाली अर्थात् कृष्णसिंह के घटने से आप अपने को ऊंची समझने लगी सो आश्चर्य है ॥१२॥ ४खिताब ॥१३॥ ५प्राचीन रीति (सदैव)के अनुसार ६प्रसिद्ध॥१४॥ ७प्रथम[एक दीन होने] की आज्ञा नहीं बनती

सासन दूजोर२ करो जब सोइ रच्यों तब जो छलको न बिचारहै१५
मामेक मान घटायो घनों इस फेरि घटाइबेहीको उपाय है ॥
आपतैं छन्नसदीय उदंत अहो न जितोक रह्यो व्यय१आयरहै॥
ज्यों उपटंक अढाईहजार२५०० को रंच रह्यो समुझ्यो सु ॥
सहायहै ॥

तोहू बनी सो करी तब त्यों घरआन्यों बिजै खजुवा लहि घाय है१६
तोहू हजूरकी रीझ बढै तिम गौरव मेरो लिश्पाद गुमाइकैं ॥
भ्राता मदीय लई सुहि भूमि लहौं अब मैंहु जो लोभहि लाइकैं१ ॥
जांमिप१ व्याहोर२ बुलाइ उमैर२ जिस पेचके संकटमांहिं पराइकैं
हडुन६१ को सुख स्यामँ व्है जो किम तुव व्है सो न कही
बहिकाइकैं ॥१७॥

आपकों न कहानहै ओरकै देखतहो मम चित्त जो निर्डर ॥
साह कह्यो तुम स्वामिकों सौंह दिवावत न्याय सो कैसे दिगंतर ॥
सेहु इहां नृप द्वै२ ही बुलाइ जिन्हैं हम भेजिहैं आपिपें जमी१ जर
लोमतें वे हम दीनलहै तो नहीं सु मही तव कृत्य गिनैं नर ।१८।
चाकरी सोपै सिरेमढती तुमरी हम मानिहैं सीस जहांलिक ॥
यों करजोरि कहाइ अधीस व्है हीन बिसाससों नाँ करियो हक॥
कोउ करो प्रतिभू जो स्वयं कढि दाढै बिलाम जो संसय बाधक॥
जो न रुचैं यह तोपैं हजूरके आश्रितमैं रहिहैं बनि रोचक ॥१९॥
जोरतैं यों नृपपैं हठजाल दिखावत साहकों अब्द गये दुवर ॥
अंतपैं मास्रो उमैर अंबनीसन हडु६१ बुलाइ कहाइ कृतौ हुव ॥
तासों चहे नृप सौंहैं तहाँ धरि कोप हठी प्रतिकूलता तो ध्रुव ॥
भाख्यो अहो खल किंकर भाखि सुबोलसनेहसेंगाम्बिछौधोसुत॥२०॥

---

१ मेरा २मेरा वृत्तान्त ३ खरच ४ आमद ॥१६॥५नीन अंश लिया कर पर अंश बाकी रक्खा ६ बहिनोई ७ काला मुख ॥१७॥८निर्भय ९भूमि और धन कर. पृथ्वी पर वह १०कार्य तुमारा नहीं गिना जावेगा ॥१८॥ ११जामिन [जमानत देनेवाला] १९ ॥ १२ चतुर १३ सौंगन १४बिकलता १५राजा १६संग में ॥२०॥

भाऊ१९५।१ तहाँहु चह्यो प्रतिभू[1] कहि यों आप बली बदलो तो कहाकरैं ॥
हायन है[2] इम झंझठ होत महीप कह्यो हनिये वैं इहाँ मरैं ॥
जोरपैं यातैं बढे जवनेस भन्यों तुमपैं दम[3] ओर कहा भरैं ॥
हिंदुन इष्ट[4] जो कृत्य[5] इहाँ हम होन न दैहैं मिटाइ हरैं ॥ २१ ॥
संबत बेद बिलोचन सत्रह१७२४ उज्वल१ भद्दव६ के दसमी१० अह[6] ॥
साँहस साहि कही इम साह अहो अब हिंदु तजो यह आग्रह[7] ॥
कल्हि कछू मह[8] जो करिहो मचिजै हैं ततो महमैं मृतिको मह[9]॥
ज्यों जिजिया१दिक भेट भरो इक१दीनन होहु रहो कुल उद्वह[10]।२२।
बज्रसो भाऊ१९५।१ यहै सुनि बैन बिचारि इहाँ अब है मरिबो बर
कूरम१ आदि महीपनकों समुझाइ कह्यो गिनों सोहि[11]पुरस्सर[12] ॥
संग न जो पै चलो तुम सर्व तथापि परिग्रह[13] संगदै सत्वर[14] ॥
कल्हिको उच्छव मेटकरैं न निरंकुस जुज्झि परैं नरपैं नर ॥ २३ ॥
ओर नरेस न भाखी यहै छितिपैं तुमरी नहिं वीरता छन्न हैं ॥
रावरेसंग पठाइहैं रीझि पैदाति[15] कितेक जे जाति प्रपन्न[16]हैं ॥
माच्यो निसा सबठाँ यह मंत्र[17]पै राजा न भो खिलकोहु प्रसन्नहैं ॥
इक्खिलई अबतो सबनैं इहाँ अज्ज[18] असेसहिं मिच्छन अन्न[19]हैं ।२४।
प्रात भयो इहिं मंत्र प्रपंचमैं सुद्धिपैं[20] लागिरहे चर[21] साहके ॥
नित्य निवेरि रु भाऊ१९५।१नरेस सज्यो मरिबोहिततंत्रें[22] सलाहके॥
कुंकुमीबस्त्र[23] पितां[24]जिम स्वीकारि राजसचिन्ह[25] धेर पिंबराहके[26] ॥

१ जामिन २ वर्ष तक ३ अब ४ दंड. हिंदुओं के इष्ट का ५ कार्य जो यहां होता है सो नहीं होनेदेंगे ॥ २१ ॥ ६ दिन ७ हठ करके ८ हठ ९ उन उत्सवों १० मृत्यु का उत्सव ११ कुल के नायक [कुल का उद्धार करके] ॥२२॥ १२ अग्रणी १३ परिग्रह १४ शीघ्र ॥ २३ ॥ १५ पैदल १६ जाति के शरण है १७सलाह १८ सब आर्य १९ म्लेच्छों का भक्ष्य है ॥ २४ ॥ २० खबर पर २१ हलकारे २२ सलाह के आधीन होकर २३केसर के वस्त्र २४शत्रुशाल ने किये थे जिस प्रकार स्वीकार करके २५ राजापन के अथवा; रजोगुण के २६ स्वर्ग के मार्ग के

सो सुनि चोथे४ वजीरसमेत नवाब सखा सकुचे नरनाहके ॥२५॥
स्वामी रुठाइ सहाय नदेसकैं१ राज्यको थंभ गिरैं इत संभेरी ॥
तोहू तिरोहित दूत तती करि प्रस्थित भूपपैं ख्याति यहै करी ॥
क्यों मरिये अनिमित्त१ अकाल२हिंदोइये आज पटालयही हरी॥
एककी मानैंनही अवरंग४०।३धरि मन सोलिपि वज्रपैं ज्यौंधरी२६
भूपहु गूढ कहाई न भो तुमसों यह पाप पै साह प्रतीपैंतो ॥
जो मरिवेमैं प्रसन्न व्हो जोधैं मुरैं न सो छुद्रहु दूर महीप२ तो ॥
चूकिवो हो तो हमैं कुलचाल जो टारते क्यौं इक १ दीनकी टीपैं तो ॥
मुक्तिसे जाविच मोती मिलैं सो तजैं किम धर्ममयी सुभ सीप तो ॥ २७ ॥
साइस्ते १ जाफर २ कासिम ३ सौं इम गूढ कहाइ वजीर ४ उपेतैंहि ॥
जाम उभै२ दिनपैं कछु जात करयो इक ठौं बल श्रौत यहै कहि॥
श्रीप्रभुवारे विमानके संग चलो मम पीठि जिते मरिबो चहि ॥
सेसनको हितसौं जब सीख गिनौं जुहि श्रेय करो सु अभै गहि२८
पंचन भाखी हमैं प्रभुपास अहो न भयो कछु दुर्लभ आजलौं ॥
खग्गन यातैं घनैं रिपु खाइ कहो वै न क्यौं पहुँचैं प्रभुकाजलौं ॥
भेजि भरोसाके आधे इहां सब विष्णुविमानन आनिसमाजलौं॥
वीच तिन्हैं करि आप बली जमुनापैं चल्यो धरि धर्मजिहाजलौं२९
बुंदीचंमू सुनि आते विमान कहयो अवरंग४०।३न ठौंठौं कटाकरो

१ स्वामी को क्रुद्ध करके २ बहुवाणा ३ छिपीहुई ४ पंक्ति ५ भेजकर ६ विना कारण ७विना समय ८ जलजात्रा के उत्सव में विष्णु को ९डेरों में ही झुलाओ १० हीरे के लेख के समान ॥ २६ ॥ ११ गुप्त १२यह पाप तुम से नहीं हुआ है परंतु बादशाह ही १३ विरुद्ध १४वीर होता है सो छोटा भी मरने से नहीं डरता सो राजा का डरना तो दूर रहा १५ उच्चस्वर की आवाज ॥ २७ ॥ १६ सहित १७ सेना का समूह ॥२८॥१८अब ॥२९॥१९बुन्दी की सेना २०ठाम ठाम

ए जब पीछे मुरैं करि इष्ट सबै फल तोपन दै तहँ संहेरो॥
आप लैजाइ निमान इतैं विधि क्रीड़ा कराइ कह्यो बैल बिस्तरो॥
कालिंदी कूलपैं अज्ज कहाइ महाभट अज्ज महापदकों मरो३०
यों कहिकैं मुरिबेके अनेहतो पूगी मलैकरी तोपनकी तँति ॥
अध्व महीपको रोकि अनीक निदेस चह्यो हनिवे सहविन्नति॥
भाऊ १९५१ कह्यो भट भूपन भेजे जे स्वस्व विमानके अग्र लै संगति ॥
हों१सहैइष्ट२हों सर्व हरोल करैं जस यों जु मरैं न सैमा कति३१
वरिन यों अनुकूल बनाइ व्है भाऊ १९५१ हरोल कह्यो वैलनाइहिँ ॥
क्यों मग नाहक रोकिरहे सुकरैत्वमैं कष्ट दै मात्र सिपाहहिँ ॥
क्योंहै विलंब निदेस करो इतपै मरिवो हम सर्व उमाहहिँ ॥
साहको सासनआयो तहाँ यह दाहहु क्यों न तुमहैं न तो दाँहहिँ३२
लै यह१सासन खानदलेल द्वितीय२ चल्यो व्हाँ निदेस सुही दयो॥
आइ चतुष्टय४ सो इहिँ अंतर पाय परयो रु भली भनतोभयो ॥
वीतिहैं हिंदु न स्वामी बिसासैतो आसको देखहुआसहि उन्नयो॥
नीतिके आश्रय देहुनिदेस लचे जिम हिंदु तजैं हठ जोलयो॥३३॥
चाहैं मरे जे स्वतंत्र चलैं तिन्ह मारन टेक कहाँलग तानिये ॥

---

१ नाश करो २ सेना अथवा पराक्रम फैलाओ ३ जमुना के किनारे ४आर्य कहाकर ५ आज ॥ ३० ॥ ६ पीछे फिरने के समय ७ पंक्ति. राजा का ८ मार्ग रोककर ९ सेना ने मारने का हुक्म चाहा १० राजाओं ने भेजे जो वीर ११ अपने अपने निशानों को आगे लेकर १२ साथ रहो १३ इष्ट देव के साथ१४ कितने वर्ष नहीं मरेंगे अर्थात् कभी तो मरना होवेहीगा ॥ ३१ ॥ १५ सेनापति से कहा १६ श्रेष्ठ कार्य में १७नहीं तो तुमको जलावेंगे ॥ ३२ ॥१८तीन तो ऊपर कहेहुए और चौथा दलेलखां यह चारों का समुदाय बादशाह के पैरों पड़ा १९हिन्दुओं पर स्वामी का विश्वास जाता रहेगा ॥ ३३ ॥

जानिये यों१ *प्रपितामह१जोर मुरे इत२रानप्रताप २ से मानिये॥
तुटैं पै जोरतैं नाँहि नमैं वपुके१बलतैं बल बुद्धि२बखानिये ॥
ज्यौं प्रपितामह जे जिजिया३दि तजे तिनकों इनपैं पुनि आनिये३४
ए ४जिजिया१दि रुकें इकबीस२१ही आप इहाँ बहुभार बिथारिये
और मिलाय घनैं इनमैं देस दुस्सहको डर बज्रसो डारिये ॥
कोलगं देहैं बिचार कितेक मुरैं इतकों तिन्ह दारिद मारिये ॥
ऐसी बिधा करि अल्पइन्हैं बलि जोरके तोर सुसाध्य बिचारिये३५
५ब्याज कछू करि दंड बुलाइकैं सक्तिलों दंडकें देस सम्हारहु ॥
त्यौं जिजिया१मुख दंड कितेहि बनैं न इते बरजोर बिथारहु ॥
सो सुनि लै जँननीमिसं साह बुलाइ अनीक कहाइ बिचारहु ॥
आज मो माता बचाये इहाँ पर यौं कबलौं गहिहो भयपारहु॥३६॥
यौं जब सेना मुरी अवरंग ४०।३ की सम्मर्द हाँ सबके उर संचरे
माइको ७मिस भाऊ १९५।१ भन्यौं कित माइ १ हुती जब कैद पिता२कर ॥
पै भलो क्यौं रह्यो कुल पंथ यौं बधि बिमान खड़े गन आ ढेर ॥
स्वीय बिमान वहाँ चापि सबे क्रमतैं खिल ठाँठों स्वयं पहुँचे करे३७
बज्र१ टर्‌यो यह बुंदियतैं सहिबो यह दंट टर्‌यो तिम सेसतें ॥
लोभके पत्र तथापि लिखाइकैं लोभिन धौंधौं दये हित लेसतें ॥
अर्ज्ज१कुलीन हजारन आइकैं मिच्छ भये टरि सेसै१ उमेसतें ॥
इक्क१ वहाँ चालुक१हाडा२हु इक्क१यौं दोरे द्वै दुष्ट त्यौं बुंदिय देसतें३८

---

*अकबर के बल से भी राणा प्रतापसिंह झुक बैठा था।३४।।हिंदुओं के तीर्थों पर यवन बादशाह की लागत विशेष जो थीं उन इक्कीस लागतों को अकबर ने छोड़ दी थीं। दंड२कहां तक॥३५॥।मिस४सेना को बुलाकर दंड के रुपये६आदि ५जबरदस्ती फैलाओ ७माता का मिस करके अर्थात् माता के कहने से सेना पीछे बुलाई गई है यह कहकर ॥३६॥ ८ दर्प ॥ ३७ ॥ ९ ठौर ठौर १० आंधे ११ लक्ष्मी के पति विष्णु और शिव की भक्ति से टलकर ॥ ३८ ॥

हो जयसिंह१जु चालुक हो अरु मोहनउत्तर२हो हद्द६१सो हत्थिय[1]॥
राज्यकी हौंस[2] वढाइ ए रंक सवेग हजूर गये दुव२सत्थिय[3] ॥
लैलै पटा इक१०००००इक्क१हि लाख१००००० को ओ उपटंक[4]
हजारी१०० को अत्थिय[5] ॥
दभ्र[6] हि लोभपैं यों अति दुष्ट किते नव्है मिच्छ स्वगौरव कत्थिय[7]३९
यों जिन सत्रह १७२४ संवत अंतर एकादसी ११ सित[8]१ पद्मा[9] ११
उछाहको ॥
घौंघौं[10] छयो बरखा जल घौंट[11] नवीन यहै जस बुंदिय नाहको ॥
मिच्छ हु केक भये टरि मूढ सह्यो१निबह्यो२सु निदेस[12] सलाहको॥
पै अब दुस्सह दंड परयो सु घटानलग्यो सब भूपन साह को।४०।
मुद्रा[13] सवाय४ तैं बीस२०प्रमान समान धरयो जिजिया१सवके सिर
इक्क१सँमा[14] प्रति दंड जो अज्ज न जाय चंडालके द्वार भरैं चिरैं[15] ॥
ऐसे अकव्वर३७।१छोरे इकीस२१इहाँ इनमैं बहु ओर मिले ईर[16]॥
कष्ट भो अँज्ज[17] कहाइवो व्है तिथि[18] धर्मकी भाऊ१९५।१ करी
सिरपैं थिर॥ ४१ ॥
ऐसी सुनें जल१अन्न२हु पैं कँर[19] अंचकँ[20] लोभ वढायो भयंकर ॥
नीठि बचाये जे देवनिकेतँ[21] परयो दँड[22] दुस्सह ज्यों तिनँ[23]ऊपर ॥
को चँऊ[24]४धाम रु तित्थ[25] करैं बिनु भूपन सूँपन[26] पाइसकैं बर ॥

---

१ हाथी सिंह २ चाह ३ साथी ४ खिताब ५ अर्थ (धन) वाला ६ अल्प लोभ से यवन होकर ७ अपना बड़प्पन कहा ॥ ३९ ॥ ८ शुक्ल पक्ष की ९ भाद्रपद की एकादशी का नाम पद्मा है १० ठाम ठाम ११वर्षा ऋतु के जल की भांति १२ आज्ञा ॥ ४० ॥ १३ रुपये १४ एक वर्ष प्रति १५ बहुत १६ आ मिले । "इर गतौ" इस धातु से 'इर' का अर्थ गति है १७ आर्य कहलाना १८धर्म का दिन ॥ ४१ ॥ १९ हासिल २०उस कर को चलाने वाले ने "अञ्चु गतिपूजनयोः" इस धातु से यह शब्द बना है २१मंदिर २२दंड २३उन हिन्दुओं पर २४जगदीश, बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वर ये चारों धाम और २५ तीर्थ राजाओं के बिना कौन करै २६ व्यंजन अर्थात् श्रेष्ठ भोजन के पदार्थ भी नहीं पासकते

ऐसो परयो अवरंग ४०।३ अकाल जो सप्तही ७ ईतिन रीतिन
सोदर ॥ ४२ ॥
जोरतैं मिच्छवनैंवो रुक्यो जिम ए ए अनीति मची चहुँ४ ओरतैं ॥
ओरतैं छुट्टत टेक अहेय सबै रही इष्ट६।१नके सिरमोरतैं ॥
मोरतैं श्रीजमुनातैं विमान दव्यो न जो सम्मह गोलन दोरतैं ॥
द्वारतैं डेरन लेगो स्वदेव जथा लघु१ दिग्घ २ बिमानन जोरतैं ।४३।
भाऊ१९५।१नरेस विचारि भन्यो दृढचित्त अहो सहिहैं सब दंड तो॥
तोहु जो मिच्छ करैं बलतैं अटकी वह साहकी टेक अखंड तो॥
मंडतो जो यह टेक अमोघ तोमैं परिवो ततकालहि मंडतो ॥
दंडतो जो न रुकै तनु दंड तो चंडे तो है पै तथा न प्रचंड तो ॥४४॥
मानि विमान निकासन मंतु लये दमैं दम्म छलाख६००००० ईलेसतैं
संसद आवनजावन साधि जो पूरबरीति मिल्यो जवनेसतैं ॥
बुंदिय याँ लहि रंच विसास दे पत्र स्वनामको जंगलदेसतैं ॥
बुल्लयो भूपति करण कबंध सु पै गयो संसय कै कछु सेसतैं ॥४५॥
आइ नरूकी करी अरजी लहि कोप तहाँ सरवस्वहि लेतहो ॥
कृष्ण १९६।१ पैं हो जो घनौं प्रतिकूल सो मारिबेके अभिप्राय
समेतहो ॥
उक्त नवावनैं व्हाँहू कह्यो इम द्वारा कितो भगवंत १९५।१ सौं
हेतहो ॥
नामतो ताको मिटाइये नाँहिँ वढैवो विसेस चह्यो प्रभुचेतहो ॥

१औरंगजेब रूपी दुर्भिक्ष अतिवृष्टि,अनावृष्टि टीडी,चूहा,सुवे,अपने राज्य की सेना, शत्रु की सेना इन सातों को ईति कहते हैं जिसका २सगा भाई ॥४२॥ ३ अन्य लोगों से ४ नहीं छोडने योग्य यमुना से विष्णु का विमान पीछा ५ मुड़ते समय६उत्सव उत्सव ७तोपों के गोलों के फैठापसे; वा गोलों की दौड़से ८ अपने इष्टदेव ॥ ४३ ॥ ९ खाली नहीं जानेवाली १० छोटा दण्ड देता हुआ नहीं रुकै तो यह दंड ११ भयंकर तो है परन्तु अत्यन्त भयंकर नहीं है ॥४४॥ १२ अपराध १३ दंड के रुपये १४ राजा भाऊसिंह से १५ सभा में १६ बुंदिय १७ बीकानेर से ॥ ४५ ॥ १८ चित्त ॥ ४६ ॥

पट्टनि जुद्धके मंतु प्रसंग बन्यौं खल कृष्ण १९६।१ निगाहतैं बाहिर ॥
ईखिं तऊ भगवंत १९५।१ की ओर जनाइये राखि कछू थिर जाहिर ॥
मिच्छ³व लै तव बारौं १ मऊ२ लघु राखे त्रि ३ देस गुगोर१ सौं लाहिर
भेजी नरूकी तथा तिंहिं भाँति दया न करी अपराध¹पैं दाहिर²।४७।
बिक्र⁶मनैर⁷तैं आये कवंध महीपति कर्ण स्व इष्ट मनावत ॥
गोपुँरमाँहिं हवेली गिनी इम गो पुरमाँहिं न पर्द्दर आवत॥
बाहिर बुंदीकी वाँहिनी बीचसौं भाऊ १९५।१ सौं आनिमिल्यो हित भावत ॥
मित्र नवाब वे पूछे महीप चले नृपकर्ण बिसास न लावत ॥४८॥
मानत को हो वजीरके सम्मत पावत को हो बिसाससैं प्रत्यय ॥
कर्णनरेस जो आप कहो दिसैं[11] पुर आनि चहैं नहीं व्यत्यय[12]॥
मंडि उपह्वर[13] ते चउ४मंत्र जनातभये जिम सूचना सत्यय ॥
तातके अत्यय[14]कौं जो तकैं अहो सो थकैं कौनसी बातके अत्यय ॥ ४९ ॥
कर्णके बाहिर डेरा कराइकैं रावरे सँन्निधि[15] हालतो राखहु ॥
साहको आसय पूछैं इहिं अंतर ओरन जो अभिलाखहु ॥
तैसीही ठानि सता १९४।१ के तनैं भनी कर्णसौं संसयतो नहिं भाखहु ॥
पै निजडेर नहीं रहिं पास कित खिन क्यौं सुमि रावनु साखहु।५०

१अपराध२देख कर३मिच्छ्र (बादशाह) ने ४लार साथ अर्थात् गुगार के साथ ५ हनें (जलाने) वाला ॥ ४७ ॥ ६ बीकानेर ७ शहर के द्वार में हवेली थी इसकारण शहर में नहीं गया और ८ सीधा बुंदी की ९ सेना में गया॥ ४८ ॥ १० विश्वासका सुबूत ११ प्रवेश करें १२व्यतिक्रम [विपरीत] उपरोक्त चारों ने १३एकान्त में सलाह करके १४ पिता को दंड देना; अथवा मारना जो देख रहा है सो कौन सा दोष करने में थकेगा ॥ ४९ ॥ १५ समीप ॥ ५० ॥

आपुनों इयाँ मिलिवो सुनि एह विवाहीपनों१ व्यवहार२ बिचारिकैं
मानैं न ज्यों करि वे मिलि मंत्र टिक्यो यह बाहर रीतिहु ढारिकैं
संसय नाँ व्यवहारी सगे सो न व्हैं विपरीत कुकाल निहारिकैं ॥
आपपैं भार परें जो इहाँ मिलिहौं मैं तहाँ तव फोजन फारिकैं॥५१॥
कर्ण कह्यो बहु भारपैं पहिलैं मिलिहौं यह माँहि प्रतीतिहै ॥
आपके डेरनहू अबतैं नहिं आइबो मेरो सु पै सुभनीतिहै ॥
कालके पासमें वास करचो तऊ भाऊ१९५।१के पास न नासन
भीति है ॥
भूप भनी मन इक्क१ भयो जिनको वे सदाही असंसय जीतिहैं५२
गीतिः॥
करि सिक्ख कर्ण इम कहि, भाऊ१९५।१ नृप सिविरैं ढिगहि
रहत भयो ॥
गूढ वजीरहिं आग्रहिं, द्रव्यहु उपहारं पंचलक्ख५०००००दयो॥५३॥
नृपके मित्र नवाबहु, सह कासिम१ जाफर२ पुनि साइस्ते३ ॥
पहुं प्रेरित साधे पहु, लखि देस१रु काल२लोभ दु२दिस लग्यो॥५४॥
तत्थ वजीर१ रु ए त्रय३, च्यारिन४को मंत्र साह अधिक चह्यो ॥
इन जिम सम्मति आश्रय, कंति कहत कलीजखान५ पंचम
५कों ॥ ५५ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी
भूपभावसिंहचरित्रे यवनेन्द्रौरंगजेबाज्ञाविरुद्धनिश्चिंतनिधनभावसिं
हजलयात्रैकादशीघस्त्रविष्णुविमानयमुनातटनयन१, शाइस्तखांप्रभृ

१छिपीहुई सलाह २उतार कर ३व्यवहार रखनेवाले ४ बुरा समय ॥५१॥ ५ नाश होने का डर नहीं है ६ निस्संदेह ॥ ५२ ॥ ७ डेरे के समीप ८ आग्रह करके ९ नजराने में ॥ ५३ ॥ १० राजा भाऊसिंह की प्रेरणा से औरंगजेब को शीघ्र साधा ॥५४॥ ११ इन चारों की सलाह का आश्रय लेकर ॥५५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भाऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञा के विरुद्ध भाऊसिंह का मरना ठान कर जलजात्रा एकादशी के दिन विष्णु भगवान् के विमान को यमुना नदी

तिप्रार्थनयैतत्प्रत्यूहशमन २, औरंगजेबबहुलतरार्यपवनकिरण ३, विक्रमनगराधीशकर्णसिंहस्य दिल्लीदंगभावसिंहान्तिकनगरान्तर निवसनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदितश्चतुस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहे जवन जे च्यारि४के, पंच५ वजीर पुरोग ॥
मानतहो इनकी मुगल६, जानत प्रतिभा जोग ॥१॥
तोहू बाहिर उत्तरयो, सुनि नृप कर्णहिं साह ॥
सह सेनेस१ वजीर२ सिंग, रिसकिय लिय लखि राह ॥२॥

राजसवत्तिका ॥

इम्म तथा प्रतिवासर दंडके पंचहजार५००० चमूप१पैं प्रेरिकैं ॥
प्रेरि वजीर२पैं या५००० ही प्रमान भन्यों तुम छन्न मिले हिय भेरिकैं ॥
जो लग दंगन बुल्लहु जंगली तोलग देहु तथा हित हेरिकैं ॥
भाऊ१९५।१पैं कर्ण२पैं दै सुहि भार वलेस१ वजीर२ सु लीनों निबेरिकैं ॥ ३ ॥
कर्णसूँ यों अवरंग४०।३ कहाई पिता मम संग गयो न क्यों पच्छिम५।३।१ ॥
सिंधु१०पैं रोके क्यों हिन्दू सबै२ रु गयो सुरि गेह क्यों तूही

पर लेजाना १ साइस्तखां आदि की अरज से इस विघ्न का मिटना २ बादशाह ओरंगजेब का बहुत से हिन्दुओं को यवन करना ३ बीकानेर के राजा करणसिंह का दिल्ली में जाकर भाऊसिंह के समीप पुरके बारह ठहरने का सातवां ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चौतीस २३४मयूख हुए ॥

१ अग्रणी (आदि) २ बुद्धि के योग से (बुद्धिमान्) ॥ १ ॥ ३ मार्ग ॥२॥ ४ रुपये ५ प्रतिदिन ६ सेनापति पर ७ हृदय मिलाकर ८ बीकानेर के राजा को नगर में नहीं बुलाओगे तब तक ९ सेनापति ॥ ३ ॥ १० अटक नदी पर

तहाँ तिम३ ॥
*अज्जहु क्यों न हवेलिय आत४कहावहु तो तनु ग्रैंड घुसी किम॥
भाऊ १९५।१ के सम्मत जंगलीभूप २ इतीक भयेँ अरजी पठई इम॥ ४ ॥
सिंधुको लंघन वर्जित १ सूचिकैं हाडा६।१सता १९४।१ अटके व्हाँ सदा इम२॥
साध्य न खेद पिताकै सुन्यों मुरिगो घर मैं सुपैं धर्महीहो मम३॥
तापर खीजिकैं रावरेतात लुभायें लयो सु दयो सबनैं दम ॥
जो सब पूछत मोसूँ हजूर उहाँ हो मदीयँ किसोर वैं आगम ॥५॥
बुंदिय भूप की प्रीति बिसेस सो मैं दुहिता दिय कृष्णा १९६।१ कुमारकों ॥
भूपति भाऊ१९५।१ इहाँ उतरे मगमैंहि मिले बढते व्यवहारकों ॥
हैं हम जेते अधीन हजूरके मेरैं परस्पर प्रीति प्रसारकों ॥
ताहुपैं हैं हम व्याही तहाँ प्रकटैं किम नाँहि जैयोचित प्यारकों६
भेद इतो समुझ्यो मैं इहाँ भये बुंदी अधीस्वरकों बहु बासर ॥
मैं इनसों यह जानि मिल्यो इनकों अब ओसैर सीखको सत्वर॥
ताहुपैं जो प्रभुको यह त्रास तो पासही दास हो दूर कितेपर ॥
विक्रमनेर उतारि बुलाइकैं कीलते लंबे इते प्रभुके कर ॥ ७ ॥
जो द्रुत सीख मिलैं चढिजाइ तो भाऊ १९५।१ सों मो२ सों अहो कब भेट व्है ॥
आगैं मिले नहीं यातैं इहाँ कछु काल रह्यो ज्यों पुरागमैं केट व्है
ऐसीहु विन्नतिपैं अवरंग ४०।३ फैंटा जिम व्यालकी १ कालकी

*आज भी † घमंड १ सलाह से २ बीकानेर का राजा ॥ १ ॥ ३ अटकनदी का उतरना हिन्दुओं को मना है यह जनाकर शत्रुशाल ने रोके ४ मेरे पिता के असाध्यरोग सुना ५ लोभ करके ६ दंड ७ मेरे ८ तरुण अवस्था का आगम था ॥ ५ ॥ ९ पुत्री १० जय करने के उचित ॥ ६ ॥ ११ दिन १२ समय १३ शीघ्र १४ बीकानेर १५ कैद करते ॥ ७ ॥ १६ शीघ्र १७ पुर में आये केहैं [पीछे] होवेगा १८ काले सर्प के फण की टक्कर के समान होकर

फेट२०है ॥
कर्णमहीपपैं कोप्यो कराल मनौं प्रलयोदधि[1] सो किम मेट ठहै८
वेगही खानदलेल१बुलाइकैं प्रेरयो तोपन संगी चमूपति[2] ॥
भाऊ १९५।१ यहै पहिलैं सुनि भीर सज्यो नृपकर्ण२की कर्ण की संगति ॥
वस्त्रहू कुंकुम[3]रंग बनाइ कैम्यौं[4] निजडेरन रक्खि वली कति॥
जोलौं दलेस१न जाइसकैं गयो तोलौं यहै गजपैं हरि[5]की गति॥९॥
भाख्यो तहाँ इक जंगलभूप[6] महीपको निर्मित[7] वृत्त मनोहर[8] ॥
ऊहाकरो[9] इहिं पद्यकौं आदिलै अंघ्रिन[10] आदिके जोरिकैं अच्छर ॥
काव्य मनोहर[11] के जिम अंतके पंद्रह१५वर्ण जे ख्यात[12] धरापर ॥
भव्य[13] मनोहर[14] कीरति भाऊ१९५।१की पद्य प्रतीक[15] जनातजो पद्धर[16]१०
रोधक सत्रु[17] न संभरराय सहाय सज्यो न लज्यो भय साहके ॥
साथी स्वकीय प्रवीरन साथ लहै पट इष्ट त्रिविष्टप[18] लाहके ॥
ज्यौं लखि जातहि[19] वंदी लौं[20] वैन कहै नृपकर्ण अहो इम वाहके॥
भल्लो इहाँ पहुँचे[21] पहु[22] भीर गदाग्रज[23] जैसे समै गज१ग्राह२के ॥११॥
रोकि करीनैं[23] बिथोंकि[24] अरीन तुरंगन भोकिकैं[25] तोकि[26] लिभागन ॥

१प्रलय का समुद्र।८।२सेनापति को कर्ण के समान बीकानेर के राजा कर्ण की सहाय पर सज्जा३केसर के रंग के वस्त्र बनाकर४चला।जिस भांति गज और ग्राह के युद्ध में गज की सहाय पर ५विष्णु भगवान् गये तिस भांति ॥९॥६बीकानेर के राजा ने अपना७बनायाहुआ८मनोहरजाति का छन्द भाऊ से कहा९इस छन्द को आदि में देकर तर्कना करो१०इस छन्द के आदि के चरण से प्रत्येक चरण के आदि के अक्षर जोड़ो ११ मनोहर छन्द के अन्त के चरण के पृथ्वी पर पन्द्रह अक्षर १२ प्रसिद्ध हैं १३ भाऊसिंह की सत्य और १४ सुन्दर कीर्ति का १५ छन्द का एक अंग (टुकड़ा) १६ सीधी [पाधरी] जनाता है ॥ १० ॥ १७ शत्रुओं को रोकनेवाला चहुवाण राजा १८ स्वर्ग के लाभ के अर्थ १९जिसप्रकार भाट स्तुति करैं तिसप्रकार २० प्रशंसा के वचन कहैं २१ हे राजा २२ विष्णु भगवान् ॥ ११ ॥ २३ हाथियों को रोककर २४ शत्रुओं को बिखेर कर तथा शत्रुओं के विशेष समूह को रोक कर २६ भाले उठाकर २५ घोड़ों

रारिके कौतुकी रुद्र[1] पुरोग[2] चले सब रीझ घनी मनमैं चुनि ॥१५॥
भाऊ१९५१[3]भन्यौं पहिलोतो महारइहाँ सहिबोइक[4]साहकीओरको
पीछैं बनैं सु लरैं[5]परिहैं करिहैं पलपूजन खड्ग कठोरको ॥
बाहुन बाहिनी डारैं बिलोरि जथा मद-मारैं अरातिन[6] जोरको ॥
यौं अवरंग४०।३करैं अनुताप[7] चुक्यो जिम धापरुक्यो मन चोरको१६
तोपनकेचलतेहि तुरंग[8] चमूपर सम्मुह संग चलाइहैं ॥
दूसरी२बेर न फेर दगैं जिम भूपर भंजते ऊपर जाइहैं ॥
मार प्रसार अपार मचाइ कितेक अनीकहिं खग्गन खाइहैं ॥
अज्जसौं[9] ऐसी बहोरि बनैं न तथा अवरंग४०।३प्रथा[10] पछिताइहैं १७
ओर समैसैं तहाँ[11]सिवघाँभुव पैं जितहीतित भासित[12]भै रह्यो ॥
लोह समासम[13]के लहिबे छलि छोहैं[14] छमाछम छत्रन छ्वै रह्यो[15] ॥
पाँनिप ठहाँ प्रति[16]मूर्ति[17]मूर्तिपैं चढ्यो लख्यो बीर१न भीरु२न[18]ह्वै रह्यो
आसा बिघात[19] दुरघाँ बचिबो अबठहै किंनठहै यह संसय[20]ह्वैरह्यो१८
वा समैहू जिहिं नेक वजीर१औ साइस्त२जाफर३कासिम४संग ठहे
यौं अरजी कर जोरि करी इक[21]दीनके सासन हीन उमंगठहे ॥
चिंता दुखाइ रहे चउ४घाँ जिनमैं अब सज्ज ए२जुज्झन संगठहै॥
जो मरिहै तो घनौं बल[22] जंगमैं वीतिहै रावरो रीति कुबंग[23]ठहै॥१९॥
जो पुनि आइमिलैं जसवंत१छिधा२मत हिंदुव भूप हु२चित्तके ॥
कूर्म[24]२आदिहु भीरकरैं बिपरीत इहाँ बहु दायक[25] बित्तके॥

दासियों) को सौगुनी गिनीं १ तमाशा देखनेवाले २ आदि ॥ १५ ॥ ३ भा-
ऊसिंह ने कहा ४ मौत से ५ हाथों से सेना को बिलो डारेंगे ६ शत्रुओं
के ७ पश्चात्ताप ॥ १६ ॥ ८ घोड़े (यहां लक्षणा से घोड़ों के सवार जानो) ९
आज से १० प्रसिद्ध (जाहिर) ॥ १७ ॥ ११ सबठौर (सब दिशाओं में) १२अब
प्रकाशित होरहा है १३सम और असम शस्त्रों के लेने से१४क्रोध चढ़कर१५
छारहा है १६पराक्रम१७मूर्ति मूर्ति पर अर्थात् हरेक मनुष्य पर१८कायरों का
पराक्रम एपक (यह) रहा था १९ दोनों ओर बचने की आशा का नाश होरहा
था २० सन्देह ॥ १८ ॥ २१ एक मजहब होने के हुक्म से २२ सेना २३ कुरीति
से ॥ १९ ॥ २४ कछवाहा [आमेर का राजा] २५ देनेवाले

और लेत न क्यों
बित्त जोग हुत पातिकों ब नली भय छोरिन तो लुटिहैं इहाँ भित्तके॥
मित्तके पच्छ भरोसा करो मतिमानों इतैं इते मित्त अमित्त के२०
जो सब हिंदु जुदे टरिजाइ तो कैसी बनैं इनमैं हि रहैं किते ॥
मित्त१को पच्छ मिटैं सह मूल अमित्र२उदास३दु२घाँ उँमहैं किते
सर्वघाँ सीमा इहाँ इनकी तिनकी प्रतिकूलता लोइ लहैं किते॥
सोचो विपत्ति हुमार्योसमे अजमेर अधीस करी सो कहैं किते२१
साइंस सीमाहुतो यह साह पै मानीयहै सो भुवालन भागतैं ॥
पूरे जे तोप पदाति२नके सजे सूर सनै करे दूर कुमागतैं ॥
लाख चुहान सौं पंच५००००००इतैं लहि लाख पचीस २५००००००
कैंबंध२कौं लागतैं ॥
साईंसमुद्रा इती३००००००क समेटि ससाईंससाइसेंम्यो इन आगतैं
कर्नकौं ऐतैं बखावनकौं जस डाका जग्यो चहुँ४घाँ चहुवानको॥
कृत्यँ सो काव्य कविंदनके मैं इतो प्रसरयो ज्यों सता१९४।१ सँम
आनको ॥
भूप उभै२सौं तहाँ सब भूप मिले करि उच्छव ज्यों निज मानको
भाऊ १९५।१ के पायन कर्या २ भुवाल पस्यो गिनि निर्भय दा-
यक प्रानको ॥ २३ ॥
कंठलगाइकैं भाऊ१९५।१कह्यो हमकौं तो इहाँ व सैंमा त्रय१०है गयो

१धन के २पक्ष ३भींत(शहरपनाह)के भीतरवाले४मित्र के पक्ष का भरोसा मत करो अर्थात् यवन लोग आपके मित्र हैं जिनके भरोसे पर मत रहो क्योंकि यह इतने आर्य राजा ५ मित्र हैं सो अमित्र होरहे हैं ॥२०॥ ६ उदासीन (तटस्थ रहनेवाले) ७ उमाह (उत्साह) करेंगे ८ हिन्दुओं की ९ राम ॥ २१ ॥ १०हद की सीमावाला यह बादशाह था परन्तु ११राजाओं के भाग्य से बानकी तोपें और पैदलों के १२समूह सजे हुए जो वीर थे उनको उस कुमार्ग से दूर किये १३राठोड़(बीकानेर के राजा) को इतने रुपये लगते ही १४दंड के रुपये १५सह छूट १६ शान्त किया ॥ २२ ॥ १७ कार्य १८अबुशाल के समान अन्य का यश ऐसा कभी नहीं हुआ ॥ २३ ॥ १९ तीन वर्ष

सीखको पाइबो आयो समीप सु पै चह्यो साहको। १ इस खैगयो
आयेहो आप इहाँ अवही पुरमैं प्रविसो इम भंसेको भै गयो ॥
कीनी सोकर्यों त्यों सेस रसेसन संघहु गेहकोँ सिक्खहिँ देगयो२४
यौं रहि तीन३समा कछु ऊन सबै जिन सत्रह१७२४संवत अंतर ॥
बापसौं कीरति आप बढाई गवाइ कविंदन छाइ दिंगतर ॥
आपनौं धर्म निवाहि अह्यो सिरदेन सज्यो वहुवेरके संगर ॥
यौं जप सिक्खवदै बुंदीअधीस पुरी प्रविस्यो सक ऊन१७२४समा पर
संवत सोहि इतैं जिन सत्रह१७२४मान गयो तहँ साह महामति ॥
बंधन सासक वारविसाख्य सो कंपनीकोँ दई बंबई संप्रति ।
अबै चतुष्टय८साहअधीन रही अब कंपनी पाई जथा रीति ॥
वानिजको व्यवहार बढाई हु पै गिनि मुख्य पुरी त्रय३ संगति२६
यौं इन अब्दन माँहिँ उदैपुर राजपदादिकसिंह जो रानहो ॥
ता सबै या जगतेस तनूजके दास जो हीरक मंत्री१प्रधान२हो ॥
राज्यमैं कोऊ स्वतंत्र न राखि सबै तस तंत्र करे यौं सुजानहो ॥
भेदी असेस सो हीरक भृत्य अधीसके नासमैं उद्यमवानहो ।२७।
मुख्य वहाँ रानकै जो ही कुमार सु पै अभिधाँ करि सो सरदारहो
जो भगवंत१९५।३सुतापति जानहु धर्मधुरंधरता व्रत धारहो ॥
पट्टकुमारकी ही जो प्रसू तिहिँ हीरक भेदि तन्यों छक,तारहो ॥

१बादशाह का हठ मिट गया२नाश होने का भय गया३चारों के राजाओं के ४समूह को ॥ २४ ॥ ५ तीन वर्ष से कुछ कम ६ हुआ ७कहेहुए विक्रम के शाक के सम्वत् में ॥ २५ ॥ ८ व्यापार नामक ९ सौदागरों के समूह को अंगरेजी भाषा में कंपनी कहते हैं १०इस समय११चार वर्ष१२प्रीति के अनुसार ॥२६॥ १३राज शब्द है आदि में जिसके अर्थात् राजसिंह१४इस महाराणा जगत्सिंह के पुत्र [राजसिंह] के हीरदास नामक सलाहकार, और प्रधान [दीवान] था १५ आधीन १६ अपने स्वामी के नाश में उपाय करनेवाला था ॥ २७ ॥ जिसका १७ नाम सरदारसिंह था १८ नियम का धारण करनेवाला था १९पाटवी कुमर की माता को ही हीरदास ने भेद कर यह तंत्र रचा कि पुत्र को गद्दी मिलने के कारण पति को मरवाडाले.

पुत्रके काज हतैं पतिकौं बिरचण · ।। इम पापिनी पापनिथारहो।।२८।।
पापिनीके सरदारके · ·रसो पुत्र हुतो पै सुतो अपराध बिहीन हो ॥
···की प्रसर्प ···हा रच्यो यह जाल सो कत्तिय७स्वेत१मैं स्वीकृतकोन हो
भृत्ति बिसासको हीरक भृत्यके ऊरुज नाम दयालु अधीनहो ॥
रान१के हीरक२ज्यों रुचिमैं इम हीरक२के यह३प्रत्यय पीनहो२९
ऊरुज दीपावलीकी निसा यह सासुरै जावनलागो समीपही ॥
हीरक तापैं प्रसन्न व्है होइ कटारी स्वकीयं सो दै रु यहै कही
सासुरेमैं छिगसो हनौं सस्त्रन लै यह जाहु ज्यौं जानैं स्वयं लही
सो लै दयालु इती समुझ्यो न सम्हारिकैं लै कछु जैबो भलोनही३०
हीरकतौं कछु अंतर व्हैकें सम्हारी दयालु कटारी लो सत्वर ॥
कोस तदीयमैं पत्र कढ्यो सब राज्यके अंगनकी लिपि संकर ॥
मारिकैं रानकौं सर्व मिलें बइठारिहैं कालिह कुमारकौं बिष्टर ॥
पै कहा रानी जो ताकी मैंसू याकी हाकिमी ताहू रहैं सब ऊपर३१
देखि यौं जो अघपत्र दयालु हो हीरको पै पलट्यो हिय हालही
सासुरेको तजि जैबो लुपै पुढेबीस प्रकोष्ठ कैंप्यो ततकालही ॥
रान बुलाइ त्वरी अबरोधतैं सौंप्यो सोपत्र निभालकै सालही ॥
लै यह रान ज्यौं प्रानलये महाकालनिसा भई दीपकमालही३२
सूची जो रानी मैंसू सरदारकी जातिकी हाडी है२के ताहि जनावत
ताहिको बॉसक हो सो तहाँ पुनि रानी गयो छलछिद्र जो पावत

१छिरना२देकार्तिक मास के शुक्लपक्ष में३यह अपना कार्य करना ठहराया था ४राजकापाका हीरदास का सेवक५वैश्य[बनियां]६दयालदास नामक आधीन था७पूर्ण विश्वासपात्र था ॥२९॥८वह बनियां९दीपाली की रात्रि में १०अपनी कटारी देकर ॥३०॥ ११ शीघ्र १२ उस कटारी के छिपाने के भंडारिये में १३ राजा के मुख्य लोगों के १४ लेख सहित. संकर [मिलाहुआ लेख]१५सिंहासन पर १६ सरदारसिंह की माता ॥३१॥ १७राजा की १८चोटी पर १९आया [चला] २० राना को शीघ्र २१ जनाने से बुलाकर २२ देखने से निश्चय ही साथा रूपी २३ दीवाली की उस रात्रि में बड़ी कालरात्रि भई ॥३२॥ २४ माता २५ यार

मारि गदा करि सो महिला जन ताके असरसे छनैं तिम जावत ॥
पापी सु धाइ उदैपुरमैं सबही पकरे सुनैं जेहु नैसावच ॥ ३३ ॥
माताको मारिबो जानि कुमार अमंतुहोपै सुनि जा आपरै
काय तज्यो द्रुत काहु प्रकार बहोरि दिखायो न आनंन बापको॥
सूचित हीर लयो सरनैं सो पुरोहित रानके जानिन पापको ॥
केते कहैं नहीं हीर कढयो तस पुत्रही गो सरनैं लखि तापको ३४
केते कहैं तस बंधु कढयो हितसौं सरनैं सुहि राख्यो पुरोहित ॥
कोइ कहोपै पुरोहितको कुल१हीरक के कुल२ज्यों दल्यो द्रोहित
औरहू जे हुते या अघतैं स कुटुंब ते कोल्हू पिलाइकैं सोहित ॥

१ उस स्त्री को गुरज से मारी २ नाश कियां ॥ ३३ ॥ ३ निरपराध [निर्दोषी] था परन्तु उस ४ झूठे दोष को सुनकर ५ शरीर * छोड़ा ६ फिर पिता को मुख नहीं दिखाया. यह पाप नहीं जानकर पुरोहित ने हीर को शरण लिया ॥ ३४ ॥ ७ द्रोह करनेवाले ने ८ घाणी में पिलाकर ९ शोभित हुआ

*मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में यह वृत्तान्त इसप्रकार से है कि कुमर सरदारसिंह की माता ने अपने पुत्र को राज दिलाने के कारण महाराणा के मन में सन्देह कराकर वडे कुमर सुल्तानसिंह को मरवाडाला जिस पीछे वडे पुरोहित के नाम एक पत्र लिखा कि सुलतानसिंह को तो मैंने मरवाडाला अब दरबार को भी जहर दे दो कि मेरा बेटा सरदारसिंह राजा होजावे, इस पत्र को पुरोहित ने अपनी कटारी के खीसे में रख दिया, जब पुरोहित का नौकर दयालदास वैश्य अपने ससुराल देवाली नामक गांव में जाने लगा तब उसने पुरोहित से कोई शस्त्र मांगा और पुरोहित ने वही कटारी दयालदास को दी उसका खीसा (भंडारया)खोल कर देखा तो वह पत्र दयालदास को मिला जिसको पढकर उसी समय देवाली से एक कोस पर पीछा उदयपुर आया और उसी आधी रात कोवह पत्र महाराणा राजसिंह को दिखाया जिसको देखते ही महाराणा ने क्रोध में होकर भीतर जाकर उस राणी[सरदारसिंह की माता]को गुरज की देकर मारडाली और प्रभात होते ही पुरोहित महलों में आया तब उसी गुरज से उसको मारा यह वृत्तान्त सुनकर निर्दोषी कुमर सरदारसिंह ने जहर खाकर आत्मघात किया और मरते समय निम्न दोहा अपने हाथ से लिखकर मस्तक नीचें रख दिया.

"पांणी पिंड तणांह, पिंड जातां पांणी रहे ॥ तो चीतारसी घणांह, सपना ज्यों सरदारसी॥ १॥"

इस पीछे महाराणा ने दयालदास वैश्य को अपना प्रधान [दीवान] बनाया और इन पापों से छूटने के कारण राजसमुद्र नामक बडा तालाव बनाया उस समय में बडा पुरोहित गरीबदास था परन्तु उसको मारना नहीं पायाजाता. इससे ऐसा जाना जाता है कि यह पुरोहित गरीबदास के भाइयों में से कोई होवेगा.

पापि१नमें गिनिकेही अपाप२लयो अघ रान कियो पुर लोहित३५
जानें न पापका गंधहु जे पै सुनें इम रान हजारन संहरे ॥
बाहिर हे ते बचे बलसों पुरके तो घनें जमजंत्र पिले परे ॥
बानिं तोही दयालु बिसासि मुसाहिब मानि टराइ जिते टरे ॥
ते जन सर्व करे तस तंत्रे चवी सब पंथ चलो अब ऊबरे॥ ३६ ॥
कृष्ण१९६।१बुलाई स्वसा पहिलें कछु आई गुगोर सुता भगवंत
१९५।१ की ॥
स्वामी मर्यो वहाँ सुन्यों सरदार कर्यो सहगोन लही गति कंतकी
संवत मान पचीस रु सत्रह१७२५निंदा नची यह रान उदंतकी ॥
ऊर्ज्ज असिता१दि१की के उतें१के इतें२केके लिखें यह आश्विन
६ अंतकी ॥ ३७ ॥
रानसों व्हे यह पापकराल भई जगनिंदक हाक भयंकर ॥
अर्भकसो नसुनें जिन्ह अंग उमंग न रंचक राखें कही अंर ॥
पीछें तें रान तथा पिछताइ बुलाइके पंडित पूछि महोबर ॥
राजसमुद्र तडाग१रच्यो रु दयालु रच्यो हरिमंदिर दुस्तर ॥३८॥
रानको छोटोकुमार रह्यो जयसिंह सु पै इहिं पाप घनों जर्यो॥
तानें जयादिसमुद्र तड़ाग३कुमारनें तातहुसों बढतो कर्यो ॥
तापर इच्छा आनिकें तात बडोहु सो ताल कह्यो जरि ढीबर्यो

१नगर को लाल कर दिया ॥ ३५ ॥ २ बनियां ३ आधीन ४ कहा ॥ ३६ ॥५कृष्णसिंह ने अपनी बहिन को ६ पुत्री ७ पति ८ सती हुई ९ प्यारे की गति ली १० राणा के वृत्तान्त की ११ मेवाड़ के पद्धाभाद्र आदि ११ कार्तिक सुदि एकम लिखते हैं और १२ बुंदी के पद्धाभाद्र आश्विन सुदि पूर्णिमा लिखते हैं ॥ ३७ ॥ १३जिसके अंग पर कोई पूज्य पन नहीं सुना अर्थात् कोई राज्य चिन्ह नहीं पहना और १४शीघ्र ही उस राजसिंह ने कहा कि मुझको राज्य की कुछ भी उमंग नहीं है १५बड़े श्रेष्ठ लोगों से पूछा; अथवा पण्डितों से बड़ा वर पूछा १७ तालाव ॥ ३८ ॥ १८ जयसमुद्र तालाव १९ पिता से भी बड़ा बनाया २० राजसिंह ने उस तालाव का नाम जलकर

जाहिर नाम भयो तस जोहितऊ वह ताल बढ़ैं अति बिस्तरयो३९
बूंदी इतैं नृप भाऊ१९५।१प्रवीर प्रभुद्वनैं पूजिकैं बेदबिधानसौं ॥
अस्तखाँ के अब कुंभ उतारयो सो पीछौ चढाइकैं रीति प्रैमानसौं
धर्मसौं राज्य जमाइ धुरंधर भूपन मुख्य रह्यो रहि भानसौं ॥
अजहूं जाको लै नाम असेस करैंक्रय१बिक्रय२काढि दुकानसौं४०
यौं सिवराज सितारा अधीसको दौर मच्यो अतिजोरको दक्खिन
पावत साहनैं ताकी पुकार तयार करयो नृप संभरी तक्खिन ॥
भाऊ१९५।१अन्यौं इक१मो भगिनी सु बिबाह बैं है अबसाखकी
संक्खिन ॥
याकौं संबेग बिबाहि इहाँ१पुनि दास उहाँ२दहैलि परपंक्खिन४१
ऐसी बैंलापति दै अरजी बलि ठानि प्रपंच स्वसाके बिवाहको ॥
रानके पुत्र जो मुख्य१रह्यो सो बरयो कछु टैरक सासन साहको
व्याही स्वसा वह ताकौं बुलाइ निदेस सो चिंति सता १९४।१न-
रनाहको ॥
गंगा१९५।५कौं व्याहि उदैपुर गो सँबधू जयसिंह लैबोल सराहको
व्याह्यो व्है रान किते यौं बदैं सु पै पच्छ गिनौं निहचै न सरम्हारिकैं

ढेवर * रचना १ फैलाहुआ ॥ ३९ ॥ २ ब्रिह्मनों को ३ पाटण के मंदिर का कलश ४ आज भी ५ व्यापार ॥ ४० ॥ इधर सितारा के पति का ६ दैलाव ७ बहुधाम को ८ उसी समय ९ अवस्था १० साखी से ११ शत्रुओं को ॥ ४१ ॥ १२ आडा बला नामक पर्वत का पति १३ रचना १४ बहिन के बिवाह की १५ बादशाह के हुक्म को नहीं माननेवाला १६ स्त्री सहित ॥ ४२ ॥ १७ कहते हैं १८ इसमें निश्चय पक्ष कौनसा है सो नहीं जाना गया

* बड़वाभाटों की लिखी हुई या कोई अन्य लोगों की प्रसिद्ध की हुई यह कथा ग्रन्थकर्ता [सूर्यमल्ल] के कथनानुसार सब राजपूताना में प्रसिद्ध है परन्तु असत्य है क्योंकि महाराणा राजसिंह के देहांत सम्वत् १७३७ में हुए पीछे जयसमुद्र तालाब का काम सम्वत् १७४४ में प्रारम्भ होकर सम्वत् १७४८ में समाप्त हुआ है और पर्वतों के जिस नाके को बान्धकर यह तालाब बनाया गया उस नाके का नाम ढेवर था इसकारण इस तालाब का नाम ढेवर का तालाब प्रसिद्ध हुआ है ॥

दायजमैं सब दूरन दये नृप भाऊ१९५।१स्वतंत्र सो व्याह निहारिकैं
ताहूनैं त्याग दयो दिपंतो पट१भूखन२हैं ३गै ४रुवें५श्रोलिं६ प्रसारिकैं
भामं१ नै सालकैं८प्रीति मजी ऊर्जा भाम१ की लालक२ धी हित
धारिकैं ॥ ४३ ॥
संभरं व्याहि यों गंगा १९५।५ स्वसा पुनि साह वैरा लखि सांजि
पयानकों ॥
रानी किती इहां रक्खि स्वसंग लई किति बाहिर मंडि मिलानकों
औरंगाबाद गयो दरकूंच यों मानी दखावन बीरन मानकों ॥
पास दराइकैं भावपुरा१ निवेस्यो तहां सत्रुन संक निदानकों ॥४४॥
कृष्ण १९६।१ कुमार गुमार गयो वलि बारा१ मऊ२ जिहिं खोई
कुबुद्धिसों ॥
सो अब दिल्ली पहैं पैर गो न सभालग जोलों स्वभाव विसुद्धिसों ॥
बारा१मऊ२की दई लखि बिन्नति काहू कयो तहँ साहहे क्रुद्धसों॥
सो सुनिकैं भजि भीत सिटाइ गयो सो गुमार लगी हिय लुंदसों४५
जोपै मुकुंद १९४।१तनैं जगतेस१९५।१ लखाइकैं अस्तमरार त्रिल-
क्ख ३००००० न ॥
लोभी इजारा मऊ इक१ लैकैं चुभ्यो हिय कृष्ण१९६।१कैं आस-
य चक्खन ॥
संवत भू गुन सत्तह १७३१ मैं इंत कृष्ण १९६।१ गुमोर पितामही
अक्खन ॥
सो भगवंत१९५।३की दूजी२सुता परिनाई स्वसा निज मुद्धि लैपक्खन

१ स्वतंत्र राजा से व्याह हुआ देखकर २ प्रकाशमान [प्रसिद्ध होने योग्य] ३ हाथी ४ घोड़ा ५ धन ६ ऊंट ७ पहिनोई ने ८ साले से प्रीति की ९ हित की बुद्धि धारण करके ॥ ४३ ॥ १० पहुंचाया ने ११ गंगा नामक बहिन को १२ शीघ्रता १३ अपने साथ १४ नगर के बाहिर मुकाम करके १५ निवास किया ॥ ४४ ॥ १६ फिर १७ परन्तु सभा तक नहीं गया १८ विशेष शुद्ध स्वभाव से १९ लोभ से ॥ ४५ ॥ २० दादी के कहने से ॥ ४६ ॥

भाऊ१९५।१तहाँ घर सासन भेजि नरूकी प्रसं जिन जीवत जानिकैं
दूसरी२रानी जो भाउलदेवि१९५।२पठाई गुगोर स्वगेह प्रमानिकैं
रामपुरा मुहुकम्म नरेसको पुत्र गुपाल तथा पहिचानिकैं ॥
कृष्ण की१९६।१जांमि जो मानकुमारि१९६।२ सो ताहि बिबाहि
दई मेह तानिकैं ॥४७॥

जानि इतैं अवरंगके जोरकौं राजपदादिकसिंह सो रानहु ॥
साहके पायन लागिबो सोधि प्रैथामौं नह सजि कीनौं प्रयानहु॥
नापित पंथमैं सो कम नाम मिल्यों कवि औ कह्यो क्यौं न हाँ मानहु
नैंक अहो कुलरीति निहारि पतासे पितामहतौ पहिचानहु ।४८।
यों मरुबानिमैं छप्पई एक१नई रचि पंथ पढी कवि नापित ॥
सो सुनि रान हु चेत सम्हारि मुख्यो प्रतिमग्ग जथा मही मांपित
मालपुराके प्रमार३न मारि सु पै पुर लूटि कर्यो किधौं सांपित॥
यों गो उदैपुर औ इनसों पलटे करि द्रोह प्रमार ते पापित।४९।

॥ दोहा ॥

सुर सत्रह१७३३मित लगत सक, इत श्रीपुष्कर आइ ॥
बहु कवि नरहरि बारहठ, बुधजन तत्थ बुलाइ ॥ ५० ॥
एकलक्ख१०००००मितेंसौं अधिक, करि मुद्रा किय कज्ज ॥
पूछि अर्थ तिन्ह पंडितन, सु हुव काव्य हित सज्ज ॥ ५१ ॥
और खरचि सरवस्व इम, न कवि निकासैं नाम ॥
बुध बिप्रन लहि अर्थबल, तिहिं सु काव्य किय तांम॥ २५ ॥

---

१ पहिंन २ उत्सव ॥ ४७ ॥ ३ रांणा राजसिंह ४ प्रसिद्धि से मार्ग में ६कमा नामक ५ नाई मिला ७ खेद (हाय) ८ प्रतापसिंह जैसे ॥४८॥ इस अभिप्राय की मरुभाषा में ९ उलटे मार्ग १० भूमि को आपताहुआ ११ आपयुक्त [*जलाया] १२ पापी ॥ ४९ ॥१३ तहां पंडितों को बुला कर ॥५०॥ १४ प्रमाण १५ कार्य किया ॥५१॥ १६ पंडित ब्राह्मणों से अर्थ का पता लेकर उस (बारहठ नरहरिदास) ने तहां श्रेष्ठ काव्य किया ॥ ५२ ॥

---

* मेवाड़ के इतिहास में महाराणा राजसिंह ने पाट बैठ कर टीका दौड़ की रस्म में मालपुरे को जलाना लिखा है.

भनि रामायन१भागवत२, उभय२मुख्य अनुसार ॥
भाषाकवितामैं भने, अखिल विष्णु अवतार२४ ॥ ५३ ॥
सहस अष्टि१६,०००अरु अष्टसत८००, एकसट्ठि६१ तिन्हं अग्ग॥
वार३अष्टमी८सुचि४आसित२, सो किय ग्रंथ समग्गं ॥ ५४ ॥
कवि अवतारचरित्र१कारि, इहिँ प्रबंध अभिधान ॥
क्रम लिखाइ तिम ख्यात किय, पुस्तक सतनं प्रतान ॥ ५५ ॥
संकृति २४ मितँ अवतार सब, हरिके जाविच हैहि ॥
राम१।२१कृष्ण१।२२विस्तर रचित, द्युतिहिँ प्रकासत द्वै२हि॥५६॥
असो कवि चारन अपर, भाषा कविवर भो न ॥
जाकी कविता भक्तिजुत, कित्ति लहत चहुँ४कोंन ॥ ५७ ॥
पुव्वहि इत आमैरपुर, सो नृप सुत जयसीह १ ॥
रामसीह२तसं पट्टलहि, लहिय राज्य जस लीहँ ॥ ५८ ॥
कुलपति२माथुर बिप्रकुल, भाषाकवि जिहिँ रूप ॥
सादर बुल्लि प्रसाद सह, रीझ विरचि अनुरूपं ॥५९॥
द्रोनपर्व७।१भारत विदित, अर्थ तास अनुकारं ॥
ग्रंथ रचायो नाम कारि, संग्रामादिकसार२॥६०॥
सुर सत्रह मित१७३३यहहि सक, वदि२फग्गुन१२गुरु५वार॥
सप्तम७तिथि तँहँ ग्रंथ सो, किय प्रारंभ प्रकार ॥ ६१ ॥
भाषा ग्रंथनमैं भलो, प्रविदित यहहु प्रबंधं ॥
पद असाधु बहुठाँ परत, सुतो हरत दृढसंधं ॥ ६२ ॥
इक संवतावेच ए उभय२, बनैं ग्रंथ विख्यात ॥

॥५३॥१मंगलवार२आषाढ मास कृष्णपक्ष४समग्र ॥५४॥५इस ग्रन्थ का६नाम ६ सैकड़ों पुस्तकें फैलाकर प्रसिद्ध किया॥५५॥७प्रमाण८विस्तार पूर्वक९कान्ति ।५६। १० अन्य भाषा में ११ श्रेष्ठ कवि नहीं हुआ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ प्रसन्नता सहित बुलाकर १३ अपने स्वरूप के अनुसार ॥५९॥ १४ सदृश१५संग्रामसार ॥ ६० ॥ ६१ ॥ १६ विशेष प्रसिद्ध १७ ग्रन्थ १८ अशुद्ध १९दृढ प्रतिज्ञा का नाश

कुलपति१पावन रीक्र२किय, नरहरि लोभ निपात२ ॥६३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी भूपभावसिंहचरित्रे यवनीकरणार्थविक्रमनगराधीशकरणसिंहोपरि यवनेन्द्रौरंगजेबसैन्यप्रेषणतत्सहायभावसिंहतदन्तिकगमन१, जाफरखांप्रभृतिप्रार्थनेरंगजेबसैन्यप्रत्यागमनेनोभयभूपमृत्युमुखोद्धरण२, मोहमयीपत्तनस्यांग्लकरपतन ३, उदयपुराधीशराजसिंहच्छद्मघात प्राकट्यहेतुराज्ञीपुरोहिताद्यनेकमरणकुमारात्मघातमरण४, राज-समुद्रजयसमुद्रकासारनिर्मितिभणन ५, महाराणाराजसिंहमालपुरप्रज्वालन६, महाराणाजयसिंहस्यभावसिंहभगिनीपरिणयन७, यव-नेन्द्रौरंगजेबनिदेशससैन्यभावसिंहस्य दाक्षिणात्यसितारानगराधीशशिवराजाक्रमण८, चारणबारहठनरहरिदासस्यावतारचरित्रप्रबन्धरचन ९, कुलपतिमिश्रस्य संग्रामसारग्रन्थनिर्माणसूचनमष्टमो मयूख : ॥ ८ ॥

करते हैं ॥ ६२ ॥ १ नरहरिदास ने लोभ का त्याग कर दिया ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भावसिंह के चरित्र में यवन करने के अर्थ बीकानेर के राजा कर्णसिंह पर बादशाह ओरंगजेब की सेना भेजना और कर्णसिंह की सहाय पर राव भावसिंह का कर्णसिंह के पास जाना १, जाफरखां आदि की अरज से ओरंगजेब का सेना को पीछी बुलाना और इन दोनों राजाओं का मृत्यु के मुख से बचना २ बंबई नगर का अंगरेजी कंपनी के हाथ में पड़ना ३ उदयपुर में महाराणा राजसिंह को छलघात से मारने का यत्न प्रकट होजाने के कारण राणी और पुरोहित आदि अनेक मनुष्यों का माराजाना और कुमर सरदारसिंह का आत्मघात करके मरना ४ राजसमुद्र और जयसमुद्र तालाबों के बनने की कथा५ महाराणा राजसिंह का मालपुरा को जलाना६ राणा जयसिंह का राव भावसिंह की बहिन को विवाहना७ बादशाह ओरंगजेब की आज्ञा के अनुसार सेना सहित दक्षिण में सितारा के पति शिवराज पर जाना८ चारण बारहठ नरहरिदास का अवतार चरित्र नामक ग्रन्थ बनाना९ कुलपति मिश्र के संग्रामसार नामक ग्रंथ बनाने की सूचना का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पैंतीस २३५ मयूख हुए ॥

आदितः पञ्चत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

गो भजि जो गूगोरगढ, कुपित साह सुनि कृष्ण१९६।१ ॥
सूचित पुनि ब्याही स्वसा, वसु वहु वितरि वितृष्ण ॥ १ ॥
पुव्वहि हो साहहु कुपित, रनपट्टनि अपराध १ ॥
वने उभय२ अपराध वलि, विधि समस्त करि बाध ॥ २ ॥
गो दिल्ली पै डरि न गो, दिल्लीपति दरबार ॥
मरजी विन बागैं१सऊ२, चाह्यो लैन विचार२॥३॥
विनां मिलैं भजिगो३ वहुरि, अति रिस तातैं आनि ॥
हनन विचार्यो इहु१९६।१कौं, मुगल निरंकुस मानि ॥ ४ ॥
दूजो२ हो दिल्लीसकै, सुत जो आलमसाह४१।२ ॥
पठयो ताहि अवंति पुर, रचि सूबापति राह ॥ ५ ॥
भगवंत१९५।३ हिं गरलँद भन्यों, जो खल खानवजीर ॥
तिहिं विडारि इमनिजतनय, मालव पठयो मीर॥ ६ ॥
क्रमंतवेर तासों कह्यो, सठ कृष्ण१९६।१हु तव संग ॥
ताहि हनहु कछु छिद्र तकि, सहसा पटकि प्रसंग ॥ ७ ॥
आलम४१।२ सुत समुझाइ इम, पठयो कथित प्रदेस ॥
दे फरमान रु संग दिय, ऐंस कृष्ण१९६।१ भनि एस ॥ ८ ॥
अवतैं तू आलम४१।२ अनुग, सासन मम अनुसार ॥
कथित तास अविरत करहु, मालिक गिनहु कुमार ॥ ९ ॥

॥ वेताल ॥

१बादशाह को क्रोधित सुनकर२कहीहुई बहिन का विवाह किया ३धन४देकर ५तृष्णा रहित ॥१॥१पाटण के युद्ध को॥२॥१॥२॥१॥१विष देनेवाला८निकाल कर बादशाह ने अपने पुत्र को भेजा॥६॥१०चलते समय११अचानक ॥७॥१२इस कृष्णसिंह को।१३यह कहकर॥८॥१४सेवक१५उसका कहना१६निरन्तर करना

देल दौर घोरन जोर२तब गूगोर तोर दिखाइ ॥
मगमाँहिं आलम४१।२सौं मिल्यो यह कृष्णसिंह१९५।२हु आइ ॥
उपदा१रु बलि२ करि रीति आश्रित सद्धि थान सलाम३॥
कर जोरि अक्खिय दासको सिरहै वँ साहन काम ॥१०॥
भगवंत१९५।३ सौं अतिमेय लै प्रतिदेय सो नवभूप ॥
भाखी सुंठाँ लहि संग भो रहि रीतिके अनुरूप ॥
निज चित्त चिंतिय साहसुत इहिँ होइ बहु नरनास ॥
छलि मारिबो सुनि छन्न व्है प्रति बीर कति इहिँपास ॥११॥
इम सोचिकैं किय कृष्ण१९६।१आलम४१।२स्वीय बेगम संग ॥
भ्रम टारि पुष्प करंडिनी चलि सद्धिहौं खल भंग ॥
दरकुंच हंकिय थप्पि यों नियराँयि उक्त प्रदेस ॥
अरु सुक्र शुभ्र१ चतुर्दसी१४दिन ताजपुर रहि एस ॥१२॥
श्रुति वन्हि सलह१७३४मान संवत पूर्णिमा१५तिथिपाइ ॥
प्रबिस्यो सु पुंप्पकरंडिनीपुर एम आलम४१।२आइ ॥
आवासहो जहँ आपनौं तहँ पंत्त सत्वर एह ॥
रहि वाँह कृष्ण सु१९६।१लैगयो जिम मित्र अप्पन गेह॥१३॥
करि छद्म घातक सज्ज अप्प टर्यो कछू मिस कास ॥
कर कृष्ण१९६।१पै तिनके चले इत चोर जानि कुरास ॥
तस बीर सज्ज प्रकोष्ट है तिन हक्क अंदर होत ॥
सह हल्ल पैठन क्यौं कर्यो जिम मीन प्रतिमुख सोत१४
जिनमैं कटे बहु स्वामिलौं नव९वीर पहुँचेजाइ ॥

---

१ सेना के २ फैलाव से ३ प्रताप ४ नजर ५ न्यौछावर ६ अच ॥ १० ॥ प्रमान ८ पीछा दिया ९ नवीन राजा पन १० श्रेष्ठ जगह ११ मनुष्यों का नाश ॥ ११ ॥ १२ अपनी बेगम के साथ १३ स्थान का नाम है १४कहे हुए प्रदेश को समीप लेकर १५ ज्येष्ठ १६ सुदि ॥ १२ ॥ १७प्रवेश हुआ १८नगर का नाम १९महल २०पहुंचा २१शीघ्र ॥१३॥२२छलघात करने वाले को२३पास से२४बुरे ढंग से २५ द्वार पर २६ उलटी धारा में मच्छी जावै जैसे ॥१४॥ २७अपने स्वा-

मारे सपातंक स्वामिघातक खग्ग फग्ग मचाइ ॥
कटि चूक पूरन टूक सून उच्छटे चहुँ४कोद ॥
चहुवान१मिच्छ२नके चले वहु पाँनि तानि विनोद ॥१५॥
जँहँ रंगरंग सुगंध नीर१प्रसून२मनि३गन जोग ॥
भरिगो सुथान कृपान-कर्त्तित अस्थि१पल२आभोग ॥
अय कृष्णु१६६१करतें कटिपरे कटिमिच्छ घातक तत्थ ॥
खिल्ल दीस२०रक्खिय खेत जे समवेत हड्ड६१नँ सत्थ ॥१६॥
लखतो रह्यों सु अटा चढ्यो सुन साहको यह लाभ ॥
तल लुत्थि लुत्थिनपैं लगी हुव चूक वह तुमलाभ ॥
तँहँ ए परे दस१०स्वामि१संजुत पारि अरि तेईस२३ ॥
सिव अर्थको हु रह्यो न ह्वाँ खिरि खंड संभर सीस ॥१७॥
इम वेदराम३४प्रमेय संवत सुक्रके३सित१अंत ॥
गुगोरको नृप काम आयउ प्रेरि किति दिगंत ॥
दिल्लीपुरी सैंन भीरु ज्यों तव त्यों भन्यों सुनि द्रोह ॥
अव वीर यों स परयो अवंतिय लागि लुत्थिन लोह ॥ १८ ॥
डिग पंच५धीर सगोत्र१वीर परे अरातिनँ ढाहि ॥
असगोल२च्यारि४भरे उहाँ दस१०गोत्र ए अव आहि ॥
लरि सदाराम१पहार२भैरव३केसरी४अरु लाल५॥
तँहँ हड्ड६१पंच५हि ए खिरे जिम टूक लोमैंन ताल ॥ १९ ॥
सीसोद भारत१भारमल्ल२उभै२कटे पहु संग ॥

मी (कृष्णसिंह) पर्यंत १ पाप सहित २ स्वामी को मारने वालों का ३चा-रों दिशाओं में ४ हाथ ॥ १५ ॥ ५ पुष्प ६ खड्ग से कटेहुओं के ७ हाड और मांस से परिपूर्ण होकर ८ वाकी के ९ मिलेहुए [साथ] १० हाडों के साथ ॥१६॥ ११ आकाश को भर देनेवाला १२शिव के काम का [पूर्णमस्तक] कोई नहीं रहा अर्थात् सब के मस्तकों के टूक टूक होगये १३चहुवाण का मस्तक ॥१७॥ १४ज्येष्ठ सुदि के अन्त में १५दिल्ली से १६उज्जैन में १७शत्रुओं के लोथें [मृतक शरीर] लगकर ॥१८॥ १८ शत्रुओं को गिरा कर १९ हरताल से केसों के टुकड़े होजाते हैं तैसे ॥ १९ ॥

आनंद१३नाम कबंध चालुक लाल१४खंडित अंग ॥
ए९ज्यौं नव९ग्रह कृष्ण१९६१ज्यौं सिसुमार१०इन्ह आधार
०हैं टूक ए दस१०ही झरे बहु मारि मारनहार ॥२०॥
इत१के प्रबीर प्रकोष्ठ बाहिर तुट्टये इकतीस३१ ॥
उत२केनकी गिनती न जाहिर भइप्रमानहु ईंस ॥
तिम कृष्ण१९६१मारन हक्क सुनि खिल सत्थ भज्जि गतास
पठई चमू तिनकेहु डेरनपैं प्रकोप प्रकास ॥ २१ ॥
हुव२देस वग्गड पै बजैं सीसोद राउल दोइ२॥
हो तत्थ दोउ२न माँहिसौं इक१जास संभव होइ ॥
कति लोग भज्जि रु तास डेरन उव्वर्यो ततकाल ॥
वलि गो कितो गूगोर ग्रलि तजि सिबिर सून्य बिसाल २२
बिनुसंक डेरनको सु वैभव लुट्टि मिच्छन व्रातँ ॥
सब लैगयो जिहिँ हत्थ जो परिगो सु जैं दरसात ॥
गर्य हो गनेसवतार१ सो गयलूट कारन गैल ॥
गज तिलक२दूजो२नाँग यो सह कोप सासुं कि सैल ॥२३॥
मदमूढ मिच्छन हौं लयो करटी सु गोलन मारि ॥
पृतनाप्रदेस अरण्य सो हुव को सकै वँ पुकारि ॥
सूबा अवंति अधीन हे नृप जे हुते तँहँ सर्व ॥
उनकै अचानक मंतु खोजत भो अचिर्ज अखर्व ॥२४॥
द्विज जो पुरोहित कृष्ण१९६१को तहँ हो भवानियदास१
खिलमैं जु मुख्य१हुतो द्वितीय२सु स्यामरूप२खवास ॥

१तारामंडल २मारने वालों को ॥२०॥ ३डयोढी के बांहर ४हे स्वामी रामसिंह ५ बाकी की सेना (साथ) ॥ २१ ॥६ बागड़ देश के पैं अर्थात् पंति ७ म्लेच्छों का समूह लूट लेगया ८ जयं दिखाते हुए ९हाथी १० हाथी ११ मानों प्राण सहित पर्वत ॥२३॥१२हाथ १३ उस हांथी को १४सेना का प्रदेश १५वन(शून्य) होगया १६ अब १७ अपराध हेरने में १८ आश्चर्य । २४। १९बाकी के लोगों में

ए द्वै२हि राउलकेर डेरन मुख्य हे अवसेस ॥
सीसोद पुच्छिय द्वै२हिसौं कछु बुद्धहै कि कलेस ॥ २५ ॥
सीसोद राउलसौं कह्यो द्विज खग्ग चालन सुद्धि ॥
बलि गो३कि स्वामि मरयो४सु निश्चय बुद्ध है न स्वबुद्धि॥
किय स्यात राउल विप्रकौं तँहँ काम आयउ कृष्ण१९६॥१॥
त्रिदिवौंक भो स्व ख वेद४०सत्थिन जुज्झि देह वितृष्णा२६
बहु मिच्छ बाहिर१वंद्धये इम माँहिँ खल तेईस२३ ॥
सुनि विप्र अक्खिय वाहवाह घनौं धुनावत सीस॥
बलि हेतु पुच्छत विप्र बुल्लिय अप्प जानहु एह ॥
गहिबो बुरो १हनिबो भलो२सुरगेहँ व्है जिम गेह ॥ २७ ॥
पीछैं वकील स्वकीय राउल भेजि आलंम४०।३पास ॥
सब लुत्थि मंगिय हारि.मंचन स्वामि सौं सविसास ॥
चालीस४०पुद्गलें मंच चउदह१४इक१पैं निज१ आनि ॥
सिप्रातटस्थ पिसाच मोचन ठाम दग्धहु ठानि ॥ २८ ॥
अहँ तीन३विप्र१खवास२रहि किय अस्थि लेंन उपाय ॥
तत्रत्यँ लोकन यौं कह्यो तँहँ है न लेंन हिताय ॥
यह मुख्य तीरथ है तहाँ सन अस्थि जाइ ग्रहो न ॥
कछु बुद्धि ऊँहन सुद्धि कारन कोन क्यौंसु कहो न ॥२९॥
नर जे बचे सीसोद के तिन्ह ताहि रत्ति निकासि ॥
बलि एहु द्वै२हि चउत्थ४वासर त्यौं कढे हिय त्रासि ॥
इन अँद्धि विप्र१खवास२दोउ२न दिन्न बुंदिय आइ ॥

१ डूंगरपुर के राउल के डेरों में बाकी थे ॥ २५ ॥ २ हमारी बुद्धि में मालूम नहीं ३ देवता हुआ अर्थात् स्वर्ग गया ४ अपने चालीस साथियों सहित ५ तृष्णा रहित ॥ २६ ॥ ६ काटे ७ कारण ८ जिसमें स्वर्ग घर होता है॥२७॥ ९लोथें (मृतक शरीर) १० शरीर ११ सफरा नदी के किनारे पिशाचमोचन नामक जगह पर दाग दिया ॥२८॥ १२तीन दिन१३वहां रहनेवालों ने१४ यहां से अस्थि लेना हित के अर्थ नहीं है१५तर्कना ॥२९॥१६चौथे दिन१७खबर

गूगोर सेस बचे गये पतिनास त्रस्त पलाइ ॥३०॥
नभ व्योम१७०० सम्वत अद्द६मचक३कृष्णा१९६१जन्म निदान॥
मति भिन्न जाइ मऊ लई तेवीस२४सम वय मान ॥
वपु त्यों तज्यो चउवीस२४ सम बय सुक्क३अंतिम१५स्वेत१॥
न कही मऊपति जानि ही नव९ नारि तास निकेत ॥ ३१ ॥
बुंदीपुरीहि रही कही तिनमाँहिँ पंच सु बुद्धि ॥
तिनमाँहिँ भस्मभई लयी सुनि स्वामि नियत न सुद्धि ॥
पट्टु पंचमी५।१ तँहँ गोड़ि भालिय सप्तमी७।२सु प्रवीन ॥
तिम अष्टमी८।३रठोरि बुंदिय ए जरी तिय तीन३ ॥ ३२ ॥
तीजी३।१रु छट्ठि६।२य द्वै२जरी न प्रजावती रहि तत्थ ॥
वैधव्य धर्म बिधानतैं अवसान सद्धिय अत्थ ॥
गूगोर च्यारि४कही नई पति के बुलावत पास ॥
इक१दाहरी नवमी९।१जरी तँहँ प्रीतिके अवकास ॥ ३३ ॥
अरु द्वै२हि पुव्व मरी द्वितीय२।१चतुर्थ४।२सेखाउत्ति ॥
पहिली१जु केसरदेवि१९६।१सो न जरी मनोहर पुत्ति ॥
कति कहतही दसमी१०हु तिय तस गौड़ि लाडकुमारि१९६।१०
नहिँ सुद्धि पै रु खवासि तेहु जरी चउद्दह१४नारि ॥३४ ॥
गूगोर नारायनगिरीके बाग हुव सहगोन ॥
अद्यापि चौंरा तत्थ उनके भा प्रकासत भोन ॥
अट्ठारही१८ लहि संग नारिन कृष्णा१९६।१गो दिवँ एम ॥
तस नास संसय भो असेस न हेरि हेलन तेम ॥ ३५ ॥

१ डर से भगकर ॥ ३० ॥ २भाद्रपद वदि ३बुद्धि से भिन्न होकर [निर्बुद्धि] ४ वर्ष ५ ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा के दिन. उसके घर में नौ स्त्रियां थीं. परन्तु उस कृष्ण को ६ मऊ का पति जानकर स्त्रियों के व्याह का वृत्तान्त नहीं कहा ७ घर में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ८ सन्तानवाली होने से नहीं जली ९ विधवापन के धर्म में १० यहां ही अन्त हुआ ॥३३॥ ११ खबर ॥३४॥ १२सती १३ अब तक भी १४ कान्ति १५स्वर्ग १६ दोष नहीं देखकर ॥ ३५ ॥

सुनि कृष्ण१९६।१मारन भावसिंह१९५।१नरेस इत किय सोक ॥
ताकेहि बुंदिय सुद्ध औरस जे रहे चउ४तोकें ॥
तिनमाँहि दोउ२न है२सुता बिनसी अनूढहि गेहु ॥
रठौरि३के सुत है२ रहे लघु२अंत तिम सुनिलेहु ॥ ३६ ॥
यह कीर्तिसिंह१९७।२सनाम जो अनिरुद्ध१९७।१सोदर आस ॥
पहिलैं सु भावपुरा१ हि भूपति बुल्लयो निज पास ॥
सो व्हाँ मरयो सिसु या समें तनु रक्खि हायनै तीन३ ॥
अनिरुद्ध१९७।१इक्क१रह्यो सेता१९४।१कुलतंतु अप्प अधीन ॥३७॥
तब कृष्ण१९६।१कों दिय जो पटा सु स्वसूनु गिनि दिय ताहि ॥
अरु अब्द ग्यारह११ लों इहाँ वयमैं गये तस आहि ॥
कति यों कहैं बुंदीहि.ताकहँ स्व स्व पुत्र बनाइ ॥
मतभेद कौउक होउ पै दिय औरसत्व मनाइ ॥ ३८ ॥
इत साह जो दिय१जोधपुर अमरेसके सुत अत्थ ॥
तो लैंक्यो न दयो न२ता तबलौं रह्यो तिम तत्थ ॥
अरु कांनि स्वीय घटाइ सो जसवंत बर्जित आस ॥
निरंगार ठुस्थ रह्यो ससंक त्रिसंकु भूप निकास ॥ ३९ ॥
बुंदीस बढि जब लैगयो पैंढ़ा११ बिधेय बिधान ॥
जसवंत तब कहि मुक्कली किय भंव्य अप्प सु मान ॥
अबतैंहि तुम१हम२इक्क१ हैं भनिमुक्कली तब भूप ॥
हम साह आश्रित अप्प हेरहु रावरे अनुरूप ॥ ४० ॥
कहिमुक्कली पुनि साह प्रेरित आहु ज्यों नृपकर्ण ॥
संका तथापि मिटी न जावत ज्यों धनी१प्रतिसर्ण२ ॥

१ बालक २ बिना विवाही हुई ॥३६॥ ३सगा आई हुआ ४ वर्ष ५ शत्रुशाल के वंश में ॥ ३७ ॥ ६ अपना पुत्र मान कर ७ औरसपन ॥ ३८ ॥ अमरसिंह के पुत्र के ८अर्थ जोधपुर दिया ९तहां १०आदर (इज्जत) ११आशा रहित हुआ १२बिना घर १३दरिद्री ॥३९॥१४भादवा सुदि एकादशी के दिन१५शुभ१६आप के सदृश ॥ ४० ॥ १७ जिसप्रकार राजा करणसिंह आया उसीप्रकार

सो तोहु जाइसक्यो न१. औ ठहरयो२न विनु अवलंब ॥
अब साह अक्खिय नैरतैं इन्ह कढ्ढि देहु कदंब ॥ ४१ ॥
जसवंत तिर्यजन मात्र हे जिन्ह नैरतैंहु निकासि ॥
रट्ठोर परिजैन१हीन पुर किय इक्क परजन्न २रासि ॥
सकुटुंब अब जसवंत सोचत देसविरहित दीन ॥
मतिहीन गति अवलंब खोजत ज्यौंक बाहिर मीन ॥ ४२ ॥
अक्ख्यो जु कासिमखान१तस सुत नाम खानअमीर२ ॥
सो पुव्व तांसन मित्रभाव सु पै चह्यो अब सीर ॥
कछु छन्न दे उपहार ताकौंहँ मंडि पत्रन मंत ॥
तिहिँ द्वार लें विच तास तात१तथा वजीर२हु तंत्र ॥ ४३ ॥
जिनकौंहु दे उपदा अभीष्ट रु साहचित्त जगाइ ॥
इक मान निर्भय मंत्र जानि परयो सु पुरढिग आइ॥
सबही नवाब१अमात्य२ह्हाँ सन छन्न भेट प्रसारि॥
अपनैंकरे तँहँ के भयेश्न भये२समै अनुकारि ॥ ४४ ॥
दिय तत्थ बिज्ञतिपत्र यौं अब जीविकाबिनु दास ॥
कहिहो सु करिहै चाकरी लहि प्राणलाभ प्रकास ॥
लहि सरन चरन हजूरके दिय आदि परिजनलोक ॥
सबही इहाँ रहिहैं परे स्व निवाहको तजि सोक ॥४५॥
तब साह त्यौं हि निदेसदै चहि जीविकाबिनु ताहि ॥
दियभेजि सूबा सिंधुपार तथा अनादर दाहि ॥
वलि कहिय परिजन तव रहैं इहँ जाम ताम बिसास ॥

१समूह सहित ॥ ४१ ॥ २ क्रियां मात्र ३ पास के लोगों[सेवकों]से ४ शत्रु के लोकों का समूह रहा ५ आधार ६ जल से बाहिर होकर मीन (मच्छी) आधार सोचै जैसे ॥ ४२ ॥ ७ उससे ८ नजराना ९ पुत्रों से सलाह करके १० उसके द्वारा उसके पिता (कासिमखान) को ॥ ४३ ॥ ११ नजराना इच्छानुसार देकर१२समय के अनुसार (सदृश) ॥ ४४ ॥ १३अरजी १४ सेवक ॥४५॥ १५जब तक तेरे घर के सब लोग यहां रहैं १६ तब तक ही विश्वास है

नहितो निलज्ज वहैहि तू हमरोहु चाहत नास ॥४६॥
सुहि मन्त्रि गो जसवंत सिंधुहिँ लंघि कावल सीम ॥
दिल्ली रहे सब तास परिजन आस जानि कहीम ॥
तिम इक्क१गर्भवती हुती जसवंत रानिय तत्थ ॥
सब तास चाहिरहे प्रसूति गहे वडे मह सत्थ ॥४७॥
पैंतीस सत्रह१७३५सालपैं इम दिष्टिके अनुसार ॥
कछु काल जातहि बाल भो तस अजित१सिंह कुमार ॥
इन गूढ रक्खिय तोहु सुत वह जानिकैं अवरंग४०।३॥
सूची पठावहु बाल अप्पहिँ जोधपुरही संग ॥४८॥
इन यौं विचारिय मारिवे सिसु साह संगत अँज्ज ॥
कहिमुक्कली अबही न भो ढिग तोहु प्रसवन कज्ज ॥
जान्यौं न आसय साहको पर एहु सुनि अतिजोर ॥
अपनौं अनीकैं पठाइ तिन्ह दल विंट्यो चहुँ४ओर ॥ ४९ ॥
अरु यौं कहाइय जो न भेजहु पास बालक एह ॥
न वहोरि ताकहँ जोधपुर मिलि है मुधा किम नेह ॥
उन देखि प्रत्युतैं वेढैं अप्पन मारिबोहि प्रमानि ॥
कछु रीति कट्टन बाब चिंतिय वंस रक्खन कानि ॥५०॥
गोविंद बनि तँहँ ब्यालधाइक वेस अप्पन गोइ ॥
धसिगो चमूविच व्है स्व डेरन जेमतेम धिजोइ ॥
कछु विंत्त इक्क१कैरंड रक्खि करंड इक्क१कुमार ॥

१यही हमारे डेरों को लूटनेवाला है ॥४६॥२अटक नदी को लांघ कर ३प्राचीन आशा अर्थात् जोधपुर की आशा ४ उत्सव सहित ॥ ४७ ॥ ५ भाग्य के ६ बालक ७ छाने ८ सूचना की ९ जोधपुर साथ ही देवेंगे ॥ ४८ ॥ १० आज ११ प्रसव होने का कार्य १२सेना१३सेना को घेर ली ॥ ४९ ॥१४वृथा स्नेह क्यों करते हो १५उलटा १६अपने को घेर कर१७विचार अथवा प्रसंग ॥५०॥ गोविंददास भाटी तहां १८कालबेलिया बना १९अपना लिबास छिपाकर२०धन २१ टोकरे (करंडे) में रखकर एक करंडे में कुमार अजितसिंह को रक्खा

कढिगो सु मंगत टूक रोट्टिन भाखतो जयकार॥ ५१ ॥
आजन्म रक्खन बाल समुचित भै समस्तन आनि ॥
तिम दुर्गदासकबंध त्यों रघुनाथ भट्टिय मानि ॥
इनसों कह्यो तुम जाहु द्वैतहँ उच्चरी इम एह ॥
यह साह छन्न करी इहाँ मचिहै ब सस्त्रन मेह ॥ ५२ ॥
जहँ सर्व तुम जुत स्वामिके रनिवासलों कटिजाइ ॥
कहि ए तहाँ दुवक्यों टरैं हम धर्म हीन कहाइ ॥
उनको तऊ हठ देखि दोउन उच्चरी पुनि एह ॥
भवदीय मरनं निभालि द्वैआसिपूत करि निजदेह ॥५३॥
पीछैं उभैकाढिजाइकैं रहिहैं सदा सिसु पास ॥
इम सौंह लै जवही कही तवही लही उन्ह आस ॥
करि कोप यह सुनि साह तव अवरोध निश्चय काज॥
सैंह मुक्कलेनरवेस नारि रु सौविदल्लसमाज ॥ ५४ ॥
तिन जाइ इम जसवंतको अवरोध सोधिय तौम ॥
परखी सु सद्य प्रसूतिका जसवंत रानिय जौम ॥
न लख्यो तथापि प्रसूत बालक त्योंहि आइ निवेदि ॥
रिस साहकै वढती रचात भये प्रलुब्धन भेदि ॥ ५५ ॥
खिजि साह आक्खिय अस्तखानहिं जाइ तू अति जोर ॥
न मिलै जु सिसु तो पकरि नारिन आनि व्हाँ हनि और॥
सुनि अस्तखाँ इम साह सासन संक्रम्यो सह सेन ॥
इत त्यों कबंधन अंगम्यों रनिवास कट्टन ऐंन ॥ ५६ ॥

---

१ रोटी का टूक मांगता हुआ ॥ ५१ ॥ २ जन्म पर्यन्त ३उचित ४अब ॥५२॥ ५ जनाना ६ आप मरना ताक कर ७ खड्ग से अपने शरीर को पवित्र करके ॥ ५३ ॥ ८ सौगन लेकर ९ जनाने में निश्चय करने के लिये १० साथ भेजे ११कंचुकिओं (नाजरों) के समूह को ॥५४॥ १२जनाना १३तहां १४तुरन्त की बालक जननेवाली स्त्री१५उस समय (जहां)१६लोभियों को भेदकर ।५५। १७स्त्रियों को पकड़ ला और अन्य को मार १८चला. जनाने को काटना १९अंगीकार किया २० घर में ॥ ५६ ॥

प्रविसे वरोध[1] सपिंड[2] भट लै लै विकोस[3] कृपान ॥
हनिबेलगे निज स्वामि[4] नारिन मन्नि निज वपु हान ॥
हड्डी६१२जु कमर्वती१६५।३हुती तिनसौं कह्यो तिहिं तत्थ॥
हनिकैं हमैं मरिहो कहो तँहँ कोन पिक्खहि हत्थ[5]॥५७॥
सुनि यौं कह्यो तिन स्वामिनी मरिवो न तंत्र[6] प्रमान ॥
तुम हत्थ पिक्खन जो रहो अब तो गहैं तुम कान[7] ॥
हठपुव्व[8] वे न हनैं१ गहैं२गहिवो विचारनहार ॥
दिल्लीस पित्थल[9]१७ ।१से इहाँ दृष्टांत केहि उदार ॥ ५८ ॥
भटवेस कर्मवती१९५।१ सज्यो तँहँ इक्खि सो तिन्ह भाव ॥
छुरिकाँ[10] उभैरखैर[11] मारि छत्तिय वेढि कोचँ[12] बनाव ॥
अपनैं सपिंडन[13] इक्खतैं यह सज्जि यौं हुव संग ॥
भट ते सुरे इम ठानि खिल्ल[14] सब भूप नारिन भंग ॥ ५९ ॥
अपनैं प्रवीरनमैं रही हड्डी सु गज आरूढ[15] ॥
गहि छत्र१चामर२आदि निजपति राजचिन्ह अगूढ[16] ॥
इहिं बीच सह बल१पुव्व[17]बल२मिलि अस्तखानहु आनि ॥
प्रतिवेन भेजिय अर्भ[18] अप्पहु के दिखावहु पानि[19] ॥६०॥
करि हल्ल मिच्छनसौं भिरे तँहँ धीर बीर कबंध ॥

---

१ जनाने में घुसे २ सपिण्डी (सात पीढि के भीतरवाले) उमराव ३ खड्ग निकालकर ४ अपने स्वामि की स्त्रियों को ५ तुम्हारे हाथों (प्रहारों) को कौन देखेगा ॥ ५७ ॥ ६ मरना अपने आधीन नहीं है ७ आदर ८ हठ पूर्वक ९ दिल्ली के पति पृथ्वीराज ने बहुत मरना चाहा था परन्तु गोरी-शाह ने पकड़ना चाहा तो पकड़ ही लिया सो ऐसे कितने ही दृष्टान्त विद्यमान हैं ॥ ५८ ॥ दो ११ तीक्ष्ण १०छुरियां छाती में मारकर १२ कवच से ढक ली १३ अपने सपिण्डों के देखते १४ बाकी के । ५९ । १५हाथी पर सवार रही१६प्रसिद्ध१७पहिले भेजीहुई सेना से १८ बालक को सौंपो १९ हाथ दिखाओ (युद्ध करो) ॥ ६० ॥

हट्टी६१ लरी विच अट्ठ८ हत्थिन स्वामिबेस सुसंध ॥
इक१जामलौं घमसान अंकुरि पूर सत्रुन मारि ॥
पैररक्खि कर्मवती १६५।१परी बपु खंडखंड बिथारि॥ ६१ ॥
रट्ठोर सूर सबै रहे रन बाढ झारि विचित्र ॥
पहिलैं कहे दुव२ते कढे करि काय घाय पवित्र ॥
धरि अग्ग ते खिल्ल लैगये कतिदूर फोज धकोइ ॥
दै अस्तखानहिं प्रानसंसय निक्खसे इम दोइ ॥ ६२ ॥
पैंतीस सत्रह१७३५ साकपैं अतिघोर रन हुव एह ॥
दुंव२घाँ हजारन व्हाँ भये तिम मृतक१घायल देह२ ॥
पँहु जो रह्यो इत सिंधुपार सु जानि सुंहु जसवंत ॥
ऐसो लग्यो भुवलोभ जिहिं समुझ्यो न आगम अंत॥६३॥
इत भूप दक्खिनदेस भावपुरा रह्यो दस१० अब्द ॥
सवघाँ संपान कृपान साधन बिस्तरयो जस सब्द ॥
अब अट्ठपावक बाजि भू१७३८सक रौंध२लग्गत एह ॥
अह पक्ख मेचक२अष्टमी८ दिवँ गो विहाइ स्वदेह ॥६४॥
विधि प्रथम१पंचम५।२छट्ठ६।३सप्तम७।४नवम८।५दसम१०।६विवाह
पहिले मरी खट६ए प्रिया निज भक्ति सौं भजि नाह ॥
इनमैंहु सप्तम७ऊढ इक१पहिलैं मरी पतिपास ॥
खिल्ल जे रही खट६ते जरी अवसौंन अब खिन तास॥ ६५ ॥
दूजी।२।१रु चोथी४।२अष्टमी८।३बुंदी भई हुतदेह ॥

१श्रेष्ट प्रतिज्ञा से२प्रहर तक३युद्ध में खड़ी होकर४शत्रुओं को मारकर॥६१॥५घावों से शरीर पवित्र करके६पाकी की राठोड़ी फौज को आगे धर कर धका ले गये ७प्राण का सन्देह ॥ ६२ ॥८संवत् में ९दोनों ओर १०राजा (यशवन्तसिंह) ११ भूमि का लोभ १२ अन्त समय के आगम को नहीं समझा (यशवन्तसिंह इस से थोड़े हीं समय पीछे मर गया इस कारण अन्त का आगम लिखा है)॥६३॥ १३ सब दिशाओं में १४ हाथ के साथ खड्ग के साधन से १५ वैशाख मास१६ दिन१७कृष्णपक्ष. अपना शरीर छोड कर १८स्वर्ग को गया ॥६४॥ १९पति का सेवन करके२०विवाहिता२१बाकी२२उसके अन्त समय में ॥६५॥ २३सती हुई

तीजी३१तथा एगारही११२अरु बारही१२।३ढिग एह ॥
बुंदी१तथा तहँ२द्वै२हि थान जरी खवासि बतीस३२॥
इम अठतीस२८जनीन सहदिवपत्त हड्ड९:नईस॥६६॥
पहुकै सुता इक१अन्नपूरनिकाखवासि प्रजात ॥
सीसोद वीरसकेर सूनुहि ताहि व्याहिय तात ॥
जामात सो रघुनाथ नामक देह रक्खि जनेस ॥
ताके समान पटा हु ताकहँ दत्त बुंदियदेस ॥६७ ॥
बुंदी सुन्यौं नृप मरन निश्चय ताहुसौं सुनि बेग ॥
तब हड्ड९१दुर्ज्जन१९६।१नाम दुर्ज्जन स्वामिपर लिय तेग॥
पति एह बलवनि ड्रंगको गोपालको१९५।१खल पुत्र ॥
सहसा मरयो सुनि स्वामिको तब सो अधर्म तनुत्र ॥६८॥
अति लुब्ध भिल्ल११रु मेर१मैनन३जोरि लोभ उपाय ॥
बुंदी प्रसू निज भोग बंछि चढ्यो सु लोलुप चाय ॥
जिहिं घस्र बुंदिय भूप निपतन सुद्धि पहुँचिय जाइ ॥
पहुँच्यो सु दुर्जन१९६।१ताहि वासर वेढपुर प्रकटाइ ॥६९॥
तिहिं काल मातुलदेवि१९५।२आदिक उक्त रानिय तीन३।
पति सत्थ होन खवासिगनजुत निक्खनी जलपान ॥
अरजी सुनी तहँ दुष्ट दुर्ज्जन१९६।१ड्रंगं लग्गिय आनि ॥
महिपाल निज अनिरुद्ध१९७।१पंडह१५अब्द वय सिसुमानि ॥७०॥
सीसोदनी२प्रति सर्बनैं अरजी निवेदिय एह ॥
इह कोन अँग्ग लरैं मरैं हम अप्प जग्न अनेहँ ॥

१स्वर्ग गया ॥६६॥२राजा के ३पासवान स्त्री से उत्पन्न ४पिता ने ५जमाई ६राजा ने अपने देश में रख कर ७दिया ॥६७॥८वाव [हड्ड] दुर्जनसिंह ने ९अचानक १०अधर्म का कवच ॥६८॥ ११अत्यन्त लोभी १२बुन्दी रूपी अपनी माता से भोग करना चाह कर १३जिस दिन बुन्दी के राजा के मरने की १४खबर १५उसी दिन नगर के घेरा लगा कर ॥ ६९ ॥ १६पुर के आ लगा (घेर लिया) है ।७०। १७ किसके आगे १८ आपके जलने का समय है

बलि सत्रु तक्कत छिद्र बाहिर देखि यौं[1] कछु देर ॥
करिकैं जरो लखि जुद्ध विग्रहु व्है न ज्यौं उतकेर ॥ ७१ ॥
सीसोदनी[2]सुनि यौं तनैं अनिरुद्ध१९७१बुल्लि समीप ॥
सबसौं कह्यो यह सूनु[3] मन्नहु याहि स्वीय महीप॥
तासौंहु अक्खिय रक्खि तू सुत स्वीय[4]जन सतकार ॥
हमसंग होहु न सत्रुसव्वहु पिल्लि चंड प्रहार ॥७२॥
सोको टेरे[5] काढि जारि आवहु जोध इक्कहजार१००० ॥
कलि[6] भूप जुत खिल जित्ति दुर्जन१९६१होहु जय जसकार[7]॥
तिन्ह छार वाग कहे जिते१०००टरि लैगये भट तत्थ ॥
सहगोन ठानि विधानसौं तिन त्यौं करयो पति सत्थ ॥७३॥
पुर कोटपैं इत सज्ज भट करि दुर्ग तोपन प्रेरि ॥
गन जन्नकुन्न करे अरातिन लुत्थिलुत्थिन गेरि ॥
अनिरुद्ध१९७१के इम जुद्धमैं दुव[10]जाम होत अतीत[11] ॥
भज्जिगो सु दुर्जन[12]१९६१रुद्ध६१दुर्जन ताहि वासर[13] भीत ७४

सौराष्ट्री दोहा ॥

भाऊ१९५१नृप भव[14]भूत, संवत नभ वसु नृप१६८०समय ॥
रुद्ध६१नकुल पुरुहूत[15], तिथि सतह१७१५सक भो तथा ॥ ७५ ॥
अब वसु गुन अत्यष्टि१७३८अष्टमि८अह[16] माधव[17]२ असित२ ॥
नियति करी बपु नष्टि, सोक भयो अज्जन[18] सबन ॥ ७६ ॥
अब तस निर्मित ऐन[19], लखनकरहु प्रिय लोक सब ॥
निरखत व्है सुख नैन, सर५ऐसे आयत[20] रुचिर ॥ ७७ ॥
मंडिय महलनमाँहिं, सौध[23] मुकुटमंदिर सता१९४१२ ॥

---

१ इसकारण ॥ ७१ ॥ २ इस पुत्र को ३ अपना राजा मानो ४ अपने लोगों का ॥ ७२ ॥ ५ छटे हुए ६ युद्ध में ७ यश करनेवाले ८ शत्रुओं को ९ लोथ पर लोथ गिरा कर १० दो प्रहर ११ व्यतीत १२ दुष्ट दुर्जनसिंह १३ उसी दिन डरकर ॥ ७४ ॥ १४ जन्म हुआ १५ इन्द्र ॥ ७५ ॥ १६ दिन १७ वैशाख वदि १८ सर्व आर्यों को ॥ ७६ ॥ १९ उसके बनाये हुए स्थान २० चौड़े (बड़े) ॥७७॥ २१ महल

ऊपर तस इक[1] औहिं, महलसु[2] भाऊ१९५१[2] निर्मयो ॥ ७८ ॥
अध[3]महल्लन विच एम, मंजु[4] पृथुल[5] मोतीमहल ॥
तँहँ कुमारपन तेम, निबस्यो यह नय[6]मैं निपुन ॥ ७९ ॥
अध्यात्मादिकदास, वैष्णवकी[7] विज्ञप्ति[8]तैं ॥
नियत पांथ[9]श्रमनास, नृपति स्थान इक निर्मयो ॥ ८० ॥
पुर लक्खेरिय पास, दिपत कोण ईसान दिस ॥
अधिप पूरि तस आस, मंदिर१ वापी[10]२ निर्मये ॥ ८१ ॥
ताकी निर्मितिकाज, लूणकरण कायथ लखित ॥
नरिन्द भाऊ१९५१ अधिराज, लूणाँबाय प्रसिद्ध हुव ॥ ८२ ॥
उपवन[11] विरच्यो एक१, रत्नबाग ढिग जो रुचिर ॥
बहुरि[12] दूजो२ सविवेक[13], फूलसरोवर तट फँवत[14] ॥ ८३ ॥
पंति विविध प्राकार, जो बहरि जैलजंल[15] जुत ॥
अब[16] जीरन उद्धार, किय जाको प्रभु आप किल[17] ॥ ८४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेवनिदेशतत्पुत्रालमगुग्गेरपतिकृष्णसिंहछद्महनन १, कृष्णहननानन्तरभावसिंहस्यानिरुद्धपुत्रीकरण २, योधपुरराज्यप्रदानहेतुप्रार्थितौरंगजेवदिल्लीरक्षितस्वावरोधयशव-

---

१ है २ भाऊने बनाया ॥ ७८ ॥ ३ नीचे के महलों में ४ सुन्दर ५ बड़ा ६ नीति में ॥ ७९ ॥ ७ अध्यात्मदास की ८ अरज से ९ पथिक [मार्ग चलनेवाले] लोगों का श्रम मिटाने के लिये ॥८०॥ १० बावड़ी ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ११ बाग १२ फिर १३ विचार पूर्वक १४ शोभायमान है ॥ ८३ ॥ १५ फव्वारों सहित १६ हे प्रभु जिसका जीर्णोद्धार आपने १७ निश्चय किया है ॥८४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भाऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञानुसार औरंगजेब के पुत्र आलम का गुग्गैर के पति चहुवाण कृष्णसिंह को छलघात से मारना १ कृष्णसिंह के मारेजाने पीछे भाऊसिंह का अनिरुद्धसिंह को अपना पुत्र बनाना २ जोधपुर खालसे होजाने के कारण औरंगजेब को अरजी देकर राजा जसवन्तसिंह

न्तसिंहकाबुलाक्रमण ३, यशवन्तसिंहात्मजाजितसिंहजन्मसमका-
लनिःशलाकतन्निष्कासनानन्तरकृतयवनेन्द्रसैन्ययुद्धयशवन्तपत्नी-
हाडीमरण ४, दक्षिणजनपदभावसिंहपञ्चत्वप्राप्तावनिरुद्धसिंहपट्ट-
प्रापण ५, दुर्जनसिंहबुन्दीरणपराजयवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥
आदितः षट्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥

का अपने जनाने को दिल्ली में रखकर काबल के सूबे पर जाना ३ यशवन्तसिंह के पुत्र अजितसिंह का जन्म होने पर उस बालक को छाने निकाले पीछे यशवन्तसिंह की राणी हाडी का बादशाही सेना से युद्ध करके काम आना ४ बुन्दी के राजा भाऊसिंह के दक्षिण में देहान्त होने पर अनिरुद्धसिंह का पाट बैठना ५ हाडा दुर्जनसिंह का बुन्दी से युद्ध करके हारने का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छतीस २३६ मयूख हुए ॥

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथाऽनिरुद्धसिंह१९६।१चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

करि उत्तरविधि निज करन, वय किसोर जय बुद्ध ॥
तीजी ३ तिथि बैठो तखत, राधे२विसद१ अनिरुद्ध१९६।१ ॥१॥
किते विसद१तेरासि१२कहत, अधिपभाव अभिसेक ॥
भाऊ१९५।१ठाँ अनिरुद्ध१९६।१मो, अंक गनितं घटि एक१।२।
कह्यो प्रथम तुम कृष्ण१९६।१को, यातैं तिंहिं क्रम अंक॥
अब भाऊ१९६।१सुत अंक इहिं,इहिं क्रम गनित असंक।३।
एट्टदिवस मंगल प्रसरि, सब उपदा१बलि२साधि ॥
भट१अमात्य२परजन३भये, उर प्रसन्न तजिआँधि ॥ ४ ॥
पीतंबर१कुलइष्ट प्रभु, जजि कुलदेवी२जुत्त ॥
भाऊ१९५।१विधि पालतभयो, अवनी दुरित अछुत्त ॥ ५ ॥
ईंक१ठाँ भावी१भूत२अब, बरहिं ससंतति व्याह१ ॥
वर्त्तमान वेलि वरनिहैं, आदरि क्रम उच्छाह ॥ ६ ॥

(घनाक्षरी)

भूत१भावी२कीने छ६विवाह अनिरुद्ध१९६।१भूप,
चउ४द्वे२सुता त्यों भावी ये लहे छ६तोकं ॥
पुव्व व्याह जादवी करोली रत्नपाल पुत्री,
व्याहि स्यामकुमरि१९६।१वैनियक करे विसोक ॥

१ वैशाख शुक्लपक्ष में ॥ १ ॥ पीढियों की २ गणना के अंकों में एक अंक घट कर ॥ २ ॥ ३ गोद आने के कारण पीढियों की गणना का जो अंक कृष्णसिंह के नाम पर आया था वही अंक अनिरुद्धसिंह के नाम पर आया इस कारण एक अंक घट गया ॥ ३ ॥ ४ नजराना ५ न्यौछावर ६ प्रजा के लोक ७मन की पीड़ा छोड़ कर ॥ ४ ॥८पूजन करके ९पाप से अछूती[विना स्पर्श की हुई]भूमि १०पहिले और पीछे के सब विवाह और संतान एक ही स्थान पर कहेंगे ११फिर ॥ ६ ॥ १२ बालक १३ याचकों को शोक रहित किये

नाथाउति दूजी२लाडकुमरि१९६।२नमानाँ स्वीय,
भट जसवंतसुता अन्वय चुलुक्य *ओक ॥
†वापी जुग२बाग एक१जाके बनवाये प्रभु,
अज्जहि प्रसिद्ध पूर लहत प्रसंसा लोक ॥ ७ ॥
देवी हर्षदा सौं दीप पच्छिम३।५प्रदेस पर,
बापी बनी एक१यह सो हैं बडे विस्तार ॥
साखांपुर देवपुरा ताके जो समीप बापी,
दूजी२सो रु ताहीके समीप बाग१।३छविदार ॥
याही चालुक्कीके वडे अंगज भये ए उभै२,
सूर बुधसिंह१९७।१जोधसिंह१९७।२क्रमतैं कुमार ॥
बापी नाथाउति२नैं बनाई पहिली१जो वडी,
मुद्रा तहँ लागी मानैं द्वै अयुत द्वै हजार२२०००॥ ८ ॥
व्याही तीजी३दक्खिनमैं डालाही बुलाइ भटि-
यानी चंद्रकुमरि१९६।३भवानीदासपुत्री भूप ॥
कन्या फतेसिंहकी नरूकी बखतकुमरि१९६।४कको-
रकी बिबाही कछवाही चोथी४रुचिरूप ॥
प्राची१खाननामक खवासकी हवेलीपास,
जाकी बापिका१है लख्यो पुण्य सत्र१जसजूप ॥
जंदाकेर ताकिया समीप बाग१।२जाको ताल,
जायवंतसागरतैं उत्तर४।७छिति अनूप ॥ ९ ॥
पंचमी५झलायपुर व्याही गजसिंहपुत्री,
राजाउति रानी रामकुमरी१९६।५नियतनाम ॥
ताकै द्वै२तनूजा द्वै२तनूज चउ४तोकैं तहाँ,

---

* सोलंखियों के घर में †बावड़ी ॥७॥ १शहर के बाहर का पुरा २ पुत्र ३ रुपये ४ प्रमाण ॥ ८ ॥ ५ रूप में क्रान्तिवाली ६पूर्व दिशा में ७बावड़ी ८पवित्र यश ९ यश रूपी खंभ युक्त १० जैतसागर ॥ ९ ॥ ११निश्चय १२ पुत्रियें १३ बालक

कुसलकुमारि१६७।१*कल्यानादिककुमारि१९७।२ताम ॥
ए वडी सुता द्वै२द्वै२भये त्यौं इनके अनुज,
वाल अभिधातैं अमरेस१९७।३रु विजय१९७।४वाम ॥
दुर्ज्जनादिसिंह सुता छठी दुवलानाँ लाड-
कुमरि१९६।६सनाम व्याहयो चालुकौ छवी ललाम॥१०॥
भूत१पहिले१ द्वै२पिछले च उ४विवाह भावी३,
भावी३सर्व संतति कही ए अनिरुद्ध१९६।१केर ॥
वर्त्तमान२जानौं विधिसौं इम तखत वैठि,
वर्ष तिथि१५ वें विच सह्मारयो राज्य ताही वेर ॥
साहपास भेजन जथोचित सचिव सोधि,
सबन निवेदी वेनीदत्त है वचन सेर ॥
याहि कछु सासन दै सासन करहु एह,
आनौं फरमान अव दै अरज व्है न देर ॥ ११ ॥
वेनीदत्त व्यासकौं निवेदि ऐसी पंचननैं,
सुल्वपत्र सासन गहायो वारवासि१ ग्राम ॥
हाडा६१ जगभानु१द्विज नागरप्रताप२हेरि,
ताकै संग दै ए द्वै २ पठायो वह दिल्ली ताँम॥
रीति अनुसार अनिरुद्ध१९६।१वस बुंदी राखि,
दीनौं फरमान साह व्यासहिं लिखे लै दाम ॥
लोभी परगनाँ तोहू ए दुव २ उतारिलये,
नाम मुख्य तामैं खेरावाद१ रु वरोद२ नाम ॥ १२ ॥
मुख्य उपदा१वलि२रहे खिल स्वयंमिलन,

*कल्याणकुमारी तहाँ छोटा नाम से दुर्जनसिंह १सुन्दर ॥१०॥२पहिले हुए ३ आगे होने वाले विवाह और आगे होनेवाली ४ सन्तान ५ अवस्था ६ अरज करी ७ बोलने में सिंह, इसको कुछ ८उदक ग्राम देकर हुक्म करो ॥११॥ ६ तांवा पत्र देकर वारवासी नामक ग्राम उदक दिया १०तहाँ ॥१२॥ ११नजर १२ न्यौछावर १३ वाकी १४ अपने मिलने पर

सेस बिंधि साहि आयो बेनीदत्त ताके साथ ॥
सेस अवनीसौं फरमान लै लिखितसिद्ध,
आये पंच५अहदी हजूरके पसारे हाथ ॥
धर्म१बसना२दि रीति उचित तिन्हैं दै भूप,
नाइ सिर ठाढे फरमान लयो बुंदीनाथ ॥
मरत महीप भाऊ१९५।१देस इत दक्खिन२।३मैं,
अमल अरीनको लग्यो बढन लै लै आथ ॥ १३ ॥
अकबर४१।४ चोथो ४ अवरंग४०।३ को तनय इनैं
जनकसौं जनक करी जो विधिमैं बिचारि ॥
कोपपाल हो खल कुपाचता कितीक करि,
सो अब कढ्यो भाजि सखा लै मंत्र अनुसारि ॥
भागपुर१बीजापुर२ पत्तन सिताराऽभूप,
एते अपनावैं अवरंग४०।३ इला धक धारि ॥
जाइमिल्यो इन३मैं कह्यो सो४साहजादा टेक,
पापकी पकरि संगी भेदसौं कतिक टारि ॥ १४ ॥
मालवके सूबापैं बहादुरखाँ१ भेजि मीर,
आलम४१।२।२अवंतीमैं पठायो अवरंगाबाद ॥
कासिमको तनय अमीरखान३काबलके,
सूबापर भेज्यो साह प्रीत अधिके प्रसाद ॥
प्रेर्यो असतखान४दुर्गदास१रघुनाथ२पटु,
एह न ठिगायो दुर्गदास१भट अप्रमाद ॥
मिच्छन प्रसादी रघुनाथ२जाइ मार्यो बंदै,

---

१ साधि (विधि साधकर) २ स्वर्ण वस्त्र आदि ३ खड़े होकर शिर झुकाकर ४ धन ॥ १३ ॥ ५ पिता औरंगजेब ने उसके पिता शाहजहां को कैद किया सो ६ पचावट (सहनता) नहीं करके ७ सलाह के ८ भूमि को ॥ १४ ॥ ९ प्रसन्नता से १० सावधान ११ म्लेच्छों की प्रसन्नता चाहने वाला १२ कहते हैं

साह पहिलैंही इन्ह लच्छन बिनु बिखाद ॥ १५ ॥
जब जसवंत जात अर्भक अजितसिंह,
गोइंदादिदास भाटी कापालिक बेस गहि ॥
लै कढ्यो करंड धरि साहको कटक लंघि,
बंसथिति हेतु स्वामिधर्महिं बिसेस बहि ॥
सिसुके सहाई दुर्गदास१ रघुनाथ२ द्वै२ ही,
काढे नीठिनीठि कढे रारिहु पुरोग रहि ॥
काहु बिप्रगेह राख्यो गोइ सिसु केते कहैं,
केते कहैं संभव बन्यौं त्यौं देस१काल२ सहि ॥ १६ ॥
पीछें रुट्ठऊर१ भाटी२ आसन उऔर३ पकरि,
लूटत भये जे लागि दिल्लीके द्रविनं देस ॥
बिरले पुर नबाब दीपक जरन दये,
अप्रहतें राखि भूमि जोधपुरकी असेस ॥
गोपें अधिकारी१ कहतैं कति बनिक२ गहे,
धूंमि डारि धरनी धुजावत जन धनेसैं ॥
साह तैसी तिनकी पुकारपैं पुकार सुनि,
दोउ२नके चित्रें मगवाइ देखे बपु१ बेसं२ ॥ १७ ॥
तोमरतैं बत्तकैं पकात फेरि पावकतैं,
आसुकर्ण अंगज१ तो ईख्यो अस्ववार१ एह ॥
भाटी सुरतानसुत२ छीवं सह भोजनपैं,

॥ १५ ॥ जसवन्तसिंह से उत्पन्न(पुत्र) १बालक २गोविन्ददास ३कापालिक का वेस करके ४ करंड (टोकरे) में रखकर ५बादशाही सेना को लांघकर ६वंश की स्थिति के कारण ७युद्ध में अग्रणी रहकर ८छिपाकर ॥१६॥ ९भाले पकड़कर १० धनवाले देश. नवाबों के विरले पुरों में दीपक जलने दिया ११घात(हानि)रहित १२ ग्वाल १३जला डाली १४धनवान् मनुष्यों को १५तसवीरें १६शरीर के वेस (पोशाक) ॥१७॥ १७भाले से फेरकर अग्नि पर १८बाटी [भाखरी]पकाता हुआ १९ आशकरण के पुत्र (दुर्गदास) को घोड़े पर चढाहुआ देखा २० सुरतान-सिंह के पुत्र (रघुनाथसिंह) की तसवीर भोजन करते मदोन्मत्त हुए की देखी

राच्यो रागरंगमैं गिन्यों सो सुखभोग गेह२ ॥
भेज्यो अस्तखान४तिनपैं अब प्रथित भाखी,
दुक्ख न मिटैगो दुर्गदास१ को जहाँलौं देह२ ॥
दावमैं लै याकों अहो ज़िमातिम छिद्र देखि,
मारे होइ मंगल नतो नहिं सुख अनेह ॥ १८ ॥
ऐसो लै निदेस अस्तखान अजमेर आइ,
दोउ२नको द्वै२घाँ मारिलैवेपैं चलायो दाव ॥
पायो सज्ज दुर्ग१व्है है सम्मुह कतिन पारि,
गँघानी अधीस गयो कढिकढि धीर धाव ॥
भाटी रघुनाथ२सो लवेराको अधीप भोगी,
घेर्‍यो दै अचानक वँदूकन असह्घाव ॥
करि जग कित्ति सुरतानसुत आयो काम,
पूगो त्यों सुरालय प्रवीरपनके प्रभाव ॥ १९ ॥
इतकों अवाचीरा३भ्राता अग्रजनि आलमपैं४१।२,
अनुज अकबर४१।४पठायो इहिंरीतिं पत्र ॥
जनक१सौं जनक२करी सो आप३जानतहू क्यों,
जबहु सूबापति[10] कैलहु अघ अमत्र[11] ॥
एकमत कीनैं भूप मैं तो इतके अखिल,
लेहैं कछु भाग लोभी जीति रिपु जनतत्र ॥
देहु जो निदेस तो हजूर हम हाजरी व्है,
छिप्र[12] बंदगीसौं धरैं रावरे सिरहि छत्र ॥ २० ॥
बैरिन मिटाइ जाइ दिल्लीके तखत बैठि,
आप सुलतान१जेठे[13]१लैहोरो२मैं रहो वजीर२ ॥

१ प्रसिद्ध कही २ समय ॥ १८ ॥ ३ दोनों ओर ४ दुर्गदास ५ ग्राम का नाम गांघांणी है ६ स्वर्ग ॥ १९ ॥ ७ दक्षिण दिशा ८ बडा भाई ९ शाहजहां से आपके पिता औरंगजेब ने की सो जानते हो तब भी १० सूबापति को क्यों कैद करते हो ११ हे पाप के पात्र १२ शीघ्र ॥ २० ॥ १३ छोटा

सुभट पितामहके जे मिले जनक३माँहिं,
तेसैं आपहूतैं मिलिहैं ते धरिहैं न धीर ॥
अग्रज४बहोरि आइहै न ऐसो अवसर,
फल जिन हाथ लग्यो खोवहु रहि फकीर,
वजत सदासौं वसुधा है यहै बीरनकी,
बोलि तो हजूर१सो रु चाकर२सो कोन बीर ॥ २१ ॥
अनुजको पत्र अवरंगाबाद आयो इस,
अग्रज समुझि अंतरंग न दिखायो एह ॥
अंतरंग ऐसे जिन फेरी बुद्धि आलम४१५२की,
भावी प्रतिकूल भो गुमावन वै कारागेह ॥
अनुज जो सम्मति लिखी सो करी अंगीकार,
पीछो पत्र पठयो निगूढ दरसाइ नेह ॥
न रह्यो निगूढ सो अधर्ममंत्र आलम४१५२को,
चारि१चेर२तच्छुनै लयो ही जानि साह लेहैं ॥ २२ ॥
पत्रको उदंत श्रुति वज्रसो यहै परत,
रंच न सक्यो रहि पिताहु विरच्यो प्रयान ॥
जवनै जवन अवरंग४०१३ अजमेरु आइ ॥
राजसिंह सुत यों प्रबोध्यो जयसिंहरान ॥
अकवर४१५४दुष्ट जो उदैपुर सरन आवे,
तो तुम न रक्खहु डारहु छल वितान ॥
सीसोदहु सासनके तंत्र लिखिभेजी सोहि,

---

१ शाहजहां के उमराव २ पिता औरंगजेब से ३ है बडे भाई ४ समय ५ फिर ॥२१॥ ६ छोटे भाई का ७ खानगी लोगों का ८ आनेवाला समय विरुद्ध हुआ ९ कैद में अवस्था गुमाने के लिये १० स्वीकार (मंजूर) करी ११ छाने १२ हलकारों और १३ नौकरों से १४ वह वृत्तान्त (तत् वह) सुन सुनकर १५ लेख ॥ २२ ॥ १६ पत्र का वृत्तान्त कानों में १७ वेग से वह यवन अजमेर आकर १८ राणा राजसिंह के पुत्र जयसिंह को समझाया

जोपै भीम अनुज[1] निवारयो तऊनैं सुजान ॥ २३ ॥
संवत भुजंग गुन सत्रह१७३८ सिसिर[3]समै,
साह इम रानकी लिखाइकैं सह प्रसाद[2] ॥
कुंच[3] अजमेरतैं अतित्वर[4] तदनु कीनौं,
बेलापट्ठ[5] जैवोही विचारि अवरंगाबाद ॥
आप दिस टोडा१राजमहल२ समीप आत,
बुंदीसहु जाइमिल्यो सम्मुह विनुविखाद ॥
गेहको प्रबंध करि जैसैं अनिरुद्ध१९१।२गयो,
सोपै सुनिये व लेंकथा[6]रस सरस स्वाद ॥ २४ ॥
बुंदीनृपको हो अवरंगाबाद सो विभव[8],
उदित कथासौं कछु पहिले समय आनि ॥
जज्जाउरईस मानसिंह १९५।१तनुजात महा-
सिंह१९४।९को पिता[10] ती रूपसिंह१९६।२मिल्यो प्रभु मानि॥
संग गै[12] पचास५०हे[13] छसै६००औ वीस२० वेगसैर,
तीनसै सकट३००रथ१बहैल२तदर्ध१५०तानि ॥
सत्ताईस२७तोप तथा तिन्ह उपहार[17] सजी,
पंचसै५००किरांची[18] लायो स्वामिधर्म पहिचानि ॥ २५ ॥
सवन सराह्यो रूपसिंह१९६।२कहि साधुसाधु,
पाछैं इम अैबो सुनि साहको समय पाइ ॥
सेवा१कुलदेवीकी पुरोहित सुंक[20]१हिं सौंपि,
नाथाउत चालुक किसोर२हिं प्रभु२बनाइ ॥

---

१ छोटे भाई भीमसिंह ने मना किया तो भी ॥ २३ ॥ २ प्रसन्नता के साथ ३ प्रस्थान ४ शीघ्र ५ जिस पीछे ६ समय ७ चतुर ७ उत्तम ॥२४॥ ८ ऐश्वर्य. वह कथा ९ पहिले कह दीगई है १० पुत्र ११ पोता १२ हाथी १३ घोड़े. १४ वेगवान् घोड़े; अथवा खच्चर १५ छकड़े १६ रथ और पोठिये छकड़ों से आधे फैलाकर १७ सामग्री १८ भार के छकड़े (तोपों की सामग्री भरे हुए छकड़े) ॥ २५ ॥ १९ श्रेष्ठ श्रेष्ठ २० नाम है

कर्मसिंह३वनिक नियोगी३ताकै पास करि,
उदैसिंह४कायथ मुनीम४करि सीम आइ ॥
गैनोलीपुरीको सेखा५ वनिक बुलाइ गुँली,
सेस ताकों देसको असेस काम५समुझाइ ॥ २६ ॥
हारा६मिरंधाकों कोटपाल अधिकार६दैकैं,
कल्पँपाल घासी७नाम आदि१वन२पाल७करि ॥
सेस अधिकारी जे पुरातनही राखि सबै,
इम बुंदी ताम अधिकारी ए७नवीन धरि ॥
दै रानी पुरा१तिम पुरोहित भवानीदास१,
संग लै मिल्यो यौं राजमहल समीप संरि ॥
साह विसवास्यो कहि नाती तू सता१९४१२को अब,
वीर चलि दक्खिन२१३हमारेसंग जीति अरि ॥ २७ ॥
रीति साधि उपदा१ निछावरि२ विरचि राजा,
पाइ प्रतिदेयँ तैसें साहसों इभ१पुरोगें ॥
सेना स्वीय सहित नरेश व्है यौं साह संग,
पुर अवरंगावाद पहुँचे जैंलूस जोग,
भावपुरहीमें अनिरुद्धको१९६।१निवास भयो,
छाइ तास चहुँ४घाँ वैरूथिनी विविधछोगें ॥
मिच्छ१पैले मानैं बुरहानपुरको वचन,
लोभी तऊ वेरहि प्रमानैं मरहट्ठ२लोग ॥ २८ ॥
लाखेरी पुरीके आद्रि घाँटेमें कढत दल,
बाँमी बंधदुर्ग१आइ लूटी पिछली वहीरें ॥

१आज्ञा करनेवाला२गुमास्ता३नाम है४गुल्मी(कुछ समूह की रक्षा करनेवाला अर्थात् हाकिम)॥२६॥५जाति विशेष; अथवा अधिकार विशेष६कोटवाल७कलाल को८पहिले थे उनको ही रखकर९चलकर॥२७॥१०नजर११विकृत१२हाथी१३आदि१४पुरातिथ; अथवा शोभा; अथवा तखत के योग्य१५सेना१६उत्साह॥२८॥१७पर्वतों का कठिन मार्ग१८राठोड़ दुर्गदासने१९भार बरदारी आदि सेना का पिछ-

*उपालंभ भेज्यो अस्तखानपैं †तमकि यातैं,
पीछैं खानदेसं गो अवंतीके अरचि पीरं ॥
सूनु साह आलम४१।२कौं जातहिं पकरि साह,
राख्यो अवरंगाबाद पासहिं विमति वीर ॥
आजम४१।३तृतीय३सुत तातैं भो प्रसन्न अति,
मूढ जान्यौं दिल्लीदंग मैंही बन्यौं हौं व मीर ॥ २९ ॥
संभा नाम कैतो हो सिताराको अधीस१उत,
प्रतिनिधि२को हैं मरहट्ठनमैं मुख्यपन ॥
अकबर४१।४चोथो ४ पुत्र ताके पास हो सो अब,
साह आयो सुनत निकासिदीनौं भीतिसन ॥
अँस्त गो उदैपुर व्हाँ रानहु न राख्यो ताहि,
धीज्यो जाहि दुर्ग१हिं टिकायो तिहिं विंबधन ॥
खानदेस अरजी पठाई यह अस्तखान,
तापैं पुनि भेजी चमू सुनतहि सद्यतँन ॥ ३० ॥
वाहिनी बहोरि अस्तखानके सहाय इम,
आई अजमेर सुनि संका दुर्गदास१आनि ॥
अकबर४०।४ताहूनैं निकासिदीनौं भीत वह,
काहूने नराख्यो पुनि साहकी करत कानि ॥
उत्तरि अटक तब साहको तनय एह,
मग्गमैं अमीरखानसौं दुरि कुसल मानि ॥
सरन बिचारि देस फारस गो ताम तिह,
रान नगरीके पातसाह राख्यो हित तानि ॥ ३१ ॥
काबुलसौं पच्छिम३१५बिलायत इरान कहै,

ला भाग*उलहना †क्रोध करके. उज्जैन के २पीर का १पूजन करके३जाते ही४ निर्बुद्धि ॥ २९ ॥ ५ अस्तखां. दुर्गदास ने उस ६धन के प्रतिबिम्ब को.ठहराया ७ तुरन्त ॥ ३० ॥ ८ सेना ९ आदर तथा ·य १०छिपाकर ॥ ३१ ॥

सूबा मुख्य जामैं गिनैं बारह१२ *द्रविन सार ॥
तिनमैं नगर मुख्य कर्मासाह१तबरेज२दिज-
फूल३सारी४कार्मा५नसहिद६जंबेदार ॥
रसद७ सखुर्रमादि१अस्तरादि२आबाद८।९,
रुसीराज१०रुलार११द्वंगें इतिमुखं है सुढार ॥
सवनमैं नामी राजधानी के सहर इस्फ-
हान१२।१ तिहरान१३।२उभैं२गिनिये जिहिं अगारें ॥ ३२ ॥
इस्फहान१पत्तन पुरानी१राजधानी उहाँ,
राजधानी नव्य२तिहरान२विरची वहोरि ॥
जाको पातसाह अवँलंब लखि साहजादा,
जो तस सरन गयो अकबर४१।४हाथ जोरि ॥
ताकौं उर लाइ विसवासि व्हाँ टिंकायो तानैं,
रहतो इहाँतो गहिलेतो पिता रन रोरि ॥
आलमकौं४१।२।१रोकि अकवर४१।४।२कौं भजाइ ऐसैं,
दक्खिन२।३रह्यो सो परपंक्खिन दलन दोरि ॥ ३३ ॥
नृप अनिरुद्ध१९६।१अरु मनवरखाँ२नवाव वीर,
द्वै२ए आजम४१।३पैं राखि अवरंगाबाद ॥
सूबा खांनदेसकी सम्हारि इन३कौं दै साह,
सज्जि आप सत्रुनपैं पहुँच्यो विनुप्रमाद ॥
ऐसी अनुकूल भई साहकी नियंति उहाँ,
संगर तिक३हिमैं चखायो जानैं जयस्वाद ॥
वीजापुर१लै तिम सिकंदर१पकरि वीर,
पुव्व१जय पायो नच्यो चउ४घाँ सुजस नाद ॥ ३४ ॥

---

*धनवान् १शोभायमान २ नगर ३ इत्यादि ४ सुन्दर ५ उस स्थान में ॥ ३२ ॥ ६ नवीन ७ आधार ८ देखकर ९शत्रु की सेना को विदारण करके ॥ ३३ ॥१० सावधान ११ सुलटा १२ भाग्य १३ तीन युद्ध में ॥ ३४ ॥

दूजै२रन भागनैर बलको *बरन डारि,
पानिबल जीति तानाँ साह२हु लयो पकरि ॥
समर तृतीय३जीतिलीनों गहि संभा३साह,
ऐसैं दाबि दक्खिन२।३लये ए बाँधि तीन३अरि ॥
नैन पुनि संभा३के निकासे यौं किते कहत,
दोलतादि आबादक४धाम ए सबैहि धरि ॥
आन तिनकी पर मरब्बतखाँ राखि तहाँ,
जीते सेस जिमहि सिपाहनके अग्रसरि ॥ ३५ ॥
पंचम५तनूज खानबखस४१।५हुतो जो पास,
तानि अनुकंपा राज्य उभय२सम्हद ताहि ॥
बीजापुर१भागनेर२दीने ए सवित्त१बल२,
दक्खिन२।३प्रभुत्व४दीनों साहपद२सीमासाहि ॥
प्रीतिपात्र हो यह५कुमार पैननारि पुत्र,
अधिक प्रसन्न यासों आप होइ लउ माहि ॥
पट्ट ताहि दैकरि अवाची२।३भुव पातसाह,
आयो पातसाह पीछो स्वीय जहाँस्थिति आहि ॥३६॥
बिजय त्रयी३लै दर्पी आइ अवरंगाबाद,
अभय निरंकुस भो अब समघातैं साह ॥
तीजे३सुत आजम४१।३बिचारि रह्यो साहतनै,
मैंही अब मुख्य लेहों अवसर दिल्ली लाह ॥
सैंक नव राम मुनि भू१७३१इत अटक सूबा,
नाम जसवंत मर्‌यो जोधपुर नरनाह ॥

* सेना का कोट डाल कर १ भुजा के बल से १ स्थान ॥३५॥ २कृपा फैलाकर ३ वेश्या का पुत्र४दक्षिण भूमि का पाट देकर. जहां अपनी५स्थिति६है ॥३६॥ ७ तीन ८ घमंडी ९. अंकुश रहित (स्वतन्त्र) १० समय पर ११ लाभ १२ विक्रम का संवत् १३ जोधपुर का राजा

साहनैं अजितसिंह तबहु बुलायो सोपैं,
भटन न भेज्यो राख्यो तिमहि *निगूढ एह ॥ ३७ ॥
आनंदादिराव१नाम संभाके सुभट इत,
बारहहजार१२००० बाहिनीसों वीर †बंध बल ॥
मीना जो सितारकी कितीक अब दाबी साह,
नेगके सहायतासैं हिंडनै न देत हल ॥
जितितित जात मार१लूट२हि मचात मत्त,
सो सुनि पुकार साह दे कितोक संग दलैं ॥
नृप अनिरुद्ध१९६१।१अरु मनवरखाँ२नवाब,
पठये उमैराए मुख्य तापैं न विलंबि पल ॥३८॥
सोलह१६समा वय नरेस अनिरुद्ध१९६१।१सूर,
सूचितं नवाब३लैकैं मित्रपनसैं समान ।
गाहे हठ लूटि बुरहानपुर को गरदैं,
जात मरहट्ठ रोक्यो सो पुनि न जायो जान ॥
ग्रामनाम कुंभारी समीपलौं पहुँचि गैल,
खंडन खलन अनिरुद्ध१९६१।१मनवरखाँन ॥
खंडन खिल्हारी भृंग१भालु२हिं रुकालभये.
घाँघाँ घुमडाइ कुसुमाकर सो घमसान ॥ ३९ ॥
बनिक धनिक कैदी१लूटको सकल बित२,
एतो पहुँचतही छुराये भीम अनुकारि ॥
बाँहिनो सितारको बिलोरिडारी व्हैव्है बीच,
मोरिडारी मिलत अनी कैं घनी मनुहारि ॥

---

* गुप्त मार्ग से ॥ ३७ ॥ † सेना से ‡ बल बांध कर १ भाले की सहायता से २ हल नहीं चलने देता ३ मस्त ४ सेना ॥ ३८ ॥ ५ वर्ष की अवस्था में ६ सूचना किये हुए नवाब को ७ घेरा ८ रोका ९ काट कर. खिल्हारी भँवरों ने सूर्य को रोका १० वसन्त ऋतु के समान काल ॥ ३९ ॥ ११ भीम के सदृश १२ सेना १३ मथडाली १४ कितनी ही

पाइ समता न सेख१मुगल२पठान३नकी,
तैसी चंड चाली चहुवानंनकी तरवारि ॥
मालिक समेत रूपे न रहे इकठे *आजि,
मठे मन नठे मरहठे स्वीय मद मारि ॥ ४० ॥
भूप अनिरुद्ध१९६।१को प्रबीर †असपिंड भ्राता,
‡ताम आयो काम नवरंग पोता४।८सुरतान१ ॥
सस्त्र दुव२लाये बुंदी अधिपके संहनन,
सूरसेज्जा इत१उत२के बहु समान ॥
नृप१रु नवाब२इम आये पाइ उभै दीनों,
साह रीझ१मैं सराह२को बिदित दान ॥
जासमैं बिरोधीमरहठनैं जितातित,
भीत करिराख्यो देस दक्खिन२।३बिकलभान ॥ ४१ ॥
दूजी२बेर बहुरि बहादुरखाँ१संग दैकैं,
भेज्यो मरहठनपैं साह अनिरुद्ध१९६।१भूप ॥
सिवापुर१कालोचा२दि ड्रंगन समीप सीम,
जुद्ध१मख२दूजोर२च्यो तोमर१बिदित जूप२ ॥
सत्रु१हवनीय२आप१दिच्छित२कृपान स्त्रुवा,
सिंधूराग१मंत्र२सहरंग१बेदी २अनुरूप ॥
जय१फल२ताको लै निवेद्यो साह आगै जाइ,
चाहि प्रीति तबहु सराहे जुग२ही चमूप ॥४२॥

---

* युद्ध में माही मन से भागे ॥ ४० ॥ † सात पीढी से बाहिर का भाई ‡ तहां १ शरीर २ शूरशय्या ३ चेत रहित ॥ ४१ ॥ ४ युद्ध रूपी यज्ञ ५ भाला है सोही प्रसिद्ध६यज्ञ थंभ है शत्रु है सो ही७होम का पदार्थ है और स्वयं८दीक्षित [यज्ञ की दीक्षा लेनेवाला] है९ खड्ग है सो १०होम करने का पात्र है ११ सिन्धवी रागिनी [बडाराग]है सो ही वेदमंत्र है १२ युद्धक्षेत्र है सो ही १३ वेदी [होम करने का कुंड] है १४ दोनों सेनापतियों

बालापुर तीजी३रारि त्यौं जुग२लह्यो बिजय,
यौं अब ममान्यौं आजि कोबिदं हे अनिरुद्ध ॥
अहितन ओघ अभिभूतहु रुके न इत,
चूनमैं दबाये चून मीठो जानि जेम युद्ध ॥
बीजापुर१भागनैर२केंहु जे जवन बचे,
मेल मरहट्ठनसौं जोरि अब तेहु जुद्ध ॥
धामधाम लूटनलगे यौं डारि धांटिनकौं,
पारत पुकारपैं पुकार बीरपन क्रुद्ध ॥ ४३ ॥
चोथी४बेर आंजम४१।३तृतीय३सुतकौंचढाइ,
सत्रुनपैं भेज्यो दै नरेस अनिरुध्ध१६६।१संग ॥
आनंदादिराव१मरहट्ठनमैं मुख्य उत,
जवन दु२घाँके जुरे इक्क१व्है त्रि३वलजंग ॥
दिल्लीकी वँरूथिनीको विक्रम असह देखि,
भाजत१जुरत२जुरि१भाजत२लहत भंग ॥
आगेंआगें धाटिनके उक्त अधिकारी अटे,
पीछेंपीछें साहपुल बिचरयो दमन बंगं ॥ ४४ ॥
दारा४०।१की सुता.जो व्याही आजम४१।३उचित देखि,
सोपैं ही तदीय संग बेगम सह सनेह ॥
पाइ छिद्र कोऊ परी सत्रुनके संकट सो,
ताहि लै वली ते परदाईं चले मुरि गेह ॥
सो परयो अलीअल व्है आजम४१।३मईंदं श्रुति,
आनिचित्त अँनख अचानक उछरि एह ॥

की प्रशंसा की ॥ ४२ ॥ १ युद्ध में २ चतुर ३ शत्रुओं का समूह ४व्याकुल होकर भी नहीं रुका ५ मूर्ख ६ धाड़ायतियों को ॥ ४३ ॥ ७ सेना का ८ बल ९ फिरे (चले) १० दंड देने.के भेद (व्यंग्य) से ॥ ४४ ॥ ११ पड़दे में लेकर (छिपाकर) १२ बिच्छू का डंक होकर आजम रूपी १३ सिंह के कान में पड़ा १४ क्रोध

भेजतभो भुजन भरोसा भाखि भूपतिकौं,
आनिपूगो यहहु मचावत सरन मेह ॥ ४५ ॥
ऐसैं अनिरुद्ध१९६।१पहुँचतही अरिन ओध,
सम्मुह पलटि जुरे घोर भयो घमसान ॥
मिच्छ१तो टरे व्हाँ बुरहानपुर कोल मानि,
काटे मरहट्ठन२के चखाइ घाय चहुवान ॥
स्वीयजन कैदी१अवरोधकी विभूति२सह,
जीतिकैं छुरायो उक्त बेगमको नरजान ॥
फोरयो घाय तीन३नृपके बपु लगे फवत,
पान१सान२पैनैं एक१वान रु दुव२कृपानं ॥ ४६ ॥
गेरे मुंड१केते फेरे रुंड२केते अंधगति,
तोरे तुंड३ केते काटे झुंड केते जयकार ॥
आनंदादिराव१ संतू२आदि मरहट्ठ उहाँ,
पंच५मुख्य पारे चीरिडारे घने अनुचार ॥
लोभ दै पलाद१गन रनके कुंतूहलि२न,
सकल रिझाये ढाहि संचय प्रहरि सार ॥
भंजिकैं सितारादल एक अनिरुद्ध भूप,
हरकौं निवेदे बीर तद्दिन प्रचुर हार ॥ ४७ ॥
बुंदीके भटनमाँहिं मुख्य झरे दुव२वीर,
फतेसिंह१चालुक पर्‌यो प्रबल बल फारि ॥
गोर१२ देवसिंह२दूजो२नारद रिझाइ गिर्‌यो,
अट्ठतीस३८ इतके रहे भट इतर रारि ॥

१बाणों का मेह २बुन्दी के राजा रत्नसिंह से युद्ध नहीं करने का बुरहानपुर में म्लेच्छों ने कोल किया था उसको मानकर ॥४५॥ ३ जनाने की सामग्री सहित ४ पालखी ५ सान से तीक्ष्ण किये हुए ६ खड्ग ॥ ४६ ॥ ७ अन्धे करके ८ सेवकों को ९ मांस भोजन करनेवाले ग्रीध आदिकों को १०युद्ध का तमाशा देखनेवाले ११ मस्तकों के बहुत हार शिव की भेट किये ॥ ४७ ॥ १२ गौड़

आनंद१ रु संतू२नाठू३नत्थेराव४ईस्वर५ए,
मुख्य मरद्द मरे और घने अनुसारि ॥
विजय१सनेत यों नरेस लायो बेगम२कों,
वाराह१ज्यों वसुधा२दितीकेसुतकों विदारि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

आजम४१।३मिलत लगाइ उर, बहुत नृपहिं बिरुदाइ ॥
राखी इज्जत तैं मरद, भाखी यों मन भाइ ॥ ४९ ॥
बहुत बड़ाई बेगमहु, पहुकी करि पतिपास ॥
अक्खी जो जात न यहै, व्है कुल१जस२असु३न्हास ॥५०॥
आजम४१।३जनकहिं दे अरज, नृप कहँ रीझ निमित्त ॥
प्रथित दिवाई गत पुहवि१, बलि पीछी सह वित्त ॥ ५१ ॥
महत देस वारा१ं मऊ२, दलि लघु खैराबाद३।१ ॥
चान्दुरनी४।२खेरी५।३चउ४हि, सहित बरोद६।४प्रसाद॥५२॥
खट६हि देस पट१भूखन२रु, आयुध३गय४हय५आदि ॥
दय विभव भूपहिं दयो, वीर सुजस संवादि ॥ ५३ ॥
इम सोलह१६सम वय अधिप, नियत उधारयो नाँम ॥
भटियानी ब्याहत भयो, तत्थहि डोला ताँम ॥ ५४ ॥
नाम चंद्रकुमरि१९६।३जु निपुन, जेसलमेरु प्रजात ॥
इम रानी तीजी३यहै, ब्याही नृप विख्यात ॥ ५५ ॥
पाये इम गत देस पुनि, सह जस१विजय२प्रसंग ॥
गत सुनसर्व देबोहु गिनि, रह्यो साह अवरंग४०।३ ॥५६ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी

---

१ हिरण्याक्ष को मारकर ॥ ४८ ॥ २ स्तुति करके ॥ ४९ ॥ ३ राजा की ४ प्राण ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ यश कहकर ॥ ५३ ॥ ६ वहीं डोला मंगवाकर ७ वहीं ब्याहा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ८ भाऊसिंह से गयाहुआ मनसब ॥ ५६ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति,

पत्यनिरुद्धसिंहचरित्रेऽनिरुद्धसिंहविवाहसंततिवर्णन १, बुन्दीपट्टले-
खनहेतुवेणीदत्तदिल्लीप्रेषण २, औरंगजेबपुत्राकबरतत्प्रतीपीभवन ३,
अकबरमन्त्रज्येष्ठात्मजालमौरंगजेबप्रतीपभावौरंगजेबससैन्यदक्षि-
णादिग्गमन ४, राठोडदुर्गदासयवनेन्द्रसार्थलुण्टन ५, कीलितालम-
मौरंगजेबक्रियत्कालदक्षिणानिवसनाकबरफारसदेशगमन ६, बुर-
हानपुरान्तिककृतमहाराष्ट्रयुद्धानिरुद्धसिंहाजमरमणीमोचन ७, अ-
निरुद्धवारां१मऊ२प्रान्तप्रत्यासादनं नाम दशमो मयूखः ॥१०॥

आदितः सप्तत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ ॥ २३७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

फैल्यो जस नृपको फवत, द्रुत इम दक्खिन२।३ देस ॥
हित सह साह प्रसन्न हुव, अप्पि विभूति असेस ॥ १ ॥
जीत्यो जुद्ध चउत्थ४जव, पाये दुव१प्रतिकूल ॥
इक भ्राता असपिंड इह, सामंत१८७।१ज कुलसूल ॥२॥
कूर सुपै अभिधान करि, दुर्जनसिंह१हिं दुष्ट ॥
भुजनेरी सासक भयो, स्वामिद्रोह संतुष्ट ॥ ३ ॥
बिस्वनाथ१कायत्थ बलि, फतैचंदसुत फुट्टि ॥

अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह के विवाह और सन्तानों का वर्णन १ बुंदी का पट्टा लिखवाने को वेणीदत्त को दिल्ली भेजना २ शाहजादा अकबर का औरंगजेब से बागी होना ३ अकबर की सलाह से बडे शाहजादे आलम का औरंगजेब से विरुद्ध होना और औरंगजेब का सेना सहित दक्षिण में जाना ४ राठोड़ दुर्गदास का बादशाह की वहीर को लूटना ५ शाहजादे आलम को कैद करके बादशाह औरंगजेब का दक्षिण में रहना और शाहजादे अकबर का भागकर फारस में जाना ६ बुरहानपुर के समीप अनिरुद्धसिंह का मरहठों से युद्ध करके आजम की हुरम को मरहठों से छुडाना ७ अनिरुद्धसिंह को वारां, मऊ का परगना पीछा मिलने का दशवां १० मयूख हुआ और आदि से दो सौ सैंतीस २३७ मयूख हुए ॥

१शीघ्र॥१॥२॥२मूर्ख ३ दुर्जनसिंह ॥ ३ ॥

संदगीस पलटयो सुपे, बससी धर्मविछुहि ॥ ४ ॥
मरहट्ठन सन पे मिले, दुवरहि ठानि प्रभुद्रोह ॥
उत१के पाये पत्र इत२, पापिन पाप प्ररोह ॥ ५ ॥
इत१के पत्रहु जात उत२,सुनें पिहितलिपि सज्ज ॥
जेम टरैं उत१के जवन१, उनतैं इत२के अज्ज ॥ ६ ॥
इत्यादिक सब मर्म इन, खल दोउ२न किय ख्यात ॥
प्रभुद्रोही जानें प्रभुहु, पत्तचरन पँहँ पातें ॥ ७ ॥
रीति काकगति अति चमक, प्रथम१सुद्धि यह पाइ ॥
भीत जुगरहि ढिगतैं भजे,लघुजन कुलहिँ लजाइ ॥ ८ ॥
दुव२भुजनैरी१संदरीर२, तब इन्हरथान उतारि ॥
बुंदी कहि पठई बहुरि, बिमतिन देहु बिडारि ॥ ९ ॥
दुवरन दये गेहन ढुरन, जामिक इतके जाइ ॥
इम अधमन जिम आदर्यो, अर्घ पर अघ अधिकाइ॥१०॥

(घनाक्षरी)

संवत गगन वेद सत्रही १७४०लगत समा,
दुर्जन१रु बिस्वनाथ२छन्न रहि बुंदी देस ॥
बिष्णुसिंह१९५।१सूनु राजसिंह१९४।४नाती बलभद्र१९६।१
बुंदी हो सु फोर्यो नृप ताकों लोभ दै बिसेस ॥
सो अघ बिदितहोत गो भजि इहाँ तैं सोहु,
लीनों जाइ सरन उदैपुर लवकुलेस ॥
जानैं स्वीय तनया बिचित्रकुमरी१९७।१सो जहाँ,
व्याही वरि बिंदं जयसिंह राना बसुधेस ॥ ११ ॥
कन्या इक१याकैं भई पीछैं सोहि कालकरि,

॥ ४ ॥ ५ ॥ १छांने के लेख २ भेद ३ हलकारों से ४ पाते थे ॥ ७ ॥ ५ काकपची सदैव सचेत रहता है इसप्रकार ॥ ८ ॥ ९ ॥ ६ घरों में नहीं घुसने दिये ७ पहरायत ८ पाप पर पाप ॥ १० ॥ ९ लव के वंश के पति (महाराणा)का १० दुल्हा ॥ ११ ॥

ब्याह्यो भीम१९८।१कोटा कुमार नृप बुधवेर १९७।१बेर[१] ॥
ऐसैं बलभद्र१९६।१वर्त्तमानमैं उदैपुर गो,
सो इत दुजनसिंह१९६।१समुझि सपिंड सेर ॥
विस्वनाथ१दुर्जन२सौं ऐसैं कहि भेजे बैन,
बैरीसाल१९४।३वंसी वीर दुर्जन१९६।१न करि देर ॥
बुंदी लईचाहैं तासौं मिलिकैं करो विहित,
कैसी प्रभुता व्है ता१के उद्यममैं हमकेर ॥ १२ ॥
बुद्धि मेरी बदली तुमारे बहिकाइबे तैं,
पीछैं राजसिंह१९४।४कुल लगत कलंक पाइ ॥
हेरि हित पीछैं सकुटुंब निकस्यो मैं हारि,
लाभ पुर पट्टनके न्हानको बहानौं लाइ ॥
उत तुम संग टिकिबो न लखि पायो इत,
असन१बसन२को निवाह उदैपुर आइ ॥
ईस बलवंनिको सहाइ तुमरैहि अब,
भूपति भजहु बुंदी बुंदीपतिकौं भ्रमाइ ॥ १३ ॥
दुर्जन१९६।१के आगैं बलभद्र१९६।१टारि ऐसैं दीन,
विस्वनाथ१दुर्जन२सौं निस्पृह कहाई बात ॥
हुंरबलौं ए तो दुष्ट चाहत हे चाम१हाड,
बलवनि ईससौं मिल मन द्रुत बढात ॥
द्विगुन पटाके लोभ अधम बिसासि द्वैरही,
दुर्जन व्है दुर्जन१९६।१घुमाई बुंदीपर घात ॥
अस्ववांर१छसत६००पदाति२छहजार६०००आनि,
पटके पुरीकौं [११]घेढि हेतिनके[१२] बज्रपात ॥ १४ ॥
संबत गगन बेद सत्रह१७४०कथित समै,
राध[१३]१मास असित[१४]२चउत्थि दिन मंडी रारि ॥

---

१ बुधसिंह के समय में २सिंह ३उचित ॥१२॥ ४ भोजन ५ ग्राम का नाम है ॥ १३॥ ६इच्छा रहित ७ गीदड़ के समान ८शीघ्र ९दुर्जनसिंह ने शत्रु होकर १० सवार ११ घेर कर १२ शस्त्रों के ॥१४॥१३वैशाख१४वदी

नीठिनीठि द्वै१दिन किसोरसिंह नाथाउत,
बुंदी जुद्ध उद्दरि कढ्यो भट जस बिगारि॥
दारित कपाट माँहि पैठ भट दुर्जनके,
धाम धाम लुट्यो पुर जाम२।३ताम हठ धारि ॥
बुंदीमें अमल ठानि छट्ठा४के दिवस बैठो,
पट्ट आइ दुर्जन१।६।१अचानक विरोध पारि ॥१५॥
दुर्जन७रु विस्वनाथ२आदिक८ लहायदाना,
जानें जई१ द्विशुन पटा दे मानें मुख्यकारि ॥
मुख्य सुजनैरी१ तैं हु नंदना२रनृपति मान्यों,
पट्टहि जनाइ हेतु पीछें हुंढुकारि अरि ॥
वर्त्तमानमैं यों स्वामिद्रोही सो तखतबैठि,
धर्म्मीध्वंस है दिवान वज्यो हाँस धरि ॥
तिन्ह सिर आँतपत्र१चामर२चलाये पहिले,
न जे पलाँये ते मिलाये कारा दर्प्प·परि ॥ १६ ॥
ऊँरुज करमसिंह१कायथ उदैसिंह२,
विप्रविस्वनाथ१।३हरिवल्लभ२।४उभय२व्यास ॥
कारामैं पठाये अधिकारी ए पउ४हि कैद,
रानी जन भेजिराखे निखिल अधोनिवास ॥
द्विज कहाँ पुरोधा सुकदेव कह्यो दुर्जन१।६।१सौं,
होत अवरोध काढँ कुल१जस२धर्म३हास ॥
अधम सैंदर्प्प उलटो रिस पकरि पापैं,

१ किंवाड़ तोड़कर २ एक प्रहर तक; अथवा जहां तहां ३ तहां ॥ १५ ॥ ४ सहाय देनेवाले ५ जय करने वाले ६ ग्राम का नाम है ७ धिक्कार के साथ निकाल कर ८ क्षत्रपति ९ बुन्दी के रावराजा का उपपद दीवान है १० छत्र ११ भागे जिनको १२ कैद किये ॥ १६ ॥ १३ वैश्य १४ कैद (जलखाने) में १५ उनको नीचे के महलों में रक्खे १६ पुरोहित १७ हानि १८ घमंड

पट्टनि पठायो अवरोधहु इठ प्रकास ॥ १७ ॥
भ्राता पहुँचाइबेकों आपुनें अनुज भेजे,
नेता करि द्वैश्ही फतेसिंह१९६।२जैतसिंह१९६।३नाम ॥
आधे पंथ रानिन उभैरए पहुँचाइ आये,
ठीकरिया ग्रामलों गये लखि निकट ठाम ॥
जन अवरोधवारे पट्टनि बसे यों जाइ,
जानी यह सुद्धि अनिरुद्ध१९६।१नृप वैर्त्ती जाम ॥
आजम४१।३के द्वारा भेजी अरज हजूरएह,
दासपैं इहाँ वैं बिनु धान न खरच दाम ॥ १८ ॥
अधिक प्रसन्न नृप सों हो साह यातैं एह,
सुनत रिसायो यों दमंग ज्यों मिलत सोर ॥
आजम४१।३की अंगनाहु बिन्नति पठाई ऐसें,
मानहु स्वसुर राखी इज्जत नृपहि मोर ॥
इच्छा प्रियपुत्र१की बधू२की लखी त्योंहि आप,
जोध अनिरुद्ध१९६।१संग वाहिनी दे अतिजोर ॥
बुंदी लैन भेज्यो कह्यो चलत बहोरि वैल,
अलप लखोतो लिखिभेजो भेजिहों मैं ओर ॥ १९ ॥
भीम१नाम रानाँ जयसिंहको अनुज भ्रात,
रानाँ राजसिंहसुत जो बच्यो तटस्थै रहि ॥
पीछैं जाहि उचित पटामैं सह भूपपद,
बनहड़ा१३संग मिल्यो गौरव बिसेस बहि ॥

सहित १ जनाने लोकों को ॥ १७ ॥ २ हाकिम ३ जनाने के लोक ४ खबर ५ जहां राजा अनिरुद्धसिंह था वहां कही ६ अब ॥ १८ ॥ ७ अग्नि ८ हुरम ने ९ पुत्र की स्त्री की१०सेना११सेना ॥ १९ ॥ १२ राना राजसिंह को मारने का भेद प्रसिद्ध होजाने पर जो उपद्रव हुआ था उस उपद्रव से किनारे रहकर १३ राजा पन के साथ *बन्हड़ापुर मिला.

* महाराणा जयसिंह और महाराज भीमसिंह का एक ही दिन का जन्म है इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध

पीछैं सुता पाहीकों व्विाह्यो जोधसिंह१.१७१ अग्रज१,
कै संग अनुज समै पैं विधिलेख लाहि ॥
अग्रजसौं तोरि साह्आश्रित हुतो व्हाँ यह,
सोऽहु इयो संग पहिलैंतें प्रीति चित्त चाहि ॥ २० ॥
दीनों संग भूमिपति अविदित नाम दूजो,
अन्ववांय गौड़१.जाको चामरिक१.उपटंक ॥
जवन मुगलखान तीजो३संग भेज्यो जाहि,
सूबा अजमेर दीनों उद्यमी गिनि असंक ॥
अस्तखान अलस न राख्यो अधिकारी उहाँ,
एक१दुर्गदासहि रुक्यो न जानि हठ अंक ॥
मुगलसौं मुगल कही यौं इन्हँ संग मिलि,
बुंदी लै प्रथम१पीछैं२सरलीकरहु वंक ॥ २१ ॥
वौधि ऐसैं भीम१चामरिक२औ मुगल३बुंदी,

॥ २० ॥ १ जिसका नाम मालूम नहीं २ वंश ३ पदवी ४ आलस्य नहीं रक्खा ५ युद्ध में हठ करनेवाला; अथवा हठ का चिन्ह रखनेवाला ६ टेढों को सीधे करो ॥ २१ ॥ ७ समझाकर

है [; दोनों की खबरें लेकर दो जने महाराणा राजसिंह के पास गये तब महाराणा सोते थे तहां जयसिंह की बधाई लानेवाला पैरों की तरफ और भीमसिंह की बधाई लानेवाला सिर की तरफ बैठ गया, फिर महाराणा की जब पाँवों की तरफ दृष्टि पड़ते ही जयसिंह की बधाई देनेवाले ने कुमर के जन्म की सूचना की इतने सिराने की तरफ से भीमसिंह की बधाई देनेवाले ने अरज की कि मैं जिनकी बधाई लाया हूं उनका जन्म पहले हुआ है इस पर महाराणा राजसिंह ने कहा कि इस समय हमारे पाटवी पुत्र सुल्तानसिंह और छोटा सरदारसिंह दोनों मौजूद हैं फिर इन में छोटे बड़े का झगड़ा निरर्थक है इसलिये इनको पीछे [illegible] ठीक है इस पर उस समय तो कुछ विचार नहीं हुआ परन्तु सुल्तानसिंह और सरदारसिंह तो महाराणा राजसिंह की विद्यमानता में ही मरगये और सम्वत् १७३७ में महाराणा राजसिंह का देहांत हुआ तब जयसिंह के पाट बैठने पर छोटे बड़े का विचार देखकर भीमसिंह ने उदयपुर को छोड़ दिया और अजमेर में बादशाह औरंगजेब के पास जाकर राजाधन की पदवी सहित बनेड़ा पाया सो उस समय बादशाही अधिकार में होगया था उदयपुर से इनके साथ इस टीकाकार (बारहठ किसनसिंह) के पूर्व पुरुष [illegible] आये जिनको भीमसिंह ने बनेड़े के नेग और गीलूंड्या नामक ग्राम दिया सो अभी मौजूद है सो इस भीमसिंह को बूंदी की सहाय पर भेजना लिखा सो तो उचित ही है परन्तु बनेड़े का पट्टा उस समय मिलना लिखा सो असत्य है; क्योंकि बनेड़ा पहिले ही मिल चुका था.

सीसोद१रु गोर मिच्छ२भेजे नृपके सहाय ॥
आजम४।१।३की बेगमहु पतिसौं निवे¹दि इहाँ,
पठई कित्तीक पत्ति सेनाहू प्रबल² आयँ ॥
मऊ१बाराँ२आदिकमैं अमल जमाइ मग्ग,
कोटापुर आइ तनैं फौजके पटनि³काय ॥
सूबापति संगिन मयूर तँहँ एक१मारयो,
बढिगो कलह तापैं विखकी⁴ लगत लाय ॥ २२ ॥
जावत भो दक्खिन२।३नरेस साहसंग जब,
पट्टनिके डेरन भो पहिलैं यह उदंत⁵ ॥
ऱ्हदयनरायन१९२।२पिनाती⁶ छत्रसिंह१६हाडा,
संग अवनीसकै हुतो सो भट बंधु हंत⁷ ॥
नामी गज ताकै एक हो गजकुमर१नाम,
केते कहैं पहिलैं दयो सो ताहि छितिकंत⁸ ॥
तासौं नृप मंग्यो सो दयो न गजराज तानैं,
जारह्यो कोटा तजि बुंदी वास⁹ बरजंत ॥ २३ ॥
कोटाके सुकामपैं मारत मयूर क्रुद्ध¹⁰,
छत्रसिंह१९भटन चलाई तेग धारि छोहं ॥
मौंरक मयूरको¹¹ लयो वह जवन मारि,
दल निज भेज्यो तापैं सूबापति आनि द्रोह ॥
छत्रसिंह१९ । सिबिर¹² लयो तिन भटन छाइ,
तोपन दगाइबो तक्योही महारिसमोह ॥
भूप अनिरुद्ध१९६।१यह जानत सवेग भजि,
ले भैंर¹³ स्व सिर रोच्यो¹⁴ पहिलै जवन रोहँ¹⁵ ॥ २४ ॥

१ अरज करके २ बहुत प्रबल ३ डेरे ४ जहर की ॥२२॥ ५ वृत्तांत ६ पोता ७ हाय (खेद है) ८ बुन्दी के राजा ने ९बुंदी का निवास छोडकर ॥२३॥ १०क्रोध ११ मयूरों को मारनेवाले यवन को १२ डेरे का १३ भार १४ शोभायमान हुआ १५ यवनों को रोककर ॥ २४ ॥

मिच्छनकों सौंह दै टिकाइ ततकाल सुरि,
आइ सूबापतिपैं सबंग भूप अनिरुध१९।२ ॥
सूचौ एह राखि जवनेस भोज१६१।२सुजन१९०।१सों,
सोहु तुमसों न छानी समुझहु भाव सुद्ध ॥
हनिबो हमारो तुम्हैं जो रुचत स्वीय हित,
अन्थं लगिजैहैं तोतो लुत्थिनपैं लुत्थि उद्ध ॥
नांतो सोंपिदैहैं आरिबाहकैं तुमहि न्याय,
जवनन रोकिदेहु जवनैं न होहु जुद्ध ॥ २५ ॥
मानि सु मुगलखान लैबो गहि मारकँको,
भूप संग दूत भेजि वैलहि लयो बुलाइ॥
छत्रसिंह१९। डेरन गो बैठो गजपैं छितिप,
उतरि उहाँ रु मन भ्राताको लयो मनाइ ॥
लग्गत विरुद्द पाग आपुनैं चढाइ लायो,
ठाम निज पिट्ठिपैं खवासासैं सुभट ठाइ ॥
मोहित मुगलखानसों यह मिलायो सूर,
मारकैं दयो सो पहिलैंहीं गृह निकसाइ ॥ २६ ॥
माँग्यो मोरमारकको मारक मुगलखान,
पैंहु तैंहँ भाख्यो भजिगो सो क्योंहु लहि प्रान ॥
हाडोतीधरामैं अपराधी पुनि आइहै तो,
समुचितै पाइहै बचाइहै न अवसान ॥
ऐसैं बढ्यो विग्गह मिटाइकैं निज अनीकैं,
कोटातैं चलाइ घेरी बुंदी सह तुरकानैं ॥

१सौगन देकर२यह बातें ३यहां ४ऊंची ५तरवार चलानेवाले को ६शीघ्र युद्ध नहीं है॥२५॥ ७मारनेवाले को ८लेना ९रस्तुति १०मारनेवाले को पहिले ही छांनि निकाल दिया॥२६॥ ११मयूर को मारनेवाले यवन को मारनेवाला १२राजा ने कहा १३किसी प्रकार; अथवा कहीं भाग गया १४उचित दंड पावेगा १५नाश; अथवा अंत से बंद हुए १६विग्रह को मिटाकर १७अपनी सेना के १८यवनों सहित

समय हुतो पै छत्रसिंह१९ । सुत आयो संग,
[1]आहव रचायो अनिरुद्ध१९६।१[2]इतैं अतिमानैं॥ २७ ॥
बुंदीतैं कछुक[3]काम बखसी सु बिस्वनाथ,
१पट्टनि गयोहो गूढ रानी जन जानि पास ॥
पहुँचत सुद्धि[3] ताकी नृपपैं मगहि मध्य,
ग्राहकं[4] पठाइ गहि संग लैयो[5] अबिसास ॥
आवतहि बुंदी गरदाइ पटक्यो असह,
सहरके सूरनपैं तोपनको अति त्रास ॥
तोप इक१तैंसैं प्राच्य[6]१पर्वत चढाइ तासौं,
जोर्ही दुर्ग अट्ट[7] डारयो तोरिकैं चरख[8] जास ॥ २८ ॥
दक्खिन२।३दिसासौं इत गोपुर[9] अररं[10] दौरि[11],
अर्द्ध१दैल[12] माँहिं आयो बाहुन बढात दल ॥
उत्तर४।७दिसासौं डोभरे[13]की राह होइ इत,
दुर्गके अररैं[14] तोरि पैठो माँहिं अर्द्ध१दैल[15] ॥
दुर्जन१९६।१सनाभि[16]१असनाभि[17]२काढि भीतर्हैं२ही,
प्रान लै पलाये[18] दुष्ट थान ठहरे न पल[19] ॥
भाद्रपद६असितं[20]२चतुर्थीपैं अमल भयो,
बुंदी अनिरुद्ध१९६।१को यौं जयजस लै बिमल[21] ॥ २९ ॥
तारागढ कारा[22] खल विस्वनाथ१ राखि तिम,
बाजे मंडि मंगल विजैके वीर बजवाइ ॥
रीति कुलधर्मकी चलाइ रु जमायो राज्य,
लीनौं अवरोध[23] उक्तपुर[24]१तैं पुर[25]१बुलाइ ॥

१युद्ध२बडा ॥२७॥ ३खबर४पकड़नेवालों को भेजकर५घेर कर६पूर्व दिशा के ७बुरज ८ तोप का शकट ॥२८॥ ९शहर के द्वार के १०कपाट११ तोड़कर१२आधी सेना १३मार्ग का नाम है १४गढ के किवाड़ तोड़कर१५आधी सेना१६सपिंडी भाई १७ सपिंडी से बाहर के भाई१८ भागे १९ क्षण भर भी नहीं ठहरे २० कृष्णपक्ष २१निर्मल ॥२९॥२२कैद२३जनाना२४कहेहुए(पाटण)पुर से २५बुंदी में

सूबापति१आदि जे सहायक त्रय३हि संगी,
गेह मेहमानि राखि दीनी सीख हित गाइ॥
जातहि मुगलखान सूवा अजमेर जंगी,
रह्लऊर रोके जितहीतित रनरगाइ ॥ ३० ॥
सामंत१८७।१के सूनुनमैं जेठो बलकर्यो१८८।१जान्यौं,
लुब्ध१कुल ताको तासैं दुर्जन१९ । कह्यो जो मूढ ॥
वगैलाल१९४।३नाँती दुष्ट दुर्जन१९६।१को संगी बन्यौं,
सो भजि बहोरि तास संगहि निकसि गूढ ॥
तीजे३सुत तेज१८८।३वंसी मानें तिहिं ठाम१मुख्य,
राख्यो भुजनेरी२ छीनि नंदनौं३ऽग्रनवरूढ ॥
सदन सम्हारि अनिरुद्ध१९६।१नृप याही-समैं,
आनी तीन३रानी पुनि ओसर विरचि ऊढ ॥ ३१ ॥
भाग्यो जो सपिंड दुष्ट दुर्जन१९६।१ इहाँ तैं भज्यो,
गूढ गहि लूटे तिहिंके इत मऊके ग्राम ॥
आनिमिल्यो यासौं तहाँ धाँटिधर भिल्ल भीमं,
जाइलई चाचुरनी१दोउ२न लरि छह्जामं ॥
ताके लगतेही भूमि वेद मुनि इंदु१७४१समें,
स्वेत१सद्धं१दसमी१०चढ्यो नृप जय सकाम ॥
माधानी२१२६जुझार१९४।४सुत नाम जयसिंह१९।५१मग्ग
ईस कोटरेको ईख्यो बलसैं वहत वाँम ॥ ३२ ॥
पत्तन बरोदसौं कितोक धन जोर पाइ,
भोमियौं विभाग यह लेतहो प्रभाई भाइ ॥

---

१ भिजमानी ॥ ३० ॥ २ पुत्रों में ३पोता ४प्राचीन तनय से चढाहुआ अर्थात् प्राचीन अधिकार से नानगा नामक ग्राम छीन लिया ५ घर ६ विवाह ॥३१॥ ७ छांने ८ धाड़ायतो (डाकू) ९ नाम है १० पहर ११ सम्वत् १२ शुक्लपक्ष १३ चैत्रमास १४ जयकी कामना से १५ माधोसिंहोत हाडा १६ देखा १७ विरुद्ध ॥ ३२ ॥ १८ भोम का बंट १९ मत्तता की रीति से

तासौं करि जुद्ध कोटराहु लै निकास्यो ताहि,
सोपै भाजि चाचुरनी पहुँच्यो तिम्ह सिटाइ ॥
एक१ही दिवसमैं महीप अनिरुद्ध१९६।१वहै,
जीतिलीनी चाचुरनी सत्वर[1] असह्य जाइ ॥
भिल्ल१रु सनाभि[2]सह दुर्जन१९६।१तहाँ सौं भजि,
खीचि१३नमैं जाइ दुर्यो स्वीय बलकौं खपाइ[3] ॥ ३३ ॥
चाचुरनी१त्राता[4] भट राखि भूप ह्वाँतैं चढि,
नगरी मऊ२मैं किते दिवस कर्यो निवास ॥
साहढिग जाइ इतैं मालवको सूबादार,
आयो पीछो मालव बहादुर लै अवकास[5] ॥
अधिप[6]के मित्र खानमुगल१बहादुर२ए,
तासौं यह मिलन अवंती[7] गो सुहृद[8] तास ॥
छत्राधम[9] दुर्जन१९६।१न आइ इत छानैं पुरी,
लाखेरी प्रविसि[10] निसि कीनौं कोटवाल नास ॥ ३४ ॥
सो सुनत सूचि नृप सुहृद[11] बहादुरसौं,
दंड हित भेज्यो दंड[12] खीचि१३नपै जोर दैन ॥
कहि यौं पठाइ तुम काढि हाडा६१दुर्जन१९६।१कौं,
बहुरि न आनदेहु कानदेहु[13] इक१बैन ॥
दंड भरि साहकौं बिडार्यो[14] तिन दुर्जन१९६।१कौं,
आकुल भ्रंट्यो[15] सो औनऔनैं[16] मैं रहित औनैं[17] ॥
तीससत३००सौं[18]दिन सौं कुसलै[19] पठायो तापैं,

---

१ शीघ्र २ सपिंडी भाई ३ अपने बल का नाश करके ॥३३॥ ४रक्षक(चाचुरनी की रक्षा के लिये) ५ फुरसत ६राजा अनिरुद्धसिंह के मित्र ७ उज्जैन ८उसका मित्र ९ अधम क्षत्री १०प्रवेश करके ॥ ३४ ॥ ११ मित्र १२ सेना १३सुनो १४ निकाला १५ व्याकुल होकर फिरा १६ घर घर में १७बिना घर १८हजारों से १९ कुशलसिंह को

निज जो सिलहदार नृपसो अरुननैंन ॥ ३५ ॥
दुर्धर कुसलसिंह१नृपके सिलहदार,
दुर्जन१९६१२कों एक१ठाम स्वस्थ टिकिबे दयो न ॥
छाया१जिम विग्रहं२की संग न कबहु छोरि,
भाजतहि राख्यो दुर्गदास सो जुंग२भयो न ॥
जत्थ वह१ प्रात तत्थ दुपहर२एह२जात,
लहि इम त्रास स्वास सीतल कहुँ लयो न ॥
सहसा तुपक छूटि धात्रीसुत स्वीयहीकी,
ठाँ इक मरुयो सो दुष्ट चिंतितं तस ठयो न ॥ ३६ ॥
मित्र१मिल२है२इत अवंती अति मोद मिलि;
गज१हय२लै दे भूप बुंदी दिस कीनों गोनं ॥
है२ही उक्त दुर्जन१९६११के अनुज इहाँ ते आनि,
भूप१रु बहादुर२के पाय पर गतभोनं ॥
तिनकी दया लै कह्यो सूबापति१भूपति२सों,
लंघि कुलधर्म जिहिं रावरो लजायो लोन ॥
सहज मर्यो सो खल दुर्जन१९६११हरामखोर,
हीन तस बंधु दीन आये ए अनुग होन ॥ ३७ ॥
अन्न१वस्त्र२इनकों हमारोही कथन हेगि,
देहु आप अबतो गयो करि दुसह दाह ॥
मित्रको कथन मानि संग तिन्हें आनि मित्र,
नगर गुगोर आइ ऐसें जई नरनाह ॥
चौरी पूजि कृष्ण१९६।१।१भगवंत१९७।३।२के तहाँतें चढि॰

---

१ आंहद का नाम है २ लालनेत्र करके ॥ ३५ ॥ ३ कठिनाई से पकड़ा (हराने) में आवे ऐसा ४ जिसप्रकार शरीर का साथ छाया नहीं छोड़ती है तिसप्रकार ५ दुर्गदास से नहीं मिल सका ६ जहां ७ ठंढा श्वास ८ अचानक बन्दूक छूटकर ९ अपने ही धायभाई की १० उसका विचारा हुआ नहीं हुआ ॥ ३६ ॥ ११ गमन १२ विना घर १३ सेवक ॥ ३७ ॥ १४ दग्ध स्थान का मंदिर

लाखेरी[1] पुरी लखि प्रजाकौं दै दरस लाह ॥
कोटवाल सुतकौं पिता ज्यौं अधिकारी करि,
कंटक प्रजाके काढि बुंदी बिस्यो रुचिराह ॥ ३८ ॥
दुर्जन१९६।१के भ्राता फतेसिंह१९६।२।१कौं उचित दीनौं,
गोत रह टोडा१जो समीधीको लगत ग्राम ॥
खेरा१राजधरको दुलारा२लाखेरीको खेट,
दीनैं दुव३देखि जैतसिंह१९६।३।२कौं उचित जाँस ॥
साधि स्वामीसेवा बीर पीछैं यह जैतसिंह१९६।३,
कित्ति करि भावीकाल दिल्लीपुर आयो काम ॥
सूनु जाको देव१९७।१सो वँखासैं बुधसिंह१९७।१संगी,
धीर भयो छोरि दुवलाख२०००००के धरनि धाम ॥ ३९ ॥
संवत नयन वेद सत्रहाँ१७४२लगत समा,
सित२मधु१आदि१तिथि संगत समय सुत्र ॥
नाथाउति दूजी२नृपरानीनैं प्रसव[10] पाइ,
बालक जन्यौ सो नाम करि सो कुमर बुद्ध१९७।१ ॥
पत्तन१ह देस२जाको उच्छव मच्यो प्रचुर[11],
रीतिपर लक्खन लगाये द्रम्म[12] अनिरुद्ध१९६।१ ॥
पीछैं सक वेद वेद सत्रह१७४४।अनेहँ[13] पर,
तनय[14] भो दूजो२ताकै जोधसिंह१९७।२जित जुद्ध ॥ ४० ॥
रानी जुत दुव२हि कुमार ए तब नरेस,
मातामह[15] भोन भेजे नगर नमाँनाँ नाम ॥
तबतैं रहे ए वसु८अब्दलौं[16] कुमर तत्थ,
आये सक बावन५२मैं पीछै गेह प्रभुराम ॥
जेठे१के जनमपीछैं राजाउति१रानी जनी,

१प्रवेश किया ॥३८॥२परगनां के मुख्य ग्राम का नाम है ३खेड़ा४जहां५कीर्ति६आगे आनेवाले समय में ७ दुःख में ८ भूमि ॥ ३९ ॥ ९ चैत्र सुदि एकम १० जापा ११बहुत १२रूपये १३समय१४पुत्र ॥४०॥१५नाना के घर१६आठ वर्ष तक

दोइ२दुहिता जे बाल्यहीमें मरी विधिबाम ॥
काबलके सूबा गये याहीके उभै२कुमर,
तत्थ भये पीछैं मरे तत्थहि पृथुक ताम ॥ ४१ ॥
एह कछु भावी वर्त्तमान अब जानों इहाँ,
पाये मतभेद दोइ२ग्रंथलेख भेद पारि ॥
मानें किते वेद वेद सत्रह१७४४के सालमैंहि,
धीर अंगरेजन४न उपायन कितोक धारि ॥
साहके निदेससों रिझाइ बंग सूबापति,
अर्घ दैकैं मोललये तीन३ग्राम होन आरि ॥
मानैं किते छप्पन५६के संवत लये ए मोल,
कलकत्ता१गोविंदोर२छोटानटीनाकरि ॥ ४२ ॥
ग्राम कलकत्ते माँहि सत्तरि हुते व्हाँ गेह,
बहुरि बसायो इननैं जो बडोविसतार,
अंतर तदीयें फोर्टविलियम१नाम एक,
रुचिर बनायो दुर्ग स्वीय पच्छ रखवार ॥
अजनके मंडलकी राजधानी एक १ अब,
व्है रही पुरीजो सब बस्तुसार दुखहार ॥
सो तहँ बनाइ अवरंग ४० ।३ साह सम्मतिसों,
देखो अंगरेज८भये उतके जमीनदार ॥ ४३ ॥
नृप अनिरुद्ध १९६।१ के प्रवीरपनको प्रभाव,
जान्यों सो इहाँलों अपकित्ति अब जानों जास ॥
मान सक पंच वेद सत्रह १७४५ तपस्य१५मास,
बुंदीपति कीनों रचैं पट्टनि नगरवास ॥

---

१ ब्रह्मा की विरुद्धता से २ बालक ३ तहां ॥ ४१ ॥ ४ नजराना ५ हुक्म से ६ बंगाले के सूबापति को ७ मूल्य (कीमत) ८ नाम है ॥४२॥ ९ उसके भीतर १० सुन्दर ११ अपने पक्ष के लोगों की रक्षा के लिये १२ आर्यावर्त की ॥४३॥ १३ अब आगे उसकी अपकीर्ति जानो १४ प्रमाण १५ फाल्गुन १६ कुछ

जासमै सिनसिनी १ रु सिंवगिरि२वारे जट्ट[1],
प्रबल भये जे मंडि मार१लूट२चहुँ४पास ॥
सो सुनि पुकार अवरंगाबाद बासी साह,
आजम४१।३को पुत्र भेज्यो स्वीय नाती[2] जय आस ॥४४॥
याके संग हो न बुंदीसहुकौं हुकम आयो,
ओरहु नवाब१नृप२भेजे के घन उँफान[3] ॥
पट्टनिही पहुँच्यो निदेस[4] साहनाँतीको[5] हु,
थट्ट सह बंक्ट[6] आइ मिलियो अमुकँथान[7] ॥
चूक मिलिबैमैं करिहो तो दंड पैहो चाहिं,
इमहि न दोष व्हैहैं जस१वसु[8]२देस[9]३हान३ ॥
यांबिधि कहाइ साहजादा दरकुंच आइ,
जेय जटवारि कीनी सँन्निधि[10] रन अजान ॥ ४५॥
पट्टनितैं भूप चल्यो खटपुर१रत्ति रहि,
कीनौं पुरवंसी२जाइ दूजो२दलको मुकाम ॥
सीखवारे गेहनसौं सुभट बुलाये संग,
बिन्नति करी व्है किते भृत्यन नियँति[11] बाम[12] ॥
देखहु रहैहैं गुनगोरि३के दिवस दोइ२,
जोधँ[13] अपनैंहू आइ मिलिहैं अखिल जाँम[14] ॥
यातैं पुरबुंदी व्है पधारहु सँजव[15] आप,
लैकैंवय जुब्बनँ[16] नवोढँन[17] रस ललामँ[18] ॥ ४६ ॥
पीछैं पूगिजैहैं करि धाँव[19] साहजादेपास,
को मरैं१बचैं२को चलिबो है उहाँ रनकाज ॥
स्वामी मूँढ[20] भृत्यनकी अरज पहैंही सुनि,

१ जाट २ अपने पोते को ॥ ४४ ॥ ३ बढाव से ४ हुक्म ५ सेना साहित ६ मार्ग में ७ फलाने स्थान पर ८ धन ९ जाटों का देश. १० समीप ॥ ४५ ॥ ११ भाग्य की १२ विरुद्धता से १३ वीर १४ जहां १५ शीघ्र १६ जोवन १७ नवोढा स्त्रियों का १८ सुन्दर रस लेकर ॥ ४६ ॥ १९ दौड़ २० मूर्ख सेवकों को

आयो चढि बुंदी [1]अहो हड्ड६१नको अधिराज ॥
तीजी३अरु चोथी४तिथि रहिकैं [2]कथिततत्थ,
सकल मिलाइ सेना [3]संगरको साजि साज ॥
स्वेत१[4]मधु१पंचमी५छ वेद मुनि इंदु१७४६साक,
बुंदीतैं चल्यो जो करि लंबे कुंच [5]अतिबाजें ॥ ४७ ॥
संकेतपैं जाइ सुत आजम४१।३के [6]स्वीय सेना,
अखिल निहारी व्हाँ न पूगिसक्यो नृप एह,
ताके अपराधकी लिखाइ अरजीहु [7]तानैं,
पठई पितामहपैं नृप यौं जनायो नेह ॥
पीछैं बडे वेगतैं [8]विजैथान [9]पहुँचत,
आमितै मिल्यो सो [10]गुनिगोरि३पैं निवैसि गेह ॥
कैदतैं छुडाईहुती सु [11]प्रसू तऊ कुमार,
आदर्यो न बुंदीपति सूचिकैं रिसअछेह ॥ ४८ ॥
मानी [12]प्रतिपक्खिनसौं प्रातहि [13]प्रघात मच्यो,
[14]जैत्थहु न पूगिसके साहके कतिक जोध ॥
जट्टनको तत्थ वढ़िगो अति असह जोर,
स्वबल सिटायो ताको [15]कुमरहुँ पायो सोध ॥
सोहनोत२[16]माधानी ।व्हाँ कोटाकी [17]चमूतैं काढि,
काम आयो गोवर्द्धन१९५।२मारि घनैं अतिक्रोध ॥
[18]त्रिदिवैं गयो सो राजगढको अधीस तहाँ,
वाँह गलडारि नारि [19]अच्छरीसह सुबोध ॥ ४९ ॥
पुव्वहि [20]अनीकको [21]अनी कति मुरत पेखि,

१आश्चर्य २ कहा हुई ३ युद्ध ४ चैत्र सुदि ५ अत्यन्त शीघ्रता से ॥४७॥६ अपनी ७ औरंगजेब के समीप ८ विजय करनेवाले स्थान पर ९ पहुंचा हुआ १० गुणगोर पर घर में निवास करके ११ शाहजादे की माता को ॥४८॥१२शत्रुओं में १३ विशेषघात (युद्ध) १४ जहां भी १५ शाहजादे ने १६ माधोसिंहोत १७ सेना से १८ स्वर्ग १९ अप्सरा ॥ ४९ ॥ २० सेना का २१ अग्रभाग

निखसि अनीकतैं अनीक जुत खोइ नाम ॥
रोस साहनातीको बिचारि तैसैं अनिरुद्ध१९६।१,
भीत गीत आयो भजि धामहीन निजधाम ॥
धारनमैं धसिकैं अकेले१धीर गोवर्द्धन१९५।२,
राख्यो जसभागी बीर कोटाको अधिप राम१९८।३ ॥
सेस सेना साहकी इतेबिच पहुँचि संख्य,
जट्टनके थट्ट जीति लै लयो लरि दुरजाम ॥ ५० ॥
इत अनिरुद्ध१९६।१कुलधर्म कँहँ दै उदक,
आयो भजि बुंदी तापैं अमरखँ साह आनि ॥
काहूनैं लयो न पुरपट्टनि कबहु क्योंहु,
जोपै लयो छीनि सदा बुंदीके बँटहु जानि ॥
भूप बुधसिंह१९७।१जैसो आलम४१।२मरत भयो,
तैसोही यहैहु भयो ब्रीडा भजिबेकी तानि ॥
ऐसी अपकित्ति उडी दिष्टकरि जैसी उहाँ,
हड्ड६१न न पाइ सुरतान१८१।१बिनु धर्महानि ॥ ५१ ॥
कोटैकी गई प्रसरि याहीतैं अतुल कित्ति,
ग्रामनसमेत पुरपट्टनि लहि स्वगेह ॥
कोटापति अन्वयमैं पुरुख उभैरन कहे,
उनको उदंत इयाँ प्रसंगसौं सुनहु एह ॥
सुतजु मुकुंद१९४।१को मर्यो जब जगतसिंह१९५।१,
नीति करि पंचननैं कुल१क्रम२हेरि नेह ॥

१ बुरी रीति से निकलकर सेना सहित नाम खोकर २बादशाह के पति का क्रोध ३ भय का गान करता हुआ ४ उस स्थान को छोडकर ५ तरवारों की धारा में ६ यश में बंट करनेवाला ७ युद्ध में ८ प्रहर ॥ ५० ॥ ९ कुल के धर्म को पानी देकर १० क्रोध ११ किसी कारण से १२ बुन्दी के बंट में समझकर १३ भागने की लज्जा १४ फैलाकर १५ भाग्य से १६ बुन्दी के राव सुरताणसिंह के बिना ॥ ५१ ॥ १७ कीर्ति १८ वंश में १९ वृत्तान्त

मोहन१९४।२के सूनुनें मनाई तुसगे तख्त,
तदपि जनाई तिन दास ह्रस्गेतो देहैं ॥ ५२ ॥
भाखि ऐसें स्वन निबाह्यो धुर भीखमको,
मोहन१९४।२अनुज कन्ह१९४।३सुत तब स्वामी मानि ॥
प्रेमसिंह१९६।१बाल धरयो पंचननैं कोटापट्ट,
आदि कुलरीतिसौं अनुक्रम उचित आनि ॥
ताकी सिंसुतामैं तास धात्रीनैं प्रसारि तोरैं,
व्ययहि घटायो न बढायो कछु लौ कुवानि ॥
ऊंपिंगाकाके असन करी१हय२निबल ईखि,
कोटातैं निकारिदये करी हय कहु कानि ॥ ५३ ॥
मृधमैं मरयो न सुत पंचम५जो माधव१९३।२को,
लोहनतैं जर्जर बच्यो बलिष्ट आयु लहि ॥
पंचननैं सो तब किसोर१९७।१धरयो कोटापट्ट,
करिकैं रहस्य नैय१सूनृता२समान कहि ॥
ताकैं . . राम१९८।३सुत तीन,
पहिले इहाँ हुव२परे गिनि प्रमाद प्रैंहि ॥
पुत्र तीजो३राम१९८।३सु किसोर१९८।५मान पट्टपति,
गो दिवं बहोरि चि.के घायन उदर्कं गहि ॥ ५४ ॥
पुन तस तीजो३रामसिंह१९८।३तब बैठो पट्ट,
जेठे दुव२भ्रात रहे ईरखा बहु जनात ॥
पै जो कह्यो जनकं विचारि निजदेस प्रभु,
मिच्छहु पटा दे मान्यों ताहिकों ज्यों तैस तातं ॥

१पुत्रों ने २लोभी३शरीर४क्रम के साथ५बालपन में६धाय ने७अनाप८खर्च९.कुरीति१०अल्प धान्यके११भोजन से हाथी और घोड़ों को निर्बल देखकर॥५३॥ १२युद्ध में १३ एकान्त (गुप्त) १४ नीति १५प्रमाद के कूप में १६स्वर्ग १७टपकते हुए १८ घावों से १९ आगे-आनेवाले समय का कर्म फल ग्रहण करके ॥५४॥ २० पिता २१ बादशाह ने २२ उसके पिता को माना था तिसीप्रकार

सोही रामसिंह१९८।३इहाँ कोटापुर सासक हो,
उक्त भूप१हैं पै वर्त्तमान अब जानौं बात ॥
पाई एक१भाई संटि यानैं पुरी पट्टनि सो,
बुंदीपति कीनौं जयजस२को जँहँ विघात ॥ ५५ ॥
भागे सब हाडे६१ पहिलैं तो यह ख्यात भई,
बुंदी देस१कोटादेस२सोक भो बिनु विसास ॥
तोहनंपुरेस कविराज हरनाथ तहाँ,
गोवर्द्धन१९५।२भागो सुनि छोरयो लैन सुखश्वास ॥
भाख्यो यों परिच्छा हम कीनी सो वितथ भई,
तो अब न जावैं बजि चारन घंटक तास ॥
अन्नबिनु या कविकों ऐसैं कढे तीन३अंह,
चोथे४दिन पाई ज्यों भई त्यों चारमुख चास ॥
हाडे६१ओर भागे पै न भागो सुत मोहन१९४।२को,
खेतपरयो गोवर्द्धन१९५।२जट्टन घनैंन खाइ ॥
ऐसो भयो निश्चय लयो तब सुकवि अन्न,
जो सु भजिआवैं निहचे तो यह मरिजाइ ॥
तूटिपरयो ताकौं जानि प्रत्युत सुमह तानि,
तानैं कविता करि परिच्छा जगकौं जताइ ॥
कोटापति वृत्तिभोजी जीवन बिचारयो कवि,
काव्य जाके डिंगल गिरामैं अजौं चमकाइ ॥ ५७ ॥
साह ऐसैं पट्टनि उतारी अनिरुद्ध१९६।१सन,
कोटापति राम१९८।८को मिली सो सबग्राम साथ ॥

१पति २बदले में देकर ३ नाश ॥५५॥ ४प्रसिद्ध ५विश्वास ६ तूहणपुर का पति कवि महियारिया शाखा का चारण ७ परीक्षा ८ झूंठी ९ इस चारणपन का शरीरधारी बजकर १० दिन ११ हलकारों के मुख से १२ खबर सुनी ॥ ५६ ॥ १३ उलटा १४श्रेष्ठ उत्सव करके १५परीक्षा १६जीविका१७खानेवाला

यातैं हमरेहु ग्राम खट६हि लवान१आदि,
पट्टनके संग गये पाथमैं ज्यौं मिलि पाथ ॥
तब खट६ए गेह् बरोदिया नगर तंत्रैं,
हरिना१प्रमुख अल्प प्रभुके कविन हाथ ॥
पहु बुधसिंह१९७१संग स्वकवि कढे न पीछैं,
यातैं सब खोइराख्यो हरिना१स्वगृह आर्थ ॥ ५८ ॥
सौंपे राख्यो हमरे उमेद१९८१४नृपही सँदय,
नाँनो व्है दलेल१९८१२के रहे हे इम जातो नाम ॥
एह कछु भावी३वर्त्तमान२ प्रभु जानौं अब,
कोटापतिके गये लवान१मुख यौं छ६गाम ॥
जाइ तब कोटा रामसिंह१९८१३कौं नंति जनाइ,
धुंत्तपन ठानि कह्यो लेहु न स्वकवि धाम ॥
राम१९८१३कह्यो वृत्ति हमनैं तो महियारियरन,
सौंपी तुमतो१नटाइ क्यौं अब इत सँकाम ॥ ५९ ॥
माधव१९३१२हमारे प्रपितामह उचित मानि,
तुमहि बुलाये पै न आये व्हाँ प्रसभ तानि ॥
भाख्यो हम बुंदी तंत्रैं कितकित हाहा भ्रमै,
माधव१९३१२तदपि लायो खंधिल । हिं निज मानि
बुंदी१ओ लवान२जैंवो वरज्यो न मान्यौं वलि,
इससौं अधिक दीनी गोठि जयसिंह आनि ॥
उँद्धत समुझि मान । खंधिल । तनय यातैं,
वृत्ति दीनी औरनकौं तुमरी लखि कुबानि ॥ ६० ॥

---

१ जिसप्रकार पानी में पानी मिलजावे तिसप्रकार मिल गये २ आधीन ३ हरणां आदि ४ आप के कवियों के हाथ में ५ राजा बुधसिंह के साथ ६ अपने घर का धन ॥ ५८ ॥ ७ दयावान् ८ बुधसिंह के विरोधी दलेलसिंह के होकर रहे थे इस कारण ९आदि १०नम्रता ११धूर्तता करके १२कामना सहित क्यों होते हो ॥ ५९ ॥ १३ हठ करके १४ आधीन १५नाम है १६चञ्चल ॥६०॥

आई अब पट्टनि हमारे तुम यातैं आइ,
खोये जें लबान१आदि राखेचहो ग्राम खट६॥
तोतो आइ अबहु हमारे होहु बुंदी तजि,
बलि सु न मानि छोरि पट्टनि प्रदेस बट ॥
आवत बुलाइकैं लबानमैं हवेलि१अरु,
पुंहवि२हवालेकी दईदे कछु द्रव्य१पट२ ॥
सो सुनि दई न लहि पट्टानिहू बुधसिंह१९७।१,
पच्छ दुव३संगी काकतारा४ज्यौं करे प्रकट ॥ ६१ ॥
पीछैं गई बुंदी बुधसिंह१९७।१नृपके प्रमाद,
तब जो भई सो कही कहिहैं बहुरि ताम ॥
राखि पै हवेली१औ हवाला२यौं लबान१मैं रु,
आये उपालंभ लहि बुंदीको छवि ललाम ॥
इत अपराध अनिरुद्ध१९६।१को भजत इहाँ,
जानि अवरंग४०।३अतिकोपको बिखय जाम ॥
भेज्यो नृप कावलके सूबा अहदीन भेजि,
दीनीसुद्धि जाहु नदै प्रत्यह हजार१०००दाम ॥६२॥
वज्रसो हुकम यहै साहको सुनत बुंदी,
घोर भय माच्यो ज्यौं अनीर झखं जेठ३घाम ॥
भाख्यो भूप सुर्ज्जन१९०।१नरेस करि कोल सात७,
तोर्यो गुडवानाँ अकबर३७।१के प्रसाद ताम ॥
भोज१९१।१रतनेस१९२। सत्रुसल्ल१९४।१अरु भाऊ१९५।१भूप,
काहुन अटकें लंघी स्वीयहु बिगारि काम ॥

---

१ बंट २ भूमि ३ पक्ष ४ काक पक्षी की दृष्टि आगे पीछे दोनों ओर जाती है ऐसे ॥ ६१ ॥ ५ तहां कहेंगे ६ ओलंभा लेकर ७ जहां ८ खबर ९ प्रति दिन (हररोज) ॥ ६२ ॥१०ज्येष्ठ मास की धूप में विना पानीवाली मच्छी के समान ११ तहां १२ अटकनदी १३ अपनी

हारि अब जैहैं कहा कहिहैं सकल हाड़,
स्वीयन[1] क्यौं नृप हुव गहिहै गयँहा धाम ॥ ६३ ॥
पाडनको ऐसो अनिरुद्ध१९६।१नृप ताहू पेखि,
प्रतिदिन दंड साहिको जो नसठौं पुगाइ ॥
आखिनऽलों बारह हजार१२००० अहदीन[2] अप्पि,
भीत भीत पानी वंस[3]बिरुदन देवो भाइ ॥
लहु हुवरानी औ खवासि कछु संग लैकैं,
जीवन मृतक भयो अटक परें[4] जाइ ॥
राजा अब्द[5] पंचक५अमीरखानपास रहि
सुज्जन१९०१को कोविंद[6] बिगारचो सर्वसौं सिटाइ ॥ ६४ ॥
छह६अब्दमें[7] तहँ कुदिष्टि[8] करि रोग छाइ,
मास सुचि[9]मेचक२द्वितीया२गयो भूप मरि ॥
बुंदी लाये रानि१न खवासि२न सह विभूति,
कथित प्रासन उहाँ भूपतिको दाह करि ॥
दुर्जन१९६।१दबायो कुँसला[10]ख्य१मो सिलहदार,
सहाराम२नाथाउत साकलहु मज्झ[11] परि ॥
नयन कलंब मुनि इंदु१७५२सक बुंदीनैर,
सहसा असंगल अनिष्ट मच्यो भैं[12] प्रसरि ॥ ६५ ॥

(चूडालदोहा)

हड्ड६१न इनैं[13] अनिरुद्ध१९६।१हुव, अटकपार बिनु अंग अमंगल[14]
इत बुंदी सब आकुले, सत्रु भये इहिं संग समंगल ॥ ६६ ॥

---

१ अपने लोगों ने ॥ ६३ ॥ २ खालसा करने तथा दंड लेने को भेजे जाते थे उन लोगों को अहदी कहते थे जो राजपूताने में आलसी का नाम प्रसिद्ध होगया है ३ भय का मित्र होकर वंशकी स्तुति को पानी देना रुचा ४ अटक नदी के पार जाकर ५ पांच वर्ष ६ सुजन की पंडिताई ७ वर्ष में ॥ ६४ ॥ ८ बुरे भाग्य से ९ अषाढ वदि दोज के दिन १० कुशलासिंह नाम का ११ मध्य १२ भय ॥ ६५ ॥ १३ हाडों का राजा १४ मंगल सहित ॥ ६६ ॥

पुव्व१मरी रानीप्रथम२, सह जहोनि३हुतीहि सेस५सब ॥
उत न जरी न जरी इतहु, तीस३०खवासि हुई ससंग तब ।६७।
महाराम१सालक कुमति, पीछैँ सालम संग भयो पर ॥
सिलहदार१कुसलाख्य१सह, आयो लै सब भूँति इहाँ अर ॥६८॥

॥ दोहा ॥

अटकपार मरतहि अधिप, हुव बुंदिय हाकार ॥
सिसु दुव२मातुल सदन सन, बुल्ले विहित बिचार ॥ ६९ ॥
क्रमित चरित अनिरुद्ध१९६।१को, अल्पहि हो जिम आनि
कथन जथाश्रुत तिम कहिय, पुनि श्रुत१लेख२प्रमानि ।७०।

॥ ॥

सुपहु रचे सबही महलन सिर इहिं अनिरुद्ध महल१अभिधान ॥
सबसन उच्च अजिर२छत्रि३न सह बहु तुंगित करि बहुत विधान॥
गिरिगढ द्वार अवधि सन सुभ गिनि क्रमकरि सबपुरबिच परिकूट२
पाउस जल कर्दम दुख परिहरि लिय पहिलैं इम करिजस लूट।७१।
पुर कापरनि तथाहि कुमरपन प्रथित रुचिर बिरचे प्रासाद३ ॥
नृपधात्रेयहु देव१सनामक वाढिय जस जग सुख संवाद ॥
निज आख्यां करि देवपुरा१नवसाखापुर यह रचिय सयान ॥
वापी२उपवन३महल३वनाइ रु थिति किय तहँ सुहिगिनि निजथान॥
इक१छत्रिय१५बिरचिय तहँ अनुपम चउरासिय थंभन चित चारु ॥
थिर जैसी कहियत बिरले थल किय तैसी प्रमुदित करि कारु ॥

१जादवणी सहित २ पति के साथ ॥६७॥ ३ कुशलसिंह के साथ ४ ऐश्वर्य ५शीघ्र ॥ ६८ ॥ ६ मामा के घर ७ से ८उचित विचार से बुलाए ॥ ६९ ॥ ९चलताहुआ चरित्र १० सुनेहुए और लिखेहुए के अनुसार ॥ ७० ॥ ११ महलों के ऊपर १२ चौक १३ ऊंचा १४ पर्वत के गढ के दरवाजे की सीमा से १५ नगर का द्वार १६ वर्षा के जल के कीचड़ का दुःख मिटा कर ॥ ७१ ॥ १७ प्रसिद्ध १८ धाय भाई १९कहलाया २० अपने नाम से २१ शहर के बाहर का पुरा ॥ ७२ ॥ २२ सुन्दर २३ कारीगरों (शिल्पियों) ने

दिग्विय तिम दृजी[१]छर्थ[२]र[२]थर पुनि तारागढ प्राच्य[२]प्रदेस ॥
कह्यित सुत सजनक[३] आख्या करि इम तवतैं छतिन जुगरएस ७३

॥ दोहा ॥

पहुं बुंदिय बाजार पथ, सिला खुग किय सज्ज ॥
पाउसमैं दुख पंकको, यातैं सचत न अज्ज ॥ ७४ ॥
कितें कहन खलु यह खुरा[१], मंजु रच्यो नृप माइ ॥
किम्हु होहु पै कर्दमैं न, जिहिं करि अवलगि जाइ ॥७५॥
तज्यो देह नृप रचित जहँ, अज्जहु चोरीं आहि ॥
रच्यो चरित अनिरुद्ध[१९६]१[३]को, विधि क्रम वैत्त निबाहि ॥
जिहिं संग न इक्क[१]हु जरी, अबला रानिन आदि ॥
यह अचिज्ज पिक्खहु अधिप, उज्झिय रीति अनादि ॥७७॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीपत्यनिरुद्धसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणागतानिरुद्धहाडादुर्जनसिंहबुन्दीविजयन १, यवनेन्द्रसेनासहायप्रद्रावितदुर्जनसिंहानिरुद्धसिंहबुन्दीपुनरधिगमन २, क्रीतकलिकातानगरांग्लफोर्टविलियमदुर्गनिर्माण ३, सनंसनीकजट्टयुद्धानिरुद्धसिंहपलायन ४, तद्युद्धकोटासेना-

१ अष्ट २ तारागड की पूर्व दिशा में ३ पिता सहित पुत्र के नाम से ॥७३॥ ४ राजा ने ५ पत्थर का खुरा तयार कराया ६ कीचड़ का ७ आज [इस समय] ॥७४॥ ८ निश्चय ९ यह सुन्दर खुरा राजा की माता ने बनाया १० कादा [कीचड़] ॥ ७५ ॥ ११ श्मशानों का* मंदिर १२ है १३ वार्ता का निर्वाह करके ॥ ७६ ॥ १४ स्त्री १५ आश्चर्य १६ अनादि रीति को छोड़ी ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुंदी के भूपति अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह को दक्षिण में जानकर हाड़ा दुर्जनसिंह का बुंदी विजय करना १ बादशाही सेना के बल से दुर्जनसिंह को भगाकर अनिरुद्धसिंह का बुंदी पीछा लेना २ और अंगरेजों का कलकत्ता नगर मोल लेकर वहां फोर्टविलियम नामक गढ बनाना ३ सनसनीवाले जाटों के युद्ध में अनिरुद्धसिंह का भागना ४ इसी युद्ध में कोटा के सेनापति गोवर्धन

* पहिले समय में इस स्थान पर मंदिर बनते थे अब उसके स्थान में छत्रियां बनती हैं किन्तु जोधपुर में तो श्मशानों में अब भी मंदिर ही बनते हैं ॥

पतिगोवर्द्धनप्रद्रवश्रवणस्वपरीक्षानृतत्वहेतुकृतानशनव्रततृहणपुरीयमहियारियाचारणहरनाथस्य रणहतगोवर्द्धनश्रवणोत्सवपुरःसराशनकरण ५, रणपलायनापराधहृतानिरुद्धपट्टनप्रान्तकोटाधिपप्रदान ६, प्राप्तदण्डकृत्तसुर्जनसंधानिरुद्धसिंहयवनेन्द्रसेवासिन्धुसरित्परतटगमन ७, उषितपञ्चहायनानिरुद्धसिंहतद्भूमिमरणतत्समयनिर्मितस्थानसूचनमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितोऽष्टत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३८ ॥

दास का भागना सुनने के कारण अपनी परीक्षा को झूंठी मानकर मरने के कारण अन्न जल छोडनेवाले तृहणपुर के महियारिया चारण हरनाथ का गोवर्धन का युद्ध में काम आना सुनकर उत्सव करके अन्न जल लेना ५ युद्ध से भागजाने के अपराध से अनिरुद्धसिंह से पाटण का परगना खालसे होकर कोटा वालों को मिलना६ बादशाह से दंड पाकर सुर्जन के कियेहुए कौलको तोड़कर अनिरुद्धसिंह का शाही सेवा में अटक नदी के पार जाना ७ पांच वर्ष रहकर अनिरुद्धसिंह का वहीं पर मरना और अनिरुद्धसिंह के समय के बने हुए स्थानों की सूचना का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि दो सौ अड़तीस २३८ मयूख हुए ॥

शुद्धिपत्रम्

मध्य पीठिका में

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट पंक्ति
पौपशुक्ल द्वादशी	पौपशुक्ल दशमी	१—२१
जिसम	जिससे	२—२२
नाटकों को देख	नाटकों को देखें	३—३१
हासकता	होसकता	५—६
सेमी देश भाषा में	समी देश भाषा में	,,—१४
ऐसे सर्वव्यापि	ऐसे सर्व व्यापी	,,—१५
अतिसयाक्ति	अतिशयोक्ति	,,—१६
अलकार	अलंकार	,,—१८
लिखे	लिखिये	,,—३०
चार रसा का	चार रसों का	६—९
शृगार रस	शृंगार रस	७—१२
भूमित्रक	भूमित्र	८—३
स्तुति जिन का	स्तुति जिन की	११—३
विमानों परबैठै	विमानों पर बैठे	,,—२८
किन्नर	किन्नर	१३-२१
गंधर्वनाचन	गंधर्व नाचने	,,—२७
तुति करनेलगे	स्तुति करने लगे	१४-१३
वंधूपुमुदाऽन्विता	वधूपुमुदाऽन्विता	,,—३०
लिखा जाता है	लिखा जाता है	१५—५
किन्नरगवर्वा	किन्नरगन्धर्वा	,,—६
ग्यारहवां श्लाक	ग्यारहमां श्लोक	,,—१२
नीचे लिखते हैं	नीचे लिखते हैं	१६—२
आाद गंधर्व	आदि गंधर्व	,,—५
चारण लाग	चारण लोग	,,—५
दन्तवक्र	दन्तवक्र	,,—१५
प्रजापात	प्रजापति	१७-२०
देवताआ के	देवताओं के	,,—२४
तव दवता	तव देवता	१९-१७
पांचों ही पुत्रों का	पांचों ही पुत्रों को	२३-१४
द्वारपालों को कहा	द्वारपालों से कहा	२३-१९

फल आर पुष्पों से	फल और पुष्पां से	३९-१८
इन का ानवासस्थान	इन का निवास स्थान	४०-१४
संदेह होवेगी कि	संदेह होवेगा कि	,,—१७
मिट जावेगा	मिटजावेगी	,,—२०
चत्रियों क	चत्रियों के	४४—७
स्त्री पुत्रादिक को	स्त्री पुत्रादिकों को	,,—१२
एक हा है	एक ही है	,,—३२
वतमान समय	वर्तमान समय	४६—६
अपनी निंदा	उनकी निंदा	४७-११
धरा का अपेचा	धरा की अपेचा	,,—२९
धोखा ले मुवा	धोखो ले मुवा	४८-२४
हरिदास	अचलदास	,,—२६
हरिदास को	अचलदास को	,,—३१
हरिदास को	अचलदास को	४९—३
		५, ६, ७, १०, १२, १४, १५, १६, २०, २१, २३, २९
संवत् १९१४	संवत् १९४१	५२-२९
जसवन्तसिंह न	जसवन्तसिंह ने	५४—८
रहिया हमे	रहिया हमैं	५६-१४
राजड	राजड़	,,—१५
चत्रियां तणां	चत्रियां तणों	५८—८
जंभीरजर	जंभीरजरे	५९—४
चरणों की ज्ञाति	चारणों की ज्ञाति	,,—२०
तुच्छ समझा	तुच्छ समझे	६१-१७
घोड़े लकर	घोड़े लेकर	६३—६
उदयपुर	उदयपुर के	६६-३०
महराणा	महाराणा	६७-१०
जमीयतें	जमीयत	६७-१६
राजड कियो	राजड़ कियो	६८-२५
चन्हेड़ा भेजा	चन्हेडा में भेजा	६९-११
अपने पुत्र	अपने पौत्र	,,—१०
एक चारण को	कवियाकरनीदाननामएकचारणको	७०-१२
कोई समाधना	कोई समाधान	७९-२१
पड़िहार सीधे आदि	पड़िहारसीधेऔरराठोड़ियाभांभीआदि	८०-१२
पिता नाम से	पिता के नाम से	८७-२१
सहैसमा	सहेसमा	८९-१६

वंशभास्कर का शुद्धिपत्र

निना संतान	विना संतान	१६७५-२६
राइय	रहिय	१६७७—३
नृपान	नृपति	,,——१३
हुई	हुए	१६७८-२३
करनेवाला	करनेवाली	१६८०-२८
अरिसहि	अरिसीह	१६८१-१०
हल्लु के	हलके	१६८७-२०
दिशाएं	दिशाएँ	१६८९-२६
वाहरवाले ऊपर	वाहरवाले बुरजों के ऊपर	१६९२-२१
सीध	सीधे	१६९३-१८
तघ	तव	१६९६-१२
घोड़के	घोड़ों के	१७०४-२४
विदारन	विदीरन	१७१४-२०
यटिग	यढिग	१७२४-१४
लैदहो	लैदैहो	१७२६—६
(गोद)	(भुजों में)	१७५८-२४
काहि	कोहि	१७५९—२
तप	तव	१७६०—९
कहैं	कहे	,,——७
तलालोकाँ में	तैलालोकाँ में	१७६३—१
पूजि	पूजित	१७६६-२१
अजयसिंहको लाकर हम्मीरसिंहसे मिलाना	हम्मीरसिंहको लाकर अजयसिंह	७६७-१५
पंच सहँस ५००००	पंचसहँस५०००	१७७८-२१
कहा कि	कहा कि	१७७८-२३
उनके	उनको	,,——२४
वनजरों ने	वनजारों ने	१७७९—१
५००००	५०००	,,——४
युद्ध करना	युद्ध करनेवाले	१७८२-२४
दोहा ॥ इमनिलय निद्धिहायन उभयरसोसु चिंतितवैर?रन२	इम निलय निद्धिहायन उभयर रसो सु चिंतित वैर? रन२॥दोहा॥	१७८४-१७
हनैं	हनें	१७९२-१८

पैरोंमें१५	१५पैरोंमें अथवा नजराना सहित	१७९२—२६
पौत्र सिम्प्रदानी	पौत्री सम्प्रदानी	१७९६—१
बंबावद क	बंबावद के	१७९६—१
काछेला	काछोला	१८००-२१
झुकाही नहीं जाता	झुकाई नहीं जाती	१८०२-२५
धन २३ छिपाये हुए	छल के साथ ठग से खुसाये हुए	१८०५-२७
निरथक	निरर्थक	१८१०-२३
जिको	जिको	१८११-११
चालियोतो	चालियांतो	१८१२-१८
मांढ	मांढा	१८२३-२५
भलि	भूलि	१८२४—५
जाय १ जावै २	आय १ जावै २	,,———१५
गहत	कहत	१८२६-१८
तुमको	तुम से	१८२९—८
शूरविरोंने	शूरवीरों ने	,,———१२
इतिहास कीजे	इतिहास कीजो	,,———२५
निकिय	बकिय	१८३०—१
सनय	सयन	,,———६
चविय	चविय	,,———१६
कारणां स	कारणों से	१८३१-२९
ताचक	तावक	१८३२-१७
पुंखारां को	पुंखा को	१८३५-१४
कहहु	करहु	१८३८-१७
लागों ने	लोगों ने	,,———२१
धारदिट्ठि	धरिदिट्ठि	१८४०-११
आपरी	आपरा	१८४२—७
जवनाँरा मारिया	जवनाँरो मारियो	१८४३-१४
दोह	दोहा	,,———२८
बारहठों की	बारहठों का	१८४९-२८
गिराना	गिरना	१८५३-२०
पयत	पर्यन्त	१८५६-२२
उनक वैभवको	उनके वैभव को	१८५८-२६
वसुधाक	वसुधा के	१८५९-२४
गयड	गयउं	१८६१-२३

जिसके एक समयको सूचित किये हुये	सूचना किये हुए समयके समयमें	१८६३-२०
शरारि	शरीर	,,——१७
अरम्भ	आरम्भ	१८६६-२२
अक्खयरज	अक्खयराज	१८७७—२
शीपार्द	शीर्षोद्	१८७८-१३
हाना लिखा सा	होना लिखा सो	१८८१-२२
हाडों का वश	हाडों का वंश	१८८९-१७
हाड के	हाडा के	,,——१८
करीम को भा	करीम को भी	,,——२४
इने	इतैं	१८९०-१०
सहायतार्थ आना	सहायतार्थ नहीं आना	१८९४-१६
घेरनेवाले	घेरनेवाली	,,——१६
रातिवास	रतिवाह	१८९९—६
सुख	मुख	१९००—४
वितारिं	चितारि	१९०२—२
कुन्दीन्द्र पौलद्वय	कुन्दीन्द्र वालद्वय	१९०८—६
चले	चलै	१९१०-१४
गैणाली	गैणोली	१९१७-१७
घाटिप	धाटिप	१९२१-१३
(पटुके)	(कमर बांधने के वस्त्र)	१९२२-२६
प्राणप्यारे	प्राणप्यारे	१९२६-२२
पांच वीरों का	पांच सौ वीरों का	१९३०-२२
॥ ६६ ॥	॥ १६६ ॥	,,——११
मिलिढ	मिलिडे	१९३१—९
हुंकौं	हुंकौं	,,——१०
चुड़िलिनें	चुड़ैलें	,,——२६
(झालर, कवच)	(कवच)	१९३३-२८
अगरमें	आगरे में	१९३६-१०
चंद्रचूड़	चंद्रचूड़	१९३७—७
घोड़े के	घोड़ों के	१९४०-२४
सुधराइ	सुथराई	१९४१-११
हितकोटा	रहिकोटा	१९५१—२
पंगल	पुंगल	,,——२८
पुङ्गल	पुङ्गल	१९६३-२०

रसोई धर	रसोई घर	१६५४-२३
जिसके	जिसके	१६६६-२६
अन्तिस (व)	अन्तिन (व)	१९६७-२०
मारजाना	माराजाना	१९७९-२८
चाहतहै	चाहतहे	१९७७--१
कदर	करद	१९=४-१४
जहरी तरर	जहरीली तरवार	,,---२३
छुरीवाला	छुरी	,,----२४
आभपेक	अभिषेक	१६८६-१६
चढे हुए	चढतेहुए	१६८८-२१
सहन	हसन	१६८९-१६
रद्द	रद्ध	१९९१---१
मरावत	मरातव	१६६=-१=
सड्डू ? पुन	सड्डू ? पन	२००९-१९
वलत्कार	वलात्कार	२०१४-२४
ङिसप्त	एकसप्त	२०१५--३
काछें	काछौं	२०२६-२०
दोना	दोनों	२०२९-२३
वनाना	वयाना	२०३०-२७
दानों	दोनों	२०३३-२०
पानीपत	पानीपथ	,,---२८
अनक	अनेक	२०३४-१९
मांगने परे	मांगने पर	,,---२९
व्यसुत्व	व्यसुत्व	२०३६---७
आयोध्या	अयोध्या	२०३९---२
ऊनैं	अनें	२०४२---३
वरनैं	वरनें	,,-----६
जनैं	जनें	,,----१०
दीनीसखि	दीनीसीख	२०४८---६
लटेहुए	लेटेहुए	२०५१-१८
खिलास	खिवास	२०५२-१६
दासीक	दासीके	२०५३-२४
सुमूह	समूह	२०५६-१९

झकि	झकि	२०१७--१
ओरेंगे	ओरेंगे	,,——८
कादिके	कृदिके	,,....--१३
श्यामा सहित	श्यामों सहित	,,——१७
फट्ट	फट्टँ	२०५६---१
ठहरानी	ठहरानों	२०६०---३
शिपोदिये	शीपोदिये	२०६२-२४
चांवर	चावर	,,——२६
नार द	नारवद	२०६५--६
५नागमें	५शरणमेंआईहुईप्रजाकी पुकार	२०७२-२८
सुहिलिन्नी	सुनिलिन्नी	२०८०-१३
मदा	मेवाड़	२०८४-२८
प्रतिसारा	प्रतिसीरा	२०६४--५
भमीका	सभीका	२०९५-२६
भोगतेहुए	भोगभोगतेहुए	२१००-२५
हालोंके	हालोंझालोंके	२१०३-३०
वाराके	वीरोंके	२१०७-१४
जाताय	जातीय	२११०--३
भीशण	भीशण	,,——२४
प्रहारदिय	प्रहारिदिय.	२१११-१७
रामसंग्राम	रानसंग्राम	२११३—१
१५९४	१५८४	,,——२६
स्नागा	सांगा	२११७-२४
यद्धसे	युद्धसे	,,——२६
१५७१	१५७५	,,——२७
अथात	अर्थात्	२११८-१६
पूंगमल्ल	पूर्णमल्ल	२१२२-१५
बुंदीक	बुन्दीके	,,——१८
पकड़जाने	पकड़ेजाने	२१२३-२३
पूगमल्ल	पूर्णमल्ल	२१२५फुलियो
हरत	हेरत	,,——७
कोठारियाक	कोठारिया के	२१२६-२२
हेन	हेतू	२१२७—६
दशापर	देशापर	,,——२२

सिहों	सिंहों	२१३६-२५
गणशवाग	गणेशवाग	२१४१-२०
ढक्क	ढक्कू	२१५४—१
वारकि	वारिक	२१५५-२२
निवन	निवेदन	२१६१- ५
शीलभ्रंशाभशाप	शीलभ्रंशाभिशाप	२१६२- ४
राठोड़ों से	राठोड़ी से	,,——२०
मदहास्य	मंदहास्य	२१६३-२६
दहियाह	दहियाहु	२१६६-१५
दिंव	दिंय	२१६८- २
भाकर	भास्कर	२१७६- ६
ईषा	ईर्षा	२१७७-२७
तज्या	तज्यो	२१७९- २
कालेके	कालके	२१८०-१८
ककड़ीक	ककड़ीके	,,——२६
रुक्यान	रुक्यांन	२१८२-१७
यहां पानी है	यंही पानी है	२१८३-२७
देखा	देखो	२१८४-२२
नहींथा	नहीं रहा था	२१८५-२६
बठो	बुठो	२१८६- ०
जनतरी	जानतही	२१८८—०
मरेहुओं का जलाय	मरेहुओं को जलाय	२१८९-२४
अर्जुन	अर्जुनकी	२१९०-२४
पूर्वकं	पूर्वक	२१९२-९
शरीरवाले, चारण वंशके सूर्य	वीरमूर्ति,	२१९३-१७
	षष्ठराशि	
बेटे	बैठे	२२०४—६
बंध	बंधु	२२०८—७
दूजो २ दिन	दूजे २ दिन	२२०९-१७
जमखट्टिय	जसखट्टिय	२२११-१२
तहँमासफ	तहमासफ	२२१६—९
अतंकाल	अंतकाल	२२१७-११
२२००	२२१०	२२२०फोलियो

फोज देकर	पत्र देकर	२२२१-१९
फीरोजशाहके	फीरोजशाह से	,,——२३
अनकि	अनीक	२२२२-११
सामपशाह का	तहमास्पशाह का	२२२२-१६
शीपोादयी	शीशोदिया	२२२४-२९
जाने का कहने का	जाने के कहने का	२२३३-२१
वेग	वेग	२२३७-२१
जुग्यो तहाँ	जुरयो जहाँ	२२३९-१२
जिसके नाम द्वार	जिसके नाम का द्वार	,,——२६
अनुदै	असिदै	२२४३—१
विनंति	विनति	२२४७-२३
जान योग्य	जाने योग्य	२२५०-१८
हनुमान को	हनुमान का	२२६३-२५
जय से	जश से	२२७०-२४
भगवानदास को	भगवानदास का	२२७२-२९
हिराया	हिरायो	२२७६---८
दूर से देह को छोडने दो	दंभियों को मरने दो	२२७८-१८
खड़िया	खड़िया	२२७९-२०
खड़िया चारण	खड़िया चारण	,,——२४
खड़िया शाखा के	खड़िया शाखा के	,,——२७
खड़िया दुलहा	खड़िया दुलहा	२२८०-२५
सेवक बीच में	सबके बीच में	,,————,,
मच्छत	मचत	२२८५-१०
डरनलगी	डरनेलगी	२२८६-२४
खटकड़ा	खटकड़	२२९०—४
पट	पट्ठ	२२९६—३
खल्लीपुर	खल्जीपुर	२२९८—७
खवम मयूख	नवम मयूख	२२९९ फोलियो
अनहेलों	अनेहलों	२३००—३
प्रीत	प्रांत	,,——१३
दीनाँ	दीनों	,,——१५
घडवीम	षड्वीसे	२३००-१३
दुकूलवारी	दुकूलवारो	२३०८—५

ढिलोर	ढ्लिोरं	२३१२—३
इनहु	इतहु	२३१४—९
विलव	विलंव	,,——२७
फूंट ४	फूटैं ४	३२१६—१
घौडे भी	घोड़ै भी	,,——२२
धनजोडि	धनजोड़ि	२३२६—६
वळै, कीधा	वळे, कीधो	,,——९
घडियो	घड़ियो	,,——१९
दिवाडिहां	दिवांड़िहां	,,——२१
(?)	जल (पराक्रम को ?	,,——२६
वेठो	वैठो	२३२९-१८
दूदा	दूदो	,,——,,
गोपाल	गोपाळ	,,——,,
वदले	वदले में	,,——२३
भालारी	भालांरी	२३२६-१४
भड	भड़	२३२८—३
तवैलारि	तवेलारी	,,——७
इमडो	इंसड़ो	२३३१—३
सीसवाढि	सीसवाढि	२३३२-१२
कोडि	कोड़ि	२३३३-२२
दोडि	दोड़ि	,,——२३
लडण	लड़ण	२३३४—९
भड	भड़	,,——१०
ग्रड	ग्रड़	,,——,,
स्थल	सळ	२३३५—३
इसडी	इसड़ी	,,——७
रचित	रंचित	२३४०-२४
मग्गलहि	मग्गलहि	२३४३-१९
वढग्राई	वदग्राई	२३४७-२१
धनभूरि	धन भूरि	२३५३-१३
सुरजपारि	सुरजपोरि	२३५४-१
सासवसु	सासनवसु	२३५७-७
कानि जवन	कांति जवन	२३५८- ९

ग्वट	स्वघट	२३६३-१२
इहिन्दुवा कहते हैं	हिन्दु कहते हैं	२३६४-२१
०	थिर सुरजन १९०११ रनथंभको लहम सुनिय सत्त ७ किय	२३६६—१
थिर सुरजन १९०११ रनथंभको लह-म सुनिय सत्त ७ किय	०	,,——१६
इतके	इतेक	२३७४—५
७ वर्ष में हुआ हूं	७ वर्ष मैं मैं हुआ हूं	,,——२२
दशा मयूख	दशो मयूख	२३७७—५
वेनार कराने का नाम भी	वेनारकरानेकेनिशेषकानामभी	२३८१-१९
वो पथिको	वा पथिको	२३९४-११
तिनसी	तिन सो	२४१३—६
चडम	सुत चडम	२४२५—६
प्रवस	प्रवेस	२४२७-१८
अमद	अम्हद	,,——२४
पंचमा	पंचमी	२४२८—२
उनकी	दोउन की	२४३५—७
चिंतंकिन्न	चिरंकिन्न	२४४०-१७
नापको	नापके	२४६३-२४
ब्राम्हणी ने	ब्राह्मणों ने	२४६५-२१
मद्यपाकर	मद्य पीकर	२४६६-२१
रहतं	रहत	२४७१—२
श्रलिफ	श्रालिफ	२४७३—७
अलिफखां का	आलिफखां का	,,——२४
कैद देरके	कैद करके	२४७७-२७
अलिफखान	आलिफखान	२४८५-२७
इसप्रकार	तिसप्रकार	२४८०-२५
२१ फूलकर	२१ शोभा सहित फूलकर	२४८८-२७
प्ररग्रह	प्ररग्रह	२४९९-४
खोद्रों	खाद्रों	,,——२४
बंधु २ तो	बंधु २	२५०२-२
अपने हाथी में	अपने हाथों में	२५०५-२६
आमलक नाम	आमलक मान	२५१६-१
१ मोतियों के	१ आंवलों के समान मोतियों के	,,——२१

३ शरीर पर पहिनो	३ शरीर पर,	,,——,,
कलबीस	कलाबीस	२५१७-२५
एक ही पुत्र इसहै कारण	एकही पुव है इसकारण	२५२०-१०
हडुदे१नैं	हडुदे१न	२५२४-३
हत्थयनीन	हत्थयनीन	२५२३-३
नाम काका से जानने	नाम कानों से जानने	,,——२३
वृद्ध आवस्थावाले	वृद्ध अवस्थावाले	,, २४
कैद कैकरे	कैद ककरे	२५३५-१५
हक मनसीव	है कमनसीव	२५४०-२४
कालीबाई नामक	कालीबाइ नामक	२५५०-२१
मयूख हुआ	मयूख हुए	,, २३
तदुत्तराधिकरि	तदुत्तराधिकारि	२५५२-४

सप्तमराशि

चिंता करके	चिता करके	२५५३-२३
प्रभुत्वभई	प्रभुत्वमई	२५५६-२
चतुर्थ ४	चतुर्थ ४ रु	२५६०-१
नव ६	नवम ६	,, -१०
नामकोरि	नामकरि	२५६२-१
पंचम ५	पंचम५ सु	२५६४-२
हडुदे१न के हेलि	हडुदे१न के होलि है	२५६६-४
सुत स्याम १६४।८	सुत स्याम १९४।८ सशो	,, -१०
तनया	ताही उर तनया	,, ११
उचित काइ	उचित कराइ	,, २०
भेजे सु	भेजे सुर	२५६८-१२
आरज कराई	अरज कराई	२५७०-१२
राजसवतिका	चैतालीयन्	,, १२
कुंदसिन	कुंदसिन	२५७१-११
सुखरक्खव	सुखरक्खन	२५७२-१
जानेवाले	जानेती	,, २६
चढायउ	चढायउ	२५७६-१४
साहहिय होयह	साहहिय होयह	२५७९-०
जेहैंमिलि	जैहैंमिलि	२५८५-११
नाचनेवाला	नाचनेवाले	,,——२६

गानेवाला	गानेवाले	,,——,,
वहां था उसको	वहां थे उनको	,,——,,
दुरमहल	दुरमहल	२५८६-२
पंचमन५००	पंचमन२०० ॥ १६ ॥	२५८७-१
कानन की	कामन दी	,,——२०
गलआंट	गज आंट	२५८८-४
माता के सीखरे	माता के सिखाने	२५८६-२३
होतुलोदिन	देतुलादिन	२५९१-३
बडेभाई कीर्ति करो	बडे भाई की कीर्ति करो	२६००-२२
ग्रन्थकर्तृकार्याणां	संघाधिकारिग्रामां	२६०३-५
ग्रन्थकर्ता के कामों का	संघी के ग्रामों का	,,——२४
दुवरहि पटनिज	दुवरहिपटनिज	२६१४-११
गोड़ के हाथ	गाड़ के हाथ से	२६१६-२३
थाकि बैठ	थकिबैठ	२६१७-३
इमभेद	इभ भेद	२६१८-१
यह४हेति	हय४हेति	,,——४
इतदिनन	इनदिनन	२६१९-५
सनमानैं	सनमानें	,,——१७
उतनेहीराजाओं को विवाहेंगे	उतनाही बहुधाथ विवाह लेवेगा	,,——२३
यहमत	बहुमन	२६२१-१२
सदाहि	सराहि	२६२३-८
डोडाका	डांडा का	,,——१८
महधों	मह्रयों	,,——२३
हांने में	होने में	२६२५-२४
सरजासिंह	सूरसिंह	२६३५-१९
सरजासिंह	सुरसिंह	,,——२८
पादनु.कुल	पारिसु कुल	२६४०-१८
दुगुनीभूमि है	दुगुना भूमि में है	२६४१-२२
पवन क	पवन को	,,——२९
दोनेरस	दोनरस	२६४७-२१
दुनबंटियत	दुदबंटियत	२६४८-१६
परिछो	परिखो	२६४५-१७
दुरगा	दुगाँ	२६५१-१४
१०अग्रारणी	दिया आदि	२६५२-२७

सवाँकर	सवाँकर	२६५३-७
दूजहीदिवस	दूजैहीदिवस	२६६५-२४
वेहड़ा	वेहड़ा	२६६६-?
आठंही	आठँही	,,——१६
वडेजोर	वडैजोर	२६६७-६
कालीरा कलस	कालीरा कळस	,,——१७
सूरतारी	सूरतारो	,,——१८
छाकियाँ	छाकिया	२६६८-२
सुरारै	सुरांरै	,,——३
चाचर	चाचरै	,,——११
मुरादानखस	मुरादवखस	२६७३-२५
जाडांबिरद	लाडां बिरद	२६७६-९
कहीगई	कहेगय	,,——१६
जिण भी	जिण थी	२६७७-८
वजैवंच	विजैवंच	,,——१६
जर्जरभूत	जर्जरीभूत	२६७८-२७
वेरियां	वैरियां	२६७९-१३
रांगपर	रागपर	,,——१८
सुडकेजलकणां से	सुंडके जलकणों से	,,——२८
अटारि	अटारी	२६८०-१०
नगर का	नगर की	,,——१९
२०डालीं	२०डाली	,,——२४
चपटलगने से	चपेटलगने से	२६८१-३०
पॉनपाँली अजेव्यों	पोनपाँणी अजेव्याँ	२६८२-३
वनमागमें फिराते हैं	वनमार्गों में फिरते हैं	,, -१७
१६ बराबरी में १७ कर्ण के	१७कर्णके१६बराबरसरवस्वदेनेवाले	,, १९
जिकीवात	जिकावात	२६८५-१५
वणियो अठे	वणियाँ अठै	२६८७-२
छपड़ाँ	छवड़ा	२६८८-६
३ सिभ	३ सिंह	२७०३-१५
गईताव	गईतब	,, २२
जंगचाहि	सँगचाहि	२७०४-१०
डरे मं	डेरे मं	२७१०-२४

पीर दगन	पीर दगन	२७११—१
मंडलगा	मंडलग्ग	२७१३- ०
स्मामिलवन	स्वामिलवन	२७१३-१८
हाथा से	हाथों से	,,—— २१
ानश्चय	निश्चय	२७१४-१८
ऐर्काहठि	रोकाहठि	२७१६-२२
संकल	सकल	२७२६-१३
फका महासिंह	काका महासिंह	२७३०—२
विघाती	घिघार्ती	२७३३—४
गजमाल	जगेमाल	,,——८
रहैतैं	रहेतैं	,,—— २२
तैरेभाय	तेरेभाय	२७३४—१
जानिहो	जानिहौं	,,——३
रनअंकनमैं	नरअंकनमैं	२७३६-१५
राचैघरा	राचेघरा	२७३७-१५
मूराद	मुराद	२७४०-२५
अदितो	आदितो	२७४१-३
सघ आये	जब आये	,,—— १६
१० ही पर	१० हो पर	२७४३-२०
मऊ गलै गय	मऊ गैल गय	२७४८-२०
विखेरे हुए भी	बिखरे हुए भी	२७५४-२५
सबसुनत	सबसुतन	२७६५-१४
निपततम	नियततम	,,—— १७
गिरता है सो	गिरना है सो	२७६७-२७
बंट करनवाले	बंट करनेवाले	२७७१-२७
हम मृत्यु	०	२७७६-२
नघावन के कहैं	नघावन के कहे	,,—— १६
होम होकर रहा	होम करो	२७७६-२१
सुलतान महम्मद	सुलतान मुहम्मद	,,—— २४
वत्तनसों	पत्तनसों	२७८५-१८
पीछ खिनपाय	पीछैं खिनपाय	२७८६-५
मोदमनि	मोदमानि	,,——१७
भौंनभान	भौनभौन	२७९१-१४

मोहम्मद का	मुहम्मद का	२७९३-२८
बुंदिवालोंने	बुंदीवालों ने	२७९६-१७
अप्पनहु हैं ज्यों	अप्पनहु हैं ज्यों अत्र	२८०३-८
याकोहुती	याकेहुती	२८०५-१६
आपनों छोनितल	आपनों जो छोनितल	२८०६-४
वजिरहिं	वजीरहिं	२८०७-१
जानिबै मैं	जानिबे मैं	,,—११
अथवा समासे	अथवा छमा से	२८०८-२४
विश्रा जो	अविध जो	२८१२-५
पुत्रक पंतितैं	पुत्रन पंतितैं	,,——,,
अरजो समचित्त	अरजी मम चित्त	,,——६
बिचकी जंने	बिचके जन	,,—११
धरिमन सोलिपि	धरीमन सोलिपि	२८१७-९
बिचार कितेक	बिचारे कितेक	२८१९-६
पैभलो क्योंरह्यो	पैभलो क्योंहुरह्यो	,,—१५
वधिविमान खडेरन	बंधिविमान खडेरन	,,——,,
द्वारतैं डेरन	दोरतैं डेरन	२८२१-६
पूछैंइहिं	पूछैंइहाँ	२८२२-१८
गुंगार के साथ	गुगोर के साथ	,,——२२
माँहि प्रतीति है	मोहि प्रतीति है	२८२३-९
पुर में आये केड़ै	पुर में आना केड़ै	२८२५-२७
आदिकै	आदिके	२८२६-९
कहैनृप	कहेनृप	,,——१४
कीर्ति का	कीर्ति को	,,——२४
बचन कहै	बचन कहे	,,——२६
शरीर छांडना	शरीर छोडना	२८२७-२०
२५ वार	२५ वारा	२८३१-२७
२ दहैलि	दलि हैं	२८३४-१०
सरवरव	सरवस्व	२८३६-१६
वनैंग्रंथ	वनेग्रंथ	२८३७-२१
ड्योढी के बाहर	ड्योढी के बाहिर	२८४२-२२
एकदशी के दिन	एकादशी के दिन	२८४५-२६
केदिखावहु	कैंदिखावहु	२८४९-१६

धका लगये	धकोकर लगये	२८५०-२२
ष्ठ ४ हैर सुना	मुनचड ४ हैर सुना	२८५५-१९
मिच्छन प्रसादी	मिच्छन प्रसादी	२८५८-२२
म्लेच्छों की प्रसन्नता चाहनेवाला	आलमगीर रघुनाथसिंहको म्लेच्छोंने जामारा	,,—२६
डुवरलाये	डुवरलामे	२८६८-७
सूरसज्जा इत	सूरसज्जा सोये इन	,,——८
पाय उभै दीनों	पाय उभै औतदीनों	,,——९
माही मन से	माहे मन से	,,——२१
फोरचोंघाय	फोरेंघाय	२८७०-९
कोटा कुमार कुथेर पर	कोटाको कुमार कुथेर	२८७४-१
हुरवलों -	हुरपलों	,,———१८
जारयो कोटा	जायरयो कोटा	२८७८-१९
मुकामपैं	मुकामहीपैं	,,——१६
मयूरों को	मयूर को	,,—— २६
यहातदल	यहात दल	२८८०-१२
तीससत ३००	तीनसत ३००	२८८२-२१
देहुआप	देहुआप	२८८३-१६
नपाइ	नपाई	२८८८-१५
हवेलि ?	हवेली ?	२८९२-५
कथितप्रामन	कथितप्रमान	२८९३-१४